अभिशप्त

एक रक्तिम गाथा

Shaba ❤️

अभिशप्त:एक रक्तिम गाथा

भाग 3.

लेखिका, शाबा।

अभिशप्त: प्रस्तावना

राज- भाग-1
चित्रलेखा - भाग 2
अभिशप्त- भाग-3

कहते हैं कि अफसाने यूँ ही नहीं बन जाते। कोई ना कोई वजह होती है इन अफसानों के तामीर की। पर कभी-कभी समय की धूल इस क़दर इन पर चढ़ जाती है कि इनका वजूद उस धूल के गुबार में ही खो जाता है।

ऐसा ही एक गुमनाम किस्सा अचानक ही खुद पर पड़ी धूल को झाड़ता हुआ उठा खड़ा हुआ और एक

के बाद एक रहस्य और रोमांच के पड़ावों को पार करता हुआ अब अपनी नई मंजिल की ओर नज़रें गड़ाए खड़ा है।

छोटे से गाँव हरिपुर से शुरू हुई ये कहानी....
जहाँ गाँव से गायब होते लोगों की खोज में कुछ नौजवान एक डायन से भिड़ने चले जाते हैं और एक रोमांचक सफ़र के बाद जब उनका सामना अतीत के काले अध्याय से होता है, तो सभी के होश उड़ जाते हैं और जिंदगी के बदलते रंग उन सभी को अपनी गिरफ्त में ले लेते हैं।

(जिन पाठकों ने ये कहानी नहीं पढ़ी है, चाहें तो मेरी प्रोफाइल में जाकर पढ़ सकते हैं। 👜)

वहीं डायन के महल से मिली एक किताब आशुतोष को ले जाती है इस अफसाने के दुसरे मुकाम पर....

जहाँ रानी चित्रलेखा का रहस्यमई व्यक्तित्व सभी को उलझा कर रख देता है। किस तरह ईर्ष्या, बदला और स्वार्थ की बिसात पर खेला गया खूनी खेल प्रेम की शह पर मात खा जाता है। नफरतों की जमीन पर जन्मा प्रेम का अंकुर आने वाले भविष्य के लिए कई नसीहतें छोड़ जाता है और छोड़ जाता है कई सवाल, जो इस कहानी में उलझे लोगों को इस सफर पर आगे बढ़ने पर मजबूर कर देता है।

यकीनन जिंदगी चलते रहने का काम है और इसकी पेचीदगियों में अपने लिए नई राहें तलाशने का नाम। जो सवाल चित्रलेखा की कहानी सबके जेहन में छोड़ गई, उसकी तलाश सबके जेहनी आराम के लिए बहुत ही जरूरी हो चुकी है और एक बार फिर सभी तैयार हैं... एक और सफर के लिए।

कहते हैं कि समय से ज्यादा ताकतवर और कुछ नहीं होता। वो सबको अपने साथ बहा ले जाता है। पर क्या हो... जब समय का पहिया उल्टा घूम जाए और उसकी गिरफ्त से बाहर निकल आए एक ऐसी कहानी जो ना किसी ने सुनी और ना किसी ने कही।

पुराने किरदारों के साथ कुछ नए किरदारों की आमद, जो आपको हँसाएगी, रूलाएगी, गुदगुदाएगी और यकीनन....
डराएगी भी। तो चलते हैं कुछ और पन्ने जज़्बातों की स्याही से उकेरने के लिए।
ये सफर है प्रेम का... तड़प का.... इंतजार का और.... खून से भरे इंतकाम का। एक कहानी जिसमें है एक श्राप और है एक.....

"अभिशप्त"

अभिशप्त : भाग 1 - समयचक्र

कुछ कहानियाँ इतनी हैरतअंगेज होती हैं... कि उन पर यकीन करना मुश्किल होता है। पर जो दिल और दिमाग को हिलाकर ना रख दे..... वो कैसा अफसाना! ऐसा ही एक अफसाना वक्त के हिसार में दुनिया से छिपा हुआ बैठा था और सभी इससे बेखबर थे। मगर होनी किसी के टाले कब टली है। तो ऐसी ही एक अनहोनी ने इस दुनिया को दे दिया उसके हिस्से का वह ख़ौफनाक तोहफा, जिसे सबकी नज़रों से बचाने के लिए ना जाने कितनी कोशिशों की परतें चढ़ा दी गईं। दिमाग की नसों को उलझाने के लिए एक ऐसे ही अफसाने से रूबरू होते हैं।
करीब 1000 साल पहले

वो एक ऊँचा लाल पत्थरों से बनी दीवारों वाला विशाल खुला हुआ कक्ष था, जिसकी दीवारों में कुछ-कुछ दूरी पर कई मशाल जल रहे थे। उनकी दहकती पीली रोशनी उस कक्ष के एक-एक कोने को आलोकित कर रही थी। उस कक्ष के बीचों बीच लाल रंग से बना हुआ एक बेहद बड़ा विशाल गोला था, जिसके अंदर एक पंचकोणीय आकृति बनी हुई थी। उस पंचकोणीय आकृति के अंदर एक और लाल रंग की गोल आकृति बनी थी, जिसके अंदर एक खून से भरा धातु पात्र रखा हुआ था। उस लाल घेरे के बाहरी भाग में चारों तरफ 11 तांत्रिक बैठे हुए थे। उन सभी के सामने एक-एक हवनकुंड प्रज्ज्वलित था। सभी तेज आवाज में मंत्रोच्चार कर रहे थे। चारों ओर हवनकुंड से निकलने वाला धुआँ भरा हुआ था और जब भी उसमें आहुति दी जाती, उसमें उठने वाली लपटें और भी तीव्र हो जातीं। समय बढ़ने के साथ सभी के चेहरों पर तनाव भी दिखाई देने लगा
था, मगर आँखों में प्रतिबद्धता अभी भी दिखाई दे रही थी। धीरे-धीरे उनके चेहरे का तनाव माहौल में घुलने लगा और अचानक ही दीवारों में लगी मशालों की रोशनी मद्धम होने लगी। वातावरण का यह बदलाव सभी ने अपनी बंद आँखों से ही महसूस कर लिया था। इस बदलाव को महसूस करते ही उनकी गतिविधियाँ और भी तेज हो गईं। बढ़ते तनाव के बीच कक्ष के बीचों बीच बनी लाल गोलीय आकृति का रंग बदलकर काला हो गया और उसके बीच रखा हुआ वह धातु पात्र कंपित होने लगा। फिर उस पात्र में रखा खून एक रेखा के रूप में ऊपर की ओर उठने लगा। जैसे ही वो खूनी रेखा कमरे की ऊँची छत से टकराई.... तेज आवाज के साथ वहाँ काले धुएँ का एक गुबार सा फ़ैल गया।

वहाँ उपस्थित सभी लोगों की आँखें इस आवाज से खुल गईं.... मगर उन्होंने मंत्रोच्चार बंद नहीं किया

था। जैसे ही उस धातु पात्र में रखा सारा रक्त ऊपर छत में पहुँचा, वैसे ही छत में घुमड़ता काले धुएँ का गुबार तेजी से नीचे उस काले गोले पर गिर गया, जिसके बीच में वह धातु पात्र रखा हुआ था। अब उस धुएँ ने एक छोटे से बवंडर का रूप ले लिया था, जो उस काली गोल आकृति के अंदर ही गोल गोल चक्कर लगा रही थी। धीरे-धीरे उस काले धुएँ का प्रवाह बहुत ही तेज हो गया और फिर उसी तीव्रता के साथ वह नीचे की ओर बैठने लगा। जैसे ही तेजी से घूमता हुआ वो धुएँ का बवंडर छँटा, वहाँ उपस्थित सभी लोगों की आँखें वहीं जम गई। वो अपने ख़ौफनाक रूप में उन सभी के सामने थी।

उसकी आँखें मौत की तरह गहरी और काली थीं। टेढ़े-मेढ़े बेतरतीब दाँतों के बीच से झांकता रक्त उसके कुछ समय पहले किए रक्त पान की गवाही दे रहा था और उसकी पीठ पर मौजूद पंख उसकी शैतानी शख्सियत की गवाही दे रहे थे। उसका खौफनाक चेहरा हैरतअंगेज तरीके से चौकन्ना और बुरी तरह से झुंझलाया हुआ दिख रहा था। किसी जाल में फँसे जानवर की तरह वो बुरी तरह तड़फड़ा रही थी और चारों ओर झटके दे-देकर मुड़ते हुए अपने मुँह से गुर्राहट भरी आवाज निकाल रही थी। साफ पता चल रहा था कि वो बुरी तरह फँस चुकी थी। उसे इस तरह जाल में फँसा हुआ देखकर सभी के स्वरों में और भी तीव्रता आ गई। मंत्रों के अक्षरों से गुंथी हुई पवित्र ध्वनि उसके कानों में पिघले शीशे की तरह उतर रही थी, जिससे होने वाली पीड़ा उसके चेहरे पर सिलवटों के रूप में उभर आई थीं। उसने चीखते हुए अपने दोनों कानों को हथेलियों से ढँक लिया था, मगर इसका कोई भी फायदा होता दिखाई नहीं पड़ रहा था।

अचानक वो अपनी पूरी ताकत से चिल्लाई और उसकी अंधकार में खोई हुई आँखें लाल अंगारों सी दहकने लगी। शायद अब उसकी ताकत और सब्र दोनों ही खत्म होने की कगार पर थे। इन सब के बीच मंत्रोच्चार करता हुआ एक तांत्रिक जो शायद सबसे ज्यादा ताकतवर था, अपनी जगह से उठा और उस लाल घेरे की सरहद पर जाकर खड़ा हो गया। उसने अपनी सीधी मुट्ठी में कुछ पकड़ा हुआ था, जिसे उसने ऊपर उठा कर अपने माथे से लगाया और फिर उस शैतानी बला की ओर फेंक दिया। उस चीज के उस काले घेरे में गिरते ही उस काले घेरे के किनारों से कुछ काले धुएँ से बने हुए हाथ बाहर निकल आए और उस बला को अपनी गिरफ्त में ले लिया। उनकी जकड़ में वो बुरी तरह छटपटा रही थी, मगर उसकी सारी ताकत उन तांत्रिकों के सामने फिलहाल कमजोर पड़ चुकी थी। उन हाथों ने उसे उस काले घेरे के अंदर खींचना शुरू कर दिया। सारा वातावरण दिल दहला देने वाली चित्कार से भर उठा था। कई महीनों के कड़े अनुष्ठान का प्रतिफल सबके सामने आ चुका था। देखते ही देखते उन हाथों ने उस बला को उस काले घेरे के अंदर पूरी तरह से खींच लिया। मगर जाते-जाते भी वह अपनी भयानक आवाज में चेतावनी देते हुए गुम हो गई। उस काले घेरे के अंदर हवाओं का प्रभाव एकदम से शांत पड़ गया। उस घेरे का रंग धीरे-धीरे काले से बदलकर पहले की तरह लाल हो गया था।

सब कुछ शांत होते ही सभी तांत्रिकों ने मंत्रोच्चार रोक दिया। सबके चेहरे का तनाव मध्यम सी मुस्कुराहट में बदल गया था। आखिरकार ना जाने कितनी कोशिशों के बाद आज वो सब कामयाब हो चुके थे। मुख्य तांत्रिक धीमे कदमों से चलते हुए उस लाल घेरे तक आए, जहाँ बीचोबीच एक छोटा सा उभार बना हुआ था। उस उभार में बीचों बीच एक छोटा सा आड़ा तिरछा छेद बना हुआ था। मुख्य तांत्रिक उसके पास गए और फिर उन्होंने अपने हाथ में पकड़ा हुआ रुद्राक्ष उस छेद में डाल दिया। ऐसा लग रहा था जैसे कि वो छेद उसी के लिए बना हुआ था। उस रुद्राक्ष को उसमें डालने के बाद उसके

चारों ओर की रिक्तता भरने लगी और कुछ ही देर में वह उस छेद में अच्छे तरीके से कस गया था।

"तांत्रिक श्रेष्ठ! अंततः इस पिशाचिनी का उचित प्रबंध हो ही गया।"

"हम्म! प्रतीत तो ऐसा ही हो रहा है। पर उसकी अंतिम चेतावनी को
उपेक्षित समझकर अनदेखा नहीं किया जा सकता। ये समझ लो कि समस्या पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुई है। हमने अपनी पूर्ण शक्ति झोंककर इसे बंदी तो बना लिया है, परंतु मानव जाति के अंदर की स्वार्थी और लोभी प्रवृत्ति सदैव इसे प्राणवायु देती रहेगी। पूर्ण सतर्कता ही अब से हमारी सबसे बड़ी कुंजी होगी, जो इस पिशाचिनी को इस नर्क के द्वार के पीछे जकड़कर रख सके।"

उसकी बात सुनकर सभी ने हुंकारी भरते हुए सहमति जताई। तांत्रिक श्रेष्ठ ने मुड़कर उस रूद्राक्ष की ओर देखा, जो फिलहाल उस द्वार को अपनी मजबूत गिरफ्त में जकड़े हुए था। धीरे-धीरे सभी उस कक्ष से बाहर निकल गए। तांत्रिक श्रेष्ठ ने उस लाल घेरे की ओर देखा और उनके कानों में उस पिशाचिनी की चेतावनी स्पष्ट रूप से एक बार फिर से गूंजने लगी।

"मैं वापस आऊँगी। जिस मानव जाति की चिंता मात्र में तुमने मुझे इस प्रकार असहाय किया है, वही मेरी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेगी। उसके पश्चात् होगा बस प्रलय... जिसे कोई रोक नहीं सकेगा। स्मरण रहे।"

तांत्रिक श्रेष्ठ को पता था कि ये अंत नहीं प्रारंभ है, जो समय के चक्र में सभी को उलझाने वाला है।

****
200 साल पहले -

वो एक सीलन और बदबू से भरी गुफा थी, जिसके अंदर ना जाने किन-किन मखलूकों(Creature) ने अपना बसेरा बना रखा था। इन सभी के बीच वो अपनी साधना में पूरी तरह से तल्लीन था। उसके चेहरे और सिर के बेतरतीबी से बढ़े हुए बालों ने उसकी शिनाख्त(पहचान) पूरी तरह से छिपा ली थी। सामने जलती हुई प्रचंड अग्नि उसकी बंद आँखों से भी झांकती हुई ज्वाला से कमतर ही प्रतीत हो रही थी। उसके होंठ लगातार बुदबुदाने के कार्य में लगे हुए थे। शारीरिक रूप से वो एक गठीले शरीर का मालिक जान पड़ रहा था, जो कई जगहों पर अपनी चोटों के भरने की गवाही दे रहा था। उसके चेहरे की कठोरता उसकी तल्लीनता का पूरा साथ निभा रही थी। ऐसा लग रहा था कि उसने अपनी ये साधना लंबे समय से जारी रखी हुई थी।

अपनी साधना में लगे हुए उस युवक की आँखें हल्की सी काँपी और फिर उस गुफा की दीवारें हल्की सी कंपन से सिहरने लगीं। ऐसा लगने लगा जैसे कि किसी की आमद उस गुफा के वजूद पर भारी पड़ने लगी थी। उस गुफा के अंदर जितने भी छोटे-मध्यम या बड़े जीव-जंतु थे, सभी में दहशत साफ-साफ

दिखाई देने लगी, जो उनके बेतहाशा दौड़कर इधर-उधर भागने के रूप में परिवर्तित हो गई थी।

और फिर सामने आई वो वजह जिसने चारों ओर ये आपाधापी बरपा रखी थी। साधना में लीन उस युवक की आँखें खुली और सामने का दृश्य उसकी उन मुरझाई हुई आँखों में एक चमक भर गया। सामने साक्षात् मृत्यु साकार रूप लेकर उसके सामने खड़ी थी, जिसे देखकर उसके होंठों पर एक टेढ़ी सी मुस्कान आ गई।

उसके सामने पिशाचों का देवता अपने हौलनाक रूप में खड़ा उसे अपनी दहकती नज़रों से देख रहा था। मगर उस युवक पर ना जाने कौन सी खुमारी तारी थी कि दिल दहलाने वाला वो नज़ारा जैसे उसके दिली सूकून
की वजह बन गया था। वो अपनी जगह से उठा और अपनी आत्मविश्वास से भरी आँखें उस शैतान की आँखों से मिलाते हुए खड़ा हो गया।

"क्या चाहिए तुम्हें युवक? तुमने अपनी कोशिशों से मुझे प्रसन्न किया है। बोलो क्या चाहिए मुझसे? मेरी इतनी कठिन साधना करने का उद्देश्य छोटा नहीं हो सकता।" सामने खड़ा वो शैतान भारी मगर मखमली आवाज में बोला।

"बदला चाहिए मुझे! बस.... बदला!" वो युवक कड़वाहट भरी आवाज में बोला।

"कैसा बदला?"

"मेरे प्यार को मुझसे छीनने का बदला! जिसकी वजह से मेरा प्यार मुझसे दूर हुआ है.... तड़प-तड़प कर मर गया है। उन सारी तड़प का हिसाब चाहिए मुझे। मैं उससे उसकी जिंदगी और हर खुशी को उसी तरह नोचकर अलग कर देना चाहता हूँ, जैसे मेरे प्यार को मेरे नसीब से नोंच लिया गया। ऐ पिशाचदेव! मैं तेरा सेवक.... तेरा अनुचर बनना चाहता हूँ... और इसके लिए मैं कोई भी कीमत अदा करने को तैयार हूँ।" वो युवक अपने दिल के ज़ख़्मों को कुरेदते हुए उस दर्द के अहसास को अपनी लरजती आवाज में भरकर बोला।

"तू प्यार के लिए मेरे पास आया है, पर मैं प्यार पर विश्वास नहीं करता। मेरी शरण में आने के लिए तुझे अपने दिल से प्यार को नोंचकर निकाल देना होगा। मैं सिर्फ मौत को जानता हूँ.... जो बेरहम होती है। किसी की परवाह नहीं करती। अगर ये कर सकता है तो फिर बात कर!" उस शैतान ने अपनी शर्त रखते हुए कहा।

"मुझे मंजूर है। अपना मकसद पूरा करने के लिए मैं नफरत की अथाह
गहराईयों में खोने के लिए पूरी तरह से तैयार हूँ। बस मुझे वो शक्तियाँ चाहिए जो मुझे मेरे मकसद में कामयाब करें।" युवक अपनी दहकती आँखों के साथ पूरी दृढ़ता से बोला।

"तो ठीक है। ग्रहण कर ले मेरा ये अंश अपने अंदर और खुद को मेरे पैरों पर कुर्बान कर दे। फिर तुझे वो मिलेगा... जो तुझे चाहिए।" इस बार वो शैतान कुटिलता भरी आवाज में बोला। उसके इतना कहते ही उस युवक के सामने खून से भरा एक प्याला आ गया, जिसे उसने अपने काँपते हाथ में पकड़ लिया।

उस युवक ने एक नज़र उस शैतान पर डाली और एक ही घूंट में उस प्याले के खून को अपने हलक़ में उतार लिया। उस रक्तपात के बाद वो गहरी-गहरी साँसे लेता हुआ अपने घुटनों पर गिर पड़ा। शैतान ने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया था और अब.... उसके हाथ बढ़ाने की बारी थी। उसने पास ही पड़ा हुआ खंजर उठाया और उसकी तेज धार को अपनी गर्दन पर टिका दिया। उसने अपनी आँखें बंद की और उन बंद आँखों में किसी लड़की का धूमिल सा चेहरा और कानों में उसकी खिलखिलाती हुई आवाज आई। एक मुस्कुराहट के बाद उस युवक का चेहरा दर्द की अधिकता से भर गया। इतना ज्यादा दर्द कि अपने गले में खंजर को चलाते हुए उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ। उसकी गर्दन से गर्म और लाल-लाल खून भलभलाकर निकलने लगा और उसका सारा निचला शरीर अपने ही खून से नहा गया। दो पलों के बाद ही उसका शरीर एक ओर ढह गया। उसके गले से कुछ घुटी-घुटी सी आवाजें निकली और फिर एक हिचकी के साथ सब कुछ शांत पड़ गया।

सब शांत होते ही उस युवक के शरीर में एकाएक परिवर्तन होने शुरू हो गए। उसका मृत शरीर बुरी तरह से ऐंठने लगा और फिर उसके शरीर से लिपटा सारा खून अपने आखिरी क़तरे के साथ उससे अलग हो कर हवाओं में खो गया। उस युवक का पूरी तरह से सफेद पड़ चुका जिस्म हवा में थोड़ा ऊपर उठा और फिर उसके शरीर की बनावट बदलने लगी। उसके हाथों और पैरों की उंगलियों की हड्डियाँ चटकने की आवाज आई
और उनका आकार पहले से और भी लंबा हो गया। नाखून भी बेलगाम रफ्तार से बढ़ने लगे। उसकी पसलियों और पुश्त की हड्डियाँ भी शोर करती हुई अपने बदलाव की ओर इशारा कर रही थीं। उसकी पीठ पर दो कूबड़ जैसी आकृतियाँ उभरी और फिर धीरे -धीरे बढ़कर उन्होंने दो विशाल पंखों का रूप ले लिया, जो कहीं से भी खूबसूरत नज़र नहीं आ रहे थे। उन पंखों में हलचल हुई और फिर फड़फड़ाते हुए उन्होंने उस युवक के जिस्म को हवा में उठा लिया।

उस युवक का सिर नीचे की ओर झुका हुआ था, जिसे उसने जब ऊपर की ओर उठाया तो उसकी लाल आँखों से सारा माहौल थर्रा उठा। उसने अपने पंखों को तेजी से फड़फड़ाया और फिर उड़ता हुआ उस गुफा से बाहर निकल गया। उसके पीछे वो शैतान एक मुस्कुराहट के साथ बोला, "जाओ! शिकार का वक्त हो गया।"

****

वर्तमान समय -

वो एक 23-24 साल का युवक था, जो बुरी तरह झुंझलाते हुए कार चला रहा था। उसकी आँखें तो रास्ते पर जमी हुई थी, पर ध्यान कहीं और ही भटक रहा था। साफ जाहिर था कि फिलहाल उसे इस समय बहुत गुस्सा आ रहा था।

"ये लड़की भी ना! हमेशा ऐसा ही करती है। बस हुकुम जारी कर दिया कि आ जाओ। अरे भाई! आदमी को कोई जरूरी काम भी हो सकता है। गलती मेरी ही है। मैंने ही अपनी कमजोर नस उसके हाथ में पकड़ा रखी है। पर आने दो इस बार सामने। इस बार मैं पिघलने वाला नहीं। बिल्कुल भी नहीं।" वो युवक जैसे खुद को किसी जंग के लिए तैयार कर रहा था। जल्द ही वो बस स्टैंड पर पहुँच गया। अंदर गया तो पता चला बस अपने सही समय पर पहुँच चुकी है।
"बाप रे! जल्दी चल! वरना आफत मचा देगी ये लड़की।" खुद में ही सिहरते हुए वो कतार से खड़ी बसों की ओर भागा और बेसब्री से हर बस को झांक-झांककर देखने लगा। तभी उसे एक ओर से आई एक तेज आवाज ने अपनी गिरफ्त में ले लिया।

"अरे वरूण! इधर! इधर हूँ मैं!"

यह कहने के बाद किसी लड़की की जोर से खिलखिलाने की आवाज आई। वरूण नाम का वो युवक अपने दिल को थामे उस आवाज की ओर मुड़ा और एक बार फिर उसे अपने अंदर सब कुछ पिघलता हुआ महसूस हुआ। बेसाख़्ता उसके मुस्कुराते हुए होंठों से निकला,

"अनामिका!"

वो उस सुनसान खंडहर में धूल-मिट्टी से सनी जमीन पर औंधी बेहोश पड़ी हुई थी। उसके नाक और मुँह से निकलकर धीरे-धीरे सामने बिखरी धूल-मिट्टी को और भी बिखेरती हवा उसके जिंदा होने की गवाही दे रही थी। उसका पूरा शरीर खरोंचों से भरा हुआ था। कुछ ज़ख़्म गहरे मालूम पड़ रहे थे, जिनसे निकला खून जिस्म में सूखकर जम गया था। कपड़े भी फटे हुए और अजीब सी हालत में थे। ना जाने कितनी देर से वो वहाँ उसी तरह पड़ी हुई थी। समय गुजरने के साथ शायद बेहोशी भी अब टूटने की कगार पर आ गई थी, जब उसके सीधे हाथ की उंगलियों में हरकत हुई। एक हल्की सी कराह हवा का साथ लेकर उसके होंठों से निकली और धीरे से उसने अपनी आँखें खोली, जो खुलने से लगभग इंकार कर रही थीं। वो बुरी तरह घायल थी और थकान से चूर भी। आँखों के सामने अभी भी सब कुछ धुंधला सा था। उसने एक बार फिर से अपनी आँखें बंद कर लीं मगर ज़हन की गलियों में दर्द से भरी एक चीख ने उसकी आँखें पूरी तरह से खोल दीं।

उन बड़ी-बड़ी काली आँखों में सदमे भरी दहशत भर गई। अचानक ही उसकी साँसे भारी हो गईं और उसे बेचैनी सी होने लगी। अपनी पूरी ताकत लगाकर उसने अपने दोनों हाथों के सहारे उठने की कोशिश की, मगर पूरे शरीर में दर्द इतना ज्यादा था कि इस कोशिश ने उसके सारे वजूद को हिलाकर रख दिया। मगर अब वो फिर से किसी मुर्दे की तरह पड़ी रहना नहीं चाहती थी। अपनी बची खुची सारी ताकत के साथ आखिरकार वो उठ ही गई और घिसटकर दीवार के पास पहुँची। वहाँ पहुँचकर उसने दीवार से अपनी पीठ लगाई और बैठकर गहरी साँसें लेते हुए चारों ओर देखने लगी। चारों ओर अंधकार अपना अधिकार क्षेत्र बढ़ा रहा था। शायद शाम से मुलाकात के बाद आज का दिन रात से मिलने के

लिए बढ़ रहा था। मगर अंधकार में अभी गहरापन नहीं आया था। प्यास की शिद्दत से उसका गला सूख रहा था। मगर उसे इस बात का अहसास हो गया था कि वो आबादी से कहीं दूर इस तरह निढाल पड़ी हुई है। उसने अपनी यादों का दरवाजा खोलने की कोशिश की। यह जानने के लिए कि वो यहाँ इस हालत में कैसे पहुँची, पर वो दरवाजा बुरी तरह से बंद था। थोड़ी देर में उसने ये कोशिश भी छोड़ दी और चुपचाप बैठ गई, जिससे कि कुछ ताकत इकट्ठी कर सके, ताकि वो यहाँ से निकल सके। ना जाने कितना समय इसी में गुजर गया। उसे ऐसा लगने लगा कि अगर जल्दी ही उसे इस अकेलेपन के अहसास ने नहीं छोड़ा, तो वो और भी कमजोर होने लगेगी। उसने अपनी आँखें बंद की और कुछ देर बाद ही उसे सूखे पत्तों पर सरसराहट की आवाज सुनाई दी। उसने अपनी आँखें खोली, तो उस खंडहर के किसी हिस्से में उसे आग की रोशनी दिखाई दी। उस रोशनी से उसके अंदर का अंधेरा छँटने लगा। अब तक उसने काफी ताकत इकट्ठी कर ली थी। वो किसी तरह खुद को संभालते हुए उठी और उस रोशनी की ओर लड़खड़ाते हुए बढ़ी।

उसके मन में ये ख्याल कहीं से भी नहीं आया कि इस समय इस उजाड़ में कौन आया होगा? उसने तो उस रोशनी में अपने अकेलेपन के अहसास को पिघलता महसूस किया और बिना सोचे समझे उस ओर बढ़ गई।

थोड़ा चलने से उसके शरीर की अकड़न खत्म हुई, तो दर्द का अहसास भी बहुत कम हो गया था और अब वो थोड़ा आराम भी महसूस कर रही थी। एक बार फिर उसके सूखे गले ने उसके कदमों को ताकत दी और वो उस आग के पास पहुँच ही गई।

उस आग के चारों तरफ तीन खतरनाक से दिखने वाले बदमाश बैठे थे
और किसी बड़े अपराध को सर-अंजाम देने के बारे में बातें कर रहे थे। उनके हाथों में पकड़ी हुई शराब की खुली बोतलों ने वहाँ के वातावरण को दुर्गंध से भर दिया था। वो जैसे ही वहाँ पहुँची, शराब का एक तेज भभका उसके नथुनों में भर गया और उसका खराब मन और भी खराब हो गया। उसके कदमों की आहट ने उन तीनों के कान खड़े कर दिए। उन्होंने झटके से उस ओर देखा जहाँ वो टूटी हुई दीवार को थामे खड़ी थी। उसे वहाँ देखकर उन तीनों के चेहरे का रंग उड़ गया। दिल अपनी चोरी पकड़े जाने की आशंका से जोर-जोर से धड़कने लगा। इस समय इस सुनसान इलाके में किसी के आ टपकने की उन्हें उम्मीद नहीं थी। दोनों ओर ही माहौल भारी सा हो गया था। वो भी समझ चुकी थी कि उसने यहाँ आकर गलती कर दी है। पर गलती तो हो ही चुकी थी। अपने गले को तर करते हुए वो पीछे की ओर खिसकने लगी।

"ए... रूक! वहीं रूक!" उनमें से एक भारी शरीर वाले आदमी ने घुड़ककर कहा। उस घुड़की को सुनकर उसकी साँस जैसे रूक सी गई।

"कौन है तू... और यहाँ क्या कर रही है?" एक बार फिर उस आदमी ने गुस्से भरी आवाज में उससे पूछा। मगर वो किसी भी सवाल का जवाब देने की हालत में नहीं थी।

"अरे बोल ना!" अब दूसरे आदमी ने भी सख़्ती दिखाते हुए तेज आवाज में कहा। मगर वो अब भी उसी तरह बुत बनी खड़ी रही। अब तो उसके पैरों की ताकत भी एक बार फिर से खत्म हो चुकी थी। एक तो पहले ही वो अपनी शिनाख्त से बेगाना हो चुकी थी और अब मौजूदा हालात उसके हवास भी गुम करने पर आमादा थे। उसके लिए चारों ओर बस अंधेरा ही बचा हुआ था।

"कहीं पुलिस का लफड़ा-वफड़ा तो नहीं?" तीसरे आदमी ने बाकी दोनों की ओर देखकर आशंका

जताई।
"अबे उसकी हालत देख और बोल! ये तो खुद भागी हुई दिख रही है।" उसकी ओर ग़ौर से देखते हुए एक आदमी बोला। उसके इतना कहते ही बाकी दोनों की नज़रें भी उस पर गड़ गईं। आशंका के बादल छँटते ही वो सामने खड़ी उस लड़की को तेज और गहरी नज़रों से देखने लगे। उसकी हालत देखकर अचानक उनके होंठों पर एक कुटिलता भरी मुस्कराहट खेलने लगी और आँखों में हैवानियत उतर आई। उनके इरादे भाँपकर उस लड़की की साँसे हलक़ में अटक कर रह गई।

"माल तो बहुत अच्छा लग रहा है। लग रहा है आज तो किस्मत खुली है।" हवस भरी जहरीली नज़रें उस पर डालते हुए एक बदमाश ने कहा। उनकी बातें सुनकर उस लड़की की जान लगभग सूख ही गई थी, मगर वो बिना लड़े हथियार नहीं डाल सकती थी। कहते हैं कि डर जब अपनी आखिरी सीमा लांघ जाए, तो फिर बस.... चला जाता है। उसने भी डर को भूलकर अपने लिए संघर्ष करने का फैसला लिया।

"आगे मत बढ़ना! वर्ना..." सारी हिम्मत बटोरकर वो तेज आवाज में अपनी तर्जनी ऊँगली उन्हें दिखाते हुए बोली।

"वर्ना क्या?" अपने गंदे दाँतों की नुमाइश करता हुआ एक बदमाश उसकी ओर बढ़ा। इससे पहले कि वो उसके करीब आ पाता, उसने उस टूटी हुई दीवार के ऊपरी हिस्से के एक ढीले पड़ चुके पत्थर, जिसके सहारे वो खड़ी हुई थी.. को खींचकर निकाला और और उस बदमाश के मुँह पर दे मारा। इस अप्रत्याशित हमले के लिए वो बिल्कुल भी तैयार नहीं थे। एक ही वार से उस बदमाश की नाक से खून का फव्वारा छूट पड़ा। एक तेज चीख के साथ वो अपनी नाक को पकड़कर नीचे बैठ गया। उसके दोनों साथी भी तेजी से उसके पास आकर उसे संभालने लगे।

"चल भाग यहाँ से!" उसके मन ने उससे कहा और वो एक ओर घूमकर
तेजी से अंधेरों में गुम हो गई।

"अरे! पकड़ो उसे!" अपनी नाक को संभाले हुए उस बदमाश ने अपने दोनों साथियों से कहा। उसकी बात सुनकर उसके दोनों साथी तेजी से उस ओर भागे जिस तरफ लड़की भागी थी। मगर आग की रोशनी से दूर उस खंडहर के कई कोने घटाघुप अंधेरे में डूबे हुए थे, जहाँ उस लड़की का पनाह लेना उन को झुंझला रहा था।

"लग रहा है भाग गई।" अपनी कमर में हाथ रखकर हाँफते हुए एक बदमाश बोला।

"ऐसे कैसे भाग जाएगी? ढूँढना पड़ेगा उसे। समझ नहीं रहा है तू। हमें यहाँ देख लिया है उसने। अगर उसने जाकर किसी को बता दिया तो... अंदर जो लड़की बंधी पड़ी है, उसे कहीं और ले जाकर छुपाना पड़ेगा। बड़ी मुश्किल से तो ये जगह मिली है जहाँ कोई आता जाता नहीं। पता नहीं ये कहाँ से आ टपकी?" दूसरा बदमाश चारों ओर देखते हुए तिलमिलाकर बोला।

"हाँ यार! ये भूत-प्रेत की अफवाहों के कारण इधर कोई कभी नहीं आता। मगर वो लड़की सब गुड़-गोबर करके रख देगी।" पहले बदमाश ने कहा।

"एक काम कर तू उस तरफ जा... मैं इस तरफ देखता हूँ।" दूसरा बदमाश बोला। उसकी बात सुनते ही उसका साथी तेजी से दूसरी और चला गया। उस बदमाश ने आगे जाने के लिए अपने कदम उठाए ही थे कि उसे अपने पीछे हल्की सी सरसराहट की आवाज सुनाई दी। ऐसा लगा जैसे कि कोई कोने में

दुबकने की कोशिश कर रहा हो। उस आवाज को सुनकर उसके होंठों पर एक वहशियाना मुस्कुराहट आकर बैठ गई। चेहरे पर झूठी हैरानी सजाए वो तंजिया लहजे में बोलता हुआ आगे बढ़ा, "च् च् च्! तो यहाँ है तू! तुझे लगा कि हमें उल्लू बना लेगी। चल बाहर निकल! मैं उधर आया तो तेरे को ही तकलीफ होएगी।"

मगर उस दुबकी हुई आकृति ने उसकी धमकी भरी बातों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और उसी तरह दुबकी रही।

"लगता है कि मेरे को ही मेहनत करनी पड़ेगी।" गुस्से में दाँत पीसते हुए वो उस कोने की ओर तेजी से गया और फुँफकारते हुए उसे देखने लगा। गुस्से में वो बहुत तेज-तेज साँसे ले रहा था।

"चल उठ!" कहते हुए उसने झुककर उसका हाथ पकड़ना चाहा, मगर अगले ही पल वो डर और सदमे से जड़ हो गया, जब सामने सिर झुकाए दुबकी हुई आकृति ने अपना सिर ऊपर उठाया। वहाँ अंधकार की स्याही के अलावा और कुछ था... तो वो थी दो सुलगती हुई आँखें।

वो बदमाश झटक कर पीछे हटा तो असंतुलित होकर गिर पड़ा। भागने के लिए उसने हाथ और पैरों का सहारा लेना चाहा, मगर उसी समय कुछ खुरदरी और लंबी ऊँगलियों ने उसके पैरों को पकड़कर पीछे की ओर खींचा। इससे पहले कि वो चिल्ला पाता, उसे खुरदुरी चादर जैसी किसी चीज ने खुद में समेट लिया, जिससे उसका मुँह बंद हो गया। बस दहशत में
फटी हुई उसकी आँखें ही खुली हुई थीं। वो कुछ समझ पाता उससे पहले ही सामने वाली आकृति उछली और वो उसके साथ ही साथ आसमानों की सैर पर निकल गया। उस बदमाश ने जब अपनी मुण्डी घुमाई और आसपास का जायजा लेना चाहा, तो सामने का दृश्य देखकर उसकी रूह काँप गई।

उसके सामने जो भी था, इंसान तो बिल्कुल नहीं था। मगर अंधेरे में उसकी शख्सियत का बस एक जो हिस्सा नुमाया हो रहा था, उसे सीधे और साफ लफ़्ज़ों में पंख कहा जा सकता था। उस अजीब सी आकृति को क्या नाम दिया जाए ये समझने की शक्ति उसकी खत्म हो चुकी थी। जमीन पर असहाय लड़की के सामने अपनी ताकत की नुमाइश करने वाला वो शैतान अब किसी दूसरे शैतान की गिरफ्त में था। मौत को सामने देखकर अब वो बिल्कुल पत्थर हो गया था। यहाँ तक कि उसे साँस लेने में भी डर लग रहा था। उस बदमाश का चेहरा आँसुओं से तर हो गया था और ज़बान लड़खड़ा रही थी। उसे यही लग रहा था कि शायद ये उसका कोई भयानक ख्वाब है, जो अगले ही पल बस टूटने ही वाला था। मगर हकीकत तो हकीकत ही होती है। अगले ही पल उस बदमाश ने खुद को उस पंख की गिरफ्त से आजाद होता महसूस किया और ये उसके होशो हवास उड़ाने के लिए काफी था। वो जमीन से ना जाने कितनी फुट ऊँचाई पर था। वहाँ से गिरना मतलब एक दर्दनाक मौत! वो डर से उन पंखों को पकड़ने की कोशिश करने लगा, जो अब लगभग खुल चुके थे। उस अजीब से जानवर ने एक गुर्राहट के साथ अपने एक हाथ से उसके पैरों को पकड़कर उसे उल्टा लटका था। अब तो उस बदमाश को अपनी बेबसी पर खुद ही तरस आने लगा था। उस जानवर ने अपने दूसरे हाथ के नाखूनों को उसके शरीर पर फिराते हुए उसके दिल के पास जमा दिया। वो बदमाश कुछ समझ पाता उससे पहले ही वो नाखून उसके शरीर में धँसने लगे और पूरा आसमान दिल दहलाने वाली चीखों से भर गया।

नीचे मौजूद सभी लोगों को उन चीखों ने दहला दिया था, मगर उन्हें समझ

में नहीं आ रहा था कि चीखें आ कहाँ से रही हैं? दूसरा बदमाश अब लड़की को ढूँढना छोड़कर अपने साथी की ओर बढ़ा... इस बात से अंजान कि वो लड़की कुछ कदमों की दूरी पर आगे ही दुबकी हुई थी। वो भी बुरी तरह से सहम गई थी। उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर हो क्या रहा है?

वो बदमाश पहले वाली जगह पर आया, जहाँ दोनों अलग हुए थे। मगर उसका साथी वहाँ नहीं था। उसने बेचैनी से इधर-उधर नज़रें दौड़ाई, पर कुछ भी नहीं दिखा। वो तेजी से उस ओर भागा, जहाँ उनका तीसरा साथी था। जब वो वहाँ पहुँचा, तो उनके तीसरे साथी ने गायब हुए साथी के बारे में पूछा।

"पता नहीं कहाँ गया? उसकी चीख सुनी मैंने। पर कहीं दिखाई नहीं दिया।" दूसरा साथी घबराकर बोला।

"कहीं... ये भूत-प्रेत वाली बात सच तो नहीं। चल निकलते हैं यहाँ से।" तीसरे साथी ने उसका हाथ खींचते हुए कहा।

"पर उसे यहाँ छोड़कर तो नहीं जा सकते।" दूसरे बदमाश ने आपत्ति जताई।

"तो क्या मरना है यहाँ रूककर। तू ढूँढ उसे। मैं तो चला।" तीसरा साथी घबराकर बोला और वहाँ से निकलने के लिए कुछ आगे ही बढ़ा था कि तभी उसके चेहरे पर कुछ गरम-गरम सा गिरा। वो चमककर अपनी जगह पर रूक गया। उसने उस गर्म तरल पर ऊँगलियाँ फेरी और आँखों के सामने लाकर उसे देखने लगा। वो एकदम ताजा खून था, जिसे देखकर उस बदमाश की आँखें फटकर बाहर आते-आते बचीं। उसने अपना सिर ऊपर की ओर उठाया। काले अंधकार में लिपटा आसमान उसे चिढ़ा रहा था। उसे समझ नहीं आया कि ऊपर तो सब कुछ खाली है, तो ये खून
कहाँ से आया। अभी वो ये सोच ही रहा था कि उसे अपने ऊपर की ओर कुछ अजीब सी आवाज सुनाई दी, जैसे कि कुछ तेजी से गिर रहा हो और अगले ही पल वो अपने ही साथी के भारी-भरकम शरीर के नीचे दबा हुआ था। बेहरकत उसका शरीर उसके मरने की गवाही दे रहा था। एक जोरदार चीख के साथ उसने उसके शरीर को खुद से हटाया और बदहवास सा खड़ा होकर उसे देखने लगा। किसी ने बेरहमी से उसका दिल नोंचकर निकाल दिया था और उसकी आँखें बिल्कुल ही सफेद थीं। उसकी ऐसी हालत देखकर दोनों साथियों की घिग्घी बंध गई।

"ये... ये किसने किया?" वो बदमाश उसके गिरे हुए बेजान शरीर को देखकर बोला। सामने वाला कोई जवाब दे पाता, उससे पहले ही एक जोरदार झपट्टे के साथ वो भी गायब हो गया। अब तो अकेले बचे उस बदमाश की हालत बुरी तरह से पस्त हो गई थी। अपनी जान बचाने के लिए वो चीखते हुए सिर पर पैर रखकर भागा। कोने में दुबकी हुई वो लड़की अपनी फटी हुई आँखों से आसमान में खेला जा रहा खूनी खेल देख रही थी। आज की रात उसके ऊपर जैसे क़यामत बरपी हुई थी। उसने देखा कि एक बार फिर एक चीख के बाद कुछ नीचे की ओर गिरा और फिर पंख फड़फड़ाने की आवाज के साथ उड़ता हुआ कुछ तेजी से उस तीसरे बदमाश की ओर गया। वो लड़की पसीने में लथपथ हो चुकी थी और ना चाहते हुए भी उसकी फटी हुई आँखों से आँसू बेआवाज बह रहे थे। उसके दिल की धड़कनें बेइख़्तियार हो चुकी थीं और बस पसलियों की क़ैद से निकलने को बेताब थीं। मगर शायद उसमें कुछ हिम्मत अभी भी बची हुई थी, इसलिए वो दूसरी दिशा की ओर तेजी से भागी। ना जाने उसके पैरों में कहाँ से इतनी ताकत आ गई थी। शायद ज़िंदगी से प्यार ही इसकी वजह हो। वो बदहवास सी हालत में बस अंधाधुंध दौड़ी जा रही थी... ये जानकर कि यदि वो रूकी तो उसकी भी मौत निश्चित थी। तभी वातावरण में एक और दर्दनाक चीख फैल गई और वो लड़की लड़खड़ा कर गिरते-गिरते बची। अचानक उसे भी अपने

कानों में कहीं पास ही पंखों के फड़फड़ाने की आवाज आई। अब तो अपनी चढ़ी हुई साँसों के साथ वो पूरी ताकत से दौड़ने लगी। उसके पैर अब काँपने लगे थे। तभी उसे सामने से कोई गाड़ी गुजरती हुई दिखी। उस गाड़ी को देखकर वो खासा हैरतजदा हो गई, जिससे कि उसकी रफ़्तार कम हो गई और यहीं उससे गलती हो गई। अचानक ही उसने खुद को तीखे नाखूनों वाले खुरदुरे पंजों में जकड़ा हुआ पाया। दहशत से उसकी आँखें फट गई। वो अजीब सा पंछी या जानवर जो भी था उसे अपने पंजों में जकड़े हुए आगे बढ़ गया। मगर जब वो उसे दबोचे हुए सड़क के बीचों बीच पहुँचा, तो सामने से आती एक गाड़ी की तेज रोशनी ने उसे हड़बड़ा दिया, जिससे वो लड़की उन खूनी पंजों से छूटकर नीचे गिर पड़ी और वो अजीब सा प्राणी क्रीं क्रीं की आवाज करता हुआ ऊपर आसमान की ओर अंधेरों में खो गया।

जल्द ही एक कार उस लड़की के बेहोश से जिस्म के पास आकर रूकी। वो रोशनी जिसने उस प्राणी को भगाया था, उसी कार की थी। उस कार से एक लड़की तेजी से निकली और आसमान में उस तरफ ही देखने लगी, जहाँ वो आफत उड़कर गई थी। ड्राइविंग सीट से एक लड़का नीचे उतरा और बेहोश पड़ी उस लड़की की ओर भागा।

"आखिर वो था क्या?" उस लड़की की आवाज के साथ आँखें भी हैरानी से दो-चार हो चुकी थीं।

"अनामिका! ये लड़की तो बेहोश है।" वो लड़का परेशानी से बोला।

"एक मिनट वरूण! पानी लाती हूँ मैं।" यह कहकर अनामिका कार के अंदर से पानी की बोतल ले आई और उस लड़की के चेहरे पर उसके ठंडे छींटें मारने लगी। पानी की ठंडी तासीर जल्द ही उस लड़की को होश में ले आई।

"हेय! कौन हो तुम? इस समय यहाँ क्या कर रही हो?" अनामिका ने उसके चेहरे पर थपकी मारते हुए पूछा।
"पता नहीं।" यह कहकर उसका सिर फिर से एक ओर लुढ़क गया।

"एक लड़की अंजानी सी!" वरूण ने अनामिका को तिरछी नजर से देखते हुए कहा।

अनामिका ने उसे घूरकर देखा और उस लड़की को उठाने में मदद करने को कहा। जल्द ही वो लड़की उनके कार की पिछली सीट पर पड़ी हुई थी।

"कौन होगी ये?" अनामिका ने उसे देखते हुए कहा।

"बताया तो कि अंजानी है। बाकी जान-पहचान इसके होश में आने के बाद कर लेंगे।" वरुण लापरवाही से बोला। उसकी बात सुनकर अनामिका ने एक गहरी साँस छोड़ी और एक बार फिर उस ओर देखने लगी, जहाँ उसने आसमान में कुछ अजीब सी चीज देखी थी। वरूण ने गाड़ी आगे बढ़ा दी।

सुबह के करीब 8:30 बजे रहे थे। एक नाइट बस उस बस स्टैंड में आकर रूकी। सभी यात्री अपनी-अपनी जगह पर नींद में पूरी तरह से गाफिल थे। बस कंडक्टर ने सवारियों को मंजिल तक पहुँचने की

जानकारी देते हुए अपनी तेज आवाज में उठाया। अनामिका ने भी सीट की पुश्त से अपना ढलका हुआ सिर ऊपर उठाकर उस कंडक्टर की ओर देखा... फिर उसकी बातें सुनकर समझ गई कि मंजिल आ गई है। उसने अपनी कलाई घड़ी पर नज़र डाली और समय देखा। उसने सुबह 6 बजे वरूण को फोन कर दिया था। उसने हिसाब लगाया कि या तो वो आता ही होगा या फिर आ गया होगा। फिलहाल वो करीब दस घंटे का सफर करके यहाँ कल्किपुर पहुँची थी। उसने अपना सामान समेटा और बस से नीचे उतर गई। थोड़ी दूर जाकर उसने सामान एक ओर रखा और चारों ओर अपनी नज़रें दौड़ाई। नज़रें जिसे ढूंढ रही थीं, वो फिलहाल दिखाई नहीं दे रहा था। उसने अपना फोन निकाला और कॉल हिस्ट्री खोली, ताकि वरूण को फोन लगा सके। लेकिन ना जाने क्यों उसकी नजर दो और नामों के नीचे लिखे आशुतोष के नाम पर जाकर टिक गई और उसकी ऊंगलियों ने वरूण के बजाए आशुतोष के नंबर पर कॉल कर दिया। कुछ रिंग जाने के बाद सामने से
फोन उठाया गया और दूसरी ओर से आवाज आई, "हैलो अनामिका! कैसी हो? बस, तुम्हें ही याद कर रहा था। कहाँ हो अभी?" आशुतोष की जोश भरी आवाज सुनकर अनामिका के होठों पर एक मुस्कान आई।

"बस अपनी अगली मंजिल तक पहुँच गई हूँ। किसी का इंतजार कर रही हूँ।" अनामिका ने चहकते हुए कहा।

"कोई खास!" आशुतोष की आवाज आई।

"बहुत ही ज्यादा! अरे वरूण! इधर! इधर हूँ मैं!" कहकर अनामिका जोर से खिलखिलाई। फोन के दूसरी ओर लंबी चुप्पी छा गई।

"क्या हो गया आशुतोष जी? आप चुप क्यों हो गए हैं?" अनामिका ने कहा।

"फोन का स्पीकर ऑन था जब तुमने... वरुण की बात की। चैतन्य यहीं खड़ा था।" आशुतोष ने कहा।

"ओह! पर मैंने उससे अपनी तरफ से कुछ कहा नहीं है। आपको भी पता है।" अनामिका ने गंभीर आवाज में कहा।

"तुमने उससे नहीं भी तो नहीं कहा है। शायद उम्मीद में बैठा है बिचारा।" आशुतोष ने कहा।

"उसे छोड़िए! आपने तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र की किताब पढ़ी। लिखा क्या है उसमें?" अनामिका ने एक बार फिर गंभीर होते हुए कहा।

"पूरी तो नहीं पढ़ पाया। पर जितना पढ़ा है उसने उलझन और बढ़ा दी है।" आशुतोष की ठंडी आवाज आई।
"क्या मतलब?"

"ये कहानी सीधी नहीं है अनामिका। बहुत उलझी हुई है। बड़ी मुश्किल से एक सिरा हाथ आया है।" आशुतोष ने कहा।

"तो दूसरा सिरा ढूंढिए आशुतोष जी! ये बहुत जरूरी है।" अनामिका की आवाज बहुत ही गंभीर थी।

"अब इससे तुम्हारा क्या मतलब है?" आशुतोष ने हैरानी से कहा।

"उस समय जो कुछ भी हुआ था... पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था। कुछ ऐसा था जो बाकी रह गया है। उसे ढूंढिए! उस भूत में हमारा वर्तमान और भविष्य अभी भी उलझा हुआ है। वरूण आ रहा है। मैं अभी फोन रखती हूँ।" अनामिका ने आशुतोष की हैरानी बढ़ाते हुए कहा और कॉल काट दिया।

"ओह गॉड! कभी तो फोन को आराम दे दिया करो।" चेहरे और आवाज में शिकायत लेकर अपने सीने में हाथ बांधे वरूण उसके सामने खड़ा हो गया। वो एक मध्यम कद और साँवले रंग का बोलती हुई काली ऑखों वाला लड़का था, जिन पर फिलहाल नाज़ुक से फ्रेम वाला चश्मा चढ़ा था। चेहरे पर एक संजीदगी ओढ़े हुए वो परिपक्व लग रहा था।

"तुम्हें समस्या क्या है मेरे फ़ोन से?" अनामिका ने तुनक कर कहा।

"नहीं! नहीं! मुझे क्या समस्या होगी? आखिर दुनिया में यही एक तो है... जो ना तो दिन देखता है ना रात! बस मुझे याद करता रहता है। भई प्यार हो तो ऐसा!" वरूण की आवाज तंज भरी थी। उसके लहजे को सुनकर अनामिका की दाईं ऑख की कमान ऊपर उठी।
"ये... ये तो बिल्कुल करना नहीं! पहले ही बोल दे रहा हूँ।" वरूण ने अनामिका को अपनी तर्जनी उंगली उठाकर टोकते हुए कहा। अनामिका ने भी अपनी भौंह नीची की और उसके माथे की ओर हाथ बढ़ाते हुए बोली, "बहुत गर्म हो रहे हो। तबीयत ठीक है ना तुम्हारी!"

वरूण ने तेजी से अपना सिर पीछे खींचा। उसके तेवर देखकर अनामिका ने बनावटी डर से अपनी ऑखें और होंठ गोल कर दिए।

"तुम ना! ज्यादा बनो मत! तुम्हें पता है.... मेरी नाइट ड्यूटी थी कल रात! सात बजे सुबह ड्यूटी खत्म होने के बाद जबरन ऑखों को फाड़े हुए गाड़ी चलाकर आया हूँ। पर तुम्हें क्या? बस फोन कर देती हो। पता है ना... कि वरूण तो बात टालेगा नहीं।" मुँह और नाक फुलाते हुए वरूण बोला। उसकी शिकायत सुनकर अनामिका ने मासूमियत से उसे देखते हुए अपने दोनों कान पकड़ लिए।उसकी इस हरकत पर वरूण ने तेजी से अपनी नज़रें फेरी।

"अरे यार! माफ कर दो डॉक्टर साहब! फिर नहीं होगा ऐसा।" अनामिका माफी वाले लहजे में बोली।

"ठीक है! चलो!" वरूण ने आगे बढ़कर उसका सामान उठाते हुए कहा। अनामिका भी चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल दी। अभी वो उससे उलझना नहीं चाहती थी क्योंकि उसे पता था कि वरूण के पास उसके लिए बहुत से सवाल होंगे, जिनमें से कई का जवाब वो पहले ही सोच चुकी थी।

"गाड़ी मैं नहीं चलाने वाला! मुझे बहुत नींद आ रही है।" वरुण ने अपने हाथों पर उठाते हुए कहा।

"तो मैं चलाऊंगी। कोई प्रॉब्लम नहीं है। तुम आराम करो। चाहो तो पीछे
सो जाओ।" अनामिका ने पिछली सीट की ओर इशारा करते हुए उसे सलाह दी।

"जरूरत नहीं है इतनी मेहरबानी की। सामने ही बैठूंगा मैं। बस तुम आराम से चलाना, ताकि मैं सो सकूं।" वरूण ने उबासी लेते हुए कहा।

"जो हुक्म मेरे आका!" अनामिका ने दायाँ हाथ अपने माथे पर लगाकर उसके सामने झुकते हुए कहा। उसकी ये हरकत देखकर वरूण ने एक गहरी साँस ली और आगे बढ़कर ड्राइविंग सीट के साथ वाली सीट पर बैठ गया। अनामिका ने ड्राइविंग सीट संभाली और फिर गाड़ी आगे बढ़ गई। वरूण थोड़ी ही देर में चश्मा लगाए हुए ही सीट की पुश्त पर सिर टिकाकर सो गया। वो बहुत ही थका हुआ लग रहा था। अनामिका ने उसकी ओर मुस्कुराते हुए देखा और फिर हाथ बढ़ाकर उसका चश्मा निकाल दिया। अनामिका को पता था कि वरूण बहुत ही गहरी नींद में सोता था और इस वक्त तो उस पर थकान भी पूरी तरह से तारी थी। वरूण के सोने के बारे में आश्वस्त होने के बाद अनामिका के चेहरे की मुस्कुराहट गायब हो गई और एक संजीदगी ने उसके चेहरे पर कब्ज़ा कर लिया। अब वो अपनी असली मंजिल की ओर बढ़ रही थी, जिससे सोता हुआ वरूण पूरी तरह अंजान था। वरूण को थोड़ा सा भी अंदेशा नहीं था कि वो अंजाने में नहीं... बल्कि जानबूझ कर इस तरह आई थी और उसका इस तरह आने का मकसद बहुत जल्द सामने आने वाला था।

****

वरूण ने कसमसाकर अपनी ऑखें खोली, तो दोपहर ढल रही थी और
अनामिका बहुत ही गंभीर चेहरे के साथ गाड़ी चला रही थी। उसे एक बार तो यकीन ही नहीं हुआ कि वो इतनी देर से सो रहा था। उबासी लेते हुए अचानक उसे झटका लगा यह सोचकर कि वे दोनों अभी तक कार में क्या कर रहे हैं? उन्हें तो ज्यादा से ज्यादा दो घंटे में घर तक पहुँच जाना था। उसने झटके से अनामिका की ओर देखा।

"गाड़ी खराब हो गई थी।" अनामिका ने उसकी ओर देखे बिना कहा।

"तो मुझे उठाया क्यों नहीं?" वरुण ने तेज आवाज में कहा।

"क्यों? कार रिपेयरिंग का पार्ट टाइम काम शुरू किया है क्या तुमने, जो ठीक कर देते। तुम थके हुए थे और सो रहे थे इसलिए मैंने तुम्हें नहीं उठाया। वैसे भी तुम्हें पता है... कि मैं स्थितियाँ संभाल सकती हूँ।" अनामिका ने विश्वास भरे शब्दों के साथ कहा।

"हाँ वो तो है।" वरूण की आवाज थोड़ी झेंपी हुई थी। उसे अपनी इस बेफिक्र नींद पर बहुत ही खीज आ रही थी। उसने अनामिका की ओर देखा जो पूरे ध्यान से कार चला रही थी।

"अनामिका! मुझे दो! मैं चलाता हूँ। तुम यहाँ बैठो।" वरूण ने अनामिका से नर्म लहजे में कहा। सुबह उस पर आया गुस्सा शर्म की चादर ओढ़कर रफूचक्कर हो चुका था।

"क्यों? मुझ पर भरोसा नहीं है?" अनामिका ने सामने सड़क पर ही नज़र टिकाए हुए मुस्कुरा कर कहा।

"ऐसी बात नहीं है। तुम थक गई होगी। वैसे भी इतनी लंबी नींद के बाद अब तरोताजा महसूस कर रहा हूँ।" वरूण ने शर्मिंदगी भरी आवाज में कहा। अनामिका ने एक नज़र उसके चेहरे पर डाली और फिर गाड़ी रोक

दी। वरूण ने ड्राइविंग सीट संभाली और फिर अनामिका को साथ लेकर आगे बढ़ गया। दिन ढलने लगा था और आसमान में भी बादल छाने लगे थे। हवाओं के बदले मिजाज से ऐसा लग रहा था जैसे कि कोई बड़ा तूफान आने वाला हो। बहुत देर तक गाड़ी के अंदर खामोशी ने कब्ज़ा किया हुआ था। थककर वरूण ने एक नज़र अनामिका की ओर डाली, जो खिड़की के काँच से बाहर की ओर देख रही थी।

"अनामिका! बहुत चुप हो! क्या हुआ?" वरूण ने बेचैनी से पूछा।

"अ... कुछ तो नहीं। दरअसल... मुझे भी थोड़ी थकान लग रही है।" अनामिका ने सफाई दी।

"नींद आ रही है तो... थोड़ा सो जाओ। घर तक पहुँचने में तो डेढ़ घंटे लगेंगे ही। दिन भर की परेशानी में अकेली हलकान हो गई होगी तुम।" वरूण पर एक बार फिर लज्जा भारी होने लगी।

"हाँ! परेशान होने की बात तो है।" अनामिका ने कोई हुई आवाज में कहा।

"क्या?? क्या मतलब?" वरूण बुरी तरह चौंका।

"कुछ नहीं! पहुँच जाएँ... तो उठा देना।" कहते हुए अनामिका ने अपना फोन डैशबोर्ड पर रखा और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। वरूण ने सहमति भरी हुंकारी भरी। एक बार फिर कार के अंदर खामोशी छा गई। वरूण ने बहुत ही प्यार से अनामिका के चेहरे की ओर देखा, जो नींद की आगोश में सिमटी हुई बहुत ही प्यारी और मासूम लग रही थी। ए. सी. से निकलने वाली हवा सीधे उसके चेहरे पर जा रही थी, जिससे उसकी एक लट उसके चेहरे पर बार-बार अठखेलियाँ कर रही थी। यह देखकर वरूण का दिल एक बार के लिए जोरों से धड़का। बेइख़्तियारी में उसका हाथ
उसके चेहरे की ओर बढ़ा और उस लट को हौले से उसके चेहरे से हटाकर उसके कान के पीछे कर दिया। अनामिका हल्का सा कसमसाई और फिर सो गई।

उसी समय अनामिका का फोन वाइब्रेट हुआ, जिससे वरूण का ध्यान अनामिका से भटका। उसने फोन उठाकर देखा। चैतन्य का नाम स्क्रीन पर चमक रहा था और फिर फोन कट गया। उसने फोन को देखा और फिर फोन को वापस रखने लगा, तभी एक बार फिर फोन वाइब्रेट हुआ। इस बार भी चैतन्य ने ही फोन किया था। कुछ सोचकर वरूण ने फोन उठा लिया।

"हैलो!" उसकी भारी आवाज दूसरी ओर गई और वहाँ चुप्पी छा गई।

"हैलो!" वरूण ने एक बार फिर कहा।

"जी, ये.... अनामिका का नंबर है?" सामने से चैतन्य की उलझी हुई सी आवाज आई।

"जी हाँ!" वरूण बहुत ही इत्मीनान से बोला।

"क्या मेरी बात हो सकती है उससे?" चैतन्य की आवाज थोड़ी भारी लगने लगी।

"अभी तो वो सो रही है। जागेगी तो मैं उसे बता दूंगा कि आपने फोन किया था।" वरूण ने बहुत ही तमीज के साथ कहा।

"अ.. आप.... कौन बोल रहे हैं?" सामने से एक उलझा हुआ सा सवाल आया।
"जी! मैं वरूण!" वरूण ने अपना परिचय दिया।

"ओह! ठीक है!" सामने वाले की बुझी हुई सी आवाज आई। वरुण कुछ कहता उससे पहले ही चैतन्य ने कॉल काट दिया।

"अजीब आदमी है!" फोन की स्क्रीन पर देखता हुआ वरुण बोला और फिर फोन को वापस डैशबोर्ड पर रख दिया। कुछ देर बाद ही अनामिका के व्हाट्सएप पर लगातार कुछ मैसेजेस आए जिन्हें वरुण ने नजरअंदाज किया। वरूण लगातार गाड़ी चलाता रहा। करीब एक घंटे के बाद अनामिका ने अपनी ऑखें खोली और कुछ देर उसी तरह सिर टिकाए बैठी रही। बाहर हवाएँ अभी भी तेज चल रही थीं, मगर तूफान अभी भी कहीं रूका हुआ जान पड़ रहा था। उनकी गाड़ी अब शहर के बाहरी छोर वाले जंगल से गुजर रही थी।

"कहाँ पहुँचे?" अनामिका ने पूछा।

"बस आधे-पौन घंटे में पहुँच जाएँगे।" वरूण ने जवाब दिया।

"हम्म!"

"वैसे सोते समय प्यारी लगती हो।" वरूण ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"देखकर गाड़ी चलाओ!" अनामिका ने चेतावनी वाले लहजे में कहा।

"वही तो कर रहा हूँ!" वरूण ने अनामिका पर ऑखें जमाए हुए कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका के चेहरे पर चिढ़े हुए से भाव आए और फिर अचानक ही उसकी ऑखें सिकुड़ कर छोटी हो गईं।

"वरूण! गाड़ी रोको!" वो जोरों से चिल्लाई। उसकी चीख सुनकर वरूण
ने एकदम से ब्रेक पर अपने पैर दबा दिए। एक तेज आवाज के साथ घिसटते हुए गाड़ी रूक गई।

"क्या हुआ?" वरूण ने बदहवासी से पूछा।

"सामने कोई है।" कहते हुए अनामिका तेजी से कार से बाहर निकली। मगर वो सड़क पर नहीं....
आसमान में देख रही थी, जहाँ से कोई अजीब सी चीज उड़कर गई थी।

"आखिर वो था क्या?" अनामिका ने हैरानी से कहा।

"अनामिका! ये लड़की तो बेहोश है!" पीछे से वरूण की आवाज़ आई और अनामिका ने मुड़कर उस ओर देखा। फटे कपड़ों और बदहवास हालत में एक ज़ख्मी लड़की रास्ते के बीच में पड़ी थी।

****

एक बार फिर उसने अपनी ऑखें खोली। मगर इस बार सामने सब कुछ चमकदार रोशनी में नहाया हुआ था और ऊपर एक पंखा तेज रफ्तार में घूम रहा था। उस पंखे को देखकर उसने अपनी कमजोर सी ऑखें मिचमिचाई, जैसे कि कुछ जानने समझने की कोशिश कर रही हो.... मगर समझ में कुछ नहीं आ रहा हो। उसने अपना सीधा हाथ ऊपर उठाया और उसे जिस तरह देखा, उससे उसकी ऑखों में हैरानी और बेयकीनी के रंग साफतौर पर नुमाया हो रहे थे।
"ठीक हो अब?" दरवाजे की ओर से आई एक आवाज ने उसे चौंकाया। उसने आवाज की दिशा में देखा। एक 20-21 साल के दरमियानी उम्र की खूबसूरत सी लड़की उसके पास आई। उसने पहचान की गरज से उस लड़की की ओर देखा। ऑखों में हैरत बदस्तूर कब्जा जमाए हुए बैठी थी।

"ओह! मैं.... अनामिका हूँ। कल रात तुम हमें जंगली रास्ते पर बेहोश मिली थी।" अनामिका ने अपना परिचय देते हुए कहा।

"मैं कहाँ हूँ और ये कौन सी जगह है?" उसने चारों ओर नज़रें घुमाकर देखते हुए कहा।

"चिंता मत करो! हॉस्पिटल में हो तुम।" अनामिका ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा।

"हॉस्...!!" उस लड़की ने अजीब तरीके से कहा।

"पिटल.." अनामिका ने उसके शब्द को पूरा किया।

अनामिका ने महसूस किया कि उस लड़की के चेहरे पर एक बेचैनी सी थी और वो उस कमरे की हर चीज को बहुत ही हैरानी से देख रही थी, जैसे कि पहली बार देख रही हो।

"क्या हो गया? कुछ परेशान लग रही हो!" अनामिका उस लड़की से बोली। उस लड़की ने अनामिका की ओर सवालों से भरी नज़रों से देखा।

"अच्छा छोड़ो! ये बताओ...नाम क्या है तुम्हारा?" अनामिका ने पहचान बढ़ाने के लिए कहा।
"नाम! मेरा नाम?" उसने ऑखें बड़ी-बड़ी करके पूछा।

"हाँ! तुम्हारा नाम!" अनामिका ने अपनी भौंहों को उठाते हुए उससे कहा। यह सुनते ही उसके चेहरे पर सोचने के भाव आए और फिर धीरे धीरे वो भाव बदलते गए। माथे पर बढ़ती शिकन उसके परेशान होने की गवाही दे रही थीं। बालों में अपनी ऊंगलियों को फँसाकर वो अपनी ऑखें और जबड़े भींचे जैसे खुद से ही कोई जंग लड़ रही थी। उसकी ऐसी हालत देखकर अनामिका हकदक रह गई।

"तुम्हें याद नहीं तुम्हारा नाम?" अनामिका ने ऑखों में हैरानी भरकर पूछा। उसने अपना सिर बेचैनी से इंकार में हिलाते हुए अनामिका की ओर देखा। उसका पूरा चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ था। ऑखें ख़ौफ और बेचैनी की शिद्दत से लाल हो चुकी थीं और एक कभी भी खत्म ना होने वाली बेबसी उनमें दिखाई दे रही थी।

"ओह! अ... कोई बात नहीं। हो सकता है कि किसी तरह की मेडिकल समस्या हो। ठीक हो जाएगा!" अनामिका ने उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहा। उसने उलझन भरी नज़रों से अनामिका की ओर देखा। ना जाने क्यों... पर वो बहुत ही उलझी हुई सी दिखाई दे रही थी।

"तुम परेशान मत हो...आराम करो। मैं... आती हूँ!" अनामिका ने उससे नर्म लहजे से कहा और तेजी से कमरे से बाहर निकल गई। वो उसे अपनी उलझी हुई सोच और ऑखों के साथ देखती रही।

अनामिका कमरे से निकली और तेजी से एक ओर बढ़ गई। इस जल्दबाजी में वो एक लड़के से टकराकर गिरते-गिरते बची। उस लड़के के हाथ से एक किताब गिरी।

"ओह! म... माफ कीजिए!" अनामिका ने उस गिरी हुई किताब को
उठाकर उस लड़के को देते हुए कहा। उसे देते हुए अनामिका की नज़र उस पुरानी सी किताब पर पड़ी। अनामिका की नज़रों को पढ़कर उस लड़के ने वो किताब एक झटके से उसके हाथ से लगभग छीन ली और तेजी से आगे बढ़ गया।

"अजीब लड़का है!" अनामिका ने उसे घूरकर एक नज़र देखा और फिर अपना सिर झटककर तेजी से अपने रास्ते पर बढ़ गई। अपनी बेख्याली और जल्दबाजी में उसने ये नहीं देखा कि वो लड़का आगे बढ़कर उसी लड़की के कमरे में चला गया था।

"वरूण! वरूणा!" अनामिका ने एक दरवाजे को खोलते हुए बेइख़्तियार कहा और फिर सकपका कर चुप हो गई। वरूण की ऑखों के साथ और एक जोड़ी ऑखें उसकी ओर उठ गई थीं। वरूण अपने सीनियर डॉ प्रभात कुमार के साथ था।

"ओह! आई एम... सॉरी! मुझे खटखटाकर आना चाहिए था।" अनामिका झेंप भरी आवाज में बोली और वापस जाने के लिए मुड़ी।

"रूको अनामिका! एक मिनट! क्या हुआ?" वरूण ने अनामिका को रोकते हुए पूछा।

"वो.... उस लड़की को होश आ गया है।" अनामिका ने
वहाँ मौजूद डॉक्टर प्रभात की ओर देखकर कहा।

"ओह! कोई समस्या नहीं है। मैं देख लेता हूँ।" डॉक्टर प्रभात ने कहा और फिर वे सभी उस कमरे से बाहर निकल गए। वरूण कुछ बोले बिना उसे अपनी भौंहें चढ़ाकर देखता रहा।

"ठीक है! ठीक है! मेरी गलती है!" अनामिका ने थोड़ी चिढ़ भरी आवाज
में फुसफुसा कर कहा।

"हाँ! वो तो है। क्यों एक्सप्रेस की तरह धड़धड़ाते हुए एक डॉक्टर के केबिन में इस तरह घुसी तुम! आराम से नहीं आ सकती थी तुम?" वरूण ने बनावटी नाराजगी से कहा।

"माफ कीजिए डॉक्टर साहब गलती हो गई। पर वो क्या है ना... आपकी उस नई मरीज के साथ कुछ समस्या हो गई है। वही बताने के लिए आई थी।" अनामिका ने भी नाक फुलाते हुए जवाब दिया।

"क्या हुआ?" वरूण ने इस बार अनामिका की ओर देखते हुए कहा।

"हाँ! उसे अपना नाम भी याद नहीं। बस ऑखें फाड़-फाड़कर चारों तरफ देख रही है, जैसे कि पहले कभी देखा नहीं।" अनामिका ने वरूण को समस्या बताई।

"हम्म! कोई बड़ी बात नहीं है। उसकी हालत देखी थी! कितनी बुरी थी। मुझे लगता है कि शॉर्ट टर्म मेमोरी लॉस का मामला है। डर, सदमे, तनाव, सही आहार न मिलने से और कई दिनों से सही नींद नहीं मिलने से ये समस्या हो ही जाती है। सही देखरेख से सब ठीक हो जाएगा। चिंता मत करो। डॉक्टर प्रभात सब संभाल लेंगे।" वरूण ने दूसरे डॉक्टर, जो उसके सीनियर थे की ओर इशारा करते हुए कहा। जल्द ही सभी उस लड़की के कमरे के बाहर खड़े हुए थे।

डॉक्टर प्रभात और वरूण दोनों ही कमरे में गए। अनामिका कमरे के बाहर ही रूक गई थी और उनके बाहर आने का इंतजार कर रही थी। ऐसे ही चहलकदमी करते हुए उसकी नज़र उस गलियारे के आखिरी छोर तक गई, जहाँ वही लड़का खड़ा हुआ उसी की तरफ देख रहा था, जिससे कुछ देर पहले वो टकराई थी। हालांकि चेहरा ना तो तब दिखा था और ना ही अभी दिख रहा था। अनामिका ने उसे घूरकर देखा और वो मुड़कर वहाँ से चला गया।

"क्या वो मुझे ही देख रहा था... या फिर गलतफहमी थी मेरी।" अनामिका ने मन ही मन खुद से कहा।

"मिस अनामिका!" एक आवाज ने अनामिका की तंद्रा भंग की। सामने इंस्पेक्टर अंकित शर्मा खड़े थे। अनामिका ने उनका अभिवादन किया।

"क्या उस लड़की को होश आ गया है?" इंस्पेक्टर अंकित ने उस कमरे की ओर इशारा करते हुए कहा।

"जी! अभी थोड़ी देर पहले ही। डॉ. प्रभात उसका मुआयना कर रहे हैं।" अनामिका ने कहा।
"ओह! उसने कुछ कहा क्या?" इंस्पेक्टर अंकित ने अनामिका से सवाल किया।

"मुझे तो कुछ समझ नहीं आया। आप ही पूछ लीजिएगा। शायद डॉक्टरी मदद के बाद उसे बेहतर लगे तो कुछ साफ-साफ बताए। फिलहाल तो मुझसे यही कहा कि उसे कुछ भी याद नहीं है।" अनामिका ने अपनी जानकारी साझा की। अभी वे दोनों बातें ही कर रहे थे कि तभी डॉक्टर प्रभात और वरूण कमरे से बाहर निकले और इंस्पेक्टर को देखकर उनकी ओर आए।

"अनामिका जी ने फ़ोन किया था मुझे कि उस लड़की को होश आ गया है। अब कैसी स्थिति है उसकी?" इंस्पेक्टर अंकित ने डॉक्टर प्रभात से पूछा।

"अभी तक सदमे में ही है और बहुत कमजोर भी। बहुत ज्यादा डरी हुई भी है। शायद दवा और देखभाल कुछ सहायता कर सकें। वैसे आपको कुछ पूछना हो तो आप पूछ सकते हैं, बस.... ज्यादा स्ट्रैस मत दीजिएगा।" डॉ. प्रभात ने कहा। उनकी बात सुनकर इंस्पेक्टर अंकित ने हुंकारी में अपनी सहमति जताई। डॉ. प्रभात वहाँ से चले गए। अनामिका और वरूण कमरे के बाहर ही रहे। इंस्पेक्टर अंकित

पूछताछ करने के लिए उस लड़की के कमरे में गए ही थे कि अनामिका और वरूण उस लड़की की तेज चीख सुनकर उसके कमरे की ओर भागे। अंदर जाकर देखा कि वो लड़की अपने बेड के कोने में दुबकी हुई सिसक रही थी। उसने अपना चेहरा अपने घुटनों में छिपा रखा था और अभी भी खुद को और भी समेटने की जद्दोजहद कर रही थी।

"क्या हो गया?" अनामिका ने उसकी ओर तेजी से बढ़ते हुए कहा। वरूण ने इंस्पेक्टर अंकित की ओर सवालिया नजरों से देखा।
"मैं अंदर आया और मुझे देखते ही ये इस तरह चीख पड़ी।" दरवाजे के पास ही भौंचक से खड़े इंस्पेक्टर अंकित ने अपने कंधे उचकाकर कहा।

अनामिका उस लड़की के पास जाकर बैठ गई और उसके सिर को प्यार से सहलाया। अनामिका का स्पर्श पहचान कर उसने अपना सिर ऊपर उठाया और फिर उससे किसी डरे-सहमे हुए बच्चे की तरह लिपट गई और सुबकने लगी। वो बहुत ही सहमी हुई थी। अनामिका ने उसे अपनी बाहों में समेट लिया और अपने प्रेम भरे सानिध्य की गर्माहट से उसके अंदर के डर को पिघलाने की कोशिश करने लगी। जल्द ही वो कुछ-कुछ सामान्य लगने लगी। मगर इंस्पेक्टर अंकित की ओर उसने नज़रें नहीं उठाईं।

"देखो! तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है। हम सब तुम्हारी सहायता करना चाहते हैं। तुम अपने बारे में बताओगी, तभी तो हम कुछ कर पाएँगे। इंस्पेक्टर साहब जो भी पूछ रहे हैं... उनका जवाब दे दो।" अनामिका ने उसकी पीठ सहलाते हुए कहा।

"पर मुझे कुछ भी याद नहीं। मैं क्या बताऊँ? मेरा सिर फटा जा रहा है ये सोच-सोचकर कि .... आखिर कौन हूँ मैं?" वो लड़की सुबकते हुए बोली। रोने की वजह से उसकी साँसें चढ़ गई थीं और ऑखें सुर्ख़ हो चुकी थीं।

"तुम्हें सच में याद नहीं कि कल रात तुम उस जंगल में क्या कर रही थी? याद करो शायद कोई तुम्हें वहाँ जबरन ले गया हो?" पिछली रात के दृश्य को अपने मस्तिष्क में उतारते हुए अनामिका ने कहा।

अनामिका के मुँह से यह सुनते ही उस लड़की की ऑखें अचानक ही सोच की मुद्रा में सिकुड़ कर छोटी हुई और फिर अगले ही पल ख़ौफ की ज्यादती से फैलकर बड़ी-बड़ी हो गईं। रात का सारा मंज़र याद आते ही एक बार फिर उसका काँपता हुआ शरीर पसीने से भीग गया। सारे
अल्फाज़ उसके सूखे हलक़ में कहीं फँस कर रह गए और दबे हुए जज़्बात ऑखों से दर्दों का नमक लेकर बहने लगे। रात मौत उसे छूकर निकल गई थी और अभी उसका अहसास भी उसके लिए उतना ही अज़ीयतनाक था।

"वो... वो....!!" बड़ी मुश्किल से उस लड़की के मुँह से निकला।

"वो क्या?" इंस्पेक्टर अंकित ने थोड़ा आगे आकर कहा।

"मुझे नहीं पता वो क्या चीज़ थी! उसने मेरी ऑखों के सामने उन सबको बेरहमी से मार डाला। मैं उससे बचकर वहाँ से भागी, मगर वो बहुत तेज था। उसने मुझे दबोच लिया। अपने होश गँवाने से पहले मैंने एक तेज रोशनी और फिर उसकी गिरफ्त का ढीलापन महसूस किया और फिर मुझे कुछ याद नहीं।" अपनी पिछली रात की यादों के दरवाजे खोलते हुए उसने अपनी काँपती हुई आवाज में कहा।

"मार डाला! किसे मार डाला?" इंस्पेक्टर अंकित ने बुरी तरह से चौंकते हुए पूछा।

"कल जब मुझे होश आया, तो मैंने खुद को उस खंडहर में पाया। मैंने एक ओर आग जलते देखी तो मैं उस ओर गई। वहाँ तीन बदमाश बैठे हुए शराब पी रहे थे। मुझे देखकर पहले तो वो डर गए... फिर मेरी उधड़ी हालत देखकर उनके अंदर का जानवर बाहर निकल आया, मगर वो कुछ कर पाते, उससे पहले ही वो... आ गया।" खोई हुई सी आवाज में उस लड़की ने कहा।

"कौन आ गया?" इंस्पेक्टर अंकित ने अपनी हैरतजदा ऑखें उस लड़की पर डाले हुए पूछा।

"मैंने कहा ना! मुझे नहीं पता वो क्या चीज़ थी। अंधेरा बहुत था और मेरी
ऑखें डर से और भी धुंधला चुकी थीं। वो ख़ौफनाक मंजर मैं सारी उम्र नहीं भूल सकती। मुझे यकीन है कि वो खंडहर अभी भी उन चीखों से सिहर रहा होगा।" अब वो बोलते-बोलते हाँफने लगी थी।

"कौन सा खंडहर?" इंस्पेक्टर अंकित के माथे पर शिकन आ गई थी।

"ये हमें जिस जगह मिली थी, वो... उस डायनों के बसेरा के पास ही थी। कहीं उन्हीं खंडहरों की बात तो नहीं कर रही है!" जवाब वरूण ने दिया। वरूण की बात सुनकर इंस्पेक्टर अंकित के साथ अनामिका और वो लड़की भी चौंक गए।

"डायनों का बसेरा!" अनामिका के मुँह से बेसाख़्ता निकला।

"हाँ! बहुत पुरानी अफवाह है कि सदियों पहले वो खंडहर डायनों का घर हुआ करता था, जहाँ वो सबसे छिपकर अपने रिचुअल्स किया करती थीं। फिर कुछ तो.... हुआ था और वो सारी डायनें खत्म हो गईं। हालांकि कई लोगों का मानना है कि वो सारी खत्म नहीं हुई थीं। तब से वो खंडहर श्रापित हैं। लोग उस तरफ का रूख करने से भी डरते हैं। अभी भी लोग मानते हैं कि साल के किसी खास समय पर वहाँ अजीबोगरीब चीजें होती रहती हैं।" इंस्पेक्टर अंकित ने तफ्सील बयां की।

"ओह! अगर ऐसी बात है तो वो सब वहाँ क्या कर रहे थे?" अनामिका ने सोच की मुद्रा में पूछा।

"पहले इन्होंने जो कहा है उसकी तो तस्दीक हो जाए। हो सकता है कि इनका कोई वहम हो। मतलब कि.... अजीब सा प्राणी! सुनने में थोड़ा अजीब लगता है। और... वो सब उस विवादास्पद जगह पर क्यों जाऍंगे? शराब पीने के लिए शहर में जगह की कमी हो गई है क्या?" इंस्पेक्टर अंकित ने थोड़े बेयकीनी लहजे में कहा।
"वो कह रहे थे कि उन्होंने वहाँ किसी लड़की को बांधकर रखा हुआ है।" कहकर उस लड़की ने अपने सूखे गले में थूक को गटका।

बेआवाज सभी की फटी हुई नज़रें उस लड़की की ओर मुड़ गईं। सभी की हैरतजदा नज़रें खुद पर टिकी हुई देखकर वो थोड़ी असहज हो गई।

"तुम्हारा मतलब है कि उन लोगों ने किसी लड़की को अगवा करके वहाँ छिपाया था।" अनामिका चिहुँकी।

"अच्छा!! शायद.. इसीलिए वो वहाँ थे। उन्हें लगा होगा कि वहाँ तो कोई भूले से भी नहीं जाएगा।" इस

बार वरूण ने बात आगे बढ़ाई।

"तुम्हें यकीन है कि वहाँ कोई और लड़की भी थी। मेरा मतलब है कि.... तुमने उस लड़की को देखा था वहाँ!" इंस्पेक्टर अंकित ने सवाल किया।

"देखा तो नहीं था। जब मैं उन बदमाशों से बचने के लिए छिपी हुई थी, तब उनमें से एक बदमाश ने अपने साथी से उस लड़की के बारे में कहा था। उन्हें डर था कि अगर मैं वहाँ से बचकर भाग गई तो उनका ये भेद खुल जाएगा।" उस लड़की ने कहा।

"मतलब कि... तुमने उसे... देखा नहीं था!" इंस्पेक्टर अंकित ने अपनी जानकारी दुरूस्त करने की नीयत से पूछा।

"मैंने बस उनकी बातें सुनी थीं और जब कुछ देर बाद ही उस अजीब सी चीज ने सब पर हमला करना शुरू किया, तब मैं किसी तरह जान बचाकर भागी। वो समय ये सब सोचने और जाँचने का बिल्कुल भी नहीं था।" उस लड़की ने अपना पक्ष रखते हुए कहा।
उनकी बात सुनकर इंस्पेक्टर अंकित ने अपना फोन निकालकर किसी को फोन लगाया, "राघव! पता करो कि पिछले दो दिनों में किसी भी पुलिस स्टेशन में किसी लड़की के अगवा होने या गायब होने की रिपोर्ट लिखवाई गई है क्या? जल्दी पता करके पूरी डिटेल्स दो मुझे। तुरंत!"

फोन जेब में वापस रखते हुए इंस्पेक्टर अंकित ने उन तीनों की ओर मुड़ते हुए कहा, " ये कहानी तो नए-नए मोड़ लेती जा रही है। फिलहाल तो पूरी तरह यकीन नहीं किया जा सकता, जब तक कि कोई पुख़्ता सबूत या जानकारी ना मिले। तो.... तब तक तुम कहीं नहीं जाओगी।"

तीनों ने इंस्पेक्टर अंकित के लहजे में छिपी चेतावनी को महसूस कर लिया था। उस लड़की ने इंस्पेक्टर अंकित को सहमी हुई नज़रों से देखा। कुछ देर की बातचीत से जो इत्मीनान उसके लहज़े में आया था, वो एक बार फिर काफ़ूर हो गया।

"जाऊँगी भी तो.... कहाँ जाऊँगी? जाने के लिए पता भी तो होना चाहिए कि आई कहाँ से हूँ!" एक बार फिर उसकी निराशा भरी आवाज आँसुओं के वजन से भारी होने लगी थी। उसकी बात सुनकर सभी दर्द भरी नजरों से उसकी ओर देखने लगे। अपनी खुद की शिनाख्त (पहचान) भूल जाना किसी बुरे सपने से कम नहीं होता। ऐसा बुरा सपना जिसे ना चाहते हुए भी पल-पल एक अंतहीन अंधकार के साथ जीना पड़ता है।

"हौसला रखो। हो सकता है कि फौरी हालातों ने ऐसा कर दिया हो। अच्छी नींद और आराम तुम्हारे लिए बेहतर दवा होगी।" डॉ वरुण ने उसे देख कर मुस्कुराते हुए कहा। जवाब में उसने भी अपनी झिलमिलाती हुई नज़रों से सभी की ओर देखा, जिसमें उम्मीद नाम की चीज लापता हो चुकी थी।

इंस्पेक्टर अंकित जल्दी वापस आने की बात कहकर वहाँ से चले गए।
उस लड़की की बातों से किसी को इत्तेफाक रहा हो या ना रहा हो, मगर उन बातों ने अनामिका के माथे की शिकन जरूर बढ़ा दी थी। आखिर बीती रात काले आसमान में उसने भी कोई अजीब सी चीज देखी थी और वो इससे इंकार नहीं कर सकती थी। बहरहाल वो सब इंस्पेक्टर अंकित की तफ्शीश का इंतजार ही कर सकते थे। मगर कुछ ऐसा था, जो उसके दिमाग से निकल गया था और वो जल्द ही वापस लौटकर आने वाला था।

****

वक़्त की रफ्तार का पीछा करते हुए रात गहराने लगी थी। चारों ओर पसरा सन्नाटा हर पल के साथ और भी दमघोंटू होता जा रहा था। सभी मरीज अपने बिस्तर पर आने वाले बेहतर दिन के इंतजार में सो रहे थे। अनामिका भी उस लड़की के बेड के पास रखी कुर्सी की पुश्त पर सिर टिकाए सो रही थी। दिनभर हॉस्पिटल में बिताने के बाद वरूण के आने पर वो शाम छः बजे घर चली गई थी। वो वरूण के घर में ही रह रही थी। वरूण की इस पूरे हफ्ते नाईट ड्यूटी लगी हुई थी। दिन में आराम करने के बाद वो छः बजे ही हॉस्पिटल आ गया था, ताकि अनामिका घर जा सके। तीन घंटे के बाद रात 9 बजे वो फिर से हॉस्पिटल में थी। वो लड़की अनामिका और वरूण के अलावा और किसी पर भी भरोसा नहीं कर रही थी। उन दोनों के ना होने पर वो बुरी तरह से बेचैन हो उठती थी, इसलिए डॉ. प्रभात ने उन दोनों में से किसी भी एक को उसके साथ रहने के लिए कहा था। वरूण की नाईट ड्यूटी थी, इसलिए फिलहाल रात में उसके साथ
रहने की जिम्मेदारी अनामिका की थी। पिछली रात से जो कुछ भी अजीब हो रहा था अनामिका को उन सभी के बारे में जानने की प्रबल उत्कंठा हो चुकी थी, इसलिए उसे इतनी तकलीफ़ उठाने में कोई हर्ज नहीं था। कहीं ना कहीं उसके यहाँ आने का उद्देश्य इन घटनाओं से जुड़ा हुआ था, जो फिलहाल अपनी साफ शक्लों सूरत में नहीं था।

धीरे-धीरे अपने काँटों को आगे बढ़ाते हुए दूर किसी घड़ी ने रात के दो बजाए। रात के सन्नाटे में वो आवाज और भी तेज सुनाई दी। अचानक खिड़की के पर्दों को छूकर आई तेज ठंडी हवा ने अनामिका की नींद में ख़लल डाला। उसने कसमसाकर करवट बदली और फिर धीरे से अपनी ऑखें खोल दीं। बाहर हवाओं का मिजाज फिर बिगड़ा हुआ था। उसे इस समय अपनी नींद टूटने से खासी कोफ्त हुई थी। वो उठना नहीं चाहती थी, मगर हवाओं के कारण खिड़कियाँ अपनी नाराज़गी तेज आवाज में जाहिर कर रही थीं। मन मारकर वो उठी और थोड़ा झूमते हुए कदमों से खिड़की की ओर बढ़ी। स्विच पर ऊंगली फिराई तो बिजली शायद गुल थी। वैसे खिड़की बंद करने के लिए उसे इसकी जरूरत भी नहीं थी, इसलिए किसी तरह उबासी लेती हुई वो खिड़की तक पहुँची और फिर पूरी ताकत लगाकर एक बार अपनी ऑखों को खोलने की कोशिश की। इसी दरम्यान उसकी ऑखों की ज़द में कुछ ऐसा आया जो बहुत ही ख़ौफनाक था। उसकी नींद पर भर में हवा हो गई।

उसकी ऑखों के सामने एक काला साया हवा में तैर... नहीं... तैर नहीं
उड़ रहा था। उसके बड़े-बड़े पंख उस अंधेरे में भी साफ-साफ पहचान में आ रहे थे। इनके अलावा एक और चीज थी, जो साफ तौर पर नुमाया हो रही थी और वो थीं... उसकी दहकती हुई दो ऑखें। अनामिका की ऑखें हैरत से खासी बड़ी-बड़ी हो चुकी थीं, मगर उनमें ख़ौफ नाममात्र को भी नहीं था। थी तो बस एक हैरानी! किसी ऐसी चीज को देख लेने की हैरानी, जिसे देखने की उम्मीद ही ना हो।

सामने वाली आकृति भी अपने सामने बेख़ौफ़ खड़ी उस लड़की को घूर-घूरकर देख रही थी। एक अजीब सी जंग ऑखों ही ऑखों में हो रही थी, जो अनामिका के पीछे से आई एक तेज चीख से रूक गई। अनामिका ने झटके से पीछे मुड़कर देखा तो वो लड़की अपने बेड पर नहीं थी। यह देखते ही अनामिका के होश फाख्ता हो गए। वो तेजी से बेड के पास पहुँची, मगर अंधेरे में कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। भुनभुनाते हुए उसने अपना फोन निकाला और उसकी फ़्लैश लाईट ऑन की। उस रोशनी की मदद से उसने कोने में दुबकी हुई उस लड़की को देखा, जिसकी आवाज उस चीख के बाद गले में अटक चुकी थी और सारा शरीर थर-थथ्र काँप रहा था। अनामिका समझ चुकी थी कि उस लड़की की नज़रों ने भी उस ख़ौफनाक सच को देख लिया था, जिसका अहसास उसे कल से सामान्य होने नहीं दे रहा था। अनामिका तेजी से उसके पास पहुँची। उसे अपने पास महसूस करके एक बार फिर से वो उससे लिपट गई और जोर-जोर से साँसें लेने लगी। अनामिका ने वरूण को मिसकॉल दिया। पाँच मिनट गुजरते ही वरूण उस कमरे में आया और लाइट जला दी, जो शायद आ चुकी थी।

"क्या हुआ?" वरूण ने चिंतित स्वर में पूछा।

"डर गई है!" अनामिका ने आधी बात बताई।

किसी तरह उसे बिस्तर पर लिटाने के बाद वरूण ने उसे एक इंजेक्शन
लगाया, जिससे वो कुछ देर में सो गई।

"हुआ क्या था?" वरूण ने फिर से पूछा।

"सुबह जब जागेगी तो पूछ लेना। डर गई थी बस... इतना जानती हूँ।" अनामिका ने कहा।

"मुझे लगता है कि इंस्पेक्टर अंकित ने सुबह इसके सामने शहर में फैली अफवाहों के बारे में जो कहा था, वो भी घर कर गया है इसके अंदर। एक तो पहले से डरी हुई थी, इन बेकार की बातों ने उस डर में और भी इजाफा कर दिया। आइंदा हमें इस बात का ख्याल रखना होगा कि इस तरह की कोरी बकवासें इसके सामने ना दोहराई जाएँ।" वरूण ने अपनी तफ्सील बयां की।

"हम्म! सही कह रहे हो।" अनामिका ने भी अपनी सहमति जताई।

"ठीक है! मैं चलता हूँ! ख्याल रखना।" वरूण ने कहा।

वरूण के जाते ही अनामिका तेजी से खिड़की की ओर भागी। एक बार फिर हवाएँ शांत हो चुकी थीं और बाहर ख़ौफ की इबारत लिखने वाला काला साया जा चुका था। अनामिका को पूरा यकीन था कि वो उस लड़की के लिए ही वहाँ आया था। इसका मतलब था कि मौत का खेल शुरू हो चुका था। वरूण जिसे अफवाह और कोरी बकवास का नाम देकर गया था, उसे नहीं मालूम था कि उन सभी की जिंदगी उस अफवाह के बवंडर में बुरी तरह उलझने वाली थी। एक बार फिर से उन अफवाहों ने सच का लबादा अपने चारों ओर लपेटना शुरू कर दिया था।
अनामिका ने खिड़की बंद की और वापस कुर्सी पर आकर बैठ गई। उसकी ऑखों में कुछ उलझे-उलझे से अहसास तैर रहे थे। जिन सवालों ने उसे उलझा रखा था, उसके जवाब उसे हर हाल में चाहिए थे। उसे पता था कि इस रास्ते में उसे ताकत की हर कदम जरूरत पड़ेगी, इसलिए तो उसने चित्रलेखा की शक्तियों का वरण किया था। वरना एक शांति और सुकून से भरी जिंदगी किसे रास नहीं आती है! मेघा

की खोजबीन करते समय उसे मेघा के बारे में तो कुछ पता नहीं चला, अलबत्ता उसके चक्कर में वो कुछ अलग ही उलझनों और सवालों में गुम हो गई। अब खुद को खोजने के लिए एक रास्ता चाहिए था और उस रास्ते की एक झलक उसे आज दिखी थी। हालांकि उस रास्ते पर अभी भी कोहरे की परत चढ़ी हुई थी।

"क्या आशुतोष जी से बात करूं?" उसने दिल ही दिल में अपने आपसे कहा।

मगर अगले ही पल उसने दिमाग ने उसके दिल को टोका, "नहीं! नहीं! पहले उन्हें उस किताब को पढ़ने दो। हो सकता है कि उनके सफों में ही सारे जवाब मिल जाएँ।"

यह सोचते ही एक बार फिर उसकी नज़र बंद खिड़की की ओर गई और वहाँ से तफरीह करते-करते उस लड़की पर आकर टिक गई। उसे इस बात
पर हैरानी हो रही थी कि वो अभी भी उस लड़की के पीछे था। पर क्यों? और इस सवाल का जवाब उस लड़की की यादों के बंद संदूक में क़ैद था। ना जाने क्यों... पर वो उसे बड़ी ही अजीब लग रही थी। उसने एक गहरी साँस ली और फिर कुर्सी की पुश्त पर सिर टिकाकर सोने की कोशिश करने लगी, मगर ख़ुश्क होते गले ने उसे ऐसा करने नहीं दिया। प्यास की शिद्दत के साथ एक बार फिर चिढ़ लेकर वो उठी और बेड के साथ लगे साइड टेबल पर रखे बॉटल को खोलकर पानी पीने के लिए मुँह से लगाया। पानी की कुछ बूंदें उसके हलक़ तक पहुँचने से पहले ही कहीं गुम हो गईं। उसने चढ़ी हुई भौंहों के साथ उस बॉटल को ऐसे घूरकर देखा, जैसे कि उसके घूरने से वो बॉटल फिर से भर जाएगी। पर ये तो मुमकिन था नहीं, इसलिए उसके लिए बाहर वाटर कूलर तक जाने के अलावा कोई और रास्ता नहीं था। उसने बेड पर सोते वजूद पर एक निगाह डाली और फिर बाहर निकल गई। खुशकिस्मती से पानी कुछ कदमों की दूरी पर ही था। अनामिका ने वहाँ जाकर पानी पिया और फिर बॉटल में पानी भरने लगी। इस दौरान उसकी सरसरी सी नज़र सामने लगे शीशे पर गई, जहाँ से उनके कमरे का दरवाजा साफ-साफ दिखाई देता था। अनामिका की ऑखें दहशत से फैल गईं, जब उसने एक काले साए को उस दरवाजे के अंदर घुसते देखा। बॉटल उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर गया और वो बेतहाशा कमरे की ओर भागी। उसने झटके से दरवाजा खोला और पाया कि कमरा बिल्कुल शांत पड़ा हुआ था।

"कहाँ गया?" अनामिका ने दरवाजे के पीछे नज़र डालते हुए बेचैनी से कहा। मगर उस कमरे में उन दोनों के अलावा और कोई नहीं था। बेहद कोफ्त के साथ उसने कमरे का दरवाजा लगभग पटककर बंद किया और अगले ही पल तेज आवाज सुनकर वो अपनी इस हिमाकत पर झल्ला उठी। उसने सहमकर बिस्तर पर सोती हुई उस लड़की को देखा, जो फिलहाल दवा के असर से बेफिक्र नींद की आगोश में थी। राहत की साँस लेते हुए वो एक बार फिर कुर्सी की ओर बढ़ी, तो हवा के झोंके ने उसे ख़ासा परेशान कर दिया। खिड़की खुली हुई थी, जबकि उसे अच्छी तरह
से याद था कि उसने खिड़की बंद की थी। वो तेजी से खिड़की के पास गई और बाहर झांक कर देखने लगी। पर रात अपने सन्नाटे के साथ बिल्कुल ही तन्हा थी। उसने अपने दाँत पीसते हुए एक बार फिर खिड़की बंद की, जबकि उसकी नज़रों की हद के बाहर एक काली सी आकृति दीवार पर छिपकली की तरह रेंगते हुए हॉस्पिटल की छत की ओर गई और उसके किनारे पर खड़ी हो गई।

करीब एक मिनट तक वो आकृति नीचे की ओर देखती रही, फिर उसने अपने लंबे-चौड़े पंख फैलाए।

बिना कोई शक अगर उस समय उसे किसी ने दुर्घटनावश देख लिया होता तो सीधा यमलोक की यात्रा पर निकल गया होता। उस आकृति ने अपना सिर ऊपर उठाया और फिर एक लंबी छलांग लगाने के बाद अपने पंख फड़फड़ाते हुए आसमान में उड़ते हुए अंधेरों में खो गई।

"कमबख्त! पानी पीना भी मुहाल कर दिया। हे भगवान! आज रात के लिए इतना एडवेंचर काफी है। अब और नहीं!" उसने ऊपर उठाकर हाथ जोड़ते हुए कहा और फिर अपनी कुर्सी में आकर बैठ गई। वो एकटक सामने लेटी लड़की को देखने लगी, "आखिर कौन हो तुम?"

नींद उससे बुरी तरह से रूठ चुकी थी। समय बिताने की गरज से उसने अपना फोन खोला, तो लो बैटरी का सिग्नल उसे चिढ़ाने लगा।

"उफ्फ! आज का दिन.. नहीं.. आज की रात ही खराब है।" यह कहते हुए उसने साइड टेबल पर रखा चार्जर लेने के लिए हाथ बढ़ाया, मगर वो अपनी जगह से नदारत था। झुंझलाते हुए उसने झुककर नीचे देखा तो उसकी झलक उसे राहत पहुँचा गई। हाथ बढ़ाकर उसने उसे उठाया तो उसका तार किसी चीज में दबा हुआ था। अनामिका ने देखा, वो कोई किताब थी। उसने उस किताब को उठाया और तार बाहर निकाला और तुरंत अपना फोन चार्ज करने के लिए चढ़ाया। एक गहरी साँस लेकर वो एक बार फिर कुर्सी में टिक गई और अपनी ऑखें बंद की।

ऑखें बंद करते ही एक लम्हा उसकी यादों में कौंधा और उसने झटके से अपनी ऑखें खोली। उसकी ऑखें पहले तो हैरत की ज्यादती से सिकुड़ी और फिर फैलकर बड़ी-बड़ी हो गईं। वो तेजी से पलटकर नीचे झुकी और हाथ आगे बढ़ाकर उस किताब को उठा लिया। वो हाथों में उस किताब को थामे हुए फटी हुई ऑखों से देख रही थी।

"ये तो वही किताब है जो उस लड़के के पास थी। ये यहाँ क्या कर रही है?" उस किताब को उलट-पुलट कर देखते हुए अनामिका बोली। उसकी ऑखें और उसका लहजा दोनों ही हैरानी और बेयकीनी में डूबे हुए थे।
"हो क्या रहा है आखिर?" उसने एक बार फिर एक उचटती निगाह उस लड़की पर डाली। उसने उस किताब को ग़ौर से देखा।

चमड़े की जिल्द चढ़ी हुई वो एक बहुत ही पुरानी डायरी लग रही थी, जिसके कई पन्ने आपस में चिपके हुए थे, पर उन पर से वक़्त का पीलापन गायब था। अनामिका ने उसे खोलकर देखा.. तो साफ-शफ्फाक पन्नों ने उसे उलझन में डाल दिया।
"इसमें तो कुछ भी नहीं लिखा। फिर सुबह उस लड़के ने इसे मेरे हाथ से झटके से क्यों छीना था?" अनामिका ने एक बार फिर से पन्नों को पलटते हुए कहा। तभी उस डायरी का पहला पन्ना उसकी ऑखों के दरवाजे पर आ ठहरा। वहाँ कुछ लिखा हुआ था।

"मेरे जीवन की परिधि!"

"इंट्रेस्टिंग!" कहते हुए उसने वो पन्ना पलटा और हैरत का एक तेज झटका उसे हिलाकर चला गया। उस पेज में उसी लड़की का स्केच बना हुआ था, जो उसके सामने इत्मीनान से सो रही थी। उसने तेजी से अगला पन्ना खोला। सामने के सफहे पर भी कुछ पहेली सा लिखा हुआ था।

"रहने दो कुछ किस्सों को सफहों के दरमियान! खुल गए जो पन्ने... तो फिर तबाही आएगी!!"

सब कुछ अनामिका के सिर के ऊपर से गुजर गया। उसके आगे के सभी पन्ने उस लड़की की यादों की तरह ही पूरी तरह से कोरे थे।
"पर उसने इसे यहाँ रखा कब होगा? सुबह तो जब मैं इस कमरे से गई थी, तब कमरे में नर्स भी थी। उसने तो कुछ नहीं बताया। हे भगवान! लगता है कि कल मेरे लिए भी एक बेड इस कमरे में लगाना पड़ेगा।" अब उसका सिर बुरी तरह से दर्द करने लगा था। कोई सामान्य लड़की होती तो शायद अब तक सदमे से बेहोश हो चुकी होती। मगर शायद सामने वाले को अनामिका के बारे में... पता नहीं था या फिर.... शायद... पता था। जो भी हो... अभी-अभी घटी घटनाओं ने कुछ नए रास्ते जरूर खोल दिए थे, जिस पर आगे बढ़ा जा सकता था। अब बस सुबह का ही इंतजार था, अगर कोई और हैरतअंगेज वाकिया पेश नहीं आता और आज रात के लिए ऐसा और कुछ नहीं हुआ।

****

सुबह-सुबह वरूण की आवाज ने उसे जगाया। उसने कसमसाकर अपनी ऑखें खोली और कुछ देर एकटक उसके चेहरे को ही देखती रही। उसे अपनी ओर इस तरह देखते हुए देखकर वरूण की ऑखों में सपनीले भाव तैरने लगे।

"हे भगवान! अब सुबह-सुबह अपने सारे हथियारों को जरा संभाल कर रखो। अगर इस डॉक्टर को कुछ हो गया तो फिर मरीजों का क्या होगा?" वरूण शोखी भरी आवाज में बोला। यह सुनते ही अनामिका पूरी तरह होश में आई।

"वो तो एक दिन जब मेरे हाथों क़तल होगे ना, तब पता चल ही जाएगा।" अनामिका ने थोड़ा चिढ़ते हुए कहा।
"जहरबीज! जहरबीज!!" वरूण शायराना अंदाज में बोला। उसके मुँह से यह सुनते ही अनामिका ने

अपना सिर पीट लिया।

"भगवान के लिए चुप हो जाओ! वो ज़हनसीब होता है उर्दू के क़ातिल! तुम्हारी ज़बान पर आकर तो उर्दू की रूह भी काँप जाती होगी।" अनामिका थोड़ी नागवारियत से बोली।

"तो ठीक है ना! तुम सुधार दिया करो। क्या फ़र्ज़ है?" वरूण मासूम सी शक्ल बनाते हुए बोला। अनामिका ने एक बार फिर खीझ भरी नज़रों से उसे देखा। अभी वो दोनों कुछ और बोलते, उससे पहले ही एक तेज हँसी ने उन दोनों का ध्यान खींचा। वो लड़की उन दोनों की ओर देखकर बेतहाशा हँस रही थी। दोनों को ही ख्याल आया कि वे हॉस्पिटल में हैं। गले को खंखारते हुए वरूण उस लड़की की ओर बढ़ा और अपनी इज्जत संभालते हुए बोला, "देखा! हँसा दिया ना!"

उसकी बात सुनकर उस लड़की की हँसी थोड़ी सी ठिठकी। उसने सवालिया नजरों से अनामिका की ओर देखा। अनामिका ने अफसोस का इजहार करते हुए अपना सिर हिलाया।

"अरे! उसे क्या देख रही हो? ये सब तुम्हें हँसाने के लिए तो किया था हमने! कल से सहमी-सहमी सी पड़ी थी। देखो! एक मुस्कान के साथ कितनी सेहतमंद लग रही हो। है ना अनामिका!" वरूण ने अनामिका की ओर इल्तिज़ा भरी नज़रों से अपनी बात पर हामी भरने का इशारा किया।

"हाँ! ये बहुत ही स्पेशल डॉक्टर हैं! तुम्हें पता है... इनकी उर्दू से बचने के लिए मरीज खुद ही जल्द से जल्द ठीक होकर भाग जाते हैं।" वरूण की और भी फजीहत करते हुए अनामिका ने कहा। उसकी बात सुनकर वो एक बार फिर खिलखिला उठी। वरूण ने अनामिका को ऑखों ही ऑखों
में घुड़का।

"वैसे अब तो बेहतर लग रही हो। तो कुछ याद आया तुम्हें अपने बारे में!" वरूण ने माहौल का रूख बदलने की कोशिश करते हुए कहा। वरूण की बात सुनते ही एक बार फिर उसके माथे पर शिकन पड़ गए और वो एक बार फिर से उलझी-उलझी लगने लगी। वरूण और अनामिका ने एक-दूसरे की ओर देखा।

"अच्छा! एक बात बताओ! किसी परिधि को जानती हो तुम?" अनामिका ने एक अप्रत्याशित सा सवाल किया। वरूण ने भी चौंककर अनामिका की ओर देखा। वो कुछ कहता उससे पहले ही अनामिका ने हाथ उठाकर उसे चुप रहने का इशारा किया। दूसरी ओर यह सुनते ही उस लड़की के चेहरे पर कुछ पहचान के भाव आए और फिर उसने कहा, "पता नहीं! पर ये कुछ सुना-सुना सा लग रहा है।"

"श्योर नहीं हो तुम?" अनामिका उसे गहरी नज़रों से तौलते हुए बोली।

"नहीं! पर कहीं तो सुना है।" उसने भी उलझे हुए शब्दों में जवाब दिया।

"तो ठीक है! जब तक पता नहीं चलता कि ये नाम किसकी मिल्कियत है, तब तक इसे तुम्हें दे देते हैं।" वरूण बोला।

"क्या मतलब?" अनामिका के सवाल पर उस लड़की ने भी वरूण को ध्यान से देखा।

"अरे! मेरा मतलब ये है कि बिना नाम के ये गुज़ारा कैसे करेगी। ओए! ओए! कहकर तो हम बात नहीं

कर सकते ना! तो परिधि ही सही! शायद बार-बार ये नाम सुनकर इसे कुछ याद आ जाए।" वरूण ने समझदारी दिखाते हुए कहा। उसकी इस सलाह पर अनामिका ने अपनी ऑखों ही
ऑखों से उसकी पीठ ठोंकी।

"ठीक है!" उस लड़की ने भी अपनी सहमति दे दी।

"तो ये तय रहा! आज से तुम परिधि हो।" वरूण उत्साह से बोला। अनामिका और वो लड़की (परिधि) दोनों ही मुस्कुरा दिए। उसी समय दरवाजे पर हुई दस्तक ने सभी का ध्यान उस ओर खींचा।

"आ जाइए!" वरूण ने तेज आवाज में कहा। उसकी सहमति मिलते ही दरवाजा खुला और इंस्पेक्टर अंकित ने अंदर क़दम रखा। उसके हाथ में एक फाइल थी।

"अरे! इंस्पेक्टर साहब! आइए! आइए!" वरूण ने इंस्पेक्टर अंकित की ओर अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"बड़े इत्मीनान में लग रहे हैं आप डॉक्टर साहब!" इंस्पेक्टर अंकित ने वरूण पर सवाल दागा।

"वो मेरी ड्यूटी खत्म हो गई है। रात आपने कहा था कि आप सुबह आएँगे, तो आप ही का इंतजार था।" वरूण ने जवाब देते हुए कहा।

"ओह!" वरुण के जवाब पर इंस्पेक्टर अंकित ने प्रतिक्रिया दी।

"अरे! इंस्पेक्टर साहब! इसे छोड़िए! आप बताइए कि... कुछ पता चला?" अनामिका ने उम्मीद भरी आवाज में पूछा।

"कुछ अजीब सी बातें पता तो चली हैं।" इंस्पेक्टर अंकित ने सभी की तरफ नज़र डालते हुए कहा।
"कैसी अजीब बातें?" अनामिका चिहुंकी।

"एक मिनट रूकिए!" इतना कहकर इंस्पेक्टर अंकित उस लड़की परिधि के पास पहुँचा। वो उसे देखकर अभी भी थोड़ा घबरा रही थी। इंस्पेक्टर अंकित ने परिधि की ओर देखते हुए कहा, "इस फ़ाइल में कुछ तस्वीरें हैं। तुम पहचान कर बताओ कि क्या वो तीन बदमाश इसमें हैं।"

परिधि ने उलझन भरी नजरों से अनामिका की ओर देखा। अनामिका ने सिर हिला कर उसे हाँ कहने के लिए कहा। अनामिका का इशारा मिलते ही परिधि ने भी हाँ में अपना सिर हिला दिया। इंस्पेक्टर अंकित ने फाइल खोलकर उसके सामने रख दी। उसके अंदर शहर के नामी बदमाशों की तस्वीरें थीं। बाकियों के लिए तो वो तस्वीरें सामान्य थीं, मगर परिधि उन तस्वीरों को बड़ी हैरानी से देख रही थी।

"ये क्या है?" उसकी आश्चर्य से भरी आवाज आई।

"तस्वीरें हैं!" इंस्पेक्टर अंकित ने उसकी ओर हैरानी से देखते हुए कहा।

"ये कैसी तस्वीरें हैं? इतनी वास्तविक! किसने बनाई ये तस्वीरें?" उसकी आवाज में हैरानी बदस्तूर थी।

"किसने बनाई से मतलब?" वरूण ने हैरान होने में सभी का साथ देते हुए कहा।

"हाँ! किस चित्रकार ने बनाई है? ऐसी कला मैंने आज तक नहीं देखी।" परिधि ने उन तस्वीरों पर ऊंगलियाँ फिराते हुए कहा।

"हाएँ! ये पक्का अबूझमाड़ के जंगलों से निकलकर आई है। इसे फोटोज के बारे में पता नहीं है। अजीब है!" वरूण, अनामिका के कान में
फुसफुसा कर बोला। यह सुनकर अनामिका ने उसे घूरकर देखा।

"देखो! तुम बस तस्वीरें देखकर बताओ कि वो तीनों कौन थे?" इंस्पेक्टर अंकित ने मुद्दे पर आते हुए कहा। उसकी बात सुनकर परिधि ने फाइल की सभी तस्वीरों पर अपनी निगाहें डालनी शुरू की और अंततः उसने उस बंडल में उन तीनों के खूंखार चेहरे पहचान ही लिए। जब परिधि ने उन तीन तस्वीरों की शिनाख्त पर मुहर लगाई, अंकित ने थोड़ी परेशानी भरी नज़रों से पहले परिधि को और फिर उन तीनों तस्वीरों को देखा।

"क्या हुआ इंस्पेक्टर?" इस बार अनामिका ने गंभीर लहजे में पूछा।

"ये तीनों गायब हैं और उसी रात से, जिस रात की घटना में लड़की बता रही हैं।" इंस्पेक्टर अंकित ने परेशानी भरे लहजे में कहा।

"क्योंकि उस चीज ने उन्हें बेरहमी से मार डाला था।" परिधि ने अपनी बात पर वजन डालते हुए कहा।

"पर उस खंडहर मैं ऐसे खून खराबे के कोई निशान नहीं मिले हैं। अगर तुम्हारी बात सच मानी जाए... तो उस खंडहर में तो चारों और खून बिखरा होना चाहिए। पर वहाँ हमें ऐसा कुछ भी नहीं मिला।" इंस्पेक्टर अंकित ने चौंकाने वाली जानकारी दी।

"और वो लड़की?" परिधि ने बेचैनी से पूछा।

"पिछले दो दिनों में किसी भी लड़की का नाम तो अपहरण हुआ है और ना ही कोई लड़की गायब हुई है। कल का पूरा दिन इसी खोजबीन में निकल गया। पर हाथ कुछ भी नहीं लगा।" इंस्पेक्टर अंकित ने कहा।

"अगर परिधि ने उस खंडहर में इन तीनों को नहीं देखा था, तो इनकी
शिनाख़्त कैसे की?" वरूण ने सवाल दागा।

"परिधि!" इंस्पेक्टर अंकित ने चौंककर वरूण की ओर देखा।

"हमने फिलहाल इसका नाम परिधि रख दिया है।" जवाब अनामिका ने दिया।

"ओह! इसी बात ने तो हैरान कर दिया है। कहीं कुछ तो गड़बड़ हुई है। पर क्या?" एक गहरी साँस लेकर इंस्पेक्टर अंकित ने कहा। उलझनों का जाल उसके चेहरे को घेरे हुए था। अनामिका ने परिधि की ओर देखा, जिसके चेहरे पर अपनी बात को नकारे जाने की तकलीफ़ दिखाई दे रही थी। अनामिका ने सब देखा था इसलिए उसे उस पर यकीन था, पर उसकी बात पर यकीन करना अभी दूसरों के लिए आसान नहीं था। उसने नज़रें घुमाकर चोर नज़रों से उस डायरी की ओर देखा, जो अपने कोरे पन्नों में

ना जाने क्या-क्या छिपाए हुई थी। पर कुछ तो था और उसे ये भी यकीन था कि रात जो कुछ भी हुआ था, उसका ताल्लुक इस डायरी से ही जुड़ा था। क्या? इसका जवाब तो भविष्य ही देने वाला था।

अनामिका रात हुई घटना की जानकारी फिलहाल किसी को नहीं देना चाहती थी। आखिर भरोसा करता कौन? परिधि ने भी तो कोशिश की। ये एक स्वाभाविक सी बात थी। कोई अपने अंदर छिपे डर को दबाने के लिए... तो कोई खुद को आधुनिक दिखाने के लिए इन सबसे किनारा करने में परहेज नहीं करता था। मगर सच तो सच ही रहता है, चाहे उसे कितने भी पर्दों में छिपा लिया जाए और एक सच ये भी है कि कुछ सच छिपे रहें तो ही सभी के लिए बेहतर होता है। अनामिका को भी फिलहाल यही करना था। उसने अपने सामने खड़े इंस्पेक्टर अंकित और वरूण की ओर देखा, जो इस केस के बारे में बातें कर रहे थे।

"तो इंस्पेक्टर अंकित! आपको क्या लगता है? परिधि को कोई वहम हुआ है।" वरूण ने परिधि पर एक नज़र डालते हुए कहा।

"पता नहीं! एक संभावना यह भी हो सकती है कि परिधि बहुत ही ज्यादा कमजोर है। शारीरिक रूप से भी... और... मानसिक रूप से भी। हो सकता है कुछ पुरानी घटनाएँ उसके दिमाग में बैठी हुई हों, जो पूरी तरह से उसके दिमाग से इरेज नहीं हुई हों और नीम बेहोशी की हालत में अपने
दिमाग में चली उन्हीं घटनाओं को उसने सच मान लिया हो। ये भी हो सकता है कि कभी रास्ते में उन गुंडों के साथ परिधि का कोई बुरा अनुभव रहा हो शायद इसलिए उनके चेहरे इसे याद हों।" इंस्पेक्टर अंकित ने अपनी राय रखी।

"हम्म! हो सकता है।" वरूण ने सहमति में अपना सिर हिलाया।

"पर उस अजीब प्राणी का क्या?" परिधि ने आपत्ति उठाई। उसकी बात सुनकर वरुण ने अपनी सवालिया नजरें एक बार फिर इंस्पेक्टर अंकित के ऊपर डाली।

"उसके लिए भी एक तर्क है।" इंस्पेक्टर अंकित ने कहा।

"और वो क्या है?" अनामिका ने कहा।

"यही कि... हो सकता है उसने कोई हॉरर फेंटेसी मूवी देखी हो हाल फिलहाल में.... जिसका कोई डरावना दृश्य उसके जेहन में अभी तक ताजा हो।" इंस्पेक्टर अंकित ने अगली संभावना सबके सामने रखी। यह सुनते ही परिधि के माथे पर बल पड़ गए थे।

"क्या बकवास है ये!" अनामिका तिड़क कर बोली।

"नहीं! नहीं अनामिका! यह हो सकता है। मनुष्य का दिमाग एक पहेली की तरह होता है, जो अपने अंदर बहुत कुछ छुपा कर रखता है। कई चीजें हमें फौरन याद आ जाती हैं... कई चीजें याद करनी पड़ती हैं... और कई चीजें परिस्थितियों के आवेश में हमें याद आती हैं। जब हम खुश रहते हैं तब हमारी यादों में भी पुराने खुशियों भरे पल ही हावी रहते हैं और जब हम डरते हैं, तो हमारे मन की गहराइयों में दबे हुए ना जाने कितने डरावने पल बाहर आकर हमें और भी डराने का काम करते हैं। ये स्वाभाविक सी

बात है। यादें गुम हो जाने के कारण परिधि बुरी तरह डरी हुई है, इसलिए... उसका जेहन भी इसी तरह की बातों को उसके दिमाग में ताजा करने की कोशिश कर रहा है और शायद यादों के गुम होने की कश्मकश ने ही दो बुरी यादों को मिक्स कर दिया है। एम आई राइट इंस्पेक्टर? शायद आप यही समझाना चाह रहे हैं।" वरुण ने अनामिका को समझाते-समझाते इंस्पेक्टर अंकित की ओर देखा।

"एक्जैक्टली!" इंस्पेक्टर अंकित ने उत्साहित स्वर में कहा। वरूण ने अपने हाथों और सिर को झटका देते हुए अनामिका को देखा। अनामिका के चेहरे पर अनिच्छा के भाव थे, पर वो बात आगे नहीं बढ़ाना चाहती थी। उसने परिधि की ओर देखा, जो अपनी दयनीय दृष्टि से उसी की ओर देख रही थी। परिधि को पता था कि पिछली रात अनामिका ने भी उस चीज को देखा था। अनामिका ने अपनी ऑखों से ही परिधि को सांत्वना देते हुए शांत रहने का इशारा किया। पता नहीं क्यों पर अनामिका का यह इशारा भी उसे राहत दे गया था। इस बात को यहीं विराम दे देना ही सही था, क्योंकि वैसे भी ये मामला इंसानी हदों से बाहर का था।

"अ... इंस्पेक्टर अंकित! एक बात पूछनी थी आपसे।" अनामिका ने थोड़े झिझक से कहा।

"जी कहिए!" इंस्पेक्टर अंकित ने अनामिका की ओर मुखातिब होते हुए कहा।

"परिधि अब बेहतर महसूस कर रही है। मुझे नहीं लगता कि उसे अब हॉस्पिटल में रहने की जरूरत है। अगर आप अनुमति दें तो हम इसे अपने साथ घर ले जाएँ। हॉस्पिटल में इस तरह रोज-रोज रुकना मुमकिन नहीं है। वैसे भी मुझे लगता है कि घर में हमारे साथ रहेगी तो ज्यादा बेहतर महसूस करेगी।" अनामिका ने अपनी बात कही।
"हाँ, ये सही रहेगा। घर में मेरे पिताजी और मेरी बहन भी है। अनामिका भी रहेगी। हल्के फुल्के माहौल में सेहत में सुधार ज्यादा अच्छे तरीके से होता है।" वरुण ने भी अनामिका की बात का समर्थन किया।

"ठीक है! आप लोग ले जा सकते हैं, पर याद रहे कि जब तक यह केस चल रहा है, मुझे बताए बिना ये शहर से बाहर नहीं जा सकती।" इंस्पेक्टर अंकित ने चेतावनी के साथ अनुमति देते हुए कहा।

"उसकी फिक्र मत कीजिए।" अनामिका ने मुस्कुराते हुए परिधि की ओर देखकर कहा। सारी बातें सुनकर परिधि के चेहरे पर भी एक मुस्कान आ गई। सच तो यह था कि बीती रात जो कुछ भी हुआ था उस वजह से उसे इस कमरे में डर लगने लगा था। वरूण ने डॉक्टर प्रभात से सलाह-मशविरा करके डिस्चार्ज पेपर रेडी करवा लिए। अनामिका पास ही के एक दुकान से परिधि के लिए दो जोड़ी कपड़े ले आई थी। फौरी तौर पर फिलहाल यही किया जा सकता था क्योंकि उसके पहने हुए कपड़े पहनने लायक बचे नहीं थे। परिधि अभी भी सभी चीजों को उलझन से देख रही थी, मगर वो अभी और कुछ नहीं कहना चाहती थी। हॉस्पिटल से बाहर आते समय वो लोगों के साथ-साथ हर चीज को कौतूहल से देख रही थी और उसकी ऑखों का ये कौतूहल वरूण और अनामिका के लिए कौतूहल का विषय था।

"मैं कार लेकर आता हूँ।" वरुण ने अनामिका से कहा। अनामिका ने अपना सिर हिलाया।

"ऐसे क्या देख रही हो?" अनामिका ने परिधि से पूछा।

"पता नहीं! ऐसा लग रहा है जैसे कि मैं किसी और ही दुनिया में आ गई हूँ। मेरे गाँव से बिल्कुल अलग है ये सब!" परिधि की ऑखें हैरत से फटी जा रही थीं।
"क्या तुमने अभी गाँव कहा?" अनामिका ने उससे चौंककर कहा। अनामिका की बात सुनकर परिधि ने

भी अपने अल्फाजों पर गौर किया। एक सोच फिर से उसके जेहन में आकर उसे परेशान करने लगी।

"अरे छोड़ो उसे! इतना याद आया ना! धीरे-धीरे सब याद आ जाएगा। फ़ालतू में परेशान मत हो!" अनामिका ने उसे शांत करते हुए कहा। उसने भी अनामिका की बात मानते हुए उस सोच को झटके से दूर किया। तभी वरूण भी कार लेकर वहाँ आया। उस कार को देखते ही एक बार फिर परिधि हैरानी के समुंदर में गोते लगाने लगी। वो कार को ऐसे देख रही थी, जैसे कि कोई अजूबा देख रही हो। हैरान अनामिका भी उसकी हैरानी की आखिरी हद को पहचान नहीं पा रही थी। वो दोनों ऐसे ही हैरान खड़ी थीं कि वरूण ने हॉर्न बजाकर उनकी सोचों को तोड़ा।

"अ... परिधि! आओ बैठो!" अनामिका ने कार का पिछला दरवाजा खोलते हुए कहा। परिधि के दिमाग में उलझनों और सवालों का बवंडर घुमड़ रहा था, मगर उसने इस समय चुप रहना ही बेहतर समझा और कार की पिछली सीट में बैठ गई। अनामिका भी पिछली सीट में उसके साथ बैठ गई और वरूण जो अपने पहलू में अनामिका का इंतजार कर रहा था, उसने झटके से पीछे मुड़कर अनामिका को घूरकर देखा।

"क्या?" अनामिका ने कहा।

वरूण ने कुछ कहा नहीं, बस दाँत भींचे हुए हॉर्न बजाना शुरू कर दिया। अनामिका उसकी इस हरकत पर बुरी तरह झुंझलाई।

"परिधि! तुम आराम से बैठो।" कहकर अनामिका कार से बाहर निकली और जाकर सामने वाली सीट में बैठ गई। उसके चेहरे पर चिढ़ साफ-साफ दिखाई दे रही थी। मगर उसकी चिढ़ को धुंआ बनाकर उड़ाते हुए वरूण
ने अपने होंठों पर एक दिलफरेब मुस्कुराहट सजाई और कार आगे बढ़ा दी। कार में खामोशी ने डेरा जमाया हुआ था। अनामिका एक बार फिर खिड़की से बाहर देख रही थी। वरूण को पता था कि वो नाराज़ या परेशान होने पर ऐसा करती थी और ज्यादातर ऐसे समय में वो उसे छेड़ता नहीं था। अनामिका का गुस्सा तो कुछ पल में ही उड़ गया था, पर अपना भरम रखने के लिए वो बाहर की ओर ही नज़रें टिकाए रही। वरूण ने उसके तरफ की खिड़की खोल दी। वो जानता था कि अनामिका को ये पसंद है। हवा का झोंका अंदर आया और साथ-साथ एक मुस्कुराहट भी लेकर आया। अनामिका का जेहन दूसरी ओर जाता, उसी समय एक पेड़ के पीछे खड़े वजूद ने उसका ध्यान खींचा। अनामिका ने ऑखें फाड़कर देखा, वो वही था, जिसके हाथ में अनामिका ने वो डायरी देखी थी। कार के आगे बढ़ने के साथ अनामिका की नज़रें पीछे की ओर जाने लगीं, जिनका साथ उसकी गर्दन ने भी टेढ़ी होकर निभाया।

"क्या हुआ?" उस पर एक नज़र टिकाए हुए वरूण ने पूछा।

"वो लड़का!" अनामिका के मुँह से बेसाख़्ता निकला।

"कमाल है यार! मुझे छोड़कर तुम दूसरे लड़के की ओर देख रही हो।" वरूण ने थोड़े तंज से कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका ने पलटकर उसकी ओर देखा। वरूण ने अपना मुँह बना रखा था। उसे देखकर अनामिका ने अपने होंठ भींचे।

"तुम तो बात मत करो मुझसे। नाराज़ हूँ मैं!" अनामिका अपने हाथ बांधकर उसे देखते हुए बोली।

"कोई नई बात बोलो!" वरूण उसे और भी चिढ़ाते हुए बोला।

"अच्छा! और वो जो तुमने हॉस्पिटल में किया!" अनामिका ने भी अपनी
नाराजगी जाहिर की।

"तुम्हें पता है ना.... तुम्हारा पीछे बैठना मुझे पसंद नहीं।" वरूण ने साफगोई से कहा।

"अच्छा! और जब तुम्हारी बीवी आ जाएगी... तब!" अनामिका ने इस बार शरारती लहजे में पूछा।

"तो वो पीछे तुम्हारे पति के साथ बैठेगी। तुम यहीं बैठोगी! समझी!" वरूण ने उसे गहरी नज़रों से देखते हुए कहा।

"पागल हो तुम!" अनामिका ने भी उसे अपनी नज़रों से तौलते हुए कहा।

"हाँ! वो तो हूँ। कोई शक!" वरूण ने शोखी भरी नज़रों से उसे देखते हुए कहा।

"बिल्कुल भी नहीं!" अनामिका ने भी उसकी राय पर हामी भरी। उसने वरूण की ओर देखा जिसका पूरा ध्यान अब सड़क की ओर ही था। वरूण हमेशा से उसके साथ ऐसा ही था। पहले वो इन सभी बातों को हँसकर टाल जाया करती थी, पर पता नहीं क्यों.... इस बार उसका यूं हक़ जताना अनामिका को डरा रहा था। उसे एक बार फिर से झुंझलाहट होने लगी। इससे निजात पाने के लिए उसने अपनी तवज्जो अपने फोन के तरफ की। वरूण ने भी एक उचटती नज़र उसके फोन पर डाली और तभी उसे कुछ याद आया।

"ये चैतन्य कौन है?" वरूण ने अनामिका पर एक तिरछी नज़र डालते हुए पूछा।

"चैतन्य! क्यों? क्या हुआ? तुम उसे कैसे जानते हो?" अनामिका ने अपने
फोन पर से नज़रें उठाकर एक के बाद एक सवाल दागते हुए कहा।

"बस! जानता हूँ!" वरूण ने अपनी मुस्कुराहट के साथ कहा।

"वरूण!" अनामिका ने उसे घूरकर देखा।

"ओके! ओके! ठीक है बाबा! दरअसल, दो दिन पहले जब हम कल्किपुर से आ रहे थे, तो तुम्हारे फोन पर उसकी कॉल आई थी। मैं बताना भूल गया।" वरूण की आवाज थोड़ी धीमी हो गई।

"कॉल आई थी! कब?" अनामिका ने हड़बड़ाकर उसकी ओर सवालिया नजरों से देखा।

"जब... तुम सो रही थी।" वरूण ने सिटपिटा कर जवाब दिया।

"क्या करते हो यार? मैंने उसे पलटकर कॉल भी नहीं किया। पता नहीं क्या सोच रहा होगा?" अनामिका ने थोड़ा झुंझलाकर कहा। उसके आवाज की उदासी से वरूण भी अंदर तक बुझ गया। एक

फाँस दिल में कहीं जाकर चुभ गई, जिसका दर्द उसने महसूस भी किया। उसने भारी दिल से अनामिका के परेशान चेहरे की ओर देखा। अनामिका ने बेचैनी से फोन में कॉन्टेक्ट लिस्ट खोला और चैतन्य के नाम पर आकर रूक गई। उसकी ऊँगली बस उसके नाम से कुछ सें.मी. की दूरी पर थी कि उसने ना जाने क्यों... ऊँगली वापस खींच ली और फोन बंद कर दिया। उसकी इस हरकत से वरूण ख़ासा हैरान हुआ था।

"क्या हुआ?" वरूण ने पूछा।

"कुछ नहीं!" अनामिका ने अपने माथे पर ऊंगलियाँ फिराते हुए कहा और खिड़की से बाहर की ओर देखने लगी।
"सॉरी ना यार! सब भागदौड़ में मेरे ध्यान से निकल गया। तुम्हें तो सब पता है। फिर उसके कॉल के बाद ढेर सारे मैसेजेस भी आए थे, तो मुझे लगा कि उसी के होंगे। वो मैसेजेस उसके नहीं थे क्या?" वरूण ने सफाई देते हुए कहा।

"उस दिन तो आशुतोष जी के मैसेजेस आए थे।" अनामिका ने याद करते हुए कहा। अनामिका के इतना कहते ही एक तेज आवाज के साथ झटके से कार रूक गई। अनामिका ने हैरानी से वरूण की ओर देखा, जो उसे अपने चश्मे के पीछे से घूरने की पूरी कोशिश कर रहा था।

"क्या हुआ?" अनामिका की हैरतजदा आवाज आई।

"क्या.. क्या हुआ? पहले साफ-साफ बताओ कि कितने करीब पाल रखे हैं मेरे?" बनावटी गुस्से के साथ वरूण ने सवाल किया।

"करीब पाल रखे हैं!" अनामिका हैरानी-परेशानी से बोली।

"हाँ! करीब! वो होता है ना प्रतिद्वंद्वी या फिर... दुश्मन!" वरूण उसे समझाने वाले लहजे में बोला।

"हे भगवान! करीब नहीं... रकीब होता है वो।" अनामिका झल्लाकर बोली।

"हाँ, वही,, वही! जवाब दो!" वरूण भी ढीढपने से बोला।

"सबसे पहले तो... तुम उर्दू से अपनी ये रकाबत(दुश्मनी) निकालना बंद करो और दूसरी... अपनी बकवास बंद करो। मेरे दोस्त हैं वो। समझ में आई बात... ट्यूबलाइट!" अनामिका उसकी ओर झुकती हुई उस पर
चिल्लाकर बोली। उसके बिगड़े हुए लहजे और मिज़ाज ने वरूण को डरा दिया। उसके तमतमाए हुए चेहरे ने एक पल के लिए वरूण की साँसें जैसे रोक दी।

"हाँ! हाँ! समझ गया! थोड़ा प्यार से समझाओ यार। तुम तो सच में.... डरा देती हो।" वरूण अपने सीने पर हाथ रखे अपनी रूकी हुई साँसों को बहाल करते हुए बोला और फिर गाड़ी आगे बढ़ा दी।

"तुम बात ही ऐसी करते हो।" अपनी सीट पर सही तरीके से बैठते हुए वो बोली।

"आप दोनों हमेशा इसी तरह उलझते रहते हैं?" वरुण कुछ कहता उससे पहले ही पीछे की ओर से

आवाज आई। उन दोनों ने चौंककर उस ओर देखा तो उन्हें याद आया कि परिधि भी उन दोनों के साथ थी जिस की मौजूदगी को वो दोनों ही भुला बैठे थे।

"तुम्हें क्या लगता है?" वरुण ने अपनी ऑखों में शरारत भर कर कहा।

"देखो परिधि! अब जब तुम्हें हमारे साथ रहना है तो या तो ये सब देखने की आदत डाल लो या फिर इग्नोर करना सीख लो।" अनामिका ने उसे समझाइश देते हुए कहा।

"क्या करना सीख लूं?" अपनी ऑखें सिकोड़ कर परिधि ने कहा।

"ध्यान मत दो इन सारी बकवासों पर!" अनामिका ने सीधे और साफ लफ़्ज़ों में कहा।

"ओह! वैसे घर कब तक पहुँचेंगे?" परिधि ने वरूण की ओर देखकर पूछा।
"बस 15 मिनट में!" वरूण ने कहा।

"आपका घर बाहरी इलाके में है क्या?" परिधि ने खिड़की से बाहर झांकते हुए कहा।

"हाँ! पुश्तैनी मकान है। पिताजी की भावनाऍं जुड़ी हुई हैं, इसलिए छोड़ते नहीं बन रहा, वरना मैं तो शहर में रहने में यकीन करता हूँ।" वरूण ने एक ठंडी साँस छोड़ते हुए कहा।

"बकवास बात! तुम्हें पता है परिधि! वो जगह बहुत ही अच्छी है। शोर-शराबे से दूर! सुकून ही सुकून है वहाँ। तुम अगर गाँव से हो तो वो जगह भाएगी तुम्हारे दिल को और अंकल और गीता से मिलकर भी तुम्हें अच्छा लगेगा।" अनामिका ने उत्साहित होते हुए परिधि से कहा।

अभी वे सब बातें कर ही रहे थे कि तभी अचानक वरूण ने गाड़ी झटके से रोकी। कार के अचानक इस तरह रूकने से अनामिका डैशबोर्ड से टकराते-टकराते बची।

"क्या कर रहे हो? दिमाग हॉस्पिटल में छोड़कर आ गए हो क्या?" अनामिका, वरूण पर भड़कते हुए चिल्लाकर बोली।

"सॉरी! सॉरी! पापा ने एक सामान कहा था लाने के लिए। अभी याद आया। बस लेकर आता हूँ। दुकान थोड़ी पीछे रह गई है। तुम लोग जरा रूको!" हड़बड़ाकर कार से निकलते हुए वरूण ने कहा और सड़क पर तेजी से कार से उल्टी दिशा में भागा।

"ये कभी नहीं सुधरेगा।" अनामिका ने सिर हिलाकर हँसते हुए कहा।
"मैं आपको दीदी कह सकती हूँ।" परिधि ने थोड़ा झिझकते हुए अनामिका से कहा। उसके इन इसरार भरे लफ़्ज़ों को सुनकर अनामिका ने उसकी ओर देखा और मुस्कुरा कर कहा, "हाँ! क्यों नहीं!"

उसकी बात सुनकर परिधि भी मुस्कुराई। उसने एक नज़र पीछे की ओर डाली और फिर आश्वस्त होकर अनामिका की ओर देखते हुए बोली, "आप मुझे घर क्यों ले जा रही हैं दीदी? मतलब मैं आपकी हूँ कौन कि आप मेरे लिए इतनी परेशानी उठा रही हैं? उस चीज को आपने भी देखा है। मेरी वजह से कहीं उसने आपके घरवालों को नुक़सान पहुँचाया तो!"

अनामिका ने उसकी मासूमियत भरी बातों को सुनकर मुस्कुरा कर कहा, "तो क्या तुम्हें वहाँ अकेले छोड़ देती? यहाँ तुम दो लोगों के लिए परेशान हो रही हो। सोचो हॉस्पिटल में ना जाने कितनों के ऊपर मुसीबत आ सकती थी। मैं बस मुसीबत को छोटी करने की कोशिश कर रही हूँ, ताकि उससे निपटा जा सके।'

"पर भैया के पिता जी मुझे लेकर कुछ बोलेंगे नहीं कि आप मुझे वहाँ क्यों लेकर आई हैं?" परिधि ने अगली समस्या बताई।

"नहीं! उन्हें तुम्हारे बारे में सब पता है। वास्तव में उन्होंने ही तुम्हें वहाँ लेकर आने के लिए कहा है।" अनामिका ने असल बात बताई।

"ओह! पर क्यों?" परिधि मुत्मइन होते हुए बोली।

"तुम चिंता मत करो और मन में कोई बोझ भी मत रखो। तुम अच्छे लोगों के बीच जा रही हो। खुश भी रहोगी और महफूज़ भी।" अनामिका ने उसे प्यार से समझाते हुए कहा।

"मेरी तारीफ हो रही है।" दरवाजा खोलते हुए वरूण ने कहा।
"हा हा! बहलाते रहो दिल को!" अनामिका ने तंजीले लहजे में कहा। वरूण ने एक पेपर बैग अनामिका की गोद में लगभग फेंका और फिर ड्राइविंग सीट संभाल ली।

"तो चलें मोहतरमा!" अनामिका की ओर एक ऑख दबाते हुए वरूण ने कहा। वहीं उसकी सही उर्दू पर अनामिका ने हैरत से ऑखें फैलाई। परिधि ने भी हँसते हुए उन दोनों की ओर देखा। अगले पल कार अपनी मंजिल की ओर बढ़ गई। दूसरी ओर पेड़ों के बीच से झांकती हुई एक जोड़ी सर्द ऑखों की पकड़ मुसलसल उस कार पर जमी हुई थी, जिससे वो सब पूरी तरह से बेखबर थे। ये सफर अब अपने अगले पड़ाव की ओर बढ़ चला था, जहाँ और भी हमराही साथ जुड़ने वाले थे।

शहर और उसकी भीड़भाड़ को पीछे छोड़ते हुए कार एक बड़ी सी हवेलीनुमा दोमंजिला मकान के सामने पहुँची, जिसके सामने बड़ा सा गार्डन था। मकान की पुरकशिश बनावट उसकी जड़ों के गहरे होने की गवाही दे रही थी। कार जब विशाल मुख्य द्वार से आगे बढ़ने लगी, तब परिधि ने उस दरवाजे की मेहराब पर कुछ लिखा देखा, जिसे वो पढ़ नहीं पाई क्योंकि साथ में लगे पेड़ों की झुकी डालियों ने उसके अच्छे ख़ासे हिस्से ढक रखे थे।

"ये दरवाजे के ऊपर कुछ लिखा है क्या?" परिधि ने अनामिका से पूछा।

"वो! हाँ! नाम है इस घर का! ये घर वरूण के दादाजी के दादाजी ने बनवाया था.... तो उन्हीं ने रखा था। पर वैसे अब लोग इस घर को डॉक्टर विला के नाम से ही जानते हैं।" अनामिका ने जवाब दिया।

"क्यों?" परिधि ने हैरानी से पूछा।
"क्योंकि इस विला में हर पीढ़ी में एक न एक डॉक्टर पैदा हुआ ही है।" वरूण की ओर इशारा करते हुए अनामिका शरारती अंदाज में बोली।

"क्या सच में?" परिधि की मुस्कान में हैरानी मिली हुई थी।

"सामने दिखाई नहीं दे रहा है क्या तुम्हें एक नमूना!" अनामिका ने वरुण का मखौल उड़ाते हुए कहा।

"उड़ा लो जितना मजाक उड़ाना है। तुम्हें पता है ना कि तुम्हें हक है।" अर्थपूर्ण दृष्टि से अनामिका की ओर देखते हुए वरूण बोला। वरूण की बात सुनते ही अनामिका के होंठों की मुस्कान मद्धम पड़ गई और उसने सामने की ओर देखना शुरू कर दिया। वरूण भी एक शोखी भरी मुस्कराहट के साथ कार को घर की ओर बढ़ा ले गया। परिधि ने देखा कि पत्थरों से बनी मजबूत सड़क के दोनों ओर लंबे-चौड़े घास के मैदान थे, जिनमें बाहरी दीवार से लगकर कतारबद्ध अशोक के पेड़ लगे हुए थे। कई तरह के फूलों के पेड़ और पौधे माहौल में अपने फूलों से रंगीनियत भर रहे थे। इन सब सुकून-ए-निगाहों के बीच वो सफ़ेद और फिरोजी रंग में रंगी दोमंजिला इमारत बेहद आलीशान लग रही थी। समय-समय पर होने वाली मरम्मतों ने उसे वक़्त के थपेड़ों से महफूज रखा हुआ था। जल्द ही कार इमारत के सामने बने पोर्च में जाकर रूक गई। कार से बाहर निकलते ही परिधि की नज़रें चारों ओर तफरीह करते हुए हर एक चीज का जायजा ले रही थीं।

"आओ परिधि!" अनामिका ने परिधि की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा। परिधि ने उसकी ओर देखा और फिर उसकी पैरवी करती हुई उसके पीछे पीछे चल दी। बलूत की लकड़ी से बना वो एक विशाल दरवाजा था, जिसकी बारीक नक्काशी उसके बरसों के कामयाब सफर की कहानी कह रही थी। ये ऐसी पहली चीज थी जिसे परिधि ने मुस्कुराते हुए देखा था।
"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"ये कुछ जानी-पहचानी सी लग रही है।" परिधि ने कहा।

"क्या सच में!" अनामिका की आवाज में हैरानी थी।

"हाँ! पता नहीं क्यों... पर ऐसा लग रहा है कि इस तरह के दरवाजे पहले भी देखें हैं।" परिधि ने अनामिका की ओर देखते हुए कहा।

"अरे यार! हो सकता है कि उसके गाँव में देखा हो उसने या फिर... उसके खुद के घर में हों। अभी भी इस तरह के दरवाजे पुरानी हवेलियों में मिलना आम बात है। लग रहा है कि... शायद फिर किसी पुरानी याद ने दिमाग में दस्तक दी है।" वरूण ने समस्या सुलझाते हुए कहा।

"हो सकता है! पर दरवाजे तो अभी भी बंद हैं।" परिधि ने खीझी हुई मुस्कान के साथ कहा।

"कोई नहीं! आ जाएगा याद। पर... उसके बाद हमें मत भूल जाना।" अनामिका ने झूठी धमकी के साथ हँसते हुए कहा। उसकी हौसला देती हुई बातों और ऑखों ने परिधि को थोड़ी राहत पहुँचाई।

"भैया! आपके पिताजी नहीं दिख रहे हैं!" परिधि ने वरूण से पूछा।

"भैया!" वरूण ने चौंककर परिधि की ओर देखा और फिर एक नज़र अनामिका की ओर उठी। अनामिका के होंठों पर एक दबी हुई सी मुस्कुराहट थी।

"अभी तो वो ग्रीन हाउस में होंगे।" वरूण ने अनामिका पर तीखी नज़र
डालते हुए थोड़ी चिढ़ से कहा।

"कहाँ?" परिधि एक बार फिर चौंकी।

"अरे आओ ना! तुम्हें अंकल से मिलवाते हैं। वो भी तुमसे मिलना चाहते हैं।" अनामिका ने उत्साह से उसे एक ओर खींचते हुए कहा और घर के पिछले हिस्से की ओर जाने लगी। वरूण भी उनके साथ ही था।

वो उस इमारत के पीछे एक बड़ा और खुला हुआ सा हिस्सा था, जहाँ नाना प्रकार के पेड़-पौधे लगे हुए थे। उस इलाके में एक बड़ी-खुली जगह में काँच से बना हुआ एक घर जैसा कुछ था। परिधि ने उसे बड़े ही ग़ौर से देखा, जैसे कि एक बार फिर कोई अजूबा देख रही हो।

"वो क्या है?" परिधि ने उस काँच के अजूबे की ओर ऊँगली दिखाकर पूछा।

"येऽऽ! आओ तुम्हें पास से दिखाते हैं।" कहते हुए अनामिका उसका हाथ पकड़कर उसे उसके अंदर ले गई। परिधि ऑखें फाड़े चारों ओर इस तरह देख रही थी, जैसे कि वो कोई बहुत ही हैरतअंगेज नमूना हो। अंदर पहुँचते ही उसकी ऑखें बदस्तूर फटी की फटी ही रहीं। अंदर चारों ओर बड़ी ही तरतीब से गमलों में छोटे बड़े पौधे लगे हुए थे।

"तो, ये है.... हमारे अंकल का ग्रीनहाउस!" अनामिका ने अपने हाथों को फैलाकर परिधि की ओर देखते हुए कहा। दूसरी ओर परिधि उन सभी पौधों को बड़े ही ग़ौर से देखते हुए आगे बढ़ने लगी। वो उनकी पत्तियों को
छू-छूकर देख रही थी। आगे बढ़ते-बढ़ते वो एक पौधे के सामने जाकर रूक गई और जैसे उसे पहचानने की कोशिश करने लगी।

"क्या हो गया? इतने ग़ौर से क्या देख रही हो?" अनामिका ने उससे पूछा।

"ये सब तो आयुर्वेदिक औषधियों के पौधे हैं। है ना! ये शतावरी है, ये अश्वगंधा, ये घृत कुमारी और ये... ये... याद नहीं आ रहा है इसका नाम। पर ये.... बहुत ही दुर्लभ है।" यह कहकर परिधि ने वरूण और अनामिका को ख़ासा हैरान किया।

"अरे वाह! तुम्हें तो इनकी अच्छी-ख़ासी जानकारी है।" उन सभी को अपने पीछे से एक भारी-भरकम सी आवाज सुनाई दी। उन तीनों ने आवाज की दिशा में देखा तो 5 फीट 10 इंच लंबा एक रौबदार शख्सियत का मालिक उनके सामने खड़ा था। सिर के बालों में से कहीं-कहीं सफेदी के तार दिखाई दे रहे थे, जिन्हें छिपाने की कोशिश बिल्कुल भी नहीं की गई थी। तेज भरे चेहरे में रौबीली मूँछें शानदार लग रही थीं। उन्होंने हाथ में ग्लब्स पहन रखे थे। उनके एक हाथ में छोटी सी खुरपी और दूसरे हाथ में एक बाल्टी थी जिसमें खाद भरी हुई थी। परिधि ने अनुमान लगाया कि यही वरूण के पिता होंगे।

"अंकल! ये परिधि है। वही हादसे वाली। और परिधि... ये वरूण के पिताजी हैं और... मेरे अंकल!"

अनामिका ने दोनों तरफ परिचय करवाते हुए कहा। परिधि ने यह सुनते ही हाथ जोड़ते हुए उन्हें मुस्कुरा कर नमस्कार किया।

"ओह! तो आखिरकार नाम याद आ ही गया।" वरूण के पिता ने मुस्कुराते हुए कहा।

"जी नहीं! ये कामचलाऊ नाम तो हमने दिया है, फिलहाल गुजारे के
लिए।" वरूण ने हँसते हुए कहा और वो पेपर बैग उनकी ओर बढ़ा दिया, जिसमें रखा सामान उसने रास्ते से खरीदा था। वरूण के पिता ने हाथ बढ़ाकर वो बैग ले लिया।

"ओह! वैसे मेरा नाम अनंत कुमार है। डॉ. अनंत कुमार!" वरूण के पिता ने अपना परिचय देते हुए परिधि से कहा।

"आप भी डॉक्टर हैं!" परिधि ने आश्चर्य से कहा।

"मैंने बताया था ना कि इस घर में हर पीढ़ी में एक डॉक्टर है।" अनामिका ने इतनी जोर से उसके कान में कहा कि वहाँ मौजूद सभी लोगों ने सुन लिया और हँसने लगे।

"अनामिका दीदी ने बताया कि आपके कहने पर ही वो मुझे यहाँ लेकर आए हैं। मैं अहसानमंद हूँ।" परिधि ने भरे हुए गले से डॉ. अनंत से कहा।

"अरे नहीं बेटा! ऐसा नहीं कहते हैं। तुम्हारा और हमारा मिलना किस्मत में ही लिखा था, तभी तो तुम वरूण और अनामिका को मिली। वरना किसी और को भी मिल सकती थी। अब जब हमें मिली हो, तो हमारी जिम्मेदारी हो। ऐसे कैसे छोड़ देते तुम्हें! अब ज्यादा मत सोचो! अनामिका! इसे कमरे में ले जाओ बेटा। थोड़ा आराम कर ले।" डा. अनंत ने परिधि को समझाने के बाद अनामिका से कहा।

"जी अंकल! परिधि चलो!" अनामिका परिधि की ओर मुड़ते हुए बोली। परिधि भी कृतज्ञता से अपना सिर हिलाते हुए मुस्कुराई और अनामिका के साथ चल पड़ी। थोड़ा आगे बढ़ने पर वरूण और परिधि कदम से कदम मिलाकर चलने लगे। अनामिका थोड़ा सा पीछे रह गई। उसने पीछे मुडकर डॉ. अनंत की ओर देखा, जिनकी संजीदा और जाँचती निगाहें परिधि पर ही जमी हुई थीं। अनामिका के पीछे पलटते ही उनकी नज़रें अनामिका की
नज़रों से टकराई। उन दोनों की ही नज़रों में ना जाने क्या बात हुई और फिर उन्होंने वापस अपने ग्रीन हाउस का रूख किया। अनामिका भी एक ठंडी साँस भरकर घर की ओर चल पड़ी।

घर के निचले हिस्से में एक बड़ा सा हॉल, एक डाइनिंग एरिया और उससे लगा हुआ किचन था। हॉल के एक ओर स्टडी एरिया था, जो मेडिकल से संबंधित नई-पुरानी किताबों से भरा हुआ था। पूरे घर में यही एक जगह थी, जहाँ अनामिका बिल्कुल भी नहीं आती थी। सभी के कमरे पहली मंजिल में ही थे। अनामिका, परिधि को अपने कमरे में ले गई। वो उसे अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी और ना ही परिधि अकेले रहने की हालत में थी।

परिधि अपनी आदत अनुसार उस कमरे का भी बारिकी से मुआयना करने लगी। वो एक-एक चीज को कौतूहल से छू-छूकर देख रही थी। उसी समय वरूण उनके कमरे में आया और परिधि को इस तरह से देखकर अनामिका के कान में फुसफुसा कर बोला, "मुझे लगता है कि जंगल नहीं... सीधे पाताल लोक से आई है।"

"चुप!" अनामिका ने उसे झिड़का।

"और नहीं तो क्या? भला अब ऐसा कौन सा गाँव होगा जहाँ ऐसी छोटी-मोटी चीजें भी मुख्तसर नहीं।" वरूण ने एक बार फिर उर्दू का कत्ल करते हुए कहा।

"मुख़्तसर(संक्षिप्त) नहीं... मयस्सर (उपलब्ध) कहते हैं।" अनामिका ने एक बार फिर खीझ कर कहा।

"मतलब समझ गई ना! ये लो तुम्हारा सामान।" वरूण भी मुँह बनाकर बोला और परिधि के पुराने और नए कपड़ों का बैग उसकी ओर बढ़ाया।
अनामिका ने तेजी से उस बैग को पकड़ा। अनामिका की इस हरकत पर वरूण ने पहले तो झटके से खाली हुए अपने हाथों को घूरा और फिर झुकी हुई गर्दन के साथ बस पलकें उठाकर अनामिका को घूरा।

"अ... तुम्हारी नाईट ड्यूटी थी ना! तुम थक गए होगे। जाओ आराम करो।" अनामिका ने बात संभालने की गरज से कहा।

"हम्म!! रूको जरा! तुमसे तो बहुत सारी बातें करनी हैं मुझे।" वरूण ने उसे अपने चश्मे के पीछे से तौलते हुए कहा। यह सुनते ही अनामिका के चेहरे पर एक फौरी मुस्कुराहट ने कब्जा किया। वरूण के जाते ही अनामिका ने उस बैग के अंदर झांका, जिसमें कपड़ों के बीच वही डायरी बड़ी ही सफाई से छिपी हुई थी। अनामिका ने उस बैग को अलमारी के एक कोने के हवाले किया और परिधि की ओर गई, जो अब आईने के सामने खड़ी थी और ग़ौर से ख़ुद को ही देख रही थी।

"ऐसे क्या देख रही हो?" अनामिका ने उससे पूछा।

"कुछ नहीं! ऐसा लग रहा है जैसे कि एक लंबा सफ़र तय कर आई हूँ मैं।" कहते हुए परिधि ने आईने में खुद के अक्स को छुआ और अगले ही पल एक झटका महसूस कर हाथ पीछे कर लिया। उसने अनामिका की ओर देखा, जिसका ध्यान कहीं और था।

"अच्छा तुम नहा लो। बेहतर महसूस करोगी। ठीक है!" अनामिका ने उसे बाथरूम दिखाते हुए कहा और उसके दूसरे कपड़े उसके सामने रख दिए। परिधि ने हाँ में सिर हिलाया और अनामिका के साथ बाथरूम में गई। अनामिका ने उसे सब बताया और बाहर चली गई। परिधि ने दरवाजा बंद किया और सबसे पहले अपने मुँह में पानी के छींटें मारे और सामने लगे आईने में खुद को देखने लगी। कुछ पल खुद को ही घूरने के बाद उसने फिर से अपना चेहरा नीचे किया, मगर अगले ही पल उसे लगा कि शायद उसका अक्स अभी भी उसे ही घूर रहा है। उसने धड़कते दिल से अपना चेहरा ऊपर उठाया, पर सब ठीक ही लगा। वो अपनी भटकी हुई सोच को झटकते हुए वहाँ से हट गई, मगर एक बार फिर उसका अक्स उसे वहीं खड़ा मुस्कुराते हुए देखता रहा जिस पर परिधि ने ध्यान नहीं दिया।

****

वो पहली मंजिल की खुली-खुली सी बालकनी थी, जो मकान के सामने वाले हिस्से में बनी हुई थी। वहाँ से उस विला का मुख्य द्वार आसानी से नज़र आता था। सभी अपने-अपने कमरों में थे। अनामिका बालकनी में अपने फोन को कान से लगाए हुए बहुत ही गंभीरता से सामने वाले की बातें सुन रही थी। सामने आशुतोष था, जिसने कुछ देर पहले ही चित्रलेखा की उलझी हुई कहानी पढ़ी थी और अब पहले से भी ज्यादा उलझ गया था।

"आपका मतलब है कि रक्त पिशाचिनी की शक्तियों वाला खंजर गायब है। ये अजीब है!" अनामिका ने आशुतोष की सारी बातें सुनने के बाद बहुत ही धीमी आवाज में कहा।

"और इस हर्षित और चित्रा ने भी उलझाकर रख दिया है। शायद उन दो पन्नों में ही वो सारे जवाब थे, जिसे फाड़ा गया है।" सामने से आशुतोष की झुंझलाहट भरी आवाज आई।

"पन्ने तो तांत्रिक श्रेष्ठ ने ही फाड़े होंगे। आखिर उनकी किताब थी वो।" अनामिका ने कहा।
"तो अब इन सारे सवालों का जवाब कैसे मिलेगा? आशुतोष की बेचैनी भरी आवाज आई।

"शायद मुझे पता है!" अनामिका बोली।

"कैसे?"

"ये सारी कहानी कल्परूप गाँव से शुरू हुई है और वहीं से जुड़ी है। एक हजार साल पहले उस पिशाचिनी को वहीं कैद किया गया था। हमारे सवालों के जवाब भी शायद वहीं मिलेंगे।" अनामिका ने कहा।

"तुम्हारा मतलब है कि एक और सफर पर निकलना है।" इस बार आशुतोष की उत्साहित आवाज आई।

"हाँ!"

"अभी कहाँ हो तुम?"

"दोस्त के पास आई हूँ।" अनामिका ने कहा, तभी उसकी नज़र सामने खड़ी हुई परिधि पर पड़ी। " हैलो परिधि! अब कैसी हो? आशुतोष जी! मैं बाद में बात करती हूँ आपसे।" कहते हुए अनामिका ने कॉल कट कर दिया। परिधि ने सिर हिलाया और उसके पास आ गई। इतने दिनों से साथ रहने के बाद भी अनामिका ने आज पहली बार उसे ग़ौर से देखा था। वो 19-20 साल की एक नाज़ुक सी लड़की थी। कद करीब 5 फीट 3 इंच, रंग तांबई और ऑखें गहरी काली थीं। बाल लंबे, घने और हल्के भूरे रंग के थे। नहाने के बाद वो थोड़ी बेहतर दिखाई दे रही थी।

"तुम्हें भूख लगी होगी। चलो!" अनामिका ने उसका हाथ पकड़ा और नीचे
जाने के लिए बढ़ी उसी समय वरूण वहाँ आया।

"चलो! नाश्ता किया जाए।" वरूण ने उतावलेपन से कहा। साफ जाहिर हो रहा था कि उसे बहुत भूख लगी थी। अनामिका और परिधि उसके साथ आगे बढ़े उसी समय अनामिका का फोन बजा। अनामिका ने फोन के स्क्रीन में देखा और उसके चेहरे के बदलते रंग उसकी ऑखों में भी उतर आए। वरूण ने

उसकी ओर देखा।

"तुम लोग चलो! मैं आती हूँ।" अनामिका ने कहा।

वरूण ने उसके फोन को घूरकर देखा और फिर धमकी भरे लहजे में बोला, "जल्दी! वरना तुम्हारा ये फोन आज शहीद हो जाएगा।"

अनामिका ने सिर हिलाया। वरूण, परिधि के साथ आगे बढ़ा ही था कि पीछे से आई आवाज ने उसके पैर रोक दिए।

"चैतन्य! कैसे हो?"

वरूण ने पीछे मुड़कर अनामिका की ओर देखा और उसके चेहरे को पढ़ने की कोशिश की। उसकी समझ में तो कुछ नहीं आया, पर अपने दिल को सुलगता हुआ जरूर महसूस किया उसने। एक गहरी साँस लेकर छोड़ते हुए वह परिधि के साथ वहाँ से चला गया।

"ठीक ही हूँ!" चैतन्य का मुख्तसर सा जवाब आया।

"वो.... तुम्हारी... कॉल के बारे में वरूण बताना भूल गया था। अभी...
कुछ देर पहले ही बताया उसने।" अनामिका ने अपनी सफाई देते हुए कहा।

"हाँ! अब तो मैं कॉल करूंगा, तभी तुमसे बात हो सकेगी।" चैतन्य ने शिकायती लहजे में कहा।

"नहीं! नहीं! ऐसी बात नहीं है। बस... वो कुछ..."

"रहने दो! चलो ठीक है ना! ऐसे याद नहीं आता तो... दूसरों के बहाने ही याद कर लिया करो या फिर.... इतनी जल्दी कौन भूलता है यार!" चैतन्य का लहजा ख़ासा संजीदा और शिकायत भरा था।

"नाराज़ हो!" अनामिका ने बहुत ही संभले हुए लहजे में कहा।

"नहीं.... और यदि हूँ भी तो क्या फर्क पड़ता है!" चैतन्य के हमले मुसलसल जारी थे।

"अच्छा ठीक है! सॉरी! सॉरी, सॉरी, सॉरी! आइंदा ख्याल रखूंगी। अभी के लिए तो माफ कर दो।" अनामिका के लहजे में इल्तिज़ा थी।

"ठीक है! माफ किया! पर एक बात बताओ!" चैतन्य ने कहा।

"क्या?"

"मुझे मेरा जवाब कब मिलेगा?" चैतन्य की इसरार भरी आवाज आई। अनामिका एक पल को चुप पड़ गई।

"अनामिका!"
"हाँ!"

"बोलो ना!"

अनामिका ने कुछ कहना चाहा, उसी समय उसके फोन पर किसी और का फोन आने लगा। उसने स्क्रीन में देखा। वरूण कॉल कर रहा था। उसने फोन फिर से कान में लगाया और सोचकर बोली, "अगली मुलाकात में!"

"सच कह रही हो! पक्का ना!" चैतन्य की खनकती हुई आवाज अनामिका को कहीं अंदर तक उतरती महसूस हुई।

"हाँ! पक्का!"

"मैं.... इंतज़ार करूंगा!" चैतन्य की आवाज कुछ भारी सी महसूस हुई।

"अच्छा! वो.... सब नाश्ते पर इंतजार कर रहे हैं। मैं चलती हूँ। बाय!" एक बार फिर वरूण की कॉल आने पर अनामिका ने कहा।

"बाय!"

अनामिका ने कॉल कट की और फिर तेजी से सीढ़ियों की ओर बढ़ गई। वो डायनिंग टेबल के पास पहुँची, तो धुँआ-धुँआ चेहरे के साथ वरूण को प्लेट और चम्मच के साथ खेलते देखा। वो चुपचाप उसके बगल वाली कुर्सी में जाकर बैठ गई। वरूण ने उसकी तरफ देखे बिना सैंडविच की प्लेट अपने पास खींची और एक सैंडविच उठाने के बाद वो प्लेट अनामिका की ओर बढ़ा दी। अनामिका ने भी चुपचाप एक सैंडविच उठाया और खाने लगी। उसने परिधि की ओर देखा। वो भी तल्लीन होकर नाश्ता कर रही थी। उसके चेहरे पर अब एक इत्मीनान दिखाई दे रहा था।
"अंकल!" अनामिका ने पूछा।

"वो नाश्ता कर चुके हैं।" वरूण ने कहा। अनामिका ने उसके लहजे की खुश्की को महसूस कर लिया था। उसे समझ आ गया था कि वरूण नाराज था। उसने फिलहाल कुछ नहीं कहा। नाश्ता करते ही वरूण उठकर जाने लगा। उसे जाते देखकर अनामिका ने भी अपनी प्लेट आगे की और उसके पीछे गई।

"वरूण! मेरी बात सुनो!" अनामिका ने उसे उसके कमरे के बाहर पकड़ा।

"क्या है?" वरूण ने रूखे लहजे में कहा।

"अब तुम्हें क्या हुआ?" अनामिका ने शिकायत दर्ज की।

"कुछ नहीं!" वरूण ने अपना हाथ झटकते हुए कहा और अंदर जाने लगा।

"रूको तुम! इधर आओ!" कहते हुए अनामिका उसे घसीटते हुए बालकनी में ले गई।

"हाँ! अब बोलो!" कमर में हाथ रखे उसने सख़्ती से कहा।

"क्या बोलूं?" वरूण भी तेज आवाज में बोला।

"वरूण!" अनामिका की आवाज के साथ ऑखों में भी हैरानी थी।

"देखो अनामिका! तुम्हें पता है कि... एक तुम्हारे अलावा और कोई दोस्त नहीं है मेरा। पर... जब तुम दूसरों के लिए मुझे इग्नोर करती हो, तो मुझसे
बर्दाश्त नहीं होता है।" वरूण फट पड़ा।

"पर मैंने तुम्हें कब इग्नोर किया?" अनामिका ने नर्मी से पूछा।

"मैं तुम्हें तीसरी बार कॉल करने वाला था, जब तुम डाइनिंग टेबल पर पहुँची।" वरूण ने चिढ़ी हुई आवाज में कहा।

"मैं बात कर रही थी वरूण!" अनामिका ने वरूण को समझाने की कोशिश करते हुए कहा।

"एक बात याद रखो! मैं अपना दोस्त किसी को भी चुराने नहीं दूंगा। कभी भी नहीं।" वरूण की आवाज में एक दीवानापन था। उसने अपनी बात कही और वहाँ से तेज़ी से अपने कमरे में चला गया।
अनामिका एक बुत के मानिंद उसे बस देखती रह गई। वो कश्मकश के ऐसे भँवर में फँस चुकी थी, जिससे निकलने का कोई भी रास्ता उसे दिखाई नहीं दे रहा था। किसी तरह खुद को संभालते हुए वो एक बार फिर नीचे की ओर चल दी। अभी वो सीढ़ियाँ उतर ही रही थी कि एक बार फिर उसका फोन बजा। उसने देखा कि इंस्पेक्टर अंकित का फोन आ रहा था।

"जी, इंस्पेक्टर साहब!" अनामिका ने कहा।

"उस खंडहर से एक लॉकेट मिला है। मुझे लगा कि शायद परिधि का हो।" इंस्पेक्टर अंकित ने कहा।

"ये तो वही बता सकती है।" अनामिका ने कहा।

"मैं पास में ही हूँ। कुछ देर में आता हूँ।" इंस्पेक्टर अंकित ने कहा।

"जी!"
करीब 15 मिनट के बाद इंस्पेक्टर अंकित आए और एक लॉकेट अनामिका और परिधि को दिखाया। वो सोने से बना हुआ सामान्य सा लॉकेट था। परिधि ने उसे देखा, पर पहचान नहीं पाई। अचानक अनामिका ने इंस्पेक्टर अंकित से वो लॉकेट मांगा। उन दोनों से नज़र बचाते हुए उसे अपनी मुट्ठी में दबाया और अपनी ऑखें बंद की। एक नाम उसके दिमाग की गहराईयों में सुनाई दिया।

"सृष्टि!"

परिधि के इंकार के बाद इंस्पेक्टर अंकित वहाँ से वापस हो गए। परिधि एक बार फिर से खोई-खोई सी लगने लगी थी। ना जाने क्यों... अनामिका को ऐसा महसूस हुआ कि वो इंस्पेक्टर अंकित के सामने थोड़ी सहम सी जाती थी। वैसे सहमी तो वो हमेशा ही रहती थी, मगर अनामिका के साथ वो सामान्य ही दिखा करती थी। ऐसा लगता था कि अपने आसपास जो भी उसकी ऑखें देख रही थी, उसके वजूद पर उसको रत्तीभर भी यकीन नहीं था। उसकी ऑखें कभी भी उसकी जुबान से मेल खाती दिखाई नहीं देती थीं। पर अपनी भूली हुई यादों के साथ वो किसी से भी ज्यादा बहस नहीं कर सकती थी।

"क्या कर रही हो परिधि?" अनामिका ने फूलों को सहलाती हुई परिधि से पूछा। अचानक पीछे से आई आवाज ने परिधि को डरा दिया। वो हड़बड़ाकर पीछे हटी, जिससे उसके पैर आपस में ही उलझ गए और वो
बस गिरने ही वाली थी कि अनामिका ने आगे आकर उसे पकड़ लिया।

"क्या कर रही हो परिधि?" इस बार अनामिका की आवाज में सख़्ती थी।

"माफ कीजिए! मैं डर गई थी।" परिधि ने सहमी हुई आवाज में कहा।

"इतना क्यों डरती रहती हो तुम? किससे डरती हो?" अनामिका ने उसे गहरी नज़रों से देखते हुए पूछा। परिधि ने एक नज़र उस पर डाली और फिर नज़रें नीचे करके बोली, "मुझे नहीं पता। कुछ भी नहीं पता! बस.... ये सब बहुत ही अजीब लगता है मुझे... किसी सपने की तरह। जैसे कि... जैसे कि किसी और ही दुनिया में आ गई हूँ मैं! ऐसा लगता है जैसे कि.... इस दुनिया से मेरा कोई रिश्ता ही नहीं है।"

"ऐसा लगता है तुम्हें! पर क्यों?" अनामिका ने उसी तरह गहरी निगाहों के साए में उससे पूछा। परिधि ने कोई जवाब नहीं दिया।

"अनामिका!"

अनामिका अभी कुछ और कहती, उससे पहले ही एक आवाज ने उन दोनों की बातों में खलल डाल दिया। दोनों की ही नज़रें आवाज की दिशा में गई। सामने एक सॉवली सी गोल चेहरे वाली एक लड़की खड़ी थी, जो चेहरे से थोड़ी गंभीर दिखाई पड़ रही थी। मध्यम लंबाई के काले बाल सलीके से पीछे पोनीटेल की शक्ल में बांधे हुए थे।

"अरे गीता! तुम! तुम कहाँ से आ रही हो?" अनामिका उस लड़की से मुखातिब होते हुए बोली।

"बस! कोचिंग सेंटर गई थी। आज छुट्टी है, तो सर से पूछकर सुबह का बैच ज्वाइन कर लिया था।" गीता ने हल्की मुस्कुराहट के साथ कहा और
फिर अनामिका के चेहरे के पीछे अपनी सिकुड़ी हुई ऑखों से झांकते हुए सहमी खड़ी परिधि को देखा। उसकी नजरों का पीछा करते हुए अनामिका पीछे मुड़ी और फिर परिधि पर एक मुस्कान डालते हुए बोली, "ये परिधि है! हमारे साथ आई है। कुछ दिन हमारे साथ ही रहेगी।"

"ओह! हैलो परिधि!" गीता ने आत्मीयता भरे स्वर में कहा। मगर परिधि ने असमंजस से अनामिका की ओर देखा।

"ये गीता है। वरूण की छोटी बहन!" अनामिका ने परिधि की ऑखों के सवाल का जवाब देते हुए कहा। उसका परिचय मिलने के बाद भी परिधि ने गीता को ऊपर से नीचे तक अपनी नजरों से तौला और फिर मुस्कुराते हुए धीरे से अपना सिर हिला दिया।

"गीता!"

अचानक घर की ओर से एक आवाज आई, जिससे सभी का ध्यान उस ओर चला गया। वहाँ एक लड़की खड़ी थी। अनामिका की ऑखों में अनजानेपन के भाव आए। गीता ने उसे इशारे से पास बुलाया। वो करीब 5 फीट 6 इंच लंबी एक सांवली सी आकर्षक लड़की थी। उसकी भूरी बड़ी-बड़ी ऑखें बोलती हुई सी लग रही थी। उसने अपने काले घने बालों का लापरवाही से जूड़ा सा बनाया हुआ था। जिससे कुछ लटें बाहर निकलकर हवा के साथ उसके गालों पर रक्स(dance) कर रही थीं।

"ये सृष्टि है! हम दोनों कोचिंग में साथ हैं। उसे कुछ नोट्स चाहिए थे, तो साथ आई है।" गीता ने उस लड़की का परिचय देते हुए कहा।

"ओह! हैलो सृष्टि!" कहते हुए अनामिका ने अपना सीधा हाथ उसकी ओर बढ़ाया। सृष्टि ने एक नजर उसके बढ़े हुए हाथ पर डाली और फिर कुछ सोचते हुए अपना सीधा हाथ बढ़ा कर उसे थाम लिया। ना जाने
क्यों.... पर उसका स्पर्श अनामिका को एक झटका सा दे गया। उसने उस झटके के अहसास से उसका हाथ तुरंत छोड़ा और उसकी ओर हैरानी से देखने लगी।

"अच्छा हम लोग चलते हैं। बाद में मिलते हैं परिधि!" पहला वाक्य अनामिका और दूसरा वाक्य परिधि से कहते हुए गीता बोली और फिर सृष्टि के साथ घर की ओर चल दी। अनामिका की ऑखों में जाने-पहचाने से अहसास उभरने लगे।

"सृष्टि! ये नाम कुछ सुना-सुना सा लग रहा है। मगर कहाँ? कहाँ?" खुद से ही सवाल करते-करते अनामिका का ध्यान अपने हाथ पर गया, जहाँ सृष्टि के स्पर्श से उसे एक झटका सा लगा था और तभी उसे याद आया,

"सृष्टि! हाँ... सृष्टि! यही नाम तो मेरी चेतना में उभरा था, जब मैंने उस लॉकेट को हाथ में पकड़ा था। पर... ये कैसे हो सकती है? नहीं! नहीं! सृष्टि नाम की तो ना जाने कितनी लड़कियाँ होंगी। कोई जरूरी तो नहीं कि ये वही हो। पर उसे छूकर ऐसा अजीब सा अहसास क्यों हुआ?" अनामिका का जेहन सवालों से भरी गया था।

"क्या हुआ दीदी?" परिधि की आवाज ने अनामिका की तंद्रा तोड़ी।

"अ... कुछ नहीं! चलो!" अनामिका ने परिधि को अंदर चलने का इशारा किया। परिधि उसके साथ - साथ घर की ओर चल पड़ी। वे लोग घर के मेन गेट से कुछ ही दूर थे कि अचानक अनामिका को एक खटका सा लगा। वो तेजी से पीछे पलटी और उसकी नज़रें चारों ओर दौड़ने लगी। कुछ तो था जो सही नहीं था और आखिरकार वो उसकी नज़रों की ज़द में आ ही गया। वो वही था... डायरी वाला लड़का। पूरी तरह काले कपड़ों में अपने वजूद को लपेटे हुए वो सबसे बाहरी गेट के बाहर खड़ा था। अनामिका को ऐसा लगा जैसे कि हवा का एक सर्द झोंका उस लड़के को छूकर सीधा

उसके शरीर से टकरा गया। एक बर्फीला अहसास उसके शरीर के रगों में बहने लगा और उसके मुँह से सिसकारी सी निकल गई।

"दीदी क्या हुआ?" परिधि ने उसकी हालत देखकर परेशानी से पूछा।

"कुछ नहीं! तुम चलो अंदर!" अनामिका परिधि का हाथ पकड़कर तेजी से घर के अंदर भागी। वो नहीं चाहती थी कि परिधि उसे देखकर फिर से परेशान हो जाए। ये समय उससे उलझने का बिल्कुल भी नहीं था। घर के दरवाजे के अंदर पहुँचते ही उसने राहत की साँस ली और पीछे मुड़कर देखा। वो जा चुका था।

"चाहता क्या है ये लड़का? कहीं ये उस प्राणी का साथी तो नहीं। पर ये कैसे हो सकता है! अब शांत नहीं बैठा जा सकता है। बात करनी ही पड़ेगी। पता नहीं ये सामान भी कब आएगा?" अनामिका खुद में बड़बड़ाती हुई बोली। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कि वो चारों ओर से अनजानी परेशानियों से घिरती जा रही थी और अब इसे दूर करना बहुत जरूरी हो गया था।

****

एक अच्छी नींद के बाद वरूण जब जागा तो खुद को पहले से बेहतर महसूस कर रहा था। अनामिका के ऊपर आया गुस्सा भी हमेशा की तरह उड़न-छू हो चुका था। उसने घड़ी की ओर देखा। दोपहर के डेढ़ बजने वाले थे। उसने तेजी से बिस्तर छोड़ा और बाथरूम की तरफ भागा। आज फिर उसकी नाइट ड्यूटी थी। नहाने के बाद वो तेजी से अनामिका के कमरे की
ओर भागा। वो कमरे में बिना किसी सूचना के घुसने ही वाला था कि उसे याद आ गया कि इस समय उस कमरे में परिधि भी थी। इसलिए तमीज का मुजाहिरा करते हुए उसने बड़ी ही नज़ाकत से दरवाजे पर दस्तक दी।

"आ जाइए!" अंदर से आवाज आई। परिधि की आवाज सुनकर वरूण ने दरवाजा खोला और पहले अंदर की ओर झांका। अंदर तीन लड़कियाँ बैठी तो थीं, मगर उनमें अनामिका नहीं थी। तीसरी लड़की उसकी पहचान के बाहर की थी।

"ओह! अनामिका कहाँ है?" वरूण ने बेचैनी से चारों ओर देखते हुए कहा।

"उसका कूरियर आया है, तो लेने गई हैं।" गीता ने लापरवाही से कहा।

"ठीक है! चलता हूँ मैं!" कहते हुए वरूण जाने के लिए पलटा। मगर मुड़ते-मुड़ते उसकी नज़र आइने के पास खड़ी उस लड़की पर पड़ी, जो खुद से ही बेगानी सी खड़ी हुई थी। उस पर नज़र टिकाए हुए ही वो तेजी से दरवाजे की ओर बढ़ा और अगले ही पल एक तेज आवाज कमरे में गूंजी,

"आउच!"

और फिर अगले ही पल वरूण अपनी नाक और अनामिका अपना सिर पकड़कर खड़े उसे सहला रहे थे।

"देखकर नहीं चल सकता। पता नहीं ध्यान कहाँ रहता है तुम्हारा?" अनामिका बेसाख्ता चिल्ला पड़ी।

"सॉरी! सॉरी यार!" अनामिका को दर्द से तिलमिलाते देख कर वह अपना
दर्द भूल गया और उसके माथे पर हाथ रखकर उसे दबाने लगा। अनामिका ने उसे घूरकर देखा और झटके से उसके हाथ को दूर किया।

"कहा ना सॉरी!" इस बार वरूण भी तिलमिलाया। अनामिका अपना सिर सहलाते हुए अंदर आई और सृष्टि की ओर देखा, जो आइने के पास खड़ी उन दोनों को देख रही थी।

"वहाँ अकेली क्या कर रही हो?" अनामिका उसे संशय भरी नज़रों से देखते हुए बोली।

"ये... पेन गिरकर यहाँ आ गया था।" सृष्टि ने एक पेन उन सब को दिखाते हुए कहा।

"अनामिका! खाना निकाल दो यार! बहुत भूख लगी है मुझे।" वरूण याचना भरी आवाज में बोला।

"तो मुझे क्यों बोल रहा है? जाकर खा ना!" अनामिका उसे मुँह बनाकर देखते हुए बोली। वरूण ने सबको एक नज़र देखा। सभी उन दोनों को इग्नोर करते हुए अपने में मग्न थे। वरूण ने होंठ भींचकर अनामिका की कलाई पकड़ी और अपने साथ खींचकर ले गया। अनामिका इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थी।

"क्या कर रहा है? हाथ छोड़!" अनामिका ने गुस्से से उसका हाथ झटकते हुए कहा।

"क्या हुआ है अनामिका? ऐसे वियर्ड बिहेव क्यों कर रही हो?" वरूण ने उसे सवालिया नज़रों से देखते हुए पूछा।

"क्या हुआ है? कुछ तो नहीं!" अपनी कलाई को मसलते हुए अनामिका
बोली।

"नहीं! कुछ तो हुआ है। हम दोनों बचपन से साथ हैं। एक-दूसरे के दोस्त हैं। एक-दूसरे को समझते हैं। पर पता नहीं क्यों... ऐसा लग रहा है, जैसे कि तू बदल गई है। तू मेरी अनामिका नहीं है। किसी और की...." वरूण भारी दिल से बोला। वरूण की बात सुनकर उसे एक धक्का सा लगा। ऐसा लगा जैसे कि वरूण ने उसके दिल के चोर को पकड़ लिया हो।

"तुझे भी पता नहीं क्या-क्या लगता है। चल, खाना खा ले!" अनामिका नज़रें चुराते हुए बोली और नीचे जाने वाली सीढ़ियों की ओर बढ़ गई।

"हुँह! अब तो बातें भी ऑखें चुराकर करने लगी है।" वरूण ने भरे गले से कहा और उसके पीछे चल दिया।

थोड़ी ही देर में वे दोनों डाइनिंग टेबल पर बैठे थे। वरूण चुपचाप अपना खाना खा रहा था। अनामिका ने उसे इंस्पेक्टर अंकित के आने की बात बताई।

"अच्छा! और कुछ बताया?" वरूण ने जिज्ञासा से पूछा।

"बस उस लॉकेट के बारे में ही पूछा। पर परिधि ने इंकार कर दिया।" अनामिका बोली।

"हो सकता है कि वो परिधि का ही हो। उसे पहले का कुछ याद तो है नहीं!" वरूण ने अनामिका की ओर देखते हुए कहा और निवाला मुँह में डाल लिया।

"ये भी तो हो सकता है कि ये उसी लड़की का हो, जिसके बारे में परिधि ने बताया था।" अनामिका ने वरूण की बात काटते हुए कहा।
"हो सकता है। पर ऐसी किसी लड़की के बारे में कोई पता भी तो चलना चाहिए। इंस्पेक्टर ने भी इससे इंकार ही किया है।" वरूण ने अनामिका की बात काटी।

"हो तो कुछ भी सकता है।" अनामिका ने कहा।

"वो नहीं मिलेगी! उसने उसे भी मार दिया होगा। वो तो... बस मौत देना जानता है।" परिधि की बुरी तरह काँपती हुई आवाज आई। अनामिका और वरूण दोनों ने ही चौंककर आवाज की दिशा में देखा। उसकी आवाज ही नहीं बल्कि पूरा शरीर ही काँप रहा था। इससे पहले कि वो लड़खड़ाकर गिर जाती अनामिका ने आगे बढ़कर उसे थाम लिया और फिर उसे सोफे में बिठाया। वरूण उसकी ये हालत देखकर एक बार फिर से सोच में पड़ गया।

"क्या सोच रहे हो?" परिधि को पानी का गिलास देते हुए अनामिका ने वरुण से पूछा।

"यही कि... परिधि वहाँ कैसे पहुँची? अकेले तफ़रीह करने तो गई नहीं होगी। मगर इसके कहे अनुसार वो बदमाश भी इसे नहीं जानते थे। पर कोई तो जरूर होगा, जिसने इसे इतनी चोट पहुँचाई होगी और ऐसा क्या हुआ कि ये सारी बातें भूल गई है?" वरूण ने अपने दिमाग में घुमड़े सवालों को बाहर निकाला।

"ये तो पता करना पड़ेगा।" अनामिका ने अपनी तरफ से पल्ला झाड़ते हुए कहा।

"हम्म! आज रात थोड़ा सावधान रहना!" वरूण ने कहा।
"किससे?"

"मैं परिधि की बात कर रहा हूँ। वो डर जाती है ना रातों में! मैं भी नहीं रहूंगा। तो तुम सभी की फ़िक्र लगी रहेगी।" वरूण ने अपनी चिंता व्यक्त की।

"फिक्र मत करो! अंकल तो हैं ना!" अनामिका लापरवाही से बोली। वरूण ने भी अनामिका की बात पर हामी भरी।

पूरा दिन इसी उधेड़बुन में निकल गया, मगर और कोई संदिग्ध गतिविधि नहीं हुई। मौका देखकर अनामिका ने आशुतोष को फोन करके सारी जानकारी दे दी। शाम के साथ बजते ही वरूण हॉस्पिटल के लिए निकल गया। सभी ने रात का खाना खाया और अपने-अपने कमरों में चले गए। सभी नींद की आगोश में थे, मगर अनामिका को नींद नहीं आ रही थी। उसने परिधि की ओर देखा, जो बेसुध सोई हुई

थी। वो उठी और फिर बिना आवाज किए कमरे से बाहर आ गई।

वो रात का ना जाने कौन सा पहर था। अनामिका बालकनी में खामोशी ओढ़े ख्यालों में गुम थी। परिधि हर पल के साथ उसके लिए रहस्य की एक नई इबारत लिख रही थी। यादों के गुम हो जाने की बात हटा दें, तब भी वो बहुत ही पेचीदा जेहन-ओ-शख़्सियत की मालिक जान पड़ रही थी। एक अजीब सा प्राणी उसके पीछे पड़ा हुआ था। क्यों? इस सवाल ने उसे हर पल में उलझाया हुआ था। उसी समय उसे किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। उसकी नज़रें तेजी से उस ओर घूमी। कोई सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर ही आ रहा था।

"आ गए शायद!" अनामिका ने खुद से कहा और आवाज की दिशा में बढ़ गई। वो सीधे आगे ही बढ़ रही थी, जब अपने कमरे के आगे से गुजरते हुए उसकी नज़र भटककर खुली खिड़की से अंदर चली गई और उसके पैर
बस जम कर रह गए।

अंदर का नज़ारा नाकाबिले यकीन था। परिधि बिस्तर पर पहले की तरह ही बेसुध सोई हुई थी, मगर.... उसके सामने रखा आदमकद आईना कोई और कहानी कह रहा था। अनामिका ने अपनी फैली हुई ऑखों से उस आईने के अंदर से परिधि के अक्स को उसे घूरकर देखते हुए देखा। यह देखते ही अनामिका की साँसें भारी होने लगी। खतरा उसे सामने से साफ-साफ दिखाई दे रहा था। उसने दरवाजे की ओर कदम बढ़ाए ही थे
कि पीछे से पंखों के फड़फड़ाने की आवाज ने उसके शरीर में सिहरन पैदा कर दी। एक गहरी साँस छोड़कर वो पीछे पलटी। कोई भी नहीं था। बस रात की खामोशी अपना चादर फैलाने हुए थी। मगर आवाज तो उसने सुनी थी। वो एक-एक कदम फूंकते हुए आगे बढ़ी और बढ़ते-बढ़ते खुली बालकनी में आ गई। वो चारों ओर देख ही रही थी कि तभी एक बार फिर वही आवाज कानों में गिरी। वो तेजी से आगे बढ़ी और रेलिंग को पकड़कर आगे झुकते हुए ऊपर की ओर देखने लगी। वो नीचे गिरते-गिरते बची, जब उसने कोई काली सी चीज बाहरी दीवार पर फिसलती हुई देखी। अभी वो अनुमान लगा ही रही थी कि उस चीज ने अपने पंख खोले और उसके चेहरे के सामने से उड़ता हुआ आसमान में जाकर ठहर गया। एक बार फिर ऑखों से यलगार होने ही वाला था कि तभी वो आकृति तेजी से पंख फड़फड़ाते हुए आसमान में खो गई। अनामिका की ऑखें सिकुड़ी और अगले ही पल उसने अपने पीछे किसी को महसूस किया।
वो इत्मीनान से पीछे पलटी।

"आप!"

"हाँ मैं!"

वरूण के पिता अनंत कुमार, अनामिका के सामने अपने सीने में हाथ बांधे खड़े थे।

"काम हो गया!" अनामिका ने पूछा।

"तकरीबन! सामान आ गया है वो!" अनंत कुमार ने अनामिका से पूछा।

"हाँ! दोपहर में ही आया था।" अनामिका ने जवाब दिया।

"चलो! काम आगे का काम शुरू करें।" अनंत कुमार ने कहा।
"पर वो..." अनामिका ने आशंका जताई।

"वो अंदर नहीं आ सकता!" अनंत कुमार पूरे विश्वास से बोले।

"पर वो है क्या चीज़?" अनामिका ने जिज्ञासा जाहिर की।

"एक पिशाच! रक्त पिशाच है वो! एक बार फिर वापसी हुई है मौत की।"

वो बदहवास सी हालत में जंगल के बीचों बीच चारों ओर देखते हुए तेज़ी से चल रही थी। शायद बाहर निकलने की नाकाम सी कोशिश थी। अचानक किसी आहट ने उसे चौंका दिया। उसने अपनी सहमी हुई ऑखों से उस ओर देखा। एक स्याह साया उससे मुखातिब था। उसकी सिकुड़ी हुई ऑखें फैल कर फटने की हालत तक खुल गईं। उल्टी दिशा में पैरों को बढ़ाते हुए वो तेजी से पलटी और बेतहाशा दौड़ पड़ी। वो उस साए से दूर बहुत दूर भाग जाना चाहती थी। दौड़ते-दौड़ते जब उस स्याह दहशत के पीछे रह जाने का यकीन हो गया तो वो जमीन पर घुटनों के बल गिरकर तेज-तेज साँसें लेने लगी। उसने अपनी ऑखें बंद कर रखी थीं। एकाएक कहीं से किसी घड़ी की टिक-टिक की आवाज आई। उसने अपनी ऑखें खोली और हैरानी से इधर-उधर देखने ही लगी थी कि तभी उसे अपने पीछे से एक और घड़ी के टिक-टिक की आवाज आई। वो हड़बड़ा कर पीछे मुड़ी। कहीं कुछ भी नहीं था। फिर भी उसे ना केवल ये आवाज़ें लगातार सुनाई दे रही थीं, बल्कि घड़ियों की तादाद भी बढ़ती जा रही थी। इन आवाजों से उसके दिमाग की नसें फटने लगी। दर्द बढ़ते-बढ़ते इस दर्ज़े तक पहुँच गया कि उसे बर्दाश्त करने के लिए वो ऑखें भींचे अपने कानों को हाथों से बंद कर जमीन पर ढह गई।

उसके गले से एक दर्दनाक चीख निकली और फिर सब कुछ शांत हो गया। उस शांति को महसूस करके उसने अपना सिर ऊपर उठाया और फिर खुद को राहत पहुँचाने के लिए एक गहरी साँस अपने फेफड़ों में भरी। अभी वो ये सोच ही रही थी कि आगे उसे क्या करना चाहिए, उसी समय उसे एक बार फिर टिक-टिक की आवाज सुनाई दी, पर ये आवाज पहले से
थोड़ी अलग लग रही थी। उसे अब खीझ होने लगी थी। फिर भी ना जाने क्यों वो सम्मोहित सी उठी और एक बार फिर उस आवाज की ओर चल दी। जैसे-जैसे वो उसके पास पहुँच रही थी, एक सरगोशी उसके कानों से खेलने लगी।

"तूने उससे उसकी माया छीनी है। वो तुझसे तेरा सब कुछ छीन लेगा। समय का पहिया फिर घुमेगा। खून की एक-एक बूंद का हिसाब देना होगा, जो ऑसू बनकर उसकी ऑखों से बहे हैं क्योंकि.... वो

फिर लौट आया है।"

जब तक ये सरगोशी उसके कानों के सुपुर्द हुई, वो उसके सामने खड़ी थी। एक लंबे कद का साया उसके सामने था, जो एक घड़ी पकड़े हुए था।

इसी घड़ी से वो आवाज़ आ रही थी, जिसने उसे अपनी ओर खींच लिया था। उसने उस साए को देखने की कोशिश की, जिसका चेहरा ढका हुआ
था। बस उसी समय उसने अपना सिर ऊपर उठाया और उसकी ऑखों से बहते खून ने उसके होशो हवास गायब कर दिए।

नहीं ऽऽऽऽऽऽऽ!

एक तेज आवाज रात के सन्नाटे को चीरती हुई उस कमरे में फ़ैल गई। साथ सोई अनामिका भी हड़बड़ा कर उठी थी। उसने परिधि की ओर देखा, जिसका चेहरा भय से राख हो चुका था। चेहरे पर पसीने की बूंदें नीम-अंधेरे में भी चमक रही थीं। अपनी चढ़ी हुई साँसों के साथ वो अपना मुँह खोले गहरी-गहरी साँस ले रही थी। उसकी धड़कनें इतनी तेज थीं कि अनामिका भी उन्हें साफ-साफ सुन सकती थी। कमरे में लगी दीवाल-घड़ी की सुईयाँ टिक-टिक करते हुए अभी भी उसके दिमाग से खेल रही थीं।

"क्या हुआ परिधि?" अनामिका ने घबराकर पूछा। मगर परिधि उसी तरह गहरी साँसें लेते हुए मूक बैठी रही। अनामिका ने तेजी से साइड टेबल पर रखा पानी का गिलास उठाया और परिधि के मुँह से लगाया। पानी की ठंडक ने उसकी चेतना लौटाई और फिर उसने एक ही साँस में पूरा गिलास खाली कर दिया। पानी पीने के बाद उसे थोड़ी राहत महसूस हुई। उसकी धड़कनें भी संभलने लगी थीं। जब उसे सपने और हकीकत का फर्क समझ में आया, तो उसने अपने होंठों पर ज़बान फेरते हुए अनामिका की ओर देखा, जो उसे ही एकटक देखते हुए उसकी अगली प्रतिक्रिया का इंतजार कर रही थी।
"दीदी!" कहते हुए परिधि ने अनामिका के हाथों को कसकर पकड़ लिया।

"क्या हुआ परिधि? कोई बुरा ख़्वाब देखा?" अनामिका ने उसे संभालते हुए कहा।

"पता नहीं दीदी! था तो ख़्वाब ही पर... ख़्वाब जैसा लगा नहीं।" परिधि ने उलझा हुआ सा जवाब दिया।

"क्या मतलब?" उसकी उलझी बातों में उलझते हुए अनामिका ने कहा। परिधि ने अपने ख़ौफनाक ख़्वाब के पन्ने अनामिका के सामने खोल दिए, जिन्होंने उसे भी खासा हैरान कर दिया।

"वो साया कौन था? चेहरा देखा तुमने!" अनामिका की ऑखों में भी सवाल था। उसका सवाल सुनकर परिधि फटी हुई ऑखों से उसे देखने लगी। ऐसा लग रहा था कि जैसे सारी दुनिया का ख़ौफ उन्हीं दो ऑखों में आकर समा गया था।

"परिधि! क्या हुआ? बोलो! देखा तुमने उस चेहरे को?" अनामिका बेसब्री से बोली। जवाब में परिधि ने हाँ में अपना सिर हिलाया।

"पहचानती हो उसे?" अनामिका का अगला सवाल आया, जिसके जवाब में परिधि ने एक बार फिर से सिर हिलाया।

"कौन है?" इस बार अनामिका का गला भी सूखा था।

"मैं.... मैं थी!" परिधि ने अपने उड़े हुए होश के साथ अनामिका के होश भी उड़ाते हुए कहा।

"क्या?" एक बेयकीनी सी आवाज आई।
"हाँ! मैं थी वो!" कहते हुए वो अनामिका से बुरी तरह से लिपट गई। अनामिका ने भी उसे समेट लिया।

उसकी सोच का दायरा इस क़दर सिमट गया था कि उसके अंदर किसी एक हर्फ के पनाह लेने की गुंजाइश भी नहीं थी। मामला हर बढ़ते पल के साथ उलझता जा रहा था। वो परिधि को अपनी बाहों में समेटे हुए उसके सिर पर थपकी देती हुई उसे सुलाने लगी। उसके सो जाने का भरोसा हो जाने पर अनामिका ने उसे बिस्तर पर लिटाया। एक गहरी नज़र उस पर डालते हुए वो उठी और धीरे से सिरहाने पर रखा अपना फोन उठाया। स्क्रीन ऑन करते ही वरूण के दो मिस्ड कॉल ने उसके दाँत भींच दिए। उसने कहा था कि वो कॉल करेगा, मगर परिधि की नींद के ख़्याल ने इस बात को उसके ज़हन से बाहर निकाल दिया था और वो फोन साइलेंट मोड में डालकर सो गई थी। बहरहाल अपनी इन सोचों को झटकते हुए वो बाहर बालकनी में आ गई। उसने किसी को कॉल लगाया और तफ्सील से परिधि के सपने के बारे में बताने लगी।

"जी! हाँ उसने घड़ी और समय ही कहा और खुद को ही देखा है।" अनामिका ने सामने वाले की किसी बात का जवाब देते हुए कहा और सामने वाले की बात सुनने लगी। उसी समय उसके फोन पर किसी और की कॉल आई। उसने स्क्रीन पर देखा। वरूण कॉल कर रहा था। उसे इस वक़्त उसकी कॉल से झुंझलाहट हुई और उसे पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया। सामने से किसी ने उसे कुछ हिदायतें दी, जिस पर उसने हुंकारी भरते हुए अपना सिर हिलाया।

"आप कब तक आऍंगे?" अनामिका ने पूछा। सामने वाले का जवाब सुनने के बाद वो एक बार फिर बोली, "तो क्या उन्हें संदेश भेज दूँ?"

एक बार फिर से सामने वाले की बात सुनकर उसने कहा, "ठीक है!
समस्या तो जितनी सोची थी उससे भी गंभीर लग रही है और उलझी हुई भी। फिलहाल इंतजार करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। मैं उन्हें खबर कर देती हूँ।"

अपनी बात पूरी करके अनामिका ने कॉल काटी। वो अपने कमरे की ओर बढ़ ही रही थी कि अचानक वरूण का ख़्याल उसे आया। उसे उन दोनों के बीच हुई दोपहर की बातें याद आ गई। हालिया समय में

उसका अधिकारात्मक व्यवहार भी अनामिका की चिंता बढ़ा रहा था। वो अपनी समस्या से पहले ही परेशान थी, अब वरूण की वजह से और परेशान नहीं होना चाहती थी। उसने तुरंत वरूण को कॉल बैक किया। पूरी रिंग जाने के बाद भी वरूण ने फोन नहीं उठाया। अब अनामिका को वरूण की नाराज़गी का डर सताने लगा। वो चाहे कितना भी नकारे, पर इस बात से इंकार नहीं कर सकती थी कि उसे वरूण की नाराज़गी बिल्कुल भी पसंद नहीं थी। उसने एक बार फिर से कॉल किया। इस बार कुछ रिंग के बाद वरूण ने फोन उठाया।

"फोन क्यों नहीं उठा रहे हो?" अनामिका ने झल्लाई हुई आवाज में कहा।

"वो तो तुमने भी नहीं उठाया।" वरूण ने भी पलटकर नाराजगी जताई।

"प्लीज़ वरूण! अभी इस वक़्त नहीं।" अनामिका ने इल्तज़ाई लहजे में कहा।

"तुम्हें क्या लगता है... मेरे पास कुछ और काम नहीं है क्या... तुमसे फ्लर्ट करने के अलावा।" वरूण बहुत ही बेबाकी से बोला।

"तो ठीक है! जाओ! काम करो!" अनामिका भी ख़ुश्क लहजे में बोली।

"अरे! जरूरी काम से ही फोन किया था तुम्हें। तुम्हीं ने बस फालतू समझ
रखा है मुझे।" वरूण ने भी झल्लाकर कहा।

"बको!" अनामिका निहायती बेपरवाही से बोली।

"एक विडियो भेजा है तुम्हें। ग़ौर से देखना! कल रात के हॉस्पिटल के सामने वाले सीसीटीवी के फुटेज हैं। पहले देख लो फिर दस मिनट में कॉल करना। मैं इंतजार कर रहा हूँ।" कहकर वरूण ने कॉल कट कर दिया।

वरूण का कॉल कटते ही अनामिका ने फोन के स्क्रीन को घूरकर देखा और फिर वॉट्सअप खोलकर वरूण की भेजी हुई विडियो खोली। विडियो के आगे बढ़ते -बढ़ते उसकी ऑखें भी उसी अंदाज में फैलती चली गईं। ये कल पिछली रात की फुटेज थी, उसी समय की... जब वो अजीब सा प्राणी.. जिसे वरूण के पिता ने पिशाच बताया था... आया था। मगर उस फुटेज में खिड़की पर खड़ी वो तो दिखाई दे रही थी, मगर वो पिशाच घने पेड़ों के पीछे छिपा हुआ था। तूफान का जोर साफ-साफ दिखाई दे रहा था। कुछ ही देर बाद वो झटके से पीछे मुड़ी और कमरे में चली गई। अनामिका को याद आया कि वो परिधि की चीखने की वजह से तेजी से अंदर की ओर भागी थी। उसके बाद वो पिशाच गायब हो गया था। मगर विडियो अभी भी बाकी था। उसे एडिट करके 20 मिनट आगे किया गया था, जिसमें एक काला साया साफतौर पर उस खिड़की से बाहर आता दिखाई दे रहा था, जहाँ कुछ देर पहले ही अनामिका खड़ी थी। वो स्याह आकृति छिपकली की तरह रेंगती हुई बाहर निकली और खिड़की के ऊपरी हिस्से की दीवार पर चिपक गई। उसके दो मिनट बाद ही एक बार फिर अनामिका उस खिड़की पर नज़र आई, जो चारों ओर कुछ देखने की कोशिश कर रही थी। उसके बाद उसने खिड़की बंद कर दी। उसके खिड़की बंद करते ही वो काला साया ऊपर की ओर रेंगता हुआ छत पर जाकर खड़ा हो गया। वो कुछ देर वैसे ही खड़ा रहा और फिर एक झटके में पंख फैलाकर ऊपर आसमान के अंधेरों में खो गया। अनामिका को हलक में कुछ फँसा हुआ सा महसूस हुआ। इसका मतलब कि पानी पीते वक़्त उसने आइने में जो देखा था, वो वहम नहीं था। पर वो वहाँ क्या करने के लिए आया था? उसने

अपने दिमाग पर जोर डाला और उसके ज़हन में उभरी... वो डायरी!

"वो उस डायरी को रखने के लिए आया था! पर क्यों?" उसका दिमाग इसी सवाल में उलझा था कि एक और विचार ने उसे हिलाकर रख दिया।

"वो लड़का! उसके पास वो डायरी थी। तो क्या... तो क्या वो लड़का... वो वही पिशाच था। हे भगवान! वो तो सुबह दरवाजे के पास भी खड़ा था।" इस बात में कोई शक नहीं रह गया कि वो परिधि के ही पीछे पड़ा था। पर क्यों? इसका जवाब ढूंढ़ना अब बहुत जरूरी था।

"सबको बताना पड़ेगा।" अनामिका ने फुसफुसाकर खुद से ही कहा और फिर वो विडियो कुछ और नंबरों पर भी भेज दिए। उसने एक मैसेज भी टाइप किया और भेज दिया। उसने इन सब से फारिग होने के बाद वरूण को कॉल किया। वो जैसे अनामिका के कॉल के इंतजार में ही बैठा हुआ था।

"तुमने देखा विडियो!" वरूण की उलझी हुई सी आवाज आई।

"ये विडियो किसी और ने तो नहीं देखा ना!" अनामिका ने सवाल किया।

"नहीं! ये इंस्पेक्टर अंकित ने मुझे भेजा है। इस विडियो से शहर में तनाव फैल सकता है, इसलिए इसे गोपनीय ही रखा गया है। वैसे भी तुम्हें पता है कि अफवाहों का बाजार गर्म है इन दिनों। शुक्र है कि आसपास कोई निजी सीसीटीवी कैमरा नहीं है, वरना परेशानी हो सकती थी।" वरूण ने कहा।

"शुक्र है!" अनामिका ने राहत की साँस ली।
"इंस्पेक्टर अंकित मुझसे पूछ रहे थे कि बीती रात तुमने कुछ अजीब देखा क्या? क्योंकि तुम उसके आसपास ही थी।" वरूण बोला।

"नहीं!" अनामिका ने इंकार किया।

"हम्म! सब बहुत अजीब सा है। परिधि ने भी कहा था और अब कुछ ऐसा दिखाई भी दिया। इंस्पेक्टर अंकित तुमसे पूछताछ के लिए आ सकते हैं कल!" वरूण ने उसे जानकारी देते हुए कहा।

"ठीक है!" अनामिका ने कहा।

"ओके देन!" वरूण ने भी बात समेटी।

"रखती हूँ!" अनामिका ने कहा।

"अनामिका!" वरूण ने तेजी से कहा।

"क्या हुआ?" अनामिका बोली।

"वो... इस वक़्त.... किससे बात कर रही थी तुम?" आखिरकार वरूण ने अपने दिल में धँसा फाँस निकाला और अनामिका के मरहम का इंतजार करने लगा।

"गुडनाईट वरूण!" अनामिका ने थोड़ी खीझ से कहा।

"गुडनाईट!" वरूण की आवाज में एक दर्द था... यह सोचकर कि वो कोई.... शायद चैतन्य था।

अनामिका ने कॉल काटने के बाद फोन पर एक सरसरी सी निगाह डाली।
एक मैसेज आया था। उसने वो मैसेज खोला, जिसे पढ़ते ही उसके होंठों पर मुस्कुराहट आ गई। उसने एक और मैसेज टाइप किया, "वो आ रहे हैं!"

उसने फोन बंद किया और एक गहरी साँस लेकर बोली,"The time has come. स्वागत है!" कहकर अनामिका ने खुलकर एक अंगड़ाई ली और फिर उबासी लेते हुए अपने कमरे में चली गई, जहाँ परिधि आराम से सो रही थी।

****

अगली सुबह नाश्ते की मेज पर सभी नाश्ता कर रहे थे। वरूण हॉस्पिटल से आ चुका था। उसकी ऑखों में अभी भी वही सवाल था, जिसे अनामिका जानबूझ कर नज़रअंदाज कर रही थी।

"तुम्हारे दोस्त आने वाले थे अनामिका! कब तक आऍंगे?" वरूण के पिता अनंत कुमार ने सवाल किया। उनका सवाल सुनकर निवाला चबाते हुए वरूण की सवालिया नज़रें अनामिका की ओर घूमी।

"दोपहर तक पहुँचेंगे।" अनामिका ने वरूण को फिर से नज़रअंदाज किया था।
"कौन दोस्त?" वरूण ने दाँत पीसते हुए कहा।

"आशुतोष! यही नाम है ना!" जवाब अनंत कुमार ने दिया।

"जी, अंकल!" अनामिका ने सहमति जताई।

"वो... यहाँ क्यों आ रहे हैं?" वरूण ने थोड़ी असहजता से पूछा। उसके सवाल पर अनामिका ने उसे अपनी कमान चढ़ाकर देखा, जिससे वरूण का हलक़ फँस गया, जिसे उसने खंखारकर साफ किया।

"अनामिका ने बताया था कि वो किसी जरूरी काम से पास ही कहीं आ रहे हैं, तो मैंने ही उन्हें आमंत्रण भेजा दिया... यहाँ आने का।" अनंत कुमार ने वरूण से कहा।

"और वो क्यों?" वरूण का लहजा थोड़ा सख़्त था।

"तुम्हें क्या प्रॉब्लम है?" अनामिका ने उसे कोहनी मारते हुए कहा।

"आउच! लगता है यार!" वरूण बिफरते हुए बोला।

"मुझे मिलना था उनसे। दरअसल उनके परिवार से पुराना रिश्ता है, पर हालातों ने दूरियाँ कायम कर दी थीं। वैसे तुम क्यों फुदक रहे हो?" अनंत कुमार ने कहा।

"मैं कहाँ फुदक रहा हूँ!" वरूण की आवाज में चिढ़ साफ थी।

"अनामिका! तुम जाओगी स्टेशन?" अनंत कुमार ने अनामिका से सवाल किया।
"जी अंकल! वो इस तरफ पहली बार आ रहे हैं ना!" अनामिका की आवाज उत्साहित लग रही थी।

"ठीक है! मुझे जरूरी काम नहीं होता तो मैं भी साथ चलता।" अनंत कुमार ने विवशता दिखाई।

"कोई बात नहीं अंकल! घर ही तो आ रहे हैं।" अनामिका की आवाज में उत्साह बना हुआ था।

"मैं जाऊँगा!" वरूण की अनपेक्षित आवाज आई।

"तुम! तुम आराम करो! रात भर ड्यूटी की है तुमने।" अनंत कुमार ने कहा।

"नहीं! ठीक हूँ मैं।" वरूण ने अपने शब्दों पर वजन डालकर कहा।

"देख लो भई!" अनंत कुमार ने कहा और फिर वहाँ से उठकर चले गए। वरूण उन्हें जाते हुए देखता रहा।

"वरूण! मैं चली जाऊँगी। तुम थके होंगे। आराम करो।" अनामिका ने नर्मी से कहा।

"नहीं, कोई बात नहीं। कहा ना ठीक हूँ मैं। वैसे कौन-कौन आ रहा है?" वरूण ने अनामिका पर गहरी नज़रें डालते हुए कहा। वो कैसे बताता कि यह सब सुनकर उसकी पूरी जिंदगी का आराम हराम हो चुका है।

"आशुतोष जी! और कौन?" अनामिका ने जवाब दिया। उसके जवाब ने वरूण को राहत पहुँचाई।
****

आशुतोष के आने का समय हो रहा था। वरूण और अनामिका समय पर स्टेशन पहुँच गए थे। गाड़ी भी समय पर थी। भीड़ होने की वजह से अनामिका और वरूण एक ओर खड़े होकर आने वाले मुसाफिरों में अपने मेहमान को ढूंढ रहे थे। जल्द ही अनामिका को आशुतोष भीड़ के बीच दिखाई दिया।

"आशुतोष जी!" अनामिका हाथ ऊपर उठाकर चिल्लाई। वरूण की नज़रें भी उस ओर गई। आशुतोष ने

भी उसे देख लिया और तेजी से उसकी ओर आया। उन्हें देखते ही अनामिका के होंठों की मुस्कान गहरी हो गई।

"अ... आशुतोष जी! इससे मिलिए! ये हैं वरूण! और वरूण ये आशुतोष जी हैं।" अनामिका ने दोनों का परिचय करवाते हुए कहा।

"ओह्हो! तो ये हैं वरूण! नाम तो बहुत सुना है आपका।" कहते हुए आशुतोष ने वरूण की ओर हाथ बढ़ाया, जिसे वरूण ने थाम लिया।

"नाम तो आपका भी बहुत सुना है।" वरूण ने मुस्कुराते हुए कहा।

"आपको यहाँ देखकर बहुत अच्छा लगा आशुतोष जी!" अनामिका ने बहुत ही उत्साह से कहा। जवाब में आशुतोष ने भी एक मुस्कुराहट दी।

"और मुझसे मिलकर?" अनामिका के पीछे से एक आवाज आई। अनामिका का दिल धक्क करके रह गया। होंठों की मुस्कान मद्धम पड़
गई। वो धीरे से पीछे मुड़ी और बेसाख़्ता बोल पड़ी, "तुम!"

वरूण की नज़रें भी उस ओर उठी। अनामिका के फोन में तस्वीरें देखी थी उसने और यकीनन सामने खड़ा शख़्स उन तस्वीरों से भी ज्यादा आकर्षक था या फिर... हो गया था। वरूण के दिल का सबसे बड़ा डर "चैतन्य" उसके सामने अपनी दिलफरेब शख़्सियत के साथ खड़ा था।

वरूण ने अनामिका की ओर देखा, जो ना जाने किस जहाँ में खोई हुई थी और दुनिया से बेपरवाह चैतन्य भी उसे अपनी शोखी भरी नज़रों से देख रहा था। उसके अंदर एक अगन सी सुलग उठी थी। एक तो वो बिना बताए यहाँ आ धमका था और अब उसके सामने ही अनामिका के साथ उसकी इतनी बेतकल्लुफी वरूण के रोएँ भड़का गई थी। अपने दाँत पीसते हुए वो अनामिका के पास पहुँचा और उसे अपनी बाहों में समेट कर बोला, "हे! क्या हुआ?" और उसके गाल को अपनी ऊँगली की पुश्त से सहलाने लगा। यकीनन उसका ये रवैया चैतन्य के साथ अनामिका को भी चौंका गया था। चैतन्य ने तुरंत ही अपनी नज़रें फेर लीं कि ये देख पाना फिलहाल उसके बर्दाश्त की हद से बाहर था।

"वरूण!" अनामिका ने लगभग उसके हाथ को झटकते हुए खुद को उसकी पकड़ से आज़ाद किया था। वरूण ने उसे चुभती नज़रों से देखा था।

"अनामिका! चलें!" पीछे से आशुतोष की आवाज आई। सबके नज़रें उनकी ओर मुड़ी थी। अनामिका ने हल्की मुस्कुराहट के साथ सिर हिलाया
और फिर एक नज़र चैतन्य पर डाली, जो वरूण और अनामिका की नज़दीकी से थोड़ा सा अपसेट लग रहा था। दोनों ही अपने अहसासों के साथ कार की ओर बढ़ गए। वरूण के चेहरे पर एक कुटिल सी मुस्कान आई। उसका चलाया तीर सही जगह लगा था।

कार में अनामिका खामोशी लिए बैठी थी। उसे वरूण पर गुस्सा आ रहा था, पर वो अपने गुस्से को

किसी तरह खुद में ही दबाए हुए थी। वरूण सब समझ रहा था। बैक व्यू मिरर से वो उलझे हुए चैतन्य को देख रहा था, जिसकी नज़रें अनामिका और वरूण के बीच घूम रही थी और यकीनन चैतन्य की ये हालत उसे राहत सी दिला गई थी। रास्ते भर कोई भी कुछ नहीं बोला। जल्द ही उनकी गाड़ी अपने मुकाम के करीब पहुँच गई। आशुतोष की नज़रें मुख्यद्वार के मेहराब से टकराई और एक जाना-पहचाना अहसास उसे छूकर निकल गया। कुछ ही देर में वे सब घर के सामने खड़े थे। अनामिका ने उन दोनों का घर में स्वागत किया था। आशुतोष की नज़रें लगातार हर चीज का बारीकी से मुआयना कर रही थीं।

"आशुतोष जी! आप लोग थक गए होंगे। आईए आपका कमरा दिखा दूँ।" कहते हुए अनामिका सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। आशुतोष और चैतन्य उसके पीछे-पीछे गए थे। वरूण उन सब को ऊपर जाते देखता रहा और कुछ देर बाद वो खुद भी सीढ़ियाँ चढ़ गया।

"अंकल किसी काम से बाहर गए हुए हैं। आप लोग फ्रेश हो लें और कुछ खा लें, तब तक वो आ जाऍंगे।" अनामिका ने कमरे का दरवाजा खोलकर अंदर आते हुए कहा। उसके पीछे-पीछे आशुतोष और चैतन्य भी अंदर आए थे। वरूण दरवाजे पर ही अपने पैरों को क्रास करके टिका हुआ था। उसने देखा कि आशुतोष तो कमरे को अच्छी तरह से देख रहा था, मगर अनामिका और चैतन्य की नज़रें आपस में उलझी हुई थीं। वो यह देखकर तड़प गया कि उसके दिए ज़ख़्म पर अनामिका की मुस्कुराहट ने मरहम रख दिया था।

"अनामिका!" वरूण की आवाज पर अनामिका और चैतन्य की नज़रों का संपर्क टूटा और वे दोनों ही उसकी ओर देखने लगे।

"इन्हें आराम करने दो! तुम मेरे साथ आओ!" वरूण ने अनामिका को अपनी ऊंगलियों की हरकत से पास बुलाया।

"क्या हुआ?" अनामिका ने वरूण की वजह से पड़ी रूकावट पर ऐतराज जताया।

"जरूरी काम है। आप लोग आराम करें।" अपना जवाब देते हुए वरूण आगे आया और उसकी कलाई पकड़कर उसे खींचता हुआ बाहर ले गया। चैतन्य की नज़रें वरूण की हरकतों पर बराबर जमी हुई थी। उसने एक गहरी साँस ली। आशुतोष ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा,

"इब्तिदा-ए-इश्क़ है रोता है क्या?
आगे-आगे देखिए होता है क्या?"

"आशुतोष जी!" चैतन्य ने थोड़ा चिढ़ते हुए कहा। आशुतोष ने मुस्कुराते हुए तौलिया उठाकर बाथरूम का रास्ता लिया। चैतन्य गंभीर चेहरे के साथ बिस्तर पर बैठ गया और बुदबुदाया, "वरूण! इंट्रेस्टिंग!"

****

दिन थोड़ा और चढ़ चुका था। वरूण जरूरी काम का बहाना बनाकर अनामिका को अपने कमरे में लाया और आधे घंटे तक अपने सिर की मालिश करवाता रहा। मकसद बस अनामिका को चैतन्य से दूर ही रखना था। अनामिका को बात का बतंगड़ नहीं बनाना था इसलिए उसने चुपचाप वरूण की बात मान

ली। अनामिका के हाथ और वरूण की बात फोन के बजने से थमे। अनामिका ने देखा... आशुतोष की कॉल थी। उसने तुरंत फोन पिक किया।

"जी हाँ! आपके कमरे से थोड़ा आगे आइए। दाईं ओर का कमरा है। जो बड़ा सा गमला रखा हुआ है वही वाला दरवाजा।" अनामिका उन्हें कमरे का रास्ता समझा रही थी। यह सुनते ही वरूण बिदक कर फुसफुसाया, "मेरे कमरे में क्यों बुला रही हो?"

जवाब में अनामिका ने उसके सिर पर चपत जमा दी और बोली, "चुप रहो!" और फिर उसके सिर पर अपनी उंगलियाँ घुमाने लगी। वरूण एक बार फिर से चिढ़ गया यह सोचकर कि आशुतोष के साथ-साथ चैतन्य भी चला आएगा। उसने गुस्से में अनामिका के हाथों को झटका और खड़ा हो गया।

"अरे!" अनामिका चिहुंक उठी।

"तुम बैठो अपने दोस्तों के साथ! मैं जा रहा हूँ।" कहते हुए वो अपने कमरे से बाहर निकल गया। बाहर निकलते समय वो आशुतोष से टकराते-टकराते बचा। किसी तरह खुद को संभालते हुए उसने आसपास देखा। चैतन्य साथ में नहीं था। वो पीछे मुड़ा ही था कि अनामिका को भी कमरे से बाहर निकलते देखा।

"आइए आशुतोष जी! हम चलते हैं! वरूण को आराम करने देते हैं। उसी नाइट ड्यूटी चल रही है ना आजकल!" अनामिका ने तंज भरी नज़रों से
वरूण को देखते हुए कहा। आशुतोष ने भी अनामिका की बात पर हामी भरी।

"चैतन्य कहाँ है?" अनामिका ने पूछा।

"फिलहाल तो नहा रहा है। कह रहा था कि थक गया है तो थोड़ी देर सोएगा। लगता है कि तुम्हें मिलने की खुशी में सोया नहीं है रात भर।" आशुतोष ने अपनी ही रौ में बोल दिया।

"मजाक अच्छा करते हैं आशुतोष जी! चाय पिऍंगे आप!" अनामिका ने आशुतोष की बात को टालते हुए कहा।

"हाँ! हाँ! क्यों नहीं! तुम बनाओगी?" आशुतोष ने भी हँसते हुए जवाब दिया और फिर दोनों ही सीढ़ियों की ओर बढ़ गए। वरूण ने ऑखें सिकोड़ कर उन दोनों को कुछ देर घूरा और फिर अपने कमरे में चला गया।

****

सबको अपने-अपने कमरों में छोड़कर आशुतोष और अनामिका सोफे पर बैठे हुए चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे। चारों ओर अजीब सी ख़ामोशी बिखरी हुई थी। इतने बड़े घर में उन दोनों का वजूद ही दिखाई दे रहा था।

"सब कहाँ है" आशुतोष ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"वरूण की बहन गीता कॉलेज गई है। उसके आने का समय भी बस हो ही गया है। वरूण से तो आप मिल ही चुके हैं। अंकल काम से बाहर
गए हुए हैं, वो भी आते ही होंगे। उन्हें बड़ी बेताबी है आपसे मिलने की।" अनामिका ने जानकारी देते हुए कहा।

"और... वो कहाँ है?" आशुतोष का लहजा गंभीर था।

"वो सो रही है!" अनामिका ने कहा।

"अभी!" आशुतोष चौंका।

"अंकल ने दवा देकर सुलाया है।" अनामिका ने कहा।

"अभी! इस समय!" आशुतोष चौंका।

"अंकल बेहतर बता सकेंगे।" अनामिका ने इस सवाल से पीछा छुड़ाते हुए कहा।

"हम्म! एक बात और पूछूं?" आशुतोष ने इजाजत सी मांगी।

"पूछिए!" अनामिका ने भी इजाजत देते हुए कहा।

"मैं वरूण के पिता सब कैसे जानते हैं?" आशुतोष ने सवाल किया।

"मुझे नहीं लगता है कि इसका जवाब देने के लिए मैं सही इंसान हूँ।" अनामिका ने एक बार फिर जवाब से इंकार किया।

"तो फिर! यही बता दो कि इन सबको कैसे जानती हो?" आशुतोष ने भी अगला सवाल करते हुए कहा।

"माँ जानती थीं... अंकल को!" अनामिका ने कहा।
"माँ मतलब..... मे.. घा!" आशुतोष ने बेयकीनी के साथ कहा।

"हाँ! और कौन?" अनामिका ने फीकी हँसी के साथ कहा।

"पर मेघा तो अनाथ थी। वो उस जंगल में ही छिपकर रहती थी, तो उसका संबंध इतनी दूर तक कैसे था?" आशुतोष को हैरत का तेज झटका लगा था।

"आपको क्या लगता है कि ये कहानी बस उन जंगलों तक ही सीमित थी... या है।" अनामिका रहस्यमई आवाज में बोली।

'क्या मतलब!" आशुतोष का चौंकना जारी था।

"मतलब ये आशुतोष जी कि आम इंसान इस एक दुनिया के बारे में ही जानता है, जिसे वो देखता है और जिसमें वो रहता है। मगर आम इंसानों की जानकारी के बाहर एक और दुनिया भी है, जो इस दुनिया के समानांतर चल रही है और वो भी इस दुनिया के साथ ही!" अनामिका ने भी आशुतोष को हैरान करना जारी रखा था।

"इस दुनिया के समानांतर एक दूसरी दुनिया! क्या मतलब है तुम्हारा?" आशुतोष के लिए ये बिल्कुल नई जानकारी थी।

"हाँ! काले जादू की दुनिया! जिसके सदस्य अब मैं और आप दोनों ही हैं। एक ऐसी दुनिया... जिसे आम लोगों से छिपाकर रखा गया है।" अनामिका ने कहा।

"छिपाकर रखा गया है से मतलब!" आशुतोष का अगला सवाल भी हैरानी में डूबा हुआ था।
"आपको क्या लगता है... चित्रलेखा या रक्त पिशाच या ऐसी ही दूसरी शक्तियाँ... इन सबके बारे में लोग सही तरीके से जानते क्यों नहीं हैं?" अनामिका ने पलटकर पूछा।

"क्योंकि इनकी कहानियों को... छिपाया गया है।" आशुतोष ने उसके सवाल को जवाब दिया।

"जी हॉ! क्योंकि ऐसी व्यवस्था की गई है कि ये सारी बातें बस किंवदंतियों का हिस्सा बनकर रह गई है। और तो और इन सबको इतनी सफाई से छिपाया गया है कि इस छिपी हुई दुनिया के सदस्य भी सारी सच्चाई नहीं जानते हैं। यहाँ बहुत सारी कहानियाँ हैं कोहरे में छिपी हुई।" अनामिका ने कहा।

"तो तुम... और मैं इसका हिस्सा क्यों हैं?" आशुतोष ने पूछा।

"अपनी शक्तियों की वजह से।" अनामिका ने छोटा सा जवाब दिया।

"मैं भी!" आशुतोष ने चौंककर कहा।

"हाँ आशुतोष जी! आप कोई आम इंसान नहीं हैं। तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र के वंशज हैं आप! इसलिए इस दुनिया का हिस्सा हैं आप।" अनामिका ने आशुतोष की हैरानी को शांत करने की कोशिश करते हुए कहा।

"ये तो दिलचस्प लग रहा है।" इस बार आशुतोष की आवाज में उत्साह था।

"बहुत सारी कहानियाँ हैं आशुतोष जी इन कोहरों में छिपी हुई और इनमें से एक कहानी हम सभी के वजूद से जुड़ी हुई है और इसलिए उस कहानी
की इबारतों को पढ़ना जरूरी हो गया है। आपने मुझे चित्रलेखा की कहानी फौरी तौर पर सुनाई थी। आपको पता है कि चित्रलेखा के जाने के बाद भी बहुत कुछ हुआ था। उस रक्त-पिशाचिनी की शक्तियों वाला खंज़र ऐसे ही गायब नहीं हुआ था। उसे गायब किया गया था, ताकि ये दुनिया हिफाजत से रह सके। मगर सब कुछ जोड़ने की कोशिश में भी कुछ धागे खुले रह गए हैं और अब उन्हें जोड़ना जरूरी हो गया है।"अनामिका ने तफ्सील बयां की।

"और कहाँ हैं... वो खुले हुए धागे?" आशुतोष ने कहा।

"उन्हें ही ढूंढना है, इसलिए तो अंकल ने आपको यहाँ बुलाया है।" अनामिका ने कहा।

"वरूण और उसकी बहन जानते हैं ये सब!" आशुतोष ने पूछा।

"नहीं! वो इन सबका हिस्सा नहीं हैं। उन्हें इन सबसे दूर ही रखना है और अब तो..." अपनी बात कहते-कहते अनामिका रूक गई।

"क्या हुआ?" आशुतोष ने उसके परेशान चेहरे को देखकर कहा।

"आप चैतन्य को अपने साथ क्यों लेकर आए हैं?" अनामिका की आवाज में एक बेबसी भरी शिकायत सी थी।

"क्यों? तुम्हें उसका यहाँ आना अच्छा नहीं लगा।" आशुतोष ने अनामिका के मन को कुरेदा।

"ऐसी बात नहीं है, पर... अभी हम जिस समस्या में उलझे हुए हैं, उसके बीच नई समस्याएँ सुलझाने का समय नहीं है हमारे पास।" अनामिका झुंझलाहट भरी आवाज में बोली।
"मैं क्या करता? तुमने ही उसे बीच में अटका रखा है। तुम्हें लेकर उसकी बेचैनियाँ तुमने देखी नहीं है अनामिका। मैंने देखी है। मैं उसे मना नहीं कर पाया आने से।" आशुतोष ने जैसे अपनी सफाई दी।

"हे भगवान!" कहते हुए अनामिका ने अपना सिर पकड़ लिया।

"लगता है कि तुम वरूण और चैतन्य में उलझ गई हो।" आशुतोष ने उसे परेशान देखकर कहा।

"मैं किसी का दिल दुखाना नहीं चाहती आशुतोष जी। पर मैं क्या करूं? आपने चैतन्य की हालत देखी है तो मैंने भी वरूण के जज़्बाती लम्हों को कई बार जिया है। जबकि मैंने दोनों से ही कभी कुछ नहीं कहा। दोनों खुद ही अपनी-अपनी दुनिया बसाए बैठे हैं। अब आप ही बताएँ कि मैं क्या करूँ?" अनामिका की आवाज कांपने लगी थी। आशुतोष ने भी उसे दिलासा भरी नज़रों से देखा।

"वरूण मुझसे बहुत गहराई से जुड़ा हुआ है। उसने बचपन से ही मेरे अलावा कभी किसी को अपने करीब भी नहीं आने दिया। सब जानते हुए उसका दिल कैसे दुखाऊँ और रही बात चैतन्य की... तो प्यार में मिले धोखे के बाद उसकी हालत भी देखी है मैंने... इसलिए फिर से उसका दिल तोड़ने की हिम्मत नहीं है मुझमें।" अनामिका रोआंसी हो गई थी।

"जानता हूँ अनामिका! तुम्हारे लिए ये फैसला लेना आसान नहीं है, पर लेना तो होगा तुम्हें।" आशुतोष ने उसका सिर सहलाते हुए कहा।

"कैसा फैसला आशुतोष जी? मुझे तो ये भी नहीं पता कि मैं उन दोनों में से किसी से प्यार करती भी हूँ या नहीं। मसला किसी एक के दिल को तोड़ने का भी नहीं है... हो सकता है कि... शायद दोनों के ही दिल टूट
जाएँ। मैं भावनाओं में बहकर कोई भी फैसला नहीं करना चाहती, बस इसलिए थोड़ा समय चाहती थी, पर चैतन्य के यहाँ आने से ये मामला बिगड़ गया है। आपने वरूण की हरकतें देखी ना! वो जानबूझकर वो सब कर रहा है। एक अघोषित सी दुश्मनी का युद्धघोष हो गया है दोनों के बीच और ऐसा हर्गिज नहीं होना चाहिए। " अनामिका तड़पकर बोली थी।

"हम्म! ये तो मामला सच में गंभीर हो गया है!" आशुतोष ने अपनी दोनों हथेलियाँ बांधकर दोनों तर्जनी उंगलियों को अपने होंठों से छुआते हुए कहा।

"अभी हम जिस समस्या का सामना कर रहे हैं, उसके बीच इस मसले को हल करने की ताकत नहीं है मुझमें।" अनामिका ने हथियार डालते हुए कहा।

"सब्र रखो अनामिका! कोई ना कोई रास्ता निकल ही आएगा।" आशुतोष ने एक बार फिर हौसले भरी आवाज में कहा।

"इसके अलावा और क्या रास्ता है?" अनामिका ठंडी साँस छोड़ते हुए बोली। अभी वे दोनों बातें कर ही रहे थे कि तभी गीता ने बैठक में प्रवेश किया। आशुतोष की नज़रें उसकी ओर गई। गीता, आशुतोष को ग़ौर से देखते हुए उनके पास आ गई।

"तुम आ गई! आशुतोष जी! ये गीता है वरूण की बहन और गीता में आशुतोष जी हैं। कुछ दिन हमारे साथ रहेंगे।" अनामिका ने दोनों का परिचय करवाते हुए कहा।

"और ये कौन है?" आशुतोष ने अंदर आती हुई लड़की को देखकर कहा। सभी की नज़रें उस ओर चली गईं।
"ये मेरी दोस्त है, सृष्टि!" गीता ने जवाब दिया।

"ओह!"

"अच्छा! अनामिका! हम दोनों मेरे कमरे में जा रहे हैं। चाय भिजवा दोगी क्या?" गीता ने अनामिका से बड़े प्यार से कहा।

"हाँ क्यों नहीं! तुम चलो! मैं भिजवाती हूँ।" अनामिका ने भी उतने ही प्यार से जवाब दिया। गीता और सृष्टि दोनों ही सीढ़ियों से ऊपर जाने लगे। अनामिका सृष्टि को संशय भरी नज़रों से देख रही थी।

"क्या हुआ? क्या देख रही हो?" आशुतोष ने पूछा।

"ये वही लड़की है, जिसे छूने से मुझे अजीब सा झटका लगा था।" अनामिका बोली।

"अच्छा!" आशुतोष के मुँह से निकला। अनामिका कुछ और कहती उससे पहले ही ऊपरी सीढ़ियों से किसी की तेज आवाज आई।

"देख के नहीं चल सकती!" वरूण, सृष्टि के ऊपर झल्ला रहा था। सृष्टि भी उसे घूरकर देख रही थी।

"ऐसे क्या घूरकर देख रही हो? हाँ! खून पीने का इरादा है क्या मेरा?" वरूण उसी चिढ़ी हुई आवाज में बोला। सृष्टि ने गुस्से में कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था कि तभी गीता उसे खींचती हुई अपने कमरे की ओर ले गई। वरूण गुस्से भरी नज़रों से उसे जाते देखता रहा, फिर मुड़कर अनामिका से तेज आवाज में बोला, "मेरे फ़ोन का चार्जर कहाँ है?"

"ड्रेसिंग की दूसरी दराज में।" अनामिका ने बहुत ही शांत स्वर में कहा।
उसका जवाब सुनकर वरूण ने एक नाराजगी भरी नज़र से उसे देखा और फिर अपने कमरे की ओर चल दिया।

"लगता है कि अनंत जी को आने में समय लगेगा। मैं थोड़ा आराम कर लेता हूं तब तक।" आशुतोष ने अनामिका से कहा।

"हाँ ठीक है। अंकल जब भी आऍंगे मैं आपको बता दूंगी। वैसे मैं बाहर ही हूँ गार्डन में।" अनामिका ने मुस्कुराते हुए कहा। बात खत्म कर के आशुतोष सीढ़ियों की ओर बढ़ गया और अनामिका बाहर की ओर चल दी। सीढ़ियों के ऊपर पहुँचते ही चैतन्य, आशुतोष से टकराया।

"तुम कहाँ घूम रहे हो? तुम्हें तो नींद आ रही थी ना!" आशुतोष ने उसे ऊपर से नीचे तक घूरते हुए कहा।

"आपको क्या लगता है कि मैं यहाँ सोने के लिए आया हूँ। वैसे अनामिका को देखा आपने।" चैतन्य ने बेचैनी से कहा।

उसका सवाल सुनकर आशुतोष ने एक गहरी साँस ली और बोला, "बाहर गार्डन में है।"

अपना जवाब मिलते ही चैतन्य के होठों और ऑखों की मुस्कान गहरी हो गई। उसने आशुतोष से मुस्कुरा कर कहा, "थैंक्यू!" और तेजी से नीचे की ओर भागा। आशुतोष ने अफसोस से अपना सिर हिलाया और अपने कमरे की ओर चले गए।

बाहर अनामिका गार्डन में फूलों के गमलों से सूखी पत्तियाँ निकाल रही थी, जब चैतन्य उसके सिर के ऊपर आकर खड़ा हो गया। किसी की आमद का अहसास होते ही अनामिका ने सिर उठाया। चैतन्य को वहाँ देखकर उसके होंठों पर उलझी हुई सी मुस्कान आई।
"क्या कर रही हो?" चैतन्य ने नर्म लहजे में पूछा।

"कुछ नहीं... बस यूं ही!" अनामिका ने बात बनाई।

"तो क्या.... मैं भी तुम्हारे साथ यूं ही कर सकता हूँ।" चैतन्य ने मासूमियत से कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका ने उस पर एक नज़र डाली और ना चाहते हुए भी मुस्कुरा उठी। उसकी मुस्कान देखकर चैतन्य का चेहरा भी खिल उठा। वो अनामिका के साथ खड़ा अपने प्यार की दुनिया में खोने लगा था, वही दूसरी ओर अपने कमरे की खिड़की से झांक कर उन्हें देखता हुआ वरूण अपनी गुस्से से भरी ऑखों में रकाबत (दुश्मनी) की कहानी आंसुओं से लिख रहा था।

भाग 11

चैतन्य अपनी गहरी नज़रों से अनामिका को देखे जा रहा था जिससे अनामिका थोड़ी बेचैनी महसूस करने लगी थी। उसने रूख फेरकर दूसरी तरफ अपना ध्यान लगाया। चैतन्य की ऑखें किसी सोच में

सिकुड़ी और फिर वो उस तरफ चला गया, जिस तरफ अनामिका की नज़रें मेहरबान थीं। अचानक उसके इस तरह सामने आ जाने से अनामिका की ऑखें भी कुछ छोटी हुई।

"क्या तुम... मुझे इग्नोर कर रही हो?" चैतन्य ने एक बार फिर उसकी ऑखों में देखते हुए पूछा।

"नहीं! मैं.. क्यों इग्नोर करूंगी?" अनामिका ने खुद को संभालते हुए कहा।

"मुझे तो लगा था.. कि मुझे यूं अचानक.... अपने सामने देखकर तुम....! ख़ैर छोड़ो!" चैतन्य की आवाज हवा के झोंके से जूझते लौ की तरह लड़खड़ाने लगी थी।

"वो... दरअसल ऐसे अचानक तुम्हें देखने की उम्मीद नहीं थी ना! तो बस..." अनामिका ने एक बार फिर से सफाई दी।

"हाँ! वो क्या है ना! तुम्हें तो मेरी याद आती नहीं पर... मुझे तो आती थी ना! तो बस आ गया। पर तुम्हारे चेहरे को देखकर ऐसा लग नहीं रहा है
कि तुम्हें मेरा यहाँ आना जरा सा भी पसंद आया।" सामने खड़े चैतन्य की आवाज में तल्ख़ी घुली हुई थी।

"अरे नहीं! मुझे क्यों अच्छा नहीं लगेगा?" अनामिका ने बात और हालात संभालने की ग़रज से कहा।

"सच! पर ऐसा... लग तो नहीं रहा है।" उसके चेहरे को ग़ौर से देखते हुए चैतन्य ने कहा।

"तुम... तुम तो बिल्कुल बदल गए हो। तुम्हें देखकर यकीन ही नहीं होता कि तुम.... वही चैतन्य हो।" अनामिका ने उसे ग़ौर से देखते हुए कहा। मकसद बात बदलने की कोशिश थी।

"अच्छा! मुझे तो ऐसा लगने लगा था कि तुमने कभी ग़ौर भी किया मुझ पर! पर चलो... अच्छा लगा जानकर!" एक बार फिर चैतन्य का लहज़ा शिकायती था।

"बहुत शिकायत करने लगे हो।" अनामिका ने भी पलटवार करते हुए कहा।

"मतलब कि.... ये भी नहीं कर सकता!" चैतन्य ने उसकी ऑखों को एक-एक करके देखते हुए कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका ने एक नज़र उस पर डाली, जिसका मतलब चैतन्य की समझ में नहीं आया।

"लग रहा है कि तुम सिर्फ शिकवे-शिकायतें ही साथ लेकर आए हो।" अनामिका ने उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा।

"लेकर तो बहुत कुछ आया हूँ। कुछ सपने... कुछ उम्मीदें... कुछ शिकायतें और बहुत सी सौगातें!" कहते हुए चैतन्य एक पल को रूका और फिर
गहरी साँस लेकर बोला, "पता नहीं... लेकर क्या जाऊँगा!"

अनामिका ने उसकी जलती-बुझती ऑखों में देखा और सब भूल गई। कुछ पल इसी तरह ख़ामोशी में गुज़र गए और फिर अचानक ही अनामिका ने अपनी सोचों को झटका दिया और बोली, "कुछ खाओगे!

भूख लगी होगी तुम्हें!"

अनामिका की बात बदलने की अदा चैतन्य के होठों पर फीकी सी मुस्कान ले आई। उसने उसे एक भरपूर नज़र से देखा और बोला, "बस... एक कप चाय!"

"चाय! चाय!" अनामिका ने पहली बार नार्मल और दूसरी बार जोर से चौंक कर कही थी।

"क्या हुआ?" चैतन्य के माथे पर बल पड़े थे।

"गीता ने दो कप चाय मंगवाई थी। मैं भूल गई!" अनामिका अंदर की ओर भागी थी। हैरान होता हुआ चैतन्य भी उसके पीछे लपका था।

"कौन गीता?"

"वरूण की बहन!"

"ओह! वरूण की बहन! तब तो इस तरह डरना बनता है।" चैतन्य ने मजे लेते हुए कहा। उसकी बात का अंदाज समझकर अनामिका ठिठकी और मुड़कर चैतन्य की ओर देखने लगी।

"चलो! चाय बनाना है ना!" चैतन्य ने उसे आगे बढ़ने का इशारा करते हुए कहा। अनामिका ने गहरी साँस छोड़ते हुए अपना सिर हिलाया और किचन
की ओर बढ़ गई। चैतन्य भी पीछे-पीछे चल दिया। अनामिका अपना काम कर रही थी और किचन की स्लैब से टिका हुआ वो चुपचाप उसे देख रहा था।

"तुम वरूण को कैसे जानती हो?" चैतन्य ने अपने दिल में दबा सवाल बाहर निकाला, जिस पर चाय की पत्ती निकालती हुई अनामिका ने अपनी एक भौंह उठाकर उसे देखा था।

"ओके! तुम दोनों एक-दूसरे को... कब... से जानते हो?" कब पर जोर देते हुए चैतन्य ने अपना सवाल बदला।

उसकी बात सुनकर अनामिका मुस्कुराई और बोली, "माँ और अंकल की जान-पहचान थी पुरानी।"

"मतलब... मे...घा!" नाम लेते हुए चैतन्य थोड़ा झिझका था।

"और कौन?"

"पर वो तो जंगल में रहती थी ना!" चैतन्य ने चौंकते हुए कहा था। उसकी बात सुनकर अनामिका ने एक तेज नजर उठाकर उसकी ओर देखा और फिर एक उलाहना भरी हँसी उसके होठों पर आ गई।

"जंगल! नो वे! मैं हमेशा से शहर में ही रही थी माँ के साथ। वो तो बाद में मुझे पता चला था ना माँ के बारे में! तब मैं हरिपुर गई थी। वरना में हरिपुर के बारे में कुछ नहीं जानती थी।" अनामिका ने बात साफ करते हुए कहा।

"अच्छा! उनकी मुलाकात कैसे हुई थी?" चैतन्य ने जिज्ञासा जाहिर करते हुए पूछा।
"तुम मेरे और वरूण के बारे में पूछ रहे थे ना! माँ और अंकल की कहानी में कहाँ उलझ रहे हो?" अनामिका ने अनमने ढंग से कहा।

"ओह! तो ठीक है। अपने और वरूण के बारे में ही बताओ।" चैतन्य ने पटरी पर लौटते हुए कहा।

"कहा ना माँ और अंकल एक दूसरे को जानते थे। तो अक्सर छुट्टियों में मैं माँ के साथ यहाँ आया करती थी। तो ये समझ लो कि वरूण और मैं बचपन के दोस्त हैं। सच कहूँ तो एक-दूसरे के एकलौते दोस्त हैं। ना मैंने किसी और से दोस्ती की और ना ही उसने कोई और दोस्त ढूंढा। शायद इसीलिए वो मुझे लेकर थोड़ा ज्यादा भावुक है।" अनामिका ने तफ्सील बयां की।

"ओह! पर अब तो तुम्हें और भी दोस्त मिल गए हैं।" चैतन्य ने हरिपुर के दोस्तों की ओर इशारा करते हुए कहा।

"हम्म! शायद इसीलिए.. वो हरिपुर के नाम से भी चिढ़ता है!" अनामिका ने हँसकर कहा।

"और मुझसे?" एक बार फिर चैतन्य की गहरी निगाहें अनामिका पर गड़ गई थीं।

"तुमसे क्या?" अनामिका ने अपनी ऑखों से भी सवाल किया था।

"मुझसे क्यों चिढ़ता है? या फिर.... मेरी वजह से हरिपुर से चिढ़ता है?" चैतन्य ने अपने सवाल की गहराई बढ़ाते हुए कहा।

अनामिका ने उसका सवाल सुनकर उस पर एक उचटती मगर तेज निगाह डाली और फिर उबलते चाय की ओर देखकर बोली, "वो तुमसे क्यों
चिढ़ेगा?"

"अच्छा! तुम्हें नहीं पता!" चैतन्य ने उसके थोड़ा और करीब होते हुए कहा।

"चिढ़ तो तुम्हारे चेहरे पर भी दिखाई देती है!" चाय कप में डालती अनामिका ने उसे टोका था।

"चिढ़ नहीं... जलन! जब वो दोस्त होकर चिढ़ सकता है तो जलने का हक़ तो मेरा भी है।" चैतन्य ने साफगोई से कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका के चेहरे के भाव ऊपर-नीचे हुए थे, पर उसने अपना सिर झुका कर ही रखा और चुपचाप अपना काम करती रही।

"कुछ कहा नहीं तुमने!" चैतन्य ने उसे कुरेदा।

"उफ्फ! तुम दोनों की बातें! तुम दोनों ही सुलझाओ और... सुलझ जाए तो... मुझे भी बता देना।" चाय का एक कप उसे थमाती हुई अनामिका बोली और दो कप साथ लेकर ऊपर की ओर चली गई। चैतन्य उसे ऊपर जाते हुए देखता रहा। उसका दिल और ऑखें अभी भी खाली की खाली रह गई थीं।

"उफ्फ! ये लड़की! जान लेकर ही मानेगी।" खुद में ही बड़बड़ाता हुआ चैतन्य चाय का कप हाथ में

पकड़े हुए बैठक में आ गया और सोफे में बैठकर सोच में डूब गया। वो उसी तरह ना जाने कितनी देर बैठा रहा, उसी समय एक आवाज ने उसे चौंकाया।

"हैलो हैंडसम मैन!"

चैतन्य ने चौंककर आवाज की दिशा में देखा। उसकी ऑखों में सामने वाले
को पहचानने की कोशिश साफ दिखाई दे रही थी और थोड़ी ही दिमागी मशक्कत के बाद उसे समझ में आ गया कि ये वरूण के पिता ही हो सकते थे।

"आप... मि. अनंत कुमार?" चैतन्य ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा।

"बिल्कुल सही पहचाना मिस्टर आशुतोष!" अनंत कुमार ने गलत अनुमान लगाते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

"जी नहीं! मैं आशुतोष नहीं... चैतन्य हूँ। उन्हीं के साथ आया हूँ।" चैतन्य ने उनकी जानकारी दुरूस्त करते हुए उनका हाथ थामा। उसका नाम सुनते ही अनंत कुमार के माथे पर कुछ बल पड़े।

"चैतन्य! ये नाम तो कहीं सुना है।" अपने माथे पर ऊँगली फिराते हुए अनंत कुमार ने कहा।

"जी!" चैतन्य चौंका था।

"हाँ! याद आया! अनामिका ने तुम्हारी बहुत तारीफ की थी।" अनंत कुमार ने याद करते हुए बताया।

"मेरी! कैसी तारीफ!" चैतन्य का दिल जोरों से धड़का था।

"यही कि तुम.... बहुत ही समझदार हो.... और बहादुर भी।" अनंत कुमार ने मुस्कुराते हुए कहा।

"जी!" चैतन्य के चेहरे पर मुस्कान उभरी।

"पर पूरी बात तो बताई नहीं उसने!" अनंत कुमार ने उसे थोड़ी संजीदगी
से देखते हुए कहा।

"कौन सी बात?" चैतन्य उनकी नज़रों से सहमा था।

"यही कि.... तुम तो बहुत हैंडसम भी हो।" अनंत कुमार ने थोड़ा आगे झुककर और फुसफुसा कर कहा।

"जी!" चैतन्य एक बार फिर चौंका।

उसे इस तरह चौंकते हुए देखकर अनंत कुमार ने एक जोरदार ठहाका लगाया। चैतन्य बुरी तरह झेंपा था।

"और कोई गर्लफ्रेंड वगैरह है या...?"

अनंत कुमार के इस बेबाक सवाल से चाय का कप होठों पर लगाए चैतन्य को धसका सा लगा था। उसने खांसते हुए चाय का कप सामने टेबल पर रखा था।

"क्या हुआ?" अनंत कुमार ने घबराकर पूछा।

"वो... चाय ठंडी हो गई है, तो गले में लग गई।" चैतन्य ने सफाई से झूठ बोला।

"ओह! दूसरी बनवा देता हूँ।" अनंत कुमार ने कहा।

"जी नहीं! अब इच्छा नहीं रही चाय पीने की।" चैतन्य ने सिटपिटा कर कहा और खड़ा हो गया।

"मैं वो जरा... आराम कर लेता हूँ। थकान हो रही है।" चैतन्य ने अपनी
बात कहते हुए उनसे जाने की अनुमति माँगी थी।

"हाँ! हाँ! क्यों नहीं? अनामिका अगर ऊपर हो तो उसे आशुतोष जी के साथ मेरी स्टडी में आने के लिए कह देना प्लीज़!" अनंत कुमार ने आग्रह भरे शब्दों में कहा।

"जी जरूर!" कहकर चैतन्य तेजी से पलटकर वहाँ से निकला था। उसे उनके सामने ना जाने क्यों.. पर बहुत उलझन हो रही थी। वो लगभग सिर पर पैर रखकर वहाँ से भागा था। अनंत कुमार ने उसे कुछ देर तक जाते हुए देखा और फिर एक संजीदगी चेहरे पर ओढ़कर अपनी स्टडी की ओर चल दिए।

****

चैतन्य को चाय पकड़ाकर अनामिका जब गीता के कमरे में पहुँची, तो उसने सृष्टि को खिड़की के पास खड़ा होकर बाहर झांकते हुए पाया। उसका चेहरा थोड़ा सख़्त लग रहा था। अनामिका चाय की ट्रे लेकर गीता के पास पहुँची, तो वो कोई किताब खोले उस पर झुकी हुई थी।

"गीता!" अनामिका ने कहा।

अनामिका की आवाज सुनकर गीता ने ऊपर नज़रें उठाई और पलके तेजी से झपकते हुए उसे देखने लगी। अनामिका ने आँखों से सृष्टि की ओर इशारा किया और कहा, "इसे क्या हुआ है?"

"मुझे क्या पता? वैसे भी दूसरे के व्यक्तिगत जीवन में ताक-झांक करना अनुचित कार्य होता है। ईश्वर...!" गीता के बचे हुए शब्द उसके मुँह में ही
रह गए, जब अनामिका ने झटके से अपने दोनों हाथों को उसके सामने जोड़कर अपना सिर झुका दिया।

"माफ करें देवी! गलती हुई आपसे पूछकर! उससे ही पूछ लेना था मुझे।" अनामिका थोड़ी चिढ़ से बोली और सृष्टि की ओर देखने लगी, जो अभी भी उसकी आमद से बेखबर थी।

"सृष्टि! क्या हुआ?" अनामिका ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा। अपने कंधे पर किसी का स्पर्श पाकर वह पूरी तरह उछली थी।

"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं? बस आपने अचानक पीछे से हाथ रखा, बस इसलिए!" सृष्टि ने खुद के साथ-साथ बात भी संभाली थी।

"चाय पी लो! ठंडी हो जाएगी।" अनामिका ने कहा। उसकी बात सुनकर सृष्टि ने हाँ में सिर हिलाया और गीता की ओर बढ़ गई, जो बिस्तर पर बैठी हुई किताबों से उलझी हुई थी। अनामिका ने खिड़की से बाहर झांककर देखा। इमारत का पिछला हिस्सा दिखाई पड़ रहा था, जहाँ कोई पूरी मुस्तैदी से काम कर रहा था। वो उसे ठीक से देख पाती उसी समय दरवाजे पर हुई एक दस्तक ने उसका ध्यान वहाँ से हटा दिया। अनामिका ने देखा कि गीता की आवाज पर दरवाजा खुला और चैतन्य ने अपनी सूरत सबको दिखाई। जहाँ उसे देखकर गीता के चेहरे पर अजनबियत के भाव आए, वहीं सृष्टि की फैली हुई ऑखें पूरी तरह उस पर ही जमी रह गईं।

"चैतन्य! तुम यहाँ!" अनामिका के मुँह से सवाल निकला।

"तुम्हें ही ढूँढ रहा था।" चैतन्य बोला।
"मुझे! क्यों?" अनामिका ने हैरानी से कहा।

"वो अनंत कुमार जी ने तुम्हें और आशुतोष जी को बुलाया है।" चैतन्य ने जवाब दिया।

"ओह!" अनामिका दरवाजे की ओर बढ़ी। कमरे से बाहर निकलते समय वो अचानक रूकी और पीछे मुड़कर बोली, "मैं तो भूल ही गई। गीता! ये चैतन्य हैं। आशुतोष जी के साथ आए हैं और चैतन्य! ये है हमारी गीता!"

"ओह! हैलो गीता!" कहते हुए चैतन्य की निगाहें बुत बनकर खड़ी सृष्टि पर अटक गईं।

"और आपकी तारीफ!" चैतन्य ने उसे अजीब सी नज़रों से देखते हुए पूछा। चैतन्य का सवाल सुनकर अनामिका का ध्यान भी सृष्टि की ओर गया और फिर वो बोली, "ये सृष्टि है। गीता की दोस्त!"

"हैलो!" चैतन्य ने मुस्कुराते हुए कहा।

"हाय!" सृष्टि ने उसी तरह खोए हुए अंदाज में कहा, जिसने सभी को चौंकाया।

"अ... चैतन्य चलो!" सृष्टि की ऑखें पढ़कर अनामिका ने उसकी बांह पकड़कर उसे बाहर खींचते हुए कहा।

"ओए! बन गया डायग्राम। आ देख!" गीता ने कॉपी पर पेंसिल चलाते हुए कहा। जबकि सृष्टि अभी भी बंद दरवाजे को ही घूर रही थी।

****
अनंत कुमार अपनी स्टडी में ही बैठे हुए किसी सोच में मग्न थे। उसी समय दरवाजे पर हुई दस्तक ने उनका ध्यान तोड़ा।

"आ जाओ!"

उनकी आवाज़ सुनते ही दरवाजा खुला और अनामिका, आशुतोष के साथ अंदर आई।

"आशुतोष!"

"डॉ. अनंत कुमार!"

यह सुनते ही अनंत कुमार ने मुस्कुराते हुए अपनी हथेली आगे बढ़ाई, जिसे आशुतोष ने उसी शिद्दत से थाम लिया।

"थैंक्यू अनामिका! अभी तुम जा सकती हो!" अनंत कुमार, अनामिका से मुखातिब होते हुए बोले। अनामिका ने मुस्कुरा कर अपना सिर हिलाया और वहाँ से चली गई।

"आखिरकार मुलाकात हो ही गई हमारी।" आशुतोष का लहजा रहस्य से भरा था।

"वो तो होनी ही थी। नियति में यही तो लिखा है।" अनंत कुमार ने भी उस रहस्य को बरकरार रखते हुए कहा और फिर दोनों ही एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए।
****

शाम होते-होते सभी एक-दूसरे से परिचित हो चुके थे। वरूण भी अपनी नींद पूरी करके उठ गया था और इस बार उसका गुस्सा बिल्कुल भी शांत नहीं हुआ था, बल्कि चैतन्य को देखते ही वो और भी उबालें मारने लगा था। मगर उसने दूसरों के सामने उस गुस्से का कड़वा घूंट गटक लिया। परिधि भी दोपहर में ही उठ गई थी और अभी सबके साथ बैठी हुई थी। आशुतोष, अनंत कुमार और अनामिका की नज़रों के ज़द में वो बड़ी ही मुत्मइन लग रही थी। मगर वो अपने साए के साथ कौन सा अंधकार समेटे चल रही थी, इस बात से सबके साथ-साथ वो भी अंजान थी। धीरे-धीरे समय आगे बढ़ा और शाम के सात बज गए। हमेशा की तरह वरूण को इस समय पर हॉस्पिटल के लिए निकल जाना था, पर उसके तो जैसे पैर घर से बाहर जाने के नाम पर ही बगावत पर आमादा थे। अनामिका सब समझ रही थी, इसलिए उसने उसे प्यार से समझाया और रात में बात करने का वादा करके उसे किसी तरह हॉस्पिटल रवाना किया। इस दौरान चैतन्य उन दोनों को देखकर अपने दिल को कुरेदता रहा।

रात होते ही सभी अपने-अपने मुकाम यानि कि बिस्तर पर पहुँच गए। अनामिका भी परिधि के साथ बेखबर सोई हुई थी, इस बात से अंजान कि कोई उनके कमरे की खिड़की से उन्हें अपनी दहकती ऑखों से झांक रहा था। उन ऑखों का मरकज परिधि थी या अनामिका... ये समझ में नहीं आ रहा था। कुछ देर तक उसी तरह अंदर की ओर घूर-घूरकर देखने के बाद वो खिड़की से हट गया।

रात का दूसरा पहर खत्म होते ही अनामिका के फोन में अलार्म बजा और पहली ही घंटी में वो ऐसे जाग

गई, जैसे कि ये उसका रोज का काम हो। उसने अलार्म बंद किया और सोई हुई परिधि पर एक नज़र डालकर कमरे से बाहर आ गई। वो बाहर निकलकर बालकनी की खुली जगह में आ गई और अपने फोन पर कुछ खिटपिट करने लगी। उसी समय उसकी छठी इंद्रिय ने उसे किसी खतरे का इशारा किया। उसने झुकी हुई गर्दन के साथ ही अपनी पलकें उठाई और चारों ओर का जायजा लिया। चारों ओर फैला अंधकार, ख़ामोशी के साथ गलबहियां करे हुए था। मगर अनामिका को इस तरह की खामोशी की डरावनी गहराई का अंदाजा था। इसलिए उसने इस वक्त अपने कमरे में जाने में ही अपनी भलाई समझी। वो जाने के लिए पलटी ही थी कि गलियारे के नीम-अंधेरे में किसी की मौजूदगी ने उसे एक पल को डरा दिया। मगर उसे पता था कि डरना... हारने की ओर पहला कदम होता है। उसने हिम्मत की और तेज आवाज में बोली,

"कौन है?"

उसकी आवाज सुनकर वो साया आगे बढ़ा और उसका चेहरा रोशनी के एक टुकड़े में नुमाया होने लगा।

"तुम!"

अनामिका अपने सारे वजूद पर ठंडी हवाओं की छुअन को महसूस कर रही थी। बारिशों के इस मौसम में हवा में मौजूद उमस इस समय ना जाने कहाँ रास्ता भटक चुकी थी और चाँद अपनी चाँदनी की ठंडक से उसकी खाली जगह भरने की कामयाब कोशिशें कर रहा था। सब कुछ बहुत ही दिलफरेब और सुकून से भरा हुआ था। रात का तीसरा पहर शुरू हो चुका था और इस समय वो तन्हा चहलकदमी करते हुए अपनी ही सोचों में गुम थी। अचानक उसके ज़हन में कुछ खटका सा लगा और वो बेचैनी से इधर-उधर देखने लगी। कोई भी तो नहीं था, फिर किसी के होने का अहसास क्योंकर उसे हो रहा था। नज़रें लगातार बाहर की ओर किसी की तलाश रही थीं, जो पूरी तरह से अनचाहा था। ना जाने क्यों.... पर उसे ऐसा लगा कि उसे अब यहाँ नहीं होना चाहिए। दिल में यह ख्याल आते ही वो पलटी और कमरे की ओर जाने के लिए आगे बढ़ते कदम वहीं ठिठक गए। गलियारे के नीम-अंधेरे में मौजूद उस पोशीदा साए ने उसे एक पल को डराया था, मगर अपने डर पर काबू पाते हुए उसने आवाज लगाई,

"कौन है?"

जवाब में उस साए ने अपने आप को रोशनी के एक टुकड़े के हवाले किया और उसका चेहरा अनामिका की ऑखों में उतर गया।

"तुम!"
"हाँ! मैं!"

"इस वक्त यहाँ क्या कर रहे हो तुम?" अनामिका ने उससे पूछा।

"जो तुम कर रही हो!"

"चैतन्य! बातें ना उलझाया करो! तुमने डरा दिया था मुझे।" अनामिका ने रूखे स्वर में कहा।

"तुम डर गई। अजीब बात है!" चैतन्य उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए बोला।

"मजाक मत करो!" अनामिका ने एक बार फिर उसे झिड़का।

"मैं क्यों मजाक करूंगा? मेरी नींद उचट गई थी। बहुत कोशिश की... फिर भी बेचैनी में नींद नहीं आई, तो बस बाहर आ गया। यह सोचकर कि खुली हवा में शायद थोड़ा चैन मिल जाए। मगर बाहर आया तो देखा... यहाँ तो तुम हो... मेरे बचे-खुचे चैन को उड़ाने के लिए।" चैतन्य उसके करीब आते हुए बोला।

चैतन्य का तो पता नहीं, पर.... इस समय उसकी नजदीकी अनामिका के होश फाख्ता जरूर कर रही थी। उसने तुरंत उस पर से अपनी निगाहें हटाई और उससे थोड़ी दूरी बनाकर खड़ी हो गई। उसे इस तरह छिटकते देखकर चैतन्य के होठों पर एक कातिलाना मुस्कान उभरी, जिसे अनामिका नहीं देख सकी। अपने चेहरे पर चैतन्य की नज़रों की तपिश वो साफ-साफ महसूस कर रही थी। कुछ देर तो उसने बर्दाश्त किया, मगर जल्द ही उसका धीरज जवाब दे गया।

"मैं जा रही हूँ!" अनामिका ने कहा और जाने के लिए पलटी।
"इतनी बेरूखी!" कहते हुए चैतन्य ने उसकी कलाई थामी थी। अनामिका ने तेजी से पलटकर उसे घूरा था और नतीजे में चैतन्य ने उसकी कलाई को अपनी गिरफ्त से आजाद कर दिया। अनामिका के चेहरे पर चिढ़ने के भाव उभरे थे।

"तुम यहाँ क्यों आए हो चैतन्य? मैंने कहा था ना कि तुम्हारे सवाल का जवाब मैं दे दूंगी.. थोड़ा इंतजार कर लेते।" अनामिका ने बिगड़े हुए लहजे में कहा।

"अच्छा! और तुम्हें ये क्यों लगता है कि... सब वही करेंगे... जैसा तुम चाहोगी।" चैतन्य ने उसे एकटक देखते हुए सपाट लहजे में कहा। अनामिका ने उसे चौंककर देखा। उसे चैतन्य का लहजा और बात दोनों ही समझ में नहीं आए।

"मैंने ये कब कहा? पर सवाल मुझसे जुड़ा है तो इतना कहने का तो हक बनता है।" अनामिका ने खुद को सही ठहराने की कोशिश में कहा।

"फिर तो सवाल मुझसे भी जुड़ा है। तो हक मेरे भी बनते हैं। हाँ! बस मैं... इस बार खुद को बेचैनियों और छटपटाहटों से आजाद रखना चाहता हूँ।" चैतन्य ने बहुत ही इत्मीनान से कहा।

"तुम सच में बदल गए हो चैतन्य! अंदर-बाहर.... हर तरफ से।" अनामिका की आवाज हद दर्जे तक हैरानी में डूबी हुई थी।

"अच्छा! कैसे बदल गया हूँ? जरा समझाओ!" चैतन्य ने भी शरारत से कहा।

"तुम कितने संजीदा और समझदार हुआ करते थे।" कहते हुए अनामिका
की आँखें जैसे अतीत में लौट गई थीं।

"अच्छा! तो... तुम्हें लगता है कि जिससे तुम दो महीने पहले मिली थी, वो ही असली चैतन्य था! तुम उसी के पास अब तक रूकी हुई हो।" चैतन्य ने अनामिका की खोई हुई ऑखों में झांकते हुए कहा।

"क्या मतलब?" अनामिका चौंकी।

"वो थका-थका सा लड़का! पीली रंगत, बुझी हुई सी ऑखें और बोझिल तन-मन वाला, जिसके कंधे जिंदगी के बोझ से ही झुक गए थे। तुम्हें क्या लगता है? वो... जिसकी जिंदगी मौत के अंधेरों में भटकने लगी थी.... जिसने एक-एक करके अपने अज़ीज़ों को खो दिया था... जो प्यार की राहों में बिल्कुल तन्हा रह गया था, उस समय कितना जिंदादिल या हँसमुख होता।" कहते हुए चैतन्य ने एक गहरी साँस ली।

चैतन्य की बात सुनकर अनामिका को याद आया कि चैतन्य दो महीने पहले हरिपुर में कितना चिड़चिड़ा हुआ करता था। ऑखों और चेहरे से तो समझदारी झलकती थी, पर छोटी-छोटी बातों में अमित और राजू से किस तरह उलझ जाता करता था।

"मैं कभी वो था ही नहीं अनामिका। जब लोग मुझे ज़हनी मरीज जताते हुए मेरी अच्छी खासी सूरत का मजाक बनाया करते थे। सब कहते थे कि मैं एक धोखा हूं, जो एक हसीन चेहरे के पीछे ढेर सारी बदसूरती छिपाए बैठा है। यह सब सुन-सुनकर एक दिन मुझे खुद पर इतना गुस्सा आया कि... वो सारा गुस्सा मैंने अपने चेहरे पर उतार दिया। मानसिक थकावट ने वैसे ही मेरे चेहरे की रंगत छीन ली थी और बालों को मैंने खुद अपने हाथों से कतर दिया। बस वो मेरे मानसिक तनाव की आखिरी हद थी, जब माँ ने मुझे सब बताया और हरिपुर जाने की इजाजत दे दी।" पुरानी बातें दोहराते हुए एक बार फिर से चैतन्य के चेहरे पर थकान तारी होने लगी थी।
यह सब सुनकर अनामिका ने ग़ौर से चैतन्य के चेहरे को देखा। चैतन्य सही कह रहा था शायद अनामिका आज भी चैतन्य की वही छवि अपने दिल और दिमाग में बसा के बैठी हुई थी।

"पर... करीब 20 दिन पहले ही तो हम मिले थे, जब तुमने अपने दिल की बात कही थी मुझसे। उस समय भी..." कहते-कहते अनामिका रूक गई थी और चैतन्य के चेहरे को देखने लगी।

"तुमने कभी भी मुझ पर ग़ौर नहीं किया ना! दो महीने पहले का चैतन्य भी तुम्हें इसलिए याद है क्योंकि उस समय की तस्वीरें तुम्हारे फोन में है। 20 दिन पहले भी बस मैं ही था, जिसका दिल बेइख़्तियार हुआ था। मैं बेवकूफ तुम्हारी खुशफहमी में बस तुम्हारी खूश्बू अपने साथ लिए इस राह पर आगे बढ़ गया और तुम आज भी वहीं खड़ी हो... कहीं और ही देखती हुई।" अपनी बात कहते हुए चैतन्य तड़प उठा था।

अनामिका उसकी बात सुनकर खामोश रह गई। सच ही तो कह रहा था चैतन्य! उसकी ओर उसने देखा ही कब था। वो तो बस अपनी ही धुन में थी। पिछली बार चैतन्य के प्रेम प्रस्ताव ने उसे आश्चर्य में ही डाला था क्योंकि उसने तो अपनी तरफ से कोई भी पहल नहीं की थी और ना ही कोई इशारा। उसने किसी के लिए कभी ऐसा महसूस ही नहीं किया था। उस समय भी हतप्रभ सी वो चैतन्य की बातों को हवा में उड़ा गई थी, यह सोचकर कि समय के साथ चैतन्य को भी शायद ये सब बस एक फितूर लगे। मगर वो कितनी गलत थी। वो साफ-साफ पढ़ सकती थी चैतन्य की ऑखों में उन जज़्बातों को, जो सिर्फ और सिर्फ उसी के लिए लिखे हुए थे और ये सब अब उसे परेशान करने लगा था। उसने सोचा था कि अभी चल रही समस्या को निपटाने के बाद वो आराम से चैतन्य को सब समझाएगी। पर ऐसा लग रहा था कि वो समझने के दौर से बहुत आगे बढ़ चुका था।

अभी वो इन्हीं सब ख्यालों में खोई हुई थी कि तभी उसका फोन बजा और वो हकीकत में वापस आई। वरूण का कॉल था। नाईट ड्यूटी के दरमियान वो हमेशा उसे इस समय कॉल किया करता था। वो बोलता था कि अनामिका से पाँच मिनट की भी बात उसमें एक बार फिर स्फूर्ति ले आती है और वो अपना काम पूरी शिद्दत से कर पाता है। हालांकि अनामिका को उसकी ये हरकत बहुत ही बचकानी लगती थी, पर ये सोचकर कि उसके पाँच मिनट से किसी को खुशी मिलती है तो फिर क्या हर्ज है? उसने फोन उठाया। विडियो कॉल था। अचानक उसे चैतन्य का ख्याल आया, जो रात के इस समय उसके फोन के बजने से खासा हैरान था।

"चैतन्य! वरूण की विडियो कॉल है। प्लीज़! तुम स्क्रीन में मत आना।" अनामिका लगभग गिड़गिड़ाते हुए बोली थी। हालांकि चैतन्य को उसकी ये बात बुरी लगी, मगर वो उसे और परेशान नहीं करना चाहता था, इसलिए चुपचाप एक कोने में खिसक गया, जहाँ से वो वरूण को बिल्कुल भी दिखाई नहीं देता। उसके चेहरे पर एक बार फिर से ग़ैर अहम होने का दर्द दिख रहा था। वो बालकनी की रेलिंग पर दोनों हाथ टिकाकर खड़ा हो गया और बाहर की ओर झांकने लगा। वो वरूण और अनामिका की बातों से खुद को दूर ही रखना चाहता था। वो लगातार बाहर की ओर बिखरी हुई चाँदनी में नहाई हर कुदरती शय की खूबसूरती को निहार रहा था। उसी समय उसकी आँखों ने कुछ देखा। कोई काली सी चीज पेड़ों की झुरमुटों में छिपती हुई आगे बढ़ रही थी। चैतन्य की नज़रें उस पर ही खड़ी थीं कि अचानक उसके सामने वाले पेड़ पर आकर वो हलचलें रूक गईं। चैतन्य की आँखें सिकुड़कर उस पेड़ का मुआयना कर ही रही थीं कि अचानक उसके सामने मौत एक चेहरा लेकर लटकने लगी।

एक गहरी साँस के साथ चैतन्य बेआवाज पीछे की ओर उछला था। वो जो कोई भी था इंसान तो बिल्कुल भी नहीं था। चैतन्य के सामने वो हवा में उल्टा लटका हुआ अपनी गुस्से से भरी लाल आँखों से उसे घूर रहा
था। उसे देखकर ऐसा लगा, जैसे कि चैतन्य की मौजूदगी उसे रास नहीं आई थी। वो तो किसी और की तलाश में था। कुछ सेकंड चैतन्य को घूरने के बाद उसने अपनी सर्द आँखें अनामिका की ओर घुमाई। उसकी नजरों को अनामिका पर जमा देखकर चैतन्य का दिल पहले तो जोर से धड़का और फिर बैठने लगा। वो आफत एक झटके में अनामिका की ओर बढ़ी थी और उतनी ही तेजी से चैतन्य भी अनामिका की ओर लपका था और चैतन्य की फिक्रमंदी उसे समय जीत गई, जब उसने अनामिका को खींचकर अपनी बाहों में भरते हुए उस आफत के नुकीले पंजों से बचा लिया था। एक पल को गहरा सन्नाटा छा गया। अनामिका भौंचक सी चैतन्य की बाहों में सिमटी हुई थी और चैतन्य की नज़रें बालकनी के बाहर की ओर जमी थीं। उसकी नज़रों का पीछा करते हुए अनामिका ने भी जब उस ओर देखा तो उसे भी उन नुकीले पंजों की एक झलक दिख ही गई और उसे समझ में आया कि आखिर हुआ क्या है?

"तुम ठीक हो?" अनामिका को अपनी बाहों में भरे हुए ही चैतन्य ने उससे फिक्र से पूछा। जवाब में अनामिका ने हाँ में सिर हिलाया और फिर उसकी बाहों से बाहर निकलने के लिए कसमसाई। चैतन्य ने भी उसे हल्के से आजाद कर दिया।

"थैंक्यू!" अनामिका के मुँह से निकला।

"आज के बाद रात में यहाँ आने की जरूरत नहीं है। वो कुछ भी कर सकता है।" चैतन्य थोड़ी सख़्त आवाज में बोला।

अनामिका ने सिर हिला दिया। उधर उन दोनों को इस कदर नजदीक देखकर वरूण सदमे में आ गया,

मगर जल्द ही खुद को संभालते हुए वो जोर से चिल्लाया, "क्या हुआ अनामिका?"

इस बार चैतन्य गुस्से से फोन के पास गया और जोर से बोला, "ज्यादा
कुछ नहीं! तुम्हारी बचकानी मांगों की वजह से अनामिका की जान पर बस आफत आते-आते रह गई।"

उसके तेवर देखकर पहली बार चिढ़ने की बजाय वरूण सहमा था। उसने भी अनामिका की ओर सिर मोड़कर देखा और बोला, "आई एम सॉरी!" और उसने फोन काट दिया।

"उसे बेवजह डाँट दिया। उसने नहीं कहा था बाहर आने के लिए। वो परिधि की वजह से मैं..."
अनामिका की बात अधूरी रह गई, जब परिधि का नाम सुनकर चैतन्य उसके कमरे की ओर भागा था। एक बार फिर कमरे का नज़ारा हौलनाक था। परिधि आईने के सामने चुपचाप खड़ी हुई थी, मगर आइने में उसका अक्श उसे घूरकर देख रहा था।

वो अक्स कहीं से भी परिधि की तरह नहीं दिख रहा था। उसकी भावहीन ऑखें सर्द छुरे की तरह तेज थी, जो परिधि के अंदर उतरना चाहती थी। अनामिका की जान हलक़ में फँस गई। उसने एक नज़र परिधि के अक्स को देखा और एक नज़र चैतन्य पर डाली। उसके चेहरे पर हैरानी नहीं बल्कि संजीदगी दिखाई दे रही थी। उसने हल्के से दरवाजे पर दस्तक दी
और फिर वो आईना पानी की सतह की तरह झिलमिलाने लगा और अगले ही पल सब कुछ सामान्य हो गया।

"उसे कभी भी अकेले छोड़कर नहीं जाना। ख़्वाब हमेशा सुहाने नहीं होते हैं अनामिका।" चैतन्य ने कहा और अपने कमरे की ओर मुड़ गया।

"चैतन्य!" अनामिका बेसाख्ता बोली थी।

"तुम्हें बहुत से सवालों के जवाब देने हैं अनामिका!" और फिर वो बिना रूके अपने कमरे में चला गया। अनामिका ठगी सी खड़ी रह गई।

वो अंदर गई और परिधि को सहारा देकर बिस्तर पर लिटाया। वो नींद में थी। अभी-अभी जो भी हुआ था, उसने उसके होश उड़ा दिए थे। और चैतन्य की बात उसे और भी उलझाकर चली गई थी। क्या चैतन्य यहाँ यूं ही अपना दिल बहलाने के लिए नहीं आया था। क्या कुछ और था जो उसने अपने अंदर छिपा रखा था। जो भी था अगले दिन पर टालने के अलावा और कुछ नहीं किया जा सकता था, क्योंकि आगे जो भी करना था, आशुतोष जी और अनंत कुमार के परामर्श के बाद ही करना था। मामला हर दिन के साथ उलझ रहा था और इन सबमें चैतन्य की आमद ने इसे और भी उलझा दिया था। वो इन सबमें क्या कर रहा था? इन्हीं सवालों में उलझी हुई वो बिस्तर पर जाकर लेट गई। उसे कब नींद आई, उसे पता नहीं चला।

****

अगले दिन अनामिका की सुबह जल्दी हो गई। पिछली रात के हादसे से
अपने ज़हन को आजाद करने के लिए वो नीचे गार्डन में आ गई। ओस से भीगी हुई घास पर पैरों को रखते ही एक ताजगी उसके पैरों से गुजरकर मस्तिष्क तक पहुँच गई। एकदम से उसका भारी सा मन हल्का हो गया। सुबह की सिंदूरी रोशनी के साथ चिड़ियों का कलरव सुकून की नई परिभाषा लिख रहा था और जब अनामिका ने इसे महसूस करने के लिए अपनी ऑखें बंद की तो उसकी बंद पलकों के पर्दे में चैतन्य का चेहरा उभर गया। उसने झट से अपनी ऑखें खोली और बुदबुदाई, "आशुतोष जी से बात करनी होगी।"

जल्द ही सभी नींद का हाथ छोड़कर नए दिन का स्वागत कर रहे थे। रात की घटना से अभी तक सभी अंजान थे। चैतन्य अभी तक उठा नहीं था। अनामिका की नज़रें बार-बार सीढ़ियों पर चली जाती और फिर मायूस होकर लौट आती। आशुतोष ने उसकी इस हरकत को नोट कर लिया था और एकांत मिलते ही उससे पूछा था।

"क्या हुआ अनामिका? तुम बेचैन दिखाई दे रही हो!"

"आशुतोष जी! आपको क्या लगता है? चैतन्य यहाँ क्यों आया है?" अनामिका ने सवाल किया।

"ऑब्यसली! तुम्हारे लिए आया है और क्या वजह होगी!" आशुतोष ने लापरवाही से कहा।

"पर मुझे ऐसा नहीं लगता!" अनामिका ने आशुतोष की बात काटते हुए कहा।

"क्यों भला?" आशुतोष की ऑखें सिकुड़ी थीं।

"वो बस एक मेरी हाँ सुनने के लिए यहाँ तक आएगा, जबकि मैंने उससे
वादा किया था। वो इतना बेसब्र भी नहीं है और ये मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था।" अनामिका कोई हुई आवाज में बोली।

"हुआ क्या है?" आशुतोष ने अनामिका से पूछा।

"चैतन्य यहाँ मेरे लिए नहीं आया है।" अनामिका की बात ने आशुतोष को चौंकाया था।

"क्या मतलब?" आशुतोष ने सिकुड़ी हुई ऑखों के साथ पूछा।

"उसके यहाँ आने का मकसद कुछ और ही है। पिछली बार की तरह ही अपने अंदर कुछ छिपाए हुए है वो। क्या? पता नहीं!" अनामिका शून्य में देखते हुए बोली।

"मतलब कि.... उसके यहाँ आने का कारण तुम नहीं कोई और है!" आशुतोष ने बेयकीनी से कहा।

"हाँ!" कहते हुए अनामिका ने पिछली रात की पूरी घटना सिलसिले वार सुना दी। सारी बात सुनकर आशुतोष को भी हैरत का जोरदार झटका लगा था।

"तो क्या उसने उसे देखा था?" आशुतोष ने पूछा।

"शायद देखा हो! कह नहीं सकती। पर इतनी सारी हैरतअंगेज घटनाओं के बाद भी वो बिल्कुल भी नहीं चौंका था। मुझे नहीं लगता कि जो कुछ भी हो रहा है, वो उससे अंजान है। वो जानबूझकर और सोच-समझकर ही यहाँ आया है।" अनामिका ने विश्वास भरी आवाज में कहा।

"पर... उसे ये सब कैसे पता?" आशुतोष ने कहा।
"कहीं उसके सपनों की दुनिया फिर से सक्रिय तो नहीं हो गई।" अनामिका ने आशंका जाहिर की।

"पर ऐसा नहीं हो सकता। वो तो हम कर रहे थे उसके साथ। उसकी कोई सपनों की दुनिया नहीं थी। वो एक साधारण इंसान हैं। हमारी दुनिया से नहीं है वो।" आशुतोष ने आपत्ति जताई।

"पर कुछ तो है और मैं इसे नकार नहीं सकती। " अनामिका ने कहा।

"तो अब!" आशुतोष ने पूछा।

"बस बहुत हो गई चुप्पी। अब खुलकर बातें करने का समय है। हमें आगे की योजना भी आज ही बनानी है। वो हमले शुरू कर चुका है। कामयाब नही हुआ... ये अलग बात है!" अनामिका ऑखों में रात के मंजर को भरकर बोली। उसके कानों में चैतन्य की आवाज गूंज रही थी।

"ख्वाब हमेशा सुहाने नहीं होते हैं अनामिका!"

अनंत कुमार आज भी जरूरी काम से बाहर गए हुए थे। उन्होंने आशुतोष से वापस आने के बाद किसी बहुत जरूरी मीटिंग की बात की थी। चैतन्य भी उठ चुका था और वरूण भी हॉस्पिटल से वापस आ गया था। सुबह के नाश्ते के बाद सभी अपने-अपने कामों में मशरूफ हो गए। आने के बाद से ही चैतन्य और अनामिका उसकी नज़रों की दायरे में थे। चैतन्य और उसके बीच नज़रों की रस्साकसी आशुतोष की नज़र में भी आ गई थी। उन दोनों को लेकर अनामिका की परेशानी ने आशुतोष को भी ख़ासा परेशान कर दिया था। आशुतोष अच्छी तरह समझता था कि इन हालातों में इस तरह की बचकानी हरकतें उन सबकी दिक्कतों को और भी बढ़ा सकती थीं। आखिरकार उसने उन दोनों से तफ्सीली बात करने का इरादा कर ही लिया। वैसे भी चैतन्य की रात वाली हरकतें नज़रअंदाज करने लायक तो बिल्कुल भी नहीं थी। अनामिका भी उन दोनों के बीच एक बार फिर से बहस का मुद्दा नहीं बनना चाहती थी, इसलिए उन दोनों की पहुँच से बाहर ही थी।

दोपहर के खाने के बाद वरूण सोने के लिए अपने कमरे में चला गया। आज उसकी नाईट ड्यूटी की आखिरी रात थी और इसलिए वो उस बेचैनी से थोड़ी राहत महसूस कर रहा था, जो पिछली रात चैतन्य और अनामिका को नजदीक देखकर उसके दिल पर तारी हो चुकी थी। सुबह से ही उसने
उन दोनों के बीच एक फासले को महसूस कर लिया था। रात चैतन्य के गर्म तेवरों ने उसे इस वक्त शांत ही रखा हुआ था। अनामिका के लिए चैतन्य का फिक्रमंद होना इस बार उसे उतना खराब तो नहीं लगा था, पर उसे इतना खटका जरूर हुआ था कि उन सभी के आसपास कुछ तो बहुत ही अजीब हो

रहा है, पर क्या.... ये उसकी समझ से बाहर था।

खाने के बाद चैतन्य भी अपने कमरे में चला गया था। रात के हादसे के बाद से वो अनामिका से थोड़ी दूरी ही बरत रहा था। शायद अब उसने अपने आत्मसम्मान पर पड़ी चादर खोल दी थी। अगर अनामिका को फिलहाल उसमें दिलचस्पी नहीं थी, तो वो भी उस पर कोई जोर नहीं डालना चाहता था। इसलिए उसने उसका इंतजार करने का फैसला कर लिया था। हालांकि उसे पता था कि अनामिका के सामने उसके यहाँ आने के सच का एक और हिस्सा आ चुका था। यकीनन उसके दिल और दिमाग में बहुत सारे सवाल होंगे, मगर वो भी इस बार अपने सारे सवालों के जवाब पाने की जिद में था।

आशुतोष और अनामिका बाहर बरामदे में बैठे हुए थे। परिधि, गीता और सृष्टि के साथ गीता के कमरे में थी। चैतन्य की रात की चेतावनी के बाद वो उसे अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी। हालांकि सृष्टि भी उसकी रडार में ही थी, मगर आशुतोष से बात करना बहुत ही जरूरी हो गया था।

"आशुतोष जी! चैतन्य को कैसे पता चला कि आप यहाँ आने वाले हैं?" अनामिका ने अपने दिल में दबा सवाल बाहर निकाला था।

"वो कई दिनों से गाँव में ही था और इस बार ज्यादातर मेरे साथ ही समय बिताता था। मैं जब चित्रलेखा की कहानी में उलझा हुआ था, तब वो मेरी लाइब्रेरी की किताबों में घुसा रहता था। बीच-बीच में मैं उससे चित्रलेखा की कहानी के बारे में डिस्कसन भी करता रहता था। कई बार कहानी की कुछ उलझनों पर उसकी राय भी पूछी थी। उस समय सचमुच मुझे
ऐसा नहीं लगा था कि उसके इरादे कुछ और भी हो सकते हैं।" कहते हुए आशुतोष कुछ दिन पहले की यादों में चला गया।

"फिर क्या हुआ?" अनामिका ने जिज्ञासा जाहिर करते हुए पूछा।

"उस रात जब तुमने मुझे वो विडियो भेजा था और यहाँ के हालात बताते हुए मैसेज भी किया था, उसके अगले दिन मैं जब यहाँ आने की तैयारी में था, उसी समय चैतन्य मुझे मेरी एक किताब लौटाने के लिए आया था। उसके चेहरे की चमक देखकर मैंने जब कारण पूछा... तो उसने बताया कि तुमने उसे अगली मुलाकात में जवाब देने का भरोसा दिया है। यह सुनकर मैं भी बहुत खुश हुआ था। वो एक अच्छा लड़का है और यकीन जानो अनामिका तुमसे प्यार भी बहुत करता है। मैंने उसकी खुशी में साथ देते हुए कहा था कि अच्छी बात है... तुम अगली मुलाकात का इंतजार करो.. हम तो जा रहे हैं अनामिका से मिलने। बस ये सुनते ही उसके चेहरे का रंग उड़ गया था और वो भी साथ आने की जिद करने लगा। पहले तो मैंने उसे बहुत टाला, पर फिर इस वादे के साथ मान गया कि उसके सवाल का जवाब मिलते ही वो यहाँ नहीं रूकेगा। पर... मुझे नहीं मालूम था कि वो कोई दूसरा सवाल भी साथ लेकर आया है।" आशुतोष ने यादों का मुआयना करते हुए कहा।

"आपको क्या लगता है? क्या हुआ होगा उसके साथ?" अनामिका अपने डर को दबाते हुए बोली।

"अब अनुमान लगाने का समय नहीं है। उसी से साफ-साफ बात करनी पड़ेगी।" आशुतोष ने किसी भी गुंजाइश से इंकार करते हुए कहा। अनामिका ने भी हामी वाली हुंकारी भरी। बातें खत्म होते ही वो परिधि के पास चली गई, जहाँ सृष्टि, परिधि के हाथ की रेखाएँ पढ़ रही थी। अनामिका को उसका ये व्यवहार बहुत ही अजीब लगा था। उसने परिधि के हाथ को उसके हाथ से आजाद कराया और बोली, "आजकल बहुत

पढ़ाई हो रही है!"

अनामिका की हरकत से सृष्टि ने उसे हल्की नाराजगी से घूरा था। उन दोनों की ऑखें कुछ पल को मिली ही थीं कि गीता बोली पड़ी, "वो इक्जाम तीन महीने बाद है ना! इसलिए तैयारी में समय देना ही पडेगा। कल से तो सर भी 10 दिनों के लिए गाँव जा रहे हैं। इसलिए सृष्टि और मैं यहीं साथ ही पढ़ा करेंगे।"

"अच्छा!" यह सुनते ही अनामिका को हैरत का तेज झटका लगा। अब सृष्टि पूरा-पूरा दिन इसी घर में रहने वाली थी। ना जाने क्यों... पर अनामिका को वो कहीं से भी मासूम नहीं लग रही थी। मगर वो कुछ बोल भी नहीं सकती थी। अब तो बस अनंत कुमार के आने की राह देखनी थी, उसके बाद ही कुछ हो सकता था। उसने गहरी साँस लेकर सबकी परेशानियों का सबब बनी परिधि की ओर देखा, जो खुद सब कुछ भुलाकर आराम में दिखाई दे रही थी।

****

आशुतोष और चैतन्य अपने कमरे में आराम कर रहे थे। आशुतोष की जाँचती हुई नज़रें चैतन्य पर जमी हुई थी, जो अपने फोन से खेल रहा था। कुछ देर तो सब कुछ इसी तरह होता रहा, फिर अचानक ही चैतन्य ने अपनी पलकें उठाकर आशुतोष की ओर देखा। यह इतना तेजी से हुआ कि आशुतोष को अपनी नज़रें फेरने का मौका ही नहीं मिला।

"क्या देख रहे हैं आशुतोष जी? या फिर... क्या सोच रहे हैं?" अपने
सवालों में आशुतोष को उलझाते हुए चैतन्य ने कहा।

"तुम यहाँ अनामिका से मिलने आए हो?" आशुतोष ने पलटकर सवाल किया था।

"आप दोनों की बातें हो गईं!" चैतन्य का लहज़ा जरा तंज़ भरा था।

"क्या छिपा रखा है तुमने चैतन्य? बताओगे नहीं। इतना तो समझ आ गया है कि तुम यहाँ जो हो रहा है... उससे नावाकिफ नहीं हो। पर कैसे? तुम्हें कैसे पता चला?" आखिरकार आशुतोष ने बात घुमाने की बजाय सीधा रास्ता चुना।

आशुतोष की बात सुनकर चैतन्य ने उस पर एक तेज नज़र डाली और फिर वो एक बार फिर से अपने फोन में उलझ गया। उसकी चुप्पी अब आशुतोष को परेशान कर रही थी।

"चैतन्य! कुछ पूछा तुमसे!" इस बार आशुतोष का लहजा सख़्त था।

आशुतोष की तेज आवाज पर चैतन्य ने एक बार फिर से उसे देखा और फिर अपना फोन आशुतोष की ओर बढ़ा दिया। आशुतोष ने हैरत भरी ऑखों से एक बार चैतन्य को देखा और फिर उसके फोन पर निगाहें जमा दीं। वो चुपचाप उसे देखता रहा। तभी चैतन्य ने एक हुंकारी भरते हुए अपनी ऑखों के

इशारे से उसे फोन लेने के लिए कहा। हैरत में डूबे हुए आशुतोष ने वो फोन अपने हाथ में लिया और उस पर निगाह डाली। अगले ही पल उसकी ऑखें सदमे से फैल गईं थीं।

"तुम... तुम इसे भूले नहीं थे।" आशुतोष ने सदमे भरी आवाज में कहा।

"चाहता तो था, पर भूल नहीं पाया।" चैतन्य ने कहा।
"तो फिर ये?" आशुतोष ने फोन की ओर इशारा करते हुए कहा।

"ये तो ऐसे ही एक दिन अपने और अनामिका के भविष्य के बारे में सोच रहा था। ना जाने क्या सूझा... हम दोनों की भविष्य की तस्वीरें उतारने लगा, जिसका परिणाम मुझे ये मिला।" चैतन्य ने उस फोन की ओर देखते हुए थोड़ी कड़वाहट से कहा। आशुतोष के दिल और चेहरे पर अपनी चोरी पकड़े जाने के निशान साफ-साफ दिखने लगे। उसके हाथ में फोन में उसी औरत की तस्वीर थी, जो दीवाली वाले दिन चैतन्य के घर आई थी और जाहिर सी बात थी कि कौन थी।

"चैतन्य! मैं... वो.... तुम्हें समझा.."

"रहने दीजिए! इसे समझने के लिए बाद में बातें करेंगे। अभी मुद्दा कुछ और ही है।" आशुतोष की बात को काटते हुए चैतन्य ने कहा।

"कैसा मुद्दा?" आशुतोष चौंका।

"आप लोगों ने मेरे साथ जो भी किया, उसने मेरी अवचेतन दृष्टि को जागृत कर दिया है। मुझे विजन दिखाई देने लगे हैं।" चैतन्य ने धमाका किया।

"विजन! क्या मतलब है तुम्हारा?" आशुतोष एक बार फिर से चौंका।

"मुझे नहीं पता कि मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ, पर हुआ है और... मैं बस भविष्य ही नहीं... अतीत भी देख सकता हूँ।" चैतन्य ने गंभीर आवाज और चेहरे के साथ कहा।

चैतन्य की बातें आशुतोष पर एक के बाद एक हमले कर रही थीं। उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या बोले। मगर बोलना तो था।
"तुम्हें कैसे पता चला कि ये विजन हैं?" आशुतोष ने संदेह से पूछा।

"शुरू में मुझे भी पता नहीं चला था। मगर धीरे-धीरे अहसास होने लगा। मैं सपनों की ताकत को कभी भी नहीं नकार सकता। पहले मैंने ध्यान नहीं दिया, पर जब इस बार भी सपनों का रंग काला होने लगा, तो मैं सावधान हो गया। पिछली बार तो आप लोगों ने किया था। इस बार भी आप ही थे, ये जानने के लिए ही मैं आपके करीब रहने लगा था, मगर कुछ ही दिनों में मुझे पता चल गया कि ये आपका काम नहीं है। फिर मैंने आपकी लाइब्रेरी की किताबें चाट डाली, तब मुझे इसके बारे में पता चला।" चैतन्य ने बहुत ही आराम से कहा।

"तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?" आशुतोष की आवाज में शिकायत थी।

"मैं बस... पहले अनामिका से बात करना चाहता था।" चैतन्य ने अपने हाथों की उंगलियों को देखते हुए

कहा।

"तुमने कहा कि सपने काले होने लगे! किस तरह काले?" आशुतोष ने कौतूहल से पूछा।

"अनामिका से पिछली मुलाकात के बाद एक बार फिर से मेरे सपने जिंदा होने लगे। फर्क बस इतना था कि इस बार कोई चित्रलेखा नहीं थी, बल्कि मैं अनामिका को देखने लगा था, जिसमें और भी कई नए और अंजाने चेहरे जुड़ गए थे। ये सपने बड़े अजीब होते हैं। मुझे डराते तो नहीं, बस परेशान करते थे और फिर.... एक दिन मैंने अनामिका को किसी पंख वाले इंसान से उलझते देखा, कुछ घड़ियाँ देखीं... कुछ सीढ़ियाँ देखी। और फिर ढेर सारी आग। इस बार मैं बुरी तरह से डर गया था। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा है! इतना तो समझ गया कि जो कुछ भी हो रहा है उसमें आपकी और अनामिका की संलिप्तता है, पर कैसे? ये
समझ में नहीं आया। फिर जब आपने यहाँ आने की बात की तो एक बार फिर मेरे दिमाग को कुछ झटका सा लगा था, जिसे मैं समझ नहीं पाया। सच तो यही है कि कई बार मैं नहीं समझ पाता।" चैतन्य ने उलझे हुए शब्दों के साथ कहा।

आशुतोष को बहुत कुछ समझ में आकर भी समझ में नहीं आया। आखिर चैतन्य में ऐसी क्या खास बात थी कि उसे ऐसी असाधारण शक्ति मिली। अब ये उसके लिए शुभ था या अशुभ... ये तो वक्त ही जानता था। फिलहाल चैतन्य के इस खुलासे ने आशुतोष कौ आश्चर्य के समुंदर में गोते जरूर लगवा दिए थे।

****

दोपहर के तीन बजे अनंत कुमार घर पहुँचे। उनके हाथ में एक पीतल का छोटा सा बॉक्स था। उन्होंने उस समय किसी से भी मिलने में कोताही बरती और तेजी से उस बॉक्स के साथ अपने स्टडी रूम में घुस गए। करीब 15 मिनट के बाद वो बाहर आए तो उनके हाथ खाली थे। वो तेजी से अपने कमरे में गए... इस बात से बेखबर कि कोई उन पर नज़र रखे हुए था। और वो सृष्टि थी।

घर का वो हिस्सा मरघट की तरह सुनसान पड़ा हुआ था। सृष्टि ने चारों ओर अपनी नज़रें दौड़ाई और फिर तेजी से सीढ़ियाँ उतरकर स्टडी रूम के पास पहुँची। उसने दरवाजे पर हाथ रखा और फिर चारों ओर एक छोर निगाह दौड़ाकर वो उस कमरे के अंदर घुस गई। करीब पाँच मिनट बाद वो बाहर निकली। चेहरे पर असफलता के निशान साफ दिख रहे थे। एक बार फिर उसने चारों ओर देखा और फिर सीढ़ियाँ चढ़ गई। वो तेजी से अनामिका के कमरे की ओर बढ़ी, जो इस समय खाली था। एक बार फिर चारों ओर देखते हुए वो उस कमरे में घुस गई और दो मिनट के बाद बाहर निकली। अब उसकी मंजिल गीता का कमरा था। आज उसके वापस जाने का समय हो चुका था।

****

अनामिका गीता के कमरे में थी और खिड़की से बाहर देख रही थी। आज भी उसने किसी को घर के पीछे वाले भाग में काम करते हुए देखा। उसे हैरानी सी हुई।

"गीता! ये पीछे काम कौन कर रहा है?" अनामिका ने पूछा।

"कौन?" कहते हुए गीता उसकी बगल में आ गई और बाहर देखने लगी। अनामिका ने गीता की ओर सवालिया नज़रों से देखा।

"ये! मेरे ख्याल से ये साहनी अंकल का भतीजा है। क्या नाम बताया था पापा ने..(कहते हुए गीता ने अपना माथा मसला) याद आया! मुकुल! मुकुल नाम है इसका!" गीता उछलते हुए बोली।

"कौन साहनी अंकल? वो प्रोफेसर?" अनामिका ने याद करते हुए कहा।

"हाँ वही!" गीता ने उसकी बात की पुष्टि की।

"पर ये यहाँ क्या कर रहा है?" अनामिका ने फिर से सवाल किया।

"मुझे क्या पता? पापा से पूछो!" गीता हाथ उठाते हुए बोली।
"हम्म!" कहते हुए अनामिका की नज़रें फिर से बाहर की ओर गई। वो उसे देख ही रही थी कि तभी उस कमरे के बाहर से चिल्लाने की आवाज आने लगी। वो सभी तेजी से बाहर निकले, तो देखा कि वरूण और सृष्टि एक बार फिर से उलझे हुए थे।

"अपनी ये बिल्ली जैसी ऑखें जरा खोलकर चला करो। टकराने का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाना है क्या तुम्हें।" वरूण उस पर बिफरते हुए बोला।

"और तुम... अगर तुम्हारी शक्ल खरग़ोश की तरह है, तो क्या उसी की तरह उछल-उछल कर चलोगे।" इस बार उखड़ी हुई सृष्टि ने भी हमला किया था।

"खरगोश! कौन खरगोश? मैं! बोला कैसे तुमने मुझे ख़रग़ोश?" वरूण अपनी कमर में हाथ रखकर उसे अपने चश्मे के पीछे से घूरते हुए बोला।

"मुँह से बोला! क्यों? तुम कहीं और से बोलते हो क्या?" सृष्टि का पारा भी और चढ़ने लगा था।

"वरूण!" वो कुछ और कहता, उससे पहले ही अनामिका की तेज आवाज ने उसे रोक दिया।"क्या कर रहे हो तुम दोनों? बंद करो ये सब!" इस बार अनामिका ने दोनों को डपटा था। उसकी बात सुनकर वरूण गुस्से में दाँत पीसता हुआ वहाँ से चला गया। सृष्टि ने भी उसे घूरकर दूर तक जाते हुए देखा।

"मैं चलती हूँ, गीता!" उखड़ी हुई आवाज में सृष्टि ने कहा।

"और वो चैप्टर!" गीता चौंककर बोली।

"कल कर लेंगे। अब मन नहीं है।" कहते हुए वो कमरे में गई और अपना
बैग उठाकर बाहर आ गई। उसने सबसे विदा लिया और तेजी से सीढ़ियों की ओर बढ़ गई। सीढ़ियों से उतरते हुए उसकी नज़र हॉल के सोफे पर उखड़े बैठे वरूण पर पड़ी और उसे देखते ही उसके चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान आई।

"थैंक्यू मि. ख़रग़ोश! तुम बड़े काम के हो।"

अपनी मुस्कान को समेटकर वो तेजी से बाहर चली गई। थोड़ी ही देर बाद अनंत कुमार एक बार फिर से अपने स्टडी रूम में थे और उस पीतल के बॉक्स के बारे में ही सोच रहे थे। फिर उन्होंने फोन निकालकर किसी को कॉल किया।

"आ जाइए! वो आ गए हैं। पर... कुछ बहुत ही अजीब बात हुई है।"

रात अपने हर बढ़ते कदम के साथ काली और ठंडी होती जा रही थी। एक बार फिर बारिश और तूफान रात के हमसाए बने हुए थे। वो एक अंधेरे से भरा गलियारा था, जिसमें कुछ पीली रोशनी वाले बल्ब अपने अस्तित्व के लिए डटे हुए थे। ऐसी रात में वो उस गलियारे में लंबे-लंबे डग भरते हुए चली जा रही थी। चलते-चलते वो एक बड़ी सी काले रंग की दीवार के सामने जाकर रूक गई। उसने एक पल उस दीवार को घूरा और फिर अपना बाँया हाथ एक जगह रख दिया। अचानक ही उस दीवार का काला रंग उसके हाथ पर चढ़ने लगा और उसके हाथ को पूरी तरह ढँक लिया। कुछ सेकंड्स उसी तरह रहने के बाद वो काला रंग एक बार फिर दीवार में वापस लौटने लगा। जब उसका हाथ उस रंग से आज़ाद हो गया, तो उसने सावधानी से वो हाथ दीवार से हटाया और अपने चेहरे के सामने ले आई। उसके उस हाथ में एक काले रंग का कार्ड था, जिस पर सुनहरे रंग के दो खंज़र बने हुए थे और बीच में "A" लिखा हुआ था। उसने उस कार्ड को देखा और फिर उसे कोने में रखे फूलदान में डाल दिया। उसके ऐसा करते ही वो दीवार बिना आवाज के एक ओर सरक गई और सामने फैला घनघोर अंधेरा एक और काली दीवार की तरह प्रतीत होने लगा। उसने उस अंधेरे की दीवार पर एक नज़र डाली और फिर उसकी गहराइयों में उतर गई।
जैसे-जैसे वो आगे बढ़ती गई, उसके सामने मार्ग प्रशस्त करने के लिए मशालें जलती गईं और उसके आगे बढ़ते ही पीछे की मशालें बुझ गईं। दरअसल ये सही मेहमान को सही रास्ता दिखाने वाली मशालें थीं। अगर कोई ग़लत इंसान ग़लती या जानबूझ कर इस गुप्त दरवाजे को पार करके आगे आ भी जाता तो ये मशालें उसे अंधकार की उन गहराईयों में ले जातीं, जिनसे निकलना उसके लिए असंभव था।

ऐसे चौकस रास्ते पर चलते हुए वो एक विशाल सुनहरे दरवाजे के पास रूक गई। उसने उस दरवाजे पर एक नज़र डाली और फिर उस पर एक बार फिर अपना बाँया हाथ रखा। अगले ही पल एक हल्की सी चरमराहट के साथ वो दरवाजा खुल गया। उसके चेहरे पर एक मुस्कान उभरी और वो अंदर चली गई। अंदर एक विशाल कक्ष था जिसकी बाईं ओर की पूरी दीवार किताबों से भरी हुई थीं। बीचों बीच एक लंबी मेज रखी हुई थी जिसके दोनों ओर काले रंग की नक्काशीदार कुर्सियाँ रखी हुई थीं, जिनके गद्दों पर काला चमड़ा जड़ा हुआ था। मेज के अंतिम छोर पर एक ऊँची पुश्त वाली सुनहरी नक्काशीदार कुर्सी रखी हुई थी। जिसके ठीक पीछे एक फर्श से लेकर उस कमरे की छत से थोड़े नीचे तक एक विशाल खिड़की थी, जिस पर काँच के पलड़े लगे हुए थे। उस खिड़की के दोनों ओर मोटे और सुनहरे

पर्दे लगे हुए थे, जो फिलहाल गिरे हुए थे। उसने हैरान ऑखों से खाली पड़ी सुनहरी कुर्सी की ओर देखा, जो खाली पड़ी थी।

"आओ सृष्टि! क्या खबर लाई हो!" उसके पीछे की ओर से आवाज आई। वह चौंककर पीछे मुड़ी। एक 55-60 की दरमियानी उम्र का व्यक्ति कोने में बने आतिशदान के पास आराम कुर्सी पर बैठा हुआ था, जिसमें आग जल रही थी, जिससे उस कमरे में हल्की सी गर्माहट थी। बाहर हो रही बारिश से मौसम की तासीर थोड़ी ठंडी हो चुकी थी। इसलिए बाहर से आने के बाद इस कमरे में आतिशदान की गर्म सोहबत उसे रास आ रही थी।
"उन्होंने बहुत ही चालाकी से उसे अपने सुरक्षा घेरे में रखा हुआ है। याददाश्त अभी तक लौटी नहीं है उसकी। उसके कमरे में भी एक गहरी नज़र डाली मैंने। कोई ख़ास या संदिग्ध लगा नहीं है अभी तक।" सृष्टि बोली।

"और उसके बारे में कुछ?"

"दुविधा ग्रस्त तो बहुत लगी मुझे, पर वे लोग उसे सहज रखने की पूरी कोशिश कर रहे हैं।" सृष्टि ने जानकारी दी।

"तुम पर किसी को शक तो नहीं!" सामने वाले ने सवाल किया।

"अनामिका को है शायद! वो बहुत चालाक है। मगर वो शायद सही समय का इंतजार कर रही है, इसलिए शांत बैठी है।" सृष्टि ने सामने बैठे व्यक्ति को बताया।

"फिर तो उसने उन दोनों को भी बता दिया होगा।" उस व्यक्ति ने कहा।

"हो सकता है। आज अनंत कुमार वो बॉक्स भी ले आए हैं। मैंने नज़र रखी थी, पर मुझे मिली नहीं।" सृष्टि ने कहा।

"तुम्हें क्या लगता है? उन्हें अप्रूवल मिल गया होगा!" व्यक्ति ख़ासे चिंतित स्वर में बोला।

"उनके चेहरे की हैरानी से तो बात समझ में नहीं आई।" सृष्टि उलझन भरी आवाज में बोली।

"उन्हें अप्रूवल मिलना हमारी परेशानी बढ़ा सकता है। वैसे भी अनामिका की शक्तियों को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है और आशुतोष को
कम आंकना भी हमारी बेवकूफी ही होगी।" वह व्यक्ति अभी भी चिंतित दिखाई दे रहा था।

"अगर उस दिन वो तीनो बदमाश उस खंडहर में नहीं आए होते, तो शायद वो लड़की हमारे पास होती। मैं सचमुच शर्मिंदा हूँ।" सृष्टि ने दबी हुई आवाज में कहा।

"जो हो गया, उस पर चर्चा करके कुछ हासिल नहीं होना है, तो आगे पर ध्यान देते हैं। तुम्हारा पिछला रिकॉर्ड शानदार रहा है, इसलिए इस गलती के लिए तुम्हें माफ़ कर दिया गया है, मगर आगे अब गलती की कोई भी गुंजाइश नहीं है। उस लड़की को वहाँ से निकालना ही होगा।" वह व्यक्ति बेचैनी से बोला।

"मगर चीफ! अगर उन्हें अप्रूवल मिल गया, तो उन्हें वार करने का अधिकार मिल जाएगा।" सृष्टि ने

समस्या को सामने रखा।

"मगर वो बस रक्षक बन सकते हैं। उन्हें आगे बढ़ने के लिए कुछ और भी चाहिए।" उस व्यक्ति ने जैसे सृष्टि के साथ -साथ खुद को भी तसल्ली देते हुए कहा था।

"तो क्या आचार्य निशिकांत..."

"नहीं! उनकी उम्र हो चुकी है और हैरत है कि उनका उत्तराधिकारी उन्हें मिला नहीं है अब तक।" वह व्यक्ति ख़ासी हैरानगी से बोला।

"तो क्या... ये हमारे लिए अच्छा है?" सृष्टि का असमंजस भरा सवाल आया।

"फिलहाल तो है। जिस दिन वो उन्हें मिल गया... उनकी ताकत बढ़
जाएगी और ये... हमारे समूह के लिए अच्छी बात नहीं है। आने वाले दिन आसान नहीं होने वाले हैं।"

"जी!"

"नज़र बनाए रखो! आज या कल में कुछ धमाकेदार पता चल ही जाएगा।" एक विश्वास भरी आवाज उस व्यक्ति के मुँह से निकली। सृष्टि ने एक हुंकारी भरी और फिर सीधा हाथ सीने पर रखकर उसने सिर झुकाया और उस कमरे से बाहर चली गई।

"तुम गलत कर रहे हो अनंत! अब भी बहुत कुछ बदला जा सकता है। पर ज़िद्दी भी तो बहुत हो तुम!" वह खुद से ही बातें करते हुए बोला और फिर सामने रखी किताब उठा ली, जिसे वो सृष्टि के आने से पहले पढ़ रहा था।

****

रात हो चुकी थी। बाहर एक बार फिर बारिश हवाओं के साथ अपना जोर दिखा रही थी। सभी भोजन करने के बाद अपने-अपने कमरे में थे। वरूण भी अपनी नाईट ड्यूटी पर जा चुका था, जो आज खत्म होने वाली थी। रात करीब 11 बजे करीब किसी ने अनामिका के दरवाजे पर दस्तक दी। अनामिका सावधानी से उठी और दरवाजा खोला। बाहर आशुतोष था और उसे बाहर बुला रहा था। अनामिका ने उसे रूकने का इशारा किया और फिर वो उस कमरे के आइने के पास गई, जिसे उसने एक मोटे कपड़े से ढँक रखा था। उसने अच्छी तरह से तसल्ली कर ली कि वो नहीं खुल पाए। आश्वस्त होते ही उसने एक नज़र सोई हुई परिधि पर डाली और फिर तेजी
से बाहर निकल गई। एक बार फिर इससे बेखबर कि दो सुर्ख अंगारा ऑखें खिड़की के बाहर से परिधि को घूर रही थीं।

वे दोनों तेजी से बाहर आए और सीढ़ियों की ओर बढ़ गए। नीचे उतरते ही उनका रूख अनंत कुमार की स्टडी की तरफ था, जहाँ वो उन दोनों का इंतजार कर रहे थे। अंदर आने की अनुमति मिलते ही वे अंदर

आ गए। अनंत कुमार अपनी कुर्सी पर बैठे हुए थोड़े से चिंतित लग रहे थे। आशुतोष और अनामिका की आमद भी उनके माथे के बलों को समेट ना सकी, जिसने दोनों के माथे पर भी बल डाल दिए।

"क्या हुआ अंकल? आप परेशान लग रहें हैं।" अनामिका ने पूछा।

"परेशान नहीं... उलझन में हूँ।" अनंत कुमार ने उस पीतल के बक्से को देखते हुए कहा।

"ये क्या है?" आशुतोष ने उस छोटे से बक्से को देखते हुए कहा।

आशुतोष की बात सुनते ही अनंत कुमार के चेहरे पर एक मुस्कान आई और वो बोले, "वही जिसका इंतजार था। अप्रूवल मिल गई है।"

"क्या सच में?" अनामिका की आवाज हैरानी भरी खुशी में डूबी थी।

"हाँ!" कहते हुए अनंत कुमार ने उस बक्से को खोला और फिर उसमें से दो अंगूठियाँ बाहर निकाली। अनामिका और आशुतोष के चेहरे पर एक संतुष्टि भरी मुस्कान आई। अनंत कुमार ने अपनी ऑखें उठाकर उन दो कौतूहल भरी ऑखों की ओर देखा, जो उन अंगूठियों को ही देख रही थीं। उन्होंने आशुतोष पर नज़रें रोकी।

"आशुतोष! तुम्हें नियति पात्र ने हरियाली का रक्षक यानि पृथ्वी-रक्षक
चुना है।" यह कहकर अनंत कुमार ने एक अंगूठी आशुतोष की ओर बढ़ा दी।

उस अंगूठी में हरे रंग का एक पत्थर जड़ा हुआ था। आशुतोष अपनी जगह से आगे आया तो.. अनंत कुमार ने वो अंगूठी आशुतोष को पहना
दी। उसे पहनते ही उस अंगूठी से एक तीव्र हरी रोशनी निकली, जिसने आशुतोष को खुद में समेट लिया और फिर कुछ पलों के बाद सब सामान्य हो गया। अनामिका और आशुतोष दोनों ही हैरतजदा दिखाई दे रहे थे।

"अब अनामिका! तुम्हारी बारी!" यह कहकर अनंत कुमार ने दूसरी अंगूठी उठाई और बोले, "नियति पात्र ने तुम्हें जल का रक्षक चुना है।" अनामिका ने देखा कि उस अंगूठी का रंग समुद्र की तरह नीला था।

उसे अंगूठी पहनाते ही एक छद्म पानी के भँवर ने उसे समेट लिया और कुछ देर में फिर से सब सामान्य हो गया। सब सामान्य होते ही सबके चेहरे पर एक राहत भरी मुस्कान आई। अनंत कुमार ने उस बक्से से दो खंज़र निकाले और उन दोनों की ओर बढ़ाया, जिन्हें उन दोनों ने ले लिया। उन्होंने देखा कि उनके खंजरों की मूठ पर उनकी अंगूठी जैसा ही पत्थर जड़ा हुआ था।

"कुछ और सामान हैं, जो कल आऍंगे।" अनंत कुमार ने गंभीर लहजे में कहा।

"सब तो ठीक ही हो रहा है, फिर... आप उलझन में क्यों हैं?" अनामिका ने आखिरकार अपना सवाल किया।

"इसकी वजह से!" अनंत कुमार ने उस बक्से के अंदर इशारा करते हुए कहा। आशुतोष और अनामिका ने पहले तो एक दूसरे की ओर हैरत से देखा और फिर उस बक्से की ओर बढ़ गए। उस बक्से के अंदर एक और अंगूठी पूरी तीव्रता से चमक रही थी। उसे देखते ही उन दोनों की ऑखें सवालों के बोझ से और सिकुड़ गईं।

"ये क्या है?" आशुतोष ने पूछा।

"ये वायु रक्षक की अंगूठी है, पर नियति पात्र ने यहाँ क्यों भेजी... ये समझ में नहीं आ रहा है।" अनंत कुमार ठंडी साँस छोड़ते हुए बोले।

"क्या मतलब?" बात अभी भी अनामिका और आशुतोष की समझ में नहीं आई थी।
"मतलब ये... कि इस घर में एक और रक्षक मौजूद हैं, पर वो है कौन? ये अंगूठी और खंज़र किसी भी गलत पात्र को नहीं दिया जा सकता है और इस घर में हमारे अलावा और चार लोग मौजूद हैं।" अनंत कुमार ने अपनी उलझन बताई।

"अच्छा! ये तो सचमुच अजीब है।" आशुतोष ने कहा।

अभी वो आगे कुछ कहते, उससे पहले ही ऊपरी मंजिल से शीशा टूटने की एक तेज आवाज आई, जिसने उन तीनों को चौंका दिया।

"परिधि!" अनामिका चीखी और तेजी से उस कमरे से बाहर निकल कर ऊपर अपने कमरे की ओर भागी। आशुतोष और अनंत कुमार भी उसके पीछे भागे।

****

रात के 11 बजकर 15 मिनट हुए थे, जब बेसुध सोया हुआ चैतन्य अचानक कसमसाने लगा। उसका चेहरा नींद की ख़ुमारी में ही सख़्त हो गया था। कुछ देर उसी तरह बेचैन रहने के बाद वो एक झटके में उठ बैठा और गहरी-गहरी साँसे लेने लगा। अचानक उसे कुछ याद आया।

"अनामिका!"

वो तेजी से उसके कमरे की ओर भागा। उसने बिना सोचे समझे ही दरवाजे की नॉब घुमाई और धक्का दिया। दरवाजा खुल गया। दरवाजे के खुलते ही उसकी नज़र बिस्तर की ओर चली गई, जहाँ परिधि दुनिया जहान से बेखबर सो रही थी। मगर चैतन्य की ख़ौफ और गुस्से के अजीब
से तालमेल वाली नज़रें बिस्तर के पास खड़े उस ख़ौफनाक प्राणी पर टिकी हुई थी, जो दरवाजे के खुलने पर गुस्से से भर गया था और चैतन्य को अपनी दहकती ऑखों से देख रहा था। दोनों की तेज चलती साँसों के अलावा और कोई आवाज नहीं आ रही थी। अचानक चैतन्य को अनामिका का ख्याल आया। उसने ध्यान दिया कि अनामिका वहाँ नहीं थी। डर की एक ठंडी लहर उसके पूरे शरीर में दौड़

गई। पिछली रात भी इस पिशाच ने अनामिका पर हमला करने की असफल कोशिश की थी। यह ख्याल चैतन्य के दिल को बुरी तरह बैठा गया। उसकी ऑखों में एक सदमा सा उभरा, जिसने अगले ही पल शदीद गुस्से का रूप ले लिया। दूसरी ओर वो पिशाच भी अपने काम में खलल से खासा नाराज हो चुका था। वो बिजली की फुर्ती से चैतन्य पर झपटा। चैतन्य ने इस हमले से खुद को बचाने के लिए अपने दोनों हाथों को अपने सामने क्रॉस कर लिया। उसके ऐसा करते ही अचानक ही ये हुआ कि उसकी ओर तेजी से बढ़ता हुआ वो पिशाच एक झटके से उससे दूर पीछे की ओर छिटका और उसका शरीर खिड़की के शीशे तोड़ता हुआ बाहर चला गया। चैतन्य ने अपने चेहरे के सामने से अपने हाथ हटाए और जो कुछ भी हुआ, उसे समझने की कोशिश करने लगा, पर समझ में कुछ नहीं आया। उसने एक सफेद रोशनी को देखा जो धीरे से सिमटकर खत्म हो गई। वो उसी तरह बुत बना खड़ा रहा, जब तक कि उसे अपने नाम की पुकार सुनाई नहीं दी।

"चैतन्य!" अनामिका जोर से चिल्लाई थी। उसकी आवाज सुनकर चैतन्य जैसे होश में आया और पीछे मुड़ा। अनामिका के पीछे-पीछे आशुतोष और अनंत कुमार भी भागते हुए पहुँचे।

"कहाँ थी तुम? मैंने कहा था ना कि परिधि को अकेला मत छोड़ना।" चैतन्य ने आवाज सख़्त करने की कोशिश की थी।

"क्या हो रहा है यहाँ और तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" उसकी बात को नज़रअंदाज करके अनामिका ने टूटी हुई खिड़की को दहशत से देखते हुए
कहा।

"मैं वो..."

"मैं बताती हूँ। मैंने सब देखा।" चैतन्य के पीछे से आवाज़ आई। सभी की नज़रें उस जानिब मुड़ गईं, जहाँ सहमी हुई सी परिधि चादर में दुबकी हुई थी। सबकी सवालिया नजरें खुद पर पाकर उसने वो सब बताया, जो उसने देखा था। दरवाजा खुलने की आवाज से उसकी नींद उचटी थी, मगर किसी के कमरे में होने के अहसास के बाद ही उसने धीरे से अपनी ऑखें खोली थी और उस पिशाच को चैतन्य पर हमला करते देखा था। उसके बाद जो भी हुआ, वो जानकर चारों की ऑखें फटी रह गईं।

"ये कैसे हुआ?" अनामिका बेयकीनी से बोली।

"तुमने किया क्या चैतन्य?" आशुतोष ने भी पूछा।

"मुझे... मुझे कुछ नहीं पता!" चैतन्य घबराकर बोला।

"पर शायद... मुझे पता है।" अनंत कुमार ने चैतन्य को ग़ौर से देखते हुए कहा।

"क्या?"

"तुम चलो मेरे साथ!" कहते हुए अनंत कुमार ने चैतन्य का हाथ पकड़ा और उसे अपने साथ खींचकर ले गए। अनामिका और आशुतोष ठगे से ये सारी कार्यवाही देखते रहे।

"अ... अनामिका! तुम यहीं परिधि के पास रहो। मैं जाकर देखता हूँ। ख्याल रखना।" अपनी बात खत्म

करते हुए आशुतोष ने परिधि की ओर
इशारा किया, जिस पर अनामिका ने सहमति में अपना सिर हिलाया। फिर आशुतोष भी तेजी से अनंत कुमार और चैतन्य के पीछे लपका।

****

वो एक अंधेरा कमरा था, जहाँ कोने में जल रहे आतिशदान की आग बुझ चुकी थी, मगर लकड़ियाँ अभी भी दहक रही थीं। उस कमरे के नीम अंधेरे में उसका काला वजूद मौत की तरह दिखाई दे रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कि उसकी धधकती ऑखें हीं उन लकड़ियों को दहकाए हुए थीं। वो लगातार गहरी साँसें अंदर-बाहर कर रहा था, जिसके साथ एक गुर्राहट सी उसकी हलक से बाहर निकल रही थी। वो गुस्से की उस आखिरी दहलीज पर खड़ा था, जहाँ किसी का भी सब्र अपना दामन झटक देता है और सब्र से तो उसकी अच्छी खासी दुश्मनी थी। लोग कहते हैं कि सब्र का फल हमेशा मीठा होता है, पर उसके सब्र ने उसे दिया था वो नासूर... जो दिन-रात रिसते हुए उसे उसके वजूद की पहचान कराता था। उसे हमेशा से परिधि के आसपास भटकती हुई अनामिका खटकती थी, पर आज कोई और भी उसकी ऑखों में फाँस बनकर चुभा था, जो दबे पाँव.. इस तरह उसके और उसकी मंजिल के बीच आ गया था।

"ऐसे काम नहीं चलेगा। मुझे कोई और रास्ता देखना होगा। जो भी मेरे और मेरे दुश्मन के बीच आएगा... सबको भुगतना होगा! मेरा इंतक़ाम जरूर पूरा होगा! मेरी माया का इंतक़ाम पूरा होगा।" वो जूनून की हालत में अपनी खरखराती हुई खुश्क आवाज में बोला और फिर उसी जुनूनियत के आखिरी छोर पर खड़ा होकर चिल्लाया,
टैक्सी उस बियाबान जंगल के पास आकर रूक गई। उसने ड्राइवर को पेमेंट दी और फिर वहाँ उतर गई। ड्राइवर हैरानी से कभी उसे देखता तो कभी उस जंगल को।

"आप पक्का तो हो ना मैडम कि आपको यहीं उतरना था?" ड्राइवर ने चारों ओर देखकर एक बार फिर से तस्दीक करते हुए पूछा।

"पेमेंट मिल गई ना! आगे बढ़ो!" उसने रूखे स्वर में कहा।

"मुझे क्या है? नाम वाम बता दीजिए। कल को लाश वाश मिले तो शिनाख्त कर लूंगा।" ड्राइवर बेहूदगी से हँसते हुए बोला।

"देखो! अगर तुम... दो मिनट में यहाँ से रफा दफा नहीं हुए, तो याद रखना कि तुम्हारी लाश.... शिनाख़्त के लिए भी नहीं मिलेगी।" उसने जलती हुई
ऑखों से चेतावनी देते हुए कहा था।

"अरे! आप तो नाराज़ हो गईं। मुझे क्या? आप जाने... आपका काम जाने।" कहते हुए ड्राइवर ने गाड़ी आगे बढ़ा दी।

"बदतमीज़!" उसने आक्रोशित स्वर में कहा और उस गाड़ी के ऑखों से ओझल होते ही तेजी से जंगल

की ओर बढ़कर उसकी गहराइयों में चली गई।

वो बहुत ही सावधानी से लगातार आगे की ओर बढ़ रही थी। शाम ढल रही थी और उसके साथ-साथ उसके कदम भी तेजी से आगे की ओर बढ़ रहे थे। ये शहर का एक निषिद्ध इलाका था और लोग यहाँ आने से परहेज़ ही करते थे। मगर इन सभी बातों को दरकिनार करते हुए वो उस इलाके में बेफिक्री से आगे बढ़े जा रही थी। उसके चेहरे की भाव-भंगिमाओं से साफ लग रहा था कि वो किसी अतिमहत्वपूर्ण कार्य से ही यहाँ आई हुई थी। आखिरकार वो अपनी मंजिल तक पहुँची और सामने खड़ी उस जर्जर इमारत को देखने लगी, जिसे बिना शक खंडहर कहना बिल्कुल भी ग़लत नहीं था।

"डायनों का बसेरा!" वो बुदबुदाई और आगे बढ़ गई... इस बात से बेखबर कि कुछ लोग पहले से ही उसके इंतजार में वहाँ छिपे बैठे थे। जैसे ही आगे बढ़कर उसने खंडहर में प्रवेश किया, वे लोग साँस रोके आगे के तीन रास्तों पर छिपकर टिके हुए थे और बदकिस्मती से उसने उसी में से एक रास्ता चुन लिया। वो थोड़ा आगे ही बढ़ी थी कि पीछे छिपे उस गेंडे के से शरीर वाले बदमाश ने उसे फुर्ती से दबोच लिया। सब कुछ इतनी तेजी और अप्रत्याशित तरीके से हुआ कि वो अपने बचाव में कुछ ना कर सकी। उसने उसके दोनों हाथ पीछे की ओर पकड़ लिए थे। वो उसके पैरों में अपने पैर मारने की कोशिश में ही थी कि तभी उसके दो और साथी वहीं आ गए और वो जाल में फँसी किसी नन्ही सी चिड़िया की तरह फड़फड़ाने
की कोशिश करने लगी, पर इससे कोई फायदा नहीं हुआ। चिल्लाकर भी कोई फायदा नहीं था क्योंकि उस सुनसान बियाबान में उसकी आवाज सुनता भी तो कौन?

"मैंने कहा था ना कि इसे यहाँ दो बार पहले भी आते देखा था। आज फँसी है। ना जाने कबसे नज़र थी?" एक बदमाश हँसते हुए बोला।

"पर यहाँ आती क्यों है ये लड़की?" दूसरे बदमाश ने उसके हाथ-पैर बांधते हुए पूछा।

"होगा कोई यार-वार का चक्कर! हमें क्या करना है? हमें तो बस फिरौती से मतलब है, जो इसके बदले में इसका बाप देगा हमें।" तीसरा बदमाश अपने तंबाकू सने दाँतों को निपोरते हुए बोला।

"अगर कोई यार-वार है, तो वो भी आएगा... फिर!" एक बदमाश ने अंदेशा जताया।

"तो आने दो! उसके बाप से भी फिरौती माँग लेंगे।" जानवरों की तरह हँसते हुए गंदे दाँतों वाला बदमाश बोला।

"ये तो... बिल्ली के भाग से छींका टूटना.. वाली बात हो गई। ऐसे दो-चार और मिल जाएँ... फिर तो ऐश ही ऐश होगी।" कहकर एक बदमाश कुटिलता से मुस्कुराया। बाकि दोनों ने भी हँसते हुए उसका साथ दिया।

दूसरी ओर वो खुद को छुड़ाने की लगातार कोशिशें कर रही थी, पर जब कामयाबी ना मिल सकी तो गुस्से में गुर्राती हुई बोली, "तुम लोग ये सब ठीक नहीं कर रहे हो! खोलो मुझे!"

"अरे! ये बिल्ली तो पंजे दिखा रही है, पर इसे नहीं मालूम कि नाखून
उखाड़ना हमें अच्छी तरह से आता है।" गंदे दाँतों वाला बदमाश दाँत पीसते हुए बोला।

"मरोगे! तुम सब मरोगे! अभी भी बोल रही हूँ... खोलो मुझे!" गुस्से में तिलमिलाती हुई वो चिल्लाई।

"अरे कोई मुँह बंद करो इसका! कब से बड़बड़-बड़बड़ किए जा रही है! और इसके बाप का नंबर खोजो इसके फोन में!" गंदे दाँतों वाला बदमाश उकताकर बोला।

"पर उस्ताद! अगर इसके फोन से पुलिस ने हमें ट्रेस कर लिया तो!" दूसरे बदमाश ने उस लड़की का मुँह कपड़े से बांधकर बंद करते हुए थोड़ी चिंता से कहा।

"अरे यार! यहाँ मीलों दूर तक कोई सिग्नल नहीं है। थोड़ा अंधेरा होने दो, फिर शहर में जाकर इसी के फोन से इसके बाप को फिरौती के लिए फोन करना और फिर वहीं स्विच ऑफ कर देना।" बदमाशों के उस्ताद ने कहा और फिर उस लड़की को खंडहर के उस हिस्से में फेंक कर वो सब बाहर की ओर निकल गए। उस लड़की की ऑखें गुस्से से शदीद लाल हो गई थीं और उनके कोरों से ऑसू के दो बूंद भी निकले, जो उसकी झल्लाहट का नतीजा थे। वो लगातार खुद को छुड़ाने की कोशिशें करती रही, जिसके नतीजे में आखिरकार उसने अपने पैरों को खोल ही लिया। अभी वो अपने हाथों की जकड़न पर ध्यान देती, उससे पहले ही बाहर से आई कुछ तेज आवाजों ने उसे परेशान कर दिया। अब वो एक बार फिर से अपने हाथ छुड़ाने का प्रयास करने लगी, तभी उसकी नज़र ऊपर आसमान की ओर चली गई, जहाँ उसने किसी चीज को ऊपर जाते हुए देखा।

"सत्यानाश! अब यहाँ रूकना खतरे से खाली नहीं।" यह सोचते ही वो उसी हालत में उठी और दूसरी तरफ से बाहर निकलते हुए वहाँ से भाग
निकली। लोगों की दर्दनाक चीखें दूर तक उसका पीछा करती रहीं। फिर भी वो बस भागती रही और फिर दूर एक जगह निढाल होकर गिर पड़ी।

अपने बिस्तर पर सोई सृष्टि एक दबी हुई चीख के साथ उठ बैठी। उसकी साँसें धौंकनी की तरह चल रही थीं, जैसे कि ना जाने कितने मीलों का सफर दौड़कर पार किया हो उसने। पिछले चार-पाँच रातों से यही एक सपना उसकी नींद हराम किए हुए था। नाकामयाबी की टीस उसे इसी तरह तकलीफ दिए जा रही थी।

"मुझे सावधान रहना चाहिए था। अगर मैं गलती नहीं करती, तो आज वो परिधि हमारे हाथ में होती। ख़ैर... मुझे अपनी गलती हर हाल में सुधारनी ही होगी। कहते हुए उसने एक ठंडी साँस छोड़ी और फिर लेटकर सोने की कोशिश करने लगी।

****

अनंत कुमार अपने स्टडी में बैठे हुए किसी सोच में डूबे थे। सामने चैतन्य उलझन भरी ऑखों से उन्हें देख रहा था। आशुतोष की नज़रें भी एक-एक करके दोनों पर जमी हुई थी।

"आप कुछ बताने वाले थे!" आशुतोष ने ही तीनों के बीच छाई हुई चुप्पी को तोड़ते हुए कहा। उसकी बात सुनकर अनंत कुमार ने आशुतोष की ओर देखा और फिर अपनी नज़रें चैतन्य पर जमा दीं।

"आप दोनों को कभी भी ये अजीब नहीं लगा कि मेघा ने यश के नए शरीर
के रूप में चैतन्य को क्यों चुना था?" जवाब के बजाए अनंत कुमार ने सवाल किया था।

"जी!" दोनों ही चौंके थे।

"मतलब कि... वो हरिपुर से ही किसी और को भी चुन सकती थी, फिर... चैतन्य ही क्यों ? वो तुम्हारा दोस्त गोविंद भी तो हो सकता था। उसे मेहनत भी कम लगती। फिर तुम्हें शहर से वहाँ बुलाने की क्या जरूरत आन पड़ी थी मेघा को? क्या कभी सोचा था इस बारे में?" अनंत कुमार ने फिर से जिज्ञासा बढ़ाने वाला सवाल किया।

"नहीं!" चैतन्य ने ईमानदारी भरा जवाब दिया।

"बहुत अच्छे!" अनंत कुमार की आवाज में झेंप थी।

"आप कहना क्या चाहते हैं?" आशुतोष ने गहरी ऑखों से अनंत कुमार और उनकी बातों को तौलते हुए कहा।

"यही कि चैतन्य कोई आम इंसान नहीं है।" अनंत कुमार ने बहुत ही सामान्य तरीके से कहा और उन दोनों की ओर देखने लगा। अनंत कुमार की बातें सुनकर आशुतोष और चैतन्य ने अपनी सिकुड़ी हुई ऑखों से एक-दूसरे की ओर देखा और फिर उसी हालत में अनंत कुमार की ओर नज़रें घुमाई।

"क्या मतलब?" सवाल करते हुए चैतन्य की भौंहें चढ़ी थी।

"क्या मतलब क्या? हमारी तरह हो!" अनंत कुमार ने बात स्पष्ट करनी चाही।
"हमारी तरह... मतलब!" बात अभी भी चैतन्य के दिमाग का पता ढूंढ रही थी।

चैतन्य की भाव-भंगिमा देखकर अनंत कुमार के चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभरे। उसी आश्चर्य के साथ आशुतोष की ओर देखते हुए अनंत कुमार ने कहा, "चैतन्य आप लोगों के साथ ही था ना.... हरिपुर की घटना के समय!"

"जी हाँ!" आशुतोष ने कहा।

"इसे कुछ पता नहीं है?" अनंत कुमार ने पूछा।

"किसी को नहीं है!" आशुतोष ने ठंडी साँस छोड़ते हुए कहा।

"क्या पता नहीं है? कोई कुछ साफ-साफ बताएगा।" इस बार चैतन्य झुंझलाकर बोला था।

"तुम्हें चित्रलेखा के विषय में जो सपने आते थे उनकी बात कर रहा हूँ।" अनंत कुमार ने बात साफ की।

"वो तो आशुतोष जी और अनामिका ने मुझे किसी तरीके से हिप्नोटाइज किया था। बस!" चैतन्य ने

अपनी बात खत्म की। मगर उसकी बात सुनकर आशुतोष ने उसे आश्चर्य से देखा था। चैतन्य की बातों से साफ पता चल रहा था कि वो अभी भी सब बातों से अनभिज्ञ था।

"हाँ! शायद इनको भी यही लगता होगा। पर... बात कुछ और है।" अनंत कुमार ने रहस्यमई लहजे में कहा।

"कौन सी बात?" चैतन्य ने चौंककर कहा था।
"तुम्हें आजकल फिर से सपने आ रहे हैं ना!" चैतन्य को गहरी ऑखों से देखते हुए अनंत कुमार ने कहा।

"हाँ!" कहते हुए उसने आशुतोष की ओर देखा, जो उससे नज़रें चुरा गया था।

"अच्छा चैतन्य! सच-सच बताओ! यह जो तुम्हारे साथ अभी हो रहा है क्या ऐसा पहले भी हुआ था?" अनंत कुमार ने बातों की गहराई में उतरते हुए पूछा।

"हाँ! वो... चित्रलेखा के सपने आते थे ना! पर वो तो..." कहते हुए एक बार फिर चैतन्य ने आशुतोष की ओर नज़र घुमाई थी।

"उससे भी पहले! पहले भी कुछ ऐसा हुआ है। सोचो! याद करो!" अनंत कुमार ने जोर देते हुए कहा।

"ऐसा कुछ याद नहीं आ रहा है।" चैतन्य ने अनभिज्ञता जाहिर की।

"आप समझाना क्या चाहते हैं?" इस बार आशुतोष ने सवाल किया था, जो अनंत कुमार की बातों में उलझ गया था।

"अभी समझाता हूँ। चैतन्य! एक बात बताओ! तुम... तुम्हारी माँ... हरिपुर क्यों नहीं जाते थे?" अनंत कुमार ने चैतन्य से सवाल किया।

"पता नहीं! माँ ही नहीं जाना चाहती थी।" चैतन्य ने सामान्य सा जवाब दिया।

"क्यों?"
"पता नहीं! शायद उस डायन वाली घटना के कारण!" चैतन्य ने सोच-समझकर जवाब दिया।

"और कुछ नहीं! याद करो! शायद तुम्हारे सपनों का वहाँ जाने से कोई संबंध रहा हो।" अनंत कुमार ने चैतन्य की यादों पर जोर डालते हुए कहा। उनकी बात सुनकर चैतन्य कुछ देर के लिए चुप पड़ गया, जैसे कि कोई बहुत ही महत्वपूर्ण भूली बिसरी बात याद कर रहा हो।

"हाँ! अब ज्यादा छुटपन की बात तो याद नहीं है मुझे। माँ बताती हैं कि मैं अक्सर रातों को उठ उठ कर रोया करता था। पर बचपन में आखिरी दो बार गाँव जाने की यादें कुछ-कुछ मेरे ज़हन में है। जब आखिरी दो बार हम हरिपुर गए थे, तो वहाँ से वापस आने के बाद अक्सर मुझे डरावने ख्वाब आते थे और मैं रातों को डरकर उठ जाता था। कई दिनों तक बुखार रहा था मुझे। मेरी याद के अनुसार माँ ने पहली बार के बाद ही हरिपुर जाने से मना कर दिया था, पर नानाजी के स्वर्गवास के समय हमें जाना ही पड़ा और एक बार फिर मैं उसी तरह बीमार पड़ गया। उसके बाद ना तो माँ कभी गाँव गई और ना ही मैं गया।" चैतन्य ने अपनी यादों की गलियों में टहलते हुए कहा।

"इसका मतलब समझ में आया?" अनंत कुमार ने एक बार फिर से सवाल किया और दोनों की ओर देखने लगा। इस बार तो आशुतोष भी घोर आश्चर्य का शिकार बन चुका था।

"आ..आप ही समझाइए!" चैतन्य ने नासमझी से सिर हिलाते हुए कहा।

"चैतन्य! आशुतोष और अनामिका ने तुम्हारे साथ कुछ भी नया या गलत नहीं किया। उन्होंने अनजाने में बस तुम्हारे अंदर की उस शक्ति को जगा दिया जो... सोई हुई थी।" अनंत कुमार ने चैतन्य से कहा।
"शक्ति! कौन सी शक्ति?" चैतन्य ने नाक चढ़ाकर मुँह बिगाड़ते हुए पूछा।

"वही... जो तुम्हें... तुम्हारे माँ-बाप से मिली है।"अनंत कुमार ने धमाका किया।

"किससे मिली है?" चैतन्य ने अपनी फैली हुई ऑखों के साथ पूछा। मगर अनंत कुमार ने कुछ और नहीं कहा। वो बस उसी तरह उसे देखते रहे।

"मुझे लगता है कि हम सभी को आराम की जरूरत है। कुछ भी कह रहे हैं... कुछ भी सुन रहे हैं।" झल्लाई हुई आवाज में कहते हुए चैतन्य अपनी कुर्सी से उठा था।

"चैतन्य! बैठो! समय आ गया है कि अब तुम्हें सब कुछ पता चल जाना चाहिए। हालांकि हममें से किसी ने भी ये नहीं सोचा था कि तुम इस सब का हिस्सा हो सकते हो।" अनंत कुमार ने गंभीर आवाज में कहा।

"किस सबका हिस्सा?" चैतन्य ने पलटकर पूछा।

"अब बस मैं बोलूंगा और तुम दोनों सुनोगे... तब तक.. जब तक कि मैं अपनी बात खत्म नहीं कर लेता।" अनंत कुमार ने हिदायत देते हुए चैतन्य और आशुतोष से कहा। एक गहरी सॉस लेकर उन दोनों ने ही हामी भरी।

"तुम दोनों को चैतन्य की माँ के जन्म की कहानी तो पता ही होगी।" कहकर अनंत कुमार ने चैतन्य और आशुतोष की ओर देखा, जिन्होंने हाँ में सिर हिलाया था।

"सच बात ये थी कि... चैतन्य की नानी कभी माँ बन ही नहीं सकती थी। वो तो उस डायन चित्रा की मॉ ने अपनी अभिमंत्रित दवाईयों की शक्तियों
से उनके गर्भ में भ्रूण स्थापित किया था। इसलिए ये समझ लो कि उन दोनों भ्रूणों में जो कि चैतन्य की माँ और मामा थे.... कुछ अभिमंत्रित शक्तियों का प्रभाव था। मगर तुम्हारी नानी बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी, इस लिए गलत मंशा से स्थापित किए गए उन भ्रूणों पर इसका सकारात्मक प्रभाव भी पड़ा। समय पर उन डायनों के बारे में पता चलने के कारण तुम्हारी नानी ने अपने बच्चों यानि कि तुम्हारी माँ और मामा को काली शक्तियों के प्रभाव से दूर कर लिया और अपनी धार्मिक छत्रछाया में उनका पालन पोषण किया। सबको लगा कि वो कहानी खत्म हो गई। मगर ऐसा नहीं हुआ था।" कहते हुए रुककर अनंत कुमार ने चैतन्य की ओर देखा था।

"तो फिर क्या हुआ था?" इस बार चैतन्य ने जिज्ञासा दिखाई।

"तुम्हारी माँ तुम्हारी नानी की पहली संतान थी और उन डायनों का मुख्य शिकार भी वही थी। इसलिए वो कभी भी सुरक्षित नहीं थी और ये बात तुम्हारे नाना-नानी नहीं जानते थे। मगर हमारी दुनिया में सबको पता था। इसलिए उन्हें बुरे साए से सुरक्षित रखने का जिम्मा तुम्हारे पिता को मिला था।" अनंत कुमार ने अगला बम फोड़ा।

"पिताजी! वो... वो ये सब जानते थे।" कहते हुए चैतन्य की ऑखें हैरत से फट गई थीं।

"हाँ! बेशक उन्हें पता था क्योंकि वो हमारी दुनिया से ही थे। इसलिए तो तुम्हें ये शक्ति मिली है। अगर तुम उस सामान्य दुनिया की बजाय हमारी दुनिया में बड़े होते तो.... तुम्हें इन शक्तियों के बारे में बहुत पहले ही पता चल जाता। मगर तुम्हारी माँ तुम्हें इन सब से दूर रखना चाहती थीं। इसलिए तुम्हें सामान्य तरीके से पाला गया, जिससे तुम्हारी शक्तियाँ अंधेरे में गुम हो गई और किसी को भी कभी नहीं लगा कि वो कभी जागृत होंगी। मगर जब भी तुम्हारी माँ हरिपुर जाती तो वहाँ की शक्तियों के प्रभाव से ही तुम्हारे अंदर की शक्तियाँ बाहर निकलने का प्रयास करती और तुम बीमार पड़ जाते थे। बस यही वजह थी तुम्हारी माँ के हरिपुर नहीं जाने की। मगर आशुतोष और अनामिका ने जो तुम्हारे साथ किया वो इतना ताकतवर था कि उसने तुम्हारी शक्तियों को जागृत कर दिया। तो चैतन्य! ये बात अच्छी तरह से समझ लो कि तुम आम इंसान बिल्कुल नहीं हो। तुम हममें से ही एक हो।" कहते हुए अनंत कुमार ने अपनी बात समाप्त की।

"आपमें से एक मतलब!" अनंत कुमार के आखिरी वाक्य को पकड़ते हुए चैतन्य ने आश्चर्य से पूछा।

"हम भी सामान्य नहीं हैं चैतन्य!" अनंत कुमार ने बेहद ही सामान्य लहजे में कहा।

"आप सब!" चैतन्य ने अनंत कुमार और आशुतोष दोनों की ओर उंगली घुमाते हुए कहा।

"हाँ! और अनामिका भी।" अनंत कुमार ने उसके सवाल का पूरा जवाब दिया।

यह सुनते ही चैतन्य का पूरा शरीर ढीला पड़ गया और वो थका हुआ सा कुर्सी की पुश्त पर गिर गया। उसने अपनी ऑखें भींच ली थी और उसके चेहरे पर तनाव साफ-साफ दिख रहा था। कुछ देर पूरी तरह से सन्नाटा पसरा रहा। अनंत कुमार और आशुतोष जानते थे कि चैतन्य के लिए यह सब स्वीकार कर पाना इतना आसान नहीं था। इसलिए उन्होंने आगे उस पर जोर देते हुए और कुछ नहीं कहा और उसके बोलने का इंतजार करते रहे। अंततः गहरी साँसे लेता हुआ चैतन्य कुर्सी पर सीधा बैठा और अनंत कुमार से मुखातिब होते हुए बोला,
"तो क्या हूँ मैं? आशुतोष जी तो तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र के वंशज हैं तो तांत्रिक होंगे और अनामिका भी शायद मेघा की वजह से ही इन सब में शामिल है, तो वो... डायन होगी। मतलब कि सबकी कोई ना कोई भूमिका होगी। मेरी क्या है? क्या हूँ मैं?" चैतन्य अभी भी बेयकीनी से कह रहा था।

"तुम वायु के रक्षक हो चैतन्य!" अनंत कुमार ने एक बार फिर उसके सवाल का जवाब देते हुए कहा।

अनंत कुमार की बात सुनकर एक बार फिर चैतन्य बेवकूफों की तरह उन्हें देखते हुए बोला,

"वायु का रक्षक!"

अनंत कुमार ने चैतन्य की ओर देखा, जो अपना मुँह खोले उन्हीं को देखे जा रहा था। उसकी ऑखों के आगे हैरानी का धुँआ इतना गहरा था कि एक हल्की फूंक से कुछ नहीं हो सकता था। चैतन्य के लिए भी तो आसान नहीं था सामान्य से असामान्य हो जाने का यकीन करना। उसका चेहरा एकदम से भावहीन हो गया था। कुछ देर वो उसी तरह अनंत कुमार को देखते रहा, फिर एक टेढ़ी सी मुस्कुराहट उसके होंठों पर आई और वो बोला,

"अच्छा मजाक करते हैं आप!"

"चैतन्य! मैं सीरियस हूँ।" इस बार अनंत कुमार ने और भी संजीदा लहजे में कहा। यह सुनते ही चैतन्य ने अपने दाँत दिखाए और आशुतोष की ओर
मुड़कर बोला,

"हे हे हे हे! ये सपने भी ना! पर... ये वाला बढ़िया है। वायु रक्षक! मैं ! नींद खुलेगी... तो आपको ये जरूर बताऊँगा!" चैतन्य का लहजा बहका-बहका सा था।

"चैतन्य!" आशुतोष ने उसे घूर कर देखा।

"हम्म!" चैतन्य मासूमियत से ऑखें फैलाकर उसे देखकर बोला।

"होश में आओ चैतन्य! ये सब सच है! तुम कोई सपना नहीं देख रहे हो।" आशुतोष ने इस बार उसे झिंझोड़ते हुए कहा।

"अच्छा! बता दिया ना! तो फिर... मैं चलता हूँ!" चैतन्य एक बार फिर से बेयकीनी से बोला और खड़ा हो गया। वो बहुत ही उलझा-उलझा सा लग रहा था। एक गहरी साँस लेकर वो दरवाजे की ओर थोड़ा सा आगे बढ़ा। आशुतोष ने उस पर से अपनी परेशान नज़रें हटाकर अनंत कुमार की ओर देखा, जो उसी की तरफ अफसोस से देख रहे थे। उसी समय उन दोनों को कुछ गिरने की तेज आवाज आई। दोनों ने ही तेजी से आवाज की दिशा में देखा, जहाँ चैतन्य नीचे गिरा हुआ जमीन सूंघ रहा था।

"चैतन्य!" दोनों ही घबराकर उसकी ओर लपके थे।

****

नीम अंधकार से भरे उस कमरे में ना जाने कितनी सीलन थी। ना जाने कितने समय से वो कमरा अनछुआ सा था। मगर मौसम अपने सर्द-गर्म
कलम लेकर मुस्तैदी से उस कमरे में समय की सिलवटों का हिसाब लिखते रहे। किसी समय में

यक़ीनन ये कमरा जिंदगी से भरा हुआ रहा होगा, पर आज यहाँ बस मौत की ख़ामोशी डेरा जमाए बैठी थी। वहीं एक अंधेरे कोने में वो एक चरमराती हुई आराम कुर्सी पर बैठा अपनी यादों की गलियों में खोया हुआ था। उसके हाथों में एक बहुत ही पुराना कागज था, जिस पर किसी की तस्वीर बनी हुई थी। इस पूरे कमरे में वही एक चीज थी, जो बिल्कुल सही-सलामत थी। ऐसा लग रहा था कि उस कागज के टुकड़े की हिफाज़त उसने अपनी जान से भी बढ़कर की थी। वो उस पर बनी तस्वीर पर अपनी लंबी-लंबी ऊंगलियाँ फिरा रहा था।

"माया! मेरी माया! सदियाँ बीत गईं, पर.... दुनिया वैसी की वैसी है। मतलबी! मौकापरस्त! पर तुम फिक्र ना करना। हमारे प्यार की हर सिसकी का हिसाब देना होगा उसे। चाहे सारी दुनिया एक हो जाए... उसे मुझसे कोई नहीं बचा पाएगा। मेरी माया की बेरहम मौत का हिसाब तुम्हें देना ही होगा परिधि!"

अंधेरों में खोई उसकी सूनी-सूनी काली ऑखें परिधि का नाम लेते ही गुस्से की आग में दहकने लगी। उसने उस कागज को बेहद संभालकर मोड़ा और फिर खड़ा होकर तेजी से एक ओर निकल गया। एक ओर परिधि अपनी बेफिक्र नींद की आगोश में खोई हुई थी, वहीं दूसरी ओर तीन जोड़ी ऑखें परिधि की छवि खुद में समाए नींद से रूठी हुई थीं। अनंत कुमार, चीफ और वो पिशाच तीनों ही भविष्य की अनंत गहराईयों में झांकने की कोशिश कर रहे थे, जहाँ बस अंधेरा ही फैला हुआ था।

****

सुबह-सुबह सूरज की रोशनी खुली हुई खिड़की से जब चैतन्य के चेहरे पर गिरी, तो उसकी ऑखें बेचैनी से भिंच गई थीं। उसने अपना एक हाथ उठाकर ऑखों पर रखा और फिर कसमसाकर करवट बदली और बिस्तर पर औंधा लेट गया। वो एक बार फिर से नींद की बाहों में सिमटने को ही था कि तभी उसे अनामिका की आवाज सुनाई दी, जिसे सुनकर वो नींद में ही मुस्कुराने लगा। वो अभी अनामिका की आवाज में ही खोया हुआ था कि तभी उसे आशुतोष की झिड़की भरी आवाज सुनाई दी, जिसे सुनकर उसका मुँह बिगड़ गया।

"उंहूं!" एक बार फिर कसमसाकर उसने ऑखें बंद किए हुए ही अपनी गर्दन घुमाकर चेहरा दूसरी ओर कर लिया।

"ये ऐसे नहीं उठेगा।" कहकर आशुतोष ने साइड टेबल पर रखे गिलास का पानी उस पर उड़ेल दिया। पानी ज्यादा तो नहीं था, मगर ठंडा होने की वजह से चेहरे पर गिरते ही चैतन्य तिलमिलाकर उठ बैठा। वो बौखलाया हुआ चारों ओर देखने ही लगा था कि आशुतोष पर नज़र पड़ते ही उसके चेहरे पर खिसियाहट आ गई।

"ये क्या है आशुतोष जी!" उसने झल्लाकर शिकायत की।

"उठ जाओ! आठ बज गए हैं! कब तक सोओगे?" आशुतोष ने भी उसे डपटते हुए कहा।

"अरे! आपको पता है! बड़ा ही अजीब सा सपना देखा मैंने रात को।" चैतन्य ने अपना सिर खुजलाते

और उबासी लेते हुए कहा।

"अच्छा! वो क्या?" आशुतोष ने अपनी ऑखें फैलाकर उससे पूछा।
चैतन्य ने उसे इशारे से पास बुलाया और उसके पास आने पर फुसफुसाते हुए बोला, "अनंत कुमार जी सपने में मुझसे कह रहे थे कि मैं वायु रक्षक हूँ।" और फिर वो दबी हुई आवाज में हँसने लगा।

आशुतोष ने उसे तीखी नज़रों से घूरा और फिर चैतन्य के पीछे खड़ी अनामिका की ओर नज़र घुमाकर कहा, "ये अभी भी होश में नहीं है।"

आशुतोष की नजरों का रुख समझकर चैतन्य तेजी से पीछे की ओर पलटा और वहाँ मौजूद अनामिका को देखकर एक पल के लिए हकदक रह गया। अनामिका उसे ही सपाट चेहरे के साथ देख रही थी।

"तुम! तुम यहाँ क्या कर रही हो?" चैतन्य इस समय उसे कमरे में देखकर गड़बड़ाया था।

"मैं तो तुम्हारा हालचाल पूछने आई थी। अभी ठीक हो!" अनामिका की आवाज में थोड़ी शरारत थी।

"मुझे क्या हुआ है?" चैतन्य ने उलझन भरी नजरों से दोनों को देखते हुए कहा।

उसकी हालत देखकर आशुतोष उसके ऊपर झुका और धीमी आवाज में बोला, "अगर ये बताऊँ कि वो सपना नहीं था तो!"

"जी!" चैतन्य चिहुँका।

"उठो! फ्रेश होकर कुछ खा लो। बात अधूरी रह गई है।" आशुतोष ने उसके गाल को थपथपाते हुए कहा। चैतन्य उसी तरह मुँह फाड़े उसे देखता रहा। आशुतोष ने अपनी बात कही और कमरे से बाहर निकल गया।
"मुँह बंद कर लो!" अनामिका ने कीमती सलाह दी। उसकी आवाज सुनकर चैतन्य ने उसकी ओर अपना चेहरा घुमाया और फिर झट से अपना मुँह बंद कर लिया। अनामिका ने उस पर एक नजर डाली और फिर वो भी कमरे से बाहर जाने लगी।

"अनामिका! मैं... वो..."

"चैतन्य! जल्दी आओ! नाश्ता ठंडा हो जाएगा। और हाँ... अपने होश अच्छे से दुरुस्त करके आना। समय नहीं है और समझने के लिए बातें बहुत सी हैं।" अनामिका ने कहा और फिर उसे देखकर मुस्कुराते हुए बाहर निकल गई। चैतन्य उसी तरह बेवकूफों की तरह बैठा दरवाजे को घूरता रहा। मगर अनामिका की आखिरी लाइन याद आते ही फुर्ती से उठा और बाथरूम में घुस गया। बाहर अनामिका मुस्कुराते हुए निकली और दरवाजा बंद करके जैसे ही मुड़ी, हॉस्पिटल से वापस आते हुए वरुण से टकरा गई। वरुण ने एक गहरी नजर उसके मुस्कुराते और खिले हुए चेहरे पर डाली और फिर उसकी नजर चैतन्य के कमरे के दरवाजे की ओर चली गई। उसने अनामिका की मुस्कुराहट का अनुमान लगाया और उसके चेहरे की थकान और भी गहरी हो गई।

"वो मैं चैतन्य को नाश्ते के लिए बुलाने आई थी। तुम भी आओ। साथ में करते हैं।" अनामिका ने उसके चेहरे के भावों को पढ़ते हुए नर्मी से कहा।

"हूं!" वरूण ने थके हुए लहजे में कहा और अपने कमरे की ओर चला गया। अनामिका ने अपने निचले होंठ को दाँतों से दबाकर वरूण की ओर अफसोस से देखा। उस पर हमले वाली रात के बाद से वरूण बहुत ही चुप-चुप और खिंचा-खिंचा सा था।

करीब 15 मिनट बाद वरूण डायनिंग टेबल की अपनी कुर्सी पर बैठा
हुआ था। आशुतोष के हाथ में आज का अखबार था और अनामिका और परिधि किचन में थे। चैतन्य और अनंत कुमार वहाँ नहीं पहुँचे थे। बजाहिर वरूण हाथ में चम्मच लिए उससे खेल रहा था, मगर दिमाग में अभी भी चैतन्य के कमरे से मुस्कुराकर निकलती हुई अनामिका हथौड़े मार रही थी। उसी समय बगल की कुर्सी खिसकने की आवाज से वो वास्तविकता में लौटा और उसने कुर्सी की ओर नज़र घुमाई। मगर उस कुर्सी पर अनामिका की जगह चैतन्य को बैठा हुआ देखकर उसके चेहरे के हाव-भाव बिगड़ने को हुए, जिसे उसने तुरंत कंट्रोल कर लिया। वो अब किसी को भी अपनी भावनाओं को ठेस पहुँचाने का मौका नहीं देना चाहता था, चाहे इसके लिए उसे कितनी भी तकलीफ़ अपने अंदर समेटनी पड़े। किचन से चाय की ट्रे लेकर आती हुई अनामिका उन दोनों को साथ बैठा देखकर एक पल को ठिठकी थी, मगर वरूण को सामान्य देखकर उसने भी बुरे विचारों को दूर झटका था। वो अपनी जगह से इतर परिधि के साथ और चैतन्य के सामने जाकर बैठ गई। चैतन्य का ध्यान कहीं भी नहीं था। वो तो खुद में ही खोया हुआ सा था। अनामिका ने एक चोर निगाह उस पर डाली और फिर तुरंत ही हटा भी ली। उसी समय पिछले दरवाजे से अनंत कुमार अंदर आए और अपने हाथ धोकर अपनी जगह पर बैठ गए।

"आप सुबह-सुबह पीछे क्या करने गए थे अंकल?" अनामिका ने अनंत कुमार से पूछा।

"बेटा वो... कुछ जरूरी आयुर्वेदिक पौधों की खेप आई थी। उन्हें लगाना बहुत जरूरी है और आजकल तुम्हें पता है कि मैं कितना मसरूफ हूँ।" अनंत कुमार ने जवाब देते हुए कहा।

"तो आप सुबह से इस काम में लगे हुए थे। मुझे कहते, तो मैं भी आपकी मदद कर देती।" इस बार परिधि ने अपनी मीठी सी आवाज़ में कहा।

"अरे नहीं बेटा! तुम्हारी तबीयत भी ठीक नहीं है और मैं बेवजह किसी
को भी परेशान नहीं करना चाहता। तुम तो आराम करो बस और जल्दी से ठीक हो जाओ।" अनंत कुमार ने परिधि से बहुत ही प्यार से कहा।

"मैं तो ठीक ही हूँ अब! इस तरह बैठे-बैठे उकताहट होती है। कुछ काम करूंगी तो अच्छा लगेगा।" परिधि ने अपनी समस्या बताई।

"हम्म! ये भी सही है। पर वो क्या है ना! मैंने किसी को मदद के लिए बुला लिया है। वो है अभी वहीं।" अनंत कुमार ने कहा।

"तो क्या हुआ? मैं साथ में काम कर लूंगी। अगर आप इजाज़त दें तो...!" परिधि आग्रह करते हुए बोली।

"ठीक है, पर उससे उलझना नहीं। आजकल थोड़ा रूखा हो गया है वो। समझी!" अनंत कुमार ने उसे इजाज़त देते हुए कहा।

"अच्छा! मतलब कि खड़ूस है!" परिधि ऑखें फैलाकर मासूमियत से बोली।

"हे! ऐसा नहीं कहते! मुकुल नाम है उसका। परेशान हैं थोड़ा आजकल, बस इसीलिए। अगर उसके साथ काम करना है तो उसे और परेशान नहीं करना।" अनंत कुमार ने परिधि को समझाते हुए कहा। जवाब में परिधि में अपना सिर हाँ में हिला दिया।

"कौन मुकुल? प्रोफेसर साहनी का भतीजा!" इस बार अनामिका ने कहा।

"हाँ वही! बेचारा! दो महीने पहले ही उसके माता-पिता एक कार एक्सीडेंट में गुजर गए। तब से बहुत ही डिस्टर्ब चल रहा था। प्रोफेसर साहनी उसे अपने पास ले आए। कुछ ठीक महसूस करने लगा था तो.... मैंने उसे मदद के लिए पूछा। वो बॉटनी का स्टुडेंट है, तो उसे रूचि है
पेड़-पौधों में। सोचा इस बहाने मेरी भी मदद हो जाएगी और वो उसका दिल-दिमाग भी शांत रहेगा।" अनंत कुमार ने तफ्सील से सब बताते हुए कहा।

"ओह! सो सैड! आप पहले कभी मिले थे इस मुकुल से?" अनामिका ने अगला सवाल किया।

"हाँ! चार-पाँच बार मुलाकात हुई थी पहले। बहुत ही जिंदादिल लड़का था। पैरेंट्स की मौत ने खामोश ही कर दिया है उसे। उम्मीद है कि सब ठीक हो जाए जल्दी से।" अनंत कुमार ने अफसोस भरे लहजे में कहा।

"जी!" अनामिका ने कहा और फिर अपनी प्लेट में झुक गई। दूसरी तरफ परिधि यह सब सुनकर भावुक हो गईं थीं। उसने एक नज़र पिछले दरवाजे की ओर डाली और फिर वो भी अपना नाश्ता करने लगी। नाश्ता करते हुए अनामिका की एक उचटती हुई नज़र चैतन्य की तरफ गई, जो बहुत ही खामोशी से अपनी प्लेट से उलझा हुआ था। अनामिका की नज़र उसके परेशान चेहरे पर ठहर गई थी। उसी समय वरूण ने भी चैतन्य के पास अनामिका की भटकती नज़रों को पकड़ लिया और फिर उसके लिए वहाँ बैठना मुश्किल हो गया।

"मेरा हो गया। थक गया हूँ, तो थोड़ी देर आराम कर लूं। एक्सक्यूज मी!" जाते हुए उसकी खामोश नज़र अनामिका की नज़र से टकराई थी, पर वो तेजी से पलटकर अपने कमरे की ओर बढ़ गया।

"इसे क्या हुआ?" आशुतोष ने जाते हुए वरूण की पीठ की ओर देखते हुए कहा।

"थक गया होगा! अच्छी बात है। आराम कर ले। तब तक हम भी अपना अधूरा काम पूरा कर लेते हैं।" अनंत कुमार ने चैतन्य पर निगाहें जमा कर
गंभीर आवाज में कहा। उनकी बात सुनकर सभी की नज़रें उनकी ओर उठ गई। उलझा हुआ सा चैतन्य उनकी ओर देखकर और भी उलझ गया। फिलहाल सभी ने अपना-अपना नाश्ता खत्म किया।

"मैं इंतजार कर रहा हूँ। जल्दी!" अपनी कुर्सी से उठते हुए अनंत कुमार ने कहा और फिर अपनी स्टडी की ओर चले गए। धीरे-धीरे सभी अपनी जगह से उठे और फिर सभी स्टडी रूम की ओर बढ़ गए। जाते-जाते अनामिका ने परिधि को घर से बाहर ना जाने की हिदायत दी, जिस पर उसने मासूमियत से सिर को हिला दिया।

सबके जाने के बाद परिधि ने टेबल समेटा और गंदे बर्तनों को सिंक के हवाले किया। उसी समय उसकी नज़र किचन की खिड़की पर गई, जो घर के पिछले हिस्से में खुलती थी। वहाँ से उसने पौधों के बीच काम करते हुए मुकुल को देखा। ना जाने उसके मन में क्या आया कि वो खुद ब खुद उस ओर चली गई।

परिधि ने दूर से देखा कि एक 22-23 साल का गोरा-चिट्टा लड़का अपने काम में पूरी तरह से डूबा हुआ था। उसने एक नज़र घर के अंदर डाली। कोई भी मौजूद नहीं था। उसने एक गहरी साँस ली और फिर उस लड़के की ओर बढ़ गई।

वो झुका हुआ नए पौधों को उठा ही रहा था कि उसे अपने सामने किसी के होने का अहसास हुआ। उसने सिर ऊपर उठाया। एक नाज़ुक सी लड़की सामने खड़ी उसे ही निहार रही थी। उसे देखते ही उस लड़के के माथे की नसें तन गईं और चेहरे पर नागवारियत के निशान उभर आए। वो तेजी से उठा और फिर ग्रीन हाउस की ओर बढ़ गया। उसे इस तरह उखड़ कर जाते हुए देखकर परिधि भी तेजी से उसकी ओर गई।

"आप मुकुल हैं ना!" परिधि ने उसके पीछे लगभग भागते हुए कहा।
उसकी बात सुनकर वो लड़का एकदम से रूका और उसने पीछे मुड़कर परिधि को तीखी नज़रों से देखा। परिधि उसकी तेज नज़रों से एकबारगी सहम गई। वो वापस मुड़ा और बिना कुछ कहे आगे बढ़ गया।

"मैं परिधि!" परिधि उसके पीछे जाते-जाते बोली। इस बार उसने परिधि की ओर देखने की भी जहमत नहीं उठाई। वो उसे नज़रअंदाज करते हुए अपने काम में लगा रहा।

"ये क्या बात हुई? कोई आपसे बात कर रहा है और आप उसे नज़रअंदाज कर रहे हैं।" परिधि ने शिकायती लहजे में कहा। उसकी बात सुनकर एक बार फिर उस लड़के ने उसे एक तेज घूरी दी और फिर अपने काम में मशरूफ हो गया।

"बाप रे! आप तो बहुत रूखे हैं, तो फिर इन पौधों की देखभाल कैसे करेंगे? मुझे लगता है कि आपको मदद की जरूरत है। मैं करूं क्या?" परिधि बेतकल्लुफी से बोली।

"नहीं!" पहली बार परिधि ने उसकी घुड़की भरी आवाज सुनी।

"पर क्यों नहीं? मुझे भी ये काम पसंद है।" परिधि इल्तजाई लहजे में बोली, मगर उस पर कोई असर ही नहीं पड़ा। वो उसी तरह भावहीन अपने काम में लगा रहा।

"खड़ूस!" परिधि के मुँह से बेसाख्ता निकला। वो वहाँ से जाने के लिए ही मुड़ी ही थी कि तभी उसे कुछ याद आया और वो रूक गई। वापस मुड़ते हुए वो उसे चिढ़ाते हुए बोली, " वैसे मैं आपसे क्यों इजाज़त माँग रही हूँ। आप मालिक थोड़ी ना हैं यहाँ के! अंकल ने इजाज़त दी है मुझे यहाँ काम करने की। तो मैं भी करूंगी।"
उसकी बात सुनते ही वो लड़का उठ कर खड़ा हुआ और एक बार फिर उसे नज़रअंदाज करता हुआ उसके बगल से होकर बाहर निकल गया।

"ये तो सच में खड़ूस है।" परिधि मुँह बनाकर बोली।

एक बार फिर से सभी अनंत कुमार की स्टडी में बैठे हुए थे। तीन तो सामान्य हालत में ही थे, पर.. चैतन्य अभी भी विश्वास और अविश्वास के बीच झूल रहा था। मतलब कि... हरिपुर की घटना के बाद असामान्य लोगों और घटनाओं की कल्पना ने उसके दिल और दिमाग में अपनी जमीन खोज ली थी, पर... आशुतोष, अनामिका और खुद का भी असामान्य होना... ये बात उससे हजम ही नहीं हो रही थी। वो चुपचाप सिर झुकाए किसी और के बोलने का इंतजार कर रहा था।

"चैतन्य!" अनंत कुमार ने कहा।

"जी!" उलझे हुए से चैतन्य ने अपनी उलझी हुई निगाहें अनंत कुमार की ओर करते हुए कहा।

"ठीक हो!" अनंत कुमार ने उस पर परखती नज़र डालते हुए कहा।
"पता नहीं!" चैतन्य ने ठंडी साँस छोड़ते हुए कहा।

"समझ सकता हूँ... तुम्हारी हालत!" अनंत कुमार का लहजा गंभीर था।

"क्या सच में?" इस बार चैतन्य की आवाज में तंज था।

"देखो चैतन्य! अब जो भी है... यही सच है और... इसे तुम्हें स्वीकार करना ही पड़ेगा। जैसे... हमने किया है।" अनंत कुमार ने चैतन्य के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

"और ना करूं तो!" चैतन्य ने अप्रत्याशित सी प्रतिक्रिया दी।

"हम्म! तो ना करो! पर... नियति से तो कोई भी नहीं भाग सकता और तुम तो बिल्कुल भी नहीं।" अनंत कुमार की आवाज में थोड़ी सख़्ती आई थी।

"क्या मतलब?" चैतन्य एक बार भी उलझा।

"मतलब ये कि... नियति पात्र ने तुम्हें वायु रक्षक चुना है और वायु रक्षक बहुत ही विरला होता है।" अनंत कुमार ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

"मैं समझा नहीं।" चैतन्य बोला।

अनंत कुमार ने चैतन्य का सवाल सुनकर उसे ग़ौर से देखा और फिर अपने आप ही उनकी नज़रें अनामिका और आशुतोष की ओर भी गई। बहुत सारी जिज्ञासाएँ उनकी ऑखों से भी झांक रही थीं। उन्होंने एक गहरी साँस ली और कहा,

"मुझे लगता है कि पहले मुझे तुम सबको इन रक्षकों का आधार समझा देना चाहिए।"
"यही बेहतर होगा।" चैतन्य ने खुद को सामान्य करते हुए कहा।

"तुम सभी जानते हो कि ये संसार और हमारा शरीर भी पंचतत्व से मिलकर बना है। पृथ्वी, जल, वायु,

अग्नि और आकाश।" अनंत कुमार ने कहा।

"जी! जानता हूँ। आगे!" चैतन्य ने उतावलेपन से कहा।

उसका उतावलापन देख अनंत कुमार मुस्कुराए और बोले, "तो तुम यह भी जानते होगे कि हम मनुष्य जिन राशियों में जन्म लेते हैं, वो किसी एक तत्व को बिलाँग करती हैं।"

"अच्छा! वो कौन-कौन सी?" चैतन्य ने जिज्ञासा दिखाई।

"वृषभ, कन्या और मकर पृथ्वी तत्व की राशियाँ है।
मिथुन, तुला और कुंभ वायु तत्व वाली राशियाँ हैं।
जल तत्व के अंतर्गत कर्क, वृश्चिक और मीन राशियाँ आती हैं।
मेष, सिंह और धनु इन तीनों राशियों का तत्व अग्नि है।
और....
आकाश तत्व की कोई राशि तो नहीं है, पर इसको कुम्भ राशि के निकट समझ सकते हैं।" अनंत कुमार ने चैतन्य के सवाल का जवाब दिया।

"एक मिनट!" अनामिका बोली।

"क्या हुआ?" अनंत कुमार के अलावा आशुतोष और चैतन्य ने भी उसकी ओर देखा।

"आपने कहा था कि आशुतोष जी हरियाली यानि की पृथ्वी के रक्षक
और मैं जल रक्षक हूँ, जबकि हम दोनों ही मेष राशि वाले हैं। मेष राशि तो अग्नि का प्रतिनिधित्व करता है। ये बात कुछ समझ में नहीं आई।" अनामिका ने उलझन से कहा।

उसकी बात सुनकर अनंत कुमार ने आशुतोष की ओर देखा। आशुतोष का चेहरा एक पल के लिए बिगड़ा था।

"क्या हुआ?" अनामिका की उलझन और भी बढ़ गई थी।

बताईए आशुतोष जी!" अनंत कुमार ने अपना सीधा हाथ उठाकर कहा।

आशुतोष ने अपने गले को साफ किया और उड़े हुए रंग के साथ बोला, "आशुतोष.... मेरा असली नाम नहीं है।"

"क्या? तो क्या है?" अनामिका ने सदमे से कहा। चैतन्य ने भी ऑखें फाड़कर उसकी ओर देखा था।

"अ... अ.. पुष्पकेतु! ये कन्या राशि है यानि कि पृथ्वी तत्व।" आशुतोष ने बताया।

"ये तो अच्छा नाम है। आपने नाम क्यों बदल दिया?" चैतन्य ने हैरानी से पूछा।

"बस बदल दिया। अनंत जी आप आगे बोलिए।" आशुतोष ने झल्लाकर बात बदलने की कोशिश की।

"लेकिन..."

"अरे घर की औरतें चिढ़ाती थीं मुझे। इसलिए!" आशुतोष ने उसी तरह
झल्लाकर कहा। चैतन्य और अनामिका ने देखा कि आशुतोष का चेहरा लाल हो गया था।

"क्यों चिढ़ाती थीं?" चैतन्य ने नाम की गहराई में घुसने की कोशिश करते हुए पूछा। ये पहली बार था कि उन्होंने आशुतोष को झेंपते हुए देखा था। अनामिका की ऑखों में भी जिज्ञासा उतर आई थी।

"क्योंकि उस नाम का मतलब कामदेव होता है।" जवाब अनंत कुमार ने दिया और प्रतिक्रिया में चैतन्य और अनामिका दोनों का चेहरा पहले अनंत कुमार की ओर और फिर आशुतोष की ओर घूमा। उनकी ऑखों और होंठों में एक शरारत सी उभरी।

"मुझ जैसे बैरागी का ऐसा नाम रखेंगे, तो बुरा नहीं लगेगा क्या? इसलिए बदल दिया नाम।" आशुतोष ने दाँत पीसते हुए कहा।

"ओह!" चैतन्य ने अपनी हँसी दबाते हुए कहा। मगर अनामिका के माथे पर फिर से बल पड़े थे।

"ठीक है! आशुतोष जी का समझ में आ गया। पर मेरा!"

"तुम्हारे पिता को यह नाम पसंद था, इसलिए तुम्हारी माँ ने तुम्हारा ये नाम रखा। वास्तव में तुम मीन राशि वाली हो।" अनंत कुमार ने सबको चौंकाते हुए कहा।

"आपको कैसे पता?" अनामिका ने बेयकीनी से पूछा।

"क्योंकि इसी घर में पैदाइश हुई थी ऑचल की। मेरी पत्नी तृषा और मेघा बहुत अच्छी दोस्त थीं। इसीलिए तो हमारी इतनी गहरी पहचान है। तुम्हारी पैदाइश ऑचल के जन्म के दो दिन पहले तुम्हारे शहर के हॉस्पिटल में हुई
थी।" अनंत कुमार ने पुराने पन्ने खोलते हुए कहा।

"क्या आप जानते हैं कि माँ ने मुझे और ऑचल को क्यों और कैसे बदला था?" अनामिका के दिल में छिपा सवाल बाहर निकल आया।

"ऑचल की पैदाइश के अगले दिन ही मेघा वापस अपने शहर चली गई थी। हमने उसे बहुत रोका था क्योंकि दिन पूरे होने के बाद भी ऑचल बहुत ही कमजोर थी। पर.... वो नहीं मानी। उसने कहा कि तुम्हारी माँ सरिता की तबीयत बहुत खराब है। तुम यश की आखिरी निशानी थी, इसलिए तुम्हें लेकर वो भावुक भी थी। एक दिन बाद ही वो ऑचल की जगह तुम्हें लेकर आई थी। उसने बताया कि समय से पहले जन्म होने के कारण डॉक्टरों ने तुम्हारी तरफ से हाथ खड़े कर दिए थे। उस समय सरिता का ख्याल मेघा को कचोट गया, जिसे बिना किसी गलती के इतनी सजाएँ भुगतनी पड़ रही थीं। मेघा ने डॉक्टरों और नर्सों पर सम्मोहन का सहारा लेकर ऑचल और तुम्हारी अदली-बदली कर दी क्योंकि बेहोशी की वजह से ना तो... सरिता ने तुम्हें देखा था और ना ही घर के किसी सदस्य ने। तुम्हें जन्म के साथ ही सबसे दूर डॉक्टरों की निगरानी में रखा गया था, इसलिए सबने तुम्हें बहुत दूर से देखा था, ऑचल भी बहुत कमजोर ही थी, इसलिए... जब हॉस्पिटल के सम्मोहित स्टाफ ने उसे तुम्हारी पहचान

के साथ यश के परिवार को सौंपा, तो उन्हें कोई शक नहीं हुआ और फिर कुछ दिनों के बाद ऑचल की हालत संभलने पर उसे परिवार के हवाले कर दिया गया। इस अदला-बदली की खबर हवाओं को भी नहीं लग सकी क्योंकि किसी को इस तरह की आशंका ही नहीं थी और तुम दोनों का ये राज सबके लिए राज ही रह गया।" अनंत कुमार ने बात खत्म करके एक गहरी साँस ली।

"ये तो माँ ने बताया होगा। पर...आप लोगों... ने भी माँ से सच जानने की कोशिश नहीं की... कि उन्होंने ये अदला-बदली क्यों की थी?" मेघा की भयानक मंशा को याद करते हुए अनामिका शिकायती लहजे में बोली।
"हमने पूछा था। उसने कहा कि... वो कभी भी ऑचल से प्यार नहीं कर सकती थी। वो उसके लिए एक दर्द से ज्यादा और कुछ नहीं थी और वैसे भी ऑचल उसी परिवार का हिस्सा थी, इसलिए वहीं चली गई। जहाँ तक तुम्हारी बात थी, तुम्हारी जान बचाना... डॉक्टरों के लिए नामुमकिन ही था। तुम्हारी जान तो मेघा ने अपनी शक्तियों और मेरी औषधियों के बलबूते ही बचाई थी। मेघा के लिए तुम यश की आखिरी निशानी थी। बस यही सोचकर हम भी चुप रह गए।" अनंत कुमार ने सफाई देते हुए कहा।

सारी बातें सुनकर अनामिका एक बार फिर से भावुक हो गईं थी। दो महीने पहले जब उस पर ये राज खुला था, तब से ही वो इस सवाल की चुभन से घिरी रहती थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसकी माँ को सच में उसकी फिक्र थी, जैसा कि अनंत कुमार कह रहे थे या फिर... अपने अंदर की कड़वाहट को मेघा ने बड़ी ही कुशलता से अपने अंदर छिपा लिया था। जवाब जो भी था... मेघा के साथ चला गया था और अनामिका के हिस्से में एक कभी ना भरने वाली टीस छोड़ गया था। चैतन्य एक बार फिर से उसे भावुक होता हुआ देखकर उसके पास आ गया। अनामिका ने नज़र उठाकर उसकी ओर देखा और फिर उसकी कलाई अपनी हथेलियों में जकड़ ली। चैतन्य ने अपना दूसरा हाथ उसके सिर में रखा और उसे दिलासा देने लगा।

"और चैतन्य! तुम्हारी माँ ने भी तुम्हें सबसे महफूज रखने के लिए तुम्हारा नाम बदलकर रखा था। उस बेचारी को लगता था कि इस तरह से वो तुम्हें बुरी शक्तियों से बचा लेगी। तुम्हारे पिता ने भी उन पर जोर नहीं डाला क्योंकि वो जानते थे कि ऐसा होना असंभव है। तुम जल तत्व वाले मीन राशि नहीं... वायु तत्व वाले तुला राशि में जन्मे हो।" चैतन्य के सवाल से पहले ही अनंत कुमार ने उसका जवाब दे दिया। अनामिका के सिर को सहलाते हुए चैतन्य ने भी एक ठंडी साँस छोड़ी थी।
"मेरे ख्याल से अब सभी को समझ में आ ही गया होगा कि आप सभी को किस आधार पर रक्षक चुना गया है।" अनंत कुमार ने बात समेटते हुए कहा। उनकी बात सुनकर सभी ने एक गहरी साँस भरी।

"कन्या राशि में जन्म लेने के कारण आशुतोष में पृथ्वी तत्व की प्रधानता है, इसलिए वो पृथ्वी (हरियाली) का रक्षक है। मीन राशि में जन्म लेने के कारण अनामिका जल की रक्षक है और तुला राशि के होने के कारण चैतन्य को वायु रक्षक बनाया गया है।" अनंत कुमार ने आखिरी बार सब साफ-साफ कहा।

"पर इन रक्षकों का औचित्य क्या है? हमें इन तत्वों की रक्षा करनी है क्या और क्यों?" चैतन्य ने एक और उलझन भरा सवाल पूछा।

"नहीं चैतन्य! तुम्हें इन तत्वों से जो शक्तियाँ प्राप्त हुई हैं, वो शक्तियाँ तुम्हारे आगे के सफर में तुम्हारी सहायता करेंगी।" अनंत कुमार ने कहा।

"कैसा सफ़र?"

"सफ़र तो अंजाना सा ही है। ये समझ लो... बहुत पुराना समय चक्र का एक रहस्य है... हमारी नियति पत्रक में लिखा हुआ, जिसे सुलझाना है। इस किताब ने यह बताया है कि एक लड़की किसी और समय से इस समय में आएगी और इस वजह से सबके भूत, वर्तमान और भविष्य प्रभावित हो जाएँगे। कहा ये भी जाता है कि उस लड़की के माध्यम से बहुत कुछ ऐसा बदला जा सकता है, जो पहले ही घट चुका है या घटने वाला है। ये समझ लो कि वो लड़की एक चाबी है, समय से खेलने वाली।" अनंत कुमार ने सबकी जिज्ञासा शांत करते हुए कहा।

"और... कौन है वो लड़की?" कुछ-कुछ अनुमान लगाते हुए भी चैतन्य ने पूछा।
"हालात तो परिधि की ओर ही इशारा कर रहे हैं।" जवाब अनामिका ने दिया।

"ये क्या कह रहे हैं आप?" चैतन्य बुरी तरह से उछला था।

"हाँ चैतन्य! और तुम सबका काम उसी की हिफाजत करना है और उसे वापस वहाँ भेजना है, जहाँ से वो आई है।" अनंत कुमार ने चैतन्य को उसकी जिम्मेदारी समझाते हुए कहा।

"हिफाजत! पर किससे?" चैतन्य का अगला सवाल आया।

"चैतन्य! ईश्वर की बनाई हुई यह दुनिया बहुत ही पेचीदा है। इतनी पेचीदा.... जितनी कि खुद ईश्वर ने भी कल्पना नहीं की होगी। यहाँ लोग अपने विचारों की सहूलियत से जीते हैं और ये चाहते हैं कि दूसरे भी वैसे ही जिएँ। पर क्या यह मुमकिन है? नहीं! कभी भी नहीं! क्योंकि जिस तरह इंसान अलग होते हैं, उनकी सोच.... उनका नजरिया भी... उतना ही अलग होता है। हमारी दुनिया में भी ऐसा ही है। यहाँ भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो उस लड़की की मदद से समय को अपनी सहूलियत से बदलना चाहते हैं और तुम सबको परिधि को उन्हीं से बचाना है।" अनंत कुमार का जवाब आया।

"हे भगवान! इतना बड़ा लोचा! फिर तो नियति पत्रक में ये लिखा होगा कि वो परिधि कहाँ से आई है और उसे कहाँ और कैसे भेजना है?" चैतन्य ने अनुमान लगाते हुए कहा।

"नहीं चैतन्य! नियति कोई नहीं पढ़ सकता है।" आशुतोष ने कहा।

"तो फिर ये जानकारियाँ नियति पत्रक से कैसे पता चलीं?" चैतन्य के
सवाल खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

"नियति पत्रक कुछ ख़ास लोग ही पढ़ सकते हैं। उन्हीं में से एक हैं आचार्य निशिकांत! उन्होंने ही परिधि के इस समय में आने का सटीक समय बताया था।" अनंत कुमार ने कहा।

"जिस दिन परिधि मुझे और वरूण को मिली थी, उस दिन मैं आचार्य निशिकांत के पास ही गई थी(भाग-3)। मगर काफी कोशिशों के बाद भी वो बस यही बता सके कि वो हमें किस समय और कहाँ मिलेगी। मैंने वरूण की गहरी नींद का फायदा उठाकर अपना काम तो कर लिया था, पर... आचार्य की उम्र हो गई है तो इससे ज्यादा जानकारी वो नहीं दे सके कि वो हमें कैसे और क्यों मिलेगी। उसके बाद उसकी गुम याददाश्त ने समस्या और भी बढ़ा दी। इसलिए अंकल ने उसे यहाँ बुलवा लिया, जिससे हमारी निगरानी में वो सुरक्षित रह सके।" अनामिका ने अपने हिस्से की जानकारी दी।

"इसका मतलब कि... उस परिधि के बारे में कोई भी जानकारी नहीं है हमारे पास! क्या आप लोगों ने अपनी शक्तियों से जानने का प्रयास नहीं किया।" चैतन्य ने उन तीनों की ओर देखते हुए कहा।

"नहीं चैतन्य! ये हमारी शक्तिक्षेत्र में नहीं आता। हाँ, हम हाल-फिलहाल या फिर कुछ साल पीछे की जानकारी हासिल कर सकते हैं, पर परिधि बहुत ही पीछे से आई है। उसकी यादों से जानकारी वही निकाल सकता है, जो उस नियति पत्रक को पढ़ सकता है।" आशुतोष ने कहा।

"और ये काम आचार्य निशिकांत ही कर सकते थे, पर उनकी शक्ति अब क्षीण हो चुकी है।" अनामिका ने अफसोस भरे शब्दों में कहा।

"यानि सारे रास्ते बंद हैं।" चैतन्य की निराशा भरी आवाज आई।
"नहीं! एक धुंधला सा रास्ता है।" अनंत कुमार ने उम्मीद भरे लहजे में कहा।

"कौन सा?"

"तुम जानते हो... आचार्य निशिकांत उस नियति पत्रक को क्यों पढ़ सकते हैं?" अनंत कुमार ने सवाल किया।

"क्यों?"

"क्योंकि वो एक वायु रक्षक हैं।" अनंत कुमार का खुलासा चैतन्य को मूक कर गया।

"हाँ चैतन्य! आचार्य निशिकांत के बाद तुम ही वो शख्स हो, जो नियति पत्रक पढ़ सकता है। पर... इसमें भी समस्या ये है कि तुम्हें इसका बिल्कुल भी अनुभव नहीं है। इसके लिए असीमित प्रयास और अनुभव की आवश्यकता होती है। अपनी इंद्रियों को जागृत करना पड़ता है, जिससे कि दूसरे की यादों और सपनों में प्रवेश किया जा सके। पता नहीं तुम कैसे करोगे ये सब क्योंकि हमारे पास समय नहीं है।" आशुतोष ने कहा।

"आपको पहले से पता था कि मैं वायु रक्षक हूँ?" चैतन्य ने आशुतोष से हैरानी भरा सवाल किया।

"नहीं! मैं वायु रक्षक और नियति पत्रक के बारे में जानता था, इसलिए कहा क्योंकि... अब तुम वायु रक्षक हो।" आशुतोष ने जवाब दिया।

"तो क्या इसीलिए मुझे विजन आते हैं क्योंकि मैं वायु रक्षक हूँ।" चैतन्य ने जैसे खुद से सवाल किया था।
"हाँ! सच तो ये है कि तुम्हारी इंद्रियाँ कुछ हद तक जागृत हैं, इसलिए तो मैंने धुंधला सा रास्ता कहा। तुम हवाओं की ताकत जानते हो चैतन्य। वो जब रूख बदलती हैं, तो बहुत कुछ बदल जाता है। इसलिए तो वायु रक्षक के पास ये विशिष्ट शक्ति होती है, ताकि वो हवाओं का रूख पहचान सके और नियति को अपने रास्ते पर बढ़ने में मदद करे। तुम्हें भी अपनी शक्तियों को पहचानना ही होगा। हम सबकी मदद करनी ही होगी।" अनंत कुमार की आवाज आखिर तक आते-आते याचना भरी हो गई थी।

चैतन्य ने सिर घुमाकर सबकी ओर देखा। सभी की ऑखों में एक उम्मीद रोशन थी, जिसकी लौ चैतन्य के अंदर ही कहीं थी। उसने याद किया कि किस तरह उसने हरिपुर में बिना किसी शक्ति की मदद से

अपने साथियों की हरसंभव मदद की थी, फिर अब तो वो वायु रक्षक था। अब वो अपनी जिम्मेदारी से पीछे नहीं हट सकता था। शायद इस फैसले की एक बड़ी वजह अनामिका के रूप में भी उसके सामने थी। उसका दिल जीतने के लिए वो कुछ भी कर सकता था और नियति ने शायद उसे एक मौका दे ही दिया था। उसने सबकी ओर देखकर हामी भरते हुए सिर हिलाया था। उसकी हामी मिलते ही अनंत कुमार ने वायु रक्षक के रूप में उसकी अंगूठी और खंज़र उसके हवाले कर दिए।

सफ़र का आगाज़ तो हो ही चुका था। अब बस उनके रास्ते पर छाई हुई धुंध को किसी तरह साफ करना था और ये जिम्मेदारी तीनों ही रक्षकों की थी।

अपनी-अपनी भूमिकाओं के बारे में जानने के बाद आशुतोष, अनामिका और चैतन्य आश्वस्त तो हो गए थे, पर अभी भी कई सवाल ऐसे थे, जिनके जवाब उनके आगे के सफर के लिए मिलने बहुत ही जरूरी थे और इन जवाबों के लिए भी उनकी नज़रें अनंत कुमार पर टिकी हुई थीं। आशुतोष ने ही सबसे पहले सवालों की फेहरिस्त खोली।

"अनंत जी! ये सब तो ठीक है। पर... ये दूसरी दुनिया है कैसी? क्या इस पृथ्वी से इतर कोई और भी दुनिया है?"

"अगर आप तीनों ये समझ रहे हैं कि इस पृथ्वी की तरह ही एक और दुनिया है, जिसमें हम जैसे लोग रहते हैं, तो ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। हम भी यहीं रहते हैं, पर हमें अपनी इन विशिष्ट शक्तियों को छिपाकर रखना होता है। परालौकिक और विशिष्ट शक्तियों की दुनिया है ये। अच्छी और बुरी... दोनों ही।" अनंत कुमार ने जवाब दिया।

"और.... क्यों छिपाना पड़ता है?" चैतन्य ने कौतूहल दिखाया।

"क्या तुम सब जानते नहीं कि शक्ति जिम्मेदारी के साथ गुरूर भी लाती है और कई बार इसी में फँसकर कई लोग वो कर बैठते हैं, जो मानवता के लिए हितकर नहीं होता है। इसलिए ही इन शक्तियों को छिपाकर रखा
गया। वैसे भी हमारी दुनिया के कुछ लोग इन विशिष्ट शक्तियों के कारण खुद को भी विशिष्ट समझते हैं। इसलिए वो साधारण मनुष्यों के साथ ज्यादा मेलजोल नहीं रखना चाहते। अब तो तुम सब इसी दुनिया के ही हिस्से हो। धीरे-धीरे इसे समझ ही जाओगे।" अनंत कुमार ने कहा।

"तो क्या इस दुनिया में भी सामान्य लोगों की दुनिया की तरह मतभेद होते हैं?" चैतन्य ने अपना सवाल आगे किया।

"जाहिर सी बात है। वैचारिक मतभेद कहाँ नहीं होते हैं। हमारी दुनिया में भी हैं और इसी मतभेद ने ही हमारी दुनिया को तीन समूहों में विभक्त कर दिया है।" अनंत कुमार ने अपनी एक भौंह चढ़ाकर चैतन्य की ओर देखते हुए कहा।

"समूह! कैसे समूह?" आशुतोष ने हैरानी जताई।

"सच बात तो यही है कि तुम्हारे आगे के सफर में तुम्हें सिर्फ उस पिशाच से ही नहीं उलझना है, बल्कि परिधि को उस दूसरे समूह से भी बचाना है, जो अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए उसका उपयोग करना चाहते हैं।" अनंत कुमार ने तीनों पर एक-एक करके अपनी गहरी नजर डालते हुए कहा।

"कौन सा समूह?" आशुतोष ने पूछा।

"अहेरी! वो खुद को अहेरी कहते हैं। अहेरी का मतलब होता है शिकारी।" अनंत कुमार ने जानकारी देते हुए कहा।

"और हम किस समूह में हैं?" चैतन्य ने भी जिज्ञासा के साथ पूछा।

"हम प्रहरी हैं। उनका काम शिकार करना है और हमारा काम संभालना।" अनंत कुमार ने कहा।
"शिकार! किसका शिकार?" अनामिका ने पूछा।

"हमारी दुनिया में ही... जो अपनी राह से भटक जाते हैं और अपनी शक्तियों का अनुचित उपयोग करने लगते हैं, ये समूह हमेशा से उन्हीं की शक्तियों को या तो नियंत्रित करने की कोशिश करता था या फिर.... हमेशा के लिए खत्म कर देता था।" कहते हुए अनंत कुमार के चेहरे पर तनाव आ गया था।

"पर ये तो... ठीक ही लग रहा है।" चैतन्य ने उलझे हुए स्वर में कहा।

"हम्म! शुरू में तो सब सही ही था। पर मैंने कहा ना शक्तियाँ जिम्मेदारी के साथ गुरुर भी लेकर आती हैं। शुरू में हमारी दुनिया भी ऐसी नहीं थी जैसे कि आज है। अहेरी समूह के लोग ही वे लोग हैं जो अपने आप को अति विशिष्ट समझते हैं क्योंकि उनका अस्तित्व हमारी दुनिया में सबसे पुराना है। पहले यह कोई समूह नहीं था बल्कि विशिष्ट अधिकार प्राप्त लोगों की एक सभा थी जो...शक्तियों का अनुचित प्रयोग करने वालों को आपसी राय के अनुसार सजा दिया करते थे। मगर समय के साथ साथ इनके अंदर घमंड ने अपना घर कर लिया। इनके पद वंशानुगत होने लगे और फिर यह लोग अपने अधिकारों का दुरुपयोग करने लगे। जिस से भी इन्हें दिक्कत या परेशानी होती थी, उन्हें वो अपने अधिकारों के बल पर खत्म कर दिया करते थे और धीरे-धीरे उनका यही दृष्टिकोण हमारी दुनिया में कलह का विषय बन गया था।" अनंत कुमार ने गंभीर लहजे में कहा।

"तो क्या प्रहरी समूह इसी सब का नतीजा था?" अनामिका ने सवाल किया।

"सही समझे! अहेरी समूह के सदस्यों के गैर जिम्मेदारी पूर्ण रवैय्ये के कारण यहाँ का सारा सिस्टम खराब होने लगा। उनका कहना था कि उन्होंने जिसे गलत कह दिया वह गलत ही है। उसके पास दया याचना या अपनी बात कहने का कोई अधिकार ही नहीं होता था और यही बात किसी को चुभ गई।" शून्य में निहारते हुए अनंत कुमार ने कहा।

"किसे?" आशुतोष ने गहरी नजरों से अनंत कुमार को देखते हुए पूछा।

"तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र को!" अनंत कुमार ने नाम का खुलासा करते हुए
कहा।

"क्या?" एक साथ तीन हैरानी भरी आवाजें आई थीं।

"हाँ! आज से 150 साल पहले रानी चित्रलेखा वाली घटना ने तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र के साथ-साथ हमारी दुनिया के कई लोगों को झिंझोड़ कर रख दिया था। उस समय इसी अहेरी समूह के भ्रष्ट सदस्यों की वजह से रानी चित्रलेखा को उनका न्याय नहीं मिल सका था। चूंकि तांत्रिक श्रेष्ठ ऊँचे ओहदे पर थे इसलिए अहेरी सभा के साथ उनकी जान पहचान और निकटता भी थी।" अनंत कुमार अतीत में खोते हुए बोले।

"तो उन्होंने उसी समय कुछ क्यों नहीं किया?" अनामिका ने सवाल किया।

"क्योंकि उस समय तांत्रिक श्रेष्ठ भी इसी अहेरी समूह का हिस्सा थे, जो गलत लोगों को सजा दिया करता था। पर उस समय बहुत कुछ बदल गया। उस समय सिर्फ पूरब ही ऐसा नहीं था... जिसने सब को पथभ्रष्ट किया था। पूरब ने उनके अधिकारियों को भी अपनी तरफ मिला लिया था, जिससे उन्होंने हमेशा ही चित्रलेखा को गलत माना था। इसलिए उनकी नजर में चित्रलेखा को खत्म करना ही आखिरी उपाय था और यह काम तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र को मिला था। उस समय तक कई लोगों के ना चाहने के बाद भी अपराधियों को अपने हक में बोलने का कोई अधिकार नहीं था और ना ही कोई उनके पक्ष में खड़ा हो सकता था। चूंकि उस समय चित्रलेखा की वजह से हर्षित भी अहेरी समूह के निशाने पर आने लगा था... इसलिए तांत्रिक श्रेष्ठ को उसकी बहुत चिंता हो गई थी और इसीलिए वह हर्षित को चित्रलेखा से दूर करना चाहते थे। हर्षित को बचाने की जद्दोजहद में ही वो हमारी दुनिया के काले राज की गहराई में उतर गए। चित्रलेखा की मृत्यु आपातकालीन परिस्थितियों की वजह से जरूरी हो गई थी इसलिए तांत्रिक श्रेष्ठ उस समय कुछ ना कर सके। लेकिन चित्रलेखा
की मृत्यु ने उनके दिल दिमाग पर इतना बोझ डाल दिया कि वो इन सबसे अलग हो गए। इस बीच साधारण मनुष्य की भूमिका निभाते हुए भी वह अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति को रोक नहीं सके और अंततः हमारी दुनिया का काला रहस्य उनके सामने खुल गया।" अनंत कुमार की आवाज भारी होने लगी थी।

"तो क्या प्रहरी समूह तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र ने बनाई थी?" अनामिका ने अपना पहलू बदलते हुए कहा।

"हाँ! तांत्रिक श्रेष्ठ चाहते थे कि ऊँचे रसूख वाले लोगों के पैरों तले कुचल जाने वाले हमारे दुनिया के लोगों को भी साथ और इंसाफ मिल सके। उन्हें अपनी बात कहने का अधिकार मिले। इन सब को लेकर उन्होंने उसी समय पूरी ताकत से अपना प्रतिरोध जाहिर किया था। हमारी दुनिया के लोग अहेरी समूह की ज्यादितियों से परेशान हो चुके थे। इसलिए जब तांत्रिक श्रेष्ठ ने प्रहरी समूह का गठन किया, भारी संख्या में लोगों ने उनका समर्थन किया था। अहेरी समूह तांत्रिक श्रेष्ठ की बढ़ती भूमिका से तिलमिला उठा था। मगर कहते हैं ना कि सच कि ताकत बहुत बड़ी होती है। लाख चाहने के बाद भी वो तांत्रिक श्रेष्ठ की आवाज को दबा नहीं पाए और इस तरह अस्तित्व में आया हमारा प्रहरी समूह, जो सही को सही कहता है और गलत को गलत मानता है।" अपनी बात समेटते हुए अनंत कुमार का चेहरा गर्व से दमकने लगा था।

"फिर तो अहेरी और प्रहरी समूह के बीच तनाव हमेशा बहुत ज्यादा रहता होगा।" अनामिका ने कहा।

"वो तो है।" अनंत कुमार ने फीकी मुस्कुराहट के साथ कहा।

"और तीसरा समूह! वो कौन सा है?" चैतन्य ने पूछा।

"शक्ति समूह! ये समझ लो कि वे सभी.... जो ना तो अहेरी समूह का हिस्सा है और ना ही प्रहरी समूह का हिस्सा है वह इस समूह में आते हैं और इन्हीं के सदस्यों को सजा दी जाती है या फिर न्याय दिया जाता है।"
अनंत कुमार मेज में रखे पेपरवेट को घुमाते हुए बोले।

"और यदि अहेरी या प्रहरी समूह का कोई सदस्य गलती करे तो?" चैतन्य ने एक बार फिर जिज्ञासा से पूछा।

"उसकी गलती पता चले... तो फिर वो समूह का सदस्य नहीं रहता। उसके
बाद उस पर उसी तरह कार्यवाही होती है, जैसी होनी चाहिए। ये अलग बात है कि अहेरी अपनी गलती नहीं मानते हैं।" अनंत कुमार ने न्याय प्रक्रिया समझाते हुए कहा।

"इस अहेरी समूह की मुख्य समस्या है क्या आखिर?" आशुतोष ने पूछा।

"समस्या यह है कि जबसे प्रहरी समूह का गठन हुआ है अहेरी समूह ने अपनी प्रतिष्ठा लगातार खोई है। वो उसी प्रतिष्ठा को वापस पाना चाहते हैं।" अनंत कुमार ने समस्या का मूल बताते हुए कहा।

"और वो कैसे?"

"मैंने पहले भी बताया ना! चित्रलेखा वाली घटना हमारी दुनिया की सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक थी, जिसने हमारी दुनिया में बहुत कुछ बदल कर रख दिया। तो वो अहेरी.... उस घटना को ही बदलना चाहते हैं। सोचो! अगर वह घटना ही इतिहास से मिट गई तो.... प्रहरी समूह का अस्तित्व भी मिट जाएगा।" अनंत कुमार ने समस्या की गंभीरता को समझाते हुए कहा।

"वो कैसे?"

"समयचक्र के रहस्य को सुलझाकर!" अनंत कुमार ने जवाब दिया।

"और ये समय चक्र का रहस्य है क्या?" इस बार सवाल अनामिका ने किया था।

"यही तो हमें भी सुलझाना है।" अनंत कुमार ने लाचारी से कहा।

"और इसी उलझन-सुलझन से ही दोनों समूहों की प्रतिष्ठा जुड़ी हुई है। एम
आई राइट?" अनामिका ने दिमाग पर जोर देते हुए कहा।

"सही कहा।" अनंत कुमार ने अनामिका की बात का समर्थन किया।

"पर कुछ तो ऐसा होगा, जो हमें इस समस्या को सुलझाने में मदद करे?" चैतन्य ने थोड़ा उकताकर कहा।

"उस लड़की के अलावा और कुछ भी नहीं है हमारे पास! इसलिए तो उसकी सुरक्षा इतनी अहम है।" अनंत कुमार ने एक बार फिर से लाचारी दिखाई।

"तो क्या... अहेरी समूह की नज़रें भी हैं परिधि पर?" आशुतोष ने पूछा।

"यकीनन! बस उनकी चाल क्या होगी... इसी पर नज़र रखना है हमें।" अनंत कुमार ने आशंका जताते हुए कहा।

"एक मिनट! तो क्या वो पिशाच... अहेरी समूह का है?" चैतन्य ने उस ख़ौफनाक प्राणी को याद करते हुए कहा।

"पता नहीं! वो कौन है? उसकी कहानी भी कोहरे में ही छिपी हुई है। उसके बारे में भी पता लगाना ही होगा।" अनंत कुमार के माथे पर चिंता की लकीरें उभर आई।

"पर परिधि!" अनामिका ने रात की घटना की ओर सभी का ध्यान दिलाते हुए कहा।

"उसके लिए भी कुछ सोचना पड़ेगा। मुझे ताज्जुब है कि वो पिशाच बिना इजाजत के अंदर कैसे आ गया? कोई भी पिशाच बिना इजाजत के घर के अंदर नहीं आ सकता।" अनंत कुमार के माथे पर चिंता की लकीरें उभर
आई थीं।

"पर ये पिशाच है कौन? परिधि के पीछे क्यों पड़ा है ये? पहले दिन से ही वो उसके पीछे है?" अनामिका ने चिंतित स्वर में कहा।

"कहा ना! उसकी कोई भी जानकारी नहीं है कि वो कौन है? कहाँ से आया है? हालांकि सदियों से उसकी उपस्थिति को महसूस सबने किया है " अनंत कुमार ने दाँत भींचते हुए कहा।

"मतलब कि ये... दूसरी ही कहानी है।" अनामिका चिहुंक कर बोली।

"दूसरी नहीं! वो पिशाच परिधि के पीछे है। आचार्य निशिकांत के अनुसार परिधि अतीत से आई है और समय चक्र के रहस्य से जुड़ी है। इसका मतलब है कि वो पिशाच भी उस समय चक्र से जुड़ा हुआ है और हमें यही पहेली सुलझानी है।" अनंत कुमार ने हिसाब-किताब लगाते हुए कहा।

"और वो हम कैसे करेंगे?" चैतन्य ने कहा।

"जाहिर सी बात है.... तुम्हारे जरिए!" अनंत कुमार ने चैतन्य की ओर देखते हुए कहा।

"पर मैं कैसे...?" चैतन्य ने घबराकर कहा।

"चैतन्य! तुम वायु रक्षक हो। अतीत और भविष्य देख सकते हो। जानता हूँ कि ये मुश्किल है, पर करना तो होगा। तुम्हीं एक जरिया हो, जो परिधि की यादों में... उसके अतीत में झांक सकता है। अगर तुम अनुभवी होते तो हमें आज ही सब कुछ पता चल जाता। पर... फिलहाल हमें तुमसे मिलने वाली छोटी-

छोटी जानकारियों के सहारे ही कदम बढ़ाने होंगे। ये बहुत जरूरी है। तुम समझ रहे हो ना!" अनंत कुमार ने चैतन्य की ओर आसरे
भरी नज़रों से देखते हुए कहा। उनकी बात सुनकर चैतन्य ने हाँ में अपना सिर हिलाया।

"अच्छा अंकल! मैंने आपसे ये कभी भी नहीं पूछा। पर आप... कौन से रक्षक हैं?" अनामिका ने अनंत कुमार से सवाल किया।

उसका सवाल सुनकर अनंत कुमार मुस्कुराए और बोले, "मैं कोई रक्षक नहीं हूँ। मैं तो रखवाला हूँ! अतीत की धरोहरों की रखवाली करता हूँ।"

"अच्छा! वो क्यों?" चैतन्य ने पूछा।

"क्योंकि... जब तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र ने प्रहरी समूह की स्थापना की थी तब उसके कुछ सदस्य वे लोग भी थे... जो इस दुनिया के सदस्य नहीं थे। मगर... चित्रलेखा वाली घटना से जुड़े होने के कारण तांत्रिक श्रेष्ठ उनके हिस्से में भी जिम्मेदारियाँ जोड़ दी।" अनंत कुमार ने मुस्कुराते हुए कहा।

"इस दुनिया के सदस्य नहीं थे मतलब!" अनामिका ने कहा।

"मैं डॉ. पीयूष और दिव्यांशु की बात कर रहा हूँ।" अनंत कुमार ने उन्हें नई जानकारी दी।

"डॉ पीयूष और दिव्यांशु!" चैतन्य ने चौंककर कहा।

"हाँ चैतन्य! डॉ. अनंत... पीयूष की वंशावली से हैं। तुमने इस घर की बाहरी मेहराब पर मंजुला विला लिखा नहीं देखा?" जवाब आशुतोष ने दिया।

"क्या?" चैतन्य ने अपनी सिकुड़ी हुई निगाहें आशुतोष की ओर घुमाई।
"मंजुला यानि कि पीयूष की दीदा और चित्रलेखा की मंजरी अम्मा!" अनामिका ने याद करते हुए कहा।

"हाँ! वहीं मंजरी, जिसकी बेटी चित्रा ने तुम्हारी मॉ मेघा को अपनी शक्तियाँ दी थीं। इसीलिए तो मेघा हमसे इतनी जुड़ी हुई थी।" अनंत कुमार ने अनामिका से कहा।

"हे भगवान!" कहते हुए अनामिका ने अपना माथा पकड़ा।

"क्या इसलिए आप उन आयुर्वेदिक पौधों की देखभाल करते हैं।" चैतन्य ने अपनी तर्जनी उंगली नचाते हुए पूछा।

"और नहीं तो क्या! हमारी धरोहर है वो! तुम्हें मेरे पास वो सारी औषधियाँ भी मिल जाएँगी...जो दुनिया के बाकी हिस्सों में मिलना दुष्कर या असंभव है। हमारी दुनिया के कई जादुई काढ़े भी इनसे बनते हैं। आगे तुम्हारे बहुत काम आएँगे। इसीलिए तो हम रखवाले हैं।" अनंत कुमार ने कहा।

"मतलब कि समस्या गंभीर है। कहाँ जाना है ये पता है, पर रास्ता ही मालूम नहीं है।" अनामिका ने कहा।

"तुम रक्षक हो। तुम विशिष्ट हो, इसलिए तो प्रकृति और सितारों ने तुम्हें अपने शक्ति धारकों के रूप में चुना है। प्रकृति कभी ग़लत नहीं होती है। आगे का रास्ता धुंधला जरूर है, पर... है।" अनंत कुमार ने उन सभी का हौसला बढ़ाते हुए कहा।

"क्या वरूण और गीता ये सब जानते हैं?" चैतन्य ने पूछा।

"नहीं! चूंकि मैं एक रखवाला हूं तो उनमें से किसी एक की भूमिका भी यही हो सकती है और अभी उन्हें ये बताने का वक्त नहीं आया है। जब
आएगा... बता दिया जाएगा। तो इस बात का ऐहतियात रखना।" अनंत कुमार ने हिदायत देते हुए कहा।

"जी!" तीनों ने एक साथ कहा था।

"हम आज से ही आगे का काम शुरू कर देंगे। मैं तुम्हें बताऊँगा। तब तक आराम से इन सबके बारे में विचार करो।" अनंत कुमार ने कहा। सभी ने हुंकारी भरी थी।

अनंत कुमार की स्टडी में जरूरी प्रारंभिक जानकारी देने के बाद अनंत कुमार ने उन सभी को शाम चार बजे स्टडी में आने के लिए कहा। आशुतोष और चैतन्य कुछ देर और वहीं रूक गए और अनामिका वहाँ से बाहर आ गई। सीढ़ियों की ओर जाते हुए उसकी नज़र पिछले दरवाजे की ओर गई, जो खुला हुआ था। हमेशा बंद रहने वाले दरवाजे को खुला हुआ देखकर अनामिका को हैरानी सी हुई।

"ये दरवाजा क्यों खुला हुआ है?" यह कहते हुए अनामिका उस ओर बढ़ गई। वो दरवाजे से बाहर निकली ही थी कि उसे सामने से परिधि अपनी ओर आती दिखाई दी। अनामिका की नज़रें थोड़ा आगे तक गईं तो... उसने वरूण और मुकुल को बात करते हुए देखा। परिधि जब उसके नजदीक पहुँची तो ऊँची आवाज में उसने परिधि से कहा, "यहाँ क्या कर रही हो तुम?"

"वो मैं... बस थोड़ा ऐसे ही गई थी।" परिधि ने बात बनाते हुए कहा।

"वरुण वहाँ क्या कर रहा है?" अनामिका ने पूछा।

"वो उस खड़ूस मुकुल से बातें कर रहे हैं। क्या... ये मुझे पता नहीं।" परिधि ने अपने कंधे उचकाकर कर अनभिज्ञता जाहिर की।
"ठीक है चलो!" कहते हुए अनामिका उसे अपने साथ ले गई।

सीमित समय होने के कारण कम शब्दों में ही अनंत कुमार ने उन्हें काफी कुछ बता दिया था। शेष उन्हें समय के साथ धीरे-धीरे पता चलने वाला था। फिलहाल तो समय खुद के साथ -साथ दूसरों की शक्तियों के साथ सामंजस्य बैठाने का भी था। समय चक्र का रहस्य बहुत से राज खुद में छिपाए बैठा था, जिनकी तलाश बहुत सी आहुतियाँ लेने वाली थीं।

वरूण अपने कमरे में बेचैनी की हालत में बिस्तर में बैठा हुआ था। हालांकि उसने फिलहाल सबसे और

खासतौर पर अनामिका से दूर रहने का फैसला कर लिया था, पर ये फैसला उसी के लिए नारकीय बन गया था। उसे ये तो समझ में आ गया था कि उसकी तरह अनामिका ने चैतन्य से भी कोई दिल बहलाने वाली बात नहीं की है, पर... था तो वो रकीब ही ना! अनामिका और उसे एक पल के लिए भी साथ देखकर उसके अंदर बहुत कुछ बिखर जाता था, जो फिर समेटे नहीं सिमटता था। रात भर की ड्यूटी के बाद वो बहुत थका हुआ था, मगर सुबह-सुबह चैतन्य के कमरे से निकलती हुई अनामिका ने उसे और भी थका दिया था। खुद को संयत रखने के फैसले की वजह से अब वो खुद आगे बढ़कर अनामिका से कोई भी सवाल नहीं करना चाहता था। दो रात पहले चैतन्य, अनामिका को
लेकर जितने अधिकार से उस पर चिल्लाया था, उसने उसके अंदर के विश्वास को हिलाकर रख दिया था। उसे अभी भी इस बात पर यकीन नहीं था कि अनामिका ने उसके अलावा किसी और को भी अपने जीवन में उतनी ही अहमियत दे रखी थी कि वो अपना हक दिखाने में बिल्कुल भी नहीं झिझकता था। ख्यालों के बवंडर में उलझता हुआ वो बिस्तर पर पीठ के बल गिर पड़ा और ऊपर धीमी रफ्तार में घूमते हुए पंखे की पंखुड़ियों के साथ अपनी ऑखों की पुतलियों को भी घुमाने लगा। थोड़ी देर उसी तरह पड़े रहने के बाद वो झुंझलाकर उठा और कमरे से बाहर निकल गया क्योंकि आराम तो उसे इस तरह मिलना ही नहीं था।

कमरे से बाहर आकर उसने चारों ओर देखते हुए सीढ़ियों की गहराई नाप ली, पर घर में छाया हुआ सन्नाटा उसे और भी परेशान करने लगा। सिर को झटकते हुए वो किचन की ओर पानी पीने के लिए चला गया। पानी का गिलास भरते हुए उसे किचन की पिछली खिड़की की ओर से किसी लड़की की आवाज सुनाई दी। उसने आवाज पर कान लगाया तो उसे पहचान भी लिया।

"परिधि! ये इस तरफ क्या कर रही है?" तेजी से खिड़की के पास जाकर उसने बाहर का जायजा लिया था। उसने देखा कि वो अकेली नहीं थी, बल्कि एक लड़के के साथ उलझी हुई थी। वरूण ने उस लड़के के चेहरे की ओर देखने की कोशिश की, मगर वो इतनी तेजी से अपनी जगह बदल रहा था कि कुछ भी दिखाई नहीं दिया। उसने पानी का गिलास वहीं पटका और किचन से बाहर निकलकर तेजी से उस ओर चला गया।

"परिधि! यहाँ क्या कर रही हो तुम?" उन दोनों के करीब पहुँचकर वह कड़े लहजे में बोला। उसकी तेज आवाज सुनकर परिधि और मुकुल दोनों का ही ध्यान उसकी ओर चला गया। परिधि के चेहरे पर थोड़े सकपकाने के भाव आए थे, मगर मुकुल पहले की तरह ही अपने माथे पर बल डाले वरुण की ओर देख रहा था।
"जी, बस वो मैं... थोड़ी मदद के लिए आ गई थी।" परिधि ने सफाई देते हुए कहा।

"अंदर चलो तुम!" वरुण की आवाज अभी भी तल्ख थी।

"जी!" सिर हिलाते हुए परिधि घर की ओर बढ़ गई। वरुण की नज़रें मुसलसल उस पर जमी हुई थीं, उसी समय पीछे से आई आवाज ने उसे चौंकाया।

"थैंक्स!"

वरुण ने पीछे मुड़कर अपनी एक उठी हुई भौंह के साथ मुकुल की ओर देखा जो अपने चेहरे की खिन्नता को समेटने की कोशिश कर रहा था। उसे पहचानने की कोशिश करते हुए कहा, "मुकुल!"

"हम्म! आप वरूण!" कहते हुए मुकुल ने अपना सीधा हाथ वरुण की ओर बढ़ाया।

"मुझे ऐसा लगता है कि... हम पहले भी मिल चुके हैं।" उसके बढ़े हुए हाथ को पकड़ते हुए वरुण ने कहा।

"सही लगता है आपको! पिछले साल होली के दिन आपके घर में ही मिले थे। अगर आपको याद हो तो... आप अपनी दोस्त से फोन में बहस करते-करते मुझसे टकराए थे और मैं रंगों की तश्तरी के साथ पानी के हौज में गिर गया था। अगर आपको याद हो तो!" मुकुल ने उसे याद दिलाते हुए कहा था।

"हाँ याद आया। मैं तो डर ही गया था, पर फिर भी तुमने बुरा नहीं माना
था।" वरुण ने उस घटना को याद करते हुए मुस्कुरा कर कहा था।

"हाँ वो तो है... और फिर पिछले साल ही साहनी अंकल की बर्थडे पार्टी में भी मिले थे। पर उस समय आपकी फोन पर किसी से बहस हो गई, तो आप जल्दी ही वहाँ से निकल गए, तो वो मुलाकात भी यूं ही रह गई थी।" मुकुल ने अगली मुलाकात का जिक्र करते हुए कहा। वरूण को याद आया कि दोनों ही बार फोन पर अनामिका ही थी। अनामिका का ख्याल आते ही उसका चेहरा एक बार फिर से मुरझा गया। वे दोनों आगे कुछ कहते उससे पहले ही घर की ओर से आती हुई आवाजों ने उन दोनों का ध्यान उस ओर किया। उन दोनों ने देखा कि वहाँ मौजूद अनामिका, परिधि से कुछ पूछ रही थी और बातें करते हुए ही वे दोनों अंदर चली गईं।

"ये वही है ना..... आपके माथे की हर शिकन की वजह!" अनामिका को उखड़ी हुई नज़रों से देखते हुए मुकुल ने कहा। यह सुनते ही वरूण का सिर्फ ध्यान मुकुल की ओर मुड़ा था।

"आई हेट गर्ल्स!" मुकुल के पत्थर जैसे सख़्त लहज़े में लिपटी आवाज आई, जिस पर फिर वरूण ने चौंककर पूरी तरह से उसकी ओर देखा था।

"क्या कहा?"

"मुझे लड़कियाँ पसंद नहीं। ये बस... सब कुछ बर्बाद करने के लिए ही होती हैं।" मुकुल का लहजा और भी कड़वा हो गया था।

"क्यों? क्या हो गया?" वरुण ने ऑखें सिकोड़ कर उससे पूछा था।

"मैंने कहा ना! ये सब.... बस बर्बाद करने के लिए ही होती हैं और अभी.... इनके बारे में बात करके भी हमारा वक्त ही बर्बाद होने वाला है और कुछ नहीं।" कहते हुए उखड़ा हुआ सा मुकुल वापस अपने काम में
लग गया। वरुण ने हैरानी से उसकी ओर देखा। वरुण उसकी ओर कुछ देर देखता रहा और फिर वहाँ से चला गया। मुकुल पहले की तरह पौधों को अलग-अलग रखने लगा और वो कागज में भी कुछ लिखता जा रहा था। पौधों को उठाते समय एक कांटेदार पौधे में उसका हाथ उलझ गया और उसके सीधे हाथ में एक गहरा कट लग गया।

"शिट!" मुकुल ने अपने हाथ को झटकते हुए कहा, जिससे खून निकलने लगा था। उसने आसपास नज़र दौड़ाई, पर कुछ दिखा नहीं तो जेब से अपना रूमाल निकालकर किसी तरह अपने हाथ में बांध लिया। थोड़ी देर बाद वो आज का काम खत्म करके घर के बाहरी तरफ की ओर बनी पतली सी गली से

होता हुआ बाहर आया और फिर अपनी बाइक में बैठकर वहाँ से निकल गया। मुख्य दरवाजे से बाहर आकर उसने अपनी गाड़ी रोकी। उसने अपने हाथ में बंधे रूमाल को निकाल कर वहीं जमीन में फेंक दिया क्योंकि वो उसे परेशान कर रहा था। हवा का एक झोंका उसे उड़ा ले गया और फिर वो आगे बढ़ गया।

****

उसी सुबह-

एक बार फिर से वे दोनों उसी गुप्त स्थान पर बैठे थे। सृष्टि एक कुर्सी पर बैठी हुई चीफ को बेचैनी से चहलकदमी करते हुए देख रही थी। उसके चेहरे पर उलझन साफ-साफ नुमाया थी। कुछ देर तक तो वो चीफ को इस तरह अपने हाथों को मलते हुए देखती रही, पर जब उससे रहा नहीं गया,
तो पूछ पड़ी,

"जान सकती हूँ कि आपने मुझे यहाँ क्यों बुलाया है? मुझे गीता के साथ जाना था।"

उसकी बात सुनकर चीफ ने पलट कर उसकी ओर देखा और फिर एक ठंडी साँस छोड़ी। उसके चेहरे के भाव देखकर सृष्टि की ऑखें सिकुड़ गईं।

"सृष्टि! हमें सब जल्दी करना होगा। हमारे लिए एक बहुत ही बुरी खबर है।" चीफ ने बौखलाई हुई आवाज में कहा।

"कैसी खबर?"

"नियति पात्र ने आचार्य निशिकांत का उत्तराधिकारी ढूँढ लिया है।" इस बार चीफ की आवाज में घबराहट थी।

"क्या? ऐसे अचानक! नियति पात्र हमेशा पहले कोई इशारा देती है रक्षकों से संबंधित और... ऐसा तो कुछ भी नहीं हुआ है।" बौखलाहट सृष्टि की आवाज में भी उतर आई थी।

"मेरी परेशानी की वजह इससे भी ज्यादा है। उम्मीद करता हूँ कि जो मैं सोच रहा हूँ... वैसा ना हो।" चीफ ने संजीदा लहजे में कहा।

"और वो क्या है?" सृष्टि की ऑखें बदस्तूर सिकुड़ी हुई थीं।

"यही कि... वो वायु रक्षक.... अनामिका ना हो। सब बर्बाद हो जाएगा।" चीफ की आवाज लरजने लगी थी।

"अनामिका! पर उसे तो जल रक्षक की भूमिका के लिए चुना गया है।"
सृष्टि की सिकुड़ी हुई ऑखें अनामिका का नाम सुनकर हैरत से फैल गईं।

"ये खबर सही है.... तो भी हमें उससे खतरा है।" चीफ ने बहुत ही बेचैनी से कहा।

"वो क्यों?"

"पता नहीं क्यों... पर मुझे शक हो रहा है कि वही वायु रक्षक है।" चीफ ने बेतुकी सी बात की।

"क्या कह रहे हैं आप? ऐसा कैसे हो सकता है? ये खबर पक्की है कि अनामिका को जल रक्षक चुना गया है और अगर वो जल रक्षक है.... तो वायु रक्षक कैसे हो सकती है? ये अनहोनी सी बात है।" सृष्टि ने ऑखें फैलाते हुए कहा।

"हो सकती है सृष्टि! ये अनहोनी भी हो सकती है क्योंकि पहले भी हो चुकी है। उस समय हमारे समूह के सदस्यों ने बड़ी ही मुश्किल से हालातों को संभाला था। क्या किसी एक में ही दो शक्तियों की कल्पना कर सकती हो तुम? अगर ऐसा हुआ तो हमारा सपना... सपना ही रह जाएगा।" चीफ के माथे की शिकन बढ़ती ही जा रही थी।

"पहले भी हो चुका है! पर कब? ऐसी तो कोई भी जानकारी नहीं है किसी को!" सृष्टि की हैरानी बढ़ती ही जा रही थी।

"क्योंकि बड़ी ही कुशलता से हमने उस शक्ति पर नियंत्रण किया था और किसी की नज़र में आने से पहले ही उसे रास्ते से भी हटाया था।" चीफ ने एक आह भरते हुए कहा।

"क्या? कब?" सुनते ही सृष्टि उछल पड़ी।
"पुरानी कब्र खोदने की जरूरत नहीं है। दुआ करो कि उस कब्र की मिट्टी से कोई और पौधा ना पनपा हो। जवाब अपने समय पर मिलें... तो ही उनके मायने होते हैं।" चीफ ने बात घुमाने की मंशा से कहा।

"पर अनामिका इतनी ख़ास क्यों है? बस चित्रलेखा की शक्तियों का वरण करने से तो ऐसा नहीं हो सकता। शक्तियाँ उसी समय तक महत्वपूर्ण होती हैं, जब तक धारण करने वाले में उसका उपयोग करने की काबिलियत हो। चित्रलेखा के लिए भी तो उसकी असीमित शक्तियाँ किसी काम नहीं आई, जबकि वो शुद्ध रूप से डायन थी। अनामिका तो बस एक साधारण सी लड़की है, जिसे चित्रलेखा की शक्तियाँ मिल गई हैं। जो शक्तियाँ चित्रलेखा के काम नहीं आ सकीं, वो भला अनामिका के काम क्यों आऍंगी?" सृष्टि ने तफ्सील से अपने अंदर के सवालों को जाहिर किया।

"हम्म! अनामिका को साधारण लड़की समझने की भूल कभी भी मत करना। अनामिका जन्म से डायन ना हो, पर जन्म के कुछ दिनों बाद से ही वो डायन बन चुकी है।" चीफ ने हैरतअंगेज खुलासा करते हुए कहा।

"क्या?"

"हाँ! अनामिका तो जन्म के साथ ही लगभग मर चुकी थी। उसकी साँसों की आखिरी किस्त के साथ

मेघा ने अपनी शक्तियों को जोड़ा था। इसीलिए उसकी जान बची थी। ये समझ लो कि उसी समय उसके डायन में बदलने की प्रक्रिया शुरू हो गई थी। वो साधारण नहीं है। मेघा ने अपना शरीर बदलने के लिए उसे इसीलिए तो चुना था।" चीफ की तरफ से अगली जानकारी सामने आई।

"पर.... मेघा को ऐसा करने से किसी ने नहीं रोका?" सृष्टि का कौतूहल बढ़ चुका था।
"नहीं! अनामिका की जान बचाने के कारण मेघा को उस पर पूर्ण अधिकार प्राप्त था। उसे ऐसा ना करने के लिए समझाया तो जा सकता था, पर... उसे रोक कोई नहीं सकता था। वैसे भी उसका शरीर जली हुई हालत में था, जिसे दवाईयों की मदद से वो किसी तरह संभाले हुई थी और इसलिए उसे नया शरीर प्राप्त करने का अधिकार था। वरना अपने हित के लिए किसी मासूम का इस्तेमाल करने पर प्रतिबंध लगाया जा चुका है, ये तुम अच्छी तरह जानती हो।" चीफ ने कड़वाहट से कहा।

"तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र!" सृष्टि की आवाज भी कड़वाहट भरी थी।

"उसी देवेन्द्र ने तो सब बर्बाद किया है। पहले अपने समूह का निर्माण किया। फिर उस समूह में साधारण मनुष्यों को शामिल किया और अपना प्रभाव बढ़ते ही अपने बेतुके नए नियम कायदों से हम सब की शक्तियों को बांध दिया। हमें उस प्रहरी समूह के उस प्रभाव को खत्म करना है सृष्टि! हर हाल में! हमें हमारा गौरव वापस पाना है। हम विशिष्ट हैं और संसार को ये पता होना ही चाहिए। उस सनकी तांत्रिक ने हम सबको भी साधारण मनुष्यों के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया है और ये बात हमेशा ही मेरे दिल को कुरेदती रहती है।" चीफ ने टेबल पर हाथ मारते हुए आवेशपूर्ण स्वर में कहा।

"आप चिंता ना करें! हम अपना लक्ष्य जरूर प्राप्त करेंगे।" सृष्टि ने भी कड़वाहट से कहा।

"तुम जाओ और उन सब पर नज़र रखो। देखो कि अनामिका ने वायु रक्षक की भी अंगूठी तो नहीं पहन रखी है। मैं अपने नेचर में मीठा घोल-घोलकर थक चुका हूँ। और हाँ... उस लड़की परिधि के हाथ की रेखाओं की पूरी जानकारी चाहिए मुझे।" चीफ ने हाँफते हुए कहा।
"जी!" कहते हुए सृष्टि ने अपने दिल के ऊपर हाथ रखा और जाने के लिए मुड़ गई। चीफ ने उस पर दरवाजे से बाहर निकलने तक नज़र रखी। उसके बाहर जाते ही वो पूरी दीवार पर बनी बुकसेल्फ के पास गए और कुछ किताबों की जगह बदली। जगह बदलते ही वो दीवार बीच से खुल गई और वो वहाँ से बाहर निकल गए। उनके बाहर निकलते ही दीवार पहले की तरह हो गई।

कमरे से बाहर निकलते ही सृष्टि अपने दहकते हुए वजूद को लेकर लगातार आगे बढ़ रही थी और उसके साथ ही उसके ख्यालों का भंवर अतीत का रूख किए हुए था। अतीत जो खून की नदी में नहाया हुआ था। उसकी ऑखों के सामने कभी आग के शोले भड़कने लगते... कभी खून की धार उसके दिमाग के कोने-कोने को अपने रंग से भर देती। उसके कान अनचाही चीखों से भर गए थे, जो कुछ लोगों के नाम दर्द भरी आवाज में पुकार रहे थे। अचानक सृष्टि की यादों में उसके नाम के साथ एक दर्द भरी चीख उभरी और उसके बढ़ते हुए कदम ठिठक गए। उसने अपनी ऑखों को दर्द की शिद्दत से भींच लिया। उसका सारा चेहरा लाल हो गया था और ऑखों के किनारे कुछ क़तरे उगल चुके थे। एक पल खुद के अंदर के तूफान को ज़ब्त करते हुए उसने झटके से अपनी आँखें खोली, तो वो अपने सुर्ख अंगारों से दहक रही थी। उसकी साँसे फूलने लगी और उसकी भरपाई के लिए वो गहरी साँसें लेते हुए वहीं खड़ी हो गई। अभी वो अपने जूनून के साथ खड़ी ही थी कि सामने से आई एक आवाज उसे हाल(वर्तमान) में ले आई।

"सृष्टि!"

उस रूखी सी आवाज को सुनकर सृष्टि ने सामने की ओर देखा। वो उसे हैरानी से देख रहा था।

"क्या हो गया? ऐसे क्यों खड़ी हो?" सामने वाले की आवाज अभी भी
बेहद रूखी थी।

"कुछ नहीं!" सृष्टि ने भी उसी के लहजे में जवाब दिया।

"अंकल कहाँ हैं?" उसने पूछा।

"कौन? प्रोफेसर साहनी? अंदर स्टडी में हैं।" सृष्टि ने उखड़े हुए स्वर में जवाब दिया।

"हम्म!" कहते हुए वो अंदर की ओर बढ़ गया।

"कमबख्त ने कभी शुक्रिया कहना सीखा ही नहीं।" सृष्टि ने दाँत पीसते हुए कहा।

उसकी नज़रें लगातार उस पर जमी हुई थी, जो फिसलकर उसके सीधे हाथ पर चली गई, जहाँ एक ताजा जख्म दिखाई दे रहा था। उसकी ऑखें सिकुड़ी और अगले ही पल उसे अनंत कुमार के बगीचे में काम करता मुकुल याद आ गया, जिसे उसने खिड़की से देखा था और अनामिका उसके पीछे आई थी (भाग - 11)। वो अपने अंकल प्रोफेसर साहनी यानि कि चीफ की स्टडी की ओर बढ़ा जा रहा था।

प्रोफेसर साहनी अपनी स्टडी की खिड़की के पास खड़े हुए बाहर की ओर देख रहे थे। ऑखों में नफ़रत की आग पूरी शिद्दत से दहक रही थी और जो दहकने के लिए इसी तरह हमेशा तन्हाईयों की तलाश करती थी। अपने अंदर की चिंगारी को प्रोफेसर ने हमेशा दुनिया से छिपाकर और बचाकर रखा था, सही दिन और हालातों के इंतजार में। तब तक अपने नेचर में अच्छाई का खोल चढ़ाकर रखना उनकी मजबूरी ही थी। हालांकि उन्हें ये भी खबर थी कि डॉ. अनंत कुमार और उसके साथी अभी भी उन सब पर ऑखें बंद करके भरोसा नहीं करते थे और ये बात प्रोफेसर साहनी को चुभती थी। अभी वो अपने विचारों के भँवर में ही थे कि तभी दरवाजे की ओर से आई दस्तक की आवाज ने उनको उस भँवर से बाहर निकाल कर फेंक दिया।

"अंदर आओ!" प्रोफेसर साहनी की गंभीर आवाज दरवाजे के बाहर तक गई।
"अंकल! आपसे बात करनी है।" मुकुल दरवाजा खोलकर अंदर घुसते हुए बोला।

"कहो! अब क्या हो गया?" प्रोफेसर साहनी की आवाज थोड़ी रूखी सी थी।

"आप डॉक्टर अनंत से ये साफ-साफ कह दें कि जब मैं उनकी मदद के लिए उनके गार्डन में काम करूं, तब कोई भी लड़की उस तरफ ना आए।" मुकुल का लहजा उखड़ा हुआ था। उसकी बात सुनकर प्रोफेसर साहनी के माथे पर बल पड़े थे।

"कौन सी लड़की?" उन्होंने पूछा।

"मुझे क्या पता कौन? शायद.... परिधि नाम है उसका! पर वही नहीं... उस तरफ कोई भी नहीं आनी चाहिए, वरना मैं नहीं जाऊँगा वहाँ।" मुकुल तिड़क कर बोला।

"इतना गुस्सा!"

एक बर्फ सी ठंडी आवाज ने उन दोनों का ध्यान दरवाजे की ओर किया था। मुकुल ने देखा कि अपनी रॉयल पर्सनैलिटी के साथ सूट बूट में खड़ा छ: फीट लंबा वो नौजवान बहुत ही आकर्षक था। उसके बाल हल्के भूरे थे और भूरी ऑखें मौत की तरह ठंडी थीं।

उसे देखकर मुकुल की एक भौंह चढ़ी थी और प्रोफेसर साहनी के चेहरे पर एकाएक चापलूसी के भाव आए थे।
"मि. विक्टर! आप! अचानक!"

"वो क्या है ना! कुछ उड़ती-उड़ती खबरें मेरे कानों में आई थीं, तो सोचा तस्दीक कर लूं!" विक्टर नाम के उस नौजवान ने कहा।

"जी वो..." कहते हुए प्रोफेसर साहनी ने मुकुल की ओर देखा। ऑखों में बाहर जाने का इशारा समझते ही मुकुल तेजी से बाहर की ओर चला गया। उसके बाहर निकलते ही प्रोफेसर साहनी उस युवक की ओर मुड़े, जो अब प्रोफेसर साहनी की चेयर पर बेतकल्लुफी से बैठा हुआ उन्हें ही देख रहा था।

"जी वो.... नियति पात्र ने तीन रक्षक चुन लिए हैं। दो के विषय में तो हमें पता है, पर तीसरे की पहचान अभी नहीं हुई है।" प्रोफेसर साहनी की आवाज गंभीर हो गई थी।

"वायु रक्षक!" खुश्क सी आवाज़ में वो युवक बोला।

"जी हाँ!" प्रोफेसर साहनी की नज़र नीचे झुक गई।

"और वो लड़की भी उन्हीं के पास है?" विक्टर ने पूछा।

"जी हाँ!" प्रोफेसर की आवाज थोड़ी सी काँपी थी।

"मतलब कि इतने सालों की हमारी सारी मेहनत और इंतजार मिट्टी में मिल गए।" विक्टर ने ऑखों में गुस्सा भरकर तंज भरे लहजे में कहा।

"ऐसा नहीं है सर! आप बेफिक्र रहें!" प्रोफेसर साहनी ने धीमे स्वर में कहा।
"बेफिक्र! कैसे रह सकते हैं हम बेफिक्र! हमें हमारा बदला चाहिए। उस लड़की परिधि ने हमारे खानदान की आन पर चोट की थी। उसकी वजह से बहे हमारे शाही खून का हिसाब चाहिए हमें। हमारे अल्फी का

इंसाफ चाहिए हमें।" विक्टर नाम का वो नौजवान मेज पर हाथ मारता हुआ पूरे जूनून से चीखा था। उसके रौद्र रूप को देखकर प्रोफेसर साहनी सकते में आ गए, मगर उस समय उन्होंने अपना मुँह बंद रखने में ही अपनी भलाई समझी। विक्टर कुछ देर तक मेज पर हाथ टिकाए हुए गहरी साँसें भरता रहा। कुछ देर बाद उसकी चढ़ी हुई साँसों की रफ्तार धीमी होती देखकर साहनी ने अपने अंदर की हिम्मत को इकट्ठा करते हुए पूछा।

"ये अल्फ़ी... कौन है? मतलब कि हमारे समूह में भी ये नाम दबा छिपा हुआ सा ही है, पर.... है। आखिर ये है कौन?"

"तुम्हें इससे क्या मतलब? तुम्हें चीफ सवाल-जवाब के लिए नहीं ... काम करने के लिए बनाया गया है। हमारा खानदान इस अहेरी समूह का संस्थापक ही नहीं... इस समूह की हर जरूरत को पूरा करने का जरिया भी है। हम ना हों तो ये समूह एक पल में ताश के पत्तों की तरह बिखर जाएगा और फिर तुम्हारा क्या होगा? इसलिए दूसरों की बजाए अपने बारे में सोचो। वो लड़की हमें चाहिए। हर हाल में! हर कीमत में!" विक्टर की तैश भरी आवाज ने प्रोफेसर साहनी की फिर से दहला दिया था।

"पिछले 200 सालों से जो श्राप हमारे परिवार के वजूद पर जोंक की तरह चिपटा हुआ है, वो ना जाने कब तक हमारी आहुतियाँ लेता रहेगा। कब तक हमारा परिवार अभिशप्त रहेगा? आखिर कब तक?" विक्टर भर्राए हुए गले से बोला।

"कैसा श्राप? कहीं आप 200 साल पहले हुए उस भीषण हत्याकांड की बात तो नहीं कर रहे हैं, जिसमें आपका खानदान बस खत्म ही हो गया
था।" प्रोफेसर साहनी ने हैरानी से पूछा।

"तुम्हें कहा ना! इन सबसे तुम्हारा कोई मतलब नहीं है। बस वो लड़की जहाँ से आई है... वहाँ वापस नहीं जानी चाहिए। उसे यहीं मरना होगा। उसकी मौत ही समय चक्र को बदल सकती है और फिर अतीत में जो भी हुआ, वो कभी नहीं होगा।" विक्टर इस बार थोड़ी नरमी से बोला।

"तो क्या उसकी मौत ही समय चक्र को बदल सकती है?" प्रोफेसर ने कहा।

"सही कहा क्योंकि समय चक्र का रहस्य कोई और नहीं... वही लड़की है। वो ही सब जानती है और वो हमें चाहिए। अग्नि और आकाश के रक्षक मिलने से पहले सब ठीक करो और अब हमें अच्छी खबर ही मिलनी चाहिए, वरना... तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा।" विक्टर की थरथराती हुई सी आवाज़ आई। उसने साहनी की ओर गुस्से से देखा और फिर वहाँ से तेज़ी से निकल गया। साहनी एक बार फिर से उलझनों में फँसकर रह गया। आखिर कौन था ये अल्फ़ी और क्या किया था उसने? अतीत के अंधकार में छिपा हुआ अल्फ़ी नाम का ये राज विक्टर के खानदान की धरोहर थी, जो उनके लिए भी काल का दूसरा नाम बन चुकी थी।

****

मंजुला विला-
मुकुल से मुलाकात के बाद वरूण अपने कमरे में आया। थकी और झुकी हुई नज़रों के साथ उसने दरवाजा बंद ही किया था कि पीछे से आई आवाज ने उसे ऑखें भींचने पर मजबूर कर दिया।

"वरूण!"

एक गहरी साँस भरने के बाद वो पीछे की ओर मुड़ा। अनामिका खिड़की के पास रखी कुर्सी पर बैठी हुई उसे ही देख रही थी।

"तुम यहाँ क्या कर रही हो?" वरूण उससे नज़रें चुराते हुए तेज आवाज में बोला था।

"इतना गुस्सा!" कुर्सी से उठते हुए अनामिका बोली।

"हुँह! मैं कौन होता हूँ गुस्सा करने वाला? मेरी वजह से तो तुम पर आफत आते-आते रह गई। मैं हमेशा तुम्हें परेशान करता हूँ ना! अब नहीं करूंगा।" वरूण ने बहुत ही बेरूखी से कहा और उसकी तरफ से अपना पूरा शरीर फेर लिया।

"वरूण!" अनामिका वरूण के पास आई और उसका कंधा पकड़कर अपनी ओर घुमाते हुए बोली, "ये क्या लगा रखा है वरूण? तुम तो मेंरे दोस्त हो ना!"

"दोस्त!" वरूण के होंठों पर तंज भरी मुस्कान उभरी। "पर... मुझे लगता है कि अब तुम्हें मेरी दोस्ती की जरूरत नहीं रही। नए-नए दोस्त जो मिल गए हैं तुम्हें, जो... मुझसे ज्यादा तुम्हारी परवाह करते हैं। तो... तुम्हें उसके पास जाना चाहिए।" वरूण ने अपनी बातों से हमले वाली रात की ओर इशारा किया था। उसने एक नज़र अनामिका के शिकन पड़े चेहरे पर
डाली और फिर तुरंत ही फेर ली।

उसके गिले-शिकवे सुनकर अनामिका ने एक आह भरी और भरे गले से बोली, "तुम्हें जो सोचना है... सोच लो वरूण! मगर मेरी जिंदगी में तुम्हारी जगह कोई भी... कभी भी नहीं ले सकता। बस तुम रिश्तों को उलझाओ मत। ये उलझ गए... तो नहीं सुलझा पाऊँगी मैं।"

वरूण उसकी बात सुनकर भावुक हुआ था, मगर एक बार फिर से उसने खुद को संभाला और अपनी पनीली ऑखों को अनामिका की ओर उठाने से परहेज़ किया। अनामिका ने दो मिनट वरूण के बोलने का इंतजार किया और फिर उसकी बेरूखी को महसूस करके वहॉ से चली गई। वरूण ने दरवाजे के बंद होने की आवाज सुनी और फिर अपनी भारी पलकों की लर्जिश को महसूस करते हुए दरवाजे की ओर देखा। वो कुछ देर उस बंद दरवाजे को देखता रहा और फिर बोला, "एक दिन तुम्हें मेरी क़दर होगी अनामिका! जरूर होगी।"

****

अपनी गाड़ी से उतरकर विक्टर तेजी से घर में घुसा और अपने कमरे की ओर बढ़ा। उसने अपना कोट

उतारा और फिर बेचैनी से अपनी टाई ढीली करते हुए वो कमरे की ओर बढ़ता गया। कमरे में आकर उसने दरवाजा तेजी से बंद कर दिया। उसकी हालत हर पल के साथ अजीब सी होती जा रही थी। एक बेचैनी सी उस पर तारी थी। उसका सारा शरीर काँप रहा था और शरीर का हर हिस्सा पसीने की नुमाईश करने लगा था। धीरे-धीरे उसे साँस लेने में दिक्कत होने लगी और वो घबराहट का शिकार हो गया था। उसकी ऑखें वहशत से लाल हो गईं थीं और लगातार चारों ओर नाच रही
थीं। ऐसा लग रहा था जैसे कि किसी की मौजूदगी का अहसास उसके दिल को और भी भारी किए जा रहा था।

"कैसे हो विक्टर?" एक सर्द सी आवाज़ उसके कानों के दरवाजे तक पहुँची और नतीजे में उसकी ऑखें फैलकर फटने की कगार तक पहुँच गई। सदमे से घिरा हुआ वो धीरे से पीछे मुड़ा और बुझे हुए आतिशदान की ओर देखने लगा क्योंकि आवाज इसी ओर से आई थी। धीरे-धीरे उसकी ऑखों से डर भाग गया और उसकी जगह बेबसी और लाचारी ने ले ली, जब सामने वाले आतिशदान में शोले भड़क उठे। देखते ही देखते उन शोलों ने आतिशदान से बाहर का रूख कर लिया और विक्टर की ओर बढ़ने लगे। आगे बढ़ने के साथ-साथ वो एक वजूद में तब्दील होने लगे थे। जब तक वो शोले विक्टर के सामने पहुँचे, उसके सामने आग से बना एक दहकता हुआ शरीर था, जो धीरे-धीरे ठंडा पड़ता जा रहा था और फिर उन शोलों से बने चेहरे में ऑखों की जगह दो कोटर बन गए जिनमें धीरे-धीरे ऑखों का रंग चढ़ने लगा। जल्द ही विक्टर के सामने आग से बना एक पिशाच अपनी खुरदुरी शख्सियत के साथ खड़ा था।

"क्या आज फिर?"

जवाब में उस पिशाच ने हाँ में सिर हिलाया और विक्टर की ओर बढ़ गया। वो विक्टर के पीछे की ओर गया और उसके कंधों पर अपने हाथ रख दिए। विक्टर का सारा शरीर काँप उठा। उसे लगा कि जैसे उसके छूने से ही शरीर का सारा खून सूख जाएगा, पर ऐसा हो नहीं सकता था। उस पिशाच ने विक्टर की गर्दन पर अपनी ऊंगलियाँ फिराईं और उसकी नसों में बहने वाले खून की गर्माहट को महसूस करने लगा। जल्द ही विक्टर की नसों में दौड़ते गर्म खून ने उसके अंदर की तड़प को बढ़ा दिया और एक झटके से उस पिशाच ने अपने लंबे और नुकीले दाँत विक्टर की गर्दन में धँसा दिए। विक्टर के होंठों से एक दबी हुई सी चीख निकली, जिसने उस कमरे में ही अपना दम तोड़ दिया। वो पिशाच जोंक की तरह उससे चिपका
हुआ उसके खून से अपने घूंट भर रहा था। शरीर से निकलते खून की हर बूंद के साथ उसका शरीर शिथिल पड़ता जा रहा था और अंततः उस पिशाच को उस पर रहम आ गया। उसने विक्टर के ढीले पड़े शरीर को छोड़ दिया जो लहराकर नीचे की ओर गिर पड़ा। कुछ देर फर्श पर चित पड़े रहने के बाद विक्टर के हवास थोड़े से लौटे। उसने कमरे के एक कोने की ओर नज़र दौड़ाई, जहाँ एक गठरी पड़ी हुई थी और हिल रही थी। वो अपनी पूरी ताकत से उस हिलती हुई गठरी की ओर घिसटकर बढ़ा। उसके पास पहुँचते ही उसने तेजी से उसे खोला। कुछ दिन पहले ही पैदा हुआ एक बच्चा उसके अंदर मचल-मचल कर रो रहा था, मगर उसकी आवाज उसके हलक में ही कहीं रूक गई थी।

विक्टर ने पहले तो सूखते हुए गले को तर करते हुए उस बच्चे को लाचारी से देखा और फिर अचानक ही उसकी ऑखों में एक वहशीपन उतर आया और देखते ही देखते उसने अपने दाँतों से उसने उस बच्चे की गर्दन का माँस उधेड़ दिया। बच्चे का पूरा शरीर बुरी तरह छटपटाने लगा, जिसे विक्टर ने मजबूती से पकड़ लिया था। गर्म-गर्म खून धाराओं की तरह बह निकला, जिसे किसी जानवर की तरह विक्टर पीने लगा। जैसे-जैसे वो खून पीता गया, उसके शरीर की ताकत वापस लौटने लगी। जल्द ही उस बच्चे का नामोनिशान दुनिया से मिट गया। उसकी हड्डियों में लगे माँस के आखिरी टुकड़े को भी विक्टर नोचकर खा चुका था। अपने इस घृणित कार्य को करने के बाद विक्टर सिर झुकाकर जमीन पर ही बैठ गया। उसने खून से सने अपने थरथराते हुए हाथों की ओर देखा और अचानक ही अपने किए कृत्य का

अहसास उसे कुरेदने लगा और वो दबी हुई आवाज में रोने लगा। वो अपने बालों को हथेलियों में दबोचे हुए सिर झुकाकर सुबक रहा था।

"च् च् च् च्! रो क्यों रहे हो विक्टर? तुम्हें तो खुश होना चाहिए। अपने खानदान पर पड़े श्राप को मिटाने का मौका मिला है तुमको।" सामने अंधेरे से एक सर्द सी आवाज़ आई।
"कब तक! आखिर कब तक इस श्राप की आग में जलेंगे हम सब?" इस बार विक्टर बुरी तरह चिल्लाया था।

"जब तक ये प्रायश्चित पूरा नहीं हो जाता। इस कालिख से तुम सब नहीं बच सकते। जब तक मैं अभिशप्त हूँ, तुम सब भी अभिशप्त हो।" फिर से कुटिलता से भरी हुई एक आवाज आई।

"हम सब कोशिश कर रहे हैं। मिल जाएगी तुम्हें परिधि।" विक्टर तिलमिला कर बोला।

"तो... मुझे वो ला दो... और हो जाओ इस श्राप से मुक्त!" सामने वाले ने किसी व्यापारी की तरह कहा।

"आखिर कैसा श्राप है ये?" विक्टर एक बार फिर थकी हुई आवाज में बोला।

"प्यार का श्राप? उस परिधि ने अल्फी की माया को... उसके प्यार को... उसकी जिंदगी को उससे छीना है। मैं उससे उसकी जिंदगी को छीन लूंगा। मेरे इसी जूनून ने ये श्राप तुम सबको सौगात में दी है। ये श्राप तुम्हारा पीछा तब तक नहीं छोड़ेगा, जब तक कि मुझे इंसाफ नहीं मिल जाता और उस परिधि के खून से धुलेगा मेरी आत्मा का ये दाग। इतनी सदियों तक उसका पीछा किया है मैंने और आज जब वो दिन नजदीक है तो तुम सब की लापरवाही और ग़ैर ज़िम्मेदारी ने मेरे इंतजार को और भी बेचैनियाँ दे दी हैं। तुमने की है ना गलती... अब तुम ही इसे सुधारोगे भी। मुझे वो चाहिए... क्योंकि मौत के अंधेरों से एक बार फिर.... पिशाच लौट आया है।" पिशाच, विक्टर को ताकीद करते हुए पूरी रौ में चिल्लाया।
विक्टर ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा, जो अब अंधेरे से बाहर आ चुका था। उसका वजूद उसके सामने खड़ा एक ही ऐलान कर रहा था।
"अल्फी! अल्फी लौट आया था!"

एक हफ्ते की नाइट ड्यूटी के बाद वरूण ने आज का ब्रेक लिया हुआ था। नाइट ड्यूटी से ज्यादा मौजूदा हालातों ने उसे ज़हनी तौर पर थका दिया था। बिस्तर पर औंधा लेटा हुआ वो अनामिका के उन शब्दों का वजन तौल रहा था, जो वो अभी थोड़ी देर पहले ही उसे थमाकर गई थी। कुछ देर उलझे रहने के बाद वह झुंझला कर उठ बैठा।

"समझ नहीं आता ये लड़की चाहती क्या है? इसकी ज़ुबान कुछ और बोलती हैं और हरकतें कुछ और बोलती हैं।" वरुण खुद ही खुद में बड़बड़ाया और फिर से बिस्तर पर औंधा गिर गया। कुछ देर में उसकी सिकुड़ी हुई ऑखें शून्य में देखते हुए बोझिल होने लगी। उठती-गिरती पलकों के साथ आखिरकार उसने निद्रा की गलियों में प्रवेश किया ही था कि अचानक बंद पलकों के अंदर ही उसकी पुतलियों में हरकत हुई और उसने झट से ऑखें खोली। वो झटके से उठ बैठा और मुड़कर दरवाजे की ओर देखने लगा। कुछ विचार कर उसने पास पड़ा अपना चश्मा उठाया और ऑखों में लगाते हुए दरवाजे की ओर बढ़ गया। बाहर निकलकर उसने उस गलियारे में चारों ओर नज़र दौड़ाई। कोई भी नहीं था।

"पर... कदमों की आहट तो सुनी थी मैंने।" वरूण का दिमाग चिल्लाया।
मगर जब कुछ भी दिखाई नहीं दिया तो वो एक बार फिर से अपने कमरे की ओर मुड़ा। दरवाजे के नॉब पर हाथ रखा ही था कि एक बार फिर उसके कान फड़फड़ाए और उसने सीढ़ियों की ओर नज़र डाली। आहट उस तरफ से ही आई थी। वह दबे पाँव उस ओर बढ़ा और सीढ़ियों से लगी दीवार की ओट में छिप गया। अपनी ऑखों में हरकते भरे उसने धीरे से नीचे जाती सीढ़ियों पर नज़र गिराई और फिर उसके जबड़े झुंझलाहट से भिंच गए। सामने सृष्टि थी, जो नीचे नज़रें जमाए ऊपर की ओर चढ़ रही थी। वरूण ने उसकी इस हरकत से अपनी ऑखें सिकोड़ी और गर्दन ऊँची करके उसके निशाने नज़र की ओर देखा। एकदम से ही उसकी ऑखें हैरत से फ़ैल गईं। नीचे चैतन्य उसके पिता के साथ बैठा हुआ किसी चर्चा में व्यस्त था। बिना गर्दन को हिलाए वरूण ने अपनी नज़रें चैतन्य से घुमाकर सृष्टि पर डाली, जहाँ सृष्टि के नज़रों की नर्मी उसके होंठों की मुस्कराहट में उतर आई थी।

"लगता है इस चैतन्य को शहर से ही बाहर फिकवाना पड़ेगा। कमबख्त.. जिसे देखो उसी पर नज़रें हार के बैठी हुई हैं और ये मोहतरमा... ये तो लग रहा है कि दिमाग बेचकर आई है।" अपनी कड़वाहट भरी नज़र पहले चैतन्य और बाद में सृष्टि पर डालते हुए वरूण बुदबुदाया और फिर कुछ सोच कर अपने दोनों हाथ कमर में रखकर आखिरी सीढ़ी के पास खड़ा हो गया। उसके अंदर की खिन्नता चेहरे पर उतर आई थी। दूसरी ओर सबसे बेखबर सृष्टि अभी भी चैतन्य में ही खोई हुई थी और सीढ़ियाँ चढ़ रही थीं। जैसे ही उसने आखिरी सीढ़ी पर पैर रखा, वो वहाँ दीवार की तरह खड़े वरुण से टकरा गई। इससे पहले कि वो हड़बड़ाकर सीढ़ियों से नीचे गिर जाती, वरुण ने तेजी से उसके हाथ को पकड़ लिया और उसे खींचकर एक ओर ले गया।

"ये क्या बद्तमीजी है?" सृष्टि ने अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा।

"अच्छा! तो आओ चलो! मैं खुद धक्का दे देता हूँ। फिर तो कमीजदार हो
आऊँगा ना मैं?" चिढ़े हुए लहज़े में वरुण का जवाब आया।

"कमीज़दार!" सृष्टि की ऑखें सिकुड़ी।

"हाँ! वो अच्छे व्यवहार वाले को कहते हैं ना! इतना भी नहीं पता।" वरूण ने अपने हाथ को आगे बढ़ाकर हिलाते हुए कहा। ये सुनते ही सृष्टि ने अपना माथा पीट लिया।

"ओ हैलो! अगर तुम ऐसे चीन की दीवार की तरह खड़े नहीं होते, तो मैं गिरती ही क्यों? और... कमीजदार नहीं तमीज़दार होता है।" सृष्टि ने तिलमिलाकर कहा।

"उर्दू मत सिखाओ मुझे! उसके लिए एक ही काफी है। और रही बात मेरे खड़े होने की... तो अगर सामने नज़र रखकर चलोगी ना... तो गिरने की नौबत आएगी ही नहीं। देखा था मैंने... नज़रें कहाँ थी तुम्हारी!" वरूण ने उसे उलाहना देते हुए कहा।

"मैं कहीं भी देखकर चलूँ... तुम्हें मतलब! और... इस तरह सीढ़ियों में तनकर खड़े होने का क्या तरीका है? तुम वहाँ खड़े क्या कर रहे थे? खड़े होने की जगह है वो!" सृष्टि की आवाज भी ऊँची हुई थी।

"शौक से नहीं खड़ा था मैं। इतनी तेज आवाज के साथ चलोगी तो आसपास वाले परेशान होंगे ही।" वरूण दाँत भींचकर बोलते हुए उसकी ओर झुका था।

"तेज आवाज!" हैरान सी सृष्टि ने पहले वरूण के चेहरे को पढ़ा और फिर नज़रें नीचे झुकाकर अपने नरम सोल वाली जूतियों को देखा।

"नीचे क्या देख रही हो? मैं तो आराम से अपने कमरे में सो रहा था।
तुम्हारे जूतों की आवाज से उठ गया।" वरूण की आवाज में चिड़चिड़ाहट साफ थी।

सृष्टि ने उसे शंका भरी नज़रों से ऊपर से नीचे तक देखा और फिर उसके करीब आकर उसका मुँह सूंघने लगी। उसकी इस हरकत से वरुण बुरी तरह हड़बड़ा गया। उसने सृष्टि को तेजी से उसके कंधों से धक्का देकर अपने से दूर किया और सहमी नज़रों से चारों ओर देखते हुए यह तस्दीक करने लगा कि किसी ने यह सब देखा तो नहीं।

"पागल हो गई हो क्या? ये क्या हरकत थी?" वरुण बुरी तरह उखड़ कर बोला।

"नहीं! बस चेक कर रही थी कि कौन सा नशा कर लिया है दिन में ही!" सृष्टि ने भौंह चढ़ाकर कहा।

"ओह! शटअप!" वरूण ने चिल्लाकर कहा और पलटकर अपने कमरे में चला गया।

"इसे क्या हो गया? बिना सोल की जूतियों की आहट सुनाई दे रही इसे। इससे भी संभलकर रहना पड़ेगा।" सृष्टि पेशानी पर बल डालकर बुदबुदाई और फिर गीता के कमरे की ओर बढ़ गई।

****

वरूण को सोए हुए कुछ देर ही हुई थी कि एकाएक एक महक उसके नथुनों से आकर टकराई। नींद के आलम में ही वो उस महक को अपने अंदर उतारने लगा। कुछ देर इसी तरह रहने के बाद वो एक बार फिर से
हड़बड़ाकर उठ गया। ये कैसी खुश्बू है? अजीब सी!" कहते हुए वो तेजी से उठा और उस खूश्बू को अपने अंदर उतारते हुए कमरे से बाहर निकल गया। बाहर निकलकर उसके नथुने एक बार फिर फड़के और फिर उसकी नज़रें कुछ दूर जाकर गीता के कमरे में ठहर गईं। उसने अपनी भौंह चढ़ाई और उस

कमरे की ओर बढ़ गया। दरवाजे के पास पहुँचते ही वो रूका और एक बार फिर से उस महक को पकड़ने की कोशिश करने लगा।

"वो अजीब सी महक तो गीता के कमरे से ही आ रही है।" वरूण माथे पर बल डालकर बोला। उसने एक नज़र दरवाजे पर डाली और फिर एक दस्तक दी। उसकी दस्तक के बाद अंदर से गीता की आवाज आई।

"कौन है?"

वरूण ने दरवाजा खोला और फिर अंदर झांकते हुए कहा, "मैं हूँ!"

अपनी बात खत्म करते-करते ही उसके आगे के अल्फाज़ उसकी हलक में फँस गए। सामने चैतन्य, अनामिका का हाथ थामे बैठा हुआ था। उन दोनों को इस तरह साथ देखकर उसकी एक भौंह चढ़ी थी, मगर फिर उसने तुरंत उसे नीचे भी उतार दिया। चैतन्य के हाथ में अपने हाथ की मौजूदगी महसूस कर अनामिका ने उन्हें फुर्ती से पीछे खींचा था।

"अरे वरूण! आओ ना! हम सब चाय ही पी रहे थे।" अनामिका ने सभी की ओर इशारा करते हुए कहा।

"हाँ! देखा मैंने!" वरूण की तंजीली आवाज आई।

"वरूण! हम सब हैं यहाँ! आओ तुम भी आओ।" इस बार एक ओर से आशुतोष की गंभीर आवाज आई।
"जी नहीं! धन्यवाद! मैं तो सो रहा था। कुछ अजीब सी स्मेल आई, तो यहाँ तक आ गया। आप लोग पीजिए! मैं चलता हूँ।" वरूण ने उखड़े लहजे में कहा।

"वरूण!" अनामिका ने उसे टोका था।

"यहाँ मेरे हिस्से की चाय नहीं है अनामिका!" वरूण ने अपने शब्दबाण चलाए थे।

"कुछ ज्यादा नहीं बोलने लगे हो तुम?" अनामिका ने भी चिढ़कर कहा।

"तुम ना! सच बताऊँ! बहुत हल्का समझने लगी हो मुझे। तुम्हें अपने वजूद का वजन महसूस करवाना ही होगा मुझे। वेट फॉर इट!" वरूण बेइख़्तियार सा बोल पड़ा। अपनी बात खत्म करने के बाद उसने ध्यान दिया कि सभी उसे पैनी नज़रों से देख रहे थे। ख़ासतौर पर अनामिका और चैतन्य।

"क्या? हुआ क्या? कुछ ग़लत बोल दिया क्या मैंने?" वरूण असहजता से बोला।

"अपने शब्दों पर ग़ौर किया तुमने?" चैतन्य की उखड़ी सी आवाज़ आई। उसका लहजा समझकर वरूण ने अपनी कही हुई बात पर ग़ौर किया और अगले ही पल वो कानों तक लाल हो गया।

"अ.. ब... ब... मेरा मतलब मेंटली तौर से था। तुम लोग भी कुछ भी समझ लेते हो।" वरूण नज़रें चुराते हुए बोला। साँवला चेहरा अभी भी सुर्ख़ पड़ा हुआ था।

"अजीब बात है ना! कि सभी ने एक ही जैसा समझा।" चैतन्य ने भी
कटाक्ष करते हुए कहा।

"एक तो पता नहीं क्या हुआ है कि मेरी नींद बार-बार टूट रही। आदमी चैन से सो भी नहीं सकता इस घर में।" वरूण ने झुंझलाकर कहा।

"क्या हुआ?" आशुतोष ने पूछा।

"कहा ना! कोई अजीब सी स्मेल आ रही थी।" वरूण ने अपनी बात दोहराई।

"स्मेल! पर हमें तो नहीं आ रही ऐसी कोई स्मेल। लग रहा है कि किसी कुत्ते की आत्मा घुस गई है तुम्हारे अंदर!" सृष्टि ने किताब में नज़रें गड़ाए हुए कहा।

"सृष्टि!" अनामिका ने बिगड़कर कहा।

"अरे! गलत मत समझिए! अभी कुछ देर पहले इन्हें सीढ़ियों में चढ़ते समय मेरी नरम-नरम जूतियों की तेज आवाज सुनाई दी थी, जो खुद मैंने ही नहीं सुनी और अब इन्हें स्मेल आ रही है। हम यहाँ इतने सारे लोग मौजूद हैं। हममें से किसी को तो नहीं आई। इन्हीं को आ रही है।" सृष्टि अपने कंधे उचकाते हुए बोली और फिर बिस्किट उठाकर अपने मुँह में डाल लिया, ताकि अपने चेहरे के भाव छिपा सके। सृष्टि की बात सुनकर वरूण पैर पटकता हुआ वहाँ से चला गया। उसकी बात सुनकर सभी चुप पड़ गए थे, पर वरूण की हरकतें सृष्टि की पेशानी पर बल ले आई थीं। नियति अपना एक और पत्ता फेंक चुकी थी।
****

वो करीब 10 साल का बच्चा था जो अपने बिस्तर पर आराम से सो रहा था। अचानक उसे अपनी गर्दन पर किसी खुरदुरी सी लंबी और ठंडी चीज का अहसास हुआ। उसने धीमे से अपनी ऑखें खोली और ख़ौफ से बिना हिले-डुले बस सामने की ओर देखने लगा। माथे पर पसीना बिना बुलाए मेहमान की तरह आ बैठा था। उसका पूरा शरीर बर्फ की तरह ठंडा होकर जम गया था और साँसें भी जमकर भारी हो चुकी थीं। पिछले कई दिनों से ये अजीब सा अहसास उसका चैन हराम किए हुए था। उसे कोई भी दिखाई नहीं देता था, मगर किसी के आसपास होने का अहसास उसे बुरी तरह बेचैन कर देता था।

उसके माता-पिता दो दिनों से किसी जरूरी काम के सिलसिले में बाहर गए हुए थे और वो नौकरों के भरोसे इस घर में लगभग नजरबंद था। पैरेंट्स की गैरमौजूदगी में उसे कहीं भी आने-जाने की मनाही थी। शुरू में ऐसा नहीं था। उसकी जिंदगी भी दूसरों की तरह सामान्य ही थी, मगर पिछले साल से उसके माता-पिता का व्यवहार बहुत ही बदल गया था। उसे उनकी ऑखों में कभी लाचारी दिखती... तो कभी उसके लिए दया नज़र आती। वो उनकी ऑखों की ज़बान समझने की कोशिश करता, मगर पल्ले कुछ नहीं पड़ता था। उसके माता-पिता उसे लेकर कुछ ज्यादा ही फिक्रमंद रहने लगे थे। ऐसा लगता था कि जैसे वो उससे बहुत कुछ कहना चाहते थे, पर ना जाने क्यों उनके सारे अल्फाज़ कहीं गुम हो गए थे। उसने जब पहले पहल अपने इन सर्द अहसासों के बारे में बताया था, तो उन दोनों के ही मुँह का

निवाला उनके गले में फँस गया था। उस समय उसे पता नहीं चला था कि इसके बाद उनकी ऑखों में आई नमी किस तकलीफ़
के कारण आई थी। उसने बस अपने पिता को अपनी माँ का काँपता हाथ अपनी हथेलियों में कसते देखा था। उनकी चिंता की वजह जब तक स्पष्ट हो पाती, उसे अपने पिता के चचेरे भाई की मृत्यु की खबर मिली। इस समय वे दोनों ही उन्हीं के फ्यूनरल में गए हुए थे। उसे अपने साथ वहाँ ना ले जाने की वजह उसकी समझ में नहीं आई थी और ना ही जाते समय उनकी ऑखों का सूनापन। और अभी... इस वक्त एक बार फिर वो अपनी दहशत के साथ अकेला था।

उसने पहले भी कई बार इस डर को जिया था, मगर आज कुछ तो अलग था। वो उस अलग अहसास को समझने की कोशिश कर ही रहा था कि तभी एक काला साया उसकी ऑखों के सामने से होकर गुजरा। पहले तो उसकी ऑखें डर से फैली और फिर अगले ही पल उसने अपनी ऑखें भींच ली। इससे वो खुद को सुरक्षित महसूस कर पाता उससे पहले ही उसके कान में एक हल्की सी सरगोशी उसकी सारी हिम्मत को अपने साथ बहा ले गई। वो एक झटके से उठा और फिर अपनी सहमी हुई ऑखों से चारों ओर देखने लगा। उसकी साँसें बुरी तरह फूली हुई थीं। नीम अंधेरे से भरे उस कमरे के बहुत से कोने-कूचे पूरी तरह अंधकार की आगोश में थे। उसने कमरे के हर हिस्से में अपनी नज़रें दौड़ाई और फिर एक अंधेरे कोने में उनकी दौड़ समाप्त हुई। उस अंधकार में होने वाली हलचल उसकी आ ँखों से छिपी ना रह सकी।

"हू.... हू इज देयर?" उसकी काँपती हुई सी आवाज़ जैसे सिसक रही थी। उसकी डरी हुई ऑखें छोटी हो गईं और गला सूखने लगा।

"कौन है वहाँ?" इस बार वो जोर से चिल्लाया था।

और इस बार उसके सवाल के जवाब में कोई सामने आया था। उसे देखकर उस बच्चे को हैरत का तेज झटका लगा। वो काले लबादे में अपना मुँह और शरीर छिपाए हुए एक लंबा-चौड़ा वजूद था।

उस बच्चे का डर कुछ देर के लिए थककर बैठ गया और हिम्मत ने एक बार फिर उस डर की जगह ले ली।

"कौन हो तुम?" हिम्मत के बावजूद उसकी आवाज अभी भी काँप रही थी। उसका सवाल सुनकर सामने वाले के मुँह से एक सर्द सी हँसी बाहर निकली, जिसने एक बार फिर से उस बच्चे की रीढ़ में सिहरन पैदा कर दी।

"तुम्हारी विरासत देने आया हूँ तुम्हें विक्टर।" उस साए ने अपनी बर्फ
जैसी आवाज में कहा।

"विरासत! कैसी विरासत?" बच्चा एक बार फिर थोड़ा सामान्य होने लगा था। मगर इस बार उस साए ने अपना चेहरा थोड़ा ऊपर उठाया और फिर उस बच्चे को दिखाई दी उसके सर्द चेहरे पर दहकती हुई सुर्ख ऑखें।

एक बार फिर उसकी साँसें खौफ से फूलने लगीं और फिर वो बेइख्तियार चीख पड़ा और इसी के साथ चीख कर जाग उठा था विक्टर, जो अभी भी सदमे में लग रहा था। उसने हड़बड़ाकर अपने चारों ओर देखा और हाल (वर्तमान) की खबर होते ही उसने एक गहरी साँस भरकर अपने चेहरे को हथेलियों में छिपा लिया। उसके कानों में एक बार फिर से उस साए के कहे शब्द गूंजने लगे।

"श्राप की विरासत विक्टर! श्राप की विरासत! आज से तुम भी अभिशप्त हो।"

अनामिका के अनंत कुमार के स्टडी से जाने के बाद चैतन्य और आशुतोष वहीं रूक गए थे। अनंत कुमार और आशुतोष, चैतन्य को आगे आने वाली कठिनाईयों से अवगत कराना चाहते थे। इसके लिए आशुतोष ने सबसे पहले चैतन्य पर उस रहस्य को खोल दिया, जो उसने और अनामिका ने उसके साथ दीवाली के समय किया था। हैरत के झटके झेलते हुए चैतन्य को अनंत कुमार और आशुतोष ने उस समय की परिस्थितियों के बारे में समझाया। उन्होंने उसे इस बात पर यकीन दिलाया कि वो तो पहले से ही मेघा के निशाने पर था। आशुतोष और अनामिका किसी भी तरह से मेघा को रोकना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उसके साथ वो सब किया था। थोड़ी मशक्कत के बाद चैतन्य को ये बात समझ में आ गई कि अनामिका और आशुतोष गलत नहीं थे। वैसे भी ये सही ही था कि उसे सब पता रहे क्योंकि बाद में कहीं और से ये जानकारी चैतन्य को मिलना उनके उद्देश्य के लिए हानिकारक हो सकता था।

इसके बाद सभी स्टडी से बाहर आकर हॉल में बैठ गए। अनामिका, परिधि के साथ वहीं मौजूद थीं। अनंत कुमार के कहने पर अनामिका पानी लेने के लिए किचन की ओर गई। उसी समय गीता घर वापस आई। उसे देखते ही परिधि भी उसके साथ उसके कमरे में चली गई। अपनी पुरानी यादें तो वो भूल ही गई थी, पर यहाँ सबके साथ रहते हुए वो उन सभी के साथ हिल-मिल गई थी और मौजूदा हालातों के साथ सामंजस्य बिठा रही थी।
अनामिका किचन से पानी के गिलास लेकर आ ही रही थी कि उसकी नज़र सामने से आती हुई सृष्टि पर पड़ी। सृष्टि को देखकर अनामिका की ऑखों में खिन्नता आ गई। ना जाने क्यों, पर वो उसे बिल्कुल भी पसंद नहीं थी। ऊपर से लॉकेट को छूने के बाद सृष्टि नाम उसके ज़हन में उभरना भी उसे अनामिका के लिए संदिग्ध बना रहा था। मगर इस वक्त अनामिका को कुछ और परेशान कर रहा था। मुख्य दरवाजे से सीढ़ियों में ऊपर चढ़ते तक सृष्टि की नर्म निगाहें चैतन्य पर ही जमी हुई थीं। यूं तो नज़रों के तीर सृष्टि ने बेखबर चैतन्य पर ही छोड़े थे, मगर चुभे अनामिका को थे। अनामिका ने अपनी बेचैन नज़रें चैतन्य की ओर घुमाई तो उसे अनंत कुमार के साथ व्यस्त पाया। यह देखते ही अनामिका ने राहत की साँस ली और फिर ऊपर की ओर देखा। सृष्टि वहाँ नहीं थी। वो पानी लेकर उन सभी के पास पहुँची।

"अंकल! आपसे कुछ कहना था।" अनामिका ने संजीदा लहजे में कहा। अनामिका की बात सुनकर सभी का ध्यान उसकी ओर मुड़ गया।

"कहो बेटा!" अनंत कुमार ने पानी का गिलास लेते हुए कहा।

"ये सृष्टि! मुझे कुछ अजीब लगती है। मतलब कि उसकी हर एक हरकत।" कहते हुए अनामिका के ख्याल में अभी-अभी वाली सृष्टि की नजरें आ गईं।

"क्यों उसने क्या कर दिया? ठीक तो है।" चैतन्य ने अनामिका की बात काटी। उसकी बात सुनकर अनामिका ने अपनी एक भौंह चढ़ाकर उसे देखा, जिससे चैतन्य सिटपिटा गया।

"मुझे नहीं लगता कि वो पढ़ाई के मकसद से यहाँ आती है।" अनामिका ने अपने संदेह को सामने रखा।
"तो भला... और किसलिए आती है?" चैतन्य ने एक बार फिर से अनामिका से पूछा।

"वो हम पर नज़र रखने के लिए आती है।" अनंत कुमार ने कहा। अनंत कुमार के इस खुलासे से सभी का मुँह खुला का खुला रह गया।

"आप जानते हैं!" अनामिका हैरत से बोली।

"हाँ! तुम्हें क्या लगा था... मैं इन सबसे बेखबर हूँ। उसे प्रोफेसर साहनी ने भेजा है यहाँ।" अनंत कुमार एक बार फिर बहुत ही इत्मिनान से बोले।

"प्रोफेसर साहनी ने! पर क्यों?" आशुतोष ने चौंककर पूछा।

"तुम सबको ये भी पता होना चाहिए कि इस समय अहेरी समूह के चीफ इस प्रोफेसर साहनी हैं।" अनंत कुमार ने उन सब पर एक और बम फोड़ा।

"क्या? अहेरी समूह के चीफ! यानि कि हमारे दुश्मन!" चैतन्य ने ऑखे फाड़कर कहा। आशुतोष और अनामिका की हालत भी कमोबेश उसी के जैसी थी।

"दुश्मन नहीं विरोधी!" अनंत कुमार ने चैतन्य की बात सुधारते हुए कहा।

"दोनों में... अंतर ही क्या है?" चैतन्य ने नासमझी से पूछा।

"बहुत बड़ा अंतर है। एक बात हमेशा याद रखना! हर विरोधी दुश्मन नहीं होता। कई बार लोग रास्तों से भटक जाते हैं। कुछ सही रास्ता खोजकर वापस आ जाते हैं और कुछ वापस नहीं आ पाते।" अनंत कुमार ने चैतन्य को समझाते हुए कहा।
"या फिर वापस आना नहीं चाहते।" आशुतोष ने कहा।

"हाँ! ऐसा भी कह सकते हैं।" अनंत कुमार ने ठंडी साँस छोड़ते हुए कहा।

"तो प्रोफेसर साहनी किसमें आते हैं?" अनामिका की ऑखों से संदेह झांक रहा था।

"हमारे लिए तो पहले वाले ही हैं, जिन्हें हमें रास्ता दिखाना है।" अनंत कुमार ने अपनी कोहनियों को अपने पैर में टिकाकर और अपनी दोनों हथेलियों को जोड़कर उनकी तर्जनी उंगलियों को अपने होंठों पर रखते हुए कहा।

"अब आप ये भी हमें समझा दें, तो बेहतर होगा।" चैतन्य ने उकताकर कहा। अनंत कुमार ने नज़रें उठाकर चैतन्य की ओर देखा और फिर नज़रें अनामिका व आशुतोष की ओर घुमाकर उनकी ओर देखा।

उनकी ऑखों में भी चैतन्य की बात के लिए समर्थन दिखाई दे रहा था।

"हम्म! सही कह रहे हो। तो सबसे जरूरी जानकारी ये है कि प्रोफेसर साहनी का परिवार और हमारा परिवार.... संबंधी है। हम रिश्तेदार हैं।" अनंत कुमार ने बहुत ही आराम से वजनदार शब्दों के साथ कहा।

"रिश्तेदार!" तीन हैरत में डूबी आवाजें आई।

"पर मुझे तो ऐसा कभी भी नहीं लगा। मैं बचपन से यहाँ आती हूँ। आप सभी के साथ रहती आई हूँ। मुझे कभी क्यों पता नहीं चला।" अनामिका बदहवास सी बोली।

"तुम्हें! तुम क्या... ये बात तो वरूण और गीता भी नहीं जानते हैं!" अनंत
कुमार का हर खुलासा उन्हें उलझन में डाल रहा था।

"पर क्यों?" आशुतोष ने पूछा।

"क्योंकि हालात ही ऐसे बन गए थे। तांत्रिक श्रेष्ठ ने हमें विशिष्ट जिम्मेदारी, अधिकार और शक्ति तो दे दी, पर इन समूहों की दुनिया में उचित सम्मान नहीं दिला पाए। हालांकि सभी ऐसा नहीं सोचते, मगर रसूखदारों को ये कभी भी रास नहीं आया। प्रहरी समूह के बनने से पहले प्रोफेसर साहनी का परिवार भी अहेरी समूह का सदस्य था। मगर तांत्रिक श्रेष्ठ का प्रभाव उन पर बहुत ज्यादा था। इसलिए जब प्रहरी समूह की स्थापना हुई तो साहनी परिवार इस समूह का हिस्सा बन गया और ये बात अहेरी समूह के सदस्यों को पसंद नहीं आई। वो हमेशा साहनी परिवार को तोड़ने का प्रयास करते रहे। समय के साथ नई पीढ़ी में इसका असर भी दिखाई देने लगा था। पर अपने पुरखों के फैसले को फॉलो करना उन सबकी मजबूरी बन गई थी। वास्तव में साहनी परिवार हमेशा से ही एक ऐसे मौके की तलाश में था, जो उन्हें इस परिस्थिति से आजाद कर दें और वो मौका मैंने उन्हें दे दिया।" कहते-कहते अनंत कुमार चुप पड़ गए।

"कैसा मौका?" सभी की ऑखें इस सवाल के साथ सिकुड़ी थीं।

"मेरे और तृषा के संबंध ने! तृषा कोई और नहीं.... प्रोफेसर साहनी की सबसे छोटी बहन थी। साहनी परिवार कितना भी उदारवादी बनने का ढोंग करता, पर वो... थे नहीं। वो हमारे रिश्ते के लिए कभी भी तैयार नहीं हुए। मगर तृषा ने उनके विरूद्ध जाकर मुझसे विवाह किया। अहेरी समूह के सदस्यों ने इन परिस्थितियों का फायदा उठाया और प्रहरी समूह के खिलाफ साहनी परिवार के कान भरे क्योंकि प्रहरी समूह के सदस्यों ने ही हम दोनों की हर संभव मदद की थी और उस दिन साहनी परिवार के कदम गफलत के अंधेरों में गलत तरफ चले गए। प्रोफेसर साहनी की एक बहन और एक भाई.. और भी थे। सृष्टि उनसे छोटी बहन की बेटी है और
मुकुल छोटे भाई का बेटा।" अनंत कुमार ने रिश्तों की उलझन खोलते हुए कहा।

"हे भगवान!" अनामिका सिर पकड़कर बैठ गई।

"विवाह के बाद उन्होंने तृषा से सारे संबंध तोड़ लिए। हम लोगों ने एक-दूसरे के रास्तों में आना-जाना छोड़ दिया था। मगर अपने-अपने समूह के सदस्य होने के कारण हमें मिलना ही पड़ता था। इसे हममें से कोई भी नहीं टाल सकता था। जब वरूण पैदा हुआ था, उसके बाद हमारे बीच के हालात और भी

बिगड़ गए। हालात बद से बद्तर होते जा रहे थे। उस समय मेघा ही थी... जिसने हमें संभाला था।" एक गहरी साँस लेकर अनंत कुमार शांत हुए थे।

"माँ ने!" अनामिका भावुक हुई थी।

"हाँ! मंजरी उर्फ़ मंजुला की बेटी होने के नाते चित्रा अम्मा हमारी रिश्तेदार थीं। वे दोनों यहीं रहा करती थीं।" अनंत कुमार भी अतीत की गलियों में जाकर बोले।

"यहाँ! वो दोनों तो जंगल में रहती थी ना!" आशुतोष ने कहा।

"और कोई जंगल के अंदर जिंदगी क्यों और कैसे बिताएगा? ये भी ज़रा बताओ।" अनंत कुमार ने थोड़ी चिढ़ से कहा। उनकी बात सुनकर सभी ने एक-दूसरे का चेहरा देखा था।

"वे दोनों हमेशा से ही यहीं रहती थीं। पर पचास-पचपन साल पहले कुछ तो हुआ था, जिसके बाद वे दोनों हरिपुर के जंगल और महल में दोबारा गई थीं। क्या कारण था... कोई नहीं जान पाया क्योंकि उससे पहले ही हरिपुर के गाँव वालों ने दोनों को जिंदा जला दिया था, मगर चित्रा अम्मा किसी तरह बच निकली और छलद्वार का इस्तेमाल करके वापस यहाँ आ गई।" अनंत कुमार कहते गए। कहानी का यह हिस्सा आशुतोष, चैतन्य और अनामिका को केसर माँ की कहानी में ले गया, जब उन्होंने बताया था कि कैसे दो डायनों ने उन्हें धोखा देकर उनके बच्चे को उनसे छीनने की साज़िश रची थी, पर वो दोनों कामयाब नही हो पाई।

"तो इसीलिए उस समय भागी हुई दूसरी डायन नहीं मिली थी।" आशुतोष ने उस समय के घटनाक्रम को याद करते हुए कहा।

"हॉ! क्योंकि वो यहाँ थी। मगर उसका शरीर जल चुका था। किसी तरह दवाओं की मदद से उन्होंने खुद को संभालकर रखा था। मगर वो अक्सर उस जंगल में वापस जाया करती थीं। कुछ तो तलाशती रही वो हमेशा। मगर फिर उनकी जिंदगी में मेघा आ गई और एक दिन चित्रा अम्मा की शक्तियों के साथ जली और टूटी हुई मेघा यहाँ आई। उसने अपनी सारी कहानी हमें बताई। उसके अंदर चित्रा अम्मा की शक्तियाँ थी, इसलिए अब वो हमारे लिए अलग नहीं थी। उन दिनों वो गर्भ से थी। ये वो समय था, जब हम सभी को एक-दूसरे की जरूरत थी। हमारी जरूरतें कब हमें करीब ले आई, हमें पता भी नहीं चला।" कहानी का यह हिस्सा अनंत कुमार के होंठों पर मुस्कान बिखेर गया।

"फिर क्या हुआ?" आशुतोष ने उत्सुकता से पूछा।

"अनामिका के आने के बाद मेरे और मेघा के बीच विचारों की प्रतिद्वंद्विता उभर आई थी क्योंकि मैं बिल्कुल नहीं चाहता था कि मेघा, अनामिका के साथ कुछ ग़लत करे। इसलिए अनामिका के पाँच साल की होने के समय वो यहाँ से चली गई और शहर में रहने लगी। चैतन्य के पिता और मेघा भी एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते थे, इसीलिए तो मेघा को चैतन्य के बारे में सब पता चल गया होगा और उसने इतना बड़ा चक्रव्यूह रचा।" अनंत कुमार ने तीनों के चेहरों को ग़ौर से देखते हुए कहा।
"उन्हें चित्रलेखा की शक्तियाँ चाहिए थी, यश को पुनर्जीवित करने के लिए। उन्होंने कहा था कि चित्रलेखा की शक्तियाँ ही यश को काल के चक्र से मुक्त कर सकती हैं।" चैतन्य ने पुरानी घटना याद करते हुए कहा।

"काल चक्र! यानि समय चक्र! और इसी का रहस्य तुम्हें सुलझाना है। सब कुछ सही करना है।" अनंत कुमार ने शून्य में देखते हुए कहा।

"और इसे कैसे करना है?" चैतन्य ने पूछा।

"शुरूआत तो तुम्हें ही करनी होगी।" अनंत कुमार ने चैतन्य से कहा।

"और वो कैसे?" चैतन्य का असमंजस भरा सवाल आगे आया।

"तुम वायु रक्षक हो चैतन्य। भूत-भविष्य सब पढ़ सकते हो। तुम्हें परिधि का अतीत पढ़ना होगा। किसी भी तरह से... और अभी से ये करना होगा। वो ऊपर है। मेरे ख्याल से अपना काम शुरू कर दो।" अनंत कुमार ने समझाइश देते हुए कहा।

"पर वहाँ तो सृष्टि भी है!" अनामिका ने आशंका जताई।

"वही तो! तुम्हें उसके सामने ही सब करना है, वो भी उसे सब कुछ पता लगे बिना। और चैतन्य के लिए ये... मुश्किल नहीं होना चाहिए। क्यों अनामिका... सही कहा ना!" अनंत कुमार के होंठों पर टेढ़ी सी मुस्कान आई थी, जिसका मतलब समझकर वो बिफर गई। इन सबसे अलग चैतन्य और आशुतोष अभी भी अपने-अपने सिर धुन रहे थे। अनामिका ने किसी तरह खुद को नियंत्रित रखा था क्योंकि अपनी इस बेचैनी की वजह वो किसी को तो क्या... खुद को भी नहीं समझा सकती थी।
"देखो! भले ही प्रोफेसर साहनी ने सृष्टि और मुकुल को अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए भेजा है, मगर हमें उनके जरिए अपना उद्देश्य पूरा करना है। इसलिए तो मैंने उन दोनों को यहाँ आने से नहीं रोका।" अनंत कुमार ने अपना एक पत्ता खोलते हुए कहा।

"ओह! आपका मतलब है कि चोर के घर में चोरी।" आशुतोष ने मुस्कुरा कर कहा।

"सही समझे। उन दोनों की मदद से ही हम उनकी चाल समझ सकते हैं। इसलिए उनका हमारे साथ होना बहुत जरूरी है। चैतन्य! तुम किसी भी प्रकार से परिधि की यादों का कोई भी धागा पकड़ने की कोशिश करो। एक भी सिरा पकड़ में आया, तो समझो काम शुरू।" अनंत कुमार ने उत्साह से कहा।

"पर.. वो तो अभी पढ़ रहे होंगे!" चैतन्य ने कहा।

"गीता पढ़ रही होगी। सृष्टि तो कुछ और पढ़ने आती है।" अनामिका ने उलाहना के साथ कहा।

"तो चलो! एक चाय ब्रेक देते हैं उन्हें।" आशुतोष ने अपनी भौंह चढ़ाकर कहा।

"एक बात याद रखना तुम सब। हमें सृष्टि को किसी भी तरीके से अपने साथ रखना है। उसे ये नहीं पता चलना चाहिए कि हम उसके बारे में जानते हैं। बस वो हमारे साथ होनी चाहिए। किसी भी तरीके से। इसलिए अगर उसके सामने अपने छोटे पत्ते खोलने भी पड़े, तो खोल दो।" अनंत कुमार ने कहा।

"पर ऐसा क्यों?" अनामिका तिड़क उठी।
"क्योंकि.... सृष्टि नभ-रक्षक है। हमें उसकी जरूरत पड़ेगी।" अनंत कुमार ने अपना मतलब सामने रखा।

"क्या? सृष्टि ये जानती है!" चैतन्य चिहुंका।

"नहीं! आचार्य निशिकांत ने बताया मुझे। मैंने उन्हें कुछ दिनों तक शांत रहने के लिए कहा है और इसी समय हमें अपना काम पूरा करना है। अभी किसी को भी इसकी खबर नहीं है और ये हमारे लिए अच्छी बात है।" अनंत कुमार ने एक राहत भरी साँस छोड़ी थी।

अनंत कुमार की बात मानते हुए अनामिका चाय बनाकर ले आई और गीता के कमरे की ओर चल दी। उसके कमरे में जाने के कुछ देर बाद ही चैतन्य और आशुतोष भी उस कमरे में आ गए। एक बार फिर से चैतन्य, सृष्टि को नज़रों का केंद्र बन गया था, जो अनामिका के दिमाग की नसें तान रहा था। मगर इस तरह से सृष्टि अपने लक्ष्य से थोड़ा सा भटकी थी, इसलिए अनामिका ने अपने गुस्से को ज़ब्त किया था। बातों ही बातों में सबके अतीत और भविष्य की बात जानबूझ कर निकाली गई, जिससे परिधि थोड़ी सी मायूस हुई थी।

"अरे! तुम क्यों उदास हो गई? तुम्हें पता है मैं हाथ पढ़ सकता हूँ। पढ़ूँ तुम्हारा हाथ? फिर मैं ये भी बता दूंगा कि तुम्हारे कितने बच्चे होंगे?" चैतन्य ने मसखरी भरे अंदाज में कहा। उसका शरारती लहजा परिधि को भी गुदगुदा गया। उसने झटके से अपना हाथ आगे बढ़ाया और फिर आग्रह भरे स्वर में कहा, "मेरे बच्चों के बारे में तो नहीं... मेरे माता-पिता के बारे में बताओ।"

उसकी बात सुनकर चैतन्य मुस्कुराया और फिर सृष्टि की ओर देखकर एक ऑख दबाते हुए कहा, "अभी लो!"
चैतन्य की ये हरकत सृष्टि और अनामिका दोनों के ही शरीर में बिजली की तरह दौड़ी, बस नतीजा अलग-अलग था। सृष्टि जहाँ चैतन्य की इस हरकत से शरमा गई, वहीं अनामिका बुरी तरह से उखड़ी थी।

"तो फिर मेरा भी पढ़िए!" कहते हुए सृष्टि ने अपना हाथ आगे बढ़ाया। चैतन्य ने एक नज़र उसकी बड़ी हुई हथेली पर डाली, मगर इससे पहले कि वो उसका हाथ पकड़ता, अनामिका ने झटके से चैतन्य का हाथ पकड़ लिया। अनामिका की इस हरकत ने सभी को चौंकाया।

"अ... तुमने पहले परिधि को कहा था।" अनामिका ने बात संभालने की कोशिश की। मगर चैतन्य उसकी बात कहाँ सुन पाया! वो तो बस अपने उस हाथ को देख रहा था, जिसे अनामिका ने पकड़ा हुआ था। एक बार फिर चैतन्य की ऑखों में जज़्बातों का समंदर हिलोरें मारने लगा, जिसे देखकर अनामिका ने अपना हाथ हटाना चाहा, मगर चैतन्य ने फुर्ती से उसे पकड़ लिया। कोई कुछ समझ पाता, इससे पहले ही दरवाजे में दस्तक हुई। गीता के पूछने पर वरूण की आवाज आई और वो अंदर आया। अंदर आते ही चैतन्य के हाथ में अनामिका का हाथ देखकर उसे झटका लगा था, जिसे महसूस कर अनामिका ने अपना हाथ भी झटककर चैतन्य से छुड़ाया था।

वरूण के कमरे में आने के बाद चीजें तेजी से बदलीं और सभी का ध्यान उसकी ओर चला गया था, जो कि चिड़चिड़ा सा दिखाई दे रहा था। तुनकती हुई आवाज में कुछ शिकायतें परोसकर वो वहाँ से चला गया। उस समय एक अलग बात ये हुई कि सृष्टि का ध्यान स्वाभाविक रूप से सबसे हटकर वरूण की ओर ही चला गया और वो किसी गहरी सोच में डूब गई। उसकी इस व्यस्तता को चैतन्य ने महसूस कर लिया। उसने अनामिका को ऑखों से सृष्टि की ओर इशारा किया।

"क्या हुआ सृष्टि? कोई परेशानी?" अनामिका ने पूछा।

"अ... ब... नहीं! कुछ नहीं! वो... मुझे एक बहुत जरूरी कॉल करना है। अभी आती हूँ।" ये कहते ही सृष्टि अपना फोन लेकर तेजी से उस कमरे से
बाहर निकल गई।

ये समय उन सभी के लिए बहुत ही उचित था। अनामिका और आशुतोष दोनों की ही नज़रें तेजी से चैतन्य की ओर घूमी। चैतन्य ने भी इस मौके का फायदा उठाना सही समझा। आशुतोष तेजी से बाहर निकला, ताकि सृष्टि का रास्ता रोक सके। इधर चैतन्य ने मुस्कुराते हुए परिधि का सीधा हाथ पकड़ कर मुस्कुरा कर कहा, "तो दिखाओ जरा! क्या लिखा है तुम्हारे हाथों में?"

"क्या सच में? मुझे लगा कि आप मजाक कर रहे हैं।" परिधि ने चिहुंक कर कहा।

"अरे यार! परिधि तो सब समझ गई।" कहते हुए चैतन्य ने बुरा सा मुँह बनाया। उसकी बात सुनकर परिधि ने बेवकूफी से अनामिका की ओर देखा।

"अ... चलो ठीक है ना! अब परिधि ही समझदार है तो क्या करें? है ना गीता!" अनामिका ने गीता की ओर देखते हुए कहा, जो अभी भी किताबों में डूबी हुई थी।

"क्या? कुछ कहा क्या?" गीता ने चौंकते हुए अपना सिर ऊपर उठाकर चैतन्य और अनामिका से कहा। उसकी तल्लीनता ने उन दोनों को हैरान किया था। मतलब कि कोई भी इतना ज्यादा किसी काम में कैसे खो सकता है कि उसे आसपास की खबर ही ना रहे।

"कुछ नहीं! तुम पढ़ो। तुम्हारी परीक्षाएँ हैं ना!" चैतन्य ने उससे भौंह चढ़ाकर कहा।

"हाँ!" कहकर उसने एक बार फिर किताबों में अपनी नज़र गड़ा दी।
परिधि का ध्यान भी उसी की ओर चला गया था।

चैतन्य ने अनामिका को एक बार फिर से गीता पर नज़र रखने का इशारा करते हुए अपना सिर झटका। अनामिका गीता के पास जाकर बैठ गई और उसकी किताब में देखते हुए कुछ इस तरह बैठ गई कि चैतन्य और परिधि के कम से कम हाथ गीता को ना दिखाई दें। हालांकि उसकी अजीब सी तल्लीनता ऐसा कुछ देखने से मना ही कर रही थी। चैतन्य ने अपने होंठों पर एक खिंची हुई सी नकली मुस्कान सजाई और परिधि से बोला,

"सब व्यस्त हो गए। चलो! जब तक सब आते हैं हम भी कोशिश करते हैं हाथ पढ़ने की। कुछ-कुछ रेखाओं को तो हम भी पहचानते हैं। ये देखो! ये होती है जीवन रेखा!" कहते हुए चैतन्य ने परिधि की हथेली पर बनी हुई एक रेखा पर ऊंगली रख दी, मगर अगले ही पल वह चौंक पड़ा। उसने चोर नज़रों से अपनी हथेली पर नज़र दौड़ाई, जहाँ उसकी जीवन रेखा सीधी कलाई की ओर बढ़ी हुई थी। मगर परिधि की जीवन रेखा थोड़ा आगे जाकर गोलाई से वापस मुड़ते हुए बस हथेली में खो गई थी। उसने एक परेशान नज़र परिधि पर डाली। उसी समय परिधि ने भी उसे देखा और उसके देखते ही चैतन्य की सिमटी हुई मुस्कान फिर से चौड़ी हुई।

"तो क्या दिखा आपको?" परिधि ने अपनी थोढ़ी को अपनी दाहिनी हथेली में टिकाते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर चैतन्य ने उसे एक गहरी नज़र से देखा और फिर गर्दन तानकर बोला, "उसके लिए तो ध्यान लगाना पड़ेगा बच्चा।"

परिधि उसकी यह कलाकारी देखकर हँस पड़ी और बोली, "तो लगाइए ध्यान!"

"तो तुम भी ऑखें बंद करो और बेईमानी नहीं करना। ठीक है।" चैतन्य
ने चेहरे पर गंभीरता ओढ़ते हुए कहा। परिधि हर पल उसकी हरकतों का मजा ले रही थी। उधर अनामिका भी बीच-बीच में उन दोनों पर नज़र डाल रही थी। उसकी बात सुनकर परिधि ने अपनी हँसी होंठों में भींचते हुए अपनी ऑखें बंद कर लीं। चैतन्य उसकी ओर देखता रहा, जब अगले ही पल परिधि ने अपनी एक ऑख खोलकर उसे देखा। उसकी इस बेईमानी पर चैतन्य ने अपनी एक भौंह ऊपर की और फिर परिधि ने घबराकर अपनी ऑखें भींच लीं। चैतन्य ने दो पल फिर इंतजार किया, मगर इस बार परिधि ने अपनी ऑखें नहीं खोली। बल्कि वो बहुत ही शांत दिखाई देने लगी थी, जैसे कि सचमुच ध्यान की गहराई में चली गई हो।

"चैतन्य जल्दी! कुछ भी पकड़ो, पर जल्दी!" अनामिका ने चैतन्य की ओर झुकते हुए बहुत ही धीमी आवाज में कहा।

अनामिका की बात सुनते ही चैतन्य ने अपने बाएँ हाथ के ऊपर परिधि का बायाँ हाथ रखा, फिर... उसके ऊपर अपना दाहिना हाथ रख दिया और अपनी ऑखें बंद कर लीं। परिधि के हाथ को अपने हाथों के बीच रखे हुए चैतन्य को कुछ ही देर में एक हल्की सी कंपन महसूस हुई और फिर उसकी ऑखों के बंद दरवाजे के भीतर फैले अंधकार में कुछ रंग गुड्डम-गुड होने लगे। पहले तो चैतन्य को लगा कि वे रंग कुछ आकार लेने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन आकार लेते-लेते ही वो फिर से बिखर गए। उन्हें फिर से समेटने की कोशिश में चैतन्य के दिमाग की नसें उलझकर तन गई थीं और तनाव उसके चेहरे का हिस्सा बन गया था। यकीनन उसके लिए ये सब आसान नहीं था, पर भविष्य की उम्मीदें उसी के प्रयासों से जुड़ी हुई थी। प्रयास के इस स्तर पर उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वो किस तरह इन बिखरे रंगों से कोई ऐसी इबारत ढूंढकर निकाले, जो उन्हें आगे बढ़ने में मदद करे। इसी पशोपेश में उलझे हुए चैतन्य को अचानक सब कुछ हल्का लगने लगा और फिर उन रंगों ने एक तस्वीर सी बनाई, जो एक ही पल में बिखर गई और फिर उन रंगों ने एक बार फिर अपना वजूद एक और तस्वीर में खो दिया। यह तस्वीर भी अगले ही पल पानी हो गई।
इसी तरह कुछ और तस्वीरें भी चैतन्य के ज़ेहन में उभरी और मिट भी गईं। शायद चैतन्य की अपरिपक्वता उन्हें सही आकार लेने में रोड़ा बन रही थी।

अभी चैतन्य को ऐसा करते हुए पाँच मिनट ही हुए होंगे कि तभी दरवाजा खुलने की आवाज के साथ ही चैतन्य ने अपनी ऑखें झटके से खोल दीं। उसके ऑखें खोलते ही परिधि का शरीर भी शिथिल होकर एक ओर लुढ़क गया। उसने देखा कि अनामिका ने उसके हाथ पर अपना हाथ रखा हुआ था और उसे चिंता से देख रही थी।

"ये क्या हुआ परिधि को?" सृष्टि की परेशानी में डूबी हुई आवाज आई। वो तेजी से उनकी ओर भाग कर आई थी। वहीं दूसरी ओर सृष्टि के साथ आए हुए आशुतोष ने अनामिका और चैतन्य की ओर सवालिया नज़रों से देखा, जिस पर अनामिका ने अपने कंधे उचका दिए थे। चैतन्य भौंचक सा परिधि के गिरे हुए शरीर को देख रहा था।

"वो... हम तो उसे बहलाना चाहते थे, पर... हमारा मजाक उसने सीरियस ले लिया शायद!" अनामिका ने फैले रायते की सफाई करते हुए कहा और चैतन्य को चुटकी काटी, जो अभी भी परिधि को ही घूरे जा रहा था।

"ईऽऽ!"चैतन्य ने झटके से अपना हाथ हटाया था और फिर उसे सहलाते हुए रूष्टता से अनामिका की ओर देखा था, जिसे अनामिका ने पूरी तरह से नज़र अंदाज़ किया था। वो सृष्टि की ओर देख रही थी, जिसकी ऑखो में अजीब से भाव थे।

"वो अक्सर इसी तरह बेहोश हो जाती है, जब भी अपने परिवार के बारे में ज्यादा सोचती है। उसे आराम की बहुत जरूरत है।" इस बार पीछे से आशुतोष की आवाज आई थी। सभी ने उनकी ओर नज़रें घुमाई थीं।

"ऐसे क्या देख रहे हो। मालूम तो है कि दस-पंद्रह मिनट में वो होश में आ
जाएगी हमेशा की तरह। ध्यान तो इन मोहतरमा की ओर देना चाहिए, जिनको किसी भी चीज का होश नहीं है। देखो जरा! कैसे अभी भी किताबों में घुसी हुई है।" कहते हुए आशुतोष ने गीता की ओर इशारा किया था, जिससे सभी की नज़रें भी उसकी ओर उठी थीं। आसपास के माहौल से बेखबर वो कान में पेंसिल अटकाए किताबों की दुनिया में खोई हुई थी। सभी की ऑखें उसे देखकर सिकुड़ी थीं, सिवाए अनामिका के।

"ये हमेशा इतनी ही गंभीरता से पढ़ाई करती है क्या? कि आसपास का होश नहीं रहता इसे!" चैतन्य ने मुँह बनाते हुए कहा।

"ऐसी कोई बात नहीं है। रूको जरा!" कहते हुए अनामिका ने आगे बढ़कर उसके बाल पीछे कर कानों में फँसा इयर पॉड निकाला। ऐसा होते ही गीता का पूरा ध्यान उन सभी की ओर चला गया।

"इन मैडम के भरोसे तो चोरों के लिए निमंत्रण पत्र छप जाएगा।" अनामिका के ऐसा कहते ही सभी खुलकर हँस पडे। उसी समय परिधि की कराहने की आवाज ने सभी को चौंकाया। वो होश में आ रही थी।

"अल्फ़ी!"

परिधि के मुँह से यह नाम फिसलते हुए सभी की ऑखों में सवाल भर गया।

"अल्फ़ी! ये अल्फ़ी कौन है?" चैतन्य ने अनामिका और आशुतोष की ओर देखकर पूछा।
"क्या पता? शायद यादों से किसी किरदार ने दस्तक दी हो!" आशुतोष ने संभावना व्यक्त की।

"तो फिर?" चैतन्य ने एक बार फिर सवाल किया।

"फिर क्या? इसमें हम क्या कर सकते हैं। ये तो परिधि ही बता सकती है।" आशुतोष ने कसमसाती हुई परिधि की ओर इशारा करते हुए कहा। सभी की नज़रें उसकी ओर घूमी। परिधि ने भी धीरे से अपनी ऑखें खोली और फिर उन्हें मिचमिचाने लगी... कि ऑखें तो जाग गई थीं पर... ज़हन अभी भी धोखे में था।

"मुझे लगता है कि परिधि को आराम करने देना चाहिए।" अनामिका ने सृष्टि पर पैनी नज़र डालते हुए कहा, जो अभी भी परिधि को ही ऐतिहात भरी नज़रों से परख रही थी। आशुतोष और चैतन्य ने भी तेजी से अनामिका का समर्थन किया। वे नहीं चाहते थे कि परिधि के मुँह से कोई और सुराग निकलकर सृष्टि के कानों का पता ढूँढ ले।

"कमरे में ले चलें?" चैतन्य ने कहा।

"यहीं रहने देते हैं। गीता तो अपने काम में डूबी हुई है। मुझे लगता है कि सृष्टि को भी आज के लिए अब अपने घर जाना चाहिए।" आशुतोष ने सृष्टि को गहरी नज़रों से देखते हुए कहा।

"पर..." सृष्टि ने कुछ कहना चाहा।

"मुझे लगता है कि आशुतोष जी सही कह रहे हैं।" सृष्टि की बात काटते हुए चैतन्य ने कहा। चैतन्य की ओर नज़र जाते ही सृष्टि के चेहरे के बल ढीले पड़ गए। वो उसकी बात कतई नहीं काटना चाहती थी, इसलिए मन
मसोस कर उठ गई। सभी एक-एक करके कमरे से बाहर निकल गए, इस बात से बेखबर कि गीता के कानों में घुसा हुआ ईयर पॉड कभी ऑन ही नहीं था।

****

वो एक बार फिर से प्रोफेसर साहनी के स्टडी में उनके सामने खड़ी हुई थी। प्रोफेसर साहनी के चेहरे के भाव चिढ़े हुए से थे। सृष्टि को लगा था कि परिधि के होंठों से निकला यह नाम प्रोफेसर साहनी के कानों में तसल्ली का रस घोल देगा। मगर उनके उखड़े मिजाज को देखकर ऐसा तो बिल्कुल भी नहीं लग रहा था।

"मुझे लगा था कि आज तुम कोई काम की खबर लाओगी।" प्रोफेसर साहनी का लहजा तंज भरा था।

"मुझे लगा कि इस नाम से कोई मदद मिलेगी।" सृष्टि ने नाम शब्द पर जोर देते हुए कहा।

"ये नाम तो पहले भी मि. विक्टर के मुँह से सुन चुका हूँ।" सृष्टि के उत्साह को तोड़ते हुए प्रोफेसर साहनी ने कहा।

"फिर तो इस अल्फ़ी के बारे में पता लगाना आसान होगा।" सृष्टि में एक बार फिर उत्साहित होकर कहा।
"वही तो बात है कि ऐसा नहीं है। मि. विक्टर की वंश बेल मैं कई बार पढ़ चुका हूँ। इतनी बार कि सबके नाम और कौन कब पैदा हुआ और कब मरा... ये भी मुझे मुँह जबानी याद हो गया है। पर कहीं भी इस नाम का जिक्र नहीं मिला।" प्रोफेसर साहनी ने थकी हुई आवाज में कहा।

"हो सकता है कि... किसी का निकनेम हो!" सृष्टि ने एक और रास्ते की ओर इशारा किया।

"नहीं सृष्टि! निकनेम आमतौर पर मूल नाम से मिलते-जुलते होते हैं और इस अल्फी से मिलता हुआ नाम मुझे कहीं भी नहीं मिला। अगर समय चक्र का रहस्य 200 साल पुरानी उस भयानक हत्याकांड वाली घटना से जुड़ा है, तब तो बिल्कुल भी नहीं। हाँ! उससे करीब 25 साल पहले अल्फ्रेड वॉकर का जिक्र मिलता है, पर परिधि से उसका कोई मेल नहीं हो सकता क्योंकि वो उस हत्याकांड से करीब 25 साल पहले ही मर चुका था। इसलिए यह कनेक्शन संभव ही नहीं है। कुछ और... शायद कुछ और भी सुना हो तुमने।" आखिर तक आते-आते प्रोफेसर साहनी का लहजा बेचैनी से भर गया था। सृष्टि ने नहीं में अपना सिर हिलाया। प्रोफेसर साहनी एक बार फिर से मायूस नज़र आने लगे थे।

"कौन हो तुम अल्फ़ी? किस दुनिया से आए और कहाँ खो गए?" बेचैनी में प्रोफेसर साहनी के मुँह से निकला था। इस बीच कुछ ऐसा भी था, जो सृष्टि के दिल और दिमाग से पूरी तरह से निकल चुका था।

****
सारी घटनाओं के बीच शाम के चार कब बजे... किसी को पता नहीं चला। डॉ. अनंत कुमार के कहे अनुसार एक बार फिर से सभी उनके स्टडी में मौजूद थे। सारी बातें जानने के बाद पहले तो अनंत कुमार के चेहरे पर जिज्ञासा भरे भाव आए और फिर कुछ देर बाद ही उनका सिकुड़ा हुआ चेहरा सामान्य हो गया।

"मुझे लगता है कि मुझे प्रैक्टिस की जरूरत है।" चैतन्य की आवाज झेंपी हुई थी। नाकामी शूल बनकर उसे चुभ रही थी, जिसका दर्द उसकी ऑखों में स्पष्ट था।

"इसकी जरूरत नहीं है। कुछ तो देखा होगा तुमने। धुंधला ही सही।" अनंत कुमार ने कहा।

"धुंधला था या साफ... ये समझ में नहीं आया। वो सारी तस्वीरें एक पल में ही मिट गईं।" चैतन्य ने उलझे हुए शब्दों के साथ कहा।

"अगर तुम्हारे ज़ेहन में आई हैं, तो मिटी नहीं हैं.. बस गुम हो गई हैं।" अनंत कुमार ने बड़े ही इत्मिनान से कहा।

"और उसे ढूँढकर निकालेंगे कैसे? चैतन्य को तो खुद भी कुछ याद नहीं है।" आशुतोष ने कहा। आशुतोष की बात सुनकर चैतन्य और अनामिका ने भी कौतूहल से अनंत कुमार की ओर देखा, जिनके अधरों पर एक हल्की सी मुस्कुराहट तैर रही थी।

"अभी बताता हूँ।" कहते हुए अनंत कुमार कोने में रखे एक सजावटी पात्र की ओर बढ़े, जिस पर एक पौधा लगा हुआ था। उन तीनों को हैरत का तेज झटका लगा, जब अनंत कुमार ने उस पौधे को पकड़ कर ऊपर उठाया और वो पौधा पूरी तरह से उस पात्र से मिट्टी के साथ सफाई से
बाहर आ गया। पौधै को एक ओर रखकर अनंत कुमार उस पात्र को उनके पास ले आए और उसे टेबल में रख दिया। वो एक गहरा और चौड़ा सा पात्र था। तीनों ही उस पात्र को हैरानी से देख रहे थे कि ये पात्र किस तरह से चैतन्य की खोई हुई याद को बाहर निकालेगा।

"ये स्मृति पात्र हैं।" अनंत कुमार ने उन सभी की ओर देखते हुए कहा।

"एक मिनट! स्मृति पात्र! कहीं ये तांत्रिक श्रेष्ठ..." आशुतोष ने बात अधूरी छोड़ी।

"हाँ! ये तांत्रिक श्रेष्ठ का है। मैंने बताया था ना कि हम धरोहरों के रखवाले हैं।" अनंत कुमार ने आशुतोष की शंका दूर करते हुए कहा।

"पर ये स्मृति जल के बग़ैर काम नहीं करेगा।" आशुतोष ने अनंत कुमार को टोकते हुए कहा। उसकी बात सुनकर अनंत कुमार एक बार फिर मुस्कुराए और अनामिका की ओर देखने लगे। उनकी नज़रों का पीछा करते हुए चैतन्य और आशुतोष ने भी अनामिका की ओर देखा था। अनामिका उलझी हुई सी अपनी जगह में खड़ी थी और अनंत कुमार की ओर देख रही थी।

"आओ अनामिका! अब तुम्हारी बारी है।" अनामिका की ओर हाथ बढ़ाकर अनंत कुमार ने उसे अपने पास आने का इशारा किया। अनामिका ने एक नज़र चैतन्य और आशुतोष पर डाली और फिर अनंत कुमार के पास आ गई। अनंत कुमार ने उस पात्र के बीचों-बीच एक बूंद जल डाला।

"अपनी बाईं हथेली इस पर रखो।" अनंत कुमार ने उस पात्र की ओर देखते हुए अनामिका से कहा। अनामिका ने भी नासमझी की हालत में ही उनके आदेश को मानते हुए अपना बायाँ हाथ उस पात्र के बीचों-बीच रख
दिया।

"अब ऑखें बंद करके जल का आह्वान करो। जल-रक्षक हो ना तुम!" अनंत कुमार ने अनामिका को समझाते हुए कहा और इतना कहते ही तीनों को सब कुछ समझ में आ गया। अनामिका ने अपनी ऑखें बंद की और ध्यान लगाकर जल का आह्वान किया। देखते ही देखते वो पात्र नीले रंग के जल से भर गया।

उसे देखते ही तीनों को ही चित्रलेखा की पहेली में उलझे हुए देवेन्द्र का वो स्मृति पात्र याद आ गया था, जिसने उस समय बहुत से राज खोले थे। क्या आज ये स्मृति पात्र उन सबके मन में उठ रहे सवालों की आग को अपने जल से ठंडा कर पाएगा। इसका जवाब तो अगले कुछ पलों में ही छिपा था और जिसका इंतजार उनसे हो नहीं रहा था।
वो तीनों ही उस पात्र में भरे हुए जल को एकटक निहार रहे थे। परालौकिक शक्तियों और जीवन से

अच्छी तरह वाकिफ वे तीनों खुद की नई शक्तियों को देखकर अजीब सा आनंद महसूस कर रहे थे। अनामिका कुछ देर तक अपने भीगे हुए हाथ की ठंडक को अपने अंदर मुस्कुराहट के साथ उतारती रही। चैतन्य और आशुतोष के चेहरों पर भी मुस्कान थी। वे तीनों कुछ देर उसी तरह उस पानी को देखते रहे, मगर जब कुछ भी नहीं हुआ, तो तीनों ही सिर उठाकर अनंत कुमार की ओर देखने लगे, जो उन्हें देखकर मुस्कुरा रहे थे।

"क्या देख रहे हो चैतन्य? अपना अंगूठी वाला हाथ डालो और उन तस्वीरों को एक बार फिर से अपने ध्यान में उतारो। थोड़ा मुश्किल हो सकता है, पर तुमसे हो जाएगा।" अनंत कुमार ने चैतन्य की ओर विश्वास भरी नज़र से देखते हुए कहा।

"आपको ऐसा लगता है।" चैतन्य ने बेयकीनी से कहा।

"हाँ! तुम आर्टिस्ट हो ना! रंगों से खेलते हो। तो फिर समेटो उन रंगों को,
जो तुम्हारे अवचेतन मन में बिखरी हुई है। एक चित्रकार रंगों की भाषा ना समझ पाए... ये हो ही नहीं सकता।" अनंत कुमार ने मुस्कुराते हुए उसका मनोबल बढ़ाया।

अनंत कुमार की बात सुनकर चैतन्य को याद आया कि वो तो एक चित्रकार है। यादों को अपने मस्तिष्क में संभालकर रखता है और फिर उन्हें अपनी कूचियों से कागज में उतारता है। यह याद आते ही चैतन्य की थकी हुई हिम्मत जैसे उठ खड़ी हुई। वो एक बार फिर उसी आत्मविश्वास से लबरेज हो गया, जिसके साथ वो रंगों की खूबसूरत दुनिया में लोगों को भटकने पर मजबूर कर देता है। उसने अनंत कुमार की ओर देखा और फिर सिर हिलाते हुए अपना अंगूठी वाला हाथ उस पात्र में भरे हुए जल के एक ओर डाल दिया।

"अब ऑखें बंद करके उन सभी तस्वीरों को याद करने की कोशिश करो। तस्वीर नहीं तो..... उनके रंगों को याद करने की कोशिश करो। कुछ भी याद करो!" अनंत कुमार ने एक बार फिर उसका हौसला बढ़ाया था।

अनंत कुमार की बात सुनकर चैतन्य ने अपनी ऑखें बंद की और अपने ध्यान की गहराई में उतर गया, जहाँ एक बार फिर रंग उससे ऑख-मिचौली खेलने की कोशिश कर रहे थे। मगर वो भी उनसे खेलने में माहिर था। धीरे-धीरे उसकी कल्पनाशक्ति उन रंगों को उनकी सही जगह में संजोने लगी और इस तरह एक तस्वीर उसके मन की सतह पर उभरने लगी। वो अपने प्रयास के सफल होने पर खुश हो ही रहा था कि तभी वह रंग फिर से बिखर गए। उसे झुंझलाहट सी हुई, जिसकी झलक उसके चेहरे पर सभी को दिखाई दी। मगर वो एक बार फिर से प्रयासरत दिखाई देने लगा।

सभी ने देखा कि चैतन्य के प्रयास करने के समय उसके डूबे हुए हाथ के पास से बुलबुले से ऊपर उठने लगे थे। ऐसा लग रहा था जैसे कि उस ठंडे
पानी में उबाल आ गया हो। अनामिका ने कुछ देर तो ये सब देखकर भी जब्त किया हुआ था, मगर जल्द ही उसका धैर्य जवाब दे गया और उसने घबराकर चैतन्य का हाथ पकड़ लिया। इरादा तो चैतन्य का हाथ बाहर निकालने का था, मगर उसी समय उसने चैतन्य के हाथ के पास से रंगों को बुलबुलों के साथ ऊपर आते देखा, जो धीरे-धीरे उस पानी की सतह पर फैलने लगे थे। मद्धिम रोशनी वाला वो कमरा धीरे-धीरे उस स्मृति पात्र से निकलती रोशनी से भर गयाऔर उनके सामने कुछ मिली-जुली तस्वीरें सफाई से उभर गईं।

अनंत कुमार ने तेजी से अपने फोन में पानी की सतह पर बनी उस तस्वीर की पिक ले ली और फिर उस सतह पर होने वाली अगली प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगे। थोड़ी ही देर में उन तस्वीरों के रंग पानी के अंदर खिंचते चले गए और फिर पानी की सतह एक बार फिर से बेदाग नीली हो गई। उन सभी की नज़रें चैतन्य के चेहरे पर टिक गईं, जहाँ अभी भी प्रयासों का जोर दिखाई दे रहा था। बंद पलकों के नीचे उसके ऑखों की
पुतलियाँ तेजी से घूम रही थीं। चैतन्य के चेहरे के तनाव ने अनामिका को उसका बाजू छोड़ने से मना कर दिया था। वो कभी उसके चेहरे की तनी हुई माँसपेशियों को देखती... तो कभी उसकी नज़र नीचे ठहरे हुए पानी पर चली जाती और फिर जल्द ही एक बार फिर से चैतन्य के हाथ के पास पानी के बुलबुलों के साथ कुछ धुंधले से रंग निकले और पानी की सतह पर फैल गए। सभी ने देखा कि वो एक लड़की और एक लड़के की तस्वीर थी, जिसमें लड़के का चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था और ना ही लड़की के नाक-नक्श स्पष्ट थे। ऐसा लग रहा था... जैसे कि वो कोहरे से बनी हो।

अनंत कुमार ने एक बार फिर पानी की उस धुंधली सी सतह की पिक्चर क्लिक कर लीं। अचानक चैतन्य के हाथ काँपने लगे, जिसने उसका हाथ
थामे खड़ी अनामिका को डरा दिया। चैतन्य के चेहरे का तनाव बढ़ गया और उसके माथे पर पसीना चमकने लगा था। उसके होंठ काँपते हुए खुले और उन सब को सुनाई दिया,

"माया! अल्फी!"

और यह कहते ही चैतन्य ने अपनी ऑखें झटके से खोल दीं। वो बुरी तरह हाँफ रहा था। उसने अपना सिर नीचे झुका लिया था। अनामिका ने तुरंत उसका हाथ बाहर निकाला और उसके चेहरे को चिंता से देखते हुए बोली, " तुम ठीक हो।"

उसकी आवाज सुनकर चैतन्य ने हाँफते हुए ही ऊपर देखा और फिर सामने अनामिका का चिंता से भरा चेहरा उसे और परेशान कर गया। उसने खुद को संभालते हुए कहा, "ठीक हूँ मैं!"

"आओ बैठो यहाँ!" कहते हुए अनामिका उसे पास ही एक कुर्सी के पास ले गई और ऐहतियात से उसे उस पर बैठा दिया। आशुतोष उसके लिए पानी ले आया। अनंत कुमार स्टडी टेबल के एक छोर पर बैठे हुए उन दोनों तस्वीरों को ध्यान से देख रहे थे। पहली तस्वीर में एक कमरे की, एक घड़ी की और तांत्रिक गतिविधि की भी एक तस्वीर थी। कुछ और भी धुंधली यादें थी, पर अनंत कुमार ने इन तीनों पर ही अपनी तवज्जो ज्यादा रखी।

पानी पीने के बाद चैतन्य कुछ बेहतर महसूस कर रहा था। उसके लिए यह अनुभव नया ही नहीं... बल्कि बहुत ज्यादा तकलीफ़देह भी था। हालत दुरूस्त होने पर अनंत कुमार ने उसकी ओर प्रशंसा भरी नज़रों से देखते हुए कहा, "मैंने कहा था ना.... तुम कर लोगे!"
"तो कुछ पता चला क्या?" चैतन्य ने कौतूहल से पूछा। मकसद अपनी कोशिश की कामयाबी के बारे में

जानना था।

"बहुत कुछ तो आया है शिकंजे में, बस पहचान करना बचा है।" अनंत कुमार ने अपना फोन चैतन्य के सामने हिलाते हुए कहा।

"और कैसे होगी... ये पहचान?" अनामिका ने पूछा।

"अभी देखो!" कहते हुए अनंत कुमार अपनी जगह से उठे और एक ओर बुक शेल्फ पर जमी किताबों की ओर बढ़ गए। उन्होंने सबसे आखिरी किताब के ऊपर हाथ रखा और फिर अपनी ऑखें बंद करके लाइन से उन किताबों पर हाथ फेरते हुए आगे बढ़ने लगे। उनके दूसरे हाथ में उनका फोन था, जिसमें एक तस्वीर खुली हुई थी

"क्या कर रहे हैं ये?" चैतन्य ने आशुतोष से पूछा। जवाब में आशुतोष के कंधे उचके थे। जल्द ही अनंत कुमार एक किताब लेकर उनके पास आए। वो मेडिसिन की कोई बहुत ही पुराने एडीशन की किताब थी, जो शायद अब इस्तेमाल में भी ना आती होगी।

"ये क्या है?" तीनों ने उन अजूबों को देखा था।

"धरोहर!" अनंत कुमार ने मुस्कुराते हुए कहा और फिर वो किताब खोल दी। उन तीनों की ऑखें आश्चर्य से फ़ैल गईं, जब उन्होंने उस किताब के पहले ही पेज के हर्फों को मिटते हुए देखा। कुछ ही देर में वो पेज बिल्कुल खाली हो गया। उन तीनों ने बेवकूफी भरी नज़रों से एक-दूसरे की ओर देखा और फिर अनंत कुमार की ओर देखने लगे, जो फोन की स्क्रीन पर अपनी उंगलियाँ फिरा रहे थे। उसके बाद उन्होंने वही ऊंगलियाँ उस पेज पर फिराई। उन तीनों ने ऑखें फाड़कर देखा कि अनंत कुमार की उंगलियों के फिरते ही फोन के स्क्रीन पर दिखाई दे रही तस्वीर उस पेज पर इस
तरह से उतर गई, जैसे कि उस पर प्रिंट कर दी गई हो। अनंत कुमार ने उस तस्वीर को देखा और फिर धीरे से पेज पलट दिया। उन सभी ने देखा कि वहाँ कुछ लिखा हुआ था। अनंत कुमार ने उन अक्षरों पर ऊंगली फिराई और उसे पढ़ा,

"डायनों का बसेरा!"

यह सुनते ही सभी चौंके थे। अनामिका की यादें कुछ दिन पीछे की ओर चली गईं, जब हॉस्पिटल में इंस्पेक्टर अंकित ने इनका जिक्र किया था (भाग 4)।

"डायनों का बसेरा! उन्हीं खंडहरों के पास ही तो हमें परिधि मिली थी।" अनामिका ने उन सभी से कहा।

"तो पहला सिरा भी वहीं मिलेगा। सुबह के पहले पहर में हमें वहाँ जाना होगा।" अनंत कुमार ने कहा।

"क्या इस किताब में कुछ और नहीं है?" आशुतोष ने अनंत कुमार से उस किताब की ओर इशारा करते हुए पूछा।

"हो भी सकता है, पर आजकल मेरी शक्तियाँ कमजोर होने लगी हैं। इसलिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ेगी तुम सभी को।" अनंत कुमार ने अफसोस जताते हुए कहा। यह सुनकर सभी ने ठंडी साँसें छोड़ीं।

"हम तीनों को जाना होगा?" आशुतोष ने पूछा।
"हाँ और तुम्हारे लिए एक बुरी खबर ये हो सकती है कि मैं साथ नहीं जाऊँगा। यहाँ परिधि के आसपास किसी का रहना जरूरी है। वैसे तुम सब पर भरोसा है मुझे।"अपनी बात अनंत कुमार ने मुस्कुराते हुए खत्म की थी। उसी समय अचानक उनकी छठी इंद्रिय जागी और वो तेजी से दरवाजे की ओर बढ़े। उन्होंने झटके से दरवाजा खोला, मगर कोई भी वहाँ मौजूद नहीं था। उन्होंने बाहर निकल कर चारों ओर देखा। कोई भी नहीं था। दूर सोफे पर गीता और परिधि फोन में खोए बैठे हुए थे। आश्वस्त होने के बाद वो वापस कमरे में आ गए।

"क्या हुआ?" अनामिका ने बाहर की ओर झांकते हुए पूछा।

"कुछ नहीं! ऐसा लगा कि.... वहम था शायद कोई।" अनंत कुमार ने बात हवा में उड़ाई थी। उसकी बात सुनकर सभी उस कमरे से बाहर निकल गए। उनके जाते ही अनंत कुमार के चेहरे पर एक गंभीरता ने डेरा जमाया और उनके मुँहसे निकला,

"माया-अल्फी!"

आशुतोष और चैतन्य एक बार फिर से हॉल में सोफे में बैठे थे। जहाँ परिधि, गीता के साथ बैठी हुई किसी विडियो गेम का मजा ले रही थी। इतनी मेहनत के बाद उन्हें फिर से चाय की तलब लगी थी। अनामिका चाय बनाने किचन में गई। चैतन्य उसे जाते हुए एकटक देखता रहा। उसे आज दोपहर में ही उस पर नज़रें गड़ाए सृष्टि को गुस्से में घूरती अनामिका याद आ गई। अनामिका को नहीं पता था कि चैतन्य ने उसे सृष्टि को घूरते हुए देख लिया था और घर में घुसती हुई सृष्टि के नज़रों की तपिश भी महसूस कर ली थी। वो सब याद करते ही अनायास ही उसके होंठों पर मुस्कान आ गई।
"अब बंद भी करो उसे ताड़ना। दीवार के दूसरी ओर है वो।" आशुतोष की ताना मारती हुई आवाज उसके कानों तक आई, जिससे वो हड़बड़ाया था।

"ताड़ना! कौन मैं? नहीं! नहीं!" चैतन्य ने बात संभालने की कोशिश की।

"वैसे एक बात बताऊँ! मुझे लगता है कि उसके दिल में भी कुछ है तुम्हारे लिए।" आशुतोष के मुँह से निकले इन शब्दों ने चैतन्य के कानों में जैसे रस घोल दिया था। फिर भी उसने बेयकीनी से आशुतोष की ओर देखा।

"हैं! क्या मतलब?" अपने दिल को संभालते हुए चैतन्य ने पूछा।

"अंदर सुराग पकड़ते हुए जितने शिकन तुम्हारे माथे पर पड़े थे, उतने ही उसके चेहरे पर भी गिने थे मैंने। पूरे समय तुम्हारी बांह थामे खड़ी रही। बहुत चिंता थी उसे तुम्हारी।" आशुतोष ने कहा।

"क्या सच में?" चैतन्य चिहुंका। यकीन जैसे उसका इम्तिहान ले रहा था।

"तो तुम्हें क्या लगता है कि मैं इस विषय में तुमसे झूठ बोलूंगा। उसकी ऑखों में तुम्हारे लिए चिंता साफ-साफ दिखाई दे रही थी।" आशुतोष ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा।

"उसकी ऑखें तो हमेशा कहती हैं आशुतोष जी! पर जुबान कहे तब ना!" चैतन्य ने ठंडी साँस छोड़ते हुए कहा।

"कहेगी! कहेगी!" आशुतोष ने हँसते हुए सामने पड़ा अखबार उठाया था। चैतन्य ने एक नज़र उन पर डाली और फिर उठकर किचन की ओर चल दिया। वहीं आशुतोष की नज़रें अखबार के उस पेज के एक कोने में चली गई, जहाँ एक नवजात शिशु के गायब होने की खबर छपी हुई थी।
****

अनामिका उबलते हुए चाय में चम्मच हिला रही थी, जब आहट सुनकर उसकी नज़र दरवाजे की ओर मुड़ी थी। चैतन्य उसे ही देख रहा था।

"क्या हुआ? कुछ चाहिए क्या तुम्हें?" अनामिका ने नर्म लहजे में पूछा।

"चाहिए तो सही!" कहते हुए चैतन्य एक बार फिर किचन के स्लैब से टिककर खड़ा हो गया और उसे अपनी गहरी नज़रों से देखने लगा। अनामिका कुछ देर तो उसके सवाल का इंतजार करती रही, मगर उसके कुछ ना कहने पर झटके से उसकी ओर नज़र घुमाई थीं, जहाँ वो अपनी दिलफरेब मुस्कान के साथ खड़ा उसे ही देख रहा था। अनामिका ने तुरंत अपनी नज़रें फेरी थीं क्योंकि चैतन्य की इन नज़रों की तपिश उससे सहन नहीं होती थी। अनामिका की असहजता को चैतन्य ने महसूस कर लिया था, इसलिए उस पर तरस खाते हुए उसने अपना सवाल दागा, "तुमने मेरा हाथ क्यों पकड़ा था, जब मैं सृष्टि का हाथ पकड़ने वाला था?"

चैतन्य का सवाल सुनते ही अनामिका के काम करते हाथ रूक गए। उसने चैतन्य की ओर देखने से परहेज़ ही किया।

"अनामिका!" चैतन्य ने इसरार किया।

"कोई... कोई कारण नहीं था। बस ऐसे ही!" अनामिका ने बात रफा दफा करने की कोशिश की।
"अच्छा! तब तो... जब वो मुझे देखते हुए सीढ़ियाँ चढ़ रही थी, तब उस समय भी तुम बिना कारण ही उसे गुस्से में घूर रही थी।" चैतन्य उसे कुरेदने पर तुला हुआ था। दूसरी ओर अपनी चोरी पकड़े जाने का अहसास अनामिका को अंदर तक शर्मशार कर गया। चैतन्य जवाब की चाहत में उसके करीब आ गया था। उसकी नजदीकी अनामिका की साँसें भारी कर गई थीं, पर वो हथियार डालने को राजी नहीं थी कि इस सवाल के जवाब का समय अभी नहीं आया था। उसने खुद को संभालते हुए अपने अंदर हिम्मत इकट्ठा की।

"तुम बेवजह बाल की खाल निकाल रहे हो।" अनामिका ने कहते हुए वहाँ से हटना चाहा था, मगर चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ कर झटके से उसे अपने पास... बहुत पास किया था। इस अचानक हुए हमले से अनामिका संभल नहीं पाई। वो तो शुक्र हुआ कि उसने अपने हाथों को चैतन्य के सीने पर

टिका दिया। उसने हैरत से फैली अपनी ऑखों से चैतन्य की ऑखों को देखा, जहाँ जज़्बातों के अनगिनत रंग बिखरे हुए थे। अनामिका ने एक बार फिर नज़रें चुराई और उससे दूर जाने की कोशिश करने लगी, मगर उसे जाने देने का इरादा चैतन्य का नहीं था।

"तुम्हें गलतफहमी हुई है। मैं बस तुम्हें उस सृष्टि से दूर रखना चाहती थी। वो सही नहीं है... तुम अच्छी तरह जानते हो और कोई वजह नहीं थी।" अनामिका ने सफाई दी थी।

"तुम जल रक्षक हो तो क्या... हमेशा अपने सिर पर पानी रखकर घूमती हो! सबके... और ख़ासतौर पर... मेरे.. अरमानों पर डालने के लिए।" चैतन्य ने बिगड़ कर कहा था।

"शुक्र मनाओ कि मैं जल रक्षक हूँ। अरमान बस ठंडे होकर बैठ जाते हैं। अगर अग्नि रक्षक होती, तो सारे के सारे अरमान जलकर धुँआ हो जाते।"
अपनी बात कहकर अनामिका जोरों से खिलखिलाई थी। चैतन्य ने बुरा सा मुँह बनाकर गुस्से से उसकी ओर देखा, मगर उसकी दिलकश हँसी में एक बार फिर सब भूल गया। अनामिका एक बार फिर उसकी बोलती ऑखों से असहज हुई थी और उसने अपनी नज़रें चुराई थीं।

"तुम्हारी ऑखें जो कहती हैं... तुम्हारी ज़ुबान उसका इकरार क्यों नहीं करती।" चैतन्य का लहजा शिकायती था। यह सुनते ही अनामिका ने उसकी ओर अपनी निगाहें उठाई और फिर वहीं रूक गई। चैतन्य की नज़रों के रंग अनामिका की निगाहों में उतरने को ही थे कि तभी,

"ओह! माफ करना!" किचन में घुसी परिधि बुरी तरह चिहुंक कर उल्टे पैर वापस हुई थी। उसके इस अप्रत्याशित आगमन से कई चीजें एक साथ हुई। चैतन्य की पकड़ कमजोर होते ही अनामिका ने खुद को उसकी गिरफ्त से आजाद किया था। जब तक चैतन्य की नज़र फिर से अनामिका की ओर मुड़ी, उसके जज़्बातों के लिए अनामिका की ऑखों के दरवाजे फिर से निषिद्ध हो गए थे और रूष्टता उन दरवाजों के पहरे पर बैठ गई। बुरी तरह चिढ़ी हुई अनामिका ने चाय की केतली और कप उठाए और तेजी से वहाँ से निकल गई।

"सत्यानाश! फिर से गई भैंस पानी में!" चैतन्य ने अपने माथे पर हाथ मारकर कहा।

****

रात का दूसरा पहर चल रहा था और वो गहरी नींद की आगोश में सिमटा हुआ था। आजकल आमतौर पर उसकी नींदें सपनों से खाली ही होती
थीं। कभी-कभी उसके माता-पिता की रक्तरंजित देह उसकी नींदें उड़ा देती थीं। उसके बाद तो वो अगले दो-तीन रातों तक नहीं सो पाता था। उसके माता-पिता को गए दो महीने से ज्यादा हो गए थे, मगर वो आज भी उसी दिन में अटका हुआ था, जिस दिन नियति के क्रूर हाथों ने उससे उन्हें छीन लिया था। वो उनकी कोई मदद नहीं कर पाया और यह बात उसके दिल पर नश्तर की तरह चुभी हुई थी, जिससे रिसता लहू उसके उस जख्म को सूखने नहीं दे रहा था। वो हर पल उस ज़ख़्म की टीस के साथ जी रहा था। उसे हर चीज से नफ़रत हो चुकी थी... खुद से हो चुकी थी। प्रोफेसर साहनी ने उसे बड़ी ही मुश्किलों से संभाला था। वो उसे उस हादसे की यादों से दूर करना चाहते थे। इसलिए जब मंथली

मीटिंग के दौरान अनंत कुमार ने उससे अपने गार्डन में मदद की पेशकश की, तो उन्हें एक तीर से दो निशाने लगते नज़र आए और लाख मतभेदों के बाद भी प्रोफेसर साहनी ने मुकुल को मंजुला विला जाने की इजाजत दे दी। मगर उनके मंसूबों को तब झटका लगा, जब उन्हें पता चला कि मुकुल कभी भी घर के अंदर नहीं गया। घर के पिछले हिस्से में जाने के लिए भी वो एक ओर बने बाहरी रास्ते का ही प्रयोग करता था। प्रोफेसर साहनी इससे तिलमिला कर रह गए, मगर अब वो उसे मना नहीं कर सकते थे क्योंकि दो-तीन दिनों से वो थोड़ा सा शांत दिखाई दे रहा था। मन मारकर उन्होंने उसे बिना किसी उम्मीद के अपने हाल पर छोड़ दिया। मगर आज वो फिर से बेचैन था। आज अपने आसपास परिधि की मौजूदगी ने उसे फिर से उखाड़ कर रख दिया था। बड़ी मुश्किल से नींद आई तो एक बार फिर बुरे सपने ने उसे परेशान कर दिया। एक बार फिर खून से सना शरीर उसके सामने निस्तेज पड़ा हुआ था। बहती हुई आँखों के साथ जब उसने उस शरीर के चेहरे पर नज़र डाली तो सपने के साथ-साथ वो हकीकत में भी चौंककर उठ बैठा। फटी हुई आँखों से शून्य में ताकते हुए वो अपनी उखड़ी हुई साँसों के बहाल होने तक बैठा रहा। हवास वापस आने पर अपनी हालत का भी होश आया। सपने और हक़ीक़त का फासला समझते ही उसकी जान में जान आई। मगर फिर भी उसकी यादों से रंग उड़ाकर एक नया सवाल उसके दिमाग को मथने लगा था।
"वो मेरे सपने में इस तरह लहूलुहान क्या कर रही थी? आखिर परिधि मेरे सपने में क्या कर रही थी?"

वो घर के पिछले भाग की सीढ़ियों में उदास बैठी हुई ना जाने कहाँ खोई हुई थी। शून्य में ताकती उसकी आँखों की नमी फिलहाल अपनी सरहद लांघने से इंकार कर रही थी। उसके आसपास इतना सन्नाटा पसरा हुआ था कि उसे अपनी धड़कनों की आवाज भी सुनाई दे रही थी। कभी-कभी समझ नहीं आता कि जीवन में अकेलापन अच्छा होता है या बुरा। इसी पहेली को सुलझाती हुई वो और भी उलझती जा रही थी। 8 साल की उम्र इतनी परिपक्व भी नहीं होती कि ऐसी पहेलियाँ सुलझाई जा सकें।

"अनामिका! यहाँ क्यों बैठी हो?" पीछे से आई आवाज ने उसे चौंकाया
था। उसने तेजी से छिपाकर अपनी आँखें पोछीं और सामान्य होने की कोशिश करने लगी।

"कुछ नहीं! बस ऐसे ही!" उसने बिना देखे ही जवाब दिया था। उसे लगा कि वो वहाँ से चला जाएगा, पर वो उसके पास आकर उसके चेहरे को ग़ौर से देखने लगा। अनामिका को उसकी ये हरकत और परेशान कर रही थी। उसने चेहरा दूसरी ओर घुमाने की कोशिश की।

"तुम रो रही हो!" सामने से चिंता में डूबी आवाज आई और यह सुनते ही अनामिका का सब्र जवाब दे गया। वो बिलखकर रो पड़ी, जिससे सामने वाला बुरी तरह घबरा गया।

"अरे! चुप हो जाओ प्लीज़! मैं जाता हूँ यहाँ से। मेरी वजह से तुम रो दी। सॉरी!" अफसोस जताते हुए अपनी बात कहकर वो वहाँ से जाने के लिए उठा, पर अनामिका ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोली, "तुम्हारी वजह से नहीं रो रही हूँ।"

उसकी बात सुनकर वो रूक गया और फिर उसके बगल में बैठकर सहानुभूति से लबालब भरे लहजे में बोला, "आण्टी ने कुछ कहा! फिर डाँटा!"

"डाँटने के लिए वो... साथ तो रहे कभी। अब तो वो... और भी मुझसे दूर रहने लगी हैं। मैं क्या इतनी

बुरी हूँ ... कि मेरी माँ भी मुझसे प्यार नहीं करती है... और ना ही किसी से दोस्ती करने देती है। उनकी वजह से एक दोस्त नहीं है मेरा।" वो लगातार सुबकते हुए बोल रही थी।

"कोई बात नहीं। हम भी तो दोस्त ही हैं ना!" सामने से मन को सहलाने वाली आवाज आई। अनामिका ने सिर घुमाकर उस करीब 12 वर्षीय लड़के की ओर देखा, जिसे वो तब से जानती थी, जब से उसने होश
संभाला था। हाँ... इस पूरी दुनिया में एक वो ही था, जिससे वो बेहिचक बात कर सकती थी। हालांकि भावनाओं के द्वार अभी भी उसके लिए पूरी तरह से खुले नहीं थे, पर वो हमेशा उन दरवाजों के पार मिलता था उसे। शायद इसलिए क्योंकि कमोबेश उसकी स्थिति भी अनामिका के जैसे ही थी। ना जाने क्यों उसके अंदर भी एक चिड़चिड़ाहट सी भरी हुई थी, जो गाहे-बगाहे सबके सामने निकल ही जाती थी। इसलिए उसका भी कोई ऐसा दोस्त नहीं था, जिसके सामने वो अपना दिल खोलकर रख सके।

अनामिका ने अपनी नज़रें उसकी ओर घुमाई तो घबरा गई। उसके बाल बेतरतीबी से बिखरे थे। चेहरे और कपड़ों पर मारपीट रूपी जंग के निशान साफ-साफ दिखाई दे रहे थे और इस जंग में उसके चश्मे का एक काँच शहीद भी हो गया था। होंठों के किनारे पर थोड़ा सा खून बहकर सूख गया था।

"ये तुम्हें क्या हो गया? तुम्हें तो बहुत चोटें आई है।" अनामिका घबरा कर बोली। अनामिका की बात सुनकर उसने अपनी बिखरी हुई हालत पर ग़ौर किया और फिर से एक ठंडी सी आह भरकर बोला, "लड़ाई और क्या?"

"अब क्या हो गया? क्या छीन रहे थे तुमसे?" अनामिका ने ऑखें सिकोड़ कर पूछा।

"मेरा ये बैट ! बड़ी मुश्किल से तो पापा ने ये मुझे दिलाया है और वो बच्चों का लीडर... वो गुंडा.. प्रकाश चाहता है कि ये मैं उसे दे दूं। मैंने मना किया तो मेरी ये हालत कर दी। मगर मैंने भी दिया नहीं।" उसने भी अपनी गर्दन ऊपर उठाकर कहा।

"और एक इस बैट के लिए इतनी मार खा ली।" अनामिका की आवाज में घोर हैरानी भरी हुई थी।
"जो मेरा है, उसे मुझसे कोई नहीं छीन सकता। एक बात याद रखना... दोस्त कभी भी एक-दूसरे का हक नहीं छीनते। अगर वो शेयर करने की बात कहता, तो मैं दे देता, पर वो तो छीनने में अड़ा था। सब एक जैसे हैं। अब किसी से दोस्ती नहीं करूंगा।" वो कलपकर बोला।

"तो अकेले रहोगे! मेरी तरह!" अनामिका ने मासूमियत से कहा।

"तो तुम कर लो मुझसे दोस्ती। तुम भी अकेली... मैं भी अकेला। वैसे भी हम दोनों अच्छे से ही रहते हैं। करोगी मुझसे दोस्ती। सोच लो! फिर ऐसी अकेले बैठ कर रोना नहीं पड़ेगा।" उसने दोस्ती भरा हाथ अनामिका की ओर बढ़ाते हुए कहा।

"तुम मेरे साथ तो सब शेयर करोगे ना!" अनामिका ने जैसे हाथ थामने से पहले पूरी तस्दीक करनी चाही थी।

"हाँ! बस तुम्हारे साथ! अब और कोई दोस्त नहीं चाहिए मुझे। कभी भी नहीं।" उसने वजनदार आवाज में कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका भी मुस्कुराई और बोली, "मैं भी!" उसकी बात सुनकर वह मुस्कुराया।

"वादा!" उसने अपना हाथ बढ़ाकर कहा।

"पक्का वादा!" अनामिका ने उसके हाथ पर अपना हाथ रखते हुए कहा और फिर दोनों ही हँस पड़े।

"अच्छा ठीक है...मैं चेंज करके आता हूँ, फिर हम दोनों कोई गेम खेलेंगे। ठीक है।" उसने उठते हुए कहा और वहाँ से जाने लगा।

"वरूण!" अनामिका ने पीछे से आवाज़ दी, जिसके कारण वो पीछे को हुआ और उसे देखने लगा।
"मुझे झूला झूलना है। पर अकेले डर लगता है।" अनामिका ने पास ही के एक पेड़ में बंधे झूले की ओर इशारा करते हुए कहा।

वरूण ने एक नज़र उस झूले पर डाली और फिर अनामिका की ओर देखकर मुस्कुराते हुए बोला, "ठीक है! अभी आता हूँ।"

उसकी बात सुनकर अनामिका हल्के से मुस्कुराई और अपना सिर हाँ में हिला दिया।

हवा का एक तेज झोंका आया और वो अतीत से वर्तमान में वापस आ गया।

"अनामिका! मैंने तो आज तक भी किसी और को दोस्त नहीं बनाया, पर तुम सब भूल गई...लगता है। कोई बात नहीं! वापस लेकर आऊँगा तुम्हें। अपने पास! हमेशा के लिए!" वो खुद में ही बुदबुदाता और फिर बालकनी की रेलिंग पर झुककर खड़ा हो गया। अभी उसने चारों ओर देखना शुरू ही किया था कि तभी उसका फोन बजा। उसने फोन अपने ट्राउजर की जेब से निकाला और फिर स्क्रीन में दिख रहे नाम को पढ़कर तेजी से फोन उठाया।

"हाँ बोलो!" वरूण ने अधीरता से कहा, जिस पर सामने वाले ने कुछ कहा।

"पक्की बात है ना! यकीन है तुम्हें!" वरूण की आवाज हैरत से भरी थी। उसकी बात सुनकर एक बार फिर सामने वाले ने कुछ कहा।
"ठीक है सुनो! दिन की ड्यूटी के समय में.... मैं कभी-कभी सुबह लंबी साइकलिंग के लिए जाता हूँ। तो कल मैं यही बताकर निकल जाऊंगा। तुम मुझे चौराहे के पास मिलना। तो ठीक है! मिलते हैं कल सुबह।" कहते हुए वरूण ने कॉल कट कर दी। उसने चारों ओर नज़रें घुमाई। अपनी बातों की पोशीदगी (छुपना) पर यकीन होते ही वो तेजी से सीढ़ियों की ओर बढ़ गया। रात के खाने का वक्त हो चुका था। एक बार फिर से वो संजीदा भाव चेहरे पर लिए हुए खाने की मेज पर बैठ गया था। इस बार बगल की कुर्सी खिसकने की आवाज पर उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। मानो कि सबको ये जताने की कोशिश थी कि अब मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। हालांकि दिल और ऑखों ने बग़ावत करना चाहा था, जिन्हें उसने डपटा था।

"कल साइकलिंग के लिए जाऊँगा मैं!" वरूण ने जैसे सभी को इत्तिला दी थी, ताकि अगली सुबह कोई भी उसे फ़िज़ूल सवाल करके परेशान ना करें। खाना खाकर वो सीधे अपने कमरे में चला गया। अनामिका को उसकी बेरूखी अब परेशान करने लगी थी। आखिरकार वो उसका इकलौता करीबी दोस्त

था, जो आजकल उसकी कोई भी बात सुनना या समझना नहीं चाहता था। बहरहाल... अनंत कुमार और दूसरे लोग इस बात से राहत में लग रहे थे। गीता और परिधि भी अपना खाना खत्म कर टी वी के सामने बैठकर दिन भर की न्यूज़ सुन रही थीं। परिधि अब पहले की तुलना में बहुत सामान्य हो चुकी थी।

"आप वरूण को सब बता क्यों नहीं देते। इस तरह उससे बच-बचकर सब करना मुझे ठीक नहीं लग रहा है।" खाने की मेज पर बैठे हुए अनामिका ने अपनी आशंका जताते हुए कहा।

"हम्म! मुझे लगता है कि तुम सही कह रही हो। जल्द ही उसे सबकुछ बताना पड़ेगा। आजकल मुझे मेरी तबीयत भी सही नहीं लग रही है। ये समस्या जल्द सुलझानी पड़ेगी। फिलहाल कल तुम तीनों वरूण के निकलने के बाद जाना। अभी उसके सवालों का जवाब देने का सही वक्त
नहीं है। पर कल उससे जरूर बात करूंगा। तब तक तुम सब भी चुप ही रहना।" अनंत कुमार ने आश्वासन देते हुए कहा। सभी ने सहमति वाली हुंकारी भरी थी। उसी समय टी वी पर पिछले एक महीने से नवजात शिशुओं के गायब होने की खबर चल रही थी, जिस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

****

अगली सुबह वरूण के अपने साइकिल के साथ बाहर निकलते ही वे सब भी जाने के लिए तैयार हो गए। उनके सफर के आगाज़ का वक्त आ गया था। अनंत कुमार के कहने पर सभी ने अपने खंजर ध्यान से रख लिए थे। अब इस अंजाने से सफर में अहम कदम उठाने का समय आ चुका था और कोई भी लापरवाही उन्हें भारी पड़ सकती थी। उन तीनों को विदा करने के बाद अनंत कुमार ऊपर गए और दरवाजा खोलकर परिधि पर एक नज़र डाली थी। वो हमेशा की तरह पूरे इत्मीनान से सो रही थी। पिशाच के हमले के बाद से वो उसे अपनी विशेष सुरक्षा के घेरे में रखे हुए थे। मगर ना जाने क्यों... उन्हें किसी अनहोनी की आशंका कुछ दिनों से महसूस हो रही थी, जिसका अहसास हर दिन के साथ बढ़ता जा रहा था।

दूसरी ओर अनामिका ने उस जगह पर पहुँचकर कार रोकी थी, जहाँ पर उन्हें परिधि मिली थी। कार से उतरकर उन तीनों ने सड़क के दोनों ओर देखा। दूर-दूर तक घना जंगल फैला हुआ था।

"अनामिका! किस तरफ?" चैतन्य ने सवाल किया। अनामिका ने उसे उखड़ी हुई नज़रों से देखा। उसकी पिछले दिन की हिमाकत से वो अभी
तक नाराज़ थी और उससे बात नहीं कर रही थी। हालांकि चैतन्य ने उससे कई बार माफी मांगी थी, मगर उन दोनों को पास देखकर परिधि की मुस्कुराती हुई आँखें अनामिका को और भी शर्मिंदा कर रही थी। इसलिए वो लगातार उससे दूर भाग रही थी। मगर यह समय साथ काम करने का था और चैतन्य को लगा था कि काम के बहाने कम से कम वो बात तो करेगी... या फिर सुनेगी। मगर यहाँ भी अनामिका ने उससे बचने का रास्ता खोज लिया था और वो बस आशुतोष से ही बातें कर रही थी। चैतन्य को अब झुंझलाहट होने लगी थी।

"मुझे पता नहीं है आशुतोष जी कि वो किस तरफ से आई थी। हमने उसे यहाँ सड़क के बीच पड़ा देखा

था।" सड़क के उस हिस्से पर खड़े होकर अनामिका ने कहा।

"हम्म!" आशुतोष ने अनामिका की बात सुनकर चारों तरफ देखा और फिर अपनी ऑखें बंद कर लीं। अनामिका ध्यान से आशुतोष की ओर देख रही थी, जबकि चैतन्य का ध्यान अनामिका में लगा हुआ था। वो अनामिका के पास गया और फिर अपने कंधे से उसके कंधे को मारा, जिससे अनामिका ने उसे गुस्से से भरी घूरी दी थी। चैतन्य ने उससे ऑखों ही ऑखों से माफी मांगी और इल्तिज़ा भरी नज़रों से उसे देखने लगा। अनामिका ने मुँह बनाकर फेर लिया। चैतन्य ने एक और कोशिश की। जब एक बार फिर से अनामिका ने उसे गुस्से से देखा, तो उसने तेजी से अपने कान पकड़ लिए और ऑखों में ढेर सारी मासूमियत भरकर उसे देखने लगा। उसकी इस हरकत से अनामिका के माथे के बल गए तो नहीं, पर ढीले जरूर पड़ गए। उन दोनों में से कोई कुछ कहता उससे पहले ही आशुतोष की आवाज आई, "इस तरफ!"

अनामिका और चैतन्य ने देखा कि आशुतोष ने एक ओर के जंगल की ओर इशारा करते हुए ये कहा था।
"आपको कैसे पता?" चैतन्य ने बेयकीनी से कहा।

"क्योंकि मैं पृथ्वी रक्षक हूँ। इन सबसे बातें कर सकता हूँ। इसी जंगल ने मुझे सही दिशा बताई।" आशुतोष ने चैतन्य की आशंका दूर करते हुए कहा।

"और रास्ता!" अनामिका ने पूछा।

"आओ!" कहते हुए आशुतोष जंगल के उस छोर की ओर बढ़ गया, जिस तरफ जाने की उसे सलाह मिली थी। उसने सामने फैले जंगल को एक भरपूर नज़र से देखा और फिर नीचे घुटनों के बल बैठ गया। उसने अपना खंज़र बाहर निकाला और फिर उसे पूरी ताकत से जमीन पर गाड़ दिया। इसके साथ ही उसने तेज आवाज में कहा, "डायनों का बसेरा!"

उसके मुँह से यह निकलते ही उस खंजर के मूंढ़ पर लगा पत्थर चमकने लगा और फिर खंज़र के जमीन में घुसे हुए हिस्से के पास से एक हरी रोशनी वाली रेखा निकलकर आगे बढ़ते हुए जंगल में चली गई। आशुतोष ने दो मिनट इंतजार किया और फिर वो खंज़र बाहर निकाल लिया।

"ये देखो! रास्ता!" खंज़र को वापस रखते हुए आशुतोष ने उस हरी लकीर की ओर इशारा करते हुए कहा। यह देखकर चैतन्य और अनामिका के चेहरे पर एक मुस्कान आई थी। तीनों तेजी से उस हरी रेखा के साथ-साथ आगे बढ़ते चले गए।

कुछ आगे जाने पर चैतन्य ने पीछे मुड़कर देखा... उनके आगे बढ़ने के साथ ही वो रेखा पीछे की ओर मिटती जा रही थी। अब उन सभी को अपनी शक्तियों का मतलब समझ में आने लगा था। जल्द ही वे जंगल से घिरे उस खंडहर के पास खड़े थे, जिसे सभी डायनों का बसेरा कहते थे। किसी जमाने में खूबसूरती की मिसाल रही इमारत समय, मौसमों और हालातों की मार से जर्जर हो चुकी थी। तीनों ही अपनी ऑखों के तराजू में उस खंडहर को तौल रहे थे, जो अपने अंदर जाने क्या-क्या छिपा कर रखे हुए थी। ना जाने क्यों... पर अनामिका को वो जगह कुछ पहचानी हुई सी लगी.. जैसे कि वो यहॉ पहले भी आ चुकी हो।

"पर ढूँढना क्या है?" इमारत को घूरते हुए चैतन्य ने सबसे ज्यादा जरूरी सवाल किया।

"जो इस इमारत की हालत से मेल ना खाता हो। कोई भी ऐसी चीज... जिसे देखकर ये लगे कि ये यहाँ क्या कर रहा है? समझ में आई बात!" आशुतोष ने कहा। चैतन्य ने उलझन के साथ अपना सिर हिलाया था।

उन तीनों ने उस जीर्ण शीर्ण इमारत पर नज़र डाली और गहरी साँस लेकर अंदर चले गए। अंदर जाते ही समय बचाने के लिए वे तीनो अलग-अलग दिशा में जाकर खोजबीन करने लगे। अनामिका खंडहर के निचले और पिछले हिस्से की ओर खोजबीन कर ही रही थी। वहाँ उसे कुछ शीशे के टुकड़े दिखाई दिए। तभी उसे किसी की आहट सुनाई दी, जिसे उसने नज़र अंदाज़ किया था। मगर जल्द ही उसे अपनी भूल पता चल गई। सुबह के साथ-साथ बरसात का समय होने के कारण आसमान में बादल थे, जिससे चारों ओर नीम अंधकार फैला हुआ था। वो अपने काम में खोई हुई ही थी कि तभी किसी ने उसे पीछे से आकर जकड़ लिया। इस अचानक हमले से उसके गले से चीख निकल गई। इस चीख के बाद उसने हमलावर की पकड़ को कमजोर होता महसूस किया और अगले ही पल खुद को संभालते हुए उसने हमलावर के घुटने पर एक लात मारी और फिर अपनी एक कोहनी उसके पेट में घुसाई थी। उसके इस जवाबी हमले से हमलावर ने उसे छोड़ दिया और फिर अनामिका ने तेजी से मुड़कर उसके चेहरे पर एक जोरदार पंच मारा, जिससे वो छिटककर दूर जा गिरा। अनामिका ने फुर्ती से अपना खंज़र बाहर निकाल लिया और अब उस गिरे हुए हमलावर को पहचानने की कोशिश करने लगी, जो उस अंधेरे हिस्से की जमीन पर औंधा गिरा तड़प रहा था।
"कौन हो तुम?" अनामिका ने चेतावनी भरे लहजे में पूछा।

"अनामिका!" सामने से आवाज़ आई।

जानी-पहचानी आवाज में अपना नाम सुनकर अनामिका बुरी तरह चौंकी। उसके मुँह से सवाल निकला, "वरूण?"

"हाँ! मैं हूँ।" दर्द थोड़ा कम होने पर खड़ा होते हुए वरूण बोला।

"तुम... तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" अनामिका ने पूछा, जो उसे वहाँ देखकर सदमे में आ गई थी। दूसरी ओर अनामिका को वहाँ देखकर वरूण भी उतने ही सदमे में था।

"तुम इस वक्त यहाँ क्या कर रही हो?" वरूण की आवाज में घबराहट और चिंता दोनों मिले हुए थे। सकते में खड़ी अनामिका कुछ कह पाती उससे पहले ही उसके पीछे से चैतन्य की भी घबराई हुई सी तेज आवाज आई। दोनों का ही ध्यान चैतन्य की आवाज की ओर गया, जहाँ वो लगभग दौड़ते हुए अनामिका के पास आया था।

"अनामिका! क्या हुआ? तुम ठीक हो?" घबराए हुए चैतन्य ने एक ओर खड़े वरूण पर स्वाभाविक रूप से बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया और अनामिका के कंधों को पकड़कर उसे ऊपर से नीचे तक परेशानी से देखने लगा। वरूण ने आँखें फाड़कर एक नज़र अनामिका और एक नज़र चैतन्य पर डाली। इस सुनसान इलाके में उन दोनों को साथ देखकर एक बार फिर से वरूण की नसों का खून उबल-उबलकर उसकी आँखों तक में उतर आया था। उसने अपने अंदर के ज्वालामुखी को फटने से किस तरह रोका

था, ये वही जानता था। अनामिका ने झिझकते हुए चैतन्य के हाथों को अपने कंधों से हटाया और वरूण की ओर देखने लगी। चैतन्य की नज़रें भी उसकी नज़रों का पीछा करते हुए वरूण पर ठहरी थीं।
"वरूण! तुम!" चैतन्य का सवाल इन दो लफ्जों में सिमट गया।

"ओह! गलत सवाल! तुम दोनों यहाँ क्या कर रहे हो?" एक-एक शब्द को चबाते हुए वरूण ने पूछा।

"वो... दरअसल... बात ये है..." चैतन्य ने बोलने की कोशिश की।

"क्या बात है?" वरूण गुस्से से तेज लहजे में बोला।

अभी वो दोनों कुछ भी कहते उससे पहले ही पीछे से एक और आवाज आई। वरूण ने अपना सिर बाईं ओर झुकाकर चैतन्य के पीछे के टूटे हुए दरवाजे की ओर देखा, जहाँ से गंभीर मुख मुद्रा में आशुतोष ने प्रवेश किया। तेजी से आगे बढ़ते हुए आशुतोष की चाल वरूण को देखकर धीमी पड़ गई।

"अरे वाह! आईए! आईए! आप भी आइए! मुझे लगा कि इन दोनों का ही डूएट परफार्मेंस चल रहा है, पर नहीं... यहाँ तो तिकड़ी का तिकड़म चालू है।" वरूण जहर बुझी आवाज में बोला।

"ये यहाँ क्या कर रहा है?" आशुतोष ने अनामिका से फुसफुसाते हुए पूछा। जवाब में अनामिका ने इंकार में अपना सिर धीरे से हिलाया।

"हमारी छोड़ो! तुम यहाँ क्या कर रहे हो? क्या तुम्हारे पापा को पता है कि तुम यहाँ हो?" इस बार आशुतोष ने कड़क लहजे में पूछा।

"काम से आया हूँ!" वरूण ने भी खुश्क लहजे में कहा।

"काम! इस सुनसान.. बियाबान में!" आशुतोष का लहजा अभी भी सख़्त
था।

"वो तो आप सब भी आए हैं।" वरूण ने पलटवार करते हुए कहा।

"हम तो सचमुच काम से आए हैं। तुम्हारे पिता को भी मालूम है। ग़ौर करने वाली बात ये है कि मौजूदा हालातों में तुम्हारा यहाँ आना किसे-किसे पता है?" आशुतोष ने संदेह भरे लहजे में कहा।

आशुतोष का सवाल सुनकर वरूण के कसबल ढीले पड़े और फिर दबी हुई आवाज में उसने कहा,"सुराग की तलाश में आया हूँ।"

"सुराग! कैसे सुराग?" आशुतोष के साथ-साथ बाकी दोनों भी चौंके थे।

"मैं बताता हूँ।" वरूण की बजाए दूसरी ओर से आवाज़ आई। उन तीनों ने आने वाले को ग़ौर से देखा। आशुतोष और चैतन्य को तो वो शख़्स पहचान में नहीं आया, पर अनामिका उसे देखकर बुरी तरह से चौंकी थी।

"आप!"

अनंत कुमार स्टडी में बैठे हुए किसी किताब में खोए हुए थे। थोड़ी देर पहले ही परिधि की सुरक्षा का जायजा लेकर वो यहाँ फिर किसी खोज में जुटे हुए थे। पिछले कई दिनों से वो किसी खास जानकारी की खोज में थे और कल उन्हें मिले एक शब्द ने उनकी खोज को एक दिशा तो दी थी, फिर भी ये धुंध हटने का नाम नहीं ले रही थी।

"अल्फ़ी! ये किसी का नाम है... या कोई वस्तु... या फिर कोई और ही चीज। परिधि की सुप्त चेतना से निकला है, तो कुछ विशेष तो होगा इसमें।
पर मिलेगा कहाँ?" अपने हाथ में पकड़ी हुई किताब को भेज में फेंकते हुए अनंत कुमार ने झुंझलाहट से कहा।

"यहाँ मिलेगा!" एक सर्द सी आवाज़ अनंत कुमार के कानों से टकराई और चश्मे के पीछे उनकी ऑखें जैसे फैलकर उस चश्मे की बराबरी करने लगी। वो झटके से अपनी जगह से उठे और चारों ओर देखने लगे। उनकी नज़रें बेचैनी से उस कमरे का कोना-कोना खंगाल रही थीं, मगर हासिल कुछ भी नहीं हुआ।

"लगता है... वहम हो गया मुझे।" अनंत कुमार बुदबुदाए।

"कोई वहम नहीं है डॉक्टर! मैं यहाँ हूँ!" एक बार फिर से वही बर्फीली आवाज अनंत कुमार की हड्डियों में सिहरन बनकर दौड़ गई। उनकी ऑखें दरवाजे की ओर गईं और फिर वो तेजी से बाहर की ओर भागे। दरवाजे को बंद करके वो जैसे ही परिधि के कमरे की ओर जाने के लिए सीढ़ियों के पास पहुँचे, तो एक अजीब से अहसास ने उनके पैर रोक लिए। उन्होंने एक गहरी साँस ली और फिर पीछे की ओर मुड़े। मुड़ते ही उनकी ऑखों ने होश उड़ा देने वाला नज़ारा देखा।

आखिरकार वो उनके सामने खुलकर आ गया था, हालांकि शिनाख्त अभी भी अंधेरों में गुम थी। वो अपने भद्दे से पंखों के साथ उसके सामने हवा में लटका हुआ था। अनंत कुमार की चील की तरह पैनी निगाहें उस पर गड़ी हुई थीं और उन ऑखों में हैरानी ने अपना डेरा जमाए हुए था। ये दूसरी बार था कि ये पिशाच फिर से घर के अंदर आ पहुँचा था। पर कैसे?

"उस लड़की को बचाने के लिए अपनी ताकत ज़ाया मत करो। खुद भी
मरोगे और उसे भी बचा नहीं पाओगे। याद रखना उसे हर हाल में मरना है।" वो पिशाच गुर्राहट भरी आवाज में बोला। अनंत कुमार का तना हुआ चेहरा उसकी बात सुनकर एकदम से ढीला पड़ा था।

"अच्छा! तो फिर जाओ! ऊपर ही है वो! जाओ और मार दो उसे। खत्म करो अपना काम। यहाँ क्या कर रहे हो?" अनंत कुमार की आवाज में तंज घुला हुआ था। अनंत कुमार की बात सुनकर एक भड़की हुई सी गुर्राहट उस पिशाच के मुँह से निकली। उसकी ऑखें सुर्ख होकर जलने लगी थी और गुस्सा उस पर हर गुजरते हुए लम्हे के साथ और भी चढ़ने लगा था।

"क्यों? नहीं जा सकते! कोशिश करो ना! मुझे डराकर कुछ हासिल नहीं होने वाला तुम्हें।" एक बार फिर से अनंत कुमार की जहर बुझी आवाज सुनकर वो पिशाच बुरी तरह तिलमिला कर रह गया।

"तुझे क्या लगता है! तू मुझे रोक लेगा। ऐसी ही एक कोशिश में तुम्हारे उस महान तांत्रिक श्रेष्ठ को भी मरना पड़ा था... तू भी मरेगा।" अपनी ख़ौफनाक आवाज में आग उगलते हुए पिशाच ने कहा। उसकी यह बात सुनकर इस बार अनंत कुमार को जोरदार झटका लगा था।

"तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र! तुम उन्हें कैसे जानते हो? कौन हो तुम? तांत्रिक श्रेष्ठ की मृत्यु का राज कोई नहीं जानता सिवाए उनके दोस्त पीयूष और दिव्यांशु के। तो तुम कैसे जानते हो?" अनंत कुमार ने बदहवास से अपने सवाल दागे।

"मैं कैसे जानता हूँ? कैसे जानता हूँ मैं? क्योंकि.... मेरी वजह से ही तो मरा वो!" उस पिशाच ने एक जोरदार अट्टहास के साथ अपनी बात खत्म की। अनंत कुमार अपनी जगह पर जड़ होकर रह गए थे। उन्होंने सोचा नहीं था कि अतीत का ये गहरा राज इस तरह एक बार फिर से अपनी ऑखें मिचमिचाएगा।

"तुम्हारी वजह से!" अनंत कुमार को एक तेज झटका लगा था।

"हाँ! जब वो कुछ नहीं कर सका... तो तुम पिद्दी से रखवाले क्या कर सकते हो? इसलिए मेरी राह में रोड़ा मत बनो। जो मुझे चाहिए... वो मुझे दो! जान छोड़ दूंगा तुम सबकी।" पिशाच चिल्लाकर बोला।

एक पल सकते में खड़े अनंत कुमार ने अपने होश संभाले और फिर कहा, "अगर तांत्रिक श्रेष्ठ सच में कुछ नहीं कर सके थे, तो भीख क्यों मांग रहे हो? सच तो ये है कि तुम्हें लाचार बना गए हैं वो। सही कहा ना!" अपनी बात कहते हुए अनंत कुमार ने अपनी भौंहें झटकी।

अनंत कुमार की ढीढता देखकर उस पिशाच का पारा पूरी तरह से चढ़ गया और अपना दाँव खाली जाता देखकर वो बौखला गया था। उसे लगा था कि सभी रक्षकों के घर से चले जाने के बाद एक अधेड़ रखवाले को, जो अपनी शक्तियाँ लगातार खो रहा हो.... हैंडल करना मुश्किल नहीं होगा। पर अनंत कुमार के तेवर हमेशा की तरह उनकी उम्र पर भारी थे।

"लगता है कि ताकत के नशे में खोए हुए लोगों को खून से नहाए बिना चैन नहीं मिलता। चलो यही सही! अगर उस लड़की की कीमत तुम सबका लहू है, तो यही सही।" कहते हुए उस पिशाच ने अपने सीधे हाथ को अनंत कुमार की ओर इस प्रकार झटका दिया, जैसे कि उन पर कुछ फेंक रहा हो। अनंत कुमार कुछ समझ पाते... उससे पहले ही आग का एक छोटा सा गोला उनकी ओर तेजी से आया। वो तो उनकी मद्धिम पड़ती इंद्रिय अभी भी इतनी सक्रिय थी कि उन्होंने उस वार से खुद को बचा लिया और इस कोशिश में वो एक ओर लुढ़कते चले गए। किसी तरह उन्होंने खुद को एक सोफे के पीछे किया। "ये कैसे हो सकता है? इसके पास अग्नि की शक्ति! कौन है ये? इसके पास ये शक्ति कैसे आई?" अनंत कुमार का दिमाग बुरी तरह से घूम चुका था। वहीं वो पिशाच अब अपने पंख समेट कर जमीन पर

आ चुका था और सोफे की ओर अपनी नज़रें डाले चहलकदमी कर रहा था। अनंत कुमार ने सोफे की आड़ से उस पर एक निगाह डाली और अगले ही पल उन्होंने तेजी से खुद को फिर सोफे के पीछे किया था। उनके आंखों की हैरानी हर गुजरते लम्हे के साथ बढ़ती जा रही थी। अनंत कुमार ने देखा कि उस पिशाच का सारा शरीर आग की तरह धधक रहा था।
"क्या हुआ? हवा हो गई सारी हिम्मत! बाहर आओ और सामना करो। या फिर.... डर गए। रखवाले!" पिशाच की उलाहना से भरी आवाज आई।

पिशाच की शूल जैसी बातें अनंत कुमार के आत्मसम्मान पर चोट की तरह थीं। वो अपनी कर्तव्य परायणता पर आघात बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। उनकी शक्तियाँ चूकी जरूर थीं, पर खत्म नहीं हुई थीं। अपने अंदर के असमंजस को परे हटा कर वह उठ खड़े हुए और फिर नफरत और बदले की अग्नि में धधकते हुए उस पिशाच के सामने अकड़ कर खड़े हो गए।

"तुम एक रखवाले की हिम्मत और निष्ठा पर सवाल खड़े नहीं कर सकते। मैं अपने जीवन की आखिरी साँस और शक्ति की आखिरी बूंद तक संघर्ष करूँगा।" अनंत कुमार ने अपनी मुट्ठिया भींच ली और गरजते हुए बोले।

उनकी बात सुनकर वह पिशाच एक बार फिर वहशियाना तरीके से ठहाके लगाने लगा। अनंत कुमार चौकन्नी निगाहों से उसकी हर चाल को परखने की कोशिश कर रहे थे और आत्मरक्षा और आक्रमण दोनों के लिए ही तैयार थे।

"शक्ति की आखिरी बूंद! आखिरी बूंदें ही तो बची हैं। इतने दिनों तक उस लड़की को बचाने के लिए तुमने अपनी शक्तियाँ दाँव में लगा दी। तुम्हें क्या लगता है मुझे इसकी खबर नहीं। इसीलिए तो मैंने कई बार हमले का नाटक किया ताकि तुम्हारी ताकत कमजोर पड़ जाए और जब रखवाला ही कमजोर पड़ जाए तो कोई हिफाजत में कैसे रहे? सही कहा ना!" अपनी बात पूरी कर वह पिशाच कुटिलता से मुस्कुराया।

"तुम्हारा मतलब है...."

"हाँ! मैंने जानबूझकर यह सब किया। आज तुम्हारे रक्षक भी यहाँ नहीं
है और जब तक उन्हें खबर होगी.... तुम भी खबर बन जाओगे।" वह पिशाच अपनी पूरी कड़वाहट के साथ बोला और फिर एक बार फिर उसने अनंत कुमार पर अग्नि किरणों से हमला कर दिया। मगर इस बार अनंत कुमार पहले से तैयार थे। उन्होंने अपने हाथ की अंगूठी अपने हथेली की ओर घुमाई और फिर एक हल्की नीली रोशनी का गोल घेरा उनके सामने बन गया, जिसने दाल की तरह उन अग्नि किरणों को अनंत कुमार तक आने से रोक दिया। मगर अनंत कुमार और वह पिशाच दोनों ही जानते थे कि इस समय किसकी ताकत ज्यादा थी। थोड़ी ही देर में अनंत कुमार शिथिल होने लगे और उनके चेहरे और शरीर में तनाव बढ़ता चला गया। दूसरी तरफ अनंत कुमार की टूटती हुई ताकत के साथ उस पिशाच की मुस्कुराहट बढ़ती जा रही थी।

"आज तेरी मौत के साथ वो मुझे मिल जाएगा, जिसके लिए सदियों से इंतजार किया है मैंने।" अपनी बात खत्म करते-करते उस पिशाच ने अपने हाथों की हरकत बढ़ाई और फिर एक ही झटके में अनंत कुमार की शक्ति ने उसके सामने दम तोड़ दिया और वह निढाल होकर जमीन पर गिर पड़े। कोई भी कह सकता था कि बाजी उस पिशाच के हाथों में आ चुकी थी। अपनी मंजिल को अपने पास जानकर वह पिशाच अपने खौफनाक रूप में एक बार फिर अट्टहास करने लगा।

"खेल खत्म रखवाले!" इतना कहकर उस पिशाच ने एक बार फिर अग्नि गोला अनंत कुमार की ओर फेंका, जो तेजी जी से उनकी ओर बढ़ा था। सब कुछ खत्म होने ही वाला था कि एक बार फिर नियति ने पलटा खाया। एक तीव्र रोशनी आकर उस अग्नि गोले से टकराई और फिर वह अग्नि गोला भाप बनकर उड़ गया। इस अचानक हुई घटना से अनंत कुमार और वह पिशाच दोनों ही सकते में पड़ गए। दोनों की ही नजरें उस तरफ उठी थी जहाँ से वह तीव्र रोशनी आई थी। अनामिका अभी भी आक्रमण की मुद्रा में खड़ी थी। उसके पीछे आशुतोष और चैतन्य भी हर स्थिति के लिए तैयार खड़े थे। उनके पीछे अपनी आंखें फाड़े हुए वरुण और इंस्पेक्टर
अंकित बेआवाज खड़े हुए थे।

"ऐसा नहीं हो सकता। तुम यहाँ कैसे आए?" वो पिशाच गुस्से और निराशा से इतनी जोरों से चिल्लाया कि उस घर की दीवारें भी हिलने लगी।

"तुम्हें क्या लगा था? तुम कुछ भी करोगे और हम होने देंगे। गलत कितना भी ताकतवर हो... कभी ना कभी चूकता जरूर है। तो... तुम भी चूक गए।" अनामिका ने उसे चिढ़ाते हुए कहा। अनामिका की बातों से तैश में आकर उस पिशाच ने उस पर हमला किया, मगर गुस्से में वो चैतन्य और आशुतोष को नजरअंदाज कर गया था। आशुतोष की उंगलियों का एक इशारा हुआ और खिड़कियों के पास लगी बेलें शीशों को तोड़ती हुई अंदर आ गईं और उस पिशाच को अपनी मजबूत गिरफ्त में ले लिया।

"आ गया पकड़ में!" आशुतोष उसे छटपटाते देख कर मुस्कुराया। चैतन्य और अनामिका ने भी मुस्कुराने में उसका साथ दिया। मगर सामने वाले की ताकत को उन तीनों ने ही कम आंक लिया था। उसने अपना खौफनाक चेहरा ऊपर की ओर उठाया और अपनी दहकती हुई ऑखें उन पर डालते हुए एक वहशी हँसी से उन सब को नवाजा। सब उसकी उस हंसी का रहस्य समझ पाते उससे पहले ही उसका पूरा शरीर टुकड़ों में बिखरता चला गया और फिर उन टुकड़ों ने ढेर सारे चमगादड़ओं का रूप लेकर उस विशाल कमरे की छत पर तेजी से चक्कर लगाना शुरू कर दिया। पूरा कमरा उन चमगादड़ओं की तेज चीखती हुई आवाजों से भर गया था। वह आवाज इतनी कर्कश थी कि सभी को अपने कानों पर हाथ रखने पड़े। इससे पहले की वे तीनों इसका प्रतिरोध करने के लिए कुछ करते वह सारे चमगादड़ तेजी से ऊपरी रोशनदान को तोड़ते हुए बाहर निकल गए। बहुत देर तक उनकी लगातार धीमी होती हुई आवाज उन सब के कानों को दहलाती रही। थोड़ी ही देर में सब कुछ सामान्य हो गया।

अनामिका तेजी से दौड़ कर अनंद कुमार के पास पहुँची, जो बेहोशी की
हालत में फर्श पर पड़े हुए थे। आशुतोष और चैतन्य भी तेजी से उनके पास पहुँचे। दूसरी ओर वरुण और इंस्पेक्टर अंकित अपनी गर्दन हिलाते हुए ही सारी घटनाओं का अपनी ऑखों से जायजा ले रहे थे। सब शांत होने के बाद उन दोनों की हालत बयान करने लायक नहीं थी। यकीनन वे दोनों अपने आप को किसी ख्वाब में सोच रहे थे। मगर वरुण की यह सोच अनामिका की तेज आवाज से टूटी।

"वरूण! जल्दी आओ। अंकल बेहोश हो गए हैं।" अनामिका जोर से चिल्लाई, जिससे वरुण हकीकत में आया और चारों ओर अपनी नजरें घुमाते हुए हालातों का जायजा लेने लगा।

"बेवकूफ जल्दी आओ और चेक करो अंकल को!" एक बार फिर से अनामिका की तेज झिड़की भरी आवाज आई।

वरुण ने देखा कि चैतन्य और आशुतोष ने अनंत कुमार को सोफे पर सावधानी से लिटा दिया था। वह

बेहोश पड़े हुए थे। अपने पिता को इस तरह देख कर वरुण के दिमाग ने अचानक काम करना शुरू किया और वह तेजी से भाग कर उनके पास आया। उसने उनका हाथ उठाकर उनकी नब्ज टटोली और फिर राहत की साँस लेते हुए बोला, "ठीक है! बेहोश हो गए हैं! मैं एक इंजेक्शन दे देता हूँ। थोड़ा आराम करेंगे तो ठीक हो जाएँगे।"

कुछ ही देर में अनंत कुमार अपने कमरे में सही सलामत लेटे हुए थे। वरुण उनके सिरहाने पर बैठा हुआ उनके सिर पर हाथ फिरा रहा था। उसके चेहरे पर चिंता और हैरानी दोनों घुल मिल गए थे। दूसरी ओर इंस्पेक्टर अंकित पूरे कमरे में तेज कदमों से चहल कदमी कर रहा था। अभी कुछ समय पहले जो कुछ भी हुआ और जो कुछ भी उसने देखा, उस पर उसे अभी भी यकीन नहीं हो रहा था। होना भी नहीं चाहिए था। आशुतोष, चैतन्य और अनामिका एक ओर खड़े हुए थे।
"कोई समझाएगा हमें... कि अभी-अभी हुआ क्या था?" अंकित की बौखलाहट हर पल बढ़ती जा रही थी।

चैतन्य ने कुछ कहने की कोशिश की, मगर आशुतोष ने उसे तेजी से रोका और अंकित की ओर देखकर बोला "मुझे लगता है कि इस सवाल का जवाब डॉक्टर साहब ज्यादा अच्छी तरह से दे सकते हैं। पूरी जानकारी तो हमें भी नहीं है।"

अंकित और वरुण ने हैरानी से एक दूसरे की ओर देखा और फिर एक एक नजर उन तीनों पर डाली। वे दोनों तो किसी और चक्कर में उस डायनों के बसेरे की ओर गए थे, मगर यहां तो मामला कुछ और ही था जो ना सिर्फ उनके सर के ऊपर से गुजर गया था बल्कि उनके दिमाग को भी उड़ा कर ले गया था। आशुतोष की बात सुनकर अंकित अपना सिर पकड़ कर एक कुर्सी पर गिर गया।

"परिधि और गीता!" अचानक अनामिका चिल्लाई।

अनामिका के कहने पर उन सबको याद आया कि इस घर में दो और लोग भी मौजूद थे और अभी तक उन्होंने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया था। अपनी बात खत्म कर अनामिका तेजी से उन दोनों के कमरे की ओर भागी थी। आशुतोष और चैतन्य भी अनामिका के पीछे भागे। जब उन्होंने परिधि का कमरा खोला तो उसे चैन भरी नींद के साथ देखा। उसे सही सलामत देखकर उन तीनों ने राहत की साँस ली। इसके बाद वे तीनों गीता के कमरे की ओर बढ़े। उसके कमरे के अंदर घुसते ही उसका खाली बिस्तर तीनों को परेशान कर गया। बेचैनी से उन्होंने अपनी नजरें घुमाई, तो वो उन्हें खिड़की के नीचे बेहोश पड़ी मिली। अनामिका तेजी से उसकी ओर लपकी थी।सुबह के पाँच बजने वाले थे, जब वरूण अपनी स्पोर्ट्स साइकिल लेकर विला से बाहर निकला। चारों ओर चौकन्नी निगाहें रखे हुए वो चौराहे तक पहुँचा। चौराहे के नीम के पेड़ की ओर नज़र दौड़ाई तो एक काले रंग की महिन्द्रा स्कार्पियो खड़ी दिखी। वरूण तेजी से उसकी ओर गया और फिर अपनी साइकिल रोक दी। ड्राइविंग सीट वाला शीशा नीचे उतरा और उसमें से इंस्पेक्टर अंकित ने बाहर झांककर देखा। इशारा मिलने पर वरूण ने अपनी साइकिल गाड़ी में पीछे की ओर रख दी और अंकित के बगल में बैठ गया। कार तेजी से जंगल की ओर आगे बढ़ गई।

"तुम्हें पक्का यकीन है ना!" वरूण ने एक बार फिर से तस्दीक किया।

"हाँ यार! पक्की खबर है। मेरे खबरी ने बताया है।" अंकित पूरे आत्मविश्वास के साथ बोला।

"दूसरों को तो पता नहीं चलेगा ना!" वरुण ने शंका भरी आवाज में कहा।

"नहीं बोलेगा वो। वैसे भी वो मेरे लिए काम करता है और इस खबर
के लिए मोटी रकम दी है मैंने।" अंकित ने एक बार फिर से वरूण को आश्वस्त किया था।

"हम्म! फिर चलो! अब वहीं से कुछ मिलेगा।" वरूण ने भी तसल्ली से कहा।

उसकी बात सुनकर अंकित ने कार तेजी से आगे बढ़ा दी। जल्द ही दोनों जंगल के उस हिस्से में पहुँच गए, जहाँ से डायनों के बसेरे का रास्ता था। अंकित पहले भी कई बार यहाँ आ चुका था, इसलिए उसे रास्ता पता था। गाड़ी को जंगल के अंदरूनी हिस्से में छिपाकर वे दोनों आगे बढ़े और डायनों के बसेरे के सामने खड़े होकर उसे देख रहे थे।

"तुम इन सबमें इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे हो?" अंकित ने वरूण से पूछा। नज़रें इमारत पर ही जमी थी।

"है कोई वजह। वैसे तुम भी कुछ ज्यादा ही दिलचस्पी नहीं ले रहे हो, जबकि पुलिस डिपार्टमेंट ने ऐसा कुछ होने से साफ इंकार कर दिया है।" वरूण ने भी जर्जर इमारत पर नज़रें दौड़ते हुए कहा।

"मेरी भी अपनी वजहें हैं। चलें!" अंकित ने हाथ से आगे बढ़ने का इशारा करते हुए कहा। वरूण ने सहमति में सिर हिलाया और दोनों ही अंदर की ओर चल दिए।

वो एक बहुत ही पुरानी इमारत थी, जो समय की मार से बुरी तरह आहत थी। चारों ओर से ढह चुकी ये इमारत अभी भी लोगों के अंदर डर को पालती-पोसती थी। इस इमारत के विषय में लोगों की कानाफूसियों ने ना जाने कौन-कौन सी कहानियों ने जन्म दिया और उन्हें फलता-फूलता रखा। मगर वास्तव में दो सौ साल पहले यहाँ क्या हुआ था, कोई भी नहीं जानता था। किस तरह कुछ महिलाएँ राख बनकर खो गईं, किसी को ये
राज पता नहीं चल सका। पता था तो बस ये कि वे सब डायनें थीं। या फिर... शायद किसी को पता था, जो आज भी अपनी जुबान के ताले को बंद करके छिपा बैठा था। मगर जब अतीत के सबक वर्तमान के अध्याय को खराब करने लगें, तो ऐतराज उठना स्वाभाविक था।

वरूण और अंकित दोनों अंदर की ओर गए और ना जाने क्या तलाश कर रहे थे। कुछ ही देर में वे दोनों अलग-अलग हो गए। वरूण अभी अपने चश्मे को ठीक करता हुआ नज़रों की तेजी को बढ़ा ही रहा था कि उसे कुछ कदमों की आहट सुनाई दी। पहले तो उसे लगा कि अंकित होगा, मगर उसे याद आया कि योजना के अनुसार अंकित ऊपर के हिस्से में था। उसने कुछ सोचा और उस खुली-खुली जगह के एक अंधेरे कोने में इस तरह से सिमट गया कि आने वाले को वो दिखाई ना दे। हालांकि वो उम्मीद कर रहा था कि आने वाला अंकित ही हो। पर जिस जानकारी की बुनियाद पर वे दोनों यहाँ आए थे, किसी और का यहाँ आना आश्चर्य की बात नहीं थी।

कुछ ही देर में एक धुंधला सा साया उसे नज़र आया। वरूण ने अपनी नज़रें सिकोड़ कर देखीं, पर उसे सब धुंधला ही दिखाई दे रहा था। झुंझलाकर उसने अपना चश्मा उतारा और उसे रगड़कर साफ किया। एक बार फिर उसे अपनी नाक पर बिठाकर उसने सामने देखा। धुंधलापन बदस्तूर कायम था। वरूण की नसें तन गईं, पर ध्यान से देखने पर उसे समझ आ गया कि सामने अंकित नहीं था। वो जो कोई भी था कुछ ढूंढ रहा था। वरूण को अपनी और अंकित की योजना बिगड़ती महसूस हुई। कुछ सोचकर वो दबे पाँव आगे बढ़ा। आश्चर्यजनक रूप से सामने वाले ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसने इसका फायदा उठाया और तेजी से आगे जाकर उसे जकड़ लिया। लेकिन अगले ही पल उसकी चीख सुनकर वरूण

की पकड़ ढीली हो गई। ये तो अनामिका की आवाज थी। अभी वरूण कुछ और सोचता या बोलता सामने वाले ने उस पर हमला कर दिया और जल्द ही वरूण अपनी नाक संभाले हुए जमीन में पड़ा था। उसके
आवाज देने पर अनामिका को हैरत का तेज झटका लगा था। उसी समय वहाँ क्रमशः चैतन्य और आशुतोष भी आ गए, जिन्हें देखकर वरूण का मन खराब हो गया था। वरूण के उन सभी के वहाँ होने की वजह पूछने पर आशुतोष ने पलटकर उसी से सख़्त लहजे में सवाल किया था।

"हमारी छोड़ो! तुम यहाँ क्या कर रहे हो? क्या तुम्हारे पापा को पता है कि तुम यहाँ हो?" इस बार आशुतोष ने कड़क लहजे में पूछा।

"काम से आया हूँ!" वरूण ने भी खुश्क लहजे में कहा।

"काम! इस सुनसान.. बियाबान में!" आशुतोष का लहजा अभी भी सख़्त था।

"वो तो आप सब भी आए हैं।" वरूण ने पलटवार करते हुए कहा।

"हम तो सचमुच काम से आए हैं। तुम्हारे पिता को भी मालूम है। ग़ौर करने वाली बात ये है कि मौजूदा हालातों में तुम्हारा यहाँ आना किसे-किसे पता है?" आशुतोष ने संदेह भरे लहजे में कहा।

आशुतोष का सवाल सुनकर वरूण के कसबल ढीले पड़े और फिर दबी हुई आवाज में उसने कहा,"सुराग की तलाश में आया हूँ।"

"सुराग! कैसे सुराग?" आशुतोष के साथ-साथ बाकी दोनों भी चौंके थे।

"मैं बताता हूँ।" वरूण की बजाए दूसरी ओर से आवाज़ आई। उन तीनों ने आने वाले को ग़ौर से देखा। आशुतोष और चैतन्य को तो वो शख़्स पहचान में नहीं आया, पर अनामिका उसे देखकर बुरी तरह से चौंकी थी।
"आप!"

"तुम जानती हो इसे?" चैतन्य ने अनामिका से पूछा।

"हाँ! इंस्पेक्टर अंकित हैं, जो परिधि का केस देख रहे हैं।" अनामिका ने जानकारी देते हुए कहा।

"ओह! आपसे मिलकर खुशी हुई। पर आप दोनों यहाँ क्या कर रहे हैं?" अपने अंदर के चोर को छुपाते हुए आशुतोष ने कहा।

आशुतोष का सवाल सुनकर वरुण और अंकित एक दूसरे की ओर देखने लगे। उनकी इन नज़रों ने आशुतोष की नज़रों को पैना किया था।

"आप लोग क्या कर रहे हैं यहाँ? पहले ये बताईए!" अंकित ने पलटकर सवाल किया था। इस बार नि:शब्द होने की बारी उन तीनों की थी। सभी बगले झांकने पर मजबूर थे क्योंकि वहाँ आने का कारण अंकित को ना तो बता सकते थे और ना ही समझा सकते थे। दोनों ओर कुछ देर चुप्पी छाई रही। वरूण

एक बार फिर से अपना चश्मा साफ कर रहा था, उसी समय उसके कानों में किसी के जोरों से हँसने की आवाज आई। वो चौंककर चारों ओर देखने लगा। उसकी इस हरकत से सभी हैरानी से उसे ही देखने लगे।

"वरूण! क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"कोई हँसा अभी!" वरुण बोला।

"नहीं! हमने तो नहीं सुना!" आशुतोष ने हैरानी से कहा और सभी की ओर देखा। सभी ने सिर हिला कर आशुतोष की बात का समर्थन किया।
"नहीं! नहीं! कोई तो है! शायद दो लोग हैं। बातें कर रहे हैं।" वरुण अपने सीधे कान पर उंगलियाँ रखते हुए बोला।

"पर हमें तो कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा है!" इस बार चैतन्य ने इंकार किया।

"तुम्हें दूसरों की बात कभी सुनाई भी दी है। हमेशा बस अपनी ही बात सुनना चाहते हो। है ना!" वरुण ने उलाहना भरे शब्दों के साथ चैतन्य से कहा।

"मतलब क्या है तुम्हारा?" चैतन्य अपनी एक भौंह चढ़ाकर उसकी ओर बढ़ा था। आशुतोष ने मामला समझते हुए तेजी से चैतन्य का रास्ता रोका।

वरूण कुछ कहने को हुआ ही था कि उसे फिर कुछ सुनाई दिया और जो भी सुनाई दिया उससे उसके माथे पर बल आ गए। वो हड़बड़ाकर बोला, "गाइज़! उनके बीच झगड़ा हो रहा है। शायद लड़ाई हो रही है। चलो!"

अपने कानों पर जोर देता हुआ वो तेजी से एक ओर भागा। वहाँ खड़े किसी भी व्यक्ति को सोचने का वक्त नहीं मिला। वो सब भी उसके पीछे लपके थे। हड़बड़ाया हुआ सा वरूण चारों ओर देखता हुआ पता नहीं क्या सुन-देख रहा था, जो और किसी और को सुनाई-दिखाई नहीं दे रहा था। लगभग भागते हुए वरूण के कदम एक टूटे-फूटे से दरवाजे के सामने रूके। अपनी चढ़ी हुई साँसों के साथ वरूण उस दरवाजे को घूर रहा था। बाकी सभी उसके पीछे खड़े... हाँफते हुए उसे देख रहे थे।

"क्या हुआ? इस दरवाजे को क्यों घूर रहे हो?" अंकित ने वरूण और उस दरवाजे को एक-एक करके देखते हुए पूछा।
"इस... इस दरवाजे के पीछे कोई है!" वरूण ने अपनी ऊंगली से उस दरवाजे की ओर इशारा करते हुए कहा।

"हैं! यहाँ!" कहते हुए अंकित ने आगे बढ़कर वो दरवाजा खोला। मगर उसके पीछे कोई नहीं था। वरूण को ये देखकर झटका सा लगा। उसे पूरा यकीन था कि उसने यहीं से आवाजें सुनी थीं, पर फिलहाल तो कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वो सभी वहाँ से जाने के लिए मुड़े ही थे कि एक तेज कराहने की आवाज वरूण के कानों से टकराई। उसके शरीर का रोम-रोम भय से खड़ा हो गया, जब उसने उस आवाज को इस बार पहचान लिया। ये उसके पिता की आवाज थी और अब उसे उस दरवाजे के पीछे से साफ-साफ सुनाई दे रही थी। कोई और भी था, जो जोरों से ठहाके लगा रहा था। उसके पिता की आवाज उसे यहाँ कैसे सुनाई दे रही थी... वरूण ने इस पर जरा सा भी ग़ौर नहीं किया। वो बस तड़पकर उस दरवाजे की

ओर भागा। उसे इस तरह भागता देखकर बाकी सभी भी उसके पीछे भागे। दरवाजे के पास पहुँचकर वरूण ने झटके से वो दरवाजा खोला और आश्चर्यजनक रूप से इस बार उस दरवाजे की दूसरी तरफ उनके घर का हॉल था। वरूण के साथ-साथ सभी सकते में थे कि ऐसा कैसे हुआ। उसी समय एक बार फिर से अनंत कुमार के कराहने की आवाज आई, जिसे सुनकर आशुतोष, चैतन्य और अनामिका तेजी से आगे गए।

सामने का दृश्य यकीन करने लायक बिल्कुल भी नहीं था। अनंत कुमार फर्श पर अचेत से गिरे हुए थे और उनके सामने एक अविश्वसनीय प्राणी खड़ा हुआ उन पर आग का गोला फेंकने ही वाला था। उस प्राणी की मंशा समझकर अनामिका तुरंत अपनी भूमिका में आई और उसने भी ऑखें बंद करके जल का आह्वान किया। एक तरफ उस पिशाच ने अनंत कुमार की ओर अग्नि गोला फेंका, दूसरी तरफ अनामिका ने भी अपनी जल शक्ति का प्रहार किया। नतीजा अनामिका के पक्ष में रहा। उन सभी को वहाँ देखकर वो पिशाच पहले तो हैरान हुआ और फिर वहाँ से भाग निकला।
किसी की भी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि आखिर अभी-अभी हुआ क्या था! इन सोच-विचार के बीच में अनामिका को गीता और परिधि का ख्याल आया और वो उनके कमरे की ओर भागी। परिधि तो चैन से सो रही थी, मगर गीता अपने बिस्तर की बजाए कमरे की खिड़की के पास फर्श पर बेहोश मिली। अनामिका ने तेजी से उसे उठाया। चैतन्य पानी लेकर आया और उसके मुँह पर छींटे मारे। अगले ही पल गीता को होश आने लगा। वो कराहते हुए अपना सिर पकड़कर बैठ गई।

"गीता! तुम यहाँ फर्श पर क्या कर रही हो?" अनामिका का चिंता में डूबा सवाल आया।

"वो मैं... पढ़ रही थी। नींद आ रही थी, तो चलते-चलते पढ़ने लगी। अचानक सिर भारी हुआ... फिर उसके बाद कुछ याद नहीं।" गीता ने बड़ी ही मुश्किल से कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने चिंता से चैतन्य और आशुतोष की ओर देखा और बोली, "इसे हजार बार कहा है कि इतना तनाव लेकर ना पढ़े। पर सुनती ही नहीं। तबीयत तो खराब होनी ही थी।"

"कोई बात नहीं! गीता! अब तुम ये किताब छोड़ो और आराम करो। मैं भी कल से देख रहा हूँ कि तुम्हें किसी चीज का होश-ख्याल नहीं है। ये ठीक नहीं है।" चैतन्य ने भी उसे डपटा था।

"सॉरी!" गीता की कमजोर सी आवाज़ आई। अनामिका ने उसे पानी पिलाया, जिससे उसे थोड़ा बेहतर महसूस हुआ।

"चलो बिस्तर में! आराम करो!" उठने में गीता की मदद करते हुए अनामिका ने कहा। चैतन्य ने भी सहायता की। खड़े होने पर अनामिका
उसे बिस्तर तक ले गई, जबकि चैतन्य की नज़रें खिड़की के काँच पर गई थी। वो उसे अपलक निहार रहा था, उसी समय उसे एक झटका सा लगा और उसकी ऑखें एक पल के लिए बंद हुई और फिर झटके से ऑख खुलते ही उसने कंधे पर अनामिका के हाथ को महसूस किया।

"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"कुछ नहीं! चलो!" चैतन्य ने बात हवा करते हुए कहा और दरवाजे की ओर बढ़ गया। गीता एक बार फिर से नींद की आगोश में जा चुकी थी। दरवाजा बंद करने से पहले अनामिका ने एक बार फिर से पूरे कमरे में नज़र दौड़ाई और फिर दरवाजा बंद कर अनंत कुमार के कमरे की ओर बढ़ गई। आशुतोष और

चैतन्य पहले ही जा चुके थे।

****

सभी गंभीर मुख मुद्रा लिए अपनी-अपनी जगह पर बैठे हुए थे। अनंत कुमार को होश आ गया था और सभी के साथ अंकित को भी वहाँ देखकर वो थोड़े उलझन में थे क्योंकि जो कुछ भी हुआ था, उसे सबके साथ-साथ वरूण को भी समझाया जा सकता था, पर अंकित को समझाना आसान नहीं था। और वो... बस सभी के चेहरों को इस तरह से टुकुर टुकुर देखे जा रहा था, जैसे कि उनमें से कोई उसके दिमाग के उलझे हुए धागों को खोल दे। सभी को सदमे में देखकर अंकित ने ही अपना मुँह खौला। "कोई कुछ बताएगा कि हुआ क्या है? अब तो डॉ. अनंत को भी होश आ गया है।" वो बेचैनी से बोला था।

अंकित की बात सुनकर सभी की नज़रें अनंत कुमार की ओर उठी। उन्होंने कुछ कहने के लिए मुँह खोला, मगर एक ठंडी आह के साथ उसे बंद भी कर लिया। आशुतोष ने उनके अंदर की उलझन को समझते हुए पलटकर सवाल करते हुए कहा, "वो सब बाद में! पहले ये बताओ कि तुम दोनों वहाँ क्या कर रहे थे?"

आशुतोष का सवाल सुनकर अंकित ने एक गहरी और सख़्त नज़र उस पर डाली और फिर एक गहरी साँस छोड़ते हुए बोला, "पिछले एक महीने से नवजात शिशुओं के गायब होने की खबरें मिल रही हैं, बस उसी सिलसिले में वहाँ गए थे।"

"क्या??? पर बच्चों के गायब होने और उस खंडहर में क्या संबंध?" अनामिका ने चिहुंक कर कहा।

"क्योंकि मेरे खबरी ने सूचना दी थी कि एक आदमी किसी बच्चे को उन खंडहरों में ले गया था। जब वो वापस सड़क पर आया, तो उसके हाथ खाली थे। उसे जब पकड़कर पूछा गया तो उसे कुछ याद नहीं था। उसने साफ इंकार कर दिया। इसलिए छानबीन के लिए गए थे।" अंकित ने अपनी बात कही।

"पर वरूण तुम्हारे साथ वहाँ क्या कर रहा था?" आशुतोष ने अगला सवाल वरूण की ओर देखते हुए किया था।

"कुछ दिन पहले वरूण ने सीसीटीवी फुटेज के बारे में पूछने के लिए मुझे फोन किया था, जिसमें कोई अजीब सी चीज क़ैद हुई थी। मगर ऊपर से
आर्डर आया कि वो सब बकवास है, इसलिए उन विडियोज को नष्ट कर दिया गया। मगर मेरा मन नहीं माना और जब... वरूण ने भी अपनी शंका और सहमति जाहिर की, तो फिर हम खुद ही सच जानने की कोशिश में वहाँ गए थे।" अंकित ने जवाब दिया।

"पर वहाँ क्यों?" चैतन्य ने पूछा।

"क्योंकि परिधि की आखिरी याद वहीं से जुड़ी थी और उस अजीब चीज को परिधि के कमरे की खिड़की से ही निकलते देखा गया था। अब गुम हुए बच्चों का संबंध भी उस खंडहर से जुड़ गया, तब मुझे कुछ अजीब सा लगा। वैसे भी क्या आप लोगों को ऐसा नहीं लगता कि परिधि के कमरे से निकले उस प्राणी और गुम हुए बच्चों के बीच कोई संबंध हो सकता है।" अंकित ने सवालिया नज़रों से सबको देखते हुए कहा।

"कैसा संबंध?" इस बार अनंत कुमार ने चौंककर कहा था।

अंकित ने अनंत कुमार की ओर तेज नज़रों से देखते हुए कहा, "पिशाच और रक्तपान का संबंध!"

अंकित की बात सुनकर सभी को जैसे साँप सूंघ गया था। सभी सदमे की हालत में अपनी-अपनी जगह पर जम गए थे।

"वो जो यहाँ से भागा... वो पिशाच था ना! पर वो यहाँ क्या कर रहा था? हम उस खंडहर से यहाँ कैसे आ गए? अनामिका और आशुतोष जी ने उसे कैसे रोककर भगाया? मुझे ये कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। कोई समझाएगा!" अंकित ने अपनी उलझनें सामने रखीं।

"तुम... पिशाच के बारे में... कैसे जानते हो?" एक बार फिर से अनंत कुमार की सदमे भरी आवाज आई।
"मैं कैसे जानता हूँ?" कहते हुए अंकित के चेहरे पर एक दर्द भरी मुस्कान उभर आई। उसके चेहरे के दर्द ने सभी को चौंकाया था। अंकित ने उन सबकी ओर देखा और कहा,

"क्योंकि पिछले दस सालों से उसे ही तो ढूंढ रहा हूं मैं।"

कमरे में सन्नाटा पसरा हुआ था। अंकित की बात किसी को भी समझ में नहीं आ रही थी। आखिर वो उस पिशाच को जानता कैसे था और उसे क्यों ढूंढ रहा था? सवालों की मथनी उनके दिमाग और होश दोनों को ही मथ रही थी। अंकित अब एक कुर्सी पर हथेलियों में अपना चेहरा छिपाए बैठा हुआ था। सभी एकटक उसे ही देख रहे थे और उसके आगे के शब्दों का इंतजार कर रहे थे।

"और आप... आप सब भी उसकी तरह ही हैं!" अचानक अंकित ने घबराकर उन सभी की ओर देखते हुए कहा।

"नहीं! नहीं! हम उसकी तरह नहीं हैं। हम सभी खुद भी उससे पूरी तरह से अनजान हैं।" अनंत कुमार ने

सधी हुई आवाज में कहा।
"तो फिर कौन हैं आप लोग? मेरी तरह तो बिल्कुल भी नहीं हैं!" अंकित का हैरानी से लिपटा सवाल आया।

"देखो अंकित! मुझे नहीं लगता कि अब तुमसे कुछ भी छिपाने का कोई भी औचित्य है। मगर पहले तुम बताओ कि तुम इन सबमें कैसे फँस गए? हमारे लिए ये जानना बहुत जरूरी है।" अनंत कुमार ने औपचारिकता और झिझक को एक तरफ करते हुए अंकित से पूछा।

"लंबी कहानी है।" अंकित ने आह भरते हुए कहा।

"ना जाने कितनी अनसुनी कहानियों में हम सभी का भविष्य उलझा हुआ है। चलो तुम्हारी कहानी से ही शुरूआत करते हैं।" अनंत कुमार ने नर्म लहज़े में कहा। अंकित ने अनंत कुमार की ओर देखा। उनकी आँखों में उसे यकीन की रोशनी दिखाई दी, जिसने उसकी उलझनों को निकल जाने का रास्ता दिया। वो कुछ देर सिर झुकाकर बैठा रहा, जैसे कि अपनी कहानी का सिरा पकड़ने की कोशिश कर रहा हो।

"मैं... ऐसे ही... इस पुलिस की नौकरी में नहीं आ गया। मुझे तो शुरू से ही एक पायलट बनना था और मेरे दिन-रात अपने उसी सपने को पूरा करने में गुजर रहे थे। सब कुछ बहुत ही बढ़िया था मेरी जिंदगी में। मेरे सपने थे.... अपने थे.... और ढेर सारी खुशियाँ थीं। और तभी.... एक तूफान आया और सब कुछ बहाकर ले गया।" कहकर अंकित ने एक गहरी साँस भरी थी।

"क्या हुआ था?" अनंत कुमार ने सवालों भरी आँखों से उसे देखते हुए पूछा।

"आज से दस साल पहले की बात है। मेरे भैया अभिनव पुलिस में थे। उन
दिनों भी शहर में नवजात शिशुओं के गायब होने की खबर फैली हुई थी और मेरे भैया ही इसकी छान-बीन कर रहे थे। भैया ने बताया कि करीब चार बच्चे खोए थे। मुझे याद है कि उस समय इस केस की वजह से कैसे उनके दिन-रात एक हो गए थे। उन पर जैसे कोई जूनून सवार हो गया था। वो उस अपराधी के नजदीक ही थे कि तभी... एक आदमी को इस सिलसिले में गिरफ्तार कर लिया गया। उसने बताया कि उसने ये बच्चे किसी ऐसे आदमी को बेच दिए, जिसे वो नहीं जानता था और वो किसी भी गिरोह से जुड़ा हुआ नहीं था। उसे बहुत मारा-पीटा गया.. मगर वो अपने बयान से तिल भर भी नहीं हिला। ह्यूमन ट्रैफिकिंग का केस बनाकर कुछ दिन इसे खींचा गया और फिर आखिर में एक दिन.... उस केस को अनसॉल्व्ड का लेबल लगाकर बंद कर दिया गया। जिन्होंने अपने बच्चे खोए... पता नहीं उन्हें सब्र कैसे आया.. पर आ गया। हमारे देश के दूसरे हजारों केसों की तरह ये केस भी फाइलों के साथ कबाड़ में चला गया।" भरी हुई साँसों के साथ अंकित की आँखें नम हो गई थीं।

"फिर क्या हुआ?" अनंत कुमार का कौतूहल बढ़ चुका था। बाकी सब भी उसी जिज्ञासा से अंकित की ओर देख रहे थे। एक सामान्य व्यक्ति होने का जो पर्दा अंकित और उन सभी के बीच था, वो हट चुका था।

"फिर क्या होना था? सबके लिए जीवन सामान्य हो गया। पर मेरे भैया के लिए नहीं। उनके कानों में एक माँ की चीत्कार लगातार गूंजती रहती... जो ना जाने कितनी दुआओं और मन्नतों के बाद मिले अपने बच्चे को खोकर अपनी सुध-बुध खो चुकी थी। दुनिया के लिए तो न्याय हो ही गया था। अपराधी को चाहे वो निचले स्तर का ही क्यों ना रहा हो, उसके गुनाह की सजा मिल गई थी, मगर उनका क्या... जिनके हिस्से में उनकी खुशियों... उम्मीदों और सपनों की लाशें आई थीं। हर तरफ से निराश होकर मेरे

भैया ने निजी तौर पर इसकी तहकीकात करने का बीड़ा उठा लिया। पर उन्हें नहीं मालूम था कि इस हिमाकत की उन्हें कितनी बड़ी क़ीमत चुकानी होगी।" कहते-कहते अंकित बुरी तरह से सिहर उठा।
"कीमत! कैसी कीमत?" आशुतोष ने अपनी आँखों को सवालों के दायरे में कसते हुए पूछा। अंकित ने एक गहरी साँस ली और बोलना शुरू किया।

"उन दिनों मेरी भाभी गर्भ से थीं और उनकी डिलीवरी डेट भी आ चुकी थी। एक पिता बनने के अहसास ने ही भैया को इस केस के लिए इतना भावुक कर दिया था। उन्हें पता था कि सच को दबा दिया गया था और वो उस सच का बाहर लाना चाहते थे। पर उस समय हममें से किसी को भी इस सच की अंधकार भरी गहराई का पता नहीं था। जब तक पता चला... देर हो चुकी थी। ना जाने भैया को क्या और कैसे पता चला... वो डरे-डरे से रहने लगे थे। भाभी की डिलीवरी के बाद जब वो हॉस्पिटल से घर वापस आई... भैया ने उनको तुरंत ही कहीं और भेजने की व्यवस्था कर दी। हम सभी को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा था। अगले दिन हमें पता चला कि उनकी कार गहरी खाई में गिर गई थी। भैया तो जख़्मी हालत में मिल भी गए... पर भाभी और बच्ची का कभी भी पता नहीं चला। भैया की हालत भी बहुत ही खराब थी। पत्नी और बेटी को खोने का दर्द वो बर्दाश्त नहीं कर सके और इस दुनिया से चले गए।" यादों से गुजरता हुआ अंकित बुरी तरह से सिसकने लगा। सभी साँस रोके हुए उसकी कहानी सुन रहे थे। वरूण उठकर उसके पास आया और उसके कंधों पर अपनी हौसले बढ़ाने वाली ऊंगलियाँ कस दीं। अंकित ने उसके स्पर्श की गर्माहट से खुद को संभाला।

"जानकर अफसोस हुआ। पर ये पिशाच वाली बात! मतलब कि इस पिशाच के झमेले में तुम कैसे आ गए?" अनंत कुमार ने बात को संभालते हुए आगे बढ़ाया।

"भाभी और बच्ची के जाने के बाद भैया ने कुछ दिनों तक जीवन के लिए संघर्ष किया था, मगर एक रात जो कुछ भी उन्होंने संभाल रखा था, उसने सब बिखेरकर रख दिया।" कहते-कहते अंकित का पूरा शरीर सिहर उठा।
"किसने?" कहते हुए अनंत कुमार की ऑखें छोटी हुई थी।

"उसी पिशाच ने, जो अभी थोड़ी देर पहले यहाँ से भागा है।" कहकर अंकित ने एक गहरी साँस ली थी।

"इस पिशाच ने!" अनंत कुमार के साथ -साथ सभी बुरी तरह चौंके थे।

"हाँ! उस रात मैं हॉस्पिटल में भैया के साथ था। कुछ देर के बाद पड़ोस के आदित्य भैया आने वाले थे, उसके बाद मैं घर चला जाता। सेहत भी सुधर रही थी भैया की। घर से फ़ोन आने पर बस कुछ देर के लिए मैं बाहर गया था। उस दिन ना जाने क्यों... पूरे हॉस्पिटल में चारों ओर मरघट की तरह सन्नाटा छाया हुआ था। नेटवर्क इशू की वजह से बात नहीं हो पाई इसलिए जब वापस कमरे की ओर आया तो.... अंदर से आती अजीब सी आवाज़ ने मेरे पैर रोक दिए।" बीती बात याद करते हुए अंकित की ऑखें फैलकर चौड़ी हो गई थीं।

"क्या सुना तुमने?" अनंत कुमार ने आगे झुकते हुए पूछा।

दस साल पहले -

"तुझे क्या लगा? तू मुझसे उलझ सकता है। देखा ना! क्या हुआ तेरी बीवी-बच्ची के साथ?" एक सर्द सी फुसफुसाती हुई आवाज आई। दरवाजे
से लगकर खड़े अंकित ने अपने कान दरवाजे से और भी सटाए। अंदर से कोई और आवाज नहीं आई, बल्कि किसी की बर्फ जैसी हँसी उसके अंदर भी सिहरन दौड़ा गई। अंकित का दिल जोरों से धड़का और फिर अंदर जाने के लिए उसने दरवाजे को अंदर की ओर धक्का दिया, मगर दरवाजा जैसे किसी पहाड़ से अटक गया था। अंकित की ढेरों कोशिशों के बाद भी वो दरवाजा नहीं खुला। अब तो अंकित के होशोहवास फाख़्ता हो गए और वो जोर-जोर से चिल्लाने लगा। जल्द ही पूरे हॉस्पिटल में अफरातफरी मच गई। डॉक्टर और दूसरे लोग अंकित को संभालने की कोशिश कर रहे थे, जो दरवाजा नहीं खुलने से और भी बदहवास हो चुका था।

"कोई अंदर है! वो मेरे भैया को धमका रहा है। खोलो! दरवाजा खोलो!" अंकित बस चिल्लाए जा रहा था।

उसकी बात सुनकर सभी को हैरानी हुई थी, क्योंकि इस कमरे में आने के लिए गलियारे के अंतिम छोर पर स्थित सीढ़ियों से होकर आना पड़ता था और वहाँ एक नर्स ड्यूटी पर बैठी हुई थी और उसने बताया कि वहाँ से कोई भी नहीं आया था। बल्कि उसने अंकित को कमरे से बाहर निकलते और फिर कमरे की ओर जाते हुए भी देखा था। नर्स की बातों से ये तो पता चल गया था कि उस गलियारे और कमरे के दरवाजे से कोई भी नहीं आया था।

"तो फिर... तो फिर कोई ... खिड़की से आया होगा। हाँ, वहीं से आया होगा। जल्दी खोलो दरवाजा।" अंकित जोर-जोर से चिल्ला रहा था। सभी उसे समझा रहे थे कि खिड़की से भी कोई नहीं आ सकता क्योंकि वो कमरा हॉस्पिटल की तीसरी मंजिल पर था और वहाँ बाहर ऐसा कोई भी जरिया नहीं था, जिससे कोई अंदर आ सके। सभी को अंकित के व्यवहार से कोफ्त होने लगी थी क्योंकि वो चिल्ला-चिल्लाकर हॉस्पिटल में सभी को परेशान कर चुका था। दूसरे मरीज भी उसकी वजह से हलकान हो गए थे।
इन सबके बीच वो दरवाजा जो अंकित से खुल नहीं रहा था, थोड़ा जोर लगाने से खुल गया। दरवाजा खुलने से सभी ने राहत की साँस ली। अंकित हैरान-परेशान सा अंदर की ओर भागा। दरवाजे के बाहर जहाँ अंकित की वजह से जैसे एक तूफान बरपा हुआ था, वहीं अंदर पूरी तरह से ख़ामोशी छाई हुई थी। अभिनव अपने बिस्तर पर आँखें बंद कर लेटा हुआ था। कहीं कुछ भी ग़लत दिखाई नहीं दे रहा था। अंकित को आश्चर्य हुआ कि उसने जो सुना वो क्या था! पर उसे इस बात का पूरा यकीन था कि उसने जो सुना वो वहम नहीं था। अंकित दौड़ते हुए खिड़की के पास इस उम्मीद से गया कि उसके यकीन को उस खिड़की से आती हवाएँ राहत दे जाएँ, पर वो वहाँ भी ग़लत साबित हुआ। वहाँ दूर-दूर तक कोई नहीं था और ना ही कोई आ सकता था। उसने सहमकर पीछे की ओर देखा, सभी उसे गुस्से से घूर-घूरकर देख रहे थे। अंकित चुपचाप अभिनव के पास जाकर बैठ गया। उसी समय पड़ोस वाले आदित्य भैया वहाँ आ गए। वहाँ जमा भीड़ को देखकर उनका माथा ठनका। पूछताछ करने पर डॉक्टरों और आसपास के कमरों में मरीजों के परिजनों ने अंकित की शिकायत की। भैया ने माफी माँगकर किसी तरह हालात को संभाला। अंकित नज़रें झुकाए चुपचाप बैठा हुआ था। आदित्य ने रूखे स्वर में उसे घर जाने के लिए कहा और वॉशरूम में चला गया। आखिरकार अंकित भी मान ही गया कि उससे गलती हुई थी। वो अपने भाई के पास गया और उनके चेहरे पर प्यार से हाथ फेरा। कानों के पास उंगलियाँ

फेरते समय वहाँ से उसकी उंगलियों में एक तिनका फँसकर आ गया। अंकित एक बार फिर से फटी हुई ऑखों से उसे देख रहा था। एक बार फिर से उसका दिल जोर से धड़का। उसी समय अभिनव के चेहरे की माँसपेशियों में हरकत हुई, जिससे अंकित उसके चेहरे के पास गया। अंकित को लगा कि वो कुछ कहने की कोशिश कर रहा था।

"हाँ भैया! बोलिए! कुछ कहना है आपको?" अंकित हड़बड़ाकर बोला और अपने कान अभिनव के होंठों के पास ले गया।
अभिनव के होंठ हिले और एक बहुत ही कमजोर और काँपती हुई आवाज शब्दों का रूप लेकर आई,

"पिशाच!"

यह सुनते ही अंकित झटके से पीछे हुआ था। वो अपने भाई को एकटक देख रहा था, जो एक बार फिर से अचेत हो चुका था। कुछ देर बाद अंकित चुपचाप अपने घर की ओर चल पड़ा। उसने किसी से कुछ नहीं कहा क्योंकि किसी से कुछ कहना बेमानी था। कुछ देर पहले की गई हरकत की वजह से कोई भी उसका विश्वास नहीं करने वाला था। वो रात उसके लिए क़यामत की तरह गुजरी क्योंकि सुबह की हवाएँ उसी क़यामत की निशानियाँ लेकर आ गईं। हॉस्पिटल में पहले तो किसी ने आदित्य को खिड़की से नीचे फेंक दिया और फिर बड़ी ही बेरहमी से अभिनव की हत्या कर दी।

अंकित और परिवार वाले भागते-दौड़ते वहाँ पहुँचे। थरथराते हुए हाथों से अंकित ने दरवाजे को धक्का देकर खोला। अंदर का हौलनाक नज़ारा देखकर उसका पूरा शरीर जैसे पत्थर हो गया। कमरे में चारों तरफ खून ही खून फैला हुआ था। अभिनव के पूरे शरीर को किसी धारदार नुकीले हथियार से जैसे खुरच दिया गया था। शरीर में जगह-जगह माँस के लोथड़े लटकने लगे थे। मारने वाले ने उसकी ऑखें भी बड़ी ही बेरहमी से निकाल ली थीं, जो कहीं नहीं मिलीं। एक और चीज थी जो गायब थी। अभिनव का दिल गायब था। उसका पूरा का पूरा दिल किसी ने नोचकर निकाल लिया था। हत्या की यह घटना जितनी लोहमर्षक थी, उतनी ही अजीब भी।
अभिनव की हत्या की खबर तो फैली, पर हत्या के तरीके को आम होने से रोक दिया गया। बहुत जाँच पड़ताल हुई पर कोई भी नतीजा हाथ नहीं लगा। आदित्य भी कुछ नहीं बता सका कि आखिर उस रात वहाँ हुआ क्या था? अभिनव की मौत सभी के लिए एक राज बनकर रह गई। अंकित के दिल और दिमाग को अभिनव की मौत से बहुत ही धक्का लगा था। उसे अभिनव के कहे आखिरी शब्द याद थे।

"पिशाच!"

हाँ! यही तो कह गया था अभिनव, अंकित के कानों में। अंकित ने दबी जुबान से इसका जिक्र पुलिस वालों से किया, मगर सभी ने उसे भाई की मौत का सदमा समझा। आखिर वो जो कह रहा था, उस पर यकीन कौन करता।

वर्तमान समय -

अंकित कुर्सी पर बैठा हुआ सिसक रहा था। सभी सकते में आ चुके थे। पिशाच का हमला आज के समय से पहले भी हो चुका था। मगर क्यों? और उसकी मौजूदगी कभी भी किसी को पता क्यों नहीं चली। इस ओर भी सभी का दिमाग उलझ गया था।

"मैं अपने भाई के कातिल तक पहुँचना चाहता था और मुझे पूरा यकीन
था कि जिसने भी उसे मारा था, किसी ने उसकी मदद जरूर की थी, वरना इतनी बड़ी घटना को दबा देना इतना आसान नहीं था। उस समय मैं नहीं जानता था कि पिशाच शब्द वास्तव में मेरे भाई ने क्यों कहे थे। मुझे लगा था कि शायद किसी बेरहम इंसान के बारे में भैया ने कहा हो और उसी बेरहम की तलाश में मैं पुलिस डिपार्टमेंट का हिस्सा बन गया। मगर पिछले दिनों उस सीसीटीवी के फुटेज को देखने के बाद मुझे कुछ शक सा हुआ था, जो आज यकीन में बदल गया।" अंकित कहते-कहते रूक गया।

"तो तुम्हारा मतलब है कि तुम्हारे भाई को इसी पिशाच ने मारा था!" चैतन्य ने हैरत भरी आवाज में पूछा।

"हाँ! इसी ने मारा है और शायद मैं जानता हूँ कि क्यों?" अंकित खुद को संभालते हुए बोला।

"और तुम्हें ऐसा क्यों लगा?" अनंत कुमार ने उसे गहरी नज़रों से देखते हुए पूछा।

"क्योंकि हॉस्पिटल में परिधि के बिस्तर के पास भी वैसे ही तिनके थे, जैसे मेरे भाई के पास मुझे मिले थे। उसी रात सीसीटीवी में अजीब सी पंखों वाली चीज का कैद होना और दस साल पहले की तरह ही नवजात शिशुओं का गायब होना। सब कुछ वैसा ही तो हो रहा है। परिधि ने भी ऐसे किसी जीव के बारे में कहा था। मुझे पूरा यकीन है कि वही पिशाच ये सब कर रहा है। दस साल बाद वो फिर से लौट आया है। ना जाने और कितने ज़ख़्मों के साथ।" अंकित अब पूरी तरह से चुप हो गया। शायद अब वो बोलते-बोलते थक गया था।

अंकित की बातें सुनकर अनंत कुमार की भौंहें कुछ तन सी गई थीं और उनकी याद दस साल पीछे की ओर चली गई, जब उसे भी अभिनव की हत्या की खबर मिली थी। पर उसे एक आम बदले की कार्यवाही घोषित
करके रफा दफा किया गया था। उन सबकी पकड़ में पिशाच का अस्तित्व तो आया था, पर वो अस्तित्व हवा ही साबित हुआ, जिसे महसूस तो किया गया, पर वो कभी भी किसी को भी दिखाई नहीं दिया। उसके बाद दस सालों तक सब कुछ शांत ही रहा और अब दस सालों के बाद एक बार फिर से वही सिलसिले शुरू हो गए थे और ये सिलसिले परिधि से कैसे जुड़े थे, अब इस तार की पहचान जरूरी हो गई थी। क्योंकि पुराने जख़्म अभी भी भरे नहीं थे और ऐसे किसी नए ज़ख़्मों को सहने की ताकत किसी में भी नहीं थी। मगर उनमें से कोई भी नहीं जानता था कि अभी तो बस शुरुआत थी। अतीत का एक पुराना ज़ख़्म एक बार फिर से खुलने वाला था, जिससे बहता खून उन सभी के भविष्य को रंग देने वाला था।

हालिया घटनाओं से अंकित के अतीत की जुड़ी हुई कड़ियाँ सभी को हैरान कर गई थीं। सभी के मन में ढेर सारे सवाल कुलबुलाने लगे थे, जिन्होंने अपना रूख अनंत कुमार की ओर किया था। आखिर एक वही तो थे, जो इन सवालों के जवाब दे सकते थे और वो ही अचंभित खड़े थे।

"अंकल!" अनामिका ने उन्हें पुकारा।

"हँ!" अनंत कुमार जैसे किसी गहरी नींद से जागे।

"दस साल पहले भी ऐसा कुछ हुआ था! आपने हमें इस बारे में कुछ बताया नहीं।" आशुतोष ने गंभीर आवाज में कहा।

अनंत कुमार ने कोई जवाब नहीं दिया अलबत्ता हथेलियों में अपना मुँह छिपाकर बैठ गए। कुछ देर उसी तरह रहने के बाद उन्होंने अपना सिर
ऊपर की ओर उठाया और अंकित से बोले, "क्या इस तरह की और भी घटनाएँ दर्ज हैं? मतलब कि दस साल पहले की घटना से भी पहले की। ऐसी ही... या मिलती-जुलती!"

अंकित ने सोचने की मुद्रा में उनकी ओर देखा और फिर सिर हिलाते हुए कहा, "पता नहीं!"

"तो पता करो! ये भी पता करो कि तुम्हारे भैया को क्या और कैसे पता चला सब? वो जब निजी तौर पर छानबीन कर रहे थे, तब कोई तो सबूत जुटाया होगा उन्होंने। कुछ भी!" अनंत कुमार अंकित पर जोर देते हुए बोले।

"हो सकता है। उनके कमरे में ढूंढना पड़ेगा।" अंकित ने सहयोग भरी आवाज में कहा।

"पर आपने तो कहा था कि सिरा उस डायनों के बसेरे से मिलेगा।" चैतन्य ने अनंत कुमार से कहा।

"ये खून से भरी कहानी तो वहीं से शुरू हुई है, जिसके छींटे आज तक हम सब पर पड़ रहे हैं। तो ठीक यही रहेगा कि इन छींटों की मदद से ही मौका-ए-वारदात की ओर बढ़ा जाए।" अनंत कुमार ने सबको समझाते हुए कहा।

"पर... यदि इस तरह की घटनाएँ पहले भी हुई हैं और अभी भी हो रही हैं, तो इतनी बड़ी घटना अब तक दबी हुई क्यों है?" अनामिका ने पूछा।

"कोई तो है... जो छिपकर खेल खेल रहा है। वही बड़ी सफाई से इन सभी घटनाओं को सबकी नज़रों से छिपाकर रखे हुए है।" अनंत कुमार ने कहा।
"आपका मतलब है कि उस पिशाच का कोई साथी है!" अंकित ने उछलते हुए कहा।

"साथी है या कुछ और... कह नहीं सकते।" अनंत कुमार ने उलझा हुआ सा जवाब दिया।

"ऐसा क्यों?" अनामिका ने ऑखों से भी सवाल किया।

"क्योंकि वो जो चीज है ना! जिसे हम पिशाच कह रहे हैं.... एक किवदंती है और वो सच में है... ये यकीन करना अभी भी मेरे लिए बहुत मुश्किल हो रहा है।" अनंत कुमार ने एक गहरी साँस के साथ कहा।

"किवदंती! कहीं आप वो छद्म पिशाच साधना की बात तो नहीं कर रहे हैं!" अंकित ने ऑखें सिकोड़ते हुए कहा।

अंकित की बात सुनकर सभी ने चौंककर उसकी ओर देखा था। अनंत कुमार की ऑखें भी उसे जाँचते हुए सिकुड़ी थीं।

"तुम कैसे जानते हो इस विषय में?" अनंत कुमार की गंभीर आवाज में सवाल आया।

"भैया के... कमरे में... कुछ कागजात मिले थे। बड़ी अजीब-अजीब बातें लिखी थीं। उसमें से पिशाच शब्द की वजह से ये याद रह गया था मुझे।" अंकित की बात ने एक बार फिर से सभी को चौंकाया था।

"कैसे कागजात?" आशुतोष ने पूछा।

"बहुत पहले भैया के कमरे की तलाशी ली थी मैंने, उस समय कागज़ों
का एक पुलिंदा मेरे हाथ लगा था। मगर उसमें जो कुछ भी लिखा था, मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया था। इसलिए उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया मैंने।" अंकित ने सवाल का जवाब दिया।

"और क्यों ध्यान नहीं दिया?" अनंत कुमार ने हैरानी से पूछा।

"क्योंकि.... इस तरह की किताबें मेरी भाभी पढ़ती थीं।" अंकित ने सकुचाते हुए कहा।

"क्या? पर क्यों?" एक साथ कई स्वर आए।

"दरअसल.... मेरे भैया-भाभी की शादी को तीन साल हो गए थे और वो माँ नहीं बन सकी थीं।" कहकर अंकित चुप पड़ गया।

"समझ गया! केसर अम्मा वाली परिस्थिति!" चैतन्य ने एक आह भरकर कहा।

"दु:खद है ये सब! कभी-कभी लगता है कि हमारा समाज इन निम्नतर सोचों से कभी ऊपर उठेगा या नहीं। पचास साल पहले केसर अम्मा और आज तुम्हारी भाभी... दोनों की एक जैसी स्थिति देखकर निराशा ही होती है।" आशुतोष ने कड़वाहट से कहा। उसकी बात ने सभी का मन कसैला कर दिया था।

"तो क्या? तुम्हारी भाभी के संपर्क में कोई था और इसी संपर्क की वजह से ही तुम्हारे भैया इन सबमें उलझ गए!" चैतन्य ने एक संभावना व्यक्त की।

"हो सकता है! ये दुनिया चालाक शिकारियों से भरी हुई है, जिनकी नज़रें हमेशा किसी कमजोर शिकार

की तलाश में रहती हैं और शायद तुम्हारी
भाभी भी वही थी।" अनंत कुमार ने अफसोस भरे लफ़्ज़ों में कहा। उनकी बात सुनकर एक बार फिर से अंकित का चेहरा मुरझा गया।

"शिकारी!" अनामिका चिहुंक कर बोली। सभी की नज़रें उसकी तरफ उठी थीं। अनामिका अपनी बड़ी-बड़ी ऑखों से उन सभी की ओर देख रही थी और सभी उसकी ओर सवालिया नज़रों से देख रहे थे।

"अरे बाबा! मेरा मतलब है कि... इन सब के पीछे किसी अहेरी का तो हाथ नहीं ! आखिर वो ही तो परिधि के पीछे भी पड़े हैं। हो सकता है उनका इस पिशाच से कोई संबंध हो। कहीं वो उस पिशाच के लिए ही तो परिधि को हासिल नहीं करना चाहते।" अनामिका ने अपनी बात सबको समझाई। उसकी बात सुनकर सबकी ऑखें फैली थीं।

"अब ये अहेरी क्या है?" अंकित ने मुँह बिगाड़ कर पूछा।

"बस ये समझ लो हमारे विरोधी हैं।" अनंत कुमार ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया। उनके जवाब से अंकित और भी उलझ गया था।

"पर वो पिशाच जब परिधि के पीछे यहाँ तक आ सकता है, तो वो किसी और की मदद क्यों लेगा?" आशुतोष ने पूछा।

"पता नहीं! शायद अब मेरी सुरक्षा में सेंधमारी करके वो सीधे ही परिधि को ले जाना चाहता हो।" अनंत कुमार ने कंधे उचकाते हुए कहा।

"ये भी हो सकता है कि उसके पास समय ना हो और इस कमी की वजह से वो बेसब्र हो रहा हो। इसलिए उसने यहाँ आने की हिम्मत की।" चैतन्य ने कहा।

"परिधि के लिए वो हर तरह से हाथ-पैर मार रहा है। एक बार परिधि ने
सपने में भी देखा था खुद को ही.... और कोई कह रहा था कि तुमने उससे उसकी माया छीनी है। वो बदला लेगा!" अनामिका बोली।

"माया! ये नाम बहुत सुनाई दे रहा है और साथ ही अल्फी भी!" अनंत कुमार ने कहा।

"तो क्या इन दोनों नामों में ही सारी कहानी छिपी हुई है?" अंकित ने कहा।

"लग तो रहा है। लगता है जानकर या अंजाने में परिधि ने उनके साथ कुछ बुरा कर दिया और अब उसे उसका बदला चाहिए। परिधि ही इन सारे सवालों का जवाब है, पर उसकी गुम हो चुकी यादों में सारे जवाब भी खो गए हैं। हमें अगर सब कुछ हमारे हाथ में रखना है तो ये सब जल्दी करना होगा।" अनंत कुमार ने बेचैनी से कहा।

"ऐसा क्यों?" चैतन्य ने पूछा।

"क्योंकि ये पहली बार है कि वो पिशाच खुलकर सामने आ गया है। जबकि आज तक वो बस कहानियों और अफवाहों में ही छिपा हुआ था। जाहिर सी बात है कि अब उसे किसी की परवाह नहीं है। वो अब

खुद को छिपाना नहीं चाहता.... वो बस परिधि चाहता है... किसी भी कीमत पर।" अनंत कुमार ने अपनी बात समझाई।

"तो फिर क्या करना है?" आशुतोष ने पूछा।

"अंकित तुम उन कागजों को लेकर आओ और यदि कुछ और भी मिले तो हमारे लिए अच्छा होगा।" अनंत कुमार ने अंकित से कहा। जवाब में अंकित ने अपना सिर हिलाया।
"और चैतन्य, अनामिका और आशुतोष! तुम सभी परिधि की यादों को टटोलो। किसी भी तरह से! मैं माया और अल्फ़ी की कहानी पता करता हूँ। कहीं से तो शुरूआत करनी पड़ेगी... ऐसे ही सही।" अनंत कुमार ने कहा। उन तीनों ने भी हामी भरी।

"वो तो शुक्र है कि तुम सब समय पर आ गए, वरना आज उस पिशाच को वो मिल जाता, जो उसे चाहिए था।" अनंत कुमार ने लरजती हुई आवाज में कहा।

"पर हम सब यहाँ आए कैसे?" अंकित ने एक बार फिर से अपना सवाल दोहराया। उसके सवाल ने अनंत कुमार को भी चौंकाया।

"हाँ! मैंने ध्यान नहीं दिया। तुम सब तो डायनों के बसेरे में गए थे... फिर अचानक यहाँ कैसे आए?" अनंत कुमार ने सबकी ओर बारी-बारी से देखते हुए पूछा।

"हमें तो.... वरूण यहाँ लेकर आया।" अनामिका ने जवाब दिया। अनामिका की बात सुनकर अनंत कुमार ने चौंककर वरूण की ओर देखा, जो अपना सिर पकड़े हुए बैठा हुआ था। उसकी ऑखें हैरानी की आखिरी हद तक फैली हुई थीं और चेहरे पर गहरे सदमे को निशान साफ-साफ दिखाई दे रहे थे। अचानक ही उन सभी को ये अहसास हुआ कि अंकित के अलावा वहाँ एक शख़्स और भी था, जो इन सब बातों से पूरी तरह से अंजान था। वरूण ख़ामोशी से उन सबकी बातें सुनते-सुनते ख़ुद ही ख़ामोश हो गया था। कहाँ वो परिधि को अजीब समझ रहा था और कहाँ उसके पिता और दोस्त ही अजीब सी पहचानें लेकर उसके सामने मौजूद थे। वो किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया देने के लायक फिलहाल तो बिल्कुल नहीं लग रहा था।

"वरूण! वरूण तुम सबको यहाँ लाया! पर कैसे?" अनंत कुमार ने
चौंककर पूछा।

"उसे उन खंडहरों में आपकी और उस पिशाच की बातें सुनाई दी थीं। आप दोनों की बढ़ती बहस और फिर एक दूसरे पर किए हमले का भी उसे पता चल गया था। पता नहीं कैसे... पर उसने उस खंडहर के एक दरवाजे को खोला और हम सभी यहाँ आ गए।" आशुतोष ने सारी घटना संक्षिप्त रूप में बताई।

यह सब सुनते ही अनंत कुमार के माथे पर बल पड़े और उन्होंने ग़ौर से वरूण की ओर देखा, जो कि अब उन्हीं की तरफ टकटकी लगाए देख रहा था।

"तो क्या... वरुण के अंदर भी कोई शक्ति है?" अनामिका ने उत्साहित होते हुए कहा। उसकी बात सुनकर जहाँ सभी ने उसकी ओर एक सोच भरी नज़रें घुमाई, वहीं चैतन्य को वरूण के प्रति उसकी उत्सुकता ने परेशान किया था।

"हाँ! आखिर मेरा बेटा है वो!" अनंत कुमार ने परेशानी भरी नज़रें वरूण पर डालते हुए कहा।

"ये तो हमारे लिए अच्छी बात है। मगर आप परेशान क्यों दिख रहे हैं?" आशुतोष को अनंत कुमार के चेहरे के तने हुए आसाब ख़ासे हैरतअंगेज लगे थे।

"क्योंकि वरूण सिर्फ मेरा ही नहीं.... अपनी माँ का भी बेटा है!" अनंत कुमार ने फिर से उलझी हुई बात कही।

"क्या मतलब?" अनामिका नासमझी से बोली।
"मतलब ये कि.... वरूण की माँ पिशाच कुल की थी।" अनंत कुमार ने एक और रहस्य खोलते हुए धमाका किया था।

"क्या?" एक साथ कई आवाजें गूंजी थीं।

"हाँ! ये सच है। साहनी परिवार पिशाच कुल से संबंध रखता है।" अनंत कुमार ने सबको बताया।

"फिर तो वो पिशाच उनके परिवार का ही होगा।" चैतन्य ने कहा।

"नहीं! पिशाच होना और उस कुल का होना दो अलग बातें हैं।" अनंत कुमार बोले।

"वो कैसे?"

"पिशाच कुल में पैदा होने वाला ही पूर्ण या छद्म पिशाच बन सकता है, मगर तभी जब वो चाहे। मगर ये पिशाच उस पिशाच की तरह नहीं होते हैं।" अनंत कुमार ने कहा।

"हम समझे नहीं।" अनामिका ने कहा।

"मतलब कि इस कुल के लोग पिशाच की आराधना करते हैं, बस आराधना! कुछ खास समयों पर इनकी खास पूजा होती है, उस समय मिला रक्त प्रसाद इनके अंदर के पिशाच को जीवित रखता है। पर इसके आगे ये लोग रक्तपान नहीं करते। जबकि ऐसे पिशाच के लिए रक्तपान जरूरी होता है। बस यही फर्क है।" अनंत कुमार ने समझाते हुए कहा।

"मतलब कि बस नाम के पिशाच होते हैं।" आशुतोष ने कहा।
"कह सकते हो! पर इस कुल का होने की वजह से उनके अंदर कम या ज्यादा मात्रा में शक्तियाँ होती हैं। जैसे कि वरूण की माँ के अंदर थीं। इसलिए मैं परेशान हूँ कि वरूण की शक्तियाँ किस तरफ से है?" अनंत कुमार ने वरूण को गहरी नज़रों से देखते हुए अपनी परेशानी बताई।

अनंत कुमार की बातों ने एक बारगी सभी के माथे पर बल ला दिए। वहीं इस खुलासे से अंकित और वरूण दोनों के ही होश उड़ चुके थे। आने वाला समय ना जाने उन सबके लिए क्या-क्या सौगातें या आफतें लेकर आने वाला था उन्हें नहीं पता था और ना ही ये पता था कि उनकी नाक के नीचे एक और षड्यंत्र फलने-फूलने वाला था।

****

मुकुल दाँतों में ब्रश घिसते हुए रात के उस अजीबोगरीब सपने के बारे में सोच रहा था। ना चाहते हुए भी परिधि का लहूलुहान वजूद उसकी ऑखों में कौंध रहा था। आखिर उसने परिधि को इस तरह से क्यों देखा? वो तो हमेशा से ही अपने माता-पिता को इस तरह से देखता था और उनके इस तरह उसके सपने में आने का कारण भी था। एक्सीडेंट में अपने माँ-बाप को खोने के बाद वो उन्हें उसी तरह से देखता था, जो हमेशा उसकी नींदे उड़ा देता था। पर वो उसके माता-पिता थे। उनके साथ उनका एक भावनात्मक जुड़ाव था, इसलिए ऐसा होना मुमकिन था। पर परिधि क्यों? उससे तो वो बस एक बार ही मिला था, वो भी पूरी बेरूखी से। फिर ऐसा क्यों हुआ। परिधि के साथ तो उसका कोई ऐसा अटेचमेंट नहीं था कि वो उसे इस तरह परेशान कर सके। अचानक उसने अपने सिर को झटकते हुए इन सभी विचारों को खुद से दूर किया। जल्द ही वो तैयार हो गया।
आज उसे डॉ. अनंत कुमार के गार्डन में कुछ ज्यादा काम था। पहले तो उसने सोचा कि वो वहाँ नहीं जाएगा। फिर वादा करने के बाद अपना काम अधूरा छोड़ना उसे अच्छा नहीं लगा। मन मारकर वो जाने के लिए तैयार हो गया क्योंकि अब बस दो-तीन दिनों का ही काम बचा था। तैयार होकर वो बाहर निकला तो बाहर पोर्च में अपने अंकल प्रोफेसर साहनी को अखबार पढ़ते हुए देखा। वो उनके पास चला गया।

"गुड मॉर्निंग यंग मैन! ये सुबह-सुबह सवारी किधर को निकली है?" प्रोफेसर साहनी ने गर्मजोशी से कहा।

"जी! वो डॉ. अनंत कुमार के काम से जा रहा हूँ।" मुकुल ने इत्मीनान से कहा।

"पर तुम तो वहाँ कंफर्टेबल फील नहीं कर रहे थे!" प्रोफेसर साहनी ने उसे चौंककर देखते हुए कहा।

"इतनी मेहनत की है मैंने! एक-दो दिन के लिए अपना काम और नाम खराब नहीं करना है मुझे। इसलिए जा रहा हूँ!" मुकुल ने कहा।

"ठीक है तुम्हारी मर्जी!" प्रोफेसर साहनी ने बात समेटते हुए कहा। मुकुल मुस्कुराया और बाहर की ओर चल दिया। अचानक प्रोफेसर साहनी को कुछ याद आया तो उन्होंने उसे आवाज दी।

" मुकुल!"

"जी!" मुकुल ने पलटकर उनकी ओर देखा।

"यहाँ आना जरा!" प्रोफेसर साहनी ने उसे पास बुलाते हुए कहा। एक साँस भरकर मुकुल उनके पास आया।
"जी कहिए!"

"वो... क्या नाम बताया था तुमने उस लड़की का?" अपनी उंगलियों को रगड़ते हुए प्रोफेसर साहनी

बोले।

"कौन लड़की?" मुकुल बुरी तरह से चमका।

"वही! डॉ. अनंत के घर में है जो! अरे जिससे परेशानी थी तुम्हें!" प्रोफेसर साहनी ने उसे याद दिलाते हुए कहा।

"कौन? परिधि! कुछ हुआ क्या?" मुकुल की ऑखों के सामने एक बार फिर से उसका सपना लहरा गया।

"नहीं! वो तुमने कहा था... तो मैंने डॉ. अनंत से उसके बारे में बात की।" प्रोफेसर साहनी बहुत ही सहजता से बोले।

"तो!" मुकुल का दिल जोर से धड़का था।

"डॉ. अनंत ने बताया कि कोई किस्मत की मारी है बेचारी!" प्रोफेसर साहनी बोले।

"जी! मैं समझा नहीं।" मुकुल की ऑखें छोटी हुई थीं।

"मतलब कि अपनी पुरानी सारी यादें भूल चुकी है। कुछ भी याद नहीं है उसे। उसे कोई और मानसिक आघात ना पहुँचे, इसलिए वे सब उस पर कोई जोर नहीं डालते। इसलिए मुझे नहीं लगता कि वो उसे तुम्हारे काम से दूर रख सकते हैं।" प्रोफेसर साहनी ने उसे समझाते हुए कहा।
"भूल गई है मतलब!" मुकुल को झटका लगा था।

"भूल गई है मतलब भूल गई है। अपने बारे में.. अपने परिवार के बारे में उसे कुछ भी याद नहीं है। पर इतना है कि उसके साथ कुछ बहुत ही बुरा हुआ है। तो प्लीज़! अगर वहाँ जाना चाहते हो.... तो उससे मत उलझना।" प्रोफेसर साहनी ने उसे परिस्थितियाँ समझाते हुए कहा।

परिधि के बारे में इस जानकारी ने मुकुल को थोड़ा परेशान किया था। उसकी ऑखो के सामने से परिधि का खुशी से दमकता चेहरा एक बार फिर गुजरा। उसने एक पल खड़े होकर ही कुछ सोचा और फिर बोला, "ठीक है! मैं परेशान नहीं करूँगा उसे।"

उसकी बात सुनकर प्रोफेसर साहनी मुस्कुराए। मुकुल चेहरे पर अजीब से भाव लेकर वहाँ से चला गया। उसके नज़रों से ओझल होते ही प्रोफेसर ने तेजी से अपना फोन निकाला और किसी को कॉल किया।

"उसे भेज दिया है मैंने!"

सामने वाले ने कुछ कहा।

"हाँ, समझा दिया है। आप चिंता ना करें।" इतना कहकर उन्होंने कॉल काटा और फिर किसी को कॉल लगाया। सामने से कॉल उठने पर वो बोले, "सृष्टि! वो चला गया है। तुम्हें ख्याल रखना है कि वे दोनों ज्यादा से ज्यादा समय साथ ही रहें और अकेले भी। हमारे पास बस तीन दिन हैं।"

"समझ गई!" कहकर सृष्टि ने फोन रख दिया।

प्रोफेसर साहनी के होंठों पर एक कुटिल मुस्कान आई। एक और षड्यंत्र ने अपनी ऑखें खोल ली थी। मगर किसके भविष्य में क्या लिखा है ये भला
कौन जान पाया है। नियति एक और कहानी लिखने जा रही थी, जो अपने साथ बहुत सा दर्द और पछतावा लाने वाली थी।

कमरे में एक बार फिर से गहरी ख़ामोशी ने कब्ज़ा जमा लिया था। वरूण अभी भी ऑखें फाड़े हुए कभी अपने पिता को तो कभी दूसरों को देख रहा था। अंकित अलग से उलझा हुआ था। चैतन्य ने एक निगाह वरूण पर डाली। उसकी हालत उसकी समझ से परे नहीं थी। अभी पिछले दिनों ही तो... वो भी बिल्कुल इसी स्थिति और मनोदशा से गुजरा था। मगर इसके अलावा.... उसके दिमाग में कुछ और भी चल रहा था। उसकी नज़र फिसलकर अनामिका की ओर गई, जो एकटक वरूण को ही देखे जा रही थी। चैतन्य को लगा था कि इस मिशन में वो अनामिका के साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिता सकेगा, जिसमें वरूण की दखलअंदाजी बिल्कुल भी नहीं होगी। शायद तब उन दोनों का साथ अनामिका के बर्फ पड़े अहसासों को पिघला दे। मगर अब हालातों के बदलते रूख ने उसे परेशान कर दिया था। अपने हाथों की उंगलियों को आपस में उलझाकर कुर्सी में सिर झुकाए बैठे चैतन्य की बेचैनी को आशुतोष ने भाँप लिया। उसके पास पहुँचकर उन्होंने उसके कंधे पर हाथ रखा, जिस पर चैतन्य ने चौंकते हुए उनकी ओर देखा। आशुतोष ने ऑखों से सवाल किया, जिस पर चैतन्य ने अपना
सिर इंकार में हिला दिया।

"वरूण! मुझे पता है! ये सब सुनना और समझना तुम्हारे लिए आसान नहीं है। पर सच यही है बेटा!" अनंत कुमार ने वरूण के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

अनंत कुमार की बात सुनकर वरूण ने अपने चश्मे के पीछे से उन्हें घूरा ही था। चलो, चैतन्य की बात अलग थी। उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि पूरी तरह से सामान्य ही रही थी। मगर यहाँ तो वरूण की उस नाक के नीचे पता नहीं क्या-क्या हो चुका था... जो अब सुड़कते हुए लाल हो चुकी थी। सभी की नज़रें उसी पर टिकी हुई थीं।

"माँ की मौत कैसे हुई थी पापा?" एक अप्रत्याशित सा सवाल वरूण के होंठों से निकला था।

वरूण के सवाल ने सभी को अचरज में डाला था क्योंकि ऐसी स्थिति में इस सवाल का उठना किसी के भी वहमोगुमान में नहीं था। सवाल को सुनकर जहाँ अनामिका की ऑखें सिकुड़ी थीं, वहीं.... अनंत कुमार की ऑखों में एक सुर्ख़ी सी उतर आई थी। अपने सूखे होंठों को भींचते हुए उन्होंने अपना रूख फेर लिया था।

"बोलिए ना पापा! माँ भी आज से दस साल पहले हमें छोड़कर चली गई थी ना! कैसे गईं?" वरूण की ऑखें भी चश्मे के पीछे अपनी लाल रंगत नहीं छिपा पाई थी।

"वरूण तुम ये..." अनामिका ने कहना चाहा, मगर वरूण ने उसकी ओर अपना सीधा हाथ उठाकर उसे चुप रहने का इशारा किया। नज़रें पिता पर ही जमी हुई थीं।

"माँ... हादसे में नहीं मरी थी ना! मुझे हमेशा लगता था...कि कुछ और हुआ था। क्या हुआ था?" वरूण का सवाल अपना वजूद बढ़ा रहा था। उसका सवाल सुनकर अनंत कुमार ने उनके सामने रखीं कुर्सी की पुश्त अपनी हथेलियों में दबोच लीं। दर्द अब अपनी हद तोड़कर उनकी आँखों से बह निकला था।

"हाँ! सही कह रहे हो तुम! किसी आम हादसे का शिकार नहीं हुई थी वो!" लरजती हुई आवाज में अनंत कुमार ने कहा।

"क्या हुआ था अंकल?" इस बार अनामिका ने पूछा। दस साल पहले की दिल दहलाने वाली उसकी यादों ने भी दस्तक दी थी।

"जब मैंने और तृषा ने विवाह किया था, तब साहनी परिवार और हमारे परिवार के बीच एक ना भरने वाली खाई बन गई थी। प्रोफेसर साहनी तो तृषा से इतने नाराज़ थे कि वो उसका खून कर देना चाहते थे। पिशाच कुल के लोग अपनी कम्युनिटी में ही विवाह करते थे। मेरा और तृषा का विवाह सबकी नजरों में बहुत ही अजीब था और प्रोफ़ेसर साहनी का सोचना था कि इससे उनकी प्रतिष्ठा को धक्का लगा है। मगर वो कुछ नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने तृषा से दूरी बना ली। उन्होंने अपने दूसरे भाई-बहन से भी तृषा से पूरी तरह से रिश्ता तोड़ने के लिए कह दिया था। सबको लगा कि सब ठीक हो गया है। ज़िन्दगी अपनी पटरी पर लौट आई थी। सब कुछ बहुत ही अच्छा चल रहा था कि अचानक दस साल पहले जैसे एक बिजली सी गिरी मुझ पर!" कहते हुए अनंत कुमार अतीत की गलियों में चले गए।

दस साल पहले-
आज मंजुला विला में बहुत चहल-पहल दिखाई दे रही थी। शहर के जाने माने डॉ.अनंत कुमार की बेटी गीता की 9वीं सालगिरह थी। शाम के समय शहर के सभी नामचीन व्यक्तियों को दावत दी गई थी। अनंत कुमार शाम की व्यवस्था का मुआयना कर रहे थे। उसी समय रसोईया, जो रात के खाने का इंतजाम करने वाला था... उनके पास आया।

"साहब! मेमसाब कहाँ हैं? उनसे बात करनी थी।" रसोइया बड़े ही इज्जत से बोला।

"वो दिखाई नहीं दे रही है! किसी काम में फँसी होंगी। क्या हुआ? मुझे बताओ।" अनंत कुमार ने चारों ओर नज़रें दौड़ते हुए कहा।

"वो हमने गुलाबजामुन के लिए खोआ और.. दही मँगवाने के लिए कहे थे, एक ख़ास दुकान से। वही पूछना था कि मेमसाब ने वो मंगवा लिए हैं या फिर... हम मंगवा लें। हमारा एक सहयोगी उस दुकान में जा रहा है। यही पूछना था बस!" रसोइए ने कहा।

"हम्म! ये तो मुझे पता नहीं है। मैं पूछ कर बताता हूँ।" कहकर अनंत कुमार ने तृषा को फोन लगाया। देर तक रिंग गई पर.. तृषा ने फोन नहीं उठाया। अनंत कुमार ने एक बार फिर कोशिश की, नतीजा इस बार भी शून्य ही था।

"कहाँ चली गई ये? फ़ोन भी नहीं उठा रही है।" अनंत कुमार ने फोन की स्क्रीन पर देखते हुए खीझ से कहा।

"कोई बात नहीं साहब! पंद्रह मिनट में मेरा सहयोगी दुकान के लिए निकलेगा, तब तक बता दीजिएगा।" रसोइए ने उन्हें राहत देते हुए कहा।
"ठीक है! आप अपना काम करें। मैं देखता हूँ, कहाँ है वो और आपको बताता हूँ।" कहते हुए अनंत कुमार सीढ़ियों से ऊपर अपने कमरे की ओर गए। कमरा पूरी तरह से खाली था। अनंत कुमार ने एक बार फिर से उसे कॉल किया और इस बार फोन उसी कमरे में बजा था। अनंत कुमार ने देखा फोन बेड के साइड टेबल पर रखा हुआ था। अनंत कुमार ने आगे बढ़कर वो फोन उठा लिया।

"फ़ोन तो यहाँ पर है, तो फिर... तृषा कहाँ है?" अनंत कुमार की आवाज में अब परेशानी घुलने लगी थी। वो तेजी से कमरे से बाहर निकले और फिर सीढ़ियों के पास काम करते एक नौकर से पूछा, "तुम्हारी मेमसाब को देखा है क्या तुमने? दिख नहीं रही हैं!"

"साहब! वो तो छत की तरफ गई हैं अभी करीब 15 मिनट पहले।" एक दूसरे नौकर ने जवाब दिया।

"छत में! वहाँ क्या करने गई है?" अनंत कुमार ने अपने आप से ही सवाल किया और फिर छत की ओर जाने वाली सीढ़ियों की ओर बढ़ गया। छत में पहुँचकर उसने पूरी छत छान मारी, पर वो कहीं भी नहीं थी।

"यहाँ तो नहीं है। कहाँ गई? अजीब बात है!" हैरान-परेशान अनंत कुमार ने कमर पर हाथ रखकर चारों ओर देखते हुए कहा। एक गहरी साँस छोड़ते हुए उन्होंने वापस दरवाजे की ओर रूख किया ही था कि अनंत कुमार को छत के किनारे पर बने स्टोर रूम से कुछ आवाजें सुनाई दीं। अचानक ही उनके माथे पर सिलवटों की तादाद और भी बढ़ी थी क्योंकि ये आवाजें खतरे की सूचना दी। धीमे कदमों से वो उस स्टोर रूम के दरवाजे तक पहुँचे। कुछ पल स्थिति का आकलन करने के बाद उन्होंने वो दरवाजा धीरे से खोलना चाहा। मगर वो अंदर से बंद था। अनंत कुमार ने एक हैरानी भरी नज़र उस दरवाजे पर डाली और फिर आगे बढ़कर
दरवाजे पर अपने कान लगाए। अगले ही पल अंदर से आती सिसकियों ने अनंत कुमार के होश उड़ाए थे। ये तृषा की आवाज थी, जो शायद दबी आवाज़ में रोते हुए कुछ कह रही थी।

"मैं क्या करूं? मैं ये नहीं करना चाहती... बिल्कुल नहीं करना चाहती! पर मजबूर हूँ।" कहकर एक बार फिर वो सुबकने लगी थी। यह सुनकर अनंत कुमार की आँखें आश्चर्य के आखिरी हद तक फैली थीं।

"ये किससे बातें कर रही है?" कहकर अनंत कुमार उस स्टोर रूम की एकलौती खिड़की की ओर तेजी से गए थे। मौसम की मार से उस खिड़की में एक सुराख़ हो गया था । अनंत कुमार ने अपनी एक आँख उस पर टिकाई और एक जद्दोजहद के बाद उस जरिए से दूसरी तरफ जो देखा वो दिल की धड़कन बढ़ाने के लिए काफी था।

तृषा अपने हाथ में खून से भरा ग्लास पकड़ते हुए उसे पी रही थी। अनंत कुमार का शरीर झटके से पीछे की ओर छिटका था। कुछ देर तो वो उसी तरह भावहीन से बैठे रहे, पर फिर होश आने पर उठकर तेजी से स्टोर रूम के दरवाजे की ओर गए और उसे पकड़कर जोर-जोर से हिलाते हुए काँपती हुई आवाज में कहने लगे, "तृषा! दरवाजा खोलो! मैंने सब देख

लिया है। कौन है तुम्हारे साथ?"

कुछ पल तो बस उनके दरवाजे को खड़खड़ाने की आवाज आती रही और फिर अंदर से सिटकनी उतरने की आवाज आई। अनंत कुमार साँसें रोके हुए दरवाजे के खुलने का इंतजार करते रहे और जब दरवाजा खुला तो...

"मेघा!!" दरवाजा खोलने वाले को देखकर अनंत कुमार ने कहा और फिर जवाब का इंतजार किए बिना तेजी से अंदर भागे। अंदर खून से सने खाली ग्लास को पकड़कर तृषा सिर झुकाए बैठी हुई थी। वो बहुत ही धीमी आवाज में सुबक रही थी। उसके कपड़े खून गिरने से खराब हो चुके थे। अनंत कुमार ने एक लाचार सी नज़र मेघा पर डाली। मेघा के पास भी लाचारी के सिवा और कुछ भी नहीं था। वो उन पर एक नज़र डालते हुए वहाँ से बाहर निकल गई। अनंत कुमार एक बार फिर से तृषा की ओर मुड़े और फिर उसके सामने घुटनों के बल बैठ गए।

"ये क्या है तृषा? ये सब..." तृषा का हाथ पकड़कर उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए अनंत कुमार ने करूण स्वर में कहा। आवाज उनका साथ छोड़ने लगे थे।

"मेरी असलियत!" तृषा ने भरी हुई आवाज में कहा।

"कैसी असलियत तृषा? हाँ मैं जानता हूँ कि तुम पिशाच कुल से हो। पर ये सब! तुमने तो ये सब छोड़ दिया था ना!" अनंत की आवाज और भी दयनीय हो चुकी थी।

"मुझे माफ़ कर दो अनंत! मैं ये नहीं करना चाहती थी, पर क्या करूं? मैं पिशाच कुल से हूँ और खुद को बचाए रखने के लिए हमें ये रक्त प्रसाद पीना ही पड़ता है। मुझे लगा था कि मैं खुद पर काबू पा लूंगी, पर नहीं कर सकी ऐसा! मुझे माफ़ कर दो।" कहकर तृषा फफक-फफककर रो पड़ी।
उसे इस तरह से रोता हुआ देखकर अनंत ने आगे बढ़कर उसे खुद में भींच लिया।

"मैं... तुम सबसे... बहुत प्यार करती हूँ अनंत! तुमसे और बच्चों से... दूर होने का मैं सोच भी नहीं सकती। ये ख्याल ही... मुझे जीते-जी मार देता है।" अनंत की पीठ पर अपनी बांह कसते हुए तृषा ने अटकती हुई आवाज में कहा।

"पर तृषा! 14 साल हुए हमारी शादी को! मैंने पहले कभी नहीं देखा तुम्हें इस तरह से। ये अचानक!" अनंत कुमार ने तृषा को बाहों में भरकर उसके सिर को सहलाते हुए पूछा।

"क्योंकि हम साल में दो बार बस कुछ बूंदें ही लेते हैं। इसलिए तुम्हें पता नहीं चला।" तृषा की आवाज अब कुछ संभलने लगी थी। उसकी बात सुनकर एक बार फिर से अनंत कुमार के माथे पर बल पड़े थे।

"कुछ बूंदें! तो फिर आज ये... ख़ून से भरा प्याला क्यों पी रही हो?" अनंत ने इस बार कसैले लहजे में कहा था।

"क्योंकि वो लौट आया है?" तृषा ने सहमी हुई आवाज में कहा।

"कौन? कौन लौट आया है?" अनंत कुमार ने झटके से तृषा को खुद से अलग किया और उसके चेहरे की बेतरतीबी को फटी हुई ऑखों से देखने लगा।

"पिशाच! पिशाच लौट आया!" काँपती हुई आवाज में तृषा ने कहा।

"पिशाच! लौट आया है! समझा नहीं मैं! कौन पिशाच?" अनंत कुमार की हैरानी हर पल के साथ बढ़ती जा रही थी।
अनंत का सवाल सुनकर तृषा ने सहमी हुई ऑखों से उसकी ओर देखा। अचानक उसे महसूस हुआ कि उसके मुँह से वो निकल गया, जो नहीं निकलना चाहिए था। दूसरी ओर उसकी चुप्पी अनंत के सब्र को हर पल दरका रही थी।

"बोलो तृषा! कौन पिशाच? किसकी बात कर रही हो? किससे इतना डर रही हो?" अनंत कुमार ने तृषा को झिंझोड़ते हुए कहा।

"कोई नहीं! कोई नहीं! मुझे जाना है! जाना है!" कहकर तृषा झटके से उठी और तेजी से बाहर निकल गई। तृषा की बातें और हरकतें अनंत को उलझन में डाल गईं। खुद को संभालते हुए वो भी तेजी से वहाँ से निकला और कमरे की ओर भागा। तृषा बाथरूम में थी। अनंत ने दरवाजे पर दस्तक दी तो उसने बाद में बात करने को कहा। अनंत अपनी उलझनों के साथ वहाँ से चला गया। उसके बाद पूरी शाम तृषा, अनंत के सामने होने से बचती रही। अनंत ने मेघा से भी इस विषय में पूछा, तो उसने भी अनभिज्ञता ही जाहिर की। मन मारकर अनंत ने तृषा की चुप्पी टूटने तक इंतजार करने का इरादा किया। मेहमानों के जाते-जाते रात गहरी हो चुकी थी। वरूण, अनामिका और गीता दिन भर की थकान के बाद गहरी नींद की बाहों में थे। मेघा, अनमिका और गीता के साथ थी।

"बताओगी तुम मुझे कि क्या हुआ है? कौन लौट आया है?" अनंत ने तृषा की बांह पकड़कर उसे अपनी ओर पलटाते हुए कहा था। तृषा ने सूनी-सूनी ऑखों से उसकी ओर देखा। ना जाने कौन सा दर्द वो उनमें छिपाए बैठी थी। उन ऑखों के खालीपन को देखकर अनंत का दिल बैठने लगा था।

"तृषा कुछ बोलो! तुम्हारी ये ख़ामोशी मेरी जान ले लेगी।" अनंत कुमार ने कलपते हुए कहा था। उसका इतना कहना था कि तृषा तड़पकर उससे आ
लगी। अनंत ने एक बार फिर उसे समेट लिया था।

"ऐसा मत कहो!" तृषा की आवाज काँप रही थी।

अनंत ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "तो फिर सब बताओ मुझे। तुम बताओगी नहीं, तो मैं कुछ भी करूंगा कैसे?"

तृषा हौले से उससे अलग हुई और बोलना शुरू किया, "हमें पता नहीं कि सच क्या है? पर एक ख़ौफ है... जिसके साए में सारा पिशाच कुल सहमा हुआ रहता है। सब कहते हैं कि वो एक श्राप है... हम सबके लिए! क्यों है नहीं पता.. पर... ये भी कहते हैं कि वो श्राप... वो पिशाच...समय के पहिए के साथ घूम रहा है। ना जाने क्या चाहता है? पर उसकी बेरूखी की कीमत पिशाच कुल को चुकानी पड़ती है और इस बार... वो कीमत... मुझे चुकानी है।" आखिरी शब्द आते-आते तृषा एक बार फिर से ज़ार-ज़ार रोने लगी।

"कै...सी... कीमत?" अनंत की ऑखें सिकुड़ी थीं।

"वो मुझे ले जाएगा अनंत! वो पिशाच मुझे अपने साथ ले जाएगा! मैं तुमसे... अपने बच्चों से दूर नहीं जाना चाहती। " कहते हुए तृषा बुरी तरह से बिलख-बिलखकर रो पड़ी।

"और किसने बताया तुम्हें ये सब?" अनंत की ऑखें गुस्से से जलने लगी थीं।

"दीदी ने!" तृषा का छोटा सा उत्तर आया।

"मुझे पता था! उन लोगों को अभी भी चैन नहीं है। छोड़ क्यों नहीं देते वो सब हमें हमारे हाल पर। क्यों बरगला रहे हैं तुम्हें?" गुस्से में अनंत के नथुने
फड़कने लगे थे।

"नहीं अनंत! दीदी ने कुछ नहीं किया। वो तो हमेशा मेरे साथ थी। हमेशा! यहाँ तक कि छोटे भैया भी! बड़े भैया(प्रोफेसर साहनी) हमेशा चाहते थे कि हम तीनों उनकी तरह पिशाच की अधीनता स्वीकार कर लें, पर हम तीनों में से कोई भी इसके लिए राजी नहीं हुआ। मैं बगावत करके अलग हो गई, तो सबको लगता है कि मैं ही परिवार से अलग हूँ। पर दीदी और छोटे भैया भी बड़े भैया के उतने ही खिलाफ हैं, जितनी कि मैं।" तृषा ने अपनी बात कही।

"पर ये पिशाच है कौन?" अनंत कुमार ने पूछा।

"कोई नहीं जानता कि वो कौन है? हम सब बस ये जानते हैं कि वो जो कोई भी है, उसने पिशाच देव की कठिन आराधना करके छद्म पिशाच होने का वरदान पाया है, जोकि सभी पिशाच कुलों के लिए एक श्राप बन गया है। सदियों से ये हम सबका पीछा कर रहा है और कहते हैं कि जब तक उसे वो नहीं मिल जाता, जिसकी उसे तलाश है, तब तक हम सबको अभिशप्त का जीवन जीना पड़ेगा।" तृषा ने बताया।

"और वो पिशाच तुम्हें क्यों ले जाना चाहता है?" अनंत कुमार ने पूछा।

"क्योंकि वो जब भी आने के बाद... जाता है, एक बलि लेकर जाता है और इस बार भैया ने मेरा नाम डाला है।" तृषा की आवाज कांपी और एक बार फिर से वो अनंत की बाहों में जाकर छिप गई।

"क्या? वो ऐसा कैसे कर सकते हैं?" अनंत कुमार ने गुस्से और घृणा से कहा।

"मैंने हमारे समाज में उनका सिर झुकाया ना! अपना सिर फिर से ऊपर
उठाने के लिए उन्होंने ऐसा किया है।" तृषा ने सिसकते हुए कहा।

"और उन्हें ये लगता है कि वो ऐसा कर सकते हैं। तुम एक रखवाले की पत्नी हो तृषा! अपनी धरोहरों की हिफ़ाज़त करते हैं हम। तुम भी मेरी और मेरे परिवार की धरोहर हो। तुम्हारी सुरक्षा मेरी जिम्मेदारी है। तुम्हें कुछ भी करने से पहले उस सो कॉल्ड पिशाच को मुझसे टकराना होगा।" अनंत ने तैश के साथ कहा। उसकी बातें सुनकर एक तृषा ने अपनी ऑखें बंद कर लीं।

प्रोफेसर साहनी की नीयत के बारे में जानकर अनंत तिलमिला उठा था। उसने तृषा को हौसला देते हुए उसकी दीदी से मुलाकात की बात कही। तृषा ने हाँ में सिर हिलाया। एक बार फिर तृषा संभल चुकी थी, मगर अनंत के दिमाग में ढेर सारे सवाल दे गई थी। आने वाला समय बहुत सी बुरी यादें अपने साथ लेकर आने वाला था, जिसके साए में ना जाने कितनी जिंदगियाँ घुटने वाली थीं।

"फिर क्या हुआ?" वरूण ने तड़पकर पूछा।

"फिर.... फिर सब खत्म हो गया!" अनंत कुमार ने भर्राई हुई आवाज में कहा। एक बार फिर से वो शिथिल दिखाई देने लगे थे। अनामिका पानी का गिलास लेकर अनंत कुमार के पास गई। उन्होंने अपने बिखरे जज़्बातों को समेटते हुए वो गिलास ले लिया। कुछ और पल ख़ामोशी की नज़र हो गए। जब अनंत कुमार को लगा कि अब वो आगे बोलने की हालत में हैं, तब फिर से उन्होंने सबकी ओर अपनी तवज्जो की।

"दो दिनों के बाद तृषा चोरी-छिपे मुझे अपनी दीदी से मिलवाने ले गई। वो भी उनसे उसी तरह से मिला करती थी। मैंने उनसे सब कुछ विस्तार से जानना चाहा, तो उन्होंने भी पूरी जानकारी से अनभिज्ञता जाहिर की। पता नहीं क्यों, पर मुझे वो कभी भी ईमानदार नहीं लगीं। मगर यह कहकर मैं तृषा को आहत नहीं करना चाहता था।" अनंत कुमार ने गहरी साँस भरी।

"और आपको ऐसा क्यों लगा?" आशुतोष ने अनंत कुमार की ओर नज़र
उठाकर पूछा।

"क्योंकि जब भी मैं उस औरत से मिला... हमेशा एक नकारात्मक अनुभूति ने मुझे सचेत किया था। हालांकि उनका कोई भी ऐसा अतीत नहीं था, जो संदेहास्पद हो.... पर मैं कभी भी उस पर यकीन नहीं कर सका। हमारी उस मुलाकात के समय भी यही नकारात्मकता मुझ पर हावी रही।" अनंत कुमार ने आशुतोष के साथ-साथ सभी की जिज्ञासा शांत की।

"तो उस मुलाकात में आपको कुछ पता चला?" इस बार चैतन्य ने सवाल किया।

"कोई ख़ास नहीं! उसने बस यही बताया कि प्रोफेसर साहनी ने तृषा का नाम आगे नहीं रखा था, बल्कि खुद उस पिशाच ने तृषा को चुना था और अब कुछ भी नहीं हो सकता था। तृषा को जाना ही पड़ता। यह सब सुनकर मेरा दिल बुरी तरह से बैठ गया, पर जो भी हो... मैं उसे अपनी तृषा ऐसे ही थोड़ी ना सौंप देता। मैंने भी ये ठान लिया था कि वो जो कोई भी हो... उसे तृषा तक पहुँचने के लिए मुझसे टकराना होगा।" कहते हुए अनंत कुमार के जबड़े भिंच गए।

"फिर क्या हुआ?" वरूण ने एक गहरी साँस लेकर पूछा। वो हर पल के साथ खुद को मजबूत करने की कोशिश कर रहा था।

"हमें पता चला कि वो पिशाच दस दिनों के लिए आया था और जानकारी के मुताबिक आठ दिन गुजर चुके थे। तृषा की दीदी के अनुसार अगले दो दिन में वो तृषा को ले जाने वाला था। तृषा इतनी भयाक्रांत हो चुकी थी कि हर छोटी-छोटी आहट पर चौंक उठती थी। मुझसे उसकी हालत देखी नहीं जा रही थी। मगर मुझे खटका सा हो रहा था कि आखिर ये बला थी क्या... जिसके बारे में कोई भी नहीं जानता था। अगर सचमुच ऐसा था
तो इसका मतलब था कि पिशाच समूहों ने हम सबसे बहुत कुछ छिपाकर रखा था।" अनंत कुमार ने कहा।

"और वो क्या था?" आशुतोष ने पूछा।

"छद्म पिशाच!"

"ये क्या होता है?" एक साथ कई आवाजें आई।

"ये एक बहुत ही पुरानी और जटिल पिशाच साधना है। कहते हैं कि इसे आज तक कोई भी सिद्ध नहीं कर पाया.... सिवाए एक के! अनंत कुमार ने एक नई जानकारी दी।

"और वो कौन था जिसने ये कठिन साधना सिद्ध की थी।" चैतन्य का कौतूहल सामने आया।

"था नहीं.... थी! कोई बहुत ही शक्तिशाली काली शक्तियों की स्वामिनी थी वो!" अनंत कुमार ने अपनी फैली हुई ऑखों के साथ कहा।

"कोई औरत थी!" सभी बुरी तरह से चौंके।

"हाँ... और तुम सब जानते हो उसे!" अनंत कुमार ने सबको चौंकाते हुए कहा।

"हम सब जानते हैं!" इस बार अनामिका अपनी जगह से लगभग उछलते हुए बोली

"हाँ अनामिका! वो कोई और नहीं... वही पिशाचिनी थी, जिसने आज से 150 साल पहले चित्रलेखा उर्फ फ्लोरिना के शरीर पर अधिकार करने की
कोशिश की थी। उसी ने आज से एक हजार साल पहले इस छद्म पिशाच साधना को सिद्ध किया था। कहते हैं कि इसे सिद्ध करने के लिए आपको नफ़रत और निर्दयता की आखिरी हद को छूना होता है। आपके अंदर प्यार या कोमलता की एक बूंद भी नहीं होनी चाहिए और.... ऐसा होना आसान नहीं। इसलिए इस साधना को सिद्ध कर पाना आसान नहीं।" अनंत कुमार ने एक और धमाकेदार जानकारी दी।

"आपका मतलब है कि उस नर्क के द्वार के पीछे की काली शक्ति... जिसे तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र ने काबू में किया था, उसने ये साधना सिद्ध की थी! पर वो थी कौन?" आशुतोष ने अपने गुम होते हवास को ठीक करते हुए कहा।

"वो तो कोई भी नहीं जान पाया। पर जो भी थी बहुत ही शक्तिशाली थी। कहते हैं पूरे एक महीने की घोर साधना और मंत्रोच्चार के बाद उस काली शक्ति पर नियंत्रण पाया जा सका था। उसके बाद किसी के भी ऐसी किसी सिद्धि प्राप्ति की जानकारी नहीं है। इसलिए मुझे उस पिशाच के अस्तित्व पर संदेह था।" अनंत कुमार रहस्यों की परत खोलते हुए बोले।

"सबकी जानकारी के अनुसार जिसने सिद्धि प्राप्त की... वो एक औरत थी। लेकिन ये तो एक नर पिशाच है, जो अभी हमले कर रहा है। जाहिर सी बात है कि उसने उस जटिल साधना को सिद्ध किया है, तभी तो वो है। हम सबने उसे देखा है। इतनी बड़ी बात छिपी कैसे रह गई?" आशुतोष ने गणित सुलझाने की कोशिश करते हुए कहा।

"आसान सी बात है कि ये पिशाचों की साधना है, इसलिए किसी पिशाच कुल के सदस्य ने ही इसे साधा है। मगर पिशाचों ने इसे क्यों छिपा रखा है, ये समझ में नहीं आया।" अनंत कुमार ने कहा।

"शायद उन सबको किसी तरह की बदनामी का डर हो!" अनामिका अपने
कंधे उचकाते हुए बोली।

"अनामिका! छद्म पिशाच साधना एक श्राप है श्राप! जो इसे सिद्ध कर ले, उसे अभिशप्त माना जाता है और वो अभिशप्त जिस पर नज़रें टेढ़ी कर ले, वो भी अभिशप्त हो जाता है। तृषा ने बताया था कि पूरा पिशाच समूह ही अभिशप्त हो चुका है। मतलब कि वो सभी उस पिशाच रूपी श्राप से जूझ रहे हैं.... पर इतना होकर भी उसकी असलियत क्यों नहीं बताई जा रही है... ये समझ में नहीं आ रहा है।" अनंत कुमार उलझन से बोले।

"एक मिनट! मुझे कुछ कहना है!" अंकित की आवाज ने सबका ध्यान खींचा था।

"क्या?"

"आप लोगों ने ध्यान दिया कि तृषा जी ने कहा था वो लौट आया है.... इसका क्या मतलब है?" अंकित ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

"मुझे पता है। इसलिए तो हमें तुम्हारी मदद चाहिए।" अनंत कुमार ने कहा।

"कैसी मदद?" अंकित ने कहा।

"पिछली बार भी पिशाच इसी समय आया था। दोनों ही बार समय एक ही है... तो मैं ये जानना चाहता हूं कि पिछली बार से पहले भी ऐसा कुछ हुआ है क्या? बिल्कुल इसी समय में! मुझे यकीन है कि उस समय में भी ऐसी बात को दबा दिया गया होगा। मगर कहीं तो कुछ होगा। हो सकता है अंकित के भैया के पास कुछ हो। कोई भुक्तभोगी हो! तुम बस इतना ही पता करके बताओ अंकित। आखिर तुम्हारा और हमारा दर्द एक ही है।" अनंत कुमार ने अंकित से इल्तिजाई लहज़े में कहा।
"आप सब कौन हैं? क्या हैं? ये तो मुझे अभी भी समझ में नहीं आ रहा है। पर इतना जान गया हूँ कि हम एक ही दवा ढूंढ रहे हैं। मैं मदद करूंगा आप सभी की।" अंकित ने दृढ़ स्वर में कहा।

"शुक्रिया अंकित! मुझे यकीन है कि साथ रहकर तुम बहुत कुछ समझ जाओगे। अभी सब कुछ बताने का समय भी नहीं है। हमें अब अपनी एक पुख़्ता योजना बनानी होगी। अंकित मैंने तुमसे जो कहा... तुम वो करो। हम इस माया और अल्फ़ी की गुत्थी को सुलझाते हैं। जो कुछ भी है इन्हीं से जुड़ा है और परिधि इन सबमें कैसे आ गई? ये भी पता करना है। तब तक रक्षक भी अपनी शक्तियों की धार तेज कर लें। आगे लड़ाई खतरनाक होने वाली है। क्या हाथ आएगा और क्या हाथ से जाएगा.... पता नहीं। बस इतना पता है कि उस पिशाच को परिधि चाहिए, जो हम उसे कभी नहीं देंगे।" अनंत कुमार की आवाज सख़्त थी।

"एक और बात! परिधि के अंदर भी तो शक्तियाँ होंगी!" अंकित ने एक और सवाल उठाया।

"नहीं!" अनामिका बोली।

"नहीं! क्या सच में?" अंकित की हैरानी भरी आवाज आई।

"हाँ! वो बिल्कुल साधारण सी लड़की है... बिल्कुल तुम्हारी तरह!" अनामिका ने जवाब दिया।

"अच्छा! बड़ी अजीब बात है। एक साधारण सी लड़की इन पिशाचों और डायनों के चक्कर में कैसे फँस गई?" अंकित अभी भी हैरान था।

"शायद... जैसे तुम फँस गए हो।" गंभीर चेहरे के साथ अंकित की ओर
देखते हुए चैतन्य ने कहा।

"हम्म! हो सकता है। ठीक है.... तो मैं चलता हूँ। जल्द से जल्द कोई खबर लेकर आता हूं!" खड़े होते हुए अंकित ने कहा। सभी ने सिर हिलाकर उसे जाने की सहमति दी। वो आगे बढ़ा ही था कि तभी अनंत कुमार ने उसे रोका और उसे एक पर्पल रंग की अंगूठी दी।

"ये क्या है?" अंकित ने उस अंगूठी को घूर कर देखते हुए कहा।

"तुम्हारी सुरक्षा के लिए है। खुद से अलग नहीं करना इसे।" अनंत कुमार ने हिदायत देते हुए वो अंगूठी अंकित को पहना दी। अंकित ने एक गहरी नज़र उस अंगूठी पर डाली और फिर एक हुंकारी भरकर वहाँ से चला गया। सभी की नज़रें अंकित की ओर ही थी।

"तो क्या वो पिशाच ले गया माँ को?" वरूण ने रूंधे हुए स्वर में कहा। एक बार फिर सबकी नज़रें वरूण की ओर घूमी थीं।
अनंत कुमार ने डबडबाई हुई सुर्ख़ ऑखों से वरूण की ओर देखा। दोनों की ऑखों में एक ही दर्द ने अपने दो हिस्से कर लिए थे। दर्द शिद्दत से अपना काम कर रहा था। राहत की तलाश में अनंत कुमार ने अपनी ऑखें बंद कर लीं, पर ऑखें अभी भी यादों की आग में झुलस रही थीं। कुछ कतरे बंद ऑखों के कोरों से फिसले जरूर थे, पर आराम नहीं दे सके।

"उस समय क्या हुआ था? मैं वो दोहराना नहीं चाहता। तकलीफ़ के अलावा और कुछ नहीं मिलेगा।" अनंत कुमार ने भरे गले से कहा।

"पर ये मेरा हक़ है!" वरुण की आवाज सख़्त हुई थी।

"जान जाओगे। बस अभी कह पाने की हिम्मत नहीं है।" अनंत कुमार ने उसकी बात काटी और फिर उस पर एक लाचार नज़र डालते हुए वहाँ से
चले गए। एक बार फिर से सभी की नज़रें दरवाजे की ओर थीं।

"मैंने उस रात देखा था उसे!" वरूण की बात पर एक बार फिर से सभी चौंके।

"किस रात?" अनामिका ने सिकुड़ी हुई ऑखों से उसे देखते हुए पूछा।

"जब तुम पर हमला हुआ था। उसके वो डरावने और नुकीले पंजे देखे थे मैंने। इसीलिए मैं अंकित से मिला था और हम इसी वजह से आज उस खंडहर में गए थे। उसने मुझे बताया था कि वो भी सीसीटीवी में उस अजीब से प्राणी की वजह से परेशान हैं। क्यों था? आज पता चला।" वरूण ने अपने

और अंकित के खंडहर की ओर जाने का कारण बताया।

"तुमने पहले क्यों नहीं बताया?" अनामिका उसके सामने घुटनों के बल बैठकर चिंता से बोली।

"मैं डर गया था अनामिका! तुम जानती हो कि मैं माँ के कितने करीब था। उनका ऐसे अचानक चले जाना... मैं आज तक स्वीकार नहीं कर सका हूँ। मैं डर गया था तुम्हें खोने का सोचकर!" कहते हुए वरूण ने भरी ऑखों के साथ भरे हुए स्वर में कहा। अनामिका ने उसके हाथ पकड़ लिए थे।

"तुम मुझे छोड़कर तो नहीं जाओगी ना अनामिका! तुम जानती हो माँ के जाने के बाद बस एक तुमने ही हर कदम पर मुझे संभाला है। तुमसे दूर या अलग नहीं रह सकता मैं! प्लीज़!" वरूण की आवाज बुरी तरह से काँपने लगी थी। उसने अपना सिर झुकाकर अनामिका के हाथों पर रख दिया, जिनसे उसने वरूण के हाथों को पकड़ा हुआ था। चैतन्य एकटक उन दोनों को ही देख रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो इस समय कैसे रिएक्ट करे। वो जानता था कि इस समय अनामिका की जरूरत वरूण को ही है। मगर फिर भी वो अंदर से सुलग रहा था। आशुतोष ने उसके
कंधे पर हाथ रखकर उसे शांत करना चाहा। तभी दरवाजे पर हुई दस्तक ने एक बार फिर से सबका ध्यान दरवाजे की ओर किया। चैतन्य ने उठकर दरवाजा खोला। सामने अपनी मासूम मुस्कुराहट के साथ परिधि खड़ी थी। मगर चैतन्य के ऑखों की सुर्ख़ी को देखकर वो ठिठक गई। उसने अपनी मुस्कुराहट को समेटकर संभली हुई आवाज में पूछा, "क्या... हो गया?"

चैतन्य ने अपना सिर इंकार में हिलाया। परिधि ने कमरे के अंदर झांका, तो वरूण की हालत देखकर वो भी परेशान हो गई।

"क्या हुआ दीदी?" उसने अनामिका से घबराकर पूछा था।

"कुछ नहीं परिधि! तुम्हें कुछ चाहिए!" अनामिका ने कहते हुए अपनी नाक सुड़की।

"वो... मैं.... नाश्ता.." परिधि ने टूटे-फूटे शब्दों के साथ कहा।

"तुम चलो किचन में। मैं आती हूँ!" अनामिका ने सिर हिलाकर उसे जाने का इशारा किया। परिधि ने भी मुस्कुराते हुए सिर हिलाया और वहाँ से चली गई। वरूण अभी भी अनामिका के हाथों पर झुका हुआ था। परिधि के जाने के बाद चैतन्य भी झटके से वहाँ से निकल गया। आशुतोष उसके पीछे लपका था। चैतन्य बालकनी की ओर निकल गया था और रेलिंग को पकड़े हुए खड़ा था। उसकी लाल ऑखें उसकी हालत की चुगली कर रही थीं। आशुतोष उसके बराबर में जाकर खड़ा हो गया। कुछ देर शान्ति बनी रही।

"क्या हुआ चैतन्य?" आशुतोष ने ख़ामोशी तोड़ी।

"कुछ नहीं!" चैतन्य ने नज़रें चुराते हुए कहा।
"चैतन्य! ये बात अच्छी तरह से समझ लो कि उन दोनों का रिश्ता बहुत ही करीबी हैं और मजबूत भी। मुझे नहीं लगता कि अनामिका कभी भी वरूण का दिल तोड़ सकती है। इस बात को भी अपने दिल में कहीं बिठाकर रख लो।" आशुतोष ने बहुत हिम्मत करके अपने शब्दों को सख़्त किया था।

"और मेरा दिल! उसका क्या?" चैतन्य ने कड़वाहट से कहा।

"चैतन्य!" आशुतोष ने उसे परेशानी से देखा।

"उनका रिश्ता कितना भी करीब हो... कितना भी मजबूत हो। पर मैं इतना जानता हूँ कि अनामिका ने मुझे इंकार नहीं किया है।" लरजती हुई आवाज में चैतन्य बोला।

चैतन्य की बात आशुतोष को और भी परेशान कर गई। उसने चैतन्य के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "चैतन्य तुम..."

मगर वो अपनी बात पूरी कर पाते उससे पहले ही चैतन्य की सुर्ख़ ऑखों ने उनके शब्दों का रास्ता रोक लिया।

"पहली बार टूटे मेरे दिल को अनामिका और उसके अहसासों ने ही संभाला था। अब अगर फिर से टूटा.... तो दिल ही नहीं... मैं भी बिखर जाऊंगा और ऐसा कभी नहीं होगा। मैं उसे खुद से दूर कभी नहीं जाने दूंगा।" अपनी लाल ऑखों के डोरे आशुतोष पर डालते हुए चैतन्य ने तेज आवाज में कहा। कुछ देर तक वो उसी तरह आशुतोष को घूर कर देखता रहा और फिर झटके से मुड़कर वहाँ से चला गया। उसकी ऑखों में एक जूनून था... दीवानापन था... जिसने आशुतोष को डरा दिया था।

चैतन्य पर जमी नज़रें थोड़ा भटकी तो उसे दरवाजे के पीछे अनामिका दिखाई दी। उसके चेहरे की उलझन ने आशुतोष की परेशानी को और भी
बढ़ाया था। आशुतोष ने एक गहरी साँस लेकर उस लड़की की ओर देखा, जो उन दो लोगों के जूनून के पत्थर के बीच पिस रही थी, जिन्हें वो पसंद करती थी और उन दोनों में से किसी को भी दुःखी नहीं करना चाहती थी। पर हालात उसका कहीं से भी साथ नहीं दे रहे थे। अपनी लाचारी भरी नज़र आशुतोष से हटाकर वो वहाँ से चली गई। आशुतोष के भिंचे हुए जबड़ों के साथ चेहरा खासा सख़्त हुआ था।

थोड़ी ही देर में सभी ने साथ ही नाश्ता किया और फिर सभी ने अपनी-अपनी राह ली। एक बार फिर से परिधि ग्रीन हाऊस में पौधों के सूखे हुए पत्तों से उलझी थी कि तभी एक आहट से उसने अपनी नज़रें पीछे घुमाई।

सामने मुकुल खड़ा था और उसे ही देख रहा था। उसे देखकर परिधि तेजी से उठकर खड़ी हो गई और चोर नज़र से उसके रूखे चेहरे को तौलने लगी। मगर उसे हैरत का तेज झटका लगा, जब उसने मुकुल के नज़रों की सख़्ती को पिघलते देखा। हाँ! वो उसे नर्म नज़रों से देख रहा था। परिधि की नज़रें भी संकोच भूलकर ऊपर उठी। दोनों की नज़रें कुछ देर इसी तरह उलझी रही और फिर अचानक ही मुकुल को अपनी रूखे वजूद का ख्याल आया। उसने सिर झटककर दोनों के नज़रों के तार को तोड़ा और एक बार फिर से शुष्कता का आवरण ओढ़कर आगे बढ़ता हुआ परिधि के बगल से निकल गया। परिधि की नज़रों ने भी उसका पीछा किया और फिर उसकी बेरूखी को महसूस कर उसके मुँह से निकला,

"खड़ूस!"
मुकुल ग्रीन हाउस के अंदर एक कोने की ओर बढ़ा, जहाँ बागवानी में काम आने वाले औजार और दूसरे सामान रखे हुए थे। वो अपनी नज़रें तेजी से दौड़ाते हुए कुछ ढूंढ रहा था। परिधि मुँह बनाते हुए वहाँ से हट गई। उसे भी उस रूखे-सूखे मुकुल से उलझने का शौक नहीं था। वो फिर से एक गमले में झुककर

उसके सूखे पत्तों को साफ करने लगी। मुकुल ने अपने हाथों में ग्लव्स पहने और बाहर की ओर चला गया। परिधि उसकी ओर मुड़ी तो नहीं... पर उसकी नज़रों ने उसकी आहट का पीछा किया था। दरवाजा बंद होने की आवाज सुनने के बाद उसने एक गहरी साँस भरी। उसने दरवाजे की ओर देखा और मुँह टेढ़ा करते हुए अपने सिर को झटका दिया। थोड़ी ही देर में एक बार फिर से दरवाजे के खुलने की आवाज आई। परिधि की नज़रें स्वाभाविक रूप से दरवाजे की ओर उठी। दरवाजे पर मुकुल खाद से भरी बाल्टी लिए खड़ा था और अंदर घुसते ही उसकी नज़रें भी एक बार फिर से परिधि की नज़रों से उलझी थी, मगर इस बार उसने तेजी से नज़रें फेरते हुए वहाँ से निकलने का काम किया।

"पता नहीं क्या समझता है खुद को? लाट साहब!" परिधि ने फुसफुसाते हुए उसे धिक्कारा। जाहिर सी बात थी कि आवाज उसी के आसपास तक ही सीमित रही। उसने एक और चोर नज़र मुकुल की ओर डाली, जो पौधों
की जड़ों के पास की मिट्टी को खुरपी से ढीला करने के बाद वहाँ बाल्टी में रखी हुई खाद को डाल रहा था। परिधि अब अपना काम छोड़कर उसे काम करते हुए ग़ौर से देखने लगी। उसे खुद नहीं पता था कि वो क्या देख रही थी... क्यों देख रही थी, पर हाँ... देख रही थी। मुकुल के काम करने के तरीके को देखकर उसके माथे पर सिलवटें बढ़ने लगीं और होंठ सिकुड़ने लगे। अचानक उसने अपने दाँत भींचे और झटके से खड़ी होकर वो तेज कदमों से मुकुल के पास पहुँच गई। अपने पास परिधि के वजूद को महसूस करके मुकुल के तेजी से हिलते हाथ रूके थे। उसकी ऑखें तेजी से कई बार झपकीं और फिर उसने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा, जहाँ वो अपने कमर में हाथ रखे उसे खीझ भरी नज़रों से देख रही थी।

"क्या हुआ?" मुकुल ने ऑखों के इशारे से पूछा। चेहरे पर सख़्ती बराबर कब्जा किए हुए थी।

"पता नहीं अंकल ने तुम्हें ये काम करने के लिए क्यों दिया है? तुम तो सब बर्बाद कर दोगे!" परिधि झुंझलाकर बोली।

"हे! हे! मुझे मेरा काम मत सिखाओ! बचपन से शौक रहा है मुझे गार्डेनिंग का!" मुकुल भी तैश में आता हुआ उसके सामने खड़ा हो गया।

"वही तो बात है कि शौक और जिम्मेदारी में फर्क होता है।" परिधि ने उपेक्षित स्वर में कहा।

"अच्छा! बताने के लिए थैंक्स!" मुकुल ने रूखी आवाज में कहा और एक बार फिर से बैठकर अपना काम करने लगा।

अपनी बात को ज़ाया होते देख परिधि की ऑखें और मुँह दोनों ही हैरत से फ़ैल गए। अपने गुस्से के जोर को संभालते हुए उसने लगभग चीखते हुए कहा, "तुम्हें समझ नहीं आता... मैं क्या कह रही हूँ? इस खाद और पानी
से ये मर जाएगा। ये पौधा खास है... बहुत ख़ास!"

"और तुम्हें ये कैसे मालूम?" मुकुल ने भी उसी तेवर के साथ तेज आवाज में कहा।

उसकी ये बात सुनकर परिधि की ऑखें पहले तो सोच के तहत सिकुड़ी और फिर अपने चेहरे के बलों को ढीला करते हुए परिधि ने खोई हुई सी आवाज़ में कहा, "मुझे कैसे मालूम? कैसे मालूम? पता नहीं! पता नहीं।"

खोई हुई सी हालत में ही परिधि वहाँ से जाने के लिए मुड़ी। मुकुल उसे उसी तरह अपनी चढ़ी हुई भौंहों के साथ देखता रहा। आगे जाकर वो एक लकड़ी के बेंच पर बैठ गई। उसने अपने दोनों हाथ बेंच पर टिका रखे थे और सिर झुकाकर नीचे जमीन की ओर टकटकी लगाकर देख रही थी। उसके उलझे हुए चेहरे को देखकर मुकुल को अपने अंकल की बात याद आई कि वो अपनी पुरानी सारी जिंदगी भूल चुकी है। इसके साथ ही मुकुल को अपने सख़्त लहज़े का भी अहसास हुआ। एकदम से कुछ ग़लत कर गुजरने का अहसास उसे अंदर तक शर्मशार कर गया। एक पल के लिए उसने सोचा कि वो जाकर उससे माफी मांग ले, पर अगले ही पल उसके अंदर कोई चीखा,

"कभी नहीं मुकुल! तुझे पता है कि ये लड़कियाँ इसी तरह हमारी भावनाओं से खेलती हैं। वो जाने.... वो समझे! तुझे नहीं पड़ना इनके पचड़ों में।" यह ख्याल आते ही मुकुल का चेहरा कड़वाहट से बिगड़ गया। उसने झटके से अपनी गर्दन मोड़ी और एक बार फिर अपने काम की ओर ध्यान दिया। उसने एक बार फिर से खुरपी पकड़ी ही थी कि उसके कानों में किसी के सुबकने की आवाज आई। अब तो उसके चेहरे के असाब और भी बिगड़े थे। ना चाहते हुए भी उसकी नज़र परिधि की ओर गई थी और फिर.... सदमे से फैल गईं।
उसने देखा कि परिधि पहले की तरह ही बेंच में हाथ टिकाए नीचे की ओर देख रही थी। उसके बाल उसके चेहरे का पर्दा कर गए थे। मगर असामान्य नज़ारा तो उसके पीछे की ओर था, जहाँ मुकुल ने एक जोड़ी हाथ को परिधि की ओर धीरे-धीरे बढ़ते देखा। उसने बारी-बारी से उन हाथों और परिधि पर नज़र डाली और फिर पता नहीं किस जज़्बे के तहत उसने ऐसा किया! वो बिजली की फुर्ती से परिधि की ओर लपका और उसके हाथों को पकड़कर उसे झटके से लगभग दूर फेंका था। परिधि इस अचानक हुए घटनाक्रम से हड़बड़ा गई और जमीन पर जाकर गिर पड़ी। वो तो उसने अपने हाथ जमीन पर टिका दिए, वरना दरदरी जमीन से रगड़ खाकर चेहरे का नक्शा बिगड़ना तय था। फिलहाल तो वो पूरी तरह से धूल में नहा चुकी थी। गुस्से के जोर से वो अपने दाँतों को भींचे हुए झटके से उठ खड़ी हुई और सामने खड़े मुकुल की पीठ पर पूरी ताक़त से मुट्ठियाँ बांधकर मुक्का मारा था, जिसका कोई खास असर मुकुल के बलिष्ठ शरीर पर नहीं पड़ा। वो तो बस सामने टंगे आईने को घूरे जा रहा था।

"ये क्या हरकत थी? हँ! देखो क्या कर दिया तुमने?" परिधि पैर पटककर चीखते हुए बोली। मगर मुकुल अभी भी सिकुड़ी हुई ऑखों के साथ सामने ही देख रहा था।

"वहाँ आईने में क्या देख रहे हो?" परिधि एक बार फिर से पूरी ताकत से चीखी। इस बार जैसे मुकुल के कानों का रास्ता खुला। उसने सवाल भरी नज़रों से परिधि की ओर देखा और बोला, "आईना!"

"हाँ! आईना! इसे आईना ही तो कहते हैं।" परिधि झुंझलाकर बोली।

"ये यहाँ क्या कर रहा है?" मुकुल ने एक बार फिर से जैसे खुद से कहा। उसकी बात सुनकर तमतमाई हुई परिधि बेंच पर चढ़ गई क्योंकि लंबे कद के मुकुल की ऑखों में अपना गुस्सा उतारने के लिए उसे ये जरूरी लगा।
"मुझे... क्या... पता... क्या कर रहा है और तुम्हें... अगर आईने में अपना ये मुखड़ा देखने का इतना ही शौक चढ़ा था, तो बोल नहीं सकते थे। तुम्हारी तरह नहीं हूँ मैं छोटे दिल वाली। हट जाती... फिर निहारते रहते अपना ये पत्थर में तराशा हुआ हुस्न! मुझे उठाकर फेंकने की क्या जरूरत थी?" परिधि गुस्से में तपती हुई उसके ऊपर झुकती हुई बोली। उसे इस तरह करता देखकर मुकुल के होश वापस आए और उसने तुरंत उसे कंधों से पकड़कर अपने से दूर किया।

"मैंने यहाँ दो हाथ देखे थे.... तुम्हारी तरफ बढ़ते हुए। पर ऐसा कैसे हो सकता है? मुझे लगा कि यहाँ कोई खिड़की है, पर यहाँ तो ये आईना है!" मुकुल की आवाज एक बार फिर से हैरतजदा लग रही थी। मुकुल की बात सुनते ही परिधि की पेशानी पर पड़े बल ढीले हुए और चेहरे से डर की एक छाया गुजर गई।

"क्या बात कर रहे हो? ऐसा थोड़ी ना होता है। लगता है कि तुम्हें कोई वहम हो गया।" परिधि ने नज़रें बचाकर मुकुल से कहा।

"हम्म!" मुकुल ने कहा और फिर वहाँ से हटकर अपने काम की ओर बढ़ गया। परिधि ने एक खीझ के साथ अपना सिर झटका और फिर अपने कपड़े और शरीर पर चढ़ी धूल को झाड़ने लगी। इसी सब में सीधे हाथ की कोहनी के पास लगी खरोंच पर हाथ जाते ही उसके मुँह से एक सिसकारी निकल गई। मुकुल का ध्यान और नज़रें एक साथ परिधि की ओर घूमी, जो जख्म के पास की मिट्टी को उंगलियों से हटा रही थी। एक गहरी साँस भरकर मुकुल उठा और एक ओर चला गया।

किसी तरह जख्म की मिट्टी साफ कर जब परिधि ने अपना हाथ सीधा किया तो दर्द की एक लहर उसके उस हाथ से होकर गुजर गई। वो। कुछ सोचती उससे पहले ही मुकुल की आवाज से वो चौंकी। उसने सिर उठाकर देखा तो मुकुल फर्स्ट एड बॉक्स लिए खड़ा था।
"इसमें दवा है। लगा लो!" मुकुल ने वो बॉक्स आगे बढ़ाते हुए कहा। परिधि ने एक नज़र मुकुल पर और फिर दूसरी नज़र उस बॉक्स पर डाली। मुकुल के चेहरे के भाव अभी भी सख़्त ही थे। परिधि ने हाथ बढ़ाकर वो बॉक्स ले लिया। मुकुल वहाँ से चला गया। परिधि ने वो बॉक्स खोला तो उसका सिर ही घुम गया। वहाँ ढेर सारी दवाईयों के ट्यूब रखे थे। परिधि ने उलझन से उन्हें देखा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसके मतलब की दवा कौन सी है? इसी उलझन में एक बार फिर से उसके हाथ में दर्द की लहर उठी और वो एक बार फिर से सिसक उठी। मुकुल ने उसकी तरफ देखा, तो सिर हिलाता हुआ एक बार फिर से उसके पास आ गया। परिधि ने उसकी ओर देखा।

"क्या हुआ?" मुकुल ने पूछा।

"ये सब दवा हैं?"

"हाँ!"

"कौन... सी... दवा लगानी है?" परिधि के सकुचाते हुए पूछा।

"तुम्हें नहीं पता!" मुकुल ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"नहीं!" परिधि ने झेंपते हुए कहा।

मुकुल ने आगे बढ़कर एक ट्यूब उठाई और उसकी ओर बढ़ा दी। परिधि ने संशय से उस ट्यूब को देखा। मुकुल ने एक गहरी साँस ली और फिर ट्यूब का ढक्कन खोलकर उसके सामने बैठ गया।

"लाओ! दिखाओ!" मुकुल पहली बार नर्म लहजे में बोला। परिधि ने
अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। मुकुल ने पहले जख्म को थोड़ा सा और साफ किया, फिर उस पर ऐहतियात से दवा लगाने लगा। इस दौरान परिधि की नज़रें मुकुल के गंभीर से चेहरे पर फिसली थी।

उसे याद आया कि अनंत कुमार ने उसके माता-पिता की मौत के बारे में बताया था। अचानक ही उसे मुकुल से सहानुभूति सी हो गई। देखने का नज़रिया बदला, तो वो उसे अपनी फिक्र करता हुआ बहुत ही भला सा लगा। मुकुल पर जमी उसकी नज़रें हर पल के साथ और भी गहरी होती गईं। वो इसी खुमार में डूबी रहती, मगर उसी समय मुकुल की पलकें एक झटके से उसकी ओर उठी और वो उसकी तेज निगाहों से बुरी तरह झेंप गई। दवा लगाकर मुकुल वहाँ से हट गया।

****

अनंत कुमार अपनी स्टडी में थे। उन्होंने चारों ओर नज़रें घुमाकर उसे देखा और फिर मेज में रखे एक सफेद क्रिस्टल से बने पेपर वेट के पास पहुँचे। उन्होंने उस पेपर वेट को उठाकर मेज के कोने में बने एक वृत्ताकार रेखीय आकृति के बीच में रखा और तीन बार घुमाया। ऐसा करते ही उस पेपरवेट में सफेद रोशनी भर गई और वो मेज बीच से जैसे पिघलने लगा और गोलाई में घुमते हुए उसके बीच का हिस्सा किसी ढक्कन की तरह खुल गया। अब उसके अंदर एक सुनहरा बॉक्स दिखाई दे रहा था। अनंत कुमार ने वो बॉक्स उठाया, तो उसके नीचे एक होल दिखाई देने लगा। अनंत
कुमार ने उस बॉक्स को खोला, तो उसमें थी एक सुनहरी चाबी।

अनंत कुमार ने अपनी उंगलियों के इशारे से उसे चाबी को हवा में उठाया और फिर उसी तरह इशारे से उसे चाबी को नीचे पड़े होल में घुसा दिया। चाबी एक बार पूरी घूमी और फिर एक खट्टे की आवाज आई। उस आवाज को सुनते ही अनंत कुमार ने सिर ऊपर की ओर उठाकर देखा। उनके स्टडी की ऊँचाई हैरतअंगेज तरीके से बढ़ती जा रही थी और वहाँ दिखाई देने लगे थे किताबों के साथ कुछ बड़े ही अजीबोगरीब सामान।

अनंत कुमार एक कोने की ओर बढ़े, जहाँ उनके बढ़ते ही एक सुनहरी सीढ़ी जैसे हवा में उत्पन्न हो गई थी। अनंत कुमार सहज भाव से आगे बढ़े और उन सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गए। जब वो नीचे आए तो उनके हाथ में लकड़ी का एक बॉक्स था। उनके नीचे उतरते ही सभी चीजें फिर से
सामान्य होने लगीं और फिर सब पहले जैसा होते ही अनंत कुमार ने पेपरवेट उठाकर मेज में ही दूसरी ओर रख दिया। उन्होंने अपना फोन निकाला और एक नंबर डायल किया।

"स्टडी में आओ! जरूरी काम है।" कहकर उन्होंने फोन रख दिया। थोड़ी ही देर में दरवाजे में दस्तक हुई।

"अंदर आओ!"

"आपने बुलाया पापा!" वरूण ने अंदर आते हुए कहा।

"हाँ! यहाँ आओ! बैठो!" वरूण को कुर्सी में बैठने का इशारा करते हुए अनंत कुमार ने कहा। वरूण ने अपनी पनीली ऑखों से अनंत कुमार के चेहरे के दर्द को पढ़ लिया।

"तुम्हें कुछ देना था!" अनंत कुमार ने कहा।

"क्या?" वरूण ऑखें सिकोड़ कर बोला।

"सीधा हाथ आगे बढ़ाओ!" अनंत कुमार के कहने पर वरूण ने अपना सीधा हाथ आगे बढ़ा दिया। अनंत कुमार ने वरूण के बढ़े हुए हाथ को देखा और फिर अपनी ऊंगली में पहनी हुई अंगूठी को उतारकर वरूण की ऊंगली में पहना दी। वरूण ने चौंककर उस अंगूठी को देखा, जो थोड़ी ढीली लग रही थी। वरूण कुछ कहता उससे पहले ही वो अंगूठी सिकुड़ कर उसकी ऊंगली के नाप की हो गई।

"पापा ये..."

"तुम्हारी विरासत तुम्हें सौंप रहा हूँ।" अनंत कुमार ने भरे हुए गले से कहा।
"पर..."

"अब मैं बूढ़ा और कमजोर हो गया हूँ बेटा और हालातों को किसी मजबूत रखवाले की जरूरत है।" अनंत कुमार ने कहा।

"पर पापा...."

"श्श्श्श्श्!" अनंत कुमार ने अपने होंठों पर ऊंगली रखकर वरूण को चुप कराया। उन्होंने अपने सीधे हाथ से वरूण की अंगूठी वाला हाथ पकड़ा और अपना बायां हाथ वरूण के सिर पर रखा। बाएँ हाथ का अंगूठा वरूण की दोनों भवों के बीच में था। अनंत कुमार ने अपनी ऑखें बंद की और गहरे ध्यान में चले गए। कुछ ही पलों बाद वरूण को अपने पूरे शरीर में एक झुरझुरी सी महसूस होने लगी। उसे ऐसा लग रहा था,जैसे कि बिजली का एक बहुत ही हल्का सा करंट उसके पूरे शरीर में दौड़ रहा था। शुरू में तो उसका शरीर में भी नहीं झेल पा रहा था, पर कुछ ही देर में वो सामान्य होता गया। कुछ देर उसी तरह रहने के बाद अनंत कुमार और वरूण दोनों ने ही अपनी-अपनी ऑखें खोली। वरूण को जहाँ अपना शरीर पहले से ज्यादा फुर्तीला और ताकतवर महसूस हो रहा था, वहीं अनंत कुमार अब थके हुए और शिथिल से दिखाई दे रहे थे। वरूण ने उनकी ओर हैरानी से देखा, मगर कहा कुछ नहीं। अनंत कुमार ने उस लकड़ी के बॉक्स को उठाकर खोला और उसमें से एक रक्षामौली निकाली। वरूण की ओर बढ़ाते हुए उन्होंने कहा, "इसे मेरे हाथ में बांध दो!"

वरूण ने चुपचाप अपने पिता की बात मानते हुए वो रक्षामौली अनंत कुमार के हाथ में बांध दी और फिर उनके चेहरे की ओर टकटकी लगाकर देखने लगा। अनंत कुमार उसे देखकर मुस्कुराए और बोले,

"वरूण! आज से तुम हमारी धरोहरों के रखवाले हो। मुझे उम्मीद है कि तुम मुझसे बेहतर रखवाले बनोगे। एक बार फिर से कुछ भी बिखरने नहीं दोगे।"
वरूण ने देखा कि ये कहते हुए अनंत कुमार की ऑखें एक बार फिर से शिद्दत से लाल हो गई थीं। वरूण इन सुर्ख़ियों के दर्द को पहचानता था, पर उसकी गहराई का अंदाजा उसे अभी भी नहीं था। पता नहीं इस दर्द की थाह नापना कब उसके नसीब में लिखा था। अनंत कुमार ने एक बार फिर से उस लकड़ी के बॉक्स को खोला और उसमें से एक अंगूठी बाहर निकाली। चाँदी से बनी उस अंगूठी में चमगादड़ की आकृति के साथ लाल रंग का एक पत्थर जड़ा था।

"ये.... तुम्हारी माँ की अंगूठी है। मुझे यकीन है कि जीवन के हर मुश्किल समय में ये तुम्हें रास्ता दिखाएगी।" यह कहकर अनंत कुमार ने वो अंगूठी वरूण के बाएँ हाथ में पहना दी। उस अंगूठी को पहनते ही वरूण के पूरे शरीर में एक ठंडी सिहरन सी दौड़ गई। कुछ देर बाद सामान्य होते ही वरूण ने अपने पिता की ओर देखा, जो विरासत के स्थानांतरण के साथ ही बहुत ही मुत्मइन दिखाई दे रहे थे। एक दर्द था, जिसका बोझ वो बरसों से अकेले उठा रहे थे और आज आखिरकार उस दर्द को बांटने का वक्त आ ही गया था। आज उनका बेटा रखवाला बन गया था।

चैतन्य की हरकतें हर बढ़ते समय के साथ आशुतोष को परेशान करने लगी थीं। अभी-अभी उसके तेवरों और ऑखों ने आशुतोष को सच में डरा दिया था। ऊपर से अनामिका की बुझी हुई ऑखों ने उसके गुस्से को और भी बढ़ाने का काम किया था। इस समस्या का हल खोजना अब बहुत ही जरूरी हो गया था। वरना इन दोनों नमूनों को ही किसी रक्षक की जरूरत पड़ने वाली थी। आशुतोष कुछ देर वहीं खड़ा हुआ इस समस्या के बारे में सोचता रहा और फिर अनंत कुमार की स्टडी की ओर बढ़ गया। आजकल वो अपना बहुत सारा समय उस स्टडी में ही बिताते थे। दरवाजे पर पहुँचकर आशुतोष ने दस्तक दी। इज़ाजत मिलते ही वो अंदर गया। अनंत कुमार, वरूण का हाथ थामे बैठे हुए थे। माहौल थोड़ा सा भारी लग रहा था।
"अ... मुझे लगता है कि.... मुझे बाद में आना चाहिए।" कहते हुए आशुतोष जाने के लिए पलटा।

"नहीं! नहीं! आशुतोष जी! आइए! सही समय पर आए हैं आप!" अनंत कुमार ने अपनी ऑखें पोंछते हुए कहा।

"क्या सच में?" आशुतोष ने तस्दीक करना चाहा।

"जी हाँ! आपको नए रखवाले से मिलाना था। आइए!" अनंत कुमार ने भीगी पलकों के साथ होंठों पर मुस्कान सजाते हुए कहा। उनकी बात सुनकर आशुतोष की ऑखें हैरत से फैली थीं। अपनी फैली हुई ऑखों के साथ आशुतोष उन दोनों के पास गया।

"आशुतोष जी! वरूण अब अगला रखवाला है। आप लोगों के साथ इस जंग में वरूण ही आपके साथ रहेगा।" अनंत कुमार ने इत्मीनान के साथ कहा।

"और आप!" आशुतोष ने पूछा।

"अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। आप सभी नौजवानों की भीड़ में ताकत नहीं.... कमजोरी या फिर मजबूरी भी बन सकता हूँ। एक रखवाले के रूप में मेरी शक्तियाँ लगातार घट रही थीं। इसलिए यही ठीक है कि वरूण अपनी जिम्मेदारी समझ भी ले.... और संभाल भी ले।" अनंत कुमार ने थकी हुई आवाज में कहा।

"ऐसा मत कहिए। हम सभी तो नौसीखिए हैं। कुछ भी नहीं जानते इन सबके बारे में। आपको ही तो हमें सब बताना है... समझाना है। क्यों वरूण? सही कहा ना मैंने?" अपनी बात खत्म करते-करते आशुतोष वरूण की ओर मुड़ा था।
"जी!" वरूण ने भी छोटा सा जवाब दिया।

"वो तो मैं हूँ ही साथ। पर ये लड़ाई मामूली नहीं है। मैं कब तक और कितना साथ निभा सकूंगा इसकी कोई गारंटी नहीं दे सकता। दुश्मन ताकतवर है और जूनूनी भी। वो जीतने के लिए कुछ भी करेगा और हमने अभी तक एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाया है। हमें जल्दी करना होगा।" अनंत कुमार की आवाज में चिंता झलक रही थी।

"आप चिंता ना करें! हम सब साथ हैं, तो फिर जीत हमारे कदमों में होगी। बस इन शक्तियों का प्रयोग किस तरह करना है, दुविधा इसी को लेकर है।" आशुतोष ने हौसले भरी आवाज में कहा।

"उसकी किसी को चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। आप सभी को बस अपनी मानसिक शक्ति को मजबूत करना है। तभी आप इन्हें नियंत्रित कर सकते हैं।" अनंत कुमार ने कहा।

"जी! मैं समझ रहा हूं!" आशुतोष ने कहा।

"वैसे आप कुछ काम से आए थे!" अचानक ही अनंत कुमार ने आशुतोष के आने का उद्देश्य पूछा।

"अरे हाँ! मैं तो भूल ही गया था। दरअसल वो मैं....."

आशुतोष की बात पूरी होती, उससे पहले ही वरूण के फोन की रिंगटोन ने उन सबका ध्यान उसकी ओर किया। वरूण ने फोन निकाला और स्क्रीन पर देखते हुए कहा, "अ... मुझे हॉस्पिटल जाना है। समय हो रहा है।"

"ठीक है बेटा... जाओ! अपना ख्याल रखना! और हाँ... इन अंगूठियों
को लोगों की नज़र से बचाकर रखना। शाम को मुलाकात होगी।" अनंत कुमार ने वरूण के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। उनकी बात सुनकर वरूण ने अपना सिर हिलाया और फिर उठकर तेजी से बाहर निकल गया। आशुतोष की नज़रें लगातार वरूण पर ही जमी हुई थी।

"आप कुछ कह रहे थे आशुतोष जी!" अनंत कुमार ने आशुतोष को याद दिलाते हुए कहा।

"ज... जी हाँ! दरअसल मैं चाहता था कि ये बात वरूण और चैतन्य के सामने होती तो बेहतर होता।" आशुतोष ने कहा।

"आप अनामिका की बात कर रहे हैं।" अनंत कुमार ने आशुतोष को चौंकाते हुए कहा।

"आप जानते हैं!" आशुतोष की हैरतजदा आवाज आई।

"हाँ! मैं कैसे नहीं जानूँगा। सच कहूँ तो मैं वरूण और अनामिका के लिए बहुत खुश था। पर...." अनंत कुमार ने बात अधूरी छोड़ी।

"पर क्या?" आशुतोष ने बात का सिरा पकड़कर कहा।

"हाल के समय में सब कुछ बहुत ही तेजी से बदला है। शायद हम में से किसी ने भी ये सब नहीं सोचा होगा, जो हो चुका है और... परेशानी यही है।" अनंत कुमार ने बात आगे बढ़ाई।

"परेशानी! कैसी परेशानी?" आशुतोष का सवाल आगे आया।

"मैं, आप और अनामिका जो भी हो रहा है, उसके लिए पहले से ही मानसिक रूप से तैयार थे, पर चैतन्य और वरूण के साथ ऐसा नहीं है।
शक्तियाँ प्राप्त करना और उन शक्तियों को संभालना... नियंत्रित करना दो अलग बातें हैं। चैतन्य और वरूण को अपनी शक्तियों के सही प्रयोग के लिए उन पर नियंत्रण पाना होगा। इसलिए उन्हें अपनी मानसिक शक्ति को ध्यान के माध्यम से बढ़ाना होगा। " अनंत कुमार ने कहा।

"और वो दोनों अगर ऐसा नहीं कर सके तो!" आशुतोष ने एक आशंका व्यक्त की।

"तो वहीं होगा... जो हो रहा है।" अनंत कुमार ने आशुतोष को फिर से चौंकाया।

"क्या मतलब?" आशुतोष ने ऑखें सिकोड़ कर पूछा।

"आशुतोष जी! आप ये अच्छी तरह से जानते हैं कि ताकत कभी भी अकेले नहीं आती और चैतन्य-वरूण को जो ताकतें मिली हैं वो तो और भी खतरनाक हैं। ये उसी का साथ देती हैं, जो इन्हें सम्मान दे सके। वरना यही ताकतें उसे धारण करने वाले को बर्बाद कर देती हैं। वरूण और चैतन्य के साथ यही हो रहा है। ये ताकतें किसी जंगली घोड़े की तरह हैं, जिसे उन दोनों को ही काबू में करना है। ये ताकतें अपनी लगाम इतनी आसानी से नहीं देती किसी को। आपको क्या लगता है कि क्या कोई और रक्षक नहीं हो सकता है? होते हैं, पर बिना ताकतों के... किसी सहायक की तरह। ये ताकतें इन दोनों को परखने के लिए लगातार उनकी मानसिक अवस्था पर चोट कर रही हैं , जिसकी वजह से इनका ध्यान भटक रहा है और ये दोनों ही उग्र हो रहे हैं। सबसे पहले तो इनके मन को शांत करना है। किसी भी तरीके से। वरना इस लड़ाई में साथ होने की बात भूल ही जाइए।" अनंत कुमार की आवाज में चेतावनी मिली थी।

"तो आप वरूण को समझाइए! दोनों में से कोई एक भी बात को समझ जाए तो समस्या सुलझ सकती है।" आशुतोष ने अनंत कुमार के पाले में
गेंद डालते हुए कहा।

"कोई फायदा नहीं है। समझाने से वो और भी उग्र होंगे। लोग जब डरते हैं, तो सावधान हो जाते हैं, पर ये दोनों डर से ही उग्र हो रहे हैं। इस तरह उग्र होंगे तो ताकत पाने से पहले खो देंगे। तो फिर हल क्या

निकालें?" अनंत कुमार ने शिथिल स्वर में कहा।

"शायद अब मैं समझ रहा हूँ आपकी बात। समस्या ये है कि उन दोनों को अनामिका को खोने का डर तो है, पर शायद इस डर के ऊपर भी एक डर है!" आशुतोष ने कहा।

"और वो क्या?"

"यही कि उनकी हार सामने वाले की जीत होगी। वो अपनी हार से नहीं डर रहे हैं, बल्कि सामने वाले की जीत से डर रहे हैं और यही डर उन्हें उग्र कर रहा है।" आशुतोष ने अपनी बात समझाई।

"ये सब ठीक करना होगा क्योंकि ये हमारे लिए टीम की सबसे बड़ी कमजोरी साबित हो सकती है। पिशाच हमेशा हमारे मन से खेलते हैं और अगर वरूण और चैतन्य मानसिक रूप से आपस में मजबूती से नहीं जुड़ेंगे, तो वो पिशाच वहीं बार-बार वार करेगा। हम हर बार नया ज़ख़्म लेकर उसके भरने का इंतजार नहीं कर सकते हैं।" अनंत कुमार आवेश में बोले।

"अनामिका से बात करनी होगी।" आशुतोष ने कहा।

"और वो क्या?"

"यही कि वो किसी एक का नाम ले ले। आज नहीं तो कल उसे ये करना
ही है, तो आज ही सही। इस तरह दो की बजाय एक ही समस्या होगी हमारे पास, तब शायद हम उसे संभाल भी सकें।" आशुतोष ने एक उम्मीद के साथ कहा।

"अनामिका मान जाएगी!" अनंत कुमार ने संशय के साथ कहा।

"कोशिश करने में क्या हर्ज है!" आशुतोष की उम्मीद अब भी साथ थी।

"तो जाइए! कोशिश कीजिए!" अनंत कुमार ने मुस्कुरा कर कहा।

"और आप!"

"मुझे माया को ढूंढना है।" अनंत कुमार ने खोई हुई आवाज में कहा। आशुतोष ने हुंकारी भरी और फिर उस कमरे से बाहर निकल गया। अनंत कुमार ने मेज पर नज़र डाली। वहाँ एक पुरानी सी किताब रखी थी, जिसका शीर्षक था "डायनों का रहस्य!"

"इसमें भी कुछ नहीं है। कहाँ छिपी हो तुम माया?" अनंत कुमार ने चिढ़ती हुई आवाज में कहा और फिर उस किताब को उठाकर एक ओर के बुक सेल्फ की ओर बढ़ गए।

****

"अनामिका!" आशुतोष ने किचन में खोई हुई सी खड़ी अनामिका को
आवाज लगाई। अनामिका की तंद्रा टूटी। उसने आशुतोष की ओर देखा। उसका पूरा चेहरा उलझनों के जालों में लिपटा हुआ था और उसकी ऑखें खाली-खाली सी दिखाई दे रही थीं। उसके पास पहुँचकर उसके चेहरे को ग़ौर से पढ़ते हुए आशुतोष ने कहा, "परेशान लग रही हो!"

"नहीं तो!" अनामिका ने झूठ बोलने की कोशिश की।

"आफत तो तुमने खुद ही अपने सिर पर ली है।" आशुतोष की आवाज में तंज था।

"जी!" अनामिका चौंकी।

"जब तुम वरूण को लेकर इतनी जज़्बाती हो, तो चैतन्य को पहले ही मना क्यों नहीं कर दिया। शायद उस समय वो समझ भी जाता या फिर.... अब तक संभल भी जाता। तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हारी चुप्पी या फिर ये कहूं कि बात को लटकाने की वजह से ये समस्या सिर्फ तुम्हारे ही नहीं... हम सभी के लिए सिरदर्द बन गई है।" आशुतोष ने खुलकर अपनी बात कही।

"और ये बात आप आज क्यों कह रहे हैं?" अनामिका ने पलटकर सवाल किया।

"क्या मतलब?" आशुतोष ने भी नासमझी से पूछा।

"क्योंकि... आज आप उसकी ऑखों से डर गए। है ना!" अनामिका, आशुतोष की ऑखों में देखकर बोली। आशुतोष ने कुछ नहीं कहा... बस एकटक अनामिका की ओर देखकर उसे समझने की कोशिश करने लगा।

अनामिका ने एक गहरी साँस भरी और बोली, "मैंने चैतन्य की जूनूनी ऑखें उसी दिन देख ली थीं आशुतोष जी, जब उसने पहली बार मुझसे
अपने दिल की बात कही थी। मैं... मैं उसी दिन डर गई थी।"

"डर गई थी! पर क्यों?" आशुतोष ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।

"आशुतोष जी! वरूण ने कभी भी मुझसे अपने प्यार का इजहार नहीं किया। उसका और मेरा रिश्ता हमेशा से ही ऐसा ही खुला हुआ और बेहद करीबी रहा है। मैंने भी उसे कभी इस नज़रिए से देखा ही नहीं। पर जब चैतन्य ने मुझसे अपने दिल की बात कही थी, तब उसकी बुझी हुई ऑखों में अपने नाम के साथ जो रंग मैंने देखे थे, उन रंगों ने ही वरूण के दिल की बात भी मुझसे कह दी थी। वो रंग जिन्हें मैंने वरूण की ऑखों में भी देखा था, पर उन्हें ज़बान चैतन्य ने दिया। मैं उसी समय उलझ गई थी। इसलिए उस समय मैंने बात टाल दी और दूसरे दिन यहाँ आ गई थी। इसके बाद की सारी कहानी आप जानते हैं। मुझे समय ही कहाँ मिला... कुछ सोचने का.. कुछ समझने का।" अनामिका ने एक आह के साथ अपनी बात खत्म की।

"तो फिर अब...." आशुतोष का चिंता में डूबा हुआ स्वर सुनाई दिया।

"वही तो समझ में नहीं आ रहा है।" अनामिका अपने माथे पर ऊंगलियाँ रगड़ते हुए बोली।

"पर किसी एक का दिल तो टूटेगा ही।" आशुतोष की अफसोस भरी आवाज आई।

"क्यों? अगर दोनों ही कभी मेरे दिल में उतने ना उतर सके, जहाँ मेरा दिल वाकई में धड़कता है, तो क्या फिर भी मुझे समझौता करना होगा! बस इसलिए क्योंकि उन दोनों को ऐसा लगता है।" अनामिका ने झल्लाते हुए कहा।
"अनामिका!" आशुतोष ने कहा।

"वो दोनों मुझ पर दबाव डाल रहे हैं और कुछ नहीं। रिश्ते ऐसे नहीं बनते आशुतोष जी! किसी भी रिश्ते में प्यार के अलावा भी बहुत कुछ चाहिए होता है।" अनामिका अपने जज़्बातों को काबू में करते हुए बोली।

"तो एक बार फिर से वही सवाल... अब?" आशुतोष ने कहा।

"क्या अब? जरूरी नहीं कि मुझे उनसे प्यार हो ही जाए! हो सकता है कोई तीसरा ही हो!" अनामिका ने अनपेक्षित सी बात की।

"हम्म! आसार तो उन दोनों के ही हक़ में दिखाई नहीं दे रहे। (अचानक चौंककर अनामिका की ओर देखते हुए) क्या कहा तुमने? कोई तीसरा! हाँ! ये हो सकता है।" आशुतोष ने शरारती लहजे में ऑखों को नचाते हुए कहा।

"क्या हो सकता है?" अनामिका ने कहा।

"वरूण तो अब रात में ही आएगा।" आशुतोष ने कहा।

"नहीं! वो शायद दोपहर के खाने तक आ जाएगा। उसने कहा था।

"अच्छा! तो क्या बना रही हो तुम?" आशुतोष ने अलग रास्ता पकड़ते हुए कहा।

"जी!" अनामिका चौंकी।

"वरूण आएगा तो खाना खाएगा ना!" आशुतोष बोला।
"जी! दही वाली भिन्डी बनाने के लिए कहा है।" अनामिका ने उलझी हुई आवाज में कहा।

"पर चैतन्य को सूखी भिंडी पसंद है।" आशुतोष ने जरूरी जानकारी दी।

"हम्म! बना दूंगी, वरना फिर भिंडी को लेकर उलझ जाएँगे दोनों।" अनामिका ने एक ठंडी साँस छोड़ते हुए कहा।

"नहीं! तुम करेले बनाओगी। भरवां करेले!" आशुतोष ने मुस्कुरा कर कहा।

"वरूण को करेले नहीं पसंद और जहाँ तक मैं जानती हूं... चैतन्य को भी नहीं!" अनामिका घबराकर बोली।

"मैं जो कह रहा हूँ, वो करो और हाँ मेरी हाँ में हाँ मिलाना अब से। समझी!" आशुतोष ने अपनी तर्जनी उंगली अनामिका के सामने लहराते हुए कहा। अनामिका ने नासमझी में ही सिर हाँ में हिला दिया।

"तो क्या बनेगा?"

"करेले! भरवां करेले!" अनामिका उलझी हुई आवाज में बोली।

"गुड गर्ल!" कहते हुए आशुतोष ने अनामिका का सिर थपथपाया।

"पर ये सब..."

"उन दोनों को फिलहाल कोई नहीं समझा सकता। पत्थर पड़ गए हैं दोनों के दिमाग में। तो वो पत्थर उठाने पड़ेंगे।" आशुतोष अपने होंठों पर तर्जनी उंगली रखते हुए बोला।
"वो कैसे?"

"जब घी सीधी ऊंगली से ना निकले तब..."

"ऊंगली टेढ़ी कर लेनी चाहिए।" अनामिका ने वाक्य पूरा किया।

"नहीं! चम्मच से निकाल लेना चाहिए।" आशुतोष ने एक ऑख दबाते हुए कहा। उसकी इस हरकत पर अनामिका बेसाख़्ता मुस्कुराई थी। सही ही है... पुराने रास्तों से जब मंजिल ना मिले तो नए रास्ते खोज लेने चाहिए।

****

परिधि ने अपने हाथ की चोट पर लगे बैंडेज को उंगलियों से सहलाया और फिर चोर नज़र से काम करते मुकुल की ओर देखा। ना जाने क्यों... पर उसे देखकर परिधि के दिल में एक गुदगुदी सी हुई। वो अपने निचले होंठ को दाँतों में दबाए हुए ना जाने किन ख्यालों में गुम थी। तभी मुकुल की आवाज से वो वापस लौटी।

"परिधि!"

"अ... हाँ!"

"यहाँ आओगी!"
"अभी आई!" कहते हुए परिधि की मुस्कान चौड़ी हुई थी। वो तेजी से मुकुल के पास पहुँची।

"अरे संभलकर! फिर मत गिर जाना!" मुकुल ने चिंता जताते हुए कहा।

"अरे नहीं! नहीं! क्या हुआ? बताओ।" परिधि में हँसते हुए कहा।

"इस पौधे के बारे में कुछ कह रही थी तुम कि इसे खाद और पानी नहीं चाहिए!" मुकुल ने एक पौधे की ओर इशारा करते हुए कहा।

"हाँ! ये खाद नहीं... दूसरा खाद! सिर्फ हड्डियों से बना खाद चाहिए इसे।" परिधि ने कहा।

"अब ये कहाँ मिलेगा?" मुकुल परेशान होकर बोला।

"पौधा है तो खाद भी होगा।" परिधि ने कहा। उसकी बात सुनकर मुकुल कोने की ओर बढ़ गया, जहाँ बहुत सारा सामान रखा हुआ था। परिधि भी उसके पास आई। कुछ देर खोजने के बाद एक छोटी सी प्लास्टिक की थैली उठाते हुए परिधि उत्साह से बोली, "मिल गया!"

मुकुल उसके पास आया और उस थैली को हैरान नज़रों से देखते हुए बोला, "ये! इसे तो मैं चूना समझ रहा था।"

"तुम भी ना!" कहते हुए परिधि ने उसके माथे पर हाथ मारा और फिर उस पौधे के पास जाकर उसमें खाद डालने लगी। मुकुल को यह देखकर हैरानी हुई कि वो किसी माहिर बागबान की तरह काम कर रही थी। हर बढ़ते समय के साथ मुकुल का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था। उसने परिधि पर एक नज़र डाली और फिर उस आइने की ओर देखा। कुछ सोच-विचार कर उसने अपना फोन निकाला और फिर तेजी से एक मैसेज टाइप कर उसे
किसी को भेज दिया। कुछ ही देर में बीप के आवाज के साथ उसे सामने वाले का जवाब मिल गया। जवाब पढ़ने के बाद उसने अपनी एक भौंह चढ़ाकर परिधि की ओर देखा और फिर उसकी ओर बढ़ गया। उसे नहीं पता था कि वो एक नई राह पर बढ़ चला था।

परिधि पूरी लगन से अपना काम कर रही थी और उसके चेहरे पर बिखरी खुशी की किरणों से उसका तांबई रंग इस समय सुनहरी आभा से दमक रहा था। पोनीटेल की शक्ल में बंधे उसके बालों में से बाहर निकलकर एक लट उसके गालों से खेल रही थी, जिसे वो बार-बार झटक कर हटा रही थी। उसके रूप-लावण्य में खोए मुकुल ने अपना हाथ बढ़ाकर उसकी उस लट को पीछे करना चाहा, मगर ना जाने क्यों इससे परिधि बुरी तरह से छिटकी थी। मुकुल को भी झेंप भरी एक लहर ने आ घेरा, जब उसने परिधि के चेहरे पर हैरानी का सागर उमड़ता देखा।

"अ... वो तुम्हें परेशानी हो रही थी, तो बस मैं..!" मुकुल ने बात अधूरी छोड़ दी। मगर परिधि तो ना जाने क्या देख-सोच रही थी? वो शून्य सी बस उसे निहार रही थी। मुकुल ने उसकी जमी हुई भाव-भंगिमा को देखकर उसके कंधे को हल्का सा झटका दिया।
"परिधि!"

"अ.. हँ!" परिधि का मन जैसे किसी सफर से वापस लौटा।

"क्या हुआ? ऐसे क्या टुकुर-टुकुर देख रही हो?" मुकुल ऑखें सिकोड़ कर बोला।

"कुछ तो नहीं!" कहते हुए परिधि ने अपना सफ़ेद होता हुआ चेहरा फेर लिया।

"ये क्या था? ये.... अजीब सा अहसास!" परिधि ने एक गहरी साँस लेते हुए सोचा। मुकुल भी अजीब से भाव चेहरे पर लिए हुए उसी की ओर देख रहा था। अपनी मुखमुद्रा सही करते हुए जब परिधि पीछे पलटी, तो मुकुल की हैरान निगाहों ने उसका इस्तकबाल किया।

"काम खत्म हो गया तुम्हारा?" परिधि ने थोड़ी रूखी आवाज में कहा।

"नहीं और बताने के लिए थैंक्यू!" एकदम से ही मुकुल के अंदर वसंत का नया-नया अहसास बस एक झोंके की तरह गुज़र गया और वो फिर से पतझड़ की सूखी टहनी के मानिंद दिखाई देने लगा। वो वापस मुड़ा और एक बार फिर से अपने काम में लग गया। परिधि को अपने लफ़्ज़ों की कड़वाहट महसूस हो गई, पर ना जाने क्यों उसने मुकुल के मुस्कुराते अक्स के ख्याल को परे झटका और वहाँ से दूर हटते हुए एक दूसरे गमले को पकड़ा। उधर मुकुल भी परिधि के रूखे अल्फ़ाजों से ज्यादा अपनी हिमाकत से बौखलाया था। उसकी ऑखों के कोर चमकते हुए उसके दिल की हालत को बयां कर रहे थे। उसने एक चोर निगाह परिधि पर डाली।

"अंकल सही कह रहे थे। ये लड़की अजीब है! तुझे अपना काम करना ही
है मुकुल! ये याद रखना। पर... " एक गहरी साँस ने मुकुल के अल्फ़ाजों का रास्ता रोका था। वो एक बार फिर से अपने काम में लग गया।

मुकुल एक नज़र परिधि पर रखे हुए अपना काम कर रहा था, जबकि परिधि एक बार फिर से उसी बेंच पर जाकर बैठ गई थी। उसके चेहरे पर उलझनों का मेला सा लगा हुआ था, जहाँ ना जाने कितने रंग घुल-मिल गए थे। उसी समय मुकुल का फोन वाइब्रेट करने लगा। उसने फुर्ती से फोन उठाया और अपने कान से लगाकर सामने वाले की बात सुनने लगा।

"जी हाँ! परेशान तो दिख रही है। तो आगे क्या करूं मैं?" मुकुल ने अपने मुँह के आगे हथेली का घेरा बनाते हुए बहुत ही धीमी आवाज में कहा। उसकी बात सुनकर सामने वाले ने कुछ कहा।

"आपको पता है अंकल मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे लड़कियों के साए से भी नफ़रत है और आप मुझे.." मुकुल की बात अधूरी रह गई, जब सामने वाले ने उससे कुछ कहा।

"ठीक है! आप जानते हैं कि मैं आपकी बात नहीं टाल सकता। कोशिश करता हूँ।" मुकुल ने बहुत ही बेमन से कहा और कॉल काट दिया।

****

अनामिका और आशुतोष जब किचन से बाहर आए तो उन दोनों ने ही हॉल में चैतन्य और सृष्टि को बैठे देखा। सृष्टि अपनी हथेली के प्याले में अपना चेहरा टिकाए हुए बड़े ही प्यार से चैतन्य को देख रही थी, जो
उसका हाथ पकड़े हुए उस पर अपनी उंगलियाँ फिरा रहा था। यह दृश्य देखते ही अनामिका के कदम ठिठके थे, जिस पर आशुतोष ने उसके चेहरे को एक बार फिर से पढ़ने की कोशिश की। अपने चेहरे पर आशुतोष की नज़रों की चुभन महसूस करके अनामिका ने उसकी ओर देखा और कहा, "आप लोग कुछ भी कहिए! ये लड़की मुझे बिल्कुल भी सही नहीं लगती।"

"पर अनंत जी को उस पर कोई शक नहीं है। अगर वो खतरनाक होती तो उन्हें पता लग ही जाता और... उसकी पहचान अनंत जी से छिपी हुई भी नहीं है।" आशुतोष ने अनामिका की बात काटते हुए कहा।

"यही एक बात समझ में नहीं आ रही है कि प्रोफेसर साहनी ने अंकल और आंटी के साथ हमेशा बुरा किया और उनका कहना ये भी है कि सृष्टि की माँ भी उन्हें कभी भी सही नहीं लगती थी। तो फिर वो इन सबके साथ इतनी नरमी से क्यों पेश आ रहे हैं?" अनामिका ने अपनी उलझन सामने रखीं।

"सच में तुम्हें सृष्टि से बस यही दिक्कत है?" आशुतोष ने गहरी नज़रों से अनामिका को तौलते हुए कहा, जो सृष्टि को जहर बुझी ऑखों से देख रही थी। आशुतोष की बात सुनते ही उसकी नज़रों के कमान ढीले पड़े और उसने अपनी ऑखों को जल्दी-जल्दी झपकाते हुए आशुतोष की ओर देखा।

"और... और क्या... हो सकता है?" अनामिका ने अपनी बात पर जोर देने की कोशिश करते हुए कहा हालांकि ऑखें उसकी ज़बान से मेल नहीं खा रही थीं। आशुतोष के होंठों पर एक मुस्कुराहट उभरी।

"प्लीज़ आशुतोष जी! आप बात को बेवजह..." अनामिका कहते-कहते खीझी थी।
"पर मैंने तो कुछ कहा ही नहीं।" आशुतोष के होंठो पर मुस्कान बदस्तूर जमी हुई थी।

"आप अपने ख्यालों के तोते को पकड़कर... मैंने जो बात कही, उस पर कुछ कहेंगे।" अनामिका ने अपनी कमर पर हाथ रखे हुए कहा। आशुतोष अपने सीने पर दोनों हाथ बांधे हुए उसे ही देख रहा था। वो खासा चिढ़ी हुई दिखाई दे रही थी और इस चिड़चिड़ाहट में उसे ध्यान नहीं रहा कि उसकी आवाज तेज हो चुकी थी। चैतन्य और सृष्टि का ध्यान भी उन दोनों की ओर चला गया। आशुतोष और अनामिका दोनों को एक-दूसरे की आँखों में इस तरह खोए देखकर चैतन्य के हाथों से सृष्टि का हाथ एक झटके में छूटा था। चैतन्य की फिसलती पकड़ का अहसास होते ही सृष्टि ने पहले तो चैतन्य की ओर देखा और फिर उसकी नज़रों का पीछा करते हुए अनामिका को घूरा। अनामिका पर नज़र पड़ते ही वो सिर से पैर तक सुलग गई।

"एक बात कहूँ!" सृष्टि ने अपनी आवाज में शहद घोलते हुए कहा।

"कहो!" चैतन्य अभी भी उन दोनों को ही देख रहा था।

"दोनों साथ में अच्छे लगते हैं ना!" सृष्टि ने अपना खंजर चलाया।

"क्या बकवास कर रही हो?" चैतन्य ने सृष्टि को आग उगलती नज़रों से देखते हुए कहा।

"और नहीं तो क्या! मैंने तो हमेशा ही दोनों को साथ-साथ ही देखा है और मुझे ये भी लगता है कि..." सृष्टि की बात अधूरी रही।

"क्या लगता है?" चैतन्य ने अपनी एक कमान चढ़ाते हुए पूछा।
"वो दोनों एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह समझते हैं और साथ में खुश भी लगते हैं।" सृष्टि ने लफ़्ज़ों का खंज़र थोड़ा और अंदर घुसाते हुए कहा।

"व्हॉट नॉनसेंस?" चैतन्य बुरी तरह से तिलमिलाया था।

"अरे! हाथ कंगन को आरसी क्या और पढ़े-लिखे को फारसी क्या? तुम खुद ही दोनों को ऑब्जर्व करके देख लेना।" सृष्टि ने अपना खंज़र गहरे उतार कर कहा और इस बार इसकी टीस चैतन्य ने भी महसूस की थी। उसकी नज़रें आशुतोष और अनामिका से हटकर सृष्टि पर जम गई। उन दोनों की तेज आवाज ने भी आशुतोष और अनामिका का ध्यान उनकी ओर किया। आशुतोष ने एक तिरछी नज़र अनामिका पर डाली।

"वैसे चैतन्य, सृष्टि के साथ भी अच्छा लगता है ना!" आशुतोष ने कहा। बदले में अनामिका ने आशुतोष को घूरा था।

"अरे भई! तुम उसका दिल तोड़ोगी, तो कोई मरहम लगाने वाली भी तो होनी चाहिए ना! अच्छा है! उसे ज्यादा इंतजार करना नहीं पड़ेगा।" आशुतोष ने कहा और बिना उसकी प्रतिक्रिया देखे चैतन्य और सृष्टि की ओर बढ़ गया। उधर अनामिका के दिल में भी एक फांस सा चुभा था। क्यों? इसका जवाब शायद वो जानना भी नहीं चाहती थी।

"और किस बात पर बहस हो रही है?" आशुतोष ने सृष्टि की ओर देखते हुए कहा।

"कुछ नहीं! बस आप दोनों के बारे में बातें कर रहे थे।" चैतन्य की नाराज़गी भरी निगाहों की ज़द में सृष्टि ने आशुतोष और अनामिका की ओर एक-एक करके देखते हुए कहा।
"हमारे बारे में क्या बातें कर रहे थे?" आशुतोष ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा। अनामिका भी नज़रों को सृष्टि पर ही रखे हुए आशुतोष के पास आकर बैठ गई।

"यही कि आप दोनों कितने अच्छे दोस्त हैं और एक-दूसरे को कितनी अच्छी तरह से समझते हैं!" सृष्टि ने प्रशंसा भरी नज़रों से उन दोनों को देखते हुए कहा।

"हाँ! वो तो है!" आशुतोष ने हँसते हुए कहा।

"और मैं कह रही थी कि..."

"इनफ!" चैतन्य तेज आवाज में बोला और फिर झटके से वहाँ से उठकर चला गया। आशुतोष और अनामिका ने हैरानी से सृष्टि की ओर देखा, जिस पर सृष्टि ने अपने कंधे उचकाए। आशुतोष ने चैतन्य के उखड़े चेहरे और सृष्टि के होंठों में दबी मुस्कान को पहचान लिया। उसके चेहरे पर भी एक कातिलाना मुस्कुराहट फैल गई।

"सृष्टि! आज दोपहर का खाना हमारे साथ खाओ ना! अच्छा लगेगा हमें!" आशुतोष ने सृष्टि को दावत देते हुए कहा और अगले ही पल वो अनामिका की सुलगती नज़रों का निशाना बना था।

"हाँ! हाँ! क्यों नहीं!" सृष्टि ने फुर्ती से मौका लपका।

"गीता कमरे में है।" अनामिका ने बहुत ही रूखे स्वर में कहा।

"अ... हाँ!" सृष्टि ने उठते हुए कहा और तेजी से सीढ़ियों की ओर बढ़ गई। अनामिका उसे दूर जाते हुए देखती रही और जैसे ही उसे यकीन हुआ कि वो दूर चली गई है, वो ऑखों में अंगारे भरकर आशुतोष की ओर
देखने लगी।

"क्या हो गया?" आशुतोष ने मासूमियत में लपेटकर सवाल किया।

"क्या हुआ का क्या मतलब! आपने उसे खाने के लिए क्यों रोका? आप जानते हैं ना कि वो..."

"मैं कुछ नहीं जानता... जो तुम मुझे... या खुद को समझा रही हो। अनंत जी ने कहा है कि सृष्टि का हमारे साथ रहना बहुत जरूरी है। अगर इसी तरह से वो खुशी से साथ रह सकती है... तो ऐसा ही सही। वैसे भी वो चैतन्य को पसंद करती हैं। शायद साथ रहते-रहते चैतन्य के दिल में भी उसके लिए जगह बन जाए। वैसे भी तुम्हारे लिए तो अच्छा है ना! ऐसा होगा तो तुम्हारी ही परेशानी कम या फिर.... खत्म हो जाएगी। तो तुम्हें तो खुश होना चाहिए। तो जाओ और करेले बनाओ। कहो तो मैं मदद करूं कुछ तुम्हारी?" आशुतोष ने नज़रों की कमान से शब्दों के तीर छोड़ते हुए कहा। अनामिका ने कहा तो कुछ नहीं पर... उसके चेहरे पर बिखरते हुए रंग आशुतोष से बहुत कुछ बयां कर गए थे।

****

अनंत कुमार अपने स्टडी में बेचैनी से चहलकदमी कर रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि इस माया और अल्फ़ी नाम की पहेलियों को वो कैसे सुलझाएँ। आज इस समस्या का कोई ना कोई सिरा हाथ लगना बहुत ही जरूरी था, जिसे पकड़कर ही वो सब आगे बढ़ सकते थे। मगर इतने दिनों से पागलों की तरह ढूंढने के बाद भी कुछ नहीं मिला। 200
साल पहले कुछ तो हुआ था, पर क्या? कोई नहीं जानता था। अतीत के उन पन्नों को इस तरह से फाड़कर अलग कर दिया गया था कि उसका नामोनिशान मिट चुका था। अगर कोई उनका पता जानता भी था, तो वो भी अपनी यादों के दरवाजे पर ताला लगा कर बैठे हुए थे।

"सोच अनंत सोच! कहाँ मिल सकता है वो सिरा। ऐसे ही हवा थोड़ी ना हो जाएगा! पर कहाँ? इतने सालों में हर एक किताब चाट चुका हूँ। ये दोनों नाम कहीं नहीं पढ़े मैंने। परिधि तो है उस अतीत में, पर ये दोनों कहाँ हैं? परिधि की खोई हुई यादों से उन्हें निकालना बहुत ही मुश्किल हो रहा है। भगवान करे कि हमने जो प्लान बनाया है, उससे कुछ पता चल जाए। अब अपने साथियों पर ही भरोसा है।" अनंत

कुमार अपने हाथ मलते हुए बोले। अचानक उनके दिमाग में एक रोशनी सी कौंधी।

"वो पिशाच! उसने कहा था कि तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र उसे जानते थे। तो क्या उनकी यादों में हो सकता है वो और वो भूला हुआ अतीत! डायरी! तांत्रिक श्रेष्ठ की डायरी! पर वो तो आशुतोष के पास है और उसमें ऐसा कुछ भी नहीं।" यह सोचते हुए अनंत कुमार का उत्साह भी साबुन के झाग की तरह बैठ गया। वो अपना सिर पकड़कर बैठ गए।

"किसकी यादों से बाहर निकालूं तुम्हें?" अनंत कुमार ने अपने बालों की अपनी उंगलियों में जकड़ते हुए खीझ भरी आवाज में कहा। उंगलियों को सर में फेरते हुए एक बार फिर से एक ख्याल उनके दिमाग को रोशन कर गया।

"पीयूष की यादों में भी तो हो सकता है सब कुछ!" यह विचार आते ही वो तेजी से उठे और बुक सेल्फ की ओर लपके। जल्द ही वो एक डायरी जैसी किताब को लेकर वापस लौटे। उस किताब को उन्होंने मेज पर रखा और बड़ी ही हसरत से उसे देखने लगे। किताब पर उंगलियाँ फेरते हुए उन्होंने उसका नाम पढ़ा।
"यादों की विरासत!"

****

चैतन्य अपने कमरे में तिलमिलाया हुआ सा चहलकदमी कर रहा था। उसके कानों में सृष्टि के बोल गूंज रहे थे और ऑखों के सामने उसकी बात की तस्दीक करते हुए आशुतोष और अनामिका खड़े थे।

"पागल हो गई है वो सृष्टि भी! आशुतोष जी और अनामिका! कभी नहीं। वैसे भी आशुतोष जी मुझसे हमेशा अनामिका और मेरे विषय में बातें करते हैं। वो ऐसा थोड़ी ना करेंगे। हाँ! बकवास है सब! मैं भी क्या-क्या सोच रहा हूँ।" चैतन्य खुद को लताड़ते हुए बड़बड़ाया। यह ख्याल आते ही उसके होंठों पर तसल्ली भरी मुस्कराहट आई। मगर अगले ही पल एक दूसरे ख्याल के पत्थर ने उसके होश के तोते उड़ाए।

"पर अनामिका! हो सकता है कि उसके दिल में ऐसा हो। वो हमेशा से ही आशुतोष जी के करीब रही है। कितनी बातें करती है वो उनसे। खुश भी रहती है उनके साथ। कहीं उसकी तरफ से कोई पहल हो गई तो क्या आशुतोष जी अपने कदम अनामिका की तरफ नहीं बढ़ाऍंगे। वो खूबसूरत है और... समझदार भी! हे भगवान! क्या करूं? समझ में नहीं आ रहा है।" अपने सिर के बालों पर उंगलियाँ फेरते हुए वो बेचैनी से बड़बड़ाया। कुछ सोचकर उसने अपना फोन निकाला और आशुतोष को कॉल किया। दो रिंग जाने के बाद ही आशुतोष ने फोन उठा लिया।

"आशुतोष जी! आपसे बात करनी है। कहाँ हैं आप?" चैतन्य ने बढ़ती बेचैनियों के बीच बड़े ही मुश्किल से कहा।

"मैं किचन में अनामिका की मदद कर रहा हूँ।" आशुतोष का जवाब आया। यह सुनते ही चैतन्य की घबराहट और भी बढ़ गई। वो तेजी से नीचे की ओर भागा। अभी वो नीचे उतरा ही था कि उसे सामने से वरूण भागकर आता हुआ नज़र आया।

"पापा कहाँ हैं?" वरूण ने बेसब्री से पूछा।

"क्यों ? क्या हुआ?" चैतन्य की निगाहों ने उसकी बेसब्री को तौला।

"कुछ पता चला है!" वरूण ने फुसफुसाते हुए कहा।

"क्या कह रहे हो?" चैतन्य चिहुंका।

"हाँ! अंकित भी थोड़ी ही देर में आने वाला है। उसके हाथ भी कुछ लगा है।" वरूण की आवाज में उत्साह छलक रहा था।

"अंकल स्टडी में हैं।" चैतन्य ने कहा।

वरूण तेजी से स्टडी की ओर भागा। चैतन्य ने उसकी ओर देखा और फिर तेजी से किचन की ओर गया। दरवाजे पर पहुँचते ही उसके पैरों को अंदर से आती हँसी की आवाजों ने रोक दिया। वो दबे पैर आगे बढ़ा और चोर की तरह अंदर निगाह डाली। अगले ही पल आशुतोष और अनामिका की बेतकल्लुफ़ हँसी ने उसे अंदर से कहीं हिलाया था। वो बुत सा खड़ा हुआ उन दोनों को देख रहा था। उसी समय अनामिका की नज़र साकित खड़े
चैतन्य पर पड़ी।

"चैतन्य!"

आशुतोष ने भी मुड़कर चैतन्य की ओर देखा।

"वो... वरूण कोई खबर लाया है। स्टडी में है।" कहकर चैतन्य तेजी से वहाँ से चला गया।

"इसे क्या हुआ?" अनामिका ने हैरानी से कहा।

"मुझे क्या पता? चलो जल्दी!" आशुतोष भी कहते हुए तेजी से बाहर की ओर लपका। अनामिका ने भी उसी रफ्तार से उसे फॉलो किया। जल्द ही वो दोनों भी अनंत कुमार की स्टडी में पहुँच गए।

"आइए! आइए! आशुतोष जी!" अनंत कुमार ने उत्साह भरी आवाज में कहा।

"बहुत खुश दिख रहे हैं आप!" आशुतोष ने खुशगवार हैरानी से कहा।

"जी हाँ! एक सिरा पकड़ में जो आ गया है, जो हमें उस धुंधले अतीत में ले जाएगा।" अनंत कुमार ने राहत भरी मुस्कान के साथ कहा।

अनंत कुमार अपनी कुर्सी पर बैठे हुए थे। सामने मेज पर "यादों की विरासत" रखी हुई थी। सभी की नज़रें उस पर गई थी, पर किसी ने कुछ पूछा नहीं। सभी बिल्कुल शांत बैठे हुए थे। उसी समय दरवाजे पर दस्तक हुई और फिर वरूण ने उठकर फुर्ती से दरवाजा खोला। बाहर अंकित था। वो तेजी से अंदर आया। उसके हाथ में कागज़ों का एक पुलिंदा था। सभी के शांत पड़े शरीर हरकत में आए और उनकी ऑखों से उत्सुकता झांकने लगी।

"आओ अंकित! तुम्हारा ही इंतज़ार कर रहे थे।" अनंत कुमार ने अपनी कुर्सी से उठते हुए कहा।

"जी सर! मुझे भी नहीं लगा था कि इतनी जल्दी कुछ हाथ लग जाएगा।" अंकित ने उत्साह भरी आवाज में कहा और वो सारे कागज मेज पर अनंत
कुमार के सामने रख दिए। अनंत कुमार ने एक नज़र अंकित पर डाली और फिर दिलचस्पी भरी नज़रों से उन कागज़ों को देखने लगे। बाकी सब भी उन कागजों को ही देख रहे थे। अनंत कुमार ने उन कागजों को संभालकर अपने सामने रखा और उन्हें एक-एक करके पलटने लगे। हर पलटते पन्ने के साथ उनके ऑखों की हैरानी भी बढ़ती जा रही थी।

"ये सब हमारे पूजाघर में रखे हुए थे। मुझे लगा निजी तफ्तीश के दौरान हो सकता है उन्होंने घर में कुछ रखा हो। मैं जब भैया के कमरे में खोजबीन के दौरान चीजों के साथ उठापटक कर रहा था, तब आवाज सुनकर पिताजी ने कारण पूछा। मैंने जब उनसे कहा कि भैया के एक पुराने केस के बहुत जरूरी कागजात ढूंढ रहा हूँ... जो शायद उन्होंने घर में ही रखे थे। इस पर उन्होंने मुझे बताया कि भाभी के साथ घर छोड़ने से पहले भैया ने कुछ कागज़ पूजाघर में रखे थे और पिताजी से कहा था कि इनके बारे में किसी को भी ना बताएँ।" अंकित ने अनंत कुमार को अपनी फैली हुई ऑखों से देखते हुए बताया।

अंकित की बात सुनकर सभी की नज़रें अनंत कुमार की ओर गई थीं, जो बड़ी ही तन्मयता से उन पन्नों में गोते लगा रहे थे।

"पर ये है क्या?" चैतन्य ने उतावलेपन से पूछा।

"भैया दस साल पहले जब नवजात शिशुओं के गायब होने के केस को निजी तौर पर सुलझाने की कोशिश कर रहे थे, तब ये कागज़ उनके हत्थे चढ़े थे। भैया आगे कुछ कर पाते उससे पहले ही उनकी मृत्यु हो गई। इन कागज़ों के बारे में भी मुझे आज ही पता चला। मुझे लगता है कि ये बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए इनके मिलते ही मैं यहाँ आ गया।" अंकित ने जवाब दिया।

"हम्म!" अनंत कुमार ने कागज़ों पर झुके हुए ही कहा।
"पर ये हैं क्या यार?" आशुतोष ने झुंझलाकर पूछा।

"ये गायब हुए बच्चों का ब्यौरा है!" उन कागज़ों पर ही नज़रों को गड़ाए हुए अनंत कुमार ने जवाब दिया।

"जो दस साल पहले गायब हुए थे!" अनामिका ने पूछा।

"नहीं! मेरा शक सही निकला! बच्चे दस साल पहले ही नहीं, बल्कि.... हर दस सालों में गायब हुए हैं और हर बार पाँच बच्चे!" अनंत कुमार ने कागज़ों को समेटते हुए कहा।

"क्या? हर दस सालों में!" अनामिका चिहुँक कर बोली।

"हाँ! यहाँ चालीस सालों का हिसाब लिखा हुआ है।" अनंत कुमार ने उन कागज़ों कै ऊपर हाथ रखकर कहा।

"और इस साल को मिला लें तो पचास साल हुए। है ना!" आशुतोष ने हिसाब लगाते हुए कहा।

"हाँ!" अनंत कुमार ने कहा।

"एक और चौंकाने वाली बात भी है।" इस बार वरूण की आवाज ने सबको चौंकाया।

"क्या?"

"यही कि जितने भी बच्चे गायब हुए हैं... वो सभी हमारे ही हॉस्पिटल में पैदा हुए थे। यही मुझे आप सभी को बताना था।" वरूण ने एक और
चौंकाने वाला खुलासा किया।

"क्या सच में?" अंकित ने कहा।

"हाँ! जब तुमने बच्चों के डिटेल्स मुझे भेजे, तो कुछ जगहों पर मैंने हमारे 'अल्फ्रेड वॉकर हॉस्पिटल' का नाम देखा। मुझे शक हुआ तो मैंने पुराने रिकार्ड छाने। सब बच्चे हमारे हॉस्पिटल में ही पैदा हुए थे। हाँ, गायब अपने घरों और दूसरी जगहों से हुए हैं। पर फिर भी ये अजीब ही है ना!" वरूण ने तफ्सील से कहा।

"हाँ! मेरी भाभी की डिलीवरी भी उसी हॉस्पिटल में हुई और भैया की मौत यानि कि हत्या भी।" अंकित ने अगली कड़ी जोड़ते हुए कहा।

"शायद ये जानबूझ कर किया गया हो, ताकि मामला दबाने में आसानी रहे।" आशुतोष ने कहा।

"क्या मतलब?" अनामिका ने पूछा।

"ये.... प्राइवेट हॉस्पिटल है ना! वैसे... किसका है ये हॉस्पिटल और ये हॉस्पिटल बना कब है, मतलब शुरू कबसे हुआ?" आशुतोष ने अनंत कुमार से सवाल किया।

"हाँ! बहुत पुराना हॉस्पिटल है। करीब 125 साल हो गए। है ना!" वरूण ने जवाब देते हुए अपने पिता की ओर देखा।

"हाँ! ये हॉस्पिटल वॉकर परिवार की ही संपत्ति है। फिलहाल विक्टर अल्फ्रेड वॉकर इसके एक ट्रस्टी हैं।" अनंत कुमार ने जानकारी दी।

"अल्फ्रेड! और ये अल्फ्रेड कौन है, जिनके नाम पर ये हॉस्पिटल है?"
आशुतोष ने सवालिया नज़रों से अनंत कुमार को देखते हुए पूछा।

"वॉकर फैमिली से ही हैं। आज से करीब 225 साल पहले घोड़े से गिरकर उनकी मृत्यु हो गई थी। दरअसल अल्फ्रेड वॉकर के पोते एडवर्ड अल्फ्रेड वॉकर ने ही इस हॉस्पिटल को उनकी याद में बनवाया था। उनके पिता को उनके दादा से इतना ज्यादा प्यार था कि उन्होंने अपने और अपने बेटे के नाम के साथ उनका नाम भी जोड़ दिया था। विलियम अल्फ्रेड वॉकर और एडवर्ड अल्फ्रेड वॉकर!" अनंत कुमार ने बताया।

"तो क्या अल्फ्रेड वॉकर ये पूरा एक सरनेम नहीं है?" आशुतोष ने चौंककर कहा।

"नहीं! नहीं! अल्फ्रेड नाम तो बाद में भी कुछ बच्चों के नाम के साथ ही जोड़ा गया।" अनंत कुमार ने याद करते हुए कहा।

"जैसे... विक्टर अल्फ्रेड वॉकर की तरह! इसकी कोई ख़ास वजह!" आशुतोष ने उलझन भरी आवाज में पूछा।

"पता नहीं! परिवार में ऐसे कई बच्चों के नाम के साथ इस नाम को जोड़ा गया है। पर ये नाम हमेशा से ही बड़ा मनहूस रहा है, उस परिवार के लिए।" अनंत कुमार ने बात के लिए अगला सिरा खोलते हुए कहा।

"वो किस तरह?" आशुतोष ने सिरा पकड़ते हुए कहा।

"पता नहीं कैसे, पर जिसके नाम के साथ ये नाम जुड़ा होता है, ज्यादा लंबी आयु तक नहीं जी पाता। मगर फिर भी ये परम्परा ना जाने क्यों चलन में बनी हुई है। वैसे ये... उनका पारिवारिक मसला है, इसलिए कोई कुछ नहीं कहता।" कहते हुए अनंत कुमार ने अपने कंधे उचकाए।
"ये अजीब है!" चैतन्य ने हैरत भरी आवाज में कहा।

"ओह! यहाँ तो सब कुछ अजीब हो रहा है!" आशुतोष ने कहा।

"क्या अजीब?" वरूण बोला।

"शुरू से देखिए! लोगों की जानकारी में छद्म पिशाच साधना आज तक केवल एक महिला ही सिद्ध कर सकी है, वो भी 1000 साल पहले और वो कौन थी... कोई भी नहीं जानता। मगर आज हम सब जानते हैं कि उस पिशाचिनी के अलावा भी कोई था, जिसने ये सिद्धि हासिल की है, मगर एक बार फिर से... किसी को भी नहीं मालूम कि वो कौन है? आप लोगों को सच में लगता है कि इतनी बड़ी बात हो गई और किसी को पता भी नहीं चला होगा! क्यों?" आशुतोष ने सभी की ओर सवालिया नज़रों से देखते हुए कहा।

"क्यों?" अंकित ने पूछा।

"ये साधना पिशाच कुल का ही कोई सदस्य कर सकता है। जाहिर सी बात है कि जिसने ये सिद्धि

हासिल की है, वो किसी ऊँचे रूतबे वाले परिवार से ताल्लुक रखता था, तभी तो बात दबा दी गई।" आशुतोष ने कहा।

"तो तुम्हें क्या लगता है? कौन होगा वो?" अनंत कुमार ने मुँह के साथ-साथ ऑखों से भी पूछा।

"हम्म! देखो! जब भी उस पिशाच ने अपनी मौजूदगी दिखाई या जताई है, उसके साथ एक नाम भी सुनाई दिया है। 'अल्फी!' ये शब्द कुछ फैमिलियर नहीं लग रहा तुम सबको?" आशुतोष ने हिंट देते हुए कहा।

"मतलब?"
"अरे यार! अल्फ़ी.... यानि कि अल्फ्रेड! इस वॉकर परिवार में जितने भी अल्फ्रेड हुए हैं 200 से 250 साल पहले, उन्हीं में से कोई एक है ये पिशाच।" आशुतोष की विश्वास भरी आवाज आई।

"आपका मतलब है कि अल्फ़ी... किसी का निकनेम है!" अनामिका ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।

"हाँ! और ऐसा निकनेम... जिसके नीचे मूल नाम ही खो गया है।" आशुतोष ने अनामिका की जिज्ञासा शांत करते हुए कहा।

"पर ऐसी कोई भी जानकारी नहीं है कि वॉकर परिवार में ऐसा कुछ हुआ है। उनकी वंश बेल बिल्कुल दुरुस्त है। सिर्फ ऊँचे रूतबे ही नहीं, बल्कि ऊँची नाक वाले लोग भी हैं। अहेरी समूह का नियंत्रक यही परिवार रहा है हमेशा से।" अनंत कुमार ने अविश्वास से कहा।

"ये आई ना बड़ी खबर!" आशुतोष ने अपने बाई हथेली में पंच मारते हुए कहा।

"क्या?"

"ये प्रहरी समूह कब बना? तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र ने कब बनाया इसे?" आशुतोष का अगला सवाल आया।

"138 साल हो गए। चित्रलेखा वाली घटना के करीब 12 साल बाद।" अनंत कुमार ने कहा।

"मतलब कि जब ये छद्म पिशाच की सिद्धि हासिल की गई, तब सारी शक्तियाँ अहेरी समूह का नियंत्रक होने के कारण वॉकर फैमिली के पास
ही थी। अगर उस समय ऐसा कुछ हुआ भी था, तो उनके लिए बहुत आसान था ये बात दबा लेना। अब सवाल ये उठता है कि ये बात छिपाई क्यों गई?" आशुतोष ने जैसे उत्तर की चाह में सबसे कोई सवाल पूछा।

"क्योंकि ये बुरा माना जाता है।" अनंत कुमार ने कहा।

"एक्जैक्टली! ये बुरा माना जाता है, इसलिए अपने किसी सदस्य की इस हरकत को वॉकर फैमिली के द्वारा छिपाया गया है। ये पिशाच इनके परिवार से ही है। वो पिशाच हर दस साल में पता नहीं कहाँ से... पर वापस आता है। दस दिनों के लिए और इसी समय हर बार पाँच बच्चे गायब होते हैं। बिना किसी शक के कह सकता हूँ कि वो बच्चे उस पिशाच की ख़ुराक होते हैं और जाते समय वो एक बलि लेकर जाता है, जोकि पिछली बार तृषा जी थीं।" अपनी बात खत्म करके आशुतोष ने अनंत कुमार और वरूण

की ओर देखा, जो तृषा का नाम सुनकर थोड़े विचलित हुए थे।

"तो आपका मतलब है कि वॉकर परिवार सब जानता है।" चैतन्य ने बातों का रूख घुमाया।

"हाँ! और उस पिशाच के लिए खुराक का इंतजाम इसी हॉस्पिटल के गलियारों से किया जा रहा है।" आशुतोष ने बात आगे बढ़ाई।

"ओह माई गॉड! ये सब कितना उलझा हुआ है!" अनामिका ने अपना सिर पकड़ लिया।

"मेरा एक सवाल है।" अंकित ने अपना हाथ उठाकर कहा।

"क्या?" सबकी नज़रें उसकी ओर गईं।
"जैसे कि हमें पता है कि वो पिशाच 200 सालों से भटक रहा है। उसे जो चाहिए...अगर वो उसे मिल जाए... फिर तो सब ठीक हो जाएगा। ये श्राप.... ये बलि... सब बंद हो जाएँगे। है ना!" बात खत्म होते-होते अंकित की आवाज धीमी पड़ गई थी।

"और उसे परिधि चाहिए! क्या दे दें उस मासूम सी बच्ची को... उस दरिंदे के हाथों में?" अनंत कुमार की आवाज तल्ख़ हुई थी।

"जी नहीं! मेरा वो मतलब नहीं था।" अंकित ने सिटपिटा कर जवाब दिया।

"हमें बस ये पता है कि वो पिशाच एक दुर्दांत हत्यारा है। उसे परिधि से क्या परेशानी है.... पता नहीं । पर... अपने मतलब के लिए उसने ना जाने कितने मासूमों के खून से अपनी प्यास बुझाई है। उसकी मांग कहीं से भी सही नहीं हो सकती है। हमें परिधि को उससे बचाकर वापस उसके घर भेजना है। परिधि को नुक्सान नहीं पहुँचने दे सकते हैं हम! ये याद रखना!" अनंत कुमार अपने दाँत भींचते हुए कहा। कहते हुए उनका गला भर आया था। तृषा की हर याद उस पिशाच के प्रति उनकी नफ़रत को बढ़ा देती थी।

"पर ये माया कौन है, जो अल्फ़ी के साथ थी! वो कहाँ गई? क्या परिधि की वजह से उसे कुछ हुआ? इसलिए वो पिशाच परिधि को ढूंढ रहा है। उसने परिधि के सपने में भी माया के नाम से धमकी दी थी(भाग-9)" अनामिका ने परिधि के सपने को याद करते हुए कहा।

"वो यहाँ है!" अनंत कुमार की आवाज आई, जिस पर सभी ने उनकी ओर देखा। अनंत कुमार का इशारा उस किताब की ओर था, जो मेज पर रखी हुई थी।
"यादों की विरासत!" अंकित ने उस पर लिखे हर्फ़ों को पढ़ते हुए कहा।

"इन मोहतरमा की तलाश में मैंने इस स्टडी की एक-एक किताब छान मारी और ये मिली हैं यहाँ। डॉ. पीयूष की डायरी में।" अनंत कुमार ने एक ठंडी साँस छोड़ते हुए कहा।

"ऐसा क्यों?"

"क्योंकि माया नाम की ऐसी कोई लड़की ही नहीं है। मेरा मतलब है कि माया भी एक निकनेम जैसा ही है।" अनंत कुमार ने बताया।

"ओह! आपका मतलब है कि जैसे अल्फ़ी का कोई और नाम है उसी तरह माया की शिनाख्त भी कुछ और है।" आशुतोष की हैरानी भरी आवाज आई।

"हाँ! उसका असली नाम कुछ और ही था।" कहते हुए अनंत कुमार ने उस डायरी को सबके सामने खोला, जहाँ एक लड़की की तस्वीर थी।

"ये माया है!" चैतन्य ने हैरानी से उस तस्वीर को देखते हुए कहा।

"हाँ! यही माया है!" अनंत कुमार ने कहा।
"खूबसूरत है!" चैतन्य ने मुस्कुराते हुए कहा और फिर अपनी नज़रें घुमाई तो सबको उसे घूरते हुए पाया, ख़ासतौर पर अनामिका को।

"अ... मेरा मतलब है... थी।" चैतन्य ने उड़ी हुई रंगत के साथ अपनी बात संभालने की कोशिश की। उसकी इस हरकत पर सभी ने अपने सिर हिलाए थे।

"इसकी क्या कहानी है? मतलब कि क्या हुआ था इसके साथ?" वरूण ने कहा।

"इस माया का वजूद भी 200 साल पहले ही मिला है। इस डायरी से ये पता चला है कि 200 साल पहले इस माया को काला जादू करने और पिशाच परिवारों की जासूसी करने के आरोप में जिंदा जला दिया गया था।" अनंत कुमार ने धमाका किया।

"क्या? पर वो क्यों जासूसी करेगी?" अंकित ने सवाल किया।

"वो समय बहुत ही तनाव भरा हुआ करता था। डायनों और पिशाचों के बीच कुछ भी ठीक नहीं था। अपनी ताकत बढ़ाने के लिए दूसरे को नुक़सान पहुँचाने का आरोप दोनों समूह एक-दूसरे पर लगाया करते थे। सुनने में ये आया है कि उस समय किसी डायन ने उस 1000 साल पहले वाली पिशाचिनी को आजाद करने की कोशिश की थी। सबको ये पता है कि ये कितना ख़तरनाक था। तांत्रिकों का एक सक्षम समूह हमेशा से ही इस कार्य में लगा रहता था कि वो पिशाचिनी बाहर ना निकले क्योंकि इससे पिशाचों के समूह बर्बाद हो जाते। उस तनाव के समय में ये बात जगजाहिर हुई थी कि इस षड्यंत्र के पीछे माया का हाथ था। बात साबित हुई तो बहुत बवाल हुआ था। कहा जाता है कि अहेरी समूह जिस पर पिशाच परिवारों की गहरी पैठ थी, उन्होंने डायनों के खिलाफ फैसला
सुनाया और सभा के फैसले के आगे किसी की भी सुनवाई नहीं होती थी। भारी जनसमूह के बीच माया को जिंदा जला दिया गया था।

बहुत सी डायनें अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग गईं और दुनिया भर में तितर-बितर हो गईं। कौन कहाँ गया किसी को पता नहीं चला। डायनों का बसेरा तबाह हो गया।" अनंत कुमार ने पूरी घटना डायरी में लिखे शब्दों की जुबानी बताई।

"आपका मतलब है कि माया को सजा मिली थी। हो सकता है कि परिधि की वजह से उसका राज खुला हो। इसलिए ये अल्फ़ी नाम का पिशाच उसे ढूंढ रहा है। अपना बदला लेने के लिए।" आशुतोष ने उस कहानी से पिशाच का संबंध जोड़ते हुए कहा।

"पर परिधि 200 सालों का फासला तय करके उस समय से इस समय में कैसे पहुँच गई?" अंकित ने अपना आश्चर्य व्यक्त किया।

"किसी ने समय द्वार बनाया था और उसी की मदद से परिधि यहाँ पहुँची है। उसे वो सारी चोटें 200 साल पहले ही लगी थीं।" अनंत ने कहा।

"समय द्वार! पर किसने? ये आसान जादू बिल्कुल नहीं है।" आशुतोष ने चौंकते हुए कहा।

"बहुत से राज तो अभी भी नहीं खुले हैं और खुलेंगे इसकी ज्यादा उम्मीद भी नहीं है। उस समय के सभी सबूत बहुत ही सफाई से मिटा दिए गए हैं। वाकई में उस समय क्या हुआ था आज कोई नहीं जानता सिवाय उस पिशाच और परिधि की गुम हुई यादों के।" अनंत कुमार ने कहा।
"तो मतलब कि हम बस इतना जान गए हैं कि परिधि ने माया को ग़लत काम करते पकड़ाया, जिसकी वजह से उसे जिंदा जला दिया गया और अपनी प्रेमिका की मौत का बदला लेने के लिए ही अल्फी... परिधि का सदियों से पीछा कर रहा है और आखिरकार 200 सालों के बाद उसे ढूंढ लिया है। अब वो उसे जान से मारकर अपने मकसद में कामयाब हो सकता है और हमें यही नहीं होने देना है। एम आई राईट?" अंकित ने पूरी कहानी कुछ पंक्तियों में समेटते हुए कहा।

"बिल्कुल यही।" अनंत कुमार ने कहा।

"इसका मतलब तो ये भी है कि... जिस अल्फ्रेड के नाम पर हॉस्पिटल है वो अल्फी नहीं है। कोई और ही है, जो उस समय... नौजवान रहा होगा। तभी तो माया और उसके बीच प्रेम संबंध रहे होंगे।" वरूण ने कहा।

"पर अभी भी ये समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसे जंगी माहौल में एक पिशाच और डायन के बीच प्रेम कहानी कैसे पनप गई? और वो भी इस तरह कि वो अपना बदला लेने के लिए सदियों से तड़प रहा है।" अनामिका ने अपनी ऑखों के सवालों को जुबान से बाहर निकला।

"क्यों? प्रेम होने के लिए कोई वाजिब वजह होनी जरूरी है क्या? वो तो बस हो जाता है। इतने अलग होने के बाद भी अल्फी और माया को एक-दूसरे में अपना प्यार मिल गया। मैं तो सोच रहा हूँ कि कितनी शिद्दत रही होगी दोनों की मोहब्बत में कि वो आज भी उसके लिए तड़प रहा है। मैं अच्छी तरह से समझ सकता हूँ।" चैतन्य शून्य में देखते हुए बोला।

चैतन्य की बात सुनते ही अनामिका के चेहरे के भाव बिखर गए और वो अपनी जगह से उठकर तेजी से कमरे से बाहर निकल गई। सभी का ध्यान अनामिका के बाद चैतन्य पर जाकर टिका था। चैतन्य ने सबको अपनी

ओर देखते हुए पाया, तो अपनी हैरान ऑखों से सवाल किया। आशुतोष ने अपना सिर अफसोस में हिलाया।

"अब मैंने क्या किया?" हैरान चैतन्य खुद में बड़बड़ाया।

माहौल के बदलते रूख को देखकर अनंत कुमार ने गला खखारकर एक बार फिर सबका ध्यान अपनी ओर किया।

"तो मुझे लगता है कि हमें पर्याप्त जानकारी मिल चुकी है। वॉकर परिवार की समस्या के बारे में भी सोचना पड़ेगा। अल्फी की जानकारी भी हमें और मिल सकती, तो हमारे लिए अच्छा होता।" अनंत कुमार ने कहा।

"तो क्या करें?" अंकित ने कहा।

"सब अपने मोर्चों पर वापस लौटो। अंकित तुम अपनी जाँच की गहराई बढ़ाओ और वॉकर परिवार की भूमिका की तफ्तीश करो, शायद कुछ और पता चल जाए। वरूण तुम हॉस्पिटल में खोज का दायरा बढ़ाओ। चैतन्य तुम परिधि की यादों में कुछ और तफ्सील से ढूंढो। मैं और आशुतोष समय द्वार का रास्ता और खोलने का तरीका ढूंढते हैं। उसके बिना और कुछ नहीं हो सकता। अतीत में बिखरे प्रेम के धागों के सिरे काफी हद तक जुड़ गए हैं और आगे काम करने के लिए हमारे पास अब एक जमीन भी है। बस, अब हम सबको शांत दिमाग से अपना काम करना है और ये बहुत जरूरी है। बस तीन दिन बचे हैं।" अनंत कुमार ने सबको समझाते हुए कहा।

"जी!" सभी ने एक साथ कहा और फिर सभी एक-एक करके वहाँ से निकल गए। आशुतोष कमरे से बाहर निकल कर अनामिका को खोजता हुआ किचन की ओर गया, जहाँ की खिड़की से उसने अनामिका को पीछे वाले बरामदे में बैठा देखा। वो उस तरफ जाने की सोच ही रहा था कि तभी उसने वरूण को उसकी तरफ जाते देखा। कुछ सोचकर आशुतोष ने
फलों की टोकरी से एक सेव उठाया और वहाँ से निकल गया।

मुकुल खुद में उलझा हुआ था। ना जाने उसके दिलों दिमाग में कौन सा तूफान बरपा हुआ था, जिससे वो निकल ही नहीं पा रहा था। जब उलझे हुए विचारों की दस्तक हथौड़े की तरह उसके दिमाग पर चोट करने लगी, तो वो अपना सिर पकड़कर बैठ गया। उसने हल्का सा सिर घुमाकर परिधि की ओर देखा.... कुछ देर सोचा और फिर एक गहरी साँस लेकर उठ गया। पानी की बोतल लेकर वो जैसे खुद से लड़ता हुआ परिधि के पास पहुँचा और उसके बगल में थोड़े फासले के साथ बैठ गया। उसकी मौजूदगी का एहसास होते ही परिधि ने भी अपनी नजरें मुकुल की ओर घुमाई। परिधि के ऑखों की गुलाबी रंगत ने मुकुल को असहज किया था। मुकुल ने पानी की बोतल उसकी ओर बढ़ाई। परिधि ने एक नज़र मुकुल पर और फिर
उसके हाथ में मौजूद पानी की बोतल पर डाली। उसने हाथ बढ़ाकर वो बोतल ले ली और ढक्कन खोलकर पानी पीने लगी। इस पूरे दरमियान मुकुल बड़े ही ग़ौर से उसके चेहरे को देख रहा था, जैसे कि उसके चेहरे की किताब में कुछ पढ़ना चाह रहा हो।

"ऐसे क्या देख रहे हो?" पानी की आखिरी घूंट को गले से नीचे उतारते हुए परिधि ने कहा।

"तुम्हें सच में अपने बारे में कुछ भी याद नहीं है?" मुकुल ने उससे एक अप्रत्याशित सा सवाल किया। मुकुल के सवाल ने परिधि को चौंकाया था। जाहिर सी बात है कि वो किसी से घुलता-मिलता नहीं था, तो परिधि के बारे में उसे ये कैसे पता चला?

"तुम्हें किसने बताया?" परिधि की जिज्ञासा बोल पड़ी।

"मेरे अंकल ने!" मुकुल का जवाब आया।

"प्रोफेसर साहनी!" परिधि ने तस्दीक किया।

"हम्म!" मुकुल ने हुंकारी सी भरी। परिधि ने एक गहरी साँस ली और फिर अपना सिर झुका लिया।

"पता नहीं क्या हुआ है? कभी-कभी कुछ यादें दस्तक देने की कोशिशें करती है, पर ज़हन के दरवाजे खुलते ही नहीं हैं।" परिधि ने चेहरे में बिखरे दर्द को समेटने की कोशिश करते हुए कहा।

"बहुत झुंझलाहट होती होगी ना!" मुकुल ने कहा।

"हाँ! ऐसा लगता है कि जैसे खुद से ही कोई जंग लड़ रही हूँ, जिसमें
हर बार खुद से ही हार जाती हूँ।" परिधि ने आह भरते हुए थकी हुई सी आवाज़ में कहा।

"मैं समझ सकता हूँ। मेरी हालत भी कुछ तुम्हारी तरह ही है। मगर तुम्हारी यादों का कागज़ जितना सफेद है, मेरी यादों का कागज़ उतना ही स्याह है। हम दोनों ही इन रंगों से लड़ रहे हैं..... कुछ और रंगों की ख़्वाहिश में।" मुकुल के होंठों से शिथिल सी आवाज़ निकली।

"तुम्हें भी अपने माता-पिता की याद आती होगी ना!" परिधि ने मुकुल के खोए हुए से चेहरे की ओर देखकर कहा। जवाब में मुकुल ने भी परिधि को हैरानी से देखा।

"मुझे भी मेरे अंकल ने बताया!" परिधि ने हल्की मुस्कुराहट के साथ कहा।

"डॉ. अनंत!" मुकुल ने कहा।

"हाँ! उन्होंने ये भी बताया कि उनकी मौत से पहले तुम बहुत ही खुशमिजाज हुआ करते थे। जिंदगी से भरे हुए! फिर कहाँ खाली कर आए खुद को?" परिधि ने अपनी गहरी नज़रों के दायरे में उसे घेरते हुए पूछा। परिधि ने सवाल पूछ तो लिया, मगर अगले ही पल मुकुल की ऑखों से छलकते जज़्बातों ने उसे शर्मिंदा किया था।

"मुझे माफ़ करना! तुम्हें तकलीफ़ पहुँचाने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मैं तो बस अपने दर्द से तुम्हारे दर्द तक एक पुल बनाना चाहती थी। मैंने भी तो अपना परिवार खो ही दिया है। पता नहीं कि.... कभी मैं उनसे मिल पाऊँगी या नहीं। क्या पता.... वो जीवित हैं भी या नहीं। एक दर्द भरा है अंदर.... जिसे बाहर निकालना चाहती हूँ। पर किसके सामने निकालूँ? मेरे दर्द को सब समझ तो सकते हैं, पर महसूस नहीं कर सकते। ऐसे में तुम....

ना जाने क्यों पर... एक हमदर्द की तरह लगे। अपनों को खोने के जिस दर्द से मैं गुजर रही हूँ, तुम भी तो उसी दर्द से बावस्ता हो।" परिधि भर्राई हुई आवाज में बोलती गई।

उसकी बात सुनकर मुकुल ने सिर घुमाकर अपनी नज़रों से परिधि के चेहरे को टटोला और एक बार फिर से सामने की ओर देखने लगा। आखिर परिधि उसी दर्द को तो बयां कर रही थी, जिसके लिए उसे कभी शब्द नहीं मिले थे। अपनों को खोने का दर्द और आज एक इत्तेफाकन गूफ्तगू ने अचानक ही उन दोनों को जैसे एक ही डोर से बांध दिया था।

"तुम... चिंता मत करो। मिल जाएँगे तुम्हारे घरवाले। सब खोज रहे हैं ना! हिम्मत रखो! कम से कम तुम्हारे पास उम्मीद तो है। मेरे लिए तो अंधेरे के अलावा और कुछ भी नहीं है। सब... मेरी ग़लती है। मेरी ग़लती से चले गए वो! खो दिया मैंने उन्हें!" कहते हुए मुकुल ने भरी हुई ऑखों के साथ एक गहरी साँस ली और फिर हथेलियों में चेहरा छिपाकर बुरी तरह से सिसकने लगा।

"मुकुल! क्या हुआ?" परिधि ने घबराकर कहा। उसे मुकुल से इस तरह की प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं थी।

"कुछ नहीं!" मुकुल ने अपनी भरी हुई ऑखों के समुंदर को समेटने की नाकाम कोशिश करते हुए कहा।

"क्या हुआ? कुछ अटका हुआ है ना तुम्हारे अंदर? निकाल दो उसे बाहर! इससे पहले की तुम्हारा दम घुट जाए।" परिधि ने उसके कंधे पर दोस्ताना हाथ रखते हुए कहा। परिधि की इन बातों से मुकुल पूरी तरह से बिखर गया।

"जब मम्मी-पापा का एक्सीडेंट हुआ था, पापा ने मदद के लिए मुझे फोन
किया था। डायल लिस्ट में मेरा नाम सबसे ऊपर था। वो इससे ज्यादा कुछ और कर पाने की हालत में नहीं थे। पूरे तीन बार! तीन बार कॉल किया था उन्होंने मुझे और फिर हमेशा के लिए सो गए। और मैं.... उनके दर्द से दूर मैं... अपने दोस्तों के साथ पार्टी करता रहा। जिंदगी में जब भी बुरे हालातों से गुजरा... हमेशा हौसला बनकर उन्हें साथ खड़े पाया और जब उन्हें मेरी जरूरत थी... मैं..." बात अधूरी छोड़कर मुकुल फफक-फफक कर रो पड़ा। परिधि ने भी कुछ नहीं कहा और उसे रोने दिया। वो भी चाहती थी कि मुकुल अपने दिल में भरे इस मवाद को निकाल दे। शायद कुछ सुकून हासिल हो जाए।

कुछ देर बाद मुकुल का दिल हल्का हुआ तो उसने एक बार फिर से खुद को समेटा। अब उसे अजीब लग रहा था कि कल तक जिस परिधि के नाम और वजूद से भी वो चिढ़ रहा था... उसी के सामने उसने अपना दर्द खोलकर रख दिया। पर मुँह से निकली बात तो बेवफा की तरह होती है, लौटकर कभी वापस नहीं आती, इसलिए अपने अंदर के झिझक को उसने दरकिनार ही किया।

"तुम चिंता मत करो। हम सब तुम्हारे परिवार वालों को जरूर ढूंढ निकालेंगे। प्रॉमिस!" मुकुल ने अपने चेहरे को हथेलियों से मलकर साफ करते हुए कहा। परिधि ने उसके दर्द से भरी ऑखों को बेबसी से देखा था। उसके लिए कुछ भी तो नहीं कर सकती थी वो। बस एक आह भरकर चुप्पी लगा गई। सामान्य होने पर मुकुल उठा और काम आगे बढ़ाने के लिए ग्रीन हाउस से बाहर निकला, तो नज़र सीधी सामने दालान की सीढ़ियों पर बैठी अनामिका से टकराई। वो भी उसे ही देख रही थी। मुकुल ने अपना मुँह फेरा और तेजी से दूसरी ओर चला गया।

****
अनामिका सीढ़ियों पर उलझी हुई सी बैठी थी। उसे बहुत ही झुंझलाहट हो रही थी। कश्मकश का एक दौर... जो चैतन्य के इजहार-ए-मोहब्बत से शुरू हुआ था, खत्म तो दूर... कम होने का नाम ही नहीं ले रहा था। चैतन्य और वरूण की सारी हरकतें एक-एक करके उसके ज़हन में उभर रही थीं और हर बार की याद से उसके दिमाग की नसें और भी तनती जा रही थीं।

"नहीं अनामिका! ऐसे काम नहीं चलेगा। दोनों की ही अक्ल घास चरने चली गई है। जब वो दोनों मौजूदा हालातों में तेरे जज़्बातों को समझना नहीं चाहते, तो तू क्यों उनके बारे में इतना सोच रही है! लगता है कि अब दोनों को जवाब देना ही होगा।" खुद से बड़बड़ाती हुई अनामिका की मुट्ठियाँ पूरी ताकत से कस गई थीं। अभी वो इसी उधेड़बुन में ही थी कि तभी पीछे से वरूण की आवाज ने उसे चौंकाया, मगर उसने वरूण की तरफ देखने की जहमत नहीं उठाई।

"अनामिका! क्या हुआ?" वरूण ने बेचैनी से कहा।

"कुछ नहीं!" अनामिका ने अभी भी उसकी तरफ देखने से परहेज़ ही किया।

"कुछ तो हुआ है? इस तरह से उठकर क्यों आ गई तुम?" वरूण ने उसके स्टडी से उठकर बाहर आ जाने की बात की ओर इशारा करते हुए कहा।

"और ये क्यों बताऊँ मैं तुम्हें? मेरी अपनी कोई मर्ज़ी नहीं है क्या? या फिर मुझ पर ये लाज़िम है.... कि मैं तुम सबके हर सवालों के जवाब अपनी ज़बान पर लेकर हमेशा तैयार बैठी रहूं कि... अभी कोई सवाल करेगा और
मुझे तुरंत के तुरंत जवाब देना ही होगा।" अनामिका ने बहुत ही कड़वाहट से कहा।

"मैंने क्या किया है? मुझ पर क्यों भड़क रही हो?" वरूण ने ऑखों और आवाज दोनों में हैरानी भरकर कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका ने अपना चेहरा हथेलियों में छुपा लिया और फिर अगले ही पल उसने अपने चेहरे को आजाद किया।

"वरूण! अभी तुम जाओ यहाँ से! मुझे अकेला छोड़ दो कुछ देर के लिए। प्लीज़!" अनामिका ने इस बार इल्तजाई आवाज में कहा। वरूण ने कुछ कहने के लिए मुँह खोलना चाहा, मगर अगले ही पल इंतहाई गुस्से के साथ उसने अपने जबड़े भींच लिए। बर्दाश्त को अपनी मुट्ठियों में कैद करके वो तेजी से अंदर की ओर गया। अनामिका ने उसकी दूर होती आहटों को सुना और फिर एक आह भरकर अपनी नज़रें घुमा ही रही थी कि तभी उसने ग्रीन हाउस से किसी को निकलते देखा। एक अजनबी से चेहरे पर उसकी नज़रें ठहरी ही थीं कि सामने वाले ने अपना मुँह फेर लिया और तेजी से एक ओर चला गया। मगर इन दो पलों की नज़रों की मुलाकात से दिमाग में कहीं स्पार्क सा हुआ।

"ये... अरे हाँ! मुकुल होगा शायद!" उसकी पहचान को याद करते हुए अनामिका ने अपने सिर को झटका और फिर उठकर अंदर चली गई क्योंकि उसे करेले बनाने थे। किचन में पहुँचकर वो खाना बनाने का काम पूरा करने लगी, जो अधूरा छोड़कर वो स्टडी में गई थी। किचन सिंक में हाथ धोते हुए एक बार फिर से उसकी नज़र बाहर की ओर गई, जहाँ थोड़ी ही दूर में काम कर रहा मुकुल उसे साफ-साफ दिखाई दे रहा था। शायद खाद से उठने वाली बदबू की वजह से उसने अपने चेहरे को रूमाल से आधा बांध रखा था जिससे चेहरे पर बस उसकी ऑखें नुमाया हो रही थीं और वो ऑखें अनजाने में ही

अनामिका के कानों में कुछ चुगलियाँ कर गईं।
****

वरूण धड़धड़ाता हुआ सीढ़ियाँ चढ़ रहा था क्योंकि बर्दाश्त की हर हद आज खत्म हो गई थी। उसका दिल किसी गर्म इंजन की तरह धधक रहा था। सीढ़ियाँ चढ़ते हुए जब वो गलियारे में आया, तो उसने चैतन्य को अपनी तरफ आते देखा, जिसके चेहरे का अंदाज भी उसे देखकर चिढ़ और कोफ्त से भर गया था। पर चैतन्य उससे उलझने की बजाए उसके बाजू से निकल गया था। वरूण ने पलटकर उसकी बाँह पकड़ते हुए उसके बढ़ते कदमों को रोका था। हैरानी ने चैतन्य के चेहरे और सवालों ने उसकी आँखों में जगह बनाई थी। वरूण ने उसकी बाँह को झटका दिया और उसे खींचता हुआ बालकनी की ओर ले आया। वहाँ पहुँचकर उसने झटके से उसकी बांह छोड़ी। चैतन्य ने भी गुस्से से अपने जबड़ों को कसते हुए उसकी ओर देखा, जो किसी नाग की तरह फुंफकार रहा था।

"ये क्या बत्तमीजी है?" चैतन्य ने भी तिलमिला कर कहा।

"बत्तमीजी अभी की तो नहीं है, मगर... यदि तुम सुधरे नहीं तो फिर देखोगे मेरी बत्तमीजी।" वरूण ने भी दाँत पीसते हुए कहा।

"मुद्दे पर आओ!" चैतन्य की आवाज भी ख़ासी मगरूर और भारी हुई थी।

"तुम्हें परेशानी क्या है? हँ! क्यों परेशान कर रहे हो अनामिका को?" वरूण ने भड़की हुई आवाज में कहा।
"मैं किसी को परेशान नहीं कर रहा हूँ। हाँ... कोई परेशान ही होना चाहता है... तो मैं क्या कर सकता हूँ?" चैतन्य बहुत ही लापरवाही से कहा।

"सब कुछ सही चल रहा था। सब कुछ! तो तुम कहाँ से बीच में आ टपके? जब वो कुछ कह नहीं रही है, तो क्या तुम्हें समझ में नहीं आता है कि उसके दिल में क्या है?" वरूण ने अपने सब्र को संभालते हुए कहा।

"समझो तो तुम! मेरे 20 दिनों का साथ... तुम्हारे 20 सालों की दोस्ती के साथ... कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है और तुम मुझे समझने के लिए कह रहे हो।" चैतन्य ने वरूण पर उलाहना भरी दृष्टि डालते हुए कहा।

चैतन्य की बात सुनकर वरूण का दिल कांप गया, मगर उसने किसी तरह खुद को संभाला। बात तो चैतन्य ने सौ फीसदी खरी कही थी, पर उसे स्वीकार करना वरूण के लिए मुश्किल ही था। अपनी बात जाया होता देखकर वरूण की तिलमिलाहट और बढ़ गई। उसने आगे बढ़कर चैतन्य का गिरेबान पकड़ा और उसे झिंझोड़ते हुए बोला, "आज जिंदगी में पहली बार अनामिका ने मुझसे इतने रूखेपन से बात किया। सिर्फ... और सिर्फ तुम्हारी वजह से। अगर तुम्हारी वजह से मेरे और अनामिका के रिश्ते में कोई फर्क आया, तो नतीजे भुगतने के लिए तैयार रहना।"

चैतन्य ने भी उसकी ऑखों में ऑखें डालकर अपने गिरेबान पर कसे उसके हाथों को मजबूती से जकड़ लिया। वो दोनों आगे और उलझते, उससे पहले ही कोने से एक तीखी सीटी की लहराती हुई आवाज

आई। दोनों ने ही चौंककर आवाज की दिशा में देखा। आशुतोष चाकू से सेव के पतले फाँक काटकर अपने मुँह में रख रहा था। दोनों की ही ऑखें ये देखकर सिकुड़ी थी। आशुतोष ने सेव चबाते हुए ही कहा, "थोऽऽऽड़ा सा बाईं ओर मुड़ना। वो क्या है ना! यहाँ ठीक से दिखाई नहीं दे रहा है कि किसने किसकी गर्दन पकड़ी है! अब ठीक है! कंटीन्यू!"
दोनों ने ही एक-दूसरे को छोड़ा नहीं था, पर अब हैरानी भरी नज़रें एक-दूसरे की बजाए आशुतोष पर थीं। दिख रहा था कि वो उन दोनों के मजे ले रहा था। कोई कुछ कहता उससे पहले ही आशुतोष का फोन बजा। उसने फोन उठाया और बोला, "अनामिका! हाँ! हाँ! आ रहा हूँ! आओ तुम दोनों भी! खाना तैयार है।"

दोनों को उसी हालत में छोड़कर वो जाने के लिए मुड़ा और फिर कुछ सोचकर उनकी ओर देखते हुए बोला, "वो क्या है ना! कुएँ के मेंढक... नहीं! मेंढकों को पता नहीं होता कि दुनिया बहुत बड़ी है और बेहतर विकल्पों से भरी हुई भी!"

अपनी बात कहकर वो फिर से सेव मुँह में ठूंसकर वहाँ से चलता बना। चैतन्य और वरूण अभी भी वैसे ही खड़े थे।

"ये समझा के गया या.... धमका के!" चैतन्य ने आशुतोष की पीठ को घूर कर देखते हुए कहा।

"पता... नहीं!" वरूण भी उतनी ही उलझन से बोला।

चैतन्य ने तुरंत ही वरूण के हाथों पर अपनी पकड़ ढीली की। वरूण ने भी उसके गिरेबान को हौले से छोड़ा था।

"चलें!" चैतन्य ने कहा और वरूण के जवाब का इंतजार किए बिना ही वहाँ से निकल गया। वरूण कुछ देर तो अपने सिर को नासमझी में खुजलाता रहा और फिर एक चिढ़ भरी गुर्राहट निकाल कर वो भी नीचे की ओर चल पड़ा।
****

किचन में आशुतोष, अनामिका की मदद कर रहा था। उनके आसपास ही मौजूद चैतन्य अपनी गहरी निगाहों से उन दोनों का बारिकी से मुआयना कर रहा था। हालांकि अब वो बहुत ही शांत दिखाई पड़ रहा था, जैसे कि उसके अंदर का तूफान गुजर गया हो। वही वरूण अपनी जगह पर बैठा अपने पिता से बातें कर रहा था। गीता और सृष्टि भी नीचे आ गए थे। सृष्टि की नज़र शांत-शांत से चैतन्य पर पड़ी, तो एक मुस्कुराहट उसके लबों को छू गई। वो अनामिका की मदद करने के लिए किचन में गई, तो अनामिका की फीकी मुस्कान ने उसका स्वागत किया।

"अरे! तुम यहाँ क्या कर रही हो? जाओ बाहर आराम से बैठो।" अनामिका ने औपचारिकता दिखाते हुए कहा।

"अरे नहीं! नहीं! आओ सृष्टि!" आशुतोष ने सृष्टि का स्वागत करते हुए कहा। अनामिका ने एक नज़र आशुतोष पर डाली और फिर सलाद की प्लेट उठाने चल दी। उसने प्लेट उठाई ही थी कि उसकी नज़र

फिर से ग्रीन हाउस की ओर गई। उसकी ऑखें सिकुड़ी और फिर उसने प्लेट आशुतोष की ओर बढ़ा दी।

"आशुतोष जी! बस, अभी आती हूँ!" कहते हुए अनामिका तेजी से किचन से बाहर निकली।

"अनामिका बहुत समझदार है ना!" आशुतोष ने सृष्टि से कहा।

"जी! जी हाँ!" जवाब देते हुए सृष्टि ने रूख फेरा था, कि रकीब की
तरफदारी कब किसी को रास आई है।

"जानती हो! मैं हमेशा खुद से ये सवाल करता हूँ कि चैतन्य इतना क्यों पसंद करता है अनामिका को.... और उसके साथ समय बिताने के बाद हर बार मुझे इसका जवाब मिल जाता है।" आशुतोष ने मुस्कुराते हुए सृष्टि पर नज़रें गड़ाए थी और सृष्टि के पानी का गिलास पकड़े हाथ की कंपन आशुतोष ने साफ-साफ महसूस की थी।

****

ग्रीन हाऊस में मुकुल ने आखिरी गमला उठाया और परिधि की ओर देखकर बोला, "चलो! आज का काम तो हो गया। अब आगे का कल करेंगे।"

"ठीक है।" परिधि ने भी औजारों को एक ओर रखते हुए कहा। उसी समय दरवाजे पर हुई आहट ने दोनों का ध्यान उस ओर किया था। अनामिका एक दिलफरेब मुस्कुराहट के साथ मौजूद थी। उसे देखते ही मुकुल ने अपनी भौंहे चढ़ाई और मुड़कर वहाँ से दूसरी ओर चला गया। दिखाई दे रहा था कि उसे अनामिका का वहाँ आना पसंद नहीं आया था।

"खाने का वक्त हो गया है। सब आ गए हैं तो तुम्हें भी बुलाने के लिए आई हूँ।" अनामिका ने परिधि से कहा।
"ओह! हाँ दीदी! बस अभी आई!" परिधि ने अपने ग्लव्स उतारते हुए कहा।

"और तुम्हारे दोस्त को भी बुला लो!" अनामिका ने मुकुल की ओर इशारा करते हुए ऊँची आवाज में कहा, जो मुकुल के कानों तक भी गई। यह सुनकर मुकुल को हैरत का एक तेज झटका लगा। मुस्कुराती हुई परिधि कुछ कहती, उससे पहले ही मुकुल बोल पड़ा।

"दोस्त नहीं हैं हम! बस साथ काम कर रहे हैं।"

मुकुल की बात सुनकर परिधि के चेहरे की मुस्कान सिमटी थी, जिस पर नज़र पड़ते ही मुकुल एक बार फिर से असहज हुआ था।

"मेरा मतलब है कि... बुलाने के लिए थैंक्स और सॉरी भी! मुझे घर जाना है।" मुकुल ने बहुत ही रूखेपन से कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका ने परिधि को इशारे से उसे खाने पर बुलाने के लिए कहा और वहाँ से चली गई।

"मुकुल चलो ना! दीदी इतने प्यार से बुला रही हैं।" परिधि ने इसरार करते हुए कहा।

"मुझे लड़कियों के प्यार की जरूरत नहीं है।" मुकुल चिल्लाते हुए परिधि की ओर पलटा। उसके इस व्यवहार से परिधि एक बार फिर से सकते में आ गई।

"मु... मुकुल... वो मैं.. सॉरी!" परिधि ने सहमी हुई आवाज में कहा। उसकी आवाज ने एक बार फिर से मुकुल को उलझाया।

"सॉरी! पर मुझे लड़कियों का साथ पसंद नहीं।" मुकुल ने दो टूक कहा।
"मैं भी तो लड़की हूँ।" परिधि की आवाज अभी भी सहमी हुई थी।

" तुम्हारी बात अलग है। तुम्हें कौन सा हमेशा के लिए यहाँ रहना है। कुछ दिन में चली जाओगी। पर यह सब हमेशा यही रहेंगे और मुझे इन सब से कोई मतलब नहीं है।" मुकुल कड़वाहट से बोला।

"मुझसे है ना! मेरे लिए चलो ना! देखो तुम्हीं ने कहा कि मैं कुछ दिन में यहाँ से चली जाऊँगी। तो.... मेरी बात ही रख लो। वैसे भी अंदर बहुत सारे लड़के हैं, तो उनके साथ बैठ जाना।" परिधि की इल्तिज़ा बढ़ती जा रही थी।

"परिधि!"

"प्लीज़!"

मुकुल ने उसे उलझन से देखा और फिर हथियार डालते हुए बोला, "ठीक है! चलो! पर बस... तुम्हारी खातिर! तुम चलो! मैं आता हूँ।"

उसकी बात सुनकर परिधि बच्चों की तरह खिलखिला पड़ी। वो तेजी से घर की ओर बढ़ी। मुकुल ने अपने माथे पर ऊंगलियाँ फेरी और फिर अपना फोन निकालकर एक मैसेज टाइप कर किसी को भेज दिया। फ़ोन जेब में रखकर विदिशा अनमने ढंग से घर की ओर बढ़ा। इस बात से बेखबर कि वो पूरी तरह से अनामिका की नज़रों के निशाने पर था। उलझनों का दौर अपने पूरे शबाब पर था।

चैतन्य के दिल और दिमाग में आग लगाने के बाद अनामिका के रूखे व्यवहार से आनंदित होती हुई सृष्टि सीढ़ियाँ चढ़ते हुए गीता के कमरे में चली गई। गीता किताबें खोले हुए अपने बिस्तर में बैठी थी, मगर उसकी
निगाहें शून्य में ताक रही थीं। सृष्टि ने उसे जाँचती नज़रों से घूर कर देखा। वो उसके पास तक आई, मगर गीता ने कोई भी प्रतिक्रिया नहीं दी, जैसे कि उसका शरीर तो वहाँ था पर... वो कहीं और गुम थी। सृष्टि ने गीता को आवाज लगाई, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"गीता!" सृष्टि ने तेज आवाज में उसके कंधे को हिलाते हुए आवाज लगाया। इस बार गीता ने खाली-खाली ऑखों से सृष्टि की ओर देखा।

"क्या हुआ?" सृष्टि ने ऑखें सिकोड़ कर पूछा।

"क... कुछ नहीं! तुम कब आई?" गीता ने खोए हुए से लहजे में कहा।

"तबीयत ठीक है तुम्हारी?" सृष्टि ने गीता के माथे पर हाथ रखते हुए कहा।

"ठीक हूँ मैं!" गीता ने उसके हाथ को हटाते हुए कहा।

"हम्म!" सृष्टि ने कहा और टहलते हुए खिड़की की ओर चली गई, जहाँ से ग्रीन हाउस साफ-साफ दिखाई देता था। उसकी नज़र पहले तो चारों ओर तफरीह करती रही, फिर जब उसने मुकुल को ग्रीन हाउस से बाहर निकलते देखा, तो उसकी नज़रें परिधि को तलाशने लगी।

"ये परिधि कहाँ है आज?" गीता ने दरवाजे की ओर देखते हुए कहा।

"अरे जाने दे ना! वैसे भी बस डिस्टर्ब ही करती है हमें... और देख रही हूँ कि तेरा मन भी नहीं है आजकल पढ़ाई में।" सृष्टि ने गीता से शिकायती लहजे में कहा।

"पर तू ही तो कहती थी कि उसे साथ रखते हैं। तुझे अच्छा लगता है
उसके साथ।" गीता ने कहा।

"तुम्हारे पापा की सुरक्षा में मुझे ख़ाक अच्छा लगने वाला है। इतनी कोशिशों के बाद भी मुझे उस लड़की से कुछ पता नहीं चला।" सृष्टि खुद में ही बड़बड़ाई।

"कुछ कहा तुमने?" गीता बोली।

"वो बाहर है! उसे बेहतर दोस्त मिल गए हैं।" ग्रीन हाउस के अंदर मौजूद परिधि पर नज़र पड़ते ही सृष्टि ने मुस्कुराते हुए कहा।

"हम्म!" गीता ने कहा और एक बार फिर से शांत हो गई।

"मैं यहीं बैठ जाती हूँ। कल के नोट्स देना जरा!" सृष्टि ने बाहर की ओर ही नज़रें जमाए हुए कहा। उसे पूरी तरह से मुकुल और परिधि पर अपनी नज़रें जमाए रखनी थीं। आज के लिए उसे यही काम मिला था। हालांकि इन सारी गतिविधियों में उसे अपनी भूमिका कुछ ख़ास समझ में नहीं आ रही थी, पर अपनों को खोने का दर्द इतना गहरा था, जो उसे ऐसा करने के लिए उकसा रहे थे। वो अपने दर्द को अपने अंदर बांधे बस वही करती जा रही थी, जो प्रोफेसर साहनी उससे कह रहे थे। सच तो यही था कि उसके अंदर की हर भावना सालों पहले ही दम तोड़ चुकी थी। या फिर शायद नहीं...

दरवाजे पर हुई दस्तक ने दोनों का ध्यान उस ओर किया था।

"कौन है?" गीता ने पूछा।

"मैं हूँ! चैतन्य!" बाहर से आवाज आई।
चैतन्य की आवाज सुनते ही सृष्टि के दिल में दफन अहसासों के बीच एक अहसास ने फिर से करवट ली। पिछले कुछ दिनों से वो खुद में एक बदलाव महसूस कर रही थी और वो उसे अच्छा भी लग रहा था। शायद कोई अहसास उसके अंदर जिंदा रह गया था, जो चैतन्य की झलक मात्र से साँसें लेने लगा था। वो तेजी से दरवाजे की ओर गई और धड़कते दिल से उसे खोला। बाहर चैतन्य गंभीर चेहरे के साथ खड़ा था। सृष्टि ने उसे ख्वाहिश भरी निगाहों से देखा था, जिस पर चैतन्य ने कोई ध्यान नहीं दिया।

"तुमसे बात करनी थी।" चैतन्य ने सामान्य से लहजे में कहा।

"हाँ; कहो!" सृष्टि ने कहा।

चैतन्य ने सिर घुमाकर गीता की ओर देखा। सृष्टि की नज़र भी उसके साथ मुड़ी।

"वो अपने में रहती है। तुम आओ ना!" कहते हुए सृष्टि ने उसके अंदर आने के लिए रास्ता छोड़ दिया। थोड़े संकोच के साथ चैतन्य अंदर आया। चेहरा सवालों में उलझा दिखाई दे रहा था।

"बोलो!" सृष्टि ने बहुत ही नर्मी से कहा।

"सृष्टि! तुम्हें सच में लगता है कि आशुतोष जी और अनामिका के बीच कुछ है।" बहुत हिम्मत करके चैतन्य ने कहा।

चैतन्य के मुँह से लफ़्ज़ों के फिसलने की देर थी और एक मुस्कुराहट ने सृष्टि के होंठों पर कब्ज़ा जमाया, जिसे उसने उतनी ही फुर्ती से चैतन्य से छिपाया।
"हाँ! तुम्हारे तो दोस्त हैं। तुम्हें दिखाई नहीं देता। अनामिका किसी के साथ इतनी खुश और मुत्मइन दिखाई नहीं देती, जितना आशुतोष जी के साथ दिखती है। खुश दिखती है तो अच्छी भी लगती है।" सृष्टि ने अच्छी तरह परखकर धारदार शब्दों का इस्तेमाल करते हुए कहा।

सृष्टि की बातें सुनकर चैतन्य का दिल बिखर सा गया। उसकी ऑखों के सामने से वो सारे मंज़र गुजर गए, जब वो अनामिका के साथ था। वो कभी भी उसके साथ सहज दिखाई नही दी। मगर आशुतोष के साथ वो कितनी खुश दिखती थी। चैतन्य को इतनी तकलीफ़ तब भी नहीं हुई थी, जब मुग्धा मुश्किलों में उसका हाथ छोड़कर चली गई थी। हालांकि टूटा तो वो तब भी था, मगर इस बार बिखरने के बाद फिर से खुद को समेटना उसके लिए आसान नहीं था।

"मगर... कितने बड़े हैं आशुतोष जी, अनामिका से!" चैतन्य ने जैसे खुद को बहलाते हुए सृष्टि से कहा था।

"उससे क्या फर्क पड़ता है! एक लड़की हमेशा ऐसा साथी चाहती है, जो उसे समझे.. उसके जज़्बातों को समझे... मुश्किलों में उसका हौसला बने... और मुझे लगता है कि अनामिका को अपना साथी मिल गया है।" सृष्टि ने चैतन्य पर निगाहें मुसलसल जमाए हुए कहा।

इससे आगे सुनना और समझना चैतन्य के लिए बर्दाश्त से बाहर था। अभी थोड़ी देर पहले ही उसने उन दोनों को किचन में कितनी बेतकल्लुफी से हँसते-मुस्कुराते देखा था, जब वो उन दोनों को अनंत कुमार की स्टडी में बुलाने गया था। अनामिका कभी भी उसके साथ ऐसे खुश नज़र नहीं आती थी। यह ख्याल आते ही एक आह उसके मुँह से निकली। शायद इसके आगे किसी और बात की अहमियत खत्म हो गई चुकी थी। वो अपने थके हुए कदमों से बाहर निकल गया। थोड़ा आगे बढ़ते ही वो गुस्से में तमतमाए हुए वरूण से जा टकराया। थोड़ी ही देर बाद ही वो दोनों
बालकनी में एक-दूसरे का गिरेबान पकड़े उलझे हुए थे, तभी आशुतोष एक बार फिर अपने शब्दबाण चलाते हुए वहाँ से चला गया। कुछ देर बाद सभी नीचे बैठे हुए थे। चैतन्य की नज़रें आशुतोष और अनामिका को तौल रही थीं और हर पल के साथ वो अपने दिल को अपनी मुट्ठी में लेकर बैठा रहा। दर्द शायद अब दिल से होकर गुजर गया था। किसी ने उस पर ध्यान दिया हो या नहीं, पर वो हर पल सृष्टि की तेज निगाहों के हिसार में था।

थोड़ी ही देर में खाना मेज में लग गया। वरूण अपनी जगह बैठा हुआ था और आशुतोष ठीक उसके सामने बैठा था। उसी समय अनामिका घर के पिछले हिस्से से परिधि और मुकुल को भोजन के लिए बुलाकर आई। मेज के पास पहुँचकर उसने वरूण को एक नज़र देखा और फिर जाकर आशुतोष की बगल में बैठ गई। वरूण ने आश्चर्य से अनामिका की ओर देखा। वो समझ गया था कि अनामिका उससे नाराज़ थी। एक बार फिर से वो चैतन्य का ख्याल कर गुस्से से भर गया। उसी समय चैतन्य उसकी बगल में आकर बैठ गया। वो बहुत ही शांत दिखाई दे रहा था और उसका ध्यान बस अपने सामने रखे प्लेट और चम्मच में था। आशुतोष ने दोनों पर एक-एक नज़र डाली और अपने होंठों में मुस्कुराहट को दबाया। सृष्टि भी वहाँ पहुँची और फुर्ती से चैतन्य की बगल में बैठ गई। अनामिका ने एक नज़र सृष्टि पर डाली, जो ना जाने क्यों चहकती हुई सी लग रही थी।

उसी समय घर के पिछले हिस्से से पहले परिधि और फिर उसके पीछे मुकुल अंदर आया। मेज के पास आते ही मुकुल और सृष्टि की नज़रें एक-दूसरे से टकराई और दोनों ही एक पल को ठिठके थे। मगर जल्द ही आसपास के माहौल के मुताबिक सहज भी हो गए।

"अरे! आओ! आओ! तुम दोनों का ही इंतजार कर रहे थे। आओ बैठो।" अनामिका ने उत्साहित होते हुए कहा।

परिधि, अनामिका के बगल में जाकर बैठ गई। मुकुल भी परिधि के पास
जाकर बैठ गया।

"आप लोग घर में बस चार लोग रहते हैं और इतना बड़ा डायनिंग टेबल!" सृष्टि ने सभी लोगों पर नज़र डालते हुए कहा।

"जब तृषा थी, तब उसे दोस्तों को दावतें देने का बहुत शौक था। जब भी मेघा और अनामिका यहाँ आया करती थीं, तब दोस्तों की महफ़िलें लगा करती थीं। तृषा और मेघा अपने हाथों से सबके लिए खाना बनाया करती थीं। उन दोनों के साथ... समय वो दावतें और महफिलें भी ले गया। रह गई बस ये खाने की मेज, जिस पर खाना खाते समय आज भी उसे अपने साथ महसूस करता हूँ। यकीन मानो मुझे कभी नहीं लगा कि वो मुझसे अलग हुई है। प्यार... ऐसा ही होता है।" कहते-कहते अनंत कुमार भावुक होने लगे।

माहौल में बढ़ती संजीदगी को देखते हुए आशुतोष ने पहले तो अपना गला खंखारकर ठीक किया और

फिर बोला, "शुरू करें! मुझे भूख लग रही है।"

आशुतोष के कहते ही सभी ने अपना ध्यान खाने पर लगाया।

"ये क्या हैं? करेले! अनामिका! मैंने तुम्हें भिंडी बनाने के लिए कहा था। तुम्हें पता है कि मुझे करेले बिल्कुल भी नहीं पसंद!" वरूण तिलमिला कर बोला।

"मुझे पसंद है! अनामिका ने मेरी पसंद से बनाया है।" आशुतोष ने करेले की प्लेट उठाते हुए कहा।

"अरे यार! ठीक है ना! भिण्डी भी बना देती!" वरूण की झुंझलाहट बढ़ गई थी।
"तो तुम्हें मदद करनी थी खाना बनाने में। तुम सबको समय पर खाना मिल जाता है। पर कभी सोचा है कि इतने लोगों का खाना बनाने में मेहनत और समय लगता है। मैंने मदद की, तो मेरी पसंद का खाना बना है।" आशुतोष ने करेले अपनी प्लेट में डालते हुए कहा।

"ठीक है! पर अगर करेले कोई और ना खाए तो! अनामिका को भी नहीं पसंद करेले!" कहते हुए वरूण ने अनामिका की ओर देखा।

अनामिका ने कहा कुछ नहीं.. बस प्लेट आशुतोष के हाथ से ली और अपने प्लेट में डाल ली और प्लेट परिधि की ओर बढ़ा दी। परिधि ने भी करेले लिए।

"तुम खाते हो करेले?" मुकुल को भी करेले लेता देखकर वरूण ने कहा।

"मैं खाने में नखरा नहीं करता।" मुकुल ने रूखे स्वर में कहा और प्लेट गीता की ओर बढ़ा दिया। गीता ने भी चुपचाप सब्जी निकाली।

"मुझे पसंद हैं करेले!" सृष्टि ने खुशी से कहा।

"जरूरत नहीं है बताने की। तुम्हारी बातों से ही पता चलता है कि करेले कितने पसंद होंगे तुम्हें!" वरूण ने चिढ़ी हुई सी आवाज़ में कहा।

"कहना क्या चाहते हो?" सृष्टि, वरूण को घूर कर देखते हुए बोली।

"कुछ नहीं! खून वैसे भी कम है मेरे शरीर में! तुमसे उलझकर उसे सुखाना नहीं है मुझे। चुड़ैल!" चिढ़े हुए वरूण ने आखिरी शब्द को बहुत ही धीमे से कहा था।
"कोई बात नहीं! चैतन्य को भी नहीं पसंद हैं करेले। आज तुम दोनों गुजारा कर लो।" आशुतोष ने मजे लेते हुए कहा।

वरूण ने तीखी नज़रों से चैतन्य की ओर देखा। मगर चैतन्य ने सृष्टि के हाथ से प्लेट लेकर करेले अपनी प्लेट में डाले और फिर उसे वरूण के सामने रख दिया। आशुतोष और अनामिका ने हैरत से चैतन्य को देखा।

"मुझे इतने भी नापसंद नहीं। जिंदगी में गुंजाइश रहनी चाहिए... वरना सब कुछ कितना मुश्किल हो जाएगा ना!" चैतन्य ने आशुतोष से शांत लहजे में कहा।

"हाँ, बात तो सही है।" आशुतोष ने कहा और फिर सभी खाना खाने लगे। वरूण मुँह बनाकर ही सही आखिरकार खाने में मसरूफ हो गया। इस बीच सृष्टि की उसे देखकर मजे लेती हुई नज़र उसका दिल जलाती रही।

"कम्बख़त! लगता है कि सच में खून पीने वाली चुड़ैल है। इसे पीपल के पेड़ में इसकी चोटी से बांधकर नहीं लटकाया, तो मेरा नाम भी वरूण नहीं।" झल्लाया हुआ वरूण मन ही मन में चिल्लाया। आज सब उसकी चिढ़ को बढ़ाने का काम कर रहे थे। बहरहाल... खाने की मेज में सब खाने के अलावा एक-दूसरे पर चोर निगाहें भी रखें हुए थे। चैतन्य गाहे-बगाहे आशुतोष और अनामिका की ओर, सृष्टि, चैतन्य की ओर और अनामिका, मुकुल की ओर ध्यान लगाए बैठी थी। बस एक वरूण ही था जो करेले की प्लेट को घूर रहा था।

थोड़ी ही देर में सभी खाने की मेज से उठ गए। अनामिका तेजी से मुकुल के पीछे वाशरूम की ओर गई। हाथ धोने के बाद जब मुकुल पलटा तो अनामिका हाथ में टॉवेल लिए खड़ी थी। उसे देखकर मुकुल की भौंहें चढ़ी थीं, मगर उखड़े मन से ही उसने अनामिका की ओर हाथ बढ़ाया और ....
अनामिका के हाथ से वो टॉवेल नीचे गिर गया।

"ओह सॉरी!" कहते हुए अनामिका ने वो टॉवेल उठाया और एक बार फिर से मुकुल की ओर बढ़ाया। मुकुल के चेहरे के भाव बिगड़े और उसने टॉवेल झटककर ले लिया। अचानक ही अनामिका के चेहरे पर गंभीरता ने कब्जा जमाया और वो तेजी से वहाँ से चली गई।

****

"अंकल मेरी बात सुनिए आप! मुकुल धोखा दे रहा है आपको। आप उस पर इतना भरोसा करते हैं और वो ना जाने कब से आपके विरोधियों के साथ मिलकर आपके खिलाफ खेल खेल रहा है।" अनामिका घबराई हुई आवाज में बोली। स्टडी में बैठे आशुतोष, चैतन्य और वरूण ने भी हैरानी से अनामिका की ओर देखा। एकाएक मुकुल पर शक करने की वजह किसी को समझ में नहीं आई थी।

"अच्छा! इतना यकीन से कैसे कह सकती हो तुम?" अनंत कुमार ने अनामिका की ओर तिरछी नज़र से देखते हुए कहा।

"मैं इतनी बड़ी ग़लती नही कर सकती। वो वही है। आप उसकी ओर से इतना लापरवाह क्यों हैं? मुझे समझ में नहीं आ रहा है?" अनामिका ने शिकायती लहजे में कहा।

"ठीक है! मैं देख लूंगा। तुम चिंता मत करो।" अनंत कुमार ने एक बार फिर लापरवाही से कहा।
"देख लूँगा! आपको सुनाई नहीं दिया कि मैंने क्या कहा? मुकुल वही लड़का है, जिसके पास मैंने वो डायरी देखी थी। उसी ने हॉस्पिटल में परिधि के कमरे में वो डायरी रखी थी। वो हमारे दुश्मनों से मिला हुआ है। वो सब खराब कर देगा।" अनामिका तेज आवाज में लगभग चिल्लाते हुए बोली।

इस बार सभी के कान खड़े हुए थे क्योंकि हालिया हुई घटनाओं में किसी डायरी की झलक..... किसी

को भी नहीं लिखी थी।

"कौन सी डायरी?" आशुतोष ने पूछा।

"हॉस्पिटल में एक लड़के ने परिधि के कमरे में एक डायरी रखी थी। उसे मैंने कई बार परिधि के कमरे के आसपास मंडराते देखा था। यहाँ तक कि जब हम परिधि को घर वापस लेकर आ रहे थे, उस समय भी मैंने उसे देखा था और एक बार हमारे घर के सबसे बाहरी दरवाजे के बाहर भी।" अनामिका ने कहा।

"और तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि वो मुकुल है? उस लड़के का चेहरा देखा था तुमने!" चैतन्य ने कहा।

"नहीं! उस लड़के ने अपना चेहरा मास्क से ढँक रखा था। मगर.... वो सर्द ऑखें देखी थी मैंने और आज फिर से उन ऑखों को मुकुल की पहचान के साथ देखा मैंने। और... मुझे कोई गलतफहमी नहीं हुई है।" अनामिका ने चैतन्य को आग उगलती ऑखों से देखते हुए कहा।

"अनामिका शांत हो जाओ! घबराने वाली बात नहीं है। मैंने कहा ना कि मैं सब देख लूंगा।" अनंत कुमार ने अनामिका को शांत करते हुए कहा।

"मुझे शांत नहीं होना है। हमारे पास समय नहीं है। कोई क्लू हमारे पास
नहीं है। आपने हमें रक्षक तो बना दिया, पर हम अपनी इस भूमिका के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं हैं। आप चाहते क्या हैं.. ये बताएँगे आप हम सबको। दुश्मन हमारे घर में आ बैठा है और आप शांति से बैठे हुए हैं। आखिर इतना यकीन क्यों है आपको उन पर?" अनामिका सारे लिहाज एक ओर रखकर चिल्लाते हुए बोली।

इस बार अनामिका का रौद्र रूप देखकर सभी के साथ अनंत कुमार भी सहमे थे। हालातों और रिश्तों की जटिलता ने उसका संयम कमजोर कर दिया था। पहले तो वो हाँफती हुई अनंत कुमार को देखती रही और फिर जब उसे अपनी अशिष्टता का अहसास हुआ तो वो शांत हो गई।

"म... माफी चाहती हूँ!" अनामिका ने झेंपकर नज़र चुराते हुए कहा।

अनंत कुमार ने उसे एक गंभीर नज़र से देखा और फिर एक गहरी साँस लेकर बोलें, "तुम्हें कारण जानना है। ठीक है! थोड़ा रूको!"

यह कहकर अनंत कुमार ने किसी को कॉल किया। दूसरी ओर से कॉल उठने पर वो बोले, "कहाँ हो? जल्दी आओ! शायद अब सामने आने का वक्त आ गया है।"

अपनी बात खत्म करके अनंत कुमार शांत बैठ गए। उनका चेहरा बहुत ही गंभीर दिखाई दे रहा था। सभी चुपचाप उनकी अगली प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगे। करीब दस मिनट के बाद स्टडी के दरवाजे पर दस्तक हुई। सबकी बेचैन नज़रें उस ओर उठी।

"आ जाओ अंदर!" अनंत कुमार ने कहा।

अनंत कुमार की अनुमति मिलते ही दरवाजा खुला और किसी ने अंदर प्रवेश किया। सभी की ऑखें उसे देखकर अचरज से फैल गईं। अनामिका

के मुँह से निकला,

"मुकुल!"

"हाँ! मुकुल! मिलो हम सभी के छिपे हुए साथी और हमारे अग्नि रक्षक मुकुल से!"

भाग 38

सभी साँस रोके कभी अनंत कुमार... तो कभी मुकुल की ओर देख रहे थे। किसी की भी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। सबसे ज्यादा तो अनामिका उलझी हुई थी, जिसके पास शब्द खत्म हो चुके थे। आखिरकार मुकुल इन सब में कब और कैसे जुड़ा? सभी के अंदर सवालों का सैलाब उमड़ रहा था, जिसके जवाब ही उन्हें शांत कर सकते थे।अनंत कुमार कुछ देर तक अपनी ऑखें बंद किए चुपचाप पड़े रहे। आखिरकार उन्होंने अपनी ऑखें खोली, जिन पर पड़ी लाल महीन डोरियाँ उनके दर्द की गवाही दे रही थीं।

"विवाह के बाद मैंने और तृषा ने साहनी परिवार से दूरी बना ली थी क्योंकि वो ऐसा नहीं चाहते थे। पर मैं नहीं जानता था की नाराज़गी के इस पर्दे के पीछे एक और खेल चल रहा था। आज से दस साल पहले जब गीता के जन्मदिन के दिन मैंने तृषा को खून पीते देखा, तब मुझे सब पता चला। हालांकि ये सबकी नज़रों से छिपा हुआ ही था क्योंकि वो ये सब जाहिर करना नहीं चाहते थे।" अनंत कुमार पुरानी यादों में गोते हुए बोले।

"वो क्यों?" आशुतोष ने पूछा।

"वो समय भी बहुत उलझा हुआ था। पिशाचों ने अपना घेरा इतना तंग कर लिया था कि उसके अंदर क्या हो रहा था... ये कभी भी किसी को भी
खबर नहीं थी। तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र हमेशा से ही आक्रमण की बजाय रक्षा को ही सर्वोपरि मानते थे। इसलिए उन्होंने सभी की शक्तियों पर बंध लगा दिया था।" अनंत कुमार ने कहा।

"बंध लगा दिया था से क्या मतलब है?" चैतन्य ने कहा।

"तांत्रिक श्रेष्ठ हमेशा कहते थे कि किसी के पास भी जरूरत से ज्यादा शक्ति का होना दुनिया के लिए अच्छा नहीं है, इसलिए उन्होंने हमारी दुनिया में शक्तिबंध लगा दिया। हर किसी के लिए एक दायरा तय कर दिया गया, जिससे आगे वो कभी भी नहीं जा सकते थे। इससे हम जैसे लोगों को तो कोई आपत्ति नहीं हुई, पर पिशाच समुदाय तिलमिला कर रह गया। मगर तांत्रिक श्रेष्ठ को चुनौती देना किसी के भी बस की बात नहीं थी। उनकी शक्ति असीमित थी और उनका जोड़ किसी के पास नहीं था। इसलिए

उनकी बात मानना सबकी मजबूरी हो गई थी। इस शक्तिबंध के बाद कोई किसी को प्रत्यक्ष रूप से नुकसान नहीं पहुँचा सकता था, ना ही बेवजह किसी के मामले में दखलअंदाजी कर सकता था। ये नियम हम सभी पर लागू था।" अनंत कुमार ने एक आह भरते हुए कहा।

"फिर क्या हुआ?" आशुतोष ने पूछा।

"जब तृषा ने उस पिशाच के बारे में मुझे बताया था, तब मुझे पता चला कि उस पिशाच के बारे में कोई भी नहीं जानता है। यहाँ तक कि पिशाच समुदाय के सारे पिशाच भी इस विषय में कुछ नहीं जानते हैं। मुझे किसी भी तरह से तृषा को सुरक्षित करना था। इसलिए मैं उसकी बड़ी बहन से मिला था। हालांकि मुझे उस पर यकीन नहीं था, पर जानकारी प्राप्त करने का मेरे पास और कोई साधन नहीं था। उसी समय तृषा के छोटे भाई अर्पित और मेरे बीच मेलजोल बढ़ा था। तृषा की बड़ी बहन का साथ जहाँ मुझे असहज करता था, वहीं अर्पित मुझे बहुत ही आत्मीयता से मिला। वो भी तृषा के लिए बहुत ही परेशान था। उसी समय मुकुल से मेरी
मुलाकात हुई। 14 वर्षीय मुकुल को पेड़-पौधों और औषधियों में रूचि थी। इसी मिलती रूचि की वजह से मुकुल और मैं करीब आए। प्रत्यक्ष रूप से मिलना संभव नहीं था, इसलिए फोन संपर्क का सबसे अच्छा साधन था। मुकुल भी अपने पिता की तरह सरल हृदय का था और प्रोफेसर साहनी की विचारधारा के विरुद्ध। मगर बड़ों की अवहेलना पिशाच समुदाय में अभी भी गंभीर गुनाह माना जाता है। उस समय हम सभी को ये पता चला कि प्रोफेसर साहनी किसी बड़ी योजना को अंजाम देने की कोशिश में थे। क्या? वो तो पता नहीं चला, परंतु यह पता चल गया कि तृषा की बड़ी बहन प्रोफेसर साहनी के साथ थी और हर कदम पर उनका साथ दे रही थी। अर्पित को जैसे ही ये पता चला उसने मुझे इस बारे में इत्तिला की। हम दोनों ही सचेत हो गए थे और तृषा को सुरक्षित करने का हर उपाय मैंने कर लिया।" कहते-कहते अनंत कुमार रूके।

"उपाय कर लिया था, तो फिर कहाँ गड़बड़ हो गई?" आशुतोष ने पूछा।

"गलती ये हो गई कि एक रखवाला होते हुए भी मैं भावनाओं में बह गया। एक रखवाले को हमेशा ही अपने चारों ओर चौकन्नी निगाहें रखनी चाहिए और यहीं मुझसे चूक हो गई।" अपनी बात कहकर अनंत कुमार ने एक गहरी साँस ली।

"कैसी चूक?" अनामिका ने कहा।

"चूक ये कि उन्होंने बड़ी ही चालाकी से हमें बेवकूफ बना दिया। जो कुछ भी हुआ इतनी जल्दी हुआ कि मुझे कुछ सोचने समझने का मौका ही नहीं मिला। हम सोचते रहे कि तृषा को उस पिशाच के शिकार के रूप में चुना गया है क्योंकि हमें यही बताया गया और मेरी इंद्रियों ने भी मेरे परिवार के सदस्य पर खतरे का इशारा किया था। मगर हम सब ग़लत साबित हुए, जब वो धोखे से मेरी गीता को ले गए।" गला भर आने से अनंत कुमार बोलते-बोलते रूके।
"गीता को!" एक साथ कई आवाजें आई।

"हाँ! गीता को! तृषा की बेटी होने के कारण उसे चुना गया था। पिशाच हमेशा किसी लड़की या औरत की ही बलि लेता है। मेरे क्या,... हमारी दुनिया में जो कोई भी पिशाच समुदाय का नहीं है, उसके लिए ये सारी जानकारियाँ अप्रत्याशित और चौंकाने वाली ही थी। जब आपको खतरे के बारे में पता ही ना हो, तो उससे बचाव भला कैसे कर सकते हैं आप! और... यहीं मैं चूक गया। मैं तृषा की हिफ़ाज़त करता रह गया और वो मेरी गीता को ले गए। तृषा को जब पता चला वो, वो वहाँ से भाग गईं। जब

मुझे ये पता चला, तो मैं भी किसी तरह अनुमान लगाकर बदहवास सी हालत में प्रोफेसर साहनी के घर की ओर भागा। जब मैं वहाँ पहुँचा, वे सब कोई अनुष्ठान कर रहे थे।

मैं वो सब देखकर घबरा गया और उस भीड़ को चीरते हुए अन्दर की ओर भागा। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। बड़ी मुश्किल से मैं अंदर की ओर गया, जहाँ का नज़ारा देखकर मेरे होश फाख़्ता हो गए।

गीता अचेत अवस्था में मेरे सामने एक बड़े से चट्टान पर लेटी हुई थी। उसके शरीर के कई हिस्सों से खून रिस रहा था। वो सारे शैतान उसके खून की खूश्बू से उस छद्म पिशाच को बुला रहे थे, जिससे कि उनका
काम पूरा हो जाए। और... कुछ ही देर में मैंने उस शैतान को अंधेरों से बाहर निकलते देखा। वो अपनी वहशी ऑखो से मेरी गीता की ओर देख रहा था। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं? जब तक मैं थोड़ा सा संभला... तृषा... एक माँ अपना निर्णय ले चुकी थी। उसने गीता के बदले अपनी जान का सौदा कर लिया। मैं कुछ कर पाता उससे पहले ही उस शैतान ने तृषा को अपनी गिरफ्त में ले लिया। मैं बस गीता के अचेत और लहूलुहान शरीर को अपनी हिफाजत में ले सका। इस बार एक रखवाले की हैसियत से मैंने वार करना चाहा, पर वो जगह मेरी शक्तियों से ज्यादा शक्तिशाली थी, जहाँ उस पिशाच को हराना नामुमकिन था। मैं हार गया था। तृषा उसकी गिरफ्त में थी। सौदा हो चुका था। उस पिशाच ने मुझसे कहा कि इस सौदे के बाद उसकी गिरफ्त से कोई भी तभी आजाद हो सकता था, जब उसके बदले कोई और बलि दी जाए। हालात मेरे हक़ में नहीं थे। अब मुझे अपनी पत्नी और बेटी में से किसी एक को चुनना था।

मैंने गीता की ओर देखा। वो मेरी बाहों में खून से लथपथ लिपटी थी। मुझे दोनों में से किसी एक को चुनना था। मुझे नहीं पता था कि कोई कैसे ये चुन सकता था। पर मुझे ये करना था और मैंने किया। मैं तृषा को अपनी ऑखों के सामने जाते हुए देखता रह गया। दस सालों से अपनी इस लाचारी का बोझ अपने सीने पर रखे जी रहा हूँ मैं। मेरी गीता भी उस दिन से ख़ामोश सी हो गई। उसे अभी भी ये लगता है कि उसकी माँ उसकी वजह से चली गई। वो ना तो किसी से ज्यादा खुलती हैं और ना बातें करती है। बस अपने में ही रहती है। उस दिन के बाद उसने भी उस दिन के बारे में किसी से... यहाँ तक कि मुझसे भी कोई बात नहीं की। हमेशा की तरह एक एक्सीडेंट की कहानी बना दी गई, जिसमें गीता तो खून में लिपटी मिल गई पर तृषा कभी मिली ही नहीं। उस समय हालातों ने मुझे हरा दिया, पर इस बार.... उस पिशाच को मैं हरगिज नहीं जीतने दूंगा। कभी नहीं। इस बार मैं तैयार हूँ।" ऑखों में अंगारे भरकर अनंत कुमार ने कहा।
कमरे में स्तब्धता छा गई थी। सभी एकटक अनंत कुमार की ओर देख रहे थे। जाहिर सी बात है कि कई सवाल अभी भी ज़हन में थे।

"पर आपने उन सबकी हाँ में हाँ कैसे मिला लिया? आपको सभी को बताना था कि हुआ क्या था? उन पिशाच भक्तों को उनके किए की सजा मिलनी ही चाहिए थी।" वरूण उग्र होते हुए बोला। जीवन का इतना कटु सत्य आज जब उसके सामने आया, तो वो अपनी कड़वाहट छिपा ना सका।

अनंत कुमार ने वरूण और फिर सबकी ओर देखा। सभी की ऑखों में यही सवाल था।

"तुम नौजवानों की यही तो समस्या है कि तुम सब सोचते नहीं हो। मैंने उस समय अपनी पत्नी को खो

दिया था और मेरी लहुलुहान बेटी मेरी गोद में थी। उस समय मुझे सबसे पहले अपनी बेटी को बचाना था, जिसकी जान के बदले उसकी माँ ने अपनी जान दे दी। वो जगह भी मेरे शक्ति क्षेत्र से बाहर की थी। वहाँ मेरे अलावा और ऐसा कोई नहीं था, जो मेरे हक़ में गवाही देता। मैं गुस्से की आग में जल रहा था, पर मैं ये भी जानता था कि अपनी बात साबित करने के लिए मुझे सबूत चाहिए थे।" अनंत कुमार ने अपनी लाचारी बताते हुए कहा।

"सबूत! कैसे सबूत?" वरूण गुर्राया।

"पिशाचों की दुनिया में यह सब दो सौ सालों से हो रहा है, मगर किसी को भी कानों कान इसकी खबर नहीं हुई। यहाँ तक कि पिशाच समुदाय में भी कुछ गिने-चुने लोगों को ही इसकी जानकारी है। हमें अब पता है कि दो सौ सालों से हर दस साल में वो पिशाच दस दिन के लिए आता है और पाँच बच्चों के साथ अंत में एक मादा बलि ले जाता है। इस हिसाब से तृषा को
मिलाकर 19 लड़कियों की बलि चढ़ चुकी है। फिर भी किसी को पता नहीं चला। कितनी अचंभे की बात है ना!" अनंत कुमार ने कहा।

"इसका मतलब तो यही है कि इस मामले को दबाया गया है।" अनामिका ने कहा।

"सच तो ये है कि अगर तृषा ने अपने समूह से बाहर मुझसे विवाह ना किया होता, तो ये कहानी बाहर ही नहीं आती। अंदर ही अंदर ये कर्मकांड होता रहता और किसी को हवा भी नहीं लगती। उस समय मैंने सोचविचार कर यह निष्कर्ष निकाला कि समस्या की जड़ तक पहुँचना सबसे ज्यादा जरूरी है। प्रोफेसर साहनी से उलझने की बजाय उस पिशाच से निपटना ज्यादा जरूरी है क्योंकि जब तक वो रहेगा, ये सब चलता ही रहेगा।" अनंत कुमार ने कहा।

"पर वो तो बहुत ही शक्तिशाली है।" चैतन्य ने कहा।

"पर 1000 साल पहले वाली उस पिशाचिनी से ज्यादा नहीं। जब उसे कैद कर लिया गया, तो इसे भी किया जा सकता है।" अनंत कुमार ने हौसला बढ़ाने वाली आवाज के साथ कहा।

"आपका कहना है कि परिधि को उसके घर पहुँचाने के साथ-साथ इस पिशाच को भी क़ैद करना है।" अनामिका बोली।

"हाँ!" अनंत कुमार ने कहा।

"पर वो कैसे?" चैतन्य ने कौतूहल भरी ऑखों के साथ पूछा।

"मैं बताता हूँ।" इस बार जवाब मुकुल ने दिया, जिससे सभी का ध्यान उसकी ओर गया था।
"आज से दस साल पहले जब ये सब हुआ था, मैं उसी समय से सब जान चुका था। दरअसल मैं ही सबसे पहले इन सबमें शामिल हुआ। मेरे पिता अपनी बहन को खोने के बाद बुरी तरह से टूट चुके थे। वो तो इतने गुस्से में थे कि प्रोफेसर साहनी का खून कर देना चाहते थे। उस समय उनकी हालत से घबराकर मैंने अनंत अंकल को फोन किया। तब अंकल ने पापा को समझाया और उन्हें अपनी योजना बताई। पापा को संभलने और समझने में समय लगा, पर अंकल ने उन्हें समझा ही लिया। आखिर हम सभी का दर्द एक ही था। अब हमें उस पिशाच और इस श्राप के बारे में जानकारी हासिल करनी थी। चूंकि इस बात को इतनी मजबूती से दबाया गया कि उस पिशाच की जानकारी हासिल करना आज भी

टेढ़ी खीर है। मगर इन सब खोजबीन के दौरान हमें दो सौ साल पहले की घटना और परिधि के बारे में पता चला।" मुकुल ने बताया।

"परिधि के बारे में आप पहले से ही जानते थे?" चैतन्य ने हैरानी से ऑखें फैलाते हुए अनंत कुमार से पूछा।

"नाम तो नहीं पता था। बस यही पता चला कि कोई उस समय... समय द्वार का उपयोग कर भविष्य की ओर आया था। माया और अल्फी की तरह परिधि भी गुमनाम हो चुकी थी। जब इस विषय में हमने आचार्य निशिकांत को बताया, तो कई महीनों के अथक परिश्रम के बाद उन्होंने उस लड़की के आने का समय और स्थान बताया और ये भी... कि उस समय से जुड़ी कोई चीज हमारे धरोहर संग्रह में है। अब उस लड़की का ना तो हमें नाम पता था और ना ही कोई और जानकारी थी, इसलिए इस विशाल संग्रह में उस धरोहर को खोजना बड़ा ही मुश्किल काम था। किसी तरह मुकुल की मदद से वो डायरी हमारे हाथ लगी, जो पिशाचों के पास थी। मगर वो डायरी पूरी तरह से खाली थी। उस डायरी की मदद से ही आचार्य निशिकांत उस लड़की के बारे में पता करते रहे और आखिर में उन्हें एक सटीक समय और जगह पता चल गई जहाँ वो हमें मिलती और
फिर उसी के अनुसार चलते हुए ही अनामिका और वरूण को परिधि मिली। अगर कुछ नहीं मिला तो वो थी उस पिशाच की शिनाख्त! और तो और परिधि भी अपनी याददाश्त भूल गई। मगर इन सबके बीच एक बात हुई। परिधि के मिलने वाली रात उस डायरी से अचानक ही रोशनी फूटने लगी थी, जिससे मेरा ध्यान उस ओर गया था। उस डायरी के पहले खाली पन्ने में अब कुछ लिखा था।" कहते हुए अनंत कुमार की ऑखों में यादों की हैरानी झांकने लगी।

"मेरे जीवन की परिधि!" अनामिका ने कहा।

"हाँ! सही कहा। और.... थोड़ी माथापच्ची के बाद मुझे लगा कि शायद उस डायरी को देखकर परिधि को सब याद आ जाए। उस समय मैंने इस काम के लिए मुकुल की मदद ली।" अपनी बात खत्म कर अनंत कुमार ने मुकुल की ओर देखा।
"मैं हमेशा से ही अंकल से प्रभावित रहा हूँ। मेरे पिता के बाद मैंने हमेशा ही उन्हें माना है। मेरे पिता और अंकल दस सालों से इस समस्या की जड़ को खोज रहे थे और इन सारी गतिविधियों से मैं भली भांति परिचित था, इसलिए इन सबमें जुड़ने में मुझे कोई मुश्किल नहीं हुई। अंकल और पापा दोनों ही उस श्राप को खत्म करना चाहते थे और इस काम में मैं भी उनकी मदद करना चाहता था। इसलिए पापा के कहने पर मैंने प्रोफेसर साहनी से मेलजोल बढ़ाया और उन पर नज़र रखने लगा। मगर वो बहुत ही चालाकी से अपना हर राज छिपाकर रखते थे। इसलिए मैंने इस काम के लिए सृष्टि का सहारा लिया। मुझे पता चल गया था कि प्रोफेसर साहनी, सृष्टि को हर बात बताते हैं और उसे हमारे खिलाफ हथियार के तौर पर इस्तेमाल करना चाहते थे। मैंने उन दोनों की मुलाकातों पर कान रखने शुरू किए, तभी मुझे इन सबसे जुड़ी किसी डायरी के होने की जानकारी मिली, जिसके बारे में मैंने अंकल को बताया। और साथ ही ये भी पता चला कि उस श्राप से लड़ने के लिए पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और नभ रक्षक का साथ होना बहुत जरूरी है। तब से सभी की नज़र रक्षकों के चुनाव पर थी, जिसमें से अब हमारे पास सभी रक्षक हैं।" मुकुल ने अपनी बात खत्म की।

"सब अभी भी नहीं हैं। सृष्टि को हमारे साथ मिलाना बहुत जरूरी है।" अनंत कुमार ने कहा।

"वो तो चैतन्य कर देगा। आप चिंता ना करें।" आशुतोष ने मुस्कुराते हुए कहा।

"मैं! मैं कैसे?" चैतन्य नासमझी में बोला।

"उसके साथ रहोगे, तो समझ जाओगे। क्यों अनामिका सही कहा ना!" आशुतोष ने एक भौंह चढ़ाकर अनामिका से कहा। इस पर चैतन्य ने सवालिया नज़रों से अनामिका की ओर देखा, जिसके चेहरे के सभी रंग
अचानक ही उड़ गए थे। उसने अपना झेंपा हुआ चेहरा नीचे की ओर झुकाया था।

"अच्छी बात है।" अनंत कुमार ने उम्मीद जताई।

"अंकल! मुझे एक बात और बतानी है। ये बात मेरे ध्यान से निकल गई थी।" मुकुल ने अपने माथे पर हाथ मारते हुए कहा।

"कौन सी बात?" अनंत कुमार ने कहा।

"पापा का जिक्र हुआ, तो याद आया कि दो महीने पहले पापा आपको ही कुछ बताने के लिए आ रहे थे, जब उनका एक्सीडेंट हुआ था और कुछ भी बताने से पहले वो चल बसे।" मुकुल ने एक नई जानकारी देते हुए कहा।

"क्या?" अनंत कुमार की ऑखें चमकी।

"मुझे बस इतना बताया था कि बहुत पहले आपके धरोहर संग्रह में किसी चीज की चोरी हुई थी और उस चोरी की वजह से ही तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र को अपने प्राण गंवाने पड़े थे। और ये जानकारी आपको देना बहुत जरूरी था। क्यों? पता नहीं! उनकी मृत्यु की वजह से यह बात मेरे ध्यान से निकल गई थी। अभी जिक्र हुआ... तो याद आया।" मुकुल ने सभी को अपनी बात से चौंकाया था।

"क्या उसका इस पिशाच वाली समस्या से कोई संबंध रहा होगा?" आशुतोष ने पूछा।

"शायद! तभी तो वो आपको बताने के लिए आ रहे थे, मगर.." बात खत्म होते-होते मुकुल का गला भर आया।
"ऐसी कौन सी चीज चोरी हो गई थी?" अनंत कुमार ने याद करने की असफल कोशिश की।

"तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र के साथ ऐसे कई सवाल जुड़े हुए हैं, जिसने मुझे भी परेशान कर रखा है।" आशुतोष ने कहा।

"कैसे सवाल?" अनंत कुमार ने आशुतोष को हैरत भरी निगाहों से देखते हुए कहा।

चित्रलेखा की कहानी आशुतोष के दिल और दिमाग को कई सवालों की जंजीरों में जकड़ गई थी और आखिर कार आशुतोष के दिल और दिमाग को मथ रहे उन सारे सवालों के सामने आने का वक्त आ ही गया था। कई जवाबों के साथ इनके जवाब मिलने भी उतने ही जरूरी थे।

आशुतोष ने सबके सामने अपनी दुविधा रखी ही थी कि तभी वरूण का फोन बजने लगा। कुछ देर के लिए सभी का ध्यान उसकी ओर गया, जब फोन की स्क्रीन पर नज़र जाते ही वरूण ने तेजी से फोन उठाया था।

"क्या कहा? मिल गया! वेरी गुड! ठीक है उसे रखो ठीक से। बस किसी को खबर नहीं होनी चाहिए। मैं कलेक्ट करता हूँ या फिर.... तुम अगर पहुँचा सको तो.....। थैंक्यू!" वरूण ने सामने वाले की बात सुनने के बाद कहा और फोन रख दिया। सभी की नज़रें अभी भी उसी पर थीं।

"कुछ जानकारियाँ निकलवाई हैं एक भरोसे के आदमी से। बस... वो लेकर आ रहा है।" वरूण ने अनंत कुमार की ओर देखते हुए कहा।

"चलो बढ़िया है! और.. आशुतोष तुम किन सवालों के बारे में कह रहे थे?" अनंत कुमार ने अपनी तवज्जो आशुतोष की ओर घुमाई।
अनंत कुमार की बात सुनते ही आशुतोष ने एक गहरी साँस ली और अपनी ऑखें बंद कर लीं, जैसे कि अपने अंदर घुमड़ते सवालों के बवंडर से वो सारे सवालों को बाहर निकालने की कोशिश कर रहा हो। एक मिनट उसी अवस्था में रहने के बाद उसने अपनी ऑखें खोली।

"मेघा वाली घटना के बाद मुझे उस महल से दो किताबें मिली थीं। दोनों ही तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र की लिखी हुई थीं। उसमें से एक चित्रलेखा की कहानी थी। सवालों के भँवर में डूबते-उतरते जब मैं उस कहानी के अंत पर पहुँचा, तो देखा कि वहाँ दो पन्ने फटे हुए थे। उन दो गुम पन्नों ने ना जाने कितने सवालों को जन्म दे दिया, जो अभी तक मेरे दिल-दिमाग से खेल रहे हैं।" आशुतोष ने कहा।

"जैसे..."

"पहला तो यही था कि चित्रलेखा के शरीर में कैद उस पिशाचिनी की शक्तियों को तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसी के खंज़र में कैद किया था। मगर हमें उस संदूक से वो नहीं... दूसरा खंज़र मिला था। वो वहाँ कैसे आया और पिशाचिनी की शक्तियों वाला खंज़र कहाँ गया? और ये भी कि जो खंज़र हमें मिला था.. उसमें किसकी शक्तियाँ थी?" आशुतोष ने सबसे जरूरी सवाल के साथ शुरूआत की।

"हम्म! ये तो दिलचस्प है क्योंकि सभी यही जानते हैं... कि उस दिन तांत्रिक श्रेष्ठ ने पिशाचिनी की शक्तियों को जब उस खंज़र में कैद किया, तो चित्रलेखा की शक्तियाँ भी उसके साथ ही उस खंज़र में कैद हो गई थीं।" अनंत कुमार ने अपने होंठों पर सीधे हाथ की तर्जनी उंगली रखकर सोचने की मुद्रा में कहा।

"वास्तव में चित्रलेखा की कहानी पढ़ने के बाद ही मुझे भी खंज़रों की इस
अदला-बदली का पता चला। मेघा ने कहा था कि हमें मिले उस खंज़र में चित्रलेखा की शक्तियाँ हैं। उस खंजर के प्रहार से मृत्यु होनी निश्चित ही थी, जबकि चित्रलेखा तो बिल्कुल सही-सलामत थी। तो उसकी शक्तियाँ दूसरे खंज़र में कैसे गईं? क्या आपको इस विषय में कुछ भी नहीं पता है?" आशुतोष ने सबसे जरूरी सवाल के साथ बात शुरू की।

उसकी बात सुनते ही अनंत कुमार के माथे पर बल पड़े थे। वो तेजी से पीयूष की डायरी 'यादों की विरासत' के पास पहुँचे। उन्होंने बड़े ही ऐहतियात से उसे किताब को खोला। पेज बिल्कुल खाली था। अनंत कुमार ने अपना सीधा हाथ उस पर रखा और बुदबुदाए,

"जादुई खंज़र!"

उनके इतना कहते ही वहाँ एक नंबर नज़र आने लगा। सभी ने हैरानी से उस नंबर को देखा कि भला ये कैसा जवाब हुआ!

"ये पेज नंबर है। इन यादों की विरासत में रखवाले के अलावा और कोई भी सेंध नहीं लगा सकता। अगर डॉ.पीयूष की यादों में वो जानकारी है, जो तुम चाहते हो, तो मिल ही जाएगी और मुझे लगता है कि मिलनी ही चाहिए।" यह कहते हुए अनंत कुमार ने वह पेज खोल दिया। खुला हुआ पेज भी खाली था।

"आशुतोष! इस पर अपना सीधा हाथ रखो और ऑखें बंद करके उस खंज़र के बारे में सोचो, जो महल में तुम्हें मिला था।" अनंत कुमार ने आशुतोष को समझाते हुए कहा।

उनकी बात सुनकर आशुतोष ने अपनी ऑखें बंद की और उस खंज़र
की तस्वीर अपने मस्तिष्क में उतारने लगा और ऐसा करते ही उस पन्ने में सुनहरी रोशनी उठने लगी।

उस रोशनी ने एक आकार बनाना शुरू किया और फिर वापस पन्ने में चली गई। आशुतोष ने अपनी ऑखें खोली और उस पन्ने पर नज़र डाली। अब उस खाली सफ़हे पर उसी खंज़र की तस्वीर थी, जो उन्हें महल से मिली थी।
"तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र का खंज़र!" अनंत कुमार ने उसे देखकर कहा।

"हाँ! यही है.... और इसी में मौजूद शक्ति अब अनामिका के पास है और मैं... इसीलिए चिंतित हूँ कि उस खंज़र में चित्रलेखा की ही शक्तियाँ थीं या नहीं।" आखिरकार आशुतोष ने अपना वास्तविक डर जाहिर किया। आशुतोष का इतना कहना था कि सभी अपनी जगह से हिले थे। अब सबकी ऑखों में हैरानी के साथ सवाल तैरने लगे थे।

"चैतन्य! इधर आओ!" अनंत कुमार ने चैतन्य को अपनी उंगलियों के इशारे से अपने पास बुलाया। चैतन्य तेजी से उनके पास आया और डॉ. अनंत की तरफ देखने लगा।

"अपना हाथ रखो इस पर और ये सोचो कि इस खंज़र की कहानी क्या हो सकती है?" अनंत कुमार ने

चैतन्य से कहा।

"पर इस बारे में मुझे कुछ थोड़ी ना मालूम है!" चैतन्य ने हैरानी जताते हुए कहा।

"अरे बाबा! उससे पूछो इसके बारे में!" अनंत कुमार ने थोड़ी झल्लाहट से कहा।

"पर... मैं... कैसे..?" चैतन्य अपने ही सवालों में उलझकर बोला। चैतन्य का इतना कहना था कि अनामिका झल्लाकर अपनी जगह से उठी और चैतन्य के हाथ को पकड़ लिया। उसकी इस हरकत पर सभी चौंके थे। और चैतन्य... उसका तो मुँह खुला का खुला ही रह गया।

"जहाँ जरूरत नहीं, वहाँ बेमतलब के सवाल पर सवाल पूछना है और अब जब सवाल पूछने की जरूरत है तो नखरा दिखा रहे हैं जनाब। मुँह बंद करो, हाथ रखो यहाँ अपना और अपनी ऑखें बंद करके पूछो सवाल!"
अनामिका ने बड़ी जोर से घुड़कते हुए चैतन्य का हाथ उस किताब पर पटका था।

अनामिका का लाल-पीला होता चेहरा देखकर चैतन्य की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने अपने सूख चुके गले को तर किया और फिर झटके से अपनी ऑखें बंद कर ली। अनामिका ने अभी भी उसे नहीं छोड़ा था। धीरे-धीरे चैतन्य के चेहरे का तनाव कम होता गया और वो पूरी तरह से शांत नज़र आने लगा। कुछ देर बाद उसने अपनी ऑखें खोली और अपना हाथ हटा लिया। उसके हाथ हटाते ही वो पन्ने फिर से रोशन हो गए और फिर उस रोशनी के गुबार में सभी को ढेरों अक्षर तैरते हुए दिखाई दिए।

कुछ देर वो सारे अक्षर आपस में ही उलझते रहे और फिर एक झटके में
उस रोशनी के साथ उन पन्नों में समा गए। वहाँ मौजूद सभी लोगों ने पहले एक-दूसरे के चेहरों को घूरा और फिर उठकर उस किताब के करीब पहुँचे। अब वो खाली पन्ना शब्दों से आबाद दिखाई दे रहा था। अनंत कुमार ने आगे बढ़कर उसे उठाया। किताब पर एक नज़र डालकर उन्होंने सभी को बैठने का इशारा किया।

"अ... काम हो गया। अब तुम हाथ छोड़ सकती हो।" चैतन्य ने फुसफुसाते हुए अनामिका से कहा। चैतन्य के ऐसा कहने पर अनामिका ने झटके से उसकी ओर देखा और फिर झेंपते हुए धीरे से उसका हाथ छोड़ दिया। वो एक कुर्सी की ओर बढ़ी और चैतन्य की चोर निगाहों ने आखिर तक उसका पीछा किया। आखिरकार सभी चुपचाप बैठ गए। शायद एक बड़े रहस्य से पर्दा अब उठने वाला था।

डॉ. अनंत ने अपने गले को साफ किया और साफ व सधी हुई आवाज में पढ़ने लगे।

"3 जुलाई,

ना जाने क्यों पर... आजकल कुछ भी ठीक नहीं हो रहा है। अब तो पास से गुजरने वाली हवा पर भी शक होता है। ना जाने कौन है, जिसने देव के सुरक्षा चक्र में सेंधमारी कर ली है। देव बहुत परेशान हैं। जानता हूँ कि उसकी परेशानी भी बड़ी ही होगी। दीदा को भी पता नहीं क्या हुआ है? उन्होंने पिछले हफ्ते अपनी रखवाले की अंगूठी भी देव को वापस कर दी। मालूम नहीं क्या हुआ है? चित्रा भी उन दोनों को देखकर सहमी-सहमी सी रहती है। दीदा भी बहुत परेशान हैं, पर क्यों? वैसे भी दीदा बहुत सेंसिटिव हैं और चित्रलेखा के जाने के बाद तो और भी हो गई हैं। देव भी हर्षित को लेकर परेशान रहता है। मगर दीदा ने उसकी खोज खबर लेने से साफ मना
कर दिया है। उनका कहना है कि हर्षित अब वापस नहीं आना चाहता। अक्सर दोनों में इस बात पर बहस हो जाती है। हम सभी को लगता था कि उस मनहूस रात... देव ने पिशाचिनी के साथ-साथ चित्रलेखा की शक्तियों को भी उस लाल खंज़र में कैद कर लिया था। पर हम नहीं जानते थे कि बहुत कुछ हम सभी से छिपा हुआ था। कल रात उनकी बहस से इतना तो पता चल गया है कि उस रात देव ने पिशाचिनी के चित्रलेखा के शरीर में प्रवेश करने से पहले रक्तस्पर्श विधि से चित्रलेखा की शक्तियों को अपने खंज़र में कैद किया था क्योंकि चित्रलेखा का शरीर दो बड़ी शक्तियों को संभाल नहीं सकता था। पर अब उन खंज़रों को लेकर कौन सा सवाल या बवाल खड़ा हो गया है समझ नहीं आ रहा है। देव ने चित्रलेखा की शक्तियों वाला खंज़र भी उस महल में ही रख दिया है। बस सब ठीक हो जाए। देव ने भी ये रखवाले की अंगूठी पता नहीं क्यों मुझे दे दी है। दीदा ही सही थी इसके लिए। पर कौन उलझे उन दोनों सिरफिरों से! देखते हैं आगे क्या होता है?"

इतना पढ़कर डॉ. अनंत रूक गए। सभी की ऑखों का कौतूहल जरा सा ठिठका।

"क्या हुआ?" आशुतोष ने कहा।

"बस इतना ही है! लगता है कि कुछ बड़ी गड़बड़ हुई थी।" पन्नों को पलटते हुए अनंत कुमार ने चिंता भरे शब्दों के साथ कहा। माथे पर शिकनों का बढ़ना मामले की संजीदगी को बयां कर रहा था।

"पर वो लाल खंज़र तो वहाँ नहीं था। अगर तांत्रिक श्रेष्ठ ने उन दोनों को वहाँ रखा था, तो वो लाल खंज़र गया कहाँ?" अनामिका ने भी चिंता जताते हुए कहा।
"कहीं.... वही तो चोरी नहीं हुआ था, जिसके बारे में मुकुल के पिता आपको बताना चाहते थे। शायद उन्हें कुछ पता चला हो।" वरूण ने अपनी सोच का दायरा बढ़ाते हुए कहा।

सभी की नज़रें वरूण की ओर उठी थी। सोच का एक रास्ता इस ओर भी जाना लाजिमी था, पर क्यों? आखिर किसी को वो खंज़र क्यों चाहिए होगा?

"पर उस संदूक को खोलना मुमकिन ही नहीं था, तो चोरी हो भी कैसे सकती है? मुझे लगता है कि वो बहुत ही महफूज़ जगह थी। फिर कैसे?" आशुतोष ने सवाल उठाया।

सब सुन समझकर अनंत कुमार ने एक बार फिर से आशुतोष को बुलाया और पहले की ही तरह उस दूसरे खंज़र के बारे में सोचने के लिए कहा। सब पहले की तरह होता देखकर चैतन्य की नज़रें अनामिका की ओर घूमी थीं। मगर वो पूरी तन्मयता से उस किताब को ही देख रही थी। चैतन्य की नज़रों ने भी उसकी नज़र का पीछा किया, मगर वो राह भटककर किताब की बजाय आशुतोष पर जाकर रूकी। दिल में लगा फाँस थोड़ा और अंदर हुआ। झुकी हुई नज़र के साथ उसने अपने सिर को झटका दिया और फिर से अपनी बारी का इंतजार करने लगा। मगर इस बार अनंत कुमार ने खुद ही

आगे का काम किया। एक बार फिर से उन पन्नों पर कुछ शब्द उभर आए, जिन्हें अनंत कुमार ने आवाज दी।

"खो गया!"
अनंत कुमार ने एक बार फिर से पन्नों को उलटा-पलटा, मगर वहाँ और कुछ भी नहीं था।

"यहाँ तो बस इतना ही लिखा है उस लाल खंज़र के बारे में!" अनंत कुमार ने अपने माथे पर हाथ रखते हुए कहा।

"खो गया से क्या मतलब? इतनी खतरनाक चीज खो कैसे सकती है?" वरूण बड़बड़ाया।

"अरे यार कोई खोई नहीं है। मुझे पूरा यकीन है कि यही वो चीज है, जो चोरी हुई है।" चैतन्य ने वरूण को चिढ़ भरी आवाज में कहा।

"पर की किसने होगी? उस खंज़र से क्या काम होगा किसी को?" आशुतोष ने कहा।

"शायद कोई उस खंज़र की शक्तियों को पाना चाहता होगा।" अनंत कुमार ने कहा।

"ऐसा नहीं हो सकता! महल से मिली दूसरी किताब में तांत्रिक श्रेष्ठ ने ऐसे ही जादुई अस्त्र-शस्त्रों की व्याख्या की है। उसमें उस खंज़र का भी जिक्र है। उसमें लिखा है कि ये शक्ति उसी के पास वापस जाएगी, जिसकी है। किसी और के पास नहीं। और वो शक्ति तो उस पिशाचिनी की थी। तो क्या वो पिशाचिनी फिर से शक्तियाँ प्राप्त करने की कोशिश कर रही है?" आशुतोष ने कहा।

"ऐसा नहीं हो सकता।" अनंत कुमार ने आशुतोष के सवाल को नकारा।

"क्यों नहीं? उसने पहले भी ऐसा करने की कोशिश की है, तो अब फिर क्यों नहीं कर सकती है?" चैतन्य ने भी आशुतोष के समर्थन में कहा।
"क्योंकि वो नर्क का द्वार बंद हो चुका है। स्वयं तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपने प्राणों की आहुति देकर उस द्वार के पीछे की काली शक्ति को पिशाच को वापस लौटाया था। अब वहाँ कुछ भी नहीं।" अनंत कुमार ने सबको समझाते हुए कहा।

अनंत कुमार का ये खुलासा सभी को सकते में डाल गया था। अनंत कुमार ने एक आह भरी और बोले, "ये खंज़र तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपने अधिकार में ही रखे थे। इसलिए हम रखवालों को इनकी ज्यादा जानकारी बिल्कुल भी नहीं है। शायद दीदा ही अकेली रखवाली थीं, जो इस बारे में जानती थी। हम सब तो बस यही जानते थे कि खंज़र एक ही है। आज पता चला कि एक नहीं बल्कि दो खंज़र थे, जिसमें से एक गायब है।अब सवाल यही है कि तांत्रिक श्रेष्ठ के नाक के नीचे से खंज़र कौन ले गया?"

"पर चोरी तो हुई है। किसी ने तो चुराया है, तभी तो वो खंज़र गायब है।" अनंत कुमार ने चिंता में डूबी आवाज के साथ कहा।

"शायद मुकुल के पापा ये जान गए थे और शायद... यही बताने के लिए आपके पास आ रहे हों और

अगर ऐसा है तो..." चैतन्य ने बात अधूरी छोड़ी।

"तो क्या?" मुकुल ने सवालिया नज़रों से देखते हुए पूछा।

"तो ये भी हो सकता है कि.... शायद उनका एक्सीडेंट हुआ ना हो बल्कि... किसी ने करवाया हो। ताकि आप ये सब ना जान पाएँ और उस खंज़र का राज दबा रहे।" चैतन्य ने बात पूरी की। एक नई संभावना ने सभी के कान खड़े कर दिए थे। सभी की नज़रें मुकुल की ओर गई थीं।

"सॉरी मुकुल! पर क्या तुम्हें कोई जानकारी होगी कि आखिरी दिन और
उससे कुछ दिन पहले तक तुम्हारे पापा कहाँ थे? किससे मिलते थे? कुछ भी! जो याद हो।" आशुतोष ने मुकुल से बहुत ही नर्म लहज़े में कहा।

"जी हाँ! अपने आखिरी समय में वो विक्टर वॉकर के यहाँ काम कर रहे थे। उनके लीगल एडवाइज़र थे वो।" मुकुल ने कहा।

"कहीं ये विक्टर अल्फ्रेड वॉकर तो नहीं!" अनंत कुमार ने पूछा।

"हाँ! वही।" मुकुल ने कहा।

"पर वो तो किसी और फर्म के लिए काम करते थे? उन्होंने विक्टर को कब ज्वाइन किया?" इस बार अनंत कुमार बुरी तरह से चौंककर बोले।

"मुझे नहीं पता। मैंने भी उनसे इस बारे में पूछा था, तो उन्होंने बस इतना कहा कि ये काम उन्हें ज्यादा सुटेबल लग रहा है। बहुत कुछ मिल सकता है उन्हें इस काम से। जल्द ही कोई अच्छी खबर मिलेगी।" मुकुल ने याद करते हुए बताया।

"अच्छी खबर! और आपसे कब से मिले नहीं थे वो?" आशुतोष ने अनंत कुमार से पूछा।

"मिलते तो हम वैसे भी नहीं थे। हम लोगों की निगाहों में नहीं आना चाहते थे, इसलिए ये दूरी बरकरार रखा था हमने। फिर भी करीब छः महीने हो ही गए थे राब्ता किए।" अनंत कुमार ने भी हिसाब लगाते हुए कहा।

"ये कहानी अल्फ्रेड वॉकर से शुरू होकर फिर वहीं लौट आई है। ये संयोग नहीं हो सकता। कुछ तो झोल है इस परिवार मे। पता करना ही पड़ेगा। मुझे पूरा यकीन है कि ये अल्फी नाम की मुसीबत भी इसी परिवार के पेड़ से टपकी है। गायब होने वाले सारे बच्चे भी इन्हीं के हॉस्पिटल में
पैदा हुए हैं। वो पिशाच अंकित के भाई के पास और परिधि के पास भी उसी हॉस्पिटल में ही गया था। ये सब कुछ अजीब नहीं लगता है क्या?" आशुतोष का अपना गणित चालू था।

"इस परिवार की पहुँच भी बहुत ऊँची है.... दोनों ही दुनिया में, इसलिए किसी भी बात को आसानी से दबा सकते हैं ये। और तो और अहेरी समूह के कर्ताधर्ता भी यही हैं। हो ही नहीं सकता कि कोई इनकी नाक के नीचे से इतना कुछ कर जाएगा और इन्हें खबर भी नहीं होगी।" मुकुल ने कहा।

"सही कह रहे हो। कुछ तो है, जो ये परिवार छिपा रहा है। ये पिशाच वाला मसला भी पिशाच समुदाय

के अंदर ही रहता, मगर तृषा की वजह से बात बाहर मुझ तक आ गई। इसलिए आज तक किसी को इस बारे में कुछ पता नहीं चला।" अनंत कुमार ने कहा।

"पर अब तो पता लगाना ही पड़ेगा। मुझे यकीन है कि वो पिशाचिनी वाला खंज़र भी इन्हीं के पास होगा। कुछ तो बड़ा करने की फिराक में हैं ये सब। पर क्या? इन्हें परिधि चाहिए। उस पिशाच को भी परिधि चाहिए। सबको परिधि चाहिए। क्यों? मतलब कि उस पिशाच को तो अपना बदला लेना है, इसलिए परिधि चाहिए। पर इन सबको क्यों चाहिए? क्या उस पिशाच के लिए?" आशुतोष ने फिर उलझे हुए सवालों के बीच खुद को मौजूद पाया।

"शायद उस श्राप की वजह से। तृषा ने बताया था कि कोई श्राप है पूरे पिशाच समुदाय पर। जब तक उस पिशाच को वो नहीं मिलेगा, जो वो चाहता है... वो सब कभी भी उस श्राप से मुक्त नहीं हो सकते हैं। शायद इसीलिए!" अनंत कुमार ने कहा।

"इनकी जन्म कुंडली खोजो। सब वहीं मिलेगा। मुझे लगता है कि माया को भी उन लोगों ने जानबूझकर जलाकर मारा है और शायद परिधि इसकी वजह बन गई। इसीलिए वो अल्फी पिशाच बनकर परिधि की जान के
पीछे पड़ा है। मुझे लगता है कि अल्फ़ी नाम का वो पिशाच एक डायन की वजह से अपने समुदाय के खिलाफ गया होगा और उनसे भी माया की मौत का बदला लेना चाहता होगा। और उसका यही जूनून पूरे समुदाय के लिए श्राप बन गया है। इन सभी का आकलन करें तो बस एक ही बात है कि परिधि की जान को खतरा है सब तरफ से।" आशुतोष ने कहा।

"एक काम हो सकता है।" मुकुल ने कहा।

"क्या?"

"अगर पापा विक्टर वॉकर के साथ किसी भी योजना के कारण जुड़े थे, तो उन छ: महीनों में उन्होंने कुछ तो सबूत जुटाए होंगे और यदि ये सबूत उस खंज़र और उस पिशाच के संबंध में हुए तो काम आसान हो जाएगा हमारा। बस वो हाथ लग जाए।" मुकुल ने कहा।

"पर तुम्हें क्या लगता है कि दुश्मनों ने अभी तक सारे सबूत मिटा नहीं दिए होंगे। इतने दिनों के बाद मिलना तो मुश्किल ही होगा।" अनंत कुमार ने नाउम्मीदी से कहा।

"कोई मुश्किल नहीं है। मुझे पता है कि अगर वो सबूत हैं, तो कहाँ मिलेंगे। अगर मुझे पहले ही पता होता कि इन सबमें उस विक्टर का हाथ हो सकता है तो मेरा दिमाग पहले ही इस ओर इशारा कर देता। आप लोग इंतजार कीजिए, बस आधे घंटे में... मैं लेकर आता हूँ।" कहते हुए वो अपनी जगह से उठा और तेजी से बाहर निकल गया। सभी दरवाजे की ओर ही देख रहे थे।

"क्या सच में ये कुछ लेकर आएगा?" आशुतोष ने दरवाजे की ओर शंका से देखते हुए कहा।
"वो मुकुल है। वो कुछ भी कर सकता है। ऐसे ही उससे हाथ और दिल नहीं मिले हैं मेरे।" अनंत कुमार ने प्रशंसा भरी आवाज में कहा। उनकी बात सुनकर वरूण ने अपने पिता की ओर देखा, जिन्होंने उससे ना जाने क्या-क्या छिपा रखा था। उसकी आँखों में कुछ भी ना होने का अहसास तैरने लगा था, जिसे उसने सबसे छिपाया था।

"एक बात पूछूं?" चैतन्य ने अनंत कुमार से कहा।

"पूछो!"

"आपने यादों की विरासत से जानकारी निकालने के लिए पहली बार तो मुझे बुलाया था, मगर दूसरी बार नहीं। क्यों?" चैतन्य ने दिमाग में घुमड़ रहे सवाल को बाहर निकाला।

"मुझे पहली बार भी तुम्हारी जरूरत नहीं थी। उस किताब को कोई भी रखवाला पढ़ सकता है, बशर्ते उसके पास उस जानकारी का नाम या चित्र हो। मुझे खंज़रों की जानकारी नहीं थी, आशुतोष जी को थी। इसलिए उन्हें बुलाया था। कोई भी दूसरा इसमें नई जानकारी डाल सकता है, पर निकाल नहीं सकता।" अनंत कुमार ने उस किताब को अपने हाथों में लेते हुए कहा।

"पर मैंने तो निकाल ली!" चैतन्य ने उनकी आखिरी बात काटते हुए कहा।

"क्योंकि तुम वायु रक्षक हो। तुम कहीं भी सेंधमारी कर सकते हो।" अनंत कुमार ने पूरी तवज्जो चैतन्य की ओर करते हुए कहा।

"सेंधमारी! सही कहा!" वरूण की उलाहना भरी आवाज आई। चैतन्य की खीझ भरी नज़र उसकी ओर गई थी मगर अनंत कुमार उसे ही देख रहे थे।
"बस यही दिखाना और समझाना चाहता था, इसलिए तुम्हें वो करने के लिए कहा था। वरना जैसे तुम लोगों के हालात हैं, तुम लोगों से ज्यादा उम्मीद ना ही रखें तो बेहतर होगा। तुमसे ज्यादा काम तो उस अंकित ने कर दिखाया और आगे भी करेगा... इसका भी यकीन है।" अनंत कुमार ने बारी-बारी से चैतन्य और वरूण को देखते हुए कहा। चैतन्य की नज़रें फिर से सवालों में उलझी, मगर बाजू से आई दबी हुई सी हँसी की आवाज ने उसे उस ओर देखने पर मजबूर कर दिया। अनामिका ने बड़ी मुश्किल से हँसी दबाई थी। चैतन्य को बड़ी ही शर्मिंदगी महसूस हुई। वरूण भी अपना चश्मा उतार कर पोंछने लगा था।

"वैसे मैं भी बता दूँ कि मेरे हाथ भी कुछ लगा है।" वरूण ने बहुत ही अंदाज से अपना चश्मा पहनते हुए ख़ासे मगरूर आवाज में कहा। यह सुनकर सभी को ख़ासतौर पर चैतन्य को झटका लगा था।

"वो MRD (Medical Records Department) से कुछ जानकारियाँ निकलवाई हैं। उस डिपार्टमेंट में मेरे भरोसे का एक आदमी है, उसी की मदद से। वो लेकर आ रहा है।" वरूण ने अनंत कुमार की ओर देखते हुए कहा।

"ओह! मतलब कि सब अपने काम में लगे हुए हैं।" अनंत कुमार ने प्रशंसा भरी आवाज में कहा।

"हाँ! पर शायद सब नहीं! कुछ तो अभी भी सीख ही रहे हैं।" वरूण ने उपहास भरी दृष्टि चैतन्य पर डालते हुए कहा।

वरूण की तंज भरी नज़रें चैतन्य को आग के समान तपती हुई लगी, जिससे वो सिर से पैर तक सुलग गया। मगर वो फिर से बचकाना हरकतें नहीं करना चाहता था, इसलिए अपने गुस्से को किसी तरह पी गया। मगर आशुतोष उसके दिल का हाल समझ गया।
"अरे! तो अपने चैतन्य के पास भी तो है। एक बहुत जरूरी काम करने का मौका।" आशुतोष ने चैतन्य

के दोनों कंधों पर पीछे से हाथ मारते हुए कहा।

"और वो क्या?" चैतन्य ने सिर ऊपर उठाकर आशुतोष को देखते हुए पूछा। अनामिका भी ऑखें सिकोड़ कर उसी की ओर देख रही थी।

"सृष्टि।" आशुतोष ने कहा। यह सुनते ही जहाँ चैतन्य की ऑखें सिकुड़ी थीं, वहीं अनामिका के माथे के बल ढीले पड़े थे।

"तुम्हें पता है कि सृष्टि नभ रक्षक है और उसका हमारे साथ रहना कितना जरूरी है। वो तुम्हें पसंद करती हैं। तुम्हारी बात जरूर सुनेगी। मुझे तो लगता है कि मानेगी भी।" आशुतोष ने चैतन्य के कंधों को थपथपाते हुए कहा।

आशुतोष का इतना कहना था कि चैतन्य के चेहरे पर अजीब से भाव आए, जैसे कि उसने ना जाने क्या कुछ सुन लिया हो।

"क्या?" चैतन्य ने नाक चढ़ाकर कहा।

"हाँ! तुम्हें नहीं पता! यहाँ तो सबको पता है ये बात।" आशुतोष ने बड़े ही आराम से कहा।

"सबको!" एक बार फिर से चैतन्य की हैरानी भरी आवाज आई। इसी के साथ उसने अनामिका की ओर देखा, जिसने अपना मुँह उसकी ओर से फेर रखा था।

"पर!" चैतन्य ने कहना चाहा।
"भई वाह! सचमुच ये तो सबसे बड़ा काम है।" वरूण ने ठहाके लगाते हुए कहा। चैतन्य ने उसे दाँत पीसते हुए आग उगलती नज़रों से घूरा था।

"मैं.. आती हूँ। परिधि और गीता क्या कर रहे हैं देखकर!" यह कहकर अनामिका तेजी से वहाँ से बाहर निकल गई। चैतन्य ने उसे जाते हुए देखा और फिर आशुतोष की ओर देखने लगा।

"इसे क्या हुआ?" चैतन्य ने पूछा।

आशुतोष ने अपने कंधे चुकाएं और अनंत कुमार की ओर चला गया, जो यादों की विरासत पर झुके हुए ना जाने कौन सी यादें खोज रहे थे।

शाम का समय हो रहा था। मुकुल को आने में थोड़ी देर हो गई थी। परेशानी ये थी कि उसे कोई फोन या मैसेज भी नहीं कर सकता था क्योंकि मुकुल ही हमेशा उन्हें फोन किया करता था। वो कब.. किस समय... किसके साथ हो... कहा नहीं जा सकता था। इतने सालों से अनंत कुमार, अर्पित और मुकुल ने इतने खुफिया तरीके से अपना काम किया था कि अब आखिरी समय में कुछ ग़लत ना हो जाने का डर ज्यादा हो गया था। अनंत कुमार भी थोड़े परेशान नज़र आने लगे थे। वहीं दूसरी ओर आशुतोष के दिमाग में अभी भी बहुत से सवाल घुमड़ रहे थे। आशुतोष ने अनंत कुमार को इतना परेशान देखा, तो उनका दिमाग दूसरी ओर मोड़ने के लिए अपने सवालों का सहारा लेने का सोचा। उसने अपने मन में

सभी सवालों को दोहराते हुए सही क्रम में रखा और परेशानी में अपने सिर पर हाथ रखे अनंत कुमार की ओर देखा।

"अनंत जी! आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?" आशुतोष ने थोड़ी हिचक के साथ कहा।

आशुतोष की आवाज सुनकर अनंत कुमार ने अपना सिर ऊपर उठाया और एक गहरी साँस लेकर कहा , "जी! पूछिए!"

"मुझे एक बात समझ में नहीं आ रही है कि अगर पिशाच आज से दस साल पहले आया था और आप लोगों को इतने सालों से उसके बारे में पता था, तो आप लोग आज तक पूरी जानकारी क्यों हासिल नहीं कर पाए? दस साल कम नहीं होते।" आशुतोष ने हालिया वक्त में पैदा हुए सवालों को अनंत कुमार के सामने रखा।

उसकी बात सुनकर अनंत कुमार के होंठों पर एक दर्द भरी मुस्कान आई। उन्होंने आशुतोष की ओर देखा, जिसकी ऑखें अपनी चमक के साथ जवाबों का इंतजार कर रही थीं।

"दस साल! आपके लिए दस साल होंगे आशुतोष जी। मेरे लिए तो जैसे दस सदियाँ बीत गई हैं इस दर्द को ढोए हुए। तृषा के जाने के बाद मैं भी बहुत ही गुस्से में था। एक बार लगा कि उन सभी को बस खत्म कर दूँ। पर हम रखवाले इस तरह से आक्रमण नहीं कर सकते। हमारा काम बस अपनी चीजों की हिफाजत करना है। अपने उस कर्तव्य को पूरा करने के लिए हमारे पास असीमित शक्तियाँ हैं, जिसमें हम चाहें तो किसी भी सेंधमार को मार सकते हैं। पर पहले से किसी पर वार करने का अधिकार हमारे पास नहीं।"

"पर ऐसा क्यों?" आशुतोष ने हैरानी से कहा।
"ये नियम तांत्रिक श्रेष्ठ का ही बनाया हुआ है। वो शक्तियों के अधिक प्रयोग या दुरूपयोग के खिलाफ थे। हम सब जानते हैं कि इस दुनिया में जब भी किसी ने ज्यादा शक्तियाँ हासिल करके उनका गलत फायदा उठाने की कोशिश की है, उसकी कीमत दुनिया और इंसानियत को चुकानी पड़ी है। इसलिए जब वो हमारी दुनिया में सारी शक्ति के केंद्र बने, तो सबसे पहले उन्होंने सबकी शक्तियों को नियंत्रित किया, जिससे कोई भी इनका फायदा ना उठा सके।" अनंत कुमार ने कहा।

"पर इस तरह से तो आप कमजोर ही रह गए!" आशुतोष ने कहा।

"इसलिए तो बाद में उन्होंने रक्षकों की भूमिका भी तय की, जिनका काम समय आने पर एकजुट होकर हर मुसीबत का सामना करना था। इसलिए तो वो रक्षक हैं। उस समय अहेरी समूह ने इसका प्रतिरोध किया क्योंकि उन्हें लगा कि इस तरह से हमारी ताकत बढ़ जाएगी। उन्होंने कहा कि यदि सभी रक्षक प्रहरी समूह से ही होंगे, तो प्रहरी समूह की ताकत बढ़ जाएगी और अहेरी समूह खत्म हो जाएगा और ऐसा होना तांत्रिक श्रेष्ठ के शक्ति संतुलन के नियमों के विरूद्ध था। मगर ऐसा नहीं था। नियति पात्र हमेशा दोनों समूहों के संतुलन को बनाकर ही रक्षकों का चयन करती है, जो सर्वश्रेष्ठ होते हैं। इस नियम के कारण ही रक्षक अहेरी और प्रहरी दोनों ही समूहों से चुने जाते हैं।" अनंत कुमार ने आशुतोष की जिज्ञासा शांत करने की कोशिश की।

"पर मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि रक्षक और रखवाले में फर्क ही क्या है? दोनों के एक ही अर्थ हैं। तो दो अलग पद क्यों?" आशुतोष ने अगला प्रश्न दागा।

आशुतोष का प्रश्न सुनकर अनंत कुमार के होंठों पर एक मुस्कान आई। उन्होंने आशुतोष के कंधे पर अपना हाथ रखा और बोले, "इसके लिए आपको इस पूरी व्यवस्था को समझना पड़ेगा।"
"तो समझाइए!" आशुतोष ने एक बार फिर से जिज्ञासा दिखाई।

"तो सबसे पहले... तांत्रिक श्रेष्ठ ने ये सब क्यों बनाया। इसलिए क्योंकि अहेरी जो खुद को शिकारी समझते हैं, वो अपनी शक्तियों का दुरूपयोग करके मासूमों को चोट पहुँचा रहे थे। अपने पद का फायदा उठा रहे थे। उनके निर्णय के सामने किसी को कुछ भी बोलने का अधिकार नहीं था और यही बात तांत्रिक श्रेष्ठ को खटक गई। यहाँ तक कि उनके गुरू आचार्य रामानुज ने भी अपनी शक्तियों का फायदा उठाकर उन्हें धोखा ही दिया।"

"ये बात तो सही है। अगर उन्होंने सब पहले ही बता दिया होता, तो शायद बहुत कुछ अलग होता।" आशुतोष ने कहा।

"नहीं आशुतोष! ये हमेशा याद रखो कि हम नियति को नहीं बदल सकते। चित्रलेखा के साथ जो हुआ, वो उसकी नियति थी और होनी ही थी, पर आचार्य रामानुज के धोखे की वजह से हर्षित की जिंदगी इस नियति में उलझ गई और तांत्रिक श्रेष्ठ को यही बात चुभ गई। अगर चित्रलेखा के बारे में पहले से ही सब पता होता, तो शायद हर्षित का भविष्य कुछ और हो सकता था, मगर उसके प्रेम का दर्द भरा परिणाम तांत्रिक श्रेष्ठ को अंदर तक हिला गया। वो हमेशा उससे मिलना चाहते थे, बस इसलिए कि उससे माफी मांग सके, पर वो उन्हें कभी नहीं मिला। आचार्य रामानुज भी अहेरी समूह के ही सदस्य थे और उस समूह ने ही उन्हें नर्क के द्वार का प्रहरी चुना था। मगर काम वो उनके इशारे पर ही किया करते थे। इन सब के कारण ही कई बार बेगुनाहों को भी सजा भुगतने के आजाब से गुजरना पड़ता था। आमतौर पर वो सारे सबूत या तथ्य मिटा दिए जाते थे, जो अहेरी समूह के ताकतवर सदस्यों के खिलाफ होते थे और यही एक बड़ा कारण है कि हमें 200 साल पुराने उस पिशाच के बारे में या फिर उस समय हुए हत्याकांड के बारे में कुछ भी पता करने में इतनी दिक्कत आ
रही है। उन्होंने सब नष्ट कर दिया है। बची-खुची कसर पिशाच वाले मामले का उनका अंदरूनी मामला होना है, जिसे वो अपनी धरोहर के रूप में आसानी से किसी से भी छिपा सकते हैं। इस तरह से परिधि आती और वो पिशाच अपनी सुविधानुसार उसका उपयोग कर लेते और किसी को कानों कान इसकी खबर नहीं होती। पर तृषा की वजह से इसका एक धागा मेरी तरफ खुल गया। मगर मैं एक रखवाला था और बिना किसी गलती के मुझ पर प्रहार नहीं किया जा सकता था और यही मजबूरी मेरी भी थी। बस इसलिए ना तो उन्होंने और ना ही मैंने किसी को कोई नुक़सान पहुँचाया। बिना सबूतों के मेरा कोई भी कदम मेरे लिए ही नुकसान देह साबित हो सकता था। बस इसलिए मैंने इतना सब्र करना बर्दाश्त कर लिया।" कहते-कहते अनंत कुमार रूके थे।

"पर प्रोफेसर साहनी! उनका क्या? आपने उनको क्यों माफ़ कर दिया।" आशुतोष ने पूछा।

"किसने कहा कि मैंने उन्हें माफ कर दिया। आज भी मेरे अंदर वो लावा धधक रहा है, जिसमें मैं उसे जला देना चाहता हूँ। पर हम प्रहरी हैं। अगर अपनी शक्तियों का दुरूपयोग करके हम भी वही सब करेंगे... जो वो करते थे या करते हैं, तो उनमें और हममें क्या फर्क रह जाएगा। प्रहरियों ने हमेशा से ही इस फर्क को बनाए रखा है और अपने उतावलेपन के कारण मैं ये सब बर्बाद नहीं कर सकता था। तांत्रिक श्रेष्ठ हमेशा पूर्ण न्याय में यकीन रखते थे और वो मिलता है सबूतों से। इसलिए उस समय मैंने उनसे दूरी बना ली, यह जताते हुए कि जो भी हुआ उसमें मैं ना तो हस्तक्षेप कर सकता था और ना ही जो हुआ उसे साबित कर सकता था। तृषा एक पिशाच थी इसलिए उसकी मृत्यु की घोषणा पर भी

उनका ही अधिकार था। उन सबको लगा कि तृषा की मृत्यु से मैं टूट गया... जो कि सच में हुआ था। मगर मैंने सब्र किया और इसमें मेरा साथ दिया मुकुल के पिता ने। हम जानते हैं कि इन दस सालों में हमें ना जाने कितनी मुश्किलों से सबूतों के कुछ धागे मिले... वो भी टूटे हुए, जिन्हें सही तरीके से जोड़ने में
हमारी हालत खराब हो गई। हमें इतना सब कुछ करना था, वो भी किसी की नज़रों में आए बिना और इसलिए भी हमारे लिए ये और भी मुश्किल हो गया। छोटी-छोटी कड़ियाँ जोड़ते हुए ही हमें उस 200 साल पुराने हत्याकांड और उस पिशाच के पैदा होने का समय मिला। इतने सालों की मेहनत के बाद ही हमें परिधि के आने की जानकारी मिली, उसकी डायरी मिली। हमारे रक्षकों की जानकारी मिली। जरा सोचिए... 200 साल पहले की वो जानकारियाँ निकालना जिसे नष्ट कर दिया गया हो.... आपको क्या लगता है कि आसान काम था? पर फिर भी सब सही चल रहा था... हमारी योजना के अनुसार चल रहा था। बस हमें परिधि का इंतजार था कि वो हमें मिले और उसके सहारे हम उस पिशाच के बारे में सब जान सकें और उसे रोक सकें। मगर परिधि की गुम हुई याददाश्त ने ही सब गड़बड़ कर दी और आखिरी समय में हमारी मेहनत बढ़ा दी। मुकुल के पिता की मृत्यु भी एक गहरा आघात था उनके जाने के बाद भी हमारे लिए समस्याएँ बढ़ गईं और अब तो मुझे लगता है कि उन्हीं पर निगरानी करके प्रोफेसर साहनी को हमारे मिशन के बारे में सब पता चला होगा और अब वो हमारी जानकारी से फायदा उठाना चाहते हैं। शुक्र तो ये हुआ कि उन्हें मुकुल के बारे में कुछ भी पता नहीं चला, वरना उसके लिए मुसीबत हो सकती थी और बस इसलिए मैंने आप सब से भी उसे छिपाकर रखा था। वो हमेशा से इस रण में मेरा तुरूप का पत्ता रहा है। पर अब डर लग रहा है कि उसे कोई नुक़सान ना पहुँचे। मुझे पता है कि उन्होंने सृष्टि का इस्तेमाल किया है। क्यों किया है ये नहीं मालूम, लेकिन सृष्टि हमें भी चाहिए इसलिए मैंने उसे यहाँ आने से नहीं रोका। हमें हमारे मकसद को पूरा करने के लिए सारे रक्षक चाहिए।" अनंत कुमार ने आशुतोष को जवाब देते हुए कहा।

"अनंत जी! एक बात बताइए! यदि इस काम के लिए सारे रक्षक इतने जरूरी हैं तो आप लोगों ने रक्षकों का चयन पहले ही क्यों नहीं कर लिया? आपको नहीं लगता कि यदि ये पहले ही कर लिया होता तो शायद अभी हम ज्यादा मजबूत होते। अनामिका और मैं तो काफी हद तक तैयार भी हैं और शायद मुकुल और सृष्टि भी। पर मुझे नहीं लगता कि चैतन्य और
वरूण तैयार हैं। आप कह रहे हैं कि हमारे पास बस दो दिन बचे हैं और वरूण-चैतन्य को अपनी शक्तियों का ही ज्ञान नहीं है। कैसे होगा ये सब जब हम जानते हैं कि हमारा दुश्मन कितना ताकतवर है।" आशुतोष ने अगला सवाल उठाया।

"जहाँ तक हम रखवालों की शक्तियों के मायने हैं कि हम अपनी धरोहरों.. चाहे वो वस्तु हो.. या फिर रिश्ते, उनकी ओर बढ़ने वाले खतरे को दूर से ही महसूस कर सकते हैं, उन्हें सुरक्षित रखने के लिए खुफिया दरवाजे बना सकते हैं, जिसका इस्तेमाल हमारी इज़ाजत के बिना कोई नहीं कर सकता और मुझे मुसीबत में जानकर वरूण ने उस खंडहर से इस घर के लिए खुफिया दरवाजा खोला, तो मुझे यकीन हो गया है कि उसके अंदर की शक्ति जाग चुकी है। चाहे कोई रखवाला हो या रक्षक। हम सभी की शक्तियाँ मानसिक रूप से हमारे अंदर है और अगर हम मानसिक रूप से इसका उपयोग करने को तैयार हैं, तो इसके इस्तेमाल में कोई भी परेशानी नहीं होती। समय आने पर हमारा मस्तिष्क स्वयं हमें इसकी सूचना दे देता है बस हमारा मस्तिष्क शांत और सोचने-समझने के लायक होना चाहिए। इसलिए वरूण और चैतन्य को उनकी शक्तियों के बारे में बताने की जरूरत नहीं है। उन्हें बस उस मानसिक विचलन से बाहर निकालने की जरूरत है, जिसमें वो फँसे हुए हैं। अनामिका ने इस विषय में मुझसे बात की थी। दरअसल मैंने ही उसे कुछ भी कहने से मना किया है क्योंकि इस समय किसी एक के मन की इच्छा का पूरा होना दूसरे के मन को तोड़ सकता है और मानसिक रूप से किसी का भी टूटना हमारे लिए अच्छा नहीं है। उलझे हुए मन को आप समझा भी सकते हैं, पर टूटे हुए को बहुत मुश्किल है। मैंने सोचा था कि मैं ही कुछ करूं, पर आप जो कर रहे हैं वो भी बढ़िया है और इसका असर होता मैंने

महसूस भी कर लिया है।" अनंत कुमार ने कहा।

"क्या सच में?" आशुतोष ने आश्चर्य के साथ पूछा।
"हाँ!" अनंत कुमार ने मुस्कुराते हुए कहा।

"चलिए बढ़िया है, पर आप ने अभी तक ये नहीं बताया कि आप लोगों ने रक्षकों को चुनने में इतनी देर क्यों की?" आशुतोष ने पूछा।

"क्योंकि रक्षकों को हम नहीं... नियति पात्र चुनती है। हर समय काल में कोई भी समस्या आने पर उसी ने रक्षक चुने हैं।" अनंत कुमार ने कहा।

"क्या मतलब?" आशुतोष ने सिकुड़ी हुई ऑखों के साथ कहा।

"मतलब ये कि दोयम दर्जे के रक्षक हमेशा से ही हमारी दुनिया में भरे हुए हैं, जो अपने तत्व के हिसाब से शक्ति का अधिकार रखते हैं, पर इनमें से जिनको नियति पात्र चुनती है, वही प्रथम श्रेणी के रक्षक बनते हैं। एक बार रक्षक चुन लिए जाएँ तो अपनी शक्ति के क्षीण होने तक वहीं रक्षक रहते हैं। उनके जाने के बाद वो जगह तब तक खाली ही रहती है, जब तक कि इसकी जरूरत ना हो। आज जब एक बार फिर से मुसीबत हमारे सामने है, तो नियति पात्र ने एक बार फिर से अपनी भूमिका निभाते हुए रक्षक चुन लिए हैं क्योंकि ना जाने कब से ये सारी जगह ख़ाली थीं, सिवाय वायु रक्षक के। अब रक्षकों की शक्तियों के बारे में बात करें तो मुकुल और सृष्टि दोनों को ही अपनी शक्तियों का ज्ञान है और इसी दुनिया में रहने के कारण उन्हें रक्षक की शक्तियों का इस्तेमाल करने के लिए बस अंगूठी पहनने की जरूरत है। आप और अनामिका भी पहले से ही इनके लिए तैयार हैं। वरूण भी अपनी शक्तियों का इस्तेमाल आसानी से कर सकता है। इसलिए आप सबको लेकर कोई परेशानी है ही नहीं।" अनंत कुमार ने आशुतोष को समझाते हुए कहा।

"और चैतन्य! आपको नहीं लगता कि वो अभी इन सबमें कमजोर है।" आशुतोष ने आपत्ति जताई। "चैतन्य का चुनाव अभी भी मेरी समझ से परे है। हालांकि अपने पिता की वजह से उसमें रक्षक के गुण हैं क्योंकि उसके पिता दोयम दर्जे के जल रक्षक थे, जिन्हें चैतन्य की माँ की सुरक्षा की जिम्मेदारी मिली थी। उनकी वजह से ही चैतन्य हमारी दुनिया का हिस्सा है, जिसकी दबी हुई शक्तियों को अनजाने में आपने जागृत कर दिया। वायु तत्व की प्रधानता होने के कारण ही वो वायु रक्षक बना है। मगर वायु रक्षक का चुनाव इतना आसान नहीं है। हमारी दुनिया में आखिरी बार 95 साल पहले वायु रक्षक चुना गया था, जो आचार्य निशिकांत हैं। मगर अब वो 110 साल के हो गए हैं, जिनकी शक्तियाँ क्षीण हो चुकी है और इसी वजह से ही हमें सुराग ढूंढने और उसमें से जानकारी निकालने में इतने साल लग गए। आपको ध्यान होगा कि माया और अल्फ़ी के बारे में चैतन्य ने ही हमें बताया था, जिससे उस पिशाच की पहचान हमें पता चली और इसके बाद कड़ी से कड़ी मिलाकर ही हम अल्फ्रेड फैमिली तक पहुँचे हैं। इसलिए आखिरी निष्कर्ष तो यही लग रहा है कि मौजूदा समय में एक नए वायु रक्षक की बहुत आवश्यकता थी और उस चुनाव के समय ही चैतन्य यहाँ आ गया, जिससे वो नियति पात्र की पकड़ में आ गया होगा और उसे वायु रक्षक चुन लिया गया होगा।" अनंत कुमार ने संभावना जताई।

"तो क्या चैतन्य हमारे लिए कमजोर कड़ी साबित हो सकता है?" आशुतोष ने चिंतित स्वर में कहा।

"शायद हाँ भी और नहीं भी! कुछ कहा नहीं जा सकता है।" अनंत कुमार ने आशुतोष की ओर देखते हुए कहा।

"ओह! पर एक सवाल और है। दीदा और चित्रा ये दोनों माँ-बेटी चित्रलेखा की शक्तियाँ क्यों पाना चाहती थीं। मतलब कि उन्हें इसकी जरूरत ही क्या थी, जिसके लिए उन्हें चैतन्य की माँ की जरूरत थी और फिर उनकी सुरक्षा के लिए अपने चैतन्य के पिता जो जल रक्षक थे उन्हें उनकी सुरक्षा सौंपनी पड़ी?" आशुतोष ने खुद में सोचते हुए सवाल किया और इस एक
सवाल ने अनंत कुमार को भी चौंकाया था।

"पता नहीं!"

"पता नहीं मतलब! आप लोग नहीं जानते कि वो दोनों ऐसा क्यों कर रही थीं.... क्योंकि मुझे नहीं लगता कि चित्रलेखा की शक्तियाँ हासिल करना उनका मकसद था।" हैरान आशुतोष ने अनंत कुमार को भी हैरान करते हुए कहा।

"क्या मतलब?" अनंत कुमार ने ऑखें आशुतोष की ओर उठाते हुए कहा।

"यही कि उन दोनों को चैतन्य की माँ.... चित्रलेखा की शक्तियों को हासिल करने के लिए नहीं चाहिए थी। अगर ऐसा होता तो चित्रा ने बाद में फिर ऐसी कोशिशें क्यों नहीं की। वो तो उस परिदृश्य से गायब ही हो गई और सालों बाद मेघा के रूप में लौटी तो भी मकसद बस यश को पुनर्जीवित करना ही था।" आशुतोष ने तथ्यों को याद करते हुए कहा।

"मुझे बस इतना पता है कि उस समय दीदा की हुई मृत्यु ने चित्रा को बुरी तरह से झकझोर दिया था। वो भी बहुत ज्यादा आहत हुई थी। जिस्म से भी और रूह से भी। ना जाने वो कौन सा बोझ अपने दिल में लिए जीती रही। दीदा का औषधीय ज्ञान हमेशा से हमारी धरोहर रही है। क्या नहीं है उनके खजाने में और उसी की सहायता से ही उन दोनों ने भी इतनी लंबी उम्र पाई थी। उसके बाद मेघा वाली घटना हुई और वो हमेशा के लिए चली गईं।" अनंत कुमार ने सब याद करते हुए कर्म से बताया।
"वही तो कह रहा हूँ मैं कि चित्रा एक नरम दिल की मालिक थी। वो कभी भी शक्तियाँ नहीं चाहती थी, वरना मेघा के लिए अपनी खुद की शक्तियाँ और जीवन नहीं त्यागती। मामला कुछ और ही है, जो समझ में नहीं आ रहा है।" आशुतोष अपना सिर खुजलाते हुए बोला ।

आशुतोष की बातों ने अनंत कुमार की सोच का रास्ता भी बदल दिया, मगर ये रास्ता भी गहरे धुंध में ढका हुआ था। वो दोनों ही इस बारे में गहरी सोच में गए ही थे कि तभी कमरे का दरवाजा खुला और वरूण अंदर आया। अंकित भी उसके साथ ही था।

"मुकुल आया?" वरूण ने आसपास नज़र दौड़ाते हुए पूछा।

"नहीं! और अब मुझे सचमुच चिंता हो रही है।" अनंत कुमार का ध्यान फिर से घड़ी और मुकुल की ओर गया था।

"आ जाएगा! चिंता मत कीजिए।" आशुतोष ने कहा।

"आशुतोष जी सही कह रहे हैं और... एक अच्छी खबर हाथ लगी है।" वरूण खासे उत्साह से बोला।

"एक नहीं.... दरअसल, दो बड़ी खबरें हैं।" अंकित ने वरूण की बात काटते हुए कहा।

"अच्छा और वो क्या हैं?" अनंत कुमार उत्साहित होकर अपनी कुर्सी से उठते हुए बोले।

"पहले सबको बुलाइए! कहाँ हैं सब?" वरूण ने चारों ओर देखते हुए कहा।
"चैतन्य तो गीता और परिधि के साथ है और अनामिका का पता नहीं।" अनंत कुमार ने सोचते हुए कंधे उचकाए।

"मैं बुलाकर लाता हूँ।" कहते हुए वरूण दरवाजे की ओर बढ़ा।

"मैं भी चलता हूँ।" आशुतोष ने कहा और वरूण के साथ हो लिया। दोनों तेजी से बाहर निकले।

"ये परिधि दिन भर करती क्या हैं?" अंकित ने दरवाजे की ओर देखते हुए कहा।

"क्या करती है मतलब?" अनंत कुमार ने अपने स्टडी के सेल्फ्स से सामान निकालते हुए कहा।

"मतलब कि हम इतनी-इतनी देर तक इस कमरे में चर्चा करते रहते हैं, मगर मैंने उसे किसी को ढूंढते हुए यहाँ आते नहीं देखा।" अंकित ने ऑखों में आश्चर्य भरकर सवाल पूछा।

"वो... वो तो अनामिका के दिमाग का कमाल है। जब उसे पता चला कि परिधि हिंदी पढ़ सकती है, तो उसने... ढेर सारी फतांसी और जादू भरी कहानियाँ उसे पढ़ने के लिए दे दी और उससे कहा कि इन सब कहानियों को अच्छी तरह से पढ़कर याद रखें, जिससे उसकी कमजोर याददाश्त तेज हो सके।" अनंत कुमार ने एक किताब निकाल कर उसे देखते हुए कहा।

"ये क्या लॉजिक हुआ?" अंकित ने सिर खुजलाते हुए कहा।

"कभी-कभी ऐसे बचकाने ट्रिक्स भी बहुत काम आते हैं। परिधि, अनामिका से बहुत प्रभावित हैं और उसे बहुत समझदार मानती है... जोकि... वो है। तो अनामिका ने उससे कहा है कि वो कहानियाँ पढ़कर अच्छे से याद रखें क्योंकि फिर वो उससे उन कहानियों से संबंधित सवाल करती है, जिसके जवाब परिधि को देने होते हैं। उसे भी ऐसा लगता है कि इस तरह से उसकी याददाश्त बेहतर हो जाएगी और अनामिका को लगता है कि शायद ऐसी कहानियाँ पढ़कर उसे अपने समय का थोड़ा बहुत ही अहसास होने लगे, तो शायद कुछ काम बन जाए।" अनंत कुमार ने अंकित से कहा।

"और इससे कुछ काम बना?" अंकित ने पूछा।

"फिलहाल वो यहाँ से दूर रहती है, यही काफी है।" अनंत कुमार ने कुछ किताबें मेज पर रखते हुए कहा।

"हम्म!" अंकित ने हुंकारी भरी और फिर अनंत कुमार के पास चला गया।

****

दूसरी ओर वरूण और आशुतोष ऊपर जाने के लिए सीढ़ियों की ओर बढ़ गए। तभी अचानक आशुतोष रूका और पिछले बाहरी दरवाजे की ओर देखने लगा।।

"क्या हुआ?" सीढ़ियाँ चढ़ते हुए वरूण ने रूककर पीछे पलटते हुए कहा।

"तुम चलो!" आशुतोष ने कहा और फिर पिछले दरवाजे की ओर बढ़ गया। वरूण ने अपना मुँह बनाया और फिर अपना चश्मा ठीक करता हुआ गीता के कमरे की ओर गया। दरवाजे पर दस्तक करने पर अंदर से परिधि ने दरवाजा खोला। वरूण अंदर गया तो गीता फोन में कुछ देखते हुए मुस्कुरा रही थी। वहीं चैतन्य उसकी कहानी की किताबें खोले कुछ देख रहा था।
"क्या हो रहा है?" वरूण ने चैतन्य को देखते हुए अनमने ढंग से कहा।

"कुछ नहीं! मैं और परिधि इन कहानियों के बारे में बातें कर रहे थे। ये सचमुच मजेदार हैं।" चैतन्य ने अपने हाथ में पकड़ी हुई किताब नीचे रखते हुए कहा।

"अनामिका कहाँ हैं?" वरूण ने चारों तरफ देखते हुए पूछा।

"पता नहीं!" चैतन्य ने अपना सिर हिलाते हुए कहा।

"तुम्हें पापा बुला रहे हैं।" वरूण ने मुद्दे की बात की।

"ओह! हाँ! चलो!" कहते हुए वो खड़ा हुआ और फिर परिधि से मुखातिब होते हुए बोला, "इसे अच्छे से पढ़ना। हम लोग रात में इस पर चर्चा करेंगे।"

"हाँ भैया!" परिधि फुदकते हुए चहचहाकर बोली।

"भैया! शुक्र है किसी ने तो इसे भैया कहा।" वरूण खुद में ही थोड़ी चिढ़ से बुदबुदाया।

चैतन्य खिड़की के पास रखा अपना फोन उठाने के लिए गया और फिर उसकी नज़र खिड़की से बाहर गई। शाम के धुंधलके के बीच अनामिका गुमसुम सी बैठी हुई थी। जब उसने अपने गाल पर उंगलियाँ फेरी, तो चैतन्य को अहसास हुआ कि वो रो रही थी। चैतन्य के दिल में एक हूक सी उठी, मगर वो वहाँ से हिलता, उससे पहले ही उसने आशुतोष को उसकी ओर जाते देखा और वो बस रूक गया।
"चलें!" चैतन्य अपना फोन उठाकर पलटा और वरूण का इंतजार किए बिना बाहर निकल गया। वरूण भी उसके पीछे हो लिया।

"वैसे तुम्हारी और अनामिका की दोस्ती हुई कैसे?" वरूण ने पहली बार उससे कुछ पूछा।

"दोस्ती! हा!" कहते हुए चैतन्य, वरूण की और मुड़ा और उसकी ऑखों में देखते हुए बोला, "अनामिका और मैं.... दोस्त नहीं हैं।"

वरूण ने उसकी ऑखों में झांकते हुए उसकी बातों को तौला। उसे कुछ समझ में नहीं आया।

"क्या मतलब?" वरूण अपनी जगह में खड़ा-खड़ा बोला।

"तुम दोस्त हो ना उसके! सबसे अच्छे दोस्त! थोड़ा सोचो तो समझ जाओगे।" चैतन्य ने कहा और आगे चल दिया। वरूण ने अपना माथा खुजलाया और फिर कुछ समझ ना आने पर झल्लाते हुए पैर पटकता हुआ आगे बढ़ गया। जल्द ही दोनों स्टडी रूम में पहुँच गए।

"आशुतोष और अनामिका कहाँ हैं?" अनंत कुमार ने उन दोनों की ओर देखते हुए कहा।

"वो पिछले हिस्से में हैं।" चैतन्य ने बिल्कुल सामान्य तरीके से कहा।

"चैतन्य! उन्हें बुलाकर लाओ!" अनंत कुमार ने कहा।

"मैं!" चैतन्य ने अपनी ऊंगली अपने ही सीने पर रखते हुए कहा।

"यहाँ किसी और का नाम चैतन्य है?" अनंत कुमार ने अपनी चढ़ी हुई
ऑखों से उसे देखते हुए कहा।

"नहीं!" चैतन्य ने कहा।

"तो जाओ जल्दी।" अनंत कुमार ने तेज आवाज में कहा। उनकी बात सुनकर चैतन्य तेजी से कमरे से बाहर निकला और फिर पिछले हिस्से की ओर बढ़ गया। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि अनामिका, आशुतोष के कंधे पर सिर रखे हुए थी और आशुतोष उसके सिर पर अपनी उंगलियों से थपकी दे रहा था। चैतन्य के आगे बढ़ते हुए कदम एकदम से ठिठके थे। उसने उन दोनों को बारी बारी से देखा और फिर एक संकोच ने उसे आ घेरा। कुछ देर उन्हें देखने के बाद उसने अपना सिर झुकाया और बोला,

"एक्सक्यूज मी! डॉ. अनंत आप दोनों को बुला रहे हैं।"

उसकी आवाज सुनकर दोनों ही एक-दूसरे से अलग हुए और फिर आशुतोष ने उसकी ओर देखा। चैतन्य जाने के लिए वापस पलटा ही था कि आशुतोष ने पीछे से उसे पुकारा।

"चैतन्य!"

उनकी आवाज़ सुनकर चैतन्य पीछे पलटा। आशुतोष तेजी से चलते हुए उसके पास आया। अनामिका अभी भी वहीं बैठी हुई थी।

"उसे साथ लेकर आओ!" आशुतोष ने अनामिका की ओर इशारा करते हुए कहा।

"मैं!" चैतन्य एक बार फिर से नासमझी से बोला।

"हाँ तुम! एक तो पता नहीं क्यों... आजकल तुम्हें कोई बात समझ में
आती ही नहीं। जाओ! लेकर आओ उसे!" आशुतोष ने चैतन्य को डपटते हुए कहा और तेजी से अंदर की ओर चला गया।

"मैं क्यों?" चैतन्य उसे जाते हुए उलझन से देखा और फिर उसी उलझन के साथ अनामिका की ओर मुड़ा। वो उसे कुछ देर उसी तरह देखता रहा और फिर उसकी ओर बढ़ गया।

अनामिका उसकी आमद से बेखबर सामने फैलते अंधेरे में ना जाने क्या देख रही थी। चैतन्य ने उसकी ओर देखा और फिर उसकी बगल में बैठ गया। इस बार अनामिका ने उसकी ओर देखा और फिर सीधा होकर बैठ गई। चैतन्य ने देखा कि वो अपने चेहरे पर लिखी इबारतें मिटाने की कोशिश कर रही थीं, जिसमें से कुछ मिटने से पहले उसे बहुत कुछ कह गए।

"परेशान हो?" चैतन्य ने अपने माथे पर शिकन भरकर उसके चेहरे को देखते हुए पूछा।

"हम्म!" अनामिका ने भी हुंकारी भरकर जवाब दिया।

"वजह... मैं हूँ?" सवाल पूछते हुए चैतन्य के गले में कुछ अटका था।

"हुँ!" अनामिका ने एक बार फिर से हुंकारी भरी।

अनामिका के जवाब से चैतन्य के अंदर एक टीस सी उठी। उसने अंदर सब कुछ बिखरने से रोकते हुए कहा, "सॉरी! मुझे सब समझना चाहिए था।"

"और वो क्या?" इस बार बोलते हुए अनामिका ने उसकी ओर नज़रें उठाई थीं।
"यही कि मेरा साथ तुम्हें खुशी नहीं देता है।" चैतन्य ने बड़ी ही मुश्किल से कहा।

"और इस बात का मतलब क्या है?" अनामिका ने उसके चेहरे को ग़ौर से देखते हुए पूछा।

"यही कि जब तुम मेरे साथ खुशी महसूस नहीं करती, तो तुम पर दबाव डालकर मैं इस रिश्ते को बढ़ाना नहीं चाहता। तुम्हें अपनी खुशी पाने का हक है। तुम उसी के साथ आगे बढ़ो, जिसके साथ तुम खुश रह सकती हो।" चैतन्य ने बिना उसकी ओर देखे अपना सिर झुकाए हुए कहा।

"और कौन है वो?" अनामिका ने माथे पर शिकन और ऑखों में सवाल भरकर पूछा।

अनामिका के सवाल को सुनकर चैतन्य ने अपने सूखते हुए होंठों पर ज़बान फेरी और अपने गले को गीला किया, ताकि इतनी हिम्मत के बाद वो जो भी बोलने वाला था, वो कहीं भी अटके नहीं। मगर फिर भी वो बस एक शब्द ही बोल सका।

"आशुतोष!"

कहकर चैतन्य ने अपनी ऑखें बंद कर लीं। उसे अपना दिल पाताल की अंधेरी गहराईयों में गिरता महसूस हुआ और उसने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। वो उसी तरह बैठा हुआ था, तभी अनामिका के हाथों के तेज धक्के से वो सीधे जमीन पर गिरा। उसने हड़बड़ाकर अपनी ऑखें खोली और अनामिका की ओर उलझन भरी ऑखों से देखने लगा, जो उसे अपनी ऑखों में अंगारे भरकर का जाने वाली नज़रों से देख रही थी।
"बेवकूफ! गधा!" अनामिका अपनी दोनों मुट्ठियाँ अपने सिर तक उठाकर चिल्लाते हुए बोली। चैतन्य उसकी इस प्रतिक्रिया को समझ पाता उससे पहले ही अनामिका ने उसके पैरों पर एक जोरदार लात मारी और फिर पैर पटकती हुई अंदर चली गई।

"आऊ! अब क्या ग़लत बोल दिया मैंने?" चैतन्य अपने पैर को सहलाते हुए बोला और फिर खड़ा होकर उसके जाने की दिशा में देखने लगा। उसने अपने सिर को झटका और वो भी अंदर चला गया। वो जब स्टडी रूम में पहुँचा, तो उसने अनामिका पर एक नज़र डाली, जो अभी भी गुस्से में दहक रही थी। आशुतोष ने चैतन्य से ऑखों ही ऑखों में सवाल किया, जिस पर चैतन्य ने अपने कंधे उचकाकर अपनी अनभिज्ञता जाहिर की। आशुतोष ने अपने मुँह से एक आह निकाली और फिर अफसोस से अपने सिर को हिलाया।

अनंत कुमार ने अपनी हाथ घड़ी पर नज़र डाली और फिर चिंता से बोले, "मुकुल क्यों नहीं आया अभी तक?"

"मैं पता करूँ क्या?" वरूण ने कहा।

अनंत कुमार कुछ कहते उससे पहले ही स्टडी का दरवाजा खुला और मुकुल ने अंदर कदम रखा। पर... वो अकेला नहीं था। कोई उसकी बाहों की गिरफ्त के बीच छटपटा रहा था। सबने देखा कि उसके मुँह से आधे शरीर तक एक मोटा कपड़ा पड़ा हुआ था। सबने आश्चर्य से मुकुल की ओर देखा।

"सॉरी! पर इस आफत की वजह से ही देर हुई।" और उसने उसे सामने पड़ी कुर्सी पर लगभग पटक दिया और वो कपड़ा खींचा।

"सृष्टि!" एक साथ कई आवाजें आई और वो... सबको अपनी दहकती
ऑखों से घूर रही थी। उसके हाथ और मुँह भी बंधे हुए थे और उसके उस मुँह से घुटी-घुटी सी आवाजें निकल रही थीं।

"इसे इस तरह क्यों लेकर आए हो?" अनंत कुमार ने पूछा।

"इसे मेरे बारे में पता चल गया था। लाया तो बेहोश करके था, पर दरवाजे के पास होश आ गया इसे।" मुकुल ने हांफते हुए कहा और एक कुर्सी में बैठ गया। दिख रहा था कि दरवाजे से इस कमरे तक सृष्टि को लाने में उसे ख़ासी मशक्कत करनी पड़ी थी।

मुकुल की बात सुनकर सभी ने एक बार फिर से फुंफकारती हुई सृष्टि की ओर देखा। रक्षकों के दल के पूर्ण होने का समय आ गया था। कैसे? ये पता नहीं!! पर अब बढ़े हुए कदमों को वापस लेने का कोई भी तुक बाकी नहीं रहा था।

सभी की नज़रें सृष्टि पर जमी हुई थी और वो इस तरह से अपने आपको असहाय पाकर और भी भड़क रही थी। झल्लाहट उसकी ऑखों में साफ-साफ दिखाई दे रही थी।

"अनामिका!" अनंत कुमार ने अनामिका को आवाज लगाई, जिसे सुनकर वो तेजी से उनके पास आई। अनंत कुमार ने उसके कान में फुसफुसाकर कुछ कहा। उनकी बात सुनकर अनामिका ने सृष्टि पर एक नज़र डाली और फिर उसकी ओर बढ़ी। उसे अपने पास आता देखकर सृष्टि बुरी तरह से छटपटाने लगी। मगर अनामिका पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। वो उसके पास गई और उसके जींस और जैकेट की जेबें टटोलने लगी। आखिरकार जैकेट के अंदर वाली जेब में उसे सृष्टि का मोबाइल मिल गया। उस मोबाइल को देखकर सृष्टि की ऑखों में एक हताशा उतर आई।
इसके बाद उसने छटपटाना बंद कर दिया। अनामिका ने वो मोबाइल अनंत कुमार को दे दिया।

"तुम्हारा हथियार! सही कहा ना सृष्टि!" अनंत कुमार की आवाज में हल्का सा तंज था। सृष्टि ने कोई भी प्रतिक्रिया नहीं दी।

"हथियार मतलब?" आशुतोष ने पूछा।

"सृष्टि हम सभी पर नज़र रखने के लिए अपने इस फोन का इस्तेमाल कर रही थी। इसलिए पिछले दो दिनों से मैं भी फोन का इस्तेमाल बहुत कम ही कर रहा था और आप सभी को भी करने नहीं दे रहा था। ये देखिए हम सभी का नंबर। सभी के नाम लाल रंग में लिखे हैं।" अनंत कुमार ने सभी को लाइन से लिखे नंबर दिखाएं, जिसमें नाम एक ही लिखा था "आखेट" और सबके आगे अलग-अलग नंबर लिखे थे। जैसे कि अनंत कुमार का नं. आखेट 1 के नाम से, अनामिका का आखेट 2 और बाकियों का भी इसी तरह से सेव था।

"मतलब ये हमारे नंबर ट्रैक कर रही थी।" आशुतोष ने कहा।

"हाँ कुछ वैसा ही। मगर तरीका थोड़ा सा जादुई है।" अनंत कुमार ने कहा।

"मतलब!"

"मैं, मुकुल और मुकुल के पिता ने जब अपना मिशन शुरू किया, तब हम फ़ोन से ही एक-दूसरे से कनेक्ट थे। मगर प्रोफेसर साहनी की वजह से मुकुल के पिता को इसमें भी खतरे का अहसास हो गया था, इसलिए उन्होंने अपनी एक ख़ास तकनीक से हम तीनों के फोन को कनेक्ट कर दिया, जिससे कोई भी हमारे खास मैसेजेस ना पढ़ सके। चूंकि प्रोफेसर
साहनी को मुकुल के पिता पर संदेह था, इसलिए सारे मैसेजेस उड़ाकर हम उसके शक को और पुख़्ता नहीं करना चाहते थे। हमारे बीच के औपचारिकता में लिपटे हुए संदेश ही दूसरों को दिखाई देते थे, पर वो गुप्त मैसेजेस जो हम उस ख़ास सुविधा से भेजा करते थे, उसे हम तीनों ही पढ़ सकते थे। इसी के सहारे तो पिछले दस सालों से हम किसी को पता लगे बिना अपने मिशन में काम कर रहे थे। मगर मुकुल के पिता की मृत्यु ने इस सिस्टम को कमजोर कर दिया है। हम इसके बारे में ज्यादा नहीं जानते इसलिए कुछ कर नहीं सके।" अनंत कुमार ने बताया।

"तो सृष्टि ये सब कैसे कर रही थी?" अनामिका ने पूछा।

"क्योंकि मुकुल के पिता और सृष्टि की रूचियाँ एक जैसी हैं ना! क्यों सृष्टि.... सही कहा ना!" अनंत कुमार ने कहा। यह सुनकर सृष्टि के शरीर में हल्की सी हरकत हुई।

"वो कैसे?" चैतन्य ने कौतूहल से पूछा।

"क्योंकि मुकुल के पिता और सृष्टि के पिता मित्र हुआ करते थे, इसलिए सृष्टि भी उसके करीब थी। मुकुल के पिता और गैजेट्स का साथ उसे बहुत रोमांचित करता था। वो उनसे हमेशा इन सबके बारे में बारिकी से पूछताछ किया करती थी और वो बताते भी थे। पर उन्हें नहीं पता था कि यही आगे जाकर उनके लिए मुसीबत बन जाएगा। प्रोफेसर साहनी ने सृष्टि को बरगला कर हमारे खिलाफ किया और सृष्टि की इसी योग्यता से ही हमारे बीच की सारी इन्फॉर्मेशन हासिल की। वो तो शुक्र रहा कि इन्हें मुकुल पर कभी शक नहीं हुआ। एक 16-17 साल के मस्तमौला लड़के पर भला कौन शक करता। पर उन्हें नहीं पता था कि मुकुल ही हमारी सबसे बड़ी ताकत था और अब भी है। पर लग रहा है कि इस घर में आने के बाद उसे कुछ शक हुआ हो।" अनंत कुमार ने कहा।
"तो अब आगे क्या करना है?" मुकुल ने पूछा।

"इसका मुँह खोलो पहले।"अनंत कुमार ने मुकुल से कहा।

मुकुल ने पहले तो ये पुख़्ता किया कि सच में खोलना है। जब अनंत कुमार ने फिर से इशारा किया, तो वो उठकर उसके पास गया, जो उसे आग उगलती नज़रों से देख रही थी। मुकुल ने एक गहरी साँस भरकर पहले उसे एक नज़र देखा और फिर उसका मुँह खोल दिया। मुँह खुलते ही सबसे पहले सृष्टि ने ढेर सारी हवा अपने फेफड़ों में भरी और फिर गुर्राते हुए बोली, "याद रखना मुकुल! तुम इसके लिए खुद को कभी भी माफ नहीं करोगे। तुम अपने समुदाय से गद्दारी कर रहे हो। तुम हमसे श्रापमुक्त होने का मौका छीन रहे हो। आत्मग्लानि की अग्नि तुम्हें कभी भी चैन से रहने नहीं देगी।"

मुकुल ने उसे बड़ी ही बेरूखी से देखा और फिर अनंत कुमार की ओर मुड़कर बोला, "पक्का इसका मुँह खुला रखना है?"

उसकी बात सुनकर वरूण के मुँह से हँसी छूट गई, जिससे सृष्टि ने उसे घूर कर देखा। वरूण ने उसे देखकर डरने का नाटक करते हुए अपने हाथ ऊपर कर दिए। इससे सृष्टि की चिढ़ और भी बढ़ गई।

"चुप!" अनंत कुमार ने दोनों को ही फटकार लगाई।

उनकी फटकार सुनकर दोनों ने ही सृष्टि पर से अपनी नज़र हटाई थी। अनंत कुमार, सृष्टि के पास गए और फिर उसके सामने झुकते हुए बोले, "सृष्टि बेटा! मैं जानता हूँ कि उस प्रोफेसर ने तुम्हारी आँखों पर नफ़रत की इतनी मोटी चादर डाल दी है कि हमारी कोई भी दलील काम नहीं आने वाली है और हमारे पास इतना समय भी नहीं है कि हम तुम्हें इस बात का यकीन दिलाने में खर्च करें।"
उनकी बात सुनकर सृष्टि ने तंज भरी एक टेढ़ी मुस्कान अनंत कुमार पर डाली और बोली, "आपको क्या लगता है कि आप लोग इस तरह से मुझे क़ैद करके रख सकते हैं? मैं अगर देर रात तक वापस घर नहीं गई, तो मुझे ढूंढते बहुत लोग आ सकते हैं। उसके बाद एक पिशाच को इस तरह क़ैद करने की पूरी वजह आपको बतानी ही होगी और मुझे नहीं लगता कि वो भी आपके हक़ में होगी। आप फँस चुके हैं।"

"और अगर तुम खुद मान जाओ हमारे साथ आने के लिए तो..." अनंत कुमार ने एक संभावना उसके सामने रखीं।

"मुझे क्या इस मुकुल की तरह समझा है! मैं मर जाऊँगी... मगर अपने कुल से गद्दारी नहीं करूंगी।" सृष्टि जहर बुझे शब्दों के साथ बोली।

"हम्म! तो ये भी देखते हैं। क्यों चैतन्य सही कहा ना!" अनंत कुमार ने चैतन्य से कहा, जिससे चैतन्य थोड़ा सावधान हुआ। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे बीच में क्यों घसीटा जा रहा है। अनामिका ने भी एक नज़र उस पर डाली, जिसे भी चैतन्य ने देख लिया और फिर उसने खुद को खुद में ही सिमटता महसूस किया। दूसरी ओर वरुण के होंठों पर एक नटखटी मुस्कान सवार हुई थी।

"तो क्या हो सकती है वो वजह, जिसने तुम्हें ऐसा बना दिया। ऐसा क्या कहा होगा उस प्रोफेसर ने, जो तुम्हारे दिल और दिमाग में इस कदर हावी हो गया है कि दोनों ने ही काम करना बंद कर दिया है।" अनंत कुमार अंदाजा लगाते हुए बोले।

"किसी ने कुछ नहीं कहा मुझसे। मैंने खुद देखा था! आज से पाँच साल पहले। आपने मेरे माता-पिता को कितनी बेरहमी से मारा था। सब देखा था मैंने और फिर कितनी चालाकी से उस इल्ज़ाम से बच भी गए। साहनी
अंकल सही कहते हैं। अहेरी समूह को मिटाने की इच्छा आपके अंदर इतनी बलवती हो चुकी है कि आपको खुद सही-गलत की पहचान नहीं रही और.... ये मुकुल जैसे रीढ़ विहीन लोग आपकी मदद कर रहे हैं। पर सच कभी नहीं हारता... ये बात याद रखिएगा।" सृष्टि अपनी पूरी ताकत से चिल्लाकर बोली।

"ओह! तो ये बात है।" अनंत कुमार बुदबुदाए। उन्होंने सृष्टि की ओर देखा, जो अपने दिल का गुबार बाहर निकालने के बाद भी गुस्से से फुंफकार रही थी।

"चैतन्य! इधर आओ!" अनंत कुमार ने सृष्टि की ओर देखते हुए चैतन्य को आवाज दी। एक बार फिर अपना नाम सुनकर चैतन्य सकपकाया था। वो उस सृष्टि से 100 कदमों की दूरी में रहना चाहता था और सभी हर तरह से उसे उसकी तरफ ढकेल रहे थे। वो अपनी जगह से उठा, मगर उसे अपने पैर एक-एक टन वजनी महसूस होने लगे, जिन्हें वो उठाकर आगे बढ़ाना भी नहीं चाहता था।

"अरे यार! जल्दी करो!" चैतन्य को एक जगह बुत की तरह खड़ा देखकर अनंत कुमार गुस्से में तिलमिलाकर बोले। और... इस बार उसके पास आगे बढ़ने के अलावा और कोई चारा नहीं था। आगे बढ़ते हुए उसे सबकी मुस्कुराती हुई शरारती नज़रों की चुभन महसूस हो रही थी।

"मुकुल इसके हाथ खोलो!" अनंत कुमार ने मुकुल से एक बार फिर से कहा।

"सच में!" मुकुल अपनी ऑखें बड़ी करके बोला, जिस पर अनंत कुमार ने उसे भौंह उठाकर देखा था। उनकी ऑखो के इशारे का मतलब समझकर मुकुल ने अनमने ढंग से सृष्टि के हाथ खोले और वो इस मौके का फायदा उठाने की पूरी फिराक में दिखाई दे रही थी। मुकुल ने जैसे ही उसके हाथ
खोले, उसने बिजली की फुर्ती से उस पर हमला करने के लिए हाथ उठाया, मगर किसी ने उसके उस हाथ को हवा में ही पकड़ लिया। ये अनामिका थी। सृष्टि ने उसे खा जाने वाली नज़रों से देखा। एक बार फिर सृष्टि का दिल उसके लिए जहर से भर गया।

"हमें क्या बेवकूफ समझ रखा है।" कहते हुए अनामिका ने उसका हाथ मोड़कर पीछे की ओर पकड़ लिया और उसे धकेलते हुए अनंत कुमार के पास ले गई। सृष्टि ने छूटने के लिए अपना पूरा जोर लगा दिया, पर अनामिका उससे ज्यादा ताकतवर साबित हुई।

"आउच!" वरूण के मुँह से निकला, जिसे सुनकर एक बार फिर से सृष्टि ने उसे घूर कर देखा, जो अपनी कलाई को सहला रहा था।

सबने देखा कि अनंत कुमार ने मेज पर एक आईना रख दिया था, जिसे सभी बड़े ही कौतूहल से देख रहे थे। अनंत कुमार ने अपने सीधे हाथ की मुट्ठी को अपने माथे पर लगाया और फिर कुछ देर बाद उस मुट्ठी को आइने के बीचों बीच ले जाकर खोल दिया और अपनी हथेली आईने में टिका दी। अब उन्होंने सृष्टि को अपने हाथ के ऊपर हाथ रखने के लिए कहा, जिसका सृष्टि ने पुरजोर तरीके से विरोध किया। मगर एक बार फिर से अनामिका ने उसका हाथ मजबूती से पकड़कर अनंत कुमार के हाथ के ऊपर रख दिया। सृष्टि को आज पता चल गया था कि अनामिका शारीरिक रूप से उससे कहीं ज्यादा मजबूत थी। उसकी गिरफ्त में वो बहुत ही लाचार लग रही थी।

"चैतन्य अब अपना हाथ सृष्टि के हाथ पर रखो और फिर हमें उस दिन में ले जाओ, जब सृष्टि के माता-पिता की हत्या हुई थी।" अनंत कुमार ने कहा।

"पर मुझे तो मालूम नहीं है ये!" चैतन्य ने कहा।
"मुझे मालूम है। मैं बस सृष्टि को उस दिन का पूरा सच दिखाना चाहता हूँ, जो उसकी नज़रों में कभी पूरा आया ही नहीं। तुम बस अपनी शक्तियों को आदेश दो, जो हमें वहाँ ले जाएँ।" अनंत कुमार ने चैतन्य को समझाते हुए कहा।

चैतन्य की समझ में बात आई तो उसने जल्दी से अपना सीधा हाथ सृष्टि के हाथ पर रख दिया और फिर ध्यान में चला गया। मगर बहुत कोशिश करने के बाद भी वो सही तरीके से उस रास्ते को नहीं खोल पा रहा था। इससे उसके चेहरे पर शिकन तकलीफ़ की सूरत में बढ़ते जा रहे थे और उसके शरीर थरथराने लगा। अनामिका ने ये देखा तो तेजी से उसके कंधे पर हाथ रखा और उसे हौले से थपथपाया। ऐसा होते ही चैतन्य का शरीर सामान्य होने लगा और उसका चेहरा पुरसूकून नज़र आने लगा।

जल्द ही उनका शरीर कभी तेज रोशनी तो कभी गहरे अंधकार के गुजरता हुआ आखिर में एक फर्श से टकराया था। चैतन्य पहले गिरा और जब वो उठने की कोशिश कर ही रहा था, तभी सृष्टि उसके ऊपर आ गिरी। चैतन्य को ऐसा लगा, जैसे कि उसका पूरा शरीर फर्श के अंदर धंस जाएगा।

"आउच! उठो यार! बहुत भारी हो तुम!" चैतन्य चिढ़ते हुए बोला। सृष्टि ने उसे कुछ नहीं कहा और चुपचाप उठ गई।

"क्या मुसीबत है!" चैतन्य उठते हुए बहुत ही धीमी आवाज में खुद से बोला। उसने अपने शरीर को हिला डुलाकर ठीक किया और फिर चारों ओर देखने लगा।

"ये कौन सी जगह है?" चैतन्य ने सृष्टि से पूछा। मगर जवाब देने के बजाय सृष्टि की नज़रें भी चारों ओर का मुआयना करने लगीं और जल्द ही उसे सब समझ में आ गया। समझ आते ही वो एक दिशा में तेजी से बढ़ी।

चैतन्य भी उसे पुकारता हुआ उसके पीछे भागा। जल्द ही वो एक कमरे के पास पहुँचे, जहाँ से जोर-जोर से चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं। यह सुनकर सृष्टि के कदम और भी तेजी से उस कमरे की ओर बढ़े। चैतन्य बराबर उसी के पीछे था। हालांकि उसे समझ में कुछ नहीं आ रहा था... हमेशा की तरह। अचानक तेज कदमों से चलती हुई सृष्टि एक खिड़की के पास पहुँचकर रूक गई और अंदर की तरफ देखने लगी। चैतन्य भी उसके पास आ गया और अंदर देखने लगा।

अंदर एक औरत और दो आदमी खड़े आपस में बहस कर रहे थे। चैतन्य ने ध्यान से देखा तो उनमें से एक को पहचान गया। वो अनंत कुमार थे, पर चेहरे में आज की तुलना में चमक ज्यादा थी।

"ये क्या हो रहा है? कहाँ हैं हम?" चैतन्य ने सृष्टि से पूछा।

"पाँच साल पहले, जिस दिन मेरे माता-पिता का कत्ल हुआ था। वहाँ देखो! उस बड़े से मेज के पीछे जो पर्दा है मैं उसके पीछे डरी सहमी सी दुबकी हुई थी। एक बार फिर से सब वहीं हो रहा है।" सृष्टि ने अपनी काँपती हुई आवाज में कहा।

"ओह!" अब चैतन्य की समझ में बात आई।

अंदर देखते-देखते अचानक ही सृष्टि एक ओर तेजी से भागी।

"अरे! कहाँ जा रही हो?" कहकर चैतन्य भी उसके पीछे हुआ।

"पाँच साल पहले मैं नहीं बचा पाई अपने माँ-बाप को! आज जरूर बचाऊँगी और उस डॉ. अनंत कुमार की लाश उठेगी आज।" बेहद गुस्से में उस कमरे के दरवाजे की ओर भागते हुए सृष्टि बोली।
"हे भगवान!" अपने सिर पर हाथ मारकर चैतन्य एक बार फिर उसके पीछे भागा।

दरवाजा खुला हुआ था। चैतन्य पुकारता रह गया और बिना कुछ सोचे समझे सृष्टि अंदर जाकर अपने माता-पिता और अनंत कुमार के बीच खड़ी हो गई, जहाँ गुस्से में भरे हुए अनंत कुमार ने अपनी बंदूक सृष्टि की माँ के सामने कर दी थी। मगर अगले ही पल सृष्टि को ये मालूम चल गया कि वे लोग उसे और चैतन्य को नहीं देख सकते।

"ये क्या हो रहा है?" अपनी माँ के चेहरे को छूने की नाकामयाब कोशिश करते हुए सृष्टि बोली। उसके हाथ उसके माँ-बाप के शरीर से आर-पार हो जा रहे थे।

"खुद को काबू में रखो सृष्टि! ये हमारा शरीर नहीं, हमारा मन है, जो डॉ. अनंत की यादों में आया है। वो हमें कुछ दिखाना चाहते हैं।" चैतन्य ने सृष्टि को संभालते हुए कहा।

"क्या दिखाना चाहते हैं? वो मेरे सामने एक बार फिर से मेरे माँ-बाप को मार डालेंगे और देखो मैं कुछ भी नहीं कर सकती। एक बार फिर से इस नरक से गुजारकर डॉ. अनंत कुमार को क्या हासिल हो जाएगा?" सृष्टि, चैतन्य का गिरेबान पकड़कर चीखते हुए बोली। चैतन्य उसे संभालता उससे पहले ही उन्हें गोली चलने की आवाज सुनाई दी। चीखती हुई सृष्टि चुप हो गई। सहमी हुई सी हालत में वो धीरे से पीछे पलटी। उसके पिता खून से लथपथ जमीन पर पड़े तड़प रहे थे। सृष्टि की माँ उनके पास बैठी दहाड़े मार रही थीं। चैतन्य ने देखा कि हैरानी का एक सागर अनंत कुमार के चेहरे पर हिलोरें मार रहा था, जैसे कि उन्हें भी समझ में नहीं आया कि हुआ क्या था! अभी सभी इसी उधेड़बुन में ही थे कि एक

और गोली चली, जो सृष्टि की माँ की पसलियों में जाकर घुस गई। एक तेज चीख कमरे में फैली, जो धीमी होती हुई शांत हो गई।इसी के साथ पर्दे के पीछे से कमउम्र
सृष्टि का अचेत शरीर गिर पड़ा। सभी सकते में खड़े रह गए।

"तुमने देखा! तुमने देखा!" पहली बार धीमी और दूसरी बार सृष्टि बहुत ही तेज आवाज में चिल्लाई।

"श्श्श्श्!" चैतन्य ने उसे चुप रहने के लिए कहा और उसे अपने साथ उस ओर ले गया, जिधर अनंत कुमार भागे थे।

"डॉ. अनंत चाहते हैं कि हम इससे आगे का देखें।" उसे अपने साथ खींचते हुए चैतन्य ने कहा। सृष्टि ने गुस्से से चैतन्य की ओर देखा, मगर वो कुछ बोल पाती, उससे पहले ही डॉ. अनंत की आवाज आई।

"ये तो प्रोफेसर साहनी का है। तो क्या पीछे से गोली उन्होंने चलाई?" डॉ. अनंत बुदबुदाए।

"पर मैं ये साबित नहीं कर सकता।" एक बार फिर अनंत कुमार ने खुद से कहा और चारों ओर फुर्ती से देखने लगे।
उसी समय उन सभी ने उस घर को आग की लपटों में घिरा देखा। अनंत कुमार तेजी से बाहर की ओर भागे। चैतन्य और सृष्टि भी उनके पीछे भागे और जल्द ही तीनों बाहर निकल गए।

"मैं तो अंदर हूँ। मुझे किसने बाहर निकाला था?" सृष्टि ने चैतन्य से कहा। मगर उसी समय डॉ.अनंत को अंदर जाते देखकर सृष्टि और चैतन्य दोनों ही चौंके। वो उस तरफ देख ही रहे थे कि तभी उन्होंने पास ही लकड़ियों के ढेर के पीछे से प्रोफेसर साहनी को निकलते देखा।

"साहनी अंकल!" सृष्टि आश्चर्य से बोली और अगले ही पल उसका आश्चर्य बढ़ गया, जब उसने प्रोफेसर साहनी को बाहरी दरवाजा बाहर से बंद करते देखा। वो तुरंत घर से दूर हुए और हँसते हुए बोले, "सारे कांटे एक साथ
निकल गए!"

और फिर वो उसी तरह वहाँ से वापस लौट गए। सृष्टि अवाक् सी बस सामने जलते मकान को देख रही थी। थोड़ी ही देर में उन्होंने पास की खिड़की का शीशा टूटते हुए देखा और उसमें से बुरी तरह झुलसे हुए अनंत कुमार को बाहर निकलते। उनके कंधों में कुछ रखा था, जिसे बड़ी मुश्किल से वो उठाकर जलते मकान से थोड़ी दूर ले आए और फिर उसे नीचे रख दिया। वो सृष्टि थी और सही सलामत थी। अनंत कुमार थकान और ज़ख्मों से बेसुध होकर नीचे गिर पड़े।

सृष्टि की हैरानी से भरी ऑखों ने झपकने से इंकार कर दिया था। वो गूंग सी खड़ी रह गई। एक बार के लिए उसे लगा कि उस दिन वो भले बचा ली गई थी, मगर शायद आज अपने मुर्दा दिल के साथ जीवित होकर भी मर चुकी थी। अचानक उसे अपना पूरा शरीर हल्का महसूस होने लगा और वो लहराकर बस गिरने ही वाली थी कि चैतन्य ने उसे संभाल लिया। इसके बाद वे दोनों ही बड़ी तेजी से डॉ. अनंत की यादों से बाहर आ गए। चैतन्य ने देखा कि वो तो होश में था, पर सृष्टि सचमुच उसकी बांह मजबूती से थामे बेहोश हो चुकी थी। चैतन्य ने उसे अपनी बांहों में संभाले हुए ही जल्दी से नीचे लिटाया। अनामिका जल्दी से पानी ले आई और सृष्टि के मुँह पर मारने लगी। जल्द ही उसे होश आ गया। उसने सामने चैतन्य को देखा, तो उससे लिपटकर ज़ार-ज़ार रोने लगी। सभी को उस पर दया आ गई थी। गलती के अंधेरों में वो अंजाने ही अपने माता-पिता के हत्यारे की साथी बन गई थी। शुक्र तो ये रहा कि उसके

हाथों कुछ भी बर्बाद होने से रह गया, वरना अफसोस का बोझ ना उसे जीने देता और ना भरने देता।

चैतन्य की शर्ट को अपनी मुट्ठियों में दबोचे वो उसे अपने आंसुओं से तर कर चुकी थी और चैतन्य वो बड़ी ही अजीब सी दुविधा में फँस गया था। वो सृष्टि के साथ इस तरह नहीं बैठे रहना चाहता था और चाहकर भी उसे झटक नहीं सकता था। बत्तमीजी होती ये और बत्तमीज वो था नहीं।
इसलिए किसी तरह वो खुद को संभाले उसी तरह बैठा रहा। थोड़ी ही देर में सृष्टि थोड़ी सी सहज हुई तो वो उसे लेकर खड़ा हुआ। उसने देखा कि सृष्टि ने उसका हाथ अभी भी नहीं छोड़ा था।

"सृष्टि!" चैतन्य ने कहा।

उसकी आवाज सुनकर सृष्टि ने झटके से उसकी ओर देखा, जो अपनी ऑखों से अपने हाथ की ओर इशारा कर रहा था। सृष्टि की नज़र उसके चेहरे से फिसलकर उसके हाथ की ओर गई, जिसे सृष्टि ने बड़ी ही जोर से पकड़ा हुआ था और इसकी वजह से वो चैतन्य के कुछ ज्यादा ही करीब आ गई थी। चैतन्य कुछ भी बोलने की स्थिति में नहीं था क्योंकि उसकी ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की नीचे अटक गई थी। वो उसके बारे में क्या सोचती है, ये जानने के बाद वो उसके सामने सहज हो ही नहीं पा रहा था। सच तो यही था कि वो अनामिका की जगह किसी को देने के लिए तैयार नहीं था। कभी भी नहीं।

उसने सामने अनामिका पर नज़र डाली, जो अब सृष्टि को बहुत ही दर्द भरी नज़रों से देख रही थी। कुछ ही देर में सृष्टि की सारी बनाई हुई धारणाएँ उसके उस अधूरे अतीत की तरह ध्वस्त हो चुकी थीं और अब उसके भी रणक्षेत्र में उतरने का समय आ चुका था, जो रक्षक समूह के लिए एक बड़ी खबर थी।

सृष्टि निढाल सी कुर्सी पर बैठी हुई थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो कैसी प्रतिक्रिया दे? वो खुद को ठगा और हारा हुआ सा महसूस कर रही थी। सृष्टि और अनंत कुमार के अतीत की इस घटना को सभी ने उस आइने में देख लिया था, इसलिए सभी सृष्टि के दर्द को समझ पा रहे थे। चैतन्य दूर सिर झुकाए बैठा था। सृष्टि को थोड़ा समय लगा, पर वो कुछ-कुछ सहज होने लगी थी क्योंकि इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं था।

"तुम ठीक हो सृष्टि? अनंत कुमार ने सामान्य तरीके से कहा।

"नहीं!" सृष्टि ने कहा।

"समझ सकता हूँ! जिस सच की जमीन पर तुम्हारा विश्वास टिका हुआ था, जब वही नहीं रही, तो विश्वास डगमगाएगा ही। पर तुम चाहो, तो तुम्हारे लिए सब कुछ पहले जैसा ही हो सकता है, बस कुछ चीजें बदल जाएँगी।" अनंत कुमार ने नपे-तुले शब्दों में कहा।

अनंत कुमार की बात सुनकर सृष्टि ने अपनी गुलाबी ऑखों के साथ उन्हें
देखा। बाकियों की नज़र भी उनकी ओर उठी थी।

"देखो सृष्टि! पाँच साल से जिस बदले की आग में तुम जल रही हो, तुम चाहो तो उसे वैसे ही जलता

हुआ रख सकती हो। तुम्हारे लिए प्रोफेसर साहनी और मेरी जगह बदली है, मगर ये चीज नहीं बदली कि... तुम्हारे माता-पिता का कत्ल हुआ था। पर हाँ.... हमारे साथ रहोगी तो अपने तरीके बदलने पड़ेंगे। बदले की भावना पीढ़ियों को तबाह कर देती है और ये तांत्रिक श्रेष्ठ के प्रहरियों के नियम विरुद्ध है। अब ये तुम्हारी मर्जी है कि तुम हमारे साथ रहना चाहती हो, या फिर अकेले आगे बढ़ना चाहती हो। अच्छी तरह सोच लो! हम सब तुम पर कोई दबाव नहीं डालना चाहते। तुम अच्छे से सोच लो, आगे की बात तभी करेंगे।" अनंत कुमार ने उसके सिर पर प्यार भरा हाथ फेरते हुए कहा और उस कमरे से बाहर निकल गए।

सृष्टि ने भरी हुई ऑखों से बाहर जाते हुए अनंत कुमार की ओर देखा। उसने याद करने की कोशिश की कि इतने सालों में प्रोफेसर साहनी ने कभी उसके सिर में प्यार से हाथ फेरा हो। उन्होंने तो अपने स्वार्थ के लिए उसे बस पत्थर बना दिया था, पर आज उस पत्थर में दरार आई थी और कुछ शीतल धाराऍं उस दरार से बह निकली थीं।

उसी समय बाहर डोरबेल बजी।

"ये इस वक्त कौन आया होगा?" वरूण ने घड़ी देखते हुए कहा।

"फूड डिलीवरी वाला होगा। मैंने रात के लिए खाना ऑर्डर किया था।" आशुतोष ने अपनी घड़ी को देखते हुए कहा।

"अरे! बाहर से खाना मंगवाने की क्या जरूरत थी? अनामिका अच्छा खाना बनाती है।" वरूण ने आश्चर्य के साथ अनामिका की तारीफ करते हुए कहा।
"अनामिका! अनामिका! अनामिका! वो क्या बावर्ची है तुम्हारी? जब देखो, उसे किचन में घुसा रखा है। वो तो परिधि और मैं मदद कर देते हैं, वरना इतने लोगों का खाना बनाना आसान है क्या? तुम्हें कभी अपने हाथ से पानी भी निकाल कर पीते हुए नहीं देखा।" आशुतोष ने वरूण को डपटते हुए कहा और बाहर निकल गया।

"अरे! मुझ पर क्यों भड़क रहे हैं। मैं तो कुछ भी खा लेता हूँ, करेले के अलावा।" वरूण भी बमकता हुआ बाहर की ओर निकला। अंकित और मुकुल ने भी एक दूसरे की ओर मुस्कुराते हुए देखा और साथ में बाहर आ गए। अब उस कमरे में सृष्टि के साथ अनामिका और चैतन्य रह गए थे। चैतन्य इतनी देर से सृष्टि से दूर बैठा हुआ था, मगर अब उसे उससे सहानुभूति होने लगी थी। अपनों को खोने का दर्द जितना बड़ा होता है, उसकी गफलत में जीना तो और भी दर्दनाक होता है। अनामिका भी अब शांत दिखाई दे रही थी। उसने सृष्टि और चैतन्य की ओर एक-एक नज़र डाली। चैतन्य ने भी उसकी ओर देखा और फिर उसके पास आ गया।

"तुम चलो! हम आते हैं!" चैतन्य ने सृष्टि की ओर इशारा करते हुए कहा।

"उसका दिल मत दुखाना!" अनामिका ने सृष्टि की ओर देखते हुए भावुक होकर कहा। अनामिका की बात सुनकर चैतन्य मुस्कुराया और उसकी ओर देखकर बोला, "कभी नहीं!"

अनामिका ने बहुत दिनों के बाद चैतन्य को पहले की तरह मुस्कुराकर देखा। उस मुस्कुराहट में ना तो कोई झिझक थी और ना ही कोई तंज! चैतन्य को उसकी वो मुस्कुराहट बहुत राहत दे गई थी। अनामिका के वहाँ से जाते ही चैतन्य ने सृष्टि पर एक नज़र डाली और फिर उसके पास जाकर बैठ

गया। सृष्टि ने अपनी थकी हुई ऑखें उसकी ओर उठाई, पर इस बार हमेशा की तरह चैतन्य को देखकर आने वाली चमक नदारत थी।
चैतन्य को एक नज़र देखने के बाद उसने अपनी ऑखें फिर से झुका लीं कि पलकों पर आत्मग्लानि की बूंदों का बोझ कुछ ज्यादा ही था।

"तुम ठीक हो!" चैतन्य ने बहुत ही नर्मी से कहा। जवाब में सृष्टि ने अपना सिर हाँ में हिलाया।

"चैतन्य! तुम भी मुझे बहुत बुरी समझते हो ना!" सृष्टि ने अपने दिल पर भारी पत्थर रख कर कहा।

"हमारे समझने से कुछ नहीं होता। जो अच्छा होता है... वो बस अच्छा होता है। बस सबके देखने का अपना-अपना नज़रिया होता है। नज़रिया बदले तो सामने वाली की अच्छाई बुराई और बुराई अच्छाई में बदल जाती है। हम सब नहीं जानते थे कि तुम अपने अंदर इतना दर्द छिपाकर जी रही हो।" चैतन्य ने सृष्टि की ओर देखते हुए संजीदगी से कहा।

"तो क्या अब मेरे लिए तरस आ गया तुम्हारे मन में?" सृष्टि ने अपनी नाक पोंछते हुए कहा।

"नहीं! मुझे नहीं लगता कि तुम तरस खाने वाली चीज हो। बस तुम्हें अपने बारे में फिर से सोचने की जरूरत है और वो भी जल्दी! किसी के पास भी खोने के लिए समय नहीं है।" चैतन्य ने उसकी बात काटते हुए कहा।

"तो तुम नाराज़ नहीं हो ना मुझसे।" सृष्टि ने बहुत ही उम्मीद से चैतन्य की ओर देखते हुए कहा।

"नहीं! बिल्कुल नहीं!" चैतन्य ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। जिस पर सृष्टि के होंठों पर एक हल्की सी मुस्कान आई थी। उसकी मुस्कान को देखकर चैतन्य ने पहले तो कुछ सोचा और फिर उसने सृष्टि की ओर देखा, जो एक बार फिर से उसका साथ महसूस कर रही थी।
"सृष्टि! एक बात कहूँ! बुरा तो नहीं मानोगी?" चैतन्य ने बहुत ही हिम्मत करके कहा।

"बुरा! नहीं! बोलो ना!" सृष्टि के चेहरे पर एक सवाल उभरा।

"मुझे नहीं पता कि... तुम्हारे दिल में मेरे लिए क्या हैं? आज सबने मुझसे कहा तो..." चैतन्य ने अपनी बात अधूरी छोड़ी।

"तो!" सृष्टि ने थमी हुई साँसों के साथ कहा।

"देखो सृष्टि! मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे लेकर किसी धोखे में रहो। तुम जानती हो कि मैं अनामिका को पसंद करता हूँ और बस पसंद नहीं करता... वो मेरे लिए बहुत मायने रखती है। मैं उसकी जगह किसी को नहीं दे सकता... कभी भी नहीं।" चैतन्य ने अपने दिल की बात झिझकते हुए सृष्टि के सामने रखीं।

"और अगर वो किसी और को पसंद करती हो तो।" सृष्टि ने उसकी ऑखों में देखते हुए पूछा।

"वो उसकी पसंद है... उसका फैसला है। मैंने तो तुम्हें अपने दिल की बात बताई।" चैतन्य साफगोई से बोला।

"तो तुम मुझे ये क्यों बता रहे हो?" सृष्टि ने चैतन्य से अगला सवाल किया।

"अभी अनामिका जाते-जाते कह गई कि मैं तुम्हारा दिल ना दुखाऊँ। हो सकता है कि इन शब्दों के मायने सबके लिए अलग हों, पर मेरे लिए यही है कि मैं अपने मतलब के लिए तुम्हें किसी धोखे में ना रखूं। अभी
एक धोखे से उबर नहीं सकी हो तुम, दूसरा कैसे सहोगी? सबको लगता है कि तुम मेरी वजह से इस मिशन में खुशी से शामिल हो जाओगी। पर मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे हमारे साथ जुड़ने की वजह वो प्यार हो, जो तुम्हें तुम्हारे माता-पिता से था और उससे ज्यादा सच्चाई किसी में नहीं। रही बात मेरी तो अगर कभी किसी और के साथ आगे बढ़ने की नौबत आई भी, तो वो बस एक समझौता ही होगा और कुछ नहीं।" चैतन्य अपना दिल खोलते हुए बोला।

चैतन्य की बात सुनकर सृष्टि ने हैरानी से उसे देखते हुए कहा, "तुम अनामिका से इतना प्यार करते हो कि उसकी खुशी के लिए उसे आजाद भी कर सकते हो!"

"हाँ!" चैतन्य ने एक गहरी साँस छोड़ते हुए कहा।

"एक बात बोलूं! तुम जैसे साफ दिल इंसान के साथ समझौते वाली जिंदगी बसर करने में किसी भी लड़की को कभी अफसोस नहीं होगा। पर आज मैं सच में चाहती हूँ कि तुम्हारे दिल में प्यार की जगह कोई समझौता ना ले।" सृष्टि ने चैतन्य को प्रशंसा भरी नज़रों से देखते हुए कहा। सृष्टि की बात सुनकर चैतन्य ने भी उसे मुस्करा कर देखा।

"फ्रैंड्स!" सृष्टि ने अपना हाथ चैतन्य की ओर आगे बढ़ाया, जिसे चैतन्य ने भी गर्मजोशी से थाम लिया।

"बाहर चलें! भूख लग रही है।" चैतन्य ने बेचारगी से कहा तो सृष्टि ने हँसते हुए हामी भर दी।

****

रात के 7:30 बज रहे थे। अनामिका, गीता और परिधि ने खाना डायनिंग टेबल पर लगा दिया था। अंकित और मुकुल को भी सबने रोक लिया था क्योंकि सृष्टि की वजह से उनका काम रूक गया था। सृष्टि के फैसले के बाद ही अगले कदम के बारे में सोचा जाने वाला था। मुकुल और अंकित को वहाँ देखकर गीता और परिधि को आश्चर्य हुआ। मगर अनामिका ने यह कहकर उन्हें समझा दिया कि मुकुल और सृष्टि के अंकल बाहर गए हुए हैं और अंकित अकेला रहता है, इसलिए सबने उन्हें खाने के लिए रोक लिया। गीता ने तो कोई सवाल नही उठाया, पर इस बार अनामिका का जवाब परिधि के गले नहीं उतरा। मगर उसने सवाल पूछने से परहेज़ ही किया। अनंत कुमार और आशुतोष सोफे पर बैठे हुए बातचीत कर रहे थे।

"आपको क्या लगता है कि सृष्टि मान जाएगी?" अनंत कुमार ने आशुतोष से पूछा।

"चैतन्य समझाएगा तो मान जाएगी!" आशुतोष ने पूरे विश्वास के साथ कहा।

"और इस यकीन की वजह!" अनंत कुमार ने पूछा।

"देखिए! कोई भी इंसान उसी की बात सुनता और मानता है, जिसके लिए उसके दिल में जगह हो और सृष्टि के लिए वो इंसान.... बस चैतन्य है। उसकी बात सुनेगी वो और मुझे यकीन है कि समझेगी भी।" आशुतोष की आवाज में अभी भी आत्मविश्वास की खनक थी।

"पर मुझे एक बात का डर है कि इस सब में सृष्टि का दिल ना टूटे।" अनंत कुमार ने चिंता से कहा।
"उसकी चिंता मत कीजिए। चैतन्य कभी किसी का दिल नहीं दुखाएगा।" आशुतोष ने मुस्कुराते हुए कहा।

"बहुत यकीन है आपको उस पर! उम्मीद करता हूँ कि हमारे मिशन में भी उससे इतनी ही उम्मीद रख सके हम।" अनंत कुमार ने कहा।

"सच कहूँ! अभी तक सबसे ज्यादा काबिलियत उसी ने दिखाई है। वो तो थोड़ा सा डिस्टर्ब है बस। पर मुझे पता है कि वो उस जगह वापस लौटेगा, जो उसकी है और उसके लिए वही सही है।" आशुतोष ने चैतन्य की प्रशंसा करते हुए कहा। उसके विश्वास को देखकर अनंत कुमार मुस्कुराए। उसी समय उन दोनों ने ही चैतन्य और सृष्टि को स्टडी रूम से बाहर निकलते देखा। दोनों के ही चेहरों पर इत्मीनान था। उन दोनों को इस तरह साथ में देखकर वरूण और मुकुल ने शरारत से हुंकारी भरते हुए अपनी भौंह उठाई। उसी समय वरूण के सिर पर एक चपत लगी।

"आउच!" अपने सिर को सहलाते हुए वरूण ने पीछे देखा। अनामिका एक कमान चढ़ाए उसे ही देख रही थी।

"क्या करती हो यार? लगता है!" वरूण झुंझलाकर बोला।

"यही तो दिक्कत है कि तुम्हें कुछ लगता नहीं है।" अनामिका ने सिर हिलाते हुए कहा।

"क्या? क्या कहा?" वरूण ने अनामिका को बेवकूफी से देखते हुए कहा।

"कुछ नहीं! खाना खाओ!" अनामिका ने बात को रफा दफा करते हुए कहा।
"जिसे देखो पहेलियों में बातें कर रहा है। उस पिशाच की पहेली कम थी क्या?" वरूण बड़बड़ाते हुए बुदबुदाया।

अनंत कुमार और आशुतोष के साथ सभी डायनिंग टेबल के पास आ गए। सृष्टि के सामान्य और सहज चेहरे को देखकर उन सभी को इत्मिनान हुआ।

"डॉ. अनंत! मुझे अपना फ़ोन चाहिए!" सृष्टि ने अनंत कुमार से बहुत ही अदब से कहा। अनंत कुमार ने बिना देर किए उसका फोन उसे लौटा दिया। सृष्टि ने अपने फोन की कॉन्टेक्ट लिस्ट खोली और फिर उसने कुछ तो किया। उसके बाद सभी ने उसके फोन से लाल धुँआ सा निकलते देखा।

"आगे बढ़ने से पहले पिछली गलतियों को सुधारना भी जरूरी है। उम्मीद है कि जल्द ही आप सभी से मुलाकात होगी।" सृष्टि ने मुस्कुराते हुए कहा।

"और कितनी जल्दी?" आशुतोष ने पूछा।

"शायद एक-डेढ़ घंटे में! इंतजार कीजिएगा!" सृष्टि ने एक नए आत्मविश्वास के साथ कहा।

"यहीं हो तो.... खाने के बाद चले जाना।" चैतन्य ने उसे आमंत्रित करते हुए कहा।

"नहीं! आप लोग शुरू करें! कुछ है जो खाने से ज्यादा जरूरी है।" कहते हुए सृष्टि जाने के लिए मुड़ी।

"एक मिनट सृष्टि! वरूण!" आशुतोष ने पहले सृष्टि और फिर वरूण को आवाज दी।
"जी!" वरूण चमककर बोला।

"सृष्टि को बाहर तक छोड़कर आओ!" आशुतोष ने आदेश देते हुए कहा।

"मैं क्यों?" अपने चश्मे के पीछे से सवाल करते हुए वरूण ने कहा।

"क्योंकि ये तुम्हारा घर है और मुझे लगता है कि तमीज अभी तक छोड़ी नहीं है तुमने!" अनंत कुमार ने वरूण की ओर देखते हुए कहा।

अपने पिता के मुँह से ये सुनकर वरूण चुपचाप उठा और सृष्टि के पास आकर बोला, "चलिए! मोहचढ़ना!"

"मोहतरमा!" अनामिका की आवाज आई।

"हाँ! हाँ! पता है!" वरूण झल्लाते हुए अनामिका की ओर मुड़ा। उसकी इस हरकत पर सभी मुस्कुराए थे। वरूण और सृष्टि दरवाजे की ओर बढ़ गए।

"वैसे एक बात बताओ! तुम उड़कर जाओगी क्या?" वरूण ने उसकी पीठ की ओर देखते हुए कहा।
जवाब में सृष्टि ने बस उसे एक नज़र घूरकर देखा।

"ओह! मैं भूल गई थी कि तुम्हारे पंख तो अभी मिले नहीं होंगे। कोई बात नहीं! तुम भी समझ जाओगे।" सृष्टि ने उसका मखौल उड़ाते हुए कहा।

"क्यों नहीं! क्यों नहीं! वैसे एक सवाल और है कि लोगों का खून चूसने के बाद उसे हजम करने के लिए तुम्हें पेड़ में उल्टा लटकना पड़ता है क्या और... उल्टे लटकते समय तुम अपने ये बाल खुले रखती हो या... नहीं
अगर खुले रखती हो तो आइंदा से बांधकर रखना। इतना ख़ौफ भी फैलाने की जरूरत नहीं है।" वरूण उसे तबीयत से छेड़ते हुए बोला।

"अरे नहीं! खून चूसने की क्लास में अभी आपसे बहुत जूनियर हैं हम। आखिर बिना दाँत गड़ाए खून पीने की कला में कुछ ख़ास लोग ही माहिर होते हैं। अभी तो बहुत सीखना पड़ेगा आपसे हमें।" सृष्टि ने भी ईंट का जवाब पत्थर से देते हुए कहा।

"वैसे चैतन्य और तुम्हारी दोस्ती हो ही गई। मुबारक हो!" वरूण ने बात बदलते हुए कहा क्योंकि अभी और हमले करने का उसका मूड नहीं था।

"हम्म! अच्छा लड़का है वो। अच्छी बात है कि रिश्तों की बारीकी समझता है।" सृष्टि ने मुस्कुराते हुए कहा।

"उफ्फ! बहुत जल्दी समझ गई तुम उसे!" वरूण तंज से बोला। उसके दिल में रकीब की तारीफ ने एक बार फिर से चोट की थी।

"उसे समझा... तभी तो दोस्त माना और दुआ करूंगी कि उसके दिल की हर ख्वाहिश पूरी हो।" सृष्टि ने वरूण की ओर देखते हुए कहा।

"अरे वाह! दोस्ती हो तो ऐसी!" वरूण मसखरी करते हुए बोला।

"क्यों? तुम और अनामिका भी तो दोस्त हो। गहरे दोस्त! क्या तुम ये नहीं चाहोगे कि तुम्हारी दोस्त के दिल की हर चाहत पूरी हो। उसे वो मिले... जो उसका हक़ है, उसकी खुशी है।" सृष्टि ने वरूण को गहरी नज़र से देखते हुए सवाल किया। वरूण उसके इस सवाल पर चुप रह गया। सृष्टि उस पर एक नज़र डाल आगे बढ़ गई। वरूण कुछ देर को उसकी बात का मतलब सोचता रह गया और फिर एक गहरी साँस लेकर उसके पीछे हो लिया।
एक दूसरे से बातें करते हुए दोनों बाहर तक आ गए। बाहर सृष्टि की स्कूटी खड़ी थी। वरूण की नज़रों ने उस स्कूटी का चारों ओर से मुआयना किया।

"ऐसे क्या देख रहे हो?" सृष्टि ने पूछा।

"देख रहा हूँ कि तुम्हारी स्कूटी के तो पंख नहीं हैं ना!" वरूण एक बार फिर हल्के मूड में था।

"नहीं! स्पेशल ऑर्डर वाले पंख अभी बन नहीं रहे हैं। वो क्या है ना... एक नई प्रजाति हाथ लगी है, तो पंख बनाने वाले सभी कारखाने और कारीगर उसी के पंख की ईजाद में लगे हैं।" स्कूटी में बैठी हुई सृष्टि ने वरूण को ऊपर से नीचे तक मजाकिया नज़रों से देखते हुए कहा। वरूण ने मुँह बनाकर उसे देखा, जिस पर उसने हँसते हुए अपनी स्कूटी आगे बढ़ा दी।

"चुड़ैल।" कहकर वरूण अंदर की ओर चला गया।

****

वरूण वापस सभी के पास आ तो गया, मगर उसके ज़हन में अनामिका को लेकर कही गई सृष्टि की बात घूम रही थी। आज वो फिर उसके बजाय आशुतोष के पास ही बैठी थी और उससे हँस-हँस कर बातें कर रही थी और उसे... बुरा भी नहीं लगा। अचानक उसे याद आया कि उसने अनामिका को इतना बेफिक्र किसी के साथ नहीं देखा। उसके साथ भी नहीं, बल्कि हाल के दिनों में तो वो उससे बहुत उखड़ी हुई सी रहती थी। यह ख्याल मन में आते ही उसने चैतन्य की ओर देखा, जो इत्मीनान से

अपना खाना खा रहा था। उसने सोचा कि क्या उसे ही ऐसा महसूस हो रहा है या दिखाई दे रहा है। खाना खाने के बाद भी वो इसी सब में उलझा रहा। वो बाहर खुली हवा में खड़ा था, जब अनामिका उसके लिए ब्लैक कॉफी लेकर आई।

"तुम्हें कैसे पता चला कि मुझे ये चाहिए।" वरूण ने कप पकड़ते हुए कहा।

"अपनी जरूरत मुझसे कहने की जरूरत नहीं है तुम्हें।" अनामिका ने मुस्कुराते हुए कहा और जाने के लिए पलटी।

"अनामिका!" वरूण ने उसे आवाज दी।

"हाँ!" अनामिका पलटते हुए बोली।

"मैं तुम्हें बहुत परेशान करता हूँ ना!" वरूण ने अप्रत्याशित सा सवाल किया।

"हाँ!" अनामिका ने भी बिना झिझके कहा।

"मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि मैं तुम्हारी दोस्ती खोता जा रहा हूँ। तुम आजकल अपनी कोई भी प्रॉब्लम मेरे साथ शेयर नहीं करती।" आशुतोष का नाम लिए बिना वरूण ने अपने दिल की बात कही।

"हमारी दोस्ती इतनी कमजोर नहीं है वरूण! बस तुम्हारे समझने की काबिलियत कम हो गई है। बस इसलिए!" अनामिका ने सहज भाव से कहा।

"तो क्या मैं अब भी तुम्हारा वही दोस्त हूँ?" वरूण ने उसका हाथ पकडते
हुए कहा।

अनामिका उसके पास आई और उसके चश्मे को ठीक करती हुई बोली, "मैंने हमेशा कहा है कि मेरी जिंदगी में तुम्हारी जगह कोई नहीं ले सकता। पर तुम ना जाने समझ की किस गली में भटक रहे हो? मैंने तुमसे पहले ही कहा है कि रिश्तों को उलझाओ नहीं।"

"तुम्हें सच में लगता है कि मैं सब कुछ उलझा रहा हूँ?" वरूण ने उसकी ऑखों में देखते हुए कहा। जवाब में अनामिका ने उसके गाल पर प्यार से हाथ फेरा और वहाँ से चली गई। वरूण उसे गहरी सोच के साथ उसे जाते हुए देखता रहा। उसी समय अनामिका को एक मुस्कुराहट देता हुआ चैतन्य उसकी ओर आया।

"क्या हो रहा है?" चैतन्य ने अनामिका और वरूण पर एक-एक नज़र डालते हुए कहा।

"तुम अनामिका से प्यार करते हो ना!" वरूण ने जवाब देने की बजाय सवाल किया।

"हाँ!" चैतन्य ने बिना लाग-लपेट के कहा।

"वो... भी करती है?" अगला सवाल वरूण ने थोड़ी झिझकी से कहा था।

उसकी बात सुनकर चैतन्य ने एक खिसियानी सी हँसी हँसते हुए इंकार में सिर हिलाया।

"तो...!" वरूण ने हैरानी जताई।

"तुम उसके दोस्त हो ना! इतना भी नहीं समझते कि वो किससे प्यार
करती है?" चैतन्य ने वरूण से कहा।

उसके जवाब पर वरूण ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और फिर बोला, "तुमने कहा था कि तुम और अनामिका दोस्त नहीं हो।"

"हाँ तो हम नहीं हैं। उसमें ज्यादा सोचने वाली कौन सी बात है।" चैतन्य ने कंधे उचकाकर कहा।

"तो अगर वो किसी और के साथ गई, तो तुम्हारे बीच कुछ भी नहीं रहेगा?" वरूण ने पूछा।

"हम्म! रहेगा तो सही, पर वो बेतकल्लुफी नहीं रहेगी!" चैतन्य ने उसकी ओर देखते हुए दर्द के साथ कहा।

"क्या नहीं रहेगी?" वरूण ने ऑखें सिकोड़ कर कहा।

"छोड़ो। अनामिका के दोस्त तुम हो और तुम ही रहोगे।" उसके कंधे पर हाथ रखते हुए चैतन्य ने कहा। वरूण ने उसे नज़र भर देखा और फिर वहाँ से चला गया। चैतन्य वहीं खड़ा आसमान को ताकता रहा।

"चैतन्य तुम जरा..." अनामिका ने उसे पीछे से आवाज़ दी।

उसकी आवाज पर वो पीछे पलटा। अनामिका अपनी बात अधूरी छोड़ उसके पास आ गई। उस पर एक नज़र डालकर चैतन्य फिर से आसमान की ओर देखने लगा।

"तुम्हारी दोस्ती हो गई सृष्टि से?" अनामिका ने सवाल किया।

"हाँ!"
"उसका दिल मत तोड़ना!" अनामिका ने कहा और जाने के लिए मुड़ी।

"अनामिका!"

"हम्म!"

"मैंने उसे सब बता दिया।"

"क्या बता दिया?"

"जो मेरे दिल में तुम्हारे लिए है।"

उसकी बात सुनकर अनामिका को हैरत का तेज झटका लगा। वो तेजी से उसके पास गई।

"क... क्या कहा?"

"यही कि मेरे दिल में तुम्हारी जगह कोई नहीं ले सकता। उसके आगे जो भी होगा... बस एक समझौता होगा।" चैतन्य ने कहा।

"तुम्हें... तुम्हें ये नहीं कहना था। उसे बुरा लगा होगा" अनामिका ने अपनी ऑखें फैलाते हुए कहा।

"सच कहूँ! उसे नहीं लगा। इसलिए तो उससे दोस्ती का ना तो उसे अफसोस है और ना मुझे। हम दूसरे को कैसा लगेगा ये सोचकर कई बार उसे ही तकलीफ़ दे देते हैं, जिसे तकलीफ़ देना नहीं चाहते। मैं ऐसा नहीं करना चाहता था। कम से कम अब उसका दिल नहीं टूटेगा।" चैतन्य एक गहरी साँस के साथ बोला।
"और तुम्हारा दिल?" अनामिका ने उसकी ऑखों में झांकते हुए पूछा।

"वो ठीक है। बस एक ही तकलीफ़ है कि काश तुमने अपने दिल की बात बताने के काबिल समझा होता। कोई बात नहीं। जिससे प्यार करते हैं उसकी बात समझने के लिए अल्फ़ाजों की जरूरत नहीं पड़ती है। मैं तुम्हारे लिए बहुत खुश हूँ। आशुतोष जी तुम्हें खुश रखेंगे।" चैतन्य ने मुस्कुराते हुए कहा।

"सच में! ये सोचते और कहते हुए तुम्हें तकलीफ़ नहीं हुई।" अनामिका उसके चेहरे को ग़ौर से देख रही थी।

"मैं तुमसे प्यार करता हूँ अनामिका और हर हाल में तुम्हें खुश देखना चाहता हूँ और मेरे लिए बस यही मायने रखता है।" चैतन्य ने भी उसकी ऑखों में देखते हुए कहा।

"और मेरी खुशी किसमें है?" अनामिका उसके करीब आते हुए बोली।

"जो तुम चाहती हो!" उसकी करीबी से असहज होता हुआ चैतन्य बोला।

अनामिका ने कुछ देर उसकी ऑखों में देखा और फिर आगे बढ़कर उसकी गर्दन में दोनों हाथ रखते हुए उसके होंठों पर अपने होंठ रख दिए। एक ही पल में चैतन्य के होश के तोते दूर आसमान में उड़ गए। वो अपनी जगह बर्फ की तरह जमा रह गया। उसकी ऑखें हैरानी की आखिरी इंतेहा तक फट चुकी थीं और दिल की धड़कनें कानों में घंटियों की तरह बजने लगी।

कुछ देर बाद उसे छोड़कर उसकी ऑखों में देखते हुए अनामिका ने कहा, "मैं ये चाहती हूँ बुद्धू! हमेशा से! पर तुम कभी समझते ही नहीं।"
अपनी बात खत्म कर अनामिका तेजी से वहाँ से चली गई। चैतन्य अभी भी अपने गुम हुए होश तलाश रहा था। कानों में घंटियों की आवाज बदस्तूर जारी थी। बहुत सी उलझनें आज सुलझ चुकी थीं।

"बिन मांगे मोती मिलत और मांगे मिले न भीख"

आज चैतन्य को बस यही एक दोहा बार-बार याद आने वाला था, जब भी वो होश में वापस आ जाता। पर उसने तो जैसे वापस आने से ही इंकार कर दिया था। घर के अंदर हलचल बढ़ गई थी और वो वहीं यूं ही खड़ा हवा खा रहा था। शायद वो पूरी रात ऐसे ही खड़े-खड़े गुजार देता, लेकिन ठंडे पानी की एक बौछार ने उसके सुकून-ए-भरम को तोड़ दिया और वो हाल (वर्तमान) में वापस आया, मगर हवास अभी भी उनींदी हालत में ही थे।

"चैतन्य!" आशुतोष की तेज घुड़की भरी आवाज भी उसे कहीं दूर से आती महसूस हुई।

"हे भगवान! ये लड़का मेरी इज्जत का जनाजा निकाले बिना नहीं मानेगा। चैतन्य!" चिल्लाते हुए आशुतोष ने उसका चेहरा अपनी हथेलियों में भरकर झिंझोड़ा।
"हँ!" चैतन्य की देखने-समझने की ताकत जैसे मीलों दूर से वापस लौटी।

"क्या? ऐसे खोए हुए से क्यों खड़े हो और अपना फोन क्यों नहीं उठा रहे हो? अंदर चलो! बुला रहे हैं तुम्हें। सृष्टि आने वाली है।"आशुतोष ने उसके चेहरे पर थपकी मारते हुए कहा और फिर उसका हाथ पकड़ कर साथ चलने के लिए खींचा।

अचानक ही चैतन्य की चेतना पूरी तरह से वापस लौटी। उसने अपने चारों ओर हर चीज को नज़र दौड़ा-दौड़ाकर देखा और फिर उसने अपना हाथ उठाकर अपने सीने पर रखा, जहाँ धड़कनों की रफ्तार सामान्य होकर भी नहीं थी। उसने अपनी ऑखों को सिकोड़कर वो सब फिर से याद किया, जो थोड़ी देर पहले हुआ था और फिर अनामिका के होंठों का नर्म स्पर्श और खुद के अंदर उतरी उसकी साँसों का गर्म अहसास उसके अंदर एक झुरझुरी सा भर गया।

"आशुतोष जी!" चैतन्य चीखा।

"यही हूँ यार!" चैतन्य के ठिठके हुए कदमों के साथ रूके हुए आशुतोष ने अपने कान को खुजलाते हुए कहा।

"अनामिका ने कह दिया! उसने कह दिया!" चैतन्य, आशुतोष के कंधों को पकड़कर बदहवास सा बोला।

"अब क्या कह दिया उसने? वैसे भी... वो तो दिन भर कहती ही रहती है। मुझे भी पका दिया है। चलो सब ढूंढ रहे हैं तुम्हें!" आशुतोष ने उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा।

"अब क्यों ढूंढ रहे हैं मुझे?" पुराने अनुभव याद कर सिहरते हुए चैतन्य
बोला।

"एक किलो दही मंगवाना है, वो सुबह नाश्ते में दही बड़े बनेंगे ना!" आशुतोष ने अपनी कमर में हाथ रखकर कहा।

"सच में!" चैतन्य ने बेवकूफों की तरह ऑखों से भी पूछा।

उसकी बात सुनकर आशुतोष ने अपना माथा ठोका और फिर उसे हाथ से खींचते हुए अंदर ले गया। चैतन्य के कुछ समझने से पहले ही सभी स्टडी रूम में थे और इस बार परिधि भी उनके साथ थी। वो अजीब से भाव लिए हुए वहाँ बैठी थी और चारों तरफ देख रही थी।

"क्या हो रहा है?" चैतन्य ने आशुतोष से पूछा।

"डॉ. अनंत चाहते हैं कि अब... जब हम सभी साथ हैं, तो परिधि को भी इसमें मिलाया जाए, ताकि उसे पता रहे कि हो क्या रहा है? उसे अचानक से शामिल करने पर परेशानी हो सकती है।"आशुतोष ने कहा।

"ओह!" चैतन्य ने बेचैनी से चारों ओर नज़रें घुमाते हुए कहा, मगर निगाहों का चैन वहाँ कहीं नहीं था।

"तुम्हें क्या हुआ? चैन से नहीं रह सकते तुम!" आशुतोष ने एक बार फिर से उसे टोका। उसकी बात सुनकर चैतन्य मुँह बनाता हुआ एक जगह बैठ गया। अंकित, मुकुल और वरूण आपस में चर्चा में व्यस्त थे। उन सभी ने अपने हाथों में कागज के पुलिंदे पकड़े हुए थे। आशुतोष ने सृष्टि का नाम लिया था, पर वो भी दिखाई नहीं दे रही थी।

"डॉ. अनंत कहाँ हैं?" चैतन्य ने आशुतोष से पूछा।
"वो गीता के पास हैं। उनका कहना है कि उसकी सुरक्षा बहुत जरूरी है। वो अकेली पड़ जाएगी इसलिए उसी के इंतजाम में हैं।" आशुतोष ने जवाब देते हुए कहा।

"ओह! और.... अना.. मिका कहाँ हैं ?" सवाल पूछते हुए चैतन्य की निगाह फिर से भटकी थी।

"फिर से अनामिका! क्या हुआ है भई? तुम तो उससे दूर-दूर भागे फिर रहे थे। अचानक फिर से उसके नाम की माला क्यों जप रहे हो?" आशुतोष ने उसकी ऑखों में झांककर देखते हुए कहा।

और... चैतन्य का गला एकदम से सूखा था। दिन-रात आशुतोष के सामने अपने प्यार के दुखड़े-सुखड़े सुनाने वाले चैतन्य के पास वो शब्द नहीं थे, जो कुछ देर पहले की घटना को बयां कर पाते। उसने अपने गले को गीला करते हुए चेहरा दूसरी ओर फेरा और उसके चेहरे के उड़ते हुए रंग को देखकर आशुतोष की ऑखें सिकुड़ी थीं। उसी समय डॉ. अनंत कुमार ने स्टडी रूम में प्रवेश किया।

"सृष्टि आई नहीं अभी तक?" अनंत कुमार ने अंदर आते ही पहला सवाल किया।

"नहीं! अभी तक तो नहीं!" मुकुल ने कहा।

"और अनामिका कहाँ है?" अनंत कुमार का अगला सवाल आया और इसके साथ ही चैतन्य का दिल जोर से धड़का था और उसने अपने निचले होंठ को दाँतों में दबाया। उसने सहज रहने की पूरी कोशिश की, पर आशुतोष की चौकन्नी निगाहों की पकड़ में वो आ ही गया और बस तभी दरवाजा खुला।
"ओह! अनामिका! आओ!" अनंत कुमार ने कहा और इसी के साथ चैतन्य की गर्दन तेजी से दरवाजे की ओर मुड़ी थी। सामने ही चैतन्य को अपनी ओर देखता पाकर अनामिका एक पल को ठिठकी और फिर

चैतन्य से नज़रें चुराती हुई तेजी से अनंत कुमार के पास चली गई। चैतन्य की नज़रों ने पूरे समय अनामिका का पीछा किया और जो भी दोनों के बीच हुआ.... आशुतोष की नज़रों में चढ़ गया। उसने अपनी एक भौंह चढ़ाकर दोनों को एक-एक करके देखा।

"ये लीजिए अंकल!" कहते हुए अनामिका ने हॉस्पिटल में मिली डायरी अनंत कुमार की ओर बढ़ाई और परिधि से कुछ दूर जाकर बैठ गई।

फिलहाल फारिग बैठे हुए चैतन्य की निगाहें बार-बार अनामिका की ओर भटक रही थी और उसकी नज़रों की ताप महसूस कर अनामिका खुद को समेट रही थी कि बेखुदी में जो कर आई थी, उसका इकरारनामा वो अपने चेहरे पर लिखकर नहीं रखना चाहती थी। आशुतोष, अनामिका के पास पहुँचे, जिसने उनके पास आने पर खुद को थोड़ा व्यवस्थित करने की कोशिश की। आशुतोष ने एक नज़र चैतन्य पर डाली, जिस पर उसने तेजी से अपना चेहरा दूसरी ओर घुमाया था।

"क्या चल रहा है ये सब?" आशुतोष ने अनामिका पर खोले की तरह सवाल दागा।

"जी!" अनामिका ने चौंककर आशुतोष की ओर देखा।

"ये इतने लोगों के बीच में भी क्या चल रहा है तुम लोगों के बीच?" आशुतोष ने अनामिका पर गहरी नज़र डालते हुए धीमी आवाज में पूछा।

"कुछ.... नहीं!" कहते हुए अनामिका की आवाज लड़खड़ाई थी।
"चैतन्य कह रहा था कि तुमने उससे कुछ कहा।" आशुतोष ने अनामिका के चेहरे को पढ़ते हुए कहा और अगले ही पल अनामिका का चेहरा गालों से होता हुआ कानों तक लाल हो गया। ये देखकर आशुतोष की ऑखों में शरारत उभर आई।

"ओह्हो! लगता है आज किसी का इंतजार खत्म हो ही गया!" कहते हुए आशुतोष ने फिर से एक नज़र चैतन्य की ओर घुमाई।

"आशुतोष जी! अभी नहीं! प्लीज़!" अनामिका याचना करती हुई बोली।

"हाँ! हाँ! क्यों नहीं? पर इस चैतन्य की जेब खाली नहीं करवाई तो देख लेना। बहुत परेशान किया है इसने मुझे। पर मैं बहुत खुश हूँ तुम दोनों के लिए!" कहते हुए आशुतोष ने अनामिका के सिर पर हाथ फेरा और ये सब दूर बैठे वरूण की नज़र में आ गया। वो रात के खाने के समय से ही आशुतोष और अनामिका पर ग़ौर कर रहा था, इसके साथ-साथ उसके ज़हन में उन दोनों की साथ-साथ मुस्कुराती हुई कई छवियाँ भी उभर आई थीं। उसने थोड़ी दूर बैठे चैतन्य को भी देखा और फिर अपने सिर को झटककर सब कुछ दूर परे किया।

दूसरी ओर अनंत कुमार ने उस डायरी को हर प्रकार से पढ़ने का प्रयास किया, मगर वहाँ अभी भी कुछ नहीं था। उन्होंने निराशा से वो डायरी मेज पर रख दी और परिधि की ओर देखा। वो ऑखों में ढेर सारे सवाल लिए सबको देख रही थी।

"अभी तक कुछ भी नहीं।" अनंत कुमार ने निराशा से कहा।

"तो फिर!" आशुतोष ने कहा।

"अब तो सृष्टि को आने दो। तभी कुछ बात बनेगी। उसने भी कुछ बताया
नहीं। अब जब तक वो नहीं आ जाती, हम कुछ नहीं कर सकते हैं।" अनंत कुमार ने शिथिल सी आवाज़ में कहा।

अनंत कुमार की बात सुनते ही सभी ने घड़ी की ओर नज़र डाली। रात के 10 बज चुके थे और सृष्टि को आने में देर हो रही थी। अनंत कुमार के चेहरे पर चिंता की रेखाएँ बढ़ती जा रही थीं। आशुतोष ने उनके पास जाकर उन्हें शांत रहने के लिए कहा, जिस पर उन्होंने हाँ में सिर हिलाया था। उसी समय सभी ने स्टडी के एक कोने में खटखटाहट की आवाज सुनी। सभी की ऑखें खड़े हो चुके कानों के साथ उस तरफ गई थी।

"ये आवाज कैसी?" कहते हुए अनंत कुमार तेजी से उस ओर गए, जो एक भारी बुकसेल्फ के पीछे थी। उन्होंने भी किताबों को एक ओर करके उसके पीछे की दीवार पर दो बार खटखटाया और उस सेल्फ पर कान टिकाया ही था कि एक बार फिर से खटखटाने की आवाज आई।

"सब इधर आओ जल्दी! इसे हटाना है।" अनंत कुमार ने सभी लड़कों को पास बुलाते हुए कहा।

उनकी बात सुनकर सभी वहाँ पहुँचे और थोड़ी मशक्कत के बाद उस सेल्फ को वहाँ से खिसका दिया। वहाँ कुछ भी नहीं था। बस एक खाली दीवार थी। अनंत कुमार ने आगे जाकर पहले उस दीवार पर हथेली फिराया और फिर एक जगह हथेली रखकर उसे दबाने लगे। सभी को ये देखकर आश्चर्य हुआ कि उनके दबाने से वो दीवार इस तरह दब गई गोया वो दीवार ना होकर कोई नर्म गद्दा हो। मगर इससे ज्यादा कुछ और नहीं हुआ। वो कुछ देर अपनी पूरी ताकत के साथ उसी तरह खड़े रहे, मगर कुछ भी नहीं हुआ। अनंत कुमार अपने हाथ को पीछे खींच अपनी ऑखों के सामने रखकर देखने लगे।

"लगता है! मेरी शक्तियाँ लगभग खत्म ही हो रही हैं।" अनंत कुमार ने
हताशा से कहा।

"तो अब क्या करें?" आशुतोष ने उस आवाज को सुनकर कहा, जो अब भी रूक-रूककर आ रही थी।

अनंत कुमार परेशान खड़े ही थे कि अचानक उनका दिमाग क्लिक कर गया और उन्होंने वरूण की ओर देखते हुए कहा, "मैं ये कैसे भूल गया? वरूण! जल्दी आओ इधर!"

"जी!" कहकर वरूण तेजी से अपने पिता के पास पहुँचा।

अनंत कुमार ने एक बार फिर से अपनी हथेली उस दीवार पर रखी और वरूण से बोले, "अब अपनी हथेली मेरी हथेली के ऊपर रखो और इस दीवार को खुलने का आदेश दो!"

अनंत कुमार की बात सुनते ही वरूण ने हाँ में सिर हिलाते हुए उनकी हथेली पर हाथ रखा और दीवार को खुलने का आदेश दिया। इसके साथ ही अनंत कुमार और वरूण की हथेलियों के बीच से कुछ चिंगारियाँ सी निकली और फिर उन चिंगारियों ने उन दोनों की हथेलियों को अपनी गिरफ्त में ले लिया। अगले ही पल वो चिंगारियाँ उस दीवार पर फैलने लगी और जहाँ-जहाँ से वो चिंगारी गुजरी, दीवार का वो हिस्सा पिघलता हुआ सा प्रतीत हुआ और देखते ही देखते वो एक खुली हुई गुफाद्वार की तरह

दिखाई देने लगा। उन सबने देखा कि दीवार के उस पार सृष्टि खड़ी थी, जिसका वो सब बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। आखिरकार वो आ गई थी। वरूण और अनंत कुमार के हाथ हटाने के बाद सृष्टि दीवार पार करती हुई कमरे में आ गई और फिर वो दीवार एक बार फिर से पहले की तरह हो गई।

"तुम इस तरह क्यों आईं हो?" अनंत कुमार ने परेशान होकर कहा।
"मैं प्रोफेसर साहनी के स्टडी रूम से यहाँ तक पहुँची हूँ।" सृष्टि ने बात साफ की।

"वहाँ क्या करने गई थी?" मुकुल ने हैरानी से पूछा।

"क्योंकि सारी गड़बड़ियाँ वहीं तो फैली थीं, जिसे साफ करने के लिए गई थी। कहते हुए उसने एक शीशी अपनी जेब से निकाली। उस शीशी को देखते ही अनंत कुमार की आँखों में चमक आ गई। वो एक काँच की लंबी शीशी थी, जिसका निचला सिरा थोड़ा सा नुकीलापन लिए हुए था। उसमें कोई द्रव्य भरा था, जो प्रतिपल अपना रंग बदल रहा था।

"ये कहाँ से मिली तुम्हें?" अनंत कुमार ने उस शीशी को पकड़ते हुए कहा।

"ये मेरे पापा की थी, जिसे उस प्रोफेसर साहनी ने मुझे बेवकूफ बनाकर मुझसे ले ली थी। वो इसी की मदद से बहुत कुछ जानने की कोशिश कर
रहे थे और इसीलिए सभी रक्षकों की अंगूठी हासिल करने का काम मुझे सौंपा था।" सृष्टि ने सब पर नज़र डालते हुए कहा।

"पर ये है क्या?" आशुतोष ने उस शीशी को ग़ौर से देखते हुए पूछा।

"ये सतांश है!" अनंत कुमार ने अविश्वास भरी ऑखों से उसे देखते हुए कहा।

"और ये क्या बला है?" चैतन्य ने भी उसे घूर कर देखते हुए पूछा।

"ये सतवृक्ष से निकाला गया दिव्य द्रव्य है। इसकी सहायता से हम एक काल्पनिक सतवृक्ष का निर्माण कर सकते हैं, जो हमें हमारे सारे प्रश्नों के उत्तर दे सकता है।" अनंत कुमार ने खासा उत्साहित होते हुए कहा।

"पर ये तुम्हारे पिता के पास कहाँ से आया?" अनामिका ने पूछा।

"अब वो मुझे नहीं पता, पर ये फिलहाल हमारे लिए बहुत काम का है।" सृष्टि ने कहा।

"सृष्टि सही कह रही है।" अनंत कुमार ने कहा।

"अच्छा! अगर ये तुम्हारे पास था तो फिर तुम सबने पहले ही इसका इस्तेमाल क्यों नहीं किया?" वरूण उसे संदेह से देखते हुए बोला।

'क्योंकि इसके इस्तेमाल के लिए सभी रक्षकों के शक्तियों की आवश्यकता होती है!" अनंत कुमार ने कहा।

"ओह!" सभी के मुँह से एक साथ निकला।
"तो क्या... हम आज ये करने वाले हैं?" मुकुल बोला।

"बेशक! अभी शुरू करने से ये 24 घंटे का समय लेगा पूरी तरह बनने में और उसके बाद हमारे हर सवाल का जवाब होगा हमारे पास!" कहते हुए अनंत कुमार की आवाज काँप रही थी।

"तो शुरू करें?" चैतन्य ने आगे बढ़कर कहा।

"जरूर!" यह कहकर अनंत कुमार ने अपनी जेब से दो अंगूठियाँ निकाल कर एक-एक मुकुल और सृष्टि की ओर बढ़ा दी। ये वही रक्षकों वाली अंगूठियाँ थीं, जिन्हें मुकुल और सृष्टि को देने का समय अब आया था। अंगूठियों और उन दोनों के द्वारा एक दूसरे को स्वीकार करने के बाद अनंत कुमार ने स्टडी की खाली जमीन पर एक बड़ी सी गोलकार आकृति बनाई और फिर उस जादुई शीशी को बीचों बीच में रखकर उन्होंने उसका ढक्कन तीन बार अंगूठे से दबाया। ऐसा करने से उस शीशी के निचले नुकीले सिरे से उसके अंदर भरे द्रव्य की एक बूंद बाहर निकल कर जमीन पर गिरी और फिर वहाँ एक रोशनी सी फूट पड़ी।

"जल्दी आओ और सभी रक्षक यहाँ अपने हाथ एक के ऊपर एक रखो।" अनंत कुमार ने सबको पास बुलाते हुए कहा। उन्होंने वरूण को इशारे से परिधि का ध्यान रखने के लिए कहा, जो ये सब देखकर दहशत में आने लगी थी।

अनंत कुमार के कहने पर सबसे पहले आशुतोष यानि कि पृथ्वी, उसके बाद मुकुल यानि अग्नि, उसके बाद अनामिका यानि जल और उसके बाद चैतन्य यानि वायु ने अपने हाथ रखे। सबसे ऊपर सृष्टि यानि कि नभ रक्षक के हाथ रखते ही अनंत कुमार ने एक और बूंद उसके हाथ में डाली। ऐसा करते ही रोशनी की वो बूंद तेजी से उस गोलाकार आकृति में फैलकर भर गई। कुछ देर बाद वो रोशनी फिर से सिमटने लगी और फिर आशुतोष
की हथेली के नीचे जाकर फिर से सिमट गई। अनंत कुमार के कहने पर सभी ने अपने हाथ हटाए। आशुतोष के हाथ हटाते ही उन सब ने वहाँ एक रोशनी से भरी कोंपल को निकलते हुए देखा।

आखिरकार अनंत कुमार के मार्गदर्शन में रक्षकों ने काल्पनिक सतवृक्ष का निर्माण कर लिया था, जो 24 घंटे के बाद उनके कई सवालों के जवाब देने वाला था। अब बस एक लंबा इंतजार था। अनंत कुमार के कहने पर सभी उस रात के लिए अपने-अपने ठिकानों पर लौट गए। सबके लिए आराम बहुत जरूरी था क्योंकि उनका ये पहला कदम 24 घंटे के बाद बहुत कुछ बदलने वाला था।

अपना काम खत्म करके सभी अपने-अपने कमरों में चले गए थे। सिर्फ डॉ. अनंत ही स्टडी रूम में बैठे हुए उस सतवृक्ष को घूर रहे थे गोया उनके घूरने से 24 घंटों का काम जल्दी हो जाएगा। अपनी हर पल क्षीण होती ताकत से भी वो परेशान थे। जाहिर सी बात थी कि चाहकर भी वो इस संघर्ष में सबका ज्यादा साथ नहीं दे सकते थे और इस लिए उन पर घबराहट लाज़िम थी। फिलहाल आगे की योजना अभी भी अधर में ही थी। सामने अंकित, वरूण और मुकुल के लाए हुए कागज पड़े थे, जिनकी मदद से सतवृक्ष से सवालों के जवाब मिलने थे। कुछ देर तक हर एक चीज पर नज़र डालते हुए अनंत कुमार

थोड़े भावुक हो गए। तृषा ने एक बार फिर से उनकी यादों में दस्तक दी थी और साथ ही आया वो लावा, जो उनके दिल के साथ उनकी आत्मा को भी दस सालों से झुलसा रहा था। कुछ देर तक वो खुद को संभालते रहे, फिर उठकर कमरे से बाहर आ गए। सीढ़ियाँ चढ़ते हुए वो एक कमरे के सामने पहुँचे। उन्होंने अपनी जेब से एक चाबी निकाली और उसे की होल के पास ले गए। उस की होल
और चाबी दोनों से ही से नीली रोशनी की डोर निकली और फिर जैसे उन दोनों रोशनियों ने एक-दूसरे की पहचान पूछी हो। पहचान मिलने पर दोनों रोशनियाँ आपस में गुंथकर मिल गईं और फिर वो चाबी अपने आप उस की होल में घुस गई।

अनंत कुमार ने नॉब घुमाई और अंदर चले गए। अंदर कोई सोया हुआ था। अनंत कुमार उसके पास पहुँचे और उसके सिरहाने बैठ गए। वो गीता थी,
जो उनकी हिफाजत के साए में बेफिक्री से सो रही थी। पर अब ये सुरक्षा चक्र बहुत ही कमजोर हो गया था, इसलिए चिंता अनंत कुमार के माथे पर लकीरों की शक्ल में उभर आई थीं।

"मेरी बच्ची! बस और दो दिन! फिर तू इस श्राप से मुक्त हो जाएगी। तुम्हारे पापा थक गए हैं, पर हारे नहीं हैं। मैं अपने जीवन की आखिरी साँस तक तेरी हिफाजत करूँगा। कुछ नहीं होने दूँगा तुम्हें। बस दो दिन और हिम्मत रख लो मेरी बच्ची!" अनंत कुमार ने बहुत ही भावुक आवाज में कहा और झुककर गीता के माथे को चूम लिया।

वो अपनी जगह से उठे और फिर थके हुए कदमों से कमरे से बाहर जाने लगे। उसी समय गीता ने अपनी ऑखें खोली, जो लाल अंगारों की तरह दहक रही थीं। उसके होंठ फड़फड़ाए और दो नुकीले दाँत होंठों के किनारों से बाहर निकल आए। वो बिजली की फुर्ती से उठी और फिर एक लंबी छलांग के साथ वो अनंत कुमार के सामने थी। एक पल में ही अनंत कुमार के चेहरे की रंगत बदली थी।

"ऐसा नहीं हो सकता! ऐसा कभी नहीं हो सकता! मैंने अपनी हिफाजत में रखा था तुम्हें।" अनंत कुमार ने बेयकीनी से उसे देखते हुए कहा।

"शरीर की हिफाजत में तूने दस साल गुजार दिए रखवाले! पर चोट तो मैंने कहीं और की थी।" गीता के अंदर से कोई और ही बोला और फिर एक बार... एक वहशी मुस्कान ने गीता के चेहरे की मासूमियत को छिपाया था।

"क्या मतलब?" अनंत कुमार ने कहा।

"आज से दस साल पहले जब तू अपनी बेटी और पत्नी को बचाने आया था, तभी पहचान लिया था मैंने तुझे। भविष्य पटल में देखा था तुझे। तुझे क्या लगता है? तेरी बेटी को क्यों छोड़ा मैंने? तू उस दिन जिसे साथ लेकर
आया था, वो तेरी बेटी नहीं... मेरा हथियार थी। पर तू भी बहुत कड़क जान निकला, जब तुझे पता चला कि तेरी बेटी को मुझसे कोई नहीं बचा सकता, तो तूने इसे अपनी सुरक्षा चक्र में रख दिया। पता है... एक खून के बूंद जितनी स्मृति डाली थी मैंने तेरी बेटी के अंदर और फिर वो तेरी बेटी का दिमाग चट कर गई। पर मेरी भी मजबूरी थी। मैं रूक नहीं सकता था। वापस जाना था मुझे, इसलिए मेरी वो

स्मृति तेरी कैद में रह गई। मगर कब तक? मुझे वापस भी तो आना ही था ना! तो मैं आया और फिर पिछले आठ दिनों से तेरी बेटी के अंदर मेरी वो स्मृति ताकतवर होती गई। मैं तो हमेशा से उसके अंदर पनपता रहा था। वो जो भी देखती.... जो भी सुनती... मुझे सब पता चल जाता। तुझे और सबको लगा कि उसकी माँ की मौत ने उसे चुप कर दिया है। पर वो तो मेरा कहा मानती थी। वो ही तो थी, जिसने इस घर के अंदर आने की इजाजत दी थी मुझे। तू उसे बाहरी हमले से बचाने की जतन में मेरे करीब ले आया। अच्छी चाल चली ना मैंने! तूने अपनी सारी ताकत बेफिजूल गँवा दी। अब तू खुद को बचा सकता है तो फिर बचा ले!" यह कहकर गीता के अंदर का पिशाच वहशी तरीके से हँसा।

अनंत कुमार अपनी बेटी को इस हालत में देखकर बदहवास हो गए। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या करें? दरवाजा बंद था और मदद की कोई भी गुहार बाहर नहीं जा सकती थी, जिस प्रकार से कोई अंदर नहीं आ सकता था।

अनंत कुमार ऑखें फाड़े गीता को देख रहे थे, जिसका शरीर धीरे-धीरे हवा में उड़ने लगा और एक जगह जाकर स्थिर हो गया। उसकी ऑखें आग की तरह इस तरह दहक रही थीं, जैसे कि उन ऑखों में पूरे जमाने की आग भरी हो। फिर उन ऑखों से आग बाहर निकल कर लावे की तरह महीन लकीरों के रूप में पूरे शरीर में बहने लगी। साथ ही साथ उसका शरीर अजीब तरीके से फूलने लगा। लावे की महीन लकीरें शरीर में जहाँ-जहाँ फैली थीं, वहाँ-वहाँ से उसके शरीर की चमड़ी फटने लगी। ये वीभत्स दृश्य को देखकर अनंत कुमार का कलेजा मुँह को आ गया। उनकी बेटी उन्हीं के सामने अपना वजूद खो रही थी।

और फिर एक समय ऐसा आया, जब एक चीत्कार के साथ उसका पूरा शरीर चिथड़ों की तरह फट गया और उन चिथड़ों के पीछे से निकला वो.. जो बड़े-बड़े काले पंखों में लिपटा हुआ था और जब उसने अपने पंख खोले तो सामने था एक आकर्षक सा युवक, जिसकी ऑखें मौत की तरह ठंडी थीं।

वो एक करीब छः फीट लंबा, बलिष्ठ शरीर का गोरे रंगत वाला युवक था। उसकी ऑखें नीली और बाल काले थे, जिसमें लाल रंग अपनी झलक खूबसूरती से दिखा रहा था। वो ना तो पूरी तरह से अंग्रेजों की तरह दिख रहा था और ना ही भारतीय। मगर फिर भी वो बहुत ही दिलकश था।

वो अपने पंखों को समेटता हुआ नीचे उतरा और अनंत कुमार की ओर देखकर बोला, "हैलो जेन्टलमैन! माइसेल्फ अल्फ़ी!"

अनंत कुमार ने अपनी भरी हुई ऑखों से सामने खड़े उस शख़्स को देखा, जो उनकी ऑखों के सामने उनकी बेटी को निगल गया।

"शैतान मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा।" अनंत कुमार चिल्लाए।

"ना! ना! ना डॉ.! ऐसी ग़लती मत करना, वरना जो थोड़ा कुछ बचा है, वो भी खत्म हो जाएगा।" वो अपनी दिलकश आवाज में बोला।

थके हुए अनंत कुमार उसके सामने घुटनों के बल गिर पड़े। जिस बेटी को बचाने के लिए उनकी तृषा ने अपनी जान दे दी, वो उसे नहीं बचा पाए। हताशा उन पर हर पल भारी होती जा रही थी।

"तुझे क्या लगता है कि तू बच जाएगा। सारे रक्षक एक हो गए हैं, अब तू नहीं बचेगा। वैसे भी अपना मुँह और पहचान छिपाने वाले कायर हो तुम, जो वार भी छिपकर करता है। हिम्मत है तो सामने से वार करो।" अनंत कुमार चिल्लाते हुए बोले।
जवाब में उसने अनंत कुमार को एक ठंडी हँसी से नवाजा। वो कहीं से भी आहत नहीं लग रहा था। अनंत कुमार अपनी भरी हुई ऑखों से उसे देख रहे थे।

"पर मैंने तो कभी अपनी पहचान नहीं छिपाई। अब पिशाचों को मेरे नाम से समस्या थी, तो उसमें मैं क्या करूं? वो उनका मसला है, तो वो जाने। और रही बात छिपकर वार करने की तो... हाँ! मैंने हमेशा मौके के फायदे उठाए हैं। जानते हो क्यों? क्योंकि मुझे जो चाहिए वो मुझे किसी भी हालत में चाहिए। तुम्हें पता है उसने मुझे दिखाया था भविष्य पटल पर तुम्हारा चेहरा कि तुम मुझे मेरी मंजिल तक पहुँचाओगे। इसलिए तो तुम्हारी बेटी का सहारा लिया मैंने। मुझे फर्क नहीं पड़ता कि कौन जिया? कौन मरा? मुझे मेरे मकसद के अलावा और किसी से प्यार नहीं। आज से नौ साल पहले जब तूने गीता में पिशाच के लक्षण देखे थे, तू तभी डरा था ना! वो दरअसल मेरे कहने पर उसने दिखाए थे, ताकि तू डरे और उस डर को मिटाने के लिए मेरी मंजिल तक खुद ही रास्ता बनाए और तूने बनाया। मुझे उस लड़की की जरूरत बस आखिरी दिन पर ही है, इसलिए मैं उसे पहले से ले जाकर क्या करता? तूने तो मेरे लिए उसकी हिफाजत की है, वरना शिकारी कम नहीं हैं यहाँ।" वो कुटिलता से अपने पैने दाँत दिखाते हुए बोला।

"तो प्रोफेसर साहनी... वो तुम्हारी मदद नहीं कर रहे हैं?" डॉ. अनंत ने आश्चर्य से पूछा।

"कौन? वो चेपू! इस दुनिया में सब स्वार्थी हैं। सबको किसी से कुछ ना कुछ चाहिए। उसे भी चाहिए होगा। मुझे परिधि चाहिए और इसके लिए मुझे किसी की मदद की जरूरत नहीं। मैं अपना काम खुद करता हूँ। है ना!" उसने जैसे उन्हें चिढ़ाते हुए कहा था।

"पर अब भी तेरे लिए ये मुश्किल ही है।" कहते हुए डॉ. अनंत ने इतनी
देर से इकट्ठा की हुई अपनी ताकत से उस पर वार किया, जो उसके लिए अचानक ही था। उसे संभलने का मौका नहीं मिला और वो छिटककर पीछे रखे काँच से टकराया। कुछ ही देर बाद अनंत कुमार ने उस कमरे से बाहर कदम रखा। उनका चेहरा गुस्से की इंतेहा से तप रहा था। वो तेज कदमों से चलते हुए अनामिका और परिधि के कमरे की ओर बढ़ गए। उस कमरे के अंदर होने वाली झड़प की जानकारी किसी को भी ना हो सकी।

अनामिका वॉशरूम में थी। परिधि कमरे में आईने के सामने खड़ी बाल बना रही थी। वो ना जाने किन सोचों में गुम थी। उसने जो कुछ भी अभी स्टडी रूम में देखा। पहले तो उसे सब कुछ बहुत ही अजीब... सच कहें तो ख़ौफनाक लगा था। मगर जैसे-जैसे वक्त आगे बढ़ा, उसे लगा कि उसने ये सब कहीं तो पहले भी देखा है। यादों का कोई पन्ना उसके दिल में भी दस्तक दे रहा था। मगर क्या? ये अभी भी उसकी पकड़ से बाहर था। उसने ऑखें उठाकर आईने में अपने अक्श को निहारा था, जैसे कि खुद को ही पहचानने की कोशिश कर रही हो और तभी कोई उस अक्स के पीछे से बाहर आया।

उसे देखकर परिधि एक झटके से पीछे मुड़ी थी। पर वहाँ कोई भी नहीं था। उसने फिर से उस आइने में देखा। वो अभी भी वहाँ खड़ा मुस्कुराते हुए उसे देख रहा था। परिधि के हाथ से ब्रश छूट गया और मारे

डर के वो बिस्तर में जाकर दुबक गई। उसने डर से चादर अपने सिर तक खींच ली थी। उस भयावह अनुभव के बाद उसका सारा शरीर थरथरा रहा था। उसी समय किसी ने उसकी चादर खींचने की कोशिश की, जिससे उसने उस चादर को और भी मजबूती से पकड़ लिया। मगर अगले ही पल सामने वाले ने उसकी चादर खींचकर उससे अलग कर दी। परिधि एक चीख के
साथ उठी थी, जिसे किसी के मजबूत हाथों ने दबा दिया था। ख़ौफ से फटी हुई ऑखें जब उसने उसकी ओर घुमाई तो वो अनामिका थी।

"क्या हो गया?" अनामिका ने उसका सिर सहलाते हुए चिंता से पूछा।

जवाब में थर-थर काँपती हुई परिधि ने आईने की ओर इशारा किया था। अनामिका ने उस आइने को हैरानी से देखा और उसके पास गई। वहाँ उसके अक्स के अलावा और कुछ भी नहीं था।

"यहाँ तो कुछ भी नहीं है।" अनामिका ने परिधि की ओर देखते हुए कहा, जिस पर परिधि चौंकी थी। वो कुछ कहती उससे पहले ही दरवाजे पर दस्तक हुई। अनामिका ने एक नज़र उस पर डाली और फिर जाकर उसे खोला। बाहर अनंत कुमार खड़े थे।

"अंकल आप!" अनामिका इस समय उनको रहाँ देखकर चौंकी थी।

"परिधि कहाँ हैं?" अनंत कुमार ने अनामिका से पूछा।

"अंदर है!" अनामिका बोली।

"परिधि! यहाँ आओ!" अनंत कुमार ने कहा।

"क्या हुआ अंकल?" अनामिका ने परेशानी से पूछा।

"परिधि को खतरा है! उसे किसी सुरक्षित जगह में रखना होगा। अभी वो पिशाच फिर आया था। बड़ी मुश्किल से उसे हैंडल किया है।" अनंत कुमार ने ऑखेन फैलाकर कहा।

"क्या?" अनामिका चौंकी।
"हाँ! वो फिर हमला कर सकता है। उससे पहले परिधि को कहीं छिपाना होगा। परिधि तुम जल्दी आओ!" अनंत कुमार ने जल्दबाजी में कहा।

अनामिका ने परिधि की ओर देखा, जो ये सुनकर और भी डरा गई थी। वो तेजी से उठकर अनंत कुमार के पास आई।

"चलो!" अनंत कुमार ने परिधि से कहा।

"मैं भी चलती हूँ!" अनामिका ने कहा।

"नहीं! तुम रूको यहाँ। वो अगला हमला तुम्हारे कमरे में ही करेगा। हो सके तो तैयार रहना।" अनंत कुमार ने उसे चेतावनी देते हुए कहा। यह सुनकर अनामिका ने सहमति में अपना सिर हिलाया। अनंत कुमार तेजी से परिधि को अपने साथ लेकर चले गए।

****

रात का पता नहीं कौन सा पहर था, जब आशुतोष की नींद खुली थी। उसने अपने कान लगाए, तो किसी के तेजी से चलने की आवाजें सुनाई दी। अचानक ही उनका दिमाग पूरे शरीर के साथ चौकन्ना हो गया। उन्होंने अपनी मुट्ठी भींची और फिर अगले ही पल तेजी से पलटी मारकर उन पदचापों की ओर हमला किया और कोई तेजी से झटका खाकर गिरा था। आशुतोष ने फौरन लाइट जलाई और उस तरफ देखा। चैतन्य जमीन पर
गिरा हुआ अपना कंधा पकड़े हुए कराह रहा था।

"चैतन्य! तुम यहाँ नीचे क्या कर रहे हो?" आशुतोष हड़बड़ाकर उठा।

"पहले तो खुद हमला किया और अब बोल रहे कि मैं जमीन पर क्यों पड़ा हूँ?" चैतन्य चिढ़ भरी आवाज में बोला।

"तो वो तुम थे?" आशुतोष ने आश्चर्य से पूछा।

"तो इस समय और कौन होगा?" चैतन्य अपना हाथ झटकते हुए खड़ा हुआ।

"तुम्हें नींद नहीं आ रही है क्या?" आशुतोष भी खासा चिढ़ा था।

उसकी बात सुनकर चैतन्य उसके पास आकर बैठा और बोला, "नहीं आ रही।"

"तो क्या लोरी सुनाऊँ मैं तुम्हें?" आशुतोष अपना माथा पीटते हुए बोला।

"आप समझ नहीं रहे हैं। हे भगवान! इस बैरागी को कैसे समझाऊँ?" चैतन्य ने पहला वाक्य आशुतोष और दूसरा फुसफुसाते हुए खुद से कहा था। मगर दूसरी बात भी आशुतोष के कानों तक पहुँच गई थी, जिस पर उसने अपनी एक भौंह उठाई थी।

"तो फिर जो समझ सकती है... उसे जाकर समझाओ।"आशुतोष ने वापस लेटकर खुद पर चादर खींचते हुए कहा।

"जी!" चैतन्य चौंका।
"जी हाँ! और मेरी नींद बर्बाद मत करना।"कहते हुए आशुतोष ने लाईट बंद की और चादर सिर तक खींच ली।

चैतन्य कुछ देर उसे एकटक देखता रहा और जब उसे आशुतोष की बातों का मतलब समझ में आया,

तो उसके होंठों पर एक मुस्कान आई। वो तेजी से उठा और कमरे से बाहर निकल गया। बाहर पूरी तरह से अंधेरा और सन्नाटा छाया हुआ था। बाहर निकलते ही चैतन्य को एक अजीब से अहसास ने घेरा था, जिसकी वजह से उसने चारों ओर नज़रें भी घुमाई, पर कुछ भी संदेहास्पद दिखाई नहीं दिया। अपने सिर को झटकता हुआ वो आगे बढ़ा और फिर एक दरवाजे के सामने जाकर खड़ा हो गया। उसने एक भरपूर साँस ली और फिर दरवाजे पर दस्तक दी। कुछ ही देर में दरवाजा खुल गया और वो उसके सामने खड़ी थी।

अनामिका दरवाजे पर खड़ी अनंत कुमार और परिधि को जाते हुए देख रही थी। उसने अपनी एक कमान खींचकर उन्हें देखा और तेजी से अंदर गई। उसने अलमारी से परिधि की डायरी निकाली। कुछ तो था, जो उस डायरी में अलग हो रहा था।

"अंकल ने बिल्कुल सही कहा था।" अनामिका बुदबुदाई और उसकी ऑखें भर आई।
आधे घंटे पहले -

"अंकल! आपने मुझे बुलाया!" अनामिका ने स्टडी रूम में दाखिल होते हुए कहा। उसने कमरे में चारों ओर अपनी नज़रें दौड़ाई थीं, जहाँ उन दोनों के सिवा और कोई नहीं था।

"आओ अनामिका! बहुत जरूरी बात करनी है।" अनंत कुमार ने कहा।

"जी अंकल! कहिए!" अनामिका की आवाज गंभीर हुई थी।

"समय आ गया है!" अनंत कुमार ने कहा।

"समय आ गया है। नहीं! नहीं अंकल! अब तो हम सब साथ हैं ना! हम कोई ना कोई रास्ता खोज ही लेंगे। आप ऐसा मत कीजिए।" अनामिका रूंधे हुए गले से बोली।

"तुम सब जानती हो अनामिका! तुमसे क्या छिपा है? मैंने तृषा के साथ-साथ गीता को भी दस साल पहले ही खो दिया था। सच तो यही है कि यदि तृषा जल्दबाजी नहीं करती तो कम से कम आज वो हमारे साथ होती।" अनंत कुमार ने अनामिका से निराशा के साथ कहा।

"आपने मुझे बताया था कि आपको गीता पर शक है, पर ये शक कैसे और कब हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"आज से नौ साल पहले, जब मैंने अंजाने में गीता के कमरे में खून की
एक शीशी देखी थी और बाद में उसका सेवन करते देखा था। तृषा एक पिशाच थी, इसलिए गीता में उसके पैशाचिक गुण हैं। वो हमेशा से एक शुद्ध पिशाच है, पर तृषा ने उसके अंदर के पिशाच को कभी बाहर नहीं आने दिया। मगर दस साल पहले की उस घटना ने गीता के अंदर के पिशाच को उस पर हावी

कर दिया। उसने अपना वो रूप अंदर ही अंदर मजबूत किया था, पर पाँच साल पहले गलती से उसका ये रूप मेरे सामने आ गया। उसे ये पता नहीं चला, इसका मैंने फायदा उठाया और उसे अपनी निगरानी और सुरक्षा में रखा। पर उसने कभी कुछ किया नहीं। वो शांत ही रही और मुझे लगता है कि शायद वो सही समय का इंतजार कर रही थी। इसलिए मैंने भी उसे नहीं छेड़ा। मैं नहीं चाहता था कि मेरी हड़बड़ाहट कोई बड़ी ग़लती कर दे। उस पर उस पिशाच का क्या प्रभाव पड़ा था, ये भी तो पता नहीं है।"

"पर अंकल! जब आप शुरू से ये सब जानते थे, तो पहले से ही कुछ करना था।" अनामिका ने कहा।

"किया तो! तुम्हें इस सब में शामिल किया। मैंने कभी तुम्हें गीता और वरूण से कम नहीं समझा अनामिका और तुमने भी मेरे प्यार को उतना ही मान दिया। मेरे कहने पर तुम इस आग में कूदी और चित्रलेखा की शक्तियों को ग्रहण किया। हमें अपने उद्देश्य को पाने के लिए चित्रलेखा की शक्तियाँ चाहिए थी। वो एक ऊँचे दर्जे की जल रक्षक थी, जिसकी शक्तियाँ कभी भी सही तरीके से इस्तेमाल नहीं हो पाईं क्योंकि उसे इसकी जरूरत थी ही नहीं। चित्रलेखा समय द्वार बना सकती थी क्योंकि ये उसके खून में था। हार्लिन भी ये कर सकती थी और अब.... तुम कर सकती हो।" अनंत कुमार ने अनामिका से कहा।

"पर गीता!" अनामिका ने बात पूरी नहीं की।

"उसे जाना होगा। हर हाल में जाना होगा!" अनंत कुमार ने भरी ऑखों से
कहा।

"आप ऐसा कैसे कह सकते हैं अंकल! आपकी बेटी है वो!" अनामिका ने तड़प कर कहा था।

"और श्रापित भी है वो। मुझे नहीं पता कि वो उसका इस्तेमाल कैसे करेगा, पर जरूर करेगा और इसी कोशिश में वो हमारे रडार में आएगा क्योंकि मुझे नहीं लगता कि सतवृक्ष उस पिशाच की जानकारी हमें दे सकता है।" अनंत कुमार ने कहा।

"क्यों नहीं दे सकता है?" अनामिका ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"क्योंकि वो पिशाच से संबद्ध है। वो कोई आम ताकत नहीं है। छल है वो.... छल! इसी वजह से वो कभी किसी की पकड़ में नहीं आया और अब भी नहीं आएगा। वो जब तक सामने नहीं आएगा, कुछ पता नहीं चल सकता। इसलिए गीता को जाना ही होगा। उसका जीवन भी तभी श्रापमुक्त हो सकता है।" अनंत कुमार ने बहुत ही भारी मन से कहा।

"पर अंकल! क्या सचमुच कोई और रास्ता नहीं है?" अनामिका ने तड़पकर कहा।

"नहीं! एक रक्षक बनना आसान नहीं है अनामिका! हो सके तो खुद को भी तैयार रखो। आगे कुछ भी हो सकता है। जान देने का भी मौका आए तो पीछे नहीं हटना है।" अनंत कुमार ने कहा।

"पर आपने सबको ये क्यों नहीं बताया?" अनामिका ने महत्वपूर्ण सवाल उठाया।

"तुम और मुकुल शुरू से मेरे साथ हो, इसलिए तुम दोनों ये बात जानते

हो। गीता की सच्चाई जिस दिन मेरे सामने आई थी, मैं कई रातों को सो नहीं सका। मुझे मालूम है कि मैंने कितनी मुश्किल से ये फैसला लिया है अनामिका। जब ये मेरी बर्दाश्त से बाहर है, तो तुम्हें क्या लगता है कि वरूण ये बर्दाश्त कर पाता। वो हर पल अपनी बहन की आने वाली मौत को स्वीकार कर पाता। सच तो यही है कि मुझे ये भी यकीन नहीं था कि वरूण कभी रखवाला बन सकेगा। कई बार उसकी माँ के लक्षणों को मैंने उसके अंदर उभरते देखा था, जिससे वो हमेशा ही अनजान रहा। इसलिए मैं उसे इस सबसे दूर रखना चाहता था। अभी भी इस बात का खुलना वरूण को तोड़ सकता है। आशुतोष और सृष्टि समझदार हैं और वो बदलती हुई परिस्थितियों से सामंजस्य बिठा सकने वाले हैं। बचा बस चैतन्य! मुझे उसका चयन अभी भी समझ में नहीं आ रहा है। हालांकि उसने कई बार खुद को साबित किया है, पर मैं उस पर पूरी तरह से आश्रित नहीं रह सकता। उसमें कुछ तो ऐसा है जो मुझे खटकता है। पता नहीं क्या?" अनंत कुमार ने कहा।

चैतन्य के लिए यह सब सुनकर अनामिका को अच्छा तो नहीं लगा, पर वो कुछ कह नहीं सकती थी। पर ना जाने क्यों उसने अनंत कुमार ने चिंता से भरे चेहरे की ओर देखा और फिर बोली, "नियति पात्र ने चुना है, तो कुछ तो होगा उसमें।"

अनंत कुमार ने उसकी ओर देखा और मुस्कुराए।

"तुम्हें बुरा लगा?" अनंत कुमार ने अनामिका से कहा। उनकी इस बात पर अनामिका ने अपना सिर झुका लिया।

"मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम्हारा यकीन ना टूटे। वो एक बहुत अच्छा लड़का है।" अनंत कुमार की तारीफ ने अनामिका के दिल को राहत पहुँचाई थी।
"अंकल! एक बात पूछूं?" अनामिका ने कहा।

"हाँ! पूछो!" अनंत कुमार ने जवाब दिया।

"ये नियति पात्र चुनती कैसे है रक्षकों को?" अनामिका ने पूछा।

"मैंने पहले ही बताया है कि नियति पात्र समस्या आने पर ही रक्षक चुनती है और उनमें एक महत्वपूर्ण बात ये होती है कि पुराने रक्षक और नए रक्षक के बीच एक मानसिक संबंध होता है। जैसे कि तुम अभी जल रक्षक हो, तो तुम उन सभी जल रक्षकों से मानसिक रूप से जुड़ सकती हो, जो पहले थे। और ऐसा सभी रक्षक कर सकते हैं। बस इसमें एक समस्या आती है।" अनंत कुमार ने कहा।

"कैसी समस्या?" अनामिका ने पूछा।

"ये समस्या कि इस तरह के संबंध में जो रक्षक ज्यादा शक्तिशाली होता है, वो दूसरे रक्षक के दिमाग से खेल सकता है। यानि कि शक्तिशाली रक्षक चाहे वो जीवित हो या ना हो, जब मानसिक ताकत की बात आए तो वहीं अग्रणी रहता है।"अनंत कुमार ने कहा।

"तो मुझसे पहले नियति पात्र ने किसे जल रक्षक चुना था?" अनामिका ने पूछा।

"तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र को! उसके बाद से वो जगह ख़ाली ही थी क्योंकि ऐसा कोई मौका आया ही नहीं।" अनंत कुमार ने बड़ा खुलासा करते हुए कहा।

"जी!" अनामिका ने बेयकीनी से कहा।
"हाँ अनामिका! तुम अगर सही तरीके से अपनी शक्तियों का प्रयोग करो, तो तुम तांत्रिक श्रेष्ठ से जुड़ सकती हो।" अनंत कुमार ने कहा।

"पर वो तो...."

"जीवित नहीं हैं! है ना! रक्षक इस मामले में अलग होते हैं। वो भले ही जीवित ना हों, पर उनका मन हमेशा नियति पात्र में सुरक्षित होता है। फिर उसी के मेल का रक्षक नियति पात्र चुनती है।" अनंत कुमार ने समझाते हुए कहा।

"आपने ये दूसरों को बताया?" अनामिका ने पूछा।

"हाँ! तुमसे पहले हम सब इस पर चर्चा कर चुके हैं। परिधि के सामने ये चर्चा नहीं हो सकती थी, इसलिए तुम्हें उसके साथ भेज दिया था।" अनंत कुमार ने कहा।

"और वरूण, मुकुल और अंकित जो कागज लेकर आए थे। उनका क्या?" अनामिका ने पूछा।

"उनसे भी बहुत सारी जानकारियाँ मिली हैं।" अनंत कुमार ने कहा।

"जैसे!"

"वरूण जो कागज लेकर आया है, उसमें उन सभी ट्रस्टीज के नाम हैं, जिनके नाम के आगे अल्फ्रेड लगा हुआ है और आश्चर्य की बात ये है कि इन सभी की मृत्यु खून की कमी से हुई है और इस पिशाच के यहाँ रहने के दौरान ही हुई है। तो तुम इससे क्या समझ रही हो?" अनंत कुमार ने अनामिका से सवाल किया।
"खून की कमी! वो क्यों? क्या किसी ने पी लिया उनका खून?" अनामिका ने सवाल की शक्ल में जवाब दिया।

"हम्म! नजदीक तो हो तुम! पर ऐसा क्यों हो रहा है, ये नहीं पता है।" अनंत कुमार ने कहा।

"तो क्या वो पिशाच अपने ही लोगों का खून पी रहा है?" अनामिका ने एक संभावना जताई।

"मुकुल के पिता ने भी ऐसी आशंका जताई थी। वो अगर होते, तो हम इतने लाचार नहीं होते।" अनंत कुमार ने अफसोस से कहा।

"और मुकुल क्या लेकर आया था?" अनामिका ने पूछा।

"वो जो कागज लाया है, उसे पढ़ना हमारे बस का नहीं है। वो पैशाचिक भाषा में लिखा हुआ है। अब सतवृक्ष ही इसे पढ़ने में मदद कर सकता है। इसमें कुछ तस्वीरें भी हैं और एक अजीब बात ये है कि अंकित के भाई के पास भी कुछ तस्वीरें थीं। ये दोनों तस्वीरें मिलती-जुलती हैं। मुझे लग है कि ये तस्वीरें बहुत कुछ बोल सकती हैं।" अनंत कुमार ने कहा।

"कौन सी तस्वीरें?" अनामिका ने कहा।

"ये!" कहते हुए अनंत कुमार ने कुछ तस्वीरें अनामिका के सामने बढ़ाई।

अनामिका ने उन तस्वीरों को पकड़ा और उसे देखा। वो बहुत पुरानी हाथ से बनाई गई तस्वीरें थीं, जिसमें बहुत सारे लोग थे। अनामिका ने असमंजस से उस तस्वीर को देखा, मगर उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया।
"ध्यान से देखो इस तस्वीर को। ये तस्वीर आज से दो सौ साल पुरानी है। इसमें ये जो आदमी बीच में बैठा हुआ है, वो है 200 साल पुराना विलियम अल्फ्रेड वॉकर! इसी के बेटे एडवर्ड ने इस हॉस्पिटल की स्थापना की थी और यही हॉस्पिटल बहुत कुछ खुद में छिपाए हुए है। वो सतवृक्ष उस पिशाच के बारे में नहीं बता सकता, पर उसके मददगारों के बारे में जरूर बता सकता है। कोई है? कोई ऐसा किरदार, जो हमसे छूट गया है।" अनंत कुमार ने कहा।

"प्रोफेसर साहनी!" अनामिका ने कहा।

"नहीं! मुकुल और सृष्टि ने बताया कि प्रोफेसर साहनी इतने सक्षम नहीं हैं। वास्तव में वो एक बहुत ही कमजोर पिशाच हैं, जिसने शक्ति लालसा में सब कुछ बिगाड़ कर रख दिया है। वो क्या चाहते हैं, अभी भी समझ से परे है। पर कुछ तो ऐसा है, जो उनकी जानकारी में है। मैंने इन दो दिनों में सृष्टि और मुकुल को उस आदमी पर नज़र रखने के लिए कहा है। उसे भी परिधि चाहिए। जाहिर सी बात है कि उस पिशाच के लिए। पर एक बार खटक रही है मुझे।" अनंत कुमार ने कहा।

"और वो क्या?" अनामिका ने पूछा।

"अगर पिशाच समुदाय के लोग परिधि को उस पिशाच के लिए हासिल करना चाहते हैं, तो वो पिशाच खुद यहाँ क्यों आया था? मतलब कि जब उसका काम करने के लिए लोग मौजूद हैं, तो वो क्यों खुद को हमारे सामने आम कर रहा था। वो आराम से अपनी खोह में छिपकर बैठ सकता था। " अनंत कुमार ने अपना सवाल सामने रखा।

"आपको क्या लगता है?" अनामिका ने पूछा।

"यही कि हम जो सोच रहे हैं, वैसा नहीं है। मैंने कहा ना कि कोई है, जो
हमसे छूट रहा है। कोई है, जो इस पिशाच की आड़ में अपना ही खेल खेल रहा है। पर कौन? भला एक शक्तिशाली छद्म पिशाच आम लोगों की मदद क्यों लेगा? वो पिशाच कुछ नहीं छिपा रहा है। कोई और है, जो सब छिपा रहा है।" अनंत कुमार ने एक नई समस्या रखी।

"आपका मतलब है कि समस्या एक नहीं.... दो है!" अनामिका बुरी तरह से चौंकी थी।

"हाँ! और उस दूसरी समस्या को हमें कल तक खोजना ही होगा। वरना हम कभी कामयाब नहीं हो पाएँगे।" अनंत कुमार ने चिंतित स्वर में कहा।

"पर अंकल आप ये सब बस मुझे इस तरह अकेले में ही क्यों बता रहे हैं? दूसरो के साथ क्यों नहीं?" अनामिका ने ऑखों में हैरानी भरकर पूछा।

"क्योंकि वो पिशाच अग्नि रक्षक है।" अनंत कुमार ने चौंकाने वाली बात कही।

"क्या? फिर तो हम उसे ढूंढ सकते हैं! रक्षकों के इतिहास में।" अनामिका उत्साह से बोली।

"इतिहास उन्हीं रक्षकों का होता है, जिन्हें नियति पात्र चुनती है और ये अग्नि रक्षक उत्तम दर्जे का होकर भी चुना नहीं गया, जैसे कि चित्रलेखा। चित्रलेखा को कभी भी अपनी शक्तियों का भान नहीं था, इसलिए वो शक्तियाँ उसके अंदर ही दबी रह गईं। मगर जब तुमने उसकी शक्तियों को ग्रहण किया, तो तुम्हें उन शक्तियों का भान था, इसलिए नियति पात्र ने तुम्हें चुना, पर चित्रलेखा को नहीं। समझ में आई बात!" अनंत कुमार ने एक बार फिर से अनामिका को बात समझाई।

"आपका मतलब है कि वो पिशाच चित्रलेखा की तरह था। उसे अपनी
शक्तियों का भान बाद में हुआ। शायद... पिशाच बनने के बाद। उसे भी नियति पात्र ने योग्य होने पर भी नहीं चुना क्योंकि चित्रलेखा की तरह वो भी अपनी शक्तियों को मानसिक रूप से इस्तेमाल नहीं कर सकता था और रक्षक अपनी सभी शक्तियों को मानसिक क्षमता से ही इस्तेमाल कर सकते हैं। सही कहा मैंने?" अनामिका ने अपनी राय रखी।

"बिल्कुल सही! इसलिए नियति पात्र के द्वारा चुने गए सभी पुराने और नए रक्षक मानसिक रूप से जुड़े हुए होते हैं और आपस में एक दूसरे की मदद कर सकते हैं।" अनंत कुमार ने कहा।

"तो क्या उस पिशाच के अग्नि रक्षक होने से कोई समस्या है। अग्नि रक्षक होने के कारण वो मुकुल को प्रभावित कर सकता है। दूसरों को नहीं!" अनामिका ने कहा।

"यही तो समस्या है कि वो पिशाच अग्नि रक्षक होने के नाते सिर्फ मुकुल ही नहीं, बल्कि छद्म पिशाच होने की वजह से सभी के मस्तिष्क में घुस सकता है, उन्हें कंट्रोल कर सकता है। सिवाए तुम्हारे!" अनंत कुमार ने एक नई जानकारी देते हुए कहा।

'सिवाए मेरे!" अनामिका चौंकी।

"हाँ! क्योंकि आग और पानी दुश्मन होते हैं। आग कभी भी पानी को कंट्रोल नहीं कर सकता, इसलिए वो तुम्हारे दिमाग में नहीं घुस सकता। समझी!" अनंत कुमार ने उत्साह से कहा।

"इसलिए आप मुझे सब बताते हैं। दूसरों को नहीं!" अनामिका बोली।

"हाँ अनामिका! वो तुम्हें कंट्रोल नहीं कर सकता, इसलिए उससे लड़ने का प्लान तुम्हें बनाना पड़ेगा और सब अपने तक ही सीमित रखना होगा।
ये समझ लो कि मैं तुम्हें इस मिशन का लीडर बना रहा हूँ, जिसकी बात सबको माननी होगी और ये बात मैं सबसे कह चुका हूँ।" अनंत कुमार ने अनामिका को उत्तरदायित्व सौंपते हुए कहा।

"पर अंकल मैं!" अनामिका यह सुनकर थोड़ा घबराई थी।

"हाँ तुम अनामिका! तुम! तुम्हारे पास अपना तेज दिमाग है और चित्रलेखा की शक्तियाँ हैं। तुम्हें याद नहीं कि उस पिशाच से मेरी जान तुम्हीं ने बचाई थी। एक तुम ही हो जो सब संभाल सकती है और एक

तुम ही हो, जिसकी बात सब सुन सकते हैं। खुद को पहचानो! तुम ही वो हो, जो इस कालचक्र के रहस्य को सुलझा सकती है। बस तुम्हें अपने साथियों के सामने पूरे हौसले और संयम के साथ रहना है। हमें उस दूसरे अपराधी को भी पकड़ना है, जिसने सब उलझाया है और ये तभी हो सकता है, जब सब कुछ तुम्हारे दिमाग में हिफाजत से रहे क्योंकि दूसरे के दिमाग में बात जाते ही उस पिशाच को पता चल जाएगी और वो इसका फायदा उठा सकता है। ये हमें होने नहीं देना है। अब एक तुम ही हो, जो सब संभाल सकती हो।" अनंत कुमार ने आग्रह भरे शब्दों में कहा।

अनामिका ने अनंत कुमार की उम्मीद भरी ऑखों में देखा और अगले ही पल उसने सब कुछ अपनी निगरानी में करने का जिम्मा उठा लिया। उसके इस कदम ने अनंत कुमार को खुश किया था। बहुत खुश! अनामिका की हामी मिलते ही अनंत कुमार ने उसे दो धागे दिए।

"ये धागे मैंने सबको दे दिए हैं। ये सृष्टि यानि कि नभ रक्षक की शक्तियों से बंधे हुए हैं। ये तुम सबको हमेशा आपस में जोड़े रखेंगे, चाहे तुम अलग ही क्यों ना हो जाओ। इसकी मदद से तुम सब एक-दूसरे को आसानी से खोज सकते हो। इसमें से एक परिधि के लिए भी है और ये उसके पैरों में बांधना।" अनंत कुमार ने एक धागा अनामिका के हाथ में बांधते हुए कहा।
"पैरों में क्यों?"

"क्योंकि पैर जमीन से जुड़े होते हैं। यदि हमने परिधि को खो भी दिया , तब आशुतोष यानि पृथ्वी तत्व की शक्ति हमें आसानी से परिधि तक पहुँचा देगी। हमें हर हाल में आपस में जुड़े रहना होगा, क्योंकि जब तक वो पिशाच सामने नहीं आएगा रक्षकों को उसका आभास भी बहुत हल्के रूप में ही होगा और जिसे पहचानना मुश्किल ही होगा। इसलिए गलतियाँ होने की गुंजाइशें बहुत ज्यादा हैं। और इसलिए यदि कोई हमारी टीम के किसी सदस्य पर हमला भी कर देता है तो ये धागे हमारे लिए मददगार होंगे।" अनंत कुमार ने कहा।

"समझ गई अंकल!" अनामिका ने कहा।

"क्या?"

"यही कि सही और ग़लत की इस लड़ाई में अगर आप अपना दिल कड़ा करके अपनी बेटी का ही बलिदान देने को तैयार हैं, तो हम भी पीछे नहीं हटेंगे। मैं आपसे वादा करती हूँ कि इस पूरे मिशन में आप मुझे कहीं भी विचलित नहीं पाएँगे, चाहे इस संघर्ष में हमें कोई भी कीमत देनी पड़े। मैं आपकी उम्मीदों को टूटने नहीं दूंगी।" अनामिका ने आत्मविश्वास से लबरेज होकर कहा। अनंत कुमार ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा और फिर उसके माथे को चूम लिया।

"याद रखना कि अभी उस पिशाच पर हमला नहीं करना है। हमें पहले उस गुनहगार को ढूंढना है, जिसने सब उलझाया है। पहले उसे निपटाना होगा, तभी हम इस पिशाच से पार पा सकेंगे। हमें अपने रक्षकों को कुछ बताए बिना उनका विश्वास भी जीतना है और मुझे पता है कि ये तुम कर लोगी। आखिर चित्रलेखा और तांत्रिक श्रेष्ठ की वारिस हो तुम! तुमसे बेहतर और कोई नहीं है।" अनंत कुमार ने अनामिका के दोनों हाथों को पकड़कर कहा।

अनामिका ने हामी भरते हुए अपना सिर हिलाया। जंग अब शुरू हो चुकी थी और रक्षकों का सेनानायक भी चुना जा चुका था। बस दूसरी लड़ाईयों से ये इसलिए अलग था कि अनामिका की भूमिका बहुत

जटिल होने वाली थी। उसे अपनी टीम को अपने विश्वास में लेना था। ऐसे विश्वास में, जहाँ सभी उस पर ऑखें मूंदकर विश्वास करें और ये थोड़ा मुश्किल होने वाला था। मगर अनामिका को सेना नायक होने की भूमिका अदा करनी ही थी। हर हाल में... हर कीमत में!

नियति की कहानी अब एक नया मोड़ लेने को तैयार थी, जिसमें सभी के हिस्से में एक-एक अध्याय लिखने का मौका लिखा था। वे सब जानते थे कि जो हो रहा है, वो पहले से तय है और उसे बदलने नहीं देना है, पर कोई तो था, जो ये सब बदलना चाहता था। वो कौन था? अल्फ़ी या फिर.... कोई और....!

मंजुला विला से वापस लौटते समय सृष्टि और मुकुल अलग हो गए थे। वो बहुत ही ऐहतियात बरत रहे थे। बस दो दिनों की बात और थी। उसके बाद सब ठीक हो जाने की पूरी उम्मीद थी। सबसे पहले सृष्टि घर जाकर सीधे प्रोफेसर साहनी के पास पहुँची। वो स्टडी रूम में किसी गहरी सोच में गुम थे।

"चीफ!" सृष्टि ने अपने पहुँचने का ऐलान किया।
"आओ सृष्टि! और क्या हाल खबर है? बताओ!" प्रोफेसर साहनी ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"सब ठीक चल रहा है। मैंने उनसे हाथ मिला लिया है क्योंकि उन्हें मुझ पर शक हो गया था।" सृष्टि ने कुटिलता से मुस्कुराते हुए कहा।

"बढ़िया! और उनके तरफ क्या प्रगति हुई है?" प्रोफेसर की ऑखें चश्मे के पीछे से चमकी थीं।

"उनके हाथ अभी तक कुछ भी नहीं लगा है। बस एक नाम 'अल्फ़ी' ही है, जो हवाओं में बेआवाज गूंज रहा है। पता चला है कि कई बार हमला भी कर चुका है वो" सृष्टि ने अपने कंधे उचकाते हुए कहा।

यह सुनते ही प्रोफेसर साहनी के चेहरे पर चिंता के बादल घुमड़ने लगे। वो बेचैनी से इधर-उधर चहलकदमी करने लगे। उनके चेहरे की घबराहट सृष्टि की समझ में बिल्कुल भी नहीं आ रही थी। कुछ देर तो उसने प्रोफेसर साहनी की इस बेचैनी को अपनी ऑखों में उतारा और फिर अपने अंदर के सवाल को बाहर निकालने आगे बढ़ी।

"एक बात पूछूं आपसे?"

"हँ! हाँ... हाँ! पूछो!" प्रोफेसर साहनी ने उलझे हुए लहजे में जवाब दिया।

"मुझे एक बात समझ में नहीं आ रही है!" सृष्टि ने कहा।

"वो क्या?" प्रोफेसर साहनी ने इस बार सृष्टि के चेहरे पर नज़र डालते हुए पूछा।
"हम उस परिधि को पाने की इतनी कोशिशें क्यों कर रहे हैं, जबकि वो खुद भी इसी प्रयास में है। आखिर हम उससे ज्यादा ताकतवर तो हैं नहीं और ना ही वो इतना कमजोर है.... कि उसे हमारी मदद की जरूरत पड़े। तो इतनी मेहनत आखिर क्यों?" सृष्टि ने प्रोफेसर साहनी से पूछा।

"ये जानने की जरूरत तुम्हें नहीं है। तुम्हें जो काम मिला है, वही करो। जब हम सारे पिशाच इस श्राप से

मुक्त हो जाएँगे तो इसका श्रेय और सम्मान तुम्हें भी मिलेगा। अब तुम जा सकती हो!" प्रोफेसर साहनी ने बहुत ही रूखे लहजे में कहा।

यह सुनते ही सृष्टि के अंदर जिल्लत का खंज़र कहीं अंदर उतरा था। उसने इस आदमी पर ऑख मूंदकर यकीन करके क्या-क्या नहीं किया, पर इस नीच आदमी ने कभी भी प्यार के दो बोल उससे ना बोले। अपमान से उसका चेहरा लाल हो गया था, जिसे उसने बड़ी मुश्किल से प्रोफेसर साहनी से छिपाया था। अचानक ही उसे अपने सिर पर हाथ फेरते हुए डॉ. अनंत याद आ गए। उसकी ऑखों ने पानी की पतली सी चादर ओढ़ी ही थी कि तभी ऑखों को मिचमिचाकर उसने उस चादर को दूर हटाया था। वो थोड़ा सा पीछे हटी और फिर मुड़कर दरवाजे की ओर बढ़ गई। दरवाजे की तरफ बढ़ते-बढ़ते उसने पीछे मुडकर देखा। प्रोफेसर साहनी एक बार फिर खुद में ही खोए हुए थे और उनकी पीठ सृष्टि की ओर थी। उन्हें इस तरह लापरवाह देखकर सृष्टि ने तेजी से अपनी उंगली में पहनी हुई अंगूठी के नग को हल्के से दबाया और दूसरे हाथ से स्टडी के दरवाजे को तेज आवाज के साथ खोला और फिर उसी तरह से बंद भी कर दिया। इससे दो बातें एक साथ हुई। पहला प्रोफेसर साहनी की सृष्टि के वहाँ से चले जाने का धोखा हो गया और अंगूठी के नग को दबाते ही उसमें से एक हल्की सी रोशनी निकली, जिसने एक पल में ही सृष्टि के पूरे शरीर को अपनी गिरफ्त में ले लिया।

"सृष्टि!" पीछे से आई प्रोफेसर साहनी की आवाज सुनकर सृष्टि सकते में
आ गई। उसने धीरे से मुड़कर प्रोफेसर साहनी की ओर देखा, जो उसे ही देख रहे थे। अचानक वो दरवाजे की ओर आगे बढ़े और फिर उसे नज़र अंदाज़ करते हुए उसके बगल से निकल कर दरवाजे को खोला और कुछ देर बाहर की ओर देखते रहे। सृष्टि को आश्चर्य हुआ कि वो आखिर किसे देख रहे हैं? अच्छी तरह तसल्ली करने के बाद उन्होंने दरवाजा बंद किया।

और फिर एक गहरी साँस छोड़ते हुए बोले, "चली गई! उसके आने का भी समय हो रहा है। मुझे जल्दी करना होगा।"

यह कहकर वो तेजी से अपनी मेज की ओर बढ़े। सृष्टि की ऑखें हैरानी से फट गईं। उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर उन्हें घूर-घूरकर देखा और फिर अपने पूरे शरीर को अपने हाथों से टटोला। वो वहीं थी, अपने पूरे वजूद के साथ। मगर प्रोफेसर साहनी उसे नहीं देख सके। अचानक ही उसके होंठ टेढ़े हुए और उनके बीच से एक मुस्कुराहट बाहर निकली। अंगूठी का जादू काम कर गया था। वो गायब थी। अब वो तेजी से एक बुक सेल्फ के पीछे छिपी क्योंकि प्रोफेसर साहनी जरूर उसे नहीं देख पा रहे थे, मगर उन्होंने जिसके भी आने की बात की थी, शायद वो उसे देख ले।

प्रोफेसर साहनी ने चारों ओर नज़रें फिराईं, जैसे कि कोई चोरी करने जा रहे हों। वो आगे बढ़े और फिर अपनी मेज पर तीन बार हाथ मारा। सृष्टि ने देखा कि वो मेज बीच से बँटकर अपनी जमीन के साथ दाईं और बाईं सरकने लगा। सृष्टि की ऑखें हैरत से फटी रह गईं। इतने साल प्रोफेसर साहनी के साथ रहने और इस स्टडी में समय बिताने के बाद भी उसे इसकी जानकारी नहीं थी। यह सब देखकर उसके कानों में डॉ. अनंत के बोल गूंजने लगे,

"सृष्टि! प्रोफेसर साहनी कुछ तो छिपा रहे हैं। जैसा कि उन्होंने तुम्हारे सामने जताया है कि वो विक्टर अल्फ्रेड के लिए ये सब कर रहे हैं। पर
मुझे ऐसा नहीं लगता है। कोई और ही खेल चल रहा है। पर उसे खेलने वाला कौन है? ये तुम्हें पता करना होगा क्योंकि एक तुम ही हो जो ये कर सकती हो। अगर छिपने की जरूरत पड़े, तो अपनी अंगूठी के नग को दबा देना।"

सब याद आते ही सृष्टि ने एक गहरी साँस ली और फिर प्रोफ़ेसर साहनी की ओर देखा, जो मेज के दोनों हिस्सों के सरकने के बाद बने गड्ढे में उतर रहे थे। सृष्टि तेजी से दौड़कर वहाँ पहुँची और उस गड्ढे के अंदर देखा। अंदर की ओर उतरती हुई सीढ़ियाँ साफ-साफ दिखाई दे रही थीं। उसी समय उसने मेजों के हिस्सों को वापस अपनी जगह में आते देखा। वो तेजी से उन सीढ़ियों से नीचे उतरी। थोड़ा नीचे पहुँचते ही वो सीढ़ियाँ खत्म हो गईं और सामने एक अंधकार में डूबा हुआ गलियारा दिखाई दिया। वो समय गँवाए बिना उसी गलियारे में तेजी से आगे बढ़ी। उसकी ऑखों के सामने गहरा अंधकार छाया हुआ था। फिर भी वो तेजी से अनुमान लगाते हुए आगे बढ़ रही थी और आखिर कार रोशनी की एक हल्की सी झलक उसकी ऑखों से टकराई। आगे बढ़ने के साथ -साथ वो रोशनी घनी होती गई और आखिर कार वो एक गोलाकार आकृति के एक कमरे में पहुँची, जिसके ऊपरी हिस्से में एक ओर एक बड़ी सी खुली खिड़की थी। सृष्टि ने बहुत अनुमान लगाया, मगर उसे समझ नहीं आया कि ये घर का कौन सा हिस्सा है? वो अभी इसी सोच में ही थी कि तभी उसने प्रोफेसर साहनी को एक कटोरे में कुछ भरते देखा जो दूर होने की वजह से समझ में नहीं आया। वह गौर से उनकी सारी गतिविधियों को देख रही थी, जो उसकी समझ में तो बिल्कुल भी नहीं आ रही थीं।

प्रोफेसर साहनी ने उस कटोरे को उठाया और फिर उसे बीचों-बीच रखे एक गोलाकार स्टूल के ऊपर रख दिया। अब उन्होंने अपनी जेब से एक चाकू निकाला और फिर उसकी नोक से अपने सीधे हाथ के अंगूठे पर एक कट लगाया। खून की धार उस कट से बह निकली, जिसे प्रोफेसर साहनी
ने उस कटोरे के ऊपर ले जाकर उसमें रखी चीज में मिला दिया। उनका खून मिलते ही उस कटोरे में से एक काला धुआं निकला जो ऊपर उठकर उड़ता हुआ उसी खुली खिड़की से बाहर निकल गया।

कुछ देर बाद ही उस खुली खिड़की के बाहर उसे पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई विशालकाय पंछी अपने पंख फड़फड़ा रहा हो। पर रात के इस समय ऐसा कौन सा पक्षी हो सकता है था जो अपना घोंसला छोड़कर यहां आया हो। सृष्टि की ऑखें हर बढ़ते समय के साथ आश्चर्य की एक नई सीमा लांघ रही थीं और फिर उसकी ऑखों ने वह देखा जो शायद उस आश्चर्य की आखिरी सीमा थी।

उसके सामने एक छद्म पिशाच हवा में अपने पंखों के सहारे उड़ रहा था।

****

आशुतोष, चैतन्य और वरूण के कहने पर अंकित उस रात वहीं रूक गया था। सतवृक्ष का रोपण करने के बाद वो सभी आशुतोष और चैतन्य के रूम में ही थे। चैतन्य अभी परिधि के साथ उसके कमरे में था क्योंकि अनंत कुमार ने अनामिका को अपने कमरे में बुलाया था और परिधि को अकेला छोड़ना कहीं से भी उचित नहीं था।

"तो इसका मतलब है कि अनामिका हमारी लीडर होगी। आप सभी को क्या लगता है कि क्या वो ऐसा

कर सकती है?" अंकित अभी भी अनामिका को लेकर संशय में था।
"अगर पापा ने चुना है तो वो जरूर कर सकती है।" वरूण ने अनंत कुमार के निर्णय का समर्थन करते हुए कहा।

"वो सब छोड़ो! मेरे पास कुछ और भी सवाल हैं, जिनके जवाब दिलचस्प हो सकते हैं।" आशुतोष ने अपने होंठों पर अपनी एक तर्जनी उंगली रखते हुए कहा।

"और वो क्या?" वरूण ने पूछा।

"यही कि अंकित और इसका परिवार इन सब में कैसे फँस गया। मतलब कि हम सब यहाँ क्यों हैं ये तो हमें पता है, पर अंकित क्यों है? ये ना तो रखवाला है, ना ही रक्षक और ना ही हमारी दुनिया से इसका दूर-दूर से कोई रिश्ता है।" आशुतोष ने अंकित की ओर देखते हुए कहा।

"मेरे भैया के कारण! उन्हें और उनकी फैमिली को उस पिशाच ने ही मारा था। मैंने अपने कानों से सुना था।" अंकित ने जवाब दिया।

"और क्यों मारा?" आशुतोष ने सवाल किया।

"उन्हें सबूत मिल गए थे... शायद इसीलिए!" अंकित ने जवाब देते हुए कहा।

"वही तो बात है कि हमें एक-एक चीज जुटाने में इतनी मशक्कत करनी पड़ रही है, तो तुम्हारे भैया को ये सारे सबूत कहाँ से मिल गए? और अगर सबूतों की वजह से मारा, तो बस उन्हें मारते। उनकी पत्नी और नवजात बच्ची को क्यों मारा? क्या इस ओर किसी ने सोचा?" आशुतोष ने उन दोनों की ओर देखते हुए कहा।
"हाँ! बात तो आपकी सही है। उन्हें ये सब कहाँ से मिला?" इस बार वरूण ने भी अंकित की ओर देखते हुए कहा।

"अब ये तो मुझे नहीं पता। बस इतना जानता हूँ कि मेरी भाभी बच्चे की चाहत में किसी की ग़लत सलाह मान बैठी थी और उनके कमरे से कुछ अजीब किताबें भी मिली थीं। मैंने आप सबको ये बताया भी था (भाग-29)। मुझे लगता है कि इसी वजह से ये सब हुआ हो।" अंकित ने जवाब दिया।

"मतलब कि कोई और भी था, जो तुम्हारी भाभी को ये सब करने के लिए उकसा रहा था और शायद ये वही है जिसके बारे में डॉ. अनंत ने हमसे थोड़ी देर पहले कहा था कि शायद ये सब अल्फ़ी नहीं कोई और कर रहा है। पर कौन? कौन है वो... जिसने ये किया होगा और क्यों?" आशुतोष ने कहा।

"पर पापा को और आपको ऐसा क्यों लग रहा है कि कोई और भी है?" वरूण ने सवाल किया।

"वरूण सारी घटनाओं के बारे में सोचो और समझो। अल्फ़ी हर दस साल में आता है। उस समय बच्चे गायब होते हैं और वो जाते-जाते एक बलि भी लेकर जाता है। अब ये सोचो कि दस साल पहले बलि के लिए गीता को चुना गया था, जिसकी जान के बदले में तुम्हारी माँ ने अपनी कुर्बानी दी थी, तो फिर अंकित के भैया उनकी पत्नी और बच्ची को किससे बचा रहे थे? सोचो जरा! कोई तो ऐसी कड़ी है, जो बीच से निकल गई है और पकड़ में नहीं आ रही है। और... मुझे लगता है कि ये कड़ी हाथ आई तो बहुत कुछ सुलझ सकता है। तुम सबने उस दिन देखा था, जब उस पिशाच ने डॉ. अनंत पर हमला

किया था। उसने खुद को छिपाने की कोई कोशिश की ही नहीं और वो तो खुद ही परिधि को लेने आ गया था, तो पिशाच समुदाय ख़ासतौर पर प्रोफेसर साहनी आखिर क्यों परिधि को हासिल करना चाहते हैं? मुझे कुछ और ही लग रहा है। उम्मीद करो कि सृष्टि और मुकुल कोई अच्छी खबर साथ लेकर आ जाएँ।" आशुतोष ने उम्मीद भरी आवाज में अपनी बात खत्म की।

"हाँ! तब तक बस इंतजार ही कर सकते हैं और क्या?" वरूण ने कहा।

अभी वो सभी ये बातें कर ही रहे थे कि तभी चैतन्य कमरे में आया। उसने बताया कि अनामिका अपने कमरे में आ गई थी, इसलिए वो वापस आ गया।

"कुछ पता चला परिधि से या अभी भी वो उसी तरह गुम हुई यादों में भटक रही है।" आशुतोष ने पूछा।

"उसे याद तो कुछ नहीं आया है, पर एक नई बात हुई है। उसने आज जो कुछ भी स्टडी रूम में देखा, वो सब उसे जाना पहचाना सा लग रहा है। क्या इसे हमारे लिए अच्छी सूचना माना जा सकता है।" चैतन्य ने कहा।

"लग तो रहा है, पर डॉ. अनंत ज्यादा बेहतर बता सकते हैं।" आशुतोष ने कहा।

"उन्हें तो अभी मैंने गीता के कमरे की ओर जाते देखा है। शायद उसकी सुरक्षा चेक करने गए हों!" चैतन्य ने कहा।

"हाँ! वो भी जरूरी है। फिलहाल अगली खबर के मिलने तक थोड़ा आराम कर लेते हैं। अब तो सृष्टि के साथ आने वाली खबर का इंतजार है। दुआ करते रहो कि उसके हाथ कोई पक्की खबर रंग जाए।" आशुतोष ने कहा।

सभी ने आशुतोष की बात पर हामी भरी और फिर अंकित, वरूण के साथ उसके कमरे में चला गया। इन सब के बीच गीता के कमरे में हुई अनंत
कुमार और पिशाच के भिड़ंत की खबर उन सब तक नहीं पहुँच पाई।

नियति अपनी कहानी का अगला पेज पलट चुकी थी, जिसमें आने वाला समय हर लम्हे के साथ एक नई इबारत लिख रहा था। उनमें से किसी को भी नहीं पता था कि वो जिस कालचक्र के रहस्य को सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं, वो सब उसी रहस्य का एक हिस्सा थे। मगर अभी भी इसके एक हिस्से का किस्सा नियति की किताब के किसी पेज में दबा और अनछुआ सा था, जो आज की रात ही सबके सामने आने वाला था। आज सबको पता चलने वाला था कि कौन था वो, जिसने सब कुछ उलझा दिया था।

मुकुल अपने कमरे में लेटा हुआ सभी घटनाओं के बारे में सोच रहा था। सब कुछ उलझा हुआ सा था और ऐसा कोई सिरा नज़र नहीं आ रहा था, जोकि सब कुछ सुलझा सके। फिलहाल सृष्टि अभी प्रोफेसर साहनी के पीछे गई थी और वो पुराने सभी अग्नि रक्षकों से संपर्क जोड़ने की कोशिश कर रहा था। काफी देर तक मेहनत करने के बाद भी उसके हाथ कुछ नहीं लग रहा था। उसने हताश होकर अपनी कोशिश हल्की की ही थी कि तभी उसे मस्तिष्क दर्पण में परिधि की झलक दिखाई दी। वो बहुत

ही खुश नज़र आ रही थी। यह सब दिखाई देते ही मुकुल के चेहरे पर भी एक मुस्कान सी आई थी। वो सब कुछ भूलकर उसी में खोया हुआ था और तभी दृश्य बदला और उसने सब तरफ आग ही आग देखी और फिर खून से लथपथ जख़्मी परिधि को जमीन पर घिसटते देखा। उसे घबराते देखा... किसी से भागते देखा और फिर एक चीख के साथ ये दृश्य पटल से मिट गया और यह गया बस एक शून्य।

मुकुल ने झटके से अपनी ऑखें खोली और कुछ देर उसी तरह शून्य में देखता रहा। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि उसने जो देखा वो क्या था? इससे पहले भी उसने एक बार परिधि को जख़्मी हालत में देखा था। ये उसका मस्तिष्क ही उसके साथ कोई खेल खेल रहा था या फिर किसी और की यादें उसके मस्तिष्क से जुड़ गई थी। मगर ऐसा तो वो किसी अग्नि रक्षक के साथ ही कर सकता था। मगर परिधि की यादें तो खुद परिधि के पास भी नहीं थीं, बल्कि उसकी यादें तो बस उस पिशाच अल्फ़ी के ही पास थीं। तो क्या... इसका मतलब ये था कि वो उस पिशाच की यादों से जुड़ रहा था, जो खुद भी एक अग्नि रक्षक था। यह विचार दिमाग में आते ही उसकी ऑखों की चमक बढ़ गई और उसने तुरंत ही अपनी ऑखें फिर से बंद कर लीं। अभी वो ध्यान के गहरे समुंदर में उतरता, उससे पहले ही उसके फोन के बींप साऊंड ने उसका ध्यान तोड़ा। उसने फोन पर नज़र डाली। सृष्टि का मैसेज था। उसने तुरंत फोन उठाया और उस मैसेज
को पढ़ा।

"जल्दी मंजुला विला पहुँचो। बहुत बड़ी खबर हाथ लगी है। मैं भी पहुँचती हूँ। मेरा इंतजार करना।"

यह मैसेज पढ़ते ही मुकुल हरकत में आया और सबसे पहले उसने उस मैसेज को मिटा दिया। फिर वो तेजी से बाहर निकल कर फायरप्लेस की ओर बढ़ गया। उसने चारों ओर नज़रें दौड़ाई। चारों ओर मरघट जैसा सन्नाटा छाया हुआ था। उसने अपनी अंगूठी का लाल पत्थर उस फायरप्लेस की ओर घुमाया और एक ही पल में वो लाल अंगारों से दहकने लगा। वो बिना एक पल गँवाए उसके अंदर चला गया और फिर उसका पूरा शरीर लाल लपटों में घिर गया। अगले ही पल वो धुएँ की शक्ल में उस चिमनी से बाहर निकल गया और उसके पीछे फिर से सब कुछ शांत पड़ गया।

****

अनामिका परिधि की डायरी को पकड़े हुए किसी गहरी सोच में डूबी हुई थी। उस डायरी के पन्नों में आज कुछ तो नया था पर क्या? उसे समझ में नहीं आ रहा था। बस वो ये महसूस कर रही थी कि उसके हाथों में रखी वो डायरी जो कि मुर्दे की तरह हर भावनाओं से शून्य हो चुकी थी, अब अचानक ही साँसें लेने लगी थीं। अनामिका को उसमें जिंदगी की झलक
दिखाई देने लगी थी, पर वो तस्वीरें अभी भी स्पष्ट नहीं हो पाई थीं। ना जाने कौन सी कहानी अपने अंदर छिपाकर बैठी थी वो डायरी। वो अभी ये सब विचार कर ही रही थी कि तभी दरवाजे पर हुई दस्तक ने उसके सोचने की दौड़ पर लगाम लगाई। उसने आश्चर्य से दरवाजे की ओर देखा कि अभी कौन होगा?

"अंकल होंगे क्या? क्या उन्होंने परिधि को किसी सुरक्षित जगह में छिपा दिया होगा?" यह सोचकर वो फुर्ती से उठी और तेजी से दरवाजे को खोला और सामने देखकर वो एक पल के लिए सकते में आ गई। उसके सामने चैतन्य एक दिलफरेब मुस्कुराहट के साथ खड़ा था। उसे देखकर अनामिका को अपना गला सूखता हुआ महसूस हुआ था। उसे कम से कम इस वक्त तो उसके यहाँ आने की उम्मीद नहीं थी।

"तुम... तुम इस वक्त यहाँ क्या कर रहे हो?" बड़ी ही मुश्किल से अनामिका के मुँह से निकला।

"बात करनी है!" चैतन्य ने साफ-साफ कहा।

"कल... कल कर लें!" अनामिका ने बात टालने की कोशिश की। उसने जो हरकत तैश में आकर चैतन्य के साथ कुछ घंटों पहले कर दी थी, उसकी वजह से वो उसका सामना नहीं करना चाहती थी। मगर चैतन्य ने तो उस लम्हे को ही मजबूती से पकड़ लिया था और अब वो हर बात को साफ कर लेने के हक़ में था। आगे उन्हें बहुत ही अहम सफर तय करना था और वो अपने दिल और दिमाग को कहीं और उलझाकर नहीं रखना चाहता था।

"नहीं! अभी!" चैतन्य ने भी ढीढता दिखाते हुए कहा।

"चैतन्य!" अनामिका ने नज़रें चुराते हुए इसरार करने की कोशिश की।
मगर इस बार चैतन्य उसकी बातों में आने वाला नही था। चैतन्य ने उसकी बाँह पकड़ी और उसे अपने पास खींचते हुए दरवाज़ा बंद कर दिया। अनामिका उसकी इस जुर्रत पर हैरान रह गई। चैतन्य ने उसे दीवार से सटा दिया और उसके दोनों ओर अपने हाथ जमा दिए। वो अपनी गहरी नज़रें उस पर जमाए हुए उसके करीब खड़ा था। अनामिका ने खुद को उसके बाहों के किले में क़ैद पाया, तो एक सहमी हुई सी नज़र ऊपर उठाकर उस पर डाली। वो उसे ही देख रहा था। उसकी सवाल करती हुई नज़रों से घबराकर अनामिका ने अपनी नज़रें नीची की थीं।

"क्या हुआ? उस समय तो बड़ी बहादुरी दिखाई तुमने! अब क्या हुआ? एक बार फिर से तुम्हारी वो जुर्रत देखना चाहता हूँ।" उसके और भी करीब आते हुए चैतन्य ने कहा।

उसकी ये बात सुनकर अनामिका को अपने दिल की धड़कनों का बेकाबू शोर साफ-साफ सुनाई देने लगा था और वो खुद में ही सिमटने लगी थी। वो चाहकर भी अपनी नज़रें चैतन्य की ओर उठा नहीं पा रही थी। उसकी चुप्पी एक बार फिर से चैतन्य को चुभ रही थी और हल्की-हल्की बिखरी रोशनी में अनामिका का घबराया हुआ चेहरा उसे और भी उकसा रहा था।

"देखो! मैंने तुमसे कहने के लिए कहा है और.... अगर तुम अपनी बात उसी समय खत्म कर चुकी हो, तो क्या मैं अपनी बात तुम्हारे तरीके से कह दूँ?" चैतन्य ने अनामिका के चेहरे के भावों को पढ़ने की कोशिश करते हुए कहा। यह कहते हुए वो उसके और भी करीब हुआ था।

अनामिका ने अपनी पलकें उठाकर देखा। वो उसके करीब था, बहुत ही करीब! इतने करीब कि वो उसकी ऑखों से उसके दिल में झांक सकती थी। उसकी गर्म साँसें अनामिका के चेहरे पर बिखर रही थीं। जज़्बातों की शिद्दत इतनी बढ़ गई थी कि घबराकर अनामिका ने अपनी ऑखें बंद कर लीं। चैतन्य दूरियों को कम करता हुआ उसके नजदीक और नजदीक
आता जा रहा था। रूमानियत के रंग पूरी तरह बिखरकर उन दोनों को रंगने ही वाले थे कि तभी...

"कौन है यहाँ!"

"वरूण!" अनामिका ने झटके से अपनी ऑखें खोली थी और चैतन्य पूरी तरह से उखड़ा था।

"इसे कभी चैन नहीं आता क्या? ये इस वक्त यहाँ क्या कर रहा है?" चैतन्य ने फुसफुसाती हुई आवाज में नाराज़गी जताई।

"चैतन्य! तुम जाओ यहाँ से अभी।" अनामिका ने मिन्नतें करते हुए कहा।

"क्यों? क्यों जाऊँ? आने ही दो उसे आज। उसे भी सब पता चल जाना चाहिए।" चैतन्य ने भी अड़ते हुए कहा।

"हे भगवान! कहाँ दो बेवकूफ अड़ियलों के बीच फँस गई हूँ मैं! देखो चैतन्य! उसे तो बताना ही है। पर अभी नहीं। तुम समझो इस बात को। दो दिनों के बाद जब हमारा मिशन कंप्लीट हो जाएगा... उसके बाद। ठीक है! मैं खुद बता दूंगी।" अनामिका ने चैतन्य के चेहरे को अपनी हथेलियों में भरकर घबराई हुई बहुत ही धीमी आवाज में कहा।

"ठीक है।" चैतन्य ने भी आखिरकार रजामंदी दे ही दी और उसकी हथेली चूम ली।

"अब जाओ!" अनामिका ने उसे आगे ढकेला।

"पर मेरी बात पूरी नहीं..." चैतन्य ने कहना चाहा, पर अनामिका ने उसे टोक दिया।
"वो मैं सब समझ गई! अब जाओ अपने कमरे में!" अनामिका ने आवाज की दिशा में देखते हुए कहा।

"पर मैंने तो..." चैतन्य ने फिर कुछ कहना चाहा कि तभी पास के मोड़ में पदचापों की आवाज तेज और स्पष्ट हो गई और फिर अचानक ही ये हुआ। अनामिका ने झटके से अपने कमरे का दरवाजा खोला और फिर हड़बड़ाहट में खुद अंदर जाने की बजाय चैतन्य को अंदर ढकेल दिया। उसने दरवाजा बंद ही किया था कि तभी वरूण वहाँ पहुँच गया।

"तुम इतनी रात को कमरे से बाहर क्या कर रही हो?" वरूण ने उसे ऊपर से नीचे की ओर देखते हुए कहा।

"मैं... वो मैं... बस... नींद नहीं आ रही थी, तो जरा सा बाहर खुली... हवा में आ गई थी। अब ठीक है। मैं जाती हूँ... सोने के लिए। गुड नाइट!" बात कहकर अनामिका ने दरवाजे का नॉब बस घुमाया ही था कि तभी वरूण ने उसे टोका।

"एक मिनट अनामिका! कुछ देर रूकोगी। तुमसे कुछ जरूरी बात करनी है।" वरूण ने कहा।

"मुझसे! मुझसे क्या जरूरी बात करनी है। " अनामिका ने थोड़ा घबराकर कहा। उसे डर था कि वरूण फिर से वही पुराना प्यार का राग अलापना ना शुरू कर दे।

"बहुत जरूरी है। इधर आओ!" कहते हुए वो अनामिका का हाथ पकड़कर उसको बालकनी की ओर ले गया। अंदर दरवाजे पर कान टिकाए हुए चैतन्य के भी होश उड़े थे कि आखिर वरूण को अनामिका से क्या बात करनी होगी?
बालकनी में आकर वरूण ने एक भरपूर नज़र अनामिका पर डाली और फिर बोला, "मुझे लगता है कि मुझे तुम्हें सॉरी कहना चाहिए।"

उसकी इस बात से अनामिका को हैरत का एक तेज झटका लगा था। वो उसे उलझन से देखते हुए बोली, किस बात की सॉरी?"

"तुम्हें इतना परेशान करने के लिए। तुम हमेशा मुझे समझाती रही... जताती रही कि मैं कितना ख़ास हूँ तुम्हारे लिए। पर मुझे कभी समझ में ही नहीं आया। इसलिए जब चैतन्य तुम्हारी जिंदगी में आया, तो मैं तुम्हें खोने के डर से सारे रिश्तों को उलझा बैठा। हमारी दोस्ती को प्यार की सूरत देने की कोशिश करने लगा।" वरूण हल्की काँपती हुई आवाज में बोला।

"क्या मतलब?" अनामिका उसके लफ़्ज़ों को समझने की कोशिश करते हुए बोली।

"यही कि.... मैं बेवजह चैतन्य से मुकाबला करने की कोशिश कर रहा था, जबकि हम दोनों बिल्कुल अलग हैं और ये बात देर से ही सही... पर मेरी समझ में आ गई है।" वरूण ने बहुत ही गंभीर लहज़े में कहा।

"समझ आ गई! ऐसे ही अचानक!" अनामिका ने बेयकीनी से उसकी ओर देखकर कहा।

"अचानक नहीं। बात तो पहले ही समझ आ गई थी, पर दिल मानने को तैयार नहीं था। तुम्हें लेकर एक जलन... एक अनकही सी दुश्मनी पाल बैठा था मैं... चैतन्य के लिए। वो कितना परफेक्ट है ना! हर तरह से! मुझे हमेशा डर लगता था कि वो तुम्हें मुझसे दूर कर देगा और तुमसे दूर होने का यही डर इस तरह बेवकूफियों की शक्ल में सामने आया।" वरूण ने अपना अपराध स्वीकारते हुए कहा।
"तो फिर!" अनामिका बोली।

"दरअसल... पिछले दिनों से जब तुम चैतन्य से दूर और आशुतोष जी के ज्यादा करीब हुई, तब मुझे समझ में आया कि मैं बस तुम्हारी दोस्ती खोने से डरता था। मगर दूसरी ओर चैतन्य अपना प्यार तुम्हारी खुशी के लिए खुद ही छोड़ने को तैयार हो गया था। उसके चेहरे पर तुम्हें आशुतोष के साथ देखकर ऐसी कोई तकलीफ़ मैंने महसूस नहीं की, जो मैं पहले चैतन्य के लिए और अब आशुतोष जी के लिए महसूस करने लगा था, जबकि चैतन्य और आशुतोष जी दोनों से ही तुम्हारा रिश्ता अलग है।" वरूण बोलता गया।

"अलग मतलब! तुम्हें कभी नहीं लगा कि मैं और आशुतोष जी प्यार..."

"धत्! इतनी समझ है मुझे रिश्तों की।" वरूण ने अनामिका को टोकते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका के दिल से जैसे बहुत बड़ा बोझ उतर गया। उसने आगे बढ़कर अपने उस बुद्धू मगर सबसे प्यारे दोस्त के बाल बिगाड़े और उसके नीचे खिसक आए चश्मे को उसकी नाक पर दुरूस्त किया था।

"ठीक है! चलता हूँ!" वरूण ने एक खुली हुई मुस्कुराहट के साथ कहा जिस पर अनामिका ने सिर हिला कर सहमति दी। अभी वो थोड़ा आगे बढ़ा ही था कि तभी रूक गया और पीछे मुड़कर अनामिका को देखने लगा।

"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"कुछ और भी कहना है।" वरूण बोला।
"क्या?"

"मेरे कुछ कंडीशन्स हैं तुम्हारे और चैतन्य के रिश्ते को लेकर और वो तुम दोनों को मानने ही होंगे।" वरूण बहुत ही संजीदगी से बोला।

"और वो क्या हैं?" अनामिका ने कहा।

"पहली कंडीशन - गाड़ी में हमेशा तुम मेरे साथ सामने बैठोगी और वो पीछे बैठेगा।
दूसरी कंडीशन - वो मेरे और तुम्हारे बीच कभी नहीं आएगा। हमारे बीच में कभी बोलेगा भी नहीं।
तीसरी और सबसे जरूरी कंडीशन - तुम्हारे बच्चे कभी भी मुझे मामा कहकर नहीं बुलाएँगे। समझ में आया।" वरूण उसे उंगली दिखाते हुए बोला।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने बड़ी ही मुश्किल से अपनी हँसी दबाई थी, जिसे वरूण ने पकड़ लिया था।

"हँस क्या रही हो? सही तो कहा मैंने! तुम्हारा भाई नहीं... दोस्त हूँ मैं और तुम्हीं ने कहा था कि रिश्तों को उलझाओ नहीं। तो उस गधे को भी ये समझा देना कि रिश्तों को वो भी ना उलझाए। मैं तुम दोनों के बीच नहीं आऊंगा तो वो भी हम दोनों के बीच कभी ना आए। वरना फिर..!" वरूण ने प्यार से धमकाते हुए कहा।

"ये सब कहकर तुम्हें बुरा नहीं लगा।" अनामिका ने एक बार फिर उसके दिल को कुरेदने की कोशिश की।

"नहीं! बिल्कुल नहीं लगा। सच कहूँ तो... अब बहुत अच्छा लग रहा है।"
वरूण ने अपने चश्मे के पीछे से उसे देखते हुए कहा।

अनामिका ने अपना सिर हौले-हौले राहत से हिलाया और फिर वो भी उसके साथ आगे बढ़ गई। वरूण की प्यारी सी माफी ने दोनों के दिल का बोझ उतार दिया था। अपने कमरे के पास आकर अनामिका ने उसे गुड नाईट कहा और फिर कमरे में चली गई। वरूण भी अपने कमरे की ओर बढ़ा ही था कि कोई चीज उसके पैरों से टकराई। उसने झुककर उसे उठाया और देखा। वो परिधि की डायरी थी, जो चैतन्य के अनामिका को अचानक खींचने की वजह से नीचे गिर गई थी। उसने उस पर एक निगाह डाली ही थी कि तभी उसके फोन में मैसेज की बींप बजी। उसने फोन खोलकर देखा तो सृष्टि का मैसेज था।

"स्टडी रूम में पहुँचो! एक बहुत बड़ी खबर हाथ लगी है। मैंने सबको मैसेज कर दिया है।"

वरूण ने उस मैसेज को पढ़ा और फिर उसे मिटाकर तेजी से स्टडी रूम की ओर बढ़ गया। अनामिका को भी मैसेज मिल ही गया होगा, यही सोचकर उसने उसे नहीं बुलाया। फिलहाल तो जिज्ञासा उस बड़ी खबर के बारे में जानने की थी, जो शायद आगे बढ़ने में उनकी मदद कर सकती थी।

समय का पहिया एक बार फिर से घूमने की फिराक में था। एकाएक हर तरफ हलचलें शूरू हो गई थीं। सब ही अपनी-अपनी जुगाड़ में लगे हुए थे। कई रहस्य अभी भी खुद पर पड़ी चादर हटाने से साफ-साफ इंकार कर रहे थे। पर अब समय आ गया था, जब नियति हर एक चादर को खींचकर सबके होश उड़ाने वाली थी। एक साथ कई घटनाएँ अलग-अलग जगह पर एक ही समय पर घटित होने वाली थीं, जिसकी वजह से एक बड़ा राज उनके सामने बेनकाब होने वाला था।

****

(आज के पार्ट में तीन घटनाएँ एक ही समय में अलग-अलग जगह में घटित हो रही हैं। तो इसे ध्यान में रखकर पढ़ें और जहाँ-जहाँ भी first point और second point लिखा है, उसे ध्यान में रखें।)
पहला दृश्य -

सृष्टि का मैसेज मिलते ही वरूण जब अपने कमरे के पास पहुँचा, तभी उसने अंकित को कमरे से बाहर निकलते देखा।

"अभी तुरंत सृष्टि का मैसेज मिला है।" अंकित ने वरूण से कहा।

"चलो जल्दी! आशुतोष जी और चैतन्य भी आ रहे होंगे।" वरूण ने आगे बढ़ते हुए कहा। अंकित भी उसके पीछे-पीछे हो लिया। आगे बढ़ने पर उन्होंने आशुतोष को कमरे से बाहर निकलते देखा।

"चैतन्य कहाँ है?" वरूण ने दरवाजे की ओर देखते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर आशुतोष ने झेंपते हुए अपनी गर्दन में ऊंगली फिराते हुए कहा, "वो दरअसल... अनामिका से कोई... बहुत ही जरूरी बात करने गया है।"

आशुतोष की बात सुनकर वरूण की एक भौंह चश्मे के पीछे से चढ़ी थी। वो पीछे जाने के लिए पलटा ही था कि तभी आशुतोष ने उसे पकड़ते हुए कहा, "अरे यार! हर जगह टांग अड़ाने की नहीं होती। आ जाएँगे वे दोनों! चैतन्य पर भरोसा ना हो... पर अनामिका पर तो है ना! चलो!"

आशुतोष की बात मानकर वरूण अनमने ढंग से उन दोनों के साथ चल
दिया। जाते-जाते उसने गीता के दरवाजे को खोलना चाहा, पर वो नहीं खुला। डॉ. अनंत की सुरक्षा व्यवस्था का ध्यान आते ही वो तीनों बेफिक्री से नीचे स्टडी रूम की ओर चल दिए। हालांकि वरूण बार-बार पीछे की ओर मुड़ कर देखता रहा।

स्टडी रूम में पहुँचकर उन तीनों ने देखा कि डॉ. अनंत वहाँ मौजूद नहीं थे, जिससे उन तीनों को ही हैरानी हुई थी। अब उनके पास अगला काम बाकी सभी का इंतजार करना था। अभी वो एक-दूसरे का मुँह देखते बैठे ही हुए थे कि तभी कोने में बने आतिशदान में अचानक उठी लपटों ने तीनों का ध्यान उस ओर किया था। वो अभी स्थिति को समझने की कोशिश कर ही रहे थे कि तभी उन सबने आतिशदान के अंदर उन लपटों के बीच से किसी को बाहर निकलते देखा और अगले कुछ पलों में मुकुल उनके सामने खड़ा था।

"ये तो शानदार था।" कहते हुए अंकित का मुँह खुला का खुला रह गया, जिसे हाथ आगे बढ़ाकर वरूण ने बंद किया था।

"सृष्टि नहीं आई अभी तक?" मुकुल ने पूरे कमरे में नज़र दौड़ाते हुए कहा।

"अभी तक तो नहीं आई है।" आशुतोष ने जवाब दिया।

"और बाकी लोग?" मुकुल का इशारा डॉ. अनंत, अनामिका और चैतन्य की ओर था।

"मैं तुम सभी को बता दूँ कि डॉ. अनंत ने अपने पैर पीछे कर लिए हैं। मतलब कि अब उनके अंदर ना तो ज्यादा ताकत है और ना ही ज्यादा जादुई शक्तियाँ। उन्हें लगता है कि हमें उनके बिना ही आगे बढ़ना चाहिए। कोई नई जानकारी या किसी मदद के समय वो हमेशा आगे आएँगे।"
आशुतोष ने उनके सामने कहे गए डॉ. अनंत के शब्दों को सबके सामने दोहराया।

"मुझे लगता है कि पापा ने सही किया। उन्होंने बहुत संभाला सब कुछ। अब जब हम सब अपनी शक्तियों के साथ तैयार हैं, तो अब हमें आगे बढ़ना चाहिए।" वरूण ने भी आशुतोष के साथ-साथ उनके शब्दों का भी समर्थन किया।

"तो फिर बाकियों का इंतजार करें?" मुकुल ने कहा।

"हम्म! और क्या कर सकते हैं?" कहते हुए वरूण ने आशुतोष को नाराज़गी से घूरा और फिर छत की ओर सिर उठाकर ऐसे देखा जैसे कि सोच रहा हो कि इस वक्त दोनों क्या कर रहे होंगे?

आशुतोष ने वरूण की ओर से अपनी नज़रें फेरीं और मन ही मन में अनामिका और चैतन्य के जल्दी स्टडी रूम में आने की दुआ मांगी।

उकताए हुए वरूण ने अपने हाथ में पकड़ी हुई डायरी तेज आवाज के साथ मेज पर रखी, जिससे सभी का ध्यान उस डायरी की ओर गया।

"ये क्या है?" मुकुल ने पूछा।

"वही... परिधि के यादों की... कोरी डायरी!" वरूण की आवाज में खीझ थी।

"दिखाओ जरा!" मुकुल ने उत्सुकता दिखाते हुए वो डायरी वरूण से मांगी, जिस पर वरूण ने वो डायरी मुकुल की ओर बढ़ा दी। मुकुल ने वो डायरी खोली। पहले पन्ने पर परिधि का नाम लिखा था, जो यकीनन किसी और के ही शब्द लग रहे थे। सिकुड़ी हुई ऑखों के साथ मुकुल ने अगला पन्ना खोला, जो परिधि के स्केच से आबाद था। ना जाने क्यों मुकुल ने उस पर अपनी उंगलियाँ फिराई थीं और फिर अगले ही पल पन्ना पलट दिया।

"रहने दो कुछ किस्सों को सफहों के दरमियान! खुल गए जो पन्ने... तो फिर तबाही आएगी!!"

उस पन्ने पर लिखे ये अल्फ़ाज़ रहस्यों को और भी बढ़ाते हुए से लग रहे थे। मुकुल ने तेजी से आगे के पन्ने खोले, जो सचमुच पूरी तरह से कोरे थे। पर शायद नहीं! आज कुछ हलचलें उन पन्नों के दरमियान अपनी मौजूदगी दिखाई रही थीं, जिसे अनामिका के बाद मुकुल ने भी साफ-साफ महसूस किया।

"क्या देख रहे हो? उसमें कुछ नहीं है यार!" वरूण और भी खीझते हुए कहा।

"पर मुझे ऐसा नहीं लगता! मुझे अच्छे से याद है कि जब मैं ये डायरी हॉस्पिटल में परिधि के कमरे में रखने गया था, उस समय ये पूरी की पूरी डायरी कोरी थी। अब इन तीन पन्नों का भरा होना ये दिखा रहा है कि सब कुछ मिटा नहीं है।" मुकुल ने वरूण की बात काटी थी।

"अच्छा! तो कहाँ काँटा फेंककर पकड़ें... तुम्हारी इस परिधि के यादों की मछली को। ना जाने कौन से पत्थर के नीचे दुबकी हुई है?" वरूण ने भड़की हुई सी आवाज़ में कहा।

"तुम्हें भूख लग रही है वरूण?" आशुतोष ने उसे तौलती हुई नज़रों से देखते हुए पूछा।
"नहीं... नहीं तो!" वरूण सकपकाया था।

"तो यार! मिसाल तो सही से दिया करो। यादों की मछली! हँ!" आशुतोष ने नाक चढ़ाकर चिढ़ से कहा।

"मेरे पास कोई मशाल नहीं है। उसके बारे में इस अग्नि रक्षक से पूछिए।" वरूण ने बेवकूफों की तरह हाथ नचाते हुए कहा।

"हे भगवान! अनामिका सही कहती हैं। उर्दू की कब्र खोदने का ठेका इसी बंदे को मिला है।" आशुतोष ने अपना माथा ठोकते हुए कहा।

"आप दोनों मियां बीवी की तरह तुनकना छोड़ेंगे। मेरी बात सुनें। ये बहुत ही अहम है।" मुकुल उन दोनों पर झल्लाते हुए बोला।

"वहम! किसे हो गया है वहम?" वरूण के मुँह से बेसाख्ता निकला और ये सुनते ही अंकित, मुकुल और

आशुतोष तीनों ने ही अपने बाल नोंचे थे।

अचानक ही आशुतोष अपनी जगह से खड़ा हुआ और खरखराते हुए बोला, "सब लोग साफ-साफ सुन लो और ये बात अपने दिमाग में बिठा लो कि.. अगर इस पूरे मिशन में.. किसी ने भी इस आदमी से बात करते समय उर्दू के शब्द इस्तेमाल किए, तो उसे हर शब्द के लिए पाँच हजार रूपए का जुर्माना भरना पड़ेगा।"

"पाँच हजार!" अंकित और मुकुल की ऑखें हैरत से फैली थीं।

कमरे के माहौल का मिजाज हर पल बदलता ही जा रहा था। वो सभी बातचीत के मेन टॉपिक से लगभग भटक ही चुके थे कि तभी उन सबको अपने सिर के ऊपर सब कुछ काँपता हुआ महसूस हुआ। "ये क्या हो रहा है?" अंकित ने पूछा, जिसका जवाब फिलहाल किसी ने नहीं दिया।

धीरे-धीरे उन सबके सिर के ऊपर की छत हल्के नीले रंग की होने लगी। वो सभी... जो भी हो रहा था... उसे साँसें रोके देख रहे थे। अचानक बिजली के कड़कने जैसी आवाज आई और वो सारा नीला रंग सिमटकर पानी की बौछार की तरह जमीन पर गिर पड़ा।

"ये क्या हुआ?" वरूण लगभग चीखते हुए पीछे की ओर उछला था।

"ये तो आसमान टूटने की तरह लगा। है ना!" अंकित ने फैली ऑखों के साथ कहा।

"आसमान टूटा... फिर तो मुसीबत ही आई होगी।" कहते हुए मुकुल आक्रमण की मुद्रा में खड़ा हुआ था। उसके साथ-साथ सभी ने आक्रामक तेवर पकड़ लिए थे।

उनके सामने जमीन पर गिरा नीला रंग सिमटकर ऊपर उठता गया और फिर एक पॉइंट पर जाकर वापस जमीन की ओर लौटा और उसके बीच से निकली सृष्टि, जिसका इंतजार सभी कर रहे थे। उसे देखते ही सभी के तने हुए शरीर ढीले पड़े थे।

"ये तो सच में मुसीबत ही आई है!" वरूण ने मुँह बिगाड़ कर उसे देखते हुए कहा।
"क्या हो रहा है?" सृष्टि ने तेजी से उनकी ओर आकर कहा।

"मुसीबत का इंतजार!" वरूण फुसफुसाया।

"क्या कहा?" सृष्टि ने तिरछी नज़र से उसकी ओर देखा।

"आपका... इंतजार!" वरूण ने बात सुधारी।

उस पर आग उगलती नज़रें डालते हुए सृष्टि आशुतोष और मुकुल की ओर गई। वो कुछ बोलती उससे पहले ही उसकी नज़र मुकुल के हाथों में रखी डायरी की ओर गई।

(First point)

"ये क्या हो रहा है?" सृष्टि ने डायरी की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर सभी ने उस डायरी की ओर देखा। डायरी से कुछ रोशनी की किरणें फूट रही थीं। मुकुल ने तेजी से वो डायरी खोली और एक बार फिर सब कुछ शांत हो गया।

"परिधि की यादें किसी वजह से कहीं अटक गई हैं। इस डायरी का कोई मतलब ही नहीं है, जब तक कि उसकी यादें वापस नहीं आ जातीं।" सृष्टि ने निराशा से कहा।
"एक बात कहूँ!" अंकित ने हाथ उठाकर कहा।

"कहो!"

"कई बार हमारी यादें बस हमारी यादें ही नहीं होतीं, किसी दूसरे की भी होती हैं। मेरा मतलब है कि इस डायरी में परिधि ही नहीं... दूसरों की भी साझा यादें हो सकती हैं। तो...परिधि नहीं तो... किसी और के जरिए भी ये यादें बाहर निकाली जा सकती है।" अंकित अपनी समझदारी का प्रदर्शन करते हुए बोला।

"अच्छा! और वो दूसरे लोगों को तुम अपने समय द्वार से यहाँ लाओगे। तुम्हें शायद याद नहीं है की परिधि अपने समय से यहाँ अकेली आई है।" सृष्टि ने अंकित को लताड़ते हुए कहा।

सृष्टि की लताड़ सुनकर अंकित का उत्साह से दमकता चेहरा एकदम से बुझा था और साथ ही दूसरों के आँखों की चमक भी सिवाय मुकुल के।

"पर कोई और भी है, जो उस समय से आया है।" मुकुल ने सभी के चेहरों को देखते हुए कहा।

"कौन? वो अल्फ़ी! परिधि के हमारे पास होने के बाद भी हम उसकी यादों को निकाल नहीं पा रहे हैं, तो उस अल्फ़ी की यादों को खाक छानेंगे। तुम बताओ उस पिशाच के दिमाग से ये यादें भला कौन निकाल सकता है?" इस बार सृष्टि ने मुकुल को झिड़का था।

"मैं निकाल सकता हूँ। शायद!" मुकुल ने सभी को चौंकाने वाली बात कही।

"क्या?" उम्मीद के मुताबिक तीन चौंकती हुई आवाजें आई।
"हाँ! अभी कुछ देर पहले ही अपने कमरे में मुझे यह एहसास हुआ कि मैं उस अल्फ़ी की यादों में घुस सकता हूँ। शायद इसलिए कि.... हम दोनों ही अग्नि तत्व वाले हैं।" मुकुल ने धमाका किया।

"तो पूछ क्यों रहे हो? जल्दी करो!" वरुण उतावलेपन से बोला।

"पागल हो गए हो क्या? तुम उसकी यादों में घुसोगे तो उसे पता नहीं चल जाएगा?" सृष्टि ने आपत्ति जताई।

"चलने दो! पता चल भी गया तो करेगा क्या? हम पर हमला! इसके लिए भी उसे हमारे सामने आना होगा और वही तो हम चाहते हैं। नई! वैसे भी मुझे ऐसा लग रहा है कि दोनों में से कोई तो उन यादों से

जुड़ने की कोशिश कर रहा है, तभी इस डायरी के साथ ऐसा हो रहा है। शायद थोड़ी सी कोशिश हमें कोई कामयाबी दे दे।" मुकुल ने कहा।

"मुकुल सही कह रहा है। एक कोशिश की जा सकती हैं।" आशुतोष ने मुकुल का हौसला बढ़ाते हुए कहा।

आशुतोष की बात सुनकर सभी ने हामी भर ही दी और फिर मुकुल उस डायरी के ऊपर अपना हाथ रखकर एक बार फिर से ध्यान मुद्रा में चला गया। वो अपनी पूरी शक्ति से उन यादों से जुड़ने की कोशिश कर रहा था, जिसकी तलाश उन सभी को थी और पता नहीं क्यों... पर वो यादें बड़ी ही आसानी से मुकुल की पकड़ में आ गईं। मुकुल के ऊंगली की अंगूठी का पत्थर चमका और उससे एक तेज रोशनी निकलकर उस डायरी में चली गई।
(Second Point)
****

दूसरा दृश्य-

वरुण को रफा-दफा करके अनामिका जब कमरे में आई और कुछ देर तक दरवाजे पर कान लगाए सबके पदचापों को सुनती रही। जब उसे यकीन हो गया कि वरुण कहीं दूर चला गया है तो उसने पलटकर देखना चाहा और चैतन्य बस उसके सामने खड़ा था। उसी समय अनामिका के फोन ने एक बींप के साथ मैसेज आने का इशारा किया, जिससे दोनों का ही ध्यान उस तरफ गया था। चैतन्य ने एक बार फिर पूरे कमरे में नजर दौड़ाई और अनामिका की ओर देखकर बोला, "वैसे परिधि कहाँ है?"

अचानक से इस सवाल ने अनामिका को चौंकाया। शायद इस समय उसे चैतन्य के मुँह से किसी और बात के निकलने का डर था। मगर यह सवाल सुनकर वह हालातों की ओर वापस लौटी।

"उसे अंकल कहीं लेकर गए हैं।" अनामिका ने जवाब दिया।

"अरे वाह! ये तो अच्छा हुआ! बहुत अच्छा! है ना!" चैतन्य ने अपनी ऑखों में शरारत भर कर कहा। उसकी ऑखें शरारत से उस नीम अंधेरे में भी चमक रही थीं और उस चमक की वजह से अनामिका एक बार फिर खुद में सिमटने लगी थी। उसका गला उसकी नजदीकी से एक बार फिर से सूखने लगा था।
"चैतन्य! जाओ यहाँ से!" अनामिका ने बड़ी मुश्किल से कहा।

"पर मैं खुद से अंदर थोड़ी ना आया हूँ। ये तो तुम्हारी हरकत है।" चैतन्य उसकी ओर बढ़ते हुए बोला।

"वो.. वो तो गलती से हुआ!" अनामिका ने हिम्मत जमा करके थोड़ी ऊंची आवाज में कहा।

"वाह! हर बार गलती करो तुम और.... ख़ामियाजा भुगतूं मैं! ये क्या बात हुई? गलती तुमने की.. तो सजा भी तुम्हें ही मिलनी चाहिए।" चैतन्य ने बनावटी शिकायत के साथ कहा।

"ठीक है! सॉरी! अब जाओ!" अनामिका ने उसकी ओर देखते हुए कहा और फिर नीचे देखने लगी।

"नहीं! तुम्हारी इतनी सारी गलतियों के बाद बस सॉरी से काम नहीं चलेगा।" चैतन्य को अब उसे तंग करने में मजा आने लगा था।

"तो फिर!" अनामिका ने नज़रें उसकी ओर उठाई थी।

"तो फिर... वो सब फिर से कहो, जो बाहर दालान में कहा था और... वैसे ही कहो... जैसे उस समय कहा था।" चैतन्य ने जैसे उसे सजा सुनाई थी। चैतन्य की बात सुनकर अनामिका ने झेंपते हुए तुरंत ही नज़रें फेरी थीं।

"मुझे जो कहना था.. वो मैंने कहा दिया।" अनामिका ने अपना गला गीला करते हुए कहा। घबराहट उस पर हर पल भारी होती जा रही थी।

"पर मैंने ठीक से नहीं सुना! तुमने तो मौका ही नहीं दिया कुछ रिएक्ट
करने का। ऐसे थोड़ी ना होता है!" चैतन्य ने चेहरे पर आते उसके बालों को पीछे करते हुए कहा।

"चैतन्य प्लीज़!" अनामिका को अब बहुत ही उलझन होने लगी थी। वो सिर झुकाए खड़ी थी और वो पूरी तरह उसके मजे ले रहा था।

"क्या प्लीज़? मैं तो अपने कदम वापस ले चुका था ना! वो तुम हो.... जो मुझे वापस खींचकर ले आई हो। तो.... मैं फिर से तुम्हारे दिल की बात सुनना चाहता हूँ। उस पल को जीना चाहता हूँ, जिसका इतने समय से इंतजार किया मैंने। तुम्हारी ऑखों में अपना चेहरा देखना चाहता हूँ, जब तुम ये इकरार करो कि तुम्हारे दिल की हर धड़कन में मैं ही बसता हूँ। अपनी मोहब्बत का इजहार करते समय उस मोहब्बत की सुर्ख़ी तुम्हारे गालों पर उतरते देखना चाहता हूँ।" कहते हुए चैतन्य ने उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में भरकर उसके माथे से अपना माथा मिलाया था।

अनामिका ने अपनी काँपती हुई पलकें उसकी ओर उठाई थी और वो ऑखों में अजीब सी खुमारी भरे हुए उसे ही देख रहा था। अब अनामिका की बर्दाश्त भी हद तोड़ने पर आमादा हो चुकी थी। एक बार फिर वो उसके सहर में खोने को तैयार ही थी कि चैतन्य की ओर बढ़ते उसके लब अचानक ही रूके थे। और वो ही नहीं... चैतन्य ने भी झटके से पीछे मुड़कर देखा था।
(First point)

"कुछ हुआ था क्या?" चैतन्य ने आश्चर्य भरी ऑखों से चारों तरफ देखते हुए कहा।

"मुझे भी लगा!" अनामिका ने भी उसकी बात का समर्थन करते हुए कहा।
"पर क्या हुआ?" चैतन्य अभी भी उलझा हुआ था।

"पता नहीं!" अनामिका ने भी उसकी उलझन और बढ़ाते हुए कहा।

"मुझे लगता है कि हमें यहाँ से चलना चाहिए।" कहते हुए चैतन्य ने अनामिका का हाथ पकड़ा था, मगर इससे पहले कि वो उस कमरे से बाहर जाते... एक तेज रोशनी बस एक पल के लिए चमकी। अब तो उन दोनों के ही आगे बढ़ते पैर रूक गए थे। उन्होंने एक बार फिर से पीछे मुड़कर देखा।

कमरे का आइना अंधकार में नीली रोशनी से भरा हुआ था। चैतन्य ने उस आइने की ओर कदम बढ़ाए, तो अनामिका ने उसे रोका।

"तुम रूको यहीं! देखने दो मुझे!" और वो उस आईने के पास चला गया। अनामिका भी उसी के साथ थी।

वो आईना ऐसे लग रहा था, जैसे कि उसके अंदर कोई सागर उमड़ रहा हो, मगर उसकी सारी मौजें उस आईने के अंदर तक ही सीमित थी।

"इस आईने ने पहले भी अजीब तरह से काम किए हैं ना?" चैतन्य ने पुरानी बातें याद करते हुए कहा।

"हाँ! एक बार मैंने परिधि के अक्स को उसे ही घूरते देखा था और मुकुल ने भी बताया था कि ग्रीन हाउस में भी आईने के अंदर से परिधि पर किसी ने हमला किया था।" अनामिका ने याद करते हुए कहा।

"अनामिका! कहीं वो समय द्वार कोई आईना तो नहीं है, जिससे परिधि यहाँ तक पहुँची है।" चैतन्य के दिमाग में एक विचार कौंधा।

"जैसे चित्रलेखा बनाया करती थी?" अनामिका ने भी जवाब की शक्ल में सवाल किया था।

"पर परिधि तो सामान्य इंसान हैं। उसके पास कोई भी जादुई ताकत भी नहीं है। तो... उसके लिए ये समय द्वार बनाया किसने?" चैतन्य के पास एक और सवाल था।

"मुझे क्या पता?" अनामिका झुंझलाकर बोली।
"तो क्या करें अब?" चैतन्य ने उससे पूछा।

"सबको बताते हैं चलो!" अनामिका बोली।

"हम्म!" हुंकारी भरते हुए चैतन्य ने उस आईने पर अपना हाथ रखा था। सब कुछ सामान्य ही था।

"चैतन्य चलो!" कहते हुए अनामिका ने उसका दूसरा हाथ खींचा ही था कि तभी अचानक चैतन्य उस आईने के अंदर की ओर गिरने लगा, जिसे अनामिका ने समय पर पकड़कर खींच लिया। इस अचानक हुई घटना से दोनों ही बुरी तरह से चौक गए थे।

"ये क्या हुआ था अभी?" चैतन्य ने उस आइने पर एक बार फिर से हाथ जमाते हुए कहा। पर इस बार कुछ भी नहीं हुआ। ये देखकर अनामिका भी हद दर्जे तक हैरत में पहुँची थी।

"हटो! मुझे देखने दो!" अनामिका ने चैतन्य को एक ओर हटाकर खुद उस आइने पर हाथ रखकर थोड़ा

दबाव बनाया था। मगर इस बार भी कुछ नहीं हुआ।

"ये अजीब है!" कहते हुए चैतन्य ने अपना हाथ अनामिका के हाथ के ऊपर दबाव बनाते हुए रखा और अगले ही पल वो दोनों ही असंतुलित होकर उस आईने के अंदर गिर पड़े।
(Second Point)

****
तीसरा दृश्य

परिधि, डॉ. अनंत के साथ बहुत देर से चलती जा रही थी। उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर वो उसे कहाँ ले जा रहे हैं? उसने जब भी उनसे पूछना चाहा... डॉ. अनंत ने उसे हाथ उठाकर चुप करा दिया। पिछले कुछ समय से उसकी ऑखो के सामने जो भी हो रहा था, वो उसे डराने की बजाय परेशान ज्यादा कर रहा था। मगर इतने दिनों से साथ रहने के कारण उसे डॉ. अनंत पर पूरा विश्वास था, इसलिए वो उनके साथ चुपचाप आ गई थी। पर अब उनकी चुप्पी परिधि को करने लगी थी। ना जाने कितने मोड़ों और ना जाने कौन-कौन से रास्तों से होकर आखिरकार वे दोनों अपनी मंजिल तक पहुँच गए।

परिधि ने देखा कि वो कोई खंडहर जैसी जगह थी। अंधेरे की वजह से उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था, पर ना जाने क्यों पहली बार उसे डॉ. अनंत के साथ डर लगा था। पर अब वो वापस भी नहीं जा सकती थी, इसलिए चुपचाप अपने डर को समेटे हुए आगे बढ़ती गई।

और आखिरकार वो दोनों एक बड़े से दरवाजे के सामने पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही डॉ अनंत ने एक गहरी साँस ली और फिर मुड़कर परिधि की ओर देखा। वो थोड़ी डरी हुई सी दिखाई दे रही थी। उस पर एक नजर डालने के बाद डॉ. अनंत ने आगे बढ़कर उस दरवाजे को खोल दिया। रोशनी का तेज प्रहार दोनों की ऑखों में हुआ, जिससे परिधि ने अपनी ऑखें अपने बाजू से बंद कर लीं। अनंत कुमार उसका दूसरा हाथ पकड़कर उसे अपने साथ अंदर ले गए और वो दरवाजा एक बार फिर बंद हो गया।
धीरे-धीरे परिधि ने अपनी ऑखों के सामने से अपना बाजू हटाया और नजरें चारों और दौड़ाई। वो पूरा कमरा आईनों से भरा हुआ था या फिर... मैं पूरा कमरा ही आईने से बना हुआ था। परिधि भौचक्की सी चारों ओर देख रही थी, पर उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। जब समझ में कुछ नहीं आया तो उसने डॉ अनंत की ओर सवालिया नजरों से देखते हुए पूछा, "हम कहाँ हैं अंकल?"

डॉ. अनंत के कोई जवाब देने से पहले ही एक सर्द सी आवाज़ उस कमरे की दीवारों से टकराकर गूंज उठी।

"कैसी हो परिधि?" परिधि ने डरते हुए पीछे मुड़कर देखा तो उसकी साँसें रूकते-रूकते बची। वो ख़ौफनाक पिशाच उसके सामने हवा में उड़ रहा था। उसके होंठों से एक ख़ौफनाक हँसी निकली और फिर वो पिघले शीशे की तरह अपने शब्दों को उसके कानों में उतारते हुए बोला,

"आखिरकार समय का पहिया फिर घूमने वाला है। स्वागत है तुम्हारा!"

"माया!"

(First point)

वो एक भूरी रंगत और खुरदुरी चमड़ी वाला अजीब सा इंसान और चमगादड़ का मिश्रण था। उसके सिर पर दो बड़े गूमड़ जैसे बने हुए थे। उसकी ऑखें बड़ी और खिंची हुई सी थीं, जो लाल अंगारे की तरह दहक रही थीं। उसका मुँह कुछ अजीब तरीके से उभरा हुआ था और जब वो बोलते हुए परिधि की ओर देखकर मुस्कुराया, तो उसके होंठों के दोनों
किनारों को चीरकर दो सफेद और नुकीले दाँत बाहर की ओर निकल आए। उसके हाथ और पैर झिल्लीदार और बड़े नाखूनों वाले थे, जिनकी मदद से वो इस समय उसके सामने उल्टा लटका हुआ था।

"माया! कौन माया?" उस भयानक जीव को सामने देखकर परिधि की काँपती हुई आवाज आई।

"कौन माया? ये तुम पूछ रही हो कि.... कौन माया?" एक बार फिर से वही सनसनी पैदा पैदा करने वाली आवाज परिधि के कानों में उतरी। डर से उसकी ऑखें भीग गई थीं और पैर काँपने लगे थे। उसने पीछे मुड़कर अनंत कुमार की और देखा, जो भावविहीन ऑखो से उसी की ओर देख रहे थे।

"अंकल! आप तो मुझे इस राक्षस बचा रहे थे, फिर आज आपने ऐसा क्यों किया?" परिधि ने बिलखते हुए अनंत कुमार से कहा, मगर उसके सवाल का उसे कोई भी जवाब नहीं मिला।

"क्या हुआ? डर क्यों रही हो? जब गुनाह करते समय डर नहीं लगा, तो सजा से क्यों डर लग रहा है?" अल्फ़ी ने कहा। उसकी आवाज में इतनी कड़वाहट भरी थी, कि उस कड़वाहट से परिधि अंदर तक कसैला महसूस करने लगी। अल्फ़ी ने अपने पैरों की पकड़ को ढीला कर एक उड़ान भरी और परिधि के सामने आ गया और परिधि को अपनी साँसें रूकती हुई महसूस हुई थी।

"पर मैंने किया क्या है? क्यों मेरे पीछे पड़े हुए हैं? मुझे कुछ भी याद नहीं है!" सहमी हुई सी परिधि अपने बालों को मुट्ठियों में भींचकर घुटनों के बल बैठ गई और जोर-जोर से सुबककर रोने लगी।

"ओह! मैं तो भूल ही गया था कि तुम तो अपनी बेगैरत यादें पीछे छोड़
आई हो, इसीलिए तो इतनी मासूम लग रही हो। पर ये लोग नहीं जानते हैं कि तुम क्या चीज़ है? एक धोखा! जो बस धोखा देना जानती है।" अल्फ़ी, परिधि के आसपास चक्कर लगाते हुए बोला।

उसकी बातें सुनकर परिधि और भी फूट-फूटकर रोने लगी। जिसे ये भी ना पता हो कि आखिर उसने ऐसी क्या ग़लती की है.. जिसकी वजह से उसे ये सब झेलना पड़ रहा है, तो उसकी हालत का अंदाजा लगाना मुश्किल भी है और नहीं भी।

"तो... तुम्हें जानना है कि तुमने ऐसा क्या किया है कि तुम इस तरह मुजरिम की तरह अपनी सजा का

इंतजार करने पर मजबूर हो। है ना!" अल्फ़ी ने परिधि के चेहरे के सामने अपना भद्दा चेहरा लाते हुए कहा। परिधि का आंसुओं से भरा चेहरा धुंधलाने लगा था। वो कुछ भी कह पाने की हालत में ही नहीं थी। उसे ऐसा लग रहा था कि बस अब मौत कुछ ही दूर खड़ी उसी का इंतजार कर रही थी। वैसे भी अगर वो रक्तपिपासु हैवान उसे नहीं मारता तो भी उसके ख़ौफ से ही वो कुछ देर में मर ही जाती। उसके दिल की धड़कनें बुरी तरह से अव्यवस्थित हो चुकी थीं और घबराहट से उसका सारा शरीर पसीने से भीग चुका था। उसकी रोने की आवाज भी अब हिचकियों में बदल चुकी थीं, जिसकी वजह से उसका शरीर जोर-जोर झटके खा रहा था।

उसकी ऐसी हालत देखकर पहली बार डॉ अनंत के दिल में कुछ हुआ और उन्होंने परिधि की ओर अपना एक हाथ उठाना ही चाहा था कि तभी वो पिशाच एक लंबी छलांग के साथ उनके सामने खड़ा हो गया।

"तरस आ रहा है इस पर! ऐसी ग़लती मत करना! इसकी बोली सूरत में नहीं जाना। एक ये ही है, जिसने सभी की जिंदगियों को समय के जाल में उलझा दिया है। अगर आज ये जाल नहीं सुलझा, तो फिर ना जाने क्या-क्या उलझेगा? ना जाने कितनों के खून से लाल हो इसका दामन।"
अल्फ़ी जहर भरी नजर परिधि पर डालते हुए डॉ अनंत से बोला और डॉ अनंत में एक बार फिर अपने हाथ पीछे कर लिए।

अल्फ़ी ने डॉ अनंत पर एक मुस्कुराती हुई नजर डाली और फिर परिधि की ओर देखते हुए कुटिलता से बोला, "तो! अपनी यादें खोज रही हो तुम! मिलेगी ना! जरूर मिलेगी! तभी तो अपने गुनाहों की अंधेरी गहराई का अंदाजा होगा तुम्हें।"

उसकी बात सुनकर सिर झुका कर सुबकती हुई परिधि ने आंसुओं से धुला अपना चेहरा ऊपर की ओर उठाया। अब ना जाने क्यों उसे उस अजीब सी चीज से डर नहीं लग रहा था, बल्कि कौतूहल की एक हल्की सी चिंगारी ऑखों में लेकर वो उसे देखने लगी। वो एक वहशियाना मुस्कुराहट के साथ उसके सामने बैठ गया और उसे एकटक देखने लगा। पहली बार परिधि ने भी डर को दूर हटाकर उसकी ऑखों में देखने की हिम्मत की।

"माया... माया... माया! सब तेरी ही छाया है, जिसने इस.. वक्त को भी भरमाया है।" अपनी लाल-लाल ऑखों में चमक भरकर अपने नुकीले दाँत चमकाते हुए अल्फ़ी ने कहा और फिर अपना चेहरा उसकी ओर बढ़ाने लगा। वो हर पल जिसके साथ वो परिधि की ओर बढ़ रहा था... परिधि को पहाड़ की तरह भारी लग रहे थे। पर कहते हैं कि जब मौत ऑखों के सामने हो, तो मौत का डर भी खत्म हो जाता है और इंसान शून्य होकर रह जाता है और बस इस समय परिधि भी उसी कैफियत की गिरफ्त में थी। वो बस उसे अपनी ओर बढ़ते हुए देखे जा रही थी।

और फिर उसने अपनी ऑखों के सामने हवा में कुछ बिखरता हुआ देखा। उसने अपनी ऑखें मिचमिचाई और फिर से सामने की ओर देखा। उसके सामने वो ख़ौफनाक चेहरा धूल की तरह हवा में घुल रहा था और उसके पीछे से कोई चीज बाहर आने के लिए मचल रही थी। ये सब इतना ज्यादा अजीब दिखाई दे रहा था कि परिधि को अपनी देखने की क्षमता पर शक
होने लगा।

और फिर उस गुबार से एक चेहरा बाहर आया। एक चेहरा, जो निहायत ही मासूम था। काली घनी भौंहों के नीचे उसकी ऑखें जिंदगी से भरी हुई थीं और होठों की मुस्कुराहट में ढेर सारी उम्मीदों के साए थे। बिना किसी शक के ये एक बेमिसाल हुस्न था, जो उस ख़ौफ की चादर को हटाकर बाहर आया था।

परिधि ने उस चेहरे को देखा तो उसकी ऑखों में पहचान की निशानियाँ दस्तक देने लगीं, पर वो अभी भी अपनी यादों के दरवाजे को खोलने में नाकाम ही थी। खोई हुई सी हालत में उसने अपना हाथ उस चेहरे की ओर बढ़ाया। वो उसे छू पाती, उससे पहले ही वो चेहरा एक बार फिर से उसी गुबार में खो गया और परिधि का चेहरा ख्यालों की गिरफ्त से एक झटके में बाहर आया।

"मुझे छूने का अधिकार बस मेरी माया को है, उसके क़ातिल को नहीं। वैसे.... कुछ याद आया या फिर हद दर्जे की गिरी हुई इंसान हो।" अल्फ़ी एक बार फिर से अपनी ख़ौफनाक शख्सियत के साथ फुंफकारते हुए बोला।

और परिधि जो शायद अपने यादों के पंछी को फिर से पकड़ने की कोशिश कर ही रही थी, खाली हाथों के साथ रह गई। उसने लाचारी भरी नज़रों से उस पिशाच की ओर देखा, जो उसे देखकर गुस्से में लंबी-लंबी साँसे ले रहा था। दोनों चेहरों को अपने ज़हन में रखने के बाद उसे ये यकीन हो गया था कि वाकई कुछ बहुत बुरा हो चुका है, उसके हाथों। पर वो अभी भी अपने गुनाहों की परछाईं देखने में नाकामयाब थी। अब वो भी थक चुकी थी। खुद भागते-भागते और अपनी वजह से सभी को भगाते-भगाते। उसने अल्फ़ी के सामने हथियार डाकर रोते हुए इंकार में अपना सिर हिलाया।
"तो ये लो!" कहकर अल्फ़ी ने अपने हाथों से उसे हल्का सा धक्का दिया, मगर उस स्पर्श से ही वो तेजी झटके के साथ पीछे लगे आईने से टकरा गई और वो आईना टूटकर उसके ऊपर बिखर गया। उसके शरीर में कई जगह काँच के टुकड़े चुभ गए थे और उनसे खून निकलने लगा था। अल्फ़ी ने उसके शरीर से खून निकलते देखा, तो वो एक अजीब सी मदहोशी का शिकार होने लगा था। अपनी जबान पर जीभ फेरते हुए वो उसके पास आया और उसके जख़्मी हाथ को पकड़ कर अपनी नाक के पास ले आया। वो उसके शरीर से निकले खून की खूश्बू को अपने अंदर उतार रहा था। एक बार के लिए उसकी लंबी सी जीभ लपलपाते हुए उसके ज़ख़्मों की ओर बढ़ी ही थी कि तभी उसने उसका हाथ बेदर्दी से झटक दिया। परिधि घायल जमीन पर पड़ी हुई थी।

"नहीं याद आया ना! कोई बात नहीं! अब आएगा!" कहते हुए उस पिशाच ने बेदर्दी से परिधि के बालों को पकड़ा और उसे घसीटते हुए एक दूसरे आईने के सामने पटक दिया। परिधि ने गहरी साँसें लेते हुए उस आईने की ओर देखा, जिसमें उसका अक्स नज़र आ रहा था। वो खुद को ही आश्चर्य से देखती रही, जब तक कि उसके अक्स ने असामान्य सी हरकत करते हुए उसके विपरीत काम करना शुरू कर दिया। परिधि के साथ-साथ डॉ अनंत की ऑखें भी आश्चर्य से फैली थीं।

"पता है! इन आईनों के पीछे छोड़ आई हो तुम अपनी यादें। कभी ग़ौर से देखती, तो समझ पाती। पर तुम्हारे पास समय है ही कहाँ? तुम्हें तो हर चीज यूँ चुटकी बजाते हुए चाहिए थी ना! और उसके लिए तुमने मेरा दिल तोड़ा, मेरी माया को मुझसे दूर किया। अब जब तक तुझे तुझसे ही दूर ना कर लूं, मेरा इंतक़ाम पूरा नहीं होगा।" अल्फ़ी अपने हर शब्द में आग की गर्मी भर कर बोला।

और फिर उस आइने के अंदर वाले अक्स ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और शिथिल पड़ी परिधि को अपनी गिरफ्त में ले लिया। उसके छूते ही परिधि
को अपना पूरा शरीर पहले तो ठंड की जकड़न का शिकार होता लगा और फिर अचानक ही उसे अपना पूरा शरीर हवा की तरह हल्का लाने लगा। उसका शरीर हवा में उड़ा और देखते ही देखते उस आईने में समा गया। डॉ अनंत तेजी से आगे बढ़कर वहाँ आए और उस आईने की ओर देखा।

"यह क्या किया? तुमने वादा किया था कि तुम उसे नुकसान नहीं पहुँचाओगे और अब ये।" डॉक्टर

अनंत कुमार धड़कते हुए बोले।

"च्च्च्च्! शांत रहो डॉक्टर! कुछ नहीं हुआ है तुम्हारी लाडली को। पर तुम्हें भी जरूरत है उसकी सच्चाई देखने की... कि किसे बचाने की कोशिश कर रहे हो!" कहते हुए अल्फ़ी ने अपना हाथ उस आईने पर फिराया और अगले ही पल वो आइना किसी चलचित्र में बदल गया, जिसमें कोई कहानी अपना आकार लेने लगी थी।

बस यही वो समय था, जब मुकुल ने डायरी के ऊपर अपना हाथ रखकर ध्यान लगाया और वो डायरी रोशन होने लगी। इसी के साथ बिल्कुल इसी समय चैतन्य और अनामिका ने अपने हाथ उस आईने में रखे और दोनों ही उसके अंदर गिर पड़े।

यादों की डायरी अपने खाली पन्ने एक बार फिर यादों के रंगों से भर चुकी थी मगर इन रंगों में काला रंग सबसे ज्यादा था जो दूसरे रंगों को छोटा साबित करने की हर संभव कोशिश कर रहा था। अब रंगों की क्या कहानी थी यह जानने के लिए इस यादों की डायरी के पन्ने पलटने जरूरी थे और ये काम मुकुल ने कर दिया था।
अल्फ़ी ने अपना हाथ उस आईने पर फिराया और अगले ही पल वो आइना किसी चलचित्र में बदल गया, जिसमें कोई कहानी अपना आकार लेने लगी थी। बस यही वो समय था, जब मुकुल ने डायरी के ऊपर अपना हाथ रखकर ध्यान लगाया और वो डायरी रोशन होने लगी। इसी के साथ बिल्कुल इसी समय चैतन्य और अनामिका ने अपने हाथ उस आईने में रखे और दोनों ही उसके अंदर गिर पड़े।

मुकुल ने काँपते हुए हाथों से उस डायरी को खोला। चौथा पन्ना खोलते ही एक तेज धुँध भरी रोशनी उसमें से निकलकर ऊपर की ओर उठी और फिर उस रोशनी की धुँध धीरे-धीरे छँटने लगी। धुँध के छँटते ही वहाँ सब कुछ साफ़ हो गया और एक आईने के जैसी चमकदार सतह उन पाँचों के सामने हाजिर थी। वरुण, अंकित, आशुतोष और सृष्टि चारों ही मुकुल के पास आकर खड़े हो गए और फिर सभी उस चमकते हुए पटल को देखने लगे जहाँ अब कुछ आकृतियाँ उभरने लगी थीं।

और बिल्कुल वही आकृतियाँ डॉ. अनंत के सामने के आईने में भी उभरनी शुरू हो गई थीं। जाहिर सी बात थी कि अलग-अलग जगह पर होकर भी वो सभी उसी कहानी के गवाह बनने वाले थे, जो लोगों की जबान से अनकही रह गई थी। और..... उन सबसे अलग... दो नमूने उस अनकही कहानी को खोजते-खोजते उसी कहानी की गोद में जा गिरे थे।

"आउच!" चैतन्य जोर से चिल्लाया था, जब अनामिका उसके ऊपर आ गिरी थी।

"सॉरी!" अनामिका घबराकर उसके ऊपर से हटते हुए बोली।

"क्या खा रही हो आजकल तुम लड़कियाँ यार? पहले वो सृष्टि और अब तुम!" चैतन्य खड़े होकर अपने कंधों को दबाते हुए दर्दीले भाव के साथ बोला।

"क्या मतलब कि क्या खा रही हैं? अपनी बात करो कुपोषित इंसान! खुद में ताकत नहीं और दूसरों को बोल रहे हो!" अनामिका ने भी ख़ासा चिढ़कर जवाब दिया।

"क्या कहा? तुम्हारा मतलब है कि मुझमें ताकत नहीं है! दिखाऊँ क्या अभी तुम्हें अपनी ताकत!" तैश में

कहता हुआ चैतन्य, अनामिका की ओर बढ़ा, जिससे अनामिका के माथे के बलों में इजाफा हुआ था।

अनामिका ने तेजी से चैतन्य के आगे अपने हाथ जोड़े और उतनी ही तेजी से बोली, "हे नराधम! अपनी तृष्णा लोक से वापस आओ और चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर देखो कि ये किस लोक में आ गिरे हैं हम। अब यहाँ से जाएँगे कैसे?"

उसकी बात सुनते ही चैतन्य जैसे होश में आया। उसने भी तेजी से चारों ओर देखा। रात का समय था, इसलिए ज्यादा कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। चाँद की रोशनी के उस नीम अंधेरे में बस इतना ही समझ में आया कि जंगल जैसी कोई जगह थी और अगर जंगल था, तो खतरनाक भी हो सकता था। यही सोचकर चैतन्य ने अनामिका का हाथ पकड़ा और
फिर अपने अंदाजे से एक ओर बढ़ने लगा। अनामिका भी चुपचाप उसका अनुसरण करते हुए उसके पीछे-पीछे चल दी। वे दोनों बहुत देर तक उसी तरह चलते रहे... मगर पहुँच कहीं भी नहीं पाए। आखिरकार अनामिका ने एक जगह रुकते हुए चैतन्य के हाथ को एक तेज झटका देकर उसे भी रोका था।

"क्या हुआ?" चैतन्य ने अनामिका की ओर मुड़कर बहुत ही धीमी आवाज में पूछा।

"जा कहाँ रहे हैं हम लोग?" अनामिका ने बेसब्री से पूछा।

"कहाँ जा रहे हैं? बात दरअसल ये है कि... मेरे दादाजी ने कुछ मोमबत्तियाँ और एक नक्शा इस जंगल में कहीं छुपाया है। उसे ही ढूँढ रहा हूँ।" चैतन्य ने भी चिढ़कर जवाब दिया था।

"बकवास मत करो!" अनामिका बमकते हुए बोली।

"अरे यार! कमरा तुम्हारा... आईना तुम्हारा और मुझसे पूछ रही हो कि हम कहाँ हैं? अब मुझे कैसे पता होगा? एक तो तुम डायनों का समझ में नहीं आता कि यहाँ-वहाँ कहीं पर भी ये गुप्त रास्ते क्यों बनाकर रखती हो?" चैतन्य रास्ता नहीं मिलने से और भी चिड़चिड़ा रहा था।

"मैंने कोई रास्ता नहीं बनाया!" अनामिका भी तिड़कते हुए बोली।

"तुमने नहीं बनाया... परिधि ने नहीं बनाया। तो फिर किसने बनाया? उस चित्रलेखा की अम्मा ने!" चैतन्य उसका हाथ छोड़कर उसकी ओर मुड़ता हुआ बोला।

"चैतन्य! कहीं सचमुच हम लोग किसी समय द्वार से किसी और समय में
तो नहीं आ गए हैं ना!" चित्रलेखा के जिक्र से अनामिका ने एक संभावना जताते हुए कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य के बढ़ते कदम रूके थे और एक बार फिर उसने अनामिका की ओर देखा था।

"तुम्हारा मतलब है कि... हम लोग अतीत में हैं!" अनामिका की बात पर चैतन्य ने चौंकते हुए कहा।

"मुझे तो ऐसा ही लग रहा है। तुम्हें नहीं! पर... ये हुआ कैसे?" अनामिका ने कहा।

"क्या पता? यहाँ से बाहर निकलें तो समझ में आए।" कहते हुए चैतन्य ने अपने कदम आगे बढ़ाए।

"कितना अच्छा होता कि तुम्हारी जगह आशुतोष जी साथ होते। कम से कम वो इस जंगल के बीच से रास्ता तो खोज लेते।" अनामिका ने पुरानी बात याद करते हुए चैतन्य पर लगभग तंज कसा था और उसका असर भी हुआ, जब चैतन्य एक बार फिर से उसकी ओर मुड़ा था।

"ये क्या बार-बार आशुतोष-आशुतोष करती रहती है तुम! अगर ऐसी ही बात है, तो फिर देखो मेरा कमाल!" कहते हुए चैतन्य ने अनामिका के हाथ को छोड़ा और फिर अपनी अंगूठी के पत्थर को अपनी हथेली की ओर घुमाकर उसने अपनी मुट्ठी कसी और फिर धीरे-धीरे कुछ बुदबुदाता हुआ अपनी उस मुट्ठी को अपने होठों के पास रखा और फिर वो मुट्ठी धीरे से खोल दी। थोड़ी ही देर में हवाओं का मिजाज बदलने लगा और वे थोड़ा जोर दिखाते हुए बहने लगीं।

"ये क्या हुआ?" अनामिका ने घबराकर चारों ओर देखते हुए कहा क्योंकि हवाओं के जोर से उसका शरीर एक ओर बढ़ता जा रहा था।
"कुछ नहीं! जिस तरफ यह हवाएँ धकेल कर ले चलें उसी तरफ चलो। मैंने हवाओं को हमारी मंजिल तक पहुँचाने का आदेश दिया है।" चैतन्य ने मुस्कुराते हुए कहा और फिर वे दोनों सच में हवाओं के बहने की दिशा में आगे बढ़ते हुए उस जंगल के बाहरी छोर तक पहुँच गए।

वो एक खुली-खुली सी जगह थी। हवाओं का जोर जंगल के साथ ही खत्म हो गया था। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि कुछ औरतें सफेद कपड़े पहने आग के चारों ओर खड़ी हुई किसी प्रकार की साधना कर रही थीं।

"ये सब कौन हैं?" चैतन्य ने आश्चर्य से उन औरतों को देखते हुए कहा।

"श्श्श्श्! मुझे लगता है ये डायनें हैं और किसी प्रकार का रिचुअल्स कर रही हैं।" अनामिका ने फुसफुसाते हुए कहा और अपनी एक उंगली चैतन्य के होठों पर रख दी। चैतन्य ने एक तिरछी नज़र अनामिका की ओर डाली और उसकी वो ऊंगली धीरे से हटा दी।

"अनामिका! एक बात बताओ! क्या ये सब हमें देख सकते होंगे क्योंकि पिछली बार जब मैं और सृष्टि अनंत जी की यादों में गए थे, तब हमें कोई भी नहीं देख सकता था।" चैतन्य ने सृष्टि के साथ अपना पिछला अनुभव याद करते हुए कहा।

"मुझे नहीं मालूम चैतन्य क्योंकि ये कोई याद है.... या फिर कोई अतीत ये पता नहीं है और प्लीज़.... चुप रहो। कहीं कोई सुन ना ले। पता तो चले कि आखिर हो क्या रहा है?" अनामिका सामने ऑखें गड़ाए हुए बोली।

"हे अनामिका! उधर देखो!" चैतन्य ने अनामिका का कंधा हिलाते हुए कहा।

"क्या?"

"उस तरफ! तुम्हें नहीं लग रहा है कि हम इस जगह पर पहले भी आ चुके हैं!" चैतन्य ने दाईं ओर नज़रें घुमाकर अपनी ऊंगली से एक ओर इशारा करते हुए कहा।

और उसकी बात सुनकर अनामिका ने भी उसकी नज़रों की दिशा का

पीछा किया और फिर उसने कुछ ही दूरी पर स्थित एक विशाल इमारत को अंधकार के कोहरे में छिपा हुआ देखा। उन दोनों को ही वो जगह और वो इमारत जानी-पहचानी सी लग रही थी। उन दोनों ने एक बार फिर नज़र घुमाकर आग के चारों ओर खड़ी हुई उन महिलाओं को देखा और फिर.... उस इमारत को देखने लगे।

"अनामिका! ये तो...."

"डायनों का बसेरा है।" अनामिका ने बात पूरी की।

"पर.... ये तो सही-सलामत है। तो क्या इसका मतलब है कि हम दोनों सच में 200 साल पीछे आ गए हैं।" चैतन्य ने उत्तेजित होते हुए कहा।

"पर ये हुआ कैसे?" अनामिका ने आश्चर्य जताया।

"एक बार फिर से... नो पता!" चैतन्य ने अनामिका की ओर देखकर कंधे उचकाते हुए कहा, जिस पर अनामिका ने उसे घूरकर देखा। मगर वो तो सामने की ओर देखने में मसरूफ हो गया था।

"उफ्फ! ये क़यामत कौन है?" सामने की ओर देखते हुए ही चैतन्य के होठों से फिसला और ये सुनते ही अनामिका की नजरें भी उस ओर गईं।

उन औरतों के रिचुअल्स में अब तेजी आ गई थी और इस बार एक अलग बात ये थी कि अब एक बेहद ही खूबसूरत लड़की बीच में खड़ी हुई थी। वो अपने हाथ फैलाकर ऑखें मुंदे खड़ी हुई थी। वो लड़की इतनी ज्यादा खूबसूरत थी कि उसे देखकर चैतन्य की ऑखें और मुँह दोनों ही खुले रह गए। अनामिका ने पहले तो उस लड़की की ओर देखा और फिर अपने जबड़े भींचकर चैतन्य की ओर देखा, जो अभी भी उस लड़की के हुस्न में अकबकाया सा खोया हुआ था। अनामिका ने अपनी कोहनी पूरी ताकत से चैतन्य की पसलियों में घुसाई और उसकी चीख निकलने से पहले ही उसके मुँह को पूरी ताकत से बंद कर दिया। उसने चैतन्य के घुटनों के पीछे एक भरपूर लात मारी, जिससे चैतन्य लड़खड़ा कर नीचे गिर पड़ा और साथ-साथ अनामिका भी उसके ऊपर गिर पड़ी।

दर्द से कराहता हुआ चैतन्य, अनामिका की गिरफ्त से छूटने के लिए छटपटाने लगा, मगर अनामिका भी कम नहीं थी।

"ये मुँह और ऑख फाड़कर क्या देख रहे हो? अपनी हरकतें काबू में रखो वरना..." अनामिका ने ख़ासे चिढ़े हुए अंदाज में कहा। चैतन्य ने इशारे से उसे अपने मुँह से हाथ हटाने के लिए कहा। अनामिका ने एक कहरभरी नज़र उस पर डालते हुए धीरे से अपना हाथ हटाया था।

"सॉरी!" चैतन्य फुसफुसाते हुए उससे माफी मांगी थी।

"बस मुँह से लार टपकना ही बचा था।" अनामिका ने एक-एक शब्द को चबाते हुए कहा और उठ खड़ी हुई।

"अरे यार! जरा उसे देखो ना! वो कितनी खूबसूरत है! उसे देखकर तो आशुतोष जी भी फिर से पुष्पकेतु बन जाएँ।" चैतन्य भी खड़ा होकर एक आह भरते हुए बोला।

"तुम्हें वापस जाना है या नहीं!" अनामिका की आवाज में धमकी मिली हुई थी।

"जाना है यार! क्यों नहीं जाना है?" चैतन्य ने उसकी ओर देखकर कहा।

"अब आशुतोष जी इस लड़की तक जाने के लिए पुष्पों का सेतु बनाएँ या उसे अपना बनाने के लिए कोई हेतु बनाएँ, तुम उस बला से दूर रहोगे,
जब तक हम यहाँ हैं। समझ में आया तुम्हें!" अनामिका चिल्लाकर उस पर झुकती हुई बोली।

"समझ गया! समझ गया!" चैतन्य ने भी घबरा कर उसकी हाँ में हाँ मिलाई, जिससे अनामिका के कसबल थोड़े ढीले पड़े।

"वैसे ये बला है कौन? ना जाने ऐसा क्यों लग रहा है कि इसे कहीं देखा है?" चैतन्य ने एक बार फिर उस लड़की को देखते हुए गंभीरता से कहा। अब सामने होने वाले रिचुअल्स बंद हो गए थे और सभी औरतें और लड़कियाँ आपस में खड़ी होकर कुछ बातें कर रही थीं।

"तुम फिर शुरू हो गए।" अनामिका एक बार फिर तिलमिलाई।

"अरे यार! ठीक कह रहा हूँ! देखो जरा!" चैतन्य ने अनामिका का चेहरा उस लड़की की ओर मोड़ते हुए कहा। इस बार अनामिका ने भी उस लड़की के चेहरे को बड़े ही गौर से देखो और उसे भी चैतन्य की इस बात पर यकीन आया कि उस लड़की का चेहरा कुछ जाना-पहचाना सा था। पर आखिर वो थी कौन? और अगले ही पल उन्हें इसका जवाब भी मिल गया, जब किसी लड़की ने तेज आवाज में पुकारा।

"माया!"

और वो खूबसूरत सी लड़की उस दूसरी लड़की की ओर देखते हुए मुड़ी थी। अनामिका और चैतन्य ने देखा कि माया को पुकारने वाली लड़की कोई और नहीं बल्कि परिधि ही थी। अनामिका और चैतन्य ने अंजाने में सचमुच अतीत में घुसपैठ कर ली थी और इसके नतीजे आगे आने वाले थे।
(पुष्पों का सेतु word credit by मि. देव कुमार!
"परिधि!" अनामिका के मुँह से निकला।

"हाँ! वही तो है। इसका मतलब कि ये सच है!" चैतन्य ने भी परिधि की ओर देखते हुए कहा।

"क्या?" अनामिका ने चैतन्य की ओर नज़र घुमाकर पूछा।

"यही कि उस अल्फ़ी और इस माया का सचमुच में टांका भिड़ा हुआ था।" अपनी बात कहकर चैतन्य ने एक आह सी निकाली।

एक बार फिर से अनामिका ने चैतन्य को जहर उगलती हुई नज़रों से देखा और चिढ़ से बोली, "टांका!"

उसका लहजा महसूस करके चैतन्य ने अनामिका की ओर देखा और बोला, "हाँ! मेरा मतलब है कि चक्कर चल रहा था उन दोनों का।"
"तुम ये बात तरीके से भी बोल सकते हो।" अनामिका ने नाक चढ़ाकर उसे घूरा था, जिस पर चैतन्य ने उसकी ओर देखा और फिर सिर हिला कर सामने देखने लगा। अनामिका ने भी अपनी नजरें सामने की ओर घुमाई। उन दोनों ने देखा कि माया और परिधि उन्हीं की तरफ आ रही थीं।

"ये दोनों इधर क्यों आ रही हैं?" चैतन्य ने थोड़ा घबरा कर कहा।

"मुझे क्या मालूम?" दाँत भींचकर कहते हुए अनामिका ने चैतन्य को पीछे खींचा और फिर वे दोनों एक मोटे से पेड़ की आड़ में खड़े हो गए। माया और परिधि उन दोनों से थोड़ी ही दूर पर जंगल की आखिरी सीमा के पास आकर खड़े हो गए।

उन दोनों ने देखा कि रात के इस पहर दूर से आ रही आग की पीली रोशनी में भी माया का सौंदर्य सोने की तरह दमक रहा था। उसकी बादामी ऑखें जैसे बोलने को बेताब थीं। गुलाबी होंठ गुलाबों का सारा रंग चुरा लाए थे और इन नाज़ुक होठों के बीच श्वेत वर्ण दंतपंक्ति मोतियों की तरह चमक रही थीं। उसकी पतली, खड़ी सुतवां नाक ख़ासी मगरूर लग रही थी और उसके लंबे लाल-सुनहरे बाल हल्की हवा में इधर से उधर उड़ रहे थे। हर तरह से वो एक बेमिसाल हुस्न की मलिका थी। माया ने पहले चारों ओर नज़र घुमा कर तसल्ली की... कि उन दोनों की बातों को कोई सुन तो नहीं रहा। इत्मीनान होने के बाद वो परिधि की ओर मुड़ी।

"क्या हो गया? देख नहीं रही थी कि हम जरूरी बातें कर रहे थे। तुमसे थोड़ा सा रूका भी नहीं जाता।" माया ने परिधि को झिड़कते हुए कहा।

"पर.... उसने फिर से संदेश भेजा है। एक बार मिल लो ना तुम!" परिधि ने उकताए हुए स्वर में कहा।
"च्च्च्च्! ये लड़के भी ना! पूरे मक्खी की तरह होते हैं। मीठा दिखा नहीं कि....! अरे महफ़िल की शाम थी। वो नशे में था... मैं नशे में थी। हो गया जो होना था। उसने तो पकड़ कर रख लिया उस बात को।" माया ने बहुत ही लापरवाही से कहा।

"पर माया... वो तुम्हें लेकर बहुत गंभीर हो गया है। उसकी चिट्ठियाँ पढ़ी है ना तुमने! तुम्हारे मन में कुछ नहीं था तो पहले ही उसे मना कर देती। अब तो वो बावरा हो गया है तुम्हारे लिए! तुम ऐसा कैसे कर सकती हो उसके साथ?" परिधि ने माया को लताड़ते हुए कहा।

"क्योंकि पहले-पहले मुझे मजा आ रहा था। पर अब नहीं। देखो परिधि! वो कौन है? क्या है? उसे खुद ही नहीं पता और मुझे रूतबा, ताकत और दौलत... तीनों चाहिए। मैं माया हूँ... माया! कोई परिधि नहीं, जिसे कोई भी हासिल कर ले।" माया ने परिधि पर कटाक्ष करते हुए कहा।

"ये कैसी बातें कर रही हो?" परिधि अपने नाम के जिक्र पर तिड़क कर बोली।

"सही तो कह रही हूँ। उससे कहो... रात गई.. बात गई! कोई अपनी जैसी ढूँढ ले वो। वैसे... तुम भी कोई बुरी नहीं हो। देखने में भी खूबसूरत हो। एक बार अपना चेहरा उस बेवकूफ को दिखा दो, तो शायद तुझे ही पसंद कर ले वो। वैसे भी दिव्याक्षि ने मुझे बताया है कि मेरी जिंदगी में कोई आने वाला है। उससे कहीं बेहतर और खूबसूरत भी। तो मेरी तरफ से ये चैप्टर क्लोज होता है। हमेशा के लिए! बता

देना उसे!" माया ने बहुत ही स्वार्थी और बेरहम लहजे में कहा।

"माया! तुम ये अच्छा नहीं कर रही हो। याद रखो कि वो पिशाच कुल से है। बात बढ़ी तो हर चीज हाथ से निकल जाएगी।" परिधि ने बहुत ही परेशान होकर कहा।
माया ने परिधि के लहजे को भांपकर उसकी ओर देखा और उस पर व्यंग्य बाण छोड़ते हुए बोली, "अच्छा! और ये कौन बोल रही है? एक बिना पंखों वाली चिड़िया! समझ में नहीं आता कि तुम्हारा जन्म डायनों के परिवार में हुआ कैसे? कोई भी तो गुण नहीं है तुम्हारे अंदर एक डायन के! बिना किसी जादुई ताकत के तुम पैदा कैसे हो गई हमारे बीच, बिल्कुल किसी अपशब्द की तरह!"

"मैं कह दूंगी उसे!" परिधि ने अपना हाथ उठाकर उसे टोकने वाले अंदाज में कहा। अपमान की आग में उसका खूबसूरत चेहरा लाल अंगारे की तरह दहकने लगा था। उसे इस तरह सुलगता हुआ देखकर माया के चालाक चेहरे पर कुटिलता भरी मुस्कुराहट तैरने लगी।

"बहुत अच्छे! ये हुई ना समझदारी की बात!" माया ने परिधि के गाल को थपथपाते हुए कहा और फिर बसेरे की ओर मुड़ गई। अभी वो दो-चार कदम आगे ही बढ़ी थी कि अचानक उसे कुछ याद आया और वो पलटकर परिधि के पास आई।

"ये लो तुम्हारा कड़ा! तुम्हारी तरह ये भी ढीठ है। लगता है कि तुम्हारी किस्मत में जादुई ताकत प्राप्त करना लिखा ही नहीं है।" तंज भरे शब्द कहते हुए माया ने एक कड़ा परिधि की ओर बढ़ाया। परिधि ने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया। जहर भरी मुस्कुराहट परिधि पर डालकर माया वहाँ से चली गई।

परिधि ने अपने हाथ में पकड़े उस कड़े को बहुत ही गुस्से में घूरा और फिर पूरी ताकत से एक ओर उछाल दिया। चैतन्य ने उसके नीचे गिरने तक पूरे हवाई रास्ते में अपनी नज़र जमाए रखी। परिधि ने अपने गालों पर बहते आंसुओं को बेदर्दी से पोंछा और भरी हुई आवाज में बोली, "तुम ये अच्छा नहीं कर रही हो माया। तुम्हारा फितूर ना जाने क्या-क्या तबाह करेगा!"
और फिर वो भी तेजी से बसेरे की ओर चली गई। अनामिका और चैतन्य जिन्होंने उन दोनों की सारी बातें सुन ली थीं, धीरे से बाहर आए और उस बसेरे की ओर ही टकटकी लगा कर देखने लगे।

"तुम्हारी ख़्याली माशूका तो बड़ी बेवफा निकली।" अनामिका ने अपने होठों में हँसी को दबाते हुए चैतन्य ने कहा, जिस पर चैतन्य ने उसे जहर भरी नजरों से घूरा और उसे इस तरह देखकर अनामिका की बेलगाम हँसी छूट गई।

"बस! हो गया!" चैतन्य जोर से बोला।

"अरे बस क्यों? सुना नहीं उसने क्या कहा? कोई उसकी जिंदगी में आने वाला है। कहीं वो... तुम ही तो नहीं हो ना!" अनामिका ने झेंपे हुए चैतन्य के ऊपर एक और तंजीला पत्थर फेंक कर मारा।

"अरे यार! ऐसे मनहूस समय में इतनी मनहूस बात मत करो! डायन हो डायन! पता नहीं तुम्हारी कौन सी बात कब सच हो जाए!" चैतन्य ने अनामिका को घूर कर देखते हुए कहा।

"अच्छा! इतना डर! थोड़ी देर पहले तो उसकी तारीफ में कसीदे पढ़े जा रहे थे। क्या कहा था? क़यामत! सच में.... क़यामत ही है।" अनामिका ने चैतन्य के गालों पर पिंच करते हुए कहा। चैतन्य ने कोफ्त से उसके हाथ को झटका देना चाहा पर ऐन वक्त पर अनामिका ने अपना हाथ हटा लिया और चैतन्य का

हाथ हवा में ही घूम गया। चैतन्य ने चिढ़ से अपनी ऑखें और होंठ भींच लिए।

"चलो! चलो! वापस आओ!" अनामिका ने चैतन्य के सिर पर एक चपत लगाते हुए कहा, जिससे चैतन्य ने कराहते हुए अपनी ऑखें खोली और
अपना सिर सहलाने लगा।

"सोचो अब क्या करना है?" अनामिका ने एक बार फिर से कहा।

"क्या करना है? यहाँ से निकलना है बस!" चैतन्य ने बहुत ही महत्वपूर्ण उत्तर देते हुए कहा।

"अरे वाह! तुम बताते नहीं तो... मैं तो यहीं रह जाती।" अनामिका ने जबड़े भींच कर कहा।

"बकवास मत करो! अब ये समय द्वार का लोचा मुझे समझ में नहीं आता। तुम्हारा डिपार्टमेंट है, तो तुम्हीं सुलझाओ और जरा जल्दी।" चैतन्य ने चारों ओर देखते हुए बेसब्री सेकहा।

"अरे! पहले पता तो चले कि हुआ क्या है? ऐसे कैसे ठीक कर दूँ?" अनामिका ने भी भड़कते हुए कहा।

"अरे यार! कोई तो तरीका होगा ना!" चैतन्य ने झुंझलाकर कहा।

"चुटकी बजाते ही नहीं बन जाते समय द्वार। समय और सब्र लगता है उसमें।" अनामिका ने भी बमकते हुए कहा।

"समय से क्या मतलब है तुम्हारा? हमें रूकना पड़ेगा क्या यहाँ?" चैतन्य ने भय से भरी हुई ऑखों से अनामिका को देखते हुए कहा और उसकी हालत और खराब करते हुए अनामिका ने अपने कंधे उचका दिए।

"मजाक मत करो प्लीज़!" चैतन्य अपने ग़ुम हुए हवास ढूंढते हुए बोला।

"तुम्हें क्या लगता है कि ऐसी सिचुएशन में मजाक करूंगी मैं?" अनामिका
ने भी उसे लताड़ते हुए कहा।

"अनामिका!" चैतन्य ने लाचारगी से उसकी ओर देखा था।

"क्या अनामिका? तुम्हारे चक्कर में हुआ है ये सब! तुम्हें कहा था कि जाओ अपने कमरे में। पर नहीं! नए-नवेले प्यार के परिंदे को तो पर फड़फड़ाने थे।" अनामिका ने चैतन्य के कंधे पर भरपूर घुसा मारते हुए कहा।

"क्या कर रही हो यार? यहाँ मेरी जान सूख रही है।" चैतन्य ने अपने कंधे को सहलाते हुए कहा।

"यही सोचकर कि यदि इन डायनों ने कहीं पकड़ लिया तो!" कहते हुए चैतन्य का शरीर सिहर उठा।

"तो क्या हुआ? वायु रक्षक हो! संभाल लेना सबको!" अनामिका ने मसखरी करते हुए कहा।

"एक तो संभाले नहीं संभल रही है। दूसरी-तीसरी क्या ख़ाक संभलेगी!" चैतन्य ने अनामिका की ओर देखकर अपना सिर झटकते हुए कहा।

"हम्म! ये की ना समझदारों वाली बात और अब इसे घुट्टी की तरह घोटकर पी जाओ।" अनामिका ने उसे शाबाशी देते हुए कहा।

"अब आगे क्या करना है?" चैतन्य ने पूछा।

"हमें परिधि चाहिए। हमारे यहाँ आने का सूत्र वही है, तो जाने का भी वही होगी।" अनामिका ने कहा।
"ओके! तो क्या करना होगा उसके लिए?" चैतन्य ने पूछा।

"फिलहाल हमें छोटे-छोटे छलद्वार बनाने पड़ेंगे, जैसे चित्रलेखा बनाया करती थी। एक जगह से दूसरी जगह में जाने के लिए। हमें परिधि पर नज़र रखनी पड़ेगी। पर.... उसमें भी एक समस्या है।" अपना प्लान समझाते समझाते अनामिका ने समस्या का जिक्र किया।

"और वो क्या?" चैतन्य ने पूछा।

"परिधि तक जाने के लिए उसकी कोई चीज चाहिए, जो उस छलद्वार को उससे थोड़ा सके। अब वो कहाँ मिलेंगी?" अनामिका ने हाथ झटकते हुए निराशा से कहा।

"अरे! तो मुझसे कहो ना! मैं किसलिए हूँ माई डियर डायन!" चैतन्य ने उस पर अपना प्यार उड़ेलते हुए कहा।

"अच्छा! तो क्या डायनों के बसेरे में घुसपैठ करने वाले हो तुम! पर तुम्हें कैसे पता चलेगा कि परिधि कहाँ रहती है?" अनामिका ने चैतन्या को हैरानी से देखते हुए कहा।

"पागल हो गई हो क्या? इससे अच्छा आग के कुएँ में ना कूद जाऊँ मैं!" चैतन्य ने कुढ़ते हुए कहा।

"तो फिर!" अनामिका उलझन से बोली।

"अरे! परिधि का वो कड़ा! भूल गई!" चैतन्य ने अनामिका के माथे पर चपत लगाते हुए कहा, जिस पर अनामिका ने एक अंदाजे के साथ सामने फैले अंधेरे की ओर देखा।
"तुम्हें नहीं लगता कि उसे ढूँढने के लिए सुबह होने का इंतजार करना पड़ेगा!" अनामिका ने अपनी भौंहों को नचाते हुए कहा।

"मत भूलो कि वायु रक्षक से बात कर रही हो। जिन हवाओं को छूकर और चीर कर वो कड़ा गया है ना, वही बताएँगी। बस तुम जरा सा इंतजार करो।" चैतन्य ने आत्मविश्वास से लबरेज होकर कहा।

"पागल हो गए हो क्या? शायद बसेरे के आसपास ही गिरा है वो। पकड़े जाओगे!" अनामिका ने भय से उसे देखते हुए कहा।

"माई डियर! तुम बस उस बसेरे पर नज़रें जमाए रखो और गिनती भी गिनते रहना।" चैतन्य ने अपनी आस्तीनें फोल्ड करते हुए कहा।

"गिनती क्यों?"अनामिका ने अपनी ऑखें सिकोड़ीं।

"बस अपनी रफ़्तार जाननी है। तुम बस बसेरे की ओर देखो! इधर-उधर मत देखना।" चैतन्य ने अनामिका के चेहरे को बसेरे की ओर मोड़ते हुए कहा।

"ठीक है! ध्यान से जाना।" बसेरे की ओर देखते हुए अनामिका की ऑखें फैलकर बड़ी-बड़ी हो गई थीं।

"तो! स्टार्ट।" चैतन्य की आवाज आई और अनामिका ने काउंट करना शुरू किया। एक हवा का झोंका उसे छूकर गया और फिर दस तक गिनती पहुँचते-पहुँचते एक बार फिर तेज हवा का ठंडा अहसास उसे छू गया और अगले ही पल एक कड़ा उसकी ऑखों के सामने लहराया। अनामिका ने लपककर उसे पकड़ा और फिर देने वाले की ओर देखा। चैतन्य अपनी दिलफरेब मुस्कुराहटें उस पर निसार कर रहा था।
"ये वही हैं!" अनामिका ने बेयकीनी से पूछा।

"तो तुम्हें क्या लगता है? मैं लड़कियों के कड़े अपनी जेब में लेकर घूमता हूँ।" चैतन्य ने मुँह बनाकर कहा।

"तुम इतनी जल्दी ले आए ना! इसलिए थोड़ा... यकीन करने में परेशानी हो रही है।" अनामिका ने कहा।

"हाँ! तुम सब तो बस नाकारा ही समझो मुझे!" चैतन्य ने शिकायती लहजे में कहा।

"नाराज़ क्यों हो रहे हो! मैंने कब नाकारा कहा है तुम्हें! पर ये बढ़िया है। तुम्हारी रफ्तार तो गजब है।" अनामिका ने उसकी तारीफ करते हुए कहा।

"हाँ! बस थोड़ा कंट्रोल करने की जरूरत है। कुछ आगे निकल गया था मैं।" चैतन्य ने उस कड़े पर ऊंगलियाँ फिराते हुए कहा।

"कोई बात नहीं। चलो काम आगे बढ़ाते हैं।" कहते हुए अनामिका, चैतन्य को खींचते हुए चने जंगल के अंदर ले गई। समय की एक चाल से वे दोनों ही अतीत में आकर फँस चुके थे और यकीनन उनकी दुनिया नहीं थी। अब अपनी दुनिया और समय में वापस जाने के उन दोनों के प्रयास नए-नए से रंग खिलाने वाले थे।

अनामिका, चैतन्य को साथ लेकर जंगल के उसी अंदरूनी हिस्से की ओर गई, जहाँ से वे दोनों आए थे। उन दोनों ने बहुत कोशिश की, मगर बहुत ढूँढने के बाद भी उन्हें सही जगह का अनुमान नहीं लग पाया। चैतन्य की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर अनामिका के दिमाग में चल क्या रहा था। वो बस उसे झुंझलाते हुए इधर-उधर हाथ-पैर मारते देखता रहा।

"चैतन्य! क्या तुम्हें आइडिया नहीं है कि हम कहाँ से आए थे?" अनामिका ने अपनी कमर पर हाथ रखे चारों ओर नजरें घुमाते हुए कहा।

"नहीं!" चैतन्य ने भी दो टूक जवाब दिया।

"तुम ना!" अनामिका ने चिढ़ से चैतन्य की ओर देखा।
"क्या तुम ना! तुम्हें हेल्प चाहिए, तो बंदा चौबीस घंटे तुम्हारे कदमों में हाजिर है, पर ये क्या? वो क्या? मुझसे मत पूछना। मैं अपनी शक्तियों का इस्तेमाल कर पा रहा हूँ, वही बहुत है.... मेरे लिए।" चैतन्य ने भी सपाट लहजे में कहा।

उकताकर अनामिका भी इधर-उधर देखने लगी। चैतन्य की बात भी सही थी। वो अभी अनामिका के जितना परिपक्व नहीं हुआ था।

"पर तुम तो कह रही थी कि अभी परिधि के आसपास रहना होगा और अब ये!" चैतन्य ने उलझन से कहा।

"हाँ! फिर मैंने सोचा कि अगर वही समय द्वार मिल जाए तो इस कड़े की सहायता से हम वापस चलें जाएँ। पर अब तो ये बहुत ही मुश्किल है।" अनामिका ने हारे हुए लहजे में कहा।

"तो अब!" चैतन्य ने स्वाभाविक सा सवाल किया।

"वही करेंगे, जो पहले कहा था।" अनामिका ने चैतन्य को जवाब देते हुए बुझी हुई आवाज में कहा।

"तो इस तरह क्यों कह रही हो?" चैतन्य ने उसे घूरकर देखते हुए कहा।

"नहीं! बस वो रास्ता मिल जाता तो कितनी आसानी हो जाती ना!" अनामिका की आवाज अभी भी बुझी हुई सी थी।

"वाह! तुम्हें पता है! अगर डॉ. अनंत अभी यहाँ होते तो उन्हें तुमको इस मिशन का लीडर बनाने का सचमुच बहुत अफसोस होता।" चैतन्य ने तंज भरी आवाज में कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका ने उसे घूरकर देखा था।
"घूर क्या रही हो? तुम्हें क्या लगता है कि हम दोनों यहाँ बस एक हादसे की वजह से आ गए हैं। नहीं! तुम्हें याद नहीं होगा। पर मुझे अच्छी तरह से याद है। डॉ अनंत ने बताया था कि जो भी हो रहा है, वो कोई कालचक्र है, जिसकी पहेली को सुलझाना बहुत जरूरी है। और अगर नियति पात्र ने हमें इस रहस्य को सुलझाने का जिम्मा देकर इसका हिस्सा बनाया है तो हमारा यहाँ आना भी बेमक़सद नहीं है क्योंकि जो भी हो रहा है या फिर होगा वो सब पहले से तय है।" चैतन्य ने समझाने वाले अंदाज में अनामिका से कहा।

"हम्म! सही कह रहे हो तुम! ये तो अहेरी समूह समय और नियति को बदलना चाहता है, ताकि उन्हें उनकी प्रतिष्ठा वापस मिल सके। मगर अंकल ने कहा था कि जो हो रहा है या फिर होना है, उसे हमें वैसे ही होने देना है। समय और नियति से छेड़छाड़ अच्छा नहीं।" अनामिका ने भी अनंत कुमार की बातों को याद करते हुए कहा।

"शुक्र है कि तुम्हें याद आ गया, वरना मैं तो ऐसे ही बदनाम हो गया रहता।" चैतन्य ने राहत भरी साँस छोड़ते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने उसे तीखी नज़रों से घूरा था, जवाब में चैतन्य ने भी पलटकर उसे उसकी वो नज़र वापस की।

"तो क्या करना है अब? ये सोचो!" चैतन्य ने कहा।

"सबसे पहले अपना मकसद तय करना है और... वो क्या है?" अनामिका ने चैतन्य से पूछा।

"वापस जाना, ताकि भविष्य में हमारा वजूद बना रहे।" चैतन्य ने कहा।
"बिल्कुल सही! और इसके लिए हमें क्या चाहिए?" अनामिका ने अगला सवाल किया।

"समय द्वार!" चैतन्य ने सोचते हुए कहा।

"जो हमसे खो गया है। है ना!" अनामिका ने कहा।

"हम्म! तो फिर!" चैतन्य ने अनामिका को ग़ौर से देखते हुए कहा।

"तो फिर... हमें एक दूसरा समय द्वार ढूंढना होगा।" अनामिका ने कहा।

"दूसरा मतलब! क्या यहाँ और भी समय द्वार हैं?" अनामिका की बात से चैतन्य का दिमाग चकराया था।

"हाँ! कम से कम एक तो और है।" अनामिका, चैतन्य के चेहरे को मुस्कुराकर देखते हुए बोली।

"और वो कहाँ हैं?" चैतन्य की ऑखें सिकुड़ कर पैनी हुई थीं।

"क्या पता? पर यहाँ से भविष्य में जाने वाले बस हम दो नहीं... कोई और भी है।" अनामिका ने एक टेढ़ी मुस्कान देते हुए कहा।

"और वो.... परिधि है।" चैतन्य ने अनामिका की बात को समझते हुए कहा।

"सही समझे। इसलिए अब अगर हमें वापस जाना है तो परिधि पर नज़र रखनी होगी। वो कहाँ जाती है? किससे मिलती है? सब!" अनामिका ने कहा।
उसकी बात सुनकर चैतन्य की ऑखें फैलकर चौड़ी हुई थी। एक लड़की के ऊपर दिन-रात नज़र रखने की बात उसे असहज कर गई थी। उसने बड़ी ही दयनीय नज़रों से अनामिका की ओर देखा।

"क्या हो गया? ऐसे क्यों देख रहे हो?" अनामिका ने उसे इस तरह देखते हुए पाया.... तो पूछा।

"तुम किसी तरह समय द्वार नहीं बना सकती क्या? आखिर तुम्हारे अंदर चित्रलेखा की शक्तियाँ हैं!" चैतन्य की धीमी आवाज से अनामिका ने उसकी ओर देखा।

"नहीं बना सकती। इसलिए तो उस समय द्वार को ढूंढ रही थी। भले ही मेरे अंदर चित्रलेखा की

शक्तियाँ हैं, पर शक्तियों का होना और उनका उपयोग करना दो अलग चीजें हैं। समय द्वार बनाना एक जटिल प्रक्रिया है। एक कालखंड से दूसरे कालखंड में जाना मजाक नहीं है। एक छोटी सी चूक बहुत कुछ ग़लत कर सकती है। समझ में आया!" अनामिका ने चैतन्य के सिर पर चपत लगाते हुए कहा।

"आउच!" चैतन्य ने अपना सिर सहलाते हुए गुस्से से अनामिका को घूरा।

"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"सबसे पहले तो तुम अपने इन हाथों को जरा काबू में रखो, वरना याद रखो कि हाथ मेरे पास भी हैं और.... औरत पर हाथ उठाने वाला ज़ुमला बोलना नहीं! यहाँ तुम लोगों का वो फेमिनिज्म नहीं चलेगा। यहाँ हम दोनों बराबर हैं..... बल्कि तुम ही बेहतर हो। तो आगे से जरा संभलकर!" चैतन्य ने लगभग धमकाने वाले लहजे में अनामिका से कहा, जिस पर अनामिका ने अपना मुँह बनाया था।
"मुँह बनाना छोड़ो और ये बताओ कि ये समय द्वार और छलद्वार में फर्क क्या है? ये छलद्वार वही है ना... जो चित्रलेखा, हर्षित से मिलने के लिए बनाया करती थी।" चैतन्य ने सोच की मुद्रा में अपना सवाल किया।

"हाँ! वही है। छलद्वार में हम उसी समयकाल में एक जगह से दूसरी जगह जा सकते हैं, मतलब कि एक नॉर्मल ट्रैवेल की तरह और समय द्वार के बारे में तो तुम्हें बताया ही है।" अनामिका ने दोनों के बीच के फर्क को साफ करते हुए कहा।

"नॉर्मल ट्रैवल! हे हे हे! ये बढ़िया था।" चैतन्य ने एक बार फिर से मसखरी की थी।

"हाँ! और यही हमें बनाना है। इसमें कोई गड़बड़ हुई भी तो हम यहीं इधर-उधर भटक सकते हैं, पर रहेंगे यहीं। इसलिए ये खतरा उठाया जा सकता है।" अनामिका ने तीखे लहजे में कहा।

"ओह! और.... उसके बाद।" चैतन्य ने जिज्ञासा से पूछा।

"और क्या? अभी तो बस इतना ही है। बाकी.. परिस्थितियों पर निर्भर करता है। बस अपने मकसद से भटकना नहीं है.. ये याद रखना।" अनामिका ने कहा।

"हम्म! तो शुरू करें।" चैतन्य ने बेसब्री से कहा।

"तुम्हें बड़ी जल्दी हो रही है।" अनामिका ने आश्चर्य के साथ कहा।

"मुझे बस यहाँ से निकलना है। हवाओं में गड़बड़ी की बू आ रही है मुझे। समझी! तो काम करो अपना!" चैतन्य ने उसे काम आगे बढ़ाने का इशारा करते हुए कहा।
अनामिका ने एक गहरी साँस ली और फिर एक ओर देखकर कहने लगी, "कितना अच्छा होता ना! अगर कोई अग्नि रक्षक भी हमारे साथ होता। कम से कम रोशनी तो कर ही सकता था।"

"काम करो!" इस बार चैतन्य ने उसे लगभग घुड़का था। उसकी बात सुनकर अनामिका ने अपना मुँह बनाया और फिर जमीन पर बैठकर उस जगह को साफ करने लगी।

"ये क्या कर रही हो?" चैतन्य ने पूछा।

"काम कर रही हूँ। मदद करो। यहाँ साफ जमीन चाहिए मुझे। गोलाई में।" कहकर वो एक बार फिर से पत्तों और टहनियों को हटाने लगी।

उसे ऐसा करते देख कर चैतन्य ने अपना माथा पीटा और फिर उसे पीछे करते हुए बोला, "तो बोलो ना मुझे! हटो!"

उसकी बात सुनकर अनामिका पीछे की ओर हट गई और उसे कौतूहल से देखने लगी। चैतन्य में अपने पैरों से कुरेद कर उस जगह का जायजा लिया और फिर अनामिका की ओर मुड़ कर पूछा, "कितनी गोलाई में साफ जगह चाहिए?"

अनामिका ने आगे बढ़कर एक अनुमान से उसे उस गोले का आकार बता दिया। चैतन्य ने अपनी नजरों से उस पूरे जगह को अच्छी तरह से जाँच कर देखा और फिर एक टहनी उठाकर उससे सबसे पहले एक काल्पनिक गोला बनाया और फिर उसके बीच में जाकर वो घुटनों के बल नीचे बैठ गया और फिर उस गोले के बीचो बीच उसने अपने सीधे हाथ की तर्जनी उंगली रखी। उसने अपनी ऑखें बंद थी और धीरे-धीरे कुछ बुदबुदाया। अनामिका ने देखा कि धीरे-धीरे चैतन्य की उंगली के पास से सफेद रोशनी

फूटने लगी। चैतन्य ने अपनी ऑखें खोली और फिर अपनी उस ऊंगली को तेजी से गोल गोल घुमाने लगा। जैसे-जैसे चैतन्य के ऊंगली की तेजी बढ़ी, वैसे-वैसे वह सफेद रोशनी भी अपना क्षेत्र बढ़ाने लगी और किसी बवंडर की शक्ल लेने लगी। इसके बाद चैतन्य वहाँ से हट गया। देखते ही देखते वहाँ एक छोटू सा बवंडर तैयार हो गया, जो किसी चकरी की तरह उस काल्पनिक गोले के अंदर जोर-जोर से घूमने लगा और घूमते घूमते उस जगह की सारी गंदगी को खुद में समेटता गया।

अनामिका के देखते ही देखते 5 मिनट के अंदर ही वो जगह पूरी तरह से साफ हो गई। अपना काम खत्म होते ही चैतन्य ने अपना आप आगे बढ़ा कर अपनी तर्जनी उंगली उस बवंडर की ओर की और देखते ही देखते वह बवंडर चैतन्य की उंगली में समा गया। चैतन्य ने बड़े ही अंदाज से अनामिका की ओर देखा और अपनी उंगली उसके सामने कर दी। अनामिका ने एक नज़र चैतन्य पर और फिर एक नज़र उसकी उंगली पर डाली। उसने भी बड़े ही अंदाज से अपनी एक कमान चढ़ाई और उसकी उंगली पर एक फूंक मार दी।

"वेल! काम तो अच्छा किया है। लगता है कि आगे जाकर.... साफ-सफाई का काम तुम्हारे जिम्मे में.... छोड़ा जा सकता है।" अनामिका ने बड़े ही अंदाज से उसे छेड़ा और उसके चिढ़े हुए चेहरे पर कातिलाना मुस्कुराहट डालते हुए उस साफ गोले के बीचों बीच चली गई। चैतन्य ने अपना काम कर दिया था और अब उसकी बारी थी।

अनामिका ने एक गहरी साँस भरी और फिर उस गोले के अंदर दाखिल हुई। वो भी उस गोले के बीचो-बीच घुटनों के बल बैठी और फिर उस के बीचों बीच अपनी उंगली रखकर वहाँ एक छोटा सा छेद बनाया। अब अनामिका ने अपनी उंगली उस छेद के ऊपर हवा में रखी और फिर अपनी ऑखें बंद कर ली। उसके होठों से कुछ शब्द बेआवाज फिसले और फिर अनामिका की वो उंगली नीली रोशनी से चमकने लगी। धीरे-धीरे वह रोशनी सिमट कर उस उंगली के अग्रभाग में जमा हो गई और फिर उसने एक पानी की बूंद का रूप ले लिया। अब अनामिका ने अपनी ऑखें खोली और अपनी उंगली को हल्का सा झटका देकर उस पानी की बूंद को जमीन

में बनाए उस छेद पर गिरा दिया। ऐसा करते ही अनामिका भी वहाँ से तुरंत हट गई।

पानी की बूंद उस छेद में गिरते ही वहाँ से पानी की एक नीली लहर चारों दिशाओं में फैलनी शुरू हुई और उस साफ वृत्ताकार क्षेत्र में पूरी तरह से फैल गई। चैतन्य और अनामिका दोनों ही अपनी ऑखें कौतूहल से उस वृत्ताकार क्षेत्र में जमाए हुए थे। देखते ही देखते उस वृत्ताकार क्षेत्र में पानी की लहरें दिखाई देने लगी और वह क्षेत्र कुछ ही देर में साफ और हल्के नीले पानी से भरा हुआ था।

पानी से निकलने वाली रोशनी ने आसपास की जगह को देख सकने लायक बना दिया था। अपना काम खत्म कर अनामिका ने भी एक अंदाज के साथ चैतन्य की ओर देखा।
"हाँ! हाँ! हम दोनों को ही अपना काम करना आता है। चलो! अब काम खत्म हुआ नहीं है।" चैतन्य ने उसे नज़रअंदाज़ करते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने उस पर एक दिलफरेब मुस्कुराहट डाली और फिर एक बार पानी से भरे उस गोले के पास जाकर बैठ गई। उसने अपने बाएं हाथ में पहनी एक सामान्य सी अंगूठी के बीच में बने उभार को हल्का सा दबाया जिससे खट् की एक आवाज के साथ वहाँ एक नुकीली सी चीज दिखाई देने लगी।

"ये क्या है?" चैतन्य ने उसे घूर कर देखते हुए पूछा।

"तुम जैसे लोगों का इंतजाम!" कहकर अनामिका ने हँसी अपने होंठों में दबाई।

"क्या?" चैतन्य नासमझी में चिहुँका।

"कुछ नहीं!" अनामिका बोली और फिर उसने वो नुकीली चीज अपने सीधे हाथ की तर्जनी उंगली में घुसा दी, जिससे वहाँ से खून बहने लगा। यह सब देख कर चैतन्य के होठों से एक सिसकारी सी निकली।

अब अनामिका ने परिधि का वो कड़ा उठाया और फिर उस पर अपने खून की बूंदे टपका दीं। अब उस कड़े को उसने अपनी दोनों हथेलियों में रखा और फिर कुछ बुदबुदाकर बंद ऑखों के साथ ही वो कड़ा उस पानी में डाल दिया। इसके बाद अनामिका ने अपने दाईं हथेली उस पानी में डुबकी और लगातार अपने होंठों को चलाने लगी। थोड़ी ही देर में उस पानी में तेज हलचल होने लगी। चैतन्य ने देखा कि वह नीला पानी अब अनामिका के हाथों पर भी धीरे-धीरे चढ़ने लगा था और इसी के साथ अनामिका का पूरा शरीर सिहरने लगा। चैतन्य ने देखा कि इस शक्ति प्रदर्शन में अनामिका का पूरा शरीर काँपने लगा और उसका चेहरा पसीने से भीग चुका था।
चैतन्य घबराकर अनामिका के पास आया और उसे कंधों से थाम लिया। कुछ ही देर में अनामिका का फंसा हुआ चेहरा ढीला पड़ने लगा और फिर उस वृत्ताकार क्षेत्र का पानी भी धीरे-धीरे शांत होने लगा। कुछ ही देर में अनामिका ने अपनी ऑखें खोली। वो थकी हुई लग रही थी। चैतन्य ने उसे सहारा देकर खड़ा किया।

"तुम ठीक हो!" चैतन्य ने अनामिका को फिक्र से देखते हुए पूछा।

"हाँ! वो देखो चैतन्य! मेरा पहला छलद्वार!" अनामिका ने बहुत ही जज्बाती लहजे के साथ कहा। खुशी से उसकी आवाज काँप रही थी। चैतन्य ने भी उस ओर नज़र डाली। बेहलचल पड़ा वो नीला पानी एक अद्भुत रोशनी से रोशन नज़र आ रहा था।

नियति का खेल शुरू हो चुका था।

अनामिका और चैतन्य दोनों ही सामने फैली नीली रोशनी के स्रोत को अपनी सपनीली ऑखों से देख रहे थे। दोनों के लिए ही ये अहसास बहुत ही अनोखा था। अपनी शक्तियों का इस तरह नया-नया इस्तेमाल उनके अंदर के रोमांच को बढ़ा रहा था। उस नीलम प्रकाश में उन दोनों का ही चेहरा एक नई आभा से दमक रहा था। खुशी के मारे अनामिका ने चहकते हुए चैतन्य में पनाह ली और चैतन्य की साँसे एक बार फिर से अटक गईं।

"चलो! कम से कम पहला कदम उठाने का मुहूर्त तो निकला।" चैतन्य को छोड़ते हुए अनामिका ने पूरे उत्साह से कहा।
"हूँ!" चैतन्य ने हुंकारी भरते हुए सिर ऊपर नीचे किया। उसकी नजदीकी से उसकी साँसें अभी भी अटकी हुई थीं। अनामिका ने पहले तो उसे ऊपर से नीचे तक घूरा.... फिर उससे अलग होते हुए उसके सिर पर एक चपत लगाई और उस छलद्वार की ओर चली गई। चैतन्य ने एक ठंडी साँस छोड़ते हुए खुद को ढीला छोड़ा और उसके पीछे चला गया।

"तो चलें!" अनामिका ने उस छलद्वार को उत्सुकता से देखते हुए कहा।

"एऽऽऽक मिनट!" चैतन्य ने उसे टोका।

"क्या हुआ?" अनामिका ने अपनी नजरें उसकी ओर घुमाकर कहा।

"ये सेफ तो होगा ना! कहीं ऐसा ना हो जाए कि हम वन पीस में घुसें और अलग-अलग दरवाजों से टुकड़ों टुकड़ों में निकलें। मतलब हाथ किसी और दरवाजे से..... पैर किसी और दरवाजे से.... सिर किसी और दरवाजे से। बड़ी उलझन हो जाएगी।" चैतन्य ने उस छल द्वार को अपलक निहारते हुए कहा।

"वरूण सही कहता है। नमूने हो तुम! नहीं जाना है तुम्हें तो मत जाओ! रूको यहीं!" अनामिका ने चिढ़ते हुए कहा और फिर छलद्वार की ओर बढ़ गई। उसे अकेला आगे बढ़ता देखकर चैतन्य ने घबराते हुए उसकी कलाई पकड़ी।

"अब क्या है?" अनामिका ने उसे झिड़कते हुए कहा।

"चल रहा हूँ मेरी माँ! तुम तो बस..." उकताए हुए चैतन्य ने अपनी बात अधूरी छोड़ी।

अनामिका ने भी उसे हिकारत से देखते हुए अपना सिर झटका और फिर
उस हरिद्वार के बिल्कुल किनारे खड़ी हो गई। उसने एक भरपूर नजर उस पर डाली और फिर अपने पैर उसके अंदर रख दिया। एक घबराहट सी उसके अंदर भी हर पल के साथ बढ़ रही थी। मगर यह तो करना ही था। कुछ सेकंड खड़ी वो कुछ सोचती रही और फिर चैतन्य की ओर मुड़ कर अपना हाथ उसकी ओर आगे बढ़ाया। चैतन्य ने एक नजर उसके बढ़े हुए हाथ पर और फिर उस पर एक सवालिया नजर डाली।

"आओ! साथ चलेंगे! अलग-अलग जाने का रिस्क नहीं ले सकते।" अनामिका ने उसके सवाल को समझते हुए जवाब दिया।

"ओह! हाँ! हाँ!" बात समझ चैतन्य भी हड़बड़ा कर आगे बढ़ा और उसका हाथ थामकर वो भी उसके साथ खड़ा हो गया।

"अब!" चैतन्य उस नीली पृष्ठभूमि पर नजर डालते हुए बोला।

"बस अपनी शक्तियों को जागृत करो और हाँ.... हो सके तो उन्हें कंट्रोल करने की कोशिश करना। ऐसा ना हो कि परिधि की जगह तुम्हारी प्यारी माया के कमरे में निकल जाएँ हम।" अनामिका ने उसे चेताते हुए कहा।

"कभी भी नहीं!" माया को याद कर चैतन्य एक सिहरन के साथ बोला और फिर अपनी ऑखें बंद कर लीं। अनामिका ने भी अपनी ऑखें बंद की और परिधि का चेहरा अपने स्मृति पटल पर अंकित किया और फिर उस छलद्वार को परिधि के कमरे में ले जाने का आदेश दिया। कुछ ही देर में उनके पैरों के पास ठहरे हुए पानी में बुलबुले से उठने लगे और देखते ही देखते वो जगह बुलबुलों से भर गई। दोनों ने ही अपनी ऑखें खोलकर अपने पैरों की ओर देखा। दोनों के ही मन में डर ने अपना सिर उठाया तो था, मगर किसी तरह उसे संभाले हुए वे दोनों एकटक नीचे की ओर देखते रहे। थोड़ी ही देर में सारे बुलबुले खत्म हुए तो उन दोनों को पानी की पतली चादर के नीचे कुछ सीढ़ियाँ दिखाई दीं। उन सीढ़ियों को देखकर
दोनों ने ही राहत की साँस ली।

"हे भगवान! मुझे तो लगा कि हमें डाइजेस्ट करने के लिए किसी ने पानी में ढेर सारा इनो तो नहीं घोल दिया।" फटी हुई ऑखों से अनामिका की ओर देखते हुए चैतन्य ने कहा।

"सच में तुम्हारा दिमाग खराब हो रहा है। अब चलो!" अनामिका ने पहली लाइन चिंता में और दूसरी लाइन एक बार फिर उसे घुड़कते हुए कही।

गहरी साँस के साथ अपने फेफड़ों में ढेर सारी हवा भरकर दोनों ही उन सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे। समय ऐसा आया जब अनामिका के मुंह और चैतन्य की गर्दन तक पानी पहुँच गया। दोनों ने पैर आगे करके अगली सीढ़ी को टटोलने की कोशिश की तो पता चला आगे कोई सीढ़ी ही नहीं थी।

"अब!" चैतन्य के मुँह से बेसाख़्ता निकला।

अनामिका ने अपने सिर को झटका दिया और फिर उसका हाथ पकड़े हुए ही अपने पैर आगे बढ़ा दिए, जिससे वो एकदम से नीचे की ओर गई थी। चैतन्य का हाथ पकड़े होने की वजह से वो भी उसके पीछे खिंचता चला गया। थोड़ी ही देर में जैसे वे दोनों पानी के एक हल्के से बवंडर में घिरे हुए थे। उन दोनों ने मजबूती से दूसरे का हाथ थाम रखा था। वो दोनों उस बवंडर के बीच शांत खड़े हुए थे। कुछ ही देर में वो बवंडर शांत होने लगा और फिर एक समय वो पूरी तरह से शांत होकर बैठ गया। इस बार उन दोनों ने खुद को नीली रोशनी से घिरा पाया। सामने देखने पर उन दोनों को एक प्रकाश पुंज दिखाई दिया। वे दोनों एक-दूसरे का हाथ थामे तेजी से उस ओर बढ़े।

वहाँ पहुँचकर उन दोनों ने देखा कि वो एक बहुत पुराना सा आइना था,
जिसकी सतह धुंधली सी थी। आइने पर हाथ जमाकर उन दोनों ने दूसरी ओश्र देखा, तो वो कोई बहुत पुराना सा कमरा था, जहाँ ढेर सारे सामान रखे हुए थे। उसे देखकर उन दोनों को ही लगा कि शायद वे दोनों किसी स्टोर रूम में पहुँच गए हैं।

"ये तो पहला कदम ही ग़लत रख दिया। परिधि के कमरे में जाना था... कहाँ स्टोर रूम में आ गए। तुम्हें भी बहुत प्रैक्टिस की जरूरत है।" चैतन्य ने लगभग मखौल उड़ाने वाले अंदाज में कहा।

"शटअप! मुँह बंद रखो अपना। कम से कम बसेरे के अंदर तो पहुँचे।" अनामिका ने भी तिड़ककर कहा।

"बोल तो ऐसे रही हो, जैसे कि ये बसेरा तुम्हीं ने बनाया है। अरे मैडम! स्टोर रूम से निकलकर परिधि का कमरा ढूंढेंगे कैसे? एक तो इतनी सारी डायनों के बीच खुद को सोचकर मेरा दिल बार-बार उछलकर बाहर की ओर आ जा रहा है।" चैतन्य घबराई हुई आवाज में बोला।

"फिलहाल तो तुम इस आईने से बाहर निकलो।" कहते हुए अनामिका ने उसे तेज धक्का दिया, जिससे वो लड़खड़ा कर उस आईने के दूसरी ओर गिर पड़ा। गिरते-गिरते उसने अनामिका के हाथ पर पकड़ मजबूत की थी, जिससे वो भी साथ ही साथ उसके ऊपर ही गिर पड़ी।

"आऽऽऽ!" चैतन्य जोर से चिल्लाया ही था कि अनामिका ने उसका मुँह जोर से बंद कर दिया।

"श्श्श्श! चुप! कोई आ जाएगा!" अनामिका ने फुसफुसाती हुई आवाज में उसे डपटा था।

चैतन्य ने कुढ़ते हुए अनामिका को खुद से झटककर अलग किया और
तिलमिला कर बोला, "पता नहीं तुम्हारी मोहब्बत में कितना गिरना पड़ेगा मुझे? कहाँ लाकर फँसा दिया है? एक माया ने ही दहलाकर रख दिया, पता नहीं उसके जैसी और कितनी होंगी इस बसेरे में? तुम्हारा क्या है? अगर मुझे किसी ने दबोच लिया तो मैं मासूम क्या करूंगा?"

उसकी बात सुनकर अनामिका होंठ दबाकर हँसने लगी।

"हँसो मत! देखो अनामिका! अगर मेरी इज्जत पर कोई ऑच आई तो जिम्मेदार तुम होगी। बता दे रहा हूँ।" चैतन्य कलपते हुए बोला।

"शांत! शांत! फ़र्ज़ की राह पर बहुत सी कुर्बानियाँ देनी पड़ती हैं मेरी जान! वैसे भी... अगर कुछ हो भी गया... तो भी मैं तुम्हारा हाथ नहीं छोड़ूंगी। चिंता मत करो! ये वादा है मेरा!" अनामिका ने अपनी हँसी दबाने की नाकाम कोशिश करते हुए उसका हाथ पकड़ा। उसका चेहरा देखकर सुलगे हुए चैतन्य ने

अपना हाथ झटक कर छुड़ाया।

"तुम्हें मजाक लग रहा है। जब से इस जगह आए हैं, मुझे अच्छे वाइब्स नहीं आ रहे हैं। तुम समझ नहीं रही हो मेरी घबराहट को। प्लीज़! चीजों को उलझाए बिना यहाँ से जल्दी से जल्दी निकलने का इंतजाम करो या फिर... इस जगह से दूर जाने का।" चैतन्य चारों ओर नजरें दौड़ाता हुआ बोला।

"तो उसके लिए समयद्वार भी तो मिले। मैं समझ रही हूँ कि तुम्हें घबराहट हो रही है। मुझे भी हो रही है और मैं भी वापस जाना चाहती हूँ। प्लीज़! हम दोनों को एक दूसरे की जरूरत है। एक साथ आए हैं... एक जाएँगे। बस परिधि पर हर समय नजर रखनी है ताकि जब वो समय द्वार के पास पहुँचे तो हम तुरंत उसके पीछे हो लें।" अनामिका ने चैतन्य को समझाते हुए कहा।
"तुम्हें क्या लगता है यह इतना आसान होने वाला है? हमें तो पता भी नहीं है कि हो क्या रहा है? होने क्या वाला है?" चैतन्य ने घबराई हुई सी आवाज में कहा।

"अब जो भी है चैतन्य, प्लीज़! अब जानबूझ कर तो हम यहाँ नहीं फंसे। ये बात पहले भी हमारे बीच हुई है कि सब पहले से तय है। हम बेमकसद यहाँ नहीं आए है। अब बस उस मकसद को ढूंढना है।" अनामिका ने कहा।

"श्श्श्श! कोई आ रहा है?" अनामिका के मुँह में हाथ रखकर चैतन्य ने फुसफुसाते हुए कहा। किसी के कदमों की आहट साफ सुनाई दे रही थी। वो दोनों तुरंत ही सामान के एक ढेर के पीछे जाकर छुप गए और ताक लगाकर बाहर की ओर देखने लगे। वो कोई लड़की थी, जो अपने हाथों में कपड़ों का एक बड़ा सा ढेर पकड़े हुए वहाँ आई थी। जहाँ से चैतन्य और अनामिका उसे देख रहे थे, वहाँ से उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था। अंदर आते ही उस लड़की ने उस ढेर को बड़ी ही झल्लाहट के साथ उस ओर उछाल कर फेंका, जिस ओर चैतन्य दुबका हुआ था। इन सब में एक स्कार्फ जैसा कपड़ा उड़कर चैतन्य के सिर पर आ गिरा। इससे पहले कि चैतन्य पूरी तरह से चिढ़ पाता, अनामिका ने धीरे से उसके सिर से वो स्कार्फ हटाया। चैतन्य ने जलती हुई ऑखों से उस लड़की की ओर देखा, जो अब उसी बाबा आदम के जमाने वाले आईने के सामने खड़ी थी। उस आइने में पड़ते उसके धुंधले से अक्स को ध्यान से देखने पर उन दोनों को समझ आया कि वो परिधि थी। उन दोनों ने ही अपने कानों को काम पर लगाया।

"पता नहीं क्या समझती है खुद को? जब से दिव्याक्षि ने उसे सर्वशक्तिमंडल के लिए चुना है, तब से नखरे बढ़ गए हैं मोहतरमा के। मुझे बीच में फँसा दिया है। अब उस अल्फ़ी से क्या कहूंगी। वो पागल भी जब देखो माया माया करता रहता है। कैसे बताऊं कि माया ने दूध
से मक्खी की तरह निकाल फेंका है उसे? उसे ताकत से प्यार है और वो अल्फ़ी मेरी तरह ना जाने कैसे उन पिशाचों में फँस गया? पर बताना तो पड़ेगा। गलती भी तो मेरी ही है। माया से ज्यादा तो मैंने उसे धोखे में रखा है। कल फिर रात के चौथे पहर में झील किनारे जाना पड़ेगा। बेचारा!" उस आईने में खुद को देखती हुई वो बड़बड़ाए जा रही थी। उसने अपने सिर से कुछ निकालकर नीचे रखा ही था कि तभी किसी ने उसे आवाज दी और वो तेजी से वहाँ से निकली।

"अल्फ़ी!" एक दूसरे की ओर देखते हुए दोनों के मुँह से निकला।

"तुमने सुना... उसने क्या कहा? मेरी तरह! इसका क्या मतलब हो सकता है?" चैतन्य बुदबुदा कर बोला।

"पता नहीं!" अनामिका ने लापरवाही से कहा।

"अरे!" चैतन्य चिहुंका।

"देखो चैतन्य! यहाँ कौन क्या है? हमें जानने की जरूरत नहीं है। हमें अपने मतलब से मतलब रखना है और यहाँ से निकलना है। परिधि कल सुबह किसी झील के किनारे जाने की बात कर रही है। हमें भी उसके पीछे जाना पड़ेगा।" अनामिका ने कहा।

"और वो कैसे?" चैतन्य ने पूछा।

"एक और छलद्वार... और क्या?" अनामिका बोली।

"हे भगवान! अब वही सब फिर से करना पड़ेगा।" चैतन्य बिफरते हुए बोला।
"नहीं! बस तुम शांत बैठो।" अनामिका बोली।

"एक मिनट! करने क्या वाली हो तुम?" चैतन्य ने कहा।

"अपना काम!" ये कहकर अनामिका ने पहले दरवाजे की ओर देखा, जहाँ से परिधि बाहर गई थी और फिर तेजी से उस आइने की ओर भागी, जहाँ परिधि ने अपने बालों से निकालकर कुछ रखा था। उसे उठाकर वो उतनी ही तेजी से बाहर आई।

"पागल हो गई हो तुम! तुम्हारी यही आदत रही तो मुझे लगता है कि हम यहाँ से जिंदा नहीं... टुकड़ों में ही वापस जा पाएँगे।" चैतन्य उसकी ताजा हिमाकत पर बौखलाकर बोला।

जवाब में अनामिका ने उसे एक मुस्कुराहट दी और उसकी ऑखों के सामने एक पिन रखा, जो बालों में लगाया जाता है। चैतन्य ने उस पिन को पकड़ा और फिर अनामिका की ओर नासमझी से देखा।

"बुद्धू! परिधि के नाम से छलद्वार पहले ही बन चुका है, बस अब उसका एक सामान और हम उसके पीछे कहीं भी जा सकते हैं, जब भी चाहें।" अनामिका ने उसे समझाया।

"अच्छा! पर जाएँगे कहाँ से? जंगल में तो हमने छलद्वार का दरवाजा बनाया था। यहाँ वो दरवाजा कहाँ?" चैतन्य ने पूछा।

"इसी आईने से। हमारा अगला कदम इसी आईने से आगे बढ़ेगा। और प्लीज़! अब और सवाल नहीं करना। मेरा सिर दर्द होने लगा है। अब जो भी करेंगे रात के चौथे पहर में।" अनामिका ने अपनी बात एक इल्तिज़ा के साथ खत्म की।
उसकी बात सुनकर चैतन्य ने उसे एक गहरी नज़र से देखा और फिर उसे अपने पास खींचा। उसकी इस हरकत से अनामिका की ऑखें हैरत से फटी थीं।

"क्या कर....." अनामिका ने कहना चाहा, तो चैतन्य ने तुरंत ही उसके होंठों पर अपनी ऊंगली रखकर उसे टोका।

"श्श्श्श!" फिर उसने अनामिका को अपनी बाहों में भरा और उसके सिर पर हल्की-हल्की थपकियाँ देने

लगा। अनामिका ने उसे एक दिलफरेब मुस्कुराहट से नवाजा। इस समय उसे इसी की सबसे ज्यादा जरूरत थी। उसने भी चैतन्य के कंधे पर सिर टिकाते हुए उसके सीने पर अपना एक हाथ रखा और उसकी धड़कनों को महसूस करते हुए अपनी ऑखें बंद कर लीं।

जल्द ही अनामिका नींद की आगोश में चली गई। पर चैतन्य की ऑखों से नींद अभी भी गायब थी। उसका दिल उसे बार-बार कुछ ग़लत होने की गवाही दे रहा था, पर क्या ग़लत? ये उसे समझ में नहीं आ रहा था।

ना जाने कितनी देर वो उसी तरह बैठा रहा। ध्यान फिर से कुछ कदमों की आहट से बँटा। उसने अनामिका को बहुत ही आराम से दीवार से टिकाया और हल्का सा सिर निकालकर दरवाजे की ओर देखने लगा। कुछ ही देर में उसने माया, परिधि और दो लड़कियों को उस दरवाजे से अंदर आते देखा। उन सबको देखकर उसका दिल भी जैसे कांपकर धड़कना भूल गया। फिर भी हिम्मत करके उसने देखना नहीं छोड़ा।

माया ने परिधि की एक बांह बेरहमी से पकड़ी हुई थी। वो उसे जानवरों की तरह खींचकर लाई और झटके से आगे फेंकते हुए छोड़ दी। परिधि आईने के सामने ही बुरी तरह से गिरी। साथ आई दोनों लड़कियाँ परिधि को हँसी उड़ाती नज़रों से देख रही थीं। जाहिर था कि वे दोनों ही माया की चमची थीं।

"तुमसे हजार बार कहा है कि अपनी हद में रहा करो। अब तुम मुझे सिखाओगी कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।" माया बुरी तरह गरजती हुई बोली।

"माया! मैं वो बस...." परिधि ने कहना चाहा।

"चुप! तुम्हें यहाँ रहने की इजाजत मिल गई है, यही गनीमत मानो। आइंदा से मेरा रास्ता काटने की जरूरत नहीं है। समझी।" बौखलाई हुई माया उस पर झुकती हुई बोली।

डरी-सहमी परिधि ने तेजी से हाँ में सिर हिलाया। माया ने उस पर एक हिकारत भरी नज़र डाली और फिर वहाँ से चली गई। साथ आई दोनों लड़कियाँ उसके पास आई और उनमें से एक बोली, "क्यों बार-बार माया को गुस्सा दिलाती है। खुद पर तरस खा लिया कर। कल वो सिद्धिकुंड जाएगी और तुझे अड़ंगा डालने की जरूरत नहीं है। उसने जो काम तुझे सौंपा है... वो कर। समझी!"

इतना कहकर वे दोनों भी उस पर हँसती हुई बाहर चली गई। उनके जाते ही परिधि ने खुद को समेटा और फिर घुटनों में अपना सिर झुकाकर कुछ देर सुबकती रही। थोड़ी देर बाद उसने एक तेज झल्लाहट के साथ अपने पास रखा कोई सामान सामने दीवार पर दे मारा।

"नहीं छोड़ूंगी किसी को। सबको जवाब देना होगा।"माया और उसकी चमचियों के जाने के बाद परिधि बहुत देर तक घुटनों में अपना सिर छिपाए हुए सुबकती रही। चैतन्य को उसके साथ बिताए हुए दिन याद आ गए। वो उसके सिर पर हाथ रखकर उसे तसल्ली देना चाहता था, पर उसे भी ये मालूम था कि ये मुमकिन नहीं है। वो चुपचाप बैठा हुआ उसे अपना ग़म ग़लत करते हुए देखता रहा। कुछ ही देर में वो एक कोने में एक दरी बिछाकर उसी पर लेट गई और करवट लिए हुए अपनी दयनीय हालत के बारे में सोच रही थी। दोनों को ही कब नींद आई पता नहीं चला।

किसी के हाथों की हरकत और अपने हिलते वजूद को महसूस करके चैतन्य ने कसमसाकर बड़ी मुश्किल से अपनी ऑखें आधी ही खोली थी
कि अनामिका को खुद पर झुका हुआ पाया। वो उसे बिना आवाज किए हिला-हिला कर उठा रही थी। नींद के ख़ुमारी में डूबी उसकी खुलती-बंद होती ऑखों में जब अनामिका का अक्स उतरा, तो वो और भी नशीली होने लगी और जिसकी कुछ बूंदे नीचे फिसलकर उसके होंठों की मुस्कुराहट में भी उतरी थी। उसी नशे की हालत में उसने अनामिका के चेहरे की ओर अपना एक हाथ बढ़ाया। अनामिका ने उसे ये करते देखा तो समझ गई कि महाशय अभी भी नींद के खुमार में ही थे। उसने चैतन्य के हाथ को झटककर दूर किया और फिर उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में भरकर झिंझोड़ने लगी। शरीर से ज्यादा ये हमला ज़हन में हुआ था, जिससे चैतन्य ने हड़बड़ाकर अपनी ऑखें खोली थीं।

"उठो! परिधि झील की ओर निकल चुकी है।" अनामिका ने चैतन्य को झिंझोड़ते हुए कहा। उसकी बात सुनते ही चैतन्य मन मारकर उठा था। अधूरी नींद अभी भी उस पर असर दिखा रही थी।

"यार! तुम औरतें जीने नहीं दोगी कभी। जाओ परिधि से बोलो... बाद में जाऍंगे झील की ओर! अभी मुझे नींद आ रही है।" एक उबासी के साथ चैतन्य ने अपनी बात खत्म की और फिर सोने के लिए फर्श टटोलने लगा।

"हे भगवान! एक बार वापस पहुँचने दो चैतन्य! फिर तुम्हारी खबर लेती हूँ मैं। चैतन्य! उठो!" अनामिका ने झुंझलाहट की आखिरी हद पर खड़े होकर दबी हुई आवाज में कहा।

"उंहूं!" चैतन्य बुरी तरह से कसमसाया था। अनामिका ने बहुत ही लाचारी से उसको देखा था।

"ये तो उठ ही नहीं रहा है। क्या करूँ? अकेली चली जाऊँ क्या? नहीं! नहीं! बेवकूफ मेरे पीछे किसी डायन के हत्थे चढ़ गया तो जिंदगी भर इसकी लानतें झेलनी पड़ेगी। क्या करूँ?" खुद से सवाल करते-करते
अनामिका की ऑखें अचानक ही चमकी और उसने थोड़ी झिझक भरी नज़रों से चैतन्य की ओर देखा, जो मुँह खोले एक बार फिर से नींद की गोद में उतर चुका था। वो उसके ऊपर झुकी।

"चैतन्य!"

"हम्म!" हुंकारी भरते हुए चैतन्य के माथे पर बल पड़े थे।

एक झिझक के साथ अनामिका ने अपने काँपते होंठ चैतन्य के गाल पर रख दिए और.... चैतन्य की ऑखें झटके से पूरी की पूरी खुली थीं और उतनी ही तेजी से उसने अपना सिर अनामिका की ओर घुमाया, जहाँ अनामिका की ऑखों के साथ-साथ चेहरे पर भी झेंप साफ-साफ दिखाई दे रही थी।

"ये क्या था?" चैतन्य ने उलझन से कहा।

"तुम्हारी गुड मॉर्निंग किस और देखो... तुम उठ भी गए। अब चलो... वरना मैं तुम्हें छोड़कर चली जाऊँगी, फिर मुझे दोष ना देना।" अनामिका ने उससे नज़रें चुराने की पूरी कोशिश करते हुए कहा।

"चीटर कहीं की! हमेशा मेरे साथ चीटिंग करती हो तुम!" चैतन्य शिकायत करते हुए बोला!

"जो भी है, चलो! परिधि झील की तरफ निकल चुकी है।" अनामिका ने उसे खींचकर उठाते हुए कहा।

"अरे यार!" चैतन्य झुंझलाते हुए खुद को घसीटते हुए बोला और फिर अनामिका के हाथ का सहारा लेकर खड़ा हो गया। एक बार फिर से नींद उस पर हावी होने लगी थी, लेकिन अब उसने भी अनामिका के साथ जाने
का फैसला कर ही लिया था कि अगर सचमुच वो उसे छोड़कर चली गई, तो फिर...।

अनामिका ने अच्छी तरह से सुनिश्चित कर लिया कि कोई उस कमरे के आसपास तो नहीं है। फिर वो उस आईने के पास आई और फिर उसने वो हेयर पिन अपने हाथ में लिया। चैतन्य जम्हाई लेकर सिर खुजलाता हुआ उसी के पास ही खड़ा था। अनामिका ने आसपास नज़र दौड़ाई और फिर उस हेयर पिन का नुकीला हिस्सा उंघते हुए चैतन्य के अंगूठे में एक झटके से चुभा दिया। दर्द की एक लहर उसके बेसुध से वजूद को झटका सा दे गई और एक चीख उसके गले से निकलने ही वाली थी कि अनामिका पर टिकी उसकी नज़र ने अनामिका को उसे चुप रहने का इशारा करते हुए देखा। ऑखों में हल्की नमी के साथ सिर हिलाते हुए वो उस दर्द को पी गया। अब अनामिका ने अपने अंगूठे में भी उस पिन को चुभोया और फिर उसने उस हेयर पिन को अपने घायल अंगूठे वाले हाथ के सहारे आईने की सतह पर टिकाया और चैतन्य की ओर देखा, जो अपने घायल अंगूठे को बड़ी ग़ौर से देख रहा था।

"चैतन्य! यहाँ हाथ रखो अपना!" अनामिका ने चैतन्य को घुड़कते हुए कहा।

उसकी घुड़की सुनकर चैतन्य ने उसकी ओर देखा और फिर अपना हाथ थोड़ी सख़्ती से उसके हाथ के ऊपर रख गया।

"अब अपने मन में जगह का नाम बोलो और हाँ... साफ-साफ बोलना!" कहते हुए अनामिका ने अपनी ऑखें बंद कर लीं। अपने शिथिल शरीर के साथ चैतन्य ने भी अनमने ढंग से अपनी ऑखें बंद की और फिर मन ही मन में जाने वाली जगह का नाम बुदबुदाया। अगले ही पल रोशनी की तेज किरणें उस आईने से निकलीं और उन किरणों ने उन दोनों को ही अपने घेरे में ले लिया और अगले ही पल जब वो रोशनी वापस आईने में गई, तो
वो अपने साथ अनामिका और चैतन्य को भी ले गई।

आईने के अंदर जैसे एक तूफान सा उठा हुआ था, जिसमें खुद को संभालना दोनों के लिए ही मुश्किल हो गया था। दोनों ने ही एक-दूसरे का हाथ थामे रखने की कोशिश की, पर आखिरकार दोनों के ही हाथ अलग हो गए। अलग होते ही रोशनी की एक लहर ने उन दोनों को अलग-अलग तरफ उछाल दिया। जल्द ही उन दोनों का ही शरीर पानी की गहराईयों में गोते लगा रहा था। खुद को पानी में पाते ही अनामिका के हाथ और पैर तेजी से हरकत में आए और फिर वो ऊपर की ओर जाने लगी। जल्द ही वो पानी की ऊपरी सतह के ऊपर अपना चेहरा बाहर निकाले हुए अपनी साँसों को सही कर रही थी। होश संभलते ही उसने चारों ओर देखा। चैतन्य वहाँ नहीं था।

"हे भगवान! ये कहाँ चला गया?" अनामिका उसे आसपास ना पाकर बुरी तरह से हड़बड़ाई। कुछ देर उसका रास्ता देखने के बाद उसने उस हेयर पिन को अपनी मुट्ठी में भींचा और फिर एक गहरी साँस अपने फेफड़ों में भरकर फिर से उस पानी में डुबकी लगा गई।

दूसरी ओर चैतन्य जब पानी से बाहर निकला तो कुछ देर गहरी-गहरीं साँसे लेने के बाद उसने अपनी

हथेलियों को पहले अपने चेहरे पर फिराया और फिर अपने बालों पर पीछे की तरफ हाथ फेरते हुए फिर एक गहरी साँस छोड़ी। उसने आसपास नज़र दौड़ाई। वो बड़ी ही अजीब सी जगह थी। कौन सी पता नहीं पर सौ फीसदी वो झील तो नहीं थी।

"ये हम कहाँ...!" आसपास देखते हुए चैतन्य पीछे की ओर मुड़ा ही था कि उसके आगे के शब्द उसके गले में ही अटककर दम तोड़ गए, जब उसने अपने सामने अनामिका की जगह उसे देखा। उसका दिल ये सोचकर बहुत ही तेजी से धड़का कि वो गलत समय में ग़लत जगह पर आ गया था। साफ पता चल रहा था कि वो लड़की वहाँ निर्वस्त्र थी, जिस वजह से
चैतन्य की ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे अटक गई थी।

पानी में भीगी-भीगी हुई सी वो और भी हसीन लग रही थी। उसके लाल-सुनहरे बालों से पानी की बूंदें टपक रही थीं। भीगा हुआ गोरा चेहरा जैसे ताजगी को फिर से परिभाषित करने पर तुला हुआ था और एक के ऊपर एक रखे हुए गुलाबी होंठ गुलाबों का सारा रंग चुरा लाए थे। नशीली आँखों पर चढ़ी हुई कमान चैतन्य को अपना दिल भेदती हुई महसूस हुई। सीधे लफ़्ज़ों में कहें तो सामने एक क़यामत थी, जो किसी का भी ईमान खराब करने की ताकत रखती थी। पर... पर... पर... चैतन्य तो उसे देखकर दहशत से घिर गया था। उसे ऐसा लग रहा था कि उसका सारा वजूद उसके सामने किसी बुत की तरह जम कर रह गया था और... दूसरी तरफ का हाल भी कुछ जुदा ना था.. बस वहाँ डर की जगह एक कौतूहल था, जो सामने एक दिलकश नौजवान को देखकर हिलोरें मार रहा था।

"हे भगवान! ये तो माया है! मैं इसके पास कहाँ से आ गया?" चैतन्य के दिमाग के किसी खुले हुए हिस्से में ये बात अंदर ही अंदर गूंजी कि ज़बान तो उसकी जैसे तालू से चिपककर रह गई थी।

दूसरी ओर चैतन्य के चेहरे में खोई हुई माया के शरीर में हलचल सी हुई और वो उसी खोई हुई हालत में उसकी ओर बढ़ने लगी। उसे अपनी ओर बढ़ते हुए चैतन्य की जान ही सूख गई। उसने अचानक ही तेज-तेज साँसें लेनी शुरू की और वो जोर से चिल्लाया,

"मम्मी!"

और फिर उसने बिना वक्त गँवाए पानी में डुबकी लगा दी। माया भी जैसे ख्यालों की दुनिया से बाहर आई और तेजी से उस ओर गई जहाँ चैतन्य
ने डुबकी लगाई थी। उसने बेचैनी से पानी के अंदर चैतन्य को खोजने की कोशिश की, पर वो उसके चंगुल में आने से पहले ही निकल गया था। पानी की सतह पर आने के बाद उसने बड़ी ही कोफ्त के साथ पानी में अपने हाथ पटके थे, जैसे कि कोई बहुत बड़ा खज़ाना उसके हाथ से निकल गया हो। उसने तेज आवाज लगाकर अपनी सहायिकाओं को बुलाया और अगले ही पल वो दोनों उसके सामने थी।

"क्या हुआ माया? परेशान लग रही हो?" एक सहायिका जिसका नाम रोमा था, उसने कहा।

"यहाँ... एक नौजवान आया था। ना जाने कहाँ गया? तुम लोगों ने किसी को बाहर जाते देखा क्या?" माया ने बहुत ही बेचैनी से पूछा।

उसकी बात सुनकर दोनों ही सहायिकाओं ने एक-दूसरे को ख़ासी हैरत से देखा और फिर माया की ओर देखते हुए दूसरी लड़की, जिसका नाम मार्गरेट था उसने कहा, "कैसी बात कर रही हो? यहाँ किसी पुरुष का आना मना है और हम दोनों ही दरवाजे पर ही थे। ना कोई अंदर आया है और ना कोई बाहर गया। जरूर तुम्हें कोई ग़लतफहमी हुई है।"

उसकी बात सुनकर माया भड़कते हुए बोली, "तुम लोगों को लगता है कि मुझे इतनी बड़ी ग़लतफहमी हो सकती है। था तो वो हकीकत ही। पर गया कहाँ? कोई बात नहीं अजनबी... तुम कहाँ से आए और कहाँ गए ये माया पता लगाकर ही रहेगी। लगता है कि आखिरकार वो आ ही गया जिसका माया को बेसब्री से इंतज़ार था।"

कहते हुए माया के होंठों पर एक दिलफरेब मगर कुटिलता भरी मुस्कान आई। उसकी ऑखों में चैतन्य के दिलकश चेहरे के साथ ही उसकी ऊंगली में चमकती हुई अंगूठी भी कौंध रही थी।
उधर डरे हुए चैतन्य ने जब पानी में डुबकी लगाई, तो उसके ज़हन में बस अनामिका ही थी। जल्द ही पानी की गहराईयों में उसे तलाशती हुई वो उसे मिल गई और फिर वो दोनों ही झील की ओर निकल गए। वहाँ पानी से बाहर निकलते ही चैतन्य ने घबराई हुई नज़र चारों ओर दौड़ाई। शायद वो यकीन करना चाहता था कि वो इस बार सही जगह में था।

"कहाँ निकल लिए थे तुम?" अनामिका ने बिगड़े हुए लहजे में कहा।

"वो मैं...!" जवाब में माया का नाम लेने से पहले ही चैतन्य के चेहरे का रंग उड़ गया।

"क्या हुआ? तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों उड़ गया है?" उसे ग़ौर से देखते हुए अनामिका ने कहा। उसकी हरकतें अनामिका को बहुत ही अटपटी सी लगीं।

"अब क्या बताऊँ?" कहते हुए चैतन्य ने सारी बात अनामिका को बता दी।

"क्या? पर तुम उसके पास कैसे चले गए? ये रास्ता तो परिधि के पास जाने के लिए है। उसके हेयर पिन की मदद से हम यहाँ आए हैं।" अनामिका ने चौंकते हुए कहा।

"मुझे नहीं पता! रात तुम्हारे सोने के बाद माया और दो लड़कियाँ परिधि के साथ उस कमरे में आई थीं। उन लोगों ने किसी सिद्धिकुंड का नाम लिया था और शायद मैंने नींद के झोंके में उसी जगह का नाम ले लिया। शायद इसीलिए।" चैतन्य ने कहा।

"ऐसा हो ही नहीं सकता!" अनामिका ने अड़ते हुए कहा।
"पर ऐसा ही हुआ है। क्यों हुआ है? ये तुम समझो! मैं उसके पास से निकल गया यही गनीमत है।" चैतन्य ने भी चिढ़ते हुए कहा।

"अजीब बात है! ऐसा होना तो नहीं चाहिए। ये माया, परिधि के रास्ते से कैसे जुड़ गई?" अनामिका अपने दिमाग पर जोर देते हुए बोली। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि चैतन्य ने ग़लत रास्ता कैसे पकड़ लिया था?

अभी वे दोनों इसी समस्या में उलझे रहते कि तभी उन दोनों ने पास ही किसी के पदचापों की आवाज सुनी। कोई सूखे पत्तों को रौंदता हुआ बड़ी ही तेजी से उसी ओर आ रहा था। वो दोनों ही हड़बड़ा गए

और फिर तेजी से वहाँ से बाहर निकले। बाहर निकलकर वो एक मोटे से पेड़ की ओट में छिप गए और सिर बाहर की ओर निकाल कर एक बार फिर से टोह लेने की कोशिश करने लगे। जल्द ही उन्होंने अपने सामने किसी को आते देखा, जिसकी नज़रों से वे दोनों ही छिपे हुए थे। उसे देखते ही अनामिका और चैतन्य दोनों के ही दिमाग में एक ही नाम उभरा,

"अल्फ़ी!"

वो एक बहुत ही खूबसूरत नौजवान था। उम्र 22-23 से ज्यादा की नहीं रही होगी। सफेद चेहरा और गहरे भूरे बालों में वो दिलकश लग रहा था। अनामिका और चैतन्य ने देखा उसने साभ्रांतो की तरह कपड़े पहन रखे थे, मगर वो कपड़े थोड़े पुराने से दिखाई दे रहे थे। रात का अंधेरा अभी छँटा नहीं था, बल्कि छँटने से पहले और भी गहरा हो गया था। इसलिए रात की तारिकी मिटाने के लिए उस नौजवान ने हाथ में एक लॉलटेन पकड़ रखी थी। हालांकि उसकी चाल से ऐसा नहीं लग रहा था कि उसे उसकी जरूरत थी। वो अपने सधे हुए कदमों से लगातार आगे बढ़ रहा था। लालटेन की झिलमिलाती रोशनी में भी उसका चेहरा दमक रहा था। आगे बढ़ते हुए वह झील की ओर बढ़ा और फिर एक जगह जाकर एक बड़े से पत्थर के पास उसने लालटेन नीचे जमीन में रख दी और फिर वहाँ बैठकर इंतजार करने लगा। उसने बेचैनी से पीछे की ओर मुड़ कर दो-तीन बार भी देखा। साफ था कि परिधि अभी नहीं पहुँची थी।

"ओह! तो यही है अल्फ़ी! बंदा तो सचमुच हैंडसम है।" चैतन्य ने प्रशंसा भरे लहजे में कहा।

"हम्म!" जवाब में चैतन्य को अनामिका की बस एक हुंकारी सी सुनाई दी।

उसने अपनी नज़रें अनामिका की ओर घुमाई तो उसे खोई हुई सी हालत में
सामने बैठे अल्फ़ी को एकटक ताकते पाया। उसे अल्फी को इस तरह घूरते हुए देखकर उसके अंदर गुस्से की एक तेज लहर उठी, जो उसकी रगों के खून को खौला गई।

"ऐसे क्या देख रही हो?" अनामिका के चेहरे को अपनी हथेलियों में भरकर अपनी और मोड़ते हुए चैतन्य ने गुस्से भरी आवाज में कहा।

"क्या?" अनामिका अभी भी खोई हुई सी थी।

"उस अल्फ़ी को क्या टुकुर-टुकुर देख रही हो। कभी कोई लड़का नहीं देखा क्या?" चैतन्य ने सुलगती हुई आवाज में कहा और यह सुनते ही अनामिका ने अपना चेहरा उसकी गिरफ्त से छुड़ाकर फेरते हुए अपनी जीभ दाँतों में दबाई थी।

"चेहरा क्यों घुमा रही हो? इधर देखो!" चैतन्य ने एक उसके चेहरे के निचले हिस्से को पकड़कर अपनी ओर किया।

"अब इस चेहरे के साथ ही जिंदगी भर गुज़ारा करना है तुम्हें। समझी!" अपने चेहरे के सामने अपनी एक उंगली को गोल-गोल घुमाते हुए बहुत ही खीझी हुई आवाज में चैतन्य ने कहा, जिस पर अनामिका ने

मासूमियत से अपना सिर हिलाया था।

"सिर हिला रही है बेवकूफ!" चैतन्य बहुत ही धीमी आवाज में बुदबुदाया था कि आवाज उसके कानों तक भी नहीं पहुँच सकी थी।

"बहुत जल्दी चिढ़ जाते हो। हुआ क्या है तुम्हें?" अनामिका ने भी थोड़ी नाराजगी जताई।

"कुछ नहीं!" कहकर चैतन्य ने अपनी नजरें अल्फ़ी पर जमाई। अनामिका
उसके चेहरे को ग़ौर से देखते हुए पढ़ने की कोशिश कर रही थी, मगर वहाँ बहुत कुछ उलझा हुआ सा था। आखिरकार उसने ये कोशिश छोड़ दी क्योंकि अभी किसी और पर ध्यान लगाना ज़्यादा ज़रूरी था।

"ये परिधि क्या पूरी दुनिया का चक्कर लगाकर आएगी यहाँ।" चैतन्य ने उकताए हुए लहजे में कहा।

श्श्श्श! शायद आ रही है।" अनामिका ने फुसफुसाकर कहा।

पत्तों पर तेज कदमों की सरसराहट साफ-साफ सुनाई दे रही थी। वो आवाजें अल्फ़ी तक भी पहुँची, जिससे वो अपनी जगह से तेजी से उठा और आवाज की दिशा में देखने लगा। जल्द ही एक साया उन अंधेरों को चीरता हुआ उस ओर आया और उसे देखकर अल्फ़ी के चेहरे की मुस्कान चौड़ी हो गई। मगर अनामिका और चैतन्य दोनों ही उसे देखकर चौंके थे।

आने वाली एक लड़की ही थी, जिसने लाल रंग का चोगा सिर तक ओढ़ रखा था, जिसके अंदर से लाल बालों की झलक भी साफ-साफ दिखाई दे रही थी। उसने अपना आधा चेहरा स्कार्फ से छिपा रखा था। तेज कदमों से चलती हुई वो अल्फ़ी की ओर चली गई।

"ये कौन है? परिधि आने वाली थी ना!" चैतन्य का लहजा अच्छा खासा उलझा हुआ था।

"ये परिधि ही है। मेरी ऑखों के सामने इस चोगे को पहन कर निकली थी वो। पर उसके बाल!" आने वाली के बालों में अनामिका भी उलझते हुए बोली। अभी मैं दोनों ही अपने-अपने खयालों में उलझे हुए थे कि सामने से आई हुई आवाज ने उन दोनों को ही चौंकाया।

"माया!"
यह अल्फ़ी था, जो आगंतुक लड़की को देखकर बहुत ही खुश नजर आ रहा था। मगर उसके उस लड़की को माया कहने पर चैतन्य और अनामिका दोनों का ही दिमाग घूम गया था।

"वो उसे माया क्यों कह रहा है? माया तो वहाँ उस सिद्धिकुंड में है।" चैतन्य ने और भी ज्यादा उलझते हुए कहा।

"यहाँ सचमुच बहुत गड़बड़ चल रही है।" अनामिका ने कहा और अपनी नज़रें उन दोनों की ओर टिका दीं। चैतन्य का पूरा ध्यान भी उन दोनों की ओर ही था। उन दोनों ने देखा कि अल्फ़ी और आने वाली लड़की के बीच कुछ नोंकझोंक सी हो रही थी। वो लड़की बहुत बुरी तरह से उस पर झुंझला रही थी और वो मुस्कुराते हुए उसकी हर झुंझलाहट को खुद पर वार रहा था। ऐसा लग रहा था कि लड़की के झुंझलाने का उस पर कोई असर नहीं हो रहा था। आखिरकार वो लड़की भुनभुनाती हुई वहाँ से जाने के लिए निकली। अल्फ़ी भी उसके पीछे-पीछे गया था। उसने आगे आकर उस लड़की की कलाई पकड़

ली, जिससे ना चाहते हुए भी उसे रूकना पड़ा।अल्फ़ी ने झटके से उसे अपनी ओर खींचा, जिससे वो उसके बहुत ही करीब हुई थी। अल्फ़ी की इस हरकत पर उसने अपनी हैरानी भरी खूबसूरत ऑखों से उसे देखा। अल्फ़ी ने उसके चेहरे पर आई लटों को बहुत ही नर्मी से हटाया।

"मुझे कुछ नहीं पता। मैं बस इतना जानता हूँ कि एक दिन तुम भी मेरे दिल की बात समझोगी और उस दिन ये जो पर्दा है ना! तुम खुद हमारे बीच से हटा दोगी और मुझे हमेशा इसका इंतजार रहेगा।" अल्फ़ी ने मोहब्बत की चाशनी में डूबे हुए लफ़्ज़ों के साथ कहा।

उस लड़की ने उसे अजीब से जज़्बातों भरी नज़रों से देखा। पूरब से सूरज निकलने ही वाला था। उसका स्वागत करने के लिए आसमान ने सिंदूरी
रंग का चोला पहन लिया था और उसकी आभा उस लड़की के आधे खुले चेहरे को और भी दमका रही थी... किसी ख़रे सोने की तरह! वो उसकी बातों में डूब ही जाती, मगर तुरंत ही हाल में वापस आई और फिर झटके से खुद को छुड़ाकर तेजी से वहाँ से चली गई। अल्फ़ी बहुत देर तक उस ओर देखता रहा, जिधर वो गई थी।

"हम्म! मेरी माया!" एक आह भरते हुए अल्फ़ी ने कहा और फिर वो भी तेजी से वहाँ से निकल गया।

अनामिका और चैतन्य दोनों ही अपना सिर खुजलाते हुए रह गए। वो यहाँ परिधि के पीछे आए थे, पर यहाँ तो कोई और ही थी, जिसे वो अल्फ़ी माया कह रहा था और जो सच में माया थी वो दूर कहीं चैतन्य के ख्यालों में ग़ुम थी।

"चलो!" अनामिका ने कहा।

"एक मिनट रूको!" चैतन्य ने उसे रोका और फिर चारों ओर चौकन्नी निगाहें डालता हुआ उस पत्थर की ओर बढ़ गया, जहाँ अल्फ़ी बैठा हुआ था। वो अपनी लालटेन वहीं भूल गया था। चैतन्य ने वो लालटेन उठाई और फिर वापस अनामिका के पास आ गया।

"क्या कर रहे हो? इसे क्यों उठाकर लाए हो?" अनामिका बिगड़ते हुए बोली।

"क्योंकि मुझे लग रहा है कि इस अल्फ़ी के बारे में भी जानना बहुत ही जरूरी है। तुम्हें याद होगा कितना दिमाग खाया है इसने हमारा। आखिर हमें भी तो पता चले कि महाशय हैं कौन?" चैतन्य ने उस लालटेन को ऊपर उठाकर उसकी लौ को देखते हुए कहा और फिर उसे धीरे से बुझा दिया क्योंकि सुबह हो चुकी थी।
"चैतन्य! दिस इज नॉट अ गुड आइडिया एट ऑल!" अनामिका ने चैतन्य से कहा।

"यस! दिस इज! तुम बस इस अल्फ़ी के नाम से भी एक छलद्वार बनाओ। आगे सब मेरा काम है।" चैतन्य ने मजबूत इरादों के साथ कहा।

"सच में! तुम सीरियस हो?" अनामिका ने उसकी बात की एक बार फिर से तस्दीक करते हुए कहा।

"कहा ना यस!" चैतन्य ने झल्लाते हुए कहा।

"एक बार फिर से सोच लो!" अनामिका ने भी उसे चेताया था।

"सोच लिया है। कम से कम अब उन डायनों के पास तो बिल्कुल भी नहीं जाऊंगा मैं। उधर का तुम देखो और समझो।" चैतन्य का लहजा ख़ासा चिढ़ा हुआ था।

अनामिका ने अफसोस से अपना सिर हिलाया और फिर बोली, ठीक है! आओ!"

और फिर दोनों ही उस झील के बाहरी हिस्से की ओर चले गए। जहाँ जंगल थोड़ा घना दिखाई दे रहा था। एक बार फिर से अनामिका ने अल्फ़ी तक जाने के लिए एक छल द्वार बनाया। चैतन्य बस जाने के लिए तैयार ही था, जब अनामिका ने उसे रोका था।

"क्या हुआ?" चैतन्य ने उसकी ओर मुड़कर कहा।

"ख्याल रखना अपना!" अनामिका ने थोड़ी चिंता से कहा।
"हम्म! तुम भी!" चैतन्य ने भी अनामिका के सिर पर हाथ फिराते हुए कहा।

"एक मिनट!" अनामिका ने एक बार फिर उसे टोका और फिर अपने गले की चेन उतारकर चैतन्य को पहना दी।

"ये क्यों?" चैतन्य ने उस चेन को छूते हुए उलझन से कहा।

"क्यों? वापस नहीं आना है मेरे पास! ये जितने भी छलद्वार बन रहे हैं, उससे हम दोनों ही एक-दूसरे के पास आसानी से पहुँच सकते हैं, तो इसके लिए संपर्क सूत्र भी तो चाहिए ना! बस वही!" अनामिका ने उसके गले के चेन को छूते हुए कहा। आवाज में अभी भी चिंता घुली हुई थी।

"ओके!" कहते हुए चैतन्य ने भी अपनी एक अंगूठी निकालकर अनामिका को पहना दी और फिर आगे बढ़कर उसके माथे को चूम लिया। अनामिका ने उसके स्पर्श को महसूस कर अपनी ऑखें बंद की थी।

"तुम चिंता मत करना! मैं ख्याल रखूंगा। तुम भी चौकन्नी रहना। अब जब आ ही गए हैं तो आखिर हुआ क्या था इस समय में? ये पता लगा ही लेते हैं। आखिर ऐसा क्या है, जिसे इतिहास के पन्नों से मिटाने की कोशिश की गई है।" चैतन्य ने उसे समझाते हुए कहा।

"हम्म!" अनामिका ने अपना सिर हिलाया और फिर कुछ कदम पीछे हो गई। चैतन्य ने उस पर एक गहरी नज़र डाली।

"अनामिका!"

"हाँ!"
"आई लव यू! और ये मुझे तुम्हारे मुँह से भी सुनना है। वो भी तुम्हारे तरीके से। तो मैं लौटकर जरूर आऊँगा। चिंता मत करना।" चैतन्य ने बहुत ही मीठे लहज़े में कहा, जिस पर अनामिका भी सहमति में अपना सिर हिला गई।

चैतन्य झील के पानी में उतरा और फिर डुबकी लगा गया। झील की सतह कुछ देर तक खुद ही बेचैन रही और फिर सब कुछ शांत हो गया। अनामिका ने एक गहरी साँस ली और फिर वो भी झील के उस

हिस्से की ओर बढ़ गई, जहाँ से वे दोनों आए थे। लोगों की आवाजाही शुरू होने से पहले उसे वहाँ से निकलना था और वो निकल गई। जल्द ही दोनों अपने-अपने गंतव्य तक पहुँच चुके थे। घटनाएँ तेजी से बदल रही थीं और वो दोनों भी समय के बहाव में बह रहे थे। अब ये नई योजना उन दोनों के सामने कौन-कौन से बंद पन्ने खोलने वाली थी उन दोनों को ही पता नहीं था। पर इतना तो तय था कि इतिहास के पन्नों में उनके नामजद होने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी।

जल्द ही अनामिका एक बार फिर से उसी आईने के रास्ते उसी कमरे में दाखिल हो गई, जहाँ से वो और चैतन्य गए थे। कमरा पूरी तरह से खाली था। चैतन्य ने सही कहा था कि जब यहाँ आ फँसे थे तो यहाँ के उलझे हुए हालातों को समझना भी जरूरी ही था क्योंकि यहाँ जो हो रहा था उसका ही असर आगे जाकर उन सबकी जिंदगी पर पड़ने वाला था।

अनामिका का अगला कदम वहाँ मौजूद डायनों में घुलना-मिलना था और ये ज्यादा मुश्किल नहीं होने वाला था। डायन की शक्तियाँ तो उसके पास थी ही और उनका उपयोग करना भी उसे बखूबी आता था। बस उसे माहौल के हिसाब से खुद को ढालना था और उसके लिए सबसे ज्यादा जरूरी थे कपड़े, वरना मौजूदा हालत में पकड़े जाने पर वो अपने कपड़ों में तो वो उन सबको दूसरी दुनिया की जीव ही लगती और इसीलिए वो उस कमरे में वापस आई थी। उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई। उस कमरे में कपड़ों का ढेर पड़ा हुआ था, इसलिए कपड़ों को लेकर कोई समस्या आने नहीं वाली थी। लेकिन फिर भी एहतिहात बरतना जरूरी था। किसी गलत शख़्स का लिबास उठा लेना उसे मुश्किल में डाल सकता था।

अभी वो ये सब सोच ही रही थी कि तभी उसे किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। वो तेजी से फिर से उन कपड़ों के ढेर के पीछे जाकर छिप गई और एक चोर निगाह के साथ अपने खुले हुए कान आने वाली आहट पर लगा लिए। जल्द ही कोई लड़की अंदर आई और फिर उस ढेर पर कुछ और कपड़े फेंकते हुए बड़बड़ाने लगी।

"परेशान करके रख दिया है इस माया ने तो। ना जाने कितनों को बेवकूफ बना कर रखा हुआ है? मजे करें ये सब और इन सबके कपड़े धोऊँ मैं... खाना बनाऊँ मैं... सारा काम करूँ मैं! पता नहीं कब इस जहन्नुम से रिहाई मिलेगी? क्यों मुझे ऐसे लाचार पैदा किया तुमने? डायनों के बीच पैदा करना ही था तो कोई तो एक शक्ति दे देते।" वो लड़की बड़बड़ाते हुए आखिरकार सुबकने लगी।

अनामिका ने अनुमान लगा लिया था कि बड़बड़ाती हुई वो लड़की परिधि ही थी और शायद अपने हालातों से बहुत ही ज्यादा परेशान भी। उसने थोड़ा सा झांककर देखा तो उसकी ऑखें आश्चर्य से फैली थीं। वो उसके सामने उसी लिबास में खड़ी थी, जिसमें चैतन्य और उसने झील के किनारे उस लड़की को देखा था। पर उसके बाल अब अलग थे। उसने अपने कानों की ग्राह्य क्षमता को थोड़ा और तेज किया ताकि वो उसकी बातें आसानी से सुन-समझ सके।

"माया! याद रखना! तुम मुझे जितना परेशान कर रही हो, उन सबका हिसाब तुम्हें देना ही पड़ेगा। एक

दिन आएगा... जब मैं भी तुम्हारे साथ खड़ी होऊँगी। बस मुझे वो रास्ता मिल जाए, फिर मुझे कोई भी नहीं रोक सकेगा। तुम भी नहीं।" कहते हुए परिधि ने आइने पर एक मुक्का मारा था।

परिधि की बातों ने अनामिका को और भी उलझाया था। आखिर किस रास्ते की बात कर रही थी वो और क्यों? सब कुछ बहुत ही उलझा हुआ था। कुछ देर वहाँ रखे कुछ कपड़ों को तह करने के बाद वो उन्हें लेकर बाहर चली गई। अनामिका उसकी बातों को सोचती ही रह गई, पर पकड़ कुछ भी नहीं आया।
"भारी उलझन है बाबा! पहले यहाँ से तो निकलूं। मुझे सब कुछ सही तरीके से प्लान करना पड़ेगा। जब तक यहाँ हैं, किसी को भी शक नहीं होना चाहिए। पता नहीं क्या होने वाला है? कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है और ये चैतन्य भी ऐसे अकेला छोड़कर चला गया।" मन ही मन में बड़बड़ाते हुए चैतन्य का ख्याल उसके बाकी सारे ख्यालों पर रोक लगा गया। उसने अपनी उस ऊंगली की ओर देखा, जिसमें चैतन्य ने अपनी अंगूठी पहनाई थी। उसने अपना हाथ ऊपर उठाया और फिर उंगलियों को जमीन की ओर लटकाया। अंगूठी फिसलकर नीचे गिर गई। अनामिका ने उसे उठाया और फिर सभी ऊंगलियों में डालते-डालते आखिर में उसे अपने अंगूठे में फँसा लिया। दूसरी उंगलियों के मुकाबले में वो अंगूठी वहाँ सही कसावट के साथ थी।

"हम्म! अब सही है।" उसने उस अंगूठी को देखते हुए कहा और फिर एक नर्म निगाह के साथ उस पर अपनी उंगलियाँ फिराई। चैतन्य का ख्याल उसके होंठों पर एक मुस्कुराहट ले आया। अगले ही पल उसने चैतन्य के ख्याल को परे झटका और फिर उस ढेर में से कुछ कपड़े खींचे और पास ही पड़ी एक थैली में उन्हें तरीके से तह करके डाला और फिर आसपास नज़र डालती हुई वो उस आइने के रास्ते वहाँ से निकल गई।

****

चैतन्य ने झील के अंदर गहराईयों में किसी तरह खुद को संभाले हुए आगे का सफर किया। सच बात तो ये थी कि अनामिका के बिना ये काम उसके लिए उलझन भरा ही था, पर उन कमनीय कायाधारी डायनों के बीच वो जो उलझने महसूस कर रहा था... उससे ये उलझन बेहतर ही थी। सहज जीवन में भी वो तीन-चार लड़कियाँ जो उसकी मित्रमंडली में थीं उनके
अलावा औरतों की संगत पसंद ही नहीं करता था। किसी तरह वो एक बार फिर से तेज रोशनी के दायरे से बाहर निकला। एक बार फिर से सामने एक आईना था। उसने हाथ बढ़ाकर पहले सब चेक किया और फिर एक गहरी साँस लेकर बाहर निकल गया।

बाहर वो एक संकरी सी गली जैसी जगह थी। वो वहाँ से आगे बढ़ा तो चारों ओर से घिरी एक खुली हुई ऑगन जैसी जगह पर पहुँचा, जहाँ बीचों-बीच एक बड़ा सा कुऑ बना था, जिसके ऊपर लकड़ी का शेड बना हुआ था।

वहाँ पास में लकड़ी के बने बड़े-बड़े ड्रम और बाल्टियाँ रखी हुई थीं। उस जगह के चारों ओर ढेर सारे कमरे बने हुए थे। चैतन्य ने गिने। पूरे दस कमरे थे, जिनके सामने राहदरी बनी हुई थीं। वो सावधानी से चारों ओर देखता हुआ राहदरी पर आगे बढ़ा। आगे बढ़ते हुए वो उस राहदरी के अंतिम छोर तक पहुँच

गया। आगे फिर से एक संकरी सी गली थी। चैतन्य उस पर आगे की ओर बढ़ा। थोड़ा आगे जाने पर बाएँ हाथ की ओर गली मुड़ी थी। वो चारों ओर चौकन्नी निगाह रखे उस गली में आगे बढ़ गया। थोड़ा आगे जाने पर उसे दाएँ हाथ पर लकड़ी का बना एक दरवाजा दिखा। उसने उस दरवाजे पर हाथ रखकर हल्का सा दबाव डाला तो वो दरवाजा हल्का सा खुल गया। उसने उस दरवाजे पर एक नज़र डाली और फिर उसे पूरा खोलने के लिए आगे बढ़ा ही था कि तभी पीछे से एक मजबूत और ताकतवर बाजू ने उसकी गर्दन को अपनी गिरफ्त में ले लिया और चैतन्य कुछ समझ पाता उससे पहले ही उसका गला एक तेज खंज़र की धार नाप रहा था। उस खंज़र की धार का पैनापन महसूस करते ही चैतन्य के माथे पर पसीना चमकने लगा और ऑखें फटकर बाहर की ओर निकलने को हुई थी।

"कौन हो तुम?" एक सर्द सी आवाज़ उसके कानों से टकराई। जवाब में चैतन्य के गले से घुटी-घुटी सी गूं-गूं की आवाज निकली थी। उस आदमी को शायद चैतन्य का फड़फड़ाना पसंद नहीं आया, तो वो उसे घसीटता हुआ पीछे की ओर बने दरवाजे की ओर ले गया। चैतन्य ने भी उस पैने खंज़र का ख्याल करके ज्यादा जोरकशी नहीं की और उसका सहयोग करता हुआ उसके साथ ही खिंचता चला गया। उस जगह से बाहर आते ही उस आदमी ने अपने पैर की मदद से उस दरवाजे को बंद किया और फिर एक बार फिर से चैतन्य के गले में खंज़र का दबाव बढ़ाते हुए अपना सवाल दोहराया।
"चैतन्य!" बड़ी ही मुश्किल से उसके गले से जवाब निकला।

"कौन चैतन्य?" एक और सवाल आया।

"पहले मुझे छोड़ो और आराम से बात करो। मैं सब बता दूंगा पर... इस तरह मैं कोई जवाब नहीं दे सकता। मुझे तकलीफ़ हो रही है।" किसी तरह हिम्मत करके चैतन्य ने कहा।

और ये कहते ही चैतन्य के अपने गले से खंज़र का पैनापन कम होता महसूस हुआ। एक बार के लिए उसे लगा कि पलटवार करते हुए वो सामने वाले को अपनी गिरफ्त में ले ले, पर उसे उसके बाजुओं की मजबूती का ख्याल आ गया। उसने ये बेवकूफी भरा इरादा छोड़ दिया और वो जवाब तलाशने लगा, जिससे सामने वाला उसकी बातों से सहमत हो जाए। उस आदमी ने आहिस्ता से चैतन्य को पूरी तरह से आजाद कर दिया। चैतन्य अपने गले पर हाथ फेरते हुए पीछे मुड़ा और उसे उस सवाल का जवाब मिल गया। सामने अल्फी खड़ा था।

करीब छ: फीट लंबा वो नौजवान 21-22 साल का ही रहा होगा। उसका चेहरा बेहद गोरा और बाल गहरे लाल-भूरे थे। काली ऑखें बातें करती प्रतीत हो रही थीं। उसने काली चुस्त पैंट और सफ़ेद रंग की पूरे आस्तीन की शर्ट पहनी थी, जिसके ऊपरी दो बटन खुले हुए उसके मजबूत जिस्म की नुमाइश कर रहे थे। यकीनन वो बहुत ही खूबसूरत लोगों की श्रेणी में आता था और उसकी दिलकशी इतने पास से देखकर चैतन्य की नज़रों के सामने उसे एकटक निहारती अनामिका का चेहरा आ गया, जिससे वो थोड़ा सा अंदर ही अंदर कुढ़ा था।

"अब बोलो! कौन हो तुम और यहाँ क्या कर रहे हो?" अल्फ़ी ने एक बार फिर से उसकी गर्दन पर उस खंज़र को रखते हुए पूछा।
"मैं... मैं आपकी एक चीज लौटाने आया हूँ, जो आप सुबह झील के किनारे भूल गए थे।" अपने जज़्बातों को संभालते हुए चैतन्य ने रवानगी से कहा और उसकी बात सुनकर अल्फ़ी की ऑखें सिकुड़ी थीं।

"कौन सी चीज?" चैतन्य की दोनों ऑखों में बारी-बारी से झांकते हुए अल्फी ने पूछा।

"वही, जिसे झील के किनारे शायद गलती से छोड़ आए। मैंने देखा तो वापस करने के लिए ले आया।" इस बार चैतन्य का लहजा सधा हुआ था, जबकि ये सुनकर अल्फ़ी के चेहरे का रंग उड़ा था।

"मैं... मैं कुछ नहीं भूला और ना ही कहीं गया था।" अल्फ़ी ने थोड़े घबराए हुए लहजे में कहा और अपना चेहरा फेर लिया। आखिरकार चैतन्य को उसकी कमजोर नस मिल गई।

"अच्छा! पर देखा तो आपको ही था। एक लड़की के साथ! क्या नाम था उसका? हाँ! माया!" पहले दर्जे का अभिनय करते हुए चैतन्य ने माया के नाम पर जोर देते हुए बात खत्म की।

उसकी बात सुनते ही अल्फ़ी ने आगे बढ़कर चैतन्य का मुँह बंद किया और फिर चारों ओर नज़रें दौड़ाकर तसल्ली करने के बाद वो दबी हुई आवाज में दहाड़ते हुए बोला, "श्श्श्श! चुप रहो! और अब कोई बकवास नहीं करोगे तुम! समझ गए!"

उसकी घबराहट चैतन्य की ऑखों में कई सवाल और होठों पर मुस्कुराहट ले आई।

"ओह! तो चोरी-छिपे प्रेम की कलियाँ खिलाई जा रही हैं। बहुत खूब!"
चैतन्य ने जैसे उसके ज़ख़्मों पर लाल मिर्च रगड़ी थी। इस बार चैतन्य की बात सुनकर अल्फ़ी का चेहरा गुस्से की शिद्दत से कस गया। वो तेजी से आगे आया और उसने चैतन्य के नाक पर एक जोरदार पंच रसीद कर दिया। दर्द की तेज लहर के साथ खून के कुछ छींटे चैतन्य की नाक पर उभर आए।

"कहा ना! बकवास मत करो! चलो यहाँ से!" कहते हुए अल्फ़ी ने चैतन्य की कॉलर पकड़ी और एक बार फिर से उसे खींचता हुआ उसी तरफ ले गया, जहाँ दस कमरे बने हुए थे। वो उसे खींचता हुआ उसी तरफ के सबसे आखिरी कमरे में ले गया, जहाँ से चैतन्य आया था। कमरे के अंदर आते ही उसने चैतन्य को लगभग आगे की ओर फेंका था, जिससे वो लड़खड़ाते हुए आगे की ओर गिरा था। उसकी तड़फड़ाहट देखकर चैतन्य के होठों पर एक कुटिल सी मुस्कान आई। वो अपने कपड़े झाड़ता हुआ खड़ा हुआ और फिर उसकी ओर मुँह करके खड़ा हो गया। अल्फ़ी उसे खा जाने वाली नज़रों से घूर रहा था। उसकी हालत का मजा लेते हुए चैतन्य ने अपने चेहरे पर बिखरे हुए खून को अपने शर्ट की आस्तीन से पोंछा और फिर बोला,

"इस तरह रिएक्ट करने से कोई फायदा नहीं। तुमने छिपाने की कोशिश की, पर... मैंने तो सब देख लिया। तुम चाहो तो बात हम दोनों तक ही रह सकती है। मैं किसी से कुछ नहीं कहूंगा, अगर... तुम मेरी मदद करो तो। चाहो तो... मैं भी तुम्हारी मदद कर सकता हूँ। सोच लो! सौदा महंगा नहीं है। दुनिया में दुश्मन से ज्यादा दोस्त बनाना ही बेहतर होता है।" चैतन्य नपे-तुले शब्दों में उससे बोला।

"कैसी मदद?" अल्फ़ी के माथे पर बल खिंचे थे।

उसका सवाल सुनकर चैतन्य के होंठ मुस्कुराए। शुरूआती मुक्कालात के बाद अब उसने अपनी योजना को आगे बढ़ाते हुए अल्फ़ी से ही एक सौदे
की पेशकश कर दी थी, जिसे अल्फ़ी कौतूहल से सुन रहा था और जो इस कहानी को आगे की ओर बढ़ाने वाली थी।

अल्फ़ी खा जाने वाली नज़रों से चैतन्य को घूर-घूरकर देख रहा था। ना जाने वो कहाँ से आया था और अब उसके ही इलाके में... उसके ही खंज़र के नीचे... उससे ही सौदेबाजी कर रहा था। एक बार उसकी हिम्मत पर अल्फ़ी को ताज्जुब भी हुआ और दाद देने की इच्छा भी। मगर फिलहाल अल्फ़ी के लिए सबसे ज्यादा जरूरी ये था कि सामने बैठा वो ढीठ इंसान उसके सबसे बड़े रहस्य से करीब-करीब वाकिफ हो चुका था और ये उसके लिए किसी खतरे की घंटी की तरह ही थी।

"तो... क्या सोचा तुमने?" चैतन्य ने उसके चेहरे को पढ़ते हुए कहा।

"किस बारे में?" अल्फ़ी ने बहुत ही अरूचि से उसे देखते हुए रूखी आवाज में कहा।

"मेरे प्रस्ताव के बारे में और क्या?" चैतन्य ने कंधे उचकाते हुए कहा।

"पहले तो ये बताओ.... कि तुम हो कौन? जिसकी बातें सुनने या मानने की कोई जरूरत है मुझे?" अल्फ़ी की चिढ़ बढ़ती ही जा रही थी।

"मैं! मैं वो हूँ जो... तुम्हारे और माया के बारे में जानता हूँ। सोच लो! अगर ये बात मैंने फैला दी तो!" चैतन्य ने अंधेरे में तीर छोड़ते हुए कहा।

"हा! और तुम्हें लगता है कि मैं इसके लिए तुम्हें इस कमरे से जिंदा बाहर निकलने दूंगा।" अल्फ़ी ने पास ही टंगी एक कुल्हाड़ी निकालते हुए कहा।
अल्फ़ी के बिगड़ते तेवर देखकर चैतन्य सिटपिटाया था। उसे लगा था कि शायद इस तरह धमकी से ही उसका काम बन जाएगा, पर सामने वाला तो सच में मरने-मारने पर उतारू हो गया था।

"अरे! अरे भाई! तुम तो बुरा मान गए। मैंने तो बस हाथ मिलाने की बात की थी।" चैतन्य हाथ उठाकर उसे शांत करने की कोशिश करते हुए बोला।

"वही तो! हो कौन आखिर तुम और... इस बार सब सच बताना... वरना हमारे मेंशन के कुत्तों के लिए आज की खुराक का जुगाड़ करने में मुझे ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।" अल्फ़ी ने अपने हाथ में पकड़ी हुई कुल्हाड़ी चैतन्य के गले में टिकाते हुए कहा।

"तुम ऐसा नहीं कर सकते!" घबराए हुए चैतन्य ने जैसे उससे ज्यादा खुद को यकीन दिलाया था और इस बार सच में चैतन्य को अपनी गर्दन पर टिकी मौत का ठंडा सा अहसास पसीने की बूंदों के रूप में महसूस हुआ।

"अपने राज संभालने के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ।" अल्फ़ी ने बेरूखी से कहा और फिर तेजी से कुल्हाड़ी पकड़ा हुआ हाथ ऊपर उठाकर तेजी से चैतन्य की गर्दन की ओर घुमा दिया। वायु रक्षक बनने के बाद से चैतन्य की छठी इंद्री जागृत अवस्था में थी। उसने अल्फ़ी के प्रहार से बचने के लिए तुरंत अपने शरीर को पीछे की ओर झुकाया, जिससे अल्फ़ी का हाथ हवा में ही घूम गया। चैतन्य बिजली की फूर्ती से सीधा हुआ और फिर उतनी ही तेजी से नीचे झुक कर अपने दाएं पैर से अल्फ़ी के घुटनों के

नीचे पूरी ताकत से प्रहार किया। प्रहार इतना ताकतवर था कि अल्फ़ी मुँह के बल नीचे की ओर गिर गया और कुल्हाड़ी उसके हाथ से छिटककर दूर गिर गई। जमीन पर पड़े हुए चैतन्य ने कुल्हाड़ी की ओर देखा तो तेजी से उठकर उसकी ओर बढ़ा। मगर अल्फ़ी भी बहुत ही तेज था। दर्द में होने के बावजूद उसने तेजी से हाथ बढ़ाकर चैतन्य का एक पैर
पकड़ लिया, जिससे इस बार चैतन्य मुँह के बल गिरा था। वो जब तक संभलता, तब तक अल्फ़ी ने उसे घसीटकर अपने पास किया और एक बार फिर से उसकी गर्दन को अपने मजबूत बाजू में जकड़ लिया। उसकी पकड़ इतनी मजबूत थी कि चैतन्य को अपनी साँसे रूकती हुई महसूस हुईं। मगर अपने होश खोने से पहले ही चैतन्य ने उसकी कलाई को पूरी ताकत से पकड़ा। उसने उसके बाजू की गिरफ्त को ढीला किया और फिर सिर झुकाकर उससे बाहर निकल गया। उसके उस हाथ को कलाई से पकड़े हुए ही उसने एक पलटी मारी और अगले ही पल अल्फ़ी का वो हाथ उसी की पीठ पर चैतन्य की गिरफ्त में था। चैतन्य ने अपना दूसरा हाथ अल्फ़ी की गर्दन में फँसाते हुए उसे अपनी हिरासत में ले लिया। दोनों ही जमीन पर पड़े हुए थे, जहाँ अब चैतन्य औंधे पड़े अल्फ़ी के ऊपर सवार था।

"ऐसे किसी को खुद से कमजोर समझना अच्छी बात नहीं है। वैसे मेरा प्रस्ताव अभी भी खुला हुआ है। सोच लो!" चैतन्य ने उसके कानों में सरगोशी की।

मगर उसकी बातों को नज़रअंदाज़ कर अल्फ़ी ने पूरी ताकत से चिल्लाते हुए अपने शरीर को ऊपर की तरफ पुश किया और फिर एक झटके से पोजीशन बदलने के साथ ही अगले पल वो चैतन्य के ऊपर मौजूद था। हालांकि चैतन्य ने अभी भी उसे छोड़ा नहीं था। चैतन्य की ताकत का अंदाजा लगाते हुए अल्फ़ी ने अपने खुले हुए हाथ की कोहनी चैतन्य की पसलियों में पूरी ताकत से घुसाई थी। इससे चैतन्य की पकड़ कमजोर हुई, जिसकी वजह से एक बार फिर से अल्फ़ी उसकी गिरफ्त से आजाद हो चुका था। इसके बाद अल्फ़ी ने दो तीन गुलाटी मारी और फिर उस कुल्हाड़ी तक पहुँच गया। एक ही झटके में उसने एक बार फिर से चैतन्य की गर्दन पर वो कुल्हाड़ी रख दी। दोनों की ही साँसें बुरी तरह से उखड़ी हुई थी और उसे संभालने के लिए दोनों ही लंबी-लंबी साँसे ले रहे थे। बाजी एक बार फिर अल्फ़ी के हाथ में थी।
"तुम तो सच में खतरनाक हो! जिंदा रहना है तो बताओ यहाँ क्या कर रहे हो या फिर मरो!" अल्फ़ी ने अपनी फूली हुई साँसों के साथ धमकी भरे लहजे में कहा।

चैतन्य ने अपने खुश्क हो रहे होंठों पर ज़बान फेरी और फिर तेजी से बोला, "बताता हूँ! सब बताता हूँ! दरअसल मुझे किसी की मदद चाहिए। तुम सामने आए तो तुम्हीं से मदद मांग ली।"

"अंदाज तो बहुत ही दिलचस्प है तुम्हारा... मदद मांगने का। सच कहूं तो इसे मदद मांगना नहीं... ब्लैकमेलिंग कहते हैं।" अल्फ़ी ने ख़ासी नाराजगी से कहा।

"अब जो भी समझो!" चैतन्य ने एक बार फिर से खुलने की कोशिश करते हुए कहा और उस कुल्हाड़ी को खुद से दूर किया।

"ज्यादा फैलो मत और काम की बात करो।" अल्फ़ी उसकी फिजूल की बातों से उकताकर बोला और एक बार फिर कुल्हाड़ी उसकी गर्दन पर धर दी। उसकी चिढ़ हर पल के साथ बढ़ती जा रही थी।

"बस इतना जान लो कि मैं दोस्त नहीं.... तो दुश्मन भी नहीं हूँ, बल्कि मेरे पास तुम्हें बताने के लिए कुछ ऐसा है जो तुम्हें जानना चाहिए।" चैतन्य ने बहुत ही नरमी से कहा।

चैतन्य की यह बात सुनते ही अल्फ़ी के माथे पर शिकन पड़े थे। उसने जमीन में पड़े उस नौजवान की ऑखों में देखा, जहाँ सच्चाई दिखाई दे रही थी। अल्फ़ी का तना हुआ शरीर ढीला पड़ा और फिर वो उठ खड़ा हुआ। कुल्हाड़ी की दिशा अभी भी चैतन्य की ओर ही थी इसलिए चैतन्य अपने हाथ ऊपर की ओर उठाए जमीन पर ही पड़ा रहा। अल्फ़ी ने उसे देखकर
कुछ सोचा और फिर अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। चैतन्य ने कुछ बेयकीनी से एक बार उसके बढ़े हुए हाथ और फिर एक बार अल्फ़ी के चेहरे की ओर देखा। फिर उसने भी उसके बढ़े हुए हाथ को थाम लिया। अल्फ़ी ने उसे खींचकर ऊपर उठाया।

"बोलो!" कुल्हाड़ी के हत्थे पर अपनी ऊंगलियाँ कसे हुए अल्फ़ी ने कहा।

"दरअसल... मैं यहाँ आकर फँस गया हूँ और मुझे यहाँ से निकलने के लिए किसी की मदद चाहिए।" चैतन्य अपनी निगाहों से उसके भावों को तौलते हुए बोला।

"फँस गए हो से क्या मतलब है तुम्हारा? वैसे लग तो किसी अजूबे की तरह ही हो और... भला ये कैसे कपड़े पहन रखे हैं तुमने?" चैतन्य की जींस की ओर इशारा करते हुए अल्फ़ी ने कहा।

"अ... अभी ये तो नहीं बता सकता, पर इतना जानता हूँ कि तुम मेरी मदद कर सकते हो।" चैतन्य ने कहा।

"और वो कैसे?" अल्फ़ी ने थोड़ी दिलचस्पी से पूछा।

"मुझे किसी की तलाश है।" चैतन्य ने कहा।

"किसकी?" अल्फ़ी ने पूछा।

"पहले तुम ये पक्का कर लो कि तुम्हें मेरी मदद करनी है या नहीं। इसके बदले में मैं तुमसे यही कहूंगा कि तुम्हें थोड़ा सावधान रहने की जरूरत है। तुम गलत लोगों से घिरे हुए हो। उनसे दूर रहोगे तो भविष्य भी अच्छा होगा। मैं बाद में तुमसे फिर मिलूंगा। तब तक अपना जवाब तैयार रखना।" चैतन्य ने कहा और फिर जाने के लिए मुड़ा।
"और वो गलत कौन है?" अपनी ने बेइख़्तियार पूछा।

"माया!" चैतन्य ने ऑखों में चमक भरकर उसकी ओर देखते हुए कहा।

चैतन्य के होंठों से ये नाम फिसलने की देर थी कि अल्फ़ी एक बार फिर से बुरी तरह से हड़बड़ाया और फिर किसी तरह खुद को संभाला।

"तुम माया के बारे में ये कैसे जानते हो?" अल्फ़ी उलझे हुए लहजे में बोला।

"वो तो मैं अभी नहीं बता सकता हूँ। पर वो तुम्हारी प्रेमिका है तो तुम्हें मुझ पर यकीन नहीं होगा... ये मैं समझ सकता हूँ।" चैतन्य ने एक बार फिर से उसे उकसाया था।

"पर तुम्हें किसने कहा कि वो मेरी प्रेमिका है?" अल्फ़ी ने उस पर पैनी नज़र डालते हुए कहा।

"क्या नहीं है? तो फिर सुबह के धुंधलके में उससे चोरी-छिपे क्यों मिलने गए थे?" चैतन्य अपने होंठों पर मुस्कराहट सजाकर बोला।

"कुछ ज्यादा ही जानने की कोशिश कर रहे हो तुम! पर ये याद रखो कि हर बात जानने की नहीं होती है।" अल्फ़ी उसे सख़्त नज़रों से घूरते हुए बोला।

"और तुम ये जान लो कि तुम्हारी ये खुशफहमी.... जो वाकई में एक बहुत बड़ी गलती है... बहुत कुछ खराब कर सकती है या कर देगी।" चैतन्य ने भी ख़ासे संजीदा लहजे में कहा।
"तुम्हारी बातें बहुत ही दिलचस्प हैं। लगता है कि तुम्हारे साथ जमेगी मेरी।" अल्फ़ी ने उसे दिलचस्पी से देखते हुए कहा।

"सच में ऐसा लगता है तुम्हें !" चैतन्य ने भी उसकी बातों में दिलचस्पी दिखाई।

"आज रात! जगह तुम बोलो!" अल्फ़ी ने कहा।

"उसी झील के किनारे!" चैतन्य ने कहा।

"ठीक है!" अल्फ़ी ने कहा।

"ये ले लूँ! बहुत भूख लगी है।" कहते हुए चैतन्य ने वहाँ रखी फलों की टोकरी उठा ली। उसने अल्फ़ी पर एक मुस्कुराती हुई नज़र डाली और बाहर निकल गया।

"अरे रूको!" उसके बाहर निकलते ही अल्फ़ी तेजी से बाहर आया और चारों ओर देखने लगा। मगर दूर-दूर तक कोई भी नहीं था।

"ये इतनी जल्दी कहाँ चला गया? कुछ तो गड़बड़ है। इस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। पर ये पता लगाना भी जरूरी है कि आखिर ये है कौन? पर ताकत तो जबरदस्त है। हम्म! रात... झील के किनारे।" अल्फ़ी खुद में बुदबुदाया और फिर अपने शरीर के हिस्सों को दबाता हुआ मुड़कर दूसरी दिशा में चला गया।

****

जल्द ही चैतन्य झील के उसी हिस्से से बाहर निकला, जहाँ से वो अल्फ़ी के पीछे गया था। उसने हैरानी से चारों तरफ देखा। उसे तो अनामिका के पास जाना था।

"मैं यहाँ क्यों हूँ? अनामिका यहाँ है क्या? यहाँ क्या कर रही है वो?" खुद से ही सवाल करता हुआ वो बाहर निकल आया। इन छलद्वार की ये बात चैतन्य को बहुत पसंद थी कि पानी से भी बाहर निकलने पर भी वो पूरी तरह से सूखे हुए रहते थे।

"हो सकता है कि यहाँ आने वाली हो, तब तो उसी जगह पर जाता हूँ, जहाँ से हम दोनों यहाँ आए थे। आएगी तो वहीं से ही।" कहते हुए फलों की टोकरी संभाले वो उस तरफ बढ़ गया। वो उसी पत्थर पर जाकर बैठ गया, जहाँ अल्फ़ी बैठकर उस लड़की का इंतजार कर रहा था। उसने फलों की टोकरी एक

ओर रखी और फिर आगे जाकर झील के साफ पानी में उसने अपना चेहरा देखा, जिसमें खरोचों के निशान साफ थे। गले में भी एक गहरी ख़राश थी। वो झील के पानी में अपना चेहरा धोने लगा। अभी वो अपने चेहरे पर पानी के छींटे मार ही रहा था कि तभी उसे पीछे से पत्तों के सरसराहट की आवाज सुनाई दी। वो तेजी से उठा और फिर उसी चट्टान के पीछे छिपकर देखने लगा। कोई लड़की थी, जिसने गाऊन जैसा कुछ पहन रखा था और जिसे पहनकर चलने में उसे बहुत ही दिक्कत आ रही थी। वो आगे से कपड़ों को संभालती, तो कपड़े पीछे से उलझ जाते। पीछे देखती तो आगे की राह मुश्किल हो जाती। इस चक्कर में उसके बाल उसके चेहरे के आगे बिखर गए थे, जिससे वो और भी हलकान हो रही थी। उसकी इस अजीब सी हालत को देखकर चैतन्य को हँसी आने लगी थी।

"ये कौन बेवकूफ है?" चैतन्य ने खुद से ही सवाल किया।
और उसी समय उस लड़की ने झल्लाते हुए उन कपड़ों को झटककर छोड़ दिया। सिर झुकाकर गहरी-गहरी साँसें लेने के बाद उसने अपने चेहरे के सामने आए बालों को पीछे की ओर समेटा, जिससे उसका चेहरा दिखाई देने लगा और उसका चेहरा देखते ही चैतन्य के चेहरे का रंग उड़ा था।

"हे भगवान! शुक्र है इसने सुना नहीं! आज और मार खाने की हिम्मत नहीं है। अनामिका!" चैतन्य ने शुरू की लाइनें खुद से और आखिरी नाम चिल्लाकर उस लड़की से कही।

और अनामिका जो उलझी हुई सी खड़ी थी, चैतन्य की आवाज सुनकर खिल उठी और सिर उठाकर उसकी तरफ देखने लगी, जो तेजी से उसी के पास आ रहा था।

"ये क्या हालत बना रखी है?" चैतन्य ने अपनी हँसी होंठों पर दबाते हुए कहा।

"देखो ना! पता नहीं इसे पहनकर ये लोग चल कैसे लेते हैं? मुझसे तो एक कदम भी नहीं उठाया जा रहा है!" अनामिका रूआंसी आवाज में बोली। उसका ध्यान अपनी ड्रेस की ओर ही था।

"कोई बात नहीं चलो!" कहते हुए चैतन्य ने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया।

"ये तुम्हारे हाथ में क्या हुआ?" अनामिका ने फिक्र भरे चेहरे के साथ तेजी से चैतन्य का हाथ पकड़ते हुए कहा जिस पर चोटों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे।

"लग गई!" चैतन्य ने उसके फिक्र से भरे चेहरे को देखकर कहा। अपनी
फ़िक्र करती हुई वो उसे बहुत प्यारी लगी थी।

"दर्द हो रहा है?" अनामिका ने उसके हाथों की ओर देखते हुए कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने हुंकारी भरते हुए सिर हिलाया। अनामिका ने उन चोटों को सहलाया और फिर उन पर अपने होंठ रख दिए। ये देखकर चैतन्य की आँखों में शरारत चमकी।

"अनामिका! यहाँ भी!" वो फुर्ती से बोला।

"कहाँ?" अनामिका ने सिर उठाकर देखा, तो वो अपने अपने होंठों के किनारे पर ऊंगली रखे खड़ा था। वहाँ वाकई में एक ज़ख़्म था, जो अल्फ़ी के पंच मारने से बना था और वहाँ सूखे हुए खून का निशान अभी भी दिखाई दे रहा था। लेकिन अनामिका को उसके उस ज़ख़्म से ज्यादा चैतन्य की शरारत ने

परेशान किया था।

"अच्छा! यहाँ भी दवा चाहिए!" अनामिका उसकी ओर देखकर भौंह चढ़ाकर बोली।

"हाँ!" कहते हुए चैतन्य ने अपना चेहरा उसकी ओर बढ़ाया। वो किसी और चीज के इंतजार में ही था कि तभी अनामिका का एक तेज मुक्का उसकी नाक पर आकर लगा।

"आउच!" चैतन्य अपनी नाक पकड़कर तिलमिला उठा था।

"हो गया ईलाज! चलो!" कहते हुए अनामिका ने अपनी ड्रेस उठाई और फिर धीरे-धीरे आगे बढ़ गई।

चैतन्य ने अपनी नाक पकड़े हुए कोफ्त से उसकी ओर देखा और बोला,
"चीटर कहीं की!"

और फिर वो उसकी ओर बढ़ गया, जो अब उस पत्थर के पास पहुँचकर फलों की टोकरी से फल उठाकर देख रही थी।

"ये तुम लेकर आए हैं?" अनामिका ने पूछा।

"नहीं! तुम्हारी खिदमत में जंगल के जानवरों ने नजराना पेश किया है।" चैतन्य ने चिढ़ते हुए कहा। वो अभी भी अपनी नाक को सहला रहा था।

"तब ठीक है।" कहते हुए वो उछलकर उस पत्थर पर बैठी और एक सेव कुतरने लगी। चैतन्य भी नाराज़गी भरे चेहरे के साथ उसके पास जाकर बैठ गया और एक केला उठाकर खाने लगा।

"वैसे... इतनी चोट कैसे लग गई?" इस बार अनामिका का लहजा और चेहरा दोनों ही संजीदा थे।

जवाब में चैतन्य ने उसे अपनी ओर अल्फ़ी की मुलाकात और उसकी उलझन भरी बातों के बारे में बता दिया।

"हम्म! ये तो सच में अजीब है। जिस माया के नाम पर उसने भविष्य में इतना उत्पात मचा रखा है, उसे अपनी प्रेमिका मानने से ही इंकार कर रहा है। ये कहानी सच में बड़ी रोचक है।" अनामिका ने कहकर एक बार फिर से सेव का टुकड़ा दांतों से काटा।

"तो क्या कहती हो। इस कहानी की पहेली को सुलझाएँ क्या? तुम परिधि के नजदीक जाने की कोशिश करो... मैं अल्फ़ी को संभालता हूँ। वो भी मुझे बहुत ही उलझा हुआ इंसान लगा।" चैतन्य ने कहा।
"ठीक है। ऐसा ही करते हैं। वैसे कब आएगा वो?" अनामिका ने कहा।

"आज रात! यहीं पर!" चैतन्य ने कहा।

"उससे सावधान रहने की जरूरत है। याद रखना कि हमने उसका भयानक रूप देख रखा है। उस पर

कभी भरोसा मत करना।" अनामिका ने उसे समझाते हुए कहा।

"हाँ और तुम भी नहीं।" चैतन्य ने कहा।

"हम्म! हाथ दिखाओ जरा!" अनामिका ने चैतन्य का हाथ मांगा।

"पर तुमने यहाँ दवा तो लगा दी है। दवा तो यहाँ चाहिए।" चैतन्य ने एक बार फिर से शरारत से कहा।

"तुम फिर पिटोगे! कहा ना! हाथ आगे करो।" अनामिका बिगड़े हुए लहजे में बोली। चैतन्य ने मुँह बनाते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

अनामिका ने अपनी तर्जनी ऊंगली उसकी तर्जनी उंगली से मिलाई और फिर वो बोली, "हमें एक-दूसरे के मस्तिष्क में प्रवेश करने की जरूरत है, ताकि हम पास ना भी हों, तो भी इस टेलीपैथी की सहायता से एक-दूसरे से संपर्क कर सकते है।"

उसकी बातों का मतलब समझ कर चैतन्य ने सिर हिलाते हुए अपनी ऑखें बंद कर दी और फिर वो अपने आप को अनामिका के मस्तिष्क में स्थापित करने का प्रयास करने लगा। यही कोशिश अनामिका भी कर रही थी। उनकी इन्हीं कोशिशों के दौरान अनामिका के उंगली से एक नीली रोशनी फूटती हुई चैतन्य के हाथों में समा गई। इसके बाद चैतन्य की उंगली से भी सफेद रोशनी निकली जो अनामिका की उंगली में समा गई। इस प्रक्रिया
के दौरान उन दोनों को ही एक हल्का सा झटका लगा और फिर उन दोनों ने ही अपने मस्तिष्क में एक दूसरे को महसूस किया।

अगले ही पल उन दोनों ने अपनी ऑखें खोली और फिर मुस्कुराते हुए उन फलों की टोकरी को खत्म करने में जुट गए क्योंकि भूख बहुत तेज लग रही थी और किसी भी योजना को अमलीजामा पहनाने के लिए उनका खुद का फिट होना सबसे ज्यादा जरूरी था। अब बस दोनों को चैतन्य के उस प्रस्ताव के जवाब का इंतजार था, जो रात में अल्फ़ी लेकर आने वाला था।

फलों की टोकरी खाली करते हुए अनामिका ने चैतन्य की ओर देखा, जो किसी गहरी सोच में गुम था।

"क्या हुआ? क्या सोच रहे हो?" अनामिका ने उसके ख्यालों में दखल देते हुए कहा।

"अनामिका! कुछ बातें हैं, जो मेरे दिमाग में घुमड़ रही हैं और बस घुमड़
नहीं रही हैं... मुझे बहुत परेशान भी कर रही हैं।" चैतन्य ने अपने ख्यालों में ही गुम रहते हुए कहा।

"और वो क्या हैं?" अनामिका ने चैतन्य की ओर मुड़ते हुए दिलचस्पी से पूछा।

"यहाँ हो क्या रहा है... ये तो अभी भी समझ में नहीं आया है। पर... कुछ चीजें हैं, जो मैंने नोट की हैं।"

चैतन्य ने अनामिका की ओर देखते हुए कहा।

"और वो क्या?" अनामिका ने पूछा।

अनामिका का सवाल सुनते ही चैतन्य भी उसकी ओर मुड़ा और चौकड़ी बांधकर उसके सामने बैठ गया।

"देखो! शुरू से शुरू करते हैं। जब हम अपने समय में थे, तब हमने इन तीनों के बारे में जानने की कितनी कोशिश की थी, पर अल्फ़ी और परिधि के बारे में कुछ मिला ही नहीं, जैसे कि वो एक्सिस्ट ही नहीं करते थे। क्यों? जबकि वो तो हैं और माया के बारे में ये पता चला था कि उसे सजा के तौर पर जिंदा जला दिया गया था। एक बार फिर से क्यों?" चैतन्य ने अपनी मुट्ठियाँ बांधकर उन पर अपना चेहरा टिकाते हुए कहा।

"कुछ तो हुआ ही होगा। वैसे भी मुझे लगता है कि परिधि और अल्फ़ी इस समय में कोई महत्वपूर्ण शख़्सियत नहीं थे।" अनामिका ने उसकी बातों को आगे बढ़ाया।

"वही तो! जब वो ख़ास नहीं थे, तो उनकी पहचान क्यों छिपाई गई? ऐसे थोड़ी ना होता है? कुछ तो गड़बड़ हुई है। कुछ बहुत बड़ी गड़बड़! और... सबसे बड़ी बात कि... हम यहाँ क्या कर रहे हैं?" चैतन्य ने अपने दिमाग
की उलझन बाहर निकाली।

"क्योंकि ये नियति है।" अनामिका ने कहा।

"पर ऐसी नियति! मतलब किसी पुराने समय को फिर से जीना कितनों की नियति होगा? और अब जब... हम यहाँ हैं.. इसका मतलब तो यही है कि हम हमेशा से इस अतीत का हिस्सा रहे हैं। पर क्यों? क्या हम यहाँ कुछ करने के लिए आए हैं? कुछ बदलने आए हैं?" चैतन्य ने अपने साथ-साथ अनामिका को भी उलझाते हुए कहा।

"पर अनंत अंकल ने कहा था कि समय और नियति से छेड़छाड़ नहीं किया जाना चाहिए। ये ग़लत है।" अनामिका ने चैतन्य की बात काटी।

"परिधि और अल्फ़ी यहाँ से हमारे समय में चले गए हैं और हम दोनों उस समय से यहाँ आ गए हैं। समय चक्र का रहस्य! क्या हो सकता है ये? क्या ये कोई टाइम लूप है, जिसे तोड़ना है।" चैतन्य ने अगला सवाल किया।

"अच्छा! और वो कैसे? हमें तो ये भी नहीं पता कि यहाँ हो क्या रहा है? वक्त अपनी ऐसी कौन सी कहानी लिख रहा है, जिसमें कैमियो करने आए हैं हम? ये कुछ पता चले तो कुछ कहूँ ना!" अनामिका ने भी हल्की झल्लाहट के साथ कहा।

"वही तो पता लगाना है, इसलिए तो उस अल्फ़ी के साथ रहना जरूरी है। हम दोनों उसके भविष्य के बारे में जानते हैं... पर वो नहीं जानता। आखिर ऐसा क्या हुआ कि वो एक साधारण से लड़के से एक पिशाच बन गया! और.... ये कोई छोटी और मामूली बात नहीं है।" चैतन्य अपने मुँह में अंगूर का दाना फेंकते हुए बोला।

"कुछ तो जरूर चल रहा है। उस दिन परिधि भी बड़बड़ा रही थी कि माया
को किसी सर्वशक्तिमंडल के लिए चुना गया है। इसके बारे में भी पता करना पड़ेगा। ये माया भी बहुत टेढ़ी चीज लग रही है।" अनामिका बोली।

"हम्म!" हुंकारी भरते हुए चैतन्य की ऑखों के सामने भीगी-भीगी सी माया आ गई। चैतन्य ने तुरंत ही अपनी पलकों को तेजी से झपकाते हुए उस मंज़र को ऑखों से दूर झटका और चेहरा हथेलियों में छिपा लिया।

"क्या हुआ? एनी प्रॉब्लम?" अनामिका ने उसकी भाव-भंगिमाओं को ध्यान से देखते हुए पूछा।

"कुछ नहीं! ठीक हूँ मैं।" चैतन्य ने बात समेटनी चाही।

"नहीं! कुछ तो हुआ है तुम्हें? हम जब से यहाँ आऍं है... कुछ अजीब सा बिहेव कर रहे हो तुम। बताओ! क्या बात है?" अनामिका ने लगभग घुड़कते हुए चैतन्य से कहा।

"अनामिका!" एक गहरी साँस के साथ चैतन्य ने उसका नाम लिया।

"हाँ! बोलो!" अनामिका की नज़रें अभी भी उसी पर थीं।

"मुझे नहीं पता कि क्या हुआ है? पर जब से हम यहाँ आए हैं... ऐसा लग रहा है कि मेरी शक्तियाँ कुछ ज्यादा ही तेज हो गई हैं। मैं पहले अपनी शक्तियों के साथ कितना असहज रहता था और उन्हें इस्तेमाल भी नहीं कर पाता था। पर अब देखो। और तो और मुझे अजीब से वाइब्स महसूस होने लगे हैं।" चैतन्य ने अपनी शख़्सियत का खुलासा करते हुए कहा।

"अजीब से वाइब्स मतलब!" अनामिका ने उसकी ओर माथे पर बल डालकर देखते हुए पूछा।
"मतलब अच्छे और बुरे! वो जो माया है ना... वो बिल्कुल भी सही नहीं है। कल रात और आज सुबह भी जब वो पास थी, ऐसा लगा कि जीवन में कुछ अच्छा नहीं रहा और कभी ठीक भी नहीं होगा। कुछ इस तरह की वाइब्स।" चैतन्य ने अनामिका को समझाते हुए कहा।

"ओह! इसलिए कल से तुम उसके नाम से भी इतना छिटक रहे हो।" अनामिका ने अपनी कौतूहल सामने रखा।

"हाँ! और वही नहीं.... वो डायनों का बसेरा... वो जगह भी सही नहीं है। ऐसा लग रहा था कि वहाँ की हवाऍं भी कुछ अजीब सा अहसास लिए हुए थी। सच कहूँ तो... वहाँ दम घुट रहा था मेरा। उस जगह में कुछ नहीं... बहुत गड़बड़ है।" कहते हुए चैतन्य के शरीर में एक अजीब सी सिहरन उठी थी।

"अरे बाप रे! और कुछ! मेरा मतलब है कि इनके अलावा भी और कुछ महसूस किया।" अनामिका की दिलचस्पी चैतन्य की बातों में बढ़ती जा रही थी।

"हाँ! एक बात और! मेंशन के उस हिस्से में भी कुछ ग़लत होने का अहसास हुआ था मुझे। पर वो अल्फ़ी है ना! उसके पास मैं इतनी देर रहा... हाथापाई-मारपीट तक की,पर... उसके साथ ऐसा कुछ भी ग़लत नहीं लगा मुझे। अब ये सब क्या है, मुझे नहीं मालूम।" चैतन्य ने अपने कंधे उचकाते हुए कहा।

"अल्फ़ी के साथ सब ठीक लगा तुम्हें और इसलिए तुमने उसकी ओर मदद का हाथ बढ़ाया है, जबकि उसके आगे की भयानक जिंदगी के बारे में तुम अच्छी तरह से जानते हो।" अनामिका ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।

"वही तो! ये लड़का अपने अंदर बहुत कुछ छिपाए हुए है। ऊपर से
सामान्य दिखता है, पर उसके अंदर कुछ सामान्य नहीं है और वो क्या है ये तभी पता चलेगा, जब मैं उसके पास रहूँ।" चैतन्य ने कहा।

"हम्म! बात तो सही है तुम्हारी।" चैतन्य की बातों पर हामी भरते हुए अनामिका बोली।

"सही तो है... पर एक समस्या भी है।" चैतन्य ने कहा।

"और वो क्या?" अनामिका ने उलझन से पूछा।

"यही कि हम दोनों ने ये सब सोच तो लिया है, पर हम इसे पूरा करेंगे कैसे?" चैतन्य ने एक सवाल उठाया।

"मतलब!"

"मतलब क्या? तुम्हें क्या लगता है कि बस इस तरह कपड़े बदल लेने से हम इन सबमें घुल-मिल जाएँगे। इनके बोलने का तरीका... चलने-फिरने का तरीका देखा है। हम दोनों मुँह खोलते ही पकड़े जाएँगे।" चैतन्य ने आशंका व्यक्त करते हुए कहा।

"क्या बात करते हो? एक्टिंग नाम की भी एक चीज होती है दुनिया में।" अनामिका ने अपना सिर हिलाते हुए कहा।

"एक्टिंग! जिसकी जिंदगी मंच पर पेड़ का रोल निभाते बीती है, तुम उससे ये बात कह रही हो।" चैतन्य ने अपना सिर झटकते हुए कहा। उसकी बात सुनते ही अनामिका को जैसे हँसी का एक दौरा सा पड़ा था। वो चैतन्य के चेहरे से रह-रहकर नज़रें फिराते हुए बेतहाशा हँस रही थी। उसकी ऐसी प्रतिक्रिया चैतन्य के जबड़े कस गई। वो उसी तरह अपने दाँत भींचते उसे गुस्से में घूर-घूरकर देखता रहा।
"बस! बहुत हो गया!" आखिरकार चैतन्य गुस्से में तिलमिलाते हुए गुर्राया था।

"सॉरी! सॉरी! पर सच में! कभी-कभी तुम बिल्कुल इंपॉशिबल लगते हो। मतलब कि एक तरफ कह रहे हो... ऐसा है.. वैसा है! हमें ये करना है... वो करना है और फिर खुद ही पैर खींचने वाली बात भी कर रहे हो।" अनामिका ने खुद को संभालते हुए कहा।

"तो तुम्हें मेरी मदद करनी चाहिए... ना कि इस तरह हँसकर समय बर्बाद करना चाहिए।" चैतन्य ख़ासे चिढ़े के साथ बोला। उसके चेहरे पर चिढ़ के साथ-साथ झेंप के निशान भी साफ नुमाया थे।

"तो एक काम करो! सबके सामने गूंगे बन जाओ। कम से कम तुम्हारी आधी समस्या तो हल हो ही जाएगी।" अनामिका ने लापरवाही से कहा।

"ओह! वाव! क्या मस्त उपाय सुझाया है। बेवकूफ लड़की! तुम्हें याद नहीं... तो याद दिला दूं कि उस अल्फ़ी के पास बड़ी-बड़ी बातें करके आया हूँ मैं और इसी ज़बान से मिलने की जगह भी तय की है। गूंगा बन जाऊँ! हुंह! तुमसे तो कोई उम्मीद ही नहीं रखनी चाहिए मुझे।" चैतन्य अपना सिर झटकता हुआ बेहद ही नागवारी से बोला।

"तो क्या करूं? तुम्हारे लिए अब क्या एक्टिंग की क्लास खोलूं।" अनामिका ने भी झुंझलाते हुए अपना सिर झटका था।

"तो फिर!" चैतन्य बोला।

"मैं कह रही हूं ना! मेरी बात मानो और अल्फ़ी से ऐसा कुछ कहो कि वो इमोशनल होकर तुम्हारी मदद कर दे। वैसे भी... वो तो परिधि की तरह ही
है। बिल्कुल सामान्य और तुम ठहरे वायु-रक्षक! भला तुम दोनों का क्या जोड़। वो अलग बात है कि तुम खुद को ही इतना क़ाबिल नहीं समझते।" अनामिका ने अपने तरीके से उसे समझाया था, जिसका असर चैतन्य के चेहरे पर भी दिखाई देने लगा था।

"शायद सही कह रही हो तुम!" चैतन्य ने कहा।

"तो फिर आगे बढ़ो जवान!" अनामिका ने उत्साह बढ़ाने वाली आवाज में कहा, जिस पर चैतन्य ने उसे तिरछी नजरों से देखा था।

"सच में!" चैतन्य की ऑखों में एक बार फिर से शरारत चमकी।

"हाँ!" अनामिका की मनोबल बढ़ाती हुई आवाज आई।

"तो ठीक है!" कहते हुए चैतन्य ने उसके कंधे पकड़कर उसे एकदम से अपने नजदीक किया था। चैतन्य की इस हरकत से अनामिका की ऑखें फटी की फटी रह गईं।

"क्या... कर... रहे हो?" अनामिका ने अटकती हुई आवाज में कहा।

"तुम्हीं ने तो कहा आगे बढ़ने के लिए।" चैतन्य ने अपनी हरकत की सफाई दी और उसकी बात सुनकर अनामिका के चेहरे के भाव बदले।

"हटो!" अनामिका झुंझलाई और फिर अपनी एक भौंह चढ़ाकर उसने चैतन्य को पूरी ताकत से पीछे धकेला। पत्थर पर बैठे चैतन्य की पोजीशन सही नहीं थी, इसलिए अनामिका के धक्के से वो सीधा नीचे पानी में गिर पड़ा।

"अब सही है।" कहते हुए वो भी उस पत्थर से उतरी और दूसरी दिशा में
जाने लगी।

"एक बार फिर से मेरे अरमानों पर पानी फेरकर कहाँ जा रही हो ये बताओगी?" कमर पर हाथ रखकर चैतन्य ऊँची आवाज में बोला।

"अपने अरमान पूरे करने!" अनामिका ने हँसते हुए उसकी और पलट कर कहा।

"अच्छा!" भीगे हुए से चैतन्य की चिढ़ी हुई सी आवाज़ आई।

"तुमने अपना रास्ता खोजा, तो मुझे भी तो बसेरे के अंदर जाने का रास्ता खोजना है। अब साथ-साथ तो सबके सामने यह नहीं सकते। है ना! बाय! और हाँ... रात के खाने के लिए भी कुछ ले आना!" कहती हुई अनामिका आगे बढ़ गई।

"खाने के लिए ले आना! ऐसे कह रही है जैसे कि मेरे बाप ने यहाँ रेस्ट्रां खोलकर रखा है। तुम हत्थे चढ़ो मैडम एक दिन! सूद के साथ सब वसूल करूंगा। चीटर कहीं की!" चैतन्य ने अपने कपड़ों से पानी को झटकते हुए कहा।

फिलहाल चैतन्य के पास रात का इंतजार करने के अलावा और कुछ भी नहीं था। इसलिए वो जंगल के अंदर की ओर चला गया। जंगल की खूबसूरती उसे इतनी रास आई कि वो उसमें खोया हुआ आगे बढ़ता चला गया। थोड़ी देर बाद उसे अहसास हुआ कि वो जंगल में कुछ ज्यादा गहराई मे आ गया था। अभी वो वापस लौटने की ही सोच रहा था कि तभी उसे वहाँ किसी और के भी होने का अहसास हुआ। उसने हैरानी से चारों ओर देखा। कोई भी दिखाई नहीं दिया। वो एक बार फिर से लौटने को हुआ, उसी समय एक बार फिर से वही अहसास उसे छूकर निकल गया। वो तेजी से पीछे पलटा और फिर उस जंगल पर अपनी नज़र डाली। उसने
अपनी अंगूठी सही की और फिर अपनी ऑखें बंद करके कुछ देर यूंही खड़ा रहा और फिर एक दिशा में आगे बढ़ गया।

****

अनामिका किसी तरह खुद को और अपने कपड़ों को संभालते हुए बाजार की ओर निकल गई क्योंकि उसने सुना था कि परिधि आज इस तरफ आने वाली थी। जिस तरह की घुसपैठ करने की कोशिश चैतन्य कर रहा था... कुछ वैसी ही कोशिश की जरूरत अनामिका को भी थी। वो वहाँ पहुँचकर बहुत देर तक यूंही भटकती रही, मगर परिधि की कोई खोज-खबर उसके हाथ नहीं लगी। धीरे-धीरे अनामिका की झुंझलाहट बढ़ती ही जा रही थी। एक तो उसका काम उसके मन मुताबिक नहीं हो रहा था, दूसरी उसकी वो ड्रेस भी बहुत परेशान कर रही थी। भटकते हुए वो एक सराय जैसी जगह पर पहुँची। उसे बहुत ही ज्यादा प्यास लग रही थी। सराय के बाहर पानी का एक ड्रम रखा हुआ था। वो वहाँ गई और वहाँ मौजूद एक आदमी से पानी मांगा। आदमी अच्छे हृदय का मालिक था तो उसने अनामिका को पानी दे दिया। पानी पीकर जब वो पलटी तो एक मजबूत कद-काठी से टकरा गई। खुद को संभालते हुए उसने सिर उठाकर देखा, तो एक पल को उसकी साँस रूक गई। वो अल्फ़ी था, जो उस सराय में कुछ काम से आया हुआ था। उसे देखकर अनामिका ने अपनी नज़रें फेरी और वहाँ से तेज़ी से निकल गई। उसे कुछ देर तक ये वहम होता रहा कि कोई उसके पीछे है, पर वहाँ कोई भी नहीं था। काफी आगे आ जाने पर उसने राहत की साँस ली। वो एक शांत सी गली के सामने खड़ी चारों ओर देख रही थी, मगर उसका दिमाग बिल्कुल शून्य हो चुका था। उसे खुद भी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर वो क्या करे? इसी उधेड़बुन में वहाँ खड़ी अनामिका

उस समय सदमे में आ गई, जब कोई पीछे से उसका मुँह दबाकर उसे उस सुनसान गली में खींच ले गया। थोड़ी ही देर में उसके दोनों हाथ दो मजबूत हाथों की गिरफ्त में दीवार से लगे हुए थे और कोई उसके कंधे पर झुका हुआ था।

अनामिका को जिंदगी में पहली बार उस डर का अनुभव हुआ था, जिसे वो बयां नहीं कर सकती थी। उसकी आवाज उसके हलक़ में अटक गई थी और हवास काबू में नहीं थे। वो डर से गहरी-गहरी साँसें लेने लगी थी। आगे का सोचकर उसका सारा शरीर पसीने से भीग कर ठंडा पड़ गया था। उसकी चलती साँसे एकदम से रूकी थीं, जब उसके कंधों से खिसकता हुआ एक चेहरा उसके सामने आया। उसने बेतहाशा डर से अपनी ऑखें भींच ली थीं, मगर किसी की गर्म साँसों को अपने चेहरे पर महसूस कर उसने धीरे से अपनी ऑखें खोली। वो अल्फ़ी था, जो उसे हैरान-परेशान नज़रों से देख रहा था और फिर उसके चेहरे पर नज़र पड़ते ही एक झटके में वो उससे अलग हुआ था। अपनी भारी साँसों के साथ काँपती हुई अनामिका ने उसे लगभग रोते हुए देखा था। मगर जब उसे दूर से ताकते हुए अल्फ़ी के शरीर में कोई हरकत नहीं हुई तो वो खुद को संभालती हुई बेलगाम बाहर की ओर भागी। अल्फ़ी वहीं खड़ा उसे देखता रहा और फिर एक हैरानी भरी पहचान उसके होंठों से निकली,

"माया!"

चैतन्य जब जंगल के अंदरूनी हिस्से में पहुँचा, तो उसने एक बार फिर से कुछ बहुत ही बुरा महसूस किया। इन अहसासों ने उसे और भी चौकन्ना किया था। वो चारों ओर नज़रें रखे आगे बढ़ रहा था। उसके दिमाग का एक हिस्सा उसे वहाँ से वापस चले जाने के लिए कह रहा था, मगर वहीं उसका कौतूहल उस चेतावनी पर भारी पड़ गया था। करीब आधे घंटे तक चलते रहने के बाद वो एक अजीब सी जगह में पहुँचा। वो पेड़ों और झुरमुटों में छिपी हुई सी एक जगह थी। छिपी हुई इसलिए क्योंकि जंगल के इस तरफ शायद ही कोई आता होगा, उस पर वो जगह कुछ ऊँचाई पर थी। जंगल में उतनी देर चलने के बाद तो किसी की हिम्मत नहीं ही होती रही होगी उस पेड़ों से घिरे बड़े से उबड़-खाबड़ टीले में चढ़ने की। मगर ढेर सारे कौतूहल से घिरा चैतन्य वो बाधा पार करके आखिरकार ऊपर पहुँच ही गया क्योंकि उसकी छठी इंद्रीय उसे वहाँ कुछ होने का इशारा कर रही थी।

ऊपर चढ़ते ही उसने देखा कि वो जगह पत्थरों के बड़े-बड़े टुकड़ों को चारों ओर एक ख़ास पोजीशन में रखकर बनाई गई थी। उस जगह के बीच में एक गोल घेरा बना हुआ था और उसके भी अंदर एक लाल रंग की छोटी सी गोल आकृति बनी हुई थी। चैतन्य उस जगह के जादू में जैसे गिरफ्तार हो गया था। उस जगह में एक अजीब सा खिंचाव वो साफ-साफ महसूस कर रहा था। पर ये कौन सी जगह थी? देखकर तो साफ पता चल रहा
था कि वो जगह इस्तेमाल में लाई जाती थी या फिर... लाई जा रही थी। जंगली इलाके के बीचोंबीच होने के बाद भी वो जगह जंगल के दूसरे हिस्सों से बहुत साफ थी।

हैरानी से घिरा चैतन्य चारों ओर देखता हुआ धीरे-धीरे आगे की ओर बढ़ रहा था और फिर एक जगह जाकर रूक गया। वो जहाँ खड़ा था, वो जंगल की भुरभुरी मिट्टी से बनी जमीन थी और उसके अगले कदम में वो जमीन पथरीली हो गई थी। चैतन्य दोनों जमीन की सरहद को पलकें तेजी से झपकाते हुए

देख रहा था। फिर वो घुटनों के बल बैठा और फिर उसने अपनी अंगूठी वाला हाथ उस पथरीली जमीन पर रखकर ऑखें बंद कर लीं। शुरूआत में पलकों के नीचे उसकी पुतलियाँ सामान्य तौर पर हरकतें करती रहीं और फिर उसके माथे के बल गायब हो गए। बंद पलकों के नीचे ही ऑखें फैली थीं और फिर उसके दिमाग को कुछ झटके से लगे, जिसने उसके चेहरे को एक बार फिर से विकृत कर दिया। कुछ देर ज़हनी लड़ाई लड़ने के बाद उसने झटके से अपनी ऑखें खोल दीं। उसकी ऑखों में उलझनों का सागर हिलोरें मार रहा था, जहाँ ना जाने कितने सवाल अपने बनते-बिगड़ते वजूद के साथ मौजूद थे। वो तेजी से खड़ा हुआ और फिर कुछ कदम पीछे की ओर गया। उस जगह पर एक नज़र डालकर वो वापस जाने के लिए पीछे पलटा। वो वापसी के लिए कदम उठाने को ही था कि तभी कुछ सरगोशियाँ उसके कानों के रास्ते उसके दिल और दिमाग में हलचल मचा गईं। वो तेजी से पीछे मुड़ा और फिर उस पथरीली जगह की ओर आगे बढ़ा। एक बार फिर जमीनों की सरहद पर खड़ा होकर वो अपने दिल और दिमाग के बीच सामंजस्य बिठा रहा था और फिर ये करने के बाद उसने अपना सीधा पैर उठाकर पथरीली जमीन पर रख दिया। वहाँ पैर रखते ही एक तेज सर्द सिहरन उसके पैरों के तलवों से शुरू होकर उसके सिर तक पहुँच गई। वो कुछ समझ पाता उससे पहले ही उसका शरीर एकदम से अकड़ा और फिर एक धमाके के साथ वो हवा में उछलता उस जगह से दूर जा गिरा। हमला इतना भयानक था कि जमीन पर गिरते ही चैतन्य की चेतना लुप्त होती चली गई। झुरमुटों ने उसके शरीर को खुद में छिपा लिया था।

****

दोनों हाथों से अपने कपड़ों को घुटनों तक उठाए वो बस दौड़ती जा रही थी। उसे अपने आसपास की कोई भी सुध नहीं थी। वो बस वहाँ से दूर भाग जाना चाहती थी। वो तो शुक्र था कि वो जगह लोगों की आवाजाही के लिए कम इस्तेमाल में लाई जाती थी। दिन चढ़ आया था इसलिए धूप भी बढ़ गई थी। लगातार भागते रहने के बाद उस भारी-भरकम ड्रेस में उसे और भी गर्मी लगने लगी थी। आगे जाकर आखिरकार वो रास्ता दोनों ओर मुस्तैदी से खड़े पेड़ों की ठंडी छाँव के साए में आया, तो उसके पैर अपने आप ही धीमे पड़ते हुए रूक गए थे। शायद वहाँ की ठंडी हवाओं का जोर था। पहले तो वो थकी-थकी सी खड़ी रही और फिर थके हुए कदम उठाते हुए सड़क किनारे एक चबूतरे जैसी जगह में पहुँचकर उस पर बैठ गई। दोनों हाथों से उस चबूतरे को थामें वो अभी-अभी घटी घटना के बारे में सोचने लगी।

वो सच में बहुत ही ज्यादा डर गई थी। मगर इस डर की वजह उसके लिए अभी भी साफ नहीं थी। उसने अपने हाथों को ऊपर की ओर उठाया और फिर अपनी कलाईयों को देखने लगी, जहाँ उस अल्फ़ी के हाथों की छुअन का अहसास अभी भी था। अल्फ़ी का ख्याल आते ही उसने अपनी ऑखें भींच ली और एक बार फिर से अनामिका की ऑखों के सामने अल्फ़ी का चेहरा आ गया, जो उसके बहुत -बहुत करीब था और एक बार फिर से अनामिका ने ऑखें खोल दीं। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि इन सबके बीच भी उसे बुरा सा क्यों लग रहा था? क्या इसलिए कि वो उसके इतना करीब आ गया था, या फिर इसलिए कि वो उसे झटककर उससे दूर हुआ था और ये ख्याल ही उसकी हालत और भी खराब कर रहा था। अभी वो यही सब सोच रही थी कि उसे सामने से एक आवाज सुनाई दी।

"हैलो! कौन हैं आप? लगता है कि... आप मुसीबत में हैं।"

अनामिका ने सिर उठाकर देखा, तो उसने बेसाख़्ता ऊपर वाले का शुक्रिया अदा किया। वो परिधि ही थी, जिसकी तलाश में उसकी ये हालत हुई थी। वो उसे अजीब सी नज़रों से देख रही थी।

"आप कौन?" अनामिका ने जवाब देने की बजाय पलटकर सवाल किया।

"मैं परिधि! आप परेशान लगीं मुझे... इसलिए पूछने चली आई।" परिधि ने आत्मीयता से पूछा।

"हाँ! मैं परेशान हूँ... इसीलिए तो लग रही हूँ!" अनामिका के मुँह से निकल गया।

"जी! मुझे बताइए! शायद मैं कोई मदद कर सकूं।" परिधि ने बहुत ही नर्मी से कहा।

परिधि के ऐसा कहते ही अनामिका सकते में आ गई। उसे समझ में नहीं आया कि वो क्या कहें? उसने अपनी और परिधि की मुलाकात के लिए दूसरी परिस्थितियों के विषय में सोचा था, पर ऐसा तो बिल्कुल भी नहीं। पर अब जो भी सामने था... उसे वैसे ही डील करना था।

"आप मेरी मदद कैसे कर सकती हैं?" अनामिका ने रूआंसी सूरत के साथ कहा।
"आप बोलिए तो सही।" परिधि ने इसरार किया।

"पर आप हैं कौन?" अनामिका ने उसका सही परिचय जानने की गरज से पूछा, ताकि उसके आधार पर वो अपना जुगाड़ कर सके।

"मैं! मैं परिधि हूँ! यहीं पास में एक बड़ा सा घर है, जहाँ बस औरतें रहती हैं। वहाँ मैं काम करती हूँ।" परिधि ने कहा।

"वो तो ठीक है, पर... एक बात पूछूं।" अनामिका ने फुसफुसाकर कहा।

"हाँ! पूछो!" परिधि में उसे अजीब नज़रो से देखते हुए कहा।

"आप किसी बसेरे के बारे में जानती हैं क्या? मुझे वहाँ जाना है।" समय ना गँवाते हुए अनामिका ने अगला दॉव चला।

"ब... सेरा! तुम... इसके बारे में कैसे जानती हो?" परिधि ने रंग उड़े चेहरे के साथ कहा।

"मेरी माँ ने बताया था। उन्होंने कहा था कि जब भी मैं मुसीबत में पड़ूं... वहीं चली जाऊं।" अनामिका ने बड़े ही आत्मविश्वास के साथ फेंका।

उसकी बात सुनते ही परिधि के चेहरे पर कई रंग आकर गुजर गए। वो उसे एकटक देख रही थी... जैसे कि उसे लेकर कोई फैसला कर रही हो।

"अ... ठीक है। पहले अपने बारे में बताओ... तो ही मैं तुम्हें बसेरे के बारे में बताऊंगी।" परिधि ने कहा।

"इसका मतलब है कि तुम भी डायन हो!" अनामिका ने बहुत ही धीमी आवाज में कहा, जिसे सुनकर परिधि को एक और झटका लगा।
"तुम हमें जानती हो?" परिधि ने उड़े हुए होश के साथ पूछा।

"हाँ! क्योंकि मैं भी वही हूँ और.... मुसीबत में हूँ।" अनामिका बोली।

"कैसी मुसीबत?" परिधि ने पूछा।

"मैं बहुत दूर से मदद की आस में आई हूँ। कुछ डायनों के शिकारी मेरे पीछे पड़े हैं। मैं उन्हीं से भागती फिर रही हूँ। मेरी माँ जो खुद एक डायन थी... उन्होंने ऐसी परिस्थितियों में मुझे यहाँ आने की सलाह दी थी। मैं बहुत कमजोर डायन हूँ ना! ये समझ लो कि बस... नाम की डायन हूं।" अनामिका ने परिधि की दुखती रग का हिस्सा बनते हुए कहा।

"ओह! मतलब कि मेरी जैसी! तब तो सही इंसान से मिली हैं आप! चलिए! मैं बसेरे तक ले चलती हूँ आपको। पर... मेरी एक शर्त है।" परिधि मुस्कुराते हुए कहा।

"कैसी शर्त?" अनामिका ने पूछा।

"फिलहाल आपको वहाँ भी सबसे छिपकर रहना होगा। शायद आपको अंदाजा नहीं है। पर परिस्थितियाँ यहाँ भी बहुत उलझी हुई हैं। जब सब ठीक हो जाएगा... मैं खुद आपको सबसे मिलवा दूंगी। तब तक आप... एकदम चुप रहेंगी।" परिधि ने उसे चेतावनी के साथ हिदायत भी देते हुए कहा।

"ओह! थैंक्यू! आप जैसा कहेंगी... मैं वैसा ही करूंगी। बस मेरी जान बच जाए।" कुशल अभिनेता की तरह अनामिका ने उत्साह का प्रदर्शन करते हुए उसे गले से लगाया था।
"इस तरफ!" परिधि ने उसे एक तरफ इशारा करते हुए कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका परिधि की बताई हुई दिशा में आगे बढ़ गई। उसने परिधि से उसका आधा सामान भी ले लिया था। परिधि उसे आगे जाते हुए देखती रही। अनामिका को नहीं पता था कि उसे देखकर परिधि के अंदर ढेर सारे सवाल कुलबुलाने लगे थे।

"ये है कौन? काश कि मैं जो सोच रही हूँ... वो गलत हो। शुक्र है कि इस पर मेरी नज़र पड़ी। किसी और की नज़र पड़ती तो बहुत गड़बड़ हो जाती। ये कौन है ये तो जानना ही पड़ेगा। फिलहाल कुछ दिनों तक इसे सबसे... ख़ासतौर पर माया से छिपाकर रखना पड़ेगा।" परिधि खुद में ही बड़बड़ाई।

"अरे! कहाँ रूक गई आप? आइए ना!" अनामिका ने पीछे मुड़कर उसकी ओर देखते हुए कहा।

"अ... हाँ आ रही हूँ।" कहते हुए परिधि तेजी से उसके पास गई और फिर दोनो ही बसेरे की ओर चल दिए। अनामिका यह सोचकर खुश थी कि उसकी योजना कामयाब हो गई है, पर वो नहीं जानती थी कि परिधि से इस परिचय की वजह से वो अंजाने में एक बहुत ही बड़ी घटना की गवाह बनने वाली थी। नियति अपना अगला कदम आगे रख चुकी थी।

अनामिका, परिधि के साथ चलती हुई एक बार फिर से उस बसेरे के पास पहुँची। मगर इस बार वो दोनों बसेरे में एक दूसरे दरवाजे से अंदर की ओर गए। इमारत का पिछला हिस्सा जंगली बीहड़ का शानदार नमूना था। एक तो ये इमारत जंगल के थोड़ा अंदर और आबादी से दूर थी। ऊपर से पिछले हिस्से की ओर ज्यादा ध्यान भी नहीं दिया जाता था। ऊँची-ऊँची झाड़ियों और पेड़ों से पटा हुआ रास्ता बहुत ही दुरूह था। मगर परिधि बिना किसी परेशानी के उस पर चली जा रही थी। अनामिका को बड़ी ही कोफ्त हो
रही थी। एक तो उसकी ड्रेस... दूसरा सामान और तीसरा वो रास्ता! उसे तो यही लगा था कि वे लोग सामने से आएँगे।

"क्या हुआ?" परिधि ने पीछे मुड़कर उससे पूछा।

"आप कैसे चल लेती हैं... ऐसे रास्तों में!" अनामिका ने अपनी चिढ़ को छिपाते हुए कहा।

"आदत... आदत सब करवा लेती है। मुझे और मेरे जैसों को सामने का रास्ता इस्तेमाल करने का ना तो अधिकार है और ना ही अनुमति।" परिधि ने खीझी हुई मुस्कान के साथ कहा।

"और वो क्यों?" अनामिका की भौंह सवाल करते हुए तनी थी।

"हम ताकतवर नहीं हैं ना! और सारी स्पेशल चीजें ताकतवर लोगों के लिए होती है।" परिधि का लहजा बहुत ही थका हुआ था।

ये सुनते ही अनामिका के चेहरे पर दर्दीले भाव उभरे। उसे तो परिधि से हमेशा ही सहानुभूति और प्रेम था, इसलिए उसका दर्द अनामिका को भी तड़पा गया था। जल्द ही वे दोनों बसेरे से थोड़ी दूर एक ओर मुड़ गए।

"इमारत तो वहाँ है, तो हम कहाँ जा रहे हैं?" अनामिका ने बसेरे की ओर इशारा करते हुए कहा।

"अंदर ही जा रहे हैं, पर ये रास्ता ख़ास है। आइए!" परिधि ने मुस्कुराकर कहा और फिर अपने सिर को एक झटका देते हुए उसे अपने पीछे आने का इशारा किया। अनामिका भी चुपचाप उसके पीछे चली गई।

अनामिका ने देखा कि वहाँ एक छोटा था कार्टेज जैसा कुछ था, जिसकी
हालत बहुत ही खराब थी। उसके चारों ओर जंगली बेलों और काई का साम्राज्य बसा हुआ था और वो कहीं से भी एक शानदार इमारत के अंदर जाने वाला रास्ता नहीं लग रहा था। अनामिका बहुत ही उलझन से उस जगह को देख रही थी। परिधि ने वहाँ मौजूद जर्जर से दरवाजे को खोला और उसके अंदर चली गई। अनामिका ने भी उसके पीछे ही राह पकड़ी। वो उस दरवाजे से अंदर दाखिल हो गए, जो कि झुरमुटों में लगभग दबा हुआ था।

अंदर सीलन की बेहद नागवार बदबू चारों ओर फैली हुई थी। अनामिका ने तुरंत ही अपने हाथ से नाक को दबाया था। उसने बेयकीनी से परिधि की ओर देखा, जो उस कमरे की एक सीलन भरी दीवार की ओर चली गई थी। वहाँ उसने दीवार पर हाथ रखा और उसका हाथ थोड़ा अंदर की ओर घुस गया था। इसके बाद उसने उस दीवार को एक ओर हल्के हाथ से ही ढकेल दिया और वो किसी स्लाइड डोर की

तरह एक ओर चला गया। सामने एक रास्ता नज़र आ रहा था। अनामिका की हैरानी हर पल बढ़ती जा रही थी। परिधि ने उसे अंदर आने का इशारा किया और वो उसके पीछे-पीछे उस दरवाजे के अंदर चली गई। अंदर एक लंबी सुरंग सी दिखाई पड़ रही थी। जैसे-जैसे वो आगे बढ़ते गए... अपने आप रोशन होने वाले मशालों की रोशनी उनकी रहनुमाई करती गई। आगे बढ़ने के साथ ही अनामिका ने पीछे उस दरवाजे को बंद होते सुना। जल्द ही वे दोनों एक और दरवाजे के सामने थे, जिसकी हालत पिछले दरवाजे से बहुत ही बेहतर थी।

परिधि ने आगे बढ़कर वो दरवाजा खोला और फिर अंदर चली गई। उसके पीछे अंदर आई अनामिका ने देखा कि वो एक छोटी सी खुली जगह थी, जहाँ बहुत सारे पौधे गमलों में लगे हुए थे। अनामिका उन्हें देखते ही पहचान गई। ये वही औषधीय पौधे थे, जो डॉ. अनंत के ग्रीन हाउस में भी थे। अब अनामिका को समझ में आया कि परिधि को इन पौधों के बारे में
इतनी जानकारी कैसे थी।

आगे एक गलियारा जैसा था, जिसमें वे दोनों आगे बढ़ते गए और फिर उस गलियारे के आखिर में दोनों हाथों की ओर दो दरवाजे थे। परिधि ने बताया कि दाएँ हाथ का दरवाजा किचन का था और बायां दरवाजा उसके कमरे का। परिधि पहले तो किचन में गई और सारा सामान वहाँ छोड़ आई। उसके बाद वो अनामिका को अपने कमरे में ले गई और ये वही कमरा था, जिसके आईने को अनामिका और चैतन्य ने अपना छलद्वार बनाया था।

"आप यहाँ रहती हो, इस कबाड़ में?" अनामिका बेसाख़्ता बोली। मगर अगले ही पल उसने अपने लहज़े पर ध्यान दिया और थोड़ा असहज हुई थी।

"हाँ! ये भी कबाड़ और मैं भी कबाड़! दोनों एक जैसे।" परिधि ने फीकी सी मुस्कुराहट के साथ कहा और अनामिका ने उस मुस्कान में छिपे दर्द को साफ-साफ महसूस कर लिया।

"वैसे एक बात पूछूं?" अनामिका ने कहा।

"हाँ!" परिधि ने अनामिका की ओर पलटकर कहा।

"आप तो मुझे जानती ही नहीं। फिर मुझे इस छिपे हुए रास्ते के बारे में क्यों बताया? अगर मैंने इसका फायदा उठाया तो।" अनामिका ने उसे कुरेदते हुए पूछा।

"हो ही नहीं सकता। ये दरवाजा बस वही इस्तेमाल कर सकते हैं, जिन्हें इसकी अनुमति प्राप्त हो। दूसरों के लिए ये बेकार है।" परिधि ने लापरवाही से कहा।

"ओह! पर यदि किसी डायन ने इसका तोड़ निकालकर इसका इस्तेमाल
कर लिया तो!" अनामिका ने कहा।

"वो अलग बात है। पर... आप तो मेरी तरह हो। है ना!" परिधि ने उसे पैनी नज़र से देखते हुए कहा।

"हाँ! वो तो है।" अनामिका ने कहा।

"अच्छा! मैं एक बात पूछूं?" परिधि ने कहा।

"हाँ! पूछो!" अनामिका ने कहा।

"आपकी कोई बहन है, जो आपके जैसे दिखती हो।" परिधि ने आइने के सामने रखी चीजों को ठीक करते समय आइने में ही अनामिका को देखते हुए पूछा।

"नहीं तो! क्यों?" अनामिका ने चौंकते हुए जवाब दिया।

"नहीं! बस ऐसे ही पूछा। कुछ देर में मैं आपको किचन की इंचार्ज से मिलवा देती हूं। फिर आपको भी यहाँ काम मिल जाएगा और यहाँ आपको कोई खतरा भी नहीं होगा। बस बसेरे में इस जगह को छोड़कर और कहीं मत जाइएगा अगर सुरक्षित रहना चाहती हैं तो।" परिधि ने मुस्कुराकर चेतावनी देते हुए कहा।

"मैं ख्याल रखूंगी। आपका बहुत शुक्रिया!" अनामिका ने परिधि का हाथ कसकर पकड़ते हुए कहा। जवाब में परिधि भी मुस्कुराई थी।

फिर परिधि के कहे अनुसार अनामिका को भी वहाँ हेल्पर का काम मिल गया। उसे परिधि की तरह सफ़ेद शर्ट और ग्रे स्लीवलेस ट्यूनिक, जो घुटनों से थोड़ा सा ही नीचे था... पहनने के लिए दिया गया। वो पोशाक देखने में
सुंदर नहीं थी, पर आरामदेह होने के कारण अनामिका को पसंद आ गई थी। वो अपनी नई जिम्मेदारी निभाने के लिए पूरी तरह से तैयार थी।

फिलहाल उस तरफ किसी के भी आने की मनाही थी, इसलिए अनामिका को किसी का भी डर नहीं था। सबके अपने कार्य और कार्यक्षेत्र चिन्हित थे और सबको वही काम करना होता था। शाम होते-होते अनामिका भी बुरी तरह से थक गई थी। वो तो उसका खाना बनाने का अनुभव बहुत काम आ गया, जिससे किचन इंचार्ज का दिल खुश हो गया।किचन में दो और लड़कियाँ थीं, जिनके साथ भी अनामिका जल्द ही घुल-मिल गई। रात होते-होते अनामिका को चैतन्य की चिंता होने लगी। उसके पास बाहर जाने का रास्ता तो था, पर मौका वो कैसे तलाश करती? परिधि भी उसके साथ उसी कमरे में रहने वाली थी। अभी वो इसी उधेड़बुन में ही थी कि तभी परिधि कमरे में आई।

"अनामिका दीदी!" परिधि ने कहा।

"हाँ!" अपनी समस्या में खोई हुई अनामिका ने चौंककर कहा।

"मैं आपको दीदी कह सकती हूं ना!" परिधि ने बहुत ही प्यार से पूछा।

"हाँ क्यों नहीं!" अनामिका ने मुस्कुराते हुए कहा।

"आपने खाना नहीं खाया!" परिधि ने पूछा।

"अभी भूख नहीं लगी।" अनामिका ने बात टाली। कैसे बताती कि चैतन्य की चिन्ता से निवालों ने उससे भी मुँह फेर लिया था। वो बस उस तक पहुँच जाना चाहती थी। पर कैसे जाए? यहीं सवाल उसे लगातार परेशान कर रहा था।
"ठीक है! आप खा लीजिएगा। मुझे बाहर जाना है।" परिधि ने अनामिका को चौंकाते हुए कहा।

"अभी! कहाँ और कब तक आओगी?" अनामिका ने एक साथ सवालों की झड़ी लगा दी।

"वो... माया के काम से जाना है। आने में देर होगी। तीसरे पहर में ही लौटना है पाएगा। आप चिंता मत कीजिएगा। आप यहाँ बिल्कुल सुरक्षित हैं।" परिधि ने उसके सवालों का जवाब देते हुए कहा।

"माया कौन?" अनामिका ने तुरंत ही पूछा।

"माया! माया! माया! वहीं तो अब सब कुछ है। आखिर उसे सर्वशक्तिमंडल के लिए चुना है दिव्याक्षि ने। अब तो चारों ओर उन्हीं का रूतबा है।" परिधि के अंदाज में उपेक्षा का भाव था।

'ये सर्वशक्तिमंडल क्या बला है?" अनामिका ने पूछा, जिस पर परिधि ने उसे ग़ौर से देखा था।

"अरे भई! रूको जरा! अब जब यहाँ हो तो सब जान ही जाओगी। इतनी भी जल्दी क्या है?" परिधि ने उसके सवाल को हवा में उड़ाते हुए कहा।

अनामिका ने भी उस पर दबाव डालने से परहेज़ किया। उसने बस उसकी हाँ में हाँ मिलाई। जल्द ही परिधि अपने रास्ते रवाना हो गई उसके जाते ही अनामिका ने राहत की साँ ली। उसने खाना उठाया और फिर तेजी से उस आईने वाले रास्ते से उस झील के किनारे पहुँच गई। उस समय वहाँ चारों ओर मनहूस सा सन्नाटा छाया हुआ था। आसमान में चाँद चमक रहा था और उसकी रोशनी चारों ओर फैली थी। चार दिनों के बाद पूनम की रात थी।
अनामिका वहाँ बैठकर चैतन्य का इंतजार करने लगी। बहुत देर होने पर भी वो जब नहीं आया, तो अनामिका को बुरे ख्यालों ने घेर लिया। उसे रह-रहकर उसकी चिंता होने लगी थी, जिसकी वजह से उसकी घबराहट और भी बढ़ने लगी थी।

आखिरकार उसने टेलीपैथी का सहारा लेते हुए उसे आवाज लगाई। शुरू की दो आवाजें तो जाया ही गईं, जिसने अनामिका को और भी परेशान किया था। पर तीसरी आवाज में चैतन्य ने उससे संपर्क किया और अनामिका को अपनी गुम होती साँसें वापस आती लगीं। अनामिका ने अपने झील के किनारे होने की जानकारी दी और फिर बेचैनी से उसका इंतजार करने लगी।

अभी दस मिनट ही बीते होंगे.. जब अनामिका को किसी के पदचापों की आवाज सुनाई दी। चूंकि अल्फ़ी भी वहाँ आने वाला था, इसलिए अनामिका ने खुद को एक पेड़ की आड़ में छिपा लिया था। वो कोई रिस्क लेना नहीं चाहती थी।

जंगल की ओर से आने वाले की पहचान अंधकार में डूबी हुई थी क्योंकि उस तरफ चाँद की रोशनी घने पेड़ों के पत्तों से छनकर बहुत कम नीचे तक आ रही थीं। अनामिका ने अपनी धड़कन तक को काबू में रखा था कि उनका शोर भी किसी तरह की परेशानी पैदा ना करे। वो एकटक आगंतुक की ओर चोर

नज़रें जमाए बैठी थी और कुछ ही देर में आखिरकार वो रोशनी की बौछार से नहा गया। वो चैतन्य ही था, जो वहाँ पहुँचकर बेचैनी से चारों ओर अनामिका को ही ढूंढ रहा था। उसे देखते ही अनामिका के सब्र का बांध टूट गया और वो तेजी से बाहर निकल कर उसकी ओर भागी और उससे बस लिपट गई। उसकी इस हरकत से चैतन्य एक बार फिर से भौंचक रह गया। वो हमेशा ही उसे ऐसे ही चौंकाती थी। मगर उसने भी कोई मुखालफत नहीं की और उसे खुदमें भींच लिया।
"क्या हुआ अनामिका?" एक चिंता के साथ उसने बड़े ही प्यार से पूछा। जवाब में उसने चैतन्य के सीने में सिर रखे हुए ही अपना सिर हिलाया था। वो उसे नहीं बता सकती थी कि आज उसके दिल ने चैतन्य को कितना मिस किया था। चैतन्य ने भी और कुछ नहीं पूछा। दोनों ही कुछ देर उसी तरह एक-दूसरे में खोए से खड़े रहे। थोड़ी देर में अनामिका ने ही अपनी ऑखें खोली और उससे अलग होने लगी, जिस पर चैतन्य ने उसे एक बार फिर से अपने करीब किया था।

"ऐसे ही रहो! अच्छा लग रहा है।" उसके सिर पर अपना चेहरा टिकाते हुए चैतन्य ने कहा।

"उंहूं! पर मुझे नहीं! मुझे भूख लग रही है।" अनामिका उससे अलग होते हुए बोली।

और भूख का नाम सुनते ही चैतन्य ने अपनी ऑखें खोली थीं। उसे याद आया कि अनामिका ने उसे खाना लाने के लिए कहा था।

"अना.. मिका! वो बात ये है कि..." चैतन्य ने कहना चाहा।

"खाना मैं लाई हूँ।" अनामिका ने उसे टोकते हुए कहा।

"अरे वाह! लगता है कि तुम्हारा काम हो गया।" चैतन्य ने कहा।

"हाँ! तकरीबन!" अनामिका ने उसके गले में अपनी बाहें डालते हुए कहा।

"अरे वाह! मतलब कि खाने के बाद स्वीट डिश मिलेगी।" चैतन्य ने शरारती लहजे में ऑखें चमकाते हुए कहा।

अनामिका ने उसकी ऑखों में देखा और फिर बोली, "हम्म! शायद!"

अनामिका की बात सुनकर चैतन्य ने बेयकीनी से उसकी ओर देखा, जहाँ
एक शरारती मुस्कान ने उसका इस्तकबाल किया था। चैतन्य के होठों पर भी एक दिलफरेब मुस्कुराहट आई।

"फिर तो मुझे बहुत भूख लगी है।" चैतन्य ने उसके माथे से अपना माथा मिलाते हुए कहा।

"अभी लाई! बैठो!" अनामिका ने हँसते हुए उत्साह से कहा और फिर उस ओर चली गई, जहाँ वो छिपी हुई थी। चैतन्य ने झील के पानी से हाथ-मुँह धोया और वहीं पत्थर पर बैठकर अनामिका का इंतजार करने लगा। जल्द ही अनामिका खाने से भरी एक थाल ले आई, जिसे उसने एक कपड़े से ढँक रखा था। दोनों को ही बहुत भूख लग रही थी। सुबह के फलों के बाद उन दोनों को ही कुछ भी खाने को नसीब नहीं हुआ था।

"ये खाना तुमने बनाया है?" पहला निवाला गले से नीचे उतारने के बाद चैतन्य ने पूछा।

"तुम्हें पता चल गया।" अनामिका ने मुस्कुराते हुए कहा। जवाब में चैतन्य ने अनामिका की कलाई पकड़ी और उसकी हथेली की पुश्त चूम ली। उसकी इस हरकत पर अनामिका खुलकर मुस्कुराई थी। उसने अपना हाथ खींचा, तो चैतन्य ने उसे मजबूती से पकड़ लिया।

"चैतन्य! हाथ छोड़ो!" अनामिका ने अपना सिर हिलाते हुए कहा। मगर चैतन्य ने नहीं छोड़ा। वो अनामिका की कलाई को देख रहा था। अनामिका कुछ कहती, उससे पहले ही चैतन्य ने उसकी दूसरी कलाई भी पकड़ ली और उन्हें ग़ौर से देखने लगा। उसकी इस हरकत से अनामिका के माथे पर बल पड़े थे।

"क्या हुआ चैतन्य?" अनामिका ने अब थोड़ी फिक्र से पूछा।
चैतन्य ने अनामिका की दोनों कलाईयाँ पकड़ी और उन्हें अपनी ऑखों के थोड़ा और नजदीक लाकर बोला, "कुछ हुआ था क्या?"

"क्या मतलब?" अनामिका ने नासमझी से पूछा।

"मतलब ये कि... तुम्हारी आज किसी से झड़प-वड़प हुई है क्या?" चैतन्य ने पलकें अनामिका की ओर उठाकर पूछा। उसके माथे पर बल और ऑखों में परेशानी दिख रही थी और उसकी बात सुनकर अनामिका का हलक़ सूखा था।

धमाके के बाद चैतन्य झुरमुटों के बीच ना जाने कितनी देर तक मूर्छित पड़ा हुआ था। वो उसी तरह और भी ना जाने कितनी देर वैसे ही पड़ा रहता है, मगर उसकी अंतर्चेतना में किसी के दखल ने उसके बेसुध पड़े मन को झिंझोड़ा। कोई उसे याद करता हुआ पुकार रहा था, जिसे वो अपनी हालत की वजह से पहचान नहीं सका। उसे मुश्किल से बस अपना नाम ही समझ में आया था। इन सबके बाद उसकी बेहोशी के तार टूटने लगे थे। उसके शरीर में हरकत हुई और फिर उसने धीरे से अपनी ऑखें खोली। उसके मुँह से निकलती हुई हवा जमीन की धूल को हौले-हौले उड़ा रही थी। कुछ देर उन अधखुली ऑखों से आसपास का मुआयना करने के बाद उसने अपनी यादों पर जोर डाला और धीरे-धीरे उसे सब याद आता गया कि वो यहाँ इस तरह से क्यों पड़ा हुआ था?

सब याद आते ही उसने पूरी ताकत से अपनी ऑखों को खोला और फिर हाथों के सहारे ऊपर उठने लगा। उसके पूरे शरीर में दर्द की एक तेज लहर गुजर गई। उसने ध्यान दिया कि अंधेरा हो चुका था और उसके साथ वो हादसा दोपहर में पेश आया था। शायद बहुत देर तक इस तरह से पड़े रहने के कारण उसका शरीर अकड़ गया था और दर्द शरीर के हर हिस्से में घुस गया था। पर वो इस तरह वहाँ पड़ा नहीं रह सकता था, इसलिए
थोड़ा जोर तो लगाना ही पड़ता। वो अभी घुटनों के बल बैठा ही था कि उन झुरमुटों के पार से आई पीली रोशनी का एक टुकड़ा उसके चेहरे से टकराया। इस अंधेरे-घने-बियाबान जंगल में रोशनी की झलक उसकी ऑखें चौड़ी कर गई। उसने ऐहतियातन अपना चेहरा उन झुरमुटों के पर्दे से थोड़ा सा

बाहर निकाला, जिससे वो सामने हो रही गतिविधियों को देख सके और फिर सामने जो दिखा.. उसे देखकर उसकी ऑखें हैरानी की आख़िरी हद तक फट चुकी थीं।

दोपहर के समय उसने जो उजाड़ सा पथरीला मैदान देखा था, वो अब कुछ लोगों की मौजूदगी से आबाद था। उन सभी ने काले लबादों से अपनी पहचान छिपा रखी थी और वो गोल घेरा बनाए हुए खड़े थे। अपने हाथ सामने बांधे.. वो सब किसी अजीब सी भाषा में कुछ बड़बड़ा रहे थे। पास ही कुछ मशालें जमीन में धँसी हुई थीं, जिनसे निकलने वाली पीली रोशनी आसपास के अंधेरे को निगल चुकी थीं और उसी रोशनी के कुछ टुकड़े उसकी ओर भी आए थे।

कुछ पल हैरानी के नाम करने के बाद उसने हालातों को समझने की कोशिश की... कि आखिर हो क्या रहा था? जंगल के इस बीहड़-सुनसान इलाके में... जहाँ दिन में भी किसी का आना नामुमकिन नहीं तो... बहुत ही मुश्किल जरूर था... वहाँ पर अंधेरे की चादर को चीरकर ये कौन लोग आए हुए थे... और कर क्या रहे थे? मगर उतनी दूर से ना तो उसे कुछ दिखाई दे रहा था और ना ही सुनाई दे रहा था। पर उसे ये समझ में आ गया था कि जो भी हो रहा था, ठीक तो कतई नहीं था। वो इसी उलझन में उलझा हुआ था कि तभी उसके कानों में कुछ सरगोशियाँ सी हुई, जिससे उसने झुंझलाकर अपना सिर जोर से झटका। उसने एक बार फिर से ध्यान उन लोगों पर लगाया ही था कि उसे इस बार अपना नाम सुनाई दिया और वो चौंका था। उसका ध्यान अब उन लोगों से पूरी तरह से हट गया और उसने अपने चारों ओर देखा। वो सब समझने की कोशिश कर ही रहा था कि तभी उसने अपने ज़हन में अनामिका को साफ-साफ अपना नाम पुकारते सुना और उसे सब समझ में आ गया।

"अनामिका!" उसने अपने कान पर ऊंगलियाँ रखते हुए कहा।

"थैंक गॉड चैतन्य! तुमने जवाब दिया! मैं तो डर ही गई थी। कहाँ हो तुम?
मैं यहाँ झील के किनारे पहुँच गई हूँ। तुम अभी तक आए नहीं। अल्फ़ी से तुम्हारी मुलाकात होनी थी ना!" अनामिका की धीमी सी आवाज़ उसके दिमाग में गूंजी।

"तुम क्या कर रही हो वहाँ?" चैतन्य ने परेशानी से कहा।

"क्या मतलब... क्या कर रही हूँ? तुम्हारा इंतज़ार कर रही हूँ। जल्दी आओ!" अनामिका ने कहा और संपर्क काट दिया।

"अना....! ये लड़की भी ना! वो अल्फ़ी कभी भी आ सकता है वहाँ और...." सोचते-सोचते अचानक ही उसे अल्फ़ी को नर्म नज़रों से निहारती अनामिका याद आ गई और वो एकदम से हड़बड़ाया था। उसने एक नज़र वहाँ मौजूद रहस्यमई सायों पर डाली और फिर सिर झटकता वहाँ से सावधानी से निकल गया। उसे वापस झील तक पहुँचने में बमुश्किल दस मिनट ही लगे। झील का किनारा पास आते ही उसने अपनी रफ़्तार कम की और सामान्य तरीके से आगे बढ़ने लगा। पेड़ों के साए से बाहर चाँद की रोशनी में आते ही वो चारों ओर बेचैनी से अनामिका को ढूंढने लगा। वो हर्गिज नहीं चाहता था कि अल्फ़ी और अनामिका का आमना-सामना हो। उसके नज़रों की बेचैनी हद दर्जे तक बढ़ ही चुकी थी कि तभी उसे अपने पीछे से कुछ तेज आवाजें सुनाई दीं। वो तेजी से पीछे पलटा ही था कि तभी अनामिका उससे आकर लग गई। बुरी तरह से हैरान चैतन्य कुछ सोच-समझ पाता, उससे पहले ही अनामिका ने उसे जोरों से पकड़ लिया। उसकी शिद्दत महसूस कर चैतन्य ने भी राहत से उसे खुद से लगाया था। थोड़ी ही देर में वे दोनों झील के किनारे अनामिका के हाथ से बना खाना खा रहे थे, तभी चैतन्य ने

अनामिका की कलाईयाँ पकड़कर परेशानी भरे लहज़े में उससे सवाल किया था।

"कुछ हुआ था क्या?"
"क्या मतलब?" अनामिका ने नासमझी से पूछा।

"मतलब ये कि... तुम्हारी आज किसी से झड़प-वड़प हुई है क्या?" चैतन्य ने पलकें अनामिका की ओर उठाकर पूछा। उसके माथे पर बल और ऑखों में परेशानी दिख रही थी और उसकी बात सुनकर अनामिका का हलक़ सूखा था।

"वो.. वो... तुम ऐसा क्यों... कह रहे हो?" अनामिका ने बमुश्किल कहा।

"तुमसे कुछ पूछा है।" कुछ ग़लत की आशंका से चैतन्य का लहज़ा अचानक ही सख़्त हुआ था।

"हाँ वो..." अनामिका ने धीरे से कहा।

"कहाँ? किससे?" चैतन्य का लहज़ा अभी भी भारी था।

"चैतन्य! देखो! तुम पहले खाना खा लो!" अनामिका ने इसरार किया।

"तुम्हें मेरी हर बात काटनी जरूरी है क्या? मैंने कुछ पूछा तुमसे। उसका जवाब दो!" चैतन्य ने चिढ़ भरी आवाज में कहा।

"देखो चैतन्य! यहाँ भूखे रहकर अपनी सेहत खराब नहीं कर सकते हम दोनों। तुम पहले खाना खाओ प्लीज़! मैं तुम्हें सब बताऊंगी। एक-एक बात बताऊंगी... पर खाने के बाद। प्रॉमिस!" अनामिका ने निवाला चैतन्य के मुँह की ओर बढ़ाते हुए कहा। चैतन्य ने सोचने वाले अंदाज में उसकी ओर देखा और फिर एक हुंकारी के साथ निवाला अपने मुँह में ले लिया। इसके बाद खाना खत्म होने तक जहाँ अनामिका उसके सवाल के जवाब में उलझी रही.... वहीं दूसरी ओर चैतन्य की नज़रें अनामिका के उलझे हुए चेहरे पर ही जमी रही।
खाना खत्म होते ही चैतन्य ने एक बार फिर से अपना सवाल दोहराया। आखिरकार अनामिका ने उसे सारी बात बता दी। सब सुनने के बाद चैतन्य को जो समझ में आया, उसकी वजह से गुस्सा उसकी ऑखों में खून बनकर उतर आया था। अपने दाँतों और मुट्ठियों को भींचे हुए वो अपनी अंगारा ऑखों के साथ वहाँ से उठकर तेजी से एक ओर बढ़ गया। उसका ऐसा रूप देखकर अनामिका के होश फाख़्ता हुए थे। कुछ ग़लत होने की आशंका के साथ वो भी तेजी से उसके पीछे भागी।

"चैतन्य! चैतन्य रूको! कहाँ जा रहे हो?" अनामिका ने बेहद घबराई हुई आवाज में उसके सामने आते हुए पूछा।

"जहाँ जाना चाहिए। उसकी हिम्मत कैसे हुई तुम्हें छूने की?" चैतन्य पूरी ताकत से दहाड़ा था।

"देखो चैतन्य! शांत... शांत हो जाओ!" अनामिका ने उसे संभालने की कोशिश करते हुए कहा, जो गुस्से में बुरी तरह से थरथरा रहा था।

"शांत! नहीं! मैं तो सोच रहा हूँ कि सारी मुसीबत की जड़ को ही काट दिया जाए। ना रहेगा वो

अल्फ़ी... और फिर ना ही होगा कोई पिशाच किसी श्राप के साथ। एक ही बार में सारा मामला साफ। नई!" चैतन्य ने बेइंतहा गुस्से के साथ कहा।

"चैतन्य मेरी बात सुनो!" अनामिका ने उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में भरकर तेज आवाज में कहा।

"मुझे जो सुनना था.. वो मैंने सुन लिया है और कुछ सुनने की जरूरत ही नहीं है। जिन हाथों से तुम्हें छुआ है ना उसने... अगर उसी की कुल्हाड़ी से काटकर नहीं फेंक दिए, तो फिर कहना।" चैतन्य ने खुद को अनामिका की
पकड़ से आजाद करते हुए कहा और एक बार फिर से आगे बढ़ गया।

"हाँ! हाँ! जाओ! दिखाओ अपनी ताकत! दिमाग तो तुमने बेच दिया है ना! जाओ जाकर मार दो उस अल्फ़ी को। फिर ना तो कोई समयद्वार खुलेगा और ना ही उस अल्फ़ी से बचने के लिए परिधि समय द्वार से हमारे समय में जाएगी। सब ठीक हो जाएगा... सिवाय इसके कि... हम दोनों यहाँ फँस जाएँगे। पता नहीं कब तक के लिए... या फिर शायद हमेशा के लिए। जाओ! बेस्ट ऑफ़ लक! कामयाब हो!" अनामिका का लहज़ा हद दर्जे तक तंज़ भरा था और उसकी बातें सुनकर चैतन्य के कदम धीमे होते-होते पूरी तरह से रूके थे। वो कुछ देर वैसे ही खड़ा रहा और फिर मुड़कर अनामिका की ओर देखने लगा।

"क्यों? क्या हुआ? रूक क्यों गए? जाओ! या फिर कोई... डायलॉग मारना रह गया, जो बोलने के लिए रूक गए हो।" अनामिका ने बहुत ही बेरूखी से कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य के चेहरे पर शर्मिंदगी भरे भाव आ गए थे। वो अपनी शर्मिंदा सी हालत लिए अनामिका के पास पहुँचा, जो गुस्से और अफसोस से दूसरी ओर देखते हुए गहरी साँसें भर रही थी। चैतन्य ने एक ठंडी साँस छोड़ते हुए उसका नाराज चेहरा अपनी हथेलियों में भरा।

"आई एम सॉरी!" चैतन्य बोला, जिस पर अनामिका ने अपनी नज़रें फेरी थीं।

"देखो अनामिका! मैं क्या.. कोई भी ग़ैरत वाला इंसान ऐसा कुछ सुनने के बाद इसी तरह रिएक्ट करेगा। मेरा दिल अभी तक जल रहा है ये सोचकर... कि उसने तुम्हें गलत नीयत से छुआ।" चैतन्य ने सफाई देते हुए कहा।

"पर मुझे ऐसा नहीं लगता!" अनामिका ने अपना चेहरा चैतन्य की
हथेलियों से आज़ाद करते हुए कहा।

"क्या मतलब!" अनामिका की बात ने चैतन्य को चौंकाया।

"मतलब ये कि... मुझे नहीं पता कि... उसने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? वो क्या करना चाह रहा था? पर... इतना तो तय है... कि उसकी नीयत बुरी नहीं थी।" अनामिका ने बहुत ही सोचते हुए कहा।

"और तुम... ऐसा कह रही हो।" चैतन्य ने उसे टोकते हुए कहा।

"हाँ क्योंकि अगर उसकी नीयत खराब होती... तो मैं अभी तुम्हारे सामने इस तरह नहीं खड़ी होती। तुम्हें पता है... मैंने खुद को उससे नहीं बचाया, बल्कि मेरा चेहरा देखने के बाद उसने खुद ही मुझे छोड़ा और एक बार पीछे हटने के बाद वो फिर मेरी ओर नहीं बढ़ा।" अनामिका ने अपनी बात रखी।

"अच्छा! वाह!" चैतन्य ने उपेक्षा से कहा। अल्फ़ी का पक्ष लेती हुई वो उसे बिल्कुल अच्छी नहीं लग रही थी।

"देखो चैतन्य! जरूरी नहीं कि हमारी ऑखें सामने देखकर जो समझे, वो सही हो। कई बार होता वो नहीं है... जो दिखाई देता है।" अनामिका एक बार फिर से चैतन्य को समझाते हुए बोली।

"अच्छा! और इन सबमें हम सबसे अलग... तुम्हें क्या समझ आया?" चैतन्य ने थोड़ी चिढ़ से कहा।

"दर्द! उसकी ठंडी सर्द ऑखों में बेतहाशा दर्द था, जो मुझे पहचाने की कोशिश में उसकी ऑखों में भर गया था। मुझे ये भी यकीन है कि... जब वो मुझसे अलग हुआ था तो उसकी ऑखों में नमी थी।" अनामिका एक
बार फिर से अल्फ़ी की ऑखों को याद करते हुए कहा।

"दर्द! उसकी ऑखों में दर्द! मुझे तो बस गुस्सा दिखाई दिया था।" चैतन्य ने बहुत ही बेरूखी से कहा।

"चैतन्य! तुम सही थे। उसने अपने अंदर कुछ तो छिपा रखा है एंड वी हैव टू फाइंड आऊट इट क्योंकि यहाँ से बाहर निकलने के बाद हमें ये सीधा-साधा अल्फ़ी नहीं.... वो पिशाच मिलेगा, जिसका हमें सामना करना है। इसलिए उसे जानने और समझने की कोशिश करो। शायद आगे जाकर इससे हमारी कोई मदद हो। तुम समझ रहे हो मेरी बात!" अनामिका ने एक बार फिर से अपनी बात समझाई।

अनामिका की बातें सुनते हुए चैतन्य के दिमाग की गर्मी भी धीरे-धीरे बाहर निकल कर हवा में उड़ गई। गुस्से की रौ में उसने ये सब सोचा ही नहीं था। अनामिका की बात सुनकर चैतन्य ने एक हुंकारी के साथ हामी भरी थी।

"चैतन्य! एक बात याद रखना कि गुस्से में लिए फैसले हमेशा तकलीफ़ देते हैं। बहुत कुछ जला देते हैं... बर्बाद कर देते हैं। मैं नहीं चाहती कि तुम्हारे गुस्से की वजह से हमारे साथ ऐसा कुछ हो। मैं यहाँ से वापस जाना चाहती हूँ चैतन्य! हमारा भविष्य वहाँ है... हमारे समय में, यहाँ नहीं। मैं वहाँ तुम्हारे साथ अपनी जिंदगी गुजारना चाहती हूँ।" एक बार फिर से अनामिका ने चैतन्य का चेहरा अपनी हथेलियों में भरते हुए बहुत ही प्यार से कहा था। चैतन्य ने भी उसी शिद्दत से उसकी हथेलियों को अपनी हथेलियों में कसा था।

"अच्छा! अब मैं चलती हूँ। मुझे फिक्र थी कि तुम भूखे होंगे, इसलिए यहाँ आ गई। अपना... नहीं.. हमारा ख्याल रखना।" अनामिका ने कहा, जिस पर एक बार फिर से चैतन्य ने अपना सिर हिलाया था। अपनी बात कहकर अनामिका जाने के पलटी और फिर एकदम से रूकी थी। अपनी सोचों में गुम चैतन्य का ध्यान उसकी ओर नहीं था। अनामिका ने पलटकर चैतन्य की ओर देखा और फिर उसके पास चली गई। उसे पास महसूस कर चैतन्य ने उसकी ओर सवालिया नजरों से देखा। अनामिका के होंठों पर एक मुस्कान आई और फिर अपनी एड़ी के सहारे थोड़ा सा ऊपर उठते हुए उसने चैतन्य के गाल पर अपने होंठ रख दिए। एक बार फिर चैतन्य की ऑखें फैल गईं और उन्हीं फैली हुई ऑखों से उसने अनामिका की ओर देखा।

"तुम्हारी स्वीट डिश!" अनामिका एक दिलफरेब मुस्कुराहट के साथ बोली और तेजी से वापस लौट गई।

अपने गाल पर हथेली रखे हुए चैतन्य चिल्लाया, "हे! ये भी चीटिंग है।"

"अब जो है... यही है।" अनामिका ने बिना उसकी ओर देखे कहा और झील के पानी में उतरकर गुम हो गई।

चैतन्य ने अनमने ढंग से अपने गाल को छुआ और फिर मुस्कुरा कर बोला, "चीटर कहीं की!"

अनामिका की सभी बातों पर ग़ौर करता हुआ चैतन्य एक बार फिर से झील के किनारे बैठकर अल्फ़ी का इंतजार करने लगा था। दिमाग पर हावी गुस्सा कहीं दूर उड़ चुका था। ना जाने वो कितनी देर उसी तरह बैठा रहा। फिर पीछे से आती हुई आवाज ने उसे सचेत किया था। वो तेजी से पीछे मुड़ा। कोई आ रहा था और चैतन्य को पता था कि वो अल्फ़ी ही था। अचानक ही उसके दिल में एक टीस सी उठी.. ये सोचकर कि सामने से आते उस शख़्स ने अनामिका को तकलीफ़ पहुँचाई थी और उसने उस टीस को अपनी जगह रहने दिया। वो उस अहसास को मिटाना नहीं चाहता था।
जल्द ही सामने से आता हुआ अल्फ़ी उसके सामने खड़ा था और उसे देखने के बाद एक बार फिर से चैतन्य के होश उड़े थे।

चैतन्य ऑखें फाड़े अपने सामने से आते हुए अल्फ़ी को देख रहा था, जो अपने हाथ में लालटेन लिए हुए था और उस लालटेन की रोशनी में चैतन्य ने साफ-साफ देखा कि अल्फ़ी ने बिल्कुल वैसी ही लबादेनुमा पोशाक पहनी हुई थी, जैसी जंगल के बीचोंबीच उन रहस्यमई लोगों ने पहनी हुई थीं।

तो क्या अल्फ़ी इस समय वहीं से आ रहा था। पर वो वहाँ क्या कर रहा था? क्या वो उन सभी को जानता था? चैतन्य का शरीर पहले ही दोपहर वाले हादसे की वजह से दर्द कर रहा था, जिसे उसने अनामिका से छिपाकर रखा था कि ये जानकर वो और भी परेशान हो जाती। ऊपर से अल्फ़ी की हरकत के बारे में सुनकर चैतन्य बाकी सब कुछ भूल ही गया था। पर अब उसे उस पोशाक में देखकर उसका दिमाग सवालों के बोझ से दबा जा रहा था। जल्द ही अल्फ़ी ठीक उसके सामने खड़ा था। चैतन्य ने उस पर ऊपर से नीचे तक एक पैनी निगाह डाली। अल्फ़ी ने अपने सिर पर पड़ा कपड़ा हटाया, जिससे उसका चेहरा दिखाई देने लगा।
"बड़ी देर कर दी!" चैतन्य ने उलाहना भरे स्वर में कहा।

"दुनिया में लोगों के पास जरूरी काम होते हैं करने के लिए। सब तुम्हारी तरह खुशकिस्मत नहीं कि पैर फैलाकर पड़े रहें।" अल्फ़ी ने भी पलटकर बहुत ही हिकारत भरे लफ़्ज़ों के साथ चैतन्य पर वार किया था।

उसके पैने अल्फ़ाजों ने चैतन्य के लिए जैसे खंज़र का काम किया था। पहले से ही खार खाए बैठे चैतन्य को एक बार के लिए लगा कि आगे बढ़कर उसकी ऑखें नोच ले। पर... अनामिका की हिदायत भूलकर वो कम से कम उसे हर्ट करना नहीं चाहता था, इसलिए चुपचाप अपना गुस्सा पी गया।

"इसमें मेरा कसूर नहीं है। इस दुनिया में कुछ लोग मजबूर भी होते हैं।" चैतन्य ने रूआंसी शक्ल बनाते हुए कहा।

"अच्छा! तुम और... मजबूर! बात ऐसी करो... जो हजम भी हो।" अल्फ़ी ने उसे घूरते हुए कहा।

"नहीं! सच में! सच कह रहा हूँ।" अपनी चिढ़ को सात तालों में कैद करते हुए चैतन्य ने कहा।

"बकवास मत करो और मुद्दे की बात पर आओ।" अल्फ़ी ने बहुत ही रूखे लहजे में कहा।

"मुद्दा! हाँ तो मुद्दा ये है कि मुझे एक डायन से प्यार हो गया है... है नहीं..... था.... या फिर.... है!" चैतन्य अपनी बात को उलझाते हुए बोला।

"मुझे लगता है कि मुझे जाना चाहिए।" अपनी रूखी आवाज में कहते हुए अल्फ़ी पलटकर जाने के लिए आगे बढ़ गया।
उसे इस तरह वहाँ से जाते देखकर चैतन्य तेजी से दौड़कर उसके सामने जाकर उसका रास्ता रोकते हुए बोला, "क्या यार? बात तो सुन लो पहले।"

"मुझे नहीं लगता कि तुम्हारे पास ऐसी कोई बात है, जिसे सुनना मेरे लिए जरूरी है।" अल्फ़ी की आवाज में खुश्की अभी भी मौजूद थीं। वो एक बार फिर से चैतन्य को एक ओर हटाकर आगे बढ़ गया।

उसकी बातें सुनकर चैतन्य का तो मन कर रहा था कि अभी कमबख़्त की गर्दन मरोड़ दे, पर उसकी जरूरत उसकी चाहत से बड़ी थी, इसलिए उसने पीछे से ही मिलावटी शहद घुली आवाज में चिल्लाकर कहा, "पहले सुन तो लो भाई! मैं ही नहीं.. मेरे बाद मेरी सात पुश्तें तुम्हें दुआएँ देंगी। गरीब की दुआ लगेगी, तो तुम्हारा प्यार भी फलेगा-फूलेगा। बहारें आएँगी! फूल खिलेंगे!"

हालांकि चैतन्य ने बहुत ही बचकाने तरीके से उसकी खुशामद की थी, जिसकी चिकनाई पर उसे खुद भी भरोसा नहीं था, पर ये सुनकर अल्फ़ी के बढ़ते कदम एकाएक ही रूके थे और वो अपनी जगह पर खड़ा रह गया। हालांकि वो अभी भी चैतन्य की ओर पीठ करके ही खड़ा था।

"अबे! सच में फिसल गया क्या?" चैतन्य ने ऑखें सिकोड़ कर उसे देखते हुए खुद से ही फुसफुसाकर कहा।

अल्फ़ी कुछ देर उसी तरह खड़ा रहा, जिससे चैतन्य को ऊब सी होने लगी। उसने कुछ बोलने के लिए मुँह खोलना ही चाहा था कि अल्फ़ी तेजी से उसकी ओर पलटा। चैतन्य ने तेजी से अपना मुँह बंद करते हुए अपना बढ़ा हुआ हाथ पीछे खींचा था। अल्फ़ी ने अपनी एक भौंह चढ़ाकर उसे देखा, जिसके जवाब में चैतन्य ने बेग़ैरती से अपने दाँत चमकाए थे।
"बको!" अल्फ़ी ने लरजती हुई आवाज में कहा और उसकी आवाज की सिहरन ने चैतन्य को चौंकाया था। उसने एक बार फिर से अजीब सी क़ैफियत में लिपटे उस शख़्स को पढ़ने की कोशिश की और उसका ये अंदाज शायद अल्फ़ी को खटक गया। उसने तेजी से चैतन्य की ओर से रूख फेरा था।

"कहा ना! बको!" इस बार अल्फ़ी की आवाज फिर से पहले की तरह ही सर्द और भारी थी।

"वो.. वो... मुझे अपनी प्रेमिका की तलाश है।" चैतन्य ने फुर्ती से कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी हैरानी भरे चेहरे और सवालों भरी नज़रों के साथ पीछे पलटा। उसने चैतन्य को घूरते हुए उसकी बात समझने की कोशिश करते हुए कहा, "मैं.... कुछ समझा नहीं।"

उसका सवाल सुनकर चैतन्य की आवाज एक बार फिर से अटकने लगी, ऊपर से अल्फ़ी की पैनी नज़रें उसे और भी नर्वस कर रही थी। उसने भी तेजी से अपना चेहरा दूसरी ओर घुमाया, अपनी ऊंगलियाँ क्रॉस की और बोलना शुरू किया।

"वो... दरअसल बात ये है कि मेरी प्रेमिका एक डायन है और उसे किस्मत के धोखे ने मुझसे दूर कर दिया है। मुझे नहीं मालूम कि... वो कहाँ चली गई। मैं उसकी तलाश में यहाँ दर-बदर भटक रहा हूँ, पर वो मुझे मिल ही नहीं रही। यहाँ उसकी तलाश के दौरान मुझे पता चला कि कोई माया है, जो मेरी मदद कर सकती है... या फिर उसकी कोई दोस्त भी चलेगी। आज सुबह जब मैं उसकी यादों के ग़म में डूबा झील के किनारे बैठा था तो तुम्हें वहाँ देखा और उसके बाद का भी सब कुछ देखा सुना। तुमने माया का नाम लिया तो मुझे लगा कि शायद तुम मेरी मदद कर सकते हो।" अपनी
बात खत्म कर चैतन्य ने बड़ी ही लाचारी से उसकी ओर देखा था।

"तो बस इस लिए तुम मेंशन में घुस आए थे। तुम्हें पता है कि ये कितना ख़तरनाक हो सकता था और... (रूककर कुछ सोचते हुए) एक मिनट... तुम मेंशन के अंदर आए कैसे थे? बिना किसी की नज़र पड़े और वहाँ से बाहर गए कैसे?" अल्फ़ी ने अपनी हैरानी अपने सवालों में उड़ेलते हुए कहा।

"अ... वो छोड़ो! कभी और बताऊँगा। पहले ये बताओ कि तुम मेरी मदद करोगे? देखो! तुम भी तो माया से प्यार करते हो ना! तो मेरे दिल की हालत समझो ना! मैं उसके बिना नहीं रह सकता। प्लीज! मेरी मदद करो! माया से कहो ना कि वो उसे ढूंढ कर मेरे पास ले आए। या फिर बता दे कि वो कहाँ हैं? देखो! तुम्हें तुम्हारे प्यार का वास्ता है। इंकार मत करना।" दुनिया की सारी मक्कारी अपने लफ्ज़ों में घोलते हुए चैतन्य ने अल्फ़ी से कहा।

और अल्फ़ी ने उसकी पूरी बात सुनकर उसे अजीब सी नज़रों से देखा था। चैतन्य ने उसकी ऑखों का खालीपन साफ-साफ महसूस किया था, जो उसे बहुत अजीब भी लगा। मोहब्बत में तो ऑखों में ढेर सारे सपने और ढेर सारे रंग उतर आते हैं, फिर उसकी ऑखें इतनी खाली क्यों थीं? दूसरी सच बात ये भी थी कि चैतन्य को उसकी उलझी हुई शख़्सियत से उलझन होने लगी थी।

"क्या हुआ?" चैतन्य ने दोनों के बीच पसरी खामोशी को तोड़ते हुए कहा।

"नाम क्या है?" अल्फ़ी के होठों से निकला।

"चैतन्य!" उसने फुर्ती से कहा।
"च्च्च्च्! तुम्हारा नहीं... तुम्हारी प्रेमिका का!" अल्फ़ी ने हवा में अपना हाथ झटकते हुए कहा।

"उसका नाम! हाँ... वो... अन... अ... अनु!" चैतन्य ने संभलते हुए जवाब दिया।

"अनु! इंट्रेस्टिंग!" अल्फ़ी ने थोड़ी अदा से अनु का नाम पुकारा था।

"कमीना!" उसके अंदाज पर चैतन्य ने अपने दाँत पीसते हुए मन ही मन में कहा, मगर चेहरे पर खीझी हुई मुस्कान बराबर सजाए रखी।

"ठीक है! मैं देखता हूँ। पता चलेगा तुम्हें तुम्हें खबर कर दूँगा। तुम अपना पता मुझे दे दो।" अल्फ़ी ने

बहुत ही संभली हुई आवाज में कहा।

और उसकी यह बात सुनकर चैतन्य सदमे में आया था। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि सामने खड़ा वो रूखा सा इंसान इतनी जल्दी उसकी बोतल में उतर जाएगा और अब परेशानी ये थी कि उसके पास उस बोतल का ढक्कन नहीं था। उसे आखिर अपना कौन सा पता बताता?

"अरे बोलो ना! ये तुम बार-बार को कहाँ जाते हैं?" इस बार अल्फ़ी फिर से उखड़े हुए लहजे में बोला।

"अ.. वो... बात दरअसल ये है कि मेरा कोई पता नहीं है।" चैतन्य ने कहा।

"क्या मतलब?" अल्फ़ी ने कहा।

"वो मैं... सबसे छिपकर रह रहा हूँ ना! मैं नहीं चाहता कि किसी को पता चले कि मैं अनु को खोज रहा हूँ। मैंने फिलहाल अभी तक कोई ठिकाना
नहीं बनाया है। इसलिए तो मैं यहाँ झील के पास था और तुम्हें उस लड़की के साथ देखा।" चैतन्य ने अपने दिमाग के आखिरी हिस्से से जवाब खोजते हुए कहा।

"और ऐसा क्यों?" अल्फ़ी ने हैरानी भरा अगला सवाल दागा।

"वो... मुझे लग रहा है कि... यहाँ कुछ गड़बड़ चल रही है, इसलिए अनु को धोखे से यहाँ लाया गया है। एक बार बस वो मुझे मिल जाए... तो मैं उसे लेकर कहीं बहुत दूर चला जाऊँगा।" चैतन्य के दिमाग और समझ में जो भी आया... वो बोलता चला गया।

"कैसी गड़बड़?" अल्फ़ी ने उसकी ओर आगे बढ़ते हुए कुछ बेचैनी से पूछा।

"मुझे नहीं पता यार! तुम बताओ... कि तुम मेरी मदद करोगे या नहीं। नहीं करोगे तो मैं खुद ही कुछ कर लूंगा। सुबह तुम्हारी मोहब्बत की शिद्दत देखी, तो लगा कि तुम मेरे प्यार की तड़प को समझोगे। पर जाने दो! लोग अपना प्यार ही नहीं समझ पाते तो.. दूसरे का क्या समझेंगे?" इतनी देर तक किसी तरह अपनी खीझ को संभालते हुए आखिरकार चैतन्य फट पड़ा। अपनी पूरी ज़िंदगी में उसने इतनी बातें नहीं बनाई थी... जितनी की आज, इसलिए उस पर झुंझलाहट लाज़िम थी।

"ठीक है! ठीक है! तुम चलो मेरे साथ! मैं समझ सकता हूँ तुम्हारी तड़प को। आओ!" अल्फ़ी ने नज़रें चुराते हुए बहुत ही नर्मी से कहा और फिर एक ओर बढ़ गया। उसके इस जवाब ने चैतन्य को हैरत से ज्यादा सदमे में डाल दिया था।

"आएँ! अजीब आदमी है। सुबह तो गर्दन काटने को तैयार था और अभी खुद गर्दन झुकाकर बात कर रहा है। इसे... शक तो नहीं हो गया मुझ पर?
कहीं.... साथ ले जाकर मुझे टपकाने का तो प्लान नहीं है ना इसका? " एक साथ कई सवालों ने चैतन्य के दिमाग पर हमला किया।

"आ रहे हो?" अल्फ़ी ने पलटे बिना आगे बढ़ते हुए ही कहा।

"अ.. हाँ... आ रहा हूँ।" चैतन्य ने ऊँची आवाज में कहा और उसके पीछे चल दिया। उसने फिलहाल

सामने दिखाई देने वाली राह पर ही चलने का इरादा कर लिया क्योंकि हो तो वही रहा था... जो वो चाहता था। पर... इतनी आसानी से हो जाएगा... इसकी उम्मीद उसे नहीं थी और शायद इसी लिए उसे किसी गड़बड़ की सुगबुगाहट सुनाई दे रही थी।

चैतन्य को बिल्कुल भी पता नहीं चल रहा था कि वे दोनों कहाँ जा रहे थे। अल्फ़ी ने अपने हाथ में पकड़ी लालटेन की रोशनी इतनी धीमी कर रखी थी कि उससे बस अगले कदम को रखने भर की जगह दिखाई दे रही थी। मगर इस अंधेरे में भी वो पूरे आत्मविश्वास से तेज कदमों से आगे बढ़ रहा था। चैतन्य की भूमिका बस उसके पीछे भागने की थी क्योंकि अल्फ़ी की चाल बहुत ही तेज थी। कुछ देर बाद आसपास शरीर को छूती पत्तियों और नर्म टहनियों से उसे अंदाजा हुआ कि वे लोग झुरमुटों के बीच से आगे बढ़ रहे थे। हवा में हल्की सी ठंडक भी महसूस हो रही थी। कुछ देर बाद उन दोनों ने ही उन ठंडी हवाओं और झुरमुटों को अलविदा कह दिया। अब चैतन्य को अपने आसपास थोड़ी उमस और बेचैनी सी महसूस होने लगी थी। मगर फिर भी वो लगातार आगे बढ़ता गया। ना जाने कितने मोड़ों से मुड़ने के बाद वो आखिरकार किसी खुली जगह में पहुँचे। वहाँ भी उतना ही घुप्प अंधेरा छाया हुआ था।

"हम आबादी में ही जा रहे हैं ना!" आखिरकार चैतन्य के अंदर की उलझन बोल पड़ी।

"हाँ!" अल्फ़ी ने कहा।
"पक्का इसने तेरी कब्र खोद रखी है बेटा। पर इतनी आसानी से मुझे काबू नहीं कर सकते तुम मि. अल्फ़ी! उसी कब्र में तुम्हें ही नहीं दफनाया, तो मेरा नाम भी चैतन्य नहीं।" चैतन्य अपना सिर हिलाते-हिलाते अपने मन में ही बातें कर रहा था।

"पहुँच गए!" अल्फ़ी की आवाज ने चैतन्य को चौंकाया था।

उसने सामने देखा तो आलिशान मेंशन चाँद की रोशनी में नहाया हुआ
खासा दिलफरेब लग रहा था। चैतन्य की निगाहें उसकी खूबसूरती में बस खोकर रह गई थी।

"इधर से आओ!" अल्फ़ी ने उसे टोकते हुए कहा और फिर खुद एक ओर मुड़ गया। आलिशान मेंशन पर एक प्रशंसा भरी नज़र डालते हुए चैतन्य भी उस रास्ते पर अल्फ़ी के पीछे चला गया।

चैतन्य और अनामिका की योजना के अनुसार उन दोनों के लिए नए रास्ते खुल चुके थे, जिन पर चल कर उन्हें ये पहेली सुलझानी थी।

एक बार फिर से चैतन्य, अल्फ़ी के पीछे चलता हुआ उस मेंशन के पिछले हिस्से की ओर पहुँचा। उसे इस तरह मेंशन के पिछले हिस्से की ओर आने पर आश्चर्य हुआ कि वे यहाँ क्या कर रहे थे? अब तो चैतन्य को पक्के तौर पर यकीन हो गया कि अल्फ़ी के इरादे कहीं से भी सही नहीं थे। उसने अपनी बढ़ती हुई धड़कनों को काबू में किया कि घबराने से कुछ हासिल नहीं होने वाला था। उसने खुद को

पहले से ही तैयार कर लेना ही मुनासिब समझा, ताकि अचानक होने वाले हमले से निपटा जा सके। उसने अपने हाथ की अंगूठी के पत्थर को अपनी हथेली के अंदर मुट्ठी में बांध लिया, जिसे सबसे छिपाने के लिए अब वो हथेली के अंदरूनी हिस्से में ही रखता था। वो नहीं चाहता था कि उसकी अंगूठी पर किसी की नज़र पड़े, हालांकि वो ये नहीं जानता था कि... उसकी ये कोशिश पहले ही बेकार हो चुकी है।
जैसे-जैसे वो आगे बढ़ते गए... चैतन्य और भी चौकन्ना होता गया। मगर अल्फ़ी तो जैसे अपनी ही धुन में चला जा रहा था और आखिरकार वो एक दरवाजे के सामने आकर रूका। चैतन्य उस दरवाजे को भी चौकन्नी निगाहों से घूरता रहा, जब अल्फ़ी ने आगे बढ़कर उसे खोला। उसे लगा कि शायद अंदर से अल्फ़ी का कोई साथी अचानक से हमला कर दे। लेकिन इस बार भी कुछ नहीं हुआ।

"आओ!" अल्फ़ी ने उसकी ओर मुड़कर कहा और फिर खुद उस दरवाजे से अंदर चला गया। चैतन्य भी तेजी से उसके पीछे लपका था। अंदर पहुँचते ही एक बड़ी सी खुले दालान जैसी जगह थी, जहाँ रोशनी के लिए दो गैस से जलने वाले लैंप लटके हुए थे। चैतन्य चारों ओर निगाहें रखे हुए बिल्कुल चौकन्ना था। उस जगह से पार होते ही अल्फ़ी ने फिर एक दरवाजा खोला और फिर उसके अंदर चला गया।

"पाताल लोक लेकर जा रहा है क्या मुझे दफनाने के लिए।" इतनी देर से चलते-चलते उकताए हुए चैतन्य बुदबुदाया।

"कुछ कहा?" अल्फ़ी ने चलते हुए ही पीछे मुड़कर देखते हुए पूछा।

"कितनी सुंदर रात है ना! मन कर रहा है... बस यूंही चलता रहूँ।" अपनी खीझ को दबाकर चैतन्य ने अंधेरे में भी दाँत चमकाते हुए कहा।

"जरूरत नहीं है। बस पहुँच गए!" अल्फ़ी ने उसकी हालत समझते हुए मुस्कुरा कर कहा।

"शुक्र है!" चैतन्य ने मन ही मन कहा।

और आखिरकार चलते-चलते वो दोनों एक ऐसी जगह पहुँचे, जो चैतन्य
के लिए भी जानी पहचानी सी थी। बीचों-बीच बने कुँए को देखकर चैतन्य समझ गया कि ये वही जगह है, जहाँ वो पहले भी आया था। थोड़ी ही देर में वो दोनों उसी कमरे के अंदर थे, जहाँ सुबह-सुबह उन दोनों ने एक दूसरे की अच्छी तरह से मसाज-मरम्मत की थी। उस कमरे को देखते ही चैतन्य को अपना पोर-पोर दुखता महसूस हुआ। हालांकि इस दर्द की मुख्य वजह दोपहर में हुआ हादसा था और चैतन्य का ध्यान एक बार फिर से जंगल में होने वाली उस अजीब सी घटना की ओर चला गया। उसने अल्फ़ी की ओर देखा जो अपना वो काला चोगा उतार कर एक ओर रख रहा था।

चैतन्य के मन में इतने सारे सवाल उछल रहे थे कि उसे उनको संभालना मुश्किल लग रहा था। पर उसे पता था कि उसका उतावलापन बहुत कुछ खराब कर सकता है। उसे याद आया कि अनामिका ने उससे कहा था कि इस अल्फ़ी की पूरी कुंडली छाननी ही पड़ेगी, तभी वापस जाने के बाद इससे मुकाबला किया जा सकता था और बस इसीलिए उसने अपने अंदर के उबाल को ठंडा करना चाहा, मगर उसी समय अनामिका का ख्याल एक बार फिर से उसके अंदर के गुस्से को हवा दे गया। वो उसे अपनी जलती हुई ऑखों से देख रहा था कि उसके सामने खड़े उस इंसान ने अनामिका के साथ बदसलूकी की थी।

"क्या हुआ? गुस्से में लग रहे हो?" अल्फ़ी ने उसके कसे हुए चेहरे को देखते हुए पूछा।

"कुछ याद आ गया।" चैतन्य ने अपने अंदर के गुस्से को बड़ी ही मुश्किल से संभाला था।

"ऐसा क्या याद आ गया कि तुम्हारा पूरा चेहरा ही बिगड़ गया।" अल्फ़ी ने अपने चेहरे पर हैरानी के भाव लाते हुए कहा।

"अच्छा! एक बात पूछूं? अगर तुम्हारे प्यार के साथ कोई बत्तमीजी करे....
उसे तकलीफ़ पहुँचाए... तो तुम क्या करोगे!" उसी कसे हुए चेहरे के साथ चैतन्य ने पूछा।

"ये कैसा सवाल है?" अल्फ़ी ने चौंककर कहा।

"बहुत जरूरी सवाल है। पता तो चले कि तुम्हारे लिए प्यार क्या है?" चैतन्य ने अल्फ़ी के चेहरे को तौलते हुए कहा।

चैतन्य का सवाल सुनकर अल्फ़ी ने उसके सामने खड़े होकर उसके चेहरे को अपनी पैनी निगाहों की ज़द में लिया और खिंची हुई मांसपेशियों के साथ अपने दाँत पीसते हुए बोला, "तो मैं उसका खून पी जाऊँगा।"

अल्फ़ी के इस जवाब से चैतन्य की ऑखें सिकुड़ गईं और वो अपने सामने खड़े उस शख़्स की ऑखों में उतरी दीवानगी से दहल गया। उसके सारे लफ्ज़ अल्फ़ी की ऑखों की ऑच से धुऑ हो गए।

"ये मेरा कमरा है। तुम आराम से रह सकते हो और सुबह तुम्हारे लिए भी कोई काम निकालता हूँ, ताकि यहाँ रह सको।" अपने भावों को बदलते हुए अल्फ़ी ने निहायत ही औपचारिकता भरे अंदाज में कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने कहा।

"खाना खाया!" अल्फ़ी का लहज़ा जरा सा नरम हुआ था। वो कोने में रखे संदूक से कुछ निकाल रहा था।

"हाँ!" चैतन्य ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"ये मेरे कुछ कपड़े हैं। मुझे लगता है कि तुम्हें भी सही आऍंगे। इन अजीब से कपड़ों में रहोगे, तो लोग तुम्हें दूसरी दुनिया का इंसान समझ लेंगे। अभी
या फिर सुबह... चेंज कर लेना।" अल्फ़ी ने कुछ कपड़े चैतन्य की ओर बढ़ाते हुए कहा। चैतन्य ने दो पल अल्फ़ी के बढ़े हुए हाथ की ओर देखा और फिर थोड़ी उलझन के साथ वो कपड़े पकड़ लिए।

"और हाँ! मेंशन में काम करने वाले सामने के दरवाजे से आ जा नहीं सकते। हमें पिछले दरवाजों का इस्तेमाल करना होता है। यहाँ रहना है तो इस बात का हमेशा ख्याल रखना।" अल्फ़ी ने उसे ताकीद करते हुए कहा।

"ठीक है। समझ गया।" चैतन्य ने कहा।

"तुम आराम करो। मुझे कुछ काम है। आता हूँ।"अल्फ़ी ने कहा और बाहर जाने लगा।

"अल्फ़ी! तुम मेरी मदद क्यों कर रहे हो?" चैतन्य के होंठों से सवाल फिसला।

"क्योंकि तुम्हें मदद की जरूरत है।" अल्फ़ी ने सवाल के मुताबिक जवाब दिया।

"और तुम्हें ऐसा क्यों लगा कि तुम्हें मेरी मदद करनी चाहिए। तुम तो मुझे जानते ही नहीं। तो मुझ पर भरोसा करने की वजह!" चैतन्य ने एक स्वाभाविक सा सवाल पूछा।

"तुम्हारी ऑखों की वजह से।" अल्फ़ी ने उलझा हुआ सा जवाब दिया, जिसने चैतन्य को और भी उलझाया।

"मतलब!"

"खुद ही देख लो!"कहते हुए अल्फ़ी वहाँ से बाहर निकल गया।
चैतन्य उसके अंदाज और उसकी बातों से और भी उलझ गया था। कहाँ वो अपने दिल की भड़ास बाहर निकालने की फिराक में था.. और कहाँ उसके तेवरों से परेशान हो गया था। वो तेजी से आईने के पास गया और बेवकूफों की तरह अपनी ही ऑखों को घूर-घूरकर देखने लगा।

"मेरी ऑखों में इसे क्या दिख गया? इससे संभलकर रहना ही पड़ेगा। पर ये अभी कहाँ गया है? कहीं सच में तो किसी का खून पीने नहीं चला गया! जाकर देखता हूँ।" चैतन्य ने खुद से ही कहा और फिर उन कपड़ों को एक ओर रखकर वो भी बाहर निकल गया। बाहर आकर उसने देखा तो चारों ओर एकदम सन्नाटा पसरा हुआ था।

"ये कहाँ गया?"अपनी कमर पर हाथ रखकर उसने चारों ओर देखते हुए कहा। उसने चारों ओर देखकर कुछ अंदाजा लगाया और फिर एक ओर चलता गया। वो शायद इमारत के उस तरफ का आखिरी हिस्सा था, जहाँ वो खिड़की पर बैठा बाहर शून्य में ताक रहा था। चैतन्य ने पहले चारों ओर देखा और फिर खुद को एक आड़ में छिपाया। कुछ देर इसी तरह ख़ामोशी से गुज़र गए। उकताए हुए चैतन्य को उबासी सी आने लगी। उसे नींद सी आने लगी थी कि कुछ आवाजें उसके कानों से टकराई और वो एक बार फिर से अल्फ़ी की ओर देखने लगा।

"कहाँ हो? क्या इतना कमजोर है मेरा प्यार कि तुम्हें मेरे दिल की कोई सदा सुनाई नहीं देती? कितना तड़प रहा हूँ मैं तुम्हारे लिए और तुम ना जाने कहाँ जाकर छिप गई हो? क्यों मुझसे भाग रही हो? पर याद रखो.... तुम्हें मेरे पास आना ही होगा माया! आना ही होगा!" अल्फ़ी की आवाज काँप रही थी।

"माया! सारी मुसीबत की जड़!" चैतन्य बुदबुदाया।
"तुम्हें पता है आज गलती से एक लड़की को परेशान कर दिया मैंने।" अल्फ़ी की आवाज आई और ये सुनकर चैतन्य चौंका था। अनामिका के जिक्र से उसने अपने कानों को और भी मुस्तैदी से काम में लगाया।

"देखो! मुझे माफ़ कर देना। मैंने जानबूझ कर नहीं किया। पर उसने बिल्कुल तुम्हारी तरह ड्रेस पहनी हुई थी और.... पता नहीं कैसे... पर उससे तुम्हारी खूश्बू आ रही थी। पर जब अपनी बाहों में तुम्हारी जगह

किसी और को देखा खुद से शिकायत हो गई। ऐसा कैसे कर दिया मैंने? आ जाओ वापस माया! वरना मैं पागल हो जाऊँगा। फिर कुछ ग़लत हुआ तो इल्जाम मुझ पर मत रखना।" अल्फ़ी ने थोड़े दुःख और थोड़े तंज से कहा।

अल्फ़ी अपनी ही रौ में कहे जा रहा था और चैतन्य आश्चर्य से उसकी बातें सुन रहा था। उसने एक गहरी साँस ली और वापस कमरे में आ गया।

"माया! माया! माया! क्या हो तुम माया? भूत-भविष्य सब बिगाड़कर रख दिया है तुमने और ये बावला। ऐसे ही सबकी बहू-बेटियो को खींचता रहेगा क्या? बेवकूफ! चलो माया ना सही... मैंने माफ कर दिया। अनामिका सही कहती है। उतावलापन सही नहीं होता। अनामिका! उसे ये बताना पड़ेगा।" अपनी बात सोचते हुए चैतन्य को अनामिका का ख्याल आया और वो एक कोने में पड़े बिस्तर पर जाकर बैठ गया। उसने अपनी ऑखें बंद की और अनामिका को पुकारने लगा। अल्फ़ी नाम का राज सुलझने का नाम ही नहीं ले रहा था। एक तरफ वो माया को अपनी प्रेमिका मानने से इंकार कर रहा था... तो दूसरी तरफ उसी के लिए तड़प भी रहा था। जो भी था... इसके परिणाम तो भयंकर ही होने वाले थे।

****

दूसरी तरफ अनामिका जब चैतन्य से मिलकर वापस कमरे की ओर लौटी, तो आईने की दहलीज पर ही ठिठक गई। कमरा खाली नहीं था। परिधि और माया की एक चमची रोमा वहाँ पर थीं और वो दोनों बातें कर रही थीं। अनामिका ने अपना ध्यान उनकी बातों पर लगाया।

"तुम्हें ये करना होगा परिधि!" रोमा ने परिधि को घुड़कते हुए कहा।

"पर ये नियमों के ख़िलाफ़ है। औषधियों का ऐसा प्रयोग सही नहीं है। अगर किसी को पता चल गया, तो हम सभी को बुरे परिणाम भुगतने होंगे।" परिधि की आवाज में चिंता साफ थी।

"और अगर ये नहीं करोगी, तो भी बुरे परिणाम भुगतने ही पड़ेंगे। सच कहूं तो ये आइडिया तुमने ही दिया था और अब तुम मुकर नहीं सकती।" रोमा ने उसे धमकाते हुए कहा।

"मैंने बस डराने-धमकाने की बात की थी। मैंने ये कभी नहीं चाहा था।" परिधि ने उसकी बात काटते हुए कहा।

"और जो तुम चाहती हो... उसी पर ध्यान लगाकर रखो। वरना पूरी जिंदगी ऐसे ही ऐड़ियाँ रगड़ते बीत जाएगी।" दरवाजे से माया की दूसरी चमची मार्गरिट की आवाज आई।

अनामिका ने भी दरवाजे की ओर देखा, जहाँ वो सूखे अंगूर जैसी लड़की बड़ी अदा से खड़ी थी।
"वैसे भी तुम कुछ भी कहो... इन सबका हिस्सा बन गई हो तुम। चाहो भी तो बाहर नहीं निकल सकती तुम। तुम्हारे लिए तो एक तरफ खाई और एक तरफ कुँआ वाली हालत है। अच्छा होगा कि तुम चुपचाप अपना काम करो।" मार्गरेट ने परिधि का कंधा बेदर्दी से पकड़ते हुए कहा।

"वैसे भी अगर तुम औषधियों के बारे में इतनी कुशल नहीं होती तो शायद ही माया की हिटलिस्ट में

होती। शुक्र मनाओ। उसका काम करोगी, तो वो भी तुम्हारा इतना बड़ा काम करेगी। तुम अपनी मर्जी से इन सबमें शामिल हुई हो।" रोमा ने जैसे उसे सब याद दिलाया था।

"पर जो कल हुआ वो नहीं होना चाहिए था।" परिधि ने काँपते हुए कहा।

"बस! यही कारण है कि तुम डर रही हो। डरोगी नहीं तो फँसोगी भी नहीं। चुपचाप अपना काम करो।" इस बार रोमा ने उसे घुड़का था।

"और उस दूसरे का क्या?" परिधि ने पूछा।

"वो माया संभाल लेगी। तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है।" रोमा ने एक बार फिर से उसे घुड़का था।

"और सुना है कि कोई नई लड़की आई है, वो कहाँ हैं?" मार्गरेट ने चारों ओर देखते हुए पूछा।

"पता नहीं! शायद यहीं कहीं होगी।" परिधि ने रोनी सूरत के साथ चारों ओर देखते हुए कहा।

"ध्यान रहे कि उसको कोई भनक ना लगे। बस तीन रात और सब कुछ.... हम लोगों की मुट्ठी में होगा और हाँ! मुट्ठी तो तुम्हारी भी खाली नहीं रहेगी। यही तो चाहती थी तुम। है ना!" मार्गरेट ने परिधि के चेहरे पर अपनी
उंगलियाँ घुमाते हुए कहा।

परिधि ने बड़ी ही कोफ्त के साथ उन दोनों की ओर देखा और फिर हाँ में सिर हिलाते हुए अपना सिर हिला दिया। अनामिका ने देखा कि वो दोनों उस कमरे से बाहर निकल गए। परिधि कुछ देर तक उसी कमरे में टहलते हुए कुछ बड़बड़ाती रही और फिर उस कमरे से बाहर निकल गई।

अनामिका देर किए बिना उस आईने से बाहर निकली। वो तेजी से उस कमरे से भी बाहर निकल गई। वापस आई तो परिधि कमरे में थी।

"आप कहाँ थीं?" परिधि ने उसे ऊपर से नीचे देखते ही पूछा।

"वो किचन की तरफ गई थी। क्या हुआ? परेशान लग रहें हो।" अनामिका ने उसके चेहरे को ग़ौर से देखते हुए कहा।

"वो... थक गई हूँ और कुछ नहीं। आप भी ज्यादा इधर-उधर मत भटकिए। आजकल समय सही नहीं चल रहा है। समझी आप!" परिधि ने थोड़ी सख़्ती से कहा, जिस पर अनामिका ने अपना सिर हिलाया।

"आप भी थक गई होंगी। आराम कीजिए।" परिधि ने कहा और एक ओर चली गई, जहाँ जमीन पर एक पतला सा गद्दा जैसा बिछा हुआ था। परिधि के याद दिलाने पर अनामिका को थकान हो आई थी। अभी फिलहाल उसे चैतन्य के इशारे का इंतजार करना था। यहाँ कोई बहुत बड़ी गड़बड़ चल रही थी, इसका तो उसे अंदाजा हो गया था। पर जो हुआ था वह कितना बड़ा हुआ था इसका अंदाजा लगाना किसी के लिए भी मुश्किल था। ताकत की चाह में कई जिंदगियाँ बर्बाद होने वाली थीं। या फिर..... हो गई थीं, जो एक राज बनकर रह जाने वाली थीं।
"परिधि! ये माया कौन है?" जमीन में बिछे गद्दे की चादर को ठीक करते हुए अनामिका ने पूछा।

उसका सवाल सुनकर परिधि के काम करते हुए हाथ एक पल को रूके थे। फिर उसने एक ठंडी साँस छोड़ते हुए कहा, "डायन है। शक्तिशाली डायन! आप क्यों पूछ रही हो?"

"वो दरअसल.... ये नाम बहुत सुना है मैंने।" अनामिका ने अपनी कम जानकारी का मुजाहिरा करते हुए कहा।

"हाँ! नाम ही तो है।" परिधि ने थोड़ी चिढ़ से कहा।

"क्या हो गया? उसके जिक्र ने तुम्हें परेशान कर दिया है!" अनामिका ने
उसके चेहरे को पढ़ते हुए पूछा।

"कुछ नहीं! सो जाओ!" परिधि का लहजा उखड़ने लगा था।

"बताओ ना परिधि! तुम ही ने कहा कि चारों और खतरा फैला हुआ है। मुझे भी सब पता होना चाहिए ना!" अनामिका ने अपनी आवाज में करूण रस घोलते हुए कहा, जिस पर परिधि ने उसकी ओर देखा। अनामिका ने अपनी ऑखों की लाचारी के रंग को और गहरा किया था।

"कहा ना! डायन है। दरअसल उसे सर्वशक्तिमंडल के सदस्य के रूप में चुना गया है। आज से चौथी रात सभी के साथ उसके नाम की भी घोषणा होगी और वो हमारी दुनिया की एक विशिष्ट व्यक्तित्व बन जाएगी। बहुत खुश हैं वो। आसमानों में उड़ रही है।" बात खत्म होते-होते उसका लहज़ा कड़वाहट से भर गया।

"तुम्हें वो पसंद नहीं है।" अनामिका ने उसकी भाव-भंगिमाओं को परखते हुए कहा।

"वो कुछ गिने-चुने लोगों के अलावा किसी को नहीं पसंद। यहाँ रहोगी तो सब जान जाओगी।" परिधि ने बात समेटनी चाही और अपनी जगह में जाकर लेट गई।

"अच्छा परिधि! ये सर्वशक्तिमंडल क्या होता है?" अनामिका ने लेटते हुए पास ही लेटी परिधि से पूछा, जिस पर उसने अनामिका को अजीब सी नज़रों से देखा।

"क्या हुआ?" अनामिका ने कहा।

"आप ये क्यों पूछ रही हो?" परिधि ने उसके दूसरी तरफ करवट बदलते
हुए कहा। उसकी ये हरकत अनामिका को कहीं खटकी।

"माँ से नाम सुना था, पर उन्होंने कभी कुछ बताया नहीं।" अनामिका ने कहा।

"समझदार थीं।" परिधि ने थोड़ी खुश्की के साथ कहा।

"अरे! बताओ ना! कल बाजार में भी किसी के मुँह से ये शब्द सुना था।" अनामिका ने चाल चलते हुए अपनी एक भौंह चढ़ाकर कहा और ये सुनते ही परिधि एकदम से उसकी ओर पलटी थी।

"बाजार में! किसके?" परिधि की हैरानी में डूबी आवाज आई।

"मुझे क्या पता? मैं थोड़ी ना जानती हूँ सबको। होगा कोई! बस वो शब्द ज़हन में रह गया। इसलिए पूछ रही हूँ। बताओ ना!" अनामिका ने कहा।

"क्या जानना चाहती हो? क्या है सर्वशक्तिमंडल? लालच! बस एक लालच है वो! उसके बारे में इससे ज्यादा और कुछ जानने की जरूरत नहीं है। सो जाओ! रोज बहुत काम होते हैं हमें करने के लिए और हम जैसों के लिए वो ज्यादा जरूरी हैं... बजाय सर्वशक्तिमंडल के।" परिधि ने उकताई हुई आवाज में बात खत्म की और सिर तक चादर खींच ली।

अनामिका कुछ देर तो उसे एकटक देखती रही। परिधि कुछ तो ऐसा जानती थी, जो ग़लत था, मगर उस विषय में उससे आसानी से उगलवाना आसान नहीं होने वाला था। फिर उसने खुद भी अपनी ऑखें बंद कर लीं और मौजूदा हालातों के बारे में सोचने लगी।

"माया! सर्वशक्तिमंडल की सदस्य! फिर ऐसा क्या हुआ कि उसे जिंदा जला दिया गया? ये परिधि तो कुछ बता ही नहीं रही। कैसे पता करूं?
अब इसे मनाने में वक्त बर्बाद नहीं किया जा सकता। मुझे किसी और से जानकारी निकालनी ही होगी।" अनामिका ने सोचते हुए अपनी ऑखें खोली और एक नज़र पास लेटी परिधि पर डालकर एक बार फिर से अपनी ऑखें बंद कर लीं। जल्द ही उस पर नींद की ख़ुमारी चढ़ने लगी। वो सपनों की गहराईयों में उतरने ही वाली थी कि अचानक उसे ऐसा लगा कि किसी ने उसका नाम पुकारा। उसने धीरे से अपनी ऑखें खोली और फिर परिधि की ओर देखा। वो गहरी नींद में जा चुकी थी। उसने अपना वहम समझकर फिर से अपनी ऑखें बंद कर लीं। एक-दो पल ही गुजरे होंगे कि उसे फिर अपना नाम सुनाई दिया और उसने इस बार उस आवाज को भी पहचान लिया था।

"उंहूं! क्या है?" नींद की ख़ुमारी में अनामिका ने उसे लगभग झिड़कते हुए मन में ही कहा।

"तुम सो रही हो!" चैतन्य की हैरान सी आवाज़ आई।

"रात के इस समय में सब सोते हैं।" अनामिका ने थोड़ा उकताकर कहा।

"और सारे लोग अपने समय और दुनिया में आराम से सोते हैं। यहाँ जिंदगी भर की नींद उड़ गई है और तुम्हें नींद आ रही है।" चैतन्य ने तंज कसते हुए कहा।

"कहो! क्या कहना है?" अनामिका ने अनमने ढंग से कहा।

अनामिका के पूछने पर चैतन्य ने अल्फ़ी के मुँह से निकली सारी बातें उसे बता दीं और वो सब सुनकर अनामिका की नींद भी पूरी तरह से उड़ गई थी।

"क्या? जो ड्रेस मैंने पहनी थी, वो माया की थी! पर... ऐसा कैसे हो सकता
है?" अनामिका ने अपने पास लेटी परिधि की ओर देखते हुए कहा।

"क्यों? क्यों नहीं हो सकती?" चैतन्य ने पूछा।

"तुमने माया को देखा है ना!" अनामिका ने कहा।

"हाँ! तीन बार!" चैतन्य ने याद करते हुए कहा और ऐसा करते हुए वो सिहर उठा।

"उसे देखने के बाद उसके बारे में जितना जाना और समझा है, तुम्हें क्या लगता है कि वो उस तरह के साधारण कपड़े पहनना पसंद करती होगी! मैंने जानबूझ उस ढेर से मामूली से दिखने वाले कपड़े निकाले थे क्योंकि मैं बिल्कुल नहीं चाहती थी कि मैं गलती से भी उस माया के कपड़े पहन लूं क्योंकि फिर मैं तुरंत पकड़ी जाती। मैंने जो कपड़े पहने थे वो बहुत ही पुराने दिख रहे थे और उसकी क्वालिटी कम से कम उस माया के एटीट्यूड को तो बिल्कुल मैच नहीं करती थी। मैं मान ही नहीं सकती कि वो कपड़े माया के थे।" अनामिका ने चैतन्य की बात काटते हुए कहा।

"पर वो अल्फ़ी तो यही कह रहा था।" चैतन्य बोला।

"चैतन्य! यहाँ जो दिख रहा है... वो हो नहीं रहा। कुछ और ही खेल चल रहा है। तुम्हें याद है माया को सजा के तौर पर जिंदा जला दिया गया था। पर यहाँ तो उसे सर्वशक्तिमंडल के लिए चुना गया है। उसे कैसे सजा हो सकती है?" अनामिका बोली।

"ये बहुत शक्तिशाली है क्या?" चैतन्य ने पूछा।

"हाँ! लग तो यही रहा है। परिधि भी बहुत कुछ जानती है, पर उससे कुछ उगलवाना मुश्किल ही लग रहा है। बस इतना ही समझ में आया है कि
माया बहुत उत्साहित हैं अपने चयन पर।" अनामिका ने मन में कहते हुए सोई हुई परिधि की ओर देखा।

"अच्छा! तो फिर कोई और भी तो होगा, जो बता सके। देखो! परिधि या फिर अल्फ़ी के चक्कर में नहीं रह सकते हम लोग। थोड़ा आगे बढ़ो। किसी और से पता करो। ये सब लोग बहुत ही अजीब हैं।" चैतन्य ने कहा।

"क्यों? क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

अनामिका के पूछने पर चैतन्य ने उसे शाम के समय जंगल में देखी हुई घटना के बारे में बता दिया, जिसे सुनकर अनामिका को एक तेज झटका लगा था।

"तो फिर! तुम्हें क्या लगता है? अल्फ़ी तुम्हें कुछ बता सकता है।" अनामिका ने पूछा।

"ये इंसान मेरी समझ में बिल्कुल भी नहीं आ रहा है। एक बार के लिए उस पर यकीन आता है... अगले ही पल वो यकीन उड़न छू हो जाता है। मुझे भी आगे का सोचना पड़ेगा। देखो! ये क्या काम दिलवाता है मुझे।" चैतन्य ने कहा।

"हम्म! बहुत बुरा फँसे हैं यार! बस गोल-गोल घूमकर एक ही जगह पर आ जा रहे हैं। ऐसे काम नहीं चलने वाला। मुझे घर जाना है।" अनामिका ने झुंझलाई हुई आवाज में कहा।

"जाऍंगे यार! थोड़ा सब्र कर लो! चलो! अभी सो जाओ! गुड नाईट!" चैतन्य ने कहा।

"गुड नाईट!" अनामिका ने भी पलटकर कहा और फिर संपर्क तोड़ दिया।
अनामिका ने गुड नाईट तो कह दिया, मगर नींद उसकी ऑखों से रूठ चुकी थी। थोड़ी देर तक करवट बदलने के बाद वो उकताकर उठी और फिर परिधि पर एक नज़र डालते हुए बाहर निकल गई। इतने दिनों से उसके साथ रहकर वो जान चुकी थी कि परिधि बहुत ही गहरी नींद सोती थी।

बाहर निकलकर उसने चारों ओर देखा। आसपास तो फिलहाल सन्नाटा छाया हुआ था। वो चारों ओर देखते हुए एक तरफ आगे बढ़ी। इमारत का ये हिस्सा थोड़ा बदहाल सा था। या फिर... इस तरफ ज्यादा ध्यान देने की जरूरत महसूस नहीं की जाती होगी। ये हिस्सा शायद परिधि और उसकी जैसी लड़कियों के रहने के लिए था। आज रात का खाना बनाते समय उसने दो लड़कियों से थोड़ा खुलने की कोशिश की थी, जिनका काम भी काम में ही होता था।

अभी वो थोड़ा और आगे बढ़ी तो उसे इमारत के पिछले हिस्से में कुछ हलचलें महसूस हुईं। वो सावधानी से आगे जाकर एक आड़ में खड़ी होकर आवाज की दिशा में देखने लगी। दिखाई तो कुछ नहीं दे रहा था पर कोई वहाँ था जरूर और फिर थोड़े इंतजार के बाद उसे दिखाई दीं वही दोनों लड़कियाँ, जिन्हें उसने परिधि के साथ कमरे में देखा था। वो दोनों थोड़ी झल्लाई हुई सी अपने कपड़ों को झटकती हुई इमारत की ओर आ रही थीं। वो धीमी आवाज में बुदबुदाते हुए कुछ बातें भी कर रही थीं, जो अनामिका को सुनाई नहीं दीं। धीरे-धीरे जब वो उसके पास से गुजरीं तो अनामिका को उनकी बातों का कुछ हिस्सा सुनाई दिया।

"उफ्फ! कहाँ फँसा दिया है माया ने? इसे संभालना बहुत ही मुश्किल काम है।" मार्गरेट ने झुंझलाई हुई आवाज में कहा।

"सच कह रही हो। बस किसी तरह से ये तीन रातें गुजर जाएँ। आखिर
माया की इतनी मदद करने का इनाम तो जरूर मिलेगा हमें। माया ने कितना इंतजार किया है इस दिन का। तुम तो जानती हो कि उसकी जिंदगी का मकसद यही था। पर... कल रात जो हुआ... वो नहीं होना चाहिए था। कम से कम अभी तो नहीं।" रोमा ने भी मक्कारी भरी आवाज में कहा।

"हाँ! कम से कम हमारा काम तो नहीं बढ़ता। कमबख़्त तीन दिन रूक जाती तो क्या होता?" मार्गरेट की अफसोस भरी आवाज आई।

"चलो! जो होता है... अच्छा ही होता है। यही समझकर चलो। उसका रहना भी तो हमारे लिए अच्छा नहीं था। अच्छा हुआ चली गई।" रोमा ने तसल्ली भरी आवाज में कहा।

"पर ये मुसीबत भी तो छोड़ गई सिर में।" मार्गरेट की आवाज अभी भी सुलगी हुई थी।

"अरे! माया सब संभाल लेगी। हमें इससे आगे सोचने की जरूरत ही नहीं है। सर्वशक्तिमंडल! समझती है ना इसका मतलब!" रोमा की दूर जाती आवाज में यही आखिरी बात अनामिका ने थोड़ी साफ सुनी। उसके बाद या तो आवाज और धीमी हो गई या फिर उन्होंने बात ही बंद कर दी।

उनकी बातों ने अनामिका को और भी उलझा दिया था। उसे ये तो पता था कि यहाँ कोई गड़बड़ चल रही थी, पर अभी भी उसके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा। उसने थोड़ी देर रूककर इंतजार किया और फिर किसी और के वहाँ ना होने की तसल्ली होने पर वो ऐहतियात से बाहर की ओर निकली और उस दिशा

में बढ़ गई, जिधर से वो दोनों आई थीं।
आसमान में चाँद चमक रहा था। सामने औषधियों के पौधों से भरा ऑगन था, जिसके दूसरी ओर उसे जाना था। आगे बढ़ने से पहले अनामिका ने उस तरफ देखा, जिस तरफ से परिधि उसे यहाँ लेकर आई थी और वो दोनों ठीक उसके सामने की दिशा से आई थीं। मतलब कि वो दोनों बाहर नहीं गई थीं, बल्कि उस इमारत के ही किसी हिस्से से आ रही थीं। उसकी रोशनी में पौधों को अपने रास्ते से हटाते हुए वो आगे बढ़ती गई। थोड़ी दूर जाने पर झुरमुट घने और अवांछित हो गए। मगर वो आगे बढ़ती ही गई और आखिरकार उन झुरमुटों की आखिरी हद में जब उसने उन्हें हटाया तो सामने बस एक दीवार थी। झुरमुटों के बीच से बाहर निकल कर उसने उस दीवार को देखा और फिर तेजी से इधर उधर देखने लगी। मगर वहाँ उस ऊँची दीवार के अलावा और कुछ भी नहीं था। वो अपने दोनों ओर उस दीवार के साथ-साथ आगे बढ़ी पर कुछ भी नहीं था।

"यहाँ क्या करने आए थे वो लोग? यहाँ तो कुछ भी नहीं है।" अनामिका ने उस दीवार को छूते हुए कहा और फिर वापस लौटने लगी। उन झुरमुटों के अंदर जाने से पहले उसने एक और नज़र उस दीवार पर डाली। उसका दिल नहीं मान रहा था कि यहाँ कुछ नहीं है। मगर कुछ था ही नहीं तो रूकने का कोई मतलब ही नहीं था। उसने अपने कदम आगे बढ़ाए ही थे कि वो फिर रूकी।

"कहीं कोई खुफिया दरवाजा तो नहीं।"

और ये ख्याल आते ही वो एक बार फिर पलटी और उस दीवार के पास जाकर उसे अपनी उंगलियों से खटखटाने लगी। कुछ दूर तक तो वो सच में बस एक दीवार ही थी, जिसे खटखटाने की कोशिश में उसकी ऊंगलियाँ दर्द देने लगी थीं, पर वो भी अपने धुन की पक्की थी। वो उसी तरह आगे बढ़ती गई और आखिरकार उसकी उंगलियों की खटखटाहट वो आवाज ले आई, जिसे वो सुनना चाहती थी। वो किसी दीवार को नहीं बल्कि किसी दरवाजे को खटखटाने से पैदा हुई आवाज थी। वो थोड़ा पीछे हटी और दीवार के उस हिस्से पर कुछ देर तक नजर गड़ाए रखने के बाद उसे दिखाई दिया एक छोटा सा दरवाजा, जिसे आम नज़रों से तो बिल्कुल भी नहीं देखा जा सकता था। वह तो जैसे उस दीवार का ही एक हिस्सा था।

अनामिका ने उस दरवाजे को अपनी नज़रों के सवालों से परखा, पर जवाब कुछ भी नहीं मिला। वो आगे बढ़ी और फिर उस दरवाजे पर
अपने हाथ रखकर उसे पहले हल्का और फिर ताकत लगाकर धक्का दिया। दरवाजा टस से मस नहीं हुआ। उसने स्लाइड डोर की तरह भी उसे खोलने की कोशिश की, पर कोई फायदा नहीं हुआ। उसने अपने फेफड़ों में हवा भरकर उसे एक झटके में बाहर निकाल दिया। वो आगे बढ़ी और फिर उस दरवाजे पर कान टिकाकर कुछ सुनने की कोशिश करने लगी। उसकी छठी इंद्री उसे कह रही थी कि इस दरवाजे के पीछे बहुत कुछ है, पर क्या? इसका जवाब उसके पास तो फिलहाल नहीं था। उसे याद आया कि परिधि ने उसे बताया था कि ऐसे दरवाजे और रास्तों का प्रयोग करने के लिए उसके पास अनुमति की जरूरत थी जो फिलहाल उसके पास थी नहीं। मन मसोसकर वह वापस लौट गई। जाते-जाते उसने पलटकर एक नज़र उस दरवाजे पर डाली।

"मैं वापस आऊँगी। जल्द!"

और फिर वो तेजी से वहाँ से निकल गई। बिना किसी की नजर और खबर में आए हुए वह आखिरकार अपने कमरे में पहुँच गई। परिधि अभी भी गहरी नींद में थी। वह भी अपनी जगह पर जाकर सो गई। कुछ देर अपनी जगह लेटे हुए वो इस पूरे वाकिए के बारे में सोचती रही।

"ये माया कुछ तो गलत कर रही है। पर कैसे पता लगाऊँ कि वो क्या है? उस दरवाजे के पीछे आखिर क्या है? कौन चली गई? किसके जाने से माया को फायदा हुआ है? कल रात! यानि कि जब हम दोनों यहाँ आए थे। क्या परिधि इस दरवाजे के बारे में जानती है? परिधि तो इतनी अच्छी लड़की है तो वो क्यों माया का साथ दे रही है? क्या बस कुछ ताकत के लालच में? पता लगाना ही होगा।" एक गहरी साँस लेकर अनामिका ने अपने मन में उठ रहे सारे सवालों को समेटा और फिर सुबह अगला कदम उठाने का इरादा करके अपनी ऑखें बंद कर लीं।
सुबह परिधि के जगाने पर उसकी नींद खुली। अपनी उनींदी ऑखों से उसने परिधि की ओर देखा। रात देर से सोने की वजह से उसकी ऑखें तो खुल गई थीं, पर ज़हन अभी भी जागा नहीं था।

"दीदी उठिए! देर हो रही है।" परिधि ने उसे झिंझोड़ते हुए कहा।

"काहे की देर?" अपनी ऑखों को मसलते हुए अनामिका अनमने ढंग से कहा।

"आज रात से उत्सव शुरू हो रहा है। उसी की तैयारियाँ करनी हैं। चलिए उठिए!" परिधि ने उसे जानकारी देते हुए कहा।

"कैसा उत्सव?" अपनी सवालिया नज़रें उस गड़ाकर अनामिका ने पूछा।

"बताया था ना! सर्व शक्ति मंडल के सदस्यों की घोषणा! तो बस आज से वो उत्सव शुरू होने वाला है। आज विशेष भोजन बनेगा। आपको आता है ना ऐसे ख़ास अवसरों में बनाए जाने वाले भोजन बनाना।" परिधि ने उसे तफ्तीशी नजरों से देखते हुए पूछा।

"हाँ! आता है ना!" जवाब देते हुए अनामिका ने एक राहत की साँस ली। अपने खाना बनाने के शौक की वजह से उसने अपनी माँ, जो डायन थी और वरुण की माँ, जो पिशाच थी.. से दोनों समुदायों के विशिष्ट और पुरातन व्यंजन बनाने सीख लिए थे और वो... आज उसके काम आने वाले थे।

दैनिक कार्यों से निपट कर वो जल्द ही किचन में पहुँच गई जहाँ अफरा-तफरी का माहौल बना हुआ था। किचन की हेड ऐना वहाँ मौजूद लड़कियों को चिल्ला चिल्ला कर कुछ समझा रही थी। अनामिका के वहाँ पहुँचने पर सभी का ध्यान उसकी ओर चला गया।

"आओ! जल्दी आओ!" किचन हेड ऐना ने उसे हाथों के इशारे से अपने पास बुलाया। अनामिका तेजी से उनकी और चली गई।

"तो सब अच्छी तरह से सुन लो। आज से तीन दिनों तक पूरा खाना मेरी निगरानी में ही बनेगा। कोई गलती नहीं होनी चाहिए। याद रखना डायन समुदाय की इज्जत का सवाल है। और... आज से तीन

दिनों तक दिव्याक्षि के लिए खाना भी हमें ही ले जाकर पूरे एहतियात से देना है। कौन पहुँचाएगा?" अपना सवाल खत्म करते हुए उन्होंने सारी लड़कियों की ओर देखा।
अनामिका ने देखा कि कोई भी लड़की आगे बढ़कर जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं थी। उसे ये बहुत ही अजीब लगा। पर अचानक ही उसका ध्यान दिव्याक्षि शब्द पर गया। वही दिव्याक्षि... जिसने सर्व शक्ति मंडल के लिए माया के नाम को चुना था। अनामिका को उसकी और भी एक रास्ता जाता हुआ दिखाई दिया।

"मैं! क्या मैं ले जा सकती हूँ?" अनामिका ने तेज आवाज में कहा, जिस पर सभी ने उसे अजीब सी नजरों से देखा था।

"तुम लेकर जाओगी! तुम्हें पता है कि ये बहुत जिम्मेदारी वाला काम है।" ऐना ने अनामिका से तस्दीक करते हुए पूछा।

"जी! मैं ये काम पूरी जिम्मेदारी से करूँगी। आप चिंता ना करें।" अनामिका ने उन्हें विश्वास दिलाते हुए कहा।

ऐना ने कुछ देर अनामिका को गौर से देखा और फिर आखिरकार हाँ में सिर हिला दिया क्योंकि कोई और लड़की इस काम को करने के लिए आगे नहीं आई थी।

"ठीक है! कांता और मालिनी तुम्हारे साथ दरवाजे तक जाएँगी। आगे तुम्हें जाना पड़ेगा। समझ में आया।" एना ने उसे समझाते हुए कहा, जिस पर अनामिका ने मासूमियत से अपना सिर हिला दिया।

"चलो! काम पर लगो सब! सर्वशक्ति उत्सव का आरंभ हो।" ऐना ने जैसे ऐलान किया और फिर एक ओर बैठकर बारी-बारी से सभी को उनका काम देने लगी। दोपहर के भोजन में एक खास डिश बनाने की जिम्मेदारी अनामिका को मिली, जिसमें उसे एक लड़की मदद करने वाली थी।
"ये सर्वशक्तिमंडल क्या है?" अनामिका ने घड़े से पानी निकालती उस लड़की से पूछा।

"तुम्हें नहीं पता!" उस लड़की ने आश्चर्य जताया।

"अ... नहीं। वो दरअसल... मेरी माँ मुझे इन सबसे दूर रखती थी। इसलिए मुझे ज्यादा चीजों की जानकारी नहीं है। उन्होंने मुझे बस खाना बनाना सिखाया और कुछ भी नहीं।" अनामिका ने अपनी मजबूरी जाहिर की।

"ओह! सर्वशक्तिमंडल हमारी दुनिया की सबसे ताकतवर सभा है। इसमें हमारी दुनिया के सभी समुदायों में से कुछ सबसे ताकतवर सदस्यों को चुना जाता है। हमारी दुनिया में इसमें चुना जाना किसी के भी जीवन का सबसे बड़ा सपना होता है क्योंकि इनकी ताकते और अधिकार असीमित होते हैं।" उस लड़की ने कहा।

"और इसके लिए दिव्याक्षि ने माया को चुना है। है ना!" अनामिका ने कहा।

"माया को ही नहीं.... माया को भी चुना है। तीन लोग चुने जाते हैं।" उस लड़की ने बताया।

"पर बाकी दो का नाम तो मैंने नहीं सुना। ज्यादातर माया के नाम के ही चर्चे सुने हैं।" अनामिका ने थोड़ी

हैरानी से कहा।

"क्योंकि.... माया सर्वशक्तिमंडल के इतिहास की सबसे छोटी उम्र की डायन है। सच बताऊँ तो... अभी भी कईयों को इस बात पर यकीन नहीं है। मतलब कि... माया और... शक्ति! ख़ैर छोड़ो! सबकी अपनी किस्मत होती है। उसकी शक्ति बनने की थी हमारी भट्टी बनने की है।" उस लड़की ने खिसयाती हुई आवाज में कहा।
"ओह!" एक और झटका उसके दिमाग को लगा था। फिलहाल आगे जाने के लिए पहले खाना बना था जरूरी था। इसलिए वो अपने इस पसंदीदा काम में जुट गई। खाना बनाते हुए चैतन्य की छवि उसकी आँखों में उभरी और एक मुस्कुराहट उसके होंठों पर उतर गई।

अनामिका से संपर्क तोड़ने के बाद मुस्कुराते हुए चैतन्य ने जब अपनी आँखें खोली तो सामने ही अल्फ़ी को अपने सीने पर हाथ बांधे अपने आप को घूरते पाया। चैतन्य को एक झटका सा लगा और पहला ख्याल यही आया कि कहीं उसके मुँह से कुछ फिसल तो नहीं गया। उसने झेंप भरे चेहरे के साथ अपने दाँत चमकाए, जिस पर अल्फ़ी ने अजीब से चेहरे के साथ अपना सिर हिलाया।

"अभी तक सोए नहीं। किसके ख्यालों में इतना मुस्कुरा रहे हो?" अल्फ़ी ने कहा और अपनी जगह ठीक करता हुआ उसी के बगल में लेट गया।

"और किसके? अना... अनु के!" चैतन्य ने अपनी फिसलती हुई ज़बान फिर से संभाली।

"हूँ! बहुत प्यार करते हो उससे?" अल्फ़ी ने उसकी ओर करवट लेते हुए पूछा।

"बेशक! बड़ी मन्नतों से पाया है उसे। ऐसे ही थोड़ी ना खो दूंगा उसे। बस वो मुझे मिल जाए और फिर इन सारे झंझटों से निकलकर कहीं दूर चले जाना है। एक-दूसरे के साथ शांति से भरी हुई जिंदगी। बस... इससे ज्यादा और कुछ नहीं चाहिए।" अनामिका का मुस्कुराता हुआ चेहरा अपने ख्यालों में भरकर चैतन्य ने मुस्कुराते हुए कहा।
उसकी बात सुनकर अल्फ़ी ने अपनी कोहनी बिस्तर पर टिकाई और फिर हथेली पर अपना सिर रख कर उसे दिलचस्पी से देखते हुए बोला, "बस! यही तो मैं भी चाहता हूँ!"

अल्फ़ी की बात सुनकर चैतन्य ने सवालों के साथ अपनी नजरें उस पर डाली और पूछा, "और वो! तुम्हारी माया! वो भी यही चाहती है?"

"और नहीं तो क्या? वो मुझसे प्यार करती है।" अल्फ़ी ने दर्द भरी मुस्कराहट के साथ कहा।

"पर एक मिनट! तुमने तो कहा था कि वो तुम्हारी प्रेमिका नहीं है।" हैरान से चैतन्य ने अल्फ़ी को उसकी बात याद दिलाते हुए कहा।

"हाँ तो... नहीं है वो मेरी प्रेमिका!" अल्फ़ी ने एक बार फिर से अपने पुराने शब्दों को दोहराया और अपने दोनों हाथों को सिर के नीचे बांधकर लेट गया।

"यार तुम... पागल कर दोगे मुझे। जब तुम दोनों के बीच प्यार है तो वो तुम्हारी प्रेमिका क्यों नहीं है? समझाओ मुझे!" चैतन्य ने थोड़ी चिढ़ से उसकी ओर करवट लेते हुए कहा।

"क्योंकि... वो मेरी वाइफ है।" अल्फ़ी ने चैतन्य के सिर पर बम फोड़ते हुए कहा।

"क्या है?" चैतन्य ने अपनी ऑखें फैला कर पूछा। उसे लगा कि उसने कुछ ग़लत सुन लिया था।

"हाँ! प्रेमिका नहीं है वो मेरी... मेरी वाइफ है... मेरी पत्नी!" अल्फी ने अपने एक एक शब्द पर वजन डालकर कहा।
और ये सुनकर चैतन्य अपनी जगह पर धम्म से गिरा था। वो अपनी ऑखों और उंगलियों को नचाते हुए ना जाने कौन सा गणित लगा रहा था, जिसमें फेल होने के बाद उसने एक बार फिर तिरछी नजरों से अल्फ़ी की ओर देखा।

"तुम दोनों की शादी हो चुकी है! पर ऐसा कुछ सुना नहीं।" चैतन्य ने हैरत भरी आवाज में कहा।

"यहाँ कोई नहीं जानता। एक साल हो गया। हम यहाँ नहीं थे ना! हम दोनों ही यहाँ नहीं आना चाहते थे। पर सात महीने पहले हमें उसके सर्वशक्तिमंडल में चुने जाने की खबर मिली। वो मुझसे कहकर आई थी कि वो सबको समझाकर... ये सब छोड़कर वापस आ जाएगी। तीन महीने तक उसका इंतजार करता रहा मैं और जब बर्दाश्त नहीं हुआ... यहाँ आ गया। अब वो मिल ही नहीं रही मुझसे। पता नहीं क्या हो गया?" अल्फ़ी का हर लफ्ज़ दर्द में डूबा हुआ था।

"क्योंकि अब उसे तुम नहीं... उसे ताकत चाहिए।" चैतन्य ने अनामिका की बातें याद करते हुए मन ही मन कहा।

"पर जब तुम उससे सुबह मिले थे, तो उसे अपने साथ क्यों नहीं ले गए?" चैतन्य ने पूछा।

"वो माया थोड़ी ना थी! उसका संदेश लाई थी। यही तो दिक्कत है वो ना तो मिल रही है और ना ही मेरे ख़तों का जवाब दे रही है।" अल्फ़ी ने एक गहरी साँस भरते हुए कहा।

"ऐसा भी तो हो सकता है कि... उसका... मन बदल गया हो। मतलब कि.... पैसा, ताकत और रूतबा किसे अच्छा नहीं लगता।" चैतन्य ने बहुत
ही संभलकर ये बात कही थी।

"ऐसा हो ही नहीं सकता और अगर है भी... तो वो मुझे बताए ना! उसकी खुशी से बढ़कर और कुछ नहीं है मेरे लिए।" अल्फ़ी ने अपने दिल की बात कही।

"तो फिर... अगर तुम लोग शादीशुदा हो तो... छिप क्यों रहे हो? जाकर सामने से मिलो और बात करो।" चैतन्य का सवाल उलझन भरा था।

"समस्या यही तो है कि हम नहीं मिल सकते।" अल्फ़ी के जवाब ने उसे और भी उलझाया था।

"क्यो" चैतन्य का सवाल आया।

"क्योंकि वो एक डायन है और मैं पिशाच कुल का। यहाँ सबको पता चला तो बवाल हो जाएगा। वो भी बहुत भारी! तुम्हें पता नहीं है कि इन दोनों समुदायों के बीच कितनी समस्याएँ चल रही हैं। साथ चलने की मजबूरी नहीं होती तो दोनों ही एक दूसरे को खत्म कर चुके होते। कई बार कोशिश की भी जाती है एक-दूसरे को हर तरह का नुक़सान पहुँचाने की। इसलिए तो हम यहाँ से दूर चले जाना चाहते हैं।" अल्फ़ी ने असली समस्या बताते हुए कहा।

अब चैतन्य का सिर पूरी तरह से घूमने लगा था। उसे लगा कि ऐसे ही वो सब सुनता रहा तो उसे अपने होश खोने में देर नहीं लगेगी। डायन और पिशाच की प्रेम कहानी! जिंदगी में इससे ज्यादा थ्रिल और क्या ही हो सकता था।

"हे भगवान! तो फिर क्या करोगे तुम?" चैतन्य ने पूछा।
"पूरे चार महीने सबसे छिपकर इंतजार किया है मैंने। पर अब समय नहीं बचा। कल से उत्सव शुरू हो जाएगा और आज से चौथी रात को सर्वशक्तिमंडल के सभी सदस्यों की घोषणा हो जाएगी। अगर उसे भी चुन लिया गया, तो मैं उसे हमेशा के लिए खो दूंगा।" कहते हुए अल्फ़ी की आवाज में लर्जिश को चैतन्य ने साफ-साफ महसूस किया था।

"और अगर वो सचमुच वापस नहीं आई... तो क्या करोगे?" चैतन्य ने माया को याद करते हुए पूछा।

"वो सामने तो आए पहले और मुझसे ये बोल दे। मैं चला जाऊँगा।" अल्फ़ी ने बड़ी ही आसानी से कह दिया।

"बस ऐसे ही! चल दोगे!" चैतन्य को उसकी हर बात हैरान कर रही थी।

"हाँ! बस उसके रूकने की वजह मेरे प्यार से ज्यादा अहम होनी चाहिए... ना कि वो... जो तुमने कहा है। पैसा... ताकत.. रूतबा!" कहते हुए अल्फ़ी के चेहरे की कसावट चैतन्य ने साफतौर पर देखी और उसे अपने सामने लेटे उस शख्स पर रहम आने लगा था।

"उफ्फ माया! क्या कर रही हो तुम? ये सचमुच बहुत ही ग़लत है।" अल्फ़ी की ओर देखते हुए चैतन्य का मन बहुत ही दुःख से चीखा था।

दूसरी ओर अल्फ़ी अपनी और माया के अनिश्चित से भविष्य की चिंता में डूबा हुआ था। उसका इंतजार अब अपनी आखिरी हद में खड़ा था और शायद अपने सवालों के जवाब के लिए वो अपनी आखिरी कोशिशों के बारे में सोचने लगा था। खटका तो उसके मन में भी था एक, पर बस एक खटका था, जिसे चैतन्य के शब्दों ने फाँस का रूप दे दिया था और वो उसे चुभा भी था। तो क्या... माया का प्यार झूठा था? क्या उसे फिर से एक धोखे से गुजरने की तकलीफ़ सहनी थी?
"एक बात बताओ! तुम मेरी मदद क्यों कर रहे हो?" आखिरकार चैतन्य के होंठों पर वो सवाल आ ही गया, जो उसके दिमाग को मथे जा रहा था।

चैतन्य का सवाल सुनकर अल्फ़ी ने एक दर्द भरी मुस्कराहट के साथ उसकी ओर देखा और बोला, "क्योंकि मुझे तुम्हारी ऑखों में वही प्यार और दर्द नज़र आया, जो मुझे अपनी ऑखों में दिखता है।"

"ओह!" चैतन्य ने अपनी ऑखों पर उंगलियां रखते हुए कहा।

"ये बहुत तकलीफ़ देता है ना.... कि प्यार सामने हो... पर तुम उस तक पहुँच ना सको।" अल्फ़ी की भीगी हुई आवाज ने चैतन्य को भी तड़पाया था। उसे एकदम से वो दिन याद आए, जब प्यार होते हुए भी अनामिका उससे छिटकती रहती थी। वो समय एक दर्द बनकर चैतन्य की ऑखों में भी उतरा और दर्द के उस आईने में उसे अल्फ़ी का दर्द भी अपने साथ खड़ा दिखाई दिया।

"हाँ! सच कह रहे हो!" एक गहरी साँस के साथ चैतन्य ने अपनी बात कही।

"वैसे तुम यहाँ काम क्या करते हो?" चैतन्य ने बातों का रूख बदलते हुए पूछा कि माहौल अब बहुत ही भारी हो चुका था।

"यहाँ की सुरक्षा व्यवस्था देखता हूँ मैं। इसलिए तो तुम्हें यहाँ ले आया। अभी उत्सव के समय और भी सुरक्षाकर्मियों की जरूरत पड़ेगी। तुम्हारी कद-काठी तो बहुत ही अच्छी है और ताकत तो तुमने सुबह ही दिखा दी थी। तुम्हें आसानी से मेरी सिफारिश पर काम मिल जाएगा। जब तक तुम्हारा प्यार तुम्हें नहीं मिलता... तुम्हें गुजारा करने के लिए कुछ तो करना ही होगा। है ना!" अल्फ़ी ने अपना सहयोग दिखाते हुए कहा।
"इतने कम समय में तुम सिफारिश भी करने लगे यहाँ पर!" चैतन्य ने आश्चर्य जताया।

"मेरी माँ यहाँ काम किया करती थी।" अल्फ़ी ने जवाब दिया।

"अच्छा! वैसे एक सवाल और है!" चैतन्य ने कहा।

"क्या?" अल्फ़ी ने पूछते हुए उसकी ओर देखा।

"तुम इंग्लिश फैमिली से हो ना! दरअसल तुम दूसरे अंग्रेजों की तरह तो बिल्कुल नहीं दिखते और हिंदी लहज़ा भी बहुत अच्छा है तुम्हारा।" चैतन्य ने उसके पहचान की गहराईयों में उतरने की कोशिश करते हुए कहा।

"हाँ! क्योंकि मेरे पिता इंग्लिश फैमिली से हैं और माँ इंडियन थी।" अल्फ़ी ने कहा।

"तुमने बताया कि तुम्हारी माँ यहाँ काम करती थी और यह भी कहा कि तुम यहाँ नहीं.... कहीं और रहते हो। ऐसा क्यों? चैतन्य ने जिज्ञासा वश पूछा।

"मेरी माँ यहाँ काम करती थीं। बहुत खूबसूरत थी वो और वो खूबसूरती यहाँ के बड़े साहब के बड़े बेटे सर विलियम अल्फ्रेड वॉकर को भा गई। उनकी पत्नी को पता चला तो उन्होंने मेरी माँ को नौकरी से निकाल दिया। मगर सर ने रहमदिली दिखाई और एक दूसरी जगह मेरी माँ की नौकरी का इंतजाम करवा दिया। साथ ही अपनी एक मुहर देते हुए ये वादा भी किया था कि उन्हें या उनके परिवार में से किसी को भी जब भी मदद की जरूरत पड़ेगी... वह जरूर करेंगे। तो उसी मुहर के सहारे मैं यहाँ नौकरी कर रहा हूँ।" अल्फ़ी ने सारी बात बताई।
"एक मिनट! तो क्या तुम..." चैतन्य ने अपना सवाल आधा छोड़ा था।

"हाँ मैं मीना और सर विलियम अल्फ्रेड वॉकर का सबसे बड़ा बेटा हूँ। अल्फ्रेड मीना वॉकर उर्फ अल्फ़ी। मैं कभी भी यहाँ वापस नहीं आना चाहता था। पर... मेरी मजबूरी मुझे यहाँ खींच लाई।" अल्फ़ी ने बड़े ही अफसोस भरे शब्दों में कहा।

"क्या यहाँ... तुम्हारे बारे में...?"चैतन्य ने एक बार फिर आधा सवाल किया।

"नहीं! और मैं... बताना भी नहीं चाहता हूँ। मुझे मेरी माया मिल जाए। मैं यहाँ से चला जाऊँगा।" अल्फ़ी ने कहा और चैतन्य किस्मत के इस खेल पर और भी हैरान हुआ। उसे अपने सामने मौजूद वह शख्स इस दुनिया का सबसे मासूम इंसान लगा था। एक बार के लिए चैतन्य को ये भरोसा ही नहीं हो रहा था कि उसके सामने बैठा हुआ वो नरम दिल इंसान आगे चलकर इतने भयानक पिशाच में बदलने वाला था। उसके दिल में अल्फी के लिए सहानुभूति की तेज लहर उठी थी। एकदम से ही उसके दिल ने दुआ मांगी कि इस इंसान के साथ गलत नहीं होना चाहिए।

"अल्फ़ी! तुम बहुत अच्छे इंसान हो। मैं दुआ करूंगा कि तुम्हें तुम्हारा प्यार जल्द ही मिल जाए।" उसके भयानक भविष्य को जानते हुए भी चैतन्य ने यह दुआ मांग ली थी।

"शुक्रिया दोस्त! इसकी बहुत ज्यादा जरूरत है। चलो! अभी सो जाओ! कल सुबह से काम में लगना है।" अल्फ़ी ने कृतज्ञता भरी नजरों से उसे देखते हुए कहा, जिस पर चैतन्य ने मुस्कुराकर जवाब दिया।

थोड़ी ही देर में अल्फ़ी तो सो गया, पर नींद चैतन्य की ऑखों से कोसों
दूर थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि जो हो रहा था या फिर होने वाला था, वो तो कहीं से भी सही नहीं था। जब वो जानता है कि आगे क्या बुरा होने वाला है... तो क्या उसे ये होने से रोकना नहीं चाहिए। डॉ. अनंत और अनामिका ने उसे समय और नियति से छेड़छाड़ करने से मना किया है, पर क्या वो अपनी जरूरत में इतना ख़ुदग़र्ज़ हो जाए कि एक मासूम के जीवन को श्राप की भट्टी में जलने दे। आखिर सामने वाले की ग़लती क्या है? ये सब सोचते हुए अचानक ही उसे ख्याल आया कि अल्फ़ी को यदि माया मिल जाए तो वो कभी भी पिशाच नहीं बनेगा। मगर नियति में तो माया का जिंदा जलना लिखा है। पर क्यों? क्या सबको माया और अल्फ़ी की सच्चाई पता चल जाएगी, इसलिए माया को ये सजा मिलेगी? पर कैसे? और फिर इसके जवाब में उसके ख्याल में एक ही नाम आया। परिधि! परिधि ही वो है जो इन दोनों की सच्चाई जानती थी। तो क्या माया से परेशान होकर परिधि उससे धोखा करने वाली है? इसलिए अल्फ़ी उसे सदियों से ढूंढ रहा है। नहीं! नहीं! नहीं! मैं ऐसा बिलकुल होने नहीं दूंगा। मैं अनामिका से कहूँगा कि वो परिधि और माया को किसी भी तरीके से समझाए। इससे शायद कईयों की जिंदगी भी बच जाए। हाँ उसे ऐसा ही करना होगा और यही सही होगा। अनामिका और वो वापस जाने के लिए कोई और रास्ता ढूँढ लेंगे और अगर नहीं मिला... तो ये जगह भी बुरी नहीं है। रह लेंगे एक दूसरे के साथ यहाँ।

यह विचार आते ही उसने एक मद्धम मुस्कुराहट के साथ सोए हुए अल्फ़ी की ओर देखा। वो अभी खुश हुआ ही था कि तभी डॉ. अनंत और अनामिका की बातें उसके दिमाग पर हथौड़े की तरह बरसने लगी। नियति से खिलवाड़ सही नहीं होता। ये अगर कुछ सही करेगा तो कुछ बिगाड़ेगा भी। शायद ज्यादा बिगाड़े। अब इन अच्छे बुरे विचारों की जंग चेतन को और भी परेशान करने लगी थी। अपनी बेचैनी से परेशान होकर वह धीरे से उठा और बिना आवाज किए कमरे से बाहर निकल गया।

बाहर ठंडी हवा में उसे थोड़ी राहत महसूस हुई। अल्फ्रेड मीना वॉकर की
जिंदगी उसके लिए भी उलझन बन गई थी। वो अभी ये सब सोच ही रहा था कि तभी उसकी नज़र ऑगन में बने कुऍं की ओर गई। उसके अंदर से हल्की सी टिमटिमाती रोशनी नजर आ रही थी। उस रोशनी में चैतन्य के दिमाग के सारे विचार झक से उड़ गए थे। वो चारों ओर देखता हुआ उस कुऍं के पास पहुँचा। मगर तब तक हो रोशनी बंद हो चुकी थी। चैतन्य ने उस कुऍं के अंदर झाँक कर देखा पर

घुप्प अंधेरे में उसे कुछ भी नजर नहीं आया। अब वह रोशनी सच में थी या उसके दिमाग का भ्रम! ये वो नहीं जानता था। उसे सब से बहुत उलझन होने लगी थी। अब उसे बस सुबह का इंतजार था ताकि वो अनामिका से बातें करके इस समस्या के सभी पहलुओं पर अच्छी तरह से विचार कर सके क्योंकि अल्फ्रेड मीना वॉकर उर्फ अल्फ़ी उसके दिलोदिमाग को बुरी तरह से हिला गया था।

सुबह अल्फ़ी के झिंझोड़ने पर चैतन्य की ऑखें बड़ी ही मुश्किल से खुली। अल्फ़ी ने उसे खींचकर बैठाया। वो अपनी ऑखें मिचमिचाते हुए अल्फ़ी की धुंधली तस्वीर साफ करने की अनचाही सी कोशिश कर रहा था।

"चैतन्य उठो! हमें चलना है! जल्दी करो!" अल्फ़ी ने उसके गालों पर थपकी देते हुए कहा।

"उंहूंऽऽऽ!" चैतन्य ने कहा और एक बार फिर से बिस्तर पर गिर गया। उसे इस तरह देखकर अल्फ़ी ने उसके गाल पर जोर से चपत लगाई, जिससे चैतन्य तिलमिला कर उठ बैठा।

"क्या कर रहो हो?" चैतन्य ने अपने गाल को सहलाते हुए कोफ्त से कहा।

"तो तुम्हें क्या लगा... कि यहाँ तुम्हारी प्रेमिका पप्पियाँ-झप्पियाँ देकर उठाएगी। उठो जल्दी! तुम्हारी नौकरी की भी बात करनी है।" अल्फ़ी ने उसे लताड़ते हुए कहा।

अनामिका का जिक्र आते ही चैतन्य को एक दिन पहले की सुबह याद आ
गई, जब अनामिका ने उसे बड़े ही प्यार से उठाया था और वो सब याद आते ही उसका हाथ उस गाल पर गया और फिर उसकी मुस्कान चौड़ी हो गई।

"अरे उठो!" अल्फ़ी ने कपड़े उसके ऊपर फेंकते हुए कहा, जिससे चैतन्य वापस लौटा। अल्फ़ी के जल्दी करने के इशारे को समझकर वो आखिरकार उठा और फिर उसकी बताई जगह की ओर चला गया। थोड़ी देर बाद जब वो वापस लौटा तो बहुत ही बिगड़े हुए मूड में था। जाहिर सी बात थी कि वो नए जमाने के हिसाब से जीने का आदी था और फिलहाल इन सबके मामले में ये समय उसे रास नहीं आया था।

"क्या हुआ?" अपनी शर्ट की आस्तीन ठीक करते हुए अल्फ़ी ने उसकी ओर देखकर पूछा।

"कुछ नहीं!" चैतन्य ने बात टाली।

"अच्छे लग रहे हो। मुझे लगा कि पता नहीं कपड़े तुम्हें आएँगे या नहीं। अब चलो!" अल्फ़ी ने अपने बाल ठीक करते हुए कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य ने खुद पर एक निगाह डाली और फिर उसकी ओर देखने लगा।

"वैसे अभी इस वक्त जाना कहाँ हैं? अभी तो सूरज भी नहीं निकला।" चैतन्य ने पूरे कमरे पर नजर दौड़ते हुए कहा। उसके आने तक अल्फ़ी ने कमरा पूरी तरह से साफ कर दिया था।

"अभ्यास में!" अल्फ़ी ने कहा।

"कैसा अभ्यास?" चैतन्य ने नज़रों को पैना करते हुए पूछा।
"बताया था ना! आज से उत्सव शुरू है। बहुत चौकन्ना रहना पड़ता है ऐसे दिनों में! तो सुरक्षा अभ्यास में जाना है।" अल्फ़ी ने बताया।

"ओह! पर मैं तो..." चैतन्य ने बात अधूरी छोड़ी।

"चिंता मत करो। तुम्हें अपने साथ ही रखूंगा। बस जितनी जल्दी काम समझ लो, तुम्हारे लिए बढ़िया है। क्योंकि तीन दिनों के बाद तो मैं अपनी माया के साथ यहाँ से चला जाऊँगा। तुम्हें पता नहीं कब तक रूकना पड़े।" अल्फ़ी ने उसके कंधों पर हाथ रखते हुए कहा और बाहर की ओर चल दिया।

चैतन्य ने बहुत ही अफसोस के साथ उसे जाते हुए देखा। एक बार के लिए उसे लगा कि वो उसे सब बता दे, पर फिर ये सोचकर रूक गया कि वो अनामिका को पहले माया को समझाने के लिए कह दे। अभी भी तीन दिन बचे थे। माया के जवाब के बाद ही कोई फैसला लिया जा सकता था।

"अरे आओ यार! कहाँ खो जाते हो बार-बार?" उसके पास आकर उसे खींचते हुए अल्फ़ी ने थोड़ा झुंझलाकर कहा। चैतन्य भी चुपचाप उसके पीछे चला गया। उसने एक-दो बार अनामिका से संपर्क करने की कोशिश की तो हो ना सका।

"एक बात याद रखना कि तुम यहाँ बिल्कुल नए हो। हम दोनों फ्रेंड हैं और तुम यहाँ मेरे अलावा किसी को नहीं जानते हो। तुम्हारे लिए आसान हो जाएगा।" अल्फ़ी ने उसे समझाते हुए कहा, जिस पर चैतन्य ने अपना सिर हिला दिया।

कुछ ही देर में वो दोनों मेंशन के पिछले रास्ते से होते हुए एक बड़े से खुले मैदान में पहुँचे, जहाँ पहले से ही बहुत सारे युवक मौजूद थे। वहीं एक ओर एक छावनी जैसा बना हुआ था, जिसके नीचे बहुत सारी कुर्सियाँ
रखी हुई थीं। वहाँ कुछ अभिजात्य वर्ग के लोग दिखाई दे रहे थे, जिन्होंने ऊँचे तबके में पहने जाने वाले कपड़े पहने हुए थे।

"मैं बात करके आता हूँ। वैसे तुम हो किस समुदाय से?" अल्फ़ी ने चैतन्य से पूछा।

"ये बताना जरूरी है क्या? तुमने पहले तो नहीं पूछा।" चैतन्य ने थोड़ी घबराहट के साथ पूछा।

"बस बताने के लिए। यहाँ डायनें और आम इंसान प्रतिबंधित हैं।" अल्फ़ी ने उसे राहत देते हुए कहा।

"तांत्रिक समुदाय से!" आशुतोष को याद करते हुए चैतन्य ने कहा। शुक्र था कि उसके साथ रहते हुए उसने काफी कुछ पढ़-सीख लिया था।

"ठीक है! मैं अभी आता हूँ। वेट करना!" अल्फ़ी ने चैतन्य के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा और फिर उन लोगों की ओर बढ़ गया। चैतन्य कुछ देर उस ओर देखता रहा और फिर उसकी नजरें आसपास का मुआयना करने लगी। अंधेरे में इस प्रकार की गतिविधि उसे बड़ी ही अजीब लग रही थी। थोड़ी ही देर में

उसे अल्फ़ी की आवाज सुनाई दी। उसने देखा वो उसे अपने पास बुला रहा था। वो तेजी से वहाँ गया। वहाँ दो करीब 50-55 वर्ष के चुस्त-दुरुस्त व्यक्ति और एक करीब 35 वर्ष का युवक खड़ा था।

"ओके! सो यू आर दि वन। नाइस फिजिक! वाट्स द नेम?" बड़ी उम्र का एक आदमी बोला।

"जी!" चैतन्य ने उसे अजीब तरह से देखा, जिस पर सभी की नज़र अल्फ़ी की ओर मुड़ी थी।
"चैतन्य! हिज नेम इज चैतन्य! ही इज़ नॉट गुड इनफ इन इंग्लिश। बट आई विल हैंडल इट! ही इज़ वैरी पावरफुल!" अल्फ़ी ने उनकी बात का जवाब देते हुए कहा।

"ओह! टो टुमको इंग्लिश नई आटा!" दूसरे बुजुर्ग ने कहा।

"आटा! आटा! सम-सम! लिटिल-लिटिल आटा। आई कैन अंडर इस्टैंड!" चैतन्य भी सामने वाले की नकल उतारते हुए अपनी ऑखें फैला कर बोला, जिस पर अल्फ़ी ने अपना निचला होंठ दाँतों में दबाया था।

"ओके! टीन डिन टुमारा काम डेखेंगे, फिर आगे डेखेंगे। अल्फ़ी यू विल मॉनिटर इट प्रॉपरली! लेट्स गिव हिम अ चांस फॉर यू ओन्ली।" पहले वाले बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा।

"यस सर!" अल्फ़ी ने तनकर खड़े होते हुए कहा और फिर चैतन्य के साथ वहाँ से निकल गया। वो तीनों एक बार फिर से आपसी गूफ्तगू में मशगूल हो गए।

"चलो! तुम्हारे काम का इंतजाम तो हो गया।" अल्फ़ी ने थोड़ी राहत से कहा।

"वैसे ये थे कौन?" चैतन्य ने पूछा।

"सर विलियम अल्फ्रेड वॉकर!" अल्फ़ी ने बहुत ही सामान्य तरीके से कहा।

"ये! मतलब कि तुम्हारे पिता!" चैतन्य ने फैली हुई ऑखों से पीछे देखते हुए कहा।
"हाँ! वही हैं। और पीछे नहीं.... अब आगे देखो।" अल्फ़ी ने कहा।

"ओके! और करना क्या है?" चैतन्य ने उससे पूछा।

"इस मैदान के टेन राउंड लगाओ।" अल्फ़ी ने अपनी कमर में हाथ रखकर उसे मुस्कुराते हुए कहा।

"टेन राउंड!"

"यस! दस चक्कर! डर गए क्या? मैंने पहली बार 50 मिनट में पूरे किए थे। रिकार्ड है!" अल्फ़ी ने अपनी शान बखारते हुए उस पर तंज मारा था।

"मैं और डर! घड़ी देख लो!" चैतन्य ने अपनी आस्तीनें फोल्ड करते हुए कहा और फिर पोजीशन ली।

अल्फ़ी के इशारा करते ही वो अपनी पूरी रफ्तार से भागा। उसकी अंगूठी उसकी मुट्ठी के बीच दबी हुई

थी। उसकी रफ़्तार इतनी तेज थी कि वहाँ मौजूद सभी लोगों का ध्यान उसी की ओर चला गया। दस चक्कर कब खत्म हुए किसी को भी पता नहीं चला। अल्फ़ी ने घड़ी देखी तो 40 मिनट पूरे होने वाले थे। दौड़ खत्म करने के बाद पसीने से लथपथ अपने घुटनों पर झुका हुआ चैतन्य बुरी तरह हाँफ रहा था।

"माई गॉड! इट वाज अनबिलीविबल! हाऊ मच टाइम?" विलियम अल्फ्रेड वॉकर ने उनके पास आकर कहा। बाकी के दोनों व्यक्ति भी वहीं आ गए।

"सर! 40 मिनट्स!" अल्फ़ी ने घड़ी की ओर देखते हुए कहा।

"इंप्रेसिव!" ऑखों में प्रशंसा के भाव भरकर विलियम अलफ्रेड वॉकर ने चैतन्य को देखा।
"थैंक्यू सर!" चैतन्य अपने हाथों को पीछे बांधकर खड़ा हो गया और अपनी फूलती हुई साँसो को काबू में करते हुए बोला।

"सी यू सून यंग मैन!" कहते हुए उन्होंने चैतन्य की ओर अपना सीधा हाथ बढ़ाया। चैतन्य ने उनके बड़े हुए हाथ को देखा और फिर तेजी से अपनी अंगूठी निकालकर वो हाथ उनकी ओर बढ़ा दिया। उनका हाथ पकड़ते ही चैतन्य को एक दिमागी झटका सा लगा, जिसे उसने बड़ी ही खूबी से छिपाया। उसके बाद वो सभी वहाँ से चले गए। चैतन्य ने जल्दी से अपनी अंगूठी पहनी और उसके पत्थर को अंदर की ओर रखा।

"लगता है... काफी इंप्रेस कर दिया तुमने! अच्छी बात है। जितना इनके करीब रहोगे... उतना ही सुरक्षित रहोगे।" अल्फ़ी ने मुस्कुराते हुए कहा।

"ऐसा!" चैतन्य ने अल्फ़ी को बेयकीनी से देखते हुए कहा।

"हाँ भई! अभी चलो! नाश्ते का समय हो रहा है। उसके बाद और भी तैयारियों में जुटना है।" अल्फ़ी ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

"चलो!" चैतन्य ने कहा और फिर उसका ध्यान फिर से विलियम अल्फ्रेड वॉकर की ओर चला गया, जहाँ एक और नौजवान लड़का उनके साथ खड़ा बातें करता दिखाई दे रहा था। उसका चेहरा साफ दिखाई नहीं दे रहा था।

"वो कौन है?" चैतन्य ने पूछा।

"कौन? वो! वो ऐडी है। सर का बेटा! ऐडवर्ड अल्फ्रेड वॉकर! थोड़ा तुनक मिजाज है। उससे बचकर रहना।" अल्फ़ी ने चैतन्य को चेतावनी देते हुए समझाया।
"ओह! ख्याल रखूंगा।" चैतन्य ने उसी ओर देखते हुए कहा और फिर अल्फ़ी के साथ वहाँ से निकल गया। चैतन्य ने एक बार फिर अनामिका से संपर्क करने की कोशिश की मगर एक बार फिर नहीं हो पाया, जिससे वो झुंझलाने लगा था।

"कहाँ है ये लड़की? क्या कर रही है?" वो झुंझलाते हुए बड़बड़ाया।

"क्या हो गया?" अल्फ़ी उसके सामने बैठते हुए बोला। वो दोनों नाश्ता करने के लिए हॉल में आए थे, जहाँ सभी कर्मचारियों का खाना बनता था।

"कुछ नहीं।" चैतन्य ने बात टाली और फिर नाश्ते की प्लेट अपने पास खींची।

"याद आ रही है।" अल्फ़ी ने उसके उतरे चेहरे को देखते हुए कहा। चैतन्य ने कुछ नहीं कहा। वो चुपचाप नाश्ता करता रहा, हालांकि दिल और दिमाग दोनों ही अनामिका की ओर ही उलझे हुए थे।

"चिंता मत करो! मिल जाएगी वो!" अल्फ़ी ने उसे हिम्मत देते हुए कहा, जिस पर चैतन्य ने अपना सिर हाँ में हिलाया और अपनी प्लेट पर झुक गया। वो कैसे बताता कि अनामिका से संपर्क नहीं हो पाने पर ना जाने कितने बुरे ख्याल उसके दिल को बेचैन कर जाते थे। पहला ख्याल यही होता था कि वो ठीक तो है ना! और फिर उन बेचैनियों का इलाज अनामिका की आवाज सुनकर ही होता था। बड़ी मुश्किल से उसने अपना नाश्ता खत्म किया। अल्फ़ी ने बताया कि अब दो घंटे बाद आगे का प्रशिक्षण होगा, तो वो कमरे में लौट आया। वापस आते वक्त उसे एक बार फिर से विलियम अल्फ्रेड वॉकर और उनका बेटा ऐडी दिखाई दिए, जो आपस में कुछ बहस कर रहे थे। चैतन्य ने उन दोनों को दो पल के लिए देखा और फिर कमरे में आ गया। उसका दिमाग एक बार फिर से विलियम
वॉकर से हाथ मिलाते समय हुए झटके के बारे में सोचने लगा।

"क्या सोच रहे हो?" अल्फ़ी ने कमरे में आते ही खोए हुए से चैतन्य से पूछा।

"ये विलियम सर और उनके बेटे के बीच में रिश्ता कैसा है?" चैतन्य ने पूछा।

"क्यों? ऐसा क्यों पूछ रहे हो?" अल्फ़ी ने पूछा।

"बस ऐसे ही! मुझे सही नहीं लगा।" चैतन्य ने कहा।

"देखो चैतन्य! हम यहाँ जिस काम से आए हैं वही करें तो बेहतर होगा। किसके घर में क्या हो रहा है ये जानकार हमें कुछ नहीं मिलने वाला है।" अल्फ़ी ने चैतन्य से दो टूक कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने अनचाही हुंकारी भरी।

"तुम चाहो तो थोड़ा आराम कर लो। बहुत तेज भागे तुम! थक गए होंगे। मुझे सर ने बुलाया है तो मिलकर आता हूँ।" अल्फ़ी ने कहा।

"ठीक है।" चैतन्य ने कहा।

और फिर अल्फ़ी वहाँ से चला गया। चैतन्य एक बार फिर अनामिका के बारे में सोचता हुआ वहीं लेट गया। मन अब भी उसकी चिंता में घुला जा रहा था।

****
दूसरी ओर नाश्ता तैयार होने के बाद ऐना के कहे अनुसार अनामिका उन्हीं दो लड़कियों के साथ एक बड़ी सी थाल में नाश्ता लेकर दिव्याक्षि के पास गई।

बसेरे से थोड़ी दूर एक बड़े से पेड़ की जड़ों के नीचे एक खोह सी बनी हुई थी। दोनों लड़कियाँ वहीं रूक गईं और अनामिका को अकेले ही अंदर जाने के लिए कहा। अनामिका को थोड़ी हैरानी तो हुई, पर वो चुपचाप अंदर चली गई। अंदर जाते ही कुछ दूरी पर उसे नीचे की ओर जाती हुई सीढ़ियाँ मिलीं।

वो थाल को ऐहतियात से संभाले हुए नीचे की ओर चली गई। सीढ़ियाँ उतरकर जब वो आगे बढ़ी तो उसे सामने एक दरवाजा नज़र आया। उसने आगे बढ़कर दरवाजे पर दस्तक दी।

"कौन?" एक बहुत ही अजीब सी काँपती हुई आवाज आई।

"मैं नाश्ता लेकर आई हूँ। ऐना मैडम ने भेजा है।" अनामिका ने जवाब दिया।

"अंदर आ जाओ।" एक बार फिर वही सर्द आवाज आई। अनुमति मिलते ही अनामिका दरवाजा खोलकर अंदर की ओर आई।

अंदर का नज़ारा बहुत ही अद्भुत था। वो एक मध्यम आकार का कमरा था, जिसमें उस इकलौते दरवाजे के अलावा और कोई खिड़की या रोशनदान नहीं था। कमरे में जलती ढेर सारी मोमबत्तियों से ही वहाँ रोशनी हो रही थी। अनामिका ने चारों ओर देखा। उस कमरे की एक दीवार पर बने सेल्फ अजीबोगरीब चीजों से भरे हुए थे। एक ओर ढेर सारी किताबें रखी हुई थीं। सामने एक बिस्तर नज़र आ रहा था, जिसके सामने एक मेज जैसा बड़ा सा पत्थर रखा हुआ था। उस पर भी अजीब-अजीब से सामान रखे हुए थे। कच्ची छत से पेड़ की जड़ें लटक रही थीं। अनामिका ने चारों ओर देखा.. पर कोई दिखाई नहीं दिया।

"आपका नाश्ता!" कहते हुए अनामिका ने उस पत्थर पर वो थाल रख दिया। अभी वो झुकी हुई ही थी कि तभी उसने किसी को अपने पीछे महसूस किया। वो सीधी खड़ी होकर पीछे मुड़ी ही थी कि सामने से किसी
ने लपककर उसका हाथ पकड़ा। उन खुरदुरे हाथों के स्पर्श से अनामिका एकदम से सिहर उठी थी। उसने झटके से अपना हाथ छुड़ाया और सामने देखा। एक औरत सामने खड़ी थी, जिसका चेहरा कपड़े से ढँका हुआ था।

"तू आ गई! तू आ गई ना! कहाँ चली गई थी? पर मैं जानती थी... मेरा दिल कह रहा था कि तू आएगी! जरूर वापस आएगी। अब सब ठीक हो जाएगा। तू कर देगी सब ठीक
है ना!"झपट्टे से एक बार फिर अनामिका की कलाई पकड़ते हुए उसने भर्राई हुई आवाज में कहा। इस अचानक हुए हमले से अनामिका दहशत में आ गई और हाथ छुड़ाकर एक तरफ होते हुए बाहर की ओर भागी। भागते-भागते उसने पीछे से आवाज़ सुनी।

"माया!"

वो किसी तरह हाँफती हुई बाहर पहुँची तो दोनों लड़कियाँ उसका इंतजार कर रही थीं। उसकी घबराई हुई हालत देखकर उन्होंने अफसोस से सिर हिलाया। वापस लौटते समय उसके कान में 'माया' शब्द गूंज रहा था। उसने उसे माया क्यों कहा?

"क्या हुआ?" एक लड़की ने पूछा।

"तुम्हारी दिव्याक्षि अंधी है क्या?" अनामिका ने चिढ़ से सिर झटकते हुए कहा।

"हाँ तो वो नहीं देख सकती। वो दिव्याक्षि हैं। वो दिव्य ऑखों वाली हैं। जो कोई नहीं देख सकता... वो देख सकती हैं। इन्होंने ही तो माया को शक्ति के रूप में चुना है।" दूसरी लड़की ने खुलासा करते हुए कहा।
"क्या?" अनामिका चौंकी।

"हाँ! अब चलो! दोपहर के खाने का भी इंतजाम करना है।" पहली लड़की ने कहा और वो दोनों आगे बढ़ गईं।

"देख नहीं सकती! तो मुझे माया क्यों कह रही थी और... वापस आने की बात क्यों की? चैतन्य से मिलना पड़ेगा।" अनामिका सोचते हुए अपनी जगह पर रूक गई थी।

"अरे आओ ना!" एक लड़की ने उसे आवाज लगाई।

"हाँ! आ रही हूँ।" कहते हुए अनामिका उन दोनों की ओर भागी।

दिल और दिमाग से खेलने वाली चैतन्य और अनामिका की ये कुछ नई मुलाकातें इस कहानी का रूख मोड़ने वाली थीं।

अनामिका अजीब सी क़ैफियत लेकर वापस लौटी थी। दिव्याक्षि ने उसे माया क्यों कहा? ये सवाल उसके दिमाग में हथौड़े की तरह बज रहा था। उसने बड़ी ही मुश्किल से नाश्ते के कुछ निवाले अपने गले से नीचे उतारे। नाश्ता करते हुए उसे चैतन्य की याद आ गई कि उसने नाश्ता किया होगा या नहीं और फिर उसके हाथ रूक गए। दूसरी लड़कियों ने जब उससे पूछा तो उसने थकान की बात कहते हुए कमरे में नाश्ता करने की इच्छा जताई। ऐना ने उसे तेज नज़र से परखा और फिर जाने की इजाजत दे दी। उसके साथ गई दोनों लड़कियों ने ऐना को अनामिका के दिव्याक्षि से मिलने के बाद की उसकी घबराहट के बारे में बता दिया था। अनामिका ने एक दिन में ही ऐना को अपनी पाक-कला से अच्छा खासा प्रभावित कर लिया था। वो नहीं चाहती थी कि अनामिका किसी प्रकार की मानसिक परेशानी में रहे, इसलिए वो उसके प्रति नरम रूख अपनाए हुए थी। दोपहर और रात के भोजन के लिए कुछ सामान आने से रह गए थे इसलिए ऐना ने अनामिका को कुछ देर आराम की सलाह दे दी। इजाजत मिलते ही अनामिका अपनी प्लेट उठाकर कमरे में आ गई। उसने कमरा अच्छी तरह से बंद कर लिया। परिधि अपने कामों में लगी हुई थी, जो दवाईयों और काढ़ों से जुड़ा हुआ था और वो उसमें सबसे माहिर थी।

उसके यहाँ मौजूद
होने की सबसे बड़ी वजह यही थी, जबकि जादू उसमें बूंद मात्र नहीं था।

कमरे में आते ही अनामिका ने ध्यान लगाया और चैतन्य से संपर्क करने की कोशिश की। संयोग हुआ कि उसी समय चैतन्य अपने कमरे में लेटा हुआ उसी के बारे में सोच रहा था, जिससे संपर्क तुरंत ही स्थापित हो गया। अनामिका की आवाज मस्तिष्क में गूंजते ही चैतन्य एकदम से उठकर बैठा।

"अनामिका! ये तुम हो?" चैतन्य ने बड़ी ही फिक्रमंदी से पूछा।

"हाँ तो... और कौन होगी?और किसी चुड़ैल को जोड़ लिया अपने मन से... जो ऐसा पूछ रहे हो?" अनामिका ने थोड़ा तुनक कर कहा।

"रहने दे मेरी माँ! पहले ही कई बार कह चुका हूँ कि एक तू ही तो नहीं संभलती मुझसे। दूसरी कैसे संभालूंगा? सुबह से राब्ता करने की कोशिश कर रहा था। तेरी फ़िक्र हो रही थी... इसलिए पूछा।" चैतन्य ने सफाई देते हुए कहा।

"हम्म! ठीक है! फ्री हो क्या?" अनामिका ने पूछा।

"क्यों? क्या हुआ?" चैतन्य ने माथे पर बल डालकर पूछा।

"मिलना है!" अनामिका बोली।

"फिर तो फ्री ही हूँ!" चैतन्य खुशी से उछलते हुए बोला।

"तो फिर झील के किनारे मिलो... आधे घंटे में।" अनामिका ने कहा और संपर्क तोड़ दिया।
"अना..." चैतन्य बस बोलता ही रह गया।

एक आह भरकर वो उठा और कमरे से बाहर निकला। उसने देखा कि पास ही दो लड़के खड़े बातें कर रहे थे। उनके वहाँ होने पर उसका बाहर निकलना मुश्किल था। उन दोनों की नज़र भी उस पर पड़ी, जिस वजह से वो आसपास चहलकदमी करने लगा, जिससे उनकी शक की हद में ना आ पाए। यूंही टहलते हुए उसकी नज़र ऑगन के बीचोंबीच बने कुऍं की ओर गई और उसे रात उसके अंदर से आती हुई रोशनी याद आ गई। वो उत्सुकतावश उस कुऍं की ओर बढ़ गया। उसने उसके अंदर झांककर देखा तो वो उसे एक साधारण सा कुँआ ही लगा। अंदर गहराई में पानी की हलचल इस समय साफ-साफ दिखाई दे रही थी। उसने कुऍं के अंदर बारीकी से मुआयना किया तो देखा कि कुऍं की दीवारों से कुछ पत्थर बाहर की ओर निकले हुए थे। उनकी शक्ल सीढ़ी की तरह दिखाई दे रही थी। वो नीचे दिखाई दे रहे पानी की सतह तक गए हुए थे।
"ये क्या है? सीढ़ियाँ हैं क्या? हो सकता है कि कुऍं की सफाई के लिए बनाई गई हैं, ताकि इसमें उतरा जा सके। हाँ! इसीलिए होंगी।" उन सीढ़ियों पर विचार करते हुए उसने आकलन किया।

"ओ भाई! वहाँ क्या कर रहे हो? वो कुँआ किसी काम का नहीं है। उसका पानी खराब हो चुका है। गिर विर मत जाना।" वहाँ खड़े उन दो लड़कों में से एक चिल्लाकर बोला, जिससे कुऍं के अंदर झांकता हुआ चैतन्य हड़बड़ाकर सीधा हुआ था और उसकी कोहनी लगकर पास ही रखी लकड़ी की बाल्टी कुऍं के अंदर गिर गई। चैतन्य ने उसे पकड़ने की कोशिश की, मगर वो उसके हाथ से दूर जा चुकी थी।

"शिट!" चैतन्य के मुँह से निकला और फिर वो वापस जाने के लिए मुड़ा। उसने अपने कदम आगे बढ़ाए ही थे कि तभी उसे उस बाल्टी की आवाज सुनाई दी, जिसने उसके बढ़ते कदम रोक दिए। उसकी ऑखें कुछ सोचती हुई सिकुड़ी और फिर वो पलटकर तेजी से उस कुऍ के पास गया और अंदर झांकने लगा। वो अंदर कुछ देर उसी तरह देखता रहा।

"ऐसा कैसे हो सकता है? आवाज से तो ऐसा लगा कि वो बाल्टी पानी में नहीं... किसी सख़्त या पथरीली जमीन पर गिरी हो। पर ये कैसे मुमकिन है? लगता है कि यहाँ भी कुछ गड़बड़ है।" खुद से ही सवाल-जवाब करते हुए चैतन्य बड़बड़ाया। उसने सिर उठाकर उस तरफ देखा, जहाँ वो दोनों लड़के खड़े बातें कर रहे थे। अब वो वहाँ नहीं थे। चैतन्य ने चारों ओर नज़रें घुमाई। कोई भी नहीं था। बिजली जैसी चपलता दिखाते हुए वो कुऍ के अंदर उतर गया और फिर ऐहतियात से एक-एक पत्थर पर नज़र रखे हुए वो नीचे उतरता गया। उसे घोर आश्चर्य हुआ कि नीचे दिखाई देने वाले उस पानी तक वो पहुँचा ही नहीं और वो पत्थर खत्म हो गए। आखिरी पत्थर पर खड़ा-खड़ा वो कभी ऊपर देख रहा था तो कभी नीचे।

"ये कैसा भ्रम है? यहाँ तो पानी है ही नहीं! मतलब कि... सचमुच कोई
ना कोई गड़बड़ है। ये मेंशन भी डायनों के बसेरे की तरह ही है। यहाँ भी बहुत गड़बड़ चल रही है। पता लगाना पड़ेगा कि क्या गड़बड़! पर... अभी यहाँ से कहाँ जाऊँ? नीचे जाने के लिए तो पत्थर खत्म ही हो गए हैं! उसने अपने दिमाग को काम पर लगाया और फिर एक भौंह चढ़ाकर अपने बगल में ही कुऍ की दीवार की ओर देखने लगा।

"हो सकता है कि यहाँ कोई खुफिया रास्ता हो! अगर ऐसा है तो वो दरवाजे यहीं होना चाहिए, जहाँ ये पत्थर खत्म हुआ है कि इसके आगे जाने की जरूरत ही नहीं है।" कुऍ के उस हिस्से पर थपकियाँ मारते हुए चैतन्य ने कहा और फिर वो उस पूरी जगह पर अपनी हथेलियाँ फिराने लगा। जल्द ही उसके बाऍं हाथ की एक ऊंगली एक छोटे से छेद में जाकर फँस गई।

"ये क्या है?" चैतन्य ने उस छेद में झांकते हुए कहा और फिर उस छेद में अपनी ऊंगली को किसी चाबी की तरह घुमाया। मगर कुछ भी नहीं हुआ।

"लग रहा है कि मैं कुछ ज्यादा ही सोच रहा हूँ।" कुछ हासिल नहीं होने पर चैतन्य थोड़े अफसोस से बोला। फिर वापस जाने के लिए उसने ऊपर की ओर देखा और ऊपर के पत्थर पर पैर रखने के लिए उसने दीवार का सहारा लेते हुए चढ़ने की कोशिश की। इस समय में भी उसकी एक उंगली उस छेद में ही थी। ऊपर चढ़ने के लिए उसने जैसे ही थोड़ा जोर लगाया उसका दीवार पर रखा हाथ पीछे की ओर खिसक गया। चैतन्य ने पलटकर देखा तो जहाँ उसने हाथ रखा था वो जगह अपनी जगह से थोड़ी सी खिसक गई थी और वहाँ एक दरवाजा नज़र आने लगा था। चैतन्य के बढ़ते कदम रूक गए। वो उस थोड़े से खुले दरवाजे के पास गया और फिर एक गहरी साँस लेकर उसे पूरी तरह से खोल दी। चैतन्य की आश्चर्य से फटी हुई ऑखों ने सामने नीचे उतरती हुई सीढ़ियों को देखा, जो नीम अंधेरे में ऑखमिचौली खेल रही थीं।

"चैतन्य ने एक बार ऊपर की ओर देखा और फिर तेजी से अंदर चला गया। अंदर आकर उसने वो दरवाजा बंद कर दिया। अब सामने घुप्प अंधेरे के सिवा और कुछ भी नहीं था। आगे बढ़ने से पहले

चैतन्य ने एक गहरी साँस ली और फिर अपने गले को तय करता हुआ एक-एक सीढ़ी नीचे उतरने लगा। उसने अपना हाथ दीवार से लगा रखा था। ना जाने कितनी घुमावदार सीढ़ियाँ उतरने के बाद वो नीचे समतल जमीन पर पहुँचा और उसे सामने दिखाई दी हल्की सी एक रोशनी। वो तेजी से उस रोशनी के पास पहुँचा। चैतन्य ने देखा कि वो एक दरवाजा था जिसकी सुराख से
रोशनी अंदर आ रही थी।

इसका मतलब साफ था कि दरवाजे के बाहर खुली जगह थी।उसने वो दरवाजा खोला और फिर उसने खुद की किसी गुफा जैसी जगह में पाया। दरवाजे को बंद कर वो सामने दिखाई देती रोशनी की ओर बढ़ा और फिर कुछ देर में ही उसने खुद को उस गुफा के मुहाने पर पाया। गुफा की दीवारें सीलन से भरी हुई थीं और उनमें से कई जगह से पानी भी रिस रहा था। गुफा से बाहर निकलते ही उसने खुद को जंगल में पाया।

अब तो उसकी हैरानी हर पल ही बढ़ती जा रही थी। सामने लगातार चलने से बनी पगडंडी साफ दिखाई दे रही थी। वो उस पर आगे बढ़ता गया। वो जानना चाहता था कि आखिर उस कुएँ से निकला रास्ता पहुँचाता किस जगह है? करीब पाँच मिनट जंगल का रास्ता पार करने के बाद वो ऊपर जाती सीढ़ियों के सामने खड़ा था, जो पथरीली जमीन को काटकर बनाई गई थीं।
चैतन्य बिना देर किए उस पर चढ़ता चला गया और जब वो आखिरी सीढ़ी पार कर ऊपर पहुँचा तो उसे सामने दिखाई दिए ढेर सारे आदमकद पत्थर। यकीनन वो किसी पहाड़ी के ऊपरी हिस्से में था। इतनी दूर आने के बाद उसे आगे ही बढ़ना था। उन बड़े-बड़े पत्थरों को पार करके जब वो दूसरी ओर पहुँचा तो सामने का नज़ारा देखकर उसकी ऑखेन फटी की फटी रह गईं। वो एक बार फिर उसी पथरीले मैदान के किनारे खड़ा था, जहाँ पिछली रात उसने उन संदिग्धों को अजीब सी गतिविधि करते हुए देखा था।

"तो क्या... वो सब उस मेंशन में रहने वाले लोग थे? वो यहाँ क्या कर रहे थे? ये जगह आम दुनिया की पहुँच से तो बहुत ही दूर है या फिर... किया गया है। " कहते हुए वो उस मैदान के बाहरी हिस्से में खिंची लकीर के पास घुटनों के बल बैठ गया। ये वही लकीर थी, जिसे पिछले दिन पार करते हुए उसे जोरों का झटका लगा था और वो रात तक बेहोश रहा था। उसने उस लकीर पर अपनी ऊंगली छुआई और अगले ही पल उस ऊंगली को एक तेज झटका सा लगा। चैतन्य ने तुरंत अपनी ऊंगली पीछे खींची।

"इतनी कड़ी सुरक्षा! पर ये जगह है कौन सी?" अपने माथे पर बल डाले हुए चैतन्य ने उस जगह को देखते हुए कहा। वो आगे कुछ सोचता उससे पहले ही एक बार फिर उसके मस्तिष्क में एक दस्तक हुई और फिर उसे अनामिका की आवाज सुनाई दी।

"चैतन्य! कहाँ हो तुम?"

"अ... हाँ! हाँ! बस पहुँच रहा हूँ। दस मिनट!" चैतन्य ने कहा।

"लगता है तुम्हें मिलने का मन नहीं है। एक काम करो रहने दो! हम ऐसे ही बातें कर लेंगे। मैं जा रही

हूँ।" अनामिका की रोष भरी आवाज आई।
"हे! हे! हे! खबरदार अपनी जगह से हिली तो! कहा ना दस मिनट में पहुँच रहा हूँ।" इस बार चैतन्य ने थोड़ी नाराजगी भरी आवाज में कहा।

"ठीक है! दस मिनट! उसके बाद मैं चली जाऊंगी।" अनामिका ने भी धमकी ही दी थी।

"रूको तुम जरा!" चैतन्य ने कहा और फिर अगले आठ मिनट में ही वो झील के किनारे पहुँच चुका था। अपनी साँसें सही करते हुए वो झील की ओर बढ़ा, जिसका साफ पानी शीशे की तरह चमक रहा था।

वो तेजी से झील की ओर बढ़ा... मगर वहाँ तक पहुँचने से पहले ही एक ओर से आई आवाज ने उसके कदम रोके। उसने आवाज की दिशा में देखा। अनामिका एक पेड़ की आड़ में खड़ी उसे अपने पास बुला रही थी। उसे देखते ही चैतन्य के होंठों पर एक मुस्कुराहट आई, जिसे उसने तुरंत ही समेटा और उसकी ओर बढ़ गया।

"हम्म! अच्छे लग रहे हो इन कपड़ों में।" प्रशंसा भरी नज़रों से उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए वो बोली, जिस पर चैतन्य ने खुद पर एक नज़र डाली।

"हम्म! तुम भी.... ठीक ही लग रही हो!" चैतन्य ने उसे छेड़ते हुए कहा, जिस पर अनामिका ने मुँह बनाते हुए अपना सिर झटका था। चैतन्य को उसकी ये हरकत बड़ी ही भली सी लगी। उसने आगे बढ़कर उसके कंधों पर अपने हाथ रखते हुए अपनी हथेलियाँ उसकी गर्दन के पीछे बांधी और एक झटके से उसे अपने नज़दीक किया था। उसकी इस हरकत से अनामिका थोड़ा सा हड़बड़ाई... मगर चैतन्य ने उसके सिर से अपना सिर मिलाते हुए उसकी ऑखों में झांका।

"तो मैडम! किस लिए बुलाया मुझे? बंदा खिदमत में हाजिर है।" चैतन्य ने शोख नज़रो से उसे देखते हुए आगे बढ़कर उसके गाल पर अपने होंठ रख दिए और पहली बार अनामिका ने कोई भी नाराज़गी नहीं जताई। उसके गालों में फैली लाली को देखकर चैतन्य के होंठों पर मुस्कराहट उतरी।

"नाश्ता किया?" अनामिका ने नज़रें झुकाए हुए ही पूछा।

"हाँ!"

"ओह! मैं लेकर आई थी।" अनामिका ने बुझी हुई आवाज में कहा।
"तुम्हें बड़ी फिक्र हो रही है मेरी! हँ!"चैतन्य ने उसे कुरेदा था।

"तो नहीं होगी!" अनामिका ने ऑखों से भी शिकायत की।

"अच्छा! तुमने किया?" चैतन्य ने पूछा।

"मैंने सोचा... साथ में करेंगे।" अनामिका ने कहा।

"तो इसलिए यहाँ बुलाया मुझे।" चैतन्य ने उसके चेहरे को देखते हुए कहा।

"तुम्हें क्या लगता है?" अनामिका ने नाराज़ ही नज़रें उठाकर उसे देखते हुए कहा।

"हम्म! नहीं! इसलिए नहीं बुलाया है।" चैतन्य ने ऑखें सिकोड़ कर उसे देखते हुए कहा।

"सही जवाब! चैतन्य! कुछ अजीब सी चीजें पता चली हैं। बहुत ही अजीब।" अनामिका ने इस बार संजीदा लहज़े में कहा।

"अच्छा! सेम हियर!" चैतन्य ने भी अपना लहज़ा गंभीर किया।

"क्या?" अनामिका ने ऑखें सिकोड़ कर पूछा।

"पहले नाश्ता करो तुम और आइन्दा भूखे रहने की जरूरत नहीं है। समझी!" चैतन्य ने थोड़ी सख़्ती से कहा।

"ठीक है।" कहते हुए अनामिका एक पेड़ के नीचे बैठ गई, जहाँ उसने थाली रखी हुई थी। उसने पहला निवाला मुँह में डाला ही था कि तभी
चैतन्य उसकी गोद में सिर रखकर लेट गया और उसने अपनी ऑखें बंद कर लीं।

"अरे! ये क्या कर रहे हो?" अनामिका ने तुनककर कहा और उसे दूर हटाना चाहा, जिस पर चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"रहने दो ना! अच्छा लग रहा है मुझे। तुम्हें पता है... मेरे पैर बहुत दर्द कर रहे हैं।" चैतन्य ने उसकी गोद में कसमसाते हुए कहा।

"क्यों? क्या हो गया?" अनामिका ने चिंता से पूछा।

अनामिका के पूछने पर उसने सुबह की दौड़ और उस रहस्यमई कुएँ से यहाँ तक आने की पूरी कहानी अनामिका को सुना दी।

"तुम्हारा मतलब है कि वो जगह उस मेंशन से जुड़ी हुई है।" अनामिका ने ऑखों में हैरानी भरकर कहा।

"हाँ और तुम्हें पता है... वो जगह बहुत ही कड़े सुरक्षा घेरे में है। कल उसे पार करने के चक्कर में में झटका खाकर बेहोश हो गया था। इतनी सुरक्षा वाली जगह कोई आम जगह नहीं हो सकती। उस जगह में कोई तो खास बात है।" चैतन्य ने अनुमान लगाते हुए कहा।

"कहीं वो लोग उस जगह की सुरक्षा तो नहीं कर रहे हैं?" अगला अनुमान अनामिका ने लगाया।

"सुरक्षा! पर ऐसी कौन सी जगह हो सकती है, जिसकी इतनी सुरक्षा की जा रही है।" चैतन्य ने सवाल उठाया।

चैतन्य का सवाल सुनकर अनामिका के दिमाग के घोड़े चारों दिशाओं में
तेजी से दौड़े और जल्द ही एक सूत्र उसके हाथ लग ही गया।

"चैतन्य! मुझे लगता है कि मैं जानती हूँ कि वो कौन सी जगह है?" अनामिका ने शून्य में देखते हुए कहा।

"कौन सी?" चैतन्य ने अपना सिर उसकी ओर उठाकर पूछा।

"नर्क का द्वार!"

"नर्क का द्वार!"

अनामिका के मुँह से ये सुनते ही चैतन्य को जैसे एक बार फिर से झटका लगा। वो झटके से उठा और अनामिका के मुँह को देखने लगा।

"तुम्हारा मतलब वो चित्रलेखा की कहानी वाला नर्क का द्वार!" चैतन्य उसे उलझी हुई नज़रों से देखते हुए बोला।

"हाँ... वही!"

"और तुम्हें ऐसा क्यों लगा कि ये वही है!" चैतन्य ने उत्सुकता दिखाते हुए
पूछा।

"बेवकूफ! ये तो जाहिर सी बात है।" अनामिका ने उसके सवाल पर उसे लताड़ा।

"हे! जरा काबू रखो ज़बान पर। समझी! अब बोलो!" चैतन्य ने चढ़ी हुई भौंह के साथ अनामिका को लगभग चेतावनी दी थी।

"ठीक है बाबा! सुनो! अंकल ने बताया था कि हजार साल पहले किसी औरत ने छद्म पिशाच साधना से काली शक्ति हासिल की थी, जिसे बड़ी ही मशक्कत से उस दरवाजे के पीछे कैद किया गया था। चित्रलेखा की कहानी से हमें पता चला था कि तभी से उस दरवाजे के लिए हमेशा कड़ी सुरक्षा का प्रबंध किया गया, ताकि गलती से भी वो दरवाजा खुल ना पाए और उसके लिए बकायदा एक प्रहरी तैनात किया जाता था। ठीक है! और फिर इसी दरवाजे का प्रहरी बनने के लालच में चित्रलेखा के पिता ने उसकी माँ को धोखा दिया था।" अनामिका ने पुरानी कहानी दोहराई।

"और फिर उस धोखे का बदला लेने के लिए चित्रलेखा की माँ हार्लिन ने उस दरवाजे को कुछ देर के

लिए खोल दिया था, जिससे उस दरवाजे से उस काली शक्ति का एक अंश बाहर निकल कर चित्रलेखा की प्रभावित कर गया था। बाद में तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र ने एक खंजर में चित्रलेखा की शक्तियों को कैद किया, जो तुम्हें मिला और दूसरे खंज़र में उस पिशाचिनी की शक्तियों को क़ैद किया था, जो गायब हो गया।" चैतन्य ने कहानी को पूरा किया।

"एक्जैक्टली!" अनामिका बोली।

"हाँ तो इसमें ये बात कहाँ आई कि ये वही जगह है।" चैतन्य ने कहा।
"अरे मेरे भोले भगत! सुनो! तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र ने प्रहरी समूह चित्रलेखा वाली घटना के सालों बाद बनाया था। उससे पहले इस जादुई दुनिया में अहेरी समूह का ही सिक्का बोलता था और अहेरी समूह किसके नियंत्रण में था?" अनामिका ने एक सवाल के साथ अपनी बात खत्म की।

"हम्म! पिशाच समुदाय का।" चैतन्य ने जवाब दिया।

"हाँ तो... अभी हम जिस समय में हैं.. उस समय प्रहरी समूह का नामोनिशान नहीं था। इस समय अहेरी समूह और पिशाच समूह ही सर्वेसर्वा थे। हर अंतिम फैसला पिशाचों के ही हाथ में था। इसीलिए तो इस समय जो कुछ भी हुआ था, उसे पिशाचों ने पूरी तरह से मिटा दिया, जिसमें अल्फ़ी की कहानी भी है।" अनामिका ने जवाब दिया।

"तुम्हारा मतलब है कि सर्वश्रेष्ठ होने की वजह से उस द्वार की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी पिशाचों के पास रही और शायद इसीलिए उन्होंने उस जगह को अपने मेंशन से जोड़ कर रखा है। " चैतन्य ने कहा।

"हाँ!"

"अनामिका! कहीं ऐसा तो नहीं कि.... ये सर्वशक्तिमंडल के सदस्य ही उस नर्क के द्वार की सुरक्षा करते हो। सोच कर देखो कि उस द्वार की सुरक्षा के लिए बहुत ही शक्तिशाली लोगों की जरूरत पड़ती होगी और सर्वशक्तिमंडल में ऐसे ही लोगों को चुना जाता है।" चैतन्य ने अगला अनुमान लगाया।

"बात में तुम्हारी दम तो है। आखिरकार इतनी शक्तिशाली सभा के गठन की जरूरत ही क्या थी?" अनामिका बोली।

"लेकिन इसमें भी एक समस्या है।" चैतन्य ने अपनी ही बात काटने की
कोशिश की।

"वो क्या?" अनामिका ने पूछा।

"कल रात मैंने उस मैदान में किसी औरत को नहीं देखा।" चैतन्य ने कहा।

"तुम्हें कैसे पता? तुमने कहा था कि उन सभी ने लबादे ओढ़े हुए थे... तो तुम कैसे कह सकते हो कि वहाँ कोई औरत नहीं थी।" अनामिका ने भी चैतन्य की बात काटी।

"क्योंकि वो सब ऊँची आवाज में कुछ मंत्र जैसा पढ़ रहे थे एम प्रीटि श्योर... आई डिडन्ट हियर एनी वूमन्स वॉइस एंड एम रेडी टू बेट एनीथिंग ऑन दैट।" चैतन्य ने पुख़्ता आवाज में अपनी बात रखी।

"तो क्या...." अनामिका ने बात अधूरी छोड़ी।

"हाँ! मुझे पक्का यकीन है कि इसी बात को लेकर पिशाच और डायन समुदायों के बीच तनातनी है। इन दोनों की आपस में बिल्कुल नहीं बनती.... जबकि दूसरे समुदायों के साथ दोनों की ही अच्छी बनती है।" चैतन्य ने अपना निष्कर्ष सामने रखते हुए कहा।

"तुम्हारा मतलब है कि शक्ति असंतुलन ही यहाँ की सारी समस्याओं की जड़ है। तो फिर डायनों को सर्वशक्तिमंडल में शामिल करने की क्या जरूरत थी? उन्हें इन सबसे दूर ही रखते।" अनामिका ने कहा।

"शायद दिखावे के लिए। वैसे भी पिशाच हमेशा से ही खुद को सर्वश्रेष्ठ समझते हैं। हो सकता है कि डायनों का शक्तिशाली होना या फिर.. उनका औरत होकर शक्तिशाली होना... ये पिशाचों को रास ना आता हो।" चैतन्य ने एक और अनुमान लगाया।
"औरत से तुम्हारा क्या मतलब है?" चैतन्य के इस अनुमान पर अनामिका बुरी तरह से बिफरी थी, जिस पर चैतन्य एक पल को घबराया था।

"मैं... मैं ऐसा नहीं कह रहा। पर... इस समाज की सोच को क्या कहोगी? इस समय से लेकर हमारे समय तक... चाहे कुछ भी कह लो... बदला कुछ नहीं है। लोग औरतों की काबिलियत को हमेशा नकारने की कोशिश करते रहे हैं और... करते रहेंगे। पता नहीं इस सोच की जंग कब खत्म होगी।" अपनी बात कहते हुए चैतन्य ने अनामिका पर एक निगाह डाली और उसे अपनी ओर कसे हुए जबड़ों के साथ घूरता हुआ पाया, जिससे वो एक बार और असहज हुआ था।

"मेरी माँ! मैं अपनी बात नहीं कर रहा हूँ। मैंने कभी भी तुझे कमतर माना! बल्कि तू तो हम सबसे ज्यादा... बहुत ज्यादा है। तू ही सोच कि इतने लड़कों के होते हुए भी डॉ. अनंत ने तुझे इस मिशन का लीडर चुना है और किसी ने भी कोई ऐतराज नहीं जताया। क्योंकि हम सब जानते हैं कि तू इस काबिल है। हमसे ज्यादा काबिल है। सबकी सोच एक जैसी नहीं होती।" चैतन्य ने जैसे उसे समझाने के लिए सफाई दी थी और उसकी बात सुनकर अनामिका का चेहरा ढीला पड़ा था, जिससे चैतन्य को थोड़ी राहत मिली। अभी ऐसे माहौल और हालत में वो रूठने-मनाने का खेल खेलने के बिल्कुल भी मूड में नहीं था।

"ठीक है! मानती हूं इस बात को। पर मुझे लगता है कि यहाँ ऐसा कुछ और भी हो रहा है, जो शायद सबकी नज़रों से छिपा हुआ है। कुछ ऐसा जो बहुत कुछ बर्बाद करने वाला है क्योंकि इस सर्वशक्तिमंडल के बारे में मैंने तो कभी नहीं सुना और ना ही अंकल ने ही कभी इसका जिक्र किया। मुझे लगता है कि जिस भीषण हत्याकांड का जिक्र हमें आगे जाकर मिलता है, उसके बाद इस सभा को खत्म कर दिया गया होगा क्योंकि उस हत्याकांड ने डायनों के बसेरे को पूरी तरह से तबाह कर दिया था।
पिशाचों ने भी एक भीषण रक्तपात का सामना किया था। ये समझ लो कि यहीं से बहुत कुछ कमजोर होना शुरू हुआ और सब कुछ पिशाचों के हाथों से फिसलने लगा था और फिर चित्रलेखा की घटना के बाद तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र ने सब बिखरे हुए सूत्रों को समेटकर सब कुछ फिर से संभाला। इसीलिए तो हमारी दुनिया में तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र के नाम की तूंती अभी तक बोलती है।" अनामिका ने अपने विचारों को विस्तार देते हुए कहा।

"तो फिर सब बिगड़ने की वजह कैसे पता चलेगी?" चैतन्य ने कहा।

"ये अल्फ़ी के साथ क्या दिक्कत है?" अनामिका ने पूछा।

"बताया तो! माया! इन दोनों की ना तो कहानी समझ में आ रही है और ना ही रिश्ता। कल उसने बताया कि माया उसकी... पत्नी है।" चैतन्य ने थोड़े ठहराव के साथ कहा।

"क्या? पत्नी! ऐसा कैसे हो सकता है? हम दोनों ने ही उस रात माया की बातें सुनी थी। उसे देखकर तो कहीं से भी नहीं लगता कि वो ऐसे किसी गंभीर रिश्ते में है। परिधि ने भी ऐसा कुछ नहीं कहा।" बुरी तरह चौंकी हुई अनामिका ने कहा।

"पर अल्फ़ी उस माया को लेकर बहुत गंभीर है। उसका कहना है कि यहाँ उनके बारे में कोई नहीं जानता है। माया उससे वादा करके आई थी कि वो सब कुछ छोड़कर वापस उसके पास लौट जाएगी। पर वो कभी भी वापस ही नहीं लौटी। वो उसे ही लेने यहाँ आया है!" चैतन्य ने बहुत ही मायूस लहज़े में कहा।

"पर चैतन्य! माया तो सर्वशक्तिमंडल का सदस्य बनने की खुशियाँ मना रही हैं। मुझे नहीं लगता कि वो ये सब छोड़कर जाएगी। सच कहूं तो मुझे ये माया बहुत ही रहस्यमई लगती है। तुम्हें पता है कल रात मुझे उसके बारे
में एक और बात पता चली।" अनामिका ने कहा।

"क्या?"

चैतन्य के पूछने पर अनामिका ने रात माया की दोनों सहयोगियों की बातें और उस खुफिया दरवाजे के बारे में बताया।

"इसका मतलब तो साफ है कि वो अल्फ़ी ही नहीं सबको धोखा दे रही है। कहीं उसकी महत्वकांक्षाएँ तो सारे फसादों की वजह नहीं है और वो अल्फ़ी उसके पीछे बावरा हुए घूम रहा है। पता नहीं... उसे सब पता चलेगा तो क्या होगा?" चैतन्य ने चिंता भरे स्वर में कहा।

"चैतन्य! मुझे नहीं लगता कि अल्फ़ी को उसके या उसके इरादों के बारे में कुछ भी पता चलने वाला है। तुम्हें याद नहीं वो माया की मौत का बदला लेने के लिए ही पिशाच बना है। वो आज तक उससे मोहब्बत करता है।" अनामिका ने चैतन्य को याद दिलाते हुए कहा।

"अनामिका! तुम्हें क्या लगता है? माया समझाने से समझेगी क्या? कि वो ये सब छोड़कर अल्फ़ी के पास वापस लौट जाए। आखिर इन सबसे भी तो उसके हिस्से में मौत ही आनी है।" चैतन्य ने कहा।

"अच्छा! और उसे ये कौन समझाएगा? तुम! तुम समझाओगे!" अनामिका ने पूछा।

और ये सुनते ही चैतन्य अपनी जगह से उछलते हुए पीछे की ओर गिरने को हुआ, जिसे अनामिका ने तेजी से पकड़कर संभाला था।

"मैं! पागल हो गई हो! मुझे नहीं जाना उसके सामने!" चैतन्य के चेहरे के साथ-साथ उसकी आवाज में भी घबराहट उतर आई थी।

"ये तुम माया से इतना घबराते क्यों हो?" अनामिका ने चैतन्य को पैनी नज़रों से देखते हुए पूछा।

"मुझे नहीं पता... पर वो मुझे कहीं से भी सही वाइब्स नहीं देती। शुरू से ही! बल्कि मैं तो कहता हूँ कि तुम उस माया के बारे में और भी पता करो, जिससे हम अल्फ़ी को उसके बारे में सबूत के साथ बता सकें। कम से कम इस तरह से उस धोखेबाज माया के लिए वो दूसरों की जिंदगी तो खराब नहीं करेगा। हो सकता है कि सब जानने के बाद वो पिशाच ही ना बने।" चैतन्य ने एक नई योजना अनामिका के सामने रखते हुए कहा।

"तुम्हें उसकी बहुत चिंता हो रही है।" अनामिका ने चैतन्य को हैरानी से देखते हुए कहा।

"क्योंकि वो बहुत सीधा है अनामिका! तुम्हें पता है... वो वॉकर खानदान का सबसे बड़ा बेटा है। इस लिहाज से उनकी लेगेसी का वारिस हैं। मगर वो ये सब नहीं चाहता। वो तो किसी को ये बताना भी नहीं चाहता। उसे बस अपनी माया चाहिए और कुछ नहीं। वो माया के साथ यहाँ से चुपचाप चले जाना चाहता है। सच कहूं तो मैं नहीं चाहता कि उसके साथ कुछ भी बुरा हो।" चैतन्य ने अल्फ़ी की असलियत के साथ अपने दिल की बात भी कही।

"तो फिर!" अनामिका ने कहा।

"तुम बसेरे का रहस्य पता करो... मैं अल्फ़ी और माया का। सब तो समझ में आ गया... बस यही रह गया। आखिर क्या खेल खेल रही है वो माया? क्यों खेल रही है? इन्हीं का जवाब ही हमें हमारी जंग जिताएगा। समझी!" चैतन्य ने अनामिका को समझाते हुए कहा।
"क्या मुसीबत है यार? यहाँ भी वही... लौटकर गए तो वहाँ भी वही। लोगों को इतनी ताकत क्यों चाहिए होती है कि उसके लिए दूसरों की जिंदगी खराब कर दें। क्या इन माया जैसे लोगों के लिए प्यार सचमुच मायने नहीं रखता है?" अनामिका ने बहुत ही चिढ़ के साथ कहा।

"छोड़ो ना! हम जो कर सकते हैं... हमें वो करना चाहिए। जो नहीं कर सकते उसके पीछे चैन सूकून बर्बाद करके क्या फायदा!" चैतन्य ने उसे समझाते हुए कहा।

"पर गुस्सा आता है चैतन्य। अक्सर ऐसे लोगों की भूख मासूमों की खुशियाँ खा जाती है। मेरी माँ! मेघा! वो भी तो मासूम थी... पर मिला क्या उन्हें? चित्रलेखा! वो भी तो बस प्यार ही चाहती थी। पर उसके हिस्से में भी बस आई तो तकलीफें। कभी-कभी तो... मुझे हम दोनों के लिए भी डर लगने लगता है।" अनामिका ने बहुत ही जज़्बाती होते हुए कहा।

"शट अप यार! कुछ भी सोचती रहती हो! हमारे साथ ऐसा क्यों होगा?" चैतन्य ने उसकी सोच पर उसे झिड़का था।

"पता नहीं क्यों? बस मेरा दिल हमेशा से डरता है। मुझे ऐसा लगता है... कि मैं... खुशियों को हाथ लगाऊँगी और वो जलकर ख़ाक हो जाएँगी। मुझे हमेशा से ही खुश रहने से डर लगता है चैतन्य। हो सकता है कि मेरी जिंदगी जैसे दिल कचोटने वाले खुलासों के गुजरी है... एक डर मेरे अंदर रह गया है और वो निकलता ही नहीं। मुझे हमेशा से ऐसा लगा है कि खुशियाँ मेरे लिए नहीं बनी हैं। इसीलिए भी मैं सरिता माँ की ओर कभी आगे नहीं बढ़ी। कि कहीं जो मिल रहा है वो भी ना छिन जाए।" कहते हुए अनामिका ने अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया और सुबकने लगी। चैतन्य अचानक उसकी ऐसी हालत देखकर घबरा गया। उसने कभी भी अनामिका को इस तरह टूटा हुआ नहीं देखा था। उसने आगे

बढ़कर अनामिका को अपनी बाहों में समेटा।
"अनामिका! कैसी बातें कर रही हो? पहले तो कभी नहीं की तुमने ऐसी बातें।" चैतन्य उसका सिर सहलाते हुए बोला।

"कभी किसी से ये सब कहने का मौका ही नहीं मिला। करीब होकर भी वरूण से भी ये सब कभी नहीं कह पाई। मुझे लगता था कि कहीं उसे बुरा ना लगे। मैं बस अकेले रहना चाहती थी... हमेशा! कुछ पास होगा ही नहीं... तो खोने का डर भी नहीं होगा। पर अब मुझे फिर से डर लगने लगा है। तुमसे दूर होने का डर।" अनामिका अपना दिल खोलते हुए भर्राए गले से बोली। चैतन्य ने कुछ भी नहीं कहा। वो बस उसे खुद में भींचे हुए उसका दर्द खुद में उतारता रहा। आज उसे समझ आ रहा था कि दिल में प्यार होने के बाद भी अनामिका उससे क्यों छिटकती रही। वो उसके शांत होने का इंतज़ार करने लगा और थोड़ी देर बाद जब वो कुछ शांत हुई तो चैतन्य ने उसके चेहरे की ओर देखा, जो दर्द की शिद्दत से सुर्ख़ लाल हो गया था।

"ठीक हो!" चैतन्य ने बहुत ही प्यार से पूछा।अनामिका ने अपना सिर हाँ में हिलाया और उससे दूर हुई और अपने चेहरे को अपनी हथेलियों से पोंछने लगी।

"मैं बस यहाँ से जाना चाहती हूँ चैतन्य। कैसे भी और... जल्दी से जल्दी! मुझे ये सब कुछ नहीं चाहिए। मैं बस एक नॉर्मल लाइफ चाहती हूँ... तुम्हारे साथ। पता नहीं क्यों पर... यहाँ आने के बाद तो और भी ऐसा लगने लगा है कि कोई हमें अलग कर देगा। तुम.. तुम मुझे छोड़कर तो नहीं जाओगे ना!" अनामिका, चैतन्य के चेहरे को अपने हाथों में भरकर जज़्बाती लहज़े में बोली।

"कभी नहीं!" चैतन्य ने उसकी नम ऑखों में देखते हुए कहा। उसका जवाब सुनकर अनामिका तो शांत हो गई, पर उसका अनकहा दर्द चैतन्य
को अंदर से बेचैन कर गया था। अब वो भी इस जगह से जल्द से जल्द वापस जाने के बारे में सोचने लगा। पर जो काम जिम्मे में लिया था वो तो पूरा करना ही था। अल्फ़ी के पिशाच बनने का रहस्य जानना था। परिधि के सदियों का फासला तय करने की वजह जाननी थी, तभी तो वो सब वर्तमान में सामने खड़ी समस्या से लड़ सकते थे... उससे जीत सकते थे। उससे जीतने के बाद ही वो और अनामिका किसी शांत जिंदगी का ख्याल पूरा कर सकते थे।

एक-दूसरे से विदा लेकर अनामिका और चैतन्य अपने-अपने गंतव्य की ओर निकल गए। इतने दिनों की पहचान के बाद आज पहली बार अनामिका की बातों ने चैतन्य को बेचैन किया था। उसे बिल्कुल भी पता नहीं था कि अनामिका ने अपने अंदर इतना कुछ छिपा रखा था और अब वो उसे खुद से दूर रखने के हक में बिल्कुल भी नहीं था, इसलिए अब जो भी करना था जल्दी... बहुत जल्दी करना था। वो सावधानी से आइने का इस्तेमाल करते हुए कमरे तक पहुँचा, तो सामने से अल्फ़ी को परेशानी की हालत में आता हुआ देखा। वो रूक गया। सामने से आते हुए अल्फ़ी का ध्यान जब चैतन्य की ओर गया, तो वो तेजी से उसकी ओर आया।

"जीजस क्राइस्ट! मैं तो परेशान हो गया था। कहाँ थे तुम?" अल्फ़ी ने चिंता भरी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा।

"कहीं नहीं... बस यहीं था।" चैतन्य ने भी उखड़े हुए लहजे में जवाब दिया।

"क्या हो गया?" अल्फ़ी ने उसके लहज़े को ग़ौर में लाते हुए पूछा।
"कुछ नहीं! तुम बताओ! मुझे क्यों ढूंढ रहे थे?" चैतन्य ने उसकी ओर सवालिया नजरों से देखते हुए पूछा।

"तुम्हें सर ने बुलाया है।" अल्फ़ी ने कहा।

"मुझे! क्यों?" अल्फ़ी की बात सुनकर चैतन्य को हैरत का झटका लगा था।

"लगता है कि कुछ ज्यादा ही इंप्रेस कर दिया तुमने उन्हें।" अल्फ़ी ने एक प्रशंसा भरी नज़र उस पर डालते हुए कहा।

"बस तेज दौड़ने से! अजीब बात है!" चैतन्य ने उलझे हुए अंदाज में कहा।

"ये सवाल उन्हीं से पूछना। चलो!" अल्फ़ी ने उसे अपने साथ आने का इशारा करते हुए कहा और जिधर से आया था उसी ओर चल दिया। चैतन्य भी एक ठंडी साँस छोड़कर उसके पीछे चल दिया। आगे कुछ दूर संकरे से गलियारे को पार करते ही एक दरवाजे के साथ चैतन्य के सामने एक नई ही दुनिया के दरवाजे खुले थे।

सामने एक बड़ा सा हॉल था, जिसकी शानो-शौकत से चैतन्य की ऑखें चौंधियाँ गईं। छत के महंगे धातु से बने फानूस, महंगी पेंटिग्स और हर साजो सामान वहाँ की रईसी का बखान कर रहे थे। उसने हॉल की छत की ओर सिर उठाकर उसे अपनी ऑखों में भरना चाहा, तो एक झटके से वो पीछे की ओर गिरने को हुआ था... जिसे उसके पीछे खड़े अल्फ़ी ने संभाला था।

"ध्यान से! चलो!" उसे संभालते हुए अल्फ़ी ने कहा और एक ओर बढ़ गया। चैतन्य अपनी फटी हुई ऑखों से चारों ओर देखता हुआ आगे बढ़ रहा था।

शानदार सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर एक बार फिर से वो दोनों एक चौड़े सुसज्जित कॉरीडोर से गुजर रहे थे। उसके आखिरी छोर पर आदमकद खिड़की लगी थी, जिसके खुले पलड़ों से सुबह की धूप छनकर अंदर की ओर आ रही थी और ये सब देखकर चैतन्य को एक अजीब सा ख्याल आया।

"अल्फ़ी!"
"हाँ!" आगे बढ़ते हुए अल्फ़ी ने बिना पीछे मुड़े ही कहा।

"तुम सब पिशाच कुल से हो ना!" चैतन्य ने सवाल किया।

"हाँ!" अल्फ़ी ने कहा।

"तो तुम सबको धूप से कोई परेशानी नहीं होती है क्या?" चैतन्य ने कहा।

इस बार उसकी बात सुनकर अल्फ़ी रूका और पीछे मुड़कर उसकी ओर देखते हुए बोला, "क्या मतलब? मैं समझा नहीं!"

"मतलब कि मैंने सुना है कि पिशाचों को धूप से समस्या होती है। तुम सबके साथ ऐसा नहीं है। क्यों?" चैतन्य ने अपनी जिज्ञासा जाहिर की।

"तुम्हें किसने कहा ऐसा?" जवाब देने की बजाय अल्फ़ी ने ही सवाल किया और उसकी बात सुनकर चैतन्य की ज़बान उसके तालू से चिपककर रह गई। वो कैसे बताता कि उसने बहुत सारी वैंपायर मूवीज में ऐसा देखा है, इसलिए ये सवाल किया।

"नहीं! बस... एक... सवाल था... तो पूछ लिया!" चैतन्य ने बमुश्किल कहा।

"हद है! अब ये अफवाहें कौन फैला रहा है? ऐसे ही कम अफवाहें फैली हुई हैं क्या?" अल्फ़ी ने थोड़ी झुंझलाहट से कहा और फिर आगे की ओर बढ़ गया।

"कैसी अफवाहें?" चैतन्य ने अपने कान खड़े करते हुए कहा।
"हैं कुछ! वैसे बता दूं कि हम पिशाच कुल से हैं... पिशाच नहीं हैं।" अल्फ़ी बोला।

"तो क्या दोनों में फर्क होता है?" चैतन्य ने अगला सवाल किया।

"और नहीं तो क्या? अगर पिशाच कुल के सभी सदस्य पिशाच बन गए तो इस दुनिया का क्या होगा... समझ सकते हो? नहीं! नहीं समझ सकते।" अल्फ़ी ने अपनी ही बात का जवाब देते हुए कहा।

"तो फिर समझाओ।" चैतन्य ने कहा।

"बाद में! अभी पहले सर से मिल लो!" अल्फ़ी ने एक दरवाजे के सामने खड़े होते हुए कहा। चैतन्य ने भी उस बलूत की लकड़ी से बने शानदार दरवाजे की ओर देखा और अल्फ़ी के थोड़ा पीछे खड़ा हो गया। अल्फ़ी ने आगे बढ़कर दरवाजे पर दस्तक की। कुछ देर बाद दरवाजा खुला और अंदर से एक अधेड़ उम्र के आदमी ने बाहर झांका।

"सर ने बुलाया है!" अल्फ़ी ने उस आदमी से कहा।

"अल्फ़ी!" उस आदमी ने शिनाख्ती लहज़े में कहा।

"यस!" अल्फ़ी बोला।

"ओह! कम! कम! चीफ इज हैविंग एन अर्जेंट मीटिंग राईट नाउ! यू गाइज़ वेट अ व्हाइल!" उस आदमी ने दरवाजा पूरा खोलकर उनके लिए रास्ता छोड़ा। अल्फ़ी ने चैतन्य की ओर मुड़कर साथ आने का इशारा किया और फिर आगे बढ़ गया। चैतन्य भी उसका अनुसरण करते हुए उसके पीछे गया था। अंदर

आकर वो दोनों ही दरवाजे से थोड़ा आगे आकर रूक गए और इंतजार करने लगे क्योंकि उस कमरे का एक हिस्सा लकड़ी की
बनी आड़ के दूसरी तरफ भी था, जहाँ दो लोग बहस करते दिखाई दे रहे थे।

समय गुजारने के लिए चैतन्य ने चारों ओर नज़रें घुमानी शुरू की। वो एक छोटा सा मीटिंग रूम था, जो उस मेंशन के दूसरे हिस्सों की तरह ही अपनी वैभवगाथा खुद सुना रहा था। कमरे में रोशनी के लिए गैस के लैंप रखे हुए थे, जो यकीनन रात को जलाए जाते होंगे। तेल से जलने वाले बड़े-बड़े लाइटस्टैंड भी कमरे की शोभा बढ़ा रहे थे। दीवारों में कुछ तस्वीरें भी लगी हुई थीं। महंगे और नक्काशीदार फर्नीचर भी उस जगह की खूबसूरती को बढ़ा रहे थे। अल्फ़ी चुपचाप खड़ा हुआ था, मगर ना जाने क्यों चैतन्य को वहाँ इस तरह खड़ा होना रास नहीं आ रहा था।

"अल्फ़ी! कितनी देर लगेगी? यहाँ अच्छा नहीं लग रहा मुझे।" चैतन्य ने थोड़ी बेचैनी से कहा।

"क्यों? क्या हो गया?" अल्फ़ी ने उसकी ओर देखकर कहा।

"बस ऐसे ही!" चैतन्य ने अपने दिल की बात दिल में ही रखी।

"वेट! वेट! देखो सर किसी से बातें कर रहे हैं। बस कुछ देर और।" अल्फ़ी ने चैतन्य को समझाते हुए कहा।

"बात कर रहे हैं!" चैतन्य ने अपनी ऑखें सिकोड़ कर सिर थोड़ा आगे करते हुए उन दोनों को देखा और फिर अपना सिर पीछे खींचते हुए बोला, "हम इसे बहस करना कहते हैं।"

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी के होठों पर मुस्कुराहट आई जिसे उसने होंठों को भींचकर रोका था और एक बार फिर से उसी तरह खड़ा हो गया। चैतन्य ने एक उखड़ी सी नज़र उस पर डाली और फिर सिर झुकाकर
अपने पैरों की ओर देखने लगा। ख्यालों को एक बार फिर से अनामिका का ऑसुओं में भीगा चेहरा परेशान करने लगा था। वो उसी के ख्यालों में ही डूबा रहता, मगर सामने से आती हुई तेज आवाज ने उसके ख्यालों की कड़ी को तोड़ा था। उसने सामने देखा, तो लगभग उनकी उम्र का ही एक युवक तेज आवाज में बोलता हुआ उनकी ओर आ रहा था। उसे आता देखकर अल्फ़ी और चैतन्य दोनों के ही ढीले पड़े शरीर चुस्त हुए थे।

चैतन्य ने देखा.... वो कोमल चेहरे पर कठोरता चढ़ाए हुए एक कम उम्र युवक था। उसकी घनी भौंहों के नीचे दो ऑखें जैसे जल रही थीं और उन ऑखों में नरमी का कतरा नाम का भी नहीं था। वो अपने उग्र तेवरों के साथ बहुत ही खड़ूस और बत्तमीज लग रहा था। वो युवक उसी तरह धड़धड़ाता हुआ आया और अपने हाथों से अल्फ़ी और चैतन्य को झटके से ढकेलता हुआ उनके बीच से होकर कमरे से निकल गया। जिस तरह से उसने दरवाजे को जोर से पटककर बंद किया... साफ पता चल रहा था कि वो बहुत ही गुस्से में था।

"एडवर्ड अल्फ्रेड वॉकर!" चैतन्य के ज़हन में नाम के साथ सुबह की तस्वीरें भी उभरी, जहाँ वो अपने पिता के साथ बहस कर रहा था। चैतन्य की नज़रें उस बंद दरवाजे से घूमकर सामने की ओर गई, जहाँ सर विलियम अल्फ्रेड वॉकर भी अपने चेहरे पर परेशानी लिए उसी दरवाजे को घूर रहे थे। कुछ पल दरवाजे को घूरने के बाद उनकी नज़र अल्फ़ी और चैतन्य पर पड़ी। उन्होंने एक गहरी साँस ली और फिर

अंदर की ओर चले गए। चैतन्य ने एक नज़र अल्फ़ी पर डाली, जो अब तनकर खड़ा हुआ सामने की ओर देख रहा था। एक मिनट के बाद ही वही अधेड़ व्यक्ति उनके पास आया और बेहद विनम्रता से बोला, "कम! चीफ इज वेटिंग फॉर यू!"

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी ने अपना चेहरा हल्के से हिलाया और फिर चैतन्य को साथ आने का इशारा किया। चैतन्य किसी आज्ञाकारी बच्चे की
तरह उसके पीछे चल दिया। हालांकि अब दिमाग में अनामिका की जगह कुछ नई चीजों ने ले ली थी। लकड़ी से बने उस आड़ के दूसरी ओर जाते ही एक बार फिर से चैतन्य की ऑखें फैली थीं। वो जगह जन्नत के एक छोटे से टुकड़े की तरह लग रही थी। कम से कम आशुतोष की लाइब्रेरी में लंबा समय गुजारने के बाद उसके लिए तो थी।

कमरे में एक ओर किताबें बड़े ही करीने से रेक्स में रखे हुए थे। पास ही एक आरामदायक कुर्सी रखी हुई थी और सामने बड़ी सी जमीन से छत
तक लगी हुई खुली खिड़की थी, जिसमें धातु के ग्रिल लगे हुए थे। खिड़की के बाहर हरे-भरे बगीचे की झलक दिल और दिमाग को सूकून देने के लिए काफी थी।

"आओ! आओ!" एक ओर से आवाज आई। अल्फ़ी और चैतन्य की नज़र उस तरफ गई। सर विलियम अपने हाथ में एक बॉक्स लिए खड़े थे। वो उसे लिए हुए ही उन दोनों की ओर आए और फिर वहाँ रखी कुर्सी पर बैठ गए। बॉक्स को उन्होंने पास के नक्काशीदार स्टूल पर रखा।

"अल्फ़ी! थैंक्यू! नाऊ यू कैन गो!" सर विलियम ने अल्फ़ी पर एक मुस्कुराहट भरी नज़र डालते हुए कहा।

सर विलियम की बात सुनकर चैतन्य को एक झटका सा लगा था। उसे इस बात की उम्मीद नहीं थी कि उसे यहाँ अकेले सब संभालना पड़ेगा और ऐसा होते ही उसने उन सभी देवी-देवताओं के नाम याचना भरे स्वर के साथ मन में दोहरा लिए... जिनसे उसे मदद की दरकार थी।

अल्फ़ी ने अपने सिर को एक हल्का सा झटका दिया और फिर चैतन्य पर एक नज़र डालता हुआ वहाँ से बाहर चला गया। चैतन्य खाली-खाली ऑखों से सर विलियम की ओर देख रहा था। दरअसल उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अब वो सामने वाले से क्या कहेगा? कैसे कहेगा? क्योंकि ऐसे हालात का सामना करने का ख्याल भी उसके दिमाग से कोसों दूर था। वो तो अल्फ़ी से दोस्ती कर अपने मतलब के फल तोड़ने के लिए उसके मजबूत कंधों का सहारा ले रहा था। वो खुद को बुरी तरह से फँसा हुआ महसूस कर रहा था और अब स्थिति बिगड़ने पर आगे की जाने वाली योजना तैयार करने की नाकाम कोशिश कर रहा था।

"चैटन्य! एम आई राईट?" सर विलियम के सवाल ने उसके काम करते दिमाग को आवाज लगाई।
"येस सर!" चैतन्य ने अपने ख़ुश्क हुए होंठों पर ज़बान फेरते हुए कहा।

"टुम सोच रहे होगे... कि हमने टुमको... इस टरह... अकेले... यहाँ... क्यों बुलाया है?" सर विलियम ने हर एक शब्द पर वज़न डालते हुए कहा और चैतन्य की ओर पीठ करके खिड़की से बाहर की ओर देखने

लगे।

"ज... जी!" चैतन्य के होंठों से निकला।

"बिकॉज... हम जानटे हैं कि... टुम कौन हो?" सर विलियम ने कहा और ये सुनते ही चैतन्य के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगी।

"जी! जी मैं समझा नहीं!" अपने होश को वापस ठिकाने पर लगाते हुए चैतन्य ने कहा।

"भायु-रक्चक!" सर विलियम ने अपने सिर को चैतन्य की ओर हल्का सा घुमाकर कहा और इस बार चैतन्य की सारी घबराहट उड़न-छू हो गई। एकदम से ही उसे अपनी अहमियत, ताकत और ओहदा याद आया और उसने उस भरम के शीशे के चटकने की साफ आवाज सुनी जो उसने अपने और सभी के बीच खड़ी कर रखी थी।

"आप क्या कह रहे हैं? मेरी समझ में नहीं आ रहा है।" चैतन्य ने एक बार फिर से सब संभालने की कोशिश की।

"सब.... समज रहे हो और.. जो नई समज पाए... वो बाट... हम समजा देटे हैं।" सावधानी से कहते हुए सर विलियम ने अपना सीधा हाथ चैतन्य की ओर बढ़ाया और उसकी उंगलियाँ चैतन्य के सामने कर दीं। उनकी ऊंगली में चमकते हरे पत्थर को चैतन्य ने बड़ी ही आसानी से पहचान लिया था। आखिरकार उसके सामने ही डॉ. अनंत ने यही हरी अंगूठी
आशुतोष को दी थी।

"पृथ्वी-रक्षक! आप पृथ्वी रक्षक हैं।" चैतन्य ने उनकी अंगूठी को अपनी फैली हुई ऑखों से देखते हुए बेयकीनी से कहा।

"यस माई ब्वाए! और... अब टुम समज ही... गए होगे... कि हम टुम्हें कैसे जानटे हैं!" सर विलियम ने चैतन्य की ओर उत्सुक नज़रों से देखते हुए कहा।

"कहिए! मैं सुन रहा हूँ!" चैतन्य ने हथियार डालते हुए कहा।

और फिर एक नया ही अध्याय चैतन्य के सामने खुलता चला गया, जिसने उसके बचे खुचे होश भी उड़ा दिए थे और दिल को दहलाने लगा था ये ख्याल कि क्यों सत्ता, ताकत और वर्चस्व की ये लड़ाई रक्त से सींची जाने वाली थीं?

चैतन्य जब अपने कमरे में वापस आया, तो अल्फ़ी वहॉ मौजूद नहीं था। वो ढेर सारे ख्यालों और सवालों के साथ वहीं बैठ गया। एक तूफान था, जो उसके दिल और दिमाग में उठा हुआ था। कहाँ वो एक सवाल का जवाब खोजने की जुगत लगा रहा था और अब इस तूफान के बीच सवालों के पुलिंदे उसके सिर पर रख दिए गए थे।

बकौल सर विलियम... आठ सौ साल पहले एक पिशाचिनी, जिसने छद्म पिशाच साधना से अकूत काली शक्ति हासिल कर ली थी... उसे बड़ी ही मुश्किल से तांत्रिकों के एक समूह, जिसकी अगुवाई तांत्रिक श्रेष्ठ सोमदत्त कर रहे थे... ने नर्क के द्वार के पीछे क़ैद किया था। चूंकि वो एक पिशाचिनी थी, इसलिए उस द्वार की सुरक्षा की जिम्मेदारी पिशाच समुदाय को मिली, जो तांत्रिक समुदाय के सहयोग से पिछले आठ सौ सालों से ये काम बखूबी करते आ रहे थे।

चैतन्य ने जब सर विलियम से सर्वशक्तिमंडल के बारे में पूछा तो उन्होंने
बताया कि इस जादुई दुनिया के संतुलन को बनाए रखने के लिए इस सभा का निर्माण किया गया था, जिसमें सभी समुदायों के कुछ शक्तिशाली सदस्यों को चुना जाता है, जिससे कुछ भी ग़लत होने पर उस समस्या को सुलझाया जा सके। दूसरे शब्दों में कहें तो इस जादुई दुनिया की कानून और न्याय व्यवस्था इस सभा के हाथों में थी। चूंकि इस दुनिया में बहुत से छोटे-बड़े समुदाय हैं, इसलिए उन सभी समुदायों से इस सभा के लिए सदस्य चुने जाते हैं, ताकि समय आने पर सभी समुदायों को अपना पक्ष रखने का मौका मिले और न्याय सही तरीके से हो सके।

और रक्षक? यदि सर्वशक्तिमंडल सब कुछ संभाल सकता था, तो रक्षकों की क्या जरूरत थी? चैतन्य का ये सवाल भी कौतूहल से भरा हुआ था। जवाब में सर विलियम ने बताया कि सर्वशक्तिमंडल कानून और न्याय व्यवस्था संभालने के लिए थी। पर इससे पहले जो चीज आती है... वो है सबकी सुरक्षा और इसी के लिए रक्षकों की नियुक्ति की गई। पाँच तत्वों से बनी इस दुनिया को इन्हीं तत्वों की शक्तियों से संभालने की व्यवस्था की गई और अस्तित्व में आया नियति पात्र! नियति पात्र में ही रक्षकों के सही चुनाव की शक्ति होती थी और उसके चुनाव पर कभी भी... किसी ने भी... ऐतराज नहीं जताया क्योंकि ये नियति पात्र सभी समुदायों की सम्मिलित शक्तियों के सम्मिलन से बना था।

इतना सब जानने के बाद चैतन्य के दिमाग में ये सवाल कुलबुलाने लगा था कि जब सब कुछ इतना नियंत्रित है, सुनियोजित है... तो फिर समस्या क्या हुई? कहाँ हुई? कि अतीत का ये हिस्सा इतिहास से ही मिटा दिया गया।

और चैतन्य ने अपनी इस जिज्ञासा को जाहिर करने में बिल्कुल भी देरी नहीं की, जिसके जवाब में सर विलियम ने बताया कि पिछले बीते दस-पंद्रह सालों से एक अफवाह बड़े जोरों से फैली हुई है कि उस नर्क के द्वार के पीछे जो पिशाचिनी की शक्तियाँ कैद है... वो वास्तव में एक डायन की थीं। मतलब कि वो पिशाचिनी बनने से पहले एक डायन थी और
इसी की वजह से डायन समुदाय भी उस नर्क के द्वार की सुरक्षा व्यवस्था में अपनी भागीदारी चाहता है... बिल्कुल पिशाचों की तरह और पिशाच समुदाय इसके लिए तैयार नहीं क्योंकि वो अधिकार उनके पास सदियों से है। वो अपना अधिकार छोड़ने या बाँटने को बिल्कुल भी तैयार नहीं है। बस इसी अधिकार की लड़ाई ने दोनों समुदायों को एक दूसरे का विरोधी बना दिया है और इन बीते कुछ सालों में ये विरोध एक-दूसरे के रक्त का प्यासा हो चुका है।

"तो क्या नर्क के द्वार के पीछे डायन के होने की बात सिर्फ अफवाह है? या फिर इसमें कोई सच्चाई है।" चैतन्य के सवाल अपनी संख्या बढ़ा रहे थे। जवाब में सर विलियम ने बताया कि जब ये अफवाह अपना जोर पकड़ने लगी तो पिशाच समुदाय ने गुप्त रूप से इस बात की पड़ताल करवाई और अतीत की गहराईयों से ये बात निकलकर आई कि ये अफवाह बिल्कुल सही थी। वो कोई डायन ही थी, जिसने छद्म पिशाच साधना के द्वारा वो पैशाचिक शक्तियाँ हासिल की थी। अब बात बाहर आई तो सबको पता भी चल गई... और इससे डायन समुदाय के हक की आवाज को और भी बल मिला। मगर पिशाच

समुदाय एक बार फिर से उनकी हक़तराशी पर उतर आया। पिशाचों का कहना था कि वो एक डायन थी ये माना जा सकता है.. पर... उस नर्क के द्वार के पीछे अभी कोई डायन नहीं है। बरसों पहले ही उस समय के तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसकी आत्मा और शरीर को उन शक्तियों से पूरी तरह से अलग करके मुक्त कर दिया था। अब उस द्वार के पीछे कोई डायन नहीं... बल्कि सिर्फ पैशाचिक शक्ति मौजूद हैं, इसलिए डायनों को ये हक नहीं मिल सकता और यही है समस्या की जड़।

"और ये जड़ अब तक कितनी फैल चुकी है? चैतन्य का सवाल होंठों से फिसला।

सर विलियम इस सवाल पर मुस्कुराए और बताया कि समस्या बढ़ तो
बहुत गई है। सर्वशक्तिमंडल के लिए अपने सदस्यों का चयन करने के लिए सभी समुदायों के पास एक विशिष्ट व्यक्तित्व होता है, जो सर्वशक्तिमंडल के भावी सदस्यों की घोषणा अपनी सुविधानुसार करता है। पिशाचों के पास स्टार टैलर है और डायनों के पास दिव्याक्षि। फिर उनके नाम की घोषणा के साथ ही नियति पात्र ये तय करता है कि इस बार नर्क के द्वार की रक्षा तांत्रिक सदस्यों के साथ मिलकर कौन करेगा? जाहिर सी बात है कि हमेशा ये सदस्य कोई पिशाच होता था, मगर इस बार कुछ तो अलग हो रहा था। शुरू से ही नियति पात्र का झुकाव कभी पिशाच और कभी डायनों की तरफ हो रहा था, जबकि ऐसा पहले कभी भी नहीं हुआ और अगर इस बार नियति पात्र ने किसी डायन को चुन लिया तो पिशाच समुदाय के कुछ प्रतिष्ठित और साभ्रांत सदस्यों की गरिमा ये बर्दाश्त नहीं कर सकेगी।

"तो आप मुझसे क्या चाहते हैं?" चैतन्य ने एक स्वाभाविक सा सवाल किया, जिस पर सर विलियम ने उसे बताया कि वो चाहते हैं कि जो सही है... वही हो। अगर कोई डायन इसके लिए उपयुक्त है तो उसे ये अधिकार मिलना ही चाहिए। मगर पिशाच समुदाय उनकी इस सोच से इत्तफाक नहीं रखता। सर विलियम ने ये भी कहा कि उन्हें लगता है कि पिशाच समुदाय इस परिस्थिति को टालने की हर संभव कोशिश कर रहा है। वो कभी भी एक डायन.. जो कि एक औरत भी है.. को इस जादुई दुनिया का सर्वेसर्वा नहीं बनने देंगे। सर विलियम को ये भी शक था कि पिशाच समुदाय में अंदर ही अंदर इसको लेकर कोई षड्यंत्र भी रचा जा रहा था, जिसके बारे में उन्हें भनक तो मिली, पर पूरी जानकारी नहीं। अब वो चाहते थे कि चैतन्य इसमें उनकी मदद करें।

"पर आप मुझसे क्या मदद चाहते हैं और क्यों? आप मुझ पर इतनी आसानी से यकीन कैसे कर रहे हैं? मैं तो यहाँ गलती से आ गया हूँ और यहाँ से निकलना चाहता हूँ। शायद आपको पता नहीं कि मैं... इस समय का नहीं हूँ। गलती से समय धारा पार करके यहाँ आ फँसा हूँ।"
आखिरकार चैतन्य ने अपनी पहचान उनके सामने जाहिर कर ही दी क्योंकि वो यहाँ की उलझनों में नहीं उलझना चाहता था। वो तो बस वापस जाना चाहता था।

"आई ऑलरेडी नो दिस!" सर विलियम ने धमाका किया।

"क्या? पर कैसे?" चैतन्य के होश हर लम्हे के साथ उड़ते जा रहे थे।

"टुम भायु-रक्चक हो! है ना!" सर विलियम ने कहा।

"जी!" चैतन्य ने बेझिझक कहा।

"यू नो दैट... भायु-रक्चक इज रेयर एमंग ऑल रक्चक। टुमे पटा है... क्यों?" सर विलियम ने कहा।

और चैतन्य को याद आया कि डॉ. अनंत ने भी उन सबको बताया था कि वायु-रक्षक सबसे विरले होते हैं। नियति पात्र ने हमेशा बहुत ही दुर्लभ स्थिति में उनका चुनाव किया है, इसलिए रक्षकों के इतिहास में बहुत कम वायु-रक्षक चुने गए थे। हालांकि उन्होंने इसका कारण नहीं बताया था और अब चैतन्य की निगाहें इस सवाल के जवाब के लिए सर विलियम की ओर उठी थीं।

और फिर सर विलियम ने जो जवाब दिया उससे चैतन्य लगभग शून्य की अवस्था में पहुँच गया था। उन्होंने बताया कि ये भविष्यवाणी बहुत पहले से हो चुकी है कि एक वायु-रक्षक समय की सीमाओं को पार कर आएगा और कई महत्वपूर्ण मौकों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएगा।

"फिर तो ऐसा दूसरे रक्षकों के साथ भी होगा। वो भी तो इस तरह आ सकते हैं।" चैतन्य ने अनामिका को याद करते हुए कहा।
"दिस कुड आल्सो हैपेन! बट बविस्या वानी में... बस... भायु-रक्चक के बारे में... कहा गया है। मे बी... उन आए हुए रक्चकों का पावर उस समय के डूसरे रक्चकों से कम होगा, इसलिए उन्हें मेंशन नई किया हो।" सर विलियम ने अनुमान लगाते हुए कहा।

"आपका मतलब है कि मैं... रक्षकों के इतिहास का सबसे पावरफुल वायु-रक्षक हूँ और इसी तरह बार-बार किसी भी समयकाल में कूदी मारता रहूँगा। ओ वाव! च्च्च्च्! नहीं! नहीं! हे भगवान! हाँ! यही सही है।" चैतन्य थोड़े बहके हुए से अंदाज़ में बोला।

"आई गेस इट्स बिकॉज... नियटि पाट्र ने अबी कोई बी भायु-रक्चक नई चुना है। इस समय कोई बी भायु-रक्चक नई है।" सर विलियम ने जवाब देते हुए कहा।

"और जल-रक्षक?" अनामिका को लेकर उसके मन में उठा सवाल बाहर आया।

"वो नियटि पाट्र ने चुन लिया है। सर्व.. छक्ति.. मंडल के मेंबर्स की अनाउंसमेंट के बाद रक्चकों की बी अनाउंसमेंट होगी। कोई डायन फैमिली से ही है।" सर विलियम ने कहा।

"सच में! अजीब है!" चैतन्य ने पहला वाक्य सर विलियम से और दूसरा वाक्य खुद से कहा था।

"मि. विलियम! अगर... मैं आपकी मदद करूं.. तो क्या आप मुझे वापस जाने में मदद करेंगे?" चैतन्य ने सारे मसले से अपना मतलब निकालते हुए कहा।
"मैं कोई प्रॉमिस नई कर सकटा। वो टो बविस्या वानी का स्टेटमेंट है। यू आर हियर ओन्ली टू डू योर ड्यूटी एज अ भायु-रक्चक एंड यू हैव टू डू दिस। जहाँ टक वापस जाने की बाट है शायद... नियटि ने कोई ना कोई रास्टा डेफिनेटली बनाया होगा। बट यस! टब टक टुम्हारी सेफ्टी मेरी जिम्मेडारी है।" सर विलियम ने साफगोई से कहा।

"पर आपको डर किस बात का है?" चैतन्य ने सबसे महत्वपूर्ण सवाल किया।

उसका सवाल सुनकर सर विलियम ने उसे बताया कि उनके भविष्यवक्ता ने हाल में ही होने वाले भीषण रक्तपात की जानकारी उन्हें दी है, जो टाला नहीं जा सकता। इसके साथ ही उन्होंने कुछ और भी बहुत बुरा होने की बात कही है, जिसे टालना बहुत जरूरी है। उनका कहना है कि ये पिशाचों से संबंधित है और बहुत बुरा है। ऐसा नहीं होना चाहिए और इसी अनिष्ट को टालने के लिए उन्हें चैतन्य की मदद चाहिए।

"और वो अनिष्ट क्या है?" चैतन्य ने उन पर गहरी निगाहें डालते हुए कहा।

"छद्म पिसाच साधना! कोई पिसाच को खुस करने की कोसिस कर रहा है। हमें उसे ही रोकना है।" सर विलियम ने चैतन्य की पहले से अनुमानित बात को दोहराया।

"तो आप मेरी मदद क्यों चाहते हैं? मतलब कि... यहाँ और भी तो रक्षक होंगे। वो भी तो आपकी मदद कर सकते हैं। तो मैं ही क्यों?" चैतन्य ने अपने मन का संदेह बाहर निकाला।

"बिकॉज आई कान्ट ट्रस्ट एनी ऑफ देम! इस बार... सबी रक्चक... डायन और पिसाच फैमिली से ही हैं... और उन डोनों के पास ही ऐसा नई करने की वजहें हैं। अब टुम यहाँ आए हो, टो... मे बी... इसी लिए आए
हो। प्लीज़! डोन्ट डिसअपॉइंट मी!"

"अच्छा! और आपकी मदद करने के लिए मुझे क्या करना होगा?" सर विलियम की बात से हारकर चैतन्य एक आह भरते हुए बोला।

चैतन्य की ओर से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलते ही सर विलियम की बांछे खिल गई। उन्होंने बड़ी ही उम्मीद भरी आवाज में चैतन्य के साथ अपनी योजना साझा की और इस विषय में किसी को भी बताने से मना किया। उन्होंने ये भी ताकीद किया कि चैतन्य की असली पहचान भी किसी के सामने नहीं आनी चाहिए थी। चैतन्य ने बड़ी ही उलझी हुई मनोस्थिति में उनकी योजना सुनी। उनकी योजना सुनते समय चैतन्य के दिमाग में कई विचार आए, मगर उन्हें उसने जाहिर नहीं किया। आखिरकार उसने सर विलियम से कोलैबोरेशन करते हुए हाथ मिला ही लिए।

थोड़ी ही देर में वो अपने कमरे में बैठा हुआ इन सबके बारे में गंभीरता से सोच रहा था। उसने और अनामिका ने जितना सोचा था ये मामला उससे कहीं ज्यादा उलझा हुआ था।

"पर मैं ही क्यों? मतलब कि कोई और वायु-रक्षक क्यों नहीं? क्या मेरे इन सबसे जुड़े होने की भी कोई वजह होगी। आखिर हम सब इस दो सौ साल पुराने अतीत से कैसे जुड़ गए हैं? क्या इसलिए कि हम दोनों गलती से यहाँ आ गए हैं। पर नहीं! मेरे यहाँ आने की भविष्य वाणी तो पहले ही हो चुकी है। तो फिर अनामिका के बारे में क्यों नहीं हुई। वो भी तो जल रक्षक है और वो तो मुझसे भी ज्यादा ताकतवर है। तो क्या उससे भी ज्यादा ताकतवर कोई और है? हे भगवान! मतलब कि हमारे जाने का रास्ता वो जल रक्षक ही खोल सकती है क्योंकि छलद्वार और समय द्वार कोई जल रक्षक ही बना सकता है और सर विलियम के अनुसार इस समय वो कोई डायन है। मुझे अनामिका को खबर करनी होगी कि वो उस जल-रक्षक के बारे में पता लगाए। वही हमें यहाँ से बाहर निकाल सकती है।"
और फिर उसे याद आई अनामिका की और उन दोनों की योजना की। वो दोनों अल्फ़ी को ही तो रोकना चाहते हैं, ताकि वो पिशाच ना बने। पर वो तो भविष्य में पिशाच बनेगा ही बनेगा। उसी ने तो छद्म पिशाच साधना के द्वारा पैशाचिक शक्तियाँ हासिल की हैं और ये सोचते ही उसका दिमाग बुरी तरह से घूम गया और वो अपना सिर पकड़कर बैठ गया।

"आखिर चल क्या रहा है यहाँ? ये क्या झोल है? तो क्या सचमुच अनामिका और मुझे यहाँ आना ही था। पर क्यों? अल्फ़ी को पिशाच बनने से रोकने! पर अगर हम दोनों पहले से ही इस अतीत का हिस्सा हैं, तो इसका मतलब है कि वो पिशाच बनेगा ही। आखिर हम उसे रोक क्यों नहीं सके? अगर मैं उसे

धीरे-धीरे समझाऊं कि उसे इस तरह का कोई काम नहीं करना चाहिए, तो क्या वो नहीं मानेगा क्योंकि जो मैं अभी सोच रहा हूँ, वो तो मैंने अतीत में पहले भी सोचा होगा और उसे अपनी तरफ से रोका भी होगा, तो फिर ऐसा क्या हुआ होगा कि वो पिशाच बन ही गया? हे भगवान! कहाँ फँसा दिया आपने? और तो और इस सर विलियम ने तो किसी और पर ही नज़र रखने के लिए कहा है। क्यों? उस पर क्यों?"

और इस ख्याल के साथ उसके कानों में सर विलियम के शब्द गूंज उठे।

"चैटन्य! तुम्हें मेरे बेटे एडवर्ड पर नज़र रखनी है!"

अनामिका जब चैतन्य से मिलकर वापस लौटी, तो एक बार फिर से आईने की दहलीज पर ही ठिठक गई। परिधि कमरे में ही थी और पुराने कपड़ों के ढेर में बेचैनी से कुछ ढूंढ रही थी। माया की साथी रोमा उसके सिर पर खड़ी उस पर दबी हुई आवाज में भड़क रही थी। बीच-बीच में दोनों ही मुड़कर दरवाजे की ओर चोर निगाहों से देख रही थीं। अनामिका को एक बार फिर से उनकी इस गतिविधि ने चौंकाया था। उसने ऊंगली डालकर अपने कानों का सिग्नल ठीक किया और उनकी ओर मोड़ा। आवाजें बहुत ही धीमी थीं, इसलिए अनामिका की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। फिर भी उसने अपनी कोशिश जारी रखी क्योंकि कुछ और तो वो कर नहीं सकती थी। और फिर... या तो.. उसके सुनने की क्षमता बढ़ी या फिर हड़बड़ाहट और उतावलेपन में उन दोनों के बोलने की। अनामिका के कानों तक हैरान करने वाले कुछ शब्द पहुँचे।

"अरे जल्दी करो! अभी तक नहीं मिला?" रोमा ने बहुत ही कुढ़न के साथ कहा।

"मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने यहीं रखा था।" कमर पर हाथ रखकर खड़े होते हुए परिधि मायूसी से बोली।

"ये जगह थी क्या उसे रखने की?" रोमा ने बहुत ही चिड़चिड़ाहट के साथ
कहा।

"मुझे क्या पता था कि उसकी जरूरत पड़ेगी!" परिधि ने जैसे रोमा को सफाई देने की कोशिश की।

"अब क्या करेंगे? माया मार डालेगी हमें। आज से उत्सव शुरू हो रहा है और हम दोनों को माया के साथ ही रहना होगा, ताकि कुछ गड़बड़ ना हो। तुम भी अपने काम में लगी रहोगी। तो फिर ख्याल कौन रखेगा? याद रखना परिधि! अगर कुछ गड़बड़ हुई... अपने आप को बचाने का तुम्हें कोई मौका ही नहीं मिलेगा।" रोमा ने परिधि को धमकाते हुए कहा।

परिधि ने बड़ी ही नागवारी से उसकी ओर देखा। उसका चेहरा बुरी तरह खिन्न दिखाई दे रहा था। वो उसे कुछ कहने ही वाली थी कि अचानक उसे कुछ याद आया और उसके चेहरे की कसावट ढीली हुई। वो तेजी से एक ओर गई और जब वो वापस आई तो उसके हाथ में एक रंगीन स्कार्फ दिखाई दे रहा था।

"ये लो! इससे भी काम हो सकता है।" परिधि ने बड़ी ही रूखी आवाज में कहा।

"ओह! हाँ! ये.... ये माया को बहुत पसंद आया था।" उस स्कार्फ को पकड़ते हुए रोमा ने मुस्कुराकर कहा।

"हुआ ना तुम्हारा काम! अब चलो! इससे पहले कि... अनामिका आ जाए। जल्दी चलो!" परिधि ने एक बार फिर से दरवाजे की ओर निगाह डालते हुए कहा।

"और वो दवा!" रोमा ने परिधि को टोकते हुए पूछा।
"थोड़ा तो रहम करो। इससे काम चला लो। आखिर माया की जादुई ताकत किस काम की... अगर इतना भी ना कर सके तो।" परिधि चेहरे पर करूण भाव लिए याचना भरे स्वर में बोली।

"तुम्हें पता है कि सर्वशक्तिमंडल के नामांकित सदस्य अभी कुछ भी करेंगे, तो पकड़ में आ जाएँगे। वैसे भी बस तीन दिनों की बात है। वैसे भी मेन समस्या तो खत्म हो गई। अब रही इसकी बात... तो इसे भी देख लेंगे। और तुम तो खुश हो जाओ! आखिरकार तुम भी एक संपूर्ण डायन बनने वाली हो।" रोमा ने परिधि को बहलाने वाले लहज़े में कहा, जिस पर परिधि ने उलझन भरे चेहरे के साथ अपने निचले होंठ को दाँतों से दबाया था।

"चलो भी! अभी उस तरफ कोई नहीं है। सभी मुख्य हॉल की तरफ हैं। हमें जल्दी करना होगा।" रोमा ने परिधि को झिंझोड़ते हुए कहा।

परिधि ने एक गहरी साँस ली और फिर थके हुए कदमों से उस आइने के पास आई। अनामिका तेजी से पीछे हुई थी, मगर नज़रें उसी पर जमी थीं। परिधि ने सबसे नीचे की दराज से एक पुड़िया निकाली। उसने उसे खोला। हरे रंग के पत्ते की पुड़िया के अंदर कोई भूरी सी लेप जैसी चीज रखी थी। परिधि ने अपनी उलझन भरी ऑखों से उसे देखा और फिर अपने चेहरे और ऑखों को कठोर करते हुए वो पुड़िया अपनी मुट्ठी में भींच ली। अनामिका उसके चेहरे के बनते-बिगड़ते भावों से पशोपेश में पड़ी थी।

और फिर वो दोनों तेजी से उस कमरे से बाहर चले गए। अनामिका भी फुर्ती दिखाते हुए आईने से बाहर आई और फिर तेजी से बाहर निकल गई। वो उनके पीछे जाती उससे पहले ही एक लड़की ने उसे पीछे से आवाज़ लगाई और वो झटके से पीछे मुड़ी थी।

किचन में काम करने वाली एक लड़की उसे बुला रही थी। उसे देखते ही अनामिका ने अपने चेहरे और हालत को सही किया और फिर पीछे की
तरफ एक मायूस नज़र डालते हुए उस लड़की के साथ चली गई। किचन में दोपहर के खाने की तैयारी शुरू हो चुकी थी। अनामिका ने देखा कि किचन हेड ऐना वहाँ नहीं थी। उसने अपनी सहयोगी लड़कियों से पूछा, तो उन्होंने बताया कि मुख्य हॉल में सभी महत्वपूर्ण लोग इकट्ठे हुए थे और डाकिनी की अगुआई में शायद शाम के लिए कोई योजना बना रहे थे।

"डाकिनी!" अनामिका ने हैरानी से कहा।

"सचमुच! यकीन नहीं होता कि तुम सच में एक डायन हो। तुम डाकिनी को नहीं जानती। हमारी... हम जैसी सभी डायनों की मुखिया हैं वो। हमारे डायन समुदाय की सर्वेसर्वा!" उस लड़की ने अनामिका को

अपनी संदेह भरी ऑखों से तौलते हुए कहा।

"ओह!" अनामिका ने झेंप भरे चेहरे के साथ कहा।

"वैसे भी! वो आजकल बहुत खुश हैं। आखिर उनकी बेटी सर्वशक्तिमंडल की सदस्य बनने वाली है।" एक दूसरी लड़की बोली।

"उनकी बेटी मतलब?" अनामिका ने एक अनुमान के साथ पूछा।

"माया! और कौन? ठीक भी है। एक बेटी तो कोई काम की नहीं। कम से कम दूसरी ने तो इज्जत रखी उनकी।" पहली लड़की बोली।

"मैं कुछ समझी नहीं! किसके बारे में बातें कर रहे हो?" अनामिका एक बार फिर से उलझते हुए बोली।

"माया और परिधि! वो दोनों बहनें हैं ना!" पहली वाली लड़की ने अनामिका के सिर पर जैसे बम फोड़ा था।
"बहनें!" अनामिका के मुँह से बमुश्किल निकला।

"हाँ! वो भी जुड़वा! पर देखो! एक कहाँ सर्वशक्तिमंडल की सदस्य बनने वाली है और दूसरी...! वो तो डाकिनी ने उसे जन्म दिया है और उसे औषधियों का बहुत ज्ञान है, बस इसीलिए यहाँ है। वरना पता नहीं उसका क्या होता?" दूसरी वाली लड़की ने मुँह बनाकर कहा।

"वैसे भी सभी को लगता है कि उसका डायन परिवार में पैदा होना ही एक गलती है।" पहली लड़की थोड़ा मखौल उड़ाते हुए अंदाज में बोली।

"वो कैसे?" अनामिका ने पूछा।

"अरे यार! यहाँ रहोगी तो सब जान जाओगी। फिलहाल तो अपना काम करो क्योंकि डाकिनी बिल्कुल भी नहीं चाहेंगी कि... उनकी बेटी के इस महत्वपूर्ण दिन में किसी भी प्रकार से कोई कमी रह जाए।" दूसरी लड़की ने बात समेटते हुए कहा। पहली वाली लड़की ने भी बातों का सिलसिला तोड़ा था। वो दोनों अपने काम में लग गई थीं, मगर अनामिका का दिमाग अभी भी माया और परिधि के बीच ही घूम रहा था और तभी उसका ध्यान एक बार फिर परिधि और रोमा की ओर गया। उसने पता किया तो ऐना के आने में वक्त लगने वाला था। वो उन दोनों लड़कियों को डिश बनाने से पहले लगने वाली तैयारियों के बारे में बता कर वहाँ से निकल गई।

वो अनुमान लगाते हुए एक ओर बढ़ी। शायद उसे पता था कि वो दोनों कहाँ जा रहे थे और उस अनुमान का अनुसरण करते हुए वो उस खुफिया दरवाजे के सामने खड़ी थी। दरवाजा बंद था। अनामिका बहुत ही सावधानी से बिना कोई आवाज किए झुरमुटों के बीच छिपी हुई उस ओर देख रही थी। अगर वो समय से उनके पीछे जाती तो काफी संभावना थी कि आज उसे उस खुफिया दरवाजे का रहस्य पता चल जाता और ये सोचकर उसे और भी झुंझलाहट हो रही थी। समय थोड़ा और गुजरा तो अनामिका को लगा कि उसे गलतफहमी हुई होगी। वो दोनों कहीं और गए होंगे और ये सोचकर वो वापस जाने के लिए मुड़ी। वो कुछ कदम आगे ही गई थी कि उसे पीछे की ओर से कुछ आवाजें सुनाई दीं। वो तेजी से एक ओर गई और आड़ में खड़ी हो गई। दो-तीन सेकेंड बाद ही उसे रोमा और परिधि

आगे-पीछे आती दिखाई दीं। वो दोनों ही थोड़े परेशान से लग रहे थे। अनामिका को लगा कि शायद वो कुछ कहें तो उसे कुछ पता चले, पर वो दोनों उसी तरह परेशानी की हालत में आगे बढ़ गए और अनामिका अपना सिर धुनती रह गई। खुफिया दरवाजे का रहस्य एक बार फिर से रहस्य ही रह गया था या फिर शायद.... इसमें थोड़ा वक्त था।

****

चैतन्य उसी तरह सवालों में उलझा हुआ कमरे में बैठा हुआ था। अगर उनके अनुमान किसी और दिशा का रूख करने लगे थे, तो उन दिशाओं की जानकारी हासिल करना अब बहुत जरूरी हो गया था क्योंकि यहाँ से निकलने के बाद एक और जंग उनका इंतजार कर रहा था और यहाँ के लगातार बदलते हुए हालात उस जंग की सूरत भी बदल रहे थे।

"आखिर एडवर्ड क्यों? भविष्य में तो छद्म पिशाच के रूप में अल्फ़ी का नाम ही उन सभी के सामने आया था। फिर एडवर्ड क्यों? और भीषण रक्तपात से सर विलियम का इशारा किस तरफ है? क्या कोई बहुत बड़ी अनहोनी होने वाली है। उफ्फ! अगर वो इंसान... नहीं... इंसान नहीं.. वो पिशाच मुझे मिल जाए... जिसने इस समय का सारा इतिहास मिटाकर हम सबकी जिंदगी का चैन-सुकून मिटा दिया... तो सबसे पहले उसी कमबख़्त को ही मिटा दूंगा। जीना हराम कर दिया है। अनामिका के साथ मिलकर
शादी के जोड़े का रंग डिसाइड करने के टाइम में इन पिशाचों के साथ ऑख मिचौली खेलनी पड़ रही है।" अजीबोगरीब चेहरे बनाते हुए चैतन्य खुद से ही बातें कर रहा था।

"तुम कब आए?" चैतन्य के विचारों की कड़ी को अल्फ़ी की आवाज ने तोड़ा। उसने अल्फ़ी की ओर देखा, जो कमर पर हाथ रखे उसे ही घूरकर देख रहा था।

"हाँ! बस अभी-अभी ही!" चैतन्य ने चेहरे से उलझन को हटाते हुए कहा।

"चलो! ठीक है! वैसे भी अभ्यास के लिए निकलना था। आज रात से ड्यूटी शुरू। वैसे तुम्हें कौन सी ड्यूटी मिली है?" चैतन्य से सवाल करते हुए अल्फ़ी उसके पास बैठ गया।

"एडवर्ड अल्फ्रेड वॉकर पर नज़र रखनी है, वो भी उसे पता लगे बिना।" चैतन्य ने एक ठंडी साँस छोड़ते हुए कहा।

"जीजस क्राइस्ट! ये तो सबसे मुश्किल काम है!" अल्फ़ी ने उसे मुस्कुराती हुई ऑखों से देखते हुए कहा।

"ऐसा क्यों?" चैतन्य ने उसकी ओर देखकर पूछा।

"तुमने देखा नहीं.... शहजादे के मिज़ाज! बहुत ही बत्तमीज इंसान है वो। अपनी बातों और जिद के सामने वो अपने पिता को भी नहीं रखता है। मैंने तो इन चार महीनों में कभी भी उसे अपने पिता से

आराम और इज्ज़त से बात करते नहीं देखा। बेचारे!" अल्फ़ी ने अफसोस भरे शब्दों के साथ कहा।

"देख रहा हूँ कि.... तुम्हें मि. विलियम से बहुत हमदर्दी है। तुम्हें उन पर
गुस्सा नहीं आता। बेटे होकर भी तुम उन्हें पिता नहीं कह सकते।" चैतन्य ने उसके दिल को कुरेदा था।

"नहीं! मैं क्यों नाराज़ होऊंगा? उन्हें तो मेरे बारे में पता ही नहीं है और नाराज होने... नहीं होने का पहला हक़ मेरी माँ का था। जब वो कभी नाराज़ नहीं रहीं, तो इस बेवजह के हक़ का बोझ उठाना मैं जरूरी नहीं समझता।" अल्फ़ी ने बहुत ही आराम से अपनी बात कही।

"पर...ऐसा भी तो हो सकता था कि इस रिश्ते का पता चलने पर इतनी बड़ी और आलीशान विरासत में तुम एडवर्ड के साथ बराबर के हिस्सेदार होते।" चैतन्य ने उसके दिल में झांकने की कोशिश करते हुए कहा।

"पर मुझे ये चाहिए ही नहीं। देखो चैतन्य! मैं बहुत साधारण सा इंसान... हम्म... पिशाच हूँ। मेरी सोच... जरूरतें... ख़्वाहिशें सब बहुत साधारण हैं। मुझे एक साधारण सी नार्मल लाइफ चाहिए, जिसमें मैं और मेरी माया रहे। हम दोनों ही कितने खुश थे। सब बहुत अच्छा चल रहा था हमारी जिंदगी में। फिर ये सर्वशक्तिमंडल का मामला आया और फिर ना जाने क्या हुआ? कुछ समझ में ही नहीं आया।" अल्फ़ी ने खोए हुए से अंदाज़ में कहा।

"वैसे एक बात बताओ। तुम लोग पहली बार मिले कहाँ थे?" चैतन्य ने माया की पार्टी वाली बात याद करते हुए उससे पूछा और उसका सवाल सुनकर अल्फ़ी के होठों पर एक मुस्कुराहट उतरी।

"वो एक पार्टी थी, जब मैंने पहली बार उसे बिल्कुल करीब से देखा था। उसे अपने इतने करीब देखकर मैं जैसे पागल ही हो गया था। हम दोनों ने उस पार्टी में बहुत मस्ती की, साथ डांस किया और हाँ.... ड्रिंक भी! उसने कुछ ज्यादा ही पी ली थी उस दिन और मैं.... मेरे लिए तो उसका नशा ड्रिंक के साथ और भी नशीला हो गया था। रात की तो कुछ याद हम दोनों को ही नहीं थी, पर हमारी सुबह एक-दूसरे की बाहों में हुई थी। कितना नाराज हुई थी वो मुझ पर और मैं उसमें खोया हुआ उसके तीखे बोल अपने दिल के आर-पार कर रहा था।" अल्फ़ी खोए हुए से अंदाज़ में मुस्कुराते हुए इस तरह बोला, जैसे कि उन लम्हों को फिर से जी रहा हो।

"अच्छा!" सब सुनकर चैतन्य के मुँह से इतना ही निकला और फिर उसे
माया की भी इसी तरह की कही बातें याद आ गईं।

"चलो! दोनों की कोई चीज तो मिली। पर दोनों ने शादी कर ली... ये बात अभी भी हज़म नहीं हो रही।" एक बार फिर से चैतन्य अपने ही ख्यालों में उतरा था।

"चैतन्य! क्या हुआ? फिर से कहाँ खो गए?" अल्फ़ी ने उसे झिंझोड़ते हुए कहा और चैतन्य एक बार फिर से वापस आया।

"तो तुम दोनों के बीच प्यार कैसे हुआ?" चैतन्य ने अपनी दिलचस्पी दिखाते हुए पूछा।

"लंबी कहानी है। रात की महफ़िल के बाद बताऊंगा। अभी चलो! तैयारियाँ करनी हैं।" अल्फ़ी ने खड़े होते हुए कहा।

"देख रहा हूं कि तुम्हें बहुत इंतजार है शाम की महफ़िल का। मुझे तो लगा था कि तुम अपनी माया से मिलने की कोशिश करोगे।" चैतन्य ने थोड़ी हैरानी जताते हुए कहा।

"माया से ही तो मिलना है। आज शाम की महफ़िल में वो भी आएगी ना!" अल्फ़ी ने भावुक होते हुए कहा।

"क्या? आज शाम वो आएगी!" एक बार फिर से हैरानी ने चैतन्य का हाथ थामा।

"हाँ! आज की रात पिशाच समुदाय की ओर से पार्टी दी जाएगी। कल डायनों के बसेरे में पार्टी होगी और तीसरी रात सर्वशक्तिमंडल के भवन में। और उस तीसरी रात सारी घोषणाएँ की जाएँगी।" अल्फ़ी ने कहा।
"तो इसका मतलब है कि तुम्हारे पास बस दो रातें हैं माया से मिलने के लिए।" चैतन्य ने उसकी बातों से हिसाब लगाते हुए कहा।

"हाँ! और मैं उससे मिलकर ही रहूंगा।" अल्फ़ी ने अपनी मुट्ठियाँ कसते हुए कहा।

"और... अगर तुम उससे नहीं मिल पाए तो!" चैतन्य ने एक शंका जाहिर करते हुए कहा।

"ऐसा मत कहो। मुझे तो तुम्हारी गुड विशेज चाहिए। क्या तुम नहीं चाहते कि मुझे मेरा प्यार वापस मिल जाए?" अल्फ़ी ने हल्की सी नाराज़गी के साथ सवाल किया।

"क्यों नहीं? मैं हमेशा चाहूंगा कि तुम्हें... तुम्हारा प्यार मिल जाए। मैं तुम दोनों के लिए दुआ भी करूंगा। पर होता तो वही है ना... जो ऊपर वाला चाहता है।" चैतन्य ने कहा।

"तुम्हें पता है! मैं अपनी माया को पाने के लिए किसी भी हद तक जा सकता हूँ। मेरे पास और कुछ भी नहीं.... उसके और उसके प्यार के अलावा। उसे वापस आना ही होगा। चाहे मुझे इसके लिए सदियों उसका इंतजार करना पड़े। मैं उसके लिए सब कर सकता हूँ।" अल्फ़ी ने अपनी ऑखों में दीवानगी भरकर कहा और पहली बार चैतन्य को उसकी दीवानगी से डर लगा था।

चैतन्य को अब ये यकीन हो चला था कि अतीत में जो कुछ भी बुरा हुआ था, जिसकी वजह से सबका भविष्य भी शापित होकर रह गया... उन सबकी वजह माया और सिर्फ माया ही थी। माया अल्फ़ी के दिल को ठोकर मारकर आगे बढ़ चुकी थी और अल्फ़ी अभी भी उसी दोराहे पर अपनी दीवानगी के साथ उस धोखेबाज का इंतजार कर रहा था और
उसकी ये दीवानगी सभी की जिंदगी और खुशियों पर भारी पड़ने वाली थी। अब तो बस शाम की महफ़िल का इंतजार था, जिसमें बहुत कुछ अप्रत्याशित होने वाला था।

दोपहर के खाने के साथ ही शाम को पिशाचों की दावत के लिए भी एक ख़ास व्यंजन तैयार करना था, जो डायन समुदाय की तरफ से किसी भी दावत के निमंत्रण को स्वीकार करने का प्रचलित तरीका था। जाहिर सी बात है कि ये बहुत ही ख़ास होना था। इसलिए ऐना इसे खुद ही बनाने वाली थी। उसने इस काम में मदद के लिए चार-पाँच लड़कियों को चुना था। अनामिका भी उनमें से एक थी क्योंकि किसी को भी प्रभावित करना अनामिका को बखूबी आता था। फिलहाल तो उसे एक बार फिर से दिव्याक्षि के लिए दोपहर का खाना लेकर जाना था। वो सुबह के सदमे से काफी हद तक बाहर आ गई थी। चैतन्य ने भी उसे हर मौजूद तरीकों से जानकारियाँ बाहर निकालने के लिए कहा था और इसमें दिव्याक्षि बहुत ही महत्वपूर्ण किरदार हो सकती थी। अब बस अनामिका को जो भी करना था.... थोड़े धीरज के साथ करना था।

काम के बीच में चैतन्य ने उससे संपर्क करने की कोशिश की। अनामिका ने भी तुरंत मौका निकालकर उससे संपर्क किया और फिर दोनों ने ही अपनी जानकारियाँ कम से कम शब्दों में एक-दूसरे से साझा कीं, जिससे दोनों ही हैरत में पड़े थे।

"अनामिका! तुमने कहा था कि दिव्याक्षि दृष्टिहीन है। तुम उनके कमरे से कोई जानकारी नहीं निकाल सकती क्या? शायद वहाँ से किसी भी प्रकार
से उस डायन का पता चल जाए, जो अभी की जल रक्षक है। एक वही है... जो हमें यहाँ से बाहर निकाल सकती है।" चैतन्य ने दबी हुई आवाज में कहा।

"कोशिश करती हूँ। उन्हीं की थाली तैयार हो रही है। लेकर जाना है वहाँ। पर वो सच में बहुत अजीब हैं और डरावनी भी!" अनामिका ने थोड़े अनमने ढंग से कहा।

"हमें क्या करना है.... कौन कैसा है? हमें बस अपने मतलब से मतलब रखना है। तुम्हें उनसे ये जानकारी निकालनी ही होगी। कैसे? ये तुम बेहतर जानती हो। मुझे नहीं लगता कि कहीं और से कोई जानकारी मिलने वाली है। तुम्हें उन्हीं को अपने भरोसे में लेना होगा।" चैतन्य ने अनामिका के अंदर उत्साह भरते हुए कहा।

"हाँ! ठीक है।" अनामिका ने उलझी हुई आवाज में कहा।

"अनु!" चैतन्य ने कहा।

"हाँ!" अनामिका बोली।

"तुम आओगी शाम को मेंशन की पार्टी में?" चैतन्य ने पूछा।

"मुझे नहीं पता। यहाँ के नियम कायदे समझ से परे हैं। जो जिस खंड में काम करता है, उसे बस वहीं रहने की इजाजत है। हम उसके अलावा बसेरे के दूसरे हिस्सों में नहीं जा सकते, जब तक कि हमें इसकी अनुमति ना मिले। इसलिए तो इतनी समस्या हो रही है। तुम्हें पता नहीं कि अपने कमरे, किचन और किचन गार्डन के अलावा मैंने कुछ और देखा ही नहीं है।" अनामिका ने लाचारी जताते हुए कहा।
"इसलिए तो कह रहा हूँ कि दिव्याक्षि पर ध्यान केंद्रित करो। जो भी मिलेगा, उसी के पास मिलेगा।" चैतन्य ने एक बार फिर से अपनी बात दोहराई।

"और वो दरवाजा!" अनामिका ने उसे याद दिलाते हुए कहा।

"मेरी बात मानो और उसे अभी छोड़ दो और दिव्याक्षि पर ध्यान लगाओ। एक साथ सब जगह ध्यान केंद्रित नहीं कर सकती तुम। सही यही रहेगा कि हम एक-एक करके कदम आगे बढ़ाएँ। मैं भी यहाँ की घटनाओं पर नज़र रखे हुए हूँ। हमें संभलकर काम करना होगा। हम जो सोच रहे थे, मुझे नहीं लगता कि सब कुछ वैसा ही है। तो जो है... उसके बारे में जानना ही होगा। समझी!" चैतन्य ने कहा।

"हम्म!" अनामिका ने हुंकारी भरी।

"अनामिका!" एक आवाज ने अनामिका का ध्यान तोड़ा। वो तेजी से आवाज की दिशा में मुड़ी, तो सामने किचन में काम करने वाली लड़की को पाया, जो उसे हैरानी से देख रही थी।

"ये आड़े-तिरछे चेहरे क्यों बना रही हो?" वो लड़की उसके चेहरे पर ही नज़र रखे हुए उसके पास आई थी।

"कौन मैं? नहीं तो!" अनामिका ने अपने चेहरे के भावों को ठीक करते हुए कहा।

"छोड़ो! चलो! दिव्याक्षि के पास जाना है। उसके बाद तुम्हें ऐना की भी मदद करनी है।" वो लड़की उसे अपने पीछे आने का इशारा करते हुए बोली। अनामिका ने राहत की साँस ली और उसके पीछे चल दी। जल्द ही एक बार फिर वो उसी खोह के सामने खड़ी थी। उन लड़कियों ने अपने
हाथ का सामान भी अनामिका की थाली के ऊपर रख दिया। अनामिका एक बार फिर से उस खोह के अंदर घुस गई और फिर एक बार फिर वो उस दरवाजे के सामने थी। उसने दरवाज़े को खटखटाने के लिए हाथ उस रखा ही था कि ओ दरवाजा एक हल्की सी चरमराहट के साथ खुल गया। अनामिका का हाथ हवा में ही रह गया। उसने एक साँस छोड़ी और अंदर दाखिल हो गई। पहली बार की तरह इस बार भी कमरा पूरी तरह से खाली था। उसने चारों ओर नज़रें दौड़ाई। कोई भी नहीं था।

"आपका खाना लाई हूँ!" अनामिका ने तेज आवाज में कहा।

मगर फिर से कोई जवाब नहीं आया। उसने खाने को पत्थर की मेज पर रखा और इधर-उधर नज़र घुमाने लगी। इसी दौरान उसकी ऑखों से कुछ जानी-पहचानी सी चीज टकराई। वो उसके पास पहुँची।

उसकी ऑखों के सामने शीशे की बनी छोटी-छोटी शीशियाँ रखी थीं, जिन पर धातु की चेन लगी हुई थीं। अनामिका को ऐसा लग रहा था कि उसने इस शीशी को पहले भी कहीं देखा है, पर कहाँ? बहुत कोशिश करने पर भी उसे याद नहीं आ रहा था। उसने एक शीशी उठाई और उसे ग़ौर से देखने लगी और उसी दरमियान उसे ऐसा लगा कि उस शीशी के अंदर कुछ
हवा जैसा भरा हुआ है। जब उसने उस शीशी को हिलाया तो उस शीशी के अंदर नीले रंग के कुछ धागे जैसे उभरे और फिर अंदर की हवा में घुल गए। वो अभी उस शीशी की पहेली में ही उलझी हुई थी कि पीछे से आई आवाज ने उसे अंदर तक सहमा दिया।

"आ गई तू!"

सीने पर हाथ रखे वो तेजी से पीछे पलटी। वो उसके सामने खड़ी थी।

अनामिका ने अपने सूखते हुए गले को गीला किया और फिर धीरे से उस शीशी को अपनी पुश्त की तरफ अपनी हथेली में दबा लिया ।

"क्या देख रही है? इसे जीवपात्र कहते हैं। बताया तो था तुझे! भूल गई!" सामने खड़ी दिव्याक्षि ने उन शिशुओं की ओर इशारा करते हुए कहा।

"मुझे! मुझे... कब बताया?" अनामिका ने चौंकते हुए कहा।

"उपहास कर रही है। बताया तो था कि इसमें आत्माओं का संग्रह करते हैं। इतनी जल्दी भूल गई।" इस बार दिव्याक्षि ने अजीब सी काँपती हुई आवाज में हँसते हुए कहा।

मैं! नहीं तो!" अनामिका खुद में उलझी हुई बोली।

"छोड़! आ इधर! तुझसे कुछ बातें करनी हैं।" अनामिका का हाथ पकड़कर वो उसे उस पत्थर की मेज तक ले गई। अनामिका भी कुछ जान पाने की हसरत से उसके साथ हो ली।
"और बता! कैसा है तेरा पिशाच? तू उसी के पास गई थी ना! उसे खबर सुनाई। वो तो बहुत खुश हुआ होगा।" दिव्याक्षि ने अपनी बंद ऑखों से ही उसे निहारते हुए कहा।

"मैं! न... नहीं तो। वैसे कौन सी खबर?" झटके खाती हुई अनामिका ने दिव्याक्षि से पूछा।

"नहीं! तो फिर! तूने क्या फैसला किया है?" दिव्याक्षि ने कहा।

"किस बारे में?" अनामिका थोड़ा और अंधेरे में उतरी।

"शक्तिमंडल के बारे में! और क्या? तू जानती है कि ये डायनों के इतिहास का एक स्वर्णिम अवसर है, जब कोई डायन इस सर्वशक्तिमंडल की मुखिया बनने वाली है। मैं जानती हूँ कि ये तेरे लिए मुश्किल है, पर मुश्किलें सुलझाने से सुलझ भी सकती हैं। तुम दोनों को ही थोड़ा सब्र करना पड़ेगा।" दिव्याक्षि ने बड़े ही प्यार से कहा।

"हम दोनों को! किसकी बात कर रही हैं आप?" दिव्याक्षि की रहस्यमई बातों के जाल में और भी उलझती हुई अनामिका बोली।

"तेरी और उस... अल्फ़ी की।" बोलते हुए दिव्याक्षि ने अल्फ़ी का नाम बहुत ही ऐहतियात से लिया था।

"एक मिनट! मुझे लगता है कि आप मुझे कोई और समझ रही हैं। मैं... माया नहीं हूँ। मैं.... मेरा नाम अनामिका है।" अनामिका घबराकर खड़ी होते हुए बोली।

"क्या? ऐसा नहीं हो सकता। मैं कभी धोखा नहीं खा सकती। तू माया ही है।" दिव्याक्षि भी तमतमाकर खड़े होते हुए बोली।
"पर आपको धोखा हुआ है। मैं माया नहीं हूँ। अनामिका हूँ और एक रोज पहले ही यहाँ आई हूँ। चाहें तो आप किसी और से भी पूछ लें।" अनामिका ने उसे यकीन दिलाने की कोशिश करते हुए कहा।

"तुझे क्या लगता है? मेरी ऑखें नहीं हैं, तो मुझे बेवकूफ बना लेगी। मैं जो देख सकती हूँ... कोई और नहीं देख सकता है। मैं किसी को उसकी शक्ल-सूरत से नहीं उसकी आत्मा से पहचान सकती हूँ। तू ही माया है! माया! क्या कहती थी तू... अल्फ़ी की माया!"

और ये सुनते ही अनामिका का शरीर सिर से पैर तक सिहर उठा। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वो दिव्याक्षि को कैसे यकीन दिलाए कि वो अनामिका है... माया नहीं।

"तू लौट आई! मैं जानती थी कि तू वापस आएगी। तू कुछ बिगड़ने नहीं देगी। रोक ले! जो भी हो रहा है... उसे! इससे पहले की सब तबाह और बर्बाद हो जाए। वरना ये समय हमेशा अपनी काली परछाई लेकर सबका पीछा करेगा।" दिव्याक्षि ने अनामिका के कंधे पकड़कर उसे झिंझोड़ते हुए कहा।

"क्या बर्बाद हो जाएगा? कौन बर्बाद कर देगा?" अनामिका ने परेशान लहज़े में पूछा।

"तू! तू बर्बाद कर देगी। तू ये जिम्मेदारी छोड़ नहीं सकती। अगर किसी और को तेरी जगह मिल गई... तो अनर्थ हो जाएगा।" दिव्याक्षि ने लरजती हुई आवाज में कहा।

"कैसा अनर्थ?" अनामिका की ऑखें और भी सिकुड़ी थीं।
"वो आ जाएगा!" दिव्याक्षि थोड़ी फुसफुसाती हुई आवाज में बोली।

"कौन?" अनामिका ने संजीदगी से पूछा।

"छद्म पिशाच! मैं सुन सकती हूँ उसके कदमों की आहट। वो बहुत करीब है। वो अगर आ गया... तो वो पिशाचिनी भी नर्क के द्वार से बाहर आ जाएगी। सब कुछ बर्बाद हो जाएगा... सब कुछ खत्म हो जाएगा। इस दुनिया में पिशाचों का राज होगा।" दिव्याक्षि ने अपने दोनों हाथ हवा में उठाते हुए चेतावनी भरे लहजे में कहा।

"छद्म पिशाच! क्या आप सचमुच सुन सकती हैं?" अनामिका ने भयभीत होते हुए कहा।

"हाँ! और अब तेरे ही हाथ में है सब रोकना। वो अग्नि है और तू जल है। उसे तू ही रोक सकती है माया। बस तू!" दिव्याक्षि ने उसकी ओर अपनी बंद निगाहें घुमाते हुए कहा।

"जल! आपका मतलब है कि जल रक्षक! माया जल रक्षक है!" अब तो अनामिका सदमे की हालत में पहुँच चुकी थी।

"क्या माया-माया लगा रखा है? तू ही है माया! और याद रखना कि... अगर कुछ भी ग़लत हुआ तो सब तेरे सिर होगा।" दिव्याक्षि ने इस बार बुरी तरह से दहाड़ते हुए कहा।

उनका रौद्र रूप देखकर अनामिका बुरी तरह से घबरा गई। अब उससे यहाँ नहीं रूका जा रहा था। इस मुलाकात के लिए जमा की गई उसकी सारी हिम्मत फिलहाल खत्म होने की कग़ार में थी। वो किसी तरह खुद को संभालते हुए दरवाजे की ओर भागी।
"कहाँ जा रही है? वो सातवां जीवपात्र उसकी जगह वापस रखकर जा!" एक बार फिर से दिव्याक्षि ने उखड़े हुए लहजे में कहा।

अनामिका के भागते कदम एक झटके में रूके। उसने अपने हाथ की मुट्ठी में क़ैद उस शीशी को देखा और फिर सहमी हुई सी पीछे मुड़कर उस जगह गई, जहाँ बाकी शीशियाँ रखी हुई थीं। उसने सावधानी से वो शीशी रखी और वापस जाने को मुड़ी ही थी कि अचानक वो एक बार फिर शीशियों की ओर मुड़ी।

"सातवां जीवपात्र! पर यहाँ तो.... छ: ही हैं।" अनामिका हैरानी से उन शीशियों को देखते हुए फुसफुसाई।

"क्या हुआ? अब क्यों रूक गई है?" दिव्याक्षि ने बहुत ही उखड़े लहज़े में कहा। उनका हर पल और भी बिगड़ता हुआ लहज़ा अनामिका को और भी डरा रहा था। वो तेजी से दरवाजे की ओर भागी। यहाँ कुछ देर और रूकना उसकी मानसिक स्थिति को और भी हिला सकता था। पीछे से उसे दिव्याक्षि की अस्पष्ट आवाजें सुनाई दे रही थीं, जिसे सुनकर उसके पैर और भी तेजी से बाहर की ओर भागे थे। कहाँ वो अपने सवालों के जवाब ढूंढने इतनी हिम्मत करके यहाँ आई थी और अब सिर दर्द की बोरी लादकर जा रही थी। जब वो बाहर आई तो बाहर ही बैठी दोनों लड़कियाँ ने उसके चेहरे के उड़े हुए रंगों को देखकर आपस में ऑखों से कुछ बातें की। अनामिका उन पर ध्यान दिए बिना आगे लगभग भागती हुई जा रही थी।

"क्या हुआ? दिव्याक्षि ने तुम्हें भी डरा दिया क्या?" एक लड़की बोली।

उसकी बात सुनकर अनामिका झटके से पीछे मुड़ी थी। दोनों ही लड़कियों की मुस्कुराती हुई नज़रें उस पर ही टिकी थीं।
"तुम्हें भी मतलब!" अनामिका ने पूछा।

"अरे! वो सरकी हुई हैं। पता नहीं अचानक क्या-क्या बोलने लगती हैं? और जो उनकी बात नहीं मानता है... उस पर बुरी तरह से नाराज़ हो जाती हैं। इसलिए तो कोई भी उनके पास नहीं जाना चाहता। अब तुम यहाँ नई हो, तो तुमने हामी भर दी। अब तो तुम्हें ये जिम्मेदारी हर हाल में निभानी ही होगी।" दूसरी लड़की बोली।

"अच्छा!" अनामिका खोए हुए हालत में बोली।

"और नहीं तो क्या?" पहली लड़की ने आगे बढ़ते हुए कहा। दूसरी लड़की भी उसके पीछे हुई थी। अनामिका ने उन दोनों की ओर देखा और फिर तेजी से उनके पास पहुँची।

"अच्छा! ये बताओ कि माया और दिव्याक्षि के बीच कैसे संबंध हैं?" अनामिका ने उनके साथ-साथ चलते हुए कहा।

"बहुत ही बेकार! माया का तो कहना है कि दिव्याक्षि नहीं चाहती कि वो सर्वशक्तिमंडल की सदस्य

बने।" पहली लड़की बोली।

"क्या? पर दिव्याक्षि तो कह रही थी कि माया खुद इसका हिस्सा नहीं बनना चाहती।" अनामिका ने आश्चर्य जताया।

"अरे बाबा! सच कहूं तो इस बार क्या हो रहा है... हमारी भी समझ में नहीं आ रहा है। एक तो ये डायनों और पिशाचों की लड़ाई भी तूल पकड़ती जा रही है। कल लिलियन भी कह रही थी कि उसकी दीदी उसे यहाँ से दूर भेजना चाहती है।" दूसरी लड़की ने अपनी ऑखें नचाते हुए कहा।
"कौन लिलियन?" अनामिका ने पूछा।

"ऐना की छोटी बहन। उनसे पूरे बारह साल छोटी है वो।" दूसरी लड़की ने ही जवाब दिया।

"पर ऐसा क्यों?" अनामिका ने पूछा।

"क्या पता? बड़े लोगों की बात बड़े लोग ही जाने। ऐना ने तो यही कहा है कि लिलियन की शादी जर्मनी के किसी लड़के से तय हो गई है और वो चाहती हैं कि लिलियन यहाँ के झमेलों से दूर वहीं रहे। वहाँ ऐना के कुछ रिश्तेदार भी हैं।" पहली लड़की ने नीचे कूदते हुए कहा और फिर हाथ बढ़ाकर अनामिका को उतरने में मदद करने लगी।

"पर मुझे तो कोई और ही बात लग रही है।" दूसरी लड़की ने कहा।

"और वो क्या है?" अनामिका ने अपने सवाल जारी रखे।

"अरे वो एडवर्ड है ना! वो बहुत बवाल कर रहा है। वो तो यही नहीं चाहता कि सर्वशक्तिमंडल में कोई भी औरत हो। पता नहीं आज शाम की पार्टी में वो क्या करेगा? वो तो डायनों को अपने आसपास भी बर्दाश्त नहीं कर पाता।" पहली लड़की बोली।

"मुझे तो वो कभी भी पसंद नहीं आया। बत्तमीज़ कहीं का।उसका बस चले तो इस दुनिया से पिशाचों के अलावा हर किसी को मिटा दे।" दूसरी लड़की नाक चढ़ाकर नागवार लहज़े में बोली।

"पर क्या करें? एडवर्ड और माया जैसे नकचढ़ों को बर्दाश्त करना हमारी नियति है। दोनों ही अपने-अपने समुदायों के मुखिया की औलादें हैं। उनसे
कौन भिड़ सकता है?" पहली लड़की भी चढ़ी हुई नाक के साथ बोली।

उन दोनों की ही बातों में खोई हुई अनामिका के दिमाग में एक सवाल उठा और उसके होंठों से फिसला, "अच्छा! माया तो बहुत ही खूबसूरत है। तो... उसका कोई प्रेमी तो होगा ही।

अनामिका की बात सुनकर दोनों के ही पैर अचानक से रूके। उनको रूकता देखकर अनामिका भी रूक गई। उन दोनों ने पीछे मुड़कर अनामिका को ऐसे देखा, जैसे कि उसके सवाल से ज्यादा बेवकूफी वाली बात उन दोनों ने कभी नहीं सुनी।

"माया और प्रेम! उसके लिए प्रेम जिस्म की जरूरत से ज्यादा और कुछ नहीं। और ये लड़के भी सब जानते हैं उसके बारे में... फिर भी दुम हिलाते हुए उसके पीछे घुमते हैं। माया किसी को मुस्कुराकर भी

देख ले ना... तो वो सबकी नज़रों में उस पूरे दिन का नायक बन जाता है। वो बस सबको छलना जानती है और सबको उसके हाथों छलने में ही मजा आता है। बेवकूफ लड़के!" पहली लड़की ने बहुत ही खिन्नता के साथ कहा।

"और अगर कोई लड़का उसके साथ रात बिता ले तो...?" अनामिका ने अल्फ़ी को अपने ख्यालों में रखकर सवाल किया।

"तो! फिर तो उसका ऊपर वाला ही मालिक है। कई बावलों को देखा है हमने। हम सबको तो उन पर तरस भी आता है। पर माया को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसके लिए तो रात गई... बात गई वाली बात होती है।"दूसरी लड़की ने बहुत ही ख़ुश्क लहजे में कहा।

"तो क्या... उसकी जिंदगी में कोई भी नहीं है।" अनामिका ने पूछा।

"एक बार दिव्याक्षि ने उसे कहा था कि कोई लड़का आएगा उसकी
जिंदगी में और उसके लिए सब कुछ बदल जाएगा। तब से सबके दिलों से खेलते हुए उसी का इंतजार कर रही है।" पहली लड़की बोली।

"कौन लड़का?" अनामिका ने पूछा।

"वो तो पता नहीं, पर कल कानों में एक बात आई है कि उसे पहली बार कोई भा गया है।" दूसरी लड़की ने कहा।

"अच्छा! और वो कौन है?" अनामिका ने मुस्कुराते हुए एक बार फिर अल्फ़ी की तस्वीर ख्यालों में भरी थी।

"है कोई! कल जब वो सिद्धिकुंड में स्नान के लिए गई थी... तो कोई सजीला नौजवान उसी कुंड में आ गया था। पर वो उससे कुछ पूछती... वो वहाँ से भाग गया। पर एक बात तो माननी पड़ेगी कि बहादुर तो वो है। सीधा डायनों के सिद्धिकुंड में घुस गया।" दूसरी लड़की ने ही जवाब दिया था और उस जवाब को सुनते ही अनामिका के पैर सदमे से जमकर रह गए।

"मैं तो शर्त लगा सकती हूं कि वो लड़का खुद माया के पास आएगा। उसे नहाते हुए जो देखा है। जरूर उसके होश अभी तक ठिकाने नहीं आए होंगे... माया को निर्वस्त्र देखने के बाद।" पहली लड़की ने जोरों से ठहाका लगाते हुए कहा, जिसमें दूसरी लड़की ने भी उसका साथ दिया था।

"वो नहीं ढूंढ पाया तो माया ढूंढ लेगी। लग रहा है कि नया खिलौना उसे कुछ ज्यादा ही भा गया है।" दूसरी लड़की ने भी ठिठोली करते हुए कहा।

और अनामिका... वो तो सदमे की हालत में बस खड़ी रह गई थी। उसकी ऑखों में पानी की पतली चादर फैली और काँपते हुए होंठों से निकला,
"चै... चैतन्य!"

अनामिका बजाहिर तो दोनों लड़कियों के साथ वापस लौट आई, मगर उसका चित्त उसी समय पर अटक गया था, जब उन लड़कियों ने उसके सामने चैतन्य और माया की मुलाकात की तफ्सील बयां की। उसे याद था कि पिछले दिन चैतन्य गलती से माया के पास चला गया था और उस बात को उसने हवा की तरह उड़ा दिया था, मगर अब वो हवा का झोंका उसके दिल में बवंडर उठा गया था। वो किस तरह अपने काम कर रही थी... वो भी नहीं जानती थी। ऐना के दूसरी बार झिड़कने पर वो होश में आई।

"अनामिका! क्या हुआ?" ऐना ने उसकी ओर परेशानी से देखते हुए पूछा।

"क... कुछ नहीं!" अनामिका ने संभाली हुई आवाज में कहा।

"तुम्हारी तबीयत ठीक है? चेहरा कैसा सफेद पड़ गया है तुम्हारा।" ऐना ने अपनी फ़िक्र जाहिर करते हुए कहा।
"जी! मैं ठीक हूँ। वो जरा दिव्याक्षि..." अनामिका ने अपनी बात उनकी सहूलियत के अनुसार अधूरी छोड़ दी।

"हम्म! उनकी बातों पर ज्यादा ध्यान मत दो... जहाँ देना है... वहाँ दो। आज का ये व्यंजन बहुत ख़ास है। इसमें कोई भी कमी नहीं रहनी चाहिए। तुम्हें अच्छी तरह से पता है कि इससे हमारी इज़्ज़त जुड़ी है।" ऐना ने बहुत ही संजीदगी से कहा।

और अनामिका को होश आया कि जज़्बातों में बहकर वो बहुत बड़ी गलती करने जा रही थी। उसने अपने दिल की उलझन चैतन्य के नाम से बांधकर रख दी कि अगली मुलाकात का विषय यही होने वाला था। उसने ऐना की ओर देखा, जो अपने काम में फिर से लग गई थी। अब अनामिका को ऐना में भी संभावनाएँ नज़र आने लगी थीं।

"अ... एक बात पूछूं आपसे!" अनामिका ने पूछा।

"हाँ! पूछो!" ऐना ने चूल्हे पर चढ़ी हांडी में करछी घुमाते हुए कहा।

"माया के अलावा और किन्हें सर्वशक्तिमंडल के लिए चुना गया है?" अनामिका ने अपना सवाल किया।

"हैं दो और डायनें। यहाँ से दूर रहती हैं। आज शाम तक वो भी आ जाएँगी। महफ़िल में तुम भी देख लेना।" ऐना ने कहा।

"मैं!" अनामिका ने आश्चर्य जताया।

"हाँ! तुम! चलोगी ना मेरे साथ!" ऐना ने उसे मुस्कुराकर देखते हुए कहा।
"पर.... मैं क्यों?" अनामिका ने उलझी हुई आवाज में कहा।

"तुम क्यों?" ऐना ने चूल्हे की आग ठीक करते हुए कहा और फिर अनामिका की ओर देखा। अनामिका अभी भी सवालों भरी नज़रों से उसी को देख रही थी।

"क्योंकि... मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारी जगह यहाँ इस किचन में नहीं है। कुछ ख़ास तो है तुममें!

पता नहीं क्या? पर है। और शायद ये तुम खुद भी नहीं जानती हो। इसलिए जब यहाँ से बाहर निकलकर थोड़ा ऊपर चढ़ोगी तो शायद तुम्हें और मुझे ये समझ में आ जाए। बस इसलिए! बाकी इस ख़ास डिश को सर्व करने के लिए मेरे साथ मेरी स्पेशल हेल्पर को साथ जाना होता है और वो बिना शक तुम ही हो।" ऐना ने अपनी बात विस्तार से अनामिका को समझाई।

अनामिका ने चुपचाप अपना सिर हिला दिया क्योंकि वो इस विषय में ज्यादा बोलकर मेंशन जाने के मौके को गँवाना नहीं चाहती थी। उसे चैतन्य से मिलना था.... और मिलना ही था।

"अच्छा! ये बताइए कि डायनों का विवाह कैसे होता है? किससे होता है?" अनामिका ने आलू काटते हुए थोड़ी दबी हुई आवाज में पूछा।

"ये कैसा सवाल है?" ऐना ने हैरानी से कहा।

"बस! दिमाग में आया तो पूछ लिया। आखिर डायन समुदाय में पुरुष तो होते नहीं हैं, तो वो विवाह किससे करती हैं?" अनामिका ने पूछा।

"कौन कहता है कि हमारे समुदाय में पुरुष नहीं होते हैं? हाँ ये बात सही है कि उनकी संख्या बहुत कम है, इसलिए डायनें दूसरे समुदायों में और कभी-कभी इंसानों से भी विवाह कर लेती हैं।" ऐना ने हांडी में में कोई
सामग्री डालते हुए कहा।

"अच्छा! फिर तो पिशाच और डायनें भी विवाह कर सकते हैं। मान लीजिए.... यदि एक पिशाच और एक डायन प्रेम में पड़कर विवाह कर लें... तो क्या होगा?" अनामिका अपने मुद्दे पर आते हुए बोली। उसका सवाल सुनकर ऐना ने खुलकर ठहाका लगाया और फिर अनामिका के सिकुड़े हुए चेहरे को देखने लगी।

"कुछ दिनों का प्रेम हो तो चलेगा... पर विवाह! ये कभी नहीं हो सकता। ना तो हमारा समुदाय ये स्वीकार करेगा और ना ही पिशाच समुदाय।" ऐना ने उसकी जिज्ञासा दूर करते हुए कहा।

"कुछ दिनों का प्रेम से आपका क्या मतलब है?" इस बार अनामिका ने थोड़ी खिन्नता से पूछा।

"अब इसका मतलब तुम खुद ही निकाल लो। पिशाच हमेशा से ही खुद को सर्वश्रेष्ठ समझते हैं। वो विवाह के लिए अपने समुदाय और उच्च कुलीन मानव कन्या को ही सही मानते हैं। इसके अलावा वो और किसी से विवाह नहीं करते। उन्हें ऐसा लगता है कि इस तरह से वो अपने खून की शुद्धता को अक्षुण्ण बनाए रखते हैं। स्त्री होने के कारण पिशाच डायनों को भी हेय दृष्टि से देखते हैं और उनका यही सर्वश्रेष्ठ होने का अहंकार... डायन समुदाय को पसंद नहीं है। इसलिए डायनें भी पिशाचों से दूर रहती हैं।" ऐना ने अनामिका को उसका जवाब देते हुए कहा।

"और अगर किसी ने ऐसा कर लिया तो...!" अनामिका ने पूछा।

उसके इस सवाल पर ऐना ने उसे बाग़ौर निगाहों से देखा और फिर ऑखों में कठोरता भरकर कहा, "तो उनके लिए बस मौत है। दोनों समुदाय ही ऐसा कभी नहीं होने देंगे। वो एक-दूसरे को चोट पहुँचाने के लिए कुछ

दिन के लिए ऐसा जरूर करते हैं, पर विवाह.... ये नामुमकिन है।" ऐना ने अनामिका की बात पर ऐतराज उठाते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका की ज़बान को भी लगाम लगे थे। ऐना के बिगड़ते तेवरों ने उसे चुप रहने पर विवश कर दिया था। पर ऐना की बातों ने उसके इस यकीन को और भी पुख़्ता कर दिया था कि माया ने अल्फ़ी से छल किया था और अब उसका अगला निशाना चैतन्य था। ये ख्याल आते ही एक बार फिर से अनामिका के दिल में एक टीस सी उठी और उसका मन माया के लिए घोर नफ़रत से भर गया। किसी तरह उसने ऐना की मदद की और फिर उसके कहने पर अपने कमरे में कपड़े बदलने के लिए आ गई, जो उसे बसेरे में आने के बाद मिले थे। उसे अब बस चैतन्य और अपनी मुलाकात का इंतजार था, ताकि वो उसे माया के मंसूबों से आगाह कर सके।

****

सर विलियम ने चैतन्य को जो जिम्मेदारी सौंपी थी, वो उसके लिए पूरी तरह से तैयार था। दिन भर उसने दूर से एडवर्ड पर गाहे-बगाहे नज़र रखी थी और हर बार उसे और भी बुरा पाया था। अब तो चैतन्य को भी लगने लगा कि हो सकता है आगे होने वाले किसी भी भयंकर घटनाक्रम का एक कारक एडवर्ड भी हो सकता था। हो सकता है कि उसी की वजह से माया की मौत हुई हो और फिर अल्फ़ी पिशाच बना हो। जो भी हो... उसकी संदिग्ध गतिविधियाँ चैतन्य को उस पर अपनी नज़र रखने के लिए उकसा रही थीं।
धीरे-धीरे दिन ढलने के साथ ही रात का अंधकार फैलने लगा और उसी के साथ मेंशन का बाहरी इलाका मशालों की रोशनी से रोशन हो गया। महफ़िल मेंशन के अंदर मौजूद बड़े से खुले मैदान में थी, जो चारों तरफ जलती मशालों, लाइटस्टैंड्स और गैस लाइटों से रोशन था।

धीरे-धीरे मेहमान आने शुरू हो गए। सर्वशक्तिमंडल के पुराने सदस्यों के अलावा इलाके में रहने वाले तांत्रिक समुदाय और अन्य समुदायों के महत्वपूर्ण सदस्य भी वहाँ आने लगे थे। चैतन्य की एक निग़ाह आने वाले दरवाजे पर भी लगी हुई थी कि दिल अनामिका के आने का इशारा कर रहा था। मगर काफी देर तक डायनों की आहट भी सुनाई नहीं दी। महफ़िल अपने उरूज़ पर थी, जब डायन समुदाय के मेहमानों की आमद की खबर आई। यह सुनते ही एडवर्ड बुरी तरह से उखड़ा था। फिर भी वो किसी तरह से खुद को वहाँ रोके हुए था। मगर जैसे ही डाकिनी की अगुआई में डायनों का समूह उनकी ओर बढ़ा, वो गुस्से में उबलता हुआ वहाँ से निकल गया और चैतन्य... जो अनामिका में खोया हुआ था... उसके वहाँ से निकलते ही मन मसोसकर उसके पीछे-पीछे भागा। अनामिका की नज़र भी भागते हुए चैतन्य पर पड़ी और वो बुरी तरह से उखड़ी थी। अल्फ़ी वहीं मौजूद सारी कार्यवाही को ग़ौर से देख रहा था।

दूसरी तरफ एडवर्ड का पीछा करते हुए चैतन्य ने एडवर्ड की वो चेन अपनी जेब से बाहर निकाली, जो उसके पिता सर विलियम ने चैतन्य को दी थी। उसने वो चेन अपनी उसी अंगुली में लपेटी, जिसमें उसकी रक्षक-अंगूठी थी और फिर तेजी से आगे बढ़ता गया। एडवर्ड बहुत तेज था और उसकी आँखों से ओझल हो चुका था। आगे जाकर उसने एक तैनात सिपाही से एडवर्ड की तरफ जाने का रास्ता पूछा और फिर उसके बताए रास्ते पर आगे बढ़ गया। कुछ दूर आगे जाने पर उसे एक सुनसान जगह पर कुछ

दबी-दबी सी आवाजें सुनाई दीं। उन आवाजों को सुनकर चैतन्य को आश्चर्य हुआ क्योंकि उनमें एक आवाज स्पष्ट रूप से किसी लड़की या औरत की थी। वो तेजी से उस ओर गया। एक छोटे से पौधे के पीछे से
उसने सामने देखा तो सकते में आ गया।

सामने एडवर्ड और माया बुरी तरह से बहस में उलझे हुए थे। हालांकि चैतन्य को उनकी बातें बिल्कुल भी समझ में नहीं आ रही थी, मगर इतना तो समझ आ गया था कि वो बातें दिलखुश तो कहीं से भी नहीं थीं।

और फिर अचानक ही एडवर्ड ने माया को गर्दन से पकड़कर ऊपर उठा
दिया। माया उसकी गिरफ्त में बुरी तरह से छटपटा रही थी।

"मैंने कहा था ना! मुझसे उलझना नहीं। जितनी औकात है... वहीं रहो। वरना तुम्हारी औकात तुमसे ज्यादा मैं जानता हूँ।" तेज आवाज में कहते हुए एडवर्ड ने माया को एक ओर उछाला था। वो उसे फुंफकारते हुए अंगारा ऑखों से देख रहा था और माया जमीन पर अपनी गर्दन सहलाते हुए गहरी-गहरी साँसें ले रही थी। एडवर्ड उसे घूरता हुआ उसी तरफ बढ़ आया जिधर चैतन्य खड़ा था, मगर चैतन्य ने कोई भी घबराहट और हड़बड़ी नहीं दिखाई। बल्कि वो दो कदम बगल हट गया, जिससे एडवर्ड को जाने में कोई परेशानी ना हो। एडवर्ड भी हवा की तरह वहाँ से गुज़र गया। थोड़ा आगे बढ़ने के बाद वो अचानक रूका और फिर मुड़कर तफ्तीशी नज़रों से उस तरफ देखने लगा जिस तरफ से वो आया था। चैतन्य अपनी जगह पर ही उसके सामने ही खड़ा था, पर एडवर्ड को वो दिखाई नहीं दिया। एडवर्ड अपनी नाक का इस्तेमाल करते हुए वापस आया, मगर उसे कुछ भी संदिग्ध दिखाई नहीं दे रहा था। इससे एक ओर जहाँ एडवर्ड की भौंह चढ़ी थी, वहीं चैतन्य के चेहरे पर एक कातिलाना मुस्कुराहट आई थी। वो उसे नहीं देख सकता था और.... ना ही पकड़ सकता था। वो उसके लिए सचमुच हवा बन चुका था। उसने इस शक्ति के बारे में जानकारी देने के लिए सर विलियम का शुक्रिया उसी समय अदा कर दिया।

एडवर्ड उसी तरह ऑखें घुमाते कुछ देर खड़ा रहा और फिर महफ़िल की ओर चला गया। गुर्राते हुए एडवर्ड के जाने के बाद चैतन्य ने पलटकर माया की ओर देखा। वो अब तक अपने कपड़े झटककर खड़ी हो चुकी थी और बालों को ठीक कर रही थी। चैतन्य को उससे हर हाल में छिपने की जरूरत थी क्योंकि वो और दूसरे उसे देख सकते थे। उसका वो जादू बस एडवर्ड के लिए ही था। उसने माया की तरफ अपने कान खोले क्योंकि अब वो भी गुस्से में बड़बड़ाने लगी थी।
"समझता क्या है अपने आप को? मुझे धमकाता है। अगर मेरा मुँह खुला तो तुम भी जवाब तलाशते फिरोगे मि. एडवर्ड। बस किसी तरह ये दो रात गुज़र जाएँ फिर हमारे रास्ते हमेशा के लिए अलग। बस मेरा प्रिंस चार्मिंग मुझे मिल जाए। मिलते ही उसे अपने काबू में कर लूंगी। फिर माया... और बस माया ही होगी क्योंकि तुम्हें पता नहीं मि. एडवर्ड कि माया के हाथ क्या लगने वाला है।" यह कहते हुए वो बड़ी ही बेहयाई से खुलकर मुस्कुराने लगी। वहीं चैतन्य उसकी बातें सुनकर हैरानी की आखिरी हद में खड़ा हुआ था।

"इसका क्या मतलब हुआ? एडवर्ड और माया मिले हुए हैं! पर क्यों? क्या ये दोनों ही मिलकर कुछ

ग़लत कर रहे हैं। अगर ऐसा है तो मुझे सर विलियम को ये बताना ही होगा, वो भी जल्द से जल्द।" चैतन्य अपने सामने हुई घटना और बातों का निष्कर्ष निकालकर माया और एडवर्ड की इस सीक्रेट मीटिंग के बारे में सर विलियम को बताने का निर्णय लेते हुए बुदबुदाया और ये सोचकर जैसे ही वो जाने के लिए मुड़ा... उसने कुछ दूरी पर अनामिका को खड़े पाया। वो उसी की तरफ देख रही थी। उसे देखते ही चैतन्य के चेहरे पर मुस्कुराहट ने कब्ज़ा जमाया। वो उसकी ओर बढ़ा तो उसने महसूस किया कि अनामिका भरी हुई आँखों के साथ उसे और माया को एक-एक करके बारी-बारी से देख रही थी। पहले तो चैतन्य को कुछ समझ में नहीं आया, पर जब अनामिका के नम आँखों की भाषा उसके समझ में आई तो वो बुरी तरह से हड़बड़ाया।

"नहीं! नहीं! नहीं! मेरी बात सुनो अनु! तुम जो सोच रही हो वैसा नहीं है।" चैतन्य ने अपनी स्थिति समझाने के लिए तेजी से उसकी ओर बढ़ते हुए कहा। मगर अब अनामिका सिसकियाँ भरने लगी थी। उसने गुस्से में अपने दोनों पैर पटके और वहाँ से तेज़ी से पलटकर भागी।

"अनु!" चैतन्य दबी आवाज में बोला और उसके पीछे गया।
वहीं दूसरी तरफ पास हुई कुछ हलचलों की वजह से माया का ध्यान भी चैतन्य की ओर चला गया। हालांकि उसने सुना कुछ भी नहीं, पर उसने वहाँ से जाते हुए चैतन्य को साफ-साफ देख लिया। उसे देखते ही माया के होंठों पर एक दिलफरेब मुस्कान आई।

"तो यहाँ हो तुम! आई एम कमिंग स्वीटहार्ट! वेट फॉर मी! आज माया तुम्हें अपना बना कर ही रहेगी। हमेऽऽऽशा के लिए!"

अनामिका बहुत ही तेजी से वहाँ से भागी थी। उतनी ही तेजी से चैतन्य भी उसके पीछे भागा था। उसे अनामिका की नाराज़गी से ज्यादा इस बात का डर था कि अनामिका ने बहुत ही ग़लत समझ लिया था। पहले की बात होती तो शायद अनामिका के इस तरह रिएक्ट करने पर वो चिढ़ जाता, मगर सुबह अनामिका ने अपने दिल का जो बंद कोना उसके सामने खोला था, उसने चैतन्य को परेशान किया था। वो जानता था कि वो उसे खोने से डरती है और इस डर को पूरी तरह से बाहर निकालना इस समय नामुमकिन था। चैतन्य ये भी समझ चुका था कि इस रिश्ते में आगे बढ़ने से पहले उसे और अनामिका को साथ समय बिताने की कितनी जरूरत है और वो समय कम से कम उन्हें यहाँ नहीं मिलने वाला था। वो तेजी से पार्टी वाली जगह की ओर भागा। एडवर्ड को वहाँ देखकर उसे थोड़ी राहत मिली, मगर दूर-दूर तक उसे अनामिका नज़र नहीं आई।

"ये कहाँ चली गई?" चैतन्य ने बेचैनी से सब तरफ देखते हुए कहा और फिर एक और ख़्याल उसके दिमाग में आया।

"कहीं अंदर रास्ता तो भटक नहीं गई!"

और यह ख्याल आते ही चैतन्य को घबराहट होने लगी। वो एक डायन

थी और ये जगह पिशाचों की मिल्कियत थी और उसका इस तरह यहाँ अकेला भटकना बिल्कुल भी सही नहीं था। उसने अल्फ़ी की ओर देखा, जिसकी नज़रें भी महफ़िल में चारों ओर बेचैनी से घूम रही थीं क्योंकि माया वहाँ नहीं थी। चैतन्य उसे माया के बारे में बताना चाहता था कि उसने एक बार फिर से एडवर्ड को सबसे नज़र बचाकर मेंशन के अंदर जाते हुए देखा। उसने एक नज़र अल्फ़ी पर डाली और फिर एक आह छोड़ते हुए एडवर्ड के पीछे गया कि ये काम ज्यादा जरूरी था। एडवर्ड और अनामिका दोनों के नज़रिए से। वो बिल्कुल नहीं चाहता था कि एडवर्ड और अनामिका एक-दूसरे से टकराएँ।

उसने एक बार फिर से एडवर्ड की चेन से सुरक्षा कवच बनाया और अंदर की ओर बढ़ गया। उसकी शर्ट पर पिनअप सुनहरा बैच उसके सुरक्षा दस्ते में सबसे ऊँचे ओहदे में से एक को दिखा रहा था, जिसकी वजह से कोई भी उसे रोकने की ज़ुर्रत नहीं कर सकता था। वो बेख़ौफ़ आगे बढ़ता गया। जल्द ही एक समय ऐसा आया जब एडवर्ड मेंशन के सुनसान गलियारों में आगे बढ़ रहा था। गलियारे में मौजूद कई दरवाजों को छोड़कर वो सामने की बंद दीवार के सामने जाकर रूक गया। चैतन्य भी उससे थोड़ी दूरी पर रूक गया और एक आड़ में खड़ा हो गया क्योंकि अगर कोई और वहाँ आ जाता तो वो उसे आसानी से देख लेता। मगर वहाँ और कोई नहीं आया। एडवर्ड ने उस दीवार की एक ईंट दबाई, जिससे वो आगे बाहर की ओर निकल आई। एडवर्ड ने उस ईंट को सावधानी से निकाला, जिससे वहाँ एक गड्ढा जैसा दिखाई देने लगा। उसने जेब से कुछ निकाला और उस गड्ढे में रख दिया और वो ईंट फिर से पहले की तरह रख दी। उसके ईंट रखते ही वो अंदर की ओर चली गई और वो जगह बिल्कुल पहले की तरह हो गई। चैतन्य हैरानी से एडवर्ड की इस सारी प्रक्रिया को देख ही रहा था कि तभी उसने सामने की उस दीवार को एक ओर सरकते देखा और उसके देखते-ही-देखते सामने एक दरवाजा बन गया।

"उफ्फ! ये खुफिया दरवाजे!" चैतन्य मन ही मन में चिड़चिड़ाया।

और फिर एडवर्ड उस दरवाजे के अंदर चला गया। चैतन्य ने दो सेकंड इंतजार किया और फिर उस दरवाजे के बंद होने से पहले ही हवा की तेजी से उसके अंदर चला गया। अंदर एक ईंटों से बना चौड़ा सा गलियारा था, जिसके अंदर मशालें जल रही थीं।

एडवर्ड तेज कदमों से उसमें आगे की ओर बढ़ता गया। चैतन्य भी लगातार उसके पीछे लगा हुआ था। हर बढ़ते कदमों के साथ उसे ये अहसास हो रहा था कि सर विलियम ने उस पर नज़र रखने का काम ग़लत नहीं दिया था। उन रास्तों पर बहुत देर तक चलने के बाद वो फिर एक दीवार के पास पहुँचे। उस दीवार के साथ भी एडवर्ड ने वही प्रक्रिया दोहराई, जो गलियारे की दीवार के साथ की थी। एक बार फिर से वहाँ एक दरवाजा दिखाई देने लगा था। एडवर्ड के साथ ही चैतन्य ने भी वो दरवाजा पार किया। वहाँ से बाहर निकलते ही चैतन्य को वो जगह जानी-पहचानी सी लगी। वो उस
जगह पहले भी आ चुका था। उसने चारों ओर देखा, तो चारों ओर फैली नमी ने उसे अपनेपन का अहसास करवाया। वो जान गया था कि ये वही गुफा थी, जहाँ वो सुबह उस कुएँ वाले रास्ते से आया था। उस गुफा से बाहर निकलकर वो जंगल से होता हुआ उस नर्क के द्वार तक पहुँचा था। चैतन्य को लगा कि शायद एडवर्ड उसी मैदान की ओर जा रहा था, मगर उसने एडवर्ड को उस दरवाजे की ओर बढ़ते देखा, जो उस कुएँ से जुड़ा हुआ था। एडवर्ड के उस ओर जाने से चैतन्य को अच्छी-खासी हैरानी हुई थी कि वो वापस उस कुएँ की ओर क्यों जा रहा है? मगर अंदर जाकर उसने देखा कि एडवर्ड कुएँ की ओर नहीं बल्कि दूसरी दिशा में आगे बढ़ा था। मगर वहाँ घुप्प अंधेरा होने के कारण चैतन्य को कुछ

भी सुझाई और दिखाई नहीं दे रहा था। एडवर्ड के पदचापों का अनुसरण करते हुए वो धीरे धीरे आगे बढ़ता गया। मगर जल्द ही उसे पता चल गया कि उसने एडवर्ड को खो दिया था। वो फिर भी उसकी तलाश में आगे बढ़ता गया और फिर एक मोड़ पर उसे एक तरफ से बहुत ही हल्की सी लाल रोशनी निकलती दिखाई दी। वो ऐहतियात से उस ओर आगे बढ़ा और उसके बढ़ते कदम एक बड़ी खुली ही जगह पर आकर रूके थे, जहाँ पहुँचकर उसकी ऑखें फैलते हुए हैरानी को बयां करने लगीं। चैतन्य ने चारों ओर नज़रें दौड़ाई। वहाँ कोई भी नहीं था। उसकी भटकती ऑखें एक बार फिर से सामने उस कमरे के बिल्कुल बीच में जाकर अटक गई।

वो एक लाल रंग के क्रिस्टल से बना हुआ खंज़र था, जो बीच हवा में लटक रहा था। चैतन्य उसे एकटक देख ही रहा था कि तभी उसे अहसास हुआ कि वो कमरा धीरे-धीरे और भी गर्म होने लगा था। ऐसा लग रहा था कि उसने चैतन्य को महसूस कर लिया था और उस कमरे को उसका वहाँ होना पसंद नहीं आया था। वहाँ के बदलते मिजाज को समझते हुए चैतन्य ने अपने पैर पीछे करने शुरू किए और एक निश्चित दूरी पर जाकर वो रूक गया। वो उस कमरे की शिनाख्त करने में नाकाम था कि आखिर वो खंज़र है क्या और इस तरह से क्यों रखा हुआ है?

वो सवालों के भँवर में उलरा ही था कि तभी उसके मस्तिष्क को किसी
ने झिंझोड़ा। चैतन्य का ध्यान उस ओर गया तो उसे अहसास हुआ कि अनामिका मुसीबत में थी। एडवर्ड का पीछा करते हुए वो उसके बारे में पूरी तरह से भूल गया था। शायद मुसीबत की आखिरी हद में अनामिका ने स्वाभाविक रूप से उसे पुकारा था और चैतन्य घबराकर पीछे होता हुआ तेजी से वापस भागा था। अतीत के चक्कर में वो अपना वर्तमान और भविष्य नहीं बिगाड़ सकता था। वो किसी तेज हवा के झोंके की तरह कुऍं के रास्ते से बाहर भागा क्योंकि जिस रास्ते से आया था, वहाँ से वापस जाना मुमकिन नहीं था। आखिरकार उस कुऍं वाले रास्ते पर चलकर नरक के द्वार तक जाना अब उसके काम आने वाला था। यदि इस रास्ते की उसे खबर नहीं होती तो वो यहाँ बुरी तरह से फँस चुका होता।

किसी तरह दौड़ते-भागते वो मेंशन के पार्टी वाली जगह पर पहुँचा। सर विलियम कुछ लोगों से घिरे हुए बातें कर रहे थे। चैतन्य ने दो पल उनकी ओर देखा और फिर तेजी से मेंशन के अंदर भागा। इस हड़बड़ी में वो ये नज़रअंदाज़ कर गया कि दो और लोग भी वहाँ से गायब थे।

अंदर मेंशन में गलियारों की भूल-भुलैया में अनामिका बुरी तरह से उलझ गई थी क्योंकि इन्हें बनाया ही ऐसा गया था कि कोई भी आसानी से घुसपैठ ना कर सके। चैतन्य ने तुरंत ही उससे संपर्क किया। वो थोड़ा घबराई हुई सी थी। चैतन्य ने उसे शांत किया और फिर उससे उसकी लोकेशन पूछी। सुनहरा बैच मिलने के साथ ही वो इस भूल-भुलैया की पहेली से आज़ाद हो चुका था। अनामिका के लोकेशन बताते ही वो दो मिनट में ही वहाँ पहुँच गया। उस गलियारे के लगभग आखिरी सिरे में वो बेचैनी से उसका इंतजार कर रही थी।

"अनामिका!" चैतन्य ने उसे देखते ही आवाज लगाई और उसकी आवाज सुनते ही अनामिका बेलगाम दौड़ती हुई उसके सीने में आ छिपी थी। वो दबी हुई आवाज में सिसक रही थी। चैतन्य ने भी उसे कुछ नहीं कहा और उसके सिर पर हाथ फेरता रहा।

जब वो पूरी तरह शांत हुई तो चैतन्य ने बहुत ही नर्मी से पूछा, "ठीक हो?"

जवाब में अनामिका ने अपना सिर हिलाया।

"शुक्र है कि तुम्हें किसी ने नहीं देखा। अब और यहाँ रहना ठीक नहीं है।
चलो! बाहर चलो!" चैतन्य ने अनामिका का हाथ पकड़ते हुए कहा।

"चै... चैतन्य! तुम्हें.... कुछ बताना था।" अनामिका ने अपनी कांपती हुई आवाज को शांत करते हुए कहा।

"बता देना! मगर बाद में! यहाँ नहीं। अभी यहाँ से बाहर निकलना सबसे ज्यादा जरूरी है।" चैतन्य ने उसे अपने साथ खींचते हुए कहा।

"चैतन्य! ये बहुत ही जरूरी है।" अनामिका ने उसका हाथ खींचते हुए कहा।

"तुमसे और तुम्हारी हिफाज़त से ज्यादा मेरे लिए और कुछ जरूरी नहीं है। चलो यहाँ से।" चैतन्य ने उसे पहले की तरह खींचते हुए कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका भी चुप पड़ गई और उसके साथ चलने लगी।

"चैतन्य! मेंशन के इस हिस्से में गार्ड क्यों नहीं हैं?" अनामिका ने चारों ओर देखते हुए पूछा।

"मुझे नहीं पता! पर दूसरे हिस्सों में हैं और तुम्हें उनसे बचाकर ही बाहर निकालना है।" चैतन्य ने एक मोड़ के पास रूककर आगे झांकते हुए जवाब दिया।

"मुझे पता है और उन्हीं से बचने के चक्कर में.... मैं यहाँ फँस गई।" अनामिका ने कहा।

"श्शशश्! चुप रहो!" चैतन्य ने बाहर झांकते हुए कहा और फिर उसे साथ लेकर आगे बढ़ गया। कुछ गलियारों को पार करने के बाद वो एक जगह पर रूका और एक बार फिर से बाहर झांकने लगा। बाहर एक गार्ड मुस्तैदी से तैनात था।
"अनामिका! यहीं इंतजार करो। मैं जब इशारा करूं, तो तेजी से आगे जाना। समझी!" चैतन्य ने उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में भरते हुए कहा। अनामिका ने अपना सिर हिलाया तो चैतन्य ने उसका माथा चूमा और फिर अकेला ही आगे बढ़ गया। अनामिका चुपचाप दीवार के पीछे छिपी हुई थी। कुछ ही देर में चैतन्य ने उसके मन में पुकारा और वो बाहर आई। चैतन्य ने हाथ के इशारे से उसे अपने पास बुलाया।

"वो कहाँ गया?" अनामिका ने पूछा, जिस पर चैतन्य ने उसके पीछे एक ओर इशारा किया। अनामिका ने मुड़ कर देखा। वहाँ भी एक संकरा सा गलियारा दिखाई दे रहा था।

"जल्दी चलो।" चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा। अनामिका उसके साथ चल दी, मगर उसकी नज़र आसपास का मुआयना कर रही थीं। ये गलियारे आम नहीं थे। बहुत कुछ खुद में छिपाए हुए थे और इसका पता अनामिका को कुछ देर पहले ही चला था। मगर अभी चैतन्य से वो साझा करने का समय नहीं था।

"रूको!" एक गलियारा, दो और गार्ड्स और दो सीढियाँ नीचे उतरने के बाद चैतन्य ने उसे रोकते हुए कहा।

"कोई है क्या?" अनामिका ने पूछा।

"हम नीचे आ गए हैं। यहाँ से हम साथ नहीं जा सकते। मैं आगे चलता हूँ। मेरे इशारा करते ही तुम आगे निकल जाना।" चैतन्य ने बाहर की ओर झांकते हुए कहा।

"चैतन्य!" अनामिका की दबी हुई आवाज आई।
"हँ! क्या हुआ?" चैतन्य ने उसकी ओर मुड़ते हुए कहा।

और वो उसके मुड़ते ही उससे जोरों से आ लगी थी। उसने अपने नाज़ुक से हाथों से चैतन्य के भारी-भरकम शरीर को भींच रखा था और अपना चेहरा उसके सीने पर घुसा लिया था। चैतन्य कुछ कहता उससे पहले ही वो बोली, "सॉरी!"

"हम्म! ये तो तुम्हें बोलना ही पड़ेगा। गलती तो की है तुमने। पर यहाँ नहीं। बाद में मिलते हैं।" चैतन्य ने उसके सिर पर अपना चेहरा टिकाते हुए थोड़ी बनावटी नाराजगी के साथ कहा। एक बार फिर अनामिका ने अपना सिर हिलाया। चैतन्य उसे छोड़कर आगे बढ़ा। अनामिका दीवार की आड़ से उसे जाते हुए देख रही थी। उसके इशारा करने पर वो तेजी से आगे बढ़कर उसके पास आई।

"जाओ!" चैतन्य ने एक ओर इशारा करते हुए कहा। सामने महफ़िल की जगमगाहट साफ दिखाई दे रही थी। अनामिका ने एक नज़र सामने की ओर डाली और फिर उसने चैतन्य की ओर मुड़ते हुए थोड़ा उछलकर उसके गाल को चूम लिया।

वहीं दूसरी ओर ध्यान किए हुए चैतन्य के मुँह से एक ठंडी सी आह निकली और उसने नाराज़गी से अनामिका की ओर देखा।

"चीटर!" चैतन्य ने अपने गाल पर हाथ रखते हुए कहा।

"सॉरी!" अनामिका फुसफुसाकर बोली और फिर उस पर एक जालिम मुस्कुराती हुई नज़र डालते हुए महफ़िल की ओर भागी। चैतन्य बस देखता रह गया। अनामिका थोड़ा आगे जाने के बाद एक बार फिर उसे देखने
के लिए पीछे मुड़ी तो बस वहीं रूक गई। माया, चैतन्य के सामने खड़ी थी। अनामिका ने दोनों को एक-एक नज़र देखा और फिर उखड़े मिजाज के साथ उनकी ओर बढ़ी। उसी समय वो उनकी ओर से आती आवाजें सुनकर रूक गई।

"तो यहाँ हो तुम! तुम्हें पता है... पागलों की तरह ढूंढ रही थी मैं तुम्हें।" माया उसकी ओर बढ़ते हुए बोली, वहीं चैतन्य भी उससे बचने के लिए उतना ही पीछे हुआ था।

"मुझे! मुझे क्यों खोज रही हैं आप?" चैतन्य ने उलझी हुई हालत में कहा।

"आप नहीं.... तुम! मुझे तुम कहो। अच्छा लगेगा मुझे।" माया उसकी ओर बढ़ती हुई बहके हुए अंदाज में बोली।

"देखिए! आप कौन हैं... मैं नहीं जानता और मैं अजनबियों ख़ासतौर पर अजनबी औरतों से दूर ही रहता हूँ। तो आप भी मुझसे दूर रहें।" चैतन्य ने अपनी घबराहट को दबाते हुए कहा। तभी वो पीछे हटते हटते एक दीवार से जा लगा था।

"तो उसमें क्या है। पहचान कर लेते हैं। मेरा नाम माया है।" उसके करीब आकर उसके गाल पर अपनी मरमरी ऊंगलियाँ फेरते हुए माया बोली।

चैतन्य को ऐसा महसूस हो रहा था कि उसके चेहरे पर उसकी उंगलियाँ नहीं, बल्कि बरसाती कीड़े रेंग रहे हैं। उसने चिढ़ और घृणा से अपनी ऑखें भींच ली थीं। माया की मौजूदगी में उसे वहाँ की हवा भी भारी और जहरीली लगने लगी थी। उसके इस तरह सहमे हुए चेहरे को देखकर माया पर और भी ख़ुमारी चढ़ी थी। उसने चैतन्य के कॉलर को पकड़कर एक झटके में अपने सामने खींचा और उसकी इस हरकत से चैतन्य की ऑखें भी झटके से खुली थीं।
"चाहो तो और करीब से पहचान कर सकते हैं।" माया मदहोशी से चूर हुए लहजे में बोली।

उसे अपने इतने करीब पाकर चैतन्य का गला डर से सूखने लगा था। उसने किसी तरह हिम्मत बटोरकर अपने गले को गीला किया और बोला, "देखिए मैडम! आई एम इंगेज्ड! मेरी शादी होने वाली है और मुझे अपनी मंगेतर से बहुत प्यार है। आप मुझसे दूर रहिए।"

उसकी बात सुनते ही माया ने अपनी बड़ी-बड़ी ऑखें उसकी ऑखों में घुसाई और बेहयाई से बोली, "शादी हुई तो नहीं है ना! एक बार मेरे करीब आओगे तो सारी दुनिया को भूल जाओगे। प्रॉमिस!"

"पर मुझे इसका कोई शौक नहीं। आप किसी और को ढूंढें।" चैतन्य अबकी बार मजबूत लहजे में बोला। उसे सामने खड़ी उस लड़की से और भी नफ़रत होने लगी थी, वहीं अल्फ़ी के लिए दिल में और भी हमदर्दी जागी थी।

चैतन्य, माया या फिर अनामिका तीनों में से ही कोई कुछ कहता... उससे पहले ही अनामिका को अपने करीब दूसरी ओर से एक भारी और संजीदा आवाज सुनाई दी।

"ये क्या हो रहा है यहाँ?"

वो अनामिका के सामने उसकी ओर पीठ करके खड़ा था। चैतन्य और माया की नज़रें भी उस आवाज की ओर घूमी थीं। अल्फ़ी अपनी ऑखों में अंगारे भरकर उन दोनों को देख रहा था और उसकी ऑखों की तपिश से घबराकर माया ने चैतन्य को छोड़ा। उसके चंगुल से छूटते ही चैतन्य भी छिटककर दूर हुआ।

"चैतन्य! चलो यहाँ से!"

"अ... आया!" चैतन्य ने भी जान छूटने पर राहत की साँस लेते हुए कहा।

अपनी बात खत्म कर अल्फ़ी जैसे ही पलटा, उसने अनामिका को सामने पाया। उसे देखते ही एक बार फिर अल्फ़ी की नज़र उस पर टिकी थी। उसकी ऑखों के सवाल अब अनामिका को परेशान कर रहे थे। वो उससे दूर होने की गरज़ से पीछे की ओर हटी थी, मगर उसके पीछे हटते ही अल्फ़ी ने उसकी ओर अपने कदम बढ़ाए थे। वो एक बार फिर बेखुद सा उसकी ओर बढ़ा था और ये सब देखकर कुछ दूर खड़े चैतन्य के होश उड़े थे और वो तेजी से उनकी ओर भागकर आया।

"वो... मैं.... माया...!" उसे अपने एकदम सामने देखकर अनामिका भी हड़बड़ाई थी।

"माया!" अनामिका की आवाज सुनकर अल्फ़ी के माथे पर बल पड़े थे और वो उसके और भी नज़दीक हुआ था। अपनी फटी हुई ऑखों से उसे देखते हुए अनामिका की साँसें मद्धम होने लगी थीं। अल्फ़ी एक बार फिर से उसके बेहद नज़दीक होता, उससे पहले ही चैतन्य ने उसे पीछे से पकड़कर अपनी ओर खींचा।

"जाओ यहाँ से!" चैतन्य ने अनामिका को घुड़ककर कहा और वो सुनते ही अनामिका मैदान की ओर भागी। अल्फ़ी अपनी ऑखों में अजीब से अहसास लिए उसे दूर जाता देखता रहा। वो चैतन्य की पकड़ से छूटने के लिए कसमसाता हुआ नाममात्र ताकत लगा रहा था। चैतन्य ने उसे घूरकर देखा और फिर झटके से छोड़ दिया।
"क्या कर रहे थे तुम? वो मेहमान है। डर गई थी बेचारी।" चैतन्य ने नाराज़गी जताते हुए कहा।

"ये है कौन?" अल्फ़ी ने खोए हुए अंदाज में कहा।

उसकी बात सुनकर चैतन्य के जबड़े कसे और वो उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में भरकर बोला, "ओ माया के आशिक! माया नहीं है वो। चलो यहाँ से।"

कहकर चैतन्य उसे अपने साथ खींचता हुआ ले गया। उनके पीछे वहाँ खड़ी माया सकते में खड़ी सब कुछ देखती रह गई।

अल्फ़ी और चैतन्य दोनों ही तेजी से पार्टी वाली जगह पर पहुँचे। सर विलियम ने ही चैतन्य की तलाश में उसे भेजा था, जब वो एडवर्ड के पीछे मेंशन के अंदर गया और बहुत देर तक वापस नहीं आया था। चैतन्य ने देखा कि उस समय एडवर्ड भी वहीं मौजूद था। सर विलियम ने नज़रों से ही चैतन्य से सवाल किया और चैतन्य ने भी उसी तरह से जवाब दिया। उसने उनको इशारे से एक ओर बुलाया। कुछ देर बाद ही वो चैतन्य के साथ मेंशन के एक सुनसान हिस्से में थे। चैतन्य ने तफ्सील से हर एक देखी हुई चीज बयां कर दी। चैतन्य के हर बयान के साथ सर विलियम के माथे पर सिलवटें बढ़ती गईं और खंज़र के जिक्र पर तो वो बुरी तरह से चौंके थे।

"कंज़र! कैसा कंज़र ता वो?" अपनी पीठ की तरफ हाथ बांधे दूसरी ओर देखते हुए उन्होंने पूछा था।

"दूर से तो बिल्कुल लाल रंग का बना दिख रहा था और हवा में लटका हुआ था।" चैतन्य ने याद करते हुए बताया।
"ओह! और क्या.... उस कंज़र से कून टपक रहा ता?" सर विलियम ने माथे पर शिकन इकट्ठे करते हुए पूछा।

"न... नहीं! ऐसा तो कुछ नहीं हो रहा था, पर उसके नीचे एक बर्तन जैसा जरूर रखा था। पर मैं उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दे सका क्योंकि मुझे तुरंत वापस लौटना पड़ा।" चैतन्य ने याद करते हुए कहा।

"माई गॉड! इट मीन्स... इट्स टू! आई न्यू इट!" सर विलियम ने अजीब से चेहरे के साथ कहा।

"क्या सच है?" पूछते हुए चैतन्य की ऑखें सिकुड़ी थीं।

"वैम्पायर्स डैगर!" सर विलियम ने कहा।

"मतलब... पिशाच का खंज़र! पर... ये क्या बला है?" चैतन्य की हैरानी और भी बढ़ी थी।

तब सर विलियम ने बताया कि जब कोई पिशाच देव को प्रसन्न करने के लिए छद्म पिशाच साधना करता है, तब ये खंज़र प्रकट होता है। इस साधना में रक्त अर्पित किया जाता है, जिसके अपने-अपने तरीके होते हैं। वास्तव में वो खंज़र लाल रंग का नहीं होता है, बल्कि हर बार रक्त अर्पित करने के साथ ही उसका रंग बदलने लगता है और जब उस खंज़र से रक्त टपकने लगे, तो इसका मतलब है कि पिशाच बस आने ही वाला है। जब वो आते हैं, तब उस समय उन्हें एक बलि अर्पित की जाती है। अपने सबसे प्रिय या करीबी की बलि और ये साधना पूर्ण हो जाती है। फिर साधना करने वाले को मिलती है वो काली ताकत, जो सब कुछ बदल सकती है।
"तो इसका मतलब है कि आपका शक़ सही है। कोई सचमुच ये साधना कर रहा है।" कहते हुए चैतन्य की ऑखों के सामने अल्फ़ी का चेहरा लहराया।

"यस! और हमें पूरा यकीन है कि वो एडवर्ड है।" सर विलियम ने अपने दिल को कड़ा करने के बाद भी बहुत ही तकलीफ़ के साथ कहा।

"क्या सच में! हो सकता है कि कोई और हो!" चैतन्य ने सर विलियम का ध्यान डायवर्ट करने की कोशिश करते हुए कहा।

"और कौन... हो... सकटा है? हमने बहुट समय से... उस पर.. नज़र रकी है। पर हम.... जाडा गहराई मे कबी नई जा सके। उसका सोचने-समजने का टरीका... हमें हमेसा से वियर्ड लगा है। स्पेशली जब से वो जर्मनी में अपने अंकल पीटर से मिलकर वापस आया।" सर विलियम ने कहा।

"कौन पीटर अंकल?" चैतन्य की उत्सुकता बढ़ती ही जा रही थी।

"माई वाइफ्स ब्रदर! ही इज़ अ डेविल माइंडेड पर्सन। वो हमेसा से ही सक्टिमंडल का मेंबर बनना चाअटा था। पर बन नई सका। नाऊ.... वो अपने इविल एम्बिशन्स एडवर्ड के थ्रू पूरा करना चाअटा है।" सर विलियम ने चैतन्य को बताया।

"तो आप उसे समझाइए।" चैतन्य ने एक और रास्ता दिखाया।

"हाहाहाहा! व्हॉट डू यू थिंक... आई डिडन्ट डू दैट! हमेसा उसे समजाया। पर समजटा वो है... जो बाई मिस्टेक बटक गया ओ। जो जानबूज कर गलट रास्टा चूज करे.... उसे कौन समजाए।" सर विलियम ने दर्द भरे चेहरे के साथ कहा।

और चैतन्य को बाप-बेटे के बीच होने वाली बहसों की याद हो आई। वो बस एक आह ही भर सका।

"पर... मान लीजिए कि वो बात नहीं माना... तो क्या होगा?" चैतन्य ने उनके दिल को मापने की कोशिश करते हुए कहा।

"देन... हम वही करेंगे.... जो एक प्रित्वी-रक्चक को करना चाइए। अगर वो नई मानटा... टो... उसे जाना होगा। हमेसा के लिए।" सर विलियम ने बहुत ही कठोरता से कहा और इस बार उनकी आवाज ना तो भारी थी और ना ही काँप रही थी। चैतन्य ने पूरी हैरानी से उनकी ओर देखा।

"हम रक्चक हैं चैटन्य! हमारे लिए हमारी ड्यूटीज सबसे ऊपर होटी है और कुछ नई। पावर्स ब्रिंग अ लॉट ऑफ रिस्पॉन्सिबिलिटीज। इसके आगे कोई रिलेशनशिप मायने नई रखता। इसलिए टुम बी कुद को हर सैक्रीफाइज़ के लिए टैयार कर लो। चाए वो टुम्हारे लिए किटना भी प्रीसियस क्यों ना हो। कई बार ये पॉवर्स रक्चकों को अकेलेपन से जाडा और कुच नई दे पाते।" सर विलियम ने खाली-खाली ऑखों से चैतन्य को देखते हुए कहा। चैतन्य को उनकी आवाज कहीं दूर से आती महसूस हो रही थी।

"ये समझा रहा है या डरा रहा है।" चैतन्य ने बदमजा होकर कुढ़ते हुए सोचा।

"कुच कहा टुमने?" सर विलियम ने कहा।

"नो.... नॉट एट ऑल!" चैतन्य ने फुर्ती से कहा।

"सो.... नाऊ वी ओन्ली हैव टाईम टिल टुमॉरो एंड द नाईट आफ्टर टुमॉरो। इन डो रातों में ही हमें सब करना होगा। बिफोर अनाउंसमेंट।" सर
विलियम ने कहा।

"परसों रात कब तक होगी अनाउंसमेंट?" चैतन्य ने पूछा।

"राट के टीसरे पहर में। एट दैट टाइम ब्लैक पावर्स आर एट देयर पीक और उसी समय सक्टिमंडल के मैंबर्स की अनाउंसमेंट होटी है... जस्ट लाइक वॉर्निंग ऑर अटैक अलर्ट।" सर विलियम ने उसे समझाया।

"तो अगर... एडवर्ड के इरादे ग़लत हैं... उसे रोकना कैसे है?" चैतन्य ने पूछा।

"पिसाच के कंज़र से।" सर विलियम ने कहा।

"क्या? पर वो तो पिशाच का ही है। उसी से पिशाच को कैसे रोक सकते हैं?" चैतन्य ने बिदकते हुए कहा।

"चैटन्य! नेचर का एक रूल होटा है। जब बी कोई प्रॉब्लम क्रिएट होटी है... तो साट ही उसका एक सॉल्यूशन बी आटा है। वो हम पर डिपेंड करटा है कि हम उस सॉल्यूशन को किटनी जल्डी कोज पाटे हैं। जिटनी देर होटी है, प्रॉब्लम भी बड़टी जाटी है। हमारे लिए अच्ची न्यूज़ यही है कि हमें सॉल्यूशन पहले से पटा है और वो है पिसाच का कंज़र! हम उसी से ही छड्म पिसाच साडना करने वाले को रोक सकटे हैं। अब बस.... हमें उस कंज़र को किसी टरीके से पाना है।" सर विलियम ने चैतन्य को अपनी

योजना समझाते हुए कहा।

"और ये कैसे होगा? मैं तो उस कमरे में पैर भी नहीं रख सका।" चैतन्य ने अपनी कमर में हाथ रखकर समस्या बताते हुए कहा।

"उसके लिए हमें अग्नि-रक्चक या पिर जल-रक्चक की मदद लेनी होगी।
इन डोनों में से ही कोई उस कंज़र को ला सकटा है।" सर विलियम ने भी समस्या का समाधान बताते हुए कहा और ये सुनते ही चैतन्य ने खुद को उछलने से बड़ी मुश्किल से रोका।

"जल-रक्षक! क्या आपको पता है कि वो कौन है?" चैतन्य ने एक उम्मीद से पूछा क्योंकि उसकी अनामिका से बात नहीं हो सकी थी और उन दोनों को ही वापस जाने के लिए उसी की जरूरत थी।

"नई। रक्चक टो कई होटे हैं। पर नियटि पाट्र किसी स्पेशल को ही ये रिस्पॉन्सिबिलिटी विथ पॉवर्स देटी है और वो सक्टिमंडल के मेंम्बर्स की अनाउंसमेंट के बाड ही होगा। पर... हमें इटना पटा चला है कि इस बार कोई डायन ही जल-रक्चक है। अब हमें समझ नई आ रहा है कि हम ये कैसे पता करें?" सर विलियम ने अपनी समस्या सामने रखी।

"सर! मैंने सुना है कि कोई भी रक्षक अपने जैसे किसी भी रक्षक के साथ मानसिक संपर्क स्थापित कर सकता है तो क्या हम पहले के किसी जल रक्षक की सहायता से उसका पता नहीं लगा सकते।" चैतन्य ने एक बार फिर एक उपाय बताते हुए कहा।

"देयर इज अ प्रॉब्लम विथ दिस टू।" सर विलियम ने मायूस लहज़े में कहा।

"और वो क्या है?" चैतन्य ने पूछा।

"देयर इज नो अदर जल-रक्चक हियर एक्सेप्ट दैट डायन। पुराने जल-रक्चक, अग्नि-रक्चक मर चुके हैं। भायु-रक्चक कोई है नई। नाऊ.... वी हैव सच अ बिग प्रॉब्लम इन फ्रंट ऑफ अस। इसलिए हमें सबी रक्चकों की जरूरत है और हमें टो अनाउंसमेंट से पहले ही उसकी जरूरत है, जिससे हम उस कंज़र को हासिल कर सकें।" सर विलियम ने अगली
समस्या बताई।

"और अग्नि-रक्षक! क्या आप उसके बारे में जानते हैं?" चैतन्य ने एक स्वाभाविक सा सवाल पूछा।

"एडवर्ड!" सर विलियम ने छोटा सा जवाब दिया।

"सियापा!" चैतन्य ने अपना सिर पीटा।

"यस! एंड दिस इज़ द बिगेस्ट प्रॉब्लम! वी कान्ट टेक ऐनी हेल्प फ्रॉम एडवर्ड एंड..... जल-रक्चक के बारे में बी पटा नई लगा पा रहे हैं।" सर विलियम ने मायूसी से आह भरते हुए कहा।

"और अगर मैं पता लगा लूं तो।" चैतन्य ने एक उम्मीद देते हुए कहा।

"रियली! कैन यू डू दैट?" सर विलियम ने उत्साहित होते हुए कहा।

"शायद! आप कहें... तो मैं कोशिश करूँ।" चैतन्य ने इज़ाजत माँगते हुए कहा।

"देयर इज़ नो नीड टू आस्क। गो अहेड!" सर विलियम ने बड़ी ही उम्मीद से कहा।

"बस थोड़ा इंतजार करें। शायद कल सुबह तक पता चल जाए। मैं अभी इंतजाम करके आता हूँ।" चैतन्य ने कहा और तेजी से वहाँ से निकल गया। सर विलियम उसे जाते हुए देखते रहे। उन्हें नहीं पता था कि चैतन्य ये कैसे करेगा, मगर उनके पास चैतन्य के अलावा और कोई उम्मीद भी नहीं थी। वहीं चैतन्य ने दूसरी एकांत जगह में जाकर अनामिका से संपर्क स्थापित करने का प्रयास किया। अनामिका ने भी बड़ी मुश्किल से रिस्पांस दिया।

"क्या हुआ?" अनामिका की आवाज आई।

"काम है।" चैतन्य ने कहा।

"क्या?" अनामिका ने पूछा।

"तुम पता कर सकती हो कि इस बार कौन सी डायन जल-रक्षक बनने वाली है। ये बहुत ही जरूरी है।" चैतन्य ने कहा। मगर सामने से कोई भी जवाब नहीं आया।

"अनु! अनु! क्या हुआ?" चैतन्य ने फ़िक्र से पूछा।

"हाँ बोलो!" अनामिका की हाँफती हुई सी आवाज़ आई।

"क्या बोलो? कुछ पूछा तुमसे। कर सकती हो ये काम?" चैतन्य ने थोड़ा झल्लाकर कहा।

"माया! माया है अगली जल-रक्षक!" अनामिका ने जवाब दिया।

"क्या? सियापा की माँ! ये तो गड़बड़ हो गई।" चैतन्य ने एक बार फिर अपने माथे पर हाथ मारा और फिर उसी हाथ से अपने बालों को मुट्ठी में भींच लिया। सामने से जवाब की बजाय एक बार फिर से अनामिका के हाँफने की आवाज आई, जिस पर चैतन्य चौंका।

"अनु! क्या हो गया? तुम परेशान लग रही हो। क्या हो गया?" चैतन्य की चिंता और बढ़ी थी।
"तुम कहाँ हो चैतन्य? वो तुम्हारा दोस्त अल्फ़ी... " अनामिका ने बात अधूरी छोड़ी।

"क्यों? क्या हो गया?" चैतन्य ने ऑखें सिकोड़ कर पूछा।

"उसे क्या हो गया है? वो अपनी माया के पास जाए ना! वो मेरे पीछे क्यों पड़ा है? मैं उसकी नज़रों से छिपती फिर रही हूँ, पर... उसकी नज़रें हर जगह मेरा पीछा कर रही हैं। मुझे उसकी नज़रें अब इरीटेट कर रही हैं। तुम आओ जल्दी!" अनामिका ने झल्लाई हुई आवाज में कहा।

"क्या? ये पागल हो गया है क्या? ठीक है तुम... घबराओ मत! अपने समूह के साथ ही रहो। अकेले

मत जाना कहीं। मैं आकर संभालता हूँ उसे। ओके!" चैतन्य ने उसे समझाते हुए कहा, जवाब में अनामिका ने हामी के साथ हुंकारी भरी और फिर संपर्क काट लिया।

चैतन्य एक नई परेशानी के साथ जूझने ही लगा था कि उसी समय उसे सर विलियम की याद आई और वो तेजी से उनके पास पहुँचा। वो बड़ी ही बेचैनी से उसका इंतजार कर रहे थे। चैतन्य को वापस लौटा पाकर उन्होंने उसी बेचैनी से उसकी ओर देखा। मगर चैतन्य का चेहरा उलझनों का शिकार हो चुका था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो सर विलियम को एक और समस्या के बारे में कैसे बताए।

"व्हॉट हैपेन्ड? काम नई हुआ!" पूछते हुए सर विलियम का लहजा थोड़ा बुझा हुआ था।

"काम तो हुआ। पर मुझे लगता है कि... वो नाम सुनकर आप भी खुश नहीं होंगे।" चैतन्य ने कुछ देर पहले हुई एडवर्ड और माया की मुलाकात को याद करते हुए कहा।
"अच्चा!" सर विलियम की ऑखों में भी सवाल उभरा।

"माया!" चैतन्य ने कहा और नाम सुनकर सर विलियम का चेहरा पूरी तरह से उतर गया। चैतन्य ने पहले ही उनको एडवर्ड और माया की मुलाकात के बारे में बता दिया था।

"जीजस क्राइस्ट!" सर विलियम ने कहा और अपनी कमर में हाथ रखकर तेजी से चहलकदमी करने लगे। यकीनन ये उनके लिए हर दरवाजा बंद होने की तरह था। चैतन्य भी समझ चुका था कि समस्या सुलझने की बजाय और भी उलझती जा रही थी। उसे ये भी ख्याल आया कि सर विलियम ने उससे कहा था कि चैतन्य का यहाँ आना इसी समस्या को सुलझाने से जुड़ा हुआ था। तो इसका मतलब है कि अनामिका भी रक्षक होने के नाते बिना उद्देश्य यहाँ नहीं आई थी। उसके यहाँ होने का भी कोई ना कोई उद्देश्य था। वो भी एक जल-रक्षक थी। क्या वो खंज़र लाने में मददगार हो सकती थी। शायद! पर इतनी बड़ी उम्मीद हाथ लगने के बाद भी चैतन्य इस उलझन में था कि वो सर विलियम को अनामिका के बारे में बताए या नहीं और बस इसीलिए वो चुपचाप खड़ा रह गया।

"चैटन्य! क्या ऐसा नई हो सकटा कि.... किसी लालच में.... वो माया... हमारी मडड के लिए टैयार हो जाए। टुम बाट करके डेखो। वैसे बी... उसके बारे में हमने बहुट कुच सुना है। हमें लगटा है कि....टुम्हारे जैसे हैंडसम यंग मैन की बाट.... वो नई टालेगी।" सर विलियम ने एक और उम्मीद की लौ जलाते हुए कहा और उस लौ से चैतन्य की आत्मा तक सुलग गई। सर विलियम के मुँह से ये सुनते ही चैतन्य को ऐसा लगा कि किसी ने उसे बिजली के नंगे तारों के ऊपर लिटा दिया हो। उसे पता था कि माया अपनी मदद के एवज में उनसे क्या मांगेगी और वो देने के लिए चैतन्य बिल्कुल भी तैयार नहीं था। वो बुरी तरह से हड़बड़ा गया था।
"क्या हुआ?" चैतन्य के राख होते चेहरे को देखकर सर विलियम ने पूछा।

"कोई और जल-रक्षक नहीं चलेगी क्या?" चैतन्य ने अपने बचे-खुचे होश के साथ कहा।

"चलेगी! पर... उसे बी... उतना ही पावरफुल... होना चाहिए।" सर विलियम ने उसे हैरान नज़रों से देखते हुए कहा। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि चैतन्य इतनी जल्दी दूसरी जल-रक्षक कहाँ से लाएगा।

"है ना! बहुत पावरफुल है। मुझसे भी ज्यादा!" चैतन्य ने तुरंत ही कहा।

"इट इज़ इंपॉसिबल?" सर विलियम ने बेयकीनी से कहा।

"इट इज़! मैं जानता हूँ उसे। आप कहें तो मुलाकात करवा दूँ आपसे।" चैतन्य ने कहा।

"हमें नई पटा... कि टुम... क्या कह रहे हो? बट... अगर.. ऐसा है टो... वी हैव गॉट अ ट्रम्प कार्ड।" सर विलियम ने एक बेयकीनी उम्मीद के साथ चैतन्य को देखते हुए कहा।

आखिरकार अनामिका के इस मिशन में जुड़ने का भी वक्त आ ही गया था।

वो सबकी नज़रों से बचती हुई आगे बढ़ी जा रही थी। थोड़ी-थोड़ी देर आगे जाने के बाद वो पीछे मुड़कर देखती और फिर आगे बढ़ जाती। पीछे महफ़िल अब अपने उतार पर थी, इसलिए उसे भी ये जल्दी ही करना था। वो एक बड़े से पेड़ के पास पहुँची ही थी कि तभी एक मजबूत हाथ ने उसे अपने पास खींचा और उसका मुँह तुरंत ही बंद किया।

"श्श्श्श! मैं हूँ! शांत रहो।" एक दबी हुई सी मगर भारी आवाज आई। उसने अपना सिर सहमति में हिलाया, तो सामने वाले ने उसके मुँह से
अपना हाथ हटा दिया।

"चलो!" उसका हाथ पकड़कर एक ओर खींचते हुए वो बोला और वो उसके साथ हो ली। थोड़ी ही देर में वो दोनों उस मेंशन के एक पिछले दरवाजे से बाहर निकल आए।

"जल्दी आओ!"
और फिर एक झुरमुटों से भरा रास्ता तय करने के बाद जल्द ही वो दोनों लकड़ी से बने एक पुराने से ख़स्ताहाल केबिन के सामने खड़े थे। वो पहली नज़र में बहुत ही डरावनी लग रही थी।

"ये कौन सी जगह है चैतन्य?" अनामिका ने उस केबिन को थोड़े भय से देखते हुए पूछा।

"आओ बस! सब जान जाओगी।" चैतन्य ने उसका हाथ पकड़कर केबिन के अंदर जाते हुए कहा।
अनामिका भी चारों ओर देखते हुए उसके साथ अंदर चली गई।

अंदर घुप्प अंधेरा छाया हुआ था और चारों ओर फैला अंधेरा ऑखों में चुभ रहा था। उस अंधेरे से लड़ने की कोशिश में एक ढिबरी कोने में टिमटिमा

रही थी। फिलहाल वो वहाँ बस रोशनी का एक भ्रम रखे हुए थी।

"चैतन्य!"

"हाँ!"

"ये रोशनी किसने की यहाँ?" अनामिका ने उस ढिबरी की ओर देखते हुए पूछा।

"मुझे नहीं पता!" चैतन्य ने साफ जवाब दिया।

"तुम... मुझे यहाँ... क्यों लाए हो?" अनामिका ने चारों ओर फैले अंधेरे से ख़ौफजदा होते हुए पूछा।

"जरूरी काम है।" चैतन्य ने जवाब दिया।

"वही तो! क्या.... काम है?" अनामिका ने थोड़ी सहमी हुई आवाज में कहा।

"कुछ बहुत जरूरी बात करनी है।" चैतन्य ने कहा।

"हाँ तो... वो हम मेंशन में भी... कर सकते थे... या फिर... मिलने पर। यहाँ क्यों लाए हो?" अनामिका ने एक बार फिर मद्धम आवाज में कहा और इस बार उसकी बात ने चैतन्य को चौंकाया था। उसने उस झिलमिलाती रोशनी में अनामिका के धुँआ होते चेहरे को ग़ौर से देखा।

"तुम.... मुझसे डर रही हो!" चैतन्य ने बेयकीनी से उसकी ओर देखते हुए पूछा, जिस पर अनामिका की नज़रें उसकी ओर उठी थीं।
"नहीं! तुमसे क्यों डरूंगी? पर ये जगह बड़ी अजीब सी लग रही है। पता नहीं क्यों पर.... यहाँ आने के बाद मुझे हर चीज से डर लगने लगा है।" अनामिका ने बात संभालते हुए कहा।

"तो क्या मुझ पर भरोसा नहीं है?" चैतन्य ने उसे जाँचती ऑखों से देखते हुए पूछा।

"कैसी बात कर रहे हो? तुम पर भरोसा है... तभी तो यहाँ तुम्हारे साथ खड़ी हूँ।" अनामिका ने भी उसकी ऑखों में देखते हुए मजबूती से कहा।

"तो फिर ये भरोसा बनाए रखो। एक बात याद रखो अनामिका कि हम यहाँ जो भी देख रहे हैं, सुन रहे हैं, समझ रहे हैं... वो सब हमें अच्छी तरह दिमाग में बिठाकर रखना है क्योंकि हमारी भविष्य की लड़ाई के लिए हथियार हमें इस अतीत में ही मिलेंगे। इन्हीं के सहारे भविष्य की लड़ाई लड़नी है हमें। समझ में आया!" अनामिका का चेहरा अपनी हथेलियों में भरकर चैतन्य ने कहा।

"हूँ!" अनामिका ने भी हुंकारी भरी।

"और मैं हूँ हमेशा तुम्हारे साथ।" चैतन्य ने कहा और मुस्कुराते हुए उसका माथा चूमा था।

वो दोनों ही एक-दूसरे का हौसला संभालते हुए खड़े ही थे कि तभी उन्हें दरवाजे के पास आहट सुनाई

दी। उस आवाज को सुनकर अनामिका ने चैतन्य की कलाई कसकर पकड़ी।

"डरने की बात नहीं है।" चैतन्य ने उसे हिम्मत देते हुए कहा।उसी समय दरवाजा खुला और सर विलियम अंदर आए।
"चैटन्य!"

"जी सर!"

और फिर चैतन्य ने कम से कम शब्दों में सर विलियम और अनामिका का एक-दूसरे से परिचय करवाया। सर विलियम अपनी ऑखों में आश्चर्य भरे अनामिका को देख रहे थे। उन्हें अभी भी यकीन नहीं हो रहा था कि अनामिका एक ताकतवर जल-रक्षक थी। उनके इस कमजोर यकीन की भी एक मजबूत वजह ये थी कि कभी भी एक ही समय में दो बराबर शक्ति वाले रक्षक नहीं हुए थे। अगर माया इतनी ताकतवर जल-रक्षक थी कि उसके सर्वशक्तिमंडल के सर्वेसर्वा बनने के चांस थे, तो अनामिका की एक मजबूत जल-रक्षक के रूप में इस समय में उपस्थिति उनकी समझ से परे थी। मगर अनामिका की अंगुली में फँसी नीले रंग की अंगूठी अनामिका की ताकत को बयां कर रही थी, जबकि माया को अभी ये पदवी हासिल नहीं हुई थी।

फिलहाल उनके पास इसके बारे में सोचने का ज्यादा वक्त नहीं था। पहले वो दो थे और अब तीन हो चुके थे। जाहिर है कि उनकी ताकत और भी बढ़ चुकी थी और सर विलियम इस बात से और भी उत्साहित हुए थे। जब चैतन्य ने अनामिका को माया और एडवर्ड और उनकी मुलाकात के बारे में बताया तो वो भी बहुत ही ज्यादा हैरान हुई थी।

"मतलब कि वो दोनों मिलकर कुछ गड़बड़ कर रहे हैं। पर क्या?" अनामिका ने जैसे दूसरों के साथ खुद से भी सवाल किया।

"वही चीज तो हमें भी समझ में नहीं आ रही है। माया और एडवर्ड का मेल-मिलाप कुछ समझ में नहीं आ रहा है। जब दोनों ही निर्विरोध होने वाले रक्षक हैं और सर्वशक्तिमंडल के सदस्य भी, तो उन दोनों को कुछ भी गड़बड़ करने की क्या जरूरत है और... दोनों को एक-दूसरे से ऐसी क्या जरूरत है कि वो दोनों कट्टर दुश्मन होकर भी साथ मिल गए हैं।" चैतन्य ने भी उलझन के साथ कहा।

"यही टो पटा करना है... कि... क्या गरबर है?" सर विलियम ने कहा।

"सबसे बड़ी गड़बड़ तो ये है कि माया शादीशुदा हैं और उसने ये बात सबसे छिपाई हुई है।" अनामिका ने कहा, जिस पर सर विलियम के साथ चैतन्य ने भी उसे हैरानी से देखा था।

"व्हॉट! बट व्हॉट इज़ देयर टू हाइड?" सर विलियम ने चौंकते हुए पूछा।

"तो क्या शादीशुदा होने से कोई फर्क नहीं पड़ता।" चैतन्य ने पूछा।

"नो! नॉट एट ऑल!" सर विलियम ने उनकी शंका दूर करते हुए कहा।

"इससे भी नहीं कि उसका पति एक पिशाच है।" अनामिका ने तफ्तीशी सवाल किया, जिस पर चैतन्य ने उसे कनखियों से देखा। उसे नहीं लग रहा था कि अल्फ़ी का जिक्र यहाँ आना चाहिए।

"वन मिनट! यू वांट टू से दैट.... माया ने किसी... पिसाच से मैरिज़ किया है। इट इज़ इंपॉसिबल! कौन है वो?" सर विलियम ने बेयकीनी से कहा।

"अ... मुझे लगता है कि ये मसला भी पूरी तरह से सुलझा नहीं है। वो तो शादी और प्यार की बात कहता है, पर... माया और माया की हरकतों को इससे इंकार है। इसलिए उसका नाम लेना फिलहाल मुनासिब नहीं है। लेकिन इस पहेली को सुलझाते समय हमें इसे भी अपने दिमाग में रखना ही होगा।" अनामिका ने अल्फ़ी के नाम पर पर्दा रखते हुए कहा और चैतन्य ने भी राहत की साँस ली।
"तो फिर क्या करें? चैतन्य ने पूछा।

चैतन्य का सवाल सुनकर सर विलियम ने चैतन्य को पूरी तरह से एडवर्ड के पीछे लगे रहने के लिए कहा क्योंकि वो इन्हीं दो दिनों में अपनी साधना पूरी करने वाला था और इसका सबूत था उस खंज़र का पूरी तरह से लाल हो जाना। अब वो बलि की तैयारी कर रहा होगा।

"और वो बलि किसकी दे सकता है? क्या आपको इसका कोई अंदाजा है?" चैतन्य ने पूछा।

"मे बी.... उसकी लाईफ में कोई करीबी हो... टो उसकी या पिर.... हमारी!" सर विलियम ने पीठ की ओर हाथ बांधे अंधेरे में देखते हुए कहा। अनामिका और चैतन्य की सिकुड़ी हुई ऑखें एक-दूसरे की ओर मुड़ी थीं।

"आपकी!"

"हाँ! इस बलि के लिए ब्लड रिलेशन या पिर.... बहुट ही क्लोज़ लव-रिलेशन का होना जरूरी है।"

"प्रेम संबंध और बलि! ये कैसा प्रेम हुआ?" चैतन्य तिड़ककर बोला।

"आई डोंट नो! लोगों को पॉवर का क्या नसा होटा है? एडवर्ड के लाइफ में लव का होना इंपॉशिबल है.... दैट्स वाई वो ब्लड-रिलेशन में हमारी बलि ही डे सकटा है।" सर विलियम ने भारी लहज़े में कहा।

"पर आपकी बलि देने के बाद वो लोगों के सामने खुद को कैसे जस्टिफाई करेगा?" अनामिका ने पूछा।

"दैट्स व्हॉट.... आई डोंट अंडरस्टैंड। उसके दिमाग में आकिर.... चल
क्या रहा है? कुच टो ऐसा है..... जो हम सब से चिपा हुआ है.... या पिर चिपाकर... रखा गया है।" सर विलियम ने एक और आशंका जताई।

"छिपाया! हाँ! छिपाने से याद आया कि माया ने भी उस खुफिया दरवाजे के पीछे कुछ छिपा रखा है। लगता है कि पता लगाना पड़ेगा। पिछली बार मैंने माया की एक साथी और परिधि को वहाँ से परेशानी की हालत में वापस आते देखा था। वहाँ कुछ तो ऐसा है जो माया के लिए बहुत ही जरूरी है और उसे संभालने में उन सभी को बहुत ही परेशानी हो रही है।" अनामिका ने उस खुफिया दरवाजे को याद करते हुए कहा।

"तुमने बताया था कि वो किसी के जाने की भी बात कर रहे थे। उसके बारे में भी पता नहीं चला?" चैतन्य ने पूछा।

"वही तो गड़बड़ है कि इन सबके बारे में माया, परिधि और उन दो चमचियों के अलावा और कोई नहीं जानता है। मैंने कुछ लड़कियों से ये जानने की कोशिश भी की, पर उन्हें नहीं पता कि उस बसेरे में ऐसा कोई खुफिया दरवाजा भी है।" अनामिका ने अपने खाली हाथ झटकते हुए कहा।

"जो भी है! दोनों ने घोर नफ़रत होने के बाद भी हाथ मिलाकर प्लान बहुत ही सॉलिड बनाया है। किसी को भी कोई भनक नहीं लगी।" अनामिका ने कहा।

"तो फिर हमें उन दोनों पर ही नज़र रखनी पड़ेगी।" चैतन्य ने कहा।

"यस! वी हैव टू डू दिस! अगर.... माया... सचमुच... कुच... चिपा रही है, टो उसके बारे में बी जानना जरूरी है।" सर विलियम ने कहा।

इसके बाद सर विलियम ने अनामिका को माया की खबर निकालने के
लिए कुछ सुझाव और निर्देश दिए। उन्होंने अपनी जेब से कुछ निकालकर अनामिका को दिया, ये कहते हुए कि ये उसकी मदद करेगा। किस तरह... अब ये अनामिका को ही सोचना था। फिर उन्होंने एक त्वरित योजना का ख़ाका खींचा और फिर काम शुरू करने के लिए हाथ मिला लिया। उन सभी की मुलाकात को 15 मिनट होने को आए थे। सर विलियम ने चैतन्य को अनामिका को हिफ़ाज़त से पार्टी तक पहुँचाने के लिए कहा। चैतन्य और अनामिका के उस केबिन से निकलते ही सर विलियम ने एक ठंडी आह भरी और फिर उस ढिबरी को उठाकर एक कोने में गए। उन्होंने झुककर जमीन पर फैला कपड़ा एक ओर हटाया। वहाँ कुछ ढक्कन जैसा दिख रहा था। उन्होंने उसे खोला, तो एक गड्ढा दिखाई देने लगा... जिसके अंदर अंधेरे की वजह से कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। उन्होंने अपने काँपते हुए हाथ को अंदर डाला... जो बाहर निकलते समय कुछ साथ ले आया था। सर विलियम ने उसे अपनी ऑखों के सामने लाकर भरी हुई ऑखों से देखा। वो एक चाँदी का पुराना सा पेंडेंट था, जो एक मोटे काले धागे में गुँथा हुआ था।

"मीना!"

और फिर वो उसे अपने माथे से लगाकर सिसकने लगे थे। ये सब देखकर दरवाजे पर ठिठकी हुई अनामिका अपनी अधूरी बात एक बार फिर साथ लेकर वापस चली गई। एक बार फिर सच्चे प्रेम को लेकर अनामिका
के मन में जो डर बैठ गया था, उसने सिर उठा लिया था। एक और प्रेम-कहानी दुनियादारी की भेंट चढ़ चुकी थी और ये जानकर अनामिका का दिल बैठा जा रहा था।

"क्या हुआ? पूछा तुमने!" उसके वापस लौटने पर चैतन्य ने पूछा।

"नहीं! इतनी भी जरूरत नहीं है।" अनामिका ने बुझी हुई आवाज में कहा।

"क्या हो गया?" चैतन्य ने पूछा।

"बस यही सोच रही हूँ कि जो सच्चा प्यार करता है उसके हिस्से में दर्द ही क्यों आता है? जबकि माया और एडवर्ड जैसे लोग प्रेम की लाश पर कितनी आसानी से ठहाके लगा लेते हैं।" अनामिका ने कहा।

"इसका जवाब नहीं है मेरे पास। चलो!" चैतन्य ने कहा और आगे की ओर बढ़ा।

अनामिका ने एकदम से आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ा और अजीब से जज़्बात दिल और ऑखों में भरकर बोली, "हम तो अलग नहीं होंगे ना चैतन्य?"

चैतन्य ने हैरानी से अनामिका की ओर देखा और फिर थोड़ी चिढ़ से बोला, "ये क्या लगा रखा है तुमने सुबह से। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि वो अनामिका कहाँ गई... जो मेरी और हम सबकी हिम्मत हुआ करती थी। प्लीज़ ऐसा मत करो अनामिका!"

"मुझे नहीं पता चैतन्य! मैं खुद ही ऐसा नहीं चाहती। पर मेरा मन... मेरे ख़्याल... ना चाहते हुए भी इसी तरफ मुड़ने लगते हैं। इस पर मेरा कोई
बस नहीं चल रहा है। मुझे बहुत डर लगता है। क्यों? पता नहीं!" कहते हुए अनामिका बेचैनी से चैतन्य से आ लगी थी।

"कोई बात नहीं! सब ठीक हो जाएगा। लग रहा है कि माहौल का असर हो रहा है।" चैतन्य ने उसे संभालते हुए कहा।

"पर मेरे साथ ही क्यों?" अनामिका ने चैतन्य की ओर अपना चेहरा उठाकर पूछा।

"पता नहीं अनामिका! पर इतना जानता हूँ कि हमें कोई अलग नहीं कर सकता। हाँ... अगर कभी.... किसी ने तुम्हें मुझसे दूर किया... तो भी मैं किसी भी समय के पार जाकर तुम्हें वापस... अपने पास ले आऊंगा। चाहे आसमान हो... चाहे पाताल हो। ये मेरा वादा है तुमसे।" चैतन्य ने अनामिका को खुद में भींचते हुए कहा।

अनामिका भी चैतन्य के वादों की हिफाज़त में सिमटकर भावुक हो उठी थी। प्रेम के दो दिए अंदर और बाहर दोनों जगह अपने ऑसुओं से अपनी लौ को जीवित रखे हुए थे।

रात के तीसरे पहर से पहले ही सभी अपने-अपने मुकाम पर लौट आए थे। जहाँ सभी उत्सव के अगले दिन की तैयारियों में मशरूफ थे, वहीं समय बीतने के साथ ही कुछ और लोगों की सरगर्मियाँ भी बढ़ चुकी थीं। सबके लिए ही समय बहुत कम बचा था।

योजना के अनुसार चैतन्य ने पूरे तीसरे पहर में गुप्त रूप से एडवर्ड पर नज़र रखी, मगर शायद एडवर्ड अपनी आज की कार्रवाई कर अपने कमरे के दरवाजे के पीछे क़ैद हो चुका था। चैतन्य ने कुछ देर तो उस दरवाजे पर नज़र रखी, पर कोई भी हलचल ना होने पर उसे आशंका होने लगी थी। उन सबको

लगा था कि सबके नींद में ग़ाफ़िल होने के बाद एडवर्ड अपना अगला कदम उठाएगा। वो इसी तरह बहुत समय तक इसी उधेड़बुन में लगे उकताने लगा था कि एक बार फिर उसके मस्तिष्क में दस्तक हुई। दूसरी ओर अनामिका थी।

"चैतन्य!"

"क्या हुआ?"
"मुझे कुछ बहुत ही जरूरी बात बतानी थी तुम्हें।"

"अभी!"

"कल तुम आओगे बसेरे की पार्टी में?" अनामिका ने पूछा।

"मुझे तो आना ही पड़ेगा।" चैतन्य ने कहा।

"ठीक है तो... तभी बात होगी। ये बहुत जरूरी है। मेंशन के उन गलियारों में भटकते समय कुछ अजीब सी चीज पता चली है, मगर बात आमने-सामने हो, तो ही बेहतर है।" अनामिका ने कहा। चैतन्य के हुंकारी भरने पर अनामिका ने संपर्क तोड़ दिया। उसकी बात सुनने के बाद चैतन्य को भी याद आया कि जब वो मेंशन में अनामिका की मदद के लिए गया था, तब भी अनामिका ने उससे ऐसी बात कही थी।

तीसरा पहर खत्म होते ही चैतन्य भी थका-हारा सर विलियम के पास पहुँचा। उन्होंने तीसरे पहर के बाद उसे अपने कमरे में बुलाया था। वो भी कहीं बाहर गए हुए थे। जब चैतन्य उनके कमरे में पहुँचा, तो उसने सर विलियम को उसी काले लबादे में देखा, जो लबादा उसने नरक के द्वार के पास अनुष्ठान करते हुए लोगों को पहने देखा था। इसका मतलब था कि वो उसी जगह से आ रहे थे।

"आप नर्क के द्वार के पास गए थे।" चैतन्य ने दरवाजे के पास खड़े हुए पूछा।

"चैटन्य। कम इन! यस! सबको... अपनी-अपनी.... ड्यूटी करनी ही होगी। इस समय... उस नरक के दरवाजे... की सेफ्टी बी बहुट ही जरूरी है। टुम बटाओ! एनी इंपोर्टेंट न्यूज़!" सर विलियम ने अपना लबादा उतारते हुए
एक आस से पूछा।

"नथिंग! आई थिंक ही हैज डन फॉर टुडे।" चैतन्य ने मायूसी भरा जवाब दिया।

"इट मींस.... वो एक और बार... पिसाच को ब्लड भेंट करेगा, आफ्टर दैट.... किसी की बलि देगा।" सर विलियम ने कहा।

"आपका मतलब है कि एडवर्ड के लिए अभी और भी काम बचे हैं!" चैतन्य ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।

"अगर... उस कंज़र से कून.... नई टपक रहा ता... टो वो पिसाच को एक ब्लड ओर चड़ाएगा, जिससे उस कंज़र से ब्लड टपकने लगेगा।" सर विलियम ने अपने माथे पर सिलवटें डालते हुए कहा।

"हे भगवान! मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।" चैतन्य ने थोड़ी झुंझलाहट से कहा।

उसकी झुंझलाहट देखकर सर विलियम ने बताया कि छद्म पिशाच साधना के दौरान अपने ही पारिवारिक रक्त-समूह से तीन लोगों का खून पिशाच को अर्पित करने के बाद ही पिशाच को एक नरबलि चढ़ाई जाती है। उस बलि के बाद ही ये साधना पूरी होती है। कई बार साधक को सालों लग जाते हैं, तो कभी किसी की साधना कुछ ही दिनों में सिद्ध हो सकती है। ये इस बात पर निर्भर करता है कि साधक के अंदर कितनी निर्दयता, गुस्सा और नफ़रत भरी हुई है। हालांकि ये साधना इतनी कठिन है कि कभी कोई इसे सिद्ध नहीं कर पाया, सिवाय उस पिशाचिनी के ... जो उस नर्क के द्वार के पीछे क़ैद है।

"तो क्या एडवर्ड कई सालों से इसमें संलिप्त है। उसने परिवार में
किस-किस का खून अर्पित किया होगा और क्या जिसका खून अर्पित किया जाए... उसकी बलि दी जा सकती है?" चैतन्य ने एक के बाद एक सवालों की झड़ी लगा दी।

चैतन्य के सवाल के जवाब में सर विलियम ने उसे बताया कि परिवार के जिन तीन सदस्यों का खून अर्पित किया जाता है, उनकी बलि नहीं दी जा सकती है, मगर बलि परिवार के ही किसी सदस्य की दी जा सकती है, किसी और की नहीं। एडवर्ड के जन्म के कुछ दिनों बाद ही उसकी माँ की मृत्यु हो गई थी। उनके बाद सर विलियम के परिवार में उनके पिता, वो खुद और एडवर्ड यही तीन सदस्य ही थे। एडवर्ड ने अपने दादा, अपने पिता और अपने खून में से किन्हीं दो का खून पिशाच को अर्पित कर दिया था, जिससे वो पिशाच का खंज़र पूरी तरह से लाल हो चुका था। अब बचे हुए तीसरे पारिवारिक सदस्य का खून अर्पित करते ही उस खंज़र से खून टपकने लगेगा और अगला सवाल यहीं पर से निकल कर आ रहा था कि वो बलि किसकी देने वाला था? उसकी ना तो पत्नी और बच्चे थे और ना ही कोई भाई-बहन। सर विलियम भी अपने पिता की एक अकेली संतान थे। इसलिए कोई और करीबी रक्त-संबंध भी नहीं था। जहाँ सर विलियम इस सवाल में उलझ चुके थे, वहीं चैतन्य के दिमाग में इसका जवाब अल्फ़ी की शक्ल में उभरा।

"क्या ऐसा हो सकता है कि एडवर्ड को अल्फ़ी के बारे में पता चल गया हो और अब वो उसकी बलि देने वाला हो। हाँ! यही हुआ होगा। इसका मतलब है कि अल्फ़ी की जान को ख़तरा है।" और अपने दिमाग के इस आकलन से वो बुरी तरह से बौखलाया।

सर विलियम ने जब चैतन्य के चेहरे के रंगों को उड़ते देखा, तो उससे स्वाभाविक रूप से सवाल कर बैठे, "व्हॉट हैपेन्ड चैटन्य? आर यू ओके? परेसान लग रहे हो!"
"सर! क्या सचमुच आपकी कोई और संतान नहीं है। हो सकता है कि... आपको पता ना हो। देखिए बुरा मत मानिएगा... पर... आपकी ऊँची सोसायटी में तो... ऐसा होना आम बात है। अगर याद कर सकें तो।" चैतन्य ने उनसे नज़रें चुराते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर पहले तो सर विलियम की एक भौंह चढ़ी, फिर सहमे हुए चैतन्य को देखकर उनके होंठों पर एक खीझी हुई सी मुस्कुराहट आई।

"आई नो... व्हॉट डू यू वांट टू से! बट.... हमारी लाइफ में कबी कोई नई आई।" एक गहरी और ठंडी साँस के साथ सर विलियम ने कहा।

"तो आप उस फॉरेस्ट केबिन में किससे लिए सिसक रहे थे?" चैतन्य ने आखिरकार रिश्तों की गिरहों को

खोलने की गरज़ से कहा। उसे अनामिका ने सब बता दिया था। सर विलियम अपने जीवन के इस छिपे पहलू के जिक्र से बुरी तरह से चौंके और तेजी से पलटकर चैतन्य की ओर देखा। चैतन्य बिना किसी झिझक के उनकी ओर देख रहा था। चैतन्य की आँखों की बेबाकी सर विलियम की नज़रें झुका गईं।

"कुच रिलेशन... हमेसा इनकम्प्लीट रहते हैं... बिकॉज... वो बस...पेन के लिए... बनटे हैं।" सर विलियम ने बड़ी ही मुश्किल से लरजती हुई आवाज में कहा।

"शायद आपको ऐसा लगता है। हो सकता है कि... वो रिश्ता अधूरा ना हो... बस अधूरेपन के पर्दे में हो। एक बार वो पर्दा उठाकर तो देखिए। शायद... आपको इस दिल के दर्द से आराम मिल जाए।" चैतन्य ने मरहम भरे लफ़्ज़ों के साथ कहा।

उसकी बात सुनकर सर विलियम के होंठों पर फिर से एक दर्द भरी मुस्कराहट आई और वो दर्द से भीगे लहज़े में बोले, "मीना! उसे... हमसे...
डूर कर डिया... हमारी सोसायटी के रूथलेस एंड हॉलो रूल्स ने। हम... उसे नुकसान पहुँचटे नई देक सकटे ते, इसलिए... कुद से डूर बेज डिया। अच्चा हुआ... कि वो... आगे बड़ गई ओर अपना घर... बसा लिया। ये अलग बाट है कि... अल्फ़ी को डेखकर उसकी याड... बहुट आटी है।"

"सर मुझे लगता है कि आपको कुछ और भी देखना चाहिए था।" चैतन्य ने एक बार फिर से उलझे हुए शब्दों में कहा।

"व्हॉट डू यू मीन?" चैतन्य के उलझे लहज़े में उलझते हुए सर विलियम ने कहा।

"सर! आपके दिल ने अल्फ़ी के लिए कभी भी मीना के बेटे से आगे कुछ और महसूस नहीं किया।" चैतन्य ने कहा।

"से क्लीयरली... व्हॉट यू वांट टू से!" सर विलियम ने अपनी बढ़ती हुई धड़कनों के साथ कहा।

"आप यही सोच रहे हैं ना कि एडवर्ड अपने परिवार के किस सदस्य की बलि देना चाहता है? मुझे शक है कि एडवर्ड ने वो देख लिया है, जो आपको देखना चाहिए था।" चैतन्य ने बहुत ही गंभीर आवाज में कहा और चैतन्य की इस बात से सर विलियम के चेहरे पर कई रंग आकर गुजर गए। वो अपनी भरी हुई आँखों से चैतन्य को एकटक ऐसे देख रहे थे, जैसे कि उन्हें ये इंतजार हो कि चैतन्य वो कह दे.. जो अभी उनके दिल ने कबूल किया था।

"हाँ सर! आप सही समझ रहे हैं। वो आपका बेटा है।" और आखिरकार चैतन्य ने वो कह ही दिया, जो वो सुनना चाहते थे।

सर विलियम को अपने पैरों के नीचे की जमीन हिलती हुई महसूस हुई।
उनके ढीले पड़ चुके शरीर का भार उठाने से क़ासिर उनके काँपते हुए पैर बुरी तरह से लड़खड़ाए, मगर वो गिर जाते उससे पहले ही चैतन्य ने आगे बढ़कर उन्हें संभाल लिया। चैतन्य ने उन्हें पास की कुर्सी में बैठाया।

"अल्फ़ी! माई सन! ही इज़ माई सन!" सर विलियम अभी भी खुद को यकीन दिलाने की कोशिश कर रहे थे।

"आप ठीक हैं?" चैतन्य ने पानी का गिलास उनकी ओर बढ़ाते हुए कहा।

"एंड हाऊ डू यू नो दैट... ही इज़ माई सन?" सर विलियम ने अपनी काँपती हुई आवाज में सवाल किया।

"अल्फ़ी ने बताया।" चैतन्य ने ईमानदारी से जवाब दे दिया।

"वो जानटा ता! व्हाई ही डिडन्ट टेल मी?" भावुक सर विलियम ने लगभग रोते हुए कहा।

"क्योंकि वो ऐसा नहीं चाहता।" चैतन्य ने साफगोई से कहा।

"बट व्हाई? अगर वो ऐसा नई चाहटा... टो यहाँ क्यों आया है?" सर विलियम तड़पकर बोले।

"वो आपकी इस ऊँची सोसायटी पर यकीन नहीं रखता सर। वो जानता है कि इस सोसायटी के कायदे-कानूनों ने ही उसके माता-पिता को अलग कर दिया। वो बस मीना का बेटा बनकर रहना चाहता है। एक साधारण सी जिंदगी जीना चाहता है....अपने प्यार के साथ...." और अपनी रौ में कहता हुआ चैतन्य अचानक ही रूका था। एक ख़ौफनाक विचार उसके दिमाग में आया और उसकी ऑखें उस ख़ौफ से फ़ैल गई।
"व्हॉट हैपेन्ड?" चैतन्य के चेहरे के बदलते भावों को देखकर सर विलियम ने पूछा।

"अब सब समझ आया मुझे... कि यहाँ क्या खेल चल रहा है?" चैतन्य अपनी बाईं हथेली पर दाएँ हाथ की मुट्ठी मारते हुए बोला।

"केल! केसा केल?" सर विलियम ने एक बार फिर से उलझते हुए पूछा।

"आपने बताया कि एडवर्ड को उसे अंकल पीटर ने पथभ्रष्ट किया है। जरूर उसी ने एडवर्ड को आपके और मीना के बारे में बताया होगा और फिर उन्हें अल्फ़ी के बारे में पता चला होगा। अब अपनी साधना पूरी करने के लिए वो अल्फ़ी की बलि देना चाहता है।" चैतन्य ने दिल दहलाने वाला खुलासा करते हुए कहा।

"ओह माई गॉड! पिर टो हमें... अल्फ़ी को सब कुच बताकर... उसे हिपाजत से कहीं डूर बेज डेना चाहिए।" सर विलियम ने भी घबराते हुए कहा। अभी तो वो इस रिश्ते की खुशी भी नहीं मना सके थे कि इस खुलासे ने उन्हें हिलाकर रख दिया।

"मुझे नहीं लगता कि ये इतना आसान होगा।" चैतन्य ने निराशा से कहा।

"डोन्ट से लाइक दिस! मीना को.... कोने के बाड... अब अपना बेटा... नई कोना चाहटे हम। प्लीज़ चैटन्य! कुच करो। उसे समजाओ।" सर विलियम बुरी तरह कलपते हुए बोले।

"वो नहीं जाएगा सर! बिल्कुल नहीं जाएगा। वो बेचारा यहाँ खुद नहीं आया.....उसे बहुत चालाकी से बुरी तरह से फँसाकर यहाँ लाया गया है। अब समझ आ रहा है कि एडवर्ड ने लाख चिढ़ होने के बाद भी उस माया से हाथ क्यों मिलाया है?" चैतन्य ने अपने खाली हाथों के साथ कहा।

"व्हॉट डू यू मीन बाई ट्रैप्ड?" सर विलियम ने घबराकर पूछा।

"अल्फ़ी माया से प्यार करता है। माया ने उससे कहा था कि वो सर्वशक्तिमंडल का पद ठुकराकर उसके पास वापस आ जाएगी, पर वो नहीं लौटी.... क्योंकि वो जानती थी कि उसकी तलाश में अल्फ़ी यहाँ जरूर आएगा। यहाँ भी वो जानबूझ कर उससे नहीं मिली, ताकि अल्फ़ी उसकी तलाश में तब तक यहाँ रूका रहे, जब तक वो चाहते हैं। माया ने ये सब एडवर्ड के कहने पर किया है। उसने अपने झूठे प्यार के जाल में अल्फ़ी को यहाँ क़ैद कर लिया है और अब समय आने पर एडवर्ड अपनी सिद्धि प्राप्ति के लिए अल्फ़ी की बलि देने वाला है। माया ने फरेब किया है अल्फ़ी के साथ। पर क्यों? एडवर्ड को माया से क्या मतलब था ये तो समझ में आ गया, पर माया ने ऐसा क्यों किया? पता लगाना ही होगा।" चैतन्य ने फरेब के हर पत्ते को खोलते हुए कहा। ये सब सुनकर सर विलियम ने जहाँ हताशा से अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया, वहीं चैतन्य एक बार फिर से अनामिका से संपर्क स्थापित करने का प्रयास करने लगा। थोड़ी इंतजार भरी कोशिशों के बाद अनामिका ने भी संपर्क जोड़ा।

"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"अनामिका! माया ने अल्फ़ी से फरेब किया है। पर क्यों? ये पता लगाओ। जल्दी से जल्दी! अल्फ़ी की जान खतरे में है।" चैतन्य ने बहुत ही संजीदगी से कहा।

"क्या? ये माया! तुम चिंता मत करो। इसकी असलियत तो इसकी कब्र से भी खोदकर निकालूंगी मैं।" अनामिका ने बहुत ही तमतमाए हुए लहजे में कहा।
"क्या हो गया?" अनामिका के उखड़े तेवर ने चैतन्य के कान खड़े किए।

"मुझसे उलझ रही थी। परिधि समझ रखा है मुझे।" अनामिका अभी भी बिफरी हुई थी।

"हे! अनामिका! शांत रहो! हम ताव में आकर अपना काम ही बिगाड़ेंगे। हमारे पास बस कल रात तक का ही समय है। अब मेरी समझ में आ रहा है कि हम यहाँ क्यों आए हैं? हमें इसमें नाकाम नहीं होना है। समझी!" चैतन्य ने थोड़ी सख़्ती से कहा।

"समझ रही हूँ।" अनामिका ने भी शांत होते हुए कहा।

"एडवर्ड सिद्धि प्राप्ति के लिए अल्फ़ी की बलि देने वाला है।उस माया ने एडवर्ड के कहने पर ही अल्फ़ी को अपने झूठे प्यार के जाल में फँसाकर यहाँ धोखे से बुलाया है। पर माया ने ऐसा क्यों किया ये आज के आज पता लगाओ। कैसे भी? मुझे यकीन है कि परिधि सब जानती है। मैंने अपना काम किया। अब तुम्हारी बारी है। जाओ! माया की पूरी कुंडली निकालो।" चैतन्य ने पूरी बात खोलते हुए अनामिका से कहा। अनामिका के हामी भरते ही दोनों ने ही संपर्क काट दिया।

फरेब की एक ऐसी कहानी अपने मखमली पर्दों से बाहर आने वाली थी, जिसने भूत और भविष्य दोनों को ही समय के चक्र में फँसा दिया था।

मेंशन की पार्टी से वापस आने के बाद सभी अपने-अपने कमरों में आराम करने के लिए चले गए। अगले दिन के महफ़िल की मेज़बानी उन्हें करनी थी, इसलिए फिलहाल सभी को आराम की बहुत ही ज्यादा जरूरत थी। मगर कुछ लोगों की जिंदगी में फिलहाल आराम के लिए ज्यादा समय नहीं था।

अनामिका अपने कमरे में थी। उसने एक बार कमरे से बाहर झांका और फिर इत्मीनान होने पर अंदर आई और फिर चैतन्य से संपर्क जोड़ने लगी। कुछ ऐसा जरूरी था, जो उसे बताना रह गया था। चैतन्य ने भी तुरंत ही रिस्पांस दिया।

"चैतन्य!"

"क्या हुआ?"

"मुझे कुछ बहुत ही जरूरी बात बतानी थी तुम्हें।"
"अभी!"

"कल तुम आओगे बसेरे की पार्टी में?" अनामिका ने पूछा।

"मुझे तो आना ही पड़ेगा।" चैतन्य ने कहा।

"ठीक है तो... तभी बात होगी। ये बहुत जरूरी है। मेंशन के उन गलियारों में भटकते समय कुछ अजीब सी चीज पता चली है, मगर बात आमने-सामने हो, तो ही बेहतर है।" अनामिका ने कहा।

चैतन्य के हामी भरते ही अनामिका ने संपर्क तोड़ा और वो बेचैनी से उस छोटे से कमरे में लगातार चहलकदमी करने लगी। परिधि अभी तक कमरे में नहीं आई थी। उसे माया ने अपने पास रोक रखा था।

"क्या बातें कर रहे होंगे वे लोग? कहीं आगे की कोई योजना तो नहीं बना रहे हैं? कैसे पता करूं? काश कि माया के कमरे में जाने का कोई तरीका मिल जाता मुझे।" अनामिका खुद से बड़बड़ाते हुए बोली और शायद उसकी दुआओं में ही कोई शिद्दत रही होगी... तभी दरवाजे पर हुई दस्तक उसकी परेशानी का हल लेकर आ गई।

"तुम ही हो अनामिका?" दरवाजे पर खड़ी रोमा ने उससे पूछा।

"हाँ!" उसने जवाब दिया।

"माया तुम्हें बुला रही है।" रोमा ने कहा और ये सुनते ही अनामिका के दिल ने ऊपर वाले का शुक्रिया अदा किया।

"क्या हुआ?" अनामिका को चुपचाप खड़ी हुई देखकर रोमा ने उसे घूरते
हुए पूछा।

"अ... कुछ नहीं। मैं आती हूँ!" खुद को संभालते हुए अनामिका ने कहा।

"बाद में नहीं... अभी! साथ चलो!" रोमा ने उसे बुरी तरह से घुड़का था, जिससे अनामिका तिलमिलाकर रह गई। मगर वो इस मौके को हाथ से जाने देना नहीं चाहती थी, इसलिए सब कुछ भूलकर तुरंत उसके पीछे हुई थी।

बसेरे के उस बदहाल हिस्से से बाहर निकलते ही अनामिका ने खुद को एक अलग ही जहाँ में पाया। बसेरे का ये शानदार और आलीशान हिस्सा कहीं से भी उस ख़स्ताहाल हिस्से से मेल नहीं खाता था, जहाँ अनामिका दूसरी काम करने वाली साधारण डायनों के साथ रहती थी। मखमली पर्दों और खूबसूरत शमादानों के बीच से गुजरते हुए अनामिका की नज़रें आसपास की खूबसूरती को निहारने में ऐसी उलझीं कि वो सीधे अपने आगे चल रही रोमा से जा टकराई। रोमा अपनी जगह पर रूक गई और उसने पलटकर जहर उगलती ऑखों के साथ पीछे मुड़कर अनामिका को देखा। अनामिका कुछ कहती उससे पहले ही रोमा ने उसे बेरहमी से झटक कर खुद से दूर किया।

"यू डर्टी मेड! दूर रहो मुझसे! पता नहीं तुमसे क्या काम आन पड़ा है माया को?" रोमा बुरी तरह से बिफरते हुए बोली और फिर तेजी से मुड़कर आगे बढ़ गई।

अपने इस अपमान से अनामिका और भी भड़क गई थी। आज तक किसी की हिम्मत नहीं हुई, उसे ऑखें दिखाने की और उस रोमा ने पूरे दो बार उस पर ज़हनी हमला किया। वो कुछ देर तो उस रोमा को आगे जाते देखती रही और फिर अपनी मुट्ठियाँ भींचे तेजी से उसके पीछे गई। सीढ़ियाँ चढ़ते समय भी अनामिका की तीखी नज़रें उसी पर गड़ी हुई थीं। वो
उससे दो-तीन सीढ़ियाँ नीचे थी। जैसे ही रोमा ऊपर पहुँची, अनामिका की ऊंगलियाँ घुमी और उन उंगलियों के बीच से एक नीली रोशनी निकलकर रोमा के सामने जमीन से टकराई और फिर पानी में बदल गई। बेपरवाह सी चलती हुई रोमा का पैर उस पानी पर पड़ा और उस पानी से चिकने हुए फर्श पर फिसलकर गिर पड़ी और इससे पहले की संभल पाती, वो उन सीढ़ियों से नीचे लुढ़ककर ज़मीन सूंघ रही थी। हमदर्दी दिखाते हुए अनामिका उसकी ओर बढ़ी ही थी कि रोमा ने हाथ बढ़ाकर उसे रोक दिया।

"जाओ माया इंतजार कर रही है। देर हुई तो वो हम दोनों को कच्चा खा जाएगी। ऊपर दाईं ओर आखिरी कमरा।" कराहती हुई रोमा की आवाज में घबराहट और गुस्सा दोनों ही मिले हुए थे।

उसकी बात सुनते ही अनामिका की बांछे खिली थीं। माया के कमरे की ओर अकेले जा पाना उसके लिए लॉटरी लगने की तरह ही थी। वो तेजी से उस ओर बढ़ गई। उस नीम अंधेरे में उसे वो कमरा दूर से भी दिखाई दे गया। उसने चारों ओर एक चोर निगाह डाली। सभी अपने कमरों में नींद की गोद में दुबके हुए थे। वो दबे पाँव उस कमरे की ओर बढ़ गई। कमरे के दरवाजे के सामने पहुँचकर उसने कमरे के अंदर की आवाजें सुनने की कोशिश की, पर कुछ सुनाई नहीं दिया। उसने उस दरवाजे पर एक कोफ्त भरी नज़र डाली और फिर अपनी फ्रॉक में बने पॉकेट से एक चीज़ निकाली। वो एक पेंडेंट की तरह था, जिसके बीच में खाली सी जगह थी। अनामिका ने एक बार फिर से अपनी उंगली से नीली रोशनी निकाली और फिर वो खाली जगह पानी से भर गई। अनामिका ने उसे धीरे-धीरे हिलाया और वो पानी बर्फ की तरह जम गया। वो किसी चमकदार आईने के टुकड़े की तरह दिखाई दे रहा था।

अनामिका ने उसे दरवाजे के नीचे से अंदर सरकाया। वो पेंडेंट एक लंबी चेन से जुड़ा हुआ था, जिसका अगला हिस्सा ठोस सिलेंडर के आकार का था। अनामिका ने वो हिस्सा अपने कान में ठूंसा और थोड़ी ही कोशिश के बाद उसके होंठों पर मुस्कराहट आई। उसे अंदर की आवाजें साफ-साफ सुनाई दे रही थीं। अंदर माया और परिधि के बीच बहस सी हो रही थी।
"देखो परिधि! फैसला हो चुका है। तुम क्यों अपनी ताकत इतनी देर से बर्बाद कर रही हो?" माया की

आवाज आई।

"पर माया! तुम जैसा चाहती थी... वैसा ही तो हो रहा है। जो बिगड़ना था.. वो तो बिगड़ चुका। उस मासूम को तो छोड़ दो। उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?" परिधि की याचना भरी आवाज आई।

"मुझे सिखाओ मत! माया को बस ताकत चाहिए। मैं तुम्हारी तरह फालतू की जिंदगी नहीं बिताना चाहती। अब चाहे इसके लिए उस अल्फ़ी की जिंदगी बर्बाद हो... या फिर खत्म हो जाए... मुझे परवाह नहीं है। वैसे भी ऐसे लोगों की जिंदगी के कोई मायने नहीं होते। मुझे उसकी जितनी जरूरत थी, मैंने इस्तेमाल कर ली। अब बस ये आखिरी बार... उसके बाद तो उसे मुक्त ही हो जाना है।" माया ने बहुत ही मक्कारी भरी आवाज में कहा। हर अहसास से खाली माया की खोखली सी आवाज़ अनामिका के कानों में चुभने लगी थी।

"पर माया..." परिधि ने कुछ कहना चाहा, पर माया ने उसे टोक दिया।

"देखो परिधि! तुम्हें भी पता है और.... मुझे भी पता है कि तुम कुछ नहीं कर सकती। तुम जैसे लोग.... कभी कुछ कर भी नहीं सकते। इसलिए तो जिंदगी में कुछ हासिल नहीं कर पाते। अगर मेरी मदद करके तुम्हें कुछ हासिल हो रहा है तो शुक्र मनाते हुए उसे कबूल कर लो.... वरना एड़ियाँ घिस-घिस कर मरना तो तुम्हारी किस्मत में ही लिखा है।" माया ने बहुत ही बेरहमी से कहा। उसकी बातें सुनकर परिधि सिसकने लगी थी।

"सही कह रही हो। हम जैसे बुजदिल लोग ही होते हैं, जिनकी वजह से ये दुनिया बर्बाद हो जाती है.... जो जानते हैं कि ग़लत हो रहा है... पर कभी ग़लत के खिलाफ आवाज नहीं उठाते। भले ही खुद में कुढ़कर रह जाते हैं। पता नहीं खुद को कैसे माफ करूंगी कि मेरी बुजदिली ने किसी की दुनिया उजाड़ दी।" परिधि की सिसकियों से भरी आवाज आई।

"जाओ! तैयारी करो! कल की रात जश्न की रात है। कल तुम्हें उसके पास जाना है। कोई जिए... मरे... मेरी बला से। बस उस दरवाजे का राज... राज ही रहना चाहिए क्योंकि कल रात के बाद वो भी खत्म हो जाएगा।" माया ने बहुत ही बेशर्मी से कहा।

इसके आगे कुछ और भी बातें हुई, पर दूर से आई आहट से अनामिका ने जल्दी से वो पेंडेंट बाहर निकाला। उसे जेब में रखते हुए वो उस कमरे से थोड़ी दूर खड़ी हो गई और अपने दाँतों में ऊंगली फँसाकर सभी दरवाजों को उलझी हुई नज़रों से देखने लगी। उसी समय खुद को घसीटती हुई रोमा वहाँ पहुँची।

"तुम अभी तक यहीं खड़ी हो। गई नहीं माया के पास!" रोमा, अनामिका पर भड़कते हुए बोली। उसकी घुड़की सुनकर अनामिका ने मासूम सा चेहरा बनाया।

"वो मैं भूल गई कि कौन सा कमरा है? इतना बड़ा घर और एक साथ इतने कमरे एक साथ पहली बार देखे हैं ना।" अनामिका ने मासूमियत की चाशनी में लपेट कर जवाब दिया।

"ओह गॉड! आज तुम्हारी वजह से हम दोनों ही मरने वाले हैं। दुआ करो कि ऐसा ना हो।" अनामिका के हाथ को खींचते हुए वो माया के कमरे की ओर बढ़ी। अनामिका ने बहुत ही कुढ़कर अपने दाँत पीसते हुए उसे देखा और साथ चल दी।

रोमा ने दरवाजे पर दस्तक दी और फिर उसे खोलकर अंदर चली गई। अनामिका ने भी उसके पीछे उस कमरे में कदम रखा। अंदर माया, परिधि के साथ मार्गरेट भी थी। तीनों ही उन दोनों की ओर देख रहे थे। "सॉरी माया! मेरी ग़लती नही है। इस बेवकूफ की वजह से देर हुई।" घबराई हुई रोमा ने अनामिका को माया के सामने लगभग फेंकते हुए कहा। अपने गुस्से को बड़ी मुश्किल से ज़ब्त करते हुए अनामिका ने खुद को गिरने से बचाया। माया ने एक गहरी तफ्तीशी नज़र अनामिका पर डाली।

"कोई बात नहीं। अब तुम सब जाओ। मुझे इससे अकेले में कुछ बातें करनी हैं।" अनामिका पर ही नज़र जमाए हुए कहा। माया की बात सुनकर सभी के चेहरे पर हैरानी के निशान उभरे, मगर माया की बात काटने और उससे सवाल करने की हिम्मत किसी में नहीं थी। सभी अनामिका पर एक नज़र डालकर एक-एक करके वहाँ से निकल गए। जाते-जाते रोमा ने दरवाजा बंद कर दिया।

"इस चुड़ैल को मुझसे क्या बात करनी है?" अनामिका ने एक नज़र दरवाजे पर रखे हुए सोचा। तभी अपने कंधे पर एक स्पर्श ने उसे चौंकाया। उसने देखा... माया अपनी फरेबी ऑखों के डोरे उसकी ओर डाले हुए थी। उसके बदनियत किस्सों के बारे में सोचकर एक बार के लिए अनामिका का गला सूखा था। उसके माथे पर पड़ी सिलवटों को देखकर माया कुटिलता से मुस्कुराई।

"क्या हो गया? डर लग रहा है? लगना भी चाहिए! माया से... सबको डरना चाहिए।" माया की मक्कारी भरी आवाज आखिर तक आते-आते फुसफुसाहट में बदल गई।

"कुछ काम था मुझसे!" अनामिका ने अपनी आवाज को डर की चादर में लपेट कर कहा।

"जाहिर सी बात है। दूसरों की चुगलियाँ लगाने के लिए तो तुम्हें यहाँ नहीं
बुलाऊंगी।" माया ने अपनी आवाज को नर्म करते हुए कहा।

"कहिए!" अनामिका बोली।

"मेंशन में कर क्या रही थी तुम?" माया ने उसके चारों ओर चक्कर लगाते हुए पूछा।

"वो... ऐना ने कहा था... साथ चलने के लिए।" अनामिका ने जवाब देते हुए कहा।

"वो नहीं पूछ रही हूँ। उस... अल्फ़ी के साथ... क्या कर रही थी? ये पूछ रही हूँ।" माया ने अनामिका की गर्दन पर अपनी ऊंगली रखते हुए पूछा।

"जी! मैं... समझी नहीं। मैं तो... आपको बुलाने के लिए गई थी और वो... वहाँ आ गया था।" अल्फ़ी का जिक्र आते ही अनामिका हड़बड़ाई थी।

"न.. न...ना! माया से झूठ नहीं! कुछ तो चल रहा था। मैंने देखा.... उसे और उसकी ऑखों को पूरे समय तुम्हारे आस-पास मंडराते।" माया ने कुटिल मुस्कुराहट के साथ कहा।

"आप क्या कह रही हैं.. मेरी समझ में नहीं आ रहा है।" अनामिका ने अपनी घबराहट को छिपाते हुए कहा।

"तो उससे छिप क्यों रही थी और इस तरह.... कि एक बार तो पता नहीं कहाँ गायब ही हो गई थी?" माया ने उसकी चोरी उसके सामने रखते हुए कहा और अनामिका की ज़बान पर ताले पड़े थे। ये सोचकर नहीं कि.. वो अल्फ़ी और उसके बारे में गलत सोच रही थी, बल्कि इसलिए कि कहीं उस माया ने चैतन्य और उसे एक साथ तो नहीं देख लिया था।
"अरे! अरे! अरे! डरो मत! किसी को नहीं बताऊंगी मैं। बस मेरा एक छोटा सा काम कर दो। बस... छोटा सा!" माया ने शहद घुली आवाज में कहा।

"कैसा काम?" अनामिका ने उसके लफ्ज़ों में उलझते हुए पूछा।

"देखो! कल तुम्हारी वजह से मेरी बहुत बड़ी मुश्किल आसान हो गई थी। वो अल्फ़ी तो तुम्हारे पीछे ऐसे खोया कि अपनी माया को ही भूल गया। तो अगर तुम... कल की बसेरे में होने वाली पार्टी में भी... उसे इसी तरह अपने जाल में उलझा लो तो..." माया ने अपनी बात समझ में आने वाली जगह पर अधूरी छोड़ दी।

"कैसी बात कर रही हैं आप? मैं ऐसा नहीं कर सकती। वैसे भी.... वो तो किसी और से प्यार करता है।" अनामिका ने तिड़ककर कहा।

"करता है नहीं.... करता था मेरी जान! माया मर्दों की नज़रें बहुत आसानी से पढ़ सकती है। मुझे तो उसकी ऑखों में बस तुम्हारी तस्वीर दिखाई दी। देखो मना मत करना। वैसे भी अब माया का प्यार उसकी किस्मत में नहीं है। अच्छा है कि वो खुद ही आगे बढ़ रहा है।" माया ने अनामिका को उकसाते हुए कहा।

"बकवास है ये सब!" माया की बात सुनकर अनामिका बुरी तरह से बिफरी थी।

"तो कल की पार्टी में देख लेना। जब वो फिर आएगा तुम्हारे पीछे... तब उसकी ऑखों में उसके दिल की कहानी पढ़ लेना, जहाँ बस तुम्हारा जिक्र होगा।" माया उसके कानों के पास फुसफुसाते हुए बोली।

"पर वो तो आपसे..." अनामिका ने कहना चाहा, पर माया ने उसे टोक
दिया।

"अरे वो बस एक सिरदर्द है मेरे लिए। मुझे नहीं मिलना है उससे। उसे बस कल मुझसे दूर रखना। कल मुझे जो चाहिए वो मुझे मिल जाएगा और तुम चाहो तो उस अल्फ़ी को भी मिल जाएगा।" माया ने अपने बालों से पिन निकालते हुए कहा।

"क्या मिल जाएगा? कहीं आपका मतलब उस लड़के से तो नहीं, जिसके साथ कल आप...." धड़कते हुए दिल के साथ अनामिका ने अपनी बात अधूरी छोड़ी।

"ओह! तो तुमने देखा था। हाँ! वही तो है। माया की मंजिल! आज तक ना जाने कितनों को अपना ग़ुलाम बनाया है, पर आज पहली बार माया के दिल में किसी की ग़ुलामी की हसरत जागी है। बस कल की रात वो मेरी आगोश में बिता ले, फिर तो वो सब कुछ भूल जाएगा।" अपने रेशमी बालों में लकड़ी से बनी कंघी फिराते हुए माया बोली।

माया की बात सुनकर अनामिका के अंदर एक ज्वालामुखी सा फूट पड़ा। माया के मुँह से चैतन्य के

लिए ऐसी बातें सुनकर उसका खून खौल-ख़ौलकर ऑखों में चढ़ आया था। एक पल के लिए अनामिका को लगा कि वो यहीं उसका काम तमाम कर दे, मगर उसने किसी तरह अपने गुस्से पर काबू करने की कोशिश की, जोकि बहुत मुश्किल काम था।

"मुझसे नहीं होगा। मुझे ये सब नहीं आता।" अनामिका ने बहुत ही मुश्किल से अपनी आवाज को सामान्य करते हुए कहा।

"कमॉन डार्लिंग! ये करना तो हर लड़की को आता है। तुम जवान हो... खूबसूरत भी हो... और तो और... उस अल्फ़ी की नज़रों में भी हो। तुम्हारी ऑखों का एक इशारा उसे सब भुलवा देगा।" माया ने एक बार फिर से
अपनी आवाज में शहद घोला था।

"मैं फिर भी मना करूं तो!" अबकी बार अनामिका ने सख्ती से कहा।

और इस बार माया के तेवर बुरी तरह से बिगड़े थे। वो तेजी से अनामिका के पास आई और उसकी गर्दन को पकड़कर उसे दीवार से लगा दिया।

"माया को मना करने की हिम्मत किसी में नहीं है। मेरी बहन है परिधि। पर मजाल है कि उसने कभी मना किया हो मुझे। बेहतर होगा कि मुझे मना करने से पहले उससे राय ले लो तुम। और कल मुझे वो अल्फ़ी अपनी ऑखों से दूर चाहिए। तुम कैसे करोगी.... मुझे पता नहीं? पर करोगी! वरना कल की रात तुम्हारी जिंदगी की आखिरी रात होगी क्योंकि कोई माया और उसके मकसद को बीच आए... ये माया को गंवारा नहीं। और माया बस कहती नहीं है करके भी दिखाती है। याद रखना!" किसी नागिन की तरह फुंफकारते हुए माया ने कहा और फिर अनामिका की गर्दन छोड़ दी।

उसकी पकड़ से छूटते ही अनामिका ने अपनी गर्दन को सहलाया। कुछ ना कर पाने की बेबसी उसकी ऑखों में नमी बनकर उतर आई थी।

"अरे! रो क्यों रही हो? सोचो जरा! औकात तो तुम्हारी परिधि के बराबर भी नहीं है। लेकिन... अगर तुम ये सौदा कर लो... तो फायदा तुम्हारा ही होगा। एक तो तुम्हें माया का साथ मिलेगा, जिसके लिए बहन होकर भी परिधि आज तक तरस रही है और दूसरा मिलेगा वो हैंडसम अल्फ़ी। अब तुम उसके साथ जिंदगी बिताओ या रातें... तुम्हारी मर्जी।" अपनी बात खत्म करके माया ने खुलकर ठहाका लगाया था।

अनामिका ने कुछ भी नहीं कहा। सच तो ये था कि उसे इस बात से धक्का लगा था कि एक ही पल में उस माया ने अनामिका को भी अपने गिरे हुए
किरदार के साथ लाकर खड़ा कर दिया था।

"और हाँ! अगर मेरे काम से मनाही है... तो अपना सामान अभी बांध लेना और सुबह यहाँ से निकल लेना। माया की नाफरमानी करने वाला इस नगर में नहीं रह सकता। जाओ!" इस बार माया ने उसे बुरी तरह से घुड़का था।

अनामिका के लिए वहाँ एक और पल भी रुकना दूभर हो चुका था। वो कमरे से बाहर निकली और फिर तेजी से अपने कमरे की ओर बढ़ी। अपने कमरे वाले गलियारे में आकर वो रुक गई। अपमान और गुस्से से तमतमाई हुई अनामिका गहरी गहरी साँसे ले ही रही थी... कि तभी उसने चैतन्य को अपने मस्तिष्क

में महसूस किया।

"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"अनामिका! माया ने अल्फ़ी से फरेब किया है। पर क्यों? ये पता लगाओ। जल्दी से जल्दी! अल्फ़ी की जान खतरे में है।" चैतन्य की आवाज आई ।

"क्या? ये माया! तुम चिंता मत करो। इसकी असलियत तो इसकी कब्र से भी खोदकर निकालूंगी मैं।" अनामिका ने बहुत ही तमतमाए हुए लहजे में कहा।

"क्या हो गया?" अनामिका का लहजा सुनकर चैतन्या ने फिक्र मंदी से पूछा।

"मुझसे उलझ रही थी। परिधि समझ रखा है मुझे।" अनामिका अभी भी बिफरी हुई थी।

"हे! अनामिका! शांत रहो! हम ताव में आकर अपना काम ही बिगाड़ेंगे। हमारे पास बस कल रात तक का ही समय है। अब मेरी समझ में आ रहा
है कि हम यहाँ क्यों आए हैं? हमें इसमें नाकाम नहीं होना है। समझी!" चैतन्य की आवाज सख्त हुई थी।

"समझ रही हूँ।" अनामिका ने भी शांत होते हुए कहा।

इसके बाद चैतन्य ने उसे वो सब बताया जो उसे पता चला था। चैतन्य की बातें सुनकर माया के लिए अनामिका की चिढ़ और बढ़ गई थी। चैतन्य ने उसे माया की असलियत और उसके असली इरादे के बारे में पता लगाने के लिए कहा, ताकि वह दोनों माया और एडवर्ड के असली इरादों से रूबरू हो सकें। अनामिका ने भी हामी भरते हुए अपनी कमर कस ली। माया ने जो सौदा अनामिका के साथ करने की कोशिश की थी... उसकी कीमत उस माया को आगे जाकर चुकानी ही थी। मगर... अनजाने में ही माया, अनामिका के दिल में कुछ और भी खराशें छोड़ गई थी.... जो आगे जाकर अनामिका के साथ-साथ औरो को भी टीसने वाली थीं।

चैतन्य से बात करने के बाद अनामिका का गुस्सा थोड़ा हल्का हुआ था, मगर वो इस आग को हर्गिज बुझाना नहीं चाहती थी। वो माया को अपने दिल में उस जगह रखना चाहती थी, जहाँ इंसान अपनी सारी कड़वाहटें दबा-छिपाकर रखता है। इन्हीं सब में उलझी हुई जब वो कमरे में पहुँची तो
परिधि को बेसब्री से उसका इंतजार करते हुए पाया।

"तुम आ गई!" परिधि ने उतावलेपन से पूछा।

"हाँ!" अनामिका ने एक उचटती हुई सी नजर उस पर डाली और फिर आगे बढ़ गई।

"वो क्या कह रही थी?" परिधि ने एक बार फिर से उतावलापन दिखाते हुए कहा।

"था कुछ काम!" अनामिका ने परिधि के सवाल को लगभग नज़रअंदाज़ किया था।

"वही तो पूछ रही हूँ कि उसे तुमसे क्या काम था?" परिधि की हैरत सवालों के साथ और भी बढ़ी थी।

"और ये मैं.... तुम्हें क्यों बताऊँ?" अनामिका ने ख़ासी चिढ़ के साथ उसका हाथ झटकते हुए कहा।

"मतलब?"

"मतलब क्या? ठीक है... पहले तुम बताओ कि वो तुम्हें क्या धमकियाँ दे रही थी? फिर मैं बताती हूँ।" परिधि पर चिढ़ भरी नज़र डालते हुए अनामिका ने कहा।

"वो... मुझे क्यों धमकाएगी?" कहते हुए परिधि का गला सूखा था।

"चेहरा तो कुछ यही कह रहा था तुम्हारा... जब मैं कमरे में गई थी।" अनामिका ने उसकी ऑखों में झांकते हुए कहा।
"मुझे कौन नहीं धमकाता!" एक खीझी हुई सी मुस्कुराहट होंठों पर रखकर परिधि ने बुझी हुई आवाज में कहा।

"किसी को इतना भी खोखला नहीं होना चाहिए परिधि... कि उसके वजूद का खोखलापन दूसरों को शोर की तरह चुभने लगे। कहीं ऐसा ना हो कि दूसरों से डरते-डरते एक दिन तुम खुद से ही डरने लगो। उस दिन खुद से भी नज़रें नहीं मिला पाओगी।" अनामिका ने परिधि को लानती नज़रों से देखते हुए कहा।

"मुझे नींद आ रही है। कल बहुत काम है। शायद.... तुम्हें भी होगा।" कहते हुए लेटी हुई अनामिका ने चादर अपने सिर तक तान लिया। वहीं परिधि उसकी बातों पर बस सोचती ही रह गई, पर एक फाँस सी उसके अंदर कहीं चुभी जरूर थी।

कुछ समय गुजरने के बाद अनामिका ने अपने सिर से चादर हटाकर देखा, तो परिधि गहरी नींद में दिखाई दी। उसने हल्की आवाज में परिधि को दो-तीन बार पुकारा, मगर उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसके सोने का अच्छी तरह से इत्मीनान कर लेने के बाद अनामिका उठी और अपनी जगह पर बैठ गई। उसने एक गहरी साँस ली और फिर ऑखें बंद कर लीं।

डॉ. अनंत ने बताया था कि दो एक जैसे रक्षक चाहें तो... एक दूसरे के दिमाग में झांक सकते थे और अब अनामिका ने इसी तरीके से माया के दिमाग में सेंध लगाने की सोची। वो ध्यान की मुद्रा में धीरे-धीरे गहराई में उतरने लगी और फिर रोशनी के कुछ तेज झटके उसके मस्तिष्क को हिला गए। वहाँ कुछ तो हो रहा था, जो साफ नहीं था। सब कुछ बहुत धुंधला सा था। फिर थोड़ा और जोर लगाने पर अनामिका को किसी के चीखने और चिल्लाने की अस्पष्ट आवाजें सुनाई दीं, जो धीरे-धीरे सिसकियों और कराहों में बदल गईं। उसे सुनाई दीं एक निर्दयी और बेरहम हँसी और फिर
सब शांत हो गया। अनामिका उन सबमें उलझी ही थी कि उस धुंध से एक आवाज बाहर आई,

"तू मुझे कहीं भी भेज दे... पर मैं लौटकर वापस जरूर आऊंगी। याद रखना! वो कभी कामयाब नहीं हो सकता। कभी नहीं।"

और फिर एक चीख के साथ अनामिका का ध्यान भंग हो गया। उसे अपने अंदर सब कुछ हिलता हुआ महसूस हो रहा था। उसके अंदर गुस्से का एक सैलाब हिलोरें मारने लगा था, मगर क्यों? पता नहीं और आज रात के लिए ये अहसास उसके लिए फिलहाल अनकहा ही रह गया।

आखिरकार सबके दिलों को उलझाकर बाकी की रात और कोई हरकत किए बिना ख़ामोशी से गुज़र गई। सभी ने आने वाली रात के मुतल्लिक अपनी-अपनी योजनाएँ बना रखी थी, जो एक-दूसरे के हितों से कहीं ना कहीं टकरा रही थीं और हर लम्हे बढ़ते तनाव को और भी बढ़ा रही थी। कोई भी नहीं जानता था कि सही और ग़लत की ये जंग अपना असर सदियों तक रखने वाली थी।

****

सुबह का समय था, जब सर विलियम अपनी स्टडी में खिड़की के पास अपनी नाक को उंगलियों में टिकाए बैठे हुए थे। उनकी ऑखें किसी सोच के दायरे में पूरी तरह से बंद थीं। उसी समय दरवाजा खुलने की आवाज से सर विलियम के कान सतर्क हुए थे।

"आपने बुलाया सर!" अल्फ़ी की सधी हुई सी आवाज़ आई और उसकी आवाज सुनते ही सर विलियम की ऑखें झटके से खुली थीं। उनकी ऑखों के लाल डोरे उनके रतजगे की गवाही दे रहे थे। उनके अंदर एक तूफान उठा हुआ था, जो ऑखों से बाहर निकलने को बेताब था। मगर उन्होंने उसे किसी तरह काबू में किया।

"अल्फ़ी! कम इन! एम वेटिंग फॉर यू!" सर विलियम ने अपने जज़्बातों को संभालते हुए कहा।

"एनी अर्जेंट वर्क सर!" अल्फ़ी ने मुस्तैदी से खड़े हुए पूछा।

"ओह! याह! यू विल बी विथ मी फ्रॉम टुडे। यही बटाने के लिए... बुलाया ता।" सर विलियम ने बहुत ही औपचारिक लहज़े में कहा।

"ओके सर! एनीथिंग एल्स!" अल्फ़ी ने सपाट लहजे में पूछा।

"नो! यू कैन लीव नाऊ!" सर विलियम ने कहा।

"ओके सर!" कहकर अल्फ़ी जाने के लिए मुड़ा ही था कि पीछे से आई आवाज ने उसके बढ़ते कदम रोक दिए।

"अल्फ़ी!"

"यस सर!" कहते हुए अल्फ़ी फिर से मुड़ा था।

"व्हॉट हैपेन्ड टू मीना?" सर विलियम ने बहुत हिम्मत जोड़कर सवाल किया था और ये सवाल सुनकर अल्फ़ी खुद भी जवाब देने के लिए हिम्मत जोड़ने लगा था।

"जी! वो बीमार थीं।" अल्फ़ी ने भी अपने जज़्बातों को समेटकर जवाब दिया।

"एंड... योर फादर?" सर विलियम का अगला सवाल आया।

"जी! वो... हमारे साथ नहीं।" अल्फ़ी ने छोटा सा जवाब दिया।

"इज़ ही अलाइव?" सर विलियम ने अल्फ़ी के साथ-साथ अपना दिल भी कुरेदा था।

"यस सर! बट... मैं उनके बारे में बात नहीं करना चाहता। हमारी दुनिया बहुत अलग है और हम दोनों को ही एक-दूसरे की जरूरत नहीं।" अल्फ़ी ने बहुत ही कठोर लहज़े में कहा।

"एंड इफ ही एवर वान्ट्स टू यूनाइट बोथ द वर्ल्ड्स? क्या करोगे?" अल्फ़ी से नज़रें फेरे हुए ही सर विलियम ने सवाल किया। वो उसकी नज़रों में अपने लिए नफ़रत या चिढ़ देखने की हिम्मत नहीं जुटा सके थे।

"पता नहीं! कभी सोचा नहीं इस बारे में।" अल्फ़ी ने बहुत ही साफगोई से कहा।

"पिर बी! अगर... एसा हुआ टो!" सर विलियम ने एक उम्मीद के साथ पूछा।
"सर! मैं भी अपनी माँ की तरह हूँ। हालातों से लड़ने की बजाय... हालातों के हिसाब से रहना पसंद करता हूँ। मेरी नज़र में खुद से लड़ने वाला भी योद्धा ही होता है। सिर्फ एडवेंचर का नाम ही जिंदगी नहीं होता है।" अल्फ़ी ने अपनी बात रखते हुए कहा।

"इट मीन्स दैट.... यू विल... नेवर फॉरगिव हिम!" कहते हुए सर विलियम की आवाज हल्की सी लड़खड़ाई थी।

"मैं नाराज़ ही नहीं... तो माफ़ी कैसी? हम सभी अपना-अपना भविष्य साथ लेकर पैदा होते हैं सर।" अल्फ़ी बोला।

"टो क्या... उस बविस्य को... ओर अच्चा नई बनाया जा सकटा?" सर विलियम ने पहली बार अल्फ़ी की ओर देखते हुए पूछा।

"मेरा भविष्य मुझे पता है सर और मैं उसी में बहुत खुश हूँ। मुझे कुछ और नहीं चाहिए।" अल्फ़ी ने बहुत ही साफ और मजबूत लहजे में कहा।

अल्फ़ी की बात सुनकर सर विलियम ने अपना सिर हिलाया और फिर उसे जाने की इजाजत दे दी। अल्फ़ी के जाने के बाद वो ना जाने कितनी देर तक दरवाजे को टकटकी लगाए देखते रहे।

"यू आर माई सन अल्फ़ी... एंड यू विल डेफिनेटली गेट योर ऑल राइट्स। दिस इज़ माई प्रॉमिस टू मीना!" सर विलियम ने भीगी हुई ऑखों के साथ मजबूत लहज़े में कहा। पर वो नहीं जानते थे कि उनकी विरासत एक काले साए के नीचे अंधकार में खोती जा रही थी।
****

आज की शाम डायन समुदाय के लिए बहुत ही ख़ास थी। वो आज शाम की महफ़िल के मेजबान थे और डाकिनी मेहमानों की आवभगत में कोई भी कोर-कसर नहीं रखना चाहती थी। ऐना की मेन हेल्पर होने के कारण अनामिका आज बहुत ही व्यस्त थी। उसके पास साँस लेने की भी फ़ुर्सत नहीं थी। चैतन्य ने एक-दो बार उससे संपर्क करने की कोशिश की, मगर अनामिका ने उसे टाल दिया, जिससे वो थोड़ा सा उखड़ा था। अनामिका ने फिर उसे बड़ी मुश्किल से मनाया था।

आखिरकार एक बार फिर से ऐना को प्रभावित करते हुए अनामिका ने अपने हर काम को बखूबी अंजाम दिया। शाम होने को थी और सारी व्यवस्था अच्छे तरीके से हो गई। मेहमानों के आने से पहले ऐना ने सभी लड़कियों को तैयार होने के लिए भेज दिया। ऐना ने अनामिका को अपनी तरफ से एक सुंदर सी ड्रेस तोहफे में दी। अनामिका उसके प्यार और लगाव से अंदर तक भर गई थी। जब तैयार होने के बाद अनामिका ने खुद को आईने में देखा, तो उसे चैतन्य की शरारत से चमकती हुई ऑखें याद आ गई और वो खुद में ही सिमटकर रह गई।

शाम होते ही मेहमानों का आना शुरू हो गया। सभी ने अपना-अपना काम बखूबी संभाला हुआ था। आखिरकार अनामिका की तरसती हुई ऑखों को सूकून मिला, जब उसने चैतन्य को अंदर आते देखा। वो तेजी से उस तरफ गई। उसे ही खोजते हुए चैतन्य ने जब उसे देखा तो बस देखता ही रह गया। नाराज़गी कहीं दूर जाती रही। बड़ी मुश्किल से उसने अनामिका से अपनी नज़रें हटाई थीं, पर वो बार-बार उसी की ओर भटक रही थीं। फिलहाल चैतन्य वहाँ अपने काम की वजह से था, इसलिए वो लापरवाही नहीं कर सकता था। जल्द ही दोनों ही अपने-अपने काम में मशगूल हो गए। इन सबके बीच अल्फ़ी को अनामिका की नज़रों ने पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया था। मगर वो पूरे समय उसी की नज़रों के घेरे में थी, जिसका दिल ना जाने किस अहसास से अनामिका के लिए धड़क रहा था और वो फिलहाल इससे पूरी तरह से बेखबर थी।

महफ़िल का रंग जमने लगा था और वो एक किनारे खड़ा उसे इधर से उधर आते-जाते हुए देख रहा था। कुछ सवाल थे जो उसके दिल और दिमाग को झिंझोड़ रहे थे और उनका जवाब उसके लिए अब बहुत ही जरूरी हो गया था।

"ए! हैलो! रूको!" अल्फ़ी ने अपने सामने से गुजरती हुई अनामिका को पुकारा था।

उसकी आवाज सुनकर अनामिका ने मुड़कर उसकी ओर देखा और उसे एक बार फिर से अपने सामने देखकर वो सहम सी गई। उसे देखते ही अनामिका के कानों में माया के शब्द खंज़र की तरह वार करने लगे कि अल्फ़ी शायद अब माया को भूलकर अनामिका की ओर बढ़ने लगा था और ये सोचकर ही उसे दहशत होने लगी थी। वो किसी का भी... ख़ासतौर पर अल्फ़ी का.... दिल नहीं तोड़ना चाहती थी। मगर उसे अल्फ़ी से... इस हमदर्दी के अलावा... कुछ और अहसास भी जोड़े हुए थे, जिन्हें वो चाहकर भी नहीं समझ पा रही थी। इसलिए वो बस उससे दूर... बहुत दूर रहना चाहती थी। मगर वो इस वक्त मेहमान था और अनामिका चाहकर भी उसे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती थी।

"जी!" अनामिका ने बड़ी ही मुश्किल से कहा।

"नाइस पार्टी!" अल्फ़ी ने अनामिका के उलझे हुए चेहरे में उलझते हुए कहा।
"जी थैंक्यू!" अनामिका ने कहा।

"क्या हम.... बात कर सकते हैं?" अल्फ़ी ने बहुत ही उम्मीद भरी आवाज में कहा, जिस पर अनामिका बुरी तरह से चौंकी थी।

"जी! सॉरी! वो... मैं... अभी बहुत बिजी हूँ। फिर कभी!" अनामिका ने उसे टालने की गरज़ से कहा और तेजी से एक ओर बढ़ गई। वो अल्फ़ी से बचने के लिए अपने कमरे की ओर जा रही थी, जिसका रास्ता भीड़ से दूर और थोड़ा सुनसान सा था। अल्फ़ी भी सब भूलकर उसके पीछे भागा था और आखिरकार एक जगह वो अनामिका के सामने आकर खड़ा हो गया। अनामिका उससे बस टकराते-टकराते बची और फिर उससे बचने के लिए तेजी से पीछे हुई। वो उसे अपनी गहरी नज़रों से देख रहा था, जो अनामिका को अपने अंदर उतरती महसूस हो रही थी।

"कौन हो तुम?" अल्फ़ी ने अपनी तफ्तीशी नज़र उस पर रखे हुए पूछा।

अनामिका इस तरह एक बार फिर उसे अपने सामने पाकर सकते में आ गई थी। ना जाने क्यों... पर वो हमेशा ही खुद को उसके सामने असहाय सा पाती थी। वो लाख चाहकर भी उसके सामने खुद को मजबूत नहीं रख पाती थी। वो कुछ पल तो उसे सहमी हुई नज़रो से देखती रही और फिर दो कदम पीछे हटकर वहाँ से भागने के लिए तेजी से पलटी।

अपने सवाल को नज़रअंदाज़ होता देख अल्फ़ी अंदर से सुलग उठा था। उसने बिजली की फुर्ती से आगे बढ़कर अनामिका की कलाई पकड़ी और एक तेज झटके के साथ उसे अपने करीब किया। अल्फ़ी की इस हरकत से सदमे में आई अनामिका अपनी कलाई को छुड़ाने के लिए छटपटाने लगी। उसकी छटपटाहट देखकर अल्फ़ी ने अनामिका का हाथ पीछे की ओर मोड़ उसी की पीठ से लगाकर उसे खुद से लगभग लगा लिया था। अनामिका के चेहरे के हर रंग ख़ौफ के बादल से ढँक गए और वो अपनी फटी हुई ऑखों से उसे एकटक देख रही थी, जो ना जाने उसके चेहरे में क्या खोज रहा था। अनामिका ने मन में बेसाख़्ता ही चैतन्य को पुकारा था।

"मैंने पूछा.... कौन हो तुम?" अल्फ़ी ने एक-एक शब्द को चबाते हुए पूछा।

"प्लीज़ मुझे जाने दीजिए! मुझे आपसे बहुत डर लगता है।" अनामिका ने रूआंसी आवाज में कहा। उसकी सुंदर ऑखें अपने अंदर एक सैलाब को रोके हुई थीं।

"पहले मेरे सवाल का जवाब दो। क्यों मुझे परेशान कर रही हो तुम? क्यों तुम्हारे आस-पास होने से इतनी बेचैनी महसूस करता हूँ मैं? क्यों मेरे कदम तुम्हारी ओर खुद ब खुद बढ़ जाते हैं? तुम्हारे इतने करीब आकर भी मुझे बुरा क्यों नहीं लग रहा है? क्यों मेरा दिल तुमसे दूर नहीं जाना चाहता?आखिर क्यों?" अल्फ़ी ने अपने दूसरे हाथ से अनामिका के चेहरे को छूते हुए कहा। ऐसा करते हुए वो उसके बहुत ही नजदीक आ गया था। अपने चेहरे पर गिरती उसकी गर्म साँसों से अनामिका भी बेचैन होने लगी थी। वो उसकी गिरफ्त से छुटना चाहती थी, पर अल्फ़ी की पकड़ बहुत ही मजबूत थी, जिसमें वो छटपटा कर रह गई।

"अल्फ़ी! छोड़ो उसे!" गुस्से से भरी एक तेज आवाज उन दोनों तक पहुँची, जिससे उन दोनों ने ही उस तरफ देखा था। सामने खड़ा चैतन्य गुस्से में सिर से पैर तक काँप रहा था। उसे वहाँ देखकर अल्फ़ी की पकड़ कमजोर हुई, तो अनामिका ने झटके से खुद को छुड़ाया और भागकर चैतन्य से लिपट गई थी। अनामिका के बुरी तरह से काँपते हुए शरीर को चैतन्य ने अपनी हिफाजत में ले लिया। अल्फ़ी अपनी जगह पर खड़ा उन दोनों को ही उलझी हुई नज़रो से देख रहा था।
"अनामिका!" चैतन्य ने बहुत ही नर्मी से कहा, जिस पर अनामिका ने अपनी भीगी-काँपती पलकें उस की ओर उठाईं। वो अभी भी डरी हुई थी। उसे इस तरह देखकर चैतन्य का दिल बुरी तरह से बैठा था।

चैतन्य ने उसका चेहरा अपनी हथेलियों में भरा और बोला, तुम जाओ! मैं देखता हूँ इसे.... और डरना मत! आज इसे अच्छी तरह से समझा ही देता हूँ कि इसे तुमसे दूर रहना है।"

अनामिका ने अपने काँपते हुए हाथों में चैतन्य की हथेलियों को कस लिया और फिर अपना सिर हाँ में हिलाया। चैतन्य की बाहों में उसकी ऑखों से उसका डर बह निकला था।

"जाओ!" चैतन्य ने उसका चेहरा बहुत ही नर्मी से पोंछते हुए कहा। अनामिका ने एक तिरछी नज़र भौंचक से खड़े अल्फ़ी पर डाली और फिर खुद को संभालती हुई वहाँ से निकल गई। वहीं अल्फ़ी ने जब उसे वहाँ से जाते देखा तो वो एकदम से हरकत में आया और अनामिका के पीछे भागा, जैसे कि अगर वो चली गई, तो ना जाने क्या हो जाएगा। वो हवा की तरह चैतन्य के बगल से निकला ही था कि चैतन्य ने अपने मजबूत हाथों से उसे पकड़कर रोक लिया। अल्फ़ी ने चैतन्य की ओर बेचैनी से देखा।

"चैतन्य छोड़ो मुझे! वो चली जाएगी। उसने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।" अल्फ़ी खुद को उसकी पकड़ से छुड़ाने की कोशिश करते हुए बोला।

"और ये कौन सा तरीका है.... सवाल पूछने का?" चैतन्य ने बहुत ही उखड़े हुए लहजे में कहा।

"तुम्हें इससे क्या मतलब? ये उसके और मेरे बीच की बात है। तुम क्यों
बीच में आ रहे हो?" अल्फ़ी ने चैतन्य की पकड़ से आजाद होकर उसके कंधों को झटकते हुए कहा।

"बीच में मैं नहीं.... तुम आ रहे हो। आइंदा उसके आसपास भी मैं तुम्हें ना देखूं। समझे!" चैतन्य ने अल्फ़ी की ओर ऊंगली उठाकर चेतावनी भरे लहजे में कहा।

"तुम क्यों इतना सुलग रहे हो?" अल्फ़ी ने चैतन्य के बिगड़े तेवरों पर हैरत जताते हुए कहा।

"हुँह! मेरी छोड़ो... अपनी देखो! दूसरी लड़कियों के पीछे भटकने की बजाय अपनी माया के पास जाओ तो बेहतर होगा।" चैतन्य ने अपना उखड़ा लहजा अभी भी बरकरार रखा था।

"मैं किसी के भी पीछे जाऊं... तुम्हें इससे क्या मतलब?" अल्फ़ी भी अपने तेवरों को गर्म करते हुए बोला। उसके गर्म तेवरों से चैतन्य का गुस्सा और भी भड़का था। उसने अल्फ़ी के कॉलर को पकड़कर उसका चेहरा अपने चेहरे के एकदम सामने खींचा।

"और अगर मैं ये कहूँ कि मुझे ही मतलब है तो! मेरी... अनु से.... दूर रहना। वरना अंजाम... अच्छा नहीं होगा तुम्हारे लिए।" चैतन्य ने अल्फ़ी की ऑखों में अपनी ऑखों के दहकते अंगारे डालते हुए अपनी

बात साफ-साफ कह दी।

"तुम्हारी अनु!" कहते हुए अल्फ़ी के होश ढीले पड़े थे।

"हाँ! मेरी अनु! अनामिका! दूर रहना उससे... वरना मैं सब भूल जाऊंगा।" चैतन्य की आवाज में धमकी भरी हुई थी।
वहीं चैतन्य की बात सुनकर अल्फ़ी के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगी थीं। उसके राख हुए चेहरे को देखकर चैतन्य ने उसका कॉलर झटके से छोड़ा और फिर उसके कंधों को थपथपाकर उसके कपड़ों को ठीक करता हुआ वहाँ से चला गया। सदमे में खड़ा अल्फ़ी उसे जाते देखता रह गया।

"अनु! वो चैतन्य की अनु है। तो फिर... मुझे... वो अहसास...! ओह जीजस!" बड़बड़ाते हुए उसने अपने सिर के बाल मुट्ठियों में भींचे थे। वो खुद को बहुत ही लाचार और बेबस महसूस कर रहा था। वो तो माया से प्यार करता था... तो क्यों वो अनामिका की ओर खिंचा जा रहा था। अनामिका को लेकर उसके दिल में वो कौन सा अहसास था, जो अभी तक उसके लिए अनकहा रह गया था। उसे ये जानना ही था, वरना उसे कभी भी चैन नहीं मिलने वाला था और शायद यही उसका नसीब भी था और भविष्य भी।

महफ़िल अपने उरूज़ पर थी। मगर आज माया जश्न में शामिल नहीं थी और उस पर किसी ने जोर भी नहीं डाला। डाकिनी ने भी सबसे कह दिया कि उसे थोड़े आराम की जरूरत है, इसलिए कोई भी उसे परेशान ना करे। पर कोई भी नहीं जानता था कि ऊपर की मंजिल पर बने अपने कमरे की खिड़की से वो सभी पर नज़र रखे हुए थी। ख़ासतौर पर एक शख़्स पर... जो तबसे उसकी नज़रों के दायरे में था, जबसे वो वहाँ आया था।

"तो आ ही गए तुम! आज की शाम....माया को बस तुम्हारा ही इंतज़ार था। बस वो अनामिका उस अल्फ़ी को ख़ुद में उलझाकर रखे और मैं.... तुम्हें उलझा लूंगी। आज की रात तुम कभी नहीं भूलोगे।" चैतन्य की दिलकश मुस्कुराहट में खोकर बहके हुए अंदाज में माया बोली।

उसने पूरी महफ़िल में नज़र दौड़ाई, तो उसे एक ओर खड़ा अल्फ़ी दिखाई दिया। उसके महफ़िल में रहते हुए वो नीचे नहीं जा सकती थी। उसने बड़ी ही चिढ़ से चारों ओर अनामिका को खोजा और वो उसे महफ़िल में चारों
ओर मंडराती हुई दिख गई। उसके चेहरे की रौनक देखकर माया का मन कसैला हो गया।

"ये अपना काम छोड़कर कहाँ भटक रही है? लगता है कि मेरी बात इसकी समझ में नहीं आई।" अनामिका को चैतन्य के आसपास मंडराते और उससे बातें करते हुए देखकर वो अपने दाँत पीसते हुए बोली।

अभी वो गुस्से में थरथराते हुए किसी सेविका को बुलाने के बारे में सोच ही रही थी कि तभी उसने अल्फ़ी और अनामिका को साथ देखा। वो बातें कर रहे थे और ये देखकर माया के होंठों की मुस्कान टेढ़ी हुई। उसके देखते ही देखते अनामिका एक ओर भागी और अल्फ़ी भी उसी के पीछे भागा। ये देखते ही माया फुर्ती से उठी और नीचे भागी। वो और समय बर्बाद नहीं कर सकती थी। अल्फ़ी के महफ़िल में

वापस लौटने से पहले उसे चैतन्य को अपने साथ लेकर आना था। वो बाहर आई तो उसने चैतन्य को भी उसी तरफ तेजी से जाते देखा, जिस तरफ अनामिका और अल्फ़ी गए थे। ये देखकर उसे एक तेज झटका लगा था। वो भी उतनी ही तेजी से उस ओर भागी, जिस तरफ चैतन्य गया था... ताकि उसे रोक सके। मगर भारी-भरकम कपड़ों में वो चैतन्य की तेज रफ्तार का मुकाबला नहीं कर सकी। जब वो वहाँ पहुँची तो सामने का नज़ारा देखकर चमक गई।

अनामिका, चैतन्य की बाहों में अपना चेहरा छिपाए खड़ी थी और उसे खुद में समेटे हुए चैतन्य कुछ दूर खड़े अल्फ़ी को आग उगलती नज़रों से देख रहा था। माया जहाँ से छिपकर ये सब देख रही थी, वहाँ तक उन तीनों की आवाज नहीं पहुँच रही थी। वो बस ऑखें फाड़े उन तीनों को देख रही थी। उसने देखा कि चैतन्य ने अनामिका का चेहरा अपनी हथेलियों में भरकर कुछ कहा और फिर अनामिका अपना चेहरा पोंछतीं हुई तेजी से उसकी ओर आई। उसने तेजी से खुद को अनामिका से छिपाया। उसके वहाँ से निकलते ही उसने फिर अल्फ़ी और चैतन्य की ओर देखा, जहाँ दोनों ही
एक-दूसरे से उलझे हुए थे। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि आखिर हो क्या रहा है? आखिरकार वो वापस महफ़िल की ओर मुड़ गई। अपने काम में हो रही देरी से वो और भी भड़क गई थी। अनामिका किसी तरह से खुद को संभालकर फिर एक बार पार्टी में शामिल हो चुकी थी। माया ने चारों ओर नज़रें दौड़ाकर उसे पकड़ा और फिर उसके पास पहुँची।

"अनामिका!" वो तेज आवाज में चिल्लाई। अनामिका के साथ आसपास के लोगों का ध्यान भी उसकी ओर गया था। अनामिका ने कुछ कहा नहीं, बस उसके तपते हुए चेहरे को ही देखती रह गई क्योंकि वो नहीं जानती थी कि... माया क्या देखने के बाद सुलगी हुई थी।

"साथ आओ!" कहने के साथ ही उसने अनामिका की कलाई पकड़ी और उसे अपने साथ खींचते हुए बसेरे के अंदर ले गई। उसी समय चैतन्य भी वहाँ वापस लौटा और उसने माया को तमतमाई हुई हालत में अनामिका को जबरन अंदर ले जाते देखा। उसकी नज़रों ने आखिर तक उन दोनों का पीछा किया और अनामिका के भिंचे हुए जबड़े भी देखे।

"परेशान आफत को और परेशान कर दिया इस बेवकूफ ने। ऊपर वाला तुम पर रहम करे माया।" और फिर उसने अपनी जेब से एक जेबघड़ी निकाली और उसमें समय देखकर बोला, "बस दस मिनट!"

और फिर वो एक ओर खड़े होकर महफ़िल पर नज़र रखने लगा। एडवर्ड कोफ्त भरे चेहरे के साथ वहाँ अपनी मौजूदगी दर्ज किए हुए था। चैतन्य के लिए यहाँ एडवर्ड पर नज़र रखना मुश्किल नहीं था क्योंकि वो उसकी जगह नहीं थी, इसलिए इधर-उधर तफरीह करना उसके हक़ में नहीं था और सर विलियम भी उसे खुद से अलग होने नहीं दे रहे थे। चैतन्य ने एक बार फिर घड़ी निकालकर देखा।

"और पाँच मिनट!" और फिर उसने घड़ी वापस रख दी और अनामिका
का इंतजार करने लगा। मगर तीन मिनट ही बीते होंगे, जब अनामिका ने उससे अपने तरीके से संपर्क किया और फिर उसे जल्दी से अंदर आने के लिए कहा। इधर अनामिका का हुक्म जारी हुआ और उधर चैतन्य हवा की तरह उसके बताए रास्ते से होता हुआ कुछ ही सेकेंड्स में एक दरवाजे के सामने खड़ा हुआ था। उसने दरवाज़े पर दस्तक की और अगले ही पल अनामिका ने दरवाजा खोला। चैतन्य कोई प्रतिक्रिया देता.. उससे पहले ही अनामिका ने उसके कपड़े पकड़कर उसे अंदर खींच लिया और दरवाजा बंद कर लिया।

****

माया बेदर्दी से अनामिका का हाथ पकड़े उसे अपने साथ घसीट रही थी। उसकी इस हरकत से पहले से ही परेशान अनामिका और भी झल्लाई थी। मगर उसने इंतजार किया और आगे बढ़ते हुए वो उस रास्ते को देखती और समझती रही। बसेरे के सामने के दरवाजे से अंदर आने का ये उसका पहला मौका था। जल्द ही वो जाने पहचाने रास्ते से होकर माया के कमरे के सामने खड़े थे। माया ने अंदर आते ही उसे आगे की ओर झटके से फेंका था, जिससे अनामिका ने खुद को गिरने से बड़ी ही मुश्किल से बचाया था। माया ने पटकते हुए दरवाजे को बंद किया और अनामिका अपने होंठ भींचे अपने गुस्से के सैलाब को रोके हुए थी।

"तुम्हारी इतनी हिम्मत! मेरी बात काटी तुमने! मैंने क्या कहा था तुमसे? उस अल्फ़ी को पार्टी से दूर रखने के लिए ना! अच्छा ख़ासा वो तुम्हारे पीछे गया था... तो फिर वो लड़का तुम दोनों के पीछे क्यों गया था और तुम क्या कर रही थी उसके साथ? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई उस पर नज़र डालने की... उसके करीब जाने की?" कहते हुए माया ने अनामिका के
बाल बेदर्दी से पकड़कर खींचे थे और यहीं अनामिका की बर्दाश्त खत्म हो गई।

अनामिका ने माया की नाज़ुक कलाई जकड़ी और फिर उस पर दबाव बनाने लगी, जिससे हुई तकलीफ़ से माया की पकड़ अनामिका के बालों से कम हो गई। अनामिका ने उतनी ही सख़्ती से माया की कलाई को अपने चेहरे के सामने लाकर फिर उसे पूरी बेदर्दी से एक ओर मरोड़ दिया, जिससे उसका वो हाथ कंधे के पास तक मुड़ गया। कलाई से कंधे तक हाथ के मुड़ने पर माया दर्द से बुरी तरह से बिलबिलाते हुए जमीन पर घुटने के बल गिर पड़ी। उसी हाथ को और भी मरोड़ते हुए अनामिका ने उसे माया की पीठ पर टिकाया और माया के पीछे से ही अपने दूसरे हाथ से माया के जबड़े को बेरहमी से दबोचा था।

"लड़का-लड़का क्या लगा रखा है? चैतन्य नाम है उसका और वो.... मेरा है। उस पर अपनी गंदी नज़र डालने की हिम्मत नहीं करना, वरना ये बेग़ैरती ऑखें बाहर निकालकर कौओं को खिला दूंगी। समझ में आया!" माया के कान के पास साफ आवाज में गुर्राते हुए अनामिका बोली।

वास्तव में माया एक छुईमुई सी लड़की थी, जो अपनी सुंदरता के बल पर सबको दबा कर रखती थी। डाकिनी की बेटी होने के कारण भी आज तक किसी की हिम्मत नहीं हुई थी कि वो उसके सामने ऑखें उठाकर भी बात करे। ऊपर से सर्वशक्तिमंडल में चयन होने के कारण उसकी बिगड़ैल तबीयत और भी बिगड़ी थी। सबसे विशेष होने के अहसास ने माया को रूतबे में जरूर ताकतवर बनाया था, मगर उसका पाला कभी भी अनामिका जैसी किसी लड़की से नहीं हुआ था, इसलिए उसे पता नहीं था कि वास्तव में ताकत होती क्या है? अनामिका के जोर के सामने वो बेबस सी ऑसू बहाते हुए तड़प रही थी। उसे अपने पैरों के पास गिरकर रोता हुआ देखकर अनामिका के दिल को बहुत ही सूकून मिला था। फिर कुछ सोचकर अनामिका ने उसके हाथ को छोड़ा और फिर उसके बालों से
पकड़कर उसे खड़ा किया था। अनामिका की मुट्ठी को अपने दोनों हाथों से पकड़े वो उसे सहमी हुई नज़रों से देख रही थी।

"बस! इतनी ही ताकत है तुझमें? अभी तो और भी है।" कहते हुए अनामिका का एक झन्नाटेदार थप्पड़

माया के बाएँ कान और गाल को सिहरा गया। माया को कान में सीटी की आवाज सुनाई देने लगी। वो अभी संभल ही रही थी कि तभी अनामिका का अगला थप्पड़ उसके दूसरे गाल पर पड़ा और इस बार माया के शरीर के साथ उसका दिमाग भी हिल गया। इसके बाद तो अनामिका ने उसके गालों पर चमाटों की झड़ी लगा दी। उसने माया को संभलने का कोई मौका ही नहीं दिया। वो तो आज जैसे अपना सारा गुस्सा उस पर निकाल देना चाहती थी। कुछ ही देर में माया पस्त हो गई थी। उसके नाज़ुक से गालों में खून भरी लकीरें उभर आई थीं और होंठों के एक किनारे से खून बहने लगा। अनामिका ने माया के हाथ को फिर से उसकी पीठ की ओर मोड़ा और उसके बालों को दूसरे हाथ से पकड़कर उसे चेहरे के बल दीवार से चिपका दिया। माया के होंठों से सिसकारियों के साथ ऑखों से ऑसू भी बिना रूके बह रहे थे।

"समझ में आया! चैतन्य से दूर रहना है तुम्हें! सौ हाथ दूर! उसकी तरफ देखने का हक़ किसी को नहीं।" अनामिका ने उसके चेहरे को दीवार में रगड़ते हुए खरखराती हुई आवाज में कहा, जिस पर माया ने तेजी से अपना सिर हिलाते हुए हामी भरी और फिर वो हिचक-हिचक कर रोने लगी। अनामिका ने उसे झटके से छोड़ा जिससे वो किसी कच्चे मकान की तरह नीचे ढह गई। उसमें अब इतनी ताकत नहीं बची थी कि वो कुछ और कर पाती। अनामिका ने उसे घूरकर देखा और फिर उसके सामने जमीन पर एक घुटना टिकाकर बैठ गई और उसे सवालिया नज़रों से देखने लगी।

"क.. क.. क्या हुआ? न.. न.. नहीं... देखूंगी उसे। सच्ची!" माया ने उसे रहम मांगती नज़रों से देखते हुए कहा। मगर अनामिका उसमें कुछ और ही देख रही थी। उसकी ऑखें किसी सोच के तहत सिकुड़ी और फिर वो तेजी
से खड़ी हुई। उसने पास ही फलों की टोकरी से छुरी उठाई और उसे माया की ओर करके दरवाजे के पास खड़ी हो गई। उसने इशारे से माया को चुपचाप पड़े रहने के लिए कहा और फिर अपनी ऑखें बंद कर चैतन्य को पुकारा और उसे तुरंत वहाँ बुलाया। हवा की रफ्तार से चैतन्य वहाँ पहुँचा था। अनामिका ने उसके कपड़े पकड़कर उसे कमरे के अंदर खींच लिया और दरवाजा बंद कर लिया।

"क्या कर रही हो यार?" चैतन्य उसकी इस हरकत पर तिलमिलाया था।

"काम से बुलाया।" अनामिका ने भी अपने हाथ झटकते हुए कहा। माया को सबक सिखाते समय उसे भी कुछ खरोंचें आ गई थीं।

"इतनी चोटें कैसे आ गई तुम्हें?" चैतन्य ने उसका हाथ पकड़कर फिक्रमंदी से पूछा, जिस पर अनामिका ने अपनी ऑखों से एक ओर इशारा किया। चैतन्य ने उस ओर देखा तो... पहले तो उसकी ऑखें सिकुड़ी और फिर हैरत से फैलकर दोगुनी हो गईं।

"अरे रे रे रे रे!" कहते हुए चैतन्य एक बार फिर से अनामिका के पीछे हुआ था।

"डरो मत! अच्छे से समझा दिया है इसे। अब तुमसे तो क्या किसी भी लड़के से दूर रहेंगी।" अनामिका ने माया पर लानत भरी नज़र डालते हुए कहा।

"हाँ! वो तो दिख रहा है। पर तुम्हें नहीं लगता कि इसे धोकर तुमने हमारे रास्ते पर पानी बिखेर दिया है। इसका मुँह खुला तो मुश्किल हो सकती है।" चैतन्य ने माया की ओर तिरछी नज़र से देखते हुए कहा।

"तो इसे रातभर के लिए गायब कर देते हैं। फिर देखेंगे।" अनामिका ने

कहा।

"इसे गायब किया तो सब इसे ढूंढेंगे नहीं?" चैतन्य ने आशंका जताई।

"मैडम ने खुद ही सुबह तक डिस्टर्ब करने से मना किया है सबको। कोई नहीं ढूंढेगा इसे। अब यही बताएगी सब हमें। कुछ और भी है, जो मुझे खटका है।" अनामिका का लहजा अभी भी लानत भरा था।

"अच्छा और वो क्या?" चैतन्य ने पूछा।

"पहले इसे यहाँ से लेकर चलो। उठाओ इसे।" अनामिका ने कहा।

"क.. कौन? मैं?" चैतन्य ने घबराकर कहा।

"और कौन? अब ऐसी हालत में तुम्हारी इज्जत पर हाथ नहीं डालने वाली वो!" अनामिका ने दाँत भींचकर उसे लताड़ते हुए कहा।

"क्या यार... तुम भी?" ये सुनकर चैतन्य बुरी तरह से झेंपा था।

"चलो! उठाओ उसे! मैं रास्ता बनाती हूँ।" कहते हुए अनामिका ने फर्श पर पड़े मखमली कालीन को उठाकर एक तरफ किया और फिर पास ही पड़े एक सजावटी बर्तन की ओर देखा, जिसमें पानी भरा हुआ था। ये करने के बाद उसने मुड़कर चैतन्य की ओर देखा, जो बहुत धीरे-धीरे माया की ओर एक-एक कदम उठाते आगे बढ़ रहा था।

"अरे यार! जल्दी करो।" अनामिका ने झल्लाकर कहा और फिर उस सजावटी बर्तन में भरे हुए पानी को जमीन में डाल दिया। जमीन पर पानी फैल गया, तो अनामिका ने अपनी अंगूठी के पत्थर को चूमकर उसे उस पानी की ओर किया। एक तेज नीली रोशनी निकली और फिर उस पानी
में चली गई। जमीन में गिरे पानी में नीली रोशनी फैली गई और इसी के साथ अनामिका के होंठों पर मुस्कान भी। अभी वो एक पल के लिए मुस्कराई ही थी कि एक तेज आवाज के साथ चैतन्य उड़ता हुआ सामने की दीवार से टकराया।

अनामिका अपने बनाए छलद्वार को देख ही रही थी कि तभी चैतन्य उसके सामने वाली दीवार से आकर टकराया। तेज आवाज से अनामिका की नज़र तेजी से उस ओर गई, जहाँ दर्द से अपने दाँत भींचे हुए चैतन्य अपने कंधे को पकड़कर खड़ा हो रहा था। उसे ऐसी हालत में देखकर अनामिका ने अपनी ऑखें बंद कीं और अफसोस से अपना सिर हिलाया।

"अरे यार! ये तो झटके मार रही है।" चैतन्य खिन्नता से माया की ओर देखते हुए बोला। अनामिका ने भी एक उड़ती नज़र माया पर डाली और फिर चैतन्य की ओर देखा।

"सॉरी! मेरी ग़लती! ग़लत आदमी को ग़लत काम जो काम दे दिया।" अनामिका ने चैतन्य की ओर

अफसोस भरी नज़र से देखते हुए कहा।

"हैं! क्या?" चैतन्य बेवकूफों की तरह देखते हुए बोला।

"यही कि.... तुम्हें तो बस भड़काना ही आता है हवा के झोंके।" अनामिका ने तंजभरी आवाज में चैतन्य से कहा।

"झोंका! व्हॉट डू यू मीन बाई झोंका!" चैतन्य बिगड़ कर बोला।

"श्श्श्श!" अनामिका ने अपने होंठों पर ऊंगली रखते हुए चैतन्य को घूरा और फिर तेजी से माया की ओर घूमकर उलाहना भरी आवाज में बोली, "और तुम! अपनी ये चिंगारियाँ दबाकर रखो, बत्तियाँ जलाने के काम आएँगी।"
और ये सुनकर चैतन्य के होंठों पर हँसी बड़ी ही मुश्किल से रूकी थी। वहीं दूसरी ओर माया अपनी हर ज़िल्लत के साथ और भी फुंफकारने लगी थी। उसकी ऑखों में एक बार फिर से चमक देखकर अनामिका ने भी अपनी ऑखे दहकाई थीं।

"क्या? ऐसे क्या देख रही हो? शारीरिक शक्ति में तो तुम मुझसे कभी नहीं जीत सकती। नमूना अभी देखा तुमने। है ना! और जहाँ तक मानसिक शक्ति का सवाल है... ये सवाल तो मुझे भी सचमुच बहुत ही दिलचस्प लग रहा है। क्या तुम सचमुच वही हो जो लोगों को लगता है? या फिर कोई धोखा हो!" अनामिका गहरी साँसें लेती हुई माया के पास पहुँचकर बोली और माया ने जहर उगलती ऑखों से अनामिका की ओर देखा।

"अच्छा! और तुम कौन हो?" माया ने अनामिका को ऊपर से नीचे देखते हुए कहा।

"एक तो ये सवाल समझ में नहीं आता कि.... सब मुझसे यही क्यों पूछते हैं?" अनामिका मुँह बनाकर बोली।

"तुम दोनों रक्षक हो! चैतन्य के बारे में तो मुझे पता था, पर तुम! तुम जल रक्षक कैसे हो सकती हो? ये... नामुमकिन है।" माया ने दोनों पर नज़र डालते हुए कहा, जिस पर उन दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा था।

"तुम्हें पता था चैतन्य के बारे में!" अनामिका ने चौंकते हुए चैतन्य पर एक नज़र डाली थी। माया ने भी चैतन्य पर एक आह भरी नज़र डाली थी।

"एक मिनट! तो फिर और कौन-कौन जानता है इसके बारे में।" इस बार चैतन्य ने आगे बढ़ते हुए पूछा।

"एक मिनट चैतन्य! शायद मेरी समझ में सब आ रहा है।" अनामिका ने
माया को घूरकर देखते हुए कहा।

"क्या? क्या समझ में आ गया?" चैतन्य ने पूछा।

"कि ये तुम्हारे पीछे क्यों पड़ी हुई है और अभी थोड़ी देर पहले क्या हुआ था?" अनामिका ने जवाब दिया।

"अच्छा! क्यों? क्या?" चैतन्य ने दोनों पर एक-एक नज़र डालते हुए कहा।

"पहले इसे यहाँ से निकालते हैं।" अनामिका अपनी दोनों कलाईयाँ सहलाते हुए बोली।

"तुम ये अच्छा नहीं कर रही हो। तुम्हें नहीं पता कि तुम लोग किससे उलझने की कोशिश कर रहे हो?" माया ने उन दोनों को धमकाते हुए कहा, जिस पर अनामिका ने उसे घूरकर देखा और उसकी ओर बढ़ी।

"एस्क्यूज़ मी! आप दोनों ये वार्तालाप कब तक करने वाली हैं। नहीं! अगर टाइम लगेगा, तो क्या मैं बाहर से थोड़ा टहल-वहल आऊँ।" चैतन्य वहाँ से भागने की फिराक में बोला।

"शटअप! मुँह बंद करो!" अनामिका झल्लाते हुए बोली।

"अच्छा! और मुँह बंद करके क्या करूं?" चैतन्य ने भी उन दोनों के बीच की बहस से उकताकर पूछा।

चैतन्य का सवाल सुनकर अनामिका उसे खींचकर माया से दूर ले आई। उसने माया पर अपनी नज़र रखे हुए ही चैतन्य से कहा, "पार्टी के बाद अल्फ़ी को लेकर आओ फॉरेस्ट केबिन में। मैं इसे लेकर जाती हूँ।"
"अल्फ़ी को क्यों?" चैतन्य ने एक बार फिर से नासमझी में पूछा।

"सोचती हूँ... आज इन दोनों की मुलाकात करवा ही दी जाए। आई थिंक... ये मुलाकात बहुत ही दिलचस्प होने वाली है।" अनामिका ने माया की ओर देखकर उलझे हुए लहजे में कहा।

"दिलचस्प! वो क्यों?" चैतन्य ने पूछा।

"इसका सही जवाब अभी नहीं है मेरे पास। अल्फ़ी के पास है। जाओ!" अनामिका ने चैतन्य को और भी उलझाते हुए कहा और उसका जवाब सुनकर चैतन्य का दिमाग खराब हुआ था।

"यार! तुम जो ये सब उलझाकर कहती हो ना! दिमाग का दही हो जाता है। सच में!" चैतन्य चिढ़कर बोला।

"तो उसकी लस्सी बनाकर पी जाओ। जितना कहा है, उतना करो। आज की रात क़यामत की है चैतन्य! हमें जो करना है... आज ही करना है। जाओ! ठीक एक घंटे के बाद केबिन में मुलाकात होगी।" अनामिका ने चैतन्य की बांह पकड़कर दरवाजे की ओर ले जाते हुए कहा।

"तुम ले जाओगी अकेली इसे। मुझे तो उछाल कर फेंक दिया इसने।" चैतन्य ने आशंका से दोनों की ओर देखते हुए पूछा।

"अभी तुम जा रहे हो या मैं भी तुम्हें उछालकर फेंकू?" अनामिका ने उसे घूरकर देखते हुए कहा।

"जा रहा हूँ मेरी माँ! नहीं पड़ना तुम औरतों के चक्कर में मुझे।" चैतन्य ने अपने दोनों कान पकड़ने के बाद अपने दोनों हाथ सरेंडर करते हुए ऊपर

उठाए और फिर बाहर जाने के लिए दरवाजा खोला। अनामिका पलटकर माया की ओर बढ़ी ही थी कि तभी उसे चैतन्य की आवाज सुनाई दी।

"अनामिका!"

अनामिका ने मुड़कर देखा। दरवाजे पर परिधि खड़ी हुई थी और चैतन्य को अपनी फैली हुई ऑखों से देख रही थी। अनामिका ने देर किए बिना उसे अंदर खींचा और फिर चैतन्य को जाने के लिए कहा।

"क्या हो रहा है यहाँ?" हैरानी की हद में खड़ी परिधि ने दोनों की ओर बारी-बारी से देखते हुए कहा।

"वही जो सही है। सच है!" अनामिका बोली।

"क्या मतलब?" परिधि ने माया की फटेहाल हालत की ओर ऑखें बड़ी करके देखते हुए पूछा।

"परिधि! मुझे पता है कि तुम सब जानती हो और मैं ये भी जानती हूँ कि तुम बुजदिल नहीं हो। आज अगर तुम चाहो तो बहुत कुछ सही हो सकता है।" अनामिका ने परिधि के कंधों पर हाथ रखते हुए कहा। अनामिका की बात सुनकर परिधि की ऑखें सवाल करती हुईं सिकुड़ी थीं।

"मैं उस खुफिया दरवाजे की बात कर रही हूँ। उस दरवाजे के पीछे जो भी ग़लत है, उसे तुम सही कर सकती हो।" अनामिका ने उसकी ऑखों के सवालों को पढ़ते हुए कहा।

और ये सुनकर परिधि की ऑखें दहशत से फैली थीं। उसने पास ही जमीन पर पस्त पड़ी माया की ओर देखा। उसकी हालत देखकर परिधि को अपना गला सूखता हुआ महसूस हुआ। उसने एक ख़ौफ से भरी नज़र
अनामिका पर डाली।

"डरो मत परिधि! किससे डर रही हो तुम? इस माया से! ये कुछ भी नहीं है। बस एक धोखा है। इसने तुम्हारी कमजोरियों का फायदा उठाकर अपना उल्लू सीधा किया है। मुझे नहीं पता कि तुमने इसकी कैसी मदद की है, पर ये जानती हूँ कि तुम्हारी मदद के बिना ये कभी भी कुछ भी नहीं कर सकती थी। आज अगर अपनी आत्मा पर जमे ग़लत के मैल को धोना चाहती हो तो... उस ग़लत को सही कर दो, जो उस दरवाजे के पीछे हो रहा है।" अनामिका ने परिधि से समझाइश वाले लहजे में कहा।

"म... म.... माया!" परिधि के गले से अटक-अटक कर आवाज निकली।

"इसकी चिंता मत करो। इसका खेल खत्म हो चुका है। अब तुम्हारी बारी है और मुझे पता है कि तुम ये कर सकती हो।इस दुनिया में कोई भी जीव अपनी पूरी जिंदगी में कम से कम एक बार बहादुरी जरूर दिखाता है और तुम्हारे लिए वो मौका अभी है परिधि, वरना.... खुद को कभी माफ नहीं कर पाओगी। याद रखना!" अनामिका, परिधि को लगभग उकसाते हुए बोली।

"उसे बहकाओ मत!" तेज आवाज में चिल्लाते हुए माया ने अनामिका पर प्रहार किया। एक लाल रोशनी उस तक पहुँचकर टकरा पाती, उससे पहले ही अनामिका ने अपना सीधा हाथ माया की ओर उठाया और पानी का एक तेज रेला सीधे जाकर माया से टकरा गया। माया संभल पाती उससे पहले ही अनामिका ने अपने हाथ के इशारे से उसे कमरे की छत तक ऊँचा उठा दिया। पानी की बौछार के बीच

माया के चेहरे के ढीले पड़े तेवर तो दिखाई नहीं दिए, मगर ये सब देखकर परिधि के होश जरूर उड़े थे। अनामिका का ये रूप देखकर उसके चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगी थीं। अनामिका ने अपने चेहरे के कसे हुए भाव ढीले किए और अपना हाथ झटके से हटा दिया, जिससे माया भी झटके से फर्श पर धम्म हुई थी। अनामिका ने एक बार फिर से परिधि की ओर रूख किया। परिधि ने सहमी हुई नज़रों से उसकी ओर देखा।

"बस भी करो परिधि डरना। कितना डरोगी तुम? कब तक डरोगी? जिंदगी भर इस लड़की से डरती रही तुम और ग़लत करती रही। देखो आज इसे। याद रखना... ग़लत.. ग़लत ही होता है। उस पर सही का खोल चढ़ा देने से वो सही नहीं हो जाता। मुझसे या किसी से भी डरने की बजाय खुद से डरो। वो करो, जो तुम्हें... सही लगता है, शायद तुम्हारी आत्मा पर चढ़ा बोझ कम हो जाए।" अनामिका, परिधि को झिंझोड़ते हुए कहा।

परिधि ने एक अजीब से अहसास से भरी हुई ऑखों से अनामिका की ओर देखा। वहाँ उसे अपने लिए एक विश्वास दिखाई दिया। एक फिक्र दिखाई दी। परिधि का दिल एक अजीब से अंदाज़ में धड़का।

"हाँ! मैं करूंगी! मैं सब सही करूंगी। जो ग़लत हुआ... हुआ। अब और ग़लत नहीं हो सकता।" भरे हुए गले से कहते हुए अनामिका की ओर उठी हुई उसकी आँखें भर आईं।

"जाओ! मैं इंतजार कर रही हूँ।" अनामिका ने उसे अपने प्यार भरे विश्वास के घेरे में लेते हुए कहा। परिधि ने अनामिका की हथेलियों में अपनी मुट्ठियाँ कसीं और फिर अपना सिर हिलाते हुए तेजी से उस कमरे से बाहर निकल गई। अनामिका के होंठों पर एक विजयी मुस्कान आई और उसने उसी दिल जलाने वाली मुस्कुराहट के साथ माया की ओर देखा, जो फिलहाल अनामिका के प्रहार से नीम बेहोशी में थी।

"च्च्च्च्! शक्तिमंडल की शक्ति!" उसकी ओर हिकारत से देखते हुए अनामिका ने कहा और फिर उसका एक हाथ पकड़कर उसे अपने छलद्वार की ओर खींचकर ले गई। अनामिका ने चारों ओर देखा और फिर एक गहरी साँस लेकर उस छलद्वार में उतर गई। साथ ही साथ उसने माया
के बेसुध शरीर को भी खींच लिया। उनके अंदर जाते ही पानी की सतह कुछ देर कांपती रही और फिर धीरे-धीरे सब शांत हो गया। पानी में फैली नीली रोशनी धीरे-धीरे सिमटकर गायब हो गई। सब कुछ सामान्य हुआ ही था कि कमरे का दरवाजा झटके से खुला। रोमा और मार्गरेट कमरे के अंदर सहमते हुए दाख़िल हुए। अंदर कमरा बुरी तरह से बिखरा हुआ था और माया... वो गायब थी।

"ओह गॉड! इस कमरे को क्या हुआ है और... माया कहाँ गई? इसी कमरे में तो थी वो। उस अनामिका को खींचकर लाई थी ना वो? बाहर तो दोनों ही नहीं निकली!" रोमा ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"हाँ! बाहर तो नहीं निकलीं। उनके पीछे ही तो आए थे हम दोनों और बाहर छिपकर सब देख रहे थे। मुझे लगा था कि थोड़ी ही देर में कोई मसालेदार खबर मिलेगी।" मार्गरेट ने भी चारों ओर देखते हुए बहुत ही धीरे-धीरे कदम आगे बढ़ाए थे।

"अरे वो लड़का आया था, तो मुझे भी ऐसा लगा था।" रोमा ने कहा।

"तो तुमने परिधि को क्यों भेजा माया के कमरे में?" मार्गरेट ने कहा।

"मुझे लगा कि अनामिका को अब उन दोनों के बीच कबाब में हड्डी बनकर नहीं रहना चाहिए। मैंने तो माया की मदद के लिए ही उसे भेजा था, मगर वो तो उस लड़के को ही बाहर निकाल कर खुद अंदर आ गई थी और फिर खुद भी अकेले ही बाहर निकली।" रोमा ने इस बार बुरी तरह से झुंझलाते हुए बोली।

"हाँ तो फिर.... अनामिका और माया कहाँ हैं? उन दोनों को तो कमरे में ही होना चाहिए।" माया के कमरे की खिड़की से बाहर झांकते हुए मार्गरेट ने कहा।
"मार्गरेट! देखो जरा! यहाँ इतना पानी क्यों फैला हुआ है? इतना पानी यहाँ कैसे आया?" रोमा ने कमरे के एक हिस्से की ओर देखते हुए कहा, जहाँ की हर चीज से अभी भी पानी टपक रहा था। मार्गरेट भी अपनी फैली हुई ऑखों के साथ उसके साथ आकर खड़ी हो गई। बिगड़ते हुए हालातों को देखकर दोनों के ही चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगी थीं।

"रोमा! मुझे लगता है कि माया के साथ धोखा हुआ है। वो लड़का भी तो पिशाचों का साथी है। कहीं उस एडवर्ड ने तो धोखा नहीं किया। अनामिका को भी हम कितना जानते हैं? और मुझे तो ये भी लग रहा है कि उस डरपोक परिधि को भी उन लोगों ने अपनी तरफ मिला लिया है। पक्का यही हुआ है!" मार्गरेट लरजती हुई आवाज में बोली।

"इसका मतलब कि... हम भी मुश्किल में फँस सकते हैं।" रोमा ने भी सदमे में आते हुए कहा।

"रोमा! हमें सफाई करनी होगी। मुझे नहीं लगता कि अब हम माया और परिधि के भरोसे में रह सकते हैं। मुझे सजा से बहुत डर लगता है। अभी किसी को हम पर शक भी नहीं होगा। जल्दी चलो!" मार्गरेट ने रोमा का हाथ खींचते हुए बहुत ही बेसब्री से कहा। रोमा ने गुम हुए होश के साथ मार्गरेट की ओर देखा और फिर दोनों ही तेजी से बाहर की ओर भागे।

हालातों ने अपना रंग बदलना शुरू कर दिया था। आज की रात कुछ नए से रंग अपने साथ लेकर आने वाली थी, जो उसके स्याह रंग से भी ज्यादा काली थी। हालातों के मद्देनजर अनामिका और चैतन्य ने अपना अगला कदम उठा लिया था और परिधि पर भी थोड़ा ऐतबार कर लिया था। अब योजना के अनुसार अगला कदम माया और अल्फ़ी की मुलाकात थी और इस मुलाकात का असर अल्फ़ी और सभी को अंदर तक हिलाकर रख देने वाला था।
आसमान में चौदहवीं का चाँद खिला हुआ था। जंगल में पेड़ों से छनकर आती हुई रोशनी और झींगुरों की आवाज अंधकार को और भी भयावह बनाए हुए थी। दूर-दूर तक किसी की मौजूदगी का नामोनिशान नहीं था। ऐसे में जंगल के बीच मौजूद वो पेड़ आवाज करते हुए कुछ अजीब तरह से ऐंठने लगा। अगले ही पल उस पेड़ के मोटे तने से एक नीले रंग की रोशनी फूटी, जो धीरे-धीरे फैलती गई और उस पेड़ का तना उस रोशनी से दो फाड़ हो गया।

अगले ही पल तने के बीच से फूटती रोशनी से अनामिका बाहर आई। चारों ओर देखने के बाद उसने पलटकर उस रोशनी में थोड़ा झुककर कुछ पकड़ा और उसे भी खींचकर बाहर निकाला। वो माया थी, जो पूरी तरह से बेहोश थी। पूरी तरह बाहर निकलने के बाद अनामिका ने उसे अपने कंधे पर उठाया और एक ओर चली गई। उसके पीछे वो पेड़ उस नीली रोशनी को समेटकर एक बार फिर से पहले की तरह हो गया।
कुछ ही देर में अनामिका उसी फॉरेस्ट केबिन के सामने खड़ी हाँफ रही थी, जहाँ पिछली रात चैतन्य ने

उसकी मुलाकात सर विलियम से करवाई थी। उस केबिन पर एक नज़र डालने के बाद अनामिका उस केबिन के अंदर चली गई। अंदर जाते ही उसे एक तेज झटका लगा क्योंकि इस समय भी वहाँ वो ढिबरी जल रही थी, जिसे उन्होंने कल रात भी जलते देखा था। अनामिका को आश्चर्य हुआ कि उस केबिन को बाहर से देखने पर ऐसा बिल्कुल भी नहीं लगता कि अंदर रोशनी होगी। ख़ैर! अनामिका ने अब इस पहेली को परे ही रखा क्योंकि अब और पहेलियाँ सुलझाने का ना तो वक्त था और ना ही हिम्मत। चैतन्य के आने में समय था, इसलिए माया के हाथ-पैर और मुँह को बांधकर एक कोने में लुढ़काने के बाद वो उस केबिन का जायज़ा लेने लगी।

चारों ओर नज़रें दौड़ाते समय उसकी नज़र उसी कोने की ओर गई, जहाँ पिछली रात उसने सर विलियम को घुटनों के बल बैठकर सिसकते हुए देखा था। उसका कौतूहल उसे उस ओर ले गया। वहाँ पहुँचकर वो उस जगह को तफ्तीशी नज़रों से देखने लगी। उसका कौतूहल उसे उस कोने की कहानी जानने के लिए उकसा रहा था, वहीं... उसका दिल ऐसा करने की गवाही नहीं दे रहा था। मगर कभी-कभी इंसान का कौतूहल हर जज़्बात पर भारी पड़ जाता है। अनामिका भी इसी जोर से आगे बढ़ी और फिर झुककर वहाँ पड़े कपड़े को हटा दिया। एक झिझक के साथ उसने उस गड्ढे को खोला। अंदर अंधेरे की वजह से कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। अनामिका ने कोने में पड़ी ढिबरी उठाई और उस गड्ढे में झांककर देखा। उस झिलमिलाती रोशनी में उसे कुछ चीजों का ढेर दिखाई दिया। अनामिका ने अंदर हाथ डालकर कुछ चीजें निकाली। उसमें से एक चाँदी का पेंडेंट था और एक गुलाबी रंग का रूमाल जिसमें गहरे रंग के धब्बे थे। उसे एक ओर रखकर अनामिका ने एक बार फिर उस गड्ढे में हाथ डाला और फिर जो चीज बाहर आई उसे देखकर अनामिका के होश उड़ गए। उसने अपनी हैरानी भरी ऑखों से उसे उलट-पुलट कर देखा।
ये बिल्कुल वैसी ही डायरी थी, जैसी कि उसे हॉस्पिटल में परिधि के पास मिली थी। वही डायरी जिसमें से वे लोग ना जाने कब से परिधि की यादें खोजने की कोशिश कर रहे थे, पर हासिल कुछ भी नहीं हुआ था। पर... ये डायरी यहाँ... इस जगह में क्या कर रही थी? ये सवाल दिमाग में आते ही उसने कांपते हुए हाथों से उस डायरी को खोला और खोलने के साथ ही उस पहले सफहे को बिल्कुल ही कोरा पाया। अनामिका ने आगे के पन्ने भी खोले। वहाँ भी कुछ नहीं था। अनामिका को याद आया कि परिधि की डायरी में पहले सफहे में परिधि का स्केच बना हुआ था और अगले पन्ने में कुछ उलझे हुए से अल्फ़ाज़ लिखे हुए थे।

"ये तो वो डायरी नहीं है, पर लग बिल्कुल वैसी ही रही है।" अनामिका ने उस डायरी को फिर से उलट-पुलट कर देखते हुए कहा और फिर झुककर उस गड्ढे में देखा। अंदर कुछ पेंसिल के टुकड़े रखे हुए थे। अनामिका ने उन सबको कुछ देर बड़ी ही दिलचस्पी से देखा और फिर सबको वापस रख दिया। सब सही करके वो जब माया की ओर पलटी तो वो वैसे ही बेहोश पड़ी हुई थी। उसके पास समय काटने का और कोई जरिया नहीं था इसलिए वो हाल में घटी सारी घटनाओं के बारे में गहराई से सोचने लगी। उसके सोचों की लड़ी बाहर से आई आवाजों से टूटी थी। किसी के दौड़ने की आवाज उसे साफ-साफ सुनाई दे रही थी। वो अपने कपड़े झटककर सही करती हुई खड़ी हुई और दरवाजे की ओर देखने लगी। इस समय इस जगह दो लोग ही हो सकते थे, जिसमें से एक के बारे में सोचकर वो फिर से अजीब से अहसासों से घिरी थी।

"ना जाने क्या हो जाता है मुझे? उसके सामने मैं क्यों बेबस और लाचार महसूस करने लगती हूँ? मेरी सारी सोचने-समझने की ताकत पर... वो क्यों क़ाबिज़ हो जाता है? क्यों? पर नहीं! मैं उसके सामने कमजोर नहीं पड़ सकती। वो कोई नहीं है। कोई भी नहीं। मेरे लिए जो भी है.... बस... चैतन्य है और मुझे.... उसके साथ वापस जाना है।" खुद को ही उलझाने के बाद अनामिका ने खुद को समझाया। उसने जैसे खुद को उसके सामने
खड़ा करने के लिए मजबूती से तैयार किया और सामने दरवाजे की ओर देखने लगी। उसने अपने

सूखते हुए गले को गीला किया ही था कि कोई दरवाजे तक आ गया था।

"माया!" एक तेज आवाज के साथ उस केबिन का दरवाजा खुला था। अंदर आते ही एक बार फिर से अल्फ़ी के सामने अनामिका खड़ी हुई थी और उसे देखते ही अल्फ़ी एक बार फिर से दम साधे खड़ा रह गया। अनामिका भी उसे सामने देखकर एक पल को सहमी थी। अनामिका पर नज़र रखे हुए ही दो पलों के बाद उसके काँपते होंठों से निकला,

"माया!"

"अबे इधर देख! इधर है तेरी माया!" उसके पीछे ही अंदर आए चैतन्य ने ख़ासी खुन्नस के साथ अल्फ़ी का चेहरा अनामिका से बेहोश पड़ी माया की ओर घुमाया था। अल्फ़ी ने सामने पड़ी माया को देखा और उसकी ऑखों में एक दरिया छलक उठा। जज़्बातों से लबालब भरी अपनी ऑखों के साथ एक बार फिर उसने अनामिका की ओर देखा और उन ऑखों ने एक बार फिर से अनामिका को हिलाकर रख दिया। रोशनी की कमी और आधा चेहरा बंधे होने की वजह से माया का चेहरा साफ दिखाई नहीं दे रहा था।

"ये... इसे... इस तरह से... क्यों बांधा है?" अल्फ़ी ने अनामिका से पूछा, हालांकि ये बोलते समय उसकी ज़बान और अल्फ़ाज़ कहीं से भी साथ नहीं लग रहे थे।

"क्योंकि इसे तुझसे मिलना ही नहीं था।" चैतन्य ने एक बार फिर से अल्फ़ी का चेहरा अपनी ओर मोड़कर कहा।

"मिलना नहीं था मतलब!" अल्फ़ी की आवाज में हैरानी साफ थी।
"वो तुमसे मिलना नहीं चाहती थी, इसीलिए इसे... ऐसे लाना पड़ा।" इस बार हिम्मत करके अनामिका ने कहा।

"क्यों नहीं मिलना चाहती थी?" अल्फ़ी का पूरा ध्यान अभी भी माया की ओर ना होकर अनामिका की ओर ही था। वो उसे ही देख रहा था, जिससे चैतन्य एक बार फिर से भड़का था।

"हमें क्या पता? हमसे क्यों पूछ रहे हो? जाकर अपनी माया से पूछो ना... कि क्यों उसने तुम्हें धोखा दिया है? वो पड़ी है सामने। एक तो भलाई भी करो और बातें भी सुनो।" चैतन्य बुरी तरह से बिगड़ते हुए बोला।

"चैतन्य! शांत रहो।" अनामिका ने अल्फ़ी के चेहरे के उड़ते रंगों को देखकर कहा और उसकी बात सुनकर चैतन्य चुप कर गया। लेकिन वो अब गहरी-गहरी साँसें लेने लगा था।

"मैं नहीं मानता। मेरी माया... मेरे लिए अपनी जान दे सकती है, पर मुझसे कभी धोखा नहीं कर सकती।" इस बार अल्फ़ी भी बुरी तरह से उखड़ते हुए कहा।

"लो कर लो बात! हम इसे क्या समझा रहे हैं और ये महाशय क्या कह रहे हैं! मेरे भाई! तेरे साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ है। इसी माया ने किया है।" कहते हुए चैतन्य ने अल्फ़ी को सारी बात बताई कि किस तरह माया और एडवर्ड आपस में मिले हुए हैं।

"मैं नहीं मानता! मैं मान ही नहीं सकता।" अल्फ़ी ने इंकार में सिर हिलाते हुए कहा।

"हे भगवान! पता नहीं कौन सी भाषा में समझेगा ये। देख भाई! तुझे माया
चाहिए थी... वो रही माया और प्लीज़... अनु का पीछा छोड़ दे। समझ में आया।" चैतन्य ने भी गर्म होते हुए कहा।

"चैतन्य! कहा ना शांत रहो! बी सीरियस!" अनामिका ने एक बार फिर चैतन्य को टोका।

"तो क्या आई सी यू में भर्ती हो जाऊं, तब तुम सबको यकीन होगा कि मैं सीरियस हूँ। देखो अल्फ़ी! अभी कुछ देर पहले बसेरे में भी हमारे बीच बहस हुई थी। मैंने तुम्हें समझाया था कि अनु से दूर रहो। मगर मैं देख रहा हूँ कि यहाँ भी तुम्हारा पूरा ध्यान माया पर ना होकर अनामिका की तरफ ही है। एक बात अच्छी तरह से समझ लो कि मैं अब बर्दाश्त की आखिरी हद में खड़ा हूँ। इससे आगे फिर कोई बर्दाश्त नहीं... कोई समझौता नहीं एंड एम डैम सीरियस अबाउट इट। समझे!" चैतन्य ने अल्फ़ी की ओर ऊंगली उठाकर ऑखें दिखाते हुए चेतावनी भरे लहजे में कहा।

"मुझे नहीं समझना! कुछ नहीं समझना... क्योंकि मेरी भी कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि मुझे क्या हो गया है? मैं अभी भी अपनी माया को अपने पास बिल्कुल पास महसूस कर रहा हूँ, पर... जब वो मेरे सामने इस तरह बंधी पड़ी हुई है, तो मेरे कदम उसकी ओर क्यों नहीं बढ़ रहे हैं? क्यों मैं उसे इस तरह देख पा रहा हूँ? क्यों मैं इतना उलझ गया हूँ? क्यों?" अल्फ़ी अपने बालों को पकड़कर चीखता हुआ बोला। उसकी आवाज में इतना दर्द था कि उसे महसूस करके चैतन्य और अनामिका भी सहम गए थे।

"तुम... माया को पास से देखोगे?" अनामिका ने कहा। अल्फ़ी ने दर्द की शिद्दत से लाल हुई अपनी ऑखें अनामिका की ओर उठाई और फिर हाँ में सिर हिलाया।

अनामिका ने रोशनी उठाई और फिर माया के पास जाकर उसका मुँह
खोलने लगी। इस दौरान अल्फ़ी की धड़कनें बेतरतीब सी हुई थीं। जिस माया से मिलने के लिए वो पिछले सात महीनों से तड़प रहा था, आज जब वो उसके सामने थी, तो वो उसके लिए हर अहसास से खाली सा क्यों हो गया था? क्यों... आखिर क्यों इस कमरे में आते ही वो तड़पकर माया की ओर नहीं गया? क्यों? दिल में ना जाने कितने सवाल थे और वो ना जाने क्यों इनका जवाब भी नहीं जानना चाहता था। अभी भी चैतन्य के समझाने के बाद भी उसका दिल अनामिका की ओर ही झुक रहा था। क्यों? क्या प्यार के बड़े-बड़े दावे करने वाला अल्फ़ी खुद बेवफ़ा हो गया था और ये ख्याल उसे और भी तोड़ रहा था। उसकी ऑखें माया की बजाय अनामिका के चेहरे पर ही टिकी हुई थीं और वो खुद को ऐसा करने से रोकने में पूरी तरह से नाकाम हो चुका था। इस उधेड़-बुन में वो एक बार फिर से खो गया था।

"अल्फ़ी!"

"हाँ!" उसने वापस लौटते हुए कहा।

"माया!" और ये कहकर अनामिका बेहोश पड़ी माया के सामने से उठ खड़ी हुई। अब उसका चेहरा बिल्कुल साफ दिखाई दे रहा था। अल्फ़ी की ऑखें उसे देखकर सिकुड़ी थीं।

"ये कौन है?" अल्फ़ी ने अपनी ऑखों में अजनबीपन के भाव भरकर कहा।

"क्या मतलब कि कौन है? माया है!" चैतन्य ने ऑखों में हैरानी भरकर कहा।

"तुमसे किसने कहा कि ये माया है?" अल्फ़ी ने हैरानी से दोनों की ओर देखते हुए कहा।
"तुम्हारा मतलब है कि ये तुम्हारी माया नहीं है!" अनामिका ने उसके चेहरे के भावों को पढ़ते हुए कहा।

"नहीं है और ना ही तुम दोनों का ये मजाक जरा सा भी अच्छा था।" अल्फ़ी ने चैतन्य को ऑखें दिखाते हुए कहा।

"ये लो भैया! इनकी वजह से हमारी जिंदगी मजाक बनकर रह गई है और ये कह रहे हैं कि हम मज़ाक कर रहे हैं। " चैतन्य ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर तंजिया लहजे में कहा।

और इस बार चैतन्य का तंज़ शूल की तरह अल्फ़ी को चुभा था। उसने तेजी से आगे बढ़कर चैतन्य का गिरेबान पकड़ लिया और दाँत पीसकर गुर्राते हुए बोला," मेरी बेबसी... मेरी लाचारी का मज़ाक उड़ा रहे हो। मैंने अपना दिल तुम्हारे सामने खोलकर रख दिया और अब तुम मेरे दिल के ज़ख्मों पर नमक-मिर्च रगड़ रहे हो।"

"अरे भाड़ में गई तुम्हारी लाचारी! अगर सच में प्यार होता तो कबका माया को उस बसेरे से निकाल लाते, जैसे आज हम लेकर आए हैं और... शराफत की बात तो करना नहीं। खूब देख ली तुम्हारी शराफत। सच तो यही है कि तुम्हारी नियत में ही खोट है, वरना माया के होते अनामिका पर नज़र नहीं डालते तुम। बोलो ना सच कि... तुम्हारी नियत खराब हो गई है।" अल्फ़ी की तरफ अपनी हथेली खोलकर ज़हर बुझे लफ्ज़ो में चैतन्य चिल्लाकर बोला, जवाब में अल्फ़ी ने उसके गिरेबान को अपनी मुट्ठियों में और भी कसा था।

"चैतन्य! खबरदार! आगे कुछ कहा तो!" अल्फ़ी भी ताव में आते हुए बोला।
"तो क्या करेगा? मैं भी तो देखूं जरा! सारी दुनिया को पता है कि यही है माया, जिसे सर्वशक्तिमंडल के लिए चुना गया है और तू कहता है कि ये वो नहीं है। पागल समझ रखा है क्या?" चैतन्य ने अपने गिरेबान से उसके हाथ झटकते हुए चिल्लाकर कहा था।

उन दोनों के बीच बिगड़ते हालात देखकर अनामिका हड़बड़ाई थी। यहाँ तो वो सब सारी बातों को सॉर्ट आऊट करने के लिए मिले थे, मगर यहाँ तो सब कुछ खुद के हाथों से ही फिसलता जा रहा था। वो तेजी से उनके बीच गई थी और उसने चैतन्य को संभालना चाहा, मगर अल्फ़ी ने पीछे से आकर अनामिका के कंधों को पकड़ा और उसे आराम से उन दोनों के बीच से दूर किया। अल्फ़ी की इस हरकत से चैतन्य के अंदर एक विस्फोट सा हुआ। उसने आगे बढ़कर अल्फ़ी के चेहरे पर एक जोरदार पंच मारा, जिससे उसकी ओर से असावधान अल्फ़ी जोर से लड़खड़ाता हुआ पीछे की ओर हुआ था।

"कमीने! हाथ कैसे लगाया अनु को? मना किया था ना!" भड़कते हुए चैतन्य ने अल्फ़ी को संभलने से पहले ही दबोच लिया और फिर अपनी मुट्ठी अल्फ़ी के पेट में पूरी ताकत से घुसाई थी। इस हमले से अल्फ़ी दर्द से आगे की ओर झुक गया और इसी समय चैतन्य ने अपना घुटना अल्फ़ी के चेहरे पर मारा, जिससे अल्फ़ी की नाक फट गई और वहाँ से खून निकलने लगा। इस वार के बाद अल्फ़ी, चैतन्य के हाथ से निकल गया और अपनी नाक को पोंछते हुए सीधा हुआ ही था कि लावे की तरह उबलता हुआ चैतन्य अपना अगला वार करने के लिए उसके सामने आ गया। मगर इस बार अल्फ़ी पूरी तरह से तैयार था। फुर्ती से खुद को संभालते हुए उसने अपना पैर पूरी ताकत से चैतन्य के पेट में मारा, जिससे चैतन्य का शरीर हवा की सैर करते हुए पीछे की दीवार से टकराया था। ना चाहते हुए भी चैतन्य के मुँह से एक

तेज कराह निकल गई। दो पल अपने हवास पकड़ने के बाद चैतन्य किसी तरह उठा और फिर आगे जाकर उसने फिर से एक पंच अल्फ़ी के हवाले करना चाहा, मगर अल्फ़ी उसके पंच से बचने के लिए नीचे झुक गया, जिससे चैतन्य के हाथ के साथ ही पूरा शरीर भी घूम गया। अल्फ़ी ने चैतन्य को पीछे से दबोचा और फिर उसके शरीर को अपने ऊपर से उछालते हुए पीछे की ओर फेंका, जिससे चैतन्य मुँह के बल जमीन पर गिरा। उसके चेहरे पर बहुत ही जोर से चोट लगी, जिससे उसके भी नाक और होंठ के एक किनारे से खून निकलने लगा। अपनी अंगारा ऑखें अल्फ़ी पर डालते हुए वो दर्द की परवाह किए बिना तेजी से खड़ा हुआ। अबकी बार दोनों ने ही आगे बढ़कर एक-दूसरे की गर्दन दबोच ली। दोनों के ही अंदर आग लगी हुई थी और दोनों ही सामने वाले को ख़ाक करने की कोशिश में थे। पास ही दीवार से चिपकी अनामिका गुस्सा और दु:ख दोनों ही अपनी ऑखों में लिए हुए उन दोनों को बेबसी से देख रही थी। तभी उसकी नज़र पास ही कोने की ओर गई, जहाँ माया फटी हुई ऑखों से उन दोनों को देख रही थी। उसके चेहरे में डर साफ-साफ नज़र आ रहा था। उसे देखते ही अनामिका को अहसास हुआ कि उन दोनों को रोकना ही होगा, वरना दोनों ही एक-दूसरे का बहुत ज्यादा नुक्सान कर सकते थे और ये उन सबके हक़ में नहीं था। पर कैसे? अनामिका शारीरिक रूप से कितनी भी मजबूत थी, पर उन दोनों दीवानों के गुस्से के सामने कहीं नहीं टिक सकती थी। आखिरकार उसने वहीं रास्ता अपनाने के बारे में सोचा जिससे वह कुछ कर सकती थी।

उसने सामने देखा जहाँ अल्फ़ी ने तेजी से एक मोटी लकड़ी से चैतन्य के ऊपर वाले किया और चैतन्य ने भी उतनी ही तेजी से उस लकड़ी को पकड़कर अल्फी के वार को रोका। अल्फी का ध्यान लकड़ी पकड़े हुए चेतन के हाथ की ओर गया तो चैतन्य ने भी फुर्ती से अपनी कोहनी मोड़ कर अल्फ़ी के सीने में घुसाई और फिर उसे उसके उसी हाथ से उछालकर अपने सामने जमीन पर पटक दिया। वो अल्फ़ी के सीने में पूरी ताकत से लात मारने के लिए तैयार ही था कि तभी पानी की एक तेज बौछार ने चैतन्य को अल्फी से दूर उछाल दिया। दोनों ही पानी की उस तेज बौछार से सराबोर हो गए थे। इस अप्रत्याशित वार से जहाँ चैतन्य बुरी तरह से झल्लाया था, वहीं अल्फ़ी ने चारों ओर फैले पानी पर हैरानी भरी नज़र
डालकर अपनी ऑखें अनामिका की और घुमाई जो अब अपने आप को सही कर रही थी।

"ये... ये पानी! इतना पानी कहाँ से आया?" अल्फ़ी ने अपने चारों ओर फैले पानी को देखते हुए अनामिका से पूछा।

अनामिका कुछ कहती उससे पहले ही चैतन्य की तेज भड़की हुई आवाज उन दोनों ने ही सुनी।

"अनामिका!"

"क्या अनामिका? पागल हो गए हो तुम दोनों? यहाँ इतनी बड़ी मुसीबत हमारे सामने खड़ी है और तुम दोनों इस तरह की बचकानी हरकतें कर रहे हो।" अनामिका ने भी चैतन्य को उसी के तेवर में जवाब दिया। अनामिका के बिगड़े हुए लहजे ने चैतन्य का दिमाग और भी खराब कर दिया। वो बुरी तरह घायल और पूरी तरह से भीगा हुआ अपनी कमर में हाथ धरे गहरी गहरी सॉसे लेने लगा।

"अनामिका! तुम जल-रक्षक हो? पर जल-रक्षक तो माया है।" अल्फ़ी बेयकीनी से अनामिका को देखते हुए बोला।

"तो क्या एक से ज्यादा रक्षक नहीं हो सकते?" अल्फ़ी को अनामिका से बात करते देख चैतन्य एक बार

फिर से उखड़ गया।

"वही तो बात है जो तुम सुन नहीं रहे हो!" अनामिका ने चैतन्य को झिड़कते हुए सुनाया था।

"अच्छा! और क्या नहीं सुन रहा हूँ मैं?" इस बार चैतन्य ने भी अनामिका
से चिढ़े हुए लहजे में कहा।

"वही जो इतनी देर से अल्फ़ी कह रहा है कि ये उसकी माया नहीं है।" अनामिका ने माया की ओर देखकर अपने एक-एक शब्द पर वजन डालते हुए कहा।

"और तुम्हें इसकी इस बात पर यकीन है। कमॉन अनु! ये हमें बहका रहा है।" इस बार चैतन्य ने थोड़े नर्म लहजे में कहा।

"चैतन्य! अल्फ़ी की माया जिसे सर्वशक्तिमंडल के लिए चुना गया है... एक जल-रक्षक है और ये वाली माया.... निचले स्तर की अग्नि रक्षक। इसका तत्व इतना ताकतवर नहीं है। इसीलिए तो ये तुम्हारा साथ चाहती है क्योंकि तुम्हारे साथ इसकी ताकत बढ़ जाएगी। वैसे ही जैसे कि दबी हुई चिंगारी को हवा के झोंके आग में बदल देते हैं... ठीक उसी तरह। ये बहुत कमजोर है इसलिए तो ये मेरा मुकाबला नहीं कर सकी। लेकिन जब तुम इसके पास गए तब इसकी ताकत अचानक भड़क उठी। मगर इसे इतनी ज्यादा ताकत की आदत नहीं है, इसलिए उस समय तुम्हें झटका लगा था। ये वो माया नहीं है, जिसे सर्वशक्तिमंडल के लिए चुना गया है। अल्फ़ी की माया कोई और है और इसने दोनों के एक ही नाम होने का फायदा उठाया है।" अनामिका ने चैतन्य को पूरी बात समझाते हुए कहा।

"तुम्हें कैसे पता चला कि ये अग्नि रक्षक है?" चैतन्य ने बेयकीनी से पूछा।

"जब इसकी धुलाई की थी तब इसकी ऑखों में चिंगारियाँ देखी थी मैंने। इससे ज्यादा ये और कुछ नहीं कर सकती। सच तो ये है कि ये.... बहुत ही धूर्त और मक्कार लड़की है, जिसे बस ताकत चाहिए और मुझे पूरा यकीन है कि इस ताकत को पाने के लिए ही इसने असली माया को छुपा रखा है। अपना यही राज खुलने के डर से ये अल्फ़ी के सामने नहीं आती थी।" अनामिका ने चैतन्य के सवाल का तफ़्सील से जवाब देते हुए कहा और
यह सुनते ही चैतन्य के तेवर ढीले पड़े थे। उसने एक हैरान और झिझकी हुई नज़र अल्फ़ी के चेहरे पर डाली, जहाँ इस समय ढेर सारी हैरानी और ढेर सारा डर एक साथ नजर आ रहे थे।

"छिपा रखा है से क्या मतलब? मेरी माया.... वो ठीक है ना?" सवाल करते हुए अल्फी की ज़बान बुरी तरह काँपी थी।

"मुझे लगता है कि इसने माया को उसी दरवाजे के पीछे छिपाकर रखा है। चिंता मत करो! मैंने परिधि से कहा है। उसने मुझे यकीन दिलाया है कि वो सब ठीक कर देगी।" अनामिका ने अल्फी को हौसला देते हुए कहा।

"कब? कब आएगी मेरी माया?" अल्फ़ी ने रूंधे हुए गले से अनामिका से पूछा।

"धीरज रखो अल्फ़ी! सब ठीक हो जाएगा। मैं तुम्हारी माया को ले आऊंगी तुम्हारे पास। प्रॉमिस! तब तक प्लीज़.... खुद पर काबू रखो।" अनामिका ने अल्फ़ी के काँपते हुए हाथों को पकड़ते हुए कहा।

अल्फ़ी ने अपनी आंसुओं से भरी हुई ऑखें अनामिका की ओर उठाई और फिर एक भरोसे के साथ सिर हिलाते हुए एक बार फिर ऑखें बंद कर लीं। आंसुओं के कतरे अपना बांध तोड़ उसके गालों में बह निकले। माहौल थोड़ा भारी होने लगा था। अनामिका ने चैतन्य की ओर देखा जो उन दोनों से ही नजरें चुरा रहा था।

"और तुम! अपना ये गुस्सा बचा कर रखो ताकि इसे सही जगह और सही समय पर खर्च कर सको। सुनना ही नहीं होता तुम्हें कुछ।" अनामिका ने उसे बुरी तरह से झिड़कते हुए कहा।

"ये लो! अब तुम भी मुझे ही डाँटो! मैं भी क्या करता? ये क्यों तुम्हारे पीछे-पीछे भटक रहा था? गुस्सा नहीं आएगा मुझे।" चैतन्य ने एक नाराज़
सी नज़र उन दोनों पर डालते हुए कहा और उसकी इस बात से अनामिका और अल्फ़ी दोनों ने ही एक दूसरे की ओर देखा। ये एक ऐसी चीज थी, जो अभी भी अनसुलझी रह गई थी।

वो सब अभी अपने आप को सामान्य कर ही रहे थे कि तभी उन सब को बाहर से कुछ आवाजें सुनाई दी। उन आवाजों को सुनकर फिर सभी सतर्क हो गए।

"सर होंगे! मैंने उन्हें भी बुलाया था। पर इतनी देर क्यों लगा दी उन्होंने?" चैतन्य ने उन दोनों की ओर देखते हुए कहा, जिससे वो दोनों ही थोड़ी राहत में आए थे। कुछ ही देर में उस केबिन का दरवाजा खुला और चैतन्य के कहे अनुसार ही सर विलियम अंदर आए और वो परेशान लग रहे थे।

"क्या हुआ सर आप परेशान लग रहे हैं?" चैतन्य ने उन पर चिंता भरी नजर डालते हुए कहा।

"हाँ! बाट ही एसी है। बहुट बरी गरबर हो गई है।" अपनी बात कहते कहते सर विलियम की नजर कोने पर पड़ी माया की ओर गई।

"ये यहाँ क्या कर रही है?" सर विलियम ने उन तीनों की ओर देखते हुए हैरानी से पूछा।

"इसे उठाना पड़ा।" अनामिका ने कहा।

"इसे छोड़िए। आप बताइए कि हुआ क्या है?" अल्फ़ी ने भी चिंता जताई।

"बहुट बरी गरबर हुई है। ज़ील के पिसाचों के अंडर आनेवाले हिस्से में.... एक लड़की की बॉडी मिली है ओर वो कोई... डायन है। अबी बाट पैली नई है। पर पैली.... तो प्रॉब्लम हो जाएगी।" सर विलियम ने अपने माथे पर
हाथ रखे हुए कहा।

"बॉडी मिली है से क्या मतलब? क्या वो...!" अल्फ़ी ने अपनी बात अधूरी छोड़ी।

"डोन्ट नो! वो जिंडा है... या मर गई। प्रे करो कि जिंडा हो... टो बाट... संबाली जा सकटी है। कम! चलटे हैं।" सर विलियम ने अगली समस्या बताते हुए कहा।

"जी सर! चलिए!" चैतन्य ने सर विलियम के लिए रास्ता छोड़ते हुए कहा।

"और ये?" अनामिका ने माया की ओर इशारा करते हुए कहा।

"अनामिका! तुम यहीं रहो.... इसके साथ! तुम्हारा हमारे साथ आना ठीक नहीं होगा। समझी!" चैतन्य ने उसे जवाब देते हुए कहा, जिस पर अनामिका ने तेजी से अपना सिर हिलाया था। अल्फ़ी और सर विलियम तेजी से बाहर निकले। चैतन्य ने अनामिका के माथे को चूमा और उसे सावधान रहने की ताकीद करके तेजी से उन दोनों के पीछे निकल गया। अनामिका ने कुछ गलत ना होने की प्रार्थना करते हुए एक गहरी साँस भरी।

****

जल्द ही जंगल के छोटे रास्ते का इस्तेमाल करते हुए वे तीनों उस जगह पहुँच गए। बात ज्यादा फैली नहीं थी इसलिए वहाँ कुछ सैनिक ही दिखाई दे रहे थे। वो तीनों तेजी से आगे बढ़े। ना जाने क्यों आगे बढ़ते हुए अल्फ़ी
का दिल बहुत ही तेजी से धड़क रहा था। हर बढ़ते कदम के साथ उसका दिल और भी बेचैन हो रहा था। क्यों? और ये क्यों आजकल हर जगह उसे परेशान कर रहा था।आखिरकार वे तीनों वहाँ पहुँच गए, जहाँ उस लड़की का शरीर आधा पानी के बाहर और आधा पानी में था।

उस लड़की का चेहरा सैनिकों की पकड़ी हुई मशालों की रोशनी में दूर से भी दिखाई दे रहा था। अपने धड़कते हुए दिल के साथ अल्फी ने अपनी नजरें पैनी की और उस चेहरे को बहुत ही गौर से देखा। उसके चेहरे पर पहचान भरी नज़र पड़ते ही अचानक ही उसका सारा शरीर बुरी तरह से सिहरने लगा। वो लड़खड़ाकर गिर ही पड़ता, उससे पहले ही चैतन्य ने उसे संभाल लिया।

"क्या हुआ?" चैतन्य ने उसे इस तरह देखा तो पूछा।
"ये तो माया है! मेरी माया!" ऑखें फाड़े हुए अल्फ़ी ने सदमे भरी आवाज में कहा और तेजी से उस लड़की की ओर बेतहाशा भागा। उसकी बात सुनकर चैतन्य भी उतने ही सदमे में आया था और वो भी उसके पीछे भागा।

अल्फ़ी ने सामने जमीन में पड़ी उस बेहलचल लड़की के चेहरे को देखा और फिर वो किसी कटे हुए पेड़ की तरह लहराकर गिर गया। वो माया थी। अल्फ़ी की माया! बेजान! उसके सामने! अल्फ़ी के आंसू उसकी ऑखों के दायरे में ही ठहर गए थे और वो जोर जोर से सॉसे लेने लगा। उसने उसके शरीर को अपने काँपते हुए हाथों से सीधा किया और फिर उसके आंसुओं ने रूकने से इंकार कर दिया। उसने माया को उठाकर अपने सीने में भींच लिया और पूरी ताकत से चिल्लाया था।

"मायाऽऽऽऽ!"

वो रो रहा था। ऐसे तो वो पिछले सात महीनों से रो रहा था, पर आज वो उसकी उम्मीदों और उसकी खुशियों की मौत पर रो रहा था। माया जा चुकी थी। हमेशा के लिए। साथ रहने के हर वादे को तोड़कर। अपने अल्फ़ी को छोड़कर! साथ खड़ा चैतन्य चुपचाप खड़ा था। इस सदमे की वजह से उसके आंसुओं ने भी बहने से इंकार कर दिया था। अपनी माया को थामे अल्फ़ी रो रहा था और वो उसे रोने देना चाहता था।

माया की मौत से दो साल पहले -

"अल्फ़ी!"

"हुँ!" अपना नाम सुनकर वो बिस्तर में कसमसाया था।

"उठ बेटा! कब तक सोएगा? जा जाकर लकड़ियाँ ले आ, वरना खाना कैसे बनेगा?" उसकी माँ मीना ने उसके सिर से चादर खींचते हुए कहा।

"ओफ्फोह माँ! सोने दीजिए!" कहते हुए उसने ख़ासी चिढ़ से चादर फिर से सिर तक खींची।

"ठीक है! मैं ही जाती हूँ! रास्ते में लता से भी मिलती आऊंगी।" मीना ने
तिरछी नज़र अल्फ़ी पर रखे हुए अपना काम जारी रखा और ये सुनते ही जैसे कोई जादू हुआ। वो चादर एक ओर फेंकते हुए उठ बैठा।

"लता मौसी! उधर.... नदी वाले रास्ते से क्यों जाऍंगी आप? आप तो सराय वाले रास्ते की ओर से जाती हैं। " अल्फ़ी ने बिखरी हुई सॉंसों के साथ कहा।

"वो... उस तरफ सराय में ब्रिटिश अफसर आकर रूके हुए हैं।" मीना ने ने अपने काम करते हाथों को रोककर कहा। अल्फ़ी ने उनके खोए हुए चेहरे को देखा और उठकर उनके पीछे जाकर खड़ा हो गया। उसकी आहट से मीना वापस लौटी और उसके हाथ फिर से काम में लग गए। अल्फ़ी ने आगे बढ़कर मीना को पीछे से ही अपनी बाहों में भरकर अपना चेहरा उनके कंधे पर रख दिया, जिससे मीना के काम करते हाथ एक बार फिर से रूके थे।

"आप उनसे इतना घबराती क्यों हैं?"अल्फ़ी ने पहले भी कई बार पूछा गया अपना सवाल दोहराया।

"लकड़ियाँ लाने के बाद बताती हूँ तुझे। ठीक है।" मीना ने उसके गाल को सहलाते हुए कहा, जिससे वो झटके से उनसे अलग हुआ।

"अरे! अब उठ गया हूँ तो.. चला जाता हूँ मैं ही।" अल्फ़ी ने अपने मददगार हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा।

"अच्छा! चलो ठीक है। मुझे आराम मिल जाएगा।" मीना ने सामान को उसकी जगह में रखते हुए कहा।

"हाँ! और मुझे भी!" अल्फ़ी ने मुस्कुराते हुए खोए हुए लहजे में कहा।
"कुछ कहा!" मीना ने उसकी ओर मुड़ते हुए कहा।

"नहीं तो! मैं मुँह धोकर आता हूँ।" कहते हुए अल्फ़ी वहाँ से भागा था। उसके पीछे मीना के होंठों की मुस्कान गहरी हुई थी। दस मिनट में ही वो एक पुराने से आईने के सामने खड़ा होकर अपने बालों में हाथ फिरा रहा था।

"ये लकड़ियाँ लाने के लिए इतना तैयार होने की क्या जरूरत है भला? लकड़ी लेने जा रहा है.... लड़की नहीं!" पीछे से आई मीना ने उसकी तैयारियों पर ऊपर से नीचे तक नज़र डालते हुए पूछा, जिससे अल्फ़ी के हाथ फौरन ही रूके थे। उसके चेहरे पर उलझन के जाल दिखाई देने लगे, जिसमें वो उलझ सा गया।

"अ... कहाँ.. तैयार हुआ हूँ?" अल्फ़ी ने अपने बचाव में पलटकर सवाल किया।

"अच्छा!" कहते हुए मीना ने उसकी ओर इशारा करते हुए अपने हाथ ऊपर नीचे झुलाए थे।

"अरे माँ! आपको पता नहीं कि आपका बेटा कितना हैंडसम है। मुझे तो ऊपर वाले ने पहले से तैयार करके भेजा है। मुझे तैयार होने की क्या जरूरत।" अल्फ़ी ने बहुत ही हाजिरजवाबी से जवाब दिया।

"ओह्हो! और ये कब हुआ?" मीना ने अल्फ़ी के बाल बिगाड़ते हुए कहा।

"अरे माँ!" अल्फ़ी ने कुढ़ते हुए उनके हाथ अपने बालों से हटाए और फिर अपने बाल ठीक करने लगा और फिर उनके सवालों से बचने के लिए तुरंत ही वहाँ से भागा। उसके पीछे मीना उसकी हरकतों पर खुलकर हँसी थी।
"समझता है कि माँ को कुछ नहीं पता। माँ सब समझती भी है... और जानती भी है।" मुस्कुराकर कहते हुए मीना फिर से अपने कामों में लग गई।

****

अल्फ़ी तेज कदमों से अपनी मंजिल की बढ़ रहा था। मंजिल वो नहीं... जिसका जिक्र उसकी माँ ने किया था... बल्कि वो... जिसका जिक्र उसका दिल दिन-रात किया करता था। और वो... उसके करीब पहुँच ही गया।

वो एक दो मंजिला मकान था। उसके सामने एक खुला हुआ दालान था, जिसके एक तरफ के आखिरी हिस्से में छोटी सी बैठक जैसी जगह बनी हुई थी। ठीक उसी तरह ऊपर के हिस्से में भी बना हुआ था। अल्फ़ी की बेचैन नज़रें उन्हीं दो जगहों में भटक रही थीं। वो उसे खोज रहा था, जिसके दीदार से उसके नज़रों की बेचैनी कम हो जातीं।

ये मकान कस्बे के उस हिस्से में सबसे आखिर में बना हुआ था उससे आगे जंगली इलाका शुरू होता था, इसलिए ये आने जाने का आम रास्ता नहीं था। जंगलों की ओर कोई काम पड़ने पर ही लोग उधर की राह लेते थे। अल्फ़ी के लिए भी इस रास्ते पर आ पाना कोई आसान नहीं था। मगर उसका दिल तो इसी रास्ते पर कब से ठहर गया था। वो हमेशा अपने दिल को इस रास्ते के इसी मोड़ पर छोड़ जाता था, इस उम्मीद में कि अगली बार जब वो वापस आए, तो उसका दिल उसे पुरसूकून सा मिले, मगर ऐसा कभी भी नहीं हो पाता। हर बार उसका दिल और भी ज्यादा बेचैनी का शिकार हो जाता। उसे भी इस तरह तड़पने में ना जाने कैसा मज़ा आता
था और आज वो भी उसे जैसे और भी तड़पाने का मन बनाकर छिपी बैठी थी।

वो दूसरों से अपनी बेखुद ऑखें बचाता कब वहाँ बने पानी के हौज के पास पहुँच गया उसे पता ही नहीं चला। वो कहीं भी दिखाई नहीं दे रही थी और फिर उसे खोजने के चक्कर में ऊपर की तरफ चोर नज़र उठाए वो उस पानी से भरे हौज में गिर पड़ा। वैसे पानी तो उसमें कमर तक ही था, पर इस तरह अचानक उस में गिरने से वो बुरी तरह से हड़बड़ा गया और अपने हाथ-पांव पानी में पटकने लगा। पानी के ऊपर आकर उसने एक गहरी साँस ली और फिर अपने चेहरे पर हाथ फिराने के बाद उसने अपने बालों पर भी अपनी उंगलियाँ फिराई। अभी वो अपनी हिली हुई तबीयत को ठीक कर ही रहा था कि तभी एक खिलखिलाती हुई हँसी उसके कानों में पड़ी और उसे सुनकर वो जैसे साँस लेना ही भूल गया। अपनी मद्धम पड़ी साँसों को संभाले हुए वो पीछे मुड़ा और वो दुश्मन-ए-जाँ उसे सामने ही दिखाई दे गई। वो उस हौज से थोड़ी दूर एक पेड़ के नीचे बैठी उसी की ओर देख रही थी। उसे देखते ही उसकी मद्धम पड़ती धड़कनें बेतहाशा बढ़ गईं, जिनके शोर में उसे एक ही नाम सुनाई दे रहा था।

"माया!"

वो तो उसे देखकर जैसे साँसे लेना ही भूल गया। अल्फ़ी की नज़रें उस पर और भी गहरी हुई थीं। उसे अपनी ओर इस तरह एकटक देखता हुआ पाकर माया के होंठों की हँसी भी मद्धम होते-होते सिमटी थी। उसकी गहरी नज़रों से झिझकते हुए उसने अपनी नज़रें फेरी और वापस उस किताब पर गड़ा दी, जिसे वो उसके आने से पहले पढ़ रही थी।

माया को लगा था कि वो वहाँ से चला जाएगा, मगर वो वहीं उसी तरह पानी में खड़ा रहा। अल्फ़ी ने अपनी नज़रें माया पर से नहीं हटाईं। वो उसी तरह उसे गहरी नज़रों से देखता रहा। उसके नजरों की तपिश को माया ने कुछ देर तो बर्दाश्त किया और फिर आखिरकार वो वहाँ से उठकर तेजी से घर की ओर भाग गई। अल्फ़ी उसी तरह उसे जाते देखता रहा और फिर उसने उस हौज के पानी में डुबकी लगा दी।

****
दो साल पहले जब वो बस 17 बरस की कच्ची उम्र का था उसने माया को पहली बार देखा था। लता मौसी विधवा औरत थीं और अपनी बेटी माया के साथ रहती थीं। वो उसकी माँ के साथ ही वहाँ एक अंग्रेज अफसर के बंगले में काम किया करती थीं।

वो बारिश के दिन थे, जब उसकी माँ किसी काम से लता मौसी के घर गई थी और अचानक आई बारिश के कारण उनके घर में ही फँस गई। उस दिन मौसम बहुत ही खराब हो गया था, इसलिए अल्फ़ी को उनकी बहुत चिंता हो रही थी। उसे ये डर था कि कहीं उसकी माँ रास्ते में ही ना फँस गई हो। आखिरकार जब रात घिरने लगी तो उसका डरा हुआ मन नहीं माना और वो उसी तेज बारिश में ही लता मौसी के घर की ओर निकल गया। पूरे रास्ते पर पैनी नज़र रखे हुए वो लता मौसी के घर पर ही पहुँच गया, जो किसी परिचित के घर में किराएदार के रूप में रहती थी। उनके घर वो बमुश्किल तीन-चार बार ही गया होगा वो भी कुछ मिनटों के लिए ही... अपनी माँ के काम से। इसके अलावा उसे वहाँ रुकने की कभी कोई वजह नज़र नहीं आई थी, इसलिए उसने कभी इस घर की ओर ध्यान भी नहीं दिया था।

पूरी तरह भीगे हुए अल्फ़ी ने दरवाजा खटखटाया और नाकाबिल-ए-बर्दाश्त ठंड की वजह से अपनी दोनों बांहों से खुद को ही कस लिया। ठंड से अपना ध्यान हटाने के लिए वो इधर-उधर देख रहा था, जब दरवाजा खुला और अंदर से आती रोशनी उसके चेहरे से टकराई, तो उसने उस ओर देखा और बस देखता रह गया। उसके सामने एक हमउम्र लड़की खड़ी उसे सवालों भरी नज़रों से देख रही थी। मगर अल्फ़ी तो उसे देखने के बाद बेहरकत खड़ा रह गया।

"जी!" उस लड़की ने कहा और उसकी आवाज सुनकर अल्फ़ी का ध्यान टूटा।
"अ... वो मैं... वो मैं अपनी माँ को... ढूंढता हुआ.... यहाँ आया था।" अल्फ़ी ने किसी तरह कहा कि अब उस लड़की के जादू से बाहर ठंड उसे परेशान कर रही थी।

वो कुछ कहती... उससे पहले ही अंदर से एक आवाज आई, "कौन है माया?"

और फिर लता मौसी ने दरवाजे पर आकर बाहर की ओर झांका। बाहर नज़र जाते ही उनकी ऑखें फिक्र से दो-चार हुईं।

"अल्फ़ी! अरे तुम तो पूरी तरह से भीग गए हो। अंदर आओ।" लता मौसी ने उसका हाथ पकड़ कर उसे अंदर लिया। वो भी कांपता हुआ उनके पीछे आ गया। हालांकि इस बीच भी उसने एक चोर नज़र उस लड़की पर डाल ही ली, जो पलटकर दरवाजा बंद कर रही थी।

"अल्फ़ी! तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" मीना उसे देखकर तेजी से उसकी ओर आई थी।

"वो... माँ! आप... आई नहीं... तो मुझे... चिंता... हो गई थी।" अल्फ़ी ने बड़ी ही मुश्किल से कहा। वो ठंड से बुरी तरह कांप रहा था।

"माया! अलाव में और लकड़ी डालो बेटा!" लता मौसी ने ठंडी पड़ती आग को देखकर अंदर आती माया से कहा। उसने भी कांपते हुए अल्फ़ी पर एक नज़र डाली और फिर तेजी से एक ओर चली गई।

लता मौसी ने अपने पति के कुछ कपड़े लाकर मीना को दिए तो... मीना ने तुरंत ही अल्फ़ी के कपड़े

बदलवाए और उसे एक कंबल ओढ़ाकर आग के पास बैठा दिया। तभी माया कुछ सूखी लकड़ियाँ ले आई और उसे आग में
डालकर आग को ठीक करने लगी। दहकती हुई आग की रोशनी में उसका चेहरा सोने की तरह दमक रहा था, जिससे अल्फ़ी की ऑखें चौंधिया गईं। उसे अपने आसपास का भी होश नहीं था। वो बस एकटक उसे देखे जा रहा था और उसकी उस हालत को वो तीनों ठंड का असर मान रही थीं।

"बेवकूफ लड़के! तुमसे किसने कहा था इतनी बारिश में बाहर निकलने के लिए।" मीना उसके ठंडे पड़े पैरों के तलवों में कड़वा तेल मलते हुए बुरी तरह बिगड़कर बोली।

"छोड़ो मीना! क्यों डाँट रही हो बेचारे को? तुम्हारी फ़िक्र में किया उसने ये।" लता मौसी ने अल्फ़ी का पक्ष लेते हुए कहा।

"इससे ठंड बर्दाश्त नहीं होती। अब देखना बिस्तर में बीमार पड़ा रहेगा ना जाने कितने दिनों तक! परेशान तो मुझे ही होना है। तुम्हें पता है कि हमें छुट्टी नहीं मिलती। इसे सब पता है तो इसकी बेवकूफी ही हुई ना!" मीना का लहज़ा अभी भी बिगड़ा हुआ था।

मीना की डाँट सुनते हुए अल्फ़ी ने माया की ओर अपनी नज़र उठाई और देखा कि वो भी उसे बड़ी शिकायती नज़रों से देख रही थी। उसकी चुभती नज़र से डरकर उसने अपनी नज़र नीची कर लीं। अल्फ़ी को बहुत ही शर्मिंदगी महसूस हुई। पर वो चुप रहने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता था।

"तो ठीक है ना! माया इसके लिए दोपहर का खाना पहुँचा दिया करेगी। शाम को तो तुम आ ही जाओगी। क्यों? ठीक है ना माया!" लता मौसी ने माया की ओर देखकर पूछा, जिस पर उसने हाँ में सिर हिला दिया।

"अब ठीक है! बेचारे बच्चे को बेवजह में डाँट दिया।" लता मौसी ने अल्फ़ी के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा। उसकी बात सुनकर मीना भी एक
गहरी साँस लेकर रह गई। उसे भी अल्फ़ी की सिकुड़ी हुई हालत पर तरस आ गया। बात वहीं पर रोक दी गई। मौसम के नहीं सुधरने पर मीना और अल्फ़ी दोनों ही रात वहीं रूक गए। अल्फ़ी को माया के सामने डाँट पड़ने पर इतनी शर्मिंदगी हुई कि उसने फिर उसकी ओर सामने से देखा ही नहीं। माया को भी उसमें कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए पूरी रात एक ही छत के नीचे रहने के बाद भी अल्फ़ी उसके लिए अजनबी की तरह ही रहा। रातभर वो मीना और लता की निगरानी में रहा, इसलिए माया से उसकी मुलाकात और नहीं हो सकी। अगली सुबह मीना और अल्फ़ी सूरज निकलने से पहले ही घर लौट गए और वो मुलाकात अल्फ़ी के लिए अधूरी ही रह गई। अल्फ़ी को एक आसरा उसकी खराब तबीयत का भी था, जिससे खाना पहुँचाने की वजह से मुलाकात हो जाए। पर इस बार उसकी तबीयत भी उसे धोखा दे गई और सुबह होते-होते वो ठीक हो गया।

इसके बाद तो वो जैसे हर चीज से बेजार हो गया। पिछले दो सालों से वो उसे इसी तरह छिप-छिप कर ताकता आ रहा था, मगर सामने जाने की कभी हिम्मत नहीं कर पाया। माया की नज़रें भी कभी उसकी नज़रों की बेचैनियों से रूबरू नहीं हो सकी थीं। जहाँ वो उसके लिए उसकी एक अलग दुनिया बन बैठी थी, वही उसकी आम दुनिया में भी वो कहीं भी किसी भी तरीके से शामिल नहीं था, फिर मिलना या बातें करना तो बहुत दूर की बात थी। वो बस अपने नसीब से उसे दूर से ताककर ही खुद को बहला लेता था। वो अक्सर उसे उस घर के उन दो हिस्सों में ज्यादातर समय किताबें पढ़ते देखा करता था और आज भी वो उसे इसी तरह देखने की ख्वाहिश से खिंचा चला आया था और इस तरह हौज में गिर गया।

जो भी था... उन दोनों की कहानी के आगे बढ़ने का इशारा था।

आज पहली मुलाकात के पूरे दो सालों के बाद उसने अल्फ़ी की ओर देखा था और उसकी वो नज़र अल्फ़ी को ख़ुद से बग़ावत पर मजबूर कर गई और वो उस पर से अपनी नज़रें हटाने से क़ासिर(असमर्थ) हो गया। आज पहली बार उन दोनों के बीच एक खिड़की खुली थी, जिससे माया ने उसे
देखा था और सही मायनों में यही उनकी पहली मुलाकात थी, जिसके आगे का सफर और अंजाम दोनों ही दर्द के लाल रंग से रंगने वाले थे।

माया की नज़रों से भीगा-भीगा हुआ अल्फ़ी जब वापस घर पहुँचा, तो वो अपनी परेशान माँ की ओर ध्यान नहीं दे पाया। मीना भी इतनी परेशान थी कि उसने भी अल्फ़ी की ओर ध्यान नहीं दिया। दोनों ही अपनी-अपनी क़ैफियत में ग़ुम थे। सबसे पहले मीना का ध्यान ही वापस लौटा, जब उसने गीले जूतों से गंदे हुए फर्श को देखा। निशानों का पीछा करते हुए वो अल्फ़ी के कमरे तक पहुँची तो उसने अल्फ़ी को बिस्तर पर गिरे हुए देखा। वो उसे इस तरह आड़ा-तिरछा पड़ा हुआ देखकर फिक्र से तेजी से उसके पास आई, तो वो उसकी हर आहट से बेखबर गीले कपड़ों में ही बिस्तर पर आँखें बंद किए लेटा रहा। घबराई हुई मीना ने आगे आकर उसके माथे पर हथेली रखकर उसकी तबीयत जाँची, जिस पर अल्फ़ी ने झटके से अपनी आँखें खोली थीं।
"अल्फ़ी! क्या हुआ? ऐसे क्यों लेटा हुआ है और... तेरे ये सारे कपड़े ऐसे गीले क्यों हैं?" माथे पर सिलवटें डालते मीना ने अल्फ़ी को टटोलते हुए फिक्रमंदी से पूछा।

मीना के सारे सवालों को सुनकर अल्फ़ी अपनी ख़ुमारी से बाहर निकला और तेजी से उठकर बैठ गया। उसने खाली आँखों से उनकी ओर देखने के बाद अपनी हालत पर ग़ौर किया और फिर अपनी माँ के सवालों के जवाब देने के लिए सही अल्फ़ाज़ तलाशने लगा।

"माँ! वो मैं... वो मैं...." सही लफ़्ज़ों की कमी से अल्फ़ी की ज़बान लड़खड़ाई थी।

"मैं वो... मैं वो क्या कह रहा है? जो पूछा है उसका जवाब दे। पता है कि ठंड से तबीयत बिगड़ जाती है, फिर भी महाशय गीले कपड़ों में ही पसरे हुए हैं। क्या होगा? हँ! अपना तो बिस्तर में लेट जाएँगे। परेशानी तो माँ को होनी है और माँ की फिकर कौन करता है भला?" मीना ने बहुत ही उखड़े हुए लहज़े में कहा।

"माँ! क्या हुआ? ऐसे क्यों कह रही हो? क्या हुआ?" अल्फ़ी ने बहुत ही फिक्र से पूछा।

"क्यों? मुझे क्या हुआ है? सब ठीक है। कुछ नहीं हुआ है।" कहते हुए मीना ने अपनी आँखें फेर लीं और नीचे बैठकर अल्फ़ी के पैरों से गीले जूते निकालने लगी। अल्फ़ी ने अपने पैर खींचे और उन्हें पकड़कर उनके सामने बैठकर उनके चेहरे को ग़ौर से देखने लगा, जहाँ एक दर्द दिख रहा था।

"माँ! क्या हुआ? बताओ ना!" अल्फ़ी ने बेचैनी से पूछा और वो उसकी बाहों में बिखरकर अब बकायदा सिसकने लगी। अल्फ़ी के चेहरे पर एक
सख़्ती सी आ गई।

"बताओ ना माँ!" अल्फ़ी ने पूछा और उसके इस सवाल से वो उससे अलग हुई थी। अपनी नाक को पोंछते हुए वो उठकर वहाँ से जाने लगी।

"माँ! प्लीज़! अब मैं बड़ा हो गया हूँ। आप अपना दर्द मुझसे बाँट सकती हैं?" अल्फ़ी ने उनका हाथ पकड़ कर रोकते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर मीना ने भरी हुई ऑखों से उसकी ओर देखा और फिर उसके सिर को सहलाते हुए कहा, "बताऊंगी! जब समय आएगा तो... सब बताऊंगी।"

अल्फ़ी अपने सवालों भरी ऑखों से उन्हें टकटकी लगाए देखता रहा। वो उन पर कोई जोर नहीं डालना चाहता था। उसके लिए उसकी जिंदगी की सबसे बड़ी पहेली थी ये कि उसकी माँ कौन सा दर्द अपने अंदर छिपाए हुए थी। मगर उस पर ये राज खोलने वाला वहाँ कोई नहीं था। उसे बस इतना पता था कि बस उसके जन्म से पहले ही उसकी माँ इस कस्बे में आकर बसी थी। उनके बारे में यहाँ कोई भी नहीं जानता था, सिवाय इसके कि उन दोनों का अपना कहने के लिए इस दुनिया में कोई और नहीं था। अतीत से जुड़ा सवाल मीना की ऑखों में दर्द के सिवा और कुछ भी नहीं लाता था, इसलिए अल्फ़ी भी इन सवालों से बचता था। पर कब तक? अब वो पूरे 19 साल का था। बड़ा हो चुका था। बहुत कुछ सोचने-समझने लगा था। पर फिर भी वो अपनी माँ के दिल को कुरेदना नहीं चाहता था। इतना तो वो समझ गया था कि उसके पिता कोई अंग्रेज थे, जिनकी शख़्सियत उसके चेहरे की शिनाख़्त बन चुकी थी। पर ब्रिटिश सिपाहियों से उन्हें क्या दिक्कत थी.... ये उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

वो जिनके घर काम करती थीं, वो भी एक अंग्रेज ही थे। वो एक वकील थे और एक नॉवेलिस्ट भी। उन्हें अल्फ़ी से विशेष स्नेह था। शायद इसलिए
क्योंकि वो दिखने में आम भारतीय बच्चों से थोड़ा अलग सा था और इसलिए उनकी उसमें बहुत दिलचस्पी थी। इस दिलचस्पी की वजह से अक्सर अल्फ़ी उनकी लाइब्रेरी में पाया जाता था, जहाँ आम भारतीयों का पैर भी रख पाना मुश्किल था। वहाँ उनके सानिध्य में अल्फ़ी की अंग्रेजी भाषा में पकड़ अच्छी हो गई थी। हालांकि मीना उसे इन सबसे दूर रखना चाहती थी, पर अपने बच्चे को अच्छी जिंदगी देने के लिए उसे नौकरी की बहुत जरूरत थी, इसलिए वो ज्यादा प्रतिकार नहीं कर सकी और इस तरह अल्फ़ी भारतीय और अंग्रेजी दोनों ही तहजीबों में ढलता गया या ये कहें कि उसके रगो में बहने वाले अंग्रेजी खून का असर कुछ ज्यादा ही था। जो भी था.... अल्फ़ी एक तमीजदार और तहज़ीब के दायरे में रहने वाला एक बहुत ही आकर्षक युवक था।

आज भी एक बार फिर से अल्फ़ी ने अपनी माँ का दिल खोलने की कोशिश की, मगर उसे निराशा ही हाथ लगी। अभी वो इन सभी ख्यालों से जूझ रहा था कि तभी मीना तेजी से उसके पास आई।

"अल्फ़ी! लकड़ियाँ कहाँ हैं?" मीना ने उससे पूछा।

"जी!" अल्फ़ी ने नासमझी से पूछा।

"तुम लकड़ियाँ लेने गए थे ना! कहाँ हैं?" मीना ने उसे तेज नज़रों से घूरते हुए पूछा और अचानक ही अल्फ़ी को याद आया कि माया के चक्कर में वो माँ का दिया काम करना भूल गया था। ये याद आते ही उसकी ऑखें घबराहट से फैली थीं। उसने झिझकते हुए अपनी नज़रें मीना की ओर उठाई, जो अपनी कमर पर हाथ धरे उसे ही घूर रही थीं और फिर तेजी से अपनी पलकें नीचे करते हुए थूक को गले में लटका था।

"माँ! बात ये है कि..."
"क्या बात है?" मीना ने अपने हाथ सामने बांधते हुए बहुत ही गंभीर आवाज में कहा।

"वो... मैं लेकर आता हूँ।" कहते हुए वो तेजी से वहाँ से भागा था।

"हे भगवान! अल्फ़ी! कपड़े तो बदल ले! फिर बीमार पड़ेगा ये लड़का। लगता है कि आज इससे बात करनी ही पड़ेगी... वरना पूरा निकम्मा हो जाएगा ये।" कहते हुए मीना ने अपना माथा पीटा था।

****

हौज में गिरने वाली घटना के पहले दूसरों के सामने माया से आमना-सामना होने से बचने के लिए अल्फ़ी हमेशा ही दूर से बचकर निकल जाता था। मगर उस दिन के बाद से जब भी इत्तेफाकन दो-तीन बार माया और अल्फ़ी का सामना हुआ.... ना तो अल्फ़ी ने उससे बचने की कोशिश की और ना ही उससे नज़रें चुराई, बल्कि इन सभी दफा माया ही उसकी नज़रों से बचती हुई दूर भागती नज़र आई और उसका इस तरह दूर भागना अल्फ़ी को और भी बेचैन करने लगा था। वो तो अब आगे बढ़ने की हिम्मत इकट्ठी कर चुका था, मगर माया ही उसके सामने आने से बच रही थी। कुछ दिन इसी तरह बेचैनियों में गुजर गए और अल्फ़ी को भी माया के नजदीक से गुजरती कोई भी राह नहीं दिखी। आखिरकार उसने खुद ही माया के सामने अपने दिल का हाल बयां करने का पक्का इरादा कर ही लिया और वो मौका भी उसे जल्द ही मिल गया।

बसंत आ चुका था और बसंत का मौसम हमेशा ही नई उम्मीदों और नए
सपनों के सच होने की तरह होता है, जो सबको ये यकीन दिलाता है कि पतझड़ कितना भी कठोर और निर्मम क्यों ना हो, फूलों को खिलने से नहीं रोक सकता। अल्फ़ी ने भी अपने दिल की बात कहने के लिए इसी का सहारा लिया।

उस कस्बे में बसंत के आने पर एक खास उत्सव मनाया जाता था, जिसमें सभी अपने-अपने साथियों के साथ शरीक हुआ करते थे। अल्फ़ी हर साल ये उत्सव अपनी माँ के साथ वकील साहब के घर मनाता था, पर इस बार उसने अपने दोस्तों के साथ दूसरी जगह शामिल होने का फैसला किया। मीना ने भी उसकी बात मान ली। वो एक जवान लड़का था और अब उसकी दिलचस्पियाँ भी बदल चुकी थीं। अल्फ़ी ने पता लगाया था कि माया भी उस पार्टी में आने वाली है, इसलिए वो इसके लिए बहुत ही उत्साहित था। वो उस दिन उससे अपने दिल की बात कहने का पूरा इरादा बना चुका था।

और आखिरकार उत्सव का वो दिन भी आ ही गया। बेचैनियों से घिरा अल्फ़ी कुछ जल्दी ही उस महफ़िल में पहुँच गया। अब जल्दी आने का नतीजा ये हुआ कि उसे माया का इंतजार करना पड़ा... जो उससे किया नहीं जा रहा था और... जब वो आई तो उसका दिल बुरी तरह से बैठ गया। वो किसी और लड़के का हाथ थामे उस महफ़िल में पहुँची थी और उन दोनों की बेतकल्लुफी अल्फ़ी का दिल बुरी तरह चाक कर रही थी। इसके बाद भी अल्फ़ी की नजरें माया पर ही जमी रही। वो किसी भी बहाने उसके नज़दीक जाने का मौका तलाशता रहा और वो कामयाब भी हो गया। माया ने भी इसके बाद उससे दूर

जाने की कोई कोशिश नहीं की। लेकिन इन सब के बीच वो उस लड़के और उसके दोस्तों की नज़र में आ गया, जिसके साथ माया आई थी। दोनों ही बहुत खूबसूरत थे और साथ में बहुत अच्छे भी लग रहे थे। पर... माया और अल्फ़ी की ये नजदीकी उन्हें जरा भी रास नहीं आई। कुछ देर बाद वो माया के लिए ड्रिंक लेने के लिए गया, तो उन लड़कों ने उसे पकड़ लिया और खींचकर झील की ओर ले गए। माया उसका इंतजार कर रही थी और जब वो नहीं आया, तो वो उस तरफ चली गई, मगर अल्फ़ी वहाँ भी नहीं था। उसने ड्रिंक परोसने वाले से पूछा, तो उसे पता लगा कि कुछ लड़के उसे जबरदस्ती झील की ओर ले गए थे। वो तेजी से उस ओर गई, तो उसने देखा कि कुछ देर खींचातानी के बाद उन लड़कों ने उसे झील के पानी में फेंक दिया और वहाँ से चले गए। माया दौड़ कर वहाँ पहुँची तो उसने अल्फ़ी को वहाँ पानी में डूबता हुआ पाया। वो उसे एकटक देख रही थी। इस इंतजार में कि वो हाथ-पैर चलाकर किनारे तक आएगा, मगर वो तो लगभग डूबने को ही था, जब माया को स्थिति का सही भान हुआ। उसने तेजी से झील में छलांग लगाई और जब तक उसके पास पहुँची उसके सिर्फ हाथ पानी के ऊपर दिखाई दे रहे थे।

माया उसे किसी तरह खींचकर बाहर लाई, तब तक वो बेहोश हो चुका था। उसे औंधा लेटाकर माया ने उसके पेट का सारा पानी निकाला, जिससे उसे थोड़ा-थोड़ा होश आने लगा। माया ने उसे सीधा किया तो वो फिर से अचेत होने लगा।

माया ने एक गहरी साँस ली और फिर उसके मुँह में अपने मुँह से साँस देने लगी। अभी कुछ देर ही हुई होगी, जब अल्फ़ी ने धीरे से अपनी ऑखें खोल दीं। दोनों की ही ऑखें आपस में टकराई और एक-दूसरे की ऑखों में देखते हुए वो दोनों वैसे ही रह गए। कुछ पलों बाद जब अल्फ़ी को उन दोनों की पोजीशन का अहसास हुआ तो उसने माया के चेहरे को धीरे से अपनी हथेलियों में भरा था। माया के स्पर्श से एक चिंगारी सी उसके अंदर कहीं भड़की थी। उनके जज़्बात और भड़कते उससे पहले ही माया ने झटके से खुद को उससे दूर किया था। वो उससे दूर हुई ही थी कि अल्फ़ी ने उसकी कलाई थामकर उसे रोका था।

"माया! मेरी बात सुनो!"

"तुम ठीक हो! चलो यहाँ से।" माया ने उससे नज़रें चुराते हुए कहा।

"नहीं! पहले मेरी बात सुनो।" अल्फ़ी ने इसरार किया।

"देखो! वो लड़के फिर यहाँ आ गए तो इस बार तुम्हें जान से मार देंगे। खुद पर तरस खाओ!" माया ने उसे आगाह करती आवाज में कहा।

"क्यों? वो तुम्हारा दोस्त है? मुझे तो ऐसा नहीं लगा।" अल्फ़ी ने बेबाक होकर कहा।

"वो मेरा कौन है ? तुम्हें ये जानने की जरूरत नहीं है।" माया ने भी पीछा छुड़ाने वाले अंदाज में कहा और वहाँ से जाने लगी। मगर अल्फ़ी दौड़कर उसके सामने आ गया और उसका रास्ता रोक लिया।

"क्या कर रहे हो? हटो सामने से।" माया ने उसे झिड़कते हुए कहा।
"नहीं! आज मैं अपने दिल की बात कह कर जाऊंगा।" अल्फ़ी ने भी अड़ियल लहजे में कहा।

माया ने दो पल उसकी ऑखों में झांका और फिर बोली, "बकवास मत करो। तुम्हें पता है... मैं तुमसे दो साल बड़ी हूँ। फॉरगेट इट!" कहते हुए माया उसे एक ओर हटाकर आगे बढ़ी थी।

"पर लगती तो नहीं। मैं सच में तुमसे बहुत प्यार करता हूं माया। प्लीज़! एक बार मेरी ओर देखो।" अल्फ़ी उसके पीछे-पीछे भागता हुआ बोला।

"होश में आओ अल्फ़ी! ये सही नहीं है।" माया ने एक बार फिर से उसे टोका।

"मुझे कुछ नहीं पता। मैं बस इतना जानता हूँ कि अल्फ़ी की जिंदगी में माया के सिवा और कोई नहीं आ सकता।" अल्फ़ी ने उसका रास्ता रोकते हुए कहा।

"तो फिर सोचते रहो। मैं जा रही हूँ और हाँ कुछ गर्म पी लेना वरना ठंड लग जाएगी।" माया ने कहा और फिर उसे धक्का देते हुए पार्टी की ओर चल दी। माया के कपड़े काफी हद तक सूख गए थे। बाल बिखर गए थे, फिर भी वो अच्छी लग रही थी। बल्कि मोटे कपड़े होने की वजह से अल्फ़ी अभी भी गीला ही खड़ा था।

पार्टी में पहुँचते ही माया एक बार फिर से अपने हमउम्र दोस्तों के साथ मिल गई, मगर अल्फ़ी एक ओर खड़ा होकर उसे कुढ़न भरी नज़रों से घूरता रहा। माया की नज़र उस पर गई तो उसने उसे जताने के लिए ड्रिंक लेना शुरू कर दिया, ताकि वो उससे दूरी बना ले। मगर उसे इस तरह करता देखकर अल्फ़ी ने भी कुछ जाम गले से नीचे सरकाए थे। जल्द ही दोनों पर ही नशा तारी होने लगा था। मगर माया की हालत ज्यादा
खराब थी। उसने जोश ही जोश में कुछ ज्यादा ही पी ली और फिर उसे आसपास का भी होश नहीं रहा, जबकि अल्फ़ी अभी भी सोचने-समझने की हालत में था। बहकी हुई माया के आसपास लड़कों को मंडराते हुए देखकर अल्फ़ी भुनभुनाते हुए माया के पास गया और उसे वहाँ से खींचकर निकाल लाया। वो उसे एक बार फिर से झील की तरफ ले गया। वहाँ पहुँचते ही माया को उबकाई आने लगी और फिर उसने उल्टी कर दी। उल्टी करने के बाद वो उसकी बाहों में निढाल हो गई। अब मुश्किल ये थी कि अल्फ़ी होश में तो था, पर इस हालत में नहीं कि माया को उस हालत में घर तक छोड़ पाता। उसने आसपास नज़र दौड़ाई। झील के किनारे एक केबिन बना हुआ था, जहाँ वो उसे ले गया। उस रात वो भी उसी के साथ वहीं रह गया, जहाँ से प्यार और तकरार का एक नया किस्सा शुरू होने वाला था। फिलहाल इसकी शुरुआत आज की तकरार से हो चुकी थी।

केबिन की छत के टूटे-फूटे हिस्सों से सुबह की धूप छनकर उन दोनों के ऊपर गिर रही थी। वो... जो रात की खामोशियों का सफ़र करके सुबह की हलचलों से भी बेखबर एक-दूसरे की बाहों में सिमटे हुए थे। चेहरे पर गिरी गर्म रोशनी ने पहले अल्फ़ी की नींद तोड़ी। उसने कसमसाकर अपनी ऑखें खोली और फिर बिना हिले-डुले उन उनींदी ऑखों से एकटक ऊपर की ओर देखने लगा। उसका सिर अजीब सा भारी हो रहा था। ऑखों के सामने अपने कमरे की छत की जगह कोई और छत देखकर उसकी अधमुंदी ऑखें और भी सिकुड़ी थीं और फिर धीरे-धीरे उसके ज़हन में
रात का हर एक मंज़र उतरता गया। सब याद आते ही उसकी ऑखें झटके से पूरी खुली थीं। उसने धीरे से अपने सिर को एक ओर मोड़ा और उसे अपनी ये सुबह और भी खूबसूरत नज़र आने लगी। सिर का

सारा दर्द पल में छू हो गया। वो उसके एक कंधे पर सिर रखे और उसके दूसरे कंधे पर एक हाथ रखे बड़े ही सूकून से सो रही थी। उसे अपने इतने करीब देखकर अल्फ़ी का दिल बेसाख़्ता ही जोर से धड़का, मगर वो नींद में डूबी हुई इतनी बेखबर थी कि उसे इसका कोई अहसास ही नहीं हुआ।

अल्फ़ी की ऑखों में एक बार फिर से ख़ुमारी सी उतरी थी। वो उसकी ओर हल्का सा मुड़ा और उसके चेहरे की हर बनावट को ग़ौर से देखने लगा। लाल और सुनहरी रंगत लिए उसके बाल उसके गुलाबी रंगत वाले गोरे से चेहरे के चारों ओर बिखरे हुए थे, जिसकी कुछ लटें उसके चेहरे पर खेल रही थीं। उसके पलकों की घनी चादर खूबसूरत ऑखों पर पर्दा डाले हुए थीं। उसकी नज़र माया की खड़ी नाक से गुलाबी होंठों और फिर लंबी सुराहीदार गर्दन तक फिसली थी और उसने अपने गले को सूखता हुआ महसूस किया। उसने एक गहरी साँस ली और फिर उसके चेहरे पर उतरी लटों को अपनी ऊंगली से समेटकर कानों के पीछे ले गया। उसके इस स्पर्श से माया के चेहरे पर हल्की सी जुंबिश हुई और हल्की सी कराह के साथ उसकी ऑखें सख़्ती से भिंची थीं। उसने कसमसाते हुए अपनी ऑखें खोली और फिर उसकी ख़ुमारी भरी ऑखों ने अल्फ़ी का दीदार किया। कुछ पल तो वो उसी ख़ुमारी में उसे एक दिलफरेब मुस्कुराहट के साथ तकती रही और जब अल्फ़ी ने उसकी मुस्कराहट के जवाब में मुस्कुराते हुए अपना माथा उसके माथे से मिलाया, तो एकदम से ही वो उसके जादू से बाहर निकली और एक पल के सकते के बाद वो छिटककर उससे दूर हुई थी। उसके इस तरह छिटकने से अल्फ़ी एक पल को चौंका था, पर अगले ही पल वो हकीकत की जमीन पर उतर आया क्योंकि वो जानता था कि ऑख खुलने के बाद से अब तक वो बस एक ख्वाब को जी रहा था और अब उसे हकीकत का सामना करना ही था।
माया ने उससे दूर होकर भारी होते अपने सिर को पकड़ लिया। झुकी हुई ऑखों से जब उसने खुद को देखा, तब उसने उन दोनों की बिखरी हुई हालत पर ग़ौर किया और फिर रात की हर बात उसके घूमते हुए मस्तिष्क में उतरती गई, जिसमें आखिरी याद पार्टी में ज्यादा ड्रिंक करने के बाद उसका बहकना था। उसके बाद लाख कोशिशों के बाद भी उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था। वो एक अजीब से कश्मकश में फँसी हुई हालातों को समझने की कोशिश कर रही थी। वो हालात... जो एक ऐसी बात की ओर इशारा कर रहे थे, जो उसका दिल मानने से इंकार कर रहा था। उसे इस तरह परेशानी में उलझा हुआ देखकर अल्फ़ी धीरे से उसके पास गया और उसने कुछ कहना ही चाहा था कि माया ने अपना सीधा हाथ अल्फ़ी की ओर उठाकर उसे रोक दिया। अल्फ़ी की खुली ज़बान बेआवाज ही रह गई।

"मैं तुम्हें अच्छा लड़का समझती थी अल्फ़ी। पर तुम भी मौका परस्त ही निकले।" माया ने तिलमिला कर उस पर बोहतान लगाया था।

"ये कैसी बातें कर रही हो माया?" माया के आरोप से अल्फ़ी बौखलाया था।

"और नहीं तो क्या? मेरे इंकार का बदला लिया ना तुमने! तुम्हारी सोच इतनी गिरी हुई होगी... मैंने कभी नहीं सोचा था। तुमने मेरी हालत का फायदा उठाया।" माया का लहज़ा हर लम्हे के साथ और भी बिगड़ा था।

"बकवास बंद करो माया। हाँ ये सच है कि... कल रात क्या हुआ... मुझे भी नहीं पता। पर मैं इतना जानता हूँ कि मैं कभी तुम्हारे साथ ग़लत नहीं कर सकता। कभी भी नहीं। मैं तुमसे प्यार करता हूँ और कभी भी तुम्हें तकलीफ़ नहीं पहुँचा सकता मैं।" अल्फ़ी ने अपनी सफाई देते हुए कहा।

"बकवास तुम कर रहे हो। तुम्हारी शराफत का खोल उतर चुका है और

इस खोल के अंदर जो है, वो मेरे लिए नाकाबिल-ए-बर्दाश्त है। आइंदा से मेरे आस-पास भी दिखाई मत देना। समझ में आई बात!" अल्फ़ी की ओर अपनी तर्जनी उंगली उठाकर चेतावनी भरे लहजे में वो उस पर चिल्लाते हुए बोली।

उसके इल्ज़ाम और लहज़े से अल्फ़ी सहम कर रह गया। अपने किरदार पर लगे धब्बे उसे बहुत ही नागवार लग रहे थे क्योंकि ये बदसूरत छींटें उसने उड़ाए थे, जिसे वो अपने वजूद का हिस्सा बनाने की हसरत रखता था। वो उसकी बेयकीनी से बिखर सा गया और अपने हक में कुछ ना बोलकर चुप कर गया। उसे खुद पर पूरा यकीन था कि उसने ऐसी कोई हिमाकत नहीं की... कि उसे माया के सामने अपने नज़रें झुकानी पड़े, पर... उसके पास इसका कोई सबूत नहीं था। माया खुद को समेटती हुई वहाँ से चली गई और पीछे छोड़ गई एक नाउम्मीदी भरा दिल, जिस पर लगी चोट कितनी गहरी थी... वो खुद भी नहीं जानता था।

समय गुजरता गया और समय के साथ दुनिया भी आगे बढ़ गई। बस एक अकेला अल्फ़ी ही था, जो उसी समय पर रूक गया था। वो चाहकर भी वहाँ से आगे नहीं बढ़ पा रहा था। वजह थी अपने किरदार पर लगा बेयकीनी का वो दाग़, जो उसकी लाख कोशिशों के बाद भी उसका पीछा नहीं छोड़ रहा था। उसने जिंदगी में पहली बार किसी लड़की की ओर नज़र उठाई थी और उसी ने उसकी पलकों को नमी से इतना भारी कर दिया कि वो अब हर किसी से कतराकर निकलने लगा था.... ख़ामोश हो गया था।

उसकी ख़ामोशी अब उसके अलावा मीना को भी चुभने लगी थी। उसने जब भी इस विषय में बात करनी चाही, अल्फ़ी ने हँसकर टाल दिया। मीना ने लता से भी इन सबका जिक्र किया, तब लता ने भी मीना को उससे खुलकर बात करने के लिए कहा। आखिरकार मीना ने कुछ फैसला कर ही लिया। रात जब अल्फ़ी अपने कमरे में लेटा हुआ उसकी छत को एकटक निहार रहा था, तब मीना उसके कमरे में आई। उसने एक आह भरकर अपने बेटे को देखा, जो कितना बदल गया था। आहट सुनकर अल्फ़ी की नज़र भी उनकी ओर गई और वो उठकर बैठ गया।

"सोए नहीं अभी तक!" मीना ने पूछा।

"बस नींद का ही इंतजार कर रहा हूं।" अल्फ़ी ने सिर झुकाए हुए कहा।

"क्या हुआ अल्फ़ी? क्या माँ को नहीं बता सकते तुम?" मीना ने भरे हुए गले से कहा। जवाब में अल्फ़ी ने एक पल के लिए उनकी ऑखों में देखा और फिर नज़रें झुका लीं।

"आज पहली बार मुझे लग रहा है कि... काश तुम्हारे पिता हमारे साथ होते। शायद तुम उनसे अपना दर्द बाँट सकते। मुझे माफ़ कर देना! इस तकलीफ़ में तुम्हारा साथ नहीं दे पाई मैं।" मीना ने बहुत ही दर्द भरी आवाज में कहा।

ये सुनते ही अल्फ़ी ने पहले तो हैरानी से उनकी ओर देखा और फिर अपनी ग़लती का अहसास होते ही वो उनसे तड़पकर लिपटा था।

"नहीं माँ! ऐसा मत कहो!" वो उतनी ही तड़प के साथ बोला।

"मना कर दिया उसने!" अल्फ़ी की पीठ और सिर को सहलाते हुए मीना ने पूछा और अल्फ़ी की ऑखें एक बार फिर से खुली थीं। पर वो वैसे ही पड़ा रहा। बस एक गहरी साँस लेकर रह गया, जिसे मीना ने

भी महसूस किया। मीना ने उसे खुद से अलग किया और उसकी ऑखों में झांका।
"ऐसा क्यों होता है माँ? ये प्यार इतना बेचैनी भरा क्यों होता है?" अल्फ़ी ने मीना की गोद में सिर रखते हुए भारी आवाज में कहा।

"ऐसा नहीं है अल्फ़ी! सच्चा प्यार तो सूकून का दूसरा नाम होता है।" मीना ने उसके सिर को सहलाते हुए कहा।

"तो फिर मैं इतना बेचैन क्यों हूँ? क्या सच में.... मेरे प्यार में ही खोट है?" अल्फ़ी ने बेचैनी से अगला सवाल किया।

"नहीं! प्यार में कभी कोई खोट नहीं होता। बस हम ही ऐसे होते हैं।" मीना ने जवाब देते हुए कहा।

"क्या मतलब?" अल्फ़ी की उलझी हुई सी आवाज़ आई।

"यही कि... हम किसी से प्यार इसलिए करते हैं क्योंकि... हमें उससे प्यार होता है। इसलिए नहीं... कि वो भी पलटकर हमसे प्यार करेगा ही। प्यार जब तब प्यार होता है.... सुकून होता है। पर जब वो आगे बढ़कर जिद बन जाए.... तो बेचैनी के सिवा और कुछ नहीं देता। तुम भी अपने प्यार को जिद से आजाद कर दो। तुम्हें भी सुकून मिल जाएगा।" शून्य में ताकती मीना ने उसके बाल सहलाते हुए गहराई से अपनी बात कही।

अल्फ़ी ने उनकी ओर कुछ देर जाँचती हुई नज़रों से देखा और फिर अपने सिर पर फिरती उनकी उंगलियों को अपनी मुट्ठियों में कस लिया। मीना ने उसकी ओर देखा और फिर धीरे से उसका सिर अपनी गोद से हटाया।

"सो जाओ! देर हो गई है।" मीना ने कहा और वहाँ से जाने लगी।

"आपने भी यही किया। अपने प्यार को जिद से आजाद कर दिया।" अल्फ़ी ने एक अनपेक्षित सी बात कही, जिसे सुनकर मीना के पैर रुके थे।
"हम दोनों ने ही आजाद कर दिया क्योंकि जिद बन जाता... तो बहुत कुछ बर्बाद हो जाता।" पहली बार मीना ने अल्फ़ी के ऐसे सवाल का जवाब देते हुए कहा।

"तो फिर आपके चेहरे पर दर्द क्यों दिखाई देता है?" अल्फ़ी ने पूछा।

"दर्द! क्योंकि ये दर्द है.... बेचैनी नहीं।" मीना ने उससे कहा।

"क्या इनमें फर्क होता है?" अल्फ़ी ने पूछा।

"हाँ! बहुत फर्क होता है। तुम प्यार के दर्द के साथ तो जी सकते हो... पर.... जिद की बेचैनी के साथ कभी भी नहीं। याद रखना! अपने प्यार का इंतजार करना सीखो, तुम्हारा होगा... तो तुम तक जरूर लौटकर आएगा। किसी और का हुआ... तो उसकी ओर चला जाएगा।" मीना ने बहुत ही संजीदगी से कहा।

"फिर तो इस अधूरे प्यार की तकलीफ़ मेरे ही हिस्से में होगी ना!" अल्फ़ी ने बेचैनी से कहा।

"हाँ! पर.... कहा ना दर्द के साथ जी सकते हो। बेचैनी के साथ नहीं। अगर वो तुम्हें नहीं... किसी और को चाहती है, तो अपनी जिद में तुम उसे भी दर्द ही दोगे और उसका दर्द तुम्हें कभी चैन लेने नहीं देगा। इसीलिए तो कहा कि उसे जिद नहीं बनाओ... प्यार ही रहने दो।" मीना की आवाज अभी भी गंभीर थी।

"और आपने भी यही किया। है ना!" अल्फ़ी ने अपनी बात दोहराई।

"हाँ और मैं इसी में खुश हूँ क्योंकि.... तुम मेरे साथ हो। तुम्हें भी खुश रहने
की कोई ना कोई वजह मिल ही जाएगी।" मीना ने खुशी से छलकती हुई ऑखों के साथ कहा।

उनकी हर एक बात पर ग़ौर करते हुए अल्फ़ी के होठों पर एक मुस्कुराहट आई और उसने सिर हिलाकर उनकी हर बात पर हामी भरी। मीना ने उसके माथे को चूमा और फिर कमरे से चली गई। बाकी की रात अल्फ़ी ने अपनी माँ की बातों के साथ थोड़े सूकून से गुजारी।

अगली सुबह वो फिर से अपनी पहले वाली पहचान में लौट आया। हाँ! उसे सूकून मिल गया था। अपनी माँ की बात मानकर उसने अपने प्यार को जिद बनने से रोक दिया। पर... फिर भी कुछ ऐसा था... जो उसे खटक रहा था। क्या? पता नहीं... पर था।

दोपहर के खाना के बाद अल्फ़ी काम से घर से निकला और बाजार में पहुँचते ही एक बार फिर से वो बेचैनियों का शिकार हो गया, जब माया उसके सामने आ गई। वो हमेशा की तरह उससे कतराकर निकल गया, लेकिन अब उसका दिल फिर से बेइख़्तियार हो गया था। वो वहॉ से निकलकर झील के जंगल से लगे हिस्से की ओर चला गया। जहाँ फिर से वो सवालों में उलझ गया था। क्यों फिर वो माया को देखकर बेचैन हो गया? क्यों वो फिर से उससे नज़र नहीं मिला सका? क्यों उसके सामने सामान्य नहीं रह सका? और फिर उसने अपने बालों को मुट्ठियों में भींचकर घुटनों में अपना चेहरा छिपा लिया था।

वो वहाँ उसी तरह बैठा रहा कि तभी उसे एक अलग सा अहसास हुआ। किसी के खुद के पास होने का अहसास। वो अहसास... जो उसके दिल को बहुत अच्छा लग रहा था। किसी की तेज धड़कनें वो साफ-साफ सुन सकता था। उसने घुटनों से अपना सिर ऊपर उठाया और गर्दन को पीछे मोड़कर देखा। एक पेड़ पर हाथ टिकाए खड़ी वो अपनी गहरी ऑखों से उसे ही देख रही थी। उसे वहाँ देखकर वो हड़बड़ा गया और अपनी जगह
से तेज़ी से उठा।

"आई एम सॉरी!" उसने कहा और वहाँ से जाने के लिए तेज़ी से उसकी बगल से निकला, मगर अगले ही पल वो ठिठका था क्योंकि माया ने उसकी कलाई पकड़ ली थी। उसने पलटकर उसकी ओर देखा। उसकी ऑखों में गुस्सा था, शिकायत थी या फिर कुछ और... अल्फ़ी को समझ में नहीं आया। वो बस एकटक उसे देखता रह गया। इस बार माया की ऑखों में कुछ तो ऐसा था कि वो उससे नज़रें फेर नहीं पाया।

"क्या हुआ? बहुत नाराज़ हो मुझसे?" माया ने उसे चौंकाते हुए कहा।

"न.. नहीं! मैं क्यों... नाराज़ होऊंगा?" अल्फ़ी ने बमुश्किल कहा।

"तो मुझे देखकर दूर क्यों भागते हो?" माया ने उसकी ऑखों में झांकते हुए पूछा।

"तुमने ही तो... कहा था... कि तुम्हारे आस-पास ना आऊं।" अल्फ़ी ने पुरानी बात दोहराते हुए कहा।

"मैंने गुस्से में कहा और तुमने मान लिया।" माया बोली।

"तुमने और भी बहुत कुछ कहा था।" अल्फ़ी ने उसे याद दिलाते हुए खुश्क लहज़े में कहा।

"मुझे माफ़ कर दो अल्फ़ी! उस दिन मैंने कुछ ज्यादा ही कह दिया था। पर तुमने भी तो फिर कुछ कहा नहीं।" माया ने झुकी हुई नज़रों के साथ कहा।

"जहाँ यकीन ना हो, वहाँ सफाई देना बेकार होता है। मैं जान चुका था...
कि मैं कुछ भी कह लूं, तुम कभी भी नहीं मानोगी और मेरे पास कोई सबूत भी तो नहीं था। क्या कहता? इसलिए मैंने ही तुम्हारी बात मान ली।" अल्फ़ी ने थोड़े सख़्त लहज़े में कहा।

"मैं सचमुच उसके लिए शर्मिन्दा हूँ। पर मैं क्या करती? हालात ही ऐसे हो गए थे। मेरे दिमाग में कुछ और आया ही नहीं और मैं तुमसे इतनी कड़ी और बेफिजूल बातें बोल गई। मुझे तुम पर यकीन करना चाहिए था।" माया ने शर्मिंदगी से कहा।

और ये सुनते ही अल्फ़ी ने उसकी ओर सवालिया नज़रों से देखा। माया के ऑखों की शर्मिंदगी और चेहरे के झिझक ने उसे समझा दिया कि माया को देखने के बाद वो क्यों इतना बेचैन था? उसकी ऑख के कोर से एक नन्ही सी बूंद गाल पर फिसली थी, जिसे उसने माया से छिपाया था।

"दो महीने हो गए उस बात को अल्फ़ी। यकीन मानो... सच जानने के बाद मैं कभी चैन से नहीं रही। मैं तुमसे माफी मांगना चाहती थी, पर कभी हिम्मत नहीं जुटा पाई। " माया ने जज़्बाती होते हुए कहा।

"हिम्मत! किस बात की हिम्मत?" अल्फ़ी ने फेरी हुई नज़रों के साथ ही सवाल किया।

"मुझे लगा कि... मैं माफी तो मांग लूँ, पर... अगर तुम मेरी माफी से भड़क जाते तो। सच कहूँ तो... मैं तुम्हें देखकर डरती रही। कहीं तुम मुझसे.... अपने अपमान का बदला ना ले लो। पर कल जब तुम्हारी माँ मेरी माँ से बातें कर रही थीं, तब उनकी बातें सुनने के बाद मैं खुद को रोक नहीं सकी।" अब माया अपनी बात कहते हुए सिसकने लगी थी।

और ये सुनते ही अल्फ़ी ने बहुत ही अफसोस से अपनी ऑखें बंद की थीं। दो महीने पहले माया ने उसके दिल में एक कील चुभोई थी, जिसकी चुभन
आज तक उसे टीस रही थी और आज दो महीने के बाद उसी कील पर माया ने एक और हथौड़ी मार दी थी। वो उसके दिल का लहू ही था, जो ऑसूं बनकर ऑखों से बह रहा था और उन ऑंसुओं को उसने बहने से बिल्कुल भी नहीं रोका।

"अल्फ़ी कुछ तो कहो!" माया ने इल्तिज़ाई लहज़े में कहा।

"क्या कहूँ?" अल्फ़ी चीखते हुए उसकी ओर पलटा। उसकी ऑखों को देखकर माया एक पल को सहम गई।

"अल्फ़ी! तुम....." माया लफ़्ज़ों की तलाश में ठहर गई।

"तुम्हें इंकार करना था, तुमने कर दिया। सच कह रहा हूँ... आज तक मैं उस दर्द से निकल जाता। पर तुमने तो मुझे बेचैन कर दिया था। बस एक लड़की के लिए ही उसका किरदार मायने नहीं रखता। हम लड़कों के लिए भी अपना किरदार मायने रखता है। मैं मानता हूं कि उस समय मेरे पास मेरी बेगुनाही का सबूत नहीं था, पर सबूत तो तुम्हारे पास भी नहीं निकला मेरी ग़लती का। तुम्हारा एक अंदाजा... और मेरे दो महीने उस आग में जलकर राख हो गए। अपने किरदार पर लगा दाग... मुझे आईना देखने की इजाजत नहीं देता था।" अल्फ़ी ने बहुत ही दर्द में डूबे हुए लहजे में कहा।

"आई एम सॉरी अल्फ़ी।" माया ने एक बार फिर से गुजारिश करते हुए कहा।

"कैसी माफी? अभी कहा ना तुमने कि तुम दो महीने तक मुझसे डरती रही। तुमने ये लगता था कि मैंने पहले गलती नहीं की.... तो बाद में बदला लेने के लिए वो ही गिरी हुई हरकत करता। यही कहा ना! क्या समझा था तुमने मुझे? कितना आसान होता है ना... हमें आवारा कह देना...
बदकिरदार कह देना। अरे लड़का ही तो है... दो दिनों में ठीक हो जाएगा। लेकिन नहीं होता सबके लिए इतना आसान! मेरे लिए भी नहीं था।" गुस्से में थरथराकर कहता हुआ अल्फ़ी गहरी-गहरी साँसें लेने लगा था

"मैं जानती हूँ! मैं समझ सकती हूँ कि मैंने तुम्हारे साथ बहुत ग़लत किया। पर मैं माफी माँगने के अलावा और कुछ नहीं कर सकती। तुमने मुझे माफ कर दिया तो शायद खुद को भी माफ कर सकूँ मैं।" माया ने झुकी हुई काँपती पलकों के साथ कहा। वो बस रोने की दहलीज पर खड़ी थी।

उसे इस तरह देखकर अल्फ़ी का गुस्सा पल में उड़ा था। उसने ग़ौर किया कि वो भी माया के साथ बहुत ज्यादा रूड हो गया था और अब उसे अपना ये रवैय्या बहुत ही बुरा लगा था।

"अब रोना मत प्लीज़! ठीक है! मैंने माफ किया!" अल्फ़ी ने उसे सहज करने की कोशिश करते हुए कहा।

"सच में!" माया ने बेयकीनी से पूछा।

"हाँ!" अल्फ़ी बोला।

अल्फ़ी के इतना कहते ही माया उससे आकर लिपट गई। अल्फ़ी के वहमोगुमान में नहीं था कि माया ऐसा कर सकती है, इसलिए माया की इस हरकत से वो दो पल के लिए सन्न रह गया। उसके हाथ उठे मगर हवा में ही रह गए।

"थैंक्यू अल्फ़ी! तुम नहीं जानते... पिछले दो महीने से मैं कितनी बेचैन थी... कितनी शर्मिंदा थी। तुमने मुझे माफ कर दिया... आज मेरे दिल को सुकून मिला है। मैंने तुम्हारे साथ बहुत ग़लत किया था।" माया उसमें सिमटती हुई बोली।
"शर्मिंदा! पर तुमने तो कहा कि... तुम्हें मुझसे डर लगता था।" अल्फ़ी ने अपनी एक भौंह चढ़ाकर थोड़े तंज से कहा। हाथ अभी भी माया से दूर ही थे।

उसके तंज को महसूस कर माया ने सिर उठाकर उसकी ऑखों में देखा। वहाँ तंज के साथ कुछ नाराजगी भी दिखाई दे रही थी।

"लगता था... पर शुरू-शुरू में! पर तुम्हारी झुकी नज़रों ने उस डर को शर्मिंदगी में बदल दिया। पिछले दो महीने में मैंने तुम्हारे अलावा और किसी के बारे में नहीं सोचा और सोचते-सोचते कब तुम दिल में कहीं गहरे उतर गए... मुझे पता ही नहीं चला।" माया ने उसकी दोनों ऑखों में बारी-बारी से देखते हुए कहा।

"क्या मतलब?" अल्फ़ी ने उसकी ऑखों में अपना जवाब खोजते हुए सवाल किया।

और ये सुनकर माया ने उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में भरा और एड़ियाँ ऊपर उठाकर उसके होंठों पर अपने कांपते होंठ रख दिए। अल्फ़ी की पलकें दो पल के लिए काँपी और फिर माया की कमर पर अपने हाथ कसते हुए उसने अपनी ऑखें बंद कर लीं। माया के इकरार से उसका दर्द बेचैनियों का शिकार होते-होते रह गया था। आखिरकार उसका प्यार उस तक लौट आया था।

"माया!"

"हम्म!"

"ये तुम हर समय क्या पढ़ती रहती हो?" माया की गोद में सिर रखकर लेटे हुए अल्फ़ी ने थोड़ी नाराजगी से उससे पूछा, जिसकी नज़रें अपने बाएँ हाथ में पकड़ी हुई किताब में गड़ी हुई थी। अल्फ़ी का सवाल सुनकर माया ने उसके बालों में घूमती अपनी ऊंगलियों को रोककर उसकी ओर देखा।

"इसे क़िताब कहते हैं।" माया ने क़िताब शब्द पर जोर डालते हुए कहा।
"वैरी फनी! वो तो मुझे भी पता है।" माया के जवाब से चिढ़कर अल्फ़ी ने मुँह बनाते हुए कहा।

"हाँ तो..!" माया ने पूछा।

"हाँ तो ये कि... ऐसा क्या पढ़ रही हो कि आज आपकी मोहब्बत भरी एक नज़र भी नसीब नहीं हो रही हमें।" अल्फ़ी ने झूठी नाराज़गी दिखाते हुए कहा।

"रोमियो की मोहब्बत पढ़ रही हूँ।" माया ने उसकी ओर देखकर थोड़े चिढ़ाने वाले अंदाज से कहा।

"हैं! मोहब्बत! रोमियो की मोहब्बत! और.... कौन है ये महाशय?" अल्फ़ी ने अपने बालों में फिरते उसके हाथ को पकड़ते हुए पूछा।

"हाय! रोमियो! रोमियो! प्यार हो तो रोमियो जैसा, वरना..." माया अब अल्फ़ी के मज़े लेने पर उतर

आई थी।

"वरना!" उसकी बात सुनकर अल्फ़ी झटके से उठा और उसकी ऑखों में देखते हुए बोला, " वरना क्या?"

"वरना क्या? जिगर होना चाहिए... जिगर! रोमियो की तरह प्यार करने के लिए। अपने प्यार के लिए मर जाने का। पर छोड़ो! कहाँ होता है दुनिया में इतना जिगर किसी के पास?" माया ने अपनी बात अफसोस भरे लहजे में खत्म की।

"एक मिनट! कहना क्या चाहती हो? मैं भी तुमसे बहुत प्यार करता हूँ।" अल्फ़ी ने मजबूती से अपनी बात कही।
"अच्छा जी!" माया ने एक भौंह चढ़ाकर कहा।

"और नहीं तो क्या? तुम जो बोलो अभी करके दिखा दूं।" अल्फ़ी ने उसकी ऑखों में झांकते हुए कहा।

"अच्छा। ठीक है! जाओ! झील में कूदकर दिखाओ।" माया ने क़िताब एक ओर रखकर उसे चुनौती देते हुए कहा।

और ये सुनते ही अल्फ़ी के चेहरे के रंग उड़े थे। उसने ऑखें सिकोड़ कर एक बार माया के चेहरे को ग़ौर से देखा और फिर मुड़कर झील पर एक नज़र डाली। उसने अपना निचला होंठ दाँतों में दबाया और फिर से माया की ओर सवालिया नज़रों से देखा। माया ने भी उसे ऑखों के इशारे से जाने के लिए कहा। अल्फ़ी के चेहरे के हर भाव उलझ से गए थे।

"क्या हुआ? निकल गई हवा! जो बोलूंगी वो कर के दिखाऊंगा! हुँह!" माया ने अल्फ़ी से मजाक उड़ाते हुए अंदाज में कहा और फिर से अपनी किताब उठाकर पढ़ने लगी। अभी उसने तीन-चार लाइनें ही पढ़ी होंगी कि उसे पानी में किसी भारी चीज के गिरने की आवाज सुनाई दी और ये सुनते ही उसकी नज़रें बिजली की तेजी से अल्फ़ी की ओर उठी थीं। वो वहाँ नहीं था। उसने झील की ओर देखा, जहाँ पानी अभी भी हिलोरें मार रहा था। माया को काटो तो खून नहीं। वो तेजी से उठी और बदहवास सी झील की ओर भागी। अल्फ़ी दिखाई नहीं दे रहा था। वो अच्छी तरह से जानती थी कि अल्फ़ी को तैरना नहीं आता था। अब तो माया को दहशत और वहशत दोनों ही होने लगे थे। वो कुछ कदम आगे बढ़कर पानी में उतरी और चारों ओर देखने लगी। उसे कोई भी अंदाजा नहीं था कि अल्फ़ी कहाँ हो सकता था।

"अल्फ़ीऽऽऽ!" वो जोऱो से चिल्लाई थी। क्यों? उसे भी नहीं पता था, पर
पलटकर कोई भी जवाब नहीं आया। घबराहट बढ़ने के साथ ही उसकी ऑखों में क़तरे भी बढ़े थे। ऑसू उसकी ऑखों से फिसले तो वो अपना मुँह ढाँपकर जोरों से रोने लगी।

"प्लीज़.... वापस.... आ जाओ अल्फ़ी! मैं तो... मजाक... कर रही थी। सॉरी! फिर ऐसा.... नहीं करूंगी।" हिचकियों के साथ माया ने बहुत ही मुश्किल से कहा।

"पक्का! प्रॉमिस ना!" एक भारी सी आवाज़ उसके कानों तक आई।

"हाँ! प्रॉ.... " और उसकी बात अधूरी ही रह गई। ऑखों में बेयकीनी के रंग उभरे और उसने तेजी से पीछे पलटकर देखा। वो एक बड़े आदमकद पत्थर पर टिककर सीने पर हाथ बांधे उसे ही शरारत से देख

रहा था। माया की तो जैसे साँसे वापस लौटी थीं। वो सही-सलामत उसके सामने खड़ा था। वो उसे सूनी ऑखों से देखती वहीं खड़ी रह गई। सारे ऑसू ऑखों के दायरे में ही रूक गए। उसे इस तरह बेहलचल खड़ा हुआ देखकर अल्फ़ी के ऑखों की शरारत पल में छू हुई थी। चेहरे पर परेशानी लेकर वो तेजी से उसकी ओर गया।

"माया!" उसके सुन्न पड़े शरीर को दोनों कंधों से पकड़ कर हल्के से हिलाते हुए अल्फ़ी ने कहा। माया के ऑखों की पुतलियों में हल्की सी हलचल हुई, मगर शरीर अभी भी जड़ ही था। अल्फ़ी ने अपनी ऑखों से उसकी हालत को तौला।

"माया! होश में आओ! क्या हुआ?" उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में भरकर झिंझोड़ते हुए अल्फ़ी ख़ासी फिक्रमंदी से बोला और इस बार माया का सकता टूटा था। उसकी ऑखों में रूके हुए ऑसू बेसाख़्ता गालों पर लुढ़के और वो एक बेचैन क़ैफियत के साथ उससे लिपटी थी। अल्फ़ी ने भी अपनी शरारत को पीछे धकेलकर संजीदगी से उसे खुद में समेटा था,
जहाँ वो अब बकायदा आवाज के साथ रोने लगी थी।

"श्श्श्श्! आइ एम सॉरी माया! प्लीज़! रोओ मत! मैं... मैं ऐसी शरारत फिर कभी नहीं करूंगा। सच में!" उसे अपनी बाहों में समेटे हुए अल्फ़ी ने बहुत ही संजीदगी से कहा और उसके सिर को सहलाते हुए अपना गाल उसके सिर पर रखा था। वो उसे इस तरह देखकर घबरा सा गया था। कुछ पल गुजरने के साथ ही माया भी शांत होने लगी। वो दोनों ही ख़ामोशी से खड़े हुए थे। अचानक अल्फ़ी को कुछ अलग सा महसूस हुआ। उसने अपनी नज़रें नीची की, तो उसने पानी को अपने घुटनों से थोड़ा सा ही नीचे पाया। उसने अपना चेहरा मोड़कर किनारे की ओर देखा, जो यकीनन इस वक्त पहले से ज्यादा दूर नज़र आ रहा था। अल्फ़ी को ये बहुत ही अजीब लगा था। उसे अच्छी तरह से याद था कि वो माया के पीछे पानी में तीन-चार कदम ही आया था, पर अब उसे किनारा कम से कम दस कदम दूर दिखाई दे रहा था।

"माया! ये झील का पानी बढ़ गया है या फिर हम लोग ही इतने अंदर गए हैं?" अल्फ़ी ने झील पर नज़र रखे हुए कहा। उसकी बात सुनकर हल्की-हल्की हिचकियाँ लेती हुई माया ने सिर उठाकर उसे देखा और फिर उसकी नज़रों का पीछा करते हुए माया ने भी झील पर नज़र डाली। झील का शांत पानी बेचैन सा दिखाई दे रहा था।

"हो क्या रहा है?" अल्फ़ी ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"पता नहीं! चलो यहाँ से! हम ही ज्यादा अंदर आ गए हैं।" अपना रोना भूलकर माया ने अल्फ़ी को किनारे की ओर खींचा था। उसके पीछे चलते हुए अल्फ़ी ने चारों तरफ देखा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो दोनों
किनारे से आगे कैसे पहुँच गए? और इसका जवाब उसे मिल ही गया। जिस पत्थर से टिककर वो खड़ा था, वो जगह भी टखनों के ऊपर तक पानी में डूबी हुई थी। अल्फ़ी को अच्छी तरह से याद था कि वो पानी में नहीं... सूखी जमीन पर खड़ा था। फिर वहाँ इतना पानी कहाँ से आ गया? जवाब उसके पास नहीं था। दोनों ने ही किनारे पर पहुँचकर उस झील को देखा, जो अब फिर से शांत दिखने लगी थी। हैरान तो दोनों ही थे, पर माया के चेहरे पर परेशानी कुछ ज्यादा ही थी। अल्फ़ी का ध्यान उसके चेहरे पर गया, तो वो उसे तुरंत ही वहाँ से ले गया। दोनों के ही कपड़े घुटनों से ऊपर तक गीले हो चुके थे।

अल्फ़ी को तो ज्यादा परेशानी नहीं थी, पर माया की ड्रेस नीचे से पूरी गीली हो गई थी। चलते समय उसके पैर उसमें बुरी तरह से उलझ रहे थे, जिससे वो बड़ी मुश्किल से चल रही थी। वो लड़खड़ाकर गिर ही जाती, मगर अल्फ़ी ने उसे गोद में उठाया और उसे उसी पेड़ के नीचे ले गया जहाँ वो दोनों ही बैठे हुए थे।

वापस जाने के लिए माया के कपड़े सूखने जरूरी थे, इसलिए अल्फ़ी ने माया को आराम से बैठाया और उसके साथ ही बैठ गया। अपने कपड़ों को फैलाते समय माया के हाथ उस किताब से टकराए, जिसे वो पढ़ रही थी। उसने उस किताब को उठाया और फिर उस पर एक तंज भरी नज़र डाली। वो उसे एक ओर रख ही रही थी कि अल्फ़ी ने उसे टोका।

"क्या हुआ? और नहीं पढ़ना है क्या?" अल्फ़ी ने उस किताब की ओर देखते हुए कहा।

"नहीं! अब पढ़ने की इच्छा नहीं हो रही।" माया ने उसके सीने पर सिर टिकाते हुए कहा।

"तो मैं पढ़कर सुना दूँ!" अल्फ़ी ने उसके चेहरे की ओर झुककर कहा। उसकी बात सुनकर माया ने अपना सिर ऊपर उठाकर उसके ऑखों की शरारत को जाँचा।
"सीरियसली! सुनाऊँ!" अल्फ़ी ने उसकी ऑखों में अपनी मोहब्बत उड़ेलते हुए कहा, जिस पर माया दिलकशी से मुस्कुराई थी। उसकी मुस्कराहट अल्फ़ी के होठों पर भी उतरी।

"आओ मि. रोमियो! जरा हम भी तो देखें। आखिर हो कौन तुम?" झुककर किताब उठाते हुए अल्फ़ी ने माया पर भी एक नज़र डालते हुए कहा। माया के बताने पर उसने वो पेज खोला और फिर एक हाथ से माया को समेटकर दूसरे हाथ में वो किताब पकड़ ली। वो उसकी लाइनों में नज़र डाल ही रहा था कि माया ने आगे बढ़कर उसके गाल पर अपने होंठ रख दिए। अल्फ़ी ने खुशगवार हैरत के साथ उसकी ओर देखा।

"अरे वाह! अभी तो काम भी शुरू नहीं किया और पेमेंट पहले ही मिल गई। ये नौकरी पसंद आई मुझे।" अल्फ़ी ने कहा।

"नौकरी!" माया ने ऑखों से भी सवाल किया।

"हाँ! पर शादी के बाद इस काम का पेमेंट मैं बाद में लिया करूंगा। ठीक है!" अल्फ़ी ने ऑखों में शरारत भरते हुए कहा।

"ठीक है!" माया ने भी कहा।

इसके बाद एक बार फिर से अल्फ़ी ने किताब की ओर ध्यान दिया और फिर माया को पढ़कर सुनाने लगा। माया ने कितना कुछ सुना... पता नहीं क्योंकि इस पूरे समय वो अल्फ़ी के चेहरे पर बिखरी शरारत और मासूमियत के मेल को पढ़ने और समझने में मशरूफ थी।

अल्फ़ी ने जब पन्ना पलटने के लिए किताब नीचे रखी, तो माया की नज़र सामने फैले झील की ओर चली गई। उस झील को देखते ही उसके चेहरे
के भाव बदले और उसके सोच की दिशा कहीं दूसरी ओर मुड़ गई। माथे पर आई सिलवटों को उसने तुरंत ही मिटाया था कि वो अभी जो सोचकर आई थी, उसे अल्फ़ी से बांटने का समय नहीं आया था।

झील का पानी एक बार फिर से पूरी तरह शांत था। दोनों ने ही ध्यान नहीं दिया कि झील का पानी एक बार फिर से नीचे उतर चुका था।

****

अल्फ़ी जब घर लौटा तो उसने अपनी माँ को बहुत ही जल्दी में पाया। वो जब उनके पास पहुँचा तो उन्होंने उसे बड़ी ही सख़्ती से घूरा।

"क्या हो गया माँ?" अल्फ़ी ने संभलकर पूछा।

"क्या हो गया? था कहाँ सुबह से तू? ढेरों काम होते हैं सुबह-सुबह और साहबजादे सब कुछ छोड़कर सैर-सपाटे पर निकल जाते हैं। आज कुछ ज्यादा देर नहीं लग गई आपको सैर करने में?" मीना ने अपनी भड़ास निकालते हुए अल्फ़ी से कहा।

अल्फ़ी के पास अपनी सफाई के लिए कुछ नहीं था इसलिए वो नज़रें चुराता हुआ खामोश रह गया।

"अब चुप क्यों खड़ा है? ये तो पूछ कि माँ क्या काम है?" मीना ने एक बार फिर उसे झिड़कते हुए कहा।
"अ.... हाँ! क्या काम है माँ?" अल्फ़ी ने एक बार फिर खुद को संभालते हुए अपनी माँ से पूछा।

"हे भगवान! तू तो पूरा काम से गया अल्फ़ी! इससे पहले की बात ज्यादा बिगड़ जाए तेरी ये आवारागर्दी बंद करवानी ही पड़ेगी।" मीना ने उसे ऊपर से नीचे तक घूर कर देखते हुए कहा।

"आवारागर्दी! क्या मतलब आवारागर्दी?" अल्फ़ी ने तड़पकर कहा।

"वही जो आजकल तू इस सुबह की सैर के नाम पर कर रहा है। बेड़ियाँ बांधनी पड़ेगी तेरे पैरों में। लगता है कि तभी टिकेगा तू घर में।" मीना ने उसके कान खींचते हुए कहा।

"आउच! क्या कर रही हो माँ? छोड़िए! और बेड़ियाँ से क्या मतलब है? मुझे क्या जानवरों की तरह बांधकर रखोगी। फिर काम पर कौन जाएगा?" मीना के हाथ से अपने कान छुड़ाकर उसे सहलाते हुए अल्फ़ी ने चिढ़ भरी आवाज में कहा। सुबह की सैर बंद होने की बात से ही वो फड़फड़ा उठा था कि माया से मिलने का कोई और तरीका ना था।

"तो उस समय खोल दिया जाएगा और मैंने तो बेड़ियाँ भी पसंद कर ली हैं। सोच रही हूँ आज जाकर बात कर लूं, इससे पहले कि... कोई और ले जाए।" माया ने अपने होंठों पर आती मुस्कुराहट को बमुश्किल रोकते हुए कहा।

"क्या? बेड़ियाँ पसंद कर ली हैं! दिमाग सही है आपका? तबीयत तो ठीक है ना आपकी?" कहते हुए अल्फ़ी ने उसका माथा छुआ था।

"अरे ठीक हूँ मैं। तू ठीक नहीं है। तुझे ठीक करना जरूरी है। आज ही लता से बात करती हूँ।" मीना ने उसका हाथ झटकते हुए कहा और ये
सुनकर ही अल्फ़ी को तेज झटका लगा था।

"हे भगवान! लता मौसी से मेरे बारे में क्या बात करनी है आपको? आप मेरे बारे में उनसे कोई उल-जूलूल बात तो नहीं करती ना! क्या सोचेंगी वो मेरे बारे में?" लता के सामने लगाई गई मीना की लताड़ को याद करते हुए अल्फ़ी तिलमिलाया था। वो उनकी नज़रों में अपनी छवि धूमिल होने के पक्ष में बिल्कुल भी नहीं था।

"कोई उल-जूलूल बात नहीं करती मैं। उसी के पास तो हैं वो बेड़ियाँ, जो मुझे लेनी हैं।" मीना ने एक बार और उसे उलझाते हुए कहा।

"लता मौसी के पास! बेड़ियाँ! मतलब?" अल्फ़ी नासमझी से पूछा।

"माया!" मीना ने उसकी ऑखों में देखते हुए कहा।

"माया!" सुनकर अल्फ़ी और भी उलझा था।

"हे भगवान! तेरी और माया की शादी की बात कर रही हूँ मैं। अब उसके चक्कर में तू रोज़ सुबह घर से गायब रहता है, तो मैंने सोचा कि उसे ही घर ले आती हूँ। फिर तो घर में रहेगा ना!" अपनी हथेली अल्फ़ी को दिखाते हुए मीना ने कहा।

और अल्फ़ी... वो तो ये सुनकर सुन्न ही रह गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अपनी माँ की बात सुनकर वो खुश हो या अपनी चोरी पकड़े जाने पर शर्मिंदा।

"अ... माँ... वो... मैं....." अल्फ़ी के सारे अल्फ़ाज जैसे हवा में घुल गए थे।
"अरे कुछ तो बोल! बंधवानी हैं बेड़ियाँ या फिर किसी और को दे दें।" मीना ने उसे हिलाते हुए कहा।

"अरे नहीं...नहीं! बंधवानी हैं ना!" छूटते ही अल्फ़ी ने कहा, जिस पर मीना के होंठों पर मुस्कराहट आई थी।

"अ... मेरा मतलब है कि... मैं आपकी बात... कैसे टाल सकता हूँ? मैं जानता हूँ कि आप.. जो भी करेंगी... सही करेंगी।" अल्फ़ी ने अपना सिर खुजलाते हुए नज़रें चुरा कर कहा।

"वाह! वाह! मस्का लगाना भी सीख गया!" मीना ने उसकी झुकी हुई ऑखों में झांकते हुए कहा।

"मैं.. कपड़े बदल लूं। गी... गीले हो गए हैं।" अल्फ़ी ने कहा और मीना की बात सुने बिना ही बिजली की तेजी से अपने कमरे की ओर भागा। उसके पीछे मीना खुलकर हँसी थी। जिंदगी अपने हर खुशनुमा रंग उनकी झोली में डाल रही थी।

****

अल्फ़ी के लिए आज का दिन गुजारना बड़ा ही मुश्किल हो गया था। वो शाम का इंतजार कर रहा था, जब कि उसकी माँ उसके और माया के रिश्ते पर लता मौसी की हामी की मुहर लगाकर आने वाली थी। उसके दिल की धड़कनें दिन भर अजीब सी क़ैफियत में रहीं। कभी वो माया की याद में बढ़ जातीं, तो कभी उसकी तस्वीर ख्यालों में आने पर मद्धम पड़
जातीं। काम में भी उसका मन आज ज्यादा नहीं लग रहा था। मि. हेनरी उसे कई बार टोक भी चुके थे, पर वो तो आज जैसे गलतियाँ करने पर ही आमादा था। किसी तरह उसने दिन लम्हा-लम्हा गिनकर गुजारा। घर वापस लौटते समय वो मीना से मिलने गया, तो उन्होने अपने और लता के देर से घर लौटने की बात कही। अल्फ़ी ने अपना सिर हिलाया और अपनी बेतरतीब धड़कनों के साथ घर पर मीना का इंतजार करने लगा।

इंतजार करते हुए उसके ज़हन में माया आई। उसका दिल उसे देखने को तड़प उठा। ना जाने उसके दिल में क्या आई कि वो उसके घर की ओर निकल गया। उसने दूर से ही माया को बालकनी में बैठे हुए देखा। उसके होंठों पर एक मुस्कुराहट आई। वहाँ सबसे छिपते-छिपाते वो ऊपर बालकनी में चढ़ गया। आहट सुनकर माया की नज़र उस पर पड़ी, तो उसने अपनी हैरानी को पीछे छोड़कर उसे ऊपर खींचा।

"तुम इस समय यहाँ क्या कर रहे हो?" हाँफती हुई माया ने अपनी साँसे संभालते हुए अल्फ़ी से कहा।

"तुमसे मिलने का मन किया तो आ गया। नहीं आ सकता क्या?" पास रखी कुर्सी पर पसरते हुए अल्फ़ी ने कहा।

"अरे! ये यहाँ क्यों फैल रहे हो? माँ या किसी और ने देख लिया, तो मुसीबत हो जाएगी। जाओ यहाँ से।" माया इधर-उधर देखते हुए उसे खींचते हुए बोली।

"हे हे हे! मुझे पता है कि मौसी घर पर नहीं हैं और रही बाकी दुनिया... तो मुझे उसकी मुझे परवाह नहीं है।" अल्फ़ी ने बहुत ही लापरवाही से कहा और एक बार फिर से कुर्सी में घुस गया।

"अल्फ़ी! माँ नहीं हैं... इसलिए तुम्हें जाने के लिए कह रही हूँ।" माया ने
झल्लाकर एक बार फिर से उसे खींचते हुए कहा।

"अरे वाह! तुम्हारा रोमियो अपनी जूलियट से ऐसे मिलने आता है तब तो तुम्हें बहुत अच्छा लगता है।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से उसका हाथ झटका था।

"अरे! दिमाग खराब हो गया है क्या तुम्हारा? वो तो बस एक कहानी है। असल जिंदगी में ऐसा नहीं होता।" माया उसकी ढीठता पर तिलमिलाई थी।

"तो ठीक है ना! हमारी कहानी में होगा।" कहते हुए अल्फ़ी ने उसे अपनी ओर खींचा, जिससे वो उसके ऊपर गिर पड़ी। वो उठ पाती, उससे पहले ही अल्फ़ी ने अपने हाथों का घेरा उसके चारों ओर कस

दिया।

"तुम पागल हो गए हो या... नशा-वशा करके आए हो।" कहते हुए माया ने उसके मुँह के पास नाक ले जाकर उसे सूंघा। अल्फ़ी ने उसकी ऑखों में देखा और उसके होंठों पर अपने होंठ रख दिए। उसकी इस हरकत से माया और भी हड़बड़ाई।

"क्या कर रहे हो अल्फ़ी? दूर रहो!" इस बार माया ने बहुत ही संजीदगी से उसे हड़काया और छिटककर उससे दूर हुई थी।

"ओह! चलो! ठीक है! तुम भी कहो दूर जाने के लिए।" अल्फ़ी ने मुँह लटकाकर बुझी हुई आवाज में कहा।

"क्या मतलब?" इस बार माया ने थोड़ी उलझन से पूछा।

"वही तो बताने आया था। माँ ने मेरे लिए लड़की पसंद कर ली है।" अल्फ़ी ने किसी कुशल अभिनेता की तरह हर भाव को दबाकर कहा।
उसकी बात सुनकर माया को एक तेज झटका लगा।

"लड़की पसंद कर ली है से क्या मतलब है?" उसकी ओर ग़ौर से देखते हुए माया ने बेचैनी से पूछा।

"पसंद कर ली है मतलब... शादी के लिए पसंद कर ली है। सुबह मुझसे बात की थी उन्होंने।" अल्फ़ी अभी भी पूरी संजीदगी से बोला।

"तो... तुमने क्या कहा? हमारे बारे में बताया उन्हें?" माया ने बड़ी हुई धड़कनों के साथ पूछा।

"नहीं! मैं नहीं बता सका।" अल्फ़ी ने सिर झुकाकर कहा। उसने अपनी हँसी को बड़ी ही मुश्किल से काबू किया था।

"नहीं का क्या मतलब है? फिर क्या कहा?" माया ने उसके सामने बैठकर उसकी ऑखों में झांकते हुए और भी बेचैनी से पूछा।

"तुम जानती हो कि मैं उनकी बात नहीं काट सकता। तो..." अल्फ़ी ने बात अधूरी छोड़ी।

"तो..." माया ने सवालिया नजरों से उसे देखते हुए कहा।

"तो मैंने.... हाँ कर दी।" अल्फ़ी ने उससे मुँह फेरकर कहा। उसकी बात सुनकर माया की ऑखें हैरत और सदमे से फ़ैल गईं।

"तुम.... मजाक.... कर रहे हो ना!" माया के लफ्ज़ों ने बमुश्किल माया का साथ दिया था।

"नहीं!" अल्फ़ी ने भी पूरी संजीदगी से कहा। उसकी बात सुनकर माया
की समझ में कुछ नहीं आया कि वो आगे क्या कहें। वो एकटक उसे देखती रही। जब उसकी ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली, तो अल्फ़ी ने धीरे से उसकी ओर देखा। वो फर्श पर सिर टिकाए बुरी तरह से

सुबक रही थी और ये देखकर एक बार फिर से अल्फ़ी की शरारत हवा हुई थी। उसके सामने घुटनों के बल बैठकर अल्फ़ी ने माया को उठाने की कोशिश की, तो उसने उसके हाथ को झटक दिया। उसके रोने में और भी तेजी आ गई। अब तो वो बुरी तरह से घबरा गया था। उसने नहीं सोचा था कि वो इस तरह रिएक्ट करेगी।

"माया! प्लीज़ चुप हो जाओ! मैं मजाक कर रहा था।" अल्फ़ी ने उसे संभालने की कोशिश करते हुए कहा और ये सुनते ही माया ने सिर ऊपर उठाकर उसे सदमे भरी निगाहों से देखा था। अल्फ़ी ने देखा कि वहाँ डर था... गुस्सा था.... और सबसे बढ़कर शिकायत थी। वो गहरी साँसे लेते हुए भरी हुई ऑखों से उसे ही देख रही थी। उसका पूरा चेहरा दर्द की शिद्दत से लाल हो गया था।

"सच! मजाक था।" अल्फ़ी ने बहुत ही फिक्रमंदी से कहा।

"क्या मतलब... कि मजाक था। तुमने सुबह वादा किया था... ऐसा मजाक नहीं करोगे।" माया ने अपने ज़ब्त को संभालते हुए कहा।

"सॉरी!" अल्फ़ी ने उसके हाथ को पकड़ते हुए कहा, जिसे माया ने बहुत ही गुस्से से झटका था।

"निकलो यहाँ से! फ़ौरन निकलो!" माया गुस्से में फुंफकारते हुए चिल्लाई।

"माया!" अल्फ़ी ने भी सहम कर उसे देखा।

"क्या माया? दूर जाना है ना तुम्हें! जाओ! पर कसम है तुम्हें कि पीछे
पलटकर नहीं देखना कि माया का क्या हुआ? जाओ!" माया पूरी ताकत से चिल्लाकर बोली।

"माया! प्लीज़! शांत हो जाओ! आई एम रियली सॉरी!" अल्फ़ी ने उसके दोनों हाथों को पकड़कर उसे खुद में भींचा था। वो अपने दर्द और गुस्से की शिद्दत में उसकी पकड़ से छूटने के लिए छटपटाती रही, मगर अल्फ़ी ने उसे छोड़ा नहीं।

कुछ देर छटपटाने के बाद वो शांत हो गई और उससे लिपटकर रोने लगी। अल्फ़ी भी एक हाथ से उसे समेटे हुए दूसरे हाथ से उसका सिर सहलाने लगा। उसे अपनी इस शरारत का बहुत ही अफसोस हो रहा था। उसे खुद
पर गुस्सा भी आ रहा था और शर्मिंदगी भी हो रही थी। जब उसके रोने की रवानगी कम हुई, तो अल्फ़ी ने उसकी ओर देखा।

"मेरी पूरी बात तो सुन लेती। मैंने जो कहा बिल्कुल भी झूठ नहीं कहा। मेरी कहीं हर एक बात सच थी। दरअसल... माँ ने जिसे पसंद किया है.... वो लड़की तुम हो। तुम ही हो!" अल्फ़ी ने शर्मिंदगी भरी आवाज में कहा।

उसकी बात सुन माया ने सिर उठाकर बेयकीनी से उसकी दोनों ऑखों में बारी-बारी से देखा, जैसे कि उसके बातों की सच्चाई जाँच रही हो। अल्फ़ी ने सिर हिला कर उसे मुत्मइन करने की कोशिश की।

उसने कुछ भी नहीं कहा सिर झुकाया और फिर अपना सिर उसके सीने में टिका दिया।

"मैं नहीं जानता था कि मेरा ये मजाक तुम्हें इतनी तकलीफ़ पहुँचाएगा। वरना... मैं ऐसा कभी नहीं करता। सच में!" अल्फ़ी ने सफाई देते हुए कहा।

"ऐसा मत करना फिर! वरना उसी समय मर जाऊंगी मैं।" माया ने उससे और भी लिपटते हुए रूंधे गले से कहा।

"श्श्श्श! मरे हमारे दुश्मन! हमें तो एक साथ बहुत लंबा जीवन बिताना है। साथ में बहुत से सपने देखने हैं... उन्हें पूरा करना है। हर सुख-दुख में एक दूसरे का हाथ पकड़ना है। अपने बच्चों को बड़ा करना है। और.... तुम्हें पता है... जब हम बूढ़े हो जाएँगे ना! तो मैं भी एक कहानी लिखूंगा। हम दोनों की कहानी। देखना! लोग तुम्हारे उस रोमियो-जूलियट से भी ज्यादा हमारी कहानी को याद करेंगे।" अल्फ़ी ने उसके बालों पर ऊंगलियाँ फिराते हुए कहा।

"तुमने इतना सब सोच रखा है।" माया ने हैरत भरी आवाज में कहा।
"और नहीं तो क्या!" अल्फ़ी ने जवाब दिया।

"और अगर हम अलग हो गए तो।" माया ने एक अंदेशा जाहिर किया।

"पागल हो गई हो! मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा।" अल्फ़ी ने ऐतराज जताया।

"मुझे पता है। फिर भी! अगर कोई मुझे... तुमसे छीनकर ले गया तो..!" माया ने ना जाने क्यों एक अजीब सा सवाल किया।

"तो मैं तुम्हें वापस छीनकर ले आऊंगा। दुनिया के किसी भी कोने से। माया को अल्फ़ी से कोई नहीं छीन सकता। ना कोई इंसान और ना ही... नसीब!" अल्फ़ी ने उसे खुद में और भी समेटते हुए कहा। माया ने भी उसकी मोहब्बत की हिफाजत में खुद को महफूज किया था। वो दोनों समय, जगह और माहौल से बेपरवाह एक-दूसरे में खोए हुए थे।

"माया!"

इस एक आवाज को सुनकर दोनों की ऑखें झटके से खुली और वो दोनों ही छिटककर एक-दूसरे से अलग हुए। सामने माया की माँ लता खड़ी उन दोनों को सकते भरी ऑखों से देख रही थी। दोनों ने ही कुछ नहीं कहा। झेंप दोनों के ही चेहरे पर बराबर दिखाई दे रही थी।

"माया अंदर जाओ।" लता ने थोड़ी सख़्त आवाज में कहा।

उनके हाव-भाव देखकर माया ने एक नज़र अल्फ़ी पर डाली और फिर अंदर चली गई। अल्फ़ी उनके सामने अजीब सी हालत का शिकार हुए
खड़ा था, जिससे कुछ भी बोलते नहीं बन रहा था।

"अल्फ़ी! घर जाओ!" इस बार भी लता का लहज़ा सख़्त था।

"जी!" कहते हुए वो बालकनी की ओर बढ़ा, जहाँ से वो आया था।

"दरवाजे से जाओ!" लता की घुड़की भरी आवाज आई।

"ज...ज...जी!" अल्फ़ी ने हड़बड़ाकर कहा और उतनी ही तेजी से वो दरवाजे की ओर भागा।

"अल्फ़ी!" लता ने उसे टोका।

"जी!" अल्फ़ी ने अपने आगे बढ़ते कदम रोककर उनकी ओर देखते हुए कहा।

"आज के बाद यहाँ मत आना।" लता ने जैसे उसके ऊपर बम फोड़ा।

"जी! मैं.. समझा नहीं!" अल्फ़ी ने उलझन से पूछा।

"यही कि.... अब तुम्हें माया से मिलने की कोई जरूरत नहीं है।" लता ने बहुत ही रूखी आवाज से कहा।

"पर... वो माँ ने... आपसे..." लिहाज से अल्फ़ी ने आगे की बात आधी छोड़ दी।

"तुम दोनों के बारे में बातें करने के बाद ही ये फैसला लिया गया है।" लता ने उसके पैरों के नीचे से जमीन खींचते हुए कहा।
"मौसी! प्लीज़ ऐसा मत करें। मैं माया से बहुत प्यार करता हूँ। यकीन मानिए! मैं उसे बहुत खुश रखूंगा। प्लीज़! आप इंकार मत कीजिए।" अल्फ़ी उनके सामने लगभग गिड़गिड़ाते हुए बोला।

"इंकार मैंने नहीं..... तुम्हारी माँ ने किया है।" लता ने उस पर एक और बम फोड़ा।

"क्या? नहीं! वो ऐसा नहीं कर सकतीं। वो ऐसा क्यों करेंगी?" इस ज़हनी हमले से अल्फ़ी बुरी तरह से तिलमिलाया था।

"वो तुम अपनी माँ से जाकर पूछो।" लता ने बहुत ही खुश्क लहज़े में कहा। उसकी बात सुनकर अल्फ़ी वहाँ से जाने के लिए तेजी से मुड़ा।

"अल्फ़ी! माया को भूल जाओ... यही तुम दोनों के लिए बेहतर है।" लता ने बहुत ही बेरहमी से कहा। उसकी बात सुनकर अल्फ़ी एक बार फिर से रूका, मगर वो पलटा नहीं।

"ऐसा कभी नहीं होगा। कभी नहीं हो सकता। अल्फ़ी ने माया से साथ जिंदगी बिताने का वादा किया है, तो वो ये वादा अपनी आखिरी साँस तक निभाएगा। आप लोग हमारे साथ ऐसा नहीं कर सकते। मैं ऐसा होने नहीं दूँगा।" अल्फ़ी ने बिना मुड़े गुस्से से थरथराते हुए कहा और फिर वहाँ से निकल गया। लता बस एक आह भरकर रह गई।

एक वादा जो अल्फ़ी ने माया से किया था, वो अब हालातों की कसौटी पर खुद को साबित करने पर मजबूर हो गया था। पर साबित तो करना ही था।

अल्फ़ी की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर हुआ क्या? उसकी माँ ने तो खुद ही माया और उसके रिश्ते की बात की थी, तो अब वो इंकार क्यों कर रही थीं? उसके लिए ये जैसे जिंदगी और मौत के सवाल की तरह था, जिसका जवाब उसे चाहिए ही था। वो इस सवाल का बोझ उठाए हुए किस तरह घर पहुँचा... वो भी नहीं जानता था। घर पहुँचा तो मीना को खोई हुई हालत में काम करते हुए पाया। हाथ तो उनके कपड़ों को तह करने में लगे हुए थे, पर ऑखें ना जाने किस जहाँ में गुम थीं। उनकी ग़ुम हालत अल्फ़ी की ऑखों में और भी कई सवाल भर गई।

"माँ!" अल्फ़ी ने उन्हें आवाज दी और उसकी आवाज से मीना जैसे कहीं दूर से वापस लौटी।

"आ गया तू! कहाँ गया था? काम धाम नहीं है कुछ, जो अभी भी आवारागर्दी में लगा हुआ है।" मीना ने उससे फेरी हुई नज़र के साथ कहा।

"ये क्या सुबह से आवारागर्दी... आवारागर्दी लगा रखा है आपने! आप सब जानती हैं फिर भी!" अल्फ़ी की आवाज में हल्की सी लर्जिश थी।
"हम्म! खाना लगा दूँ!" मीना ने बात बदलते हुए पूछा।

"और आपको लगता है कि निवाला मेरे गले से उतर जाएगा।" अल्फ़ी ने सवालिया लहजे में जवाब दिया।

"तो क्या अब.... जिंदगी भर भूखे रहने का इरादा है!" अल्फ़ी के लहजे को पहचान कर मीना ने कहा और फिर से कपड़े तह करने लगी। उलझनों से भरा हुआ अल्फ़ी उनके पास गया और उसने उनके हाथों को थाम लिया। मीना ने उसकी तरफ देखने से परहेज़ ही किया।

"क्यों माँ?" अल्फ़ी बस यही दो शब्द कह सका।

"वो उम्र में तुझसे बड़ी है।" मीना ने जो पहली बात दिमाग में आई कह दी, जिससे अल्फ़ी हैरत में पड़ा था।

"बड़ी है! अच्छा! तो ये बात आपको आज पता चली। है ना!" अल्फ़ी के अल्फ़ाज़ पूरी तरह से तंज में डूबे हुए थे।

"अल्फ़ी फ़ैसला हो गया है और यही आखिरी फैसला है। तुम जितनी जल्दी इसे मान लो... तुम्हारे लिए अच्छा है।" मीना ने भड़कते हुए कहा।

"और आपको लगता है कि मैं ये मान जाऊंगा। कभी नहीं!" अल्फ़ी भी अड़ते हुए बोला।

"मानना तो पड़ेगा अल्फ़ी! चाहे हँसकर मानो... या फिर रोकर।" इस बार मीना ने अपनी तेज खंज़र

नज़रें उस पर डालते हुए कहा।

"और मेरे जिंदगी भर रोने की वजह जान सकता हूँ।" अल्फ़ी ने भीगी हुई आवाज में कहा।
"कोई जिंदगी भर नहीं रोता अल्फ़ी! वक्त सबको संभाल लेता है। कोई भी दर्द जिंदगी से बड़ा नहीं होता।" मीना ने भी दर्द से भरे लहजे में कहा और वहाँ से जाने लगी।

"इसलिए आपने मेरे लिए जिंदगी नहीं.... दर्द को चुना है।" अल्फ़ी ने तंज भरी मुस्कराहट के साथ कहा।

उसकी बात सुनकर मीना ठिठक गई और फिर सख़्त आवाज में बोली, "बहस मत करो अल्फ़ी। कोई फायदा नहीं होगा। तुम बस अपना वक्त बर्बाद करोगे।"

"मुझे परवाह नहीं है।" अल्फ़ी ने भी उखड़े लहज़े में कहा।

"मतलब कि... उसके सामने... अब माँ.... माँ नहीं रही।" मीना ने चुभते हुए लफ़्ज़ों के साथ कहा।

"बात आपकी... या माया की नहीं है। बात मेरे सवालों की है, जिन्हें आप हमेशा टाल जाती हैं। कल तक मेरे सवाल आपकी ज़ात.... आपके वज़ूद से जुड़े थे... इसलिए उनके जवाबों के लिए मैंने आपके दिल को नहीं कुरेदा। मगर अब सवाल मेरी ज़िन्दगी से जुड़ा है.... मेरी खुशी से जुड़ा है। मुझे जवाब चाहिए। मैं इस अधूरे सवाल को अपना दिल कुरेदने की इज़ाजत नहीं दे सकता।" अल्फ़ी मजबूत इरादों के साथ बोला।

"मुझे ये मंज़ूर नहीं।" मीना की सख्त आवाज अल्फ़ी के दिल को तोड़ने के इरादे से आई।

"पर क्यों माँ?" अल्फ़ी ने अपने दिल के बचाव में कहा।
"बस! कहा ना! उससे दूर रहो।" मीना ने भी अपना पर्दा कायम रखते हुए कहा।

"पर... मुझे वजह जाननी है।" अल्फ़ी ने अपने आपको मजबूत करके पूछा।

"क्योंकि वो एक डायन है और तुम दोनों का कोई मेल नहीं है। दूर रहो उससे।" मीना ने अल्फ़ी के कंधों को पकड़कर उसे झिंझोड़ते हुए उसी सख़्ती से कहा।

और ये सुनते ही अल्फ़ी जैसे आसमान से नीचे गिरा था। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि उसकी माँ ने माया के लिए ऐसे शब्दों का इस्तेमाल किया था। वो कुछ बोलना चाहता था, पर उसकी ज़बान तो जैसे तालू से चिपककर रह गई थी। उसकी ऑखें और होंठ तेजी से काँपे, मगर इससे आगे बस सदमे से गुंग होकर रह गए। वो कुछ कदम पीछे गया और फिर तेजी से पलटकर घर से बाहर चला गया। मीना ने भी उसे नहीं रोका। वो पहले से जानती थी कि अल्फ़ी ऐसी ही प्रतिक्रिया देगा। वो कमजोर नहीं पड़ सकती थी। मगर कब तक? अल्फ़ी का कहना भी सही था कि उसे उसके सवाल का सही जवाब मिलना चाहिए। मगर वो ये नहीं जानता था कि उसके इस सवाल का जवाब उस रास्ते पर चलकर मिलेगा, जिसे मीना बहुत पीछे छोड़ आई थी और अब उस रास्ते पर लौटने की उसकी हिम्मत नहीं थी। इसलिए मीना ने इंतजार करने का फैसला किया। वो पहले इस फैसले से अल्फ़ी पर पड़ने वाले असर को देखना चाहती थी, ताकि उसके अनुसार सही फैसला ले सके।

****
सुबह अल्फ़ी की हथेली पर उसके दिल का तोहफा रखने के बाद मीना काम पर चली गई। वहाँ वो और लता दोनों ही एक साथ काम करते थे। मीना ने दिन भर इंतजार करने के बाद शाम के समय में लता से बात करने का निश्चय किया था। उसने सोचा था कि वो अभी ज़बानी तौर पर ये बात लता के सामने रख दे। उसके बाद आपसी सलाह मशविरे के बाद बात आगे बढ़ाई जाए। मगर उसे नहीं पता था कि उनके बीच होने वाली बातचीत बहुत कुछ बदलने वाली थी।

लता और मीना की मुलाकात लगभग 20 साल पहले तब हुई थी, जब मीना यहाँ आई थी। लता विधवा थी और उससे एक साल पहले ही अपनी बेटी के साथ वहाँ आई थी। उस समय माया उसकी गोद में थी। माया की उम्र सवा-डेढ़ साल की रही होगी, जब मीना को अपने गर्भवती होने का पता चला। वहाँ सबको यही पता था कि मीना का पति उससे बहुत दूर चला गया है। उस समय लता ने गर्भावस्था में मीना की... और छोटी सी माया को संभालने में मीना ने लता की बहुत सहायता की थी, जिससे वो दोनों बहुत करीब आ गए थे। अल्फ़ी के जन्म के बाद सबकी दबी ज़बान में उसके पिता की चर्चा होने लगी थी क्योंकि वो कहीं से भी पूरा भारतीय नहीं लगता था। चेहरे की पूरी बनावट उसने अपनी माँ से ही ली थी, मगर उसकी त्वचा का रंग और उसके बाल कहीं से भी भारतीय होने की गवाही नहीं देते थे। मगर मि. हेनरी के यहाँ काम करने के कारण कोई भी कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। पूरे कस्बे में बस लता और मि. हेनरी को अल्फ़ी के पिता के बारे में मालूम था और उन दोनों ने ही उसके राज को अपने दिल में हिफाज़त से रखा था।

मि. हेनरी एक नर्म दिल के मालिक थे। जब उनको अल्फ़ी के बारे में सब पता चला, तो उन्होंने उसे अपनी छत्रछाया में रखना ही ज्यादा सही लगा और वो उसी के मुताबिक ढलता चला गया। वो सर विलियम को अच्छी
तरह से जानते थे और उनकी सिफारिश पर ही मीना को उनके यहाँ काम मिला था। उसके बाद उन दोनों की फिर कभी कोई मुलाकात नहीं हुई। मीना के आग्रह पर ही मि. हेनरी ने सर विलियम को अल्फ़ी के बारे में कुछ भी नहीं बताया। मीना उसे उस भयानक माहौल से दूर रखना चाहती थी, इसलिए उसने अल्फ़ी को भी उसकी पूरी पहचान कभी नहीं बताई। उसके लिए वो बस अपनी माँ का बेटा था, जिसका नाम अल्फ़ी मीना था। मगर वो नहीं जानती थी कि किस्मत का लिखा मनुष्य ना तो कभी पढ़ पाया है और ना ही उससे भाग पाया है। उसे क्या पता था कि वो उसे जिस त्रासदी से बचाना चाहती थी, वो उसके बेटे का नसीब था।

उम्र में करीब दो साल का अंतर और लड़का-लड़की के भेद ने अल्फ़ी और माया को हमेशा ही एक-दूसरे से दूर रखा। माया जहाँ कस्बे के हमउम्र बच्चों के साथ रहा करती थी, वहीं अल्फ़ी उन सबसे दूर मि. हेनरी और दूसरे अंग्रेज बच्चों के साथ ज्यादा समय बिताता था। हाँ, अपने घर के आसपास के बच्चों के साथ उसकी दोस्ती जरूर हो गई थी। धीरे-धीरे समय के साथ अल्फ़ी की मासूमियत और अच्छे व्यवहार ने सबके दिलों में घर कर लिया और उनका जीवन कुछ अपवाहों पर पड़ी मिट्टी के ऊपर फलता-फूलता रहा। अपनी माँ के संघर्ष को देख-समझ कर अल्फ़ी उम्र से पहले ही समझदार हो गया था और उनकी बहुत इज्जत करता था।

जब पहली बार अल्फ़ी ने माया को देखा था, उसके बाद उसके अंदर होने वाले बदलाव मीना की नज़रों से छिप नहीं सके। लेकिन अल्फ़ी की कम उम्र की वजह से उसने इस विषय में कोई जल्दबाजी नहीं दिखाई। माया एक खूबसूरत और समझदार लड़की थी और मीना से घुली-मिली हुई भी थी। हालांकि

उसका दो साल बड़ा होना मीना को पहले खटका था, पर धीरे-धीरे वो भी उनके दिल और दिमाग से जाता रहा कि अपने बेटे की खुशी से ज्यादा उनके लिए कुछ और नहीं था और दो साल बाद जब उन्होंने अल्फ़ी को माया के इंकार के बाद टूटा हुआ पाया, तो उन्हें बहुत ही तकलीफ़ हुई थी। पर वो अपने बेटे की खुशी के लिए माया पर किसी तरह
का दबाव नहीं डालना चाहती थी, इसलिए उन्होंने अल्फ़ी को ही समझाने की कोशिश की। वो समझ भी गया था, मगर ईश्वर के चमत्कार की तरह माया उसकी जिंदगी में प्यार बनकर लौट आई। अल्फ़ी के वहमोगुमान में भी नहीं था कि मीना को उसकी हर हरकत की खबर थी। बल्कि माया की माँ लता इन सबसे जरूर बेखबर थी और आज आखिरकार मीना ने लता से उन दोनों के बारे में बात करने का पूरा मन बना लिया था। लता भी अल्फ़ी को बहुत पसंद करती थी। मि. हेनरी के यहाँ उन दोनों की मुलाकातें होती रहती थीं। मगर अल्फ़ी और माया को लेकर उनके दिमाग में दूर-दूर तक कोई भी सुगबुगाहट नहीं थी।

मीना ने अल्फ़ी से देर घर लौटने की बात कही क्योंकि वो लता से उनके बारे में बात करना चाहती थी। शाम अपना काम समेटने के बाद मीना ने मौका मिलते ही अपने दिल की बात बाहर निकाली।

"लता!"

"हाँ!"

"माया के बारे में कुछ सोचा है तुमने?"

"मैं समझी नहीं! किस बारे में?" लता ने मीना की बात को समझने की नाकाम कोशिश करते हुए कहा।

"उसकी शादी के बारे में। 21 साल से ऊपर हो गई है वो! कौन लड़की इतनी उम्र तक बिन ब्याही रहती है? उसकी सारी सखियों की शादी हो गई है। सबके दो-दो बच्चे भी हो गए हैं। तुमने इस ओर कभी सोचा नहीं।" मीना ने उसका दिल खंगालने की कोशिश की।
"बात तो सही कही तुमने मीना। पर क्या करूं? ये लड़की तो शादी के नाम पर ही उछल जाती है और तुम जानती हो कि मैं उससे जीत नहीं सकती। सबसे आखिरी में उसकी जिस सहेली की शादी हुई थी, उसे भी छः: साल हो गए। मुझे डर है कि यदि ये इसी तरह मना करती रही, तो आगे जाकर कोई सही लड़का भी नहीं मिलेगा। फिर कहीं उम्र को लेकर समझौता ना करना पड़े।" लता ने भी अपनी चिंता मीना के सामने रखी।

"अरे ऐसा क्यों कहती हो? हमारी माया इतनी खूबसूरत है। उसके लिए लड़कों की क्या कमी?" मीना ने भूमिका बांधनी शुरू की।

"तो देखो ना! तुम्हारी नज़र में कोई हो तो! एक बार लड़का मुझे पसंद आ गया तो फिर मैं माया की कोई बात सुनने वाली नहीं हूँ।" लता ने भी अपना फैसला सुनाते हुए कहा।

"अगर मैं... कहूं कि... एक लड़का है मेरी नज़र में... तो!" मीना ने थोड़ा हिचकते हुए कहा।

"अच्छा! ये तो बहुत अच्छी खबर है। कौन है वो?" लता ने उत्साहित होते हुए पूछा।

"अ... तुम जानती हो उसे! बहुत अच्छी तरह से।" मीना ने उलझा हुआ जवाब दिया, जिससे लता बुरी तरह से चौंकी थी।

"मैं जानती हूँ! ऐसा कौन सा लड़का है.. माया के जोड़ का? मुझे तो कोई याद नहीं आ रहा।" लता ने अपनी याददाश्त पर जोर डालते हुए कहा।

"अ... लता! अगर तुम बुरा ना मानो तो... मैं माया को अपनी बहू बनाना चाहती हूँ।" इस बार मीना ने मुद्दे पर आते हुए कहा और ये सुनकर लता की ऑखें आखिरी हद तक फटी थीं।
"तुम्हारी बहू! तुम्हारा मतलब है कि.... तुम अल्फ़ी की बात कर रही हो। ये कैसे हो सकता है?" हैरान लता ने तुनकते हुए कहा।

"क्यों नहीं हो सकता?" मीना ने वजह पूछी।

"सबसे पहली वजह तो उनकी उम्र है। वो अल्फ़ी से दो साल बड़ी है। लोग क्या कहेंगे?" लता बिफरते हुए बोली।

"और तुम लोगों की परवाह कब से करने लगी? हम दोनों जानते हैं अकेली माँ होने की तकलीफ़। कोई नहीं आया था, हमारा हाथ थामने। हम ही थे... एक-दूसरे के साथ।" मीना ने उसे समझाते हुए कहा।

"पर मीना... बहुत अजीब लगेगा ये। तुम खुद सोचो। पति छोटा... पत्नी बड़ी।" लता ने बहुत ही परेशान लहजे में कहा।

"मुझे नहीं लगता। मुझे माया अपने अल्फ़ी के लिए बहुत पसंद है। क्या मेरा अल्फ़ी तुम्हें पसंद नहीं?" मीना ने लता से सवाल किया।

"तुम जानती हो मीना.... मुझे अल्फ़ी कितना पसंद है। पर मैंने उसे कभी इस नज़रिए से नहीं देखा। तुम समझो ना मेरी बात को!" लता ने मीना को समझाने की कोशिश करते हुए कहा।

"मुझे कुछ नहीं समझना है। अगर मेरे अल्फ़ी में कोई कमी हो तो बताओ। अच्छा दिखता है... अच्छा कमाता है। भगवान और मि. हेनरी का हाथ उसके सिर पर रहा तो आगे और भी कामयाब होगा मेरा बेटा। अब तुम खुद ही सोच लो। माया के हमउम्र लड़के 14-15 साल की लड़की ही अपने लिए पसंद करेंगे। अब माया के लिए तुम अल्फ़ी को पसंद कर लो या फिर... उम्रदराज आदमियों के चेहरों के बीच भटको। तुम्हारी मर्जी!"
मीना ने अपना आखिरी दांव चला, जिसका असर लता पर होता साफ दिखाई दे रहा था।

"मैं तुम्हारी बात समझ रही हूँ और चलो... मैं मान भी गई इस रिश्ते के लिए। पर उन दोनों का क्या? अल्फ़ी तो शायद तुम्हारी बात मान भी जाए, पर मुझे नहीं लगता कि माया मानेगी।" लता ने अपनी ओर से अगली समस्या बताई।

उसकी बात सुनकर मीना के होंठों पर मुस्कराहट आई और फिर उसने लता का हाथ पकड़ते हुए कहा, "और अगर मैं ये कहूं कि... ये उन दोनों की ही मर्जी है तो!"

"क्या मतलब?" मीना की बात सुनकर लता अपनी जगह से उछल पड़ी थी।

जवाब में मीना ने उसे अल्फ़ी और माया के रिश्ते के बारे में सारी बात बताई। लता को अपनी लापरवाही पर बहुत आश्चर्य हो रहा था। वो कैसे अपनी बेटी के जज़्बातों से इतनी बेखबर रह गई, जबकि मीना अपने बेटे के दिल की हर बात से बाखबर थी। उसे मीना के सामने शर्मिंदगी सी महसूस हो रही थी।

"क्या हुआ?" मीना ने पूछा।

"तुम भी सोच रही होगी कि मैं... कितनी लापरवाह माँ हूँ।" लता ने जैसे सफाई देने की कोशिश की।

"अरे नहीं! दरअसल... आज से दो साल पहले जब अल्फ़ी बारिश में मुझे ढूंढता हुआ तुम्हारे घर आया था, उस समय माया को पहली बार देखने के बाद उसकी ऑखों में माया के असर को मैंने साफ-साफ देखा था। दो साल
बहुत होते हैं अपने बच्चे के दिल की बात को समझने के लिए। जबकि माया के दिल में ऐसी कोई बात थी ही नहीं, तो तुम्हें कैसे पता चलता! उसने कुछ महीने पहले ही अल्फ़ी का प्रेम प्रस्ताव स्वीकार किया है।" मीना ने उसे सारी जानकारी देते हुए कहा।

"और तुम्हें ये सब अपनी ने बताया?" लता ने आश्चर्य से पूछा।

"अरे नहीं! नहीं! वो कैसे बताएगा? वो तो मैंने उसकी ऑखों की चमक, चेहरे की रौनक और होंठों की मुस्कुराहट से समझ लिया।" अल्फ़ी को याद करके मीना ने मुस्कुराते हुए कहा।

"ओह! अब मुझे भी समझ आ रहा है कि कुछ समय से माया भी कुछ खोई-खोई सी रहती है। अब ऐसा भी कोई कारण हो सकता है... मैंने नहीं सोचा था।" लता भी माया को याद करके मुस्कुराई थी।

"तब तो सचमुच तुम लापरवाह हो।" मीना ने खुलकर हंसते हुए कहा, जिस पर लता ने भी उसका साथ दिया।

"तो तुम्हारी हाँ है ना!" मीना ने पूछा।

"बिल्कुल!" लता ने हामी भरी।

"तुम्हें पता है! मुझे एक डर ये था... कि कहीं तुम अल्फ़ी के पिता की वजह से... मना ना कर दो। आखिर पारिवारिक पृष्ठभूमि भी तो मायने रखती है ना!" मीना ने बहुत ही सहजता से कहा और ये सुनकर लता के होंठों की मुस्कान सिमटी थी। उसके चेहरे के बदलते हाव-भाव मीना से छिप ना सके।

"क्या हुआ? अचानक तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों उड़ गया?" मीना ने
फिक्रमंदी से पूछा।

"मीना! तुमने मुझसे कभी कुछ नहीं छिपाया, पर....एक बात है... जो मैं तुमसे छिपा गई। शायद इसीलिए क्योंकि मुझे कभी नहीं लगा कि तुम्हें ये बताने की नौबत आ सकती है। अब अगर तुम अल्फ़ी और माया के रिश्ते की बात कर रही हो... तो तुम्हें और अल्फ़ी को ये जानना ही चाहिए।" लता ने झुकी हुई नज़रो के साथ कहा।

"ऐसी कौन सी बात है... जिसने तुम्हें परेशान कर दिया है?" मीना ने उसे सवालिया नज़रों से देखते हुए कहा।

"माया का अतीत!" लता ने कहा।

"क्या मतलब?"

"यही कि.... माया... मेरी बेटी... नहीं है। उसे मैंने जन्म नहीं दिया है।"

"यही कि.... माया... मेरी बेटी... नहीं है। उसे मैंने जन्म नहीं दिया है।"

लता के मुँह से निकले ये लफ्ज़ मीना को हैरान कर गए थे। इतने सालों में उसे एक बार भी ऐसा नहीं लगा कि माया, लता की बेटी नहीं थी। वो क्या... शायद उस कस्बे में कोई भी इस राज से राब्ता नहीं रखता था। मीना को याद आया कि उसकी मुलाकात जब लता से हुई थी, माया उसकी गोद में थी और वो इस कस्बे में भी उसी के साथ आई थी। उसने सबसे कहा कि वो उसकी बेटी है तो... सबने मान लिया। लेकिन अब इस खुलासे से मीना थोड़े सकते में पड़ी थी।

"तुम्हारी नहीं है.... मतलब!" मीना ने उसकी बात को तस्दीक करना चाहा।

"माया.... मेरी एक परिचित की बेटी है। मेरे मायके के पास ही उसका भी घर था। फिर नौकरी की वजह से वो अपनी बहन के साथ दूसरी जगह चली गई। वहीं शादी भी कर ली। मेरे पति की मृत्यु के बाद जब मैं अपने
मायके गई, तो मेरी भाभी ने मेरे लिए दरवाजे बंद कर दिए। उस समय वो भी वहीं थी। मैं जब उससे मिली, तब वो सात माह के गर्भ से थी। उसी ने मुझे सहारा दिया। फिर दो महीने बाद जब उसकी बेटी हुई, तो उसने वो बच्ची मेरी गोद में डाल दी। पति की मृत्यु के बाद मेरे जीवन में कुछ भी शेष नहीं रह गया था। उस समय वो बच्ची मुझे अपनी खोई हुई जिंदगी की तरह लगी और मैंने उसे अपने ऑचल में छिपा लिया।" लता ने भावुक होते हुए कहा।

"और तुम्हारी उस परिचित ने ऐसा क्यों किया? मेरा मतलब ये है कि.... अपना बच्चा किसी को दे देना... ये कोई आसान या आम बात तो नहीं है।" मीना ने उलझे हुए लहजे में सवाल किया।

"उसने बस इतना कहा कि जहाँ वो रहती है, वो जगह इस बच्ची के लिए सुरक्षित नहीं है, इसलिए उसने उस बच्ची को यहाँ आकर जन्म दिया था। क्यों? ये उसने बताया नहीं। उसने बस ये कहा कि मैं उस बच्ची को उस जगह से दूर ले जाऊँ। उसके लिए उस बच्ची को साथ रखने से ज्यादा उसे सुरक्षित रखना

मायने रखता था।" लता ने कहा।

"ये अजीब है! बहुत ही अजीब!" मीना ने आश्चर्य से कहा।

"है तो सही। पर... उस समय मैं हर तरफ से मायूस सी थी। इसलिए मैंने भी कुछ नहीं पूछा। इस बच्ची में मुझे जीने का बहाना नज़र आने लगा। उसे देखकर मेरे अंदर मेरी ममता जाग उठी। वैसे भी हम दोनों को ही एक-दूसरे की जरूरत थी।" लता ने हल्की सी मुस्कुराहट होंठों पर रखकर कहा।

"हम्म! कोई बात नहीं। मुझे इससे फर्क नहीं पड़ता और ना ही अल्फ़ी को पड़ेगा। हमारे लिए यही काफी है कि उसकी परवरिश तुमने की है। कई बार परवरिश खून से बढ़कर हो जाती है। तुम्हारे और माया के विषय
में भी यही दिखाई देता है, तभी तो आज तक भी किसी को कोई शक नहीं हुआ।" मीना ने मुस्कुराते हुए कहा, जिस पर लता ने भी पूरे दिल से उसका साथ दिया था।

"कोई और होता तो मैं... इन सबका जिक्र नहीं करती। पर ये बात मैं तुमसे छिपाना नहीं चाहती थी। कम से कम अब तो नहीं।" लता ने अपना दिल खोलकर कहा।

"समझ सकती हूँ। वैसे तुम्हारी ये परिचित अब कहाँ हैं?" मीना ने लता के साथ कदम आगे बढ़ाते हुए कहा।

"वो.... कल्परूप गाँव में! मुझे वहाँ जाने से सख़्त मना किया है उसने।" लता ने बहुत ही सहजता से जवाब दिया, मगर उसका जवाब सुनकर मीना के पैरों के नीचे से जमीन निकल गई। उसके पैर जैसे मनों वजनी भारी हो गए और वो एक जगह ठिठक कर रह गई। आगे बढ़ती लता ने जब उसे साथ महसूस नहीं किया तो उसने पीछे पलटकर देखा। उसे सकते में खड़ा देखकर लता माथे पर शिकन लेकर उसके पास आई।

"क्या हुआ मीना?" लता ने चिंता के साथ पूछा।

"वो वहाँ.... क्या करती थी?" मीना ने अभी भी लता की बजाय सामने कहीं शून्य में देखते हुए पूछा।

"क्यों? क्या हुआ?" लता ने उसे सवालिया नज़रों से देखते हुए पूछा।

"जवाब दो लता!" मीना ने हल्की सी काँपती हुई आवाज में कहा।

"वो... वहाँ एक जगह है। 'बसेरा' के नाम से। वहीं रहती है। उस जगह में बहुत सी बेसहारा और मज़लूम लड़कियाँ और औरतें रहती हैं। उनका
आश्रय है वो! अपने हुनर से अपने लिए सम्मान और रोटी कमाती हैं। तो वो भी वही करती है। उसके माता-पिता की मृत्यु के बाद वो अपनी छोटी बहन के साथ वहाँ चली गई। वहीं उसने शादी भी की और फिर आगे तुम जानती हो।" लता ने पूरे तफ्सील से बात बताई।

"और कुछ? मतलब... वहाँ करती क्या हैं?" मीना ने सदमे भरी आवाज में पूछा।

"खाना बहुत ही अच्छा बनाती थी, तो वहाँ भी वही काम करती है। वहाँ की हेड है। उसी ने तो पैसों और

सिफारिश के साथ यहाँ मि. हेनरी के पास भेजा था। वो एक अंग्रेज है ना!" लता ने उसके सवाल का जवाब देते हुए कहा और ये सुनते ही मीना की ऑखें दर्द को महसूस कर बंद हुई थीं।

"नाम?" मीना ने बंद ऑखों के साथ ही पूछा।

"ऐना!" लता की ज़बान और मीना के ज़हन ने एक साथ कहा और मीना की एक ऑख से बंद होने के बाद भी एक बूंद आंसू लूढ़का था।

"क्या हुआ मीना? परेशान लग रही हो तुम!" लता ने मीना की एक बाँह को पकड़ कर उसे हिलाते हुए कहा।

"लता! ये शादी नहीं हो सकती। कभी नहीं हो सकती। मैंने तुमसे जो भी कहा... उसे भूल जाओ।" लता ने भारी और काँपती हुई आवाज में कहा।

"क्यों? क्या हुआ?" लता ने हैरानी से पूछा।

"बस ये मत पूछो! बस... मजाक किया मैंने तुम्हारे साथ।" मीना ने खुद को संभालते हुए कहा।
"मजाक! क्या मतलब कि... मजाक था। तुमने तो कहा कि हमारे बच्चे..." भड़की हुई लता ने कहना चाहा, पर मीना ने उसे टोका।

"कहा ना! मजाक था! कुछ नहीं है बच्चों के बीच। उनके बीच कुछ नहीं होना चाहिए। कभी नहीं!" मीना जैसे खुद में बड़बड़ाते हुए बोली, जिसे लता ने भी साफ सुन लिया था। वो मीना के इस बदले हुए व्यवहार से हैरत में आई थी। उधर मीना भी बौखलाई हुई हालत में वहाँ से घर की ओर चल दी। उसके पीछे उलझनों से घिरी लता कुछ देर खड़ी उसे दूर जाते देखती रही। मीना के दूर जाते ही वो खुद में वापस लौटी और उसने ग़ौर किया कि उसने मीना के सामने वो राज खोल दिया था, जो उसने माया से भी छिपाकर रखा था। अब उसे डर लगने लगा कि कहीं ये राज माया पर ना खुल जाए। वो उसे खोना नहीं चाहती थी। पर मीना ने उसके साथ ऐसा क्यों किया... ये उसकी समझ में नहीं आया और जवाब नहीं मिलने से वो भी गुस्से से भर गई। उसने इस वाहियात हरकत के लिए मीना को कभी भी माफ नहीं करने का इरादा कर लिया था।

इसी भरी हुई हालत में जब वो घर पहुँची तो उसने अल्फ़ी और माया को साथ देखा। पहले तो अल्फ़ी को माया के साथ इस तरह देखकर उसके तन बदन में आग लग गई थी। वो आगे बढ़कर कुछ कहती उससे पहले ही उन दोनों की बातें उसके कानों में आ गई और वो एक बार फिर उलझ सी गई। आखिर में जब उससे बर्दाश्त नहीं हुआ तो उसने बहुत ही रूखे तरीके से अल्फ़ी को मीना का फैसला सुना दिया। लता को लगा था कि मीना ने सचमुच कोई भद्दा मजाक किया था, मगर अल्फ़ी और माया की बातें सुनकर वो समझ गई थी कि मामला कुछ और ही था, जो उसकी समझ से कोसों दूर था। वो बस एक आह भरकर रह गई क्योंकि वो माया को कैसे... किस तरह समझाएगी... ये खुद उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

उधर दूसरी तरफ अल्फ़ी ने जब मीना से सारी बात जाननी चाही तो हमेशा की तरह मीना ने उसे टाल दिया। मगर इस बार अल्फ़ी दूसरे तेवरों के साथ
था। इस बार उसे अपने सवाल का जवाब चाहिए था जो उसे एक बार फिर नहीं मिला। ऊपर से जब मीना ने माया के लिए डायन शब्द का इस्तेमाल किया तो वो.... तमतमाई हुई हालत में ही घर से बाहर

निकल गया। आज का दिन जो कुछ नई उम्मीदों कुछ नए सपनों और खुशियों के इंतजार से शुरू हुआ था... सबकी किरचियों के बीच खत्म हुआ।

अगला पूरा हफ्ता आपसी कश्मकश और नाराजगी में गुजरा था। अल्फ़ी जवाब के बिना माया का सामना नहीं करना चाहता था। उसके सवालों का क्या जवाब देता वो। मीना भी पूरे हफ्ते काम पर नहीं गई। उसने अपनी खराब तबीयत की खबर भिजवा दी। ये पहली बार था कि लता भी उसकी तबीयत पूछने घर नहीं आई। तेजी से बदलते हालातों ने मीना को बहुत ही परेशान करके रख दिया था। उसके पास सभी के सवालों के जवाब थे, पर मुश्किल ये थी कि वो खुद इन जवाबों से भाग रही थी। पूरा एक हफ्ता हो गया था जब अल्फ़ी ने उससे कोई बात नहीं की थी। बात करने की हिम्मत तो मीना में भी नहीं थी। वो जब भी बात करने की गरज से उसकी ओर बढ़ती, उसकी जवाब तलाशती सुर्ख़ ऑखें उसे दहला देती थीं। वो उसे उसका सच नहीं बताना चाहती थी। उसे वापस उस रास्ते पर नहीं ले जाना चाहती थी, जहाँ से वो भाग कर आई थी। पर कब तक? कब तक ऐसा चलता? अल्फ़ी की दिमागी तकलीफ़ और हालत शायद इतनी ज्यादा खराब नहीं थी, जितनी कि... सभी जवाबों को अपने दिमाग में समेटे हुए मीना की बिगड़ती जा रही थी और आख़िरकार 1 हफ्ते तक दिमागी कशमकश से जूझने के बाद मीना अपने होश खो बैठी।

रूठा हुआ अल्फ़ी जब घर वापस आया, तो उसने मीना को फर्श पर बेसुध पड़े पाया और वो एक पल में ही अपनी सारी नाराज़गी भूलकर उसकी ओर दौड़ा था। एक हफ्ते से दिमागी तनाव झेलते रहने के बाद मीना का उम्र दराज शरीर ढह गया था। लगातार सोचते रहने और आराम की कमी के कारण वो निढाल हो चुकी थी। अल्फ़ी ने उसे उठाया और आराम से बिस्तर पर लिटाने के बाद वो बेतहाशा वैद्य के पास भागा था। रात भर
बुखार की आग में सुलगने के बाद जब सुबह ठंडे झोंके लेकर आई तो मीना के तपते शरीर को भी आराम मिला। अल्फ़ी तो जैसे पूरी रात ऑखों में तेल डालकर जागता रहा। मीना के शरीर पर होने वाली हर हरकत पर वो चौंक उठता। पूरी रात वो उसके हाथ पर अपना सिर टिकाए सुबकता रहा... उसके लिए दुआएँ मांगता रहा और फिर उसकी दुआ सुन ली गई, जब मीना ने अपनी ऑखें खोल दीं। मीना ने भी जब अपनी ऑखें बमुश्किल खोली, तो सामने बदहवास से अल्फ़ी को पाया, जिसकी ऑखों में उसके लिए शिकायत का एक क़तरा भी नहीं था। था तो बस... बहुत सारी फिक्र... बहुत से ऑसू। मीना ने उसकी ऑखों में अपने लिए फिक्र और प्यार को पढ़ते हुए उसके हाथ पर अपनी उंगलियाँ कस दी और फिर वो उससे लिपटकर फफक-फफक कर रोया था।

"सॉरी माँ! रियली सॉरी! मैं स्वार्थी हो गया था। पर कल रात मैंने जाना... अल्फ़ी अपनी माँ के बिना नहीं रह सकता। मैं अब आपको और परेशान नहीं करूंगा। सच में!" उससे लिपटकर बच्चों की तरह बिलखता हुआ वो बोला। मीना ने अपने काँपते हुए हाथों से उसके बालों को सहलाया। अल्फ़ी ने खुद को उससे अलग किया और फिर उसके हाथ को पकड़कर बैठ गया।

"आप जो बोलेंगी, जैसा बोलेंगी... मैं वैसा ही करूंगा। कोई सवाल नहीं करूंगा। कभी भी नहीं। बस आप ठीक हो जाओ।" अपनी ऑखों से अपनी शर्मिंदगी को बहाते हुए अल्फी बोला।

"माया!" मीना ने बहुत ही कमजोर आवाज में कहा।

"मैं.... भूल जाऊंगा उसे। कभी... याद नहीं करूंगा। कभी कोई.... जिक्र नहीं करूंगा उसका। आई प्रॉमिस माँ!" अल्फ़ी ने रूंधे हुए गले से बड़ी ही मुश्किल से कहा।
"अल्फ़ी।" मीना ने तड़पकर उसकी ओर देखा था।

"मुझे आप चाहिए माँ! मुझे कोई भी खुशी आपके बिना नहीं चाहिए। मुझे माफ़ कर दीजिए! मैं मतलबी हो गया था, जो आपसे ऊँचे लहजे में बोल गया। आई प्रॉमिस! मैं अब कभी नहीं मिलूंगा माया से!" वो बदस्तूर बिलखते हुए बोला।

और ये सुनकर मीना का दिल धक्क करके रह गया। उसने पिछले एक हफ्ते तक माया के लिए उसके प्यार को देखा था और अब वही अपनी माँ के लिए माया को भूलने के लिए तैयार हो गया था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि उन दोनों में से कौन मतलबी हो रहा था। उसने तो दोनों की भलाई के लिए ऐसा फैसला लिया था। पर... वो इसकी गंभीरता को जानते ही नहीं थे, तो उसकी परवाह को कैसे समझ सकते थे। उसने इस बात का पक्का इरादा कर लिया था कि वह अपनी ज़बान नहीं खोलेगी चाहे कुछ भी हो जाए। पर... अब अपने बेटे को अपने सामने बिखरते हुए नहीं देख सकती थी।

दो दिनों के बाद जब अल्फ़ी उसके लिए सुबह का नाश्ता लेकर आया, तो उसने बहुत ही ग़ौर से उसके चेहरे को देखा। हमेशा रोशन रहने वाला उसका चेहरा बुझकर रह गया था। आँखें दर्द के बोझ से बोझिल हो चुकी थीं और होंठों पर हमेशा रहने वाली मुस्कान अब बस मीना को देखकर ही आती थी।

"अल्फ़ी! अपनी हालत देखो! मैं नहीं.... तुम बीमार लग रहे हो।" मीना ने नाश्ते की प्लेट पकड़ते हुए कहा, जिस पर अल्फ़ी उसे देखकर मुस्कुराया था।

"आप ठीक हो जाओ! मैं भी ठीक हो जाऊँगा।" अल्फ़ी ने उसी खाली-खाली मुस्कुराहट के साथ कहा। "माया कैसी है?" मीना ने एक अप्रत्याशित सा सवाल किया, जिसे सुनकर अल्फ़ी की आँखों में एक बार फिर से दर्द उतर आया। हालांकि अल्फ़ी ने अपनी ऑखें मीना से छिपाई थीं, पर मीना को जो देखना था... वो देख चुकी थी।

"मुझे... नहीं... पता!" अल्फ़ी बमुश्किल बोला।

"क्या मतलब?" मीना ने उलझी हुई आवाज में कहा।

"जिस रात मैंने आपसे बहस करने की ज़ुर्रत की थी... उसके बाद से मुलाकात नहीं हुई।" अल्फ़ी ने बात साफ करते हुए कहा।

"तब से! पर...." मीना ने सवाल अधूरा छोड़ दिया।

"वो सवाल करती और मेरे पास.... जवाब नहीं थे।" अल्फ़ी ने ईमानदारी से कहा।

"तो तुम उससे भाग रहे हो।" मीना ने उसकी झुकी हुई पलकों में झांकने की कोशिश करते हुए कहा।

"अब उससे कोई फर्क नहीं पड़ता।" अल्फ़ी ने बहुत ही खुश्की से कहा।

"क्या उसे भी कोई फर्क नहीं पड़ा?" मीना ने अगला सवाल दागा।

"आप नाश्ता करें। ठंडा हो रहा है।" अल्फ़ी ने बात बदलनी चाही।

"एक ही जगह रहकर.... तुम कब तक भागोगे उससे?" मीना बात छोड़ने को तैयार नहीं थी।
"मि. हेनरी ने दूसरे शहर में मेरे लिए नौकरी की बात कर ली है। आप ठीक हो जाइए। फिर हम यहाँ से....चले जाएँगे।" अल्फ़ी का लहज़ा बिल्कुल सपाट था।

"अल्फ़ी!" मीना एक बार फिर से तड़पी।

"अब आगे बढ़ना है तो..... तो मैं सब कुछ पीछे छोड़ देना चाहता हूँ।" अल्फ़ी ने चेहरे के हर भाव को दबाकर कहा। मीना उसके चेहरे को बस देखती रह गई। कितनी आसानी से उसके बेटे ने अपनी सारी जिंदगी उसके... अपनी माँ के गिर्द लपेट ली थी। मीना के दिल का दर्द उसके चेहरे पर उतर आया था। अब वो और देर नहीं कर सकती थी।

उसने अपने चेहरे को कठोर किया और फिर बोली, "मुझे माया से मिलना है।"

ये सुनते ही दूध का गिलास उठाते हुए अल्फ़ी के हाथ कॉपे थे। एक तूफान तो उसके अंदर भी उठा जो उसकी ऑखों की सरहद पर आकर ठहर गया था।

"माँ! जब सब ठीक हो गया है तो आप...." अल्फ़ी ने बड़ी ही मुश्किल से अपने लहजे को सामान्य रखा था।

"ठीक नहीं... मैं सब खत्म करना चाहती हूँ। तुमने भी कहा था कि तुम कोई सवाल नही करोगे। और.... लता को भी बुलाओ।" मीना ने अल्फ़ी की नज़रअंदाज़ करते हुए कहा और दूध का गिलास मुँह से लगा लिया। अल्फ़ी ने बहुत ही लाचारी से उनकी तरफ देखा, मगर वो खुद में ही मशरूफ थी।
"ठीक है। मैं खबर भिजवा दूंगा। और... मैं रात देर से आऊंगा।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से हथियार डालते हुए कहा।

"कोई जरूरत नहीं! तुम भी यहीं रहोगे।" मीना ने हुक्म सुनाने वाले अंदाज में कहा।

अल्फ़ी एक आह भरकर रह गया। मीना ने उसे दोराहे पर लाकर खड़ा कर दिया था। दो दिनों से वो खुद को माया से बेवफाई करने के लिए तैयार कर रहा था। खुद को अंदर ही अंदर मार रहा था। वो उसका सामना नहीं कर सकता था और अब.... उसकी माँ उसे इस आग में चलने के लिए कह रही थी। पर वो उनकी बात नहीं टाल सकता था, इसलिए इस जहर को पीने के लिए राज़ी हो गया।

मीना ने भी उस काले अतीत का सामना करने का मन बना लिया था, जिसके काले साए में आज उनके बच्चों की खुशियाँ दाँव पर लग चुकी थी। अब उस अतीत से अल्फ़ी, माया और लता की मुलाकात का भी समय आ गया था, जिससे वो सारे जवाब जुड़े थे, जिन्होंने सबकी जिंदगी में भूचाल ला दिया था।

अल्फ़ी ने लता तक खबर भिजवा दिया कि मीना उससे और माया से मिलना चाहती है। हालांकि उसे ये यकीन नहीं था कि इतना कुछ होने के बाद लता उनके बुलावे पर मिलने आएगी। मि. हेनरी के आवास पर आमना-सामना होने पर वो ख़ासी नाराजगी से अपनी राह बदल लेती थीं। एक बार भी उन्होंने उससे मीना की तबीयत के बारे में नहीं पूछा। अल्फ़ी बस अपमान का घूंट पीकर रह जाता। उनके सामने भी

तो बड़े-बड़े दावे करके आया था वो और अब... उनसे नज़रें मिलाने की भी हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। इसलिए उसे समझ में नहीं आ रहा था कि अगर वो आ गए तो वो क्या करेगा?

मीना का संदेश मिलने के बाद इतने लंबे सालों के साथ का लिहाज करते
हुए लाख नाराज़गी के बाद भी लता, माया के साथ मीना से मिलने आ गई। माया अपने कमरे में आराम कर रही थी। लता के पीछे-पीछे जब माया ने कमरे में कदम रखा, तो उसने बड़ी ही हसरत भरी निगाहों से दरवाजे के पास खड़े हुए अल्फ़ी की ओर देखा, मगर वो सिर और ऑखें दोनों झुकाए बेहलचल खड़ा रहा, जैसे कि उसे किसी के आने से कोई भी फर्क ना पड़ा हो। ये अलग बात थी कि उसके अंदर एक तूफान बरपा हुआ था। आज पूरे दस दिनों के बाद उसने अल्फ़ी को देखा था, जो सारी जिंदगी साथ बिताने के बड़े-बड़े वादे करके गायब ही हो गया था। उसने अपनी माँ से पूछा, तो उन्होंने भी माया को मीना का फैसला सुना दिया। वो दिन था और आज का दिन.... उसका कोई पल ऐसा नहीं गुजरा... जब उसने अल्फ़ी को याद करके ऑसू ना बहाए हो और आज सामने होकर भी वो उससे बेखबर खड़ा था।

"कैसी हो?" लता ने मीना के पास बैठते हुए पूछा।

"ठीक ही हूँ।" मीना ने लता को जवाब देते हुए कहा। इस दौरान उसकी नज़रें माया की ओर ही थीं। मीना ने उसे बहुत ही ग़ौर से देखा। गोरा रंग मुरझाकर पीला पड़ गया था। चंद दिनों में ही खूबसूरत ऑखों के नीचे काले घेरे उभर आए थे। उसका सुता हुआ चेहरा और ऑखें बता रही थी कि वो इन दिनों किस नर्क से गुजर रही थी और अपनी इस सजा की वजह भी उसे पता नहीं थी। उसे क्या... किसी को भी पता नहीं थी। हमेशा मुस्कुराने और खिलखिलाने वाली माया बेहद ख़ामोश दिखाई दे रही थी। नज़रें झुकी हुई थीं और मीना जानती थी कि क्यों झुकी हुई हैं.... कि उठती तो सवाल करने की हिमाकत कर बैठतीं और खुद को इस बदतमीजी से उसने बचाकर रखा था।

मीना की नज़र माया से हटकर दरवाजे के पास खड़े अल्फ़ी की ओर गई, जो असहज सा ऑखें झुकाए खड़ा था क्योंकि माया के सामने नज़रें उठाने का हक़ उसकी माँ ने खुद उससे छीन लिया था। मीना की ऑखों में दर्द
उतरा और वो बिखर सी गई।

"मैं... मैं तुम तीनों से माफी माँगना चाहती हूं!" मीना ने बड़ी हिम्मत इकट्ठा करके कहा, जिस पर तीनों ने ही उसे हैरानी से देखा था।

"मैं जानती हूँ कि पिछले दस दिन हम चारों के लिए ही आसान नहीं रहे और इसकी वजह मैं... और सिर्फ मैं ही थी और अब मैं थक गई हूँ। गलती मेरी थी, जो भावनाओं में आकर मैंने इतना बड़ा कदम उठा लिया। पर सच मानो... किसी का बुरा नहीं चाहती थी मैं।" मीना ने सुबकते हुए कहा। उसे इस तरह आहत देखकर अल्फी उसकी ओर बढ़ा ही था कि मीना ने हाथ उठाकर उसे रोक दिया।

"मैं घुमा फिरा कर कुछ नहीं कहना चाहती। तुम तीनों के दिल में एक ही सवाल फाँस की तरह चुभ रहा होगा कि... आखिर मैंने ये क्यों किया? और आज... इस सवाल का जवाब मैं दूंगी।" कहकर रोती हुई मीना बुरी तरह से हाँफने लगी। अल्फ़ी तेजी से उसके पास आया और उसे संभालने लगा। मीना की उखड़ी हुई हालत देखकर माया और लता भी परेशान हो गए थे। अल्फ़ी उसे शांत कराकर उसी के पास बैठ गया। माया और लता भी मीना के आगे बोलने का इंतजार कर रहे थे।

"मैं आगे जो भी बोलने वाली हूँ... मैं जानती हूँ कि उसे सुनकर... तुम तीनों को हैरानी होगी। शायद इससे भी ज्यादा... धक्का लगे। मगर मैं जो बोलूंगी, उसे पूरा सुनना... उसके बाद ही कुछ बोलना।।" मीना ने तीनों की ओर देखते हुए कहा, जिस पर तीनों ने हामी भरते हुए सिर हिलाया था।

मीना ने एक गहरी साँस ली और फिर अपनी ऑखें बंद कर ली। शायद सब कुछ बताने से पहले वो खुद को भी तैयार कर रही थी। चारों ओर एक अजीब सी ख़ामोशी पसरी हुई थी, जिसे कोई भी तोड़ना नहीं चाहता था। आखिरकार मीना ने अपनी ऑखें खोली।
"तुम सब जानना चाहते हो ना... कि मैंने इंकार क्यों किया? मैं आज तुम सबको सारी बातें बताऊंगी क्योंकि अब इसे छिपाने का कोई मतलब नहीं रह गया है। लता! तुमने मुझे अपना एक राज बताया था ना! वैसा ही एक राज मेरे सीने में भी दफ्न है और यही दोनों राज ही मेरे इंकार की वजह हैं।" अपनी बात खत्म करते-करते मीना की नज़रें लता की ओर गई थीं। अल्फ़ी और माया ने भी हैरानी से उन दोनों की ओर देखा, जबकि ये सुनकर लता का चेहरा राख हो गया।

"राज! कैसा राज?" माया ने उलझन भरी नज़रों से लता की ओर देखते हुए पूछा।

"कोई राज नहीं है!" लता तमतमा कर अपनी जगह से उठते हुए बोली। उसकी ऐसी प्रतिक्रिया से सभी बुरी तरह से चौंके।

"पर माँ वो..." माया ने कहना चाहा, पर लता तुरंत ही उसे टोक गई।

"मैंने कहा ना! कुछ नहीं है। चलो यहाँ से!" माया का हाथ पकड़कर उसे खींचते हुए लता ने बहुत ही गुस्से से कहा। उसे इस तरह बौखलाया हुआ देखकर अल्फ़ी और माया दोनों ही सकते में आए थे। मगर लता किसी की परवाह किए बिना ही माया को अपने साथ लगभग घसीटते हुए आगे बढ़ गई।

"मुझे भी ऐसा ही लगा था। इसीलिए तो इंकार किया था मैंने।" मीना ने ऊँची आवाज में कहा। उसकी बात सुनकर लता के तेजी से बढ़ते कदम खुद ब खुद रूके थे।

"पर अब वो राज हमारे बच्चों की खुशियों के आड़े आ रहे हैं लता। मैंने अपनी जिद छोड़ दी, तुम भी छोड़ दो। बच्चों की खुशी से ज्यादा कुछ
मायने नहीं रखता।" इस बार मीना ने आग्रह करते हुए कहा।

"पर ये इतना जरूरी तो नहीं। फिर ऐसा क्यों कर रही हो?" लता ने मीना की ओर मुड़कर याचना भरी आवाज में कहा।

"क्योंकि पूरी सच्चाई तुम भी नहीं जानती और आज मैं वही तुम सबको बताना चाहती हूँ। मैं बच्चों को और इस तरह तकलीफ़ में नहीं देख सकती। अगर माया और अल्फ़ी को साथ जिंदगी बितानी है, तो उन्हें पूरा सच पता होना ही चाहिए।" इस बार मीना ने जैसे खुद को मजबूत करते हुए कहा।

"कैसा सच?" इस बार अल्फ़ी ने उत्सुकता दिखाते हुए पूछा।

अल्फ़ी का सवाल सुनकर मीना ने अल्फ़ी के बाद बारी-बारी से माया और लता की ओर देखा। जहाँ माया और अल्फ़ी के चेहरे पर एक कौतूहल दिखाई दे रहा था, वहीं लता का चेहरा बुझ सा गया था। पर सच तो यही है कि वो भी माया को इस तरह तकलीफ़ में नहीं देख सकती थी, इसलिए ना चाहते हुए

भी वो अब कोई प्रतिकार नहीं कर पाई और मीना के पास आकर बैठ गई। माया और अल्फ़ी भी उन दोनों पर नज़रें टिकाए बैठे हुए थे।

"मेरे इंकार की वजह ये है कि.... माया... एक डायन है।" मीना ने अपनी ऑखें बंद करके बड़ी ही मुश्किल से कहा।

और ये सुनते ही जैसे उस कमरे में एक धमाका हुआ। सभी अपनी जगह से उछल पड़े और मीना को अजीब नज़रों से घूरने लगे। मगर कहा किसी ने कुछ भी नहीं। बस मीना को हैरानी से देखते रहे।

"मैं सच कह रही हूँ।" सबकी बेयकीनी भरी नज़रें खुद पर चुभती हुई
महसूस कर मीना ने तेजी से कहा।

"लता मौसी! मैं माँ की तरफ से आपसे माफी चाहता हूँ। मुझे लगता है कि... ये अभी भी ठीक नहीं हुई हैं। आप लोग जा सकते हैं। हम आप दोनों को फिर कभी परेशान नहीं करेंगे।" अल्फ़ी ने लता के सामने अपने हाथ जोड़कर बहुत ही शर्मिंदगी से कहा।

माया ने भरी हुई नज़रो से अल्फ़ी की ओर देखा। इस पूरे तमाशे के बाद वो खुद को बेहद ठगा हुआ महसूस कर रही थी। वहीं मीना की बात से आहत लता ने गुस्से और दु:ख से भरी नज़र बारी-बारी से अल्फ़ी और मीना पर डाली और फिर माया को लेकर जाने लगी।

"मैं ऐना को जानती हूँ!" मीना की तेज आवाज लता के कानों तक पहुँची और एक बार फिर से वो रूक गई। उसने मुड़कर मीना की ओर जाँचती हुई नज़रों से देखा।

"कौन ऐना?" माया ने लता को देखकर पूछा।

"जिसने तुम्हें जन्म दिया है।" मीना ने बिना किसी लाग लपेट के कहा।

और ये सुनकर माया की ऑखें हैरत से फटी थीं। उसने उसी फटी हुई ऑखों से लता के धुंआ होते चेहरे की ओर देखा, जहाँ एक झिझक भी नज़र आ रही थी।

"जन्म दिया है से क्या मतलब?" अल्फ़ी ने माया के सफेद पड़ते चेहरे की ओर देखकर पूछा।

"मैं यहाँ आने से पहले कल्परूप गाँव में ही रहती थी। वहाँ के मशहूर 'वॉकर मेंशन' में किचन हेल्पर थी मैं। इसीलिए मैं ऐना को जानती हूँ।
वो उस समय 'बसेरा' की किचन हेल्पर हुआ करती थी। हम दोनों सब्जी मंडी या राशन की दुकानों में अक्सर टकरा जाते थे। इसलिए मैं उसे अच्छी तरह से जानती हूँ।" मीना ने बातों की शुरुआत करते हुए माया और अल्फ़ी को वो सारी बातें बताई, जो मीना और लता के बीच हुई थी और जिसे सुनने के बाद मीना ने माया और अल्फ़ी के रिश्ते से इंकार कर दिया था।

सारी बातें सुनने के बाद माया कटे पेड़ की नीचे गिर पड़ी। एक बिजली थी जो उस पर गिरी थी। उसे अभी भी यकीन नहीं हो रहा था कि वो औरत जिसने हजार तकलीफें सहकर भी उसके सारे नाज उठाते हुए उसे पाला था... वो उसकी माँ नहीं थी। उसने एक उम्मीद भरी नज़र लता की ओर डाली, तो उसकी झुकी हुई कॉपती पलकों ने मीना की बात की सच्चाई की गवाही दे दी। उसने अपने दोनों हाथ

जमीन पर टिकाए और धीरे-धीरे सुबकने लगी थी। उसकी ऐसी हालत देखकर अल्फ़ी अंदर से तड़प गया। वो उसे संभालने के लिए आगे बढ़ने ही वाला था कि उसे अपनी माँ से किया वादा याद आ गया और उसने अपने हाथ और पैर बहुत ही बेबसी से पीछे खींच लिए। उसके अंदर एक आग सी भड़की और उसने मीना की ओर मुड़कर देखा। वो भी बहुत ही तरस भरी नज़रों से माया को ही देख रही थी। लता सिर झुकाए दीवार से टिक गई थी कि खड़े रहने की ताकत अब उसमें भी नहीं थी।

"पर मुझे तो इसमें कोई ऐतराज जताने वाली बात नज़र नहीं आती। मैं लता मौसी को जानता हूँ और मेरे लिए ये ज्यादा मायने रखता है कि लता मौसी ने माया की परवरिश की है। मुझे उनकी परवरिश पर कोई शको सुबहा नहीं है।" आखिरकार अल्फ़ी ने भी अपने दिल की बात कह दी।

"इंकार की वजह ये नहीं थी। लता से मैंने भी यही कहा था... जो तुमने अभी कहा है। मेरे इंकार की वजह कुछ और है।" मीना ने अपनी बात रखते हुए कहा।
मीना की बात सुनकर अल्फ़ी ने लता की ओर देखा। लता ने भी भरी हुई ऑखों के साथ मीना की बात पर हामी भरी। अल्फ़ी ने अपनी जज़्बाती नज़रों से माया की ओर देखा और फिर उसने खुद को नहीं रोका। वो उसके पास जाकर घुटनों के बल बैठ गया। माया ने अपनी ऑखें अल्फ़ी की तरफ उठाई, तो अल्फ़ी का दिल सहम कर बैठ गया। उसकी ऑखें बुरी तरह से सूजी हुई थीं और अब रोते हुए इस क़दर लाल हो चुकी थीं जैसे कि उसके अंदर का सारा खून उन ऑखों में ही उतर आया हो। अल्फ़ी के अंदर भी कुछ उबलने लगा था।

"तो फिर क्या वजह थी?" अल्फ़ी ने ही मीना से सवाल किया।

"वजह ऐना है... क्योंकि ऐना... एक... डायन है।" मीना ने बड़ी ही मुश्किल से कहा। उसकी ये बात सुनकर जहाँ एक ओर लता और माया ने मीना की ओर चौंककर हैरानी से देखा, वहीं अल्फ़ी एक बार फिर से गुस्से से बंद ऑखों के साथ अपने होंठ भींच गया।

"ये क्या आपने डायन-डायन लगा रखा है माँ? आप लोगों ने तो बताया कि उस बसेरे में सताई हुई और मज़लूम औरतें और लड़कियाँ रहती हैं। हम सब जानते हैं कि समाज ज्यादातर ऐसी महिलाओं को डायन का तमगा थमा देता है। पर ऐसा नहीं होता माँ। वो सब भी आम इंसान होते हैं। आपकी तरह.... मेरी तरह!" अल्फ़ी ने अपनी माँ को समझाना चाहा। उसे अपनी माँ के मुँह से इस तरह की बातें बहुत ही छिछली और निम्न स्तर की लगी थीं।

"पर तुम्हें किसने कहा कि तुम कोई आम इंसान हो!" अपने जज़्बातों को बड़ी ही मुश्किल से क़ाबू में करते हुए मीना ने ये बात कही।

"क्या मतलब?" इस बार अपना जिक्र सुनकर अल्फ़ी बुरी तरह से चौंका
था।

"यही कि मेरे इंकार की दो वजहों में पहली वजह है कि.... माया... एक डायन है और.... दूसरी ये कि.... तुम... तुम एक... पिशाच हो।" अपनी बात कहकर मीना हथेलियों में अपना चेहरा छिपाकर जोर-जोर से रोने लगी। उसके इतने सालों की कोशिश आज जाया हो चुकी थी। वहीं इस रहस्योद्घाटन के बाद लता, माया और अल्फ़ी तीनों ही सन्न रह गए। तीनों ही अपनी हैरत से फटी ऑखों से उसे एकटक देख रहे थे। किसी ने भी उसे चुप कराने की कोशिश नहीं की।

"क्या.... कहा आपने? कौन हूँ मैं? पिशाच!" अल्फ़ी ने अपनी खोखली सी आवाज़ में कहा, जो उसे खुद कहीं दूर से आती हुई लगी।

"हाँ!" अपना चेहरा हथेलियों से आजाद करके मीना सुबकते हुए बोली।

"बस करो माँ! बस कर दो। मैंने कहा था ना आपसे! मैं माया से दूर चला जाऊंगा। कभी उसका जिक्र भी नहीं करूंगा। फिर क्यों आप ये सब कर रही हैं? ऐसा मत कीजिए। आप हम सबको और तकलीफ़ पहुँचा रही हैं... ऐसी बकवास करके। मैंने आपसे कहा था कि आप जो चाहती हैं... मैं वही करूंगा। फिर क्यों?" भड़के हुए अल्फ़ी ने बहुत ही मुश्किल से अपने अंदर के गुस्से को रोकते हुए कहा। इस कोशिश में उसके शरीर से लेकर उसकी आवाज भी काँप गई थी।

"क्योंकि मैं तुम्हें तकलीफ़ में नहीं देख सकती। मैं हमेशा से तुम्हारी खुशी चाहती थी अल्फ़ी... और आज भी चाहती हूँ। मैं अब तुम दोनों को अलग नहीं करना चाहती। पर खुद को और तुम सबको तकलीफ़ इसलिए पहुँचा रही हूँ कि तुम दोनों को अपना पूरा सच पता होना चाहिए। ये बहुत ही जरूरी है।" मीना ने भी अपने एक-एक शब्द पर वजन रखते हुए कहा।
और फिर मीना ने बिना रूके उन तीनों को कल्परूप गाँव, वॉकर मेंशन, बसेरा, पिशाच समुदाय और डायन समुदाय के बारे में हर एक बात बता दी और वो तीनों.... मुँह फाड़े सब कुछ ऐसे सुनते रहे जैसे कि कोई फैंटसी कहानी सुन रहे हैं। मीना की सारी बातें सुनने के बाद जहाँ माया और लता सदमे की हालत में थे, वहीं अल्फ़ी के दिल में एक और सवाल ने अपना सिर उठाया।

"अगर मैं... पिशाच समुदाय का हूँ, तो मेरे पिता.... कौन हैं?" अल्फ़ी ने भरी हुई आवाज में अपना एक पुराना सवाल दोहराया था।

"तुमने नाम सुना है उनका भी. हेनरी के मुँह से। सर विलियम अल्फ्रेड वॉकर!" आखिरकार अल्फ़ी को उसके सवाल का जवाब देते हुए मीना ने कहा। अब तक वो बहुत संभल गई थी और बहुत ही आराम से सवालों के जवाब दे रही थी।

"और मैं..."

"तुम.... अल्फ्रेड विलियम वॉकर हो। मैं तुमसे तुम्हारे पिता का नाम छीनना नहीं चाहती थी, पर मैं मजबूर थी। तुम लोग नहीं जानते वहाँ हालात कितने ख़ौफनाक होते हैं। जब मेरी जान पर बन आई थी, तब मजबूर होकर तुम्हारे पिता ने मुझे चुपके से यहाँ मि. हेनरी के पास भिजवा दिया था। मुझे यहाँ आने के बाद ही पता चला कि मैं माँ बनने वाली हूँ। ये बात मैंने तुम्हारे पिता से छिपाकर रखी क्योंकि हम दोनों उनके लिए परेशानी ही बनते। सब जानने के बाद वो हमें कभी अकेला नहीं छोड़ते और इसके नतीजे में हम तीनों को अपनी जान गँवानी पड़ती। इसलिए मैंने दूर रहकर.... चुप रहकर हम तीनों की जिंदगी चुनी। उस तरह मरने से... मुझे इस तरह जीना... ज्यादा सही लगा।" अल्फ़ी को उसकी पूरी पहचान बताते हुए मीना ने कहा।
"तो इसलिए आप हमारी शादी के खिलाफ थी।" अल्फ़ी ने पूरी बात समझते हुए कहा।

"हाँ! क्योंकि तुम दोनों की शादी के लिए मुझे ये राज तुम दोनों के सामने खोलना पड़ता और मैं ये नहीं चाहती थी। पर मैं नहीं देख सकती अल्फ़ी! तुम दोनों को ऐसे तड़पते। तुम्हें मेरे लिए अपनी हर खुशी को जलाते हुए। मैं इतनी स्वार्थी नहीं हो सकती थी। इसलिए मैंने तुम दोनों को तुम्हारी सच्चाई बता दी, ताकि तुम दोनों आने वाले समय में हमेशा सचेत रहो।" मीना ने उन दोनों को चेतावनी भरे लहजे में

कहा।

"सचेत! पर किससे?" अल्फ़ी ने पूछा।

"एक पिशाच और डायन के बीच किसी प्रकार का संबंध या शादी कोई आम या आसान बात नहीं है। ऐसा करने वालों की सजा बस मौत है। इससे कम और कुछ नहीं। दोनों ही समुदाय अपने-अपने अहंकारों में जी रहे हैं। वो एक-दूसरे के लिए कोई रहम नहीं रखते। अगर उन लोगों को तुम्हारे बारे में थोड़ी सी भी भनक लग गई, तो क़यामत आ जाएगी।" मीना ने सिहरते हुए कहा।

"पर मैंने तो सुना है कि पिशाच बच्चे पैदा नहीं कर सकते, बल्कि पिशाच जिसका खून पी लें, वो ही पिशाच बन जाते है। तो फिर... अल्फ़ी का पैदा होना... कुछ अजीब बात नहीं है क्या?" इस बार सवाल लता ने पूछा।

"हाँ! एक आम धारणा यही है और पहले ऐसा ही होता था। पर पिशाच समुदाय का हर पिशाच खून के सहारे जिंदा नहीं रहता। वो भी आम इंसानों की तरह ही उनके बीच घुल-मिल कर रहते हैं। उन्हीं की तरह जीवन जीते हैं, जैसे कि अल्फ़ी। पिशाच समुदाय के शक्तिशाली सदस्य ही किसी का खून पीकर और फिर अपना खून पिलाकर उन्हें पिशाच में बदल सकते हैं और ऐसे बहुत कम पिशाच हैं। मगर इस तरह से उनकी शुद्ध
और उच्च रक्त वाली पहचान को चोट पहुँचती थी। इसलिए उन्होंने इसका भी काट ढूंढ लिया। इसके लिए वो एक ख़ास किस्म की दवा का सेवन करते हैं, जब भी उन्हें अपना परिवार बढ़ाना होता है। इस प्रकार से वो संतान उत्पन्न कर सकते हैं। अल्फ़ी भी इसी तरह पैदा हुआ है।" मीना ने लता के सवाल का जवाब देते हुए कहा।

"पर माँ... क्या ये जरूरी है कि मैं पिशाच ही हूँ। मैं आपकी तरह ही एक आम इंसान भी हो सकता हूँ ना!" अल्फ़ी ने एक उम्मीद के साथ कहा।

"नहीं अल्फ़ी! आमतौर पर पिशाच संतान उत्पन्न नहीं कर सकते, मगर उस दवा के असर से जो संतान उत्पन्न होती है, वो पिशाच ही होती है।" मीना ने अल्फ़ी की उम्मीदों को तोड़ते हुए कहा।

"और डायन! क्या डायनों के साथ भी यही बात होती है।" अबकी बार सवाल माया ने किया था।

"नहीं! डायनें संतान पैदा कर सकती हैं। पर उनकी कन्या संतानों को ही उनकी शक्ति मिलती है। उसमें भी पहली कन्या संतान पूर्ण रूप से डायन होती है... वहीं उसी डायन की दूसरी कन्या संतानों को अपनी शक्तियों की जागृत करने या तीव्र करने के लिए सिद्धियाँ प्राप्त करनी पड़ती हैं। पर फिर भी वो पहली संतान जितनी ताकतवर नहीं होती हैं।" मीना ने माया की जिज्ञासा शांत करते हुए कहा।

"और मैं.... अपनी माँ की पहली संतान हूँ। है ना! इसलिए आप मुझे लेकर इतनी श्योर हैं।" माया ने मीना के जवाब पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा।

"हाँ! ऐना ने ही मुझे ये सब बताया था, जब उसे मेरे और विलियम के बारे में सब पता चला था। वो जानती थी कि मैं उन सबके बारे में सब जानती
हूँ। अपने गर्भवती होने की खबर भी उसने मुझे दी थी। फिर चार महीने पूरे होते ही वो अपने गाँव चली गई क्योंकि उस समय डाकिनी भी गर्भवती थी और सभी का ध्यान उन्हीं की तरफ लगा हुआ था और

जब वो वापस आई तो एक बुरी खबर साथ लाई कि उसने एक बेटे को जन्म दिया था, जो जन्म के कुछ देर बाद ही मर गया। सभी के साथ-साथ मुझे भी बहुत अफसोस हुआ था।" मीना ने बहुत ही अफसोस भरे शब्दों के साथ कहा।

"एक मिनट! डायन की शक्तियाँ उसकी बेटियों को मिलती है, तो उनके बेटों का क्या होता है?" अल्फ़ी ने एक और सवाल किया।

"डायनें आमतौर पर बेटियों को ही जन्म देती हैं, पर वो अपने से ज्यादा शक्तिशाली पुरूष या किसी ऐसे पुरूष... जिसके सामने वो जज़बाती रूप से कमजोर हो... से संबंध बनाने के बाद बेटे को भी जन्म दे सकती है और ऐसी स्थिति में वो संतान अपने पिता की तरह होती है। अगर वो आम इंसान हैं, तो वो बच्चा भी आम ही होगा। ऐसी हालत में डायन उस संतान को उसके पिता को सौंप देती है।" मीना ने बताया।

"और वो पुरूष मान जाते हैं।" माया ने पूछा।

जवाब में मीना पहले तो खुलकर हँसी और फिर बोली, "ये तो डायनों का अपना रहस्य है कि वो ऐसा कैसे कर पाती हैं? इसीलिए वो कभी भी आम इंसान के सामने कमजोर नहीं पड़ती, जिससे बेटे की पैदाइश की संभावना नहीं के बराबर होती है। वो हमेशा उसी पुरूष को चुनती है, जो उससे कमजोर हो। इस तरह से जन्मजात डायनों की संख्या बढ़ती है।" मीना ने कहा।

"जन्मजात डायन मतलब! तो क्या.... सचमुच कोई आम औरत या लड़की भी साधना करके डायन बन सकती है, जैसा कि लोग कहते हैं?" लता ने पूछा।
"हाँ! ऐसी कोशिशें होती हैं, पर ये इतना आसान नहीं होता। वो कम से कम शक्तिशाली डायनें तो नहीं बनती। हाँ! यदि कोई शक्तिशाली डायन लंबा जीवन पाने के लिए किसी आम लड़की या औरत के शरीर का इस्तेमाल करती है तो वो एक शक्तिशाली डायन बनती है।" मीना ने बात साफ करते हुए कहा।

"और अगर कोई डायन गलती से... या फिर जानबूझकर खुद से ज्यादा शक्तिशाली पुरूष से संबंध बनाए, तो उससे उत्पन्न संतान कैसी होती है?" अल्फ़ी ने पूछा।

"अगर संतान लड़का हो, तो अपने पिता की तरह ही होता है। पर... अगर इस तरह के संबंधों से कोई कन्या जन्म लेती है, तो उसकी शक्तियों का अनुमान लगाना मुश्किल ही होता है क्योंकि उसमें अपने माता-पिता दोनों की शक्तियाँ निहित होती हैं। सबसे शक्तिशाली डायन वो होती है, जिसकी माँ एक शक्तिशाली डायन और पिता एक शक्तिशाली तांत्रिक हो। ऐसी डायन को काबू कर पाना कभी भी आसान नहीं होता।" मीना ने बताया।

"तो आपका मतलब है कि.... मेरे पिता के पिशाच होने की वजह से मैं पिशाच हूँ और.... एक डायन की पहली संतान होने के कारण माया डायन है।" अल्फ़ी ने मीना की पूरी बातों का सार निकालते हुए कहा।

"हाँ!" मीना ने कहा।

"पर हम दोनों को ही कभी ऐसा नहीं लगा कि हम दूसरों से अलग हैं।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से

आपत्ति जताई।

"क्योंकि तुम दोनों उस माहौल में नहीं हो, जहाँ ये ताकतें विकसित और तीव्र होती हैं। हम दोनों ने ही तुम्हें किसी आम इंसान की तरह पाला है
इसलिए तुम्हें कभी भी अपनी शक्तियों का भान नहीं हुआ। इसलिए वो शक्तियाँ तुम्हारे अंदर दबी हुई हैं और इसीलिए... तुम दोनों आज तक उन लोगों की नज़रों में भी नहीं आए हो। पर... तुम दोनों के साथ होने पर हो सकता है कि तुम्हारी सोई हुई शक्तियाँ जागृत हो जाएँ... तीव्र हो जाएँ। ऐसी हालत में तुम उनकी पकड़ में आ सकते हो और ये बिल्कुल भी अच्छा नहीं होगा और इसलिए मैं नहीं चाहती थी कि... तुम दोनों की शादी हो।" मीना ने अपनी फ़िक्र जाहिर करते हुए कहा।

"तो फिर..."

"फिर ये... कि मैं जिंदगी भर भागते-भागते थक गई हूँ। अब मैं चैन से रहना चाहती हूँ। मैंने सोचा था कि अल्फ़ी का घर बस जाए तो गंगा नहा लूँ मैं। पर मैंने ही सब बिगाड़ दिया। पर अब नहीं। अब मैं चाहती हूँ कि अल्फ़ी जो चाहता है... वो उसे दे दूँ... इस जिम्मेदारी के साथ कि वो उसकी हिफाजत अपनी जान से ज्यादा करेगा।" मीना ने माया और अल्फ़ी की ओर देखते हुए कहा।

"पर मीना! तुमने जो भी बताया! उसका क्या?" लता ने ख़ौफ भरी आवाज में कहा।

"दर्द तो जिंदगी में हमेशा रहने है लता। तो क्या ये अच्छा नहीं होगा... कि खुश रहने के बहाने ढूंढे जाएँ। हम बच्चों से खुश रहने के बहाने नहीं छीन सकते। ये सब भी मैंने तुम सबको इसलिए बताया कि कोई तुम्हें बहका ना सके और दोनों हमेशा सावधान रहो। उस कल्परूप गाँव से हमेशा दूर रहना। मत जाना उस तरफ कभी।" मीना ने अल्फ़ी का हाथ पकड़ते हुए कहा और फिर उसके सीने में छिप गई। अल्फ़ी ने भी उन्हें खुद में समेट लिया। माया ने भी अपनी माँ के ऑचल में पनाह ले ली कि उसके लिए भी उसकी यादों में माँ की जगह बस लता के लिए ही थी।
इतनी बेचैनियों और आंसुओं के बाद एक बार फिर से खुशियों भरी जिंदगी ने उनकी ओर कदम बढ़ाए थे। एक बार फिर से सभी मुस्कुरा रहे थे। आने वाली खुशी के लिए रास्ते खोले वो इस बात से पूरी तरह से अंजान थे कि इस रास्ते से जल्द ही एक तूफान गुजरने वाला था।

(इस कहानी में दी गई जानकारियाँ हमारी लिखी इनसाइक्लोपीडिया पर आधारित है। कृपया गूगल बाबा को इसके लिए परेशान ना करें। हमारी बनाई दुनिया में हमारे बनाए नियम चलते हैं। तो... मुस्कुराइए और पढ़ते रहें 😊)

वो रात का समय था। दूसरा पहर बस खत्म होने को था और वो खंभे पर टिके हुए आसमान के चाँद को टकटकी लगाए तक रही थी। तीन दिनों तक हुई बेमौसम बारिश के बाद आज तीसरी रात चाँद के दीदार हुए थे। हवा के हल्के झोंके उसके बालों से खेल रहे थे और चाँद की रोशनी में उसका खूबसूरत चेहरा जैसे उस चाँद का ही अक्स बन गया था। फर्क था तो बस इतना कि आसमान का चाँद जितने सूकून से था, जमीन का ये चाँद उतना ही बेचैन था। उसके दिमाग में एक तूफान सा उठा हुआ था, जहाँ कोई किनारा नज़र नहीं आ रहा था।

"माया!"

उस ख़ामोशी में एक फुसफुसाती हुई सी आवाज़ उभरी, मगर वो तो खुद में ही खोई रही।
"माया!"

इस बार आवाज थोड़ी तेज और साफ थी, जिसे सुनकर माया ने चौंकते हुए खंभे से टिका अपना सिर हटाया और बिना हिले अपने कानों को मुस्तैद किया।

"अरे इधर देखो!"

और उसने आवाज की दिशा में पीछे मुडकर देखा तो.... उसके होश उड़ गए। वो दौड़कर वहाँ गई और बालकनी की रेलिंग पर लटके हुए अल्फ़ी को फैली हुई ऑखों से देखते हुए बोली, "तुम इस समय यहाँ क्या कर रहे हो?"

"इतनी बारिश हुई तो..... यहाँ मछली पकड़ने आया हूँ। मेरे घर में बालकनी नहीं है ना! इसलिए!" अल्फ़ी ने उसे देखते हुए चिढ़ से कहा।

"हैं!" माया नासमझी के साथ चौंकी।

"मेरी माँ! फिसलन है यहाँ बहुत । ऊपर खींच... गिर जाऊंगा वरना!" अल्फ़ी एक बार फिर से बिगड़ कर बोला और माया को जैसे होश आया और उसने अल्फ़ी को ऊपर आने के लिए सहारा दिया। ऊपर आकर अल्फ़ी ने अपने कपड़े झाड़ने के बाद अपने हाथ झटकते हुए जब माया की ओर देखा तो वो अपनी ऑखों में अजीब से भाव लिए उसे घूर रही थी।
"क्या हुआ? ऐसे क्या देख रही हो?" अल्फ़ी ने भी पैनी नज़रों से उसे देखते हुए पूछा। उसकी बात सुनकर माया ने अपने हाथ पीछे बांधे और थोड़ी बेतकल्लुफ़ चाल के साथ उसके पास आकर उसके दाऍं-बाऍं झांकने लगी। उसकी इस अजीब सी हरकत से अल्फ़ी हैरानी से दो-चार हुआ था।

"ये.... इस तरह क्या देख रही हो?" उसने भी अपने दाऍं-बाऍं देखते हुए पूछा।

"देख रही हूँ कि तुम्हारे पंख कहाँ हैं? मुझे लगा था कि सब जानने के बाद शायद..... तुम चमगादड़ की तरह फड़फड़ाते हुए आओगे! पर तुम तो अभी भी बंदरों की तरह लटक-लटक कर आ रहे हो।" माया ने मजाक उड़ाने वाले लहज़े में कहा। उसका लहज़ा समझकर अल्फ़ी ने भी अपनी भौंह चढ़ाई थी।

"नहीं! वो क्या है ना! एक डायन ने अपने काले जादू में जकड़कर मेरी ज़िन्दगी ही उथल-पुथल करके रख दी है। अब सिर कहाँ हैं... पैर कहाँ हैं.... होश कहाँ हैं.... और मैं खुद कहाँ हूँ? मुझे भी नहीं पता है।" अल्फ़ी ने उसके सामने रेलिंग से टिकते हुए उसी के अंदाज में कहा।

"हुँह! जवाब तो सही दिया करो।" माया ने थोड़े अंदाज से कहा।

"तो सवाल भी सही किया करो।" अल्फ़ी ने भी उसी के अंदाज में कहा।

"अच्छा! सवाल तो मैंने बिल्कुल सही पूछा था.... यहाँ इस वक्त क्या कर रहे हो?" माया ने इस बार संजीदगी से कहा।

"तुम क्या कर रही हो?" अल्फ़ी ने पलटकर सवाल किया।
"मैं तो चाँद को देख रही थी। पूरे दो रातों के बाद आया है। खूबसूरत है ना!" माया ने आसमान के चाँद की ओर देखते हुए कहा।

"हाँ! है तो सही! पर मेरा चाँद ज्यादा खूबसूरत है, जो मुझे तीन दिनों के बाद दिखा है। इसीलिए तो यहाँ आया हूँ।" अल्फ़ी ने माया पर तारीफ भरी शोख नज़र डालते हुए कहा।

"हम्म! लग रहा है... आजकल बहुत किताबें पढ़ी जा रही हैं।" माया ने अपनी एक भौंह चढ़ाकर दिलफरेब मुस्कुराहट के साथ कहा।

"किताबें तो नहीं.... पर तुम्हारा चेहरा जरूर पढ़ सकता हूँ।" अल्फ़ी ने उसके चेहरे पर अपनी नज़रें गहरी करते हुए कहा।

"अच्छा! तो बताओ... क्या लिखा है मेरे चेहरे पर?" माया ने जैसे उसे चुनौती देते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी उसके बिल्कुल सामने आकर अपने चेहरे को उसके चेहरे के सामने लाते हुए बोला, "हम्म! फिलहाल तो कुछ सवाल लिखे हैं.... कुछ परेशानियाँ हैं और.... ढेर सारी बेचैनियाँ लिखी हैं। सही कहा?"

उसकी बात सुनकर माया के होंठों की मुस्कुराहट सिमट गई और वो बस उसे देखते रह गई। माया ने उस पर से अपनी नज़र हटाई और सामने देखने लगी।

"सही कह रहे हो... और.... मुझे ये भी पता है कि... मेरे सवालों का जवाब किसी के पास नहीं है। बस इसलिए दिल बेचैन हो रहा है।" माया ने सामने शून्य में नज़र टिकाए हुए कहा।
"और क्यों चाहिए तुम्हें ये जवाब?" अल्फ़ी ने भी उसी की तरह सामने की ओर देखते हुए पूछा।

"पता नहीं! पर जानना चाहती हूँ कि क्यों उन्होंने मुझे खुद से अलग किया?" माया ने हल्की सी काँपती हुई आवाज में कहा।

"और इसका जवाब मिलने से क्या बेहतर हो जाएगा या फिर... तुम क्या बेहतर कर लोगी? " अल्फ़ी ने इस बार माया की ओर देखकर कहा।

"क्या तुम्हें तुम्हारे पिता के बारे में जानने की दिलचस्पी नहीं है?" सवाल करते हुए माया ने अल्फ़ी के चेहरे को ग़ौर से देखा था।

उसका सवाल सुनकर अल्फ़ी के चेहरे पर एक तेज मुस्कुराहट आई और वो बोला, "नहीं! वैसे भी जिंदगी ने जो मुझे दिया है... उससे ज्यादा कुछ और नहीं चाहिए मुझे।"

"सच में!" माया ने उसकी बातों को उसकी ऑखों से तौला, जहाँ उसे सिर्फ और सिर्फ ईमानदारी ही नज़र आई।

"हाँ! तुम्हें पता है! हमारी किस्मत ना... हमारी मुट्ठी में बंद होती है। अगर उस मुट्ठी में हद से ज्यादा कुछ भरोगी, तो सब रेत की तरह फिसल जाएगा और... मुझे लगता है कि हमारी मुट्ठियाँ इतनी भरी हुई हैं कि कुछ और की गुंजाइश ही नहीं है। सब तो है हमारे पास! एक खुशहाल जिंदगी... फिक्र करने वाली मांओं का प्यार और... एक-दूसरे का साथ। अगर माँ कहती हैं कि... हमारा उनसे दूर रहना ही सबके लिए बेहतर है तो... मैं भी यही मानना हूँ। मैं जो नहीं है... उसकी फिक्र में ... जो है.. उसे नहीं गँवा सकता।" अल्फ़ी आसमान को ताकते हुए बोला।

माया ने परखती हुई नज़रों से अल्फ़ी की ओर देखा, जिसका निश्छल
मुस्कुराता हुआ चेहरा चॉद की रोशनी में और भी चमक रहा था। उसकी मुस्कराहट देखकर माया के होंठ भी मुस्कुराने पर मजबूर हो गए थे।

"सच कहूँ... कभी नहीं लगता कि तुम मुझसे दो साल छोटे हो। तुम्हारी इतनी सुलझी हुई बातें हमेशा तुम्हें मुझसे ज्यादा समझदार बनाती हैं।" माया ने तारीफ करती हुई नजरों से उसे देखते हुए कहा और ये सुनते ही अल्फ़ी ने पूरी चिढ़ के साथ अपनी ऑखें और अपने होंठ भींचे थे और रेलिंग पर उसकी ऊंगलियाँ पूरी ताकत से कस गईं।

"ये 2 सालों का राग अलापना बंद करोगी तुम! सच में.... कभी-कभी लगता है कि ऐसा क्या करूँ मैं.... कि ये 2 सालों का फर्क मिट जाए।" कहते हुए अल्फी ने गुस्से में अपना सिर झटका और उसकी इस तिलमिलाहट पर माया खुलकर हँसी थी।

"श्श्श्श्!" अल्फ़ी ने अपनी उंगलियों के इशारे से उसे चुप रहने के लिए कहा, जिस पर माया ने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी को काबू करते हुए अपने होंठ भींचे।

"अभी कोई आ जाता तो!" अल्फ़ी ने उसे झिड़कते हुए कहा।

"कोई आए या नहीं... जाओ यहाँ से।" माया ने उसके सीने पर अपनी दोनों हथेलियाँ रखकर उसे धक्का देते हुए कहा।

"अरे!" अल्फ़ी ने झूठी नाराज़गी के साथ उसकी दोनों कलाईयाँ पकड़ी और उसे खुद से लगाते हुए दोनों कलाईयाँ माया की पीठ की ओर बांध दीं। उसकी इस हरकत से माया की ऑखें हैरानी से फटकर और भी बड़ी-बड़ी हो गईं।

"एक तो इस बिन मांगी बारिश ने परेशान कर रखा है। अब तुम भी करो।
तुम्हें देखे बिना ये तीन दिन कैसे गुजरे? पता भी है तुम्हें!" माया की हैरत से फटी हुई ऑखों में झांकते हुए अल्फ़ी ने उसकी नाक से अपनी नाक रगड़ी।

उसे अपने इतने करीब पाकर माया ने अपने उड़ते हुए होश बड़ी मुश्किल से वापस पकड़े और अपने

सूखते गले को तर करते हुए बोली, "अच्छा! फिर तो इसे और बरसना चाहिए।"

उसकी बात का जवाब देने लिए अल्फ़ी ने मुँह खोला ही था कि बालकनी के बाहर एक बार फिर से शुरू हुई बारिश ने उसके शब्दों को बाहर आने से रोक दिया। माया ने भी गर्दन पीछे करके होती बारिश को अजीब सी नज़रों से देखा।

"अरे यार! यकीन आ गया है माँ की बात पर कि तुम डायन हो। साबित करने की जरूरत नहीं है।" अल्फ़ी ने उसे तंग करने की नीयत से कहा, जिस पर माया ने उसे घूरकर देखा।

"मजाक! मजाक कर रहा था!" माया की पैनी नज़रों को महसूस करते हुए अल्फ़ी ने कहा।

"माया! अल्फ़ी!"

माया आगे कुछ कहती, उससे पहले ही अल्फ़ी के पीछे से लता की घुड़कती हुई आवाज आई, जिसे सुनकर दोनों की ऑखें सदमे से बस फट ही गईं। अल्फ़ी की पकड़ बरबस ही माया की कलाईयों से छूटी और माया धीरे से उससे अलग हुई। मगर दोनों ही उसी तरह ही खड़े रहे। वो तो शुक्र था कि जहाँ लता खड़ी थी, वहाँ से अल्फ़ी की बस पीठ नज़र आ रही
थी। माया ने अल्फ़ी की गर्दन के पीछे से सीने पर हाथ बांधे खड़ी लता को देखा और फिर वो बिना कोई देरी किए अपने धुऑ निकलते हुए चेहरे के साथ वहाँ से भागकर घर के अंदर घुस गई। लता की नज़रों ने आखिर तक उसका पीछा किया और फिर उसकी नज़रें बुत की तरह मुट्ठियाँ भींचकर खड़े अल्फ़ी की ओर मुड़ी। लता ने अपना सिर हिलाया और धड़धड़ाती हुई अल्फ़ी के पास पहुँची। उसे अपने पास जानकर अल्फ़ी ने ऑखें बंद करते हुए दाँतों के बीच जीभ फँसाई थी। उसे इस तरह खड़ा देखकर लता ने उसका दाहिना कान बेदर्दी से उमेठ दिया।

"आह! आह! मौसी!" दर्द से बिलबिलाता हुआ अल्फ़ी अपना कान छुड़ाने की कोशिश करता हुआ लता की ओर मुड़ा। दर्द उसके चेहरे पर उतर आया था।

"क्या आह-आह? यहाँ क्या कर रहा है?" लता ने उसे फटकार लगाते हुए पूछा।

"वो मौसी.... वो मैं.... आपकी तबीयत पूछने आया था। यहाँ आने के बाद याद आया... कि आप तो... सो गई होंगी। तो बस... माया से आपके बारे में ही... पूछ रहा था। वो माँ ने बताया था कि... आपकी तबीयत...." लता की उंगलियों से अपना कान छुड़ाकर उसे सहलाते हुए अल्फ़ी बोला।

"वो तो 2 दिन पहले खराब थी। तुम्हें खबर देने वाला कबूतर कुछ ज्यादा धीमा नहीं है क्या? मुझे उल्लू समझ रखा है। अच्छी तरह पता है मुझे कि तुम किसकी तबीयत जानने के लिए आए थे। बस अब यही काम रह गया है कि तुम दोनों की पहरेदारी करूं मैं। नहीं होता बुढ़ापे में मुझसे ये सब। कल ही तुम्हारी माँ से बात करती हूँ।" लता ने अल्फ़ी के सामने अपनी तर्जनी उंगली हिलाते हुए धमकी भरी आवाज में कहा।

"अरे मौसी! ऐसा गजब मत करना। दोनों टांगें तोड़ देंगीं वो मेरी।" अल्फ़ी
ने अपने सफेद होते चेहरे के साथ कहा।

"अच्छी बात है ना! मोटा सा डंडा मैं ले जाकर दूंगी उसे इस नेक काम के लिए। ऐसे तोड़े तुम्हारी टांगें कि एक हफ्ते बिस्तर से ना उठ सको तुम।" लता ने अपनी ऊंगली उसकी ओर उठाकर आगे बढ़ते हुए कहा।

"माफ कर दो मौसी। फिर नहीं होगी ऐसी ग़लती। सच्ची!" अल्फ़ी ने अपनी गर्दन को चुटकी में पकड़ते हुए कहा।

"अपनी माफी रखो अपने पास! मुझे तुम पर... नहीं... तुम दोनों पर ही... रत्तीभर भी भरोसा नहीं है। कल ही मीना से मिलकर तुम दोनों की शादी की तारीख पक्की करती हूँ। तब तक खबरदार... जो इधर का रूख भी किया। जाओ यहाँ से!" लता सख़्त लहज़े में उसे घुड़कते हुए बोली।

पहले तो लता की बातों को समझने के लिए अल्फ़ी की ऑखें सिकुड़ी और फिर जैसे ही बात समझ में आई उसकी ऑखें हैरत से फैल गईं।

"अ... हाँ.... हाँ!" लड़खड़ाती हुई ज़बान में कहते हुए अल्फ़ी तेजी से पलटा और उतनी ही फुर्ती से बालकनी से नीचे उतर गया।

"अरे नहीं...." लता के कुछ कह पाने से पहले ही वो बालकनी से नीचे उतर चुका था। लता दौड़कर बालकनी के पास आई और नीचे देखने लगी। वो तेजी से वहाँ से भागता हुआ जा रहा था। एक दो बार उसने मुड़कर लता की ओर भी देखा। उसकी इस हड़बड़ाहट पर लता के चेहरे पर एक बेहिचक मुस्कान आई थी।

****

अगले दिन पंडित जी से पूछने के बाद लता और मीना ने आपसी सलाह-मशवरे के बाद दस दिन बाद ही उन दोनों का विवाह तय कर दिया। उन दोनों ने मि. हेनरी को भी इसकी खबर कर दी। सुनने में सब बहुत सामान्य लग रहा हो, मगर इतना भी नहीं था। आखिरकार एक पिशाच और डायन की शादी थी। हालांकि उनकी पहचान और उनकी शक्तियाँ उनके अंदर ही कहीं दबी हुई थीं पर पवित्र मंत्रोच्चार से उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? इससे वो चारों ही अनभिज्ञ थे। इसलिए मीना और लता ने सिर्फ अपनी उपस्थिति में घर पर ही उनका विवाह संस्कार संपन्न करवाया। शायद उन सभी के साफ मन का ही प्रभाव था कि सारा कार्य सफलता से संपन्न हो गया।

इसके बाद उन्होंने मि. हेनरी की मदद से उनके घर में ही सबसे छिपकर ईसाई रीति-रिवाजों से भी विवाह किया। मीना और लता उनकी माँ थीं, पर इस बात से भी कोई इंकार नहीं था कि उन दोनों का रक्त संबंध क्रिश्चियन परिवार से भी था और लता और मीना निकट भविष्य में इसके लिए ऐना और विलियम के प्रति जवाबदेह नहीं रहना चाहती थीं। इस बार भी सब कुछ बहुत ही अच्छे से निपट गया और आखिरकार एक लंबे तड़प भरे

इंतजार के बाद अल्फ़ी और माया हमेशा के लिए एक-दूसरे के हो गए।

उन चारों ने ही अपनी जिंदगी में नए खुशनुमा रंगों का दिल खोलकर स्वागत किया। सब कुछ बहुत ही सरल और सहज तरीके से चल रहा था। सब कुछ ठीक था। पर कहते हैं ना... कि जिंदगी को जो समझ पाए... ऐसी समझ किसी को भी नहीं मिली। खुशियों की बारिश में भीगने वाले अल्फ़ी और माया को मालूम नहीं था कि उनके हक़ में इन बरसातों की उम्र बहुत ही छोटी थी। आने वाला समय अपने साथ बहुत बड़ा तूफान लेकर आने वाला था, जो आने वाली दो सदियों को अपने बवंडर में बुरी तरह उलझा लेने वाला था।

मीना ने अपने बच्चों का दिल रखते हुए उनके रिश्ते को खुशी से स्वीकार कर लिया था। मगर किसी को नहीं पता था कि... जिस दिन अल्फ़ी और माया विवाह के बंधन में बंधे थे... उस दिन से मीना का दिल भी एक अनचाहे ख़ौफ से बंध गया था। वो दिन-रात दुआ मांगती रहती कि उनके बच्चों का जीवन किसी भी प्रकार की पैशाचिक विपदा से हमेशा सुरक्षित रहे और शायद एक माँ की दुआओं का ही असर था कि अल्फ़ी और माया एक सामान्य जीवन जी रहे थे। मगर मीना ना चाहते हुए भी एक भय के साए में जीने के लिए मजबूर हो गई थी और इसका असर अब उसकी सेहत पर भी पड़ने लगा था। ज्यादा सोचने की वजह से वो अक्सर बीमार रहने लगी थी, इसलिए अल्फ़ी ने उसका काम पर जाना बंद करवा दिया। कुछ पूछने पर वो अपने बुढ़ापे का हवाला देकर बात टाल जाती क्योंकि वो अपने डर को किसी को भी समझा नहीं सकती थी और वो खुद भी नहीं चाहती थी कि उसके बच्चों का खुशहाल जीवन उस डर के साए में बदरंग हो जाए।

अल्फ़ी और माया ने भी खुद को एक आम इंसान से ज्यादा और कुछ भी नहीं माना। पर कहते हैं ना कि... शक्तियाँ तब ही शक्तिशाली होती हैं, जब कि उनका मालिक उन्हें इस्तेमाल करना चाहें और अल्फ़ी और माया
को कभी भी ऐसी कोई जरूरत आन नहीं पड़ी कि वे दोनों अपने अंदर की शक्तियों को जागृत करते। मगर कुछ शक्तियाँ ऐसी होती हैं, जिस पर किसी का बस नहीं चलता है और ऐसी ही एक शक्ति उन सबकी मुसीबतों का कारण बनने वाली थी। जिसे जागृत करने के लिए कोई ख़ास इंतजाम नहीं करने पड़ते, बल्कि समय आने पर वो खुद ब खुद अपनी मौजूदगी दर्ज कराने लगती हैं और ऐसी ही एक शक्ति उन सभी के सामने आने वाली थीं, जो शायद बहुत पहले से ही जागृत हो चुकी थी।

****

माया और अल्फ़ी की शादी को करीब तीन महीने गुज़र चुके थे। वो छुट्टी का एक दिन था। अल्फ़ी देर सूरज चढ़ने तक बिस्तर में घुसा हुआ था। पिछली रात मि. हेनरी के किसी जरूरी कागजात की गहन पड़ताल करते हुए वो देर रात तक जागता रहा। अगले दिन छुट्टी होने और माया के बार-बार कहने के बाद भी काम खत्म किए बिना वो सोने नहीं गया और अब सुबह उसकी ऑखों ने खुलने से साफ इंकार कर दिया था।

आखिरकार हद से ज्यादा देर होने पर माया उसे उठाने आई। उसने झटके से उसका कंबल खींचा,

जिससे अल्फ़ी ने बुरी तरह से कुढ़ते हुए अपनी ऑखें मिचमिचाई और फिर हाथ बढ़ाकर कंबल एक बार फिर से अपने सिर तक खींच लिया। उसकी इस हरकत से माया बुरी तरह से तिलमिलाई थी।

"अल्फ़ी उठो! सूरज चढ़ आया है सिर पर।" माया उसका कंबल खींचते
हुए चिल्लाकर बोली।

"उंहूं! मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है।" कहते हुए खीझे हुए अल्फ़ी ने भी कंबल अपनी ओर खींची। मगर माया भी कंबल छोड़ने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थी। आखिरकार अल्फ़ी ने उकताकर कंबल छोड़ दिया, जिससे माया झटके से लड़खड़ाते हुए पीछे हुई थी। उसने बड़ी मुश्किल से खुद को गिरने से बचाया था। उसकी लड़खड़ाती हुई आवाज सुनकर अल्फ़ी एक झटके से उठकर बैठ गया। जब तक उसने माया पर फिक्र भरी नज़र डाली, वो संभल चुकी थी और उसे कहरभरी नज़रों से देख रही थी।

अल्फ़ी ने उसकी गुस्से भरी नज़रों को पढ़ते हुए जब अपने दाईं ओर देखा तो उसकी समझ में आया कि इस छीना-झपटी में पास में रखा पानी का गिलास नीचे गिर गया। माया ने गुस्से से फर्श में फैले पानी को देखा और फिर भिंचे हुए होंठों के साथ अल्फ़ी की ओर घूरकर देखा। अल्फ़ी ने फैली हुई ऑखों के साथ अपने कान पकड़े। उसकी सारी नींद पल में हवा हो गई थी। वो तुरंत ही बिस्तर से नीचे उतरा।

"देखो! काम बढ़ा दिया तुमने।" माया ने बहुत ही झल्लाकर कहा और फिर कमरे से बाहर जाने लगी।

"मैं मदद कर दूँ!" अल्फ़ी ने पीछे से मस्के भरी आवाज़ में कहा।

"रूको तुम वहीं! मदद क्या करोगे... बस मेरा काम बढ़ाना आता है तुम्हें। हिलना भी मत वहाँ से!" तेजी से पलटकर उसे अपनी तर्जनी अंगुली दिखाते हुए माया बिगड़कर बोली और फिर जाने के लिए मुड़ी।

"अरे! सुनो तो!" कहते हुए अल्फ़ी आगे बढ़ा ही था कि एकदम से ही मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ा। उसके गिरने की तेज आवाज सुनकर माया
एक बार फिर उसकी ओर पलटी और उसे जमीन पर कराहता देखकर फिक्र से उसके पास आई।

"क्या हुआ? गिर कैसे गए?" माया ने उसे संभालते हुए पूछा।

"पता नहीं! ऐसा लगा कि किसी ने पैर पकड़ लिया।" माया की मदद से बैठते हुए अल्फ़ी ने कहा और दोनों की ही नज़र उसके पैरों की ओर चली गई। उसी समय मीना भी आवाज सुनकर भागते हुए वहाँ आई। तीनों की ही नज़रें एक साथ अल्फ़ी के पैरों की ओर गई और तीनों ही जैसे सदमे से जम गए।

फर्श पर फैला पानी जंजीर की शक्ल में उसके पैरों में घुटनों के कुछ नीचे तक लिपटा हुआ था। पर... कैसे? माया और अल्फ़ी की ऑखें तो बस फटकर बाहर ही निकलने को थीं क्योंकि उन दोनों के लिए ही ये नज़ारा बेहद हैरतअंगेज था। मगर इसके उलट... मीना के माथे पर सिलवटें बढ़ गई थीं, जो उनके अनुभव का सूचक थीं।

"ये क्या हुआ था अभी?" अल्फ़ी ने बहुत ही उलझे हुए लहजे में कहा, जो ये सब देखकर अपने गिरने का दर्द भूल गया था। जबकि दरवाजे के पास खड़ी मीना के अंदर कोई ख़ामोश आवाज में चीखा, जिसे बस उसी ने ही सुना।

"हे भगवान! जल-रक्षक ! ऐसा नहीं होना चाहिए था... बिल्कुल भी नहीं।""ऐना.... माया की माँ है! मतलब कि... तुम्हारी माया की माँ!" अनामिका ने ऑखें फाड़कर सवाल करते हुए कहा।

"हाँ.... और ऐना ही वो वजह है... जिसके कारण मैं माया को यहाँ आने से नहीं रोक सका।" एक बार फिर जमीन पर ढहते हुए अल्फ़ी ने बहुत ही दयनीय आवाज में कहा और फिर कम से कम शब्दों में अपनी और माया की पूरी कहानी उन सबको सुना दी।

इस खुलासे के बाद केबिन में मौजूद हर शख़्स बुत बन चुका था। अनामिका की ऑखों के सामने ऐना का चेहरा घूम गया। वो ममता से भरी... सहज और सरल महिला थी। उससे इस तरह की हरकत की उम्मीद बिल्कुल भी नहीं की जा सकती थी। वो तो किचन में किसी लड़की को लगने वाली हल्की सी चोट से भी घबरा जाती थीं। वो भला अपनी ही बेटी के साथ ऐसा क्यों करेगी?

"ऐना! ऐसा नहीं हो सकता। कुछ तो गड़बड़ है।" अनामिका ने उलझन भरी आवाज में कहा।
"तो तुम्हें क्या लगता है? मैंने यूँ ही माया को यहाँ आने दिया था। अगर ऐना की बात बीच में नहीं आती तो शायद माया और मैं आज साथ होते। उन्होंने चिट्ठी लिखकर माया को यहाँ बुलाया था और फिर पता नहीं.... उसके साथ.... क्या... हुआ?" कहते-कहते एक बार फिर अल्फ़ी का गला भर आया था।

"पर अल्फ़ी ये भी तो सोचो कि.... जिस ऐना ने अपनी बेटी की जान बचाने के लिए उसे खुद से इतना दूर कर दिया, वो इस तरह अचानक उसे बुलाकर उसकी जान खतरे में क्यों डालेगी? और.... ऐना को देखकर भी कभी ऐसा नहीं लगा कि वो किसी परेशानी या दुविधा में है।" अनामिका ने ऐतराज उठाते हुए कहा।

"मुझे नहीं पता! मुझे कुछ नहीं पता! मैं बस इतना जानता हूँ कि वो परिधि आई थी... ऐना का खत लेकर। वो अपने भरोसे पर माया को अपने साथ लेकर आई थी और क्या किया उसने? इन लोगों ने मेरी माया को नहीं... उस भरोसे को मारा है। मुझे यहाँ पर किसी पर भी भरोसा नहीं। अब तो बिल्कुल भी नहीं।" अल्फ़ी ने माया की ओर देखकर चिंघाड़ते हुए कहा, जिस पर माया थोड़ा पीछे घिसटकर उससे और दूर हुई थी। अनामिका ने देखा कि वो घबरा रही थी।

अनामिका ने अपना पूरा ध्यान उसकी ओर किया। उसने ग़ौर किया कि ऐना के नाम से माया थोड़ी परेशान नज़र आने लगी थी। इसका मतलब तो यही हो सकता था कि ये सब भी माया का ही किया-धरा हो।

"ऐना से बात करनी पड़ेगी।" माया पर नज़र रखे हुए अनामिका ने कहा।

उसकी बात सुनकर सभी की नज़रें अनामिका की ओर मुड़ी थीं। अब तो सभी का यही मानना था कि किसी ना किसी से तो सच उगलवाना ही
पड़ेगा क्योंकि मामला शक्ति पद पाने की लालच से ज्यादा बड़ा था। ऐना ने माया को इस तरह खुद से क्यों दूर किया ये रहस्य भी उन सबके सामने था और शायद जो भी हो रहा था उस रहस्य से ही जुड़ा हुआ था। अनामिका की बात सुनकर अल्फ़ी भी साथ जाने के लिए खड़ा हो गया। वो भी सामने से सारी सच्चाई जानना चाहता था।

"तुम वहाँ कैसे जा सकते हो? प्रॉब्लम हो जाएगी!" अनामिका ने ऐतराज जताया।

"इससे ज्यादा और क्या समस्या हो सकती है। मेरी माया नहीं रही। अब इस सच के बाद मुझे बस ये सच जानना है कि ये सब क्यों हुआ?" अल्फ़ी ने अपना लहज़ा शांत रखते हुए कहा।

"पर..." अनामिका ने कुछ कहना चाहा, मगर चैतन्य ने उसे टोक दिया।

"पर क्या? पहली बार उसने सही बात की है। तुम औरतों की बात सुनने के चक्कर में वो आज इस हालत में है। पहले दिन ही माया को अपने साथ खींचकर वापस ले जाता, तो आज ये सब नहीं होता। पर नहीं... हमें तो सबकी बातें सुननी है और सुनने के बाद वो जो कहेंगी... वही करना है। सच कहूं तो... तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र बिल्कुल सही कहते थे।" चैतन्य ने बहुत ही रूखे स्वर में अपनी बात कही।

अनामिका ने चौंककर उसकी तरफ देखा था। अल्फ़ी ने भी एक नज़र उठाकर चैतन्य और फिर अनामिका की ओर देखा और अपनी नज़रें फेर लीं। उसे पता था कि चैतन्य उसके और अनामिका की वजह से ही उखड़ा हुआ था। चैतन्य के बिगड़ते मिजाज को वो और नहीं बिगाड़ना चाहता था। मगर अनामिका की नज़रें चैतन्य से फिसलकर एक बार फिर से माया पर पड़ी थीं। अनामिका की नज़रें उस पर और भी पैनी हुई थी। आखिर उसने किया क्या था चैतन्य के साथ? वो अक्सर तुनकमिजाज हो जाया करता था, मगर ये सब कुछ ज्यादा हो रहा था क्योंकि अब तक वो अनामिका के लिए दूसरों से लड़ता था, मगर अभी तो वो हर तीर उसी पर छोड़ रहा था। अभी तक तो अनामिका ने उसके हर वार से खुद को बचाकर रखा था... पर उसे समझ में आ गया था कि इसे सही करना बहुत ही जरूरी था, वरना हालात उनके लिए और भी बिगड़ सकते थे।

"ठीक है! चलो!" अनामिका ने अल्फ़ी की ओर देखते हुए कहा, जिस पर अल्फ़ी ने एक नज़र चैतन्य पर डाली थी। अनामिका ने भी चैतन्य की ओर देखा, जहाँ वो दीवार से टिके हुए अपने सीने पर हाथ बांधे उसी की ओर देख रहा था। उसकी तीखी नज़र अब अनामिका को चुभने लगी थी।

"तो इस माया पर तुम नज़र रखो....?" अनामिका ने चैतन्य से पूछना चाहा।

"बिल्कुल भी नहीं! मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगा।" अनामिका का सवाल खत्म होने से पहले ही चैतन्य ने तपाक से कहा।

"तो फिर इस पर नज़र कौन रखेगा? इसे बसेरे में भी वापस नहीं ले जा सकते।" अनामिका ने चिंता से माया की ओर देखते हुए कहा।

"टुम सब जाओ! हम इसको वॉच करटे हैं। इट इज वेरी इंपोर्टेंट टू अस.... टू गेट आंसर्स टू ऑल द क्वेश्चन्स।" सर विलियम ने मदद का हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"पर आप अकेले!" अनामिका ने उन पर फिक्र भरी नज़र डालते हुए कहा।

"डोंट वरी! नो वन विल कम टू दिस प्लेस व्हाइल आई एम हियर।" सर विलियम ने बहुत ही आत्मविश्वास के साथ कहा।
"पर फिर भी..." कहते हुए अनामिका ने चैतन्य की ओर देखा, जिसने उसकी नज़र पड़ते ही अपनी नज़र फेरी थीं।

"आई सेड... डोंट वरी! गो! रिमेम्बर ! आई एम द चीफ़ एंड....दिस प्लेस इज माई प्रॉपर्टी। नो वन कैन इंटर विदाउट माई परमिशन।" सर विलियम ने उनको यकीन दिलाते हुए कहा।

"ठीक है! जैसा आप कहें। पर... इसके पास बिल्कुल भी नहीं जाइएगा। ये सही नहीं है। इसकी भी कुंडली निकालनी पड़ेगी।" अनामिका ने चेतावनी भरी आवाज में सर विलियम से कहा, जिस पर उन्होंने हुंकारी भरते हुए हामी भरी।

और फिर वो तीनों तेजी से वहाँ से बाहर निकल गए। अभी उन्हें गए हुए थोड़ी देर ही हुई होगी कि दरवाजे पर हुई दस्तक ने सर विलियम का ध्यान उस ओर किया।

"हू इज़ देयर?" सर विलियम ने ऊँची आवाज में पूछा।

"इट्स मी!" बाहर से आवाज आई।

"अल्फ़ी!" सर विलियम ने आवाज को पहचानते हुए तेज़ी से दरवाजा खोला और फिर सामने का नज़ारा देखकर सन्न रह गए।

"थैंक्यू जॉन!" सर विलियम के सामने खड़े उस गार्ड को हटाते हुए एडवर्ड आगे आया।

"व्हाट आर यू डूइंग हियर?" माथे पर बल डालते हुए सर विलियम ने सवाल किया।
"जो आप कर रहे हैं। अपना... काम! अंदर नहीं बुलाऍंगे?" एडवर्ड ने बहुत ही मक्कारी के साथ कहा।

"यू आर नॉट नीडेड इनसाइड। व्हाटेवर यू वांट टू से... से इट हियर ओन्ली।" सर विलियम ने बहुत ही खुश्की से कहा।

"ओह! इसका मतलब है कि आप मुझे... मना कर रहे हैं।" एडवर्ड ने चेहरे पर खीझ भरे भावों के साथ कहा।

"यस माई सन!" सर विलियम ने मुस्कुराते हुए कहा।

"फिर तो मैं जरूर जानना चाहूंगा कि अंदर ऐसा है क्या?" एडवर्ड भी जिद लगाते हुए बोला।

"फॉर दैट यू विल नीड माई परमिशन... व्हिच आई विल नेवर गिव यू।" सर विलियम ने भी अपनी बात पर अड़ते हुए कहा।

"मुझे जरूरत पड़ सकती है... पर यहाँ कोई और भी है, जिसे जरूरत नहीं।" एडवर्ड ने एक टेढ़ी मुस्कान के साथ कहा और ये सुनते ही सर विलियम के माथे पर बल पड़े थे।

"जगत!" एडवर्ड ने ऊँची आवाज में एक नाम पुकारा, जिसे सुनकर एक नौजवान तेजी से भागता हुआ उन तक पहुँचा था। उसे देखते ही सर विलियम के चेहरे के रंग उड़े थे। ये उनके मेंशन के माली का बेटा था, जो हमेशा जी-हजूरी करते हुए एडवर्ड के पीछे-पीछे घूमा करता था। वैसे तो एडवर्ड को उससे बहुत ही चिढ़ होती थी, मगर इस समय उसे जगत की जरूरत थी इसलिए उसने जगत की ओर एक शहद भरी मुस्कान के साथ देखते हुए उसे अंदर जाने के लिए कहा। उसकी बात सुनते ही वो अंदर

आने के लिए जैसे ही बढ़ा, सर विलियम ने उसका रास्ता रोक लिया।

"मेरी इजाजत के बिना.... कोई अंडर नई जा सकटा।"

सर विलियम की बात सुनकर जगत ने पलटकर एडवर्ड की ओर देखा। एडवर्ड के चेहरे की मुस्कुराहट और भी तीखी हुई थी।

"ओह! तो फिर ठीक है। जगत!" एडवर्ड ने सर विलियम पर ही नज़र रखे हुए कहा। उसकी बात सुनते ही जगत एक लंबी फलांग के साथ अंदर चला गया और सर विलियम को धक्का देते हुए दरवाजे से बाहर निकाल दिया। सर विलियम को ऐसी कोई आशंका नहीं थी, इसलिए इसके लिए वो पहले से तैयार नहीं थे। वो जब तक दरवाजे के अंदर थे, महफूज थे, मगर अब ख़तरा उनके सिर पर आ गया था।

"देखो जरा! क्या है अंदर? जिसकी इतनी हिफ़ाजत हो रही है।" सर विलियम को अपनी गिरफ्त में लेते हुए एडवर्ड ने जगत से कहा।

"यू आर डूइंग इट रॉंग, एडवर्ड! यू विल हैव टू पे फॉर इट। रिमेम्बर!"सर विलियम ने उसकी गिरफ्त में छटपटाते हुए कहा।

"कूल डाउन डैड! वैसे भी आपका समय खत्म हो चुका है। बहुत मनमानियाँ कर लीं आपने और ये भी जान लीजिए कि आपको कुछ हुआ... तो किसी को अफसोस भी नहीं होगा।" एडवर्ड अपनी आवाज में दुनिया का सारा जहर घोलते हुए बोला।

अभी वो दोनों एक-दूसरे में उलझे ही थे कि तभी अपनी कलाईयों को मसलती हुई माया दरवाजे पर पहुँची। एडवर्ड ने उसे बहुत ही नागवारी से देखा। माया ने भी उसे देखकर कोई खुशी का इजहार नहीं किया।
"तुम!"

"हाँ मैं!" कहते हुए माया ने सारी घटनाएँ संक्षिप्त में एडवर्ड के सामने रख दीं।

"ओह! तो ये बात है। मेरे पीठ पीछे इतनी बड़ी साज़िश। ये बिल्कुल भी सही नहीं है डैड। आपको इसका जवाब देना होगा।" एडवर्ड ने बड़ी ही कड़वाहट के साथ सर विलियम के चेहरे को पकड़ते हुए कहा। एडवर्ड जवान खून था। उसके सामने सर विलियम अब शारीरिक रूप से चूकने लगे थे।

"गार्ड्स!" एडवर्ड ने ऊँची आवाज लगाई और अगले कुछ पलों में छ: गार्ड्स अपने हाथों में माला लिए वहाँ आ गए। सर विलियम ने देखा कि उन भालों की गर्दन में कुछ बंधा हुआ था। उसे देखते ही सर विलियम ने पहली बार थोड़े डर से एडवर्ड की ओर देखा। एडवर्ड ने उनकी उंगलियों में पड़ी दो अंगूठियों को खींचकर बाहर निकाल लिया। जिसमें पहली अंगूठी पृथ्वी-रक्षक की थी और दूसरी सर्वशक्तिमंडल के चीफ की।

"गार्ड्स! इन्हें भी लेकर जाओ स्पेशल सेल में और अगर... ये भागने की कोशिश करें... तो भाला इनके शरीर में उतारने से हिचकना नहीं। जाओ!" एडवर्ड ने तेज आवाज में आदेश देते हुए कहा।

और उसका आदेश मिलते ही उन सभी गार्ड्स ने सर विलियम के चारों ओर घेरा बनाकर चार गार्ड्स ने अपने भालों की नोक उसने शरीर पर रख दी और दो गार्ड्स उनके सामने चलने लगे। मजबूरी में सर विलियम को उनके साथ जाना पड़ा, मगर मन ही मन में सोचकर उन्होंने राहत महसूस की... कि अल्फ़ी, चैतन्य और अनामिका वहाँ से सुरक्षित निकल गए थे।

"मैं जाऊँ!" माया ने जाते हुए सर विलियम की ओर नज़रें टिकाए हुए
एडवर्ड से कहा।

"कहाँ?" एडवर्ड ने उसकी ओर पलटते हुए कहा।

"बसेरे में! और कहाँ?" माया ने कंधे उचकाते हुए कहा।

"मेरे पास उससे ज्यादा अच्छा आइडिया है।" कहते हुए एडवर्ड ने अपनी एक भौंह चढ़ाई थी।

"और वो क्या?" माया ने भी भौंह चढ़ाने में उसका साथ दिया।

"मेरे ख़्याल से तुम्हारी गुमशुदगी की खबर हमारे ज्यादा काम आएगी। तुम सोचो ना! जिन्होंने ये काम किया है, उन्हें सजा मिलनी चाहिए या नहीं?" एडवर्ड ने अपनी आवाज में मक्कारी घोलते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर माया भी उतनी ही मक्कारी से मुस्कुराई थी। फिलहाल के लिए उनकी योजना के अनुसार माया के हाथ-पैर और मुँह बांधकर उसी केबिन में छोड़ दिया गया। एडवर्ड ने जगत को साथ लिया और फिर उ,के साथ जंगल की ओर निकल गया। कुछ देर बाद उस तरफ से किसी की घुटी-घुटी सी आवाज़ हवाओं में खो गई। एडवर्ड ने जगत की गर्दन से जब अपना चेहरा ऊपर उठाया, तो उसका आधा चैहरा खून से पूरी तरह से लिपा-पुता हुआ था। एडवर्ड किसी की भी जानकारी के बाहर पिछले कई सालों से लोगों का खून पी रहा था और वो अब जो करने वाला था, उसके बारे में कोई ख्वाब में भी नहीं सोच सकता था। जगत के बेजान शरीर को एक ओर फेंकने के बाद वो अपना चेहरा पोंछते हुए आगे बढ़ गया था। यकीनन उस रक्तपान के बाद उसके खूनी इरादे और भी लाल हुए थे। वो इरादे, जिससे उसके अलावा सभी अंजान थे। माया भी!
चैतन्य और अल्फ़ी, अनामिका के पीछे-पीछे सावधानी से चल रहे थे। उन तीनों को ही खबर नहीं थी कि उनकी पीठ पीछे क्या होने वाला था, या फिर.... क्या हो गुजरा था। वो तो बस आगे बढ़ रहे थे जहाँ उनके सवालों के जवाब मिल सकते थे। केबिन से थोड़ी ही दूरी पर आकर अनामिका उसी पेड़ के पास जाकर खड़ी हो गई, जिसके तने पर पिछली बार अनामिका का छलद्वार खुला था (भाग 83)। उसके वहाँ रुकने पर उन दोनों ने ही अनामिका को सवालिया नजरों से देखा।
"यहीं से है रास्ता!" उन दोनों के सवालों को समझते हुए अनामिका ने उस पेड़ पर हाथ मारते हुए कहा।

अल्फ़ी की तो खैर कुछ समझ में आया ही नहीं, मगर चैतन्य ने भी नासमझी भरी हालत में उससे पूछा, " यहाँ से क्यों? यहाँ पानी कहाँ हैं?"

"कल रात वापस लौटते समय जब मैं रो पड़ी थी और तुमने मुझे शांत करवाया था (भाग-77) उस समय इस पेड़ पर अपने ऑसुओं से भरे हाथ रखे थे मैंने। इसलिए यहाँ से रास्ता बना हुआ है।" अनामिका ने चैतन्य की जिज्ञासा शांत करते हुए कहा। उसने एक नज़र अल्फ़ी की ओर डाली, जो अभी भी नासमझी के आलम में था और उसकी समझ में अभी भी नहीं आ रहा था कि चैतन्य और अनामिका किस दरवाजे की बात कर रहे थे? वहीं अनामिका ने आगे बढ़कर उस पेड़ के तने पर हाथ

रखा और ऑखें बंद कर लिया। कुछ ही देर में अल्फ़ी की कौतूहल से सिकुड़ी हुई ऑखें आश्चर्य से फैलती चली गईं। उसने कल्परूप में अपने चार महीने के आवास काल में कई हैरानी से भरी चीजें देखी थीं, पर बिना किसी शक जो इस समय उसके सामने था, वो सबसे हैरतअंगेज था।

देखते-ही-देखते अनामिका के उस हाथ से.. जिसे उसने तने पर रखा था... एक नीली रोशनी निकलकर उस तने पर पानी की तरह फैलने लगी और फिर उस रोशनी में बहुत ही हल्की सी आवाज के साथ विस्फोट सा हुआ। उन सबकी ऑखें जब कुछ देखने लायक हुई, तो सामने वो नीली रोशनी पानी की तरह लहरा रही थी।

"आओ!" अनामिका ने उन दोनों की ओर अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा। बौराई हुई हालत में अल्फ़ी ने अनामिका के बढ़े हुए हाथ की ओर हाथ बढ़ाया ही था कि चैतन्य ने लपककर अनामिका के हाथ को पकड़ लिया। अल्फ़ी का बढ़ा हुआ हाथ बीच में ही रूक गया। अनामिका ने सब देखा, पर अब वो ये सब नज़रअंदाज़ करने वाली थी। उसने किसी भी प्रकार से
चौंकने से परहेज़ ही किया।

"अल्फ़ी! जल्दी करो! हाथ पकड़ो! जाना है!" अनामिका ने उसे लगभग डपटते हुए कहा। अल्फ़ी ने अनामिका की ओर देखा और फिर अनामिका के हाथ के पर रखे चैतन्य के हाथ के ऊपर अपनी हथेली रख दी। फिर वो उनका हाथ पकड़े उसे नीली रोशनी के अंदर चली गई। उसके पीछे-पीछे चैतन्य और अल्फ़ी भी अंदर चल दिए। अंदर आकर अनामिका ने दोनों का हाथ छोड़ा और चैतन्य को इशारे से अल्फ़ी का हाथ पकड़े रहने के लिए कहा। अनामिका और चैतन्य को इसकी आदत थी, मगर अल्फ़ी के लिए ये सब यकीन के बाहर था। उसने चारों ओर देखा और खुद को पानी से घिरा हुआ पाया। वो उस पानी की ठंडक को स्पष्ट रूप से महसूस कर रहा था.... मगर इस पानी में उसे बेचैनी नहीं हो रही थी। कई सवाल उसके दिमाग में उमड़ रहे थे, जिसकी वजह से उसकी नज़र अनामिका की ओर गई थी, मगर वो साथ चलते चैतन्य को भूला नहीं था, इसलिए हर सवाल को फिलहाल के लिए उठाकर रख दिया।

कुछ ही देर में वो ऊपर की जाने लगे। अल्फ़ी को तैरना नहीं आता था, इसलिए चैतन्य ने उसका हाथ अभी भी पकड़ा हुआ था। जल्द ही अनामिका एक जगह रूक गई। उन दोनों ने देखा कि वो अपने दोनों हाथों से किसी चीज को धक्का दे रही थी।

उसके चेहरे पर थोड़ी बेचैनी नज़र आने लगी थी। दोनों की ही समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था... कि वे उसकी मदद ही कर देते। और फिर.... अचानक ही अनामिका का हाथ एक जगह से आगे निकल गया। उसके चेहरे पर राहत दिखाई दी। उसने चैतन्य और अल्फ़ी को पीछे आने का इशारा किया। उस खुली जगह से पहले अनामिका बाहर निकली और फिर उसकी मदद से पहले अल्फ़ी और फिर चैतन्य बाहर निकला। अल्फ़ी ने खुद को अच्छी तरह से टटोलकर देखा, वो पूरी तरह से सूखा था।

"फर्श का पानी लगभग सूख गया है। इसलिए दरवाजा नहीं मिल रहा
था।" अनामिका ने नीचे देखते हुए कहा।

"हाँ! शुक्र है कि मौसम ठंडा है, वरना अगर पानी पूरा सूख जाता, तो समस्या हो जाती।" चैतन्य ने भी

उसके साथ खड़े होते हुए कहा। वहीं अल्फ़ी अभी भी फर्श को घूर रहा था।

"अल्फ़ी! हैरान बाद में होना। वैसे तुम दोनों यहीं ठहरो। मैं ऐना को लेकर आती हूँ। सावधान रहना।" अनामिका ने बारी-बारी से दोनों की ओर देखते हुए कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने हुंकारी भरी। वहीं अल्फ़ी शांत ही खड़ा चारों ओर देख रहा था। अनामिका ने दरवाजा खोला और फिर बाहर चारों ओर नज़र डालने के बाद बहुत ही ऐतिहात से बाहर निकल गई।

"ये कौन सी जगह है?" अल्फ़ी ने चैतन्य से पूछा।

"श्श्श्श्! आवाज़ नहीं! हम बसेरे में है। वो भी माया के कमरे में!" चैतन्य ने अल्फ़ी को चुप रहने का इशारा करते हुए फुसफुसाकर कहा।

"क्या? यहाँ क्यों आए हैं हम?" चैतन्य का जवाब सुनकर अल्फ़ी हड़बड़ाया था।

"क्योंकि तुम्हें आना था।" चैतन्य एक-एक शब्द को चबाते हुए बोला।

"और तुम?" अल्फ़ी ने एक बेतुका सा सवाल किया, जिसका जवाब उसे भी अच्छी तरह से पता था।

"तुम्हें नहीं पता!" चैतन्य ने ऑखें चढ़ाकर जवाब दिया, जिस पर अल्फ़ी जरा सा सिटपिटाया था। "उससे दूर रहना!" चैतन्य ने एक बार फिर से अपनी चेतावनी दोहराई थी, जिस पर अल्फ़ी ने भी उसे तिरछी नज़रों से देखा और अपना सिर हिलाया।

"वैसे एक बात बताओ! अनामिका ने तुम्हें पानी से बाहर निकाला, तो तुम होश में थे या फिर..." चैतन्य ने अल्फ़ी को कुरेदते हुए पूछा।

और उसका सवाल सुनकर अल्फ़ी जरा सा और सिमटा था। उसने हल्का सा खंखार कर अपना गला साफ किया और फिर बोला, "बेहोश था!"

"फिर!" चैतन्य ने अपने माथे पर सिलवटें बढ़ाते हुए कहा।

"मुझे क्या पता! जब मुझे होश आया तो अनामिका मुझे होश में लाने के लिए झिंझोड़ रही थी। मैंने उसे इतने पास देखा तो हड़बड़ा गया और उसे छिटककर दूर हो गया। पता नहीं उसने क्या सोचा होगा? मैंने माफी भी नहीं मांगी।" अल्फ़ी ने जरूरत के मुताबिक जवाब दिया।

"और कुछ!" चैतन्य ने जैसे कुछ और भी याद करने के लिए उसे उकसाया था। वो अच्छी तरह से समझ रहा था कि चैतन्य क्या सुनना चाहता था। उसने इंकार में सिर हिलाया।

"अच्छी बात है!" चैतन्य ने ऊपर से नजरें हटाते हुए कहा और उसी समय अल्फ़ी ने अपना निचला होंठ दाँतों में दबाया था। अचानक ही अल्फ़ी के कान खड़े हुए और वो इधर उधर देखता हुआ बहुत ही चौकन्ना नजर आने लगा था।

"क्या हुआ?" चैतन्य ने पूछा।

"कोई है? कोई पहचाना हुआ। उसे महसूस कर सकता हूँ मैं।" अल्फ़ी ने उसी तरह चौकस निगाहों के साथ कहा।

"आसपास है क्या?" चैतन्य ने पूछा।

"मैं ये खूश्बू पहचानता हूँ!" अल्फ़ी ने हवा में फैली खुशबू अपनी नाक के अंदर लेते हुए कहा।

"और किसकी है ये?" चैतन्य ने अपनी एक भौंह चढ़ाकर कहा।

"परिधि! ये परिधि है!" अल्फ़ी ने उसे पहचानते हुए बहुत ही रूखी और पथरीली आवाज में कहा। उसका चेहरा एक बार फिर से बहुत ही कठोर हो गया था। चैतन्य को याद आया कि माया की वजह से अल्फ़ी उसके लिए बहुत ही गुस्से में भरा हुआ था।

"मुझे वो लड़की चाहिए!" अल्फ़ी ने फुंफकारते हुए कहा और चैतन्य कुछ कह या कर पाता उससे पहले ही वो उस कमरे से बाहर निकल गया।

"ओए तेरी!" चैतन्य अपना माथा पीटता हुआ उसके पीछे गया था। अल्फ़ी एक बार फिर गुस्से में भरा हुआ लापरवाह सा हो गया। वो गुस्से में हांफता, इधर उधर देखता आगे बढ़ता जा रहा था। चैतन्य भी उसके पीछे गया था, मगर वो उसे आवाज नहीं लगा सकता था। पार्टी की वजह से दिनभर मशरूफ रहने के कारण शायद सभी डायनें बहुत थक गई थीं और नींद में बेसुध थीं। इसलिए चैतन्य और अल्फ़ी बाल-बाल बचे थे। परिधि की खुशबू का पीछा करते हुए अल्फी बसेरे के उस हिस्से में पहुँच गया, जहाँ आयुर्वेदिक औषधियों के पौधे लगे हुए थे। अल्फ़ी ने सामने चारों ओर देखा और फिर उसकी ऑखों में एक अलग ही किस्म की चमक दिखाई देने लगी। उसकी ऑखें जैसे जल रही थीं। उन्हीं जलती हुई ऑखों के साथ वो वहाँ से नीचे उतरता हुआ आगे बढ़ गया और चैतन्य के रोक
पाने से पहले ही सामने झुरमुटों में खो गया। चैतन्य ने भी आगे जाने के लिए अपने पैर बढ़ाए ही थे कि उसने अनामिका के बारे में सोच कर अपने पैर वापस खींच लिए। जवाब देने के लिए वो भी नहीं होता... तो यकीनन अनामिका का परेशान होना लाजमी था। वो कुछ देर के लिए अल्फ़ी के वापस आने के इंतजार में वही छुप कर बैठ गया।

दूसरी ओर झुरमुटों को अपने सामने से हटाता हुआ अल्फ़ी परिधि की खुशबू के सहारे उसी दीवार तक पहुँच गया, जिस पर वही खुफिया दरवाजा बना हुआ था और जिस का रहस्य अभी तक किसी की समझ में नहीं आया था। आसमान में खिले चाँद के अलावा वहाँ रोशनी का कोई और जरिया नहीं था। उसी सीमित रोशनी में वो चारों ओर भागता हुआ वहाँ का कोना-कोना छान रहा था, मगर उसे परिधि कहीं भी नजर नहीं आ रही थी। मगर उसकी खुशबू यहाँ भी बिखरी हुई थी। उस खुशबू को खुद में एकसार करते हुए वो उस दीवार तक आया और फिर उस दीवार पर उसने अपनी बाईं हथेली रख दी। अपनी उंगलियों को उस दीवार में घसीटता हुआ वो आगे बढ़ा और फिर एक जगह जाकर रुक गया। वो एकटक दीवार के उस हिस्से को घूरकर देख रहा था। ना जाने क्यों उसके दिल की धड़कनें एक बार फिर बेइख़्तियार बढ़ गई थीं। उसे ऐसा लग रहा था कि इस दीवार के पीछे कुछ तो ऐसा है, जिसकी उसके दिल को तलब है। पर क्या? पता नहीं । वो उसके पास आया और फिर उस पर अपने कान टिकाकर खड़ा हो गया और उसने महसूस की एक ऐसी खूश्बू, जो बिल्कुल अलग तरह की थी। पर ना जाने क्यों उसे लगा कि वो उसे ना पहचान कर भी पहचानता है। कैसा था ये अहसास , जो अलग सा होकर भी बहुत ही अपनापन लिए हुए था। वो अभी इसी उलझन में उलझा हुआ था कि तभी उसे दीवार के उस हिस्से पर हलचल सी महसूस हुई। वो तेजी से पीछे हुआ और वहाँ उठती हलचलों को

देखकर उतनी ही तेजी से पास के एक झुरमुट के पीछे छुप गया।

थोड़ी ही देर में उसने उस दीवार को उसी तरह नीला होते देखा, जैसे कि
अनामिका के उस पेड़ पर हाथ रखने के बाद हुआ था और फिर उसने परिधि को वहाँ से बाहर निकलते देखा। वो बदहवास सी थी और बुरी तरह हाँफ रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे कि मीलों का सफर करके आ रही हो। बाहर निकलने के बाद उसने मुड़कर उस दीवार की ओर देखा जो धीरे-धीरे पहले वाली स्थिति में आ गई। परिधि ने एक राहत की साँस के साथ अपने माथे का पसीना पोंछा और फिर खुद को संभालने की कोशिश करने लगी। उसे इस तरह सामने देखकर अल्फ़ी की ऑखों में खून उतर आया था। उसकी माया को उससे दूर करने वाली उसके सामने खड़ी थी। वही थी जिसने शुरू से लेकर आखिरी तक सारी गड़बड़ियाँ की थी। क्यों? इसका जवाब देने का समय आ गया था। अल्फ़ी अपनी जलती हुई ऑखों के साथ बहुत ही दबे पाँव उसके करीब पहुँचा और जब तक परिधि को कुछ पता चलता वह उसके बिल्कुल पीछे खड़ा था। अपनी साँसे संभालती हुई परिधि को जब किसी के पीछे होने का एहसास हुआ, वो तेजी से पीछे मुड़ी। सामने गुस्से में काँपते और फुफकारते हुए अल्फ़ी को देखकर उसकी सॉसे हलक में अटक गईं। वो कुछ कहती उससे पहले ही अल्फ़ी ने उसकी कलाई मरोड़ कर उसी की पीठ से लगाया और खुद भी उसके पीछे आकर खड़ा हो गया।

"अल्... फ़ी!" परिधि के मुँह से घुटी-घुटी सी आवाज में उसका नाम निकला।

"हाँ! अल्फ़ी! तूने क्या सोचा? मुझसे मेरी माया को छीनकर.... इतना बड़ा धोखा करके बच जाएगी। अब सारे गुनाह कबूलेगी तू और अपनी सजा भी।" अपनी बात खत्म करते-करते अल्फ़ी की आवाज भी दहकने लगी थी। उसकी ऑखें अचानक ही अपना रंग बदल कर अंगारों की तरह लाल हो गई थीं और जैसे उसी की गर्मी से परिधि को जलाकर राख करने की मंशा रखती थी। परिधि उसके इरादे भांपकर बुरी तरह से सहम गई। उसकी बातों से वो समझ गई थी कि अल्फ़ी को माया की मौत की खबर मिल चुकी थी। उसे अपनी ही ऑखों के सामने अपनी ही मौत नाचती
हुई दिखाई देने लगी। डर से उसका गला सूख गया था, जहाँ सारे लफ्ज़ अटककर रह गए थे। अभी उन दोनों में से ही कोई कुछ करता... या कहता, उसी समय पास ही झुरमुटों से आती आवाजों ने दोनों को सचेत किया था। दोनों ने देखा कि कुछ लोग उन्हीं की तरफ आ रहे थे। अल्फ़ी, परिधि को अपनी मजबूत गिरफ्त में लेकर उसी दिशा में मुँह करके खड़ा हो गया। आने वाले कौन थे... दोनों को ही नहीं पता था।

****

माया के कमरे से निकलकर अनामिका तेजी से ऐना के कमरे की ओर गई। ऐना ने उसे अपने कमरे में आने की इजाजत दे दी थी। उसका कमरा उस गलियारे के समीप ही था जिस गलियारे में परिधि और अनामिका का कमरा था।

कमरे के पास पहुँचकर अनामिका ने देखा कि ऐना के कमरे की खिड़की खुली हुई थी। उसने खिड़की से कमरे के अंदर देखा। ऐना अभी भी जाग रही थी और बहुत ही परेशान दिखाई दे रही थी। उसे देखकर अनामिका के दिल में एक दर्द सा उठा था। उसे पूरा यकीन था कि जो कुछ भी गलत हुआ है उसमें ऐना किसी भी तरीके से शामिल नहीं हो सकती थी। जिस माँ ने अपनी बेटी की जान बचाने के लिए उसे खुद से दूर कर दिया। उसकी पहचान को अपनी पहचान से काट कर फेंक दिया... वही बेटी अब नहीं रही। पता नहीं अनामिका ये खबर उसे कैसे देने वाली थी... क्योंकि
इसके बाद उसकी प्रतिक्रिया की कल्पना मात्र ही अनामिका की आत्मा तक को झिंझोड़ रही थी। पर बताना तो था ही।

तीन ही दिनों में ऐना और अनामिका के बीच एक गहरा रिश्ता सा बन चुका था। इसका कारण अनामिका को अब तक समझ में नहीं आया था कि दूसरी लड़कियों की तुलना में ऐना उससे इतना स्नेह क्यों रखती थी! पर अब माया और ऐना का रिश्ता जानने के बाद उसका दिल एक अजीब से अंदाज में धड़का था। एक सोच उसके दिल और दिमाग से तेजी से गुजर गई। क्या मैं... और इस क्या मैं के बाद उसने खुद को कुछ और सोचने से रोक दिया।

"-- ऐना!" अनामिका ने कमरे में बेचैनी से चहलकदमी करती हुई ऐना को पुकारा।

उसकी आवाज सुनकर ऐना ने तेजी से पलटकर उसकी ओर देखा। वो बिखरी-बिखरी सी हालत में उसके सामने खड़ी थी। ऐना तेजी से उसके पास आई और उसके दोनों हाथों को पकड़ कर उसे चिंता भरी नज़रों से ऊपर से नीचे तक देखा।

"अनामिका! कहाँ थी तुम... और ये कैसी हालत बना रखी है तुमने? मैं कितना घबरा गई थी!" ऐना ने उसके चेहरे को देखते हुए पूछा।

"क्यों? क्यों घबरा गई थीं आप मेरे लिए?" अनामिका ने सवालिया नजरों से उसे देखते हुए कहा।

"तुम बहुत देर से दिखाई नहीं दी... तो मुझे फिक्र हो गई थी।" ऐना ने कहा।

"वही तो! मेरे लिए क्यों? परिधि भी तो यहाँ नहीं है। आपको उसकी फिक
नहीं हो रही?" अनामिका ने अजीब से अंदाज़ में ऐना से सवाल किया।

उसका ये सवाल सुनकर ऐना ने भी परखती नज़रों से उसे देखा और फिर बहुत ही सादे से अंदाज में बोली, "उसकी फिक्र करने के लिए उसकी माँ है। उसे मेरी फिक्र की जरूरत नहीं है।"

"पर आप... मेरी भी तो माँ नहीं हैं ना! तो मेरे लिए कैसी फिक्र?" अपनी उंगलियों को क्रास करते हुए अनामिका ने पूछा। ना जाने वो उसके मुँह से क्या सुनना चाहती थी?

उसकी बात सुनकर ऐना के होठों पर एक फीकी सी मुस्कान आई और फिर उसने अपना सिर झटकते हुए कहा, "हाँ नहीं हूँ। पर पता नहीं क्यों ऐसा लगता है कि... कोई तो रिश्ता है तुमसे। कोई बहुत गहरा रिश्ता! जो मुझे बहुत अपना सा लगता है। ना जाने क्यों तुम्हें देखकर मेरी आंखों में ममता उमड़ आती है। मैं नहीं जानती ऐसा क्यों होता है। पर होता है। ऐसा लगता है कि तुम मेरे जैसी हो। मेरा ही हिस्सा

है। अगर मेरी बेटी होगी तो
बिल्कुल तुम्हारे जैसी होगी।"

और ये सुनते ही अनामिका की क्रॉस की हुई ऊंगलियाँ झटके से खुल गईं थीं। उसने सदमे की सी हालत में अपनी ऑखे भींच लीं। एक बार फिर किसी ने उसे अपने और माया के एक होने का अहसास कराया था और अब वो इसे नकारते हुए थक गई थी।

"होगी... या होती?" अनामिका ने अपनी कांपती हुई आवाज में उसकी लंबी सी बात में से एक शब्द चुनकर कहा।

उसकी बात सुनकर ऐना ने उसकी ओर देखा और फिर मुस्कुराते हुए बोली, "तुमसे एक बात पूछूं? जवाब दोगी?"

"पूछिए!" अपने जज्बातों को दबाते हुए अनामिका ने सामान्य सी आवाज में पूछा।

"आखिरकार कल माया सर्वशक्तिमंडल की सदस्य बन जाएगी। बस यही दिन देखने के लिए ही खुद को यहाँ कैद कर रखा था। सबसे खुद को तोड़ लिया था। पर अब मैं यहाँ से चली जाऊंगी। हमेशा के लिए। इसलिए तुमसे ये पूछना चाहती हूँ कि क्या तुम मेरी जगह लेना पसंद करोगी?"

"कहाँ जाऍगी आप?" ऐना के सवाल का जवाब देने के बजाय अनामिका ने अपना सवाल किया।

"है कुछ लोग! कुछ अपने! बहुत अपने! बरसों हो गए उनसे मिले। अब बस उनके पास जाना चाहती हूँ। उनके साथ रहना चाहती हूँ।" ऐना ने कोई हुई सी आवाज़ में कहा।

और अनामिका को एक ही पल में सब समझ में आ गया। वो अपनी बेटी
के पास जाने की बात कर रही थीं। अनामिका का दिल और गला दोनों ही भर आए। अब उसे खुद को संभालना मुश्किल लग रहा था। उसका अनुमान और यकीन बिल्कुल सही था। वो माया के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी। वो नहीं जानती थी कि उनके वो सारे सुनहरे सपने किसी ने कॉच की तरह तोड़कर चकनाचूर कर दिए थे और अब उसकी किरचियाँ उसके दिल को लहुलूहान करने वाली थीं।

"माया से बहुत प्यार करती हैं आप। है ना!" अनामिका ने अजीब सी क़ैफियत में सवाल किया था।

"हाँ! मेरी बेटी की तरह ही है वो भी।" ऐना ने थोड़ी संकोच भरी आवाज में कहा।

"मैं.... हेममाया के बारे में कह रही हूँ।" अनामिका ने बमुश्किल कहा। उसे अपनी ही आवाज मीलों से थककर आई हुई लग रही थी।

और.... अनामिका के मुँह से ये नाम सुनते ही ऐना को हैरत का एक तेज झटका लगा था। उसकी ऑखें सदमे से फ़ैल गई थीं। आखिर आज किसी ने उसके अतीत का वो हिस्सा उसके सामने रख दिया था, जिसे सारी दुनिया से उसने छिपाकर रखा था। वो सहमी हुई सी हालत में अनामिका की ओर धीरे से मुड़ी। अनामिका उसे भरी-भरी ऑखों से देख रही थी। ऐना की ऑखें उस पर गहरी हुईं।

"हेममाया! तुम उसे कैसे जानती हो?" और फिर अगले ही पल एक विचार उसके दिमाग में कौंधा। उसे

अनामिका की ओर अपना लगाव याद आया। एक अपनेपन का अहसास उसके दिल को छूकर निकला। वो तेजी से चलकर उसके पास आई। ऐना ने अनामिका के पूरे शरीर को अपनी उंगलियों से टटोला। "तुम... तुम हेममाया हो? मेरी माया हो! क्या इसलिए मेरा दिल हमेशा तुम्हारी ओर खींचता है? तुम मुझे इतनी अपनी लगती हो! कहो ना!" अनामिका के चेहरे पर अपनी ऊंगलियॉ फिराते हुए ऐना ने बहुत ही जज़्बाती लहज़े में कहा। उनकी ऑखें भर आईं थीं और अपनी दहलीज पर एक सैलाब रोके हुए थीं।

अनामिका ने अपनी भरी हुई ऑखों को भींचकर उसकी हथेलियों को अपनी उंगलियों में कस लिया और इंकार में सिर हिला दिया।

"तो फिर! और ये... तुम रो क्यों रही हो? क्या हुआ?" ऐना ने अनामिका को सवालिया नजरों से देखते हुए सहमी हुई आवाज में पूछा।

अनामिका ने अपनी ऑखें खोली और फिर उसकी हथेलियों को अपनी दोनों हथेलियों के बीच कैद कर वो भरे गले से बोली, "ऐना! आपको किसी से मिलवाना है।"

"अभी! इस वक्त! किससे?" ऐना ने अनामिका की ओर उलझन भरी नज़रें डालते हुए कहा।

"हाँ अभी! वो और इंतजार नहीं कर सकता। बहुत सी बातें हैं ऐना, जिन्होंने सबकुछ उलझा दिया है और ये उलझने आप खोल सकती हैं। चलिए!" अपनी बात खत्म कर अनामिका ने उनका हाथ पकड़कर साथ जाने के लिए खींचा। मगर ऐना के ठहरे हुए कदमों ने उसे भी रूकने पर मजबूर कर दिया। मगर वो उसकी ओर मुड़ी नहीं।

"अनामिका! क्या हुआ है? बताओ ना! मेरा दिल बैठा जा रहा है। मा... माया ठीक है ना!" ऐना ने अनामिका की पीठ की ओर देखते हुए घबराई हुई आवाज में कहा।
"आप बस साथ चलें।" अनामिका ने बिना उसकी ओर देखे कहा और फिर उनका हाथ खींचा। इस बार दिल में कई आशंकाएँ लिए ऐना उसके साथ बढ़ गई।

वो दोनों कमरे से बाहर निकलकर थोड़ा आगे ही बढ़ते थे कि उन्हें अपने पीछे गलियारे में अजीब सी हलचल सुनाई दी। अनामिका ने पलटकर उस ओर देखा। फिर उस खुफिया दरवाजे का ख्याल आते ही वो ऐना के साथ उस ओर बढ़ गई। पास पहुँच कर उसने देखा कि चैतन्य एक आड़ में बैठा पीछे जाने वाले रास्ते की ओर देख रहा था। वो तेजी से उसके पास गई और उसके कंधे पर हाथ रखा। चैतन्य पकड़े जाने के डर से एकदम से पीछे पलटा था, मगर वो किसी प्रकार की कोई आवाज करता... उससे पहले ही अनामिका ने उसका मुँह दबा दिया।

"यहाँ क्या कर रहे हो तुम?" अनामिका ने फुसफुसाती हुई आवाज में उससे डपटते हुए पूछा।

"ये कौन है अनामिका? यहाँ क्या कर रहा है? क्या तुम मुझे इससे मिलवाना चाहती थी?" ऐना ने ऑखें फाड़कर चैतन्य को ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा।

"जी नहीं! इससे नहीं!" अनामिका ने ऐना की ओर देखकर कहा और फिर वो चैतन्य की ओर मुड़ते हुए बहुत ही धीमी मगर गुस्से भरी आवाज में बोली, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो? अल्फ़ी कहाँ हैं? तुम दोनों को कमरे में रुकने के लिए कहा था ना मैंने!"

"अरे वो अल्फ़ी! परिधि का नाम लेता हुआ गुस्से में उस ओर भागा है। रोक नहीं सका उसे मैं।" चैतन्य ने भी झल्लाई हुई आवाज में कहा।

"उस तरफ!" अनामिका ने अल्फ़ी के जाने वाले रास्ते की ओर देखते हुए
कहा।

"हाँ! वो बोल रहा था कि... परिधि उसी तरफ है। बहुत गुस्से में गया है वो।" चैतन्य ने उसे हालात समझाते हुए कहा।

"हे भगवान! परिधि तो शायद उस खुफिया दरवाजे की ओर ही गई थी। कहीं सच में... अल्फ़ी को उसके वहाँ होने का आभास तो नहीं हो गया। वो बहुत गुस्से में है। उसे जान से मार देगा वो।" घबराई हुई अनामिका बड़बड़ाते हुए बोली।

"तुम क्या कह रही हो अनामिका? कुछ बताओ तो सही कि हो क्या रहा है?" ऐना ने भी झुंझलाते हुए कहा।

"कुछ नहीं! आईए आप साथ! चैतन्य! आओ!" कहते हुए अनामिका भी तेजी से उसी खुफिया दरवाजे की ओर बढ़ गई। चैतन्य और ऐना भी उसके पीछे लपके थे। जल्द ही झुरमुटों वाला रास्ता पार करके वे तीनों उस जगह पहुँच गए, जहाँ ज्वालामुखी बना हुआ अल्फ़ी, परिधि को दबोचे खड़ा था।

"अल्फ़ी! क्या कर रहे हो? छोड़ो उसे!" अनामिका ने संभलकर उनकी ओर बढ़ते हुए कहा।

"रूक जाओ अनामिका! वहीं रूको! मेरे प्यार को अपना इंसाफ चाहिए और आज इसकी गर्दन काटकर मैं वो इंसाफ लेकर रहूंगा।" अल्फ़ी जूनूनी सी हालत में चिल्लाया।

अनामिका ने मुड़कर चैतन्य की ओर देखा, जो लगातार झटके झेल रही ऐना को संभाले हुए खड़ा था। उन दोनों पर एक-एक नजर डाल कर अनामिका फिर से अल्फ़ी और परिधि की ओर मुड़ी।
"देखो अल्फ़ी! मैं मानती हूँ कि तुम्हें तुम्हारा इंसाफ मिलना ही चाहिए। पर उससे पहले कुछ सवालों के जवाब जानना भी बहुत जरूरी है। प्लीज़ ऐसा मत करो। मैं वादा करती हूं, तुम्हें तुम्हारा इंसाफ जरूर मिलेगा। प्लीज़! मेरी बात मान लो।" अनामिका ने बहुत ही याचना भरे स्वर में कहा।

उसकी बात सुनकर गुस्से में उबलता हुआ अल्फ़ी धीरे-धीरे शांत होने लगा। उसके बदलते मिजाज को देखकर अनामिका की हिम्मत बढ़ी तो वो उन दोनों की ओर बढ़ी।

"यहाँ से चलो! यहाँ खतरा है। हम यहाँ खुले में ज्यादा देर नहीं रूक सकते।" अनामिका ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"पर हम वापस बसेरे में गए और इस बार किसी ने देख लिया तो। अच्छा ख़ासा कमरे में थे हम! लगता है कि हम फँस गए हैं। यहाँ से बाहर निकलना मुश्किल है अब।" चैतन्य ने अल्फ़ी की ओर देखते हुए खीझ भरी आवाज में कहा। आखिरकार अल्फ़ी की मेहरबानी से ही वो सब उस कमरे की बजाय अब इस जगह में असुरक्षित खड़े थे।

"एक रास्ता है।" अनामिका ने कहा।

"कौन सा? कहाँ?" चैतन्य ने पूछा।

और जवाब में अनामिका ने परिधि की ओर देखा। कुछ ही देर में वो सभी उसी रास्ते से बसेरे से बाहर जा रहे थे, जहाँ से पहली बार परिधि, अनामिका को अपने साथ लेकर आई थी। कुछ ही देर में वो सब बसेरे के पिछले बाहरी हिस्से के जंगल में खड़े थे।

"ये सही जगह है?" चैतन्य ने पूछा।
"नहीं! ये जगह सही नहीं है। दरअसल... अब यहाँ कोई जगह सुरक्षित नहीं है।" परिधि ने कांपती हुई आवाज में कहा।

"हे भगवान! कहाँ फँसा दिया हमें?" चैतन्य बड़ी मुश्किल से अपनी आवाज को काबू में रखते हुए बोला।

"मैं एक जगह जानती हूँ!" ऐना ने कहा।

"कौन सी?" अनामिका ने पूछा।

"आओ!" कहकर ऐना एक ओर बढ़ गई।

सभी उसके पीछे-पीछे चल दिए। अल्फ़ी ने एक बार फिर से परिधि को अपनी गिरफ्त में रखा था। वो भी इन हालातों में बुरी तरह से सहम गई थी और चुपचाप चल रही थी। थोड़ी ही देर में वो सब उस जगह के सामने खड़े थे।

"दिव्याक्षि!" अनामिका ने ऐना की ओर देखकर हैरानी से कहा।

"हाँ! यहाँ कोई नहीं आता। आ जाओ!" कहते हुए ऐना उस पेड़ के तने में बनी गुफा में घुस गई। बाकी सभी भी उसके पीछे चल दिए। जल्द ही वो सब दिव्याक्षि के कमरे के बाहर खड़े थे। ऐना ने आगे बढ़कर दरवाजा खोला और अंदर चली गई। चैतन्य भी उसके पीछे अंदर गया। अल्फ़ी ने परिधि को कमरे के अंदर धकेला। अब अनामिका और अल्फ़ी ही कमरे की दहलीज के बाहर थे। अनामिका को इस कमरे की पहले की यादें याद आ गईं। उसने एक गहरी साँस ली और अंदर आ गई।

"माया! आ गई! मैं तेरा ही इंतजार कर रही थी।" अंदर एक औरत की
आवाज गूंज उठी।

और उस आवाज को सुनकर अनामिका अपनी जगह पर खड़ी ही रह गई। वहीं दूसरे सभी सकते में आए थे। सभी की नज़र अनामिका पर जाकर टिक गई क्योंकि उसी के दहलीज लांघने के बाद ये आवाज आई थी। ऐना, परिधि और तो और चैतन्य भी उसे अजीब सी नज़रों से देख रहा था। वो कुछ कहती उससे पहले ही एक बार फिर से वही आवाज गूंजी।

"अच्छा! तो इस बार उसे भी अपने साथ लेकर आई है।"

और ये सुनते ही अनामिका और चैतन्य ने एक-दूसरे की ओर देखा। ना जाने क्यों दोनों का ही दिल अजीब सा हो रहा था। अनामिका आगे बढ़ती तभी फिर से वो आवाज आई, जो इस बार शरारत से

खनक रही थी।

"तो यही है तेरा पिशाच! माया का पिशाच!"

और ये सुनते ही चैतन्य का चेहरा सदमे की स्याही से काला पड़ गया। उसने अनामिका की ओर देखा, जो उसे ही अपने रंग उड़े चेहरे के साथ देख रही थी। दोनों की ही हिम्मत पीछे मुड़कर देखने की नहीं थी। फिर भी थोड़ी हिम्मत इकट्ठी करके उन दोनों ने देखा। अल्फ़ी दहलीज पर खड़ा था। अनामिका के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगी। समय और नियति का ये खेल उसकी समझ से परे था, जो उसे एक नई पहचान और नए रिश्तों से जोड़ रही थी और रिश्तों का ये चक्रव्यूह उसे और भी उलझाता जा रहा था। तभी दिव्याक्षि उनके सामने आई।

"आओ अल्फ़ी! अपनी माया के साथ अंदर आओ!"
"आओ अल्फ़ी! अपनी माया के साथ अंदर आओ! माया ने कहा था कि वो तुम्हें अपने साथ लेकर आएगी। कब से इंतजार था मुझे।" दिव्याक्षि ने बहुत ही प्यार से कहा। वो एक ओर चलती हुई पत्थर से बने हुए मेज के पास जाकर बैठ गई।

अनामिका ने हिचकिचाते हुए मुड़कर अल्फ़ी की ओर देखा। वो भी ऑखों में सवाल लिए उसकी ओर ही देख रहा था। बिना शक माया के जिक्र से उसकी ऑखें फिर नम हो गई थीं। इसके बाद अनामिका ने एक झिझक भरी नज़र चैतन्य की ओर डाली। उसने अनामिका से नज़रें फेर रखी थी और सामने देख रहा था। एक फॉस सी चुभन थी उसके दिल में, जिसका दर्द उसके चेहरे पर उतर आया था। अनामिका की तरह वो भी एक गुंजाइश को अब तक नकार ही रहा था और वो अभी भी ये नहीं मानना चाहता था।

अनामिका ने उसकी ओर देखकर एक गहरी साँस ली और फिर आगे
आकर उसके साथ खड़े होते हुए उसकी उंगलियों में अपनी ऊंगलियाँ फँसा ली। चैतन्य की नज़रें उन उलझी हुई उंगलियों की ओर गई और फिर उसने नज़र उठाकर अनामिका को देखा, जो उसे मुस्कुराते हुए देख रही थी। उस मुस्कुराहट से चैतन्य के बेचैन दिल तक एक सूकून भरी राहत उतरी थी। यही तो वो यकीन था, जिसके लिए वो सारी दुनिया से लड़ सकता था। उसी समय अल्फ़ी भी आगे आकर उनके साथ खड़ा हुआ था। चैतन्य की नज़र उसकी ओर उठीं, तो उसे दिव्याक्षि को परखती नज़रों से ताकता हुआ पाया। अभी-अभी दिव्याक्षि ने जो कहा था, उसे सुनकर वहाँ मौजूद तीन लोगों के होश उड़ गए थे। अल्फ़ी, परिधि और ऐना! जहाँ ऐना और अल्फ़ी आश्चर्य से दिव्याक्षि को घूर रहे थे, वहीं परिधि का चेहरा सदमे से राख हो चुका था। उन तीनों के लिए ही माया का ऐसा जिक्र बहुत ही असामान्य सी बात थी, जबकि उनमें से दो को माया के मौत की खबर थी।

"माया! कौन माया?" ऐना ने सबके चेहरे को घूरते हुए पूछा।

"ऐना! ये तुम हो! अच्छी बात है। आखिर तुम्हारे इतने सालों की तपस्या का फल मिलने वाला है तुम्हें।" दिव्याक्षि ने उसी खनकती हुई आवाज़ में कहा और ये सुनते ही अनामिका की ऊंगलियाँ चैतन्य की उंगलियों में कस गईं।

"कैसा फल? मैं समझी नहीं!" ऐना ने दिव्याक्षि को घूरकर देखते हुए पूछा।

"देख! तेरी माया आई है। कितना तड़पी है ना तू उसके लिए! अब सामने है तो पहचान नहीं रही। कैसी माँ है?" दिव्याक्षि ने ऐना को धिक्कारने वाले अंदाज में कहा और फिर अपनी ऑखें बंद कर के बैठ गई।

"माया! मेरी माया! कहाँ?" और ये कहते हुए उसने अपने साथ आए चारों की ओर देखा। जाहिर सी बात थी कि अल्फ़ी और चैतन्य जो दोनों ही
उसके लिए अजनबी थे... वो माया नहीं हो सकते थे। तीसरी परिधि की पहचान उसे अच्छी तरह से पता थी। तो फिर....

"अनामिका!" ऐना के होठों से निकला।

और अनामिका का दिल जोरों से धड़का। नहीं! वो बिल्कुल भी नहीं चाहती थी कि ऐसा हो। अगर ऐसा हुआ तो समस्याएँ यकीनन बढ़ने वाली थी और जिसे सुलझाना बिल्कुल भी आसान नहीं होने वाला था। वो बस अपने अंदर उठते तूफान को किसी तरह रोके हुए चैतन्य से बिल्कुल लगकर खड़ी हो गई थी।

"तुम माया हो! मेरी माया हो! तो झूठ क्यों बोला मुझसे... जब मैंने तुमसे पूछा था?" ऐना जज़्बाती होते हुए उसके करीब आकर शिकायती लहज़े में बोली और अपना सिर इंकार में हिलाती हुई अनामिका कुछ बोल पाती उससे पहले ही एक भारी और नाराज़ सी आवाज़ ने उसे रोक दिया। साथ ही परिधि को भी, जिसने कुछ कहने के लिए अपने होंठ हिलाए ही थे।

"क्या बकवास है ये सब? ये माया नहीं है!" अल्फ़ी की नाराज़गी उसकी ऑखों से भी झांक रही थी। और

इस तरह टोके जाने पर ऐना की भी त्योरियाँ चढ़ी थीं। उसने नाराज़गी से अल्फ़ी की ओर देखा और खुश्क लहज़े में पूछा, "और तुम कौन हो? माया को कैसे जानते हो?"

"उसका पति हूँ मैं और उसकी तलाश में यहाँ आया था।" अल्फ़ी ने खुद को काबू करते हुए भीगे से लहज़े में कहा।

"माया के पति! तुम! एक मिनट! मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है और उसकी तलाश में यहाँ आए थे से क्या मतलब है तुम्हारा?" ऐना ने
उलझी हुई आवाज में थोड़ी झल्लाहट के साथ कहा।

"मैं और माया एक-दूसरे से प्यार करते थे। जब ये राज खुला कि वो आपकी बेटी है... तब बड़ी मुश्किलों से गुजरकर हमारा विवाह हुआ था। मगर विवाह के बाद उसकी शक्तियाँ जागृत होने लगीं, जिसकी वजह से वो हमेशा डरी और घबराई हुई रहने लगी और फिर ऐसी हालत में एक दिन उसे आपका खत मिला और वो यहॉ आ गई। फिर उसकी कोई खबर नहीं मिली।" अल्फ़ी ने कम से कम शब्दों में अपनी बात कही थी।

"मेरा ख़त! कौन सा ख़त? मैंने कभी माया को कोई ख़त नहीं लिखा और वो यहाँ आ गई से क्या मतलब है? मैंने मना किया था लता को। फिर उसे यहाँ क्यों आने दिया उसे? तुमने भी नहीं रोका

उसे?" घबराई हुई ऐना ने चीखते हुए अल्फ़ी का गिरेबान पकड़ा था।

अल्फ़ी ने नम हुई अपनी आँखों से ऐना को देखा और फिर उसके हाथों को पकड़ते हुए गमगीन आवाज में बोला, "आप नहीं जानती... उस समय हम जिंदगी के किस बुरे दौर से गुजर रहे थे। ऐसे समय में जब उसे आपका ख़त मिला, तो वो खुद को रोक नहीं पाई और यहाँ आ गई। मैं उसे कैसे रोकता? आप माँ थी उसकी!"

"तो तुम्हें भी साथ आना चाहिए था ना! उसे अकेले कैसे भेज दिया?" ऐना ने एक बार फिर से अल्फ़ी से शिकायत की।

"माया ने रोक दिया। हम साथ नहीं आ सकते थे।" अल्फ़ी ने किसी अपराधी की तरह सिर झुकाकर कहा।

"साथ नहीं आ सकते थे! क्यों नहीं आ सकते थे?" ऐना ने आँखें सिकोड़ कर सवाल किया और तभी उसे याद आया कि उन सबके अंदर आने पर दिव्याक्षि ने उसे पिशाच कहा था।
"तुम... तुम पिशाच हो?" ऐना ने अपनी तर्जनी उंगली उसकी ओर उठाकर सदमे भरी आवाज में कहा।

अल्फ़ी ने सिर हिला कर हामी भरी और उसके हामी भरते ही ऐना ने अपनी दोनों हथेलियों से अपना मुँह ढांप लिया। वो घुटी-घुटी सी आवाज़ में रोने लगी थी।

"जब हम एक-दूसरे के करीब आए... हमें नहीं पता था कि हम दोनों कौन हैं? वो तो बाद में माँ ने हमें सब बताया। मगर तब तक देर हो चुकी थी। माँ ने हमारी खुशी के लिए हाँ तो कर दी, मगर उसके बाद वो कभी भी सूकून से नहीं रह पाई और उनका डर उन्हें हमसे छीनकर ले गया।" अल्फ़ी ने कांपती हुई आवाज में कहा।

"तुम्हारी माँ?" ऐना ने अपनी सिसकियों के बीच पूछा।

"आप जानती हैं उन्हें। मीना! वही..... जो यहाँ के वॉकर मेंशन में काम करती थीं।" अल्फ़ी ने उनकी जिज्ञासा शांत करते हुए कहा।

"मीना! तुम मीना के बेटे हो! उसने शादी कर ली थी!" ऐना ने आश्चर्य से कहा और फिर अगले ही पल वो चौंक गई। उसने अल्फ़ी की ओर ग़ौर से देखा और एक बेयकीनी अंदाजे के साथ कहा, "तुम मीना के बेटे हो! तो तुम पिशाच क्यों हो?"

"क्योंकि मैं विलियम अल्फ्रेड वॉकर का बेटा हूँ।" अल्फ़ी ने एक गहरी साँस छोड़ते हुए कहा और ये सुनते ही ऐना के पैर कांपने लगे। वो ढहने ही वाली थी, जब अल्फ़ी ने आगे बढ़कर उसे थाम लिया।

"ओह गॉड! गॉड! ये नहीं होना था! बिल्कुल नहीं होना था। उसे बचाने के
लिए ही तो मैंने उसे खुद से दूर किया था, ताकि वो इन सब मुसीबतों से दूर रहे। मैं कितनी खुश थी कि कल माया के सर्वशक्तिमंडल में चुन लिए जाने के बाद हम सब आजाद हो जाएँगे और फिर मैं यहाँ से अपनी माया के पास चली जाऊंगी। अपनी बेटी के पास! हमेशा के लिए।" कहकर वो अल्फ़ी से लिपटकर फफक-फफक कर रोने लगी। उसे संभालता हुआ अल्फ़ी भी अपने ऑसू रोक नहीं पाया।

अनामिका और चैतन्य दोनों ने ही शिकायत भरी नज़र परिधि पर डाली, जो हर लम्हे के साथ जैसे खुद में सिमटती जा रही थी। वो बहुत ही निढाल सी दिखाई दे रही थी और आख़िरकार जमीन पर दीवार के सहारे बैठ गई। हताशा उसके चेहरे पर जोंक की तरह चिपक गई थी, जिससे उसका चेहरा हर पल सफेद होता जा रहा था।

बड़ी ही मुश्किल से बोझिल माहौल थोड़ा सा संभला, जब ऐना, अल्फ़ी की बाहों में निढाल सी पड़ गई थी। सबके मन में एक डर घर कर गया कि...माया के गायब होने की खबर से ही वो इतनी बेदम हो गई थी, ना जाने वो उस तूफान को कैसे संभालेगी, जो आगे उसका इंतजार कर रहा था।

"आप ठीक हैं?" अल्फ़ी ने बहुत ही नर्मी से पूछा, जिस पर ऐना ने अपनी नाक सुड़कते हुए इंकार में अपना सिर हिलाया।

"हौसला रखें! फिलहाल और कुछ नहीं कर सकते हम!" अल्फ़ी ने भरी हुई आवाज में कहा, जिस पर ऐना ने अपनी लाल ऑखों से उसकी ओर देखा।

"ऐना! सवाल-जवाब करने की हालत नहीं है आपकी... पर ये बहुत जरूरी है। आपने.... माया को खुद से दूर क्यों किया? ऐसी क्या वजह थी कि एक माँ ने इतना कठोर फैसला ले लिया?" इस बार अनामिका उसकी
ओर आगे बढ़कर बोली। ऐना ये सवाल सुनते ही बुरी तरह से सिहर उठी थी।

"क्योंकि एक मनहूस काली छाया उसके पीछे पड़ी थी।" जवाब पीछे से आया। उन सभी ने पलटकर देखा तो दिव्याक्षि मेज पर रखे रंगीन पत्थरों को अलग कर रही थी।

"कैसी काली छाया?" चैतन्य ने सवाल किया।

"बहुत साल पहले की बात है। एक डायन थी। छाया! छल की शक्ति थी उसमें। बहुत ही मौका और मतलब परस्त! खूबसूरत थी... उस पर जब अपने छल का इस्तेमाल करती, तो पक्के से पक्के चरित्र वाला पुरुष उस पर मंत्रमुग्ध हो जाता। ना जाने कितने घर तोड़े उसने, पर उसकी फितरत ना सुधरी। कुछ समय के बाद पता चला कि वो लोगों की उम्र खाने लगी थी। जो भी उसके करीब आता... सबसे कटता चला जाता और फिर एक दिन उसकी मृत्यु हो जाती। लोगों को उससे भय हो गया था। कोई भी उसके पास जाने से कतराता। फिर एक दिन पता चला कि वो नर्क का द्वार खुलवाने की फिराक में थी और ये उसका अंतिम दुस्साहस निकला। उसे किसी भी तरह से क़ैद करने का प्रयास किया गया, मगर आखिरी समय में वो बच निकली और फिर कुछ दिनों के बाद एक काली रात उसने तांत्रिक श्रेष्ठ सिद्धनाथ के घर के सामने पेड़ से लटककर जान दे दी।" कहानी सुनाने के बाद दिव्याक्षि सॉस लेने के लिए रूकी।

"फिर... फिर क्या हुआ?" अनामिका ने कौतूहल से पूछा।

"वो एक पापिनी थी, इसलिए उसे गिरफ्तार करने के बाद उसकी आत्मा को कैद किया जाने वाला था। मगर ऐसा हो पाता उससे पहले ही उसने अपनी जान खुद ले ली और उसकी आत्मा सबकी पहुँच से बाहर हो गई। फिर शुरू हुआ काली छाया का खेल! मगर फिर वो किसी के हाथ नहीं
आई। मरने के बाद भटकती उसकी आत्मा बदला लेना चाहती थी और उस बदले की आग में झुलसी हमारी माया!" दिव्याक्षि ने धमाका करते हुए कहा।

"माया! उसे माया से कैसी दुश्मनी थी?" चैतन्य ने सवाल किया।

"दरअसल पुरूषों को अपने जाल में फांसते-फांसते वो खुद किसी के जाल में फंस गई। तांत्रिक माणिक! उन्हीं की वजह से वो क़ैद होते-होते बची थी क्योंकि अंतिम क्षणों में ही उसे पता चल गया कि तांत्रिक माणिक उसे धोखा देकर गिरफ्तार करवाने वाले हैं। वो वहाँ से भाग गई और फिर उसने आत्महत्या कर ली।" दिव्याक्षि ने कहा।

"हाँ तो..!" चैतन्य ने पूछा।

"तांत्रिक माणिक, तांत्रिक श्रेष्ठ सिद्धनाथ के अनुचर थे और माया के पिता।" दिव्याक्षि ने सबको हैरान करने वाला सच बताया।

"तो क्या..." अनामिका ने बात अधूरी छोड़ी।

"हाँ! उनके पास किसी भी तरह के छल या सम्मोहन को काटने की शक्ति थी। इसीलिए छाया को फँसाने के लिए उनका सहारा लिया गया। मगर छाया के भागने और आत्महत्या कर लेने से सब कुछ उलझता चला गया। वो छल की शक्ति रखती थी... एक डायन थी और अपने समय से पूर्व मर गई थी। ऐसी आत्माएँ... बहुत ही शक्तिशाली होती हैं और उन्हें कभी भी शांति नहीं मिलती। उसने भी मरने के बाद छल का रूप ले लिया था और इसी की मदद से उसने तांत्रिक माणिक को धोखे से मार दिया क्योंकि कोई भी इसके लिए पहले से तैयार नहीं था। सबको लगा था कि उनकी हत्या के बाद वो शांत हो जाएगी, मगर वो बहुत ही दुष्ट निकली। तांत्रिक माणिक की हत्या के बाद उसकी बुरी नज़र उनकी गर्भवती पत्नी ऐना
पर पड़ गई थी। वो एक महीने गर्भ से थी, जब छाया की आत्मा उसके गर्भ से होकर निकल गई। सबको लगा था कि बच्चे की मृत्यु हो जाएगी, पर वो आश्चर्यजनक रूप से बच गई। मगर छाया का स्पर्श उसे शापित कर गया और यह बात सिर्फ मैं और ऐना जानती थी। ऐना को ये लगा कि लोगों को पता चला तो वो उसके बच्चे को मार डालेंगे। इसलिए शाप वाली बात हमने छिपा ली। मगर इतने बड़े हमले से बच जाने की वजह से चारों ओर बच्चे के शक्तिशाली होने की बात फैल गई। सबको यही लगा कि इस बच्चे से ज्यादा शक्तिशाली शायद सदियों में ही कोई पैदा हुआ होगा। बस उसी समय डाकिनी के गर्भधारण की भी खुशखबर आ गई थी। डाकिनी ने सामान्य तरीके से गर्भ धारण नहीं किया था। वो पूरी तरह से एक कुंवारी कन्या थीं। उसने इसके लिए प्राणस्थापना विधि का सहारा लिया था, जिसमें आह्वान करके किसी उत्तम आत्मा को गर्भ में प्रतिष्ठापित किया जाता है। इसके जरिए कोई भी डायन एक शक्तिशाली संतान उत्पन्न कर सकती है, यहाँ तक कि उसके लिंग का निर्धारण भी स्वयं कर सकती है। उसे एक शक्तिशाली कन्या चाहिए थी। मगर इस कार्यविधि में कुछ जटिलताओं की वजह से डाकिनी ने दो संतानों के लिए गर्भ धारण कर लिया। सब तरफ खुशियाँ जैसे वापस लौट आई थीं, उसी समय ऐना पर एक वज्राघात हुआ। डाकिनी को भविष्य में अपनी संतान सर्वश्रेष्ठ चाहिए थी, मगर ऐना की होने वाली संतान के विषय में फैली हुई बातें उनके कानों में चुभने लगी थी। हालांकि उन्होंने कभी कोई ग़लत या कड़ी बात तो नहीं कही, पर ऐना उनके मन को पढ़ चुकी थी। उसी समय मैंने सितारों की चाल पढ़ी, जिसमें ऐना की संतान को डाकिनी के संतान से भी खतरा लिखा था। ऐना की संतान पर चारों ओर से खतरा बढ़ता ही जा रहा था। उस समय मैंने ही डरी हुई ऐना को वहाँ से कहीं दूर जाकर अपनी संतान को जन्म देने और उसे कहीं सुरक्षित रखने की बात कही थी। मेरा मानना था कि जब तक बच्चा इतना बड़ा ना हो जाए कि अपनी सुरक्षा खुद कर सके, तब तक उसे छिपाकर रखना जरूरी था। हमारी इस योजना की जानकारी किसी को भी नहीं थी। उसी समय ऐना अपने गॉव चली

गई, जहाँ उसने माया को जन्म दिया और फिर उसे अपनी परिचित को दे आई।
यहाँ तक कि ऐना ने उससे वो गॉव भी छुड़वा दिया और उसे एक सुरक्षित जगह में एक अच्छी नौकरी दिलवा दी। इससे आगे आप सभी... सब जानते हैं।" दिव्याक्षि ने हांफते हुए अपनी लंबी कहानी खत्म की।

"क्या माया को उसी काली शक्ति और डाकिनी की बेटी दोनों से ही खतरा था? पर वो काली शक्ति तो उसका पीछा कहीं भी कर सकती थी। फिर उसे दूर भेजने की क्या जरूरत थी? यहाँ अपनी ऑखों के सामने भी तो माया को सुरक्षित रखा जा सकता था!" चैतन्य ने सवाल उठाया।

"नहीं! वो काली शक्ति माया पर प्रहार करने के बाद लगभग शक्तिहीन हो गई थी। पर फिर भी उसे पकड़ पाना आसान नहीं था। वो कभी इस गॉव की दहलीज ना लांघ सके इसके लिए पूरे गॉव की चौकी बांध दी गई, जो आज भी मौजूद है। इसलिए इस गॉव से बाहर माया उससे हमेशा सुरक्षित थी। रही बात डाकिनी के संतान की, तो दिव्याक्षि और मुझे यही लगा कि वो संतान खुद को ज्यादा प्रतिष्ठित बनाने के लिए माया के लिए खतरा हो सकती थी, इसलिए मैंने अपने बच्चे की मृत्यु की झूठी खबर दी थी, ताकि उसकी ओर किसी का ध्यान ही ना जाए। मगर फिर एक गड़बड़ हो गई।" ऐना ने बड़ी मुश्किल से कहा।

"वो क्या?" अनामिका ने पूछा।

"सर्वशक्तिमंडल! दिव्याक्षि ने आज से करीब दो साल पहले ही (जब अल्फ़ी और माया की प्रेम कहानी शुरू हुई थी।) मुझे बता दिया था कि मेरी माया सर्वशक्तिमंडल की सदस्य बनने वाली हैं और वो इससे बहुत खुश भी थी। दिव्याक्षि को लगता था कि इस तरह से मुझे मेरी बेटी वापस मिल जाएगी। पर समस्या यहीं उत्पन्न हो गई थी। सबसे पहले तो मैंने सबसे झूठ बोला था, ऊपर से डाकिनी को पूरा भरोसा था कि पचास सालों बाद होने वाले इस चुनाव में उसकी बेटी माया ही चुनी जाएगी क्योंकि आसपास कोई भी उसके सामने ठहरता नहीं था और यहीं मेरा मन खटक
गया। मैं नहीं चाहती थी कि बस किसी ऊँचे पद का लालच मेरी बेटी की जान के लिए खतरा ना बन जाए। ये पद यहाँ की माया को मिल जाए... मैं बस यही चाहती थी। मैंने तो तभी सोच लिया कि माया के सर्वशक्तिमंडल के सदस्य बनते ही मैं सब कुछ छोड़कर अपनी बेटी के पास वापस लौट जाऊंगी और एक सामान्य सा जीवन बिताऊंगी। मैं जानती थी कि वो नाराज़ होगी। पर मैंने भी सोच लिया था कि मैं उसकी सारी नाराजगी सह लूंगी... सारी शिकायतों सुन लूंगी.... पर अब उसके साथ ही रहूंगी। हमेशा के लिए! पर... ऐसा नहीं हुआ। मेरे लाख जतन के बाद भी वो यहाँ आ गई और आज तुम सब मेरे लिए ये मनहूस खबर लेकर आए हो कि यहाँ आकर वो लापता हो गई। कहाँ गई मेरी माया? मुझे उससे माफी मांगनी है... बहुत सारी बातें करनी हैं। उसे लेकर आओ! मेरे पास लेकर आओ उसे।" ऐना, अल्फ़ी की बाहों में मचलती हुई बिलखकर बोली और उसकी इस आखिरी बात से सभी का दिल छलनी-छलनी हो गया। वो उसे कैसे बताते माया की मौत के बारे में? ये शायद उस समय उन सभी के लिए दुनिया का सबसे मुश्किलतरीन काम था। वो अभी इसी उलझन में फंसे ही थे कि तभी एक बार फिर से दिव्याक्षि की आवाज आई।

"किसे ढूंढ रहे हो? माया तो यहीं है.... हमारे साथ... हमारे पास।"

और इस बार अनामिका बुरी तरह से बिदकी थी। वो दिव्याक्षि के पास आई और झुंझलाकर तैश भरी आवाज में बोली, "मुझे समझ में नहीं आता कि आप इस बात के पीछे क्यों पड़ी हुई हैं कि मैं माया हूँ। आपको पता नहीं कि... माया को यहाँ धोखे से बुलाकर आज रात ही मार डाला है किसी ने।"

और रवानगी में बोली गई अनामिका की इस बात ने पूरे कमरे में जैसे सन्नाटा कर दिया। अनामिका ने सहमी हुई नज़रों से ऐना की ओर देखा, जो ये सुनकर सकते में आ गई थी। वो अनामिका को इस तरह देख रही थी कि जैसे उसने इस तरह की बात बोलने या सोचने की हिम्मत भी कैसे
की? उसकी ऑखों में एक जूनून खून का रंग लेकर उतर आया था, जिसने अनामिका के साथ-साथ सभी को सहमाकर रख दिया था।

"ऐसा नहीं हो सकता। अगर माया मरी होती तो मुझे पता चल जाता। आज से सात महीने पहले जब तुम मुझसे मिलने आई थी... तब तुम्हारी आत्मा के अंश को मैंने खुद से बांधा था। अगर माया की मृत्यु हुई होती और उसके बाद उसकी आत्मा ने देहत्याग किया होता, तो मुझे पता चल जाता। मैं बस इतना जानती हूँ कि माया की मौत नहीं हुई है। तुम ही हो माया। हाँ... तुम्हारी आवाज़ थोड़ी सी अलग है, पर फिर भी मैं धोखा नहीं खा सकती। तुम्हारी आत्मा और मुझसे जुड़ी माया की आत्मा का अंश एक ही है। तुम माया हो! तुम ही माया हो! माया मरी नहीं है! वो मरी नहीं है।" दिव्याक्षि चिल्ला-चिल्लाकर उन सबको यकीन दिलाते हुए बोली।

और उसकी बात सुनकर सभी के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। ये माया के नाम की पहेली अब तो और भी उलझने लगी थी। माया नाम का रहस्य अनामिका के वजूद का हिस्सा कैसे बन सकता था, यदि माया मरी नहीं थी, जैसा कि दिव्याक्षि ने कहा था। सभी सकते में खड़े दिव्याक्षि को घूर रहे थे, जबकि अनामिका की नज़रें एक ओर निढाल पड़ी परिधि की ओर मुड़ी थी। अब वही एक थी, जो ये राज खोल सकती थी कि आखिर माया के साथ हुआ क्या था? आखिर वो मरकर भी क्यों नहीं मरी थी?

दिव्याक्षि की बात सुनने के बाद सभी सकते में आ गए थे। जहाँ चैतन्य ने अनामिका पर गिरफ्त कसते हुए उसे अपने और भी करीब किया था, वहीं ऐना और अल्फ़ी अभी भी कुछ सोचने-समझने की हालत में नहीं थे। अनामिका ही माया थी। पर कैसे? जबकि दिव्याक्षि ये भी कह रही थी कि माया की मौत नहीं हुई है। ये कैसे संभव था? पर ये सब सुनने के बाद अल्फ़ी के पैर जरूर लड़खड़ाए थे। उसने एक चोर नज़र अनामिका पर डाली और उसके वो सारे अहसास हरे हो गए, जो माया के जाने के बाद से सूखने लगे थे। उसे अनामिका के करीब अपनी बेचैनियाँ याद आने लगी। कैसे वो उसके करीब हमेशा माया को महसूस करता है। तो क्या सचमुच अनामिका उसकी माया ही है? पर कैसे? और यही 'कैसे' उसके दिल में तूफ़ान उठाए हुए था। चैतन्य ने अल्फ़ी की निगाहें अनामिका पर
देखी, तो वो एक बार फिर से चिड़चिड़ा उठा।

"वाह! गजब की थ्योरी है!" चैतन्य चिढ़े हुए अंदाज में बोला। उसे अल्फ़ी की नज़रों और दिव्याक्षि की दो धारी बात ने झुंझला दिया था।

"चैतन्य!" अनामिका ने उसे घुड़का।

"तुम चुप रहो! जब देखो.. चैतन्य! चैतन्य! उससे तो कुछ बोला जाता नहीं तुमसे। उस टाईम तो मुँह में दही जमाकर बैठ जाती हो। समझ नहीं आता हो क्या रहा है? क्यों हो रहा है? इन मोहतरमा का कहना

है कि तुम माया हो। तुम खुद बताओ... माया हो तुम? हो तुम माया? और तो और इनका कहना है कि माया मरी भी नहीं है। गज्जब! अगर माया मरी नहीं है तो पिछले दो घंटे से ये बिना पंखों का चमगादड़ टेंसुएँ किसके लिए बहा रहा है?" चैतन्य अपना आपा खोते हुए बोला। उसके तेज ऐतराज पर सभी ने उसकी ओर अपनी परेशान निगाहें उठाई थीं।

"चैतन्य! कंट्रोल योरसेल्फ! शांत हो जाओ!" अनामिका ने चैतन्य के सीने पर हाथ रखते हुए फुसफुसाती हुई आवाज में कहा।

"अरे नहीं रहना है मुझे शांत! पागल हो गया हूँ मैं यहाँ आने के बाद। जहाँ देखो सबकी जिंदगी में प्रॉब्लम ही प्रॉब्लम है लेकिन प्रॉब्लम क्या है? क्यों है? ये किसी को नहीं मालूम। और.... सबसे बड़ी बात तो ये है कि हम दोनों यहाँ क्या कर रहें हैं? क्यों हैं हम दोनों यहाँ? मैं कह रहा हूँ अनामिका... इनकी प्रॉब्लम है.... इन्हें निपटने दो। चलो यहाँ से। नहीं मिलता है समय द्वार... कोई बात नहीं। हम दोनों यहाँ से दूर चलते हैं। रह लेंगे साथ कहीं और जब तक वापस जाने का रास्ता नहीं मिलता।" चैतन्य बच्चों की तरह तुनकते हुए बोला।

अनामिका कुछ बोलती, उससे पहले ही दिव्याक्षि की आवाज आई, "समय
द्वार! तुम्हें समयद्वार क्यों चाहिए?"

"क्योंकि वापस जाना है हमें?" अनामिका के कुछ कहने से पहले ही चैतन्य चिल्लाकर बोला।

"कहाँ वापस जाना है?" एक बार फिर से दिव्याक्षि ने पूछा। अनामिका ने चैतन्य को शांत करना चाहा, मगर चैतन्य आपे से बाहर हो चुका था।

"अपने समय में जाना है हमें। जहाँ से हम दोनों आए हैं। भविष्य से!" चैतन्य दाँत पीसता हुआ बोला।

और ये रहस्योद्घाटन होते ही वहाँ चारों ओर सन्नाटा फैल गया। जहाँ अल्फ़ी, ऐना और परिधि की फैली हुई नज़रें उन दोनों पर जाकर टिक गई थी, वहीं इन सबसे विपरीत ये सुनने के बाद दिव्याक्षि के हाथ अपने सामने फैले रंगीन पत्थरों पर फिरने लगे। उसने एक बार फिर से सभी अलग किए हुए पत्थरों को मिलाया और फिर उन्हें अपनी हथेलियों में भर लिया। फिर दोनों हथेलियों के बीच थोड़ी जगह खोल कर वो उन पत्थरों को नीचे गिराने लगी। ऐसा करते-करते उसकी हथेलियों में बस एक पत्थर रह गया, जिसे उसने गिरने से रोक दिया और फिर उस पत्थर को दोनों हथेलियों की कैद में बंद कर लिया।

"भविष्य से आया मेहमान! देखें जरा कौन हो तुम? कहीं... वही तो नहीं जिसे आना था।" अपनी बात खत्म कर दिव्याक्षि हौले से मुस्कुराई और फिर अपनी हथेलियाँ खोल कर उस पत्थर की ओर देखा। वो एक नीला पत्थर था।

"नीलम! वायु तत्व का रत्न! तुम तो वायु रक्षक हो! है ना!" दिव्याक्षि बहुत ही उत्साहित होते हुए बोली। और ये सुनते ही अनामिका और चैतन्य की ऑखें हैरानी से फैल गई। उन दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। चैतन्य की ऑखों में एक सवाल था जिसके जवाब में अनामिका ने सिर ना में हिलाते हुए अपने कंधे उचका दिए।

"तो तुम आ ही गए। तुम्हें तो आना ही था।" दिव्याक्षि मुस्कुराते हुए बोली।

और ये सुनते ही चैतन्य के होंठों से निकला, "हे भगवान! हो गया सियापा!"

"और वो किसलिए?" सवाल अनामिका ने किया था।

"माया की मदद करने के लिए। माया को तुम्हारी मदद चाहिए।" दिव्याक्षि ने कहा और ये सुनते ही चैतन्य ने गुस्से में अपनी मुट्ठियाँ भींच ली।

"माया को मदद! पर दिव्याक्षि... ये बात सच है कि.... माया अब नहीं रही।" दिव्याक्षि की बात पर अल्फ़ी ने रूंधे हुए गले से कहा और उसकी बात सुनकर पास ही बैठी ऐना की सिसकारी निकल गई।

"और तुम लोग ये क्यों नहीं समझ रहे कि तुम्हारे साथ खड़ी ये लड़की ही माया है और इसी को वायु-रक्षक की जरूरत है।" इस बार दिव्याक्षी भी भड़कते हुए बोली।

और ये सुनकर एक बार फिर चैतन्य ने अनामिका की ओर कातर नजरों से देखा और उसके कंधे पर झुकते हुए बोला, "अनु! सच बताओ! मैं पागल हो गया तो तुम मुझे छोड़ तो नहीं दोगी ना!"

"श्श्श्श! ये मजाक का समय नहीं है।" अनामिका ने उसे फिर से घुड़का था, जिस पर चैतन्य ने उसे बड़ी ही मासूम नज़रों से देखा था। सबका ही
दिमाग फिर गया था, सिवाय अनामिका के। उसका दिमाग अभी भी काम कर रहा था। दिव्याक्षि की सारी बातों के बीच उसने अपने मतलब की बात ढूंढ ही ली थी। वो चैतन्य का हाथ छुड़ाकर दिव्याक्षि की ओर बढ़ी और उसके सामने बैठ गई।

"सही कह रही हैं आप! मदद की जरूरत तो है मुझे। पर आप समयद्वार के नाम से चौंकी थीं। आप जानती हैं कि समय द्वार कैसे बनता है और कौन बना सकता है?" अनामिका ने आखिरकार अपने दिमाग में मचलते सवाल को बाहर निकालते हुए पूछा।

"तुम बना सकती हो समयद्वार! तुम जल-रक्षक हो ना!" दिव्याक्षि ने बिना उसकी तरफ देखे कहा।

और ये सुनते ही अनामिका की ऑखों में एक चमक आ गई। उसने तेजी से पलटकर चैतन्य की ओर देखा। वो भी उतनी ही चमक भरी ऑखों से उसी की ओर ही देख रहा था। शायद अब उन दोनों को वो मिलने वाला था, जिसके लिए वो इतने दिनों से इस अतीत में भटक रहे थे।

"और वो कैसे?" अनामिका ने उतावली होकर पूछा।

"इस वायु-रक्षक की मदद से।" दिव्याक्षि ने चैतन्य की ओर ऊंगली उठाकर कहा। अनामिका ने भी पलटकर चैतन्य की ओर देखा।

"मैं!" चैतन्य ने अपने दोनों हाथों की तर्जनी उंगली अपने ही सीने में रखते हुए आश्चर्य से कहा।

"हाँ! समयद्वार बनाना आसान नहीं होता। इसे एक शक्तिशाली जल-रक्षक ही बना सकता है, जिसे पूरा करने में वायु शक्ति की मदद लगती है... जो कि एक वायु-रक्षक के पास होती है।" दिव्याक्षि ने अनामिका के सवाल
का जवाब देते हुए कहा।

"पर ऐसा क्यों?" अनामिका ने पूछा।

"क्योंकि जल और वायु सबसे अच्छे मित्र होते हैं।" दिव्याक्षि ने कहा और ये सुनकर चैतन्य के सुलगते हुए दिल पर जैसे ठंडी फुहारें गिरी थीं। मगर उसने माहौल और हालातों के मद्देनजर अपने जज्बातों को काबू में ही रखा।

"अच्छे मित्र! मतलब?" अनामिका ने पूछा, जिस पर चैतन्य ने उसे एक घूरी से नवाजा कि दोनों के मित्र होने में उसे क्या ऐतराज़ था!

"तुम सब जानते ही होगे कि... जन्म के आधार पर हम सभी मनुष्यों का जीवन 12 राशियों में बँटा होता है। जब हम इन राशियों पर नजर डालते हैं तो वायु और जल हमेशा एक के बाद एक साथ में ही आते हैं और इन दोनों में प्रगाढ़ मित्रता होती है। जबकि ठीक पहले आने वाले पृथ्वी राशि से वायु की और ठीक बाद में आने वाले अग्नि तत्व से जल की शत्रुता होती है। इस समयद्वार की अवधारणा में यही मित्रता कार्य करती है।" दिव्याक्षि ने बताया।
"तो ये काम कैसे करता है क्योंकि मैंने कई बार छलद्वार तो आसानी से बनाए हैं, पर समयद्वार ये कभी भी समझ में नहीं आया।" अनामिका ने दिव्याक्षि से पूछा।

"क्योंकि कोई भी जल रक्षक अकेले समय द्वार नहीं बना सकता। उसे समय द्वार बनाने के लिए वायु रक्षक की मदद चाहिए होती है। जल तत्व का मतलब होता है - मन या बुद्धि और वायु तत्व का मतलब होता है - जीवन। जल रक्षक अपनी बुद्धि से समय द्वार बना सकता है, मगर उसमें जीवन वायु रक्षक फूंकता है। समय यात्रा करने के लिए तेज गति की जरूरत होती है और सबसे तेज गति प्रकाश में पाई जाती है, जो अग्नि तत्व का हिस्सा होता है। चूंकि अग्नि और जल में शत्रुता होती है, तो यह काम एक अति शक्तिशाली वायु रक्षक भी कर सकता है। इसलिए समय द्वार बनाने के लिए जल और वायु दोनों की शक्तियों की जरूरत होती है।" दिव्याक्षि ने विस्तार से उन सबको समयद्वार की अवधारणा समझाई।

"तो क्या... अग्नि और जल मिलकर भी समय द्वार बना सकते हैं?" अल्फ़ी ने आगे बढ़कर सवाल किया।

"नहीं! अग्नि और जल शत्रु होते हैं और इनका कोई मेल नहीं होता है। ये मिलकर समयद्वार नहीं बना सकते।" दिव्याक्षि ने साफ-साफ मना करते हुए जवाब दिया। ये सुनते ही अल्फ़ी का चेहरा बुझा था।

"एक मिनट! आपने कहा कि आपने पहले भी समयद्वार के बारे में माया को बताया था।" अनामिका ने एक और सवाल किया।

"हाँ! सात महीने पहले जब वो यहाँ आई थी ना! तब मैंने त
उसे तुरंत वापस लौटने के लिए कहा था क्योंकि उसकी माँ ऐना की तबीयत तो खराब थी ही नहीं। मैंने उसे बताया था कि उसके साथ धोखा हुआ है, इसलिए यहाँ से तुरंत लौट जाए क्योंकि उसकी ऐसी स्थिति में मदद करने वाला सात महीने बाद ही आएगा। एक वायु-रक्षक! और उसने भी मेरी बात मानकर कहा था कि वो तुरंत लौट जाएगी। फिर मैंने उसे एक किताब भी दी थी, जिससे वो अपनी शक्तियों का प्रयोग करना सीख सके, जिसमें छलद्वार बनाने का भी जिक्र था। मैंने उसे बताया था कि छलद्वार बनाकर वो एक जगह से दूसरी जगह आसानी से जा सकती है। उस समय उसने मुझसे समयद्वार के बारे में भी पूछा था, तब मैंने इस बारे में बताया था। उस समय मैंने कहा था कि सात

महीने के बाद जो वायु रक्षक आएगा, वो समयद्वार बनाने में उसकी मदद करेगा। उस समय सितारों की चाल यही बता रही थी कि सात महीने बाद एक समयद्वार बनने वाला है। जाहिर सी बात है कि वो माया ही बना सकती थी, एक वायु-रक्षक की मदद से। उसी समय भविष्य से आने वाली मदद की भी जानकारी मिली थी।" दिव्याक्षि ने कहा।

"तो क्या सितारों ने माया के आने वाले बुरे समय या फिर मृत्यु के बारे में और कुछ नहीं बताया और आपने ऐना को इस बारे में क्यों नहीं बताया?" अनामिका ने एक और महत्वपूर्ण सवाल उठाया।

"हाँ! सितारों ने उसके आने वाले तकलीफ़ भरे दिनों के बारे में इशारा किया था, पर... सितारों ने माया के मौत की भविष्यवाणी कभी की ही नहीं थी। उसकी मृत्यु इस समय तो बिल्कुल भी नहीं हो सकती क्योंकि उसकी आत्मा मुक्त हुई ही नहीं है और आत्मा मुक्त नहीं हुई तो फिर मृत्यु कैसी? ऐना को नहीं बताने के भी दो कारण थे। पहला कि माया उस समय उसे ये सब बताकर परेशान नहीं करना चाहती थी। उसका मानना था कि जब सब ठीक हो जाएगा, तो वो अपनी माँ से मिलने आएगी। इसलिए ये बात ऐना तक नहीं पहुँची और दूसरा कारण ये था कि उस समय के बाद मेरी ऐना से मुलाकात ही नहीं हुई। खाना देने वाली लड़कियों के अलावा
यहाँ और कोई नहीं आता था और वो भी मुझसे कुछ कहे-सुने बिना भाग जाती थीं।" दिव्याक्षि ने थकी हुई आवाज में कहा।

"पर वो तो कभी वापस लौटी ही नहीं। बल्कि तीन महीने तक मैं उसकी उन चिट्ठियों के धोखे में अपने कस्बे में रूका रहा, जो वो मुझे लिखा करती थी। उन चिट्ठियों में उसने अपने आसपास खतरे के बारे में भी मुझे बताया, जिससे वो छिपकर रह रही थी।" अल्फ़ी ने तड़पकर आगे बढ़ते हुए दिव्याक्षि से कहा।

"चिट्ठियाँ! उसने तुम्हें चिट्ठियाँ लिखी थीं?" अनामिका ने चौंकते हुए कहा।

"हाँ! चार चिट्ठियॉ थीं, जिसमें उसने अपनी कसम देकर मुझे यहाँ आने से रोक रखा था। उसने लिखा था कि वो यहाँ बिल्कुल सुरक्षित है। बल्कि मेरे आने से हम दोनों की जान को ख़तरा हो सकता था। इसलिए या तो मैं उसके आने का इंतजार करूं या फिर उसकी अगली चिट्ठी का। मैं उसे खतरे में नहीं डालना चाहता था, इसलिए उसका और उसकी चिट्ठियों का इंतजार करता रहा। मैंने वो तीन महीने अपनी माया की चिंता और याद में कैसे गुजारे ये मैं ही जानता हूँ। मगर तीन महीने गुजरने के बाद जब उसकी चौथी चिट्ठी मिली, जिसमें फिर वही सब लिखा हुआ था, तो फिर मेरे दिल ने उसकी बात मानने से इंकार कर दिया और मैं यहाँ आ गया। यहाँ बड़ी मुश्किल से मैं एक पार्टी में परिधि से मिला, जो माया की करीबी थी। उसके बाद मैंने परिधि के जरिए संदेश भिजवाकर उससे ना जाने कितनी बार मिलने की कोशिश की, मगर वो नहीं आई। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि वो मुझसे मिलना क्यों नहीं चाहती। मेरे दिल ने कभी भी ये नहीं माना कि मेरी माया बेवफा हो सकती है। वो तो अब पता चला कि यहाँ एक नहीं बल्कि दो-दो माया थीं, जिस वजह से इतनी गलतफहमियाँ फैलीं और गड़बड़ियॉ हुईं।" अल्फ़ी ने मायूसी भरे लहज़े में कहा।
अनामिका ने अल्फ़ी के उदास और मायूस चेहरे की ओर देखा, तो एक और सवाल उसके ज़हन में उभर आया।

"एक बात बताइए! आपको ये धोखा कैसे हुआ कि माया वापस लौट गई है और वो सुरक्षित भी है?"

"क्योंकि उसकी सलामती की खबर रखने के लिए मैंने माया की आत्मा को खुद से बांधा था। मैं जानती हूँ कि वो तकलीफ़ में थी, पर वो सुरक्षित थी। मृत्यु उसके आसपास भी नहीं थी। ऐसा होता तो मुझे

पता चल जाता।" दिव्याक्षि ने कहा।

"एक बात मेरी समझ में नहीं आई। अगर माया को धोखे से सात महीने पहले बुलाया गया था, तो उसे उसी समय क्यों नहीं मारा। अभी क्यों? सात महीने उसे कैद करके रखने का क्या औचित्य रहा होगा?" चैतन्य ने सवाल उठाया।

"पर मेरी गणना अभी भी यही कह रही है कि माया की मृत्यु नहीं हुई है।" दिव्याक्षि ने अपनी बात पर अड़ते हुए कहा।

"पर मैंने और अल्फ़ी ने उसका मृत शरीर देखा है। अपनी ऑखों से। अल्फ़ी ने तो उसकी लाश कितनी देर अपनी बाहों में पकड़ रखी थी। कम से कम अल्फ़ी को तो इतना बड़ा धोखा नहीं हो सकता।" चैतन्य ने दिव्याक्षि की बात काटते हुए कहा।

"फिर तो बस एक ही बात हो सकती है।" दिव्याक्षि ने एक आह के साथ कहा।

"क्या?"
"यही कि.... किसी ने नियति के साथ छेड़छाड़ की है और अगर ऐसा हुआ है... तो इसकी कीमत भी बहुत बड़ी चुकानी होगी।"

"नियति से छेड़छाड़! इसका क्या मतलब है?" अल्फ़ी ने सवालिया नजरों के साथ पूछा।

"इसका मतलब ये है कि... अगर माया की मृत्यु हुई है, तो वो स्वाभाविक मृत्यु बिल्कुल भी नहीं है।" दिव्याक्षि ने बहुत ही गंभीरता से कहा।
"स्वाभाविक नहीं है..... इसका क्या मतलब है?" अल्फ़ी ने आगे बढ़ते हुए सहमी हुई आवाज में पूछा।

"यही कि माया की मृत्यु अभी लिखी ही नहीं थी, तो वो मर कैसे सकती है? उसे एक लंबा जीवन जीना था और यदि तुमने उसका मृत शरीर देखा है, तो इसका मतलब यही है कि उसे किसी ने उसके समय से पहले मार दिया है। पर ये हुआ कैसे? ये तो जिसने किया है, वही बता सकता है।" दिव्याक्षि ने बहुत ही बुझी हुई आवाज में कहा।

"और मुझे पता है कि ये किसने किया है!" अपने अंदर के सारे गुस्से को दिल-दिमाग और ऑखों में भरकर चिल्लाता हुआ अल्फ़ी, परिधि की ओर झपटा। ये इतनी जल्दी हुआ कि सबकी पलकें झपकने से पहले ही परिधि की गर्दन अल्फ़ी की गिरफ्त में थी। उसने नीचे डर से दुबकी हुई परिधि को एक ही झटके में खुद से ऊँचा उठाते हुए दीवार पर पटक दिया। पैरों के नीचे से जमीन गायब होते ही पहले से ही डरी हुई परिधि और भी सदमे में आ गई। उसने अपने दोनों हाथों की ऊंगलियाँ अपनी गर्दन पर जमी अल्फ़ी की उंगलियों में फँसा दी। अगले ही पल में अल्फ़ी की पकड़ मजबूत से और मजबूत हो गई थी। परिधि को अपनी सॉसे हलक के नीचे फँसती हुई महसूस हुई और उसकी ऑखें फैलकर बाहर की ओर निकलने की कोशिश करने लगीं। वहीं अल्फ़ी का पूरा चेहरा गुस्से की आग में सुलगने लगा था और उसकी ऑखें पूरी तरह से बदलकर लाल हो चुकी थीं। इस समय वो हर हिसाब चुकता करने पर आमादा हो चुका था।

अल्फ़ी का हमला इतना तेज था कि वहाँ मौजूद दूसरे पलक झपकाने से ज्यादा और कुछ ना कर सके और जब मामला समझ आया... चैतन्य उनकी ओर भागा।

"अल्फ़ी! छोड़ो उसे!" चैतन्य ने परिधि की गर्दन पर कसी हुई अल्फ़ी की
उंगलियों को छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा। मगर अल्फ़ी पर तो जैसे जूनून सवार हो चुका था। वो बुरी तरह से भड़का हुआ था। उसके जूनून के सामने चैतन्य की ताकत कमतर पड़ चुकी थी। ऐना और अनामिका ऑखें फाड़े उन दोनों को ही देख रही थीं। जब अनामिका को लगा कि अल्फ़ी का गुस्सा किसी के भी संभालने की हद से बाहर निकल चुका है, तो ना चाहते हुए भी वो अजीब सी कश्मकश लिए उसकी ओर बढ़ गई। वो तेजी से परिधि और अल्फ़ी के बीच रह गई संकरी सी जगह में घुस गई। उसके ऐसा करने से एक ओर जहाँ हक्के-बक्के सी हालत में चैतन्य की कोशिशें ढीली पड़ीं, वहीं अल्फ़ी ने भी अपनी जलती हुई सुर्ख़ लाल ऑखें परिधि से हटाकर अनामिका पर डाली थीं। अनामिका ने कहा कुछ नहीं.. बस अपना सिर हिलाते हुए उसे ऐसा करने से मना किया और.... गुस्से में लंबी लंबी सॉसे भरता हुआ अल्फ़ी एकदम से शांत पड़ने लगा था। उसकी ऑखों का जुनून और परिधि पर उसकी पकड़ दोनों ही ढीले पड़े थे। अनामिका के चेहरे को देखते हुए अल्फ़ी के चेहरे पर एक लाचारी सी उभर आई और फिर उसने चिंघाड़ते हुए परिधि के शिथिल पड़ते शरीर को एक ओर उछाल दिया, जो पास ही रखी किताबों की अलमारी से बुरी तरह से टकराकर जमीन पर ढेर हुई थी। वो आदमकद भारी सी अलमारी परिधि के ऊपर गिर ही जाती, उससे पहले ही चैतन्य ने द्रुतगति से वहाँ पहुँचकर उस अलमारी को उस पर गिरने से रोक दिया और फिर अपनी पूरी ताकत से उस अलमारी को सीधा करते हुए उसने नीम बेहोश हालत में पड़ी हुई परिधि को एक ओर खींचा। ऐना भी तेजी से उनकी ओर भागी और परिधि को संभालने लगी। अनामिका और अल्फ़ी भी अपनी-अपनी क़ैफियत के साथ उन दोनों को ही देख रहे थे।

अनामिका की नज़र उसी ओर ही थी कि तभी अल्फ़ी ने अपने दोनों हाथ दीवार पर पटकते हुए अनामिका को उनकी कैद में लिया था। वो अभी भी फुंफकारते हुए गहरी सॉसें भर रहा था। उसने अजीब सी नजरों से अनामिका को देखा। उन नज़रों में गुस्सा था.... या फिर बेबसी... या फिर दोनों ही... अनामिका को समझ में नहीं आया। वो बस इतना समझ सकी
कि अल्फ़ी को उसका इस तरह बीच में आना बिल्कुल भी पसंद नहीं आया था। वो उसकी अंगारे उगलती लाल ऑखों को अपनी फैली हुई ऑखों से देख ही रही थी कि तभी चैतन्य ने पास आकर उसके हाथ को नीचे की ओर खींचा, जिससे वो थोड़ा सा नीचे हुई और इसी के साथ ही चैतन्य ने उसे अपनी ओर खींच कर अपनी बाहों में भर लिया। वो अल्फ़ी को अपने जबड़े भींचें नाराजगी से देख रहा था।

वहीं अल्फ़ी की नज़रों ने भी नाराज़गी जताने में कोई कोताही नहीं की। वो दो पल उन दोनों को घूरने के बाद पूरी ताकत से चिल्लाया और फिर अपने बालों को मुट्ठियों में भींचकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा। पूरा कमरा उसकी हौलनाक चीखों से भर गया था। ऐसा लग रहा था जैसे कि वो बहुत ही तकलीफ़ में था।

"इसे क्या हुआ?" चैतन्य ने उसे देखते हुए माथे पर बल डालकर पूछा।

"वो बदल रहा है।" अनामिका ने अल्फ़ी को देखते हुए चिंता से कहा।

"बदल रहा है! मतलब?" चैतन्य ने अनामिका पर ,नज़र डालकर पूछा।

"उसके अंदर का पिशाच बाहर आ रहा है। ये बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। इस समय अगर उसने गलती से भी खून चख लिया, तो फिर क़यामत ही आनी है।" जवाब परिधि को संभालती हुई ऐना ने दिया। अनामिका और चैतन्य ने ऑखें सिकोड़ कर ऐना की ओर देखा और फिर दोनों की ही नज़रें अल्फ़ी की ओर गई, जो बुरी तरह से तड़प रहा था। उन दोनों को ही समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या करें?

"उसे संभालो माया! वरना गजब हो जाएगा। उसके अंदर जो भी अच्छा है.... सब मर जाएगा।" दिव्याक्षि ने तेज आवाज में कहा।
"पर..!" अनामिका ने हिचकिचाते हुए कहा।

"अनु! जाओ! संभालो उसे!" चैतन्य ने एकटक अल्फ़ी की ओर देखते हुए कहा। वो ये कभी नहीं भूल सकता था कि अल्फ़ी एक सच्चे और साफ दिल का मालिक था, जिसने उस पर ऑखें मूंदकर भरोसा किया था। इतनी तकलीफ़ और परेशानी में होते हुए भी उसका ख्याल रखा था। वो उससे कितना भी चिढ़ ले, पर उसे इस तरह तड़पते नहीं देख सकता था क्योंकि उसकी आत्मा मरी नहीं थी....अभी भी सॉसें ले रही थी।

"पर!" अनामिका ने झिझक भरी नज़रों से उसे देखते हुए कहा।

"जाओ अनु! उसे इस समय तुम्हारी जरूरत है। एक तुम ही हो... जो उसे संभाल सकती हो। बातें बाद में भी हो सकती हैं।" चैतन्य ने एक आह के साथ कहा।

अनामिका ने सवालिया नजरों से चैतन्य की ओर उसकी ऑखों में देखा, जहाँ उसे अल्फ़ी के लिए एक ईमानदार फिक्र दिखाई दे रही थी। वो एक हिचकिचाहट के साथ अल्फ़ी की ओर बढ़ी, जो अब चीखना बंद कर चुका था और एक कोने में दुबका हुआ बुरी तरह से कॉप रहा था। उसके पास पहुँचकर अनामिका ने एक उलझी हुई नज़र चैतन्य की ओर डाली। चैतन्य ने सिर को झटकते हुए उसे आगे बढ़ने का इशारा किया और खुद सीने में हाथ बांधे उनकी ओर देखने लगा। अपनी सारी हिचकिचाहटों के साथ अनामिका ने घुटनों के बल बैठकर अल्फ़ी के कंधे पर अपना हाथ रखा।

"अल् .... अल्फ़ी!" बमुश्किल अनामिका के मुँह से निकला।

और उसके स्पर्श के बाद उसकी आवाज सुनते ही जैसे जादू सा हुआ। अल्फ़ी का कॉपता हुआ शरीर एकदम से शांत हो गया। मगर वो अभी भी अपने चेहरे को अपनी बाजुओं में छिपाए हुए था। अनामिका ने एक बार
फिर से चैतन्य की ओर देखा और उसने भी एक बार फिर से आगे बढ़ने का इशारा किया।

"तुम ठीक हो?" अनामिका ने बहुत ही नर्मी से पूछा।

अनामिका का सवाल सुनते ही अल्फ़ी ने अपनी बाजुओं से अपना भीगा हुआ चेहरा ऊपर उठाया, जिसे देखकर अनामिका सहम गई। वैसे तो वो पहले से ही गोरी रंगत का था, पर अभी तो उसका चेहरा बर्फ जैसा सफेद और ठंडा दिख रहा था। उसकी ऑखें जैसे खून में डूबी हुई थीं और उन्हीं सुर्ख़ ऑखों से वो उसे एकटक देख रहा था। अनामिका ने भी उसकी ऑखों से अपनी ऑखें नहीं हटाई। उसकी ऑखों में खुद को उतारते हुए एक बार फिर से अल्फ़ी आगे बढ़कर उससे लिपट गया। उसकी इस हरकत से अनामिका ने सहमकर चैतन्य की ओर देखा था, जो खुद भी ये देखकर विचलित हो गया था। उसने

तुरंत ही अपनी नज़रें फेर लीं कि इस समय वो किसी तरह का ऐतराज नहीं जता सकता था। दूसरी ओर एक बार फिर से अल्फ़ी किसी बच्चे की तरह बिलखने लगा था। अनामिका ने बहुत ही झिझक के साथ उसकी पीठ पर अपना हाथ रखा और उसे हौले-हौले सहलाने लगी। अल्फ़ी को भी उसके इस स्पर्श से आराम महसूस हुआ और उसकी बेचैनी धीरे-धीरे खत्म होने लगी। बेचैनी खत्म होने के साथ ही उसके ऑखों की लाली सिमट गई और उसके चेहरे की गुलाबी रंगत वापस लौट आई। अब वो अनामिका से लिपटे हुए बीच-बीच में हिचकियॉ लेता बिल्कुल शांत था। अनामिका का एक हाथ उसके सिर पर था, जिसकी ऊंगलियॉ उसके बालों में नर्मी से तफरीह कर रही थी।

"ये... ये सब... क्या था? क्या आप लोगों को कुछ भी पता है इस बारे में?" चैतन्य ने अपनी बेचैनी को काबू में करते हुए ऐना और दिव्याक्षि से पूछा।

"हाँ! पता है। ये बहुत ही दुर्लभ और असामान्य स्थिति होती है। जब किसी
पिशाच की शक्तियाँ किसी भी वजह से अंदर ही दबी रह जाएँ, तो समय के साथ वो लावे में बदल जाती हैं और जब एक दिन वो बाहर आती हैं, तो समझो एक विस्फोट लेकर आती हैं, जो बहुत कुछ बर्बाद कर सकता है। ऐसा लाखों में ही किसी एक के साथ होता है और अल्फ़ी के साथ भी यही हुआ है। माया की मौत से वो टूट गया है। खुद को संभालने के लिए उसे सहारे की जरूरत है। बहुत ज्यादा!" दिव्याक्षि ने चैतन्य के सवाल का जवाब देते हुए कहा।

"तो क्या अब.... आपने भी इस सच्चाई को स्वीकार कर लिया है कि माया नहीं रही।" चैतन्य ने बहुत ही दर्द भरे लफ़्ज़ों में सवाल किया था।

"मेरी चेतना ये मानने को तैयार तो नहीं है क्योंकि मैंने माया की आत्मा को मुक्त होते महसूस नहीं किया। पर अब उसे मैं इस लड़की में साफ-साफ महसूस कर सकती हूँ और अगर ये लड़की माया नहीं है और उसकी आत्मा इस लड़की के अंदर है, तो मुझे ये मानना ही पड़ेगा। पर समस्या ये है कि तुम दोनों तो भविष्य से आए हो और वहीं लौट जाओगे। उसके बाद क्या? अल्फ़ी को ऐसी भयावह स्थिति में कौन संभालेगा? पता नहीं क्या होने वाला है?" दिव्याक्षि ने बहुत ही मायूसी भरे लहजे में कहा।

दिव्याक्षि का जवाब सुनने के बाद चैतन्य ने पलटकर अल्फ़ी की ओर देखा, जो अभी भी अनामिका की पनाह में सिमटा हुआ था और इस बार उसे अल्फ़ी से बेहद हमदर्दी हो आई। आखिर उसका कसूर ही क्या था? क्यों उसे जिंदगी में इतनी तकलीफ़ें उठानी पड़ रही थी? वो तो बस एक आम इंसान की तरह रहना चाहता था। एक हँसते-खेलते परिवार से ज्यादा उसने चाहा ही क्या था? फिर उसके साथ ऐसा क्यों हुआ? क्या बस इसलिए.... क्योंकि ताकत और सत्ता के कुछ लोभी ऐसा नहीं चाहते थे और ये सोचते ही उसकी नसों का लहू उबलने लगा। उसने अपनी मुट्ठियाँ भींची और लपककर परिधि के पास पहुँचा। परिधि जो ऐना की बाहों की हिफाजत में सिमटी हुई थी, उसे चैतन्य ने एक झटके से ऐना से अलग
किया और उसकी दोनों बाहें बेरहमी से पकड़कर उसे अपने पास लाकर उसकी ऑखों में देखने लगा। परिधि पहले से ही बहुत चोटिल और थकी हुई थी। अल्फ़ी के बेरहमी से फेंकने के कारण उसके चेहरे और शरीर पर बहुत चोटें आ गई थीं। उसका माथा फट गया था और खून बहकर उसके उस तरफ के गाल पर फ़ैल गया था। चेहरे और शरीर पर और भी गहरी खरोंचें दिखाई दे रही थीं। उस दर्द के बाद चैतन्य की आग उगलती ऑखों को देखकर वो और भी सहम गई। मगर इस बार चैतन्य को उसकी सहमी हुई मासूमियत पिघलाने में नाकाम रही।

"देख रही हो क्या कर दिया है तुम लोगों ने? एक हँसता-खेलता परिवार, इतनी सारी खिलखिलाती

ज़िंदगियाँ तुम सबकी नीचता की बलि चढ़ गईं। किसलिए? ताकत चाहिए थी तुम्हें! क्या करना था तुम्हें ताकत के साथ? क्या ताकत के बिना कोई जी नहीं सकता? किसी समाज में ख़ास होना इतना भी जरूरी क्यों है? क्या आम सा बनकर हमें अच्छी जिंदगी नहीं मिल सकती? बोलो!" चैतन्य उसे बुरी तरह से झिंझोड़ते हुए पूरी ताकत से चिल्लाया।

परिधि ऑखें फाड़े चैतन्य को एकटक देख रही थी। उसका गुस्सा देखकर उसके अंदर की बची खुची हिम्मत भी कहीं मर-खप गई। वो कुछ बोलना तो चाहती थी, पर जैसे आवाज उसका साथ छोड़ कर कहीं भाग गई थी। वो सकते की हालत में मुँह खोले भयभीत नज़रों से उसे देख रही थी। उसे इस तरह देखकर चैतन्य का पारा और भी गर्म हो गया।

"अरे मुँह खोलो अपना! जवाब दो! क्या किया तुम लोगों ने माया के साथ?" चैतन्य पूरी ताकत से उस पर चीखता हुआ बोला और इस बार परिधि का सकता टूटा और उसने एक गहरी साँस ली।

"मैंने जानबूझ कर कुछ नहीं किया। उन्होंने मुझसे करवाया।" परिधि कॉपती हुई आवाज में बोली।
"उन्होंने! किसने?" भावुक ऐना ने आगे आकर सवाल किया।

"म...म... माया ने! उसने मुझे धमकाया। आप जानती हैं कि मैं उससे कितना डरती हूँ! मैं ना नहीं कर सकी।" परिधि ने ऐना की ओर देखकर रोते हुए कहा।

"और अब! अब डर नहीं लग रहा है तुमको? तुमने ये कभी नहीं सोचा कि जो अभी हो रहा है तुम्हारे साथ... ऐसा भी हो सकता है।" चैतन्य पूरी कड़वाहट के साथ चीखते हुए बोला।

"उसने मुझे कुछ और सोचने का मौका ही नहीं दिया। सच तो ये है कि उसने कहा था कि सर्वशक्तिमंडल में चुने जाने के बाद वो माया को छोड़ देगी। वो बस तब तक उसे सबसे छिपाकर रखना चाहती थी। इसलिए भी मैंने उसकी बात मान ली। वो ऐसा कुछ कर देगी, मुझे सच में इसका अंदाजा नहीं था।" परिधि नज़रें झुकाकर बिलखते हुए बोली।

"और तुमने उसकी बातों पर यकीन कर लिया। उस झूठी और मक्कार की बातों पर! तुम जानती नहीं थी... कि वो कैसी है?" इस बार ऐना पूरी ताकत से उस पर चिल्लाई थी।

"मैं डर गई थी।" परिधि भी पूरी ताकत से चिल्लाकर बोली।

"और तुम्हारे उस डर ने क्या कर दिया? देख रही हो!" चैतन्य ने उसे झटककर छोड़ते हुए जहर बुझे शब्दों के साथ कहा।

"पर परिधि... माया को ये सब पता कैसे चला?" ऐना ने लरजती हुई आवाज में पूछा।
"ये मेरी ग़लती थी। मेरी ही गलती थी। मैंने गलती से उसे सब बता दिया था।" परिधि बमुश्किल बोली।

"तुम्हारी गलती? पर तुम्हें कैसे पता चला?" ऐना ने ऑखें फैलाते हुए पूछा।

"आज से डेढ़ साल पहले जब आप दिव्याक्षि के बुलाने पर आप यहाँ आई थी, तब मैंने आपका पीछा किया था। आपके हाव-भाव देखकर अंदर एक कौतूहल सा जागा और मैं ये कर गई। उस समय मैंने आप दोनों की सारी बातें सुन ली थीं, जो आप हेममाया के बारे में कह रही थीं। पर मैं बेवकूफ उस

समय ये नहीं समझी कि ये बातें छिपाने की थीं। जब मुझे पता चला कि हेममाया को सर्वशक्तिमंडल के लिए चुना गया है, तब मेरे दिल को ठंडक सी पहुँची थी। पहली बार माया के हारने का ख्याल मुझे रोमांचित कर गया। हालांकि उसे मैंने उस समय कुछ नहीं बताया, पर कुछ समय बाद जब माया अपनी दोनों चमचियों के साथ मेरा मजाक उड़ा रही थीं, तब मुझसे ये बेवकूफी भरी हरकत हो गई थी और मैंने उसे हेममाया के बारे में सब बता दिया... ये कहते हुए कि वो ही सर्वश्रेष्ठ नहीं है। उस समय उसके चेहरे के उड़ते रंग मुझे बहुत भले लगे थे। मगर कुछ दिनों बाद ही उसने मुझे बुलाया और मुझे हेममाया के गॉव-शहर का पता लगाने का काम सौंपा। मगर हम ये बात कभी भी पता नहीं कर पाए।" अपनी बात कहते-कहते परिधि कुछ पल के लिए रूकी थी।

"तो फिर! माया को पता कैसे चला?" चैतन्य ने पूछा।

"वो मुझे नहीं मालूम! सच में! मैं तो सबकुछ भूल ही गई थी, मगर करीब छः महीने के बाद वो मेरे पास आई और मुझे डरा-धमका कर अपनी योजना में शामिल कर लिया।" परिधि बोली।

"कैसी योजना?" ऐना ने पूछा।
"हेममाया के अपहरण की योजना। आपको पता नहीं कि उस माया ने क्या कुछ नहीं किया। पर उस समय हेममाया और अल्फ़ी की शादी हो गई थी। माया को जब ये खबर मिली, तो वो तिलमिला उठी थी क्योंकि उसे पता था कि अल्फ़ी के होते हुए हेममाया का अपहरण कर सकना नामुमकिन था। तब उसने एक चाल चली। माया यहाँ से कहीं बाहर जा नहीं सकती थी, इसलिए उसने चालाकी से एक काला धागा अल्फ़ी की माँ के पास पहुँचवाया, जिसे उन्होंने अपने हाथ में बांध लिया था। वो अल्फ़ी और माया को लेकर हमेशा परेशान रहती थीं, इसलिए वो धागा उन तक पहुँचाने में माया को कोई परेशानी नहीं हुई।" कहते हुए परिधि एक बार फिर सॉस लेने के लिए रूकी।

"कैसा धागा?" अल्फ़ी को समेटे हुए ही अनामिका ने पूछा।

"वो माया का जादू था। मीना जी को ये बताया गया कि वो धागा उनके परिवार की सभी मुसीबतों को दूर कर देगा और इसलिए उन्होंने खुशी-खुशी वो धागा बांध लिया। मगर उस काले धागे की मदद से माया ने मीना जी के दिल में डर को बिठाना शुरू कर दिया। वो ना जाने कैसा जादू करती थी कि हर दिन के साथ मीना जी डर के साए में जीने को मजबूर हो गई। उनकी हालत देखकर हेममाया भी खुद को ही दोषी समझने लगी। पर कोई नहीं जानता था कि ये सब माया कर रही थी। वो उन सबको अंदर से तोड़ रही थी और वो टूटे भी।आखिर में वो समय भी आया, जब हेममाया उस डर के साए से निकलने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो गई। आज से सात महीने पहले जब माया को पता चला कि अल्फ़ी दो दिनों के लिए बाहर जा रहा है, तो माया ने तुरंत ही मौका लपक लिया। उसने मेरी मदद से किसी तरह एक कागज में ऐना से कुछ शब्द लिखवाकर ले लिए। उसके बाद उसमें जो भी लिखा था, वो माया का किया धरा था। मैंने उस समय उसे टोका भी कि वो ऐसा ना करे, तो उसने मुझसे कहा कि वो हेममाया से अनापत्ति पत्र लेकर उसे जाने देगी, जिससे
हेममाया के हटने से माया सर्वशक्तिमंडल में चुन ली जाए। मैंने भी उसकी बात का यकीन कर लिया और वो झूठा खत लेकर हेममाया के कस्बे चली गई। वो सब परेशान थे... बिखरे हुए थे। ऐसे में वो ख़त और मेरी बातें हेममाया को राहत की तरह लगीं और वो मेरे साथ आने के लिए तैयार हो गई।" कहकर परिधि ने एक बार फिर से अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया।

"हाँ तो ठीक था ना! उससे अनापत्ति पत्र लेकर उसे वापस जाने देते। उसे रोककर क्यों रखा? और अगर मारना था तो उसी समय क्यों नहीं मारा? सात महीने के बाद आज क्यों मारा? जवाब दो!" चैतन्य

एक बार फिर से उसकी बाहें पकड़ कर बोला।

"क्योंकि मैं नहीं जानती थी कि माया ने हेममाया के साथ-साथ मेरे साथ भी धोखा किया था। उसने बस हेममाया को यहाँ तक लाने के लिए झूठ बोलकर मेरा इस्तेमाल किया था। मैं सच में नहीं जानती थी कि वो हेममाया के साथ ऐसा करेगी।" परिधि ने सिसकते हुए भरे गले से कहा।

"पर परिधि... तुमने तो कहा था कि तुम सब ठीक करने जा रही हो। तुम हेममाया को लेने गई थी ना ! और अगर उस समय माया हमारे कब्जे में थी... तो फिर हेममाया को मारा किसने? क्या.... तुमने?" अनामिका ने धड़कते दिल के साथ सवाल किया और उसके इस सवाल से उसकी गोद में सिर रखे अल्फ़ी ने भी सिर उठाकर पहले अनामिका और फिर परिधि की ओर देखा। अल्फ़ी को खुद से अलगकर अनामिका जवाब की तलाश में परिधि के पास आ गई और उसे सवालों भरी नज़रों से देखने लगी और इस इल्ज़ाम से परिधि सिर से पैर तक सिहर उठी।

"नहीं! मैंने कुछ नहीं किया। मैंने उसे नहीं मारा। तुम्हारे कहने पर मैं माया को कभी नहीं बचा सकती थी। तुम मुझे जिस दिन पहली बार मिली थी और मैं तुम्हें बसेरे में लेकर गई थी, उससे पहले वाली रात को ही वो मर
चुकी थी। वो तुम्हारे बसेरे में आने से पहले ही मर चुकी थी।" परिधि, अनामिका की दोनों बाहें पकड़कर उसे झिंझोड़ते हुए बोली और फिर हथेलियों में अपना चेहरा छुपा कर सुबकने लगी।

"क्या? माया आज से तीन दिन पहले ही मर चुकी थी?" चैतन्य बुरी तरह से चौंकते हुए बोला।

"हाँ। वो मर चुकी थी। माया ने उसे अपनी मौत की क़ैद में जकड़कर रखा था। वो बिचारी कैसे खुद को बचाती? नहीं लड़ सकी वो मासूम.... मक्कारी और धोखेबाजी से। हार गई और फिर सात महीने तक तड़प-तड़प कर जीने के बाद.... अपनी हर एक उम्मीद को सिसक-सिसक कर दम तोड़ते देखने के बाद आखिरकार वो माया के मौत की क़ैद में ही दफन हो गई।" परिधि ने हाँफते हुए दिल दहलाने वाला खुलासा किया।

और ये सुनते ही कमरे में मौत सा सन्नाटा फैल गया।

"हेममाया तीन दिन पहले ही मर चुकी है!"

ना जाने किसके मुँह से ये बात निकली, जिस पर परिधि ने एक डर भरी निगाह अल्फ़ी की ओर उठाई थी। वो सपाट चेहरे के साथ लगातार पलकें झपकाते हुए उसे ही देख रहा था, जैसे कि तय कर रहा हो... कि उसे अगली प्रतिक्रिया कौन सी और कैसी देनी चाहिए। अनामिका और चैतन्य ने भी अपनी परेशान नज़रें उसी की ओर की थीं और वो बस गहरी साँसें लेते हुए परिधि को देखे जा रहा था।

"मैं सच कह रही हूँ। मैंने हेममाया के साथ कुछ भी नहीं किया... बल्कि मैं तो खुद भी धोखे में ही थी। माया ने हम दोनों के सामने ऐसे हालात पैदा कर दिए कि हम चाहकर भी कुछ नहीं कर सके और जब पता चला.... तो कुछ कर पाने लायक नहीं रहे।" परिधि ने जैसे अपनी सफाई देते हुए कहा।

"ऐसा क्या हुआ था?" अनामिका ने पूछा और इस सवाल के साथ ही परिधि 7 महीने पहले के समय में पहुँच गई।
सात महीने पहले -

"मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ अल्फ़ी!" अल्फ़ी से अलग होते हुए हेममाया ने कहा।

"मैं भी!" अल्फ़ी ने भी उसके माथे से अपना माथा मिलाते हुए जवाब दिया।

कुछ देर तक एक-दूसरे की आँखों में देखने के बाद हेममाया उससे दूर होकर टूटे हुए लहजे में बोली, "चलती हूँ। जल्द वापस आऊंगी। तब तक अपना ख्याल रखना।"

वो जाने को हुई... पर अल्फ़ी ने उसकी कलाई पकड़ ली। हेममाया ने उसे इल्तिज़ाई नज़रों से देखा और फिर ऐना का ख्याल आते ही उसने उसकी कलाई छोड़ दी। वो आगे बढ़ गई। अल्फ़ी एकटक उसे ही देखता रहा। गाड़ी में घुसने से पहले हेममाया ने एक मासूम मुस्कुराहट भरी नज़र बुत की तरह खड़े अल्फ़ी पर डाली और फिर अंदर चली गई। अगले ही पल वो गाड़ी उसे अल्फ़ी से दूर ले गई।

वो गाड़ी में चुपचाप बैठी हुई थी। ऊपरी तौर पर देखने से तो वो शांत दिखाई दे रही थी, पर उसके अंदर कितनी उथल-पुथल मची हुई थी, वो ही जानती थी।

"क्या हुआ?" साथ बैठी परिधि ने उसे इतना शांत देखा तो पूछ लिया।
"हम जल्दी वापस लौट आएँगे ना!" हेममाया ने परिधि की ओर देखकर सवाल किया।

"क्यों नहीं! परेशान मत हो और डरने की भी जरूरत नहीं है।" परिधि ने उसके हाथ पर अपना हाथ रखते हुए बहुत ही दोस्ताना लहज़े में कहा।

"जब आप किसी से प्यार करते हो तो... डरना.. परेशान होना आप पर लाज़िम हो जाता है।" हेममाया ने खिड़की की ओर देखते हुए कहा।

"बहुत प्यार करती हो उससे?" परिधि ने उसके चेहरे को ग़ौर से देखते हुए पूछा।

"बस... यही तो करती हूँ!" हेममाया ने एक आह भरते हुए कहा और फिर अपनी ऑखें बंद करते हुए सीट पर अपना सिर टिका दिया।

पूरे रास्ते भर हेममाया कुछ भी नहीं बोली। वो उसी तरह बिल्कुल ख़ामोश पड़ी रही। परिधि ने कई उचटती हुई नजरें उस पर डाली थीं और हर बार खुद को किसी गर्त में गिरता हुआ महसूस किया था। एक बार तो उसे ये लगा कि वो आगे बढ़ना रोककर हेममाया को उसकी दुनिया में वापस ले जाए। पर इस दुनिया में परिधि जैसे लोगों को फैसले लेने का अधिकार होता ही नहीं क्योंकि ऐसे लोग खुद ही अपने आप को इस अधिकार से वंचित रखते हैं। बस इसी कमजोरी की वजह से परिधि अपना दिल और अपनी जुबान दोनों ही बंद कर गई। दोनों को ही मंजिल तक पहुँचने की जल्दी थी, इसलिए वो घोड़ागाड़ी बिना रूके दौड़ती गई।

वो नवंबर महीने के आखिरी दिन थे। सूरज जल्दी ही ढल गया था और रात तेजी से अपने पैर पसारने लगी थी। माहौल में चुभती हुई ठंडक शामिल हो चुकी थी। हालांकि घोड़ागाड़ी के अंदर बाहर के मुकाबले ठंड
कम थी, फिर भी हेममाया को अपने हल्के से गाऊन में ठंड की चुभन महसूस हो रही थी। उसने अपने सामान से एक सफेद ऊनी स्टॉल जैसा कपड़ा निकाला और फिर... उसे भावुक नज़रों से देखने लगी। उसके एहसासों से बेखबर परिधि ने उसे और उस ऊनी कपड़े को बड़े ही ग़ौर से देखा।

"क्या हो गया?" परिधि ने ही ख़ामोशी को तोड़ते हुए सवाल किया।

"शादी के बाद मेरे पहले जन्मदिवस पर मेरे हस्बैंड ने ये दिया था। तुम्हें पता है.... कितनी मुश्किल से उसने ये खरीदा था मेरे लिए। बस इसीलिए..... क्योंकि ये मुझे बहुत पसंद आ गया था।" कहकर मुस्कुराते हुए उसने उस नर्म कपड़े पर अपनी ऊंगलियाँ फिराईं और फिर उसमें अपना चेहरा छिपा लिया। तीन रात पहले ही वो और अल्फ़ी दोनों ही इसमें घुसकर एक-दूसरे की बाहों में खोए आसमान के चॉद को निहार रहे थे। उसे अभी भी उस कपड़े से अपने अल्फ़ी की खूश्बू आ रही थी। उसे याद कर वो एक बार फिर से जज़्बाती हो उठी और सिसकने लगी।

"अरे रोओ मत! सब ठीक हो जाएगा।" परिधि ने उसके कंधे पर हाथ रखकर सांत्वना देते हुए कहा।

"इसी उम्मीद में ही तो जा रही हूँ। मुझे अपने अल्फ़ी के साथ रहना है... उसी के साथ जीना है। हमेशा!" उस ऊनी स्टॉल को अपने चारों ओर लपेटते हुए हेममाया ने कहा। इस पूरे दौरान परिधि उसके चेहरे को देखती रही। अल्फ़ी का नाम लेते ही उसके बुझे हुए चेहरे पर जिंदगी की चमक लौट आती थी।

"तुम सच में सर्वशक्तिमंडल का पद छोड़ दोगी?" परिधि ने अपने दिल में रूका हुआ सवाल आखिरकार पूछ ही लिया।
"इसीलिए तो जा रही हूँ ताकि इस झंझट से आजाद हो सकूं।" हेममाया ने नर्म लहज़े में कहा।

"क्या सच में तुम्हें ये नहीं चाहिए? अजीब बात है! मतलब कि... हमारी दुनिया में लोग मरते हैं ऐसी ताकत और रूतबा पाने के लिए। तुम यूंही छोड़ दोगी ये सब?" परिधि ने बेयकीनी से पूछा। हेममाया के जवाब से परिधि की हैरानी और भी बढ़ गई थी।

"तब तो तुम्हारी और मेरी दुनिया बहुत अलग है। ये सब कुछ मुझसे मेरी जिंदगी छीन रही है और मुझे

बस मेरी जिंदगी चाहिए और कुछ नहीं। कुछ लोगों के लिए ये चीज़ें बहुत मायने रखती होंगी... पर मेरे लिए.... मेरा प्यार और मेरा परिवार सबसे ज्यादा मायने रखता है।" हेममाया ने बड़ी ही साफगोई से कहा।

एक बार फिर परिधि को उनके जवाब ने लाजवाब कर दिया था। उसके लिए ये अहसास बिल्कुल ही अलग और नया था। उसने जबसे होश संभाला था.... अपने चारों और बस सत्ता और ताकत के भूखों को देखा था। धोखेबाज और मौकापरस्त लोगों के बीच पली-बढ़ी परिधि को माया और अल्फ़ी का प्यार समझ में नहीं आ रहा था। उसने हेममाया के पहने हुए मामूली से कपड़ों की ओर देखा, जिसमें भी वो बहुत ही खूबसूरत दिख रही थी। क्या सचमुच प्यार में इतना असर होता है? क्या कोई सचमुच किसी के लिए ये सब छोड़ सकता है? इसका जवाब तो उसके सामने ही मौजूद था, मगर उस जवाब पर उसे अभी भी पक्का यकीन नहीं आया था। उसे अल्फ़ी को एक नज़र ना देख पाने का भी अफसोस हुआ।

जल्द ही रात गहराने लगी और उसी के साथ चारों ओर से जंगली जानवरों की डरावनी आवाजें भी सुनाई देने लगीं। इन सब से हेममाया थोड़ा घबरा सी गई थी। मगर परिधि ने उसे बताया कि उसे सुरक्षित सही जगह ले जाने के लिए वो सब जंगली रास्ते से जा रहे थे, जो मुख्य रास्ते से छोटा था और यहीं से वो अगले दिन ही वापस आने वाले थे। वापसी की बात पर हेममाया का हर डर उसके दिल में दुबककर कहीं छिप गया और वो एक बार फिर से सुनहरे भविष्य के बारे में सोचती हुई आसपास के माहौल से अलग होकर एक बार फिर से अपनी ऑखें बंद कर अल्फ़ी के सपनों में खो गई।

रात का तीसरा पहर चल रहा था, जब उनकी घोड़ागाड़ी के घोड़े लगाम खींचे जाने पर हिनहिनाते हुए धीरे से रूके थे। गाड़ी के रूकने पर झटका लगने की वजह से हेममाया की नींद खुल गई। उसने ऑखें मलते हुए आसपास देखा। पर बंद खिड़कियों से कुछ भी दिखाई देना संभव नहीं था।

"हम पहुँच गए।" परिधि ने कहा और उसे अपने साथ नीचे उतरने का इशारा किया। उसकी बात मानते हुए हेममाया उसके साथ हो ली। घोड़ा गाड़ी उन्हें उनके सामान के साथ वहीं छोड़ कर वापस हो गई।

"हम वापस कैसे जाएँगे?" वापस जाती घोड़ा गाड़ी को चिंता से देखते हुए हेममाया ने पूछा।

"उसकी फिक्र मत करो। चलो जल्दी!" परिधि ने उसके सवाल को नजरअंदाज करते हुए एक बार फिर उसे अपने पीछे आने का इशारा किया और खुद एक ओर बढ़ गई। उलझी हुई सी हेममाया भी अपने सामान के साथ उसके पीछे-पीछे चल दी। कुछ देर जंगली झाड़ियों के बीच से गुजरने के बाद वो एक अपेक्षाकृत खुली जगह पर पहुँच गए। हेममाया ने देखा कि वहाँ से कुछ दूरी पर जंगली पेड़ों के बीच से एक ऊँची सी इमारत का पिछला हिस्सा झांक रहा था।

"बस यहीं! यहीं इंतजार करना है।" परिधि ने हेममाया की ओर मुड़ते हुए कहा।
"यहाँ! यहाँ मुलाकात होनी है! पर यहाँ क्यों?" हेममाया ने अपने स्टॉल को अपने चारों ओर जोर से लपेटते हुए आसपास घबराई हुई नज़र डालते हुए पूछा।

"तुम्हें दूसरों की नज़र में नहीं लाना है इसलिए! पर ये माया क्यों नहीं आई अभी तक?" हेममाया के सवाल का जवाब देते हुए परिधि ने उस इमारत की ओर एक बेचैन सी नज़र डाली थी।

वो कुछ देर उस तरफ देखती रही और फिर हेममाया के पास आकर थोड़ा खीजते हुए बोली, "पता नहीं क्या हुआ है? मैं जाकर देखती हूँ। तब तक यहीं रहना। कहीं जाना मत!"

"पर मैं यहाँ! अकेली!" हेममाया थोड़ी घबराहट के साथ बोली।

"डरो मत! यहाँ कोई नहीं आएगा। अगर कोई आए तो झाड़ियों में छिप जाना।" परिधि ने उसे हिम्मत देते हुए कहा, जिस पर ना चाहते हुए भी हेममाया ने हाँ में सिर हिला दिया।

"लगता है कि फिर से पी-पाकर कहीं लुढ़क गई ये माया!" परिधि ने फुसफुसाकर खुद से ही कहा और फिर खुद उस इमारत की ओर बढ़ गई। हेममाया उसे हर अगले पल खुद से दूर जाते देखती रही, जब तक कि वो उसकी ऑखों से ओझल नहीं हो गई। अब उसे थोड़ा सा डर लगने लगा था। इस बर्फ जैसी ठंडी रात में वो बुरी तरह से सिहरने लगी थी। ठंड से खुद को बचाने के लिए उसने अपने स्टॉल को थोड़ा और खुद में समेटा था। मगर ठंड दूर होने का नाम ही नहीं ले रही थी और फिर इस जंग के बीच उसे अचानक ही अल्फ़ी की गर्म पनाह याद आ गई। उसके होंठों पर एक मुस्कान उभरी और उसने उसे अपने बहुत ही करीब महसूस किया। उसके मन में पहला सवाल आया कि इस समय वो क्या कर रहा होगा...
क्योंकि उसके बिना उसे नींद आई हो, ये मुमकिन ही नहीं था। तो क्या वो भी इस समय उसे ही सोच रहा होगा? हर एक सवाल के साथ हेममाया के ज़हन में उन दोनों के करीबियों की यादें अंगड़ाई लेकर उठ बैठी। वो हर पल उसे याद करके मुस्कुरा रही थी। कितना अजीब होता है ये प्यार.... कि महबूब पास ना होकर भी किस तरह हमेशा पास होता है।

अभी वो अल्फ़ी के ख्यालों में डूबी ही हुई थी कि तभी कहीं दूर से सियार के रोने की आवाज आई और वो ख्यालों से वापस लौटी। एक बार फिर से डर ने उसे दबोच लिया। अपनी कातर नज़रें चारों ओर दौड़ाते समय उसके कानों को कुछ अनचाही सी सरसराहटें सुनाई दीं। उसने चौंककर चारों ओर देखा। कोई नहीं था। पर ना जाने क्यों उसे वहाँ किसी के होने का अहसास हो रहा था। परिधि की हिदायत याद आते ही वो एक ओर भागी और झुरमुटों के अंदर चली गई और फिर उसने देखी अंधेरे में चमकती वो दो लाल ऑखें। वो किसी अंगारे की तरह दहक रही थीं। उन्हें देखकर हेममाया का गला डर से बुरी तरह सूखने लगा। ये इत्तेफाक था या फिर कुछ और.... लेकिन हेममाया ने उन दो आतिशी गोलों को खुद से मुखातिब पाया और बस यहीं वो सब भूलकर एक ओर भागती चली गई। उसे इस समय परिधि की कोई भी हिदायत याद नहीं रह गई थी। उसे तो बस खुद को बचाना था क्योंकि उसका अल्फ़ी उसका इंतजार कर रहा था और उसे किसी भी हालत में उसके पास वापस जाना था। भागते-भागते वो एक पेड़ के तने पर बने खोह के पास पहुँची। वो बिना कुछ सोचे उसके अंदर चली गई।

हेममाया ने कभी भी ऐसी स्थिति का सामना नहीं किया था। वो हमेशा पहले अपनी माँ लता और फिर अल्फ़ी की लाड़ और मोहब्बत के साए में महफूज रही थी। इस समय बाहर से आती अजीब सी डरावनी आवाजें उसकी बढ़ी हुई धड़कनों को और भी बढ़ा रही थीं। इतनी कि... उसे अपने दिल की धड़कनें अपने कानों के पास बजती सुनाई दे रही थीं। इतनी ठंड में डर से निकला पसीना उसके पूरे शरीर में शूल की तरह चुभने लगा था।
दिल धाड़-धाड़ बजता हुआ बेकाबू हो चुका था। उस पर गले की खुश्की और भी सितम ढा रही थी। वो डर से थोड़ा पीछे हुई तो सीढ़ियों पर लड़खड़ा गई। किसी तरह खुद को संभालने के बाद वो उन सीढ़ियों को हैरानी से देखने लगी, जो नीचे की जा रही थीं। एक अजीब सा अहसास लिए वो उन सीढ़ियों से नीचे उतर गई और कुछ कदम दूर एक दरवाजे के सामने खड़ी थी। उसने आगे बढ़कर वो दरवाजा खोला और फिर वो दिव्याक्षि के सामने खड़ी थी और फिर हुई वो मुलाकात जिसने हेममाया के कान खड़े कर दिए। दिव्याक्षि की हिदायत मानते हुए वो उस जगह से जाने के लिए तैयार हो गई। दिव्याक्षि ने जाने से पहले उसे एक छोटी सी किताब और पानी का एक कलश दिया, जिसका मुँह एक ढक्कन से बंद था।

"ये क्यों?" हेममाया ने उन दोनों चीजों को देखते हुए पूछा।

"इस किताब में कुछ बहुत ही शक्तिशाली विधियाँ लिखी हैं, जिनकी मदद से तुम अपनी जल शक्ति की मदद ले सकती हो। घर वापस जाओ, तो इनका अभ्यास करना। अगर ताकत पास है तो सही समय पर उसका इस्तेमाल करना आना ही चाहिए और इस पानी को अपने पास रखो। जब मुसीबत सामने आए तो इस पानी में अपने सीधे हाथ की अनामिका उंगली डालकर मदद मांगना। मिल जाएगी! डरना मत! अब जाओ जल्दी! तुम यहाँ भी बिल्कुल सुरक्षित नहीं हो।" दिव्याक्षि ने उसे ताकीद करते हुए कहा।

हेममाया ने तेजी से अपना सिर हिलाया और फिर वहाँ से बाहर निकल गई उसने उस किताब और कलश को अपने कपड़ों में छिपाया और फिर तेजी से बाहर निकली। चारों ओर नज़र रखे हुए वो उल्टी दिशा में भागी। वो बस दूर जाना चाह रही थी। मगर ना तो उसे और ना ही दिव्याक्षि को पता था कि वो किस तरह साजिशों के जाल में फँस चुकी थी।
वो तेजी से आगे बढ़ी ही थी कि एक बार फिर से दो लाल अंगारा ऑखों ने उसका इस्तकबाल किया। मगर इस बार वो डरी नहीं। उसने कपड़ों के अंदर कलश को खोला और फिर अपनी अनामिका अंगुली उस में डुबा दी। उसने मन ही मन जल का रक्षा के लिए आह्वान करना शुरू कर दिया। वो अपनी जगह में खड़ी उन ऑखों पर नज़र जमाए खड़ी थी। धीरे-धीरे वो ऑखें उसके करीब आने लगी और फिर वो ऑखें उसे एक खूबसूरत मगर कठोर चेहरे पर दिखाई दिए। हेममाया की ऑखें सोच की दिशा में सिकुड़ी थीं। वो भी बस उसे ही देख रहा था और फिर वो अंधेरों से बाहर निकल कर उसके सामने आ गया। वो एक नौजवान था, जिसकी ऑखों, चेहरे और मुस्कुराहट सभी जगह से कुटिलता टपक रही थी। हम का एक ठंडा झोंका हेममाया को छूकर निकल गया, लेकिन उसने उस डर पर तुरंत ही काबू पा लिया।

हेममाया भी आक्रमण की मुद्रा में तैयार ही थी कि तभी उसके पीछे से किसी के दौड़ने की आवाज आई। हेममाया की पकड़ कलश पर और भी मजबूत हुई थी। उसके सामने और पीछे दोनों तरफ से ही घेराबंदी हो चुकी थी। वो आगे के बारे में सोच ही रही थी कि तभी उसे एक जानी-पहचानी आवाज सुनाई दी। उसने पीछे मुडकर देखा। परिधि एक और लड़की के साथ उसके पास आ रही थी। मगर इस बार परिधि भी हेममाया के संदेह के घेरे में थी। आखिरकार वो ही उसे धोखे से यहाँ लाई थी। जल्दी ही परिधि उस दूसरी लड़की के साथ उसके पास पहुँच गई। हेममाया ने एक हिकारत भरी नज़र उस पर डाली। वो परिधि से कुछ कहती उससे पहले ही परिधि के साथ आई लड़की ने आगे बढ़कर हेममाया के सामने खड़े उस लड़के की ओर देखकर कड़े लहजे में कहा,

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो एडवर्ड? ये हमारा इलाका है.... तुम्हारा नहीं। जाओ यहाँ से... वरना अच्छा नहीं होगा।"

मगर वो उसी तरह आगे बढ़ता रहा। वो उन सब पर हमला करता उससे
पहले ही पानी की कुछ बूंदें आकर उससे टकराई और फिर उसके सारे शरीर से वैसे ही धुँआ उठने लगा, जैसे किसी जलती लकड़ी पर पानी डालने पर निकलता है। ये हेममाया का हमला था। और फिर इस हमले का ऐसा असर हुआ कि एडवर्ड पीछे हटता चला गया और फिर गायब हो गया।

"चलो यहाँ से!" उस लड़की ने हेममाया और परिधि की ओर देखते हुए कहा।

"मैं कहीं नहीं जाऊंगी। तुम लोगों ने मुझे धोखे से यहाँ बुलाया है। मुझे वापस जाना है। कुछ नहीं चाहिए

मुझे। समझ में आया तुम दोनों को।" हेममाया बुरी तरह भड़ककर बोली।

उसकी बात सुनकर उस लड़की और परिधि ने एक दूसरे की ओर परेशानी भरी नजरों से देखा। हेममाया की नज़र उन दोनों पर ही थी। आखिरकार उस लड़की ने हेममाया की ओर देखा।

"मुझे पता है कि तुम्हें धोखे से यहाँ बुलाया गया है। पर यहाँ सब तुम्हारा बुरा नहीं चाहते हैं। ये तो कहो कि ये बेवकूफ परिधि मुझसे टकरा गई, वरना ना जाने क्या हो जाता?" साथ आई लड़की ने दोस्ताना लहज़े में कहा।

"क्या मतलब?" हेममाया ने पूछा।

"मतलब ये कि परिधि के साथ भी धोखा हुआ है। अब यहाँ से तुरंत चलो, वरना मुसीबत बढ़ सकती है।" उस लड़की ने पीछे मुड़कर देखते हुए कहा।

"कैसी मुसीबत?" हेममाया ने पूछा।
"तुमने अभी जिस पर हमला किया, वो एक पिशाच था। हम डायनों और पिशाचों के बीच कुछ भी सही नहीं है। अब जब तुमने एक पिशाच को घायल किया है। इसका बदला वो लेकर रहेंगे।" उस लड़की ने ख़ौफ भरी आवाज में कहा।

"पर वो हमला करने वाला था!" हेममाया ने अपना बचाव करते हुए कहा।

"वाला था... किया नहीं था। तुम समझ नहीं रही हो कि ये पिशाच हमसे कितना खार खाए हुए रहते हैं। इन्हें बस मौका चाहिए हम पर हमला करने के लिए। अब तक तो उनके बीच खबर फैल गई होगी और वो अब तुम्हारी तलाश में घेराबंदी भी शुरू कर चुके होंगे। उनके हाथ लग गई तो जिंदा जला देंगे तुम्हें!" उस लड़की ने डराने वाले अंदाज में कहा।

"तो फिर... अब क्या?" परिधि ने घबराकर पूछा।

"बेवकूफ लड़की! तुम्हारी वजह से ही सब हुआ है। किसी की भी बात सुनकर मान जाती हो। कुछ करने से पहले पूछना चाहिए। अब इसे हिफ़ाजत से वापस पहुँचाने का वादा किया है, तो पहले इसकी जान बचानी पड़ेगी। इसके लिए पहले इसे कुछ दिन के लिए छिपाना पड़ेगा।" उस लड़की ने परिधि की ओर देखते हुए फिक्रमंद लहज़े में कहा।

"कुछ दिन! नहीं! नहीं! नहीं! मुझे वापस अपने घर जाना है। मेरे पति मेरा इंतजार कर रहे हैं। उन्हें जल्दी वापसी का वादा किया है मैंने।" हेममाया ने प्रतिरोध करते हुए कहा।

"वापस जाना है। पर ये जो कांड अभी तुमने किया है ना! इस गॉव की सीमा से जिंदा तो बाहर नहीं जा पाओगी। आगे तुम्हारी मर्जी। याद रखना कि उनकी ताकत हमसे कहीं ज्यादा है। उनके सामने हमारा कोई जादू
टिक नहीं सकता।" उस लड़की ने उसे चेतावनी देते हुए कहा।

"तो फिर! मैं जल्दी वापस नहीं गई.... तो मेरे पति बहुत परेशान हो जाएंगे।" हेममाया ने भी अपनी परेशानी बताते हुए कहा।

"देखो! मामले के ठंडा होने तक यहाँ रूक जाओ। जैसे ही माहौल ठीक होगा, वापस चली जाना। अपने पति के लिए एक लेटर लिख देना। मैं किसी तरह उनके पास पहुंचा दूंगी। ठीक है!" उस लड़की ने सुझाव देते हुए कहा।

"पर मुझे ये सब...." हेममाया हिचकिचाई।

"देखो! तुम पर खतरा दोनों तरफ से है। तुम्हें जिंदा वापस लौटना है, तो हालातों से समझौता करना ही पड़ेगा।" उस लड़की ने हेममाया के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

अभी हेममाया कुछ कहती... उससे पहले ही पा आती तेज आवाजों ने उन्हें चौकन्ना किया।

"वो लोग आ रहे हैं। परिधि! इसे लेकर हमारी ख़ुफिया जगह पर पहुँचो। मैं तब तक इन्हें रोकती हूँ।" उस लड़की ने पीछे फैले अंधेरे की ओर देखते हुए कहा।

"पर..."

"पर नहीं परिधि! याद रखो कि इसकी हिफ़ाजत का वादा किया है तुमने, जिसे हर हाल में तुम्हें निभाना पड़ेगा। अब जाओ।" वो लड़की उन दोनों को धकेलते हुए बोली।
ना चाहते हुए भी हेममाया और परिधि तेजी से एक ओर भागे। कुछ दूर आगे जाने पर दौड़ती हुई हेममाया अचानक ही रूकी और जोर से बोली, "मेरा स्टॉल!"

ये कहकर वो वापस जाने के लिए मुड़ी। परिधि ने घबराकर उसका हाथ पकड़ा!

"क्या कर रही हो? उधर खतरा है।" परिधि ने उसे डपटते हुए कहा।

"मुझे वो स्टॉल चाहिए। वो मुझे मेरे पति ने दिया है। मुझे वो चाहिए मतलब चाहिए।" हेममाया मचलते हुए बोली।

"रूको! मैं लेकर आती हूँ। पर हिलना नहीं यहाँ से।" परिधि ने उसे धमकी भरे लहजे में कहा, जिस पर हेममाया ने अपना सिर हिलाया।

परिधि तेजी से उसी जगह वापस गई तो एक झाड़ी में हेममाया का स्टॉल उसे उलझा हुआ मिला। उसे उठाकर वो जाने के लिए पलटी ही थी कि कुछ आवाजों ने उसके पैर रोक दिए। वो सावधानी से उन आवाजों की ओर बढ़ी और फिर झुरमुटों के पीछे से उस ओर देखा। उसका कलेजा उसके मुंह को आ गया। एडवर्ड अपने साथियों के साथ उस लड़की के सामने खड़ा था। वो लड़की की मदद के लिए आगे बढ़ने ही वाली थी कि एडवर्ड की बात सुनकर रूक गई।

"तुम मुझे बस वो दे दो। फिर तुम्हें वो मिल जाएगा... जो तुम्हें चाहिए। माया!"

"ठीक है! डन! पर तुम भी कोई धोखा मत करना।" सामने खड़ी माया ने कहा।
उसकी बात सुनकर एडवर्ड मुस्कुराया और फिर उसी तरह मुस्कुराते हुए वापस लौट गया। उसके जाते ही माया भी परिधि की ओर आई। अचानक परिधि को सामने देखकर वो थोड़ा सा हिचकिचाई।

"ये एडवर्ड यहाँ क्या कर रहा था?" परिधि ने जॉचती नज़रों से उसे देखते हुए पूछा।

"क्या करेगा? तुम्हारी उस हेममाया ने जो गड़बड़ की है, तो उसका कुछ भुगतान तो करना ही पड़ेगा।" माया ने चिढ़ी हुई आवाज में कहा।

"तो क्या... अब जब समझौता हो गया है तो हम हेममाया को वापस भेज सकते हैं?" परिधि ने पूछा।

"पागल हो गई हो। वो उसे ही मांग रहा है। मैंने कहा कि वो भाग गई है। अपनी जान बचाने के लिए मैंने कहा है कि उसे ढूंढ कर उसके हवाले कर देंगे। तब वो माना है। उस हेममाया को छिपाकर रखना ही होगा।" माया ने बहुत ही चिंता भरी आवाज में कहा।

"पर कहाँ?"

"मुझे पता है आओ।" माया ने कहा और आगे बढ़ गई। परिधि भी उसके पीछे-पीछे चल दी। इस बात से बेखबर कि गहरी साजिशों के जाल में वो और हेममाया बुरी तरह से उलझ चुके थे।

"माया! मेरी बात सुनो!" अल्फ़ी परेशान सी हालत में उसके पीछे-पीछे घूम रहा था।

"नहीं सुननी कोई बात मुझे!" माया ने भी बहुत ही नाराज़गी से उसकी ओर मुड़कर कहा।

"एक बार बात तो सुन लो। फिर जितना नाराज होना है... होते रहना।" अल्फ़ी याचना भरे स्वर में बोला। जवाब में माया ने उसे उसी तरह नाराज़गी से घूरा।

"पता है मुझे कि एक दिन देर से वापस आया हूँ मैं, पर मैं मि. हेनरी के साथ काम से गया था। अब उनका काम नहीं हुआ तो मैं अकेले थोड़ी ना आता। मुझे तनख्वाह मि. हेनरी को असिस्ट करने की मिलती है, अपनी बीवी की बातें सुनने की नहीं।" अल्फ़ी ने सफाई देते हुए कहा।

अब अल्फ़ी ने तो ये सारी बातें अपनी सफाई में कहीं.... मगर उसकी आखिरी बात सुनते ही माया एक बार फिर से तुनक गई और पैर पटकती हुई कमरे से बाहर जाने लगी। अल्फ़ी तेजी से भागकर उसके पास गया और उसका हाथ पकड़कर उसे जाने से रोका।

"च्च्च्च्! देखो तुम्हें सजा देनी है, तो दे दो! ऐसे मुँह फुलाकर मत घूमो।" अल्फ़ी ने भी मुँह बनाते हुए कहा।
"सजा! हाँ यही ठीक है! मैं भी चली जाऊंगी और समय से वापस नहीं आऊंगी। तब तुम्हें पता चलेगा.... कि इंतजार करना कितना मुश्किल होता है?" माया मुँह बिसूरते हुए बोली।

"क्या तुम मायके जाने की धमकी दे रही हो? पर वो तो यहीं है। बस 15 मिनट दूर! उठाकर वापस ना ले आऊँ मैं तुम्हें!" इस बार अल्फ़ी ने उसे ऊपर से नीचे देखते हुए थोड़ी शरारत से कहा और उसकी इस शरारत से माया और भी सुलग उठी। उसके लाल होते चेहरे को देखकर अल्फ़ी ने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी दबाई। माया ने बहुत ही गुस्से से झटककर अपना हाथ छुड़ाया।

"अच्छा! और कहाँ जा सकती हो? जरा हमें भी पता चले!" अल्फ़ी ने उसके नजदीक आते हुए कहा।

"हुंह! कहीं भी! जहाँ तुम ना आ सको। याद रखना... जाऊंगी तो फिर लौटकर नहीं आऊंगी। फिर करते रहना... इंतजार!" माया ने बहुत ही बेदिली से कहा।

और एक ही झटके में अल्फ़ी बिगड़ चुके हालातों में वापस लौटा। उसने एक गहरी सॉस ली और एकटक सामने बैठी परिधि को देखने लगा, जो काफी देर से बोलने के बाद सॉस लेने के लिए रूकी हुई थी। वो अब सब जानना चाहता था। उस हर दर्द को जीना चाहता था, जिससे उसकी माया गुजरी थी, इसलिए अपने अंदर हर चीज को लावे की तरह दबाकर बैठा हुआ था और वो लावा आगे किस-किस को नेस्त-ओ-नाबूद करने वाला था... वो भी नहीं जानता था। दूसरी ओर परिधि एक बार फिर से बोलने की हालत में आ गई थी।
"तो क्या वो जगह.... जहाँ पिछले सात महीनों से हेममाया क़ैद थी, उसी खुफिया दरवाजे के पीछे है?" अनामिका ने परिधि से एक अनुमान के साथ पूछा।

"हाँ!" परिधि ने सिर हिलाकर छोटा सा उत्तर दिया।

"मुझे लगा ही था।" अनामिका ने एक आह के साथ कहा।

"हेममाया की मौत तीन दिन पहले हो गई थी, मगर लाश आज मिली। मतलब कि उसकी लाश तीन दिन से वहीं खुफिया दरवाजे के पीछे पड़ी हुई थी। पर ऐसा कैसे हो सकता है? इतने दिनों में कोई भी लाश सड़..... सॉरी.... खराब हो जाती है और हमने हेममाया की जो लाश देखी थी, वो तो ऐसा लग रहा था कि जैसे उसकी मौत अभी ही हुई है। कैसे?" एक अजीब सा सवाल चैतन्य के होंठों पर आया। सवाल करते-करते उसने अल्फ़ी की ओर भी सवाल पूछती नज़रों से देखा। मगर अल्फ़ी ने कोई भी प्रतिक्रिया नहीं दी। ऐसा लग रहा था कि उसने खुद को पत्थर कर लिया है। वो बस परिधि को ही देख रहा था।

"वो... वो बात ये है..!" परिधि ने बहुत ही हिचकिचाहट के साथ अपनी बात अधूरी छोड़ दी।

"क्या?" अनामिका ने उसके चेहरे के उड़ते रंगों को देखकर पैनी नज़रों के साथ पूछा।

"माया के कहने पर.... मैंने ही... दवाईयों की... मदद से उसके शरीर को... सुरक्षित रखा था।" परिधि ने बड़ी ही मुश्किल से कहा और सिर झुकाकर सिसकने लगी। उसकी बात सुनकर लगभग सभी ने हताशा से अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया था। परिधि ने जब सभी को इस तरह निराश देखा तो वो और भी शर्मिंदगी से भर गई।

"मुझे माफ़ कर दीजिए! पर मैं ये नहीं करना चाहती थी। उस माया ने मुझसे करवाया। मेरी ग़लती नही थी। सच में!" परिधि ने एक बार फिर से अपनी सफाई देते हुए कहा। मगर उसकी ये बात सुनकर चैतन्य एक बार फिर से अपने आपे से बाहर हो गया था।

"सही कह रही हो। तुम्हारी गलती नहीं थी। तुम्हारी गलती कैसे हो सकती है? तुम तो एक मासूम सी लड़की हो, जिसके पास ना तो लड़ने के लिए ताकत है और ना ही अफसोस करने के लिए अहसास

और शर्म!" चैतन्य परिधि पर जहर बुझे बात छोड़ता हुआ बोला, जो जाकर सीधे उसके दिल में चुभे थे और उनके दर्द से वो एक सिसकारी भरकर रह गई।

"चैतन्य!" अनामिका ने एक बार फिर चैतन्य को टोकना चाहा, मगर वो और भी भड़क गया।

"तुम चुप रहो! तुमसे अप्रूवल लेकर अपनी बात नहीं कहनी मुझे। मैंने जो कहा है... वही सच है। तुम जानती हो परिधि कोई भी कब मरता है? तब नहीं... जब वो साँसें लेना छोड़ देता है... बल्कि तब मरता है, जब वो किसी भी चीज का अहसास करना छोड़ देता है। तुम भी उसी तरह मर चुकी है। तुम्हारे सामने दो हँसते-मुस्कुराते लोग इस क़दर तबाह हो गए कि एक अपनी जान से ही चली गई... मगर तुम्हारी कायरता कभी नहीं मरी। तुम्हें पता है... माया और एडवर्ड जैसे लोग इतने ताकतवर कैसे हो जाते हैं? तुम जैसे स्वार्थियों की वजह से... जो लाचारी को अपना लिहाफ बना लेते हैं और अपनी आँखों के सामने गलत होता देखते रहते हैं। कोई भी शरीर नहीं मन से कमजोर होता है और हेममाया की मौत के साथ तुम्हारा वो मन भी मर के सड़ चुका है।" चैतन्य पूरे तैश के साथ परिधि पर झुककर चिल्लाते हुए बोला।
"चैतन्य! संभालो खुद को!" अनामिका पीछे से चैतन्य के कंधों को पकड़कर बोली। मगर गुस्से से काँपते हुए चैतन्य ने उसके हाथों को झटक दिया और एक ओर जाकर लंबी-लंबी साँसें लेने लगा। अनामिका ने एक परेशान नज़र उस पर डाली और फिर परिधि की ओर मुड़ी।

"परिधि! चलो ये बात मान भी लें कि तुम कुछ भी नहीं कर सकती थी। तुमने डर से माया की हर बात मानी। पर... अल्फ़ी चार महीने से तुम्हारे संपर्क में था। माया से मिलने की मिन्नतें कर रहा था। तुम उस समय उसे सब बता देती, तो क्या सब ठीक नहीं हो जाता?" अनामिका ने बड़े ही सब्र के साथ परिधि से सवाल किया था।

"क्योंकि मैं नहीं जानती थी कि... ये अल्फ़ी हैं। ये हमेशा अल्फ्रेड के नाम से मुझे मिले थे। मैंने इनको पहले कभी देखा भी नहीं था। ये हमेशा मुझसे माया से मिलवाने की बातें किया करते थे। यहाँ तक कि इन्होंने अपनी और माया के पार्टी में मिलने वाली बात भी मुझे बताई थी और मैं समझती रही कि ये हमारी माया के बारे में बातें कर रहे हैं। इनसे पहले भी इसी तरह कई दीवाने माया की तलाश में मुझे परेशान कर चुके थे। मुझे क्या... माया को भी यही लगता था कि नशे की हालत में कोई उसके करीब आ गया था और ये उसके लिए कोई नई बात नहीं थी। हम ज्यादा देर आपस में बातें नहीं कर सकते थे, इसलिए ये हर मुलाकात में माया के नाम से अल्फ्रेड की लिखी चिट्ठी दिया करते थे और मैं वो हमारी माया को दे दिया करती थी। माया को किसी के प्यार से कोई मतलब नहीं था, इसलिए उसने कभी भी जवाब नहीं दिया और आखिर में सब कुछ यहाँ आकर खत्म हुआ।" परिधि ने एक आह के साथ बात खत्म की।

और फिर सबकी समझ में आया कि हुआ क्या था? अल्फ़ी ये बात नहीं जानता था कि यहाँ दो-दो माया थीं और परिधि को नहीं पता था कि वो हेममाया का अल्फ़ी था। जब भी वो दोनों मिलते तब अल्फ़ी अपनी माया के बारे में कहता, जिसे परिधि अपनी माया समझ लेती थी। अल्फ़ी
अपनी और हेममाया की शादी की बात भी जगजाहिर नहीं कर सकता था, इसलिए उसने ना तो परिधि के सामने इसका जिक्र किया और ना ही अपने किसी ख़त में। वो अपनी माया तक पहुँचने से पहले उसे किसी भी प्रकार की मुसीबत में नहीं डालना चाहता था। मगर उसे नहीं पता था कि ये सब छिपाने की जुगत कितना कुछ खराब कर गई थी।

"इसका मतलब कि हेममाया को पता ही नहीं था कि... उसका अल्फ़ी उसकी तलाश में यहाँ आ चुका

था। हे भगवान!" चैतन्य फिर से भड़का, जबकि अल्फ़ी अभी भी उसे सपाट चेहरे से देख रहा था।

"मुझे तो अभी भी कुछ समझ में नहीं आ रहा है। ये यकीन करने लायक ही नहीं है।" अनामिका ने इंकार में सिर हिलाते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर परिधि एक फीकी सी हँसी हँसकर बोली, "अगर तुम ये मान लो कि माया बहुत ही ज्यादा चालाक है और उसने अपनी योजना पूरी चालाकी और तैयारी से बनाई थी, तो फिर तुम्हें हर बात पर यकीन आ जाएगा। तुम्हें तो ये जानकर भी हैरत होगी कि जिस खुफिया दरवाजे के पीछे माया ने हेममाया को कैद करके रखा था, वो भी उसने हेममाया से ही बनवाया था।"

"क्या?" एक साथ कई हैरत में डूबी आवाजें आई।

"तुम सब अभी भी माया को समझ नहीं सके हो। छल और धोखे का दूसरा नाम है वो। वो पहले सामने वाले को मानसिक और भावनात्मक रूप से कमजोर करती है... फिर उस कमजोर हिस्से पर वार करती है। उसका वार कभी खाली नहीं जाता। उसने हेममाया के साथ भी यही किया। उसने हेममाया को ये यकीन दिला दिया था कि उसकी बात मानकर ही वो यहाँ से सुरक्षित वापस जा सकती है। हेममाया को भी वापस जाना था और यहाँ के हालातों से वो वाकिफ नहीं थी, इसलिए
उसने माया की बात मान ली। दिव्याक्षि ने हेममाया को जो पानी कलश में दिया था, उसी की मदद से हेममाया ने वो दरवाजा बनाया और फिर उसके अंदर जाते ही हेममाया हमेशा के लिए एक अनकही कहानी बनकर रह गई। हेममाया बाहर ना निकल सके इसके लिए माया ने दरवाजे पर बंध लगा दिया, जिससे हेममाया अंदर ही कैद होकर रह गई।" परिधि ने हेममाया के हालातों से सबको रूबरू कराते हुए बताया।

"पर हेममाया एक शक्तिशाली जल-रक्षक थी। वो सात महीने तक इस तरह क़ैद में कैसे रह गई? उसके पास दिव्याक्षि की दी हुई किताब भी थी... तो क्या उसने कभी अपनी तरफ से कोई कोशिश भी नहीं की। ये भी यकीन करने लायक बात नहीं है।" अनामिका ने आपत्ति जताई।
"किया ना! हेममाया को कुछ ही दिनों में समझ आ गया था कि वो यहाँ फँस गई थी। उसने खुफिया दरवाजे से भी बाहर निकलने की कोशिश की, पर माया ने उसे अपने जादू से बांध दिया था। हममें से कोई भी दिव्याक्षि की दी हुई किताब के बारे में नहीं जानते थे। उसने हम सबसे छिपाकर उन किताबों की मदद से काफी कुछ सीख लिया था। जाहिर तौर पर वो माया की हर बात बिना किसी सवाल के मानती रही मगर अंदरूनी तौर पर खुद को मजबूत करती रही। मगर तीन महीने बाद ही माया को इसकी भनक लग गई। हेममाया के सवालों से बचने के लिए वो बहुत मुश्किल से यहाँ आती थी। हेममाया की सारी जरूरतें पूरी करने की जिम्मेदारी मेरी और माया की दोनों चमचियों की थी। लेकिन तीन महीनों के बाद जब वो हेममाया के पास पहुँची, तो ना जाने कैसे उसे सब पता चल गया और फिर हेममाया के अंतिम सॉंसें लेते यकीन ने दम तोड़ दिया। माया ने उसे शक्तिरोधक बेड़ियों में बांध दिया और फिर हेममाया बस एक क़ैदी बनकर रह गई। हमारे यहाँ जब किसी डायन को सजा दी जाती है, तब उसे इन बेड़ियों से बांध दिया जाता है, जिससे वो अपनी शक्तियों का इस्तेमाल ना कर सके। हेममाया भी नहीं कर सकी। आखिरी समय तक उसे खुद से शिकायत रही कि काश... अल्फ़ी की बात मानकर वो रूक गई होती। यहाँ ना आई होती।" परिधि ने अल्फ़ी की ओर एक डर भरी नज़र डालते हुए बात खत्म की।

"पर माया ने ये किया कैसे? अगर हेममाया मरी... तो मुझे पता क्यों नहीं चला?" अचानक ही दिव्याक्षि ने अपना सवाल परिधि की ओर उछाला। और ये सवाल सुनते ही एक बार फिर से परिधि के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगी। उसके चेहरे को देखकर एक बार फिर से चैतन्य की भौंह चढ़ी थी।

"लग रहा है कि फिर से माया ने.... तुमसे ही कुछ करवाया। है ना!" चैतन्य ने बहुत ही कड़वाहट से कहा।

"हाँ!" परिधि ने सिर झुकाकर कहा और ये सुनते ही चैतन्य ने अपने कंधे
उचकाते हुए दोनों हाथ ऐसे ऊपर उठा लिए... जैसे कि ये उसे पहले से पता था।

"क्या किया था?" दिव्याक्षि ने पूछा।

"मैंने माया के कहने पर.... आपके कमरे से.... एक जीवपात्र चुराया था।" कहकर परिधि बिल्कुल शांत पड़ गई। दिव्याक्षि ने अपना सिर पकड़ लिया था। उनकी नाक के नीचे इतना कुछ हो गया और उन्हें खबर भी नहीं हो पाई। पूरा कमरा एक सन्नाटे का शिकार हो गया था, सिवाय चैतन्य के।

"अब ये जीवपात्र क्या है?" चैतन्य ने थोड़ा उखड़कर पूछा।

"जिसमें किसी आत्मा को कैद कर सकते हैं।" अनामिका ने परिधि की ओर ही नज़र रखे हुए कहा।

"और कर लो बात!" चैतन्य बुरी तरह से झल्लाया।

"तुम्हारा मतलब है कि हेममाया के मरने के बाद उसकी आत्मा को कैद करने के लिए माया ने तुमसे ये मंगवाया। पर फिर भी... मुझे पता क्यों नहीं चला?" दिव्याक्षि ने बुरी तरह से उलझते हुए पूछा।

"दरअसल... बात ये है कि...." बात अधूरी छोड़ते हुए परिधि ने अपने सूखे हुए होंठों पर जबान फेरी।

"क्या बात है?" अनामिका ने अपनी नज़रें पैनी करते हुए पूछा।

"माया ने वो जीवपात्र हेममाया के मरने से पहले ही... मंगवाया था।" परिधि ने एक नया खुलासा किया।
"क्यों?" इस बार दिव्याक्षि पूरी ताकत से चीखी थी। उनका धुंआ-धुंआ होता चेहरा किसी अनहोनी की आशंका में बुरी तरह से राख होने लगा था।

"क्या हो गया?" अनामिका ने पूछा। दिव्याक्षि की प्रतिक्रिया ने सबको ही डरा दिया था। वहीं परिधि डर से और भी दुबकी थी।

"मैं नहीं जानती थी कि माया ऐसा कुछ करने वाली है। मैं सच कह रही हूँ। मैंने उसे मना किया था। शायद ज़िन्दगी में पहली बार मैंने उसके सामने आवाज उठाई थी। पर मैं कुछ नहीं कर सकी। वो सब रोकना मेरे बस में नहीं था।" परिधि बुरी तरह से रोते हुए बोली।

"कोई बताएगा कि हुआ क्या है?" चैतन्य चिल्लाकर बोला।

"मुझे समझ में आ गया कि क्यों मुझे हेममाया की मौत का पता नहीं चला... क्योंकि.... वो कभी मरी ही नहीं थी।" दिव्याक्षि ने रूंधे हुए गले से कहा।

"तो फिर!" अनामिका ने आशंका भरी नज़रों से दिव्याक्षि की ओर देखते हुए कहा।

"जब कोई नीचता की गहरी खाई का तल छू ले ना... तब वो नीच ऐसी हरकत कर सकता है। उस नीच माया ने हेममाया की आत्मा को उसकी जीवित अवस्था में उसके शरीर से बाहर निकाला और उसे जीवपात्र में कैद कर लिया। वो मरकर कभी आजाद हुई ही नहीं... तो कैसे... पता... चलता मुझे। उसकी मृत्यु आई ही नहीं थी। उसे तो एक लंबा जीवन जीना था। पर उस माया ने सब बिगाड़ कर रख दिया।" दिव्याक्षि सारी दुनिया का दर्द अपनी आवाज में समेटकर बोली।
ये सुनकर चैतन्य और अनामिका दोनों ही सदमे में आ गए। माया नाम की इस मुसीबत के लिए उन दोनों के दिल में हर पल नफ़रत बढ़ती ही जा रही थी। उन्होंने बड़े ही अफसोस के साथ अल्फ़ी की ओर देखा, जिसके लिए शायद आज की रात क़यामत की रात थी। जिसका हँसता-खेलता ऑगन दूसरों की भूख, लालच और महत्वाकांक्षाओं की आंधी में उजड़ गया था और अब उस ऑगन में बहार आने की कोई वजह बाकी भी नहीं थी। मगर वो शांत था। एक गाल पर लुढ़के ऑसुओं के कुछ क़तरों के अलावा उसने कोई और प्रतिक्रिया नहीं दी। अब अनामिका और चैतन्य दोनों को ही उसकी हालत से डर लगने लगा था। उसे खुद को पिशाच में बदलने के लिए किसी और वजह की अब जरूरत भी नहीं थी। उसकी सादी और सरल सी जिंदगी में अब मुस्कुराने के लिए कुछ भी बाकी नहीं रह गया था।

ऐना का हाल भी अल्फ़ी से कुछ अलग नहीं था। जिस बेटी के साथ जिंदगी गुजारने के सपने लिए वो अपनी जिंदगी में खुशियों का स्वागत करना चाहती थी... उसे वो एक नज़र देख भी नहीं पाई। अपने अंदर ना जाने क्या-क्या समेटे वो भी एक ओर निढाल सी पड़ी थी।

"माया ने ये सब मेरे सामने नहीं किया था। उसने एक दिन पहले मुझसे वो जीवपात्र मंगवाया था। मैं खाना देने गई लड़की के साथ ही यहाँ आई थी। दिव्याक्षि कभी भी मेरी मौजूदगी पकड़ नहीं पाती थी। पता नहीं क्यों? पर माया ने इसी का फायदा उठाया। उसके इरादों से अंजान मैं आसानी से एक जीवपात्र यहाँ से ले गई और उसे दे दिया। उसके बाद मैं अल्फ़ी से मिली थी, जहाँ उसने एक और चिट्ठी मुझे दी। मैं वो लेकर माया के पास गई, तो उसने बेदर्दी से मुझे झिड़क दिया। मैं तब तक नहीं जानती थी कि हेममाया के साथ क्या हो चुका था। वो तो रात जब माया ने मुझे अपने पास बुलाया तो उसने अपनी करतूत मेरे सामने उगली। वो चाहती थी कि मैं अपनी दवाईयों के सहारे उसके शरीर को कुछ दिनों के लिए सुरक्षित रखूं (भाग 64)।
मेरा दिल तो सब जानने के बाद धक्क से रह गया था। उसके बाद माया मुझे वहाँ ले गई। पहली बार मेरी आत्मा ने मुझे धिक्कारा था। वो मेरे सामने बेजान पड़ी थी। किसी का इंतजार, किसी की उम्मीदें... किसी की खुशियाँ थी वो... जो मेरी कायरता की बलि चढ़ गई और वो मेरी पूरी जिंदगी का पहला मौका था, जब मैं बिना डरे माया पर चिल्लाई थी। मुझे आखिरी समय तक ये उम्मीद थी कि अपना मतलब निकलते ही माया उसे छोड़ देगी। पर वो तो कोई और ही मंसूबा पाले हुए थी। मैंने उसकी बात नहीं मानी तो वो मुझे घसीटते हुए मेरे कमरे में ले गई। मुझे बहुत बुरा भला कहा। मैं चाहकर भी खुद को संभाल नहीं पा रही थी। ऐसी ही हालत में अगले दिन सुबह मैं अल्फ़ी से मिली और उस दिन मुझे पता चला कि वो हेममाया का अल्फ़ी था। सब जानकार मैं इतनी टूट गई थी कि अल्फ़ी से ही उलझ गई और उसे हेममाया को हमेशा के लिए भूलने के लिए कह दिया। और कह भी क्या सकती थी।" कहते-कहते परिधि बुरी तरह से हांफने लगी थी।

और ये सब सुनकर चैतन्य और अनामिका को सब याद आता गया कि जब वो दोनों यहाँ आए थे ये सब उसी समय घटा था। अगर सब हिसाब लगाएँ तो जब माया ने हेममाया की आत्मा को कैद किया... उसी समय चैतन्य और अनामिका दोनों ही अतीत में पहुँचे थे। उन्हें याद आया कि उन दोनों ने माया और परिधि की बातें भी सुनी थी, जब परिधि, माया से अल्फ़ी और उसकी चिट्ठी के बारे में बात कर रही थी और माया ने बड़ी ही हिकारत से परिधि और उसकी बातों को हवा में उड़ा दिया था (भाग 52)। परिधि की बात मानें तो परिधि को हेममाया के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उसके बाद परिधि का फेंका हुआ कड़ा लेकर उन अनामिका और चैतन्य ने छलद्वार बनाया था फिर वो दोनों बसेरे में परिधि के कमरे तक पहुँचे थे। वहाँ कपड़ों के ढेर के पीछे छिपकर उन्होंने परिधि की बात सुनी थी, जब वो माया के ऊपर बड़बड़ा रही थी।
"पता नहीं क्या समझती है खुद को? जब से दिव्याक्षि ने उसे सर्वशक्तिमंडल के लिए चुन लिया गया, तो नखरे बढ़ गए हैं मोहतरमा के। मुझे बीच में फँसा दिया है। अब उस अल्फ़ी से क्या कहूंगी। वो पागल भी जब देखो माया माया करता रहता है। कैसे बताऊं कि माया ने दूध से मक्खी की तरह निकाल फेंका है उसे? उसे ताकत से प्यार है और वो अल्फ़ी मेरी तरह ना जाने कैसे उन पिशाचों में फँस गया? पर बताना तो पड़ेगा। गलती भी तो मेरी ही है। माया से ज्यादा तो मैंने उसे धोखे में रखा है। कल फिर रात के चौथे पहर में झील किनारे जाना पड़ेगा। बेचारा!"

(भाग 54)

पता चल रहा था कि परिधि उस समय भी हर घटना से अंजान थी। उसी समय माया के बुलाने पर वो फिर से बाहर गई थी। उस समय थकान की वजह से अनामिका को नींद आ गई थी, मगर चैतन्य चिंता में जाग रहा था। उसी समय गुस्से में भरी हुई माया, परिधि को खींचते हुए उसके कमरे में लेकर आई थी और फिर उनके बीच जो भी बातें हुई थी वो इस बात की ओर इशारा कर रहा था कि परिधि को हेममाया के बारे में सब पता चल गया था और वो गुस्से और डर दोनों की हालत में थी। उसने सही कहा था, वो माया पर नाराज़ हुई थी।

"तुमसे हजार बार कहा है कि अपनी हद में रहा करो। अब तुम मुझे
सिखाओगी कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।" माया बुरी तरह गरजती हुई बोली।

"माया! मैं वो बस...." परिधि ने कहना चाहा।

"चुप! तुम्हें यहाँ रहने की इजाजत मिल गई है, यही गनीमत मानो। आइंदा से मेरा रास्ता काटने की जरूरत नहीं है। समझी।" बौखलाई हुई माया उस पर झुकती हुई बोली।

डरी-सहमी परिधि ने तेजी से हाँ में सिर हिलाया। माया ने उस पर एक हिकारत भरी नज़र डाली और फिर वहाँ से चली गई। साथ आई दोनों लड़कियाँ उसके पास आई और उनमें से एक बोली, "क्यों बार-बार माया को गुस्सा दिलाती है। खुद पर तरस खा लिया कर। कल वो सिद्धिकुंड जाएगी और तुझे अड़ंगा डालने की जरूरत नहीं है। उसने जो काम तुझे सौंपा है... वो कर। समझी!"

(भाग 54)

हेममाया मर चुकी थी और उसके जाने का दर्द चैतन्य ने परिधि के चेहरे पर साफ-साफ देखा था। अगले दिन चैतन्य और अनामिका ने छलद्वार के द्वारा परिधि का पीछा किया था, जब चैतन्य गलती से झील की बजाय माया के पास सिद्धि कुंड में पहुँच गया था और उसी दिन से वो माया के निशाने पर था। किसी तरह सही जगह पहुँचने के बाद चैतन्य और अनामिका ने परिधि और अल्फ़ी को आपस में उलझे हुए देखा था। ये वही समय था जब परिधि को अल्फ़ी की असलियत पता चली थी, पर
बदकिस्मती से चीजें उसकी पहुँच से बाहर हो चुकी थीं। उसके बाद चैतन्य, अल्फ़ी की मदद से मेंशन और अनामिका, परिधि की मदद से बसेरे तक पहुँच गई। उसके बाद ना जाने कितने झटके खाने के बाद आज सबसे बड़ा झटका उन सबको लगा था।

हेममाया मर चुकी थी। तीन दिन पहले ही मर चुकी थी और इन सबसे अंजान अल्फ़ी आखिरी समय तक उसका इंतजार कर रहा था। चैतन्य और अनामिका उसके दर्द को महसूस कर ही रहे थे कि तभी अनामिका के दिमाग में कुछ खटका। उसे याद आया कि अल्फ़ी ने परिधि की कलाई थामने के बाद उसे माया कहकर बुलाया था।

"मुझे कुछ नहीं पता। मैं बस इतना जानता हूँ कि एक दिन तुम भी मेरे दिल की बात समझोगी और उस दिन ये जो पर्दा है ना! तुम खुद हमारे बीच से हटा दोगी और मुझे हमेशा इसका इंतजार रहेगा।" अल्फ़ी ने मोहब्बत की चाशनी में डूबे हुए लफ़्ज़ों के साथ कहा।

(भाग 56)

"पर.... एक मिनट! अल्फ़ी झील के किनारे तुम्हें माया क्यों कह रहा था? हमने साफ-साफ सुना था।" अनामिका ने उन पुरानी यादों में से एक सवाल उठाते हुए परिधि से पूछा।

उसकी बात सुनकर परिधि एक आह भरकर रह गई। उसने शर्मिंदगी से भारी हुई अपनी पलकें उठाकर अल्फ़ी की ओर देखा और फिर बहुत
हिम्मत इकट्ठा करके बोली, "मैंने कभी इससे ज्यादा जिद्दी प्रेमी नहीं देखा। उन चार महीनों में मैंने इसका दिल तोड़ने के लिए ना जाने क्या-क्या नहीं कहा, मगर ये अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ। यहाँ तक कि ये मेरी हर बात मुस्कुराते हुए सुन लेता था। उस समय मुझे इसका कारण समझ में नहीं आया था, मगर अब आ गया है। इसे दूसरों की बातों से ज्यादा हमेशा अपनी माया पर भरोसा था। मैं जब भी माया के बारे में बुरा कहती... ये बस यही कहता कि ये सारी बातें उसकी माया खुद आकर उससे बोल दे, तो ये जगह छोड़कर चुपचाप चला जाएगा। मगर उस समय मैं अल्फ़ी को हमारी माया के साथ सोचती थी, इसलिए मुझे बहुत ही अजीब लगता था कि कोई माया जैसी लड़की के पीछे इतना दीवाना कैसे हो सकता है?"

"पर उस सुबह झील के किनारे अल्फ़ी ने तुम्हें माया क्यों कहा था?" चैतन्य एक बार फिर से सवाल पर आते हुए बोला।

"वो हमेशा मुझे देखकर माया का ही नाम लिया करता था। शायद इसलिए क्योंकि..... मुझे देखकर उसे हमेशा लगता था कि मैं माया का संदेश लेकर आई हूँ। उसने मुझसे कहा भी था कि मुझे देखते ही उसे माया की याद आती थी। सच कहूं तो मुझे माया से बहुत जलन होने लगी थी। मैंने इससे ज्यादा सब्र वाला कभी कोई और नहीं देखा। इन चार महीनों में एक बार भी इसने किसी भी प्रकार की जोर-जबरदस्ती करने की कोशिश नहीं की। शायद ये भी एक वजह थी कि मैं हर बार इससे मिलने आ जाया

करती थी और ना चाहते हुए भी इसके दिल पर चोट कर जाती थी। मगर शायद वो सुबह उसके सब्र का आखिरी समय था, जबकि आखिरकार अल्फ़ी ने अपने और हेममाया के रिश्ते के बारे में मुझे बता ही दिया और उस समय मुझे पता चला कि गलतफहमियों के भँवर में क्या अनर्थ हो चुका है। पर पता नहीं उस समय मेरे अंदर क्या चल रहा था कि मैंने एक बार फिर उसका दिल तोड़ने के लिए उससे कह दिया कि वो तुम्हारे ख़त पढ़ती ही नहीं, तो जवाब क्या देगी? उस पर अल्फ़ी ने मेरी ज़ुबानी संदेश भेजने की बात कही। उस सुबह उसने मेरी कलाई पकड़कर जो कुछ भी कहा था,
वो मेरे लिए नहीं....उसकी माया के लिए था।" सबके दिलों की दुविधा दूर करते हुए परिधि ने विस्तार से सब कुछ बता दिया।

परिधि के चुप होते ही एक बार फिर से कमरे में सन्नाटा पसर गया। तुरंत किसी प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए किसी के पास कोई भी शब्द नहीं थे। माया की चालों से तो वो सब बच भी जाते, पर किस्मत ने गलतफहमी की जो चाल अल्फ़ी- हेममाया और परिधि के बीच चली थी, उससे बचने का रास्ता कौन सा था? सच तो ये था कि जो कुछ भी हो रहा था उससे किसी और को कोई फर्क पड़े या ना पड़े, पर अल्फ़ी के अंदर बहुत कुछ खत्म हो रहा था। उसकी अच्छाई, उसकी नरमदिली, उसकी जिंदादिली... सब कुछ जल कर भस्म ही होने को ही थी। वो बस खामोश था।

दूसरी ओर इतने पेचीदा रास्तों के साथ सहज-सरल जिंदगी की कल्पना करके ही चैतन्य के पसीने छूट गए। उसने एक शर्मिंदा सी नज़र ख़ामोशी ओढ़े अल्फ़ी की ओर डाली। आखिर उसने भी तो हर कदम पर उसके किरदार पर शक किया था। पर वो कभी भी... कहीं भी ग़लत नहीं था। परिधि और अल्फ़ी की मुलाकात वाली सुबह चैतन्य के दिल में अल्फ़ी के लिए जो गांठ पड़ी थी, वो गांठ माया के बेताब प्रेमी के रूप में और भी कसी थी और अनामिका तक आते-आते वो गांठ किसी फंदे का रूप ले चुकी थी, जिसमें चैतन्य ने अल्फ़ी के किरदार को मौत की सजा सुना दी थी। पर आज पता चला कि वो किस कदर हर ग़ुनाह से पाक था। चैतन्य को उसके लिए अपने मन में रखे गए हर बुरे विचार के लिए शर्मिंदगी महसूस हो रही थी। आज उसे अनामिका के धैर्य पर भी आश्चर्य हो रहा था, जिसने हर बार ऑखों देखी पर भरोसा नहीं किया था। सच तो यही था कि उस कमरे में हर कोई अल्फ़ी का गुनहगार था सिवाय अनामिका के और बस इसी एक अनामिका शब्द पर आकर चैतन्य की अल्फ़ी के लिए हर भावना धूमिल पड़ जाती थी और इस वजह से उसके अंदर एक बार फिर से चिड़चिड़ाहट पैदा होने लगी थी। जिसका शिकार उसने परिधि को
ही बनाया।

"आप सब यकीन करें। मैंने सब माया के बहकावे में आकर किया। मैं सच में नहीं जानती थी कि वो हेममाया को जान से मार देगी।" परिधि बिलखते हुए बार-बार यही बोल रही थी।

"तुम्हें अब भी लगता है कि तुम्हारे गुनाह दूसरे के गुनाह की आड़ में छिप गए हैं? याद रखना कि तुमने जो गुनाह किया है उसकी भी कोई माफी नहीं है।" चैतन्य, परिधि पर भड़कते हुए बोला।

"बस करो चैतन्य! तुम परिधि को कोस रहे हो.. और तुमने... तुमने क्या किया था फॉरेस्ट केबिन में। उस माया ने तुमसे कुछ कहा था ना... मेरे और अल्फ़ी के बारे में। सच बोलना! इसीलिए इतना भड़क रहे थे ना तुम!" अनामिका ने उसे आईना दिखाते हुए कहा, जिस पर चैतन्य ने उससे नज़रें चुराई थीं।

"जरा सोचो तुम्हारे जैसा ताकतवर रक्षक उसकी बातों में आ गया... तो परिधि तो फिर भी सच में कमजोर है। देखो.... मैं तुम्हें दोष नहीं दे रही और ना ही मैं ये कह रही हूँ कि परिधि की गलती इससे कम हो गई। मगर परिधि ने ये सही कहा है कि माया बहुत चालाक है। ताकत उसी की ज्यादा होती है

जो उसे इस्तेमाल करना जानता है और माया को ये बहुत अच्छे से पता है। हमें उससे सावधान रहना पड़ेगा।" अनामिका ने चैतन्य को सूरत-ए-हाल दिखाते हुए कहा।

"परिधि! वो जीवपात्र कहाँ हैं? अगर हमें हेममाया का शरीर वापस मिल जाए... तो वो फिर से वापस आ सकती है।" कमरे में गूंजी दिव्याक्षि की इस आवाज से सभी के चेहरे पर एक राहत भरी मुस्कान वापस ला दी थी। बेजान से पड़े अल्फ़ी के शरीर में एक हलचल सी हुई, जिसने उसके अभी भी जिंदा होने का सबूत दिया।
"मुझे नहीं पता!" परिधि की हमेशा की तरह दिल तोड़ने वाली आवाज आई।

"क्या मतलब कि नहीं पता। वो माया के पास ही हो सकती है।" अनामिका ने पूछा।

"नहीं! वो यहाँ कहीं नहीं है!" परिधि ने कहा।

"तो फिर कहाँ है?" अनामिका ने ही पूछा।

"उस दरवाजे के पीछे!" परिधि ने शून्य में देखते हुए अपनी ऊंगली ऊपर उठाकर कहा।

"कौन सा दरवाजा?" चैतन्य ने पूछा।

"वही जिसे हम सबकी नज़रों से बचाकर हेममाया ने बनाया था, पर वो उसे इस्तेमाल कर पाती, उससे पहले ही माया ने उसे बेड़ियों में जकड़ दिया। दिव्याक्षि की किताब की मदद से उसने एक द्वार बनाया था। शायद वो उसकी मदद से अपने घर वापस जाना चाहती थी, मगर जा नहीं पाई।" परिधि ने सबको बताया।

"हेममाया ने द्वार बनाया था। चैतन्य! कहीं ये वही समय द्वार तो नहीं है। हेममाया जल-रक्षक थी। वो समयद्वार बना सकती थी। दिव्याक्षि ने भी हेममाया से मुलाकात के समय कहा था कि सात महीने बाद एक वायु रक्षक आएगा, जिसकी मदद से एक समय द्वार बनेगा। अगर उन सबकी गणना करें तो हेममाया ने समयद्वार बना दिया है, जिसे वायु-रक्षक यानि कि तुम्हें सक्रिय करना पड़ेगा। तभी वो काम करेगा।" अनामिका ने आगे-पीछे सारे अनुमानित हिसाब लगाते हुए कहा।
अनामिका की बात सुनकर चैतन्य के चेहरे में एक चमक आई, जिसे अगले ही पल एक बार फिर से परिधि ने बुझा दिया।

"पर वो द्वार तो सक्रिय था।"

"ऐसा कैसे हो सकता है? बिना वायु-रक्षक के वो द्वार सक्रिय नहीं हो सकता।" चैतन्य ने आपत्ति जताई।

"पर वो था। उस दिन माया की दोनों चमचियॉं, जब उस जीवपात्र को एक-दूसरे की ओर उछालते हुए खेल रहे थे, तब वो जीवपात्र मेरी ओर आ गया था। मैं डर से पीछे हटकर दीवार से लगी ही थी कि वो दीवार जैसे हवा हो गई और देखते-ही-देखते वो जीवपात्र उसके अंदर चला गया। मैं घबराकर तेजी से वहाँ से हटी थी। और फिर वो दरवाजा बंद भी हो गया। सब इतनी तेजी से हुआ कि हमें समझ में नहीं आया कि हुआ क्या? बस मैं ये जानती हूँ कि उस दरवाजे के पीछे कोई और ही दुनिया थी, जहाँ मैंने कुछ जंगली और खतरनाक कबीले वालों को देखा था।" परिधि ने उन सबको बताया।

"दूसरी दुनिया! इसका मतलब कि वो समय द्वार ही था।" दिव्याक्षि ने बहुत ही हैरानी से कहा।

"तुम्हारा मतलब है कि वो समयद्वार हेममाया ने ही बनाया था! पर ऐसा कैसे हो सकता है?" अनामिका ने भी हैरत की आखिरी सीमा पर खड़े होकर कहा।

"वो मैं नहीं जानती। हेममाया ने जो बनाया था, वो समयद्वार है... या छलद्वार.... मुझे नहीं पता! पर हेममाया की आत्मा उसी के पीछे है।" परिधि ने सुबकते हुए कहा।
"मतलब कि वो जीवपात्र भविष्य में चला गया। पर कहाँ?" चैतन्य ने अपने माथे को रगड़ते हुए कहा।

"जहाँ भी गया होगा, किसी ना किसी ने उसे खोलकर माया की आत्मा को मुक्त किया होगा, तभी उसने फिर इस लड़की अनामिका के रूप में फिर से जन्म लिया है। इसीलिए मुझे इसमें हेममाया के होने का अहसास होता है।" दिव्याक्षि ने जैसे ऐलान करते हुए कहा।

और ये सुनते ही जहाँ एक अलग ही जज़्बे के साथ ऐना, परिधि और अल्फ़ी की निगाहें अनामिका की ओर उठी थीं, वहीं चैतन्य का दिल एक बार फिर जैसे आसमान से नीचे गिरा था, जो अभी भी ये नहीं मानना चाहता था कि उसकी अनामिका ही अल्फ़ी की माया है।

मगर इन सबसे अलग अनामिका किसी और ही सोच में घिरी हुई थी। एक ऐसी सोच जिसने उसके होश उड़ा दिए थे। पिछली बार दिव्याक्षि के कमरे में जब उसने जीवपात्र की शीशीयॉ देखी थीं... तभी से उसे लग रहा था कि उसने इन्हें पहले भी कहीं देखा है, पर बहुत कोशिशों के बाद भी उसे कुछ याद नहीं आया था (भाग 73)। मगर अब अचानक ही उसकी यादों का वो कोना खुल गया था। उसे याद आ गया था कि उसने उस गायब हुए जीवपात्र को पहले कहाँ देखा था? वो मेघा... उसकी मॉ का संदूक था, जिसमें वो जीवपात्र रखा हुआ था। इसका मतलब तो यही था कि मेघा ने सबसे झूठ बोला था। उसने शिशुकाल में अनामिका की जान बचाने के लिए उसकी टूटती सॉसों को खुद अपनी आत्मा से नहीं.. बल्कि हेममाया की आत्मा से जोड़ा था। वो हेममाया का पुनर्जन्म नहीं थी, जैसा कि सभी सोच रहे थे, मगर ऐसा नहीं होकर भी वो हेममाया ही थी। अब उसे ये समझ आ गया था कि दिव्याक्षि ने हेममाया की मौत कभी महसूस क्यों नहीं की। क्यों हेममाया मरकर भी कभी नहीं मरी? क्योंकि वो तो अनामिका के अंदर ही जिंदा थी।

उसने चैतन्य और अल्फ़ी की ओर बारी-बारी से नज़र डालकर बड़ी ही उलझन के साथ अपना चेहरा अपनी हथेलियों में छिपा लिया। वो एक बार फिर से रिश्तों के चक्रव्यूह में फँस चुकी थी क्योंकि वो चैतन्य की अनामिका के साथ-साथ अल्फ़ी की माया भी थी और इस चक्रव्यूह से निकलने के लिए उसे कभी ना कभी एक फैसला लेना ही होगा। वो फैसला जो किसी एक का दिल तोड़ने वाला था।

अपनी बात खत्म कर परिधि बेदम सी दीवार पर टिक गई। ऐना और अल्फ़ी एक बार फिर से अपनी उम्मीद को टूटते देख निढाल हो गए। वहीं चैतन्य और अनामिका एक अलग ही दुविधा के शिकार हो चुके थे। चैतन्य एक बार फिर से ये ख़ारिज करने की कोशिश कर रहा था कि अनामिका की कोई और

पहचान भी हो सकती है, वहीं अनामिका ये सोचकर ही परेशान थी कि उसका जीवन बचाने के लिए उसकी कथित मॉ ने हेममाया की आत्मा को उसके लगभग खत्म हो चुकी आत्मा के साथ जोड़ा था। अब वो खुद को पूरी तरह से अनामिका माने या फिर हेममाया और ये सोचकर उसकी नज़रें एक बार फिर बारी-बारी से चैतन्य और अल्फ़ी की ओर उठी। उसके सवाल का फिलहाल तो उसके पास कोई जवाब नहीं था और वो ये बात भी किसी को बताना नहीं चाहती थी। शायद पहली बार वो खुद के बारे में सोच रही थी।

"क्या.... उस जीवपात्र को.... हासिल नहीं किया जा सकता?" परिधि ने दिव्याक्षि पर एक उम्मीद भरी नजर डालते हुए पूछा।

"किया तो जा सकता है। पर उसमें समय लगेगा। कितना? पता नहीं ! तब तक हेममाया के शरीर को सुरक्षित रखना भी बहुत जरूरी है।" दिव्याक्षि ने एक संभावना के साथ कहा।

"पर..... हेममाया का शरीर तो पिशाचों के पास है।" चैतन्य ने सबको जानकारी देते हुए कहा।

"पिशाचों के पास! वो उनके पास कैसे पहुँची?" ऐना ने भरी हुई ऑखों के साथ पूछा।

"वो तो ये परिधि बताएगी।" चैतन्य ने एक फुंफकार छोड़ते हुए कहा।

"मैं नहीं जानती ये कैसे हुआ? किसने किया? जिस समय तुम सबने मुझे उस खुफिया दरवाजे के बाहर पकड़ा, मैं उसके शरीर के लापता होने के सदमे में ही थी। मैं सच में नहीं जानती कि ये किसने किया?" परिधि ने सिसकते हुए कहा।

"मार्गरेट-रोमा! और कौन हो सकता है? वही दोनों थे... जो उस जगह का रहस्य जानते थे और वहाँ बेरोकटोक आ-जा सकते थे।" अनामिका ने जवाब देते हुए कहा।

"सवाल ये नहीं है कि ये किसने किया। अब सवाल ये है कि हेममाया का शरीर वापस कैसे पाया जाए?" दिव्याक्षि ने चिंता से कहा।
और इस सवाल के साथ ही अल्फ़ी झटके से उठ खड़ा हुआ था। सबकी नज़रें उसकी ओर उठी थीं। इन सभी झमेलों के बीच उसके दिमाग से ये बात निकल ही गई थी कि उसकी माया का शरीर तक उसके पास नहीं था और ये ख्याल आते ही.... वो वापस आ सकती थी या नहीं आ सकती थी... ये सारे विचार अल्फ़ी के दिमाग से कहीं दूर छिटक गए थे। वो उसकी पत्नी थी... उसका प्यार थी। डायन और पिशाचों के विवादों से अलग.... उसका हक़ था कि हेममाया का शरीर उसे सौंपा जाए और अब वो हर चीज भूलकर अपना हक लेना चाहता था। सभी उसकी मनोदशा अच्छी तरह से समझ रहे थे और ये भी जानते थे कि एक अकेला अल्फ़ी ही था, जो हेममाया का शरीर ला सकता था। पर दूसरी तरफ ये दुनिया के मुश्किलतरीन कामों में से भी एक था। एक पिशाच और एक डायन का प्रेम.... और उस पर विवाह ना जाने कौन सा और कैसा तूफान ला सकते थे। मगर इस समय अंदर एक और तूफान को समेटे हुए अल्फ़ी को रोकना भी उतना ही मुश्किल काम था। वो दहलीज से बाहर कदम रखने ही वाला था कि तभी अल्फ़ी का ज़हन एक सवाल में उलझ गया और वो रूक गया। उसने पीछे मुडकर परिधि को तेज नज़रों से देखा।

"उसे मारा क्यों?" अल्फ़ी ने सपाट चेहरे के साथ अपने अंदर अटका हुआ सवाल बाहर निकाला।

"माया को उसकी शक्तियॉ चाहिए थीं।" परिधि ने भी तुरंत जवाब दिया।

"शक्तियाँ? पर वो तो अग्नि है.... जल की शक्तियॉ लेकर क्या करेगी?" अनामिका ने पूछा।

"मुझे नहीं पता!" परिधि का जवाब आया।

और अब यहाँ आकर ये एक और नया सवाल पैदा हो गया था। आखिर चल क्या रहा था माया के दिमाग में? मुसीबतों की हद पर खड़े वो सभी ये
अच्छी तरह से जान चुके थे कि माया कोई मामूली या आसानी से सुलझने वाली समस्या नहीं थी। उसने अपना सारा खेल बहुत ही सोच समझकर खेला था। वो कुछ तो ऐसा करने वाली थी, जो किसी के भी वहमोगुमान में भी नहीं था। पर क्या? उसने अपने आप को कभी भी किसी के सामने पूरी तरह से खोला नहीं था। सब उसे एक दुष्ट और कपटी प्रवृत्ति की नाज़ुक सी लड़की समझते रहे, पर उसने तो हमेशा से ही खुद को एक पर्दे में छिपाकर रखा हुआ था और अब ये पहेली उनका सिर खाने वाली थी।

"हम्म! शायद सर विलियम मदद कर सकते हैं।" अल्फ़ी ने एक हुंकारी भरते हुए कहा और फिर नज़रें उस पर से हटाई ही थी कि अनामिका उन नज़रों की गिरफ्त में आ गई। अल्फ़ी का दिल अभी हुई सारी बातों के सार पर अटक गया। अनामिका ही उसकी माया थी। वो उसके अंदर थी। उसके करीब अपनी बेचैनियों का सबब अब उसकी समझ में आ गया था और जिससे वो एक बार फिर से उलझ गया। और अनामिका जो खुद उस पर नज़रें टिकाए खड़ी थी... उसकी गहरी नज़रों से सिटपिटा सी गई और उसने तुरंत ही अपनी नज़रें झुका लीं। चैतन्य ने भी उनकी नज़रों को पढ़ा... और वो खुद पर एक ज़ब्त करके रह गया। अल्फ़ी ने अपनी उलझी हुई नज़र अनामिका से हटाई और फिर अपने कसे हुए जबड़ों और भिंची हुई मुट्ठियों के साथ एक झटके में बाहर निकल गया।

"चैतन्य! तुम्हें साथ जाना चाहिए। वो अभी गुस्से में है। कहीं ऐसा ना हो कि खुद को और भी परेशानियों में डाल ले।" अनामिका ने दरवाजे पर नज़र रखे हुए कहा, जहाँ से अल्फ़ी बस अभी भी निकला था। अनामिका की ऑखों में बहुत कुछ छलक रहा था। कुछ फिक्र.... कुछ उम्मीदें... और कुछ नामालूम से अहसास। चैतन्य ने चुपचाप सिर हिलाया और वो भी तेजी से बाहर की ओर भागा।

"चैतन्य! एक मिनट रूको!" अचानक ही अनामिका ने तेज आवाज में उसे रोका। उसकी आवाज सुनकर चैतन्य रूक गया और उसकी ओर
मुड़ा।

"क्या हुआ?" चैतन्य ने पूछा। अनामिका के इस तरह अचानक टोके जाने पर वो हैरान हुआ था।

"तुम्हें कुछ बहुत जरूरी बात बतानी है। मेंशन की पार्टी वाली रात ही मैं तुम्हें वो बताना चाहती थी, पर हालात इस तरह तेजी से बदले कि ये मेरे ध्यान से उतर ही गया। अभी अल्फ़ी ने सर विलियम का जिक्र किया तो मुझे वो बात याद आ गई। पता नहीं हालात आगे कैसे हों और ये बात कहीं मुझ तक ही ना रह जाए। हो सकता है कि ये जरूरी हो।" अनामिका ने बहुत ही संजीदगी से कहा।

"ऐसी कौन सी बात है?" चैतन्य ने भी उत्सुकता भरी नज़रों के साथ अनामिका को देखते हुए कहा।

"मैं जब मेंशन के गलियारों में भटक गई थी, उस समय आहट सुनकर बचने के लिए उसी गलियारे की ओर भाग गई थी, जहाँ किसी भी गार्ड की तैनाती नहीं है। फिर मैं एक अधखुले कमरे के अंदर चली गई

थी और खिड़की में लगे पर्दों के पीछे छिप गई थी। वो कमरा जिसका भी था... वो उस समय कमरे में शायद कुछ लेने आया था और मेरे छिपने के तुरंत बाद वहाँ से बाहर निकल गया। जाते समय उसने दरवाजे को बंद किया। उसके जाने के बाद मैं भी उस कमरे से निकलने वाली थी मगर मेरी नज़रों से एक चीज़ टकराई और मैं रूक गई।" अनामिका ने अपने गलियारों में भटकने का किस्सा साझा करते हुए कहा।

"अच्छा। और वो क्या थी?" चैतन्य ने कौतूहल से पूछा।

"वो एक किताब थी। बहुत ही अजीब सी! मुझे नहीं पता कि ऐसा क्यों हुआ, पर मुझे एक अजीब सी घुरघुराहट जैसी आवाज सुनाई दी। मैं उस
आवाज के पीछे गई तो वो किताब मुझे उस कमरे में लकड़ी के पार्टिशन के दूसरी ओर दिखी। उसमें से लाल रंग की धुँआनुमा रोशनी निकल रही थी, जिससे उस किताब का कवर बुरी तरह हिलते हुए जैसे खुलने की कोशिश कर रहा था।

मैं जब उसके पास गई तो उसका फड़फड़ाना धीमा हो गया। ना जाने क्या सोचकर मैंने उस पर अपना हाथ रख दिया। मेरा हाथ लगने से वो किताब थोड़ा सा काँपी और फिर हाथ हटाते ही खुल गई। वो अंदर से एक बॉक्स की तरह थी, जिसके अंदर एक अजीब सी शैतानी आकृति बनी हुई थी।

मैं उसे समझने की कोशिश कर ही रही थी कि तभी उस आकृति में हलचल होने लगी और फिर मुझे हैरान करते हुए उसने कुछ कहा।"

"क्या कहा?" चैतन्य की उत्सुकता बढ़ चुकी थी।

"एक मिनट रूको!" अनामिका ने कहा और फिर कुछ ही देर में फिर से उसकी आवाज आई,

"जब प्रेम लौटकर आएगा..
और मात प्रेम से खाएगा,
जग झुलसेगा इस अग्नि में...
और दानव जाल बिछाएगा,
रक्त की बूंदों से रक्तिम...
इतिहास लिखा फिर जाएगा,
खंज़र उतरेगा सीने में...
और ये ज़ख़्म सदा भरमाएगा,
सुलझाकर उलझे धागों को...
ये समयजाल खुल पाएगा,
जो ना बूझे इस उलझन को....
फँस समयजाल में जाएगा।"
"ये क्या है?" चैतन्य मुँह बनाकर बोला।

"मुझे नहीं पता। पर ना जाने मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि इस पहेली जैसी लाइनों में कुछ तो है... कुछ ऐसा... जिसे हमें पता होना चाहिए।" अनामिका ने कहा।

"कुछ और भी था।" चैतन्य ने पूछा।

"अ... नहीं! इतना ही था।" अनामिका ने कहा।

"गजब है तुम्हारी याददाश्त!" चैतन्य ने प्रशंसा भरे स्वर में कहा।

"अ... वो... बात दरअसल ये है कि... वो बार-बार ये दोहरा रहा था, तो मैंने पास रखे कागज पर क्विल पेन से लिख लिया। ये सोचकर कि शायद काम का हो। ये अभी भी मेरे पास है। तुम्हें देने के लिए ही पास रखा था।" अनामिका ने बात साफ करते हुए कहा और अपनी ड्रेस की जेब से एक कागज का टुकड़ा निकालकर उसकी ओर बढ़ाया।

"ये तुम्हारी जेब में था। मतलब... तुम अल्फ़ी को बचाने के लिए झील में उतरी थी।" चैतन्य ने एक बार फिर से हैरानी जताई।

"मैं एक जल रक्षक हूँ चैतन्य!" अनामिका ने जैसे उसे याद दिलाया था।

"और कुछ!" चैतन्य ने उस कागज के टुकड़े को पकड़ते हुए पूछा।

"नहीं! उसके बाद मैं जब वहाँ से बाहर निकली तो मैंने तुम्हें देखा। मैं तुम्हें उसी समय ये सब बताना चाहती थी, तो तुम्हारे पीछे गई थी। मैं तुम्हारे पीछे ऊपरी गलियारे में पहुँच गई थी, जहाँ मैंने एक दरवाजे के अंदर
पहले एडवर्ड और फिर तुम्हें जाते देखा और फिर मेरे देखते ही देखते वो दरवाजा बंद होकर किसी दीवार में बदल गया। (भाग 74-75)

चैतन्य समझ गया कि अनामिका उस समय की बात कर रही थी, जब वो एडवर्ड के पीछे उस खंज़र तक पहुँच गया था और तभी उसे कुछ खटका। उसने तेजी से उस कागज पर नज़र दौड़ाई।

खंज़र उतरेगा सीने में...
और ये ज़ख़्म सदा भरमाएगा।

"खंज़र! वो खंज़र! मैं तो उसे भूल ही गया था।" चैतन्य ने चिहुंक कर कहा।

"कौन सा खंज़र?" इस बार दिव्याक्षि ने सवाल किया।

जवाब में चैतन्य ने बहुत ही कम शब्दों में दिव्याक्षि को सारी बात बता दी और दिव्याक्षि ये सुनकर ज्यादा कुछ हैरान नहीं हुई। उन्होंने भी वही बातें दोहराई, जो सर विलियम ने कही थी।

"आपका मतलब है कि यदि एडवर्ड ये साधना कर रहा है, तो उसे इस खंज़र से ही रोका जा सकता है?" चैतन्य ने पूछा।

"हाँ! ये समझ लो कि वो खंज़र जिसके हाथ में होगा, उसी का ग़ुलाम होगा। वो उसे अपने तरीके से इस्तेमाल कर सकता है। तो अगर वो खंज़र एडवर्ड के काम का है, तो तुम सबके काम का भी है।"

दिव्याक्षि ने कहा।
"पर वो खंज़र बहुत कड़ी सुरक्षा के घेरे में है। जब मैं उसकी ओर बढ़ा तो उस कमरे की तपिश बहुत ही ज्यादा बढ़ गई थी और मैंने अपने पैर पीछे खींच लिए। मुझे नहीं लगता कि उस कमरे के अंदर जाकर कोई उस खंज़र को ला सकता है।" चैतन्य ने इंकार में सिर हिलाते हुए मायूस लहज़े में कहा।

"ला सकता है। जरूर ला सकता है। ये... अनामिका ला सकती है।" दिव्याक्षि ने अनामिका की ओर इशारा करते हुए कहा।

"मैं!" अनामिका चिहुंकी।

"हाँ! उस कमरे में आग भरी है और आग को कौन बुझा सकता है? जल! और वो जल तुम हो। मेरे ख्याल से तुम दोनों को ही जल्दी करना चाहिए। हमारे पास बस आज का ही दिन है। आज रात जो भी होगा, इतिहास होगा।" दिव्याक्षि ने कहा।

"और जिसे मिटा दिया जाएगा।" चैतन्य ने फुसफुसाकर कहा।

"कुछ कहा!" दिव्याक्षि ने पूछा।

"कुछ नहीं। बस ये कि उस खंज़र तक जाने का रास्ता जंगल में बनी एक गुफा से है। वो गुफा मेंशन और उस नर्क के द्वार के बीच कहीं है।" चैतन्य ने अनामिका को खंज़र की जाने का रास्ता बताते हुए कहा।

"पर उस गुफा को ढूंढूंगी कैसे?" अनामिका ने संशय भरे शब्दों में कहा।

"मैं बस इतना बता सकता हूँ कि वो गुफा बहुत सीलन भरी है और उसकी दीवारों से पानी रिस रहा था। शायद ये तुम्हारे काम आ सके।" चैतन्य ने
अगला सुराग देते हुए कहा।

"रिसती गुफा!" दिव्याक्षि के मुँह से निकला।

"आप जानती हैं... तब तो अच्छा है। मैं चलता हूँ। अब सबसे पहले हमें हेममाया का शरीर हासिल करना है। तुम उस खंज़र को अपने क़ब्ज़े में वो। उसके बाद उस माया और एडवर्ड की हर योजना को तोड़ना है।" अपनी बात खत्म कर चैतन्य तेजी से जाने के लिए मुड़ा।

"चैतन्य!" अनामिका ने एक बार फिर उसे आवाज लगाई। चैतन्य रूक गया, मगर मुड़ा नहीं। अनामिका तेजी से उसके पास आई और फिर उससे लिपट गई। उसके दिल की धड़कनों को अपने दिल की धड़कनों के पास पाकर चैतन्य को राहत सी महसूस हुई।

"ख्याल रखना अपना! मुझे फिक्र लगी रहेगी!" अनामिका ने कांपती हुई आवाज में कहा और चैतन्य ने बेसाख्ता ही अपनी बाहें अनामिका के गिर्द कसी थीं। ये वो हौसला था, जिसकी उसे सबसे ज्यादा जरूरत थी। जब भी उसे लगता था कि अनामिका उससे दूर जा रही है, वो खुद आगे आकर उन फासलों को मिटा देती और उसके प्यार का भरम टूटते-टूटते रह जाता। चैतन्य ने बहुत ही नर्मी से उसके बालों में हाथ फेरा और फिर उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में भरकर उसके माथे को चूम लिया।

अनामिका ने ऑखें बंद करके इस अहसास को अपने अंदर उतारा था।

"चलता हूँ। अपना ख्याल रखना!" चैतन्य ने कहा। अनामिका ने अपना सिर हिलाया। उसी समय उसका हाथ उसकी शर्ट के अंदर रखी किसी चीज से लगा।

"ये क्या है?" अनामिका ने पूछा।
"अरे हाँ! एक मिनट! ये गलती से मेरे पास रह गया।" चैतन्य ने उस चीज को बाहर निकालते हुए कहा।

"ये डायरी!" अनामिका ने चैतन्य के हाथ में मौजूद उस चीज को आश्चर्य से देखते हुए कहा और उसे लेकर उलट-पुलट कर देखने लगी।

"इसे संभालकर रखना। वापस करनी है।" चैतन्य ने कहा और फिर उसके सिर पर हाथ फेरकर तेजी से बाहर निकल गया। अनामिका कुछ देर उस दरवाजे को एकटक देखती रही और फिर उस डायरी को देखने लगी। उसने उसे खोला। पहला पन्ना पहले की तरह ही खाली था। अपना सिर हिलाते हुए उसने ऐसे ही अगला पन्ना पलट दिया और इस बार वो बुरी तरह से चौंकी थी। वहाँ परिधि का स्केच बना हुआ था। वही स्केच जिसे अनामिका ने हॉस्पिटल में उस डायरी में पहली बार देखा था। पर रात जब उसने ये डायरी देखी थी तब तो इसमें कुछ नहीं था... फिर ये स्केच कहाँ से आ गया और फिर उसे याद आया कि चैतन्य एक चित्रकार था और ये डायरी अभी उसी ने अनामिका को दी। फिर उसे ख्याल आया कि जब वो अल्फ़ी के पीछे गई थी, तब चैतन्य उस केबिन में माया के साथ था। अनामिका को ये भी याद आया कि चैतन्य उस माया से किस कदर घबराता था। शायद उससे ध्यान हटाने के लिए उसने ये स्केच बनाया होगा (भाग 95) अनामिका ने कौतूहल से अगला पन्ना खोला। वो खाली था। आगे के पन्ने भी खाली थे। वहाँ कुछ भी लिखा हुआ नहीं था।

"इसका मतलब कि डायरी में वो स्केच चैतन्य ने बनाया था। तो वो सब किसने लिखा होगा?"सोचते हुए अनामिका का ध्यान समय में वापस लौटा, जब माया ने उसे बताया था कि ये डायरी एक स्मृतिपटल है, जिसमें कोई भी अपना नाम लिखकर अपनी यादें सहेज सकता था (भाग 94) और भविष्य में इसमें परिधि का नाम लिखा मिला था। यानि कि वो सब परिधि ने ही लिखा होगा। सारा मामला समझ में आते ही वो दिव्याक्षि की ओर मुड़ी।
"कहाँ हैं ये रिसती गुफा?" अनामिका ने सवाल किया।

"यहाँ!" कहते हुए दीव्याक्षि ने एक पात्र उसकी ओर बढ़ाया।

अनामिका ने आगे बढ़कर उस पात्र को सवालिया नजरों से देखा और फिर अपने हाथ में लेकर खोल दिया। उसके अंदर पानी भरा हुआ था, जिससे काई के टुकड़े भी तैरते हुए साफ दिखाई दे रहे थे। दिव्याक्षि ने बताया कि आज से एक साल पहले उन्होंने दिव्यगोले में रिसती गुफा को देखा था। उस समय वो वहाँ गई थीं। उसी समय उन्होंने ये पानी वहाँ से उठाया था। मगर वो जगह पिशाचों के अधिकार में थी। पता नहीं कैसे वो एडवर्ड वहाँ आ पहुँचा। उस समय भी बहुत बवाल होने की वजह से माया के कहने पर डाकिनी ने दिव्याक्षि को नज़रबंद कर दिया था। उनके बाहर जाने और डाकिनी की आज्ञा के बिना किसी के भी दिव्याक्षि के पास जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया, जिसकी वजह से दिव्याक्षि चिड़चिड़ी सी होने लगी थी और इस वजह से कोई भी उनके पास जाने से खुद ही झिझकता था। उसके बाद ना जाने क्या हुआ कि... दिव्याक्षि के भविष्य कथन की ताकत कम होने लगी। जब हेममाया उनके पास पहुँची थी, तब ना जाने कैसे उन्हें भविष्य के कुछ अंश दिखाई दे गए थे। जिसमें हेममाया के ऊपर कल्पगॉव में खतरा और फिर समयद्वार और वायु रक्षक के आने के जिक्र को उन्होंने

सुना था।

"तो क्या इसीलिए आपने उस दिन हेममाया को अपने पास रोका नहीं था?" अनामिका ने दिव्याक्षि से पूछा।

"हाँ.... क्योंकि यहाँ से बाहर जाती तो बच भी जाती, मगर यहाँ तो उसका पकड़ा जाना निश्चित ही था। मेरी ताकतें चूक रही थीं... तो मैं उसकी सही तरीके से मदद नहीं कर सकती थी और... मैंने उस भविष्य कथन के सहारे भी उसे यहाँ से भेजा, जो नज़रबंद होने और अपनी ताकतें खोने से पहले मैंने देखा था। वो हेममाया का एक खुशनुमा और खुशहाल भविष्य था, जिसमें उसका पति और बच्चे भी थे। पर मुझे कहाँ पता था कि माया ने सबकुछ बदरंग कर दिया था। ना जाने उस मासूम को उसने क्यों मारा, जबकि सच में हेममाया के सामने नहीं आने पर माया को वो पद आसानी से मिल सकता था।" दिव्याक्षि ने हताशा भरी आवाज में कहा।

"आप उदास ना हों। उस माया ने अब तक जो किया... वो किया। अब वो कुछ नहीं कर पाएगी। हेममाया को अपना इंसाफ जरूर मिलेगा। अल्फ़ी अब अकेला नहीं। हम भी उसके साथ हैं।" अनामिका ने दिव्याक्षि का हाथ पकड़कर उम्मीद और भरोसे भरी आवाज में कहा।

"काश... तुम्हें यहाँ रोक सकती मैं। पर सबकी अपनी-अपनी जगहें होती हैं।" दिव्याक्षि ने अनामिका को गले लगाते हुए कहा। अनामिका ने भी भारी दिल से उनका प्यार समेटा। उसी समय दिव्याक्षि ने उसके कान में फुसफुसाकर कुछ कहा, जिससे अनामिका चौंक गई। उसने दिव्याक्षि को हैरानी से देखा।

"जाओ! जिम्मेदारी बहुत बड़ी है।" दिव्याक्षि ने अनामिका के हाथों को थपथपाकर कहा।

अनामिका ने अपना सिर हिलाया और फिर उस जलपात्र को अपने हाथों में ले लिया। वो आगे कुछ करती इससे पहले ही एक बहुत जरूरी बात उसे फिर से याद आ गई। उसने शिथिल पड़ी ऐना की ओर देखा और फिर पात्र को नीचे रखकर उसके पास गई।

"जाने से पहले आपसे कुछ कहना चाहती हूँ। आप... आप यहाँ से कहीं दूर चली जाइए। आज ही! मैं भविष्य से आई हूँ... तो मुझे पता है कि आज कुछ बड़ा अनिष्ट होने वाला है, जो शायद टलेगा भी नहीं। तो प्लीज़! आप यहाँ से चले जाएँ।" अनामिका ने ऐना का हाथ पकड़कर याचना भरे शब्दों में कहा।

"होने दो... जो होना है। अब जीने के लिए.... कोई बहाना... नहीं है मेरे पास। जिसकी यादों के सहारे जी रही थी.... जब वही नहीं रही... तो जान बचाने का क्या फायदा? एक अफसोस भरी जिंदगी जीकर क्या फायदा? अपनी बेटी को... एक बार अपने गले से लगाकर.... प्यार नहीं कर सकी मैं... उससे माफी नहीं मांग सकी मैं। इतने बड़े बोझ के साथ.... कैसे जिऊंगी?" ऐना ने एक बार फिर बिलखते हुए कहा।

"और अगर आपकी बेटी ये चाहे.... कि आप एक सुरक्षित जीवन जिएँ... तो!" अनामिका ने ऐना की ऑखों में झांकते हुए कहा। उसकी बात सुनकर ऐना आवाक् सी रह गई।

"म...मेरी... बेटी!" बमुश्किल ऐना के होठों से निकला।

"हाँ! बेटी! अगर दिव्याक्षि की बात मानिए... तो मेरे अंदर आपकी हेममाया की आत्मा है... तो आपकी बेटी ही हुई ना मैं! आपने तो खुद भी मुझसे कहा था कि मुझसे आपको अपनी बेटी का अहसास होता है।तो आपको उसी अहसास का वास्ता है! जाइए! कहीं दूर चले जाइए क्योंकि आपकी बेटी ये चाहती है.... मैं ये चाहती हूँ। बाकि... बात अगर माफी की है तो आपकी बेटी आपसे कभी नाराज़ ही नहीं थी, वरना झूठा ही सही... आपका खत मिलते ही तड़पकर यूं ना चली आती। इसलिए अपने मन से ये बोझ हटा लीजिए। और जहाँ तक प्यार की बात है... आपका प्यार तो हमेशा उसके साथ था। वो कभी नहीं चाहेगी कि आप पर कभी भी कोई मुसीबत आए। तो मेरी नहीं... उस बेटी हेममाया की बात मान लीजिए। जाइए! बिना कोई देर किए निकल जाइए यहाँ से।" अनामिका ने बहुत ही भावुक होते हुए कहा। वो लगभग रोने ही वाली थी।

और उसके जज़्बातों की गर्मी ऐना तक भी पहुँच ही गई। ऐना ने भरी हुई
ऑखों से अपने सामने खड़ी उस लड़की को देखा, जिससे उसे ना जाने कैसे प्यार हो गया था। वो प्यार जो उसने अपनी बेटी हेममाया के लिए संजोकर रखा था... उसका कुछ हिस्सा अंजाने में ही उसने अनामिका के नाम कर दिया था। बस तीन दिन.... इतने ही दिन तो साथ बिताए थे उन दोनों ने साथ। जबकि तीन दशक इस बसेरे में गुजारने के बाद भी उसके मन में ऐसा प्रेम किसी के लिए नहीं पनपा था। अनामिका की बातें सुनकर वो एक आह भरकर रह गई। उसने आगे बढ़कर उसका चेहरा अपनी हथेलियों में भरा और अपनी भरी हुई ऑखों से उसे देखने लगी।

"मेरी माया!" ऐना ने कांपती हुई आवाज में कहा और फिर एक भावनाओं का एक रेला उन दोनों को ही अपने साथ बहा ले गया। एक-दूसरे को अपनी बाहों में भरे वो अपने दिल से दूरियों का मेल धोते रहें। कुछ देर बाद अनामिका ने खुद को संभाला।

"आप जाइए यहाँ से! मैं जहाँ भी रहूंगी... खुश रहूंगी... ये सोचकर ही कि आप जहाँ भी हैं... सुरक्षित हैं।" अनामिका ने उनका हाथ पकड़ कर कहा। ऐना ने भी तेजी से अपना सिर हाँ में हिलाया। वो उससे अलग होकर जाने के लिए मुड़ी ही थी कि उन्हें कुछ याद आया। उन्होंने जाने से पहले अनामिका के लिए कुछ देने की बात कही। अनामिका के देर होने की बात कहने पर उन्होंने उससे रिसती गुफा तक छलद्वार बनाने के लिए कहा और तेजी से वहाँ से चली गई।

"और मैं?" परिधि ने सहमी हुई आवाज में पूछा।

"अगर थोड़ी सी भी ग़ैरत बची हुई है तो यहीं... दिव्याक्षि के पास रूको। इनकी हिफाजत की जिम्मेदारी तुम्हारी। और हाँ! इसमें अपना नाम लिखो और माया और हेममाया से जुड़ी जो भी जानकारी तुमने हमें दी है, सब इसमें सुरक्षित करो और हाँ... इसे बंद भी करना, जिससे कोई और इसे खोलकर देख या पढ़ ना सके।" अनामिका ने जहरबुझी आवाज में परिधि
से कहा। परिधि खुद में ही कहीं सिमटकर रह गई।

"मुझे ये सब नहीं आता।" परिधि ने सिर झुकाकर कहा, जिस पर अनामिका ने झुंझलाहट भरी नज़र उस पर डाली।

"मुझे आता है। तुम चिंता मत करो। इसने हम सबको जो भी बताया है, वो अभी इसकी यादों में ही घूम रही होंगी। मैं उन्हें इसमें सुरक्षित कर दूंगी।" दिव्याक्षि ने अनामिका की समस्या हल करते हुए कहा। अनामिका ने राहत भरी नज़र उन पर डाली।

"मुझे ये परिधि अभी भी समझ में नहीं आ रही है। कोई इतना लाचार भला कैसे हो सकता है?" अनामिका ने एक हिकारत भरी नज़र परिधि पर डालते हुए दिव्याक्षि से कहा।

"पता नहीं! ये तो हम भी कभी नहीं समझ पाए। इसका तत्व पृथ्वी है। पर वो तत्व पूरी तरह से सोया हुआ है।" दिव्याक्षि ने एक गहरी साँस के साथ कहा।

"पर माया और परिधि तो जुड़वां बहनें हैं ना! तो इनके तत्व अलग क्यों हैं। माया अग्नि और ये पृथ्वी!" अनामिका ने अपनी एक और हैरानी दिखाई।

"हेममाया का जन्म कर्क राशि में हुआ था। इसलिए वो जल रक्षक थी। उसके जन्म के बाद जब ऐना वापस आई तो कुछ समय बाद इन दोनों बहनों का जन्म हुआ था। माया का जन्म सिंह राशि में हुआ था, मगर परिधि गर्भ में कहीं अटक गई थी। बड़ी ही मुश्किल से उसे बाहर निकाला गया, तब वो सॉसे नहीं ले रही थी। बड़ी मुश्किल से उसकी सॉसे वापस लौटी। उसके जन्म के समय तक राशि कन्या में बदल चुकी थी। ऐना ने ही दोनों का नाम रखा था। माया नाम तो ऐना और उनके पति ने अपनी बेटी के लिए सोचकर रखा था, पर वो समय से पहले कर्क राशि में पैदा हुई। इसलिए जब डाकिनी की बेटी का नाम रखने का समय आया तो ऐना के मुँह से माया निकल गया। हेममाया का नाम भी पहले हेमलता रखा जाने वाला था, पर अपने पति की याद में ऐना ने लता को हटाकर अपनी बेटी का नाम हेममाया रख दिया।" दिव्याक्षि ने माया और हेममाया के नाम का इतिहास खोलते हुए बताया, जिसने ही सब कुछ उलझाकर रखे दिया था। सब कुछ सुनने के बाद अनामिका को अपना सिर घूमता हुआ महसूस हुआ। मतलब कि सब कुछ कितना उलझा हुआ था, जिसमें सब तो उलझ गए। मगर माया ने अपना रास्ता खोज ही लिया था।

बहरहाल अनामिका ने दिव्याक्षि से इजाजत ली और फिर तेजी से उस जलपात्र के पानी से रिसती गुफा तक छलद्वार बनाने लगी। उसका बनाया छलद्वार अभी सक्रिय हुआ ही था कि तभी ऐना बेतहाशा दौड़ती हुई उस कमरे में वापस आई। सभी का ध्यान उसकी ओर गया था। उसकी सॉसे बुरी तरह से उखड़ रही थीं।

"आप...!" अनामिका ने कहना चाहा पर ऐना ने उसे टोक दिया।

"श्श्श्श! कुछ... मत... कहो!" और फिर उन्हीं बिखरी हुई सॉसों के साथ वो अनामिका के पास आई। अनामिका की ऑखें सवाल करती हुईं उन्हें ही देख रही थीं। ऐना ने अपनी जेब से एक चेन निकाली और फिर उसे अनामिका के गले में डाल दिया। वो एक मध्यम आकार का सफेद मोती था, जो उस चेन में लटक रहा था। अनामिका ने उस मोती को छुआ तो एक सर्द अहसास उसके अंदर तक उतर गया।

"ये हेममाया के पिता ने अपनी बेटी के लिए रखा था, जब भी वो अपनी शक्तियों के प्रयोग के योग्य हो जाती। हेममाया को देने का समय तो मिला नहीं, पर तुम्हें देने के लिए मैं देरी नहीं करना चाहती। ये तुम्हें हर मुश्किल से बचाएगी। एक पिता का शीतल प्रेम और आशीर्वाद की सुरक्षा है ये।
उन्हें लगा था कि हमारी संतान हमारी तरह अग्नि धारक होगी, इसलिए ये उसकी शक्तियों को नियंत्रित करने के लिए दिया था। क्या पता था कि एक दिन शक्तिनियंत्रक की जगह ये शक्ति बढ़ाने वाला बन जाएगा। इसे खुद से कभी अलग मत करना। मुझे भी तसल्ली रहेगी कि इसे इसके हकदार को सौंप दिया मैंने।" अनामिका का हाथ पकड़े हुए ऐना ने भरे हुए गले से कहा।

अनामिका ने तेजी से अपना सिर हिलाया। सरिता के बाद ऐना के स्नेह ने उसे अभिभूत कर दिया था।

उसने अपने सामने खड़ी उस औरत को ग़ौर से देखा। वो उसकी तस्वीर अपनी ऑखों में उतार लेना चाहती थी, जिससे आज के बाद वो कभी भी नहीं मिलने वाली थी। ऐना ने बड़ी मुश्किल से खुद को संभाला और फिर वहाँ से तेजी से चली गई। अनामिका बस उसे जाते हुए देखते रह गई।

संघर्ष विभिन्न पड़ावों से गुजरता हुआ आखिरकार अपने आखिरी पड़ाव पर आ चुका था। अनामिका समझ गई थी कि वो और चैतन्य अतीत में कुछ भी बदल नहीं सकते थे। वो दोनों तो यहाँ इसीलिए आए थे क्योंकि वो दोनों भी अतीत में हुई इस घटना का एक हिस्सा थे और शायद वो सेतु भी जो अतीत और भविष्य को जोड़ती थी और अभी धुंध से ढंकी हुई थी। अब तो उन दोनों को ही इस अनकहे इतिहास से भविष्य की समस्या का हल ढूंढना था और उस 'सेतु' का निर्माण करना था, जो उन्हें अतीत से भविष्य में ले जा सकती थी।

अल्फ़ी किसी पागल गुस्सैल सांड की तरह फॉरेस्ट केबिन की ओर बढ़ रहा था। अभी-अभी वो दिव्याक्षि के कमरे से जो भी सुनकर और समझ कर आ रहा था, उसका एक ही बार था कि माया ने अपने मतलब के लिए उसके खुशहाल परिवार को बिखेरकर रख दिया था। आज उस लड़की से उसे हर दर्द का हिसाब चाहिए था और आज वो सर विलियम की भी नहीं सुनने वाला था। उसने सोच लिया था कि अगर सर विलियम हेममाया के शरीर को वापस पाने में सहायता करेंगे तो ठीक... वरना वो खुद ही उसे हासिल कर लेगा।

कहते हैं कि क्रोध जीवन का सबसे बड़ा शत्रु होता है। ये अक्सर सभी की सोचने समझने की शक्ति को कुंद कर देता है और इससे वशीभूत होकर ऐसे निर्णय ले लिए जाते हैं, जो समस्या को और भी बढ़ा देते हैं। अल्फ़ी भी इस समय उसी विध्वंसक क्रोध की अग्नि में जल रहा था। मगर इसमें उसका भला क्या कसूर था? जिसकी ऑखों के सामने उसकी कुल जमा-पूंजी नेस्त-ओ-नाबूद हो जाए... वो कहाँ तक संयम बरते? सच तो ये था कि अब वो जीवन और मृत्यु के सवाल से भी ऊपर उठ चुका था। अब उसे बस बदला चाहिए था। चाहे ये बदला किसी के खून से नहाकर प्राप्त हो।

आज की रात उस अल्फ़ी की मौत हो चुकी थी, जिसका दिल नर्म हुआ करता था। जिसके रगों के खून में प्यार और मोहब्बत की रवानगी थी। जो खुद से पहले दूसरों की खुशियों और तकलीफ़ों की परवाह किया करता था। जो पिशाच होकर भी एक इंसान का प्रतिरूप था। अब जो जिंदा था... वो एक विशुद्ध पिशाच था। वो पिशाच... जो उसके अंदर अंगड़ाई ले चुका था और अब बाहर आने के लिए बस एक मौके की तलाश में था।

मगर इतना होकर भी वो अभी एडवर्ड और माया जैसे शातिरों की तुलना में बहुत कमजोर था। पहले भी ये बात निकली थी कि ताकतवर वो होता है... जो सही समय और सही जगह पर ताकत का इस्तेमाल करना जानता है और अल्फ़ी अभी इस कला में पारंगत नहीं था। एडवर्ड और माया की हर योजना के सफल होने का सबसे अहम पहलू उनका धैर्य था। उन्होंने कभी भी... कहीं भी कोई अधीरता दिखाने की कोशिश नहीं की। परिस्थितियाँ उनके विपरीत होने के बाद भी उन्होंने कोई जल्दबाजी नहीं की। दुश्मन जब ताकतवर के साथ बुद्धि-बल और छल में माहिर हो... तो दुष्कर हो जाता है और यही कठिनाई अल्फ़ी-अनामिका-चैतन्य के सामने आने वाली थी क्योंकि इस तिकड़ी में से दो का धैर्य अब

चूका.... तब चूका की स्थिति में था। इसलिए सारी उम्मीदें भी अब तीसरे यानि कि अनामिका पर आकर टिक गई थी। बस वही एक थी.. जिसने अपना धीरज नहीं खोया था और जिसका मस्तिष्क सबसे ज्यादा सुचारू हालत में था।

फिलहाल अल्फ़ी किसी तूफान की तरह उस फॉरेस्ट केबिन के पास पहुँचा था। घने पेड़ों के बीच स्थित उस केबिन पर नज़र पड़ते ही अल्फ़ी के कदम कुछ पलों को थमे थे। गहरी साँसें भरते हुए वो शायद अपने अंदर गुस्से का सैलाब इकट्ठा कर रहा था, जिसमें वो उस माया को बहा देना चाहता था। अपनी हिली हुई मानसिक स्थिति में अल्फ़ी ने माया की मौत सुनिश्चित कर ली थी और उसके बाद सर विलियम की मदद... या फिर उनकी मदद के बग़ैर वो हेममाया के शरीर को हासिल करने की योजना पर अमल करने वाला था।

मगर दिव्याक्षि के खोह से इस केबिन तक का सफ़र आसानी से तय करने वाले अल्फ़ी को जरा सा भी अंदेशा नहीं था कि वो दुश्मन के जाल में खुद फँसने चला आया था। मगर अल्फ़ी को अब इससे भी कोई फर्क नहीं
पड़ने वाला था क्योंकि अगर अब जंग का यलगार हो चुका था, तो जंग आमने-सामने ही होनी थी, चाहे ये आमना-सामना किसी भी तरीके का हो।

कुछ पल गँवाने के बाद वो तेजी से केबिन की ओर बढ़ा और फिर अपने पैर के एक तेज प्रहार के साथ उसने केबिन का वो दरवाजा उखाड़ फेंका। एक तेज नज़र उस टूटे हुए दरवाजे पर डालने के बाद वो अंदर आया। नज़रें उस ओर गईं, जहाँ माया को बंधक के रूप में वो सब छोड़ गए थे। वो वहीं उसी हालत में थी। उसे अपनी आग उगलती हुई ऑखों से घूरता हुआ वो उसकी ओर बढ़ा, इस बात से बेखबर कि सर विलियम वहाँ मौजूद नहीं थे। उसे अपनी ओर बढ़ता हुआ देखकर माया की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई और वो खुद में सिमटने की कोशिश करने लगी। अपनी आँखों के सामने उस दरवाजे का हाल देखने के बाद उसने अपने नाजुक से शरीर पर एक ख़ौफ भरी नजर दौड़ाई थी। वो समझ गई थी कि अल्फ़ी को सब पता चल चुका था। वो अपनी सहमी हुई ऑखों से उसे ही देख रही थी। हालांकि ये डर भी एक धोखा ही था, पर दर्द तो सबको होता है।

उसके पास पहुँचकर अल्फ़ी ने बेरहमी से उसके मुँह में बंधा कपड़ा खींचा और फिर हर लिहाज को आजीवन कालापानी की सजा पर भेजते हुए माया को गर्दन से पकड़ कर पूरी ताकत से दीवार पर पटक दिया। इस तेज हमले से माया के पूरे अस्थि-पंजर हिल कर रह गए। उसके गले में अल्फ़ी की मजबूत उंगलियाँ बुरी तरह से कस गईं थीं। एक पल के लिए माया को अपनी आत्मा शरीर से अलग होती साफ महसूस हुई। साँस लेने की जद्दोजहद में उसका मुँह खुल गया और ऑखें बाहर निकलने की हद तक फट गईं। अल्फ़ी उससे किसी तरह की बातचीत के इरादे नहीं रखता था। वो बस उसे उसकी सजा देने आया था। उसके दिल का दर्द उसकी ऑखों में खून बनकर उतर आया था। अभी भी कसे हुए जबड़ों के साथ उसने अपने गुस्से को काबू में ही रखा था, वरना माया के शरीर के टुकड़े करने में उसे ज्यादा देर नहीं लगती। मगर.... मासूमियत अभी भी उसमें
कुछ ना कुछ बची हुई थी। वो अभी भी चालाकी में माया और एडवर्ड की तरह माहिर नहीं था।

वो अपनी हेममाया को इंसाफ दिलाने की दहलीज पर ही था कि कोई नुकीली सी चीज तेजी से आकर उसकी पीठ में धँसी थी। उसने अपने दूसरे हाथ की मदद से उस नुकीली चीज को निकालना चाहा, पर उसका वो हाथ वहाँ तक नहीं पहुँचा। पहले तो एक तेज चुभन के अलावा अल्फ़ी ने कुछ भी महसूस नहीं किया। फिर अचानक ही एक ठंडी सी लहर उसके सारे शरीर में दौड़ गई और माया को जकड़े उसके हाथ बुरी तरह से कॉपने लगे। हैरानी भरी ऑखों के साथ उसने अपने दूसरे हाथ को ऊपर उठाकर देखा, जो बुरी तरह से कॉप रहा था। माया के गले पर कसी उसकी उंगलियॉ भी कमजोर पड़ गईं और

एक ही झटके में माया उसकी गिरफ्त से छूट कर नीचे जमीन पर पड़ी गहरी साँसे ले रही थी।

अल्फ़ी को अपनी आँखों में तेज जलन महसूस होने लगी जिसकी वजह से वो अपनी पलकों को तेजी से झपकाने लगा। धीरे-धीरे उसकी आँखों के सामने सारी चीजें बुरी तरह से घूमने लगी। उसने काँपते हुए दोनों हाथों से अपने सिर को पकड़ लिया, जो अब बुरी तरह से घूमने लगा था। वो पीछे मुड़ा तो धुंधलाई हुई आँखों में कुछ चेहरे दिखाई दिए, जो उसे पहचान में नहीं आ रहे थे। उसने तेजी से अपने सिर को झटक कर सामने के दृश्य को साफ करने की कोशिश की, मगर कोई फायदा नहीं हुआ। बल्कि अब उसे अपना शरीर बहुत ही हल्का महसूस होने लगा था। वो बुरी तरह से लड़खड़ाकर घुटनों के बल नीचे गिर गया। उसने अभी भी अपना सिर पकड़ रखा था। उसके सामने जो भी खड़े थे वो तेजी से उसकी ओर आगे बढ़े। अल्फ़ी ने अपना काँपता हुआ एक हाथ सामने की ओर उठाकर उनके आगे आने का कमजोर सा प्रतिरोध किया। आगे आए लोगों में से एक माया की ओर बढ़ गया और उसे खड़े होने में मदद करते हुए बाहर की ओर ले गया। अल्फ़ी ने अपनी धुंधलाई हुई आँखों से जब माया को दूर जाते हुए देखा तो उसका दिल अपनी नाकामी पर तड़प उठा। उसके गले
से कुछ दबी हुई गुर्राहटें निकली, जो उस समय पूरी तरह से बेअसर थीं। चार लोगों ने आगे बढ़कर अल्फ़ी को लगभग दबोच लिया और उसे उसी हालत में घसीटते हुए उस केबिन के बाहर ले गए।

अल्फ़ी के पैरों में बिल्कुल भी जान नहीं थी, जिससे वो चल नहीं पा रहा था। दो लोगों ने उसकी बांहों को पकड़कर उसे सामने से उठा रखा था और उसी हालत में उसे खींचते हुए आगे ले गए। उसके जूते जमीन से रगड़ खाकर आगे घिसट रहे थे और उसका सिर नीचे की ओर झुका हुआ था। कुछ दूर इसी तरह घसीटने के बाद उन लोगों ने उसे बेदर्दी से जमीन पर मुँह के बल पटक दिया। अल्फ़ी बुरी तरह से लाचार हो गया था। उसका शरीर उसका बिल्कुल भी साथ नहीं दे रहा था। मगर किसी तरह अपनी आँखों को खोलने की कोशिश में उसने अपनी चेतना को लुप्त होने नहीं दिया था।

वो बेजान सा जमीन पर पड़ा था। उसका सिर दाईं दिशा में मुड़ा हुआ था, जहाँ अपनी खुलती-बंद होती आँखों से उसने किसी को अपनी ओर आते देखा, जो कुछ ही देर में उसके चेहरे के बिल्कुल सामने आकर रूक गया। उसने अपने दाहिने जूते को अल्फ़ी के चेहरे पर रख दिया, जिसका तला कांटेदार था। गुस्से की एक तेज लहर अल्फ़ी के अंदर उठी थी, जिससे उसकी शिथिल पड़ी उंगलियों में कुछ हरकतें हुई। उस आदमी ने अपना पैर पीछे लिया और फिर उसने अपने पैर के जोर से ही अल्फ़ी को सीधा किया। एक ही पल में अलसी की आँखों के सामने से जमीन हट गई और उसे ऊपर सुबह की रोशनी में नहाया हुआ खुला आसमान दिखाई देने लगा। वो अपनी अधमुंदी आँखों से ऊपर ही देख रहा था। तभी एक चेहरा उसकी आँखों और आसमान के बीच आ गया, जिसे पहचानने में अल्फ़ी ने कोई गलती नहीं की। वो एडवर्ड था।

एडवर्ड ने अल्फ़ी के चेहरे को बहुत ही घृणा से देखा और एक बार फिर अपने जूते को उसके चेहरे पर रखकर उसे बेदर्दी से मसलने लगा, जिससे
उसके जूते के नीचे बने कांटों से अल्फ़ी का पूरा बायां गाल लहूलुहान हो गया था। उसके बहते खून से जब एडवर्ड को थोड़ा सुकून मिला तो वो घूमकर उस तरफ चला गया जिस तरफ अल्फ़ी का चेहरा मुड़ा हुआ था। एक नौकर ने तेजी से कुर्सी लाकर वहाँ रखी, जिस पर वो पूरी अकड़ के साथ बैठ गया। उसके हाथ में एक नुकीले सिरे वाली छड़ी थी, जिससे वो अल्फी के चेहरे पर बने ज़ख़्म को कुरेदने लगा। अल्फ़ी के गले से घुटी-घुटी सी आवाज़ें निकली। थोड़ी और राहत पाने के बाद एडवर्ड ने एक गहरी साँस भरी और उसके ऊपर झुक गया।

"अल्फ़ी! डैड कहाँ हैं?" एक हैरान करने वाला सवाल एडवर्ड की जुबान से निकलकर अल्फ़ी के कानों से टकराया, जिसके जवाब में अल्फ़ी के मुँह से बस कुछ कराहें ही निकल सकीं।

"देखो अल्फ़ी! मुझे पता है कि तुम जानते हो कि वो कहाँ हैं।? तुम्हारी बेहतरी इसी में है कि तुम सब सच बता दो।" एडवर्ड की चेतावनी भरी आवाज आई।

आधे होश की हालत में अल्फ़ी को एडवर्ड की कही हुई कोई भी बात समझ नहीं आ रही थी। वो बस उसे सुनने की कोशिश कर रहा था और इसी कोशिश में कुछ और आवाजें उसके कानों में पड़ीं। ये कोई औरत थी, जो चिल्ला रही थी।

"पूछिए इससे कि इसके साथी कहाँ हैं? क्या करने वाले थे ये लोग माया के साथ?" उस औरत की भड़की हुई सी आवाज चारों ओर गूंज गई थी।

"शांत डाकिनी शांत! मिल गईं है आपकी बेटी। फिलहाल मेरे डैड गायब हैं और हम सब जान चुके हैं कि इसी ने उनके साथ कुछ किया है। हमारी नाक के नीचे ये और इसके साथी इतना खतरनाक खेल खेलते रहे। वो तो शुक्र है कि आपकी बेटी बच गई। मगर हमारे डैड अभी तक नहीं मिले
हैं। प्रेयर करें कि... वो भी जीवित हों। ये मामला छोटा नहीं है। फैसले के समय सभी को बुलाया जाएगा। फिलहाल आपकी बेटी को आराम की जरूरत है। अभी आप जाइए!" एडवर्ड ने बहुत ही नपे-तुले शब्दों में कहा।

डाकिनी के साथ दो और बड़ी उम्र की डायनें थीं। माया की चमचियॉ रोमा और मार्गरेट भी साथ थीं। उन्होंने माया को संभाल रखा था। अब वो एक बार फिर थोड़ी बेहतर हालत में दिखाई दे रही थी। वो रोमा का सहारा लेकर खड़ी हुई और फिर धीरे से चलकर अल्फ़ी के पास आई। थोड़ी देर पहले जिसके ख़ौफ से वो मरने से पहले ही मरने को तैयार थी... चार लोगों के बीच उस अल्फ़ी को लाचार देखकर उसके अंदर की हिम्मत जाग गई और उसने भी एक घृणा भरी नज़र अल्फ़ी पर डालकर पूरी ताकत से उसे एक लात मारी। मगर उसकी इस हरकत से एडवर्ड बौखला गया।

"बिहेव योरसेल्फ! जाओ यहॉ से। अपनी ताकत वहॉ दिखाओ जहॉ दिखा सकती हो।" एडवर्ड अपने दॉत पीसते हुए माया से बोला। उसे अल्फ़ी से घोर नफरत क्यों ना रही हो, पर एक पिशाच को किसी डायन के पैरों में वो कभी भी बर्दाश्त नहीं कर सकता था। माया ने एक जहर भरी नज़र एडवर्ड पर डाली और फिर अल्फ़ी पर थूकते हुए वो वहॉ से चलती बनी।

"उठाओ इसे और क़ैद खाने में डाल दो। अब इसका फैसला अहेरी सभा ही करेगी।" एडवर्ड ने अपनी आवाज में भरपूर नफरत उड़ेलते हुए कहा और वो उससे थोड़ी दूर जाकर खड़ा हो गया।

उसका आदेश सुनते ही चार गार्ड तुरंत आगे आए और सबसे पहले उन्होंने अल्फ़ी के दोनों हाथों को पीछे की ओर बांध दिया। उसके बाद पहले की तरह ही उसे आधा उठाकर घसीटते हुए ले गए। एडवर्ड सपाट चेहरे और भावहीन ऑखों के साथ सब देखता रहा।
"डैड! आपने पिशाचों के अस्तित्व पर जो गंदी मिट्टी चढ़ा दी थी, उसे झाड़ने का समय आ गया है। सबको उनकी औकात पर घसीटकर लाऊंगा मैं।" कहते हुए एडवर्ड ने मुड़कर एक सर्द निगाह उस ओर डाली, जिस ओर से माया और डाकिनी गए थे। एक कुटिल सी मुस्कान उसके होठों पर खेली और होंठों के किनारे की ओर छिपे उसके पैने दॉत चमक उठे।

कुछ ही देर में वो सारा इलाका बिल्कुल शांत हो गया। मगर किसी की सॉसों की आवाज और धड़कनों का शोर उस शांति को भंग करना चाह रहा था। वो चैतन्य था, जो ना तो अल्फ़ी के साथ और ना ही

जल्दी से उसके पीछे आ सका। जब वो वहाँ पहुँचा तो अल्फ़ी को उन सबके बीच ऐसी हालत में पाया। हमेशा की तरह गुस्से का एक सैलाब उसे बहाने को ही था कि अनामिका की बात ने उसके पैर रोक दिए।

"ख्याल रखना अपना! मुझे फिक्र लगी रहेगी!"

और ये याद आते ही वो रूक गया। ऐसी हालत में वो जोश में होश नहीं खो सकता था। उसने छिपकर एडवर्ड की सारी बातें सुनी और उसका यही मतलब निकलकर सामने आया कि सर विलियम गायब थे और इसका झूठा इल्ज़ाम अल्फ़ी के सिर पर आया था। उसने डाकिनी के सवाल पर भी ग़ौर किया..... जिसमें वो अल्फ़ी के साथियों के बारे में पूछ रही थी। इसका मतलब कि वो सब भी उनके निशाने पर थे और पहली बार चैतन्य को अपनी लेट-लतीफी का अफसोस नहीं हुआ। अल्फ़ी तकलीफ़ में था, ये जरूर परेशानी की बात थी। मगर उसके भी अल्फ़ी के साथ होने पर हो सकता था कि वो भी अल्फ़ी की तरह ही उनके चंगुल में होता। कम से कम वो आजाद था और अल्फ़ी को छुड़ाने की हरसंभव कोशिश कर
सकता था। इन सबके बीच उसे ये भी याद रखना था कि वो भी वांटेड की लिस्ट में आ चुका था। यानि कि अब उसकी भी सरगर्मी से तलाश की जाने वाली थी या फिर... हो रही होगी। उसे इस समय अनामिका से थोड़ा सा धैर्य उधार लेने की जरूरत थी। उसका ज़हन एकदम से अनामिका की ओर गया। उसने सोचा कि संपर्क करके वो उसे यहाँ हुई सारी बात बता दे... मगर अगले ही पल वो रूक गया। इस समय वो एक महत्वपूर्ण कार्य के लिए गई हुई थी। ये खबर उसका ध्यान भटका सकती थी, इसलिए अनामिका को कुछ भी बताने का ख्याल उसने फिलहाल के लिए टाल दिया। पर इतना तो वो समझ गया था कि माया और एडवर्ड दोनों ही एक-दूसरे को पसंद नहीं करते थे, मगर उनको किसी मजबूरी ने जोड़ कर रखा था और वो मजबूरी क्या थी... अब ये पता करना भी जरूरी था। अब वो वापस झील की ओर जा रहा था। उसका अगला काम मेंशन की ओर जाना था, जहाँ बहुत कुछ पता चल सकता था और वहाँ जाने का रास्ता झील से होकर जाता था। फिलहाल अल्फ़ी के साथ वो सब भी माया और एडवर्ड के एक और छल का शिकार बन चुके थे।

अनामिका ने परिधि को दिव्याक्षि के पास छोड़ा और खुद छलद्वार की ओर बढ़ गई। चूंकि अनामिका जानती थी कि परिधि भविष्य में जाने वाली है, इसलिए परिधि की उसे ज्यादा फिक्र नहीं थी और उसका खुद आगे जाना जरूरी था। उसने सिर झुकाकर बैठी हुई परिधि की ओर देखा।

"परिधि!" उसने आवाज लगाई।

"हाँ!" परिधि ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा।

"प्लीज़! फिर से धोखा मत देना। आज जो भी हालात बिगड़े हुए हैं... दूसरों की धूर्तता और लालच से ज्यादा तुम्हारी कायरता की वजह से बिगड़े हैं। आगे तुम्हारी वजह से कुछ भी और बिगड़ा.... तो तुम्हें अल्फ़ी के हाथ.... मैं खुद सौंप दूंगी। याद रखना।" अनामिका ने अपनी आवाज में चेतावनी घोलते हुए परिधि से सख़्त आवाज में कहा।
जाहिर सी बात है कि ये बात अनामिका ने परिधि को डराने के लिए ही कही थी, जिसका असर उसके चेहरे पर दिखाई दे रहा था। एक बार फिर से उसने अपना सिर झुका लिया। अनामिका ने एक नज़र दिव्याक्षि और परिधि पर डाली और फिर एक गहरी साँस लेकर छलद्वार के अंदर चली गई।

अनामिका के छलद्वार के अंदर जाते ही दिव्याक्षि ने परिधि को आवाज देकर अपने पास बुलाया। डरी-सहमी सी परिधि ने दिव्याक्षि की ओर देखा। वो अपने हाथों से टटोल-टटोलकर कुछ सामान मेज में रख रही थी। उनके दृष्टिहीन होने का ख्याल आते ही परिधि के मन में भागने का ख्याल आया। उसे माया से बहुत डर लगता था। किसी तरह उसने अपने जख्म और थकान से चूर शरीर को उठाया और फिर बिना किसी आवाज के दरवाजे की ओर बढ़ गई। अनामिका की बातें उसे जाने से रोक रही थीं... मगर माया का डर उस पर कुछ ज्यादा ही हावी था... जिसने उसे रूकने नहीं दिया। दरवाजे के पास पहुँचकर उसने दहलीज को लांघने के लिए अपना पैर उठाया ही था कि अनामिका की धमकी एक बार फिर से उसके कानों में उतर गई।

"आगे तुम्हारी वजह से कुछ भी और बिगड़ा.... तो तुम्हें अल्फ़ी के हाथ.... मैं खुद सौंप दूंगी।"

और अल्फ़ी का ख्याल आते ही वो एक बार फिर से सदमे में आ गई। थोड़ी ही देर पहले उस पर किया गया अल्फ़ी का हमला उसे सिर से पैर तक सिहरा गया। उसने तेजी से अपने उठे हुए पैर वापस खींच लिए। उसे जूनून में डूबी हुई अल्फ़ी की अंगारें उगलती हुई ऑखें याद आ गईं और उसका पूरा शरीर डर से थर-थर काँपने लगा था। उसे समझ में नहीं आ
रहा था कि वो क्या करे? उसके लिए तो आगे कुँआ और पीछे खाई वाली हालत हो गई थी। हर हालत में मौत अपना मुँह उसके लिए खोले बैठी थी। वो ये सोचकर ही काँप उठी कि अगर उस समय अनामिका बीच में नहीं आई होती.... तो शायद इस समय वो हर्गिज भी जिंदा नहीं होती और.... इसी ख्याल के साथ उसके ज़हन में एक नाम रोशन हुआ।

"अनामिका!"

आज जब सभी उसे बचाने के लिए अल्फ़ी को रोकने में पूरी तरह से नाकाम हो गए थे.... उस समय अनामिका ही एक अकेली थी जिसने उसे संभाला था। वो उसकी बात सुनता था। एक अनामिका ही थी... जो उसे अल्फ़ी और उसके गुस्से से बचा सकती थी और रही बात माया की तो.... बीती रात ही अनामिका ने उस माया की भी अच्छी खासी दुर्गति बनाई थी। शायद वो उसे माया से भी बचा सकती थी। तो क्या उसे अनामिका की बात माननी चाहिए? उसका साथ देना चाहिए? अगर वो माया के तरफ जाती है.... तो वो अल्फ़ी उसे फाड़कर रख देगा और इस बार अनामिका भी उसे नहीं बचाएगी। जबकि माया खुद उसके साथ ईमानदार है... इस बात का भी उसे यकीन नहीं था। माया अपने मतलब के लिए किसी को भी मार सकती थी, जबकि अनामिका का साथ देने पर वो उसे सबसे बचा सकती थी। सब कुछ आईने की तरह साफ था, मगर परिधि की उलझे रहने की प्रवृत्ति उस आईने पर धूल की तरह जमी

थी।

"परिधि! कहाँ हो? यहाँ आओ!" दिव्याक्षि ने उसे आवाज लगाई।

"हँ!" परिधि ने चौंककर हुंकारी भरी।

"आओ जल्दी! समय नहीं है हमारे पास।" दिव्याक्षि ने उसे घुड़का था।
उनकी घुड़की सुनकर परिधि होश में आई। एक गहरी साँस के साथ उसने उस आईने पर जमी धूल को साफ कर दिया और दिव्याक्षि की ओर बढ़ गई। उसने अनामिका को चुन लिया था।

दिव्याक्षि के पास बैठते हुए उसने सामने रखी सारी चीजों को कौतूहल से देखा। दिव्याक्षि अभी भी ना जाने उनमें क्या ढूंढ रही थी।

"परिधि जल्दी आओ!" एक बार फिर दिव्याक्षि ने ऊंची आवाज में कहा।

"यहीं तो हूँ मैं!" परिधि ने भी झुंझलाकर कहा।

"यहीं हो!" दिव्याक्षि बुरी तरह से चौंकी।

"हाँ! आपने बुलाया... तभी से।" परिधि ने कहा।

"अजीब है! मैं तुम्हें महसूस क्यों नहीं कर पाती? ऐसा लगता है कि जैसे... तुम्हारे अंदर कुछ है ही नहीं। खाली हो... खोखली हो।" दिव्याक्षि ने उलझी हुई आवाज में कहा।

"मुझे क्या मालूम!" परिधि ने बुझी हुई आवाज में कहा। दिव्याक्षि की बातों से एक बार फिर उसने खुद को अपमानित महसूस किया था।

"तुम दोनों ही बहनों को.... तुम्हारी माँ ने हमेशा मुझसे दूर ही रखा। जब तुम दोनों पैदा हुई थीं... तभी कुछ क्षणों के लिए मैंने तुम्हें अपने हाथों में लिया था क्योंकि तुम लगभग मरी हुई पैदा हुई थी। बर्फ की तरह बिल्कुल ठंडी! तुम में जीवन का कोई लक्षण ही नहीं था और फिर ना जाने क्या हुआ? मुझे एक तेज झटका सा लगा और तुम मेरे हाथों से गिर पड़ी। वो तो तुम्हारी माँ ने संभाल लिया और उसके बाद आश्चर्यजनक रूप से तुम्हारी साँसे लौट आई थीं। वो दिन था और आज का दिन! तुम मेरे
लिए हमेशा वैसी ही रही। तुम्हारी बहन माया को तो मैंने कभी स्पर्श भी नहीं किया। मगर उस समय भी उसके आसपास अनिष्टकारी ऊर्जा को महसूस किया था मैंने। ये बात मैंने तुम्हारी माँ को बताई तो वो मुझ पर ही भड़क गई। शायद यही वजह है कि तुम्हारी माँ ने तुम दोनों बहनों को मेरे आसपास भी फटकने नहीं दिया। बस तुम्हारी बहन के कारनामे सुनती रही और पता चलता रहा कि वो कितनी बद से बद्तर होती जा रही थी।" कुछ काले और लाल धागों को सुलझाते हुए दिव्याक्षि ने पुरानी कहानी दोहराई।

जवाब में परिधि बस चुपचाप उनकी बातें सुनती रही। वास्तव में उसके पास कुछ होता ही नहीं था कुछ कहने के लिए। ना जाने बचपन से ही उसे ये कैसी आदत लगी थी कि जो पूछा जाए... बस उसी का जवाब दो। होश संभालते ही माया ने उसे अपने साँचें में पूरी तरह से ढाल लिया था। एक तरह से ये कहा जा सकता है कि वो माया के हाथों की कठपुतली थी। बचपन से ही ना तो उसकी अपनी कोई

इच्छा रही... ना कोई राय। वो वही कहती या करती, जो माया कहती थी। बचपन में तो इसे दो बहनों के बीच का प्यार समझा गया, जो बिना किसी शक देखने वाले को बहुत ही प्यारा लगता था। मगर उस समय भी तारीफें माया के ही हिस्से में आती थीं कि कैसे वो अपनी शक्तिहीन बहन का हमेशा ख्याल रखती है। पर बड़े होने के साथ ही सबको समझ में आया कि माया ने परिधि को अपनी परछाई बना रखा था, जिसका वजूद माया के बिना था ही नहीं। उसे हमेशा यही लगता था कि माया से अलग वो खत्म हो जाएगी। वो कभी भी माया से अलग एक अलग शख्सियत बन ही नहीं सकी। उसके अंतर्मन की पीड़ा कोई भी नहीं समझ सकता था.... क्योंकि वो बता ही नहीं सकती थी कि वो कैसा महसूस करती है? जीवन में शायद पहली बार हेममाया के लिए उसने कुछ अलग महसूस किया था और शायद उसी अहसास ने उसे माया से थोड़ा सा कुछ अलग बना दिया। हेममाया के साथ रहकर उसके अंदर कुछ जिंदा हुआ था और उसी क़तरा भर जिंदगी ने भीड़ में भी अनामिका को सबसे अलग महसूस कर लिया था। हेममाया से जुड़े हुए अहसास की वजह से ही वो अनामिका के पास चली गई क्योंकि आखिर अनामिका ही
तो हेममाया थी और फिर माया की कठपुतली बनी वो आज इस मुकाम पर खड़ी थी, जहॉ वो बिल्कुल तन्हा थी।

"वो इसके पहले पन्ने में अपना नाम लिखो।" कहते हुए दिव्याक्षि ने अनामिका की दी हुई डायरी परिधि की ओर बढ़ाई। साथ में एक पेंसिल भी थी।

परिधि ने वो पेंसिल पकड़ी और फिर उस डायरी की ओर देखकर बोली, "क्यों?"

"बस लिखो!" इस बार दिव्याक्षि ने थोड़ी बेरूखी से कहा।

और फिर उनका रूखा लहजा पहचानकर परिधि ने चुपचाप वो डायरी अपने पास सरकाई। उसे याद आया कि अनामिका ने दिव्याक्षि को इस डायरी में परिधि की यादें कैद करने के लिए कहा था। उसने हौले से उसे खोला। सामने चमकता हुआ सफेद पन्ना था। परिधि ने उस पर अपनी उंगलियॉ फिराई और फिर पेंसिल से उस पन्ने पर अपना नाम उकेर दिया।

"परिधि!"

उसने कुछ देर उस नाम को घूरा और फिर से पेंसिल उठाकर उसमें कुछ और शब्द जोड़ दिए।

"मेरे जीवन की परिधि"
वास्तव में ये शब्द द्योतक थे इस बात के कि उसके जीवन के दायरे (परिधि/ घेरे) में जो कुछ भी हुआ वो इस डायरी में है और फिर उसने वो डायरी दिव्याक्षि की ओर बढ़ा दी।

दिव्याक्षि ने उस डायरी को अपने सामने खींचा। फिर उन्होंने उस पन्ने पर एक पन्ना (रत्न), जो पृथ्वी तत्व का रत्न है... उसे रखा और फिर उसके ऊपर अपना हाथ रखकर कुछ बुदबुदाने लगी। परिधि हमेशा की तरह चुपचाप सब सुनती-देखती रही, जो उसकी आदत थी।

"अपना हाथ दो!" दिव्याक्षि ने परिधि की ओर अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा। उनकी बात सुनकर

परिधि ने अपना हाथ बढ़ाकर उनके हाथ में रख दिया और... अचानक ही ये हुआ। दिव्याक्षि ने अपना हाथ तेजी से पीछे की ओर खींचा था।

"क्या हुआ?" परिधि ने पूछा।

"ये कैसे हो सकता है?" दिव्याक्षि मन ही मन बुदबुदाई। मगर फिर उन्होंने अपनी सोच को पीछे धकेलते हुए पास पड़े लाल और काले धागे उठाए और उन्हें परिधि के हाथ पर बांध दिया। उन्होंने परिधि को पन्ने के ऊपर रखे उस रत्न पर हाथ रखने और ऑखें बंद करने के लिए कहा। परिधि के हाथ रखने के बाद उन्होंने पास रखा एक पात्र उठाया। उसमें मिट्टी भरी हुई थी। उन्होंने उस मिट्टी से अपनी मुट्ठी भरी और फिर उसे परिधि के हाथ के ऊपर ले गई।

"थोड़ी तकलीफ़ हो सकती है, पर हाथ हटाना नहीं। समझी।" दिव्याक्षि ने तेज लहजे में परिधि को समझाया। एक गहरी साँस लेकर परिधि ने भी हमेशा की तरह सिर हिला दिया।

इसके बाद दिव्याक्षि अपनी मुट्ठी में बंद मिट्टी को धीरे-धीरे परिधि के
उस हाथ पर गिराने लगी। हर बढ़ते समय के साथ दिव्याक्षि के माथे पर सिलवटें बढ़ती गईं। ऐसा लग रहा था जैसे कि वो किसी प्रबल मानसिक प्रक्रिया से गुजर रही थीं। दूसरी ओर परिधि के चेहरे पर भी तनाव बढ़ता जा रहा था, जिसे सहन करना शायद उसके लिए बहुत मुश्किल हो रहा था। मगर वो फिर भी डटी रही। वो एक बार फिर से सबको नाराज नहीं करना चाहती थी। दरअसल दिव्याक्षि ने एक ख़ास प्रक्रिया के द्वारा परिधि के मस्तिष्क में आई उन सभी बातों को खींचकर उस डायरी में कैद कर रही थी, जिसका जिक्र थोड़ी देर पहले ही परिधि ने सबसे किया था। परिधि पृथ्वी तत्व वाली थी, इसलिए इस प्रक्रिया में दिव्याक्षि ने मिट्टी की मदद ली। परिधि ने अपने बर्दाश्त की आखिरी हद तक सब सहा, मगर हद पार होते ही वो बिदक गई। एक तेज चीख के साथ उसने हाथ हटा लिया। प्रक्रिया के टूटते ही दिव्याक्षि ने अपनी ऑखें खोली। परिधि की साँसे बुरी तरह से उखड़ी हुई थीं। उसका दिल भी धौंकनी की तरह धड़क रहा था। माथे पर पसीने के साथ उसकी नाक के बाएँ हिस्से से खून निकल आया था। ऑखों में भी तकलीफ़ें अपनी लाल डोरियाँ छोड़ गई थीं। वो बुरी तरह से हॉफ रही थी।

"कोई बात नहीं! बस आखिरी कुछ यादें रह गई।" दिव्याक्षि ने कहा।

"नहीं! मैं... और.... सहन.... नहीं कर सकती।" परिधि ने बमुश्किल कहा। दिव्याक्षि को भी उस पर रहम आ गया। थोड़ी और कोशिश से तो शायद वो मर ही जाती।

"ठीक है! अब इसे बंद करना भी पड़ेगा। इस पर ताला तुम लगाओ। तुम्हारा नाम... तुम्हारी यादें हैं इसमें।" दिव्याक्षि ने कहा।

"वो कैसे?" परिधि ने साँसों को संभालते हुए पूछा।

"कुछ लिखो इसे बंद करने के लिए और क्या? कोई आदेश!" दिव्याक्षि ने
कहा।

थोड़ी उलझन के साथ परिधि ने एक बार फिर से उस डायरी को अपने पास खींचा और उसमें पड़ी मिट्टी को हाथ से हटाया। उसने धीरे से अगला पन्ना खोला और उस पर नज़र पड़ते ही वो चौंक गई। वहाँ उसकी तस्वीर थी। उसने बहुत ही ग़ौर से उस तस्वीर को देखा। वो उसी की थी, पर उसमें कुछ तो

अलग सा था। क्या? और इस क्या की तलाश में उसकी ऑखें उस तस्वीर की ऑखों में ठहर गईं। वो ऑखें उसकी ऑखों की तरह सर्द और भावहीन नहीं थीं। उन ऑखों में जिंदगी भरी हुई थी। एक चमक सी थी, जो उसने कभी भी अपनी ऑखों में नहीं देखी। यकीनन जब चैतन्य ने वो तस्वीर उस पन्ने में उकेरी, तब उसके ज़हन में भविष्य में उनके साथ रहने वाली परिधि थी, जो उनके साथ सच में जीना सीख गई थी। जो हँसती थी... मुस्कुराती थी। मगर इस समय वो इन ऑखों का रहस्य नहीं सुलझा सकती थी। वो उसकी समझ से पूरी तरह परे था। उसने एक आह के साथ उस तस्वीर को देखा और बनाने वाले की दिल ही दिल में तारीफ की। हालांकि अगला ख्याल उसे यही आया कि ये यादों को सहेजने की प्रक्रिया में अपने आप ही बन गया होगा। उसने पेंसिल उठाई और उस सफहे(पन्ने) पर रखा। कुछ सोचा और फिर लिख दिया।

"रहने दो कुछ किस्सों को सफहों के दरमियान! खुल गए जो पन्ने... तो फिर तबाही आएगी!"

इतना लिखकर उसने वो डायरी बंद कर दी। आखिरकार यादों की वो डायरी तैयार हो ही गई, जिसने भविष्य में कई दिनों तक सब को उलझा कर रखा था। आज जब अनामिका और चैतन्य अतीत के इस हिस्से को खुद जी रहे थे... तो भविष्य में बाकी सब इसी डायरी से परिधि की यादों की मदद से अतीत से रूबरू हो रहे थे।
अभी उन दोनों ने ये काम खत्म किया ही था और वो अनामिका के इंतजार में थे कि तभी बाहरी दरवाजे पर हुई आहट ने दोनों को ही चौंकाया। परिधि का चेहरा एक बार फिर से डर की आग में राख हो गया था। वहीं दिव्याक्षि के माथे पर एक बार फिर से बल पड़े थे। एक जाना-पहचाना सा सर्द अहसास उसे छूकर गया था और ये अहसास जरा सा भी अच्छा नहीं था। उनकी छठी इंद्री ने खतरे के आसपास होने का इशारा किया और कुछ ही देर में वो ख़तरा उन दोनों के सामने खड़ा था। माया जिंदगी में पहली बार दिव्याक्षि के सामने उसके कमरे में खड़ी थी और उसके इस कमरे की दहलीज लांघ कर अंदर आते ही दिव्याक्षि को सब समझ में आ गया कि उसे जो बुरे से अहसास हो रहे थे.... वो क्या थे? एक पुराना परिचय फिर से उजागर होने वाला था। एक अनचाहे परिचित से फिर मुलाकात होने वाली थी।

"कैसी हो..... आभा?" माया ने अजीब से सर्द लहज़े में दिव्याक्षि की ओर देखते हुए कहा।

"ओह! तो ये तुम हो! मुझे तो पहले ही समझ जाना चाहिए था कि इतनी नीच आत्मा दूसरी कौन हो सकती है? छाया!" दिव्याक्षि ने जहरबुझी आवाज में कहा।

"ओह! ओह! ओह! तारीफ के लिए शुक्रिया! आखिर एक बहन ही.... बहन को समझ सकती है।" माया ने अपने तंजीले तीर छोड़ते हुए कहा।

"खबरदार! मैं तुम्हारी बहन नहीं हूँ।" दिव्याक्षि बहुत ही कड़वाहट के साथ चीखी।

"शांत मेरी बहन! शांत! तुम्हारी आदत गई नहीं मुझ पर चिल्लाने की और चिल्लाने से ये सच बदल नहीं जाएगा कि तुम मेरी प्यारी सी बड़ी बहन
हो।" माया ने बहुत ही आरामदायक लहज़े में कहा, जिससे दिव्याक्षि चिढ़कर रह गई।

"तुम.... तुमने डाकिनी के गर्भ पर कब्ज़ा किया था, इसलिए उस समय उनके गर्भधारण में इतनी मुश्किलें आईं थीं। तुम्हारी वजह से ही परिधि ऐसी है। तुमने उसे गर्भ में ही खोखला कर दिया। उसे गर्भ

में ही अपना खिलौना बना लिया।" दिव्याक्षि ने सारे बुरे अनुमान लगाते हुए कॉपती हुई आवाज में कहा। उनकी बात सुनकर वहॉ मौजूद परिधि बुरी तरह से चौंकी थी।

"यू गॉट इट माई डियर सिस्टर!" माया ने चारों ओर चहलकदमी करते हुए बहुत ही बेतकल्लुफी से कहा।

"तो क्या... डाकिनी तुम्हारे बारे में जानती है। तुम्हारी वजह से ही उसने अपनी बेटियों को मुझसे दूर रखा क्योंकि मैं तुम्हें तुरंत पहचान जाती। ये डाकिनी ने सही नहीं किया। बिल्कुल सही नहीं किया।" दिव्याक्षि बुरी तरह से बिफरते हुए बोली।

"क्यों सही नहीं किया? हँ! इस दुनिया में सबको ताकत चाहिए और एक बार जिसे इसकी आदत लग जाती है ना! उससे छुड़ाए नहीं छुटती। डाकिनी को भी अपनी वो ताकत बनाए रखनी थी और ये तभी मुमकिन था, जब उसके बाद उसकी बेटी डाकिनी बनती और ये भरोसा मैंने उसे दिया था। समझ लो कि.... एक समझौता हुआ था हमारे बीच। फिर इसमें गलत कैसा?" माया ने अपने कंधे उचकाते हुए बहुत ही लापरवाही से कहा, जैसे कि ऐसा होना कोई बड़ी बात नहीं है।

"तुम्हें चाहिए क्या? क्यों वापस आई हो? दिव्याक्षि ने मुद्दे पर आते हुए सवाल किया।
"बदला! बदला चाहिए था मुझे। जो धोखा मेरे साथ हुआ था... उसका बदला चाहिए था मुझे।" माया जोर से चिल्लाते हुए बोली।

"पर तुमने अपना बदला तांत्रिक माणिक को मारकर ले लिया था। फिर कैसा बदला?" दिव्याक्षि ने पूछा।

"उसके धोखे ने मेरा पूरा जीवन और मकसद जला डाला। मैंने भी उसके वंश को जलाकर राख कर देने की कसम खाई थी। उसकी वो बेटी मेरे पहले प्रहार से बच तो गई, पर उस समय उसे मेरी छाया ने छू लिया। बेचारी के जीवन की हर खुशी पर पनौती लगा दी मैंने। उसके हाथों में खुशियॉ देकर हर खुशी नोचकर वापस ले ली मैंने और जब इस खेल से मेरा जी भर गया, तो... मार दिया उसे। मेरा... बदला...पूरा!" माया ने पूरी मक्कारी के साथ अपनी एक-एक काली करतूत सुनाई और भयानक अट्टहास के साथ हँसने लगी।

इस एक खुलासे ने परिधि और दिव्याक्षि के होश उड़ा दिए थे। उनके पैरों के नीचे ना तो जमीन रही और ना ही सिर पर आसमान। वो एकटक अपने सामने खड़ी उस बला को देख रहे थे, जो अपने बदले की आग में ना जाने क्या-क्या स्वाहा कर गुजरी थी।

"तुमसे ज्यादा बेरहम मैंने कोई और नहीं देखा। तुमने नीचता की हर पराकाष्ठा पार कर दी। तुम हमेशा दूसरों के जीवन से खेलती रही... वो सब सही था और जब किसी ने वही सब तुम्हारे साथ किया तो आग लग गई तुम्हें। ऐसी आग जिसने क्या-क्या जलाया है... तुम भी नहीं जानती!" दिव्याक्षि, माया को धिक्कारते हुए बोली।

"दूसरों के साथ जो किया... वो किया। पर सच में... मुझे वो तांत्रिक अच्छा लगने लगा था। पहली बार मैंने किसी पर भरोसा किया और उसी ने भरोसा तोड़ा। इसकी कीमत तो चुकानी ही थी... सो चुकाई।" माया ने
आग उगलते हुए कहा।

"अपनी उम्र का तो ख्याल करती। तुमसे 25 साल छोटा था वो। कम उम्र दिखने से कोई कम उम्र नहीं हो जाता।" दिव्याक्षि ने लानत भरी आवाज में कहा।

"तो मैं भी उसके पास नहीं गई थी। वो आया था और फिर उसी ने धोखा किया। धोखा किया... तो भुगता। अभी तो और भी बहुत कुछ है... जो तुम सबको देखना है.... भुगतना है। मेरा मकसद... जो उस धोखे की भेंट चढ़ गया... वो अब पूरा होगा और पूरा करेगी... हेममाया! सही है ना!" माया का एक और खुलासा एक बार फिर से उनके होश उड़ा ले गया।

आखिर किस मकसद की बात कर रही थी माया और हेममाया उसकी मदद कैसे करने वाली थी? वो तो मर चुकी थी। बहरहाल अभी जो सामने आया था, वो भी कम विस्फोटक नहीं था और दिव्याक्षि ये भी जान चुकी थी कि इस विस्फोटक से उसका नुकसान होना भी तय था। ऐसा नुकसान जो माया उर्फ छाया के लिए कोई मायने नहीं रखता था।

"कैसा मकसद? किस मकसद की बात कर रही हो तुम?" दिव्याक्षि ने उतावलेपन से पूछा था।

"मैं अपने दाएँ हाथ की खबर बाएँ हाथ को ना दूं, फिर तुम तो...! ख़ैर! मुझे परिधि चाहिए। उसे ही लेने आई हूँ। चलो परिधि!" दिव्याक्षि की बात को परे करते हुए माया ने परिधि की ओर देखते हुए कहा।

और ये सुनते ही परिधि की जैसे जान ही सूख गई। उसने थरथराती पलकों के साथ दिव्याक्षि की ओर देखा। अगले ही पल उसे याद आया कि दिव्याक्षि ना तो देख सकती हैं और ना ही उसे महसूस कर सकती है। वो एक बार फिर से लाचार महसूस करने लगी थी।

"उसकी तरफ क्या देख रही हो? सुनाई नहीं दिया तुम्हें? आओ!" माया पूरी ताकत से चिल्लाई। अपनी बात को नज़रअंदाज़ होते देख उसका पारा और भी चढ़ा था।

"माया! वो... मैं..." परिधि ने कुछ कहने की कोशिश की, पर हमेशा की तरह कह नहीं सकती।

"क्या मैं-मैं? हँ! कहीं तुम...." धमकी भरी आवाज के साथ वो परिधि की ओर बढ़ी।

उसे अपनी ओर आते देखकर परिधि की ऑखें सदमे से फैल गईं और गला बुरी तरह से सूखकर तकलीफ़ देने लगा, जहॉ से अब कोई भी शब्द बाहर निकलने को तैयार नहीं था।
"देख रही हूँ कि.... जब से तुम पहले उस हेममाया.. और फिर उस अनामिका की संगत में आई हो... ज़बान बहकने लगी है तुम्हारी। क्या तुम..... बग़ावत करने की सोच रही हो? लगता है कि तुम्हारे अंदर से सजा का डर खत्म हो गया है।" कहते हुए माया ने परिधि की ओर अपना एक हाथ बढ़ाया, जिससे परिधि बुरी तरह से सहम गई।

"वो कहीं नहीं जाएगी।" दिव्याक्षि के तेज और तीखे स्वर ने परिधि की ओर बढ़ते माया के कदम रोक दिए। उसने अपने चेहरे को हल्का सा झटका देकर दिव्याक्षि की ओर देखा।

"और.... कौन रोकेगा मुझे? तुम! मैं वो नहीं... जिसे आसानी से धोखा दे दिया था तुमने उस तांत्रिक के साथ मिलकर। सजा तो तुम्हें भी मिलनी है। पर मैंने वो बाद के लिए छोड़ दिया था। लेकिन ऐसा लग रहा है कि तुम खुद सजा भुगतने को आतुर हो। तो ठीक है! यही सही। बहन की इतनी इच्छा तो मैं पूरी कर ही सकती हूँ।" माया ने बहुत ही कठोर और सर्द लहजे में कहा।

उसकी बात सुनकर दिव्याक्षि अपनी जगह से जरा सा हिली। वो जान चुकी थी कि माया उर्फ छाया के इरादे क्या थे। दिव्याक्षि को ये भी पता था कि पिछले कुछ सालों से उनकी ताकत को कम से कमतर करने की पूरी कोशिशें की गई हैं और उन्हीं कोशिशों की वजह से वो हेममाया की सही तरह से सुरक्षा और मदद नहीं कर सकी थी। दिव्याक्षि को कभी भी ये शक नहीं हुआ कि माया के खेल में डाकिनी की भी भूमिका हो सकती थी। जब डाकिनी और छाया के बीच वो समझौता हुआ, तब दिव्याक्षि का ध्यान पूरी तरह से ऐना की ओर था, जो कुछ समय पहले ही छाया की आत्मा के प्रहार से बाल-बाल बची थी, जिसका उन दोनों ने ही फायदा उठाया। सच बात तो यही है कि छाया उर्फ माया ने हर कदम पूरी तरह से फूंक-फूंक कर रखा था। यहाँ तक कि माया ने कभी भी अपनी शक्तियों
को किसी के सामने जाहिर नहीं किया। उसने हर तरह से खुद को सात तालों में बंद कर रखा था और यही आज उसकी ताकत बन गया था। किसी को भी पता नहीं था कि वो क्या कर सकती थी?

"आभा... यानि कि चमक और छाया... यानि कि अंधेरा। अब जैसा नाम रखा मॉ-बाप ने... तो बनना भी तो वैसा ही था। लो बन गई मैं भी..... काली शक्तियों की स्वामिनी।" कहते हुए माया ने अपने सीधे हाथ की तर्जनी उंगली दिव्याक्षि की ओर उठाई। उस ऊंगली से एक बहुत ही बारीक लाल रोशनी की किरण निकली, जो तेजी से दिव्याक्षि की ओर बढ़ी।

"संभलिए दिव्याक्षि!" परिधि चिल्लाई और इसी के साथ ही दिव्याक्षि ने अपनी जगह तेजी से बदली। माया ने एक नाराज़गी भरी नज़र परिधि पर डाली और फिर अपनी बाईं हथेली झटके से परिधि के सामने कर दी। इससे एक धुंआ का गोला तेजी से परिधि की ओर बढ़ा और फिर उसे उस धुएँ ने चारों ओर से घेर लिया। वो अब माया की कैदी बन चुकी थी। मगर इतने ही समय में माया का ध्यान बँटने से दिव्याक्षि ने तेजी से खुद को आक्रमण करने के लिए तैयार कर लिया। जैसे ही माया का ध्यान दिव्याक्षि की ओर गया... दिव्याक्षि ने अपने दोनों हाथों से आग का एक गोला माया की ओर फेंका।

मगर माया ने जो किया... उसने दिव्याक्षि को परेशान कर दिया। वो देख नहीं सकती थीं, पर ये जान गई कि उनके प्रहार का माया पर कोई भी असर नहीं पड़ा था। माया ने वो आग का गोला अपने अंदर समाहित कर लिया। अब दिव्याक्षि के सामने और भी बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई थी। पिछली बार जब उनका मुकाबला छाया से हुआ था, तब वो जल तत्व की स्वामिनी थी। उस समय तांत्रिक माणिक, ऐना और आभा(दिव्याक्षि) तीनों ने अपनी अग्नि की शक्ति से उसे हराया था। मगर इस समय वो उसी की समकक्ष थी... या ये कहें कि उससे भी बेहतर।

दिव्याक्षि को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर हो क्या रहा था। उनकी हर इंद्रीय कमजोर हो चुकी थी या फिर योजना के अनुसार
कर दी गई थी। वो असहाय सी हो चुकी थीं। मगर उन्हें मौत का कोई भी डर नहीं था। वो तो खुद को इसलिए बचाना चाहती थी कि अनामिका तक माया के असर मकसद की जानकारी पहुँचा सके। उसे रोकना बहुत ज्यादा जरूरी था। और उनके दिमाग में एक आखिरी ख्याल आया। अपने कमरे का कोना-

कोना उन्होंने अपने दिमाग में बिठा रखा था इसलिए बिना कोई गलती किए वो तेजी से अपनी मेज की ओर भागीं। माया को लगा कि वो बचने के लिए भाग रही हैं। एक कुटिल मुस्कान उसके होठों पर आई।

दिव्याक्षि मेज तक गई और फिर उसके ऊपर गिरने का नाटक किया, जिससे माया को ये लगे कि वो कोई हादसा था और उसी समय माया की ऑख बचाकर उन्होंने मेज से एक सफेद मोती उठा लिया। उस मोती को उन्होंने अपनी मुट्ठी में बांधा और फिर अपनी ऑखें इस तरह बंद कर लीं, जैसे कि गिरने से उन्हें बहुत ही तकलीफ़ हुई हो और फिर अपनी उस मुट्ठी को, जिसमें वो मोती बंद था... अपने चेहरे के पास ले गई और उस मोती को मुँह के अंदर अपनी जीभ पर रख लिया। माया इन सबका लुत्फ उठा ही रही थी कि इसी बीच दिव्याक्षि ने अपने मन में वो सब दोहराया, जो वो अनामिका को बताना चाहती थी। उनके मस्तिष्क से वो सारी बातें उनकी जीभ पर रखी मोती में संग्रहित होती चली गईं।
"बस! इतना ही था। चलो! अब मेरी बारी।" कहते हुए माया ने अपने कपड़ों के बीच से एक सफेद क्रिस्टल से बना खंज़र निकाला। उस खंज़र को पकड़े हुए वो अपनी उसी फरेबी मुस्कान के साथ उन्हें बौखलाते हुए देख रही थी और यहीं उससे गलती हो गई। अक्सर अत्यधिक आत्मविश्वास के कारण इस तरह की गलतियॉ हो ही जाती हैं। पहली बार माया से भी हुई कि उसने दिव्याक्षि को वो करने की इजाज़त दे दी थी... जो उसके लिए बिल्कुल भी अच्छा नहीं था।

"अब संभालो मेरा वार!" कहकर माया ने वो खंज़र पूरी ताकत से दिव्याक्षि की ओर फेंका, जो सीधा जाकर उनकी पसलियों में घुस गया। एक तेज चीख दिव्याक्षि के हलक में आकर रूक गई। वो अपना मुँह नहीं खोल सकती थीं। दर्द की इंतेहा के साथ जब दिव्याक्षि ने उस खंज़र पर हाथ रखा, तो एक ठंडी सी लहर उनके अंदर बिखरती चली गई, जो उनके अंदर के अग्नि तत्व को धीरे-धीरे अपनी ठंडक में समेटने लगी। वो उस खंज़र को नहीं निकाल सकती थीं।

"इस खंज़र में तो जल तत्व की शक्तियॉ हैं। ये इसके पास कहाँ से आई?" हर पल खत्म होती अपनी ताकत के साथ दिव्याक्षि ने मन में ही हैरानी जताई और फिर जो पहला ख्याल उनके दिमाग में आया, वो बहुत ही चौंकाने वाला था। वो खंज़र तेजी से उनकी ताकत को खत्म कर रहा था और उस ताकत के खत्म होने से पहले उन्हें अनामिका के लिए संदेश सुरक्षित करना था। उन्होंने बचने के लिए प्रतिरोध करना छोड़ दिया क्योंकि कुछ और अब उनकी जान से भी ज्यादा जरूरी हो गया था। वो सारी जानकारियॉ जल्दी-जल्दी उस मोती में उतारती चली गई। जल्द ही उस खंज़र ने दिव्याक्षि के अंदर के अग्नि तत्व को पूरी तरह से ठंडा
कर दिया। इसके साथ ही दिव्याक्षि की बची-खुची ताकत हमेशा के लिए समाप्त हो गई। अब वो बस एक साधारण सा शरीर मात्र रह गई थीं।

दिव्याक्षि के शिथिल पड़ते शरीर को देखकर माया हौले-हौले चलकर उनके पास आई और फिर वो खंज़र एक झटके से उनके शरीर से निकाल दिया। उस खंज़र के बाहर निकलते ही उस जगह बने छेद से खून की जगह दिव्याक्षि के शरीर का सारा पानी तेजी से बाहर आने लगा। पानी के शरीर से बाहर आने की वजह से दिव्याक्षि का शरीर उसी रफ्तार से सूखकर सिकुड़ने लगा। कुछ ही देर में ये सूखापन इतना बढ़ गया कि दिव्याक्षि का शरीर सूखी लकड़ी की तरह हो गया। अगर उस शरीर में कुछ जिंदा बचा था, तो वो थी उनकी दो ऑखें और उनका धीमे-धीमे धड़कता हुआ दिल।

माया अपने हाथ में उस खंज़र को पकड़े हुए दिव्याक्षि के पूरी तरह सूख चुके शरीर के पास आई और उन्हें बनावटी अफसोस के साथ देखने लगी।

"च्च्च्च्! तुमने सोचा होगा... माया अग्नि का वार करेगी। पर नहीं! माया ने तो जल का वार कर दिया। अब भला इससे कैसे बचती तुम? तो मेरी प्यारी बहन! आखिरकार आज तुम्हें मौत मुबारक हो!" कहते हुए माया ने आगे बढ़कर दिव्याक्षि का एक पैर पकड़ा और फिर किसी सूखी लकड़ी की तरह उसे तोड़कर दिव्याक्षि के शरीर से अलग कर दिया। शरीर का पानी जरूर सूखा था, मगर धमनियों में दौड़ने वाला खून अभी भी पूरी रफ्तार से दौड़ रहा था। पैर के टूटने से खून का रेला सा वहँ बस गया और उस जगह को लाल रंग से नहला गया। दिव्याक्षि की ऑखों में बेतहाशा दर्द उतर आया था, जिसे वो और किसी भी तरह से जाहिर नहीं कर सकती थी। उधर माया पर बदले का जूनून सवार हो चुका था। उसने एक-एक करके दिव्याक्षि के शरीर के सारे अंग तोड़ दिए। सारी जमीन खून से नहा चुकी थी। दिव्याक्षि के हर एक अंग को तोड़ते हुए वो भयानक अट्टहास कर रही थी। उनके हर दर्द को उनकी ऑखों में देखकर उसे बहुत ही सूकून मिल रहा था। वो अपनी निर्दयता के शिखर पर खड़ी थी, जहाँ रहम नाम की कोई चीज नहीं होती। आखिर में वो उनके चेहरे पर झुकी और फिर उनकी ऑखों में देखते हुए एक साधारण खंजर अपने हाथ में ले लिया। उसने उस खंज़र को दिव्याक्षि के दिल के ऊपर रखा और उस जगह को उस खंज़र से खुरचने लगी। दिव्याक्षि को अब कोई दर्द महसूस होना बंद हो गया था। वो अब ऑखों से भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रही थी। आखिरकार खुरचते हुए माया, दिव्याक्षि के दिल तक पहुँच गई। उस सूखे मिट्टी जैसे शरीर के बीजच वो धड़कता हुआ दिल बहुत ही अजीब लग रहा था। माया ने उसे बहुत ही अजीब नज़रों से देखा और फिर क्रूरता की हद से आगे बढ़कर उस दिल को अपने लंबे नाखूनों में फँसाते हुए खींच कर निकाल लिया। एक बार फिर से खून की तेज धार सब कुछ भिगो गई। एक बार के लिए लगा कि दिव्याक्षि का बचा-खुचा शरीर हल्का सा कॉपा हो और फिर दिव्याक्षि की ऑखों की जिंदगी भी सूख गई। सब खत्म हो गया था।

दिव्याक्षि के खत्म होते ही माया ने एक भयानक अट्टहास के साथ उनके दिल को अपने सिर के ऊपर उठाया और फिर उससे गिरते खून से खुद को भिगो दिया। वो इस समय मौत और क्रूरता का दूसरा रूप लग रही थी। उसने दिव्याक्षि से भी अपना बदला ले लिया था। दिव्याक्षि खत्म हो चुकी थी।

दिमाग से इस फितूर के उतरते ही माया ने दिव्याक्षि के दिल को हवा में उछाला और फिर अपनी ऊंगली से अग्नि किरण निकालकर उसे हवा में ही एक पल में ख़ाक कर दिया। वो तेजी से उस धुएँ के बादल की ओर गई, जिसमें परिधि कैद थी। उसने हाथ बढ़ाकर झटके से परिधि को बाहर निकाला और उसे कोई प्रतिक्रिया देने का मौका दिए बिना ही उसे अपने साथ घसीटते हुए बाहर निकल गई।

उसका ये वार बहुत ही तीव्र था, जो अनामिका और चैतन्य दोनों को ही हिलाकर रख देने वाला था। मगर अपनी जीत के नशे में ये बात उसके
वहमोगुमान में भी नहीं आ सकती थी कि उसके हर एक वार को सहकर... इतने भयानक तरीके से अपनी जान देकर भी दिव्याक्षि ने उस पर जो वार करने का प्रबंध कर दिया था, वो उसके हर मंसूबों को छलनी-छलनी कर सकता था... बशर्ते अनामिका उस संदेश रूपी हथियार को पहचान सके, जो दिव्याक्षि उसके लिए छोड़ गई थी।

सही और ग़लत का ये युद्ध अपनी पहली बलि ले चुका था।

छलद्वार से होते हुए अनामिका जंगल में स्थित उस संदिग्ध गुफा के अंदर निकली। उस गुफा की दीवारों से पानी रिस रहा था और वो चारों ओर काई और सीलन से अटी पड़ी थी। उसने चारों ओर देखा। गुफा के खुले द्वार से अंदर आती हवाएँ सीलन भरी पथरीली दीवारों से टकराकर अजीब सी आवाजें पैदा कर रही थीं। अनामिका ने एक नजर उस गुफा के खुले द्वार की ओर डाली। बाहर जंगल का एक हिस्सा

साफ-साफ दिखाई दे रहा था। अनामिका ने अपना निचला होंठ दाँतों में दबाया और कुछ सोचों के साथ वो उलझन का शिकार हो गई।

"चैतन्य ने बताया था कि इसी गुफा से जाना है, पर कहाँ से? समय हाथ में नहीं है और अब इस दरवाजे को खोजने में कहीं वो कीमती समय नष्ट ना हो जाए!" उसने चारों ओर देखते हुए सोचा। गुफा की दीवारों में उसे कोई भी दरवाजा कहीं नज़र नहीं आ रहा था।

"हे भगवान! अब क्या करूं? एक काम करती हूँ! चैतन्य से ही पूछती हूँ। अभी वो अल्फ़ी के पीछे ही होगा।" अनामिका ने मन में एक निर्णय लेते हुए खुद से ही कहा।

और ये विचार आते ही उसने तुरंत अपनी आँखें बंद कर ध्यान एकाग्र
करते हुए चैतन्य के मस्तिष्क के दरवाजे पर दस्तक दी।

"चैतन्य!" उसने पुकारा।

थोड़ी देर रूककर दूसरी ओर से जवाब आया। वो तेजी से भागने की वजह से बुरी तरह हाँफ रहा था। उसकी उखड़ी हुई साँसों की आवाज ने अनामिका को एक बार के लिए डरा ही दिया।

"चैतन्य! क्या हुआ?" अनामिका ने फिक्र से पूछा।

"कुछ नहीं! अल्फ़ी बहुत आगे निकल गया है। तो मैं दौड़ कर उसके पीछे जा रहा हूँ। वो फॉरेस्ट केबिन की ओर ही गया होगा। तुम बताओ! क्या हुआ? तुम ठीक तो हो?" अपनी बात खत्म करते-करते चैतन्य को अनामिका की चिंता हो आई।

"हाँ! ठीक हूँ और... गुफा तक भी पहुँच गई हूँ। पर मुझे कोई दरवाजा दिखाई नहीं दे रहा है। प्लीज़! बता दो किस तरफ है वो?" अनामिका ने एक बार फिर से गुफा की रिसती दीवारों पर नज़र दौड़ाते हुए कहा।

"ओह! सॉरी! मैं बताना भूल गया था। गुफा का जो द्वार है उससे गुफा के अंदर मुँह करके खड़ी होगी, तो बाईं ओर की दीवार में थोड़ा आगे है।" चैतन्य ने उसे दरवाजे की स्थिति समझाते हुए कहा।

"ओके!" अनामिका उस दीवार की ओर देखते हुए बोली।

"और हाँ! उस दरवाजे से अंदर जाओगी तो बाईं ओर जाना। उस तरफ है वो खंज़र! दाईं ओर का रास्ता मेंशन की ओर जाता है। और हाँ! ध्यान से! अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करके ही आगे बढ़ना।" चैतन्य ने उसे आगे का रास्ता समझाते हुए थोड़ी फिक्र से कहा।
"हाँ! मैं समझ गई। वैसे तुम कहाँ हो अभी?" अनामिका ने पलटकर सवाल किया।

"बस पहुँचने वाला ही हूँ। तुम खंज़र लेकर सीधा दिव्याक्षि के पास जाना। मैं, अल्फ़ी और सर विलियम माया का क्या करना है.... ये सोचते हैं। सब ठीक होने पर तुम्हें सूचित करूंगा। या फिर... एक काम करना! जब दिव्याक्षि के पास पहुँचो तुम, तो मुझे खबर करना। ठीक है।" चैतन्य ने आगे की योजना समझाते हुए कहा।

"हॉ! ठीक है! अभी तुम जाओ! मैं भी चलती हूँ।" अनामिका ने थोड़े उतावलेपन से कहा।

"अनामिका!" चैतन्य की आवाज आई।

"हॉ!"

"कुछ कहना रह गया था।" चैतन्य बोला।

"क्या?" अनामिका ने माथे पर बल डालकर कहा।

"आई लव यू! अपना ख्याल रखना! मेरे लिए!" चैतन्य ने मखमल में अपनी फिक्र लपेटकर कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका के होंठों पर नर्म सी मुस्कुराहट उतरी।

"हॉ! रखूंगी ख्याल! तुम भी रखना।" और फिर उसने संपर्क तोड़ दिया। संपर्क तोड़ते ही उसके होंठ एक बार फिर से मुस्कुराए। वो जानती थी कि एक बार फिर से सही जवाब नहीं मिलने पर चैतन्य ने उसे 'चीटर' कहा होगा। फिलहाल वो जल्दी ही इस मोहब्बत के भरम से बाहर निकली और तेजी से उस दीवार पर नज़रें दौड़ाने लगी। मगर उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। सारी दीवार हर तरफ से एक जैसी ही दिख रही थी। अब ये भी एक नई परेशानी हो गई थी। अब तो वो चैतन्य से भी संपर्क नहीं कर सकती थी। उसे झुंझलाहट होने लगी थी।

"अब क्या करूं। यहॉ तो अभी भी कुछ समझ में नहीं आ रहा है। हे भगवान! कोई तो रास्ता दिखा।" अनामिका तिलमिलाकर बोली और फिर चारों ओर देखने लगी। वो दीवार की ओर देखते हुए आगे बढ़ी ही थी कि उसका एक पैर गंदले पानी से भरे एक गड्ढे में घुस गया। पहले से ही परेशान अनामिका का पारा इस बार सातवें आसमान तक चढ़ गया।

"ओफ्फो! परेशान हो गई मैं तो। एक तो ये भारी-भरकम कपड़े और ऊपर से चारों तरफ ये पानी और कीचड़। कब निकलेंगे यहॉ से? पता नहीं वो अकड़ू एडवर्ड अपने कपड़ों को इन गंदे छींटों से कैसे बचाता होगा? इतनी गंदगी में वो सफ़ेद चमगादड़ पैर थोड़ी ना रखेगा। उड़कर आता होगा या फिर..." गुफा के ऊपरी अंधकार भरे हिस्से की ओर देखकर कहते हुए अचानक ही अनामिका रूक गई। एक बार फिर से उसके दिमाग में कुछ आया। उसने चारों ओर फैले पानी, कीचड़ और पत्थरों की ओर देखा। वो एक बार फिर से गुफा के दरवाजे की ओर गई और अंदर की ओर देखने लगी।

"उड़कर नहीं जाएगा तो नीचे से कैसे साफ-सुथरा जाएगा?" उसने चारों ओर देखते हुए कहा।

उसने चारों ओर बिखरे छोटे-बड़े पत्थरों की ओर देखा और फिर कुछ सोचकर सबसे पास में रखे पत्थर पर एक पैर रखा। उसके बाद उसने आसपास नज़र दौड़ाकर सबसे पास के सुरक्षित पत्थर पर दूसरा पैर रखा। इसके बाद उसकी नज़रें अगले ऐसे ही पत्थर को तलाशने लगीं। इसी तरह आगे बढ़ते हुए वो एक एक जगह पर आकर रूक गई। उसने सामने देखा.... आगे कोई पत्थर नहीं था मगर आखिरी पत्थर के सामने वही बाईं दीवार थी। अनामिका ने उस आखिरी पत्थर की सीधी लाइन में दीवार के उस हिस्से को देखा और उसकी ओर बढ़ गई। उसने दीवार के उस हिस्से पर हाथ रखा और उस पर दबाव डालने

लगी और एक जगह पर आकर उसे वो दीवार कुछ हिलती हुई सी महसूस हुई। उसने उत्साहित होकर उस
जगह और भी दबाव डालना शुरू किया, मगर हल्का सा हिलने के अलावा और कुछ नहीं हुआ।

"लगता तो है यहीं है। मगर खुलेगा कैसे?" उसने वहॉ पर तेजी से हाथ चलाते हुए कहा और फिर उसकी एक ऊंगली एक छेद में जाकर फँसी, जो काई से भरी हुई थी। अनामिका ने बड़े ही कोफ्त के साथ उसमें अपनी ऊंगली घुसाई। उसकी ऊंगली अंदर जाते ही एक खट्ट की आवाज आई और वहॉ की दीवार अपने आप दरवाजे की तरह खुल गई। अनामिका के होंठों पर एक विजयी मुस्कान आई। उसने खींचकर उस दरवाजे को खोला और वो उसके अंदर जाने ही वाली थी कि कुछ तेज आवाजों ने उसके पैर आगे बढ़ने से रोक दिए। उसने चारों ओर देखते हुए उस आवाज को पहचानने की कोशिश की। ऐसा लग रहा था जैसे बहुत सारे पक्षी एक साथ अपने पंख फड़फड़ा रहे हों। मगर कहॉ से आ रही थी ये आवाज़? कैसी थी ये आवाज? क्या ये अंदर की ओर से आ रही थी? वो दरवाजे के अंदर बड़े गौर से देख ही रही थी कि तभी उसे अपने सिर के ऊपर सब कुछ हिलता हुआ सा महसूस हुआ। उसने बहुत ही हौले से अपना सिर गुफा की अंधकार में डूबी हुई छत की ओर उठाया। अनामिका की ऑखें उस अंधकार को नापने की कोशिश में फ़ैल गईं और फिर ये बहुत ही अचानक हुआ, जब चमगादड़ों की एक फ़ौज ने उस पर हमला कर दिया। उनसे खुद को बचाने की कोशिश में अपने दोनों हाथों से अपना सिर और चेहरा छिपा लिया। उन चमगादड़ों के लगातार हमले से बचने के लिए वो पीछे हटने लगी और फिर एक जगह लड़खड़ाने की वजह से वो पीठ के बल नीचे गिर पड़ी। काई से भरी हुई पथरीली जमीन पर गिरने के कारण उसके सारे कपड़े गंदे हो गए और शरीर के खुले हुए हिस्सों में खराशें आ गईं। वो खुद को संभालती उससे पहले ही उसकी नज़र ऊपर की ओर गई जहॉ वो सारे चमगादड़ गोलाई से उड़ते हुए चक्कर लगा रहे थे। अब वो बहुत ही तेज आवाज में शोर भी कर रहे थे। अनामिका को लगा कि उस शोर से उसके कान फट जाऍंगे, इसलिए उसने अपने दोनों कानों को पूरी ताकत से बंद कर लिया। कुछ देर तो अनामिका ने अपनी ऑखों को
भींच कर ये सब बर्दाश्त किया, मगर समय को बर्बाद होता देखकर उसकी बर्दाश्त जवाब दे गई। जमीन में लेटे हुए ही उसने अपने दोनों हाथ पानी में रखे और फिर जोर से चिल्लाई,

"कोई है?"

अनामिका का इतना ही कहना था कि उस गुफा की दीवारें कॉपने लगीं और फिर उन दीवारों से रिसता हुआ साफ पानी धीरे-धीरे नीचे उतर कर एक जगह इकट्ठा होने लगा। अब ऊपर उड़ते चमगादड़ोन का शोर धीरे-धीरे कम हो गया था। अनामिका ने उस जमा हुए पानी की ओर देखा और फिर तेजी से खड़ी हो गई। उसके होठों की मुस्कान टेढ़ी हुई और फिर उसने अपने दोनों हाथों को उस पानी की ओर बढ़ा अपनी हथेलियों को धीरे से घुमाते हुए ऊपर की ओर उठाया और अनामिका के होंठों से निकला,

"मदद!"

अनामिका के इतना कहते ही उस पानी की सतह तेजी से हिलोरें मारने लगी और फिर एक ही झटके में उस पानी को चीरकर बाहर निकला वो जल दैत्य!

तेज गर्जना के साथ अपना सिर अनामिका के सामने झुकाए हुए उस जलदैत्य को देखकर एक बार के लिए अनामिका का दिल भी धड़कना भूल गया था। उसकी आवाज गले में अटक गई थी। उस जलदैत्य ने अपनी गर्दन नीचे की ओर अपना चेहरा अनामिका की बिल्कुल सामने ले आया। उसे इतने करीब देखकर अनामिका की हलक सूख गई। घबराहट में वो अपनी पलकों को तेजी से झपकने लगी। दिल इतनी जोर से धड़क रहा था कि सीना चीरकर बाहर ही आ जाए और वो... वो उसे ऐसे देख रहा था जैसे कि उसके बोलने का इंतजार कर रहा हो। कुछ पल खामोशी
से गुजरने के बाद अनामिका ने हिम्मत करके अपना सीधा हाथ उसकी ओर बढ़ाकर उसे छू लिया। वो भी किसी पालतू जानवर की तरह उसकी हथेली के स्पर्श को महसूस करने लगा। एक पल में ही अनामिका को अपनी ताकत का अहसास हुआ। वो थोड़ा सा पीछे हुई और फिर ऊपर उड़ते हुए चमगादड़ों, जो फिर से शोर करने लगे थे, उनकी ओर इशारा करके बोली,

"हमला!"

और अनामिका का इतना कहना था कि वो जलदैत्य पूरी रफ्तार से उन चमगादड़ों की ओर बढ़ा। अगले ही पल उस गुफा का ऊपरी हिस्सा जैसे जंग का मैदान बना हुआ था, जिसमें वो जलदैत्य उन चमगादड़ों पर भारी पड़ता दिखाई दे रहा था। अनामिका ने मौके का फायदा उठाया। वो तेजी से दौड़ती हुई उस दरवाजे के अंदर चली गई और उस दरवाजे को अंदर से बंद कर लिया। उसने दरवाजे पर कान लगाकर बाहर की आवाजें सुनी जो अभी भी आ रही थीं।

"चलो ये तो हो गया! अब आगे चलें। चैतन्य ने बाईं ओर जाने के लिए कहा था।" बाईं ओर के रास्ते की ओर उंगली दिखाते हुए अनामिका ने कहा और फिर तेजी से उसे रास्ते पर आगे बढ़ गई। दिन के समय में भी उस सुरंग जैसी जगह में अंधकार छाया हुआ था। सावधानी से आगे बढ़ते हुए वो सब तरफ चौकन्नी निगाहों से देखती जा रही थी और फिर एक जगह से आती हल्की-हल्की सी रोशनी की तरफ ऐहतियात बरतते हुए बढ़ गई। जैसे जैसे वो आगे बढ़ रही थी आसपास का वातावरण गर्म से और भी गर्म होता जा रहा था।

जल्द ही वो भी उस विशाल गुफा जैसी जगह की दहलीज पर खड़ी
थी, जो अग्नि के प्रबल ताप से तप रहा था। अनामिका ने उस खोह में नज़र दौड़ाई तो उसे दिखाई दिया हवा में लटका हुआ वो खंज़र, जिसके नीचे एक पात्र रखा हुआ था। अनामिका ने देखा कि उस खंज़र से कुछ टपककर उस पात्र में गिर रहा था।

"ओह! लगता है कि यही है वो खंजर! अजीब बात है! अगर ये इतना महत्वपूर्ण है तो इसके आसपास कोई सुरक्षा क्यों नहीं है? ख़ैर! मुझे क्या करना? खंज़र उठाती हूँ और चलती हूँ" कहते हुए अनामिका उतावलापन दिखाते हुए आगे बढ़ गई। मगर अगले ही पल उसे अपनी गलती का एहसास हो गया। उस दहलीज के अंदर कदम रखते ही उसके पैरों के नीचे से गर्म भाप निकलने लगी, जिससे हुए तकलीफ़ के अहसास से उसने तेजी से अपने पैर वापस खींचे।

"उफ्फ! हे भगवान! चैतन्य के साथ रहते-रहते मैं भी उसी की तरह होती जा रही हूँ। अभी वो होता तो वो भी यही बेवकूफी करता। जाहिर सी बात है कि इस खंज़र को सुरक्षा में रखा गया है। अग्नि की सुरक्षा में! तो जल ही इससे लड़ सकता है। पर कैसे? अंदर गई तो भाप बनकर उड़ जाऊंगी। ये तो ज्वाला मुखी है। तो फिर कैसे?" अनामिका चारों ओर देखते हुए बोली और फिर एक विचार उसके दिमाग में आया।

"ओह! अब समझ में आया कि यहां आने का रास्ता उस रिसती हुई गुफा से क्यों है? यहॉ की बेहिसाब गर्मी को छिपाने के लिए। वरना कोई भी इसे ढूंढ लेता। वो तो चैतन्य गलती से यहॉ आ गया इसलिए हमें इसका पता चल गया। अगर... उस गुफा की ठंडक इस खोह की गर्मी को बाहर जाने से रोक सकती है, तो वैसी ही ठंडक इस अग्नि को भी शांत कर सकती है।"

और ये विचार आते ही अनामिका मुट्ठी बांधकर अपनी ऊंगली की अंगूठी को अपने चेहरे के पास लाई और फिर जल का आह्वान करने लगी। कुछ
देर बाद उसने आगे बढ़कर उस खोह की दीवार पर हाथ रखा। उस पर हाथ रखते ही अनामिका की अंगूठी से पानी की एक लकीर सी निकली और फिर वो उस दीवार पर उतरकर उसमें तेजी से फैलने लगी। शुरूआत में तो सब बहुत आसानी से हो रहा था, मगर दीवार पर पानी के आगे बढ़ने के साथ ही उसकी रफ़्तार धीमी होने लगी। ये देखकर अनामिका थोड़ा घबराई। रफ्तार धीमी होने का मतलब ताकत कम होना था। अग्नि पर विजय तभी पा सकती थी, जब उसकी जल शक्ति उस अग्नि शक्ति से ज्यादा प्रबल हो। मगर अनामिका हार नहीं मान सकती थी। उसने अपने अंदर की पूरी हिम्मत इकट्ठा की और फिर अंदर चली गई। वो जानती थी कि ये तकलीफ़ देह होने वाला है, पर वो पीछे नहीं हट सकती थी। वो अंदर दीवार पर अपने दोनों हाथ टेककर खड़ी हो गई और पूरी ताकत से जल का आह्वान करने लगी। जाहिर सी बात है कि अग्नि ने भी अपना प्रहार तेज किया था। अनामिका की पुकार से गुफा की दरारों में मौजूद पानी पूरी तेजी से जगह ढूंढ-ढूंढ कर बाहर निकलने लगा और दीवारों पर फैलने लगा, जिससे दीवार के वो हिस्से ठंडे होने लगे। अग्नि के प्रहार से एक बार फिर अनामिका के हाथ और पैर भाप से झुलसने लगे थे। पर वो भी पूरी जिद्दी थी। वो अपनी जगह से रत्ती भर भी नहीं हिली।

अग्नि ने उसे कम समझ लिया था, पर वो अग्नि नहीं जानती थी कि अनामिका एक अकेली नहीं थी। उसमें दो-दो जल-रक्षकों की ताकतें थी। हेममाया की आत्मा को अपने शरीर में समेटे वो चित्रलेखा की शक्तियों की भी स्वामिनी थी। जल्द ही 1:2 का ये संघर्ष अपने नतीजे की ओर बढ़ने लगा। जल्द ही उस खोह की सारी दीवारें जल शक्ति के प्रभाव से ठंडी होने लगी और उनसे पानी बहने लगा। जल और अग्नि के मेल से भाप का एक गुबार पैदा हुआ, जो तेजी से ऊपर की ओर उठा और उस खोह की छत में जाकर जमा हो गया। अनामिका अब बहुत थक गई थी। उसके हाथ और पैरों के तलवे बुरी तरह से झुलस गए थे। बर्दाश्त की आखिरी हद में उसकी ऑखों से आंसू के कुछ क़तरे बीते जमीन पर गिरे और फिर उन आँसुओं से भाप का एक टुकड़ा पैदा हुआ, जो तेजी से ऊपर मौजूद भाप
के बादलों में जाकर मिल गया। उस टुकड़े के दूसरे बादलों में मिलते ही वो बदल संघनित होने लगे और फिर उन बादलों से पानी की तेज बौछार नीचे जलती हुई अग्नि लपटों पर गिरी। कुछ ही पलों में उस अग्नि ने हथियार डाल दिए। आग बुझ चुकी थी।

अनामिका ने अपने झुलसे हुए हाथ उस दीवार से हटाए और अपने झुलसे हुए पैर उस खंजर की ओर मोड़े। वो सामने था। वही जिसको पाने के लिए उसने इतना संघर्ष किया। अब बस आगे बढ़कर उसे उठाना शेष था। वो एक राहत भरी आह के साथ आगे बढ़ी। उसके हाथों और पैरों में बहुत जलन हो रही थी, पर उसे आगे बढ़ना ही था और वो बड़ी। हर दर्द को भूलकर आखिरकार वो उस खंज़र के सामने खड़ी थी। उसने देखा कि उस खंज़र से खून टपककर नीचे रखे पात्र में गिर रहा था। उसने अपना सिर झटका और फिर हाथ आगे बढ़ाकर उस खंज़र की मूठ को पकड़ लिया। ऐसा लग रहा था कि जैसे

किसी ने उसे हवा में चिपका दिया था। मगर अनामिका ने भी पूरी ताकत लगाकर उसे खींचा और वो जैसे उखड़कर उसके हाथ में आ गया। वो अपनी कामयाबी के ईनाम उस खंज़र को देख ही रही थी कि एक बार फिर से उसे उस खोह की गर्मी बढ़ती हुई महसूस हुई। वो समझ गई कि वहाँ से भागने का समय आ गया था। उसने देखा कि खंज़र के नीचे के पात्र में रखा खून उबलने लगा था। देखते ही देखते उसने लावे की शक्ल ले ली और उफनकर बाहर की ओर आने लगा। अनामिका उस खंज़र को अपने मजबूत हाथ में सुरक्षित पकड़कर तेजी से पलटी और पैरों के ज़ख्मों को नज़रअंदाज़ करते हुए पूरी ताकत से भागी। पात्र से घिरा लावा पूरी तेजी से उस कमरे में फैलने लगा, मगर वो अनामिका के जूनून के आगे उस समय हार गया, जब अनामिका उस लावे से सुरक्षित उस खोह की दहलीज पार कर गई। जलशक्ति की जीत हुई।

सीमा रेखा पार करते ही उसने पलट कर उस खोह की ओर देखा और उसे चिढ़ाने वाले अंदाज में मुस्कुराई। अब वो तेजी से उसी दरवाजे की ओर भागी, जहाँ से वो आई थी। के कहे अनुसार उसे दिव्याक्षि के पास वापस
जाना था। जब वो दरवाजे से बाहर निकली, तो उसने चारों ओर चमगादड़ों की लाशें बिखरी हुई देखी। उसका जलदैत्य अभी भी बचे-खुचे चमगादड़ों के साथ जैसे खेल रहा था। अनामिका ने एक मुस्कुराती हुई नजर उस जलदैत्य पर डाली और फिर तुरंत उस जगह पर पहुँची, जहाँ वो छल द्वार बना हुआ था... जो दिव्याक्षि के कमरे तक जाता था। वो तेजी से उसके अंदर चली गई। जल्द ही वो उस छल द्वार के अंतिम छोर से बाहर निकल कर दिव्याक्षि के कमरे में खड़ी थी। मगर वहाँ उसने जो देखा उस दृश्य ने उसकी जीत की खुशी को पल भर में धुआं कर दिया।

खंज़र मिलने की खुशी में अपनी हर चोट और तकलीफ़ भूलकर जब अनामिका छलद्वार से दिव्याक्षि के कमरे में निकली, तो कमरे का ख़ौफनाक मंज़र देखकर जीतने की खुशी उसके चेहरे से पल में काफूर हो गई। उस वीभत्स नज़ारे को देखकर उसकी आँखें सदमे से फट गई थीं। चारों ओर खून ही खून बिखरा हुआ था, जैसे कि किसी ने खून से होली खेली हो। वो उलझी हुई सी उन्हीं फटी हुई आँखों से चारों ओर देख रही थी... कुछ खोज रही थी।

"ये यहाँ क्या हुआ है? परिधि और दिव्याक्षि कहाँ हैं?" चारों ओर आँखें फाड़कर देखते हुए वो बहुत धीरे-धीरे कदम आगे बढ़ा रही थी। वो अभी थोड़ा आगे ही बढ़ी थी कि कोई चीज उसके कपड़ों और पैरों में उलझी, जिससे वो लड़खड़ा सी गई। उसने नीचे देखा तो आँखें सिकुड़ कर छोटी हुईं। उसने झुककर उस चीज को उठाया। खून से लिथड़ी वो सख़्त सी चीज किसी हाथ के नमूने की तरह थी। अनामिका ने उसे सूंघकर देखा, तो उसे यकीन हो गया कि ये लाल रंग की बिखरी हुई सी चीज खून ही था।

"ये क्या है? यहाँ क्या कर रही है और इसमें खून क्यों लगा है?" खुद से सवाल करते हुए अनामिका ने उसे उलट-पुलट कर देखा तो टूटी हुई जगह अभी भी गीली थी। अनामिका ने उस जगह को कुरेदा तो वहाँ से कुछ और खून निकल आया। ये देखकर अनामिका का दिल धक्क करके रह गया। आखिर ये थी क्या चीज़? दिमाग के घोड़े दौड़ते हुए उसकी नजर हाथ की कलाई की ओर गई, जहाँ लाल धागे में बंधे काले-सफेद मूंगे के दानों को देखकर उसे झटका सा लगा। उसके हाथ एक बुरे ख्याल के आने से काँपने लगे और उन्हीं काँपते हुए हाथों से उसने उस हाथ के पिछले
हिस्से की ओर देखा। वहाँ बने अग्नि के निशान को देखकर अनामिका का दिल बैठकर रह गया।

"ये... ये तो... दिव्याक्षि के हाथ की तरह दिख रहा है। क्या ये उनका....? उन्हें कुछ हुआ तो नहीं?" ये भयानक ख्याल आते ही वो उस हाथ को एक ओर रखकर धीरे-धीरे आगे बढ़ी। थोड़ा आगे बढ़ने पर उसकी नज़र दो पैरों पर पड़ी, जो उस हाथ की तरह ही खून से लथपथ थे। एक ख़ौफ ने अनामिका को चारों ओर से घेर लिया। उसकी ऑखों में दु:ख और सदमे से पानी उतर आया। किसी तरह अपने कॉपते हुए शरीर को आगे बढ़ाकर वो उस मेज के पास पहुँची, जिसके पीछे से दिव्याक्षि के खून से सने कपड़े झांक रहे थे।

"दिव्याक्षि!" अनामिका ने कॉपती हुई आवाज में पुकारा, मगर जवाब ना आना था... ना आया। अपने सूखे हुए होंठों पर ज़बान फेरते हुए उसने अपने गले को भी गीला किया और फिर आगे बढ़कर अपनी सहमी हुई नज़रें उस मेज के पीछे डालीं। अगले ही पल वो एक साथ कई कदम पीछे हटी थीं। सामने दिव्याक्षि के क्षत-विक्षत शरीर को देखकर उसकी ऑखें दहशत से इतनी फट गईं कि उनके किनारों में खून उतर आया। उसने अपने मुँह को अपनी दोनों हथेलियों से भींच रखा था, जिसके पीछे उसकी चीख बाहर निकलने के लिए लगातार दस्तक दे रही थी। अचानक ही अनामिका की सॉसे भारी हो गईं और उसे सॉस लेने में तकलीफ़ होने लगी। खुद को गिरने से बचाने के लिए वो मेज पर झुक गई। कुछ देर खुद को संभालने में खर्च करने के बाद उसने ऑसू से भीगे अपने चेहरे को साफ किया और फिर अपने अंदर की सारी हिम्मत समेटकर सहमे हुए कदमों के साथ दिव्याक्षि के शव की ओर बढ़ी। वो उनके सिर के पास जाकर बैठ गई। उसने अपने कॉपते हुए हाथों से उनके चेहरे पर हाथ फेरा और फिर फेरते-फेरते नीचे की ओर ले गई। सीने में बने खून से सने गहरे छेद को पास उसके हाथ रूक गए। उसने ना चाहते हुए भी उसमें झांककर देखा और फिर दु:ख की इंतेहा के साथ अपनी ऑखें भींच ली।
कोई इतना निर्दयी कैसे हो सकता है? और ये सवाल दिल में आते ही वो फफक-फफक कर रो पड़ी। इससे ज्यादा बर्दाश्त कर पाना उसके इंसान होने पर संदेह उत्पन्न कर सकता था।

"ये अच्छा नहीं किया तुमने माया! मैं जानती हूँ कि ये तुमने ही किया है। तुम्हें इसकी कीमत चुकानी होगी।" दु:ख और दर्द का आखिरी ऑसू बहाने के बाद अनामिका ने अपनी मुट्ठियों को भींचकर एक-एक शब्द चबाते हुए कहा। वो अपनी जगह से झटके से उठी ही थी कि उसके पैर से दिव्याक्षि के सिर को ठोकर लग गई। वो तड़पकर फिर नीचे बैठी और उनके सिर को सहलाने लगी, जैसे कि इस ठोकर से भी उन्हें चोट ना लग गई हो। अनामिका उनके पत्थर जैसे सख़्त हो चुके चेहरे को बहुत ही अफसोस से देख ही रही थी कि तभी उसे कुछ दिखाई दिया। कुछ ऐसा जो वहॉ मौजूद चीजों से बिल्कुल अलग था। अनामिका ने दिव्याक्षि के अधखुले मुँह के अंदर देखा। वहॉ उसे उनकी जीभ दिखाई दे रही थी और वो... अभी तक अपनी पहले जैसी अवस्था में ही थी। वो अभी भी नमी समेटे हुए थी। अनामिका ने आश्चर्य से अपनी तर्जनी उंगली उनके मुँह में डाली और उस नमी का कारण टटोलने लगी। जल्द ही उसकी ऊंगली ने किसी ठंडी सी चीज को छुआ। अनामिका की ऑखें सवालों के बोझ से सिकुड़ी और फिर उसने थोड़ी मेहनत करके आखिर उस चीज को बाहर निकाला। अनामिका ने उसे अपनी हथेली पर रखा। वो एक सफेद मोती था, जो अपने आकार से कुछ ज्यादा ही भारी और ठंडा लग रहा था।

"ये क्या है? ये दिव्याक्षि के मुँह में क्या कर रहा था?" कहते हुए अनामिका ने दिव्याक्षि के शव की ओर देखा तो उसे हैरत का एक और तेज झटका लगा। उस मोती के हटते ही दिव्याक्षि की जीभ भी सारे शरीर की तरह सूख गई थी।

"ये तो मोती है! ये दिव्याक्षि के मुँह में क्या कर रहा था? इसे बाहर निकालने पर दिव्याक्षि की जीभ कैसे सूख गई? या फिर... इसी की वजह
से जीभ अभी तक नम थी। पर मोती क्यों? ये तो जल तत्व का रत्न है।" ढेर सारे उलझे सवालों के साथ अनामिका ने उस मोती को देखा और फिर एक और विचार उसके दिमाग में कौंधा।

"जल तत्व का रत्न! माया ने तो इसे बिल्कुल भी नहीं रखा होगा। तो क्या दिव्याक्षि ने ये रखा था। पर क्यों? क्या.... ये... मेरे लिए है। ये मामूली तो नहीं लग रहा है। पर है क्या?" दिमाग के घोड़ों को हर दिशा में दौड़ाते हुए अनामिका ने सोचा।

अभी वो इन सोचों में उलझी हुई ही थी कि उसे बाहर से कुछ आहटें सुनाई दीं। उसने ध्यान से सुना तो कुछ लोग उसी तरफ चले आ रहे थे। अनामिका फुर्ती से उठी और फिर जाने को हुई। उसी समय उसे कुछ याद आया और वो तेजी से छलद्वार की ओर भागी। छलद्वार के पास दिव्याक्षि का एक थैला और उनके सामान पड़े थे। अनामिका ने वो थैला उठाया और कुछ सामान फुर्ती से उस थैले में डाले और फिर उतनी ही चपलता से वो उस छलद्वार के अंदर चली गई। उसके अंदर जाते ही छलद्वार बंद ही हो गया था, मगर अनामिका ने एक सुराख खुला छोड़ा और उस कमरे में तुरंत पहुँचे लोगों की बातें सुनने लगी। अनामिका ने अनुमान लगाया कि आने वाली डायनें थीं।

"डाकिनी! ये क्या अनर्थ हो गया? किसने किया ये? दिव्याक्षि तारों की दूत मानी जाती है और दूत की हत्या जघन्य अपराध की श्रेणी में आता है। किसकी इतनी हिम्मत हो गई?" एक बड़े उम्र की डायन की भयभीत आवाज आई।

"परिधि भी गायब है मॉ!" ये माया की आवाज थी।

"समझ में नहीं आ रहा है कि हो क्या रहा है यहॉ? आज इतना महत्वपूर्ण दिन है और दिन निकलते के साथ ही बुरी खबरें सुनने को मिल रही हैं!"
डाकिनी की झुंझलाई हुई आवाज आई।

"मुझे पता है कि ये किसने किया होगा?" एक बार फिर से माया ने कहा और उसकी बात सुनकर अनामिका की ऑखें सिकुड़ी।

"किसने?" एक साथ कई आवाजें आई।

"दिव्याक्षि के शव को देखकर साफ पता चल रहा है कि इनकी हत्या किसी जल की शक्ति वाले ने की है और मैं ऐसे एक को जानती हूँ।" माया ने बड़े ही रहस्यपूर्ण तरीके से कहा, जिसे सुनकर सभी के साथ अनामिका की सिकुड़ी हुई ऑखें भी झटके से फैली थीं।

"अनामिका! उसी का किया धरा है ये। रात उसी ने अपने साथियों के साथ मेरा अपहरण किया था। ये सब जरूर किसी बड़ी खतरनाक योजना को अंजाम देने के लिए यहॉ आए हैं। हमें सावधान रहना होगा। दिव्याक्षि के शव को देखकर ही आप समझ गए होंगे कि वो अनामिका कितनी निर्दयी है। वो कुछ भी कर सकती है। वो पिशाचों से मिली हुई है। पता नहीं वो क्या करने वाले हैं? पिशाचों के चीफ को भी उन्होंने गायब कर दिया है। वो तो शुक्र है कि उनका एक साथी.... क्या नाम है उसका? हॉ! अल्फ़ी! वो पकड़ में आ गया है। मुझे नहीं लगता कि इनसे कुछ पूछने की जरूरत है। इन्हें पकड़कर सीधे खत्म ही करना होगा।" माया ने जैसे फैसला सुनाते हुए अपनी लंबी-चौड़ी बात खत्म की।

"माया सही कह रही है। वो लड़की... कुछ अजीब तो लगती थी। पर इतनी खतरनाक होगी... ये नहीं सोचा था।" एक दूसरी डायन ने दिव्याक्षि के क्षत-विक्षत शरीर को देखकर सिहरते हुए कहा।

"माया सही कह रही है। इस समय हमें पिशाचों से हाथ मिलाने की जरूरत है। खतरा उन्हें भी है और

हमें भी। एक-दूसरे का साथ देने के
अलावा और कोई रास्ता नहीं है। उन्हें पकड़ने के बाद उनकी बात सुने बिना ही खत्म कर देना है। वो खतरनाक हो चुके हैं। वो तो एडवर्ड ने पुरानी बातें भुलाकर हमें माया के अपहरण की खबर की, वरना हमने तो अपनी बेटी और हमारे डायन समाज के भविष्य को खो ही दिया था।" डाकिनी ने भी माया का समर्थन करते हुए कहा।

वहॉ मौजूद सभी ने हामी भरकर अपना पूरा समर्थन दिया और इस तरह अनामिका के सिर पर दिव्याक्षि की क्रूर हत्या का इल्ज़ाम मढ़ दिया गया। छलद्वार के पीछे खड़ी अनामिका ये सब सुनकर सकते में आ गई। माया ने दिव्याक्षि को मारा और फिर बड़ी ही चालाकी से दिव्याक्षि की हत्या को अनामिका और उसके साथियों की साज़िश से जोड़ दिया। सर विलियम की गुमशुदगी और अल्फ़ी की गिरफ्तारी भी उसे और झटके दे गए थे। वो सब बढ़ते समय के साथ और भी फँसते जा रहे थे। नौबत तो यहॉ तक आ गई थी कि अब शायद उनकी कोई दलील भी नहीं सुनी जाती। अनामिका ने वहॉ से फौरन निकलने में ही अपनी भलाई समझी। पर कहॉ?

"यहॉ से तो निकलूं। फिर चैतन्य से संपर्क करके उसे सब बताती हूँ। हमें अब जल्दी ही कुछ करना होगा। इस माया और एडवर्ड ने तो सच में बहुत ही गहरी साज़िश रची है।" बड़बड़ाते हुए अनामिका तेजी से आगे बढ़ी। वो तेजी से छलद्वार से बाहर निकली ही थी कि एक और झटका उसका रिसती गुफा में इंतजार कर रहा था। छलद्वार से बाहर निकलकर जैसे ही अनामिका ने सामने देखा तो पाया कि... उसका जलदैत्य एक अग्निदैत्य से भिड़ा हुआ था।

"ये कहॉ से आया?" अनामिका के होंठों से बेसाख़्ता निकला।

"क्या मैं जवाब दूं!" गुफा के दरवाजे से एक सर्द आवाज आई।

उस आवाज को सुनकर अनामिका के होश फाख्ता हुए थे। वो शायद इस आवाज को पहचानती थी। उसने हौले से सिर घुमाकर उसकी ओर देखा और अनामिका का संदेह यकीन में बदल गया। वो एडवर्ड था, जो अपनी ठंडी निगाहों से उसे ही घूर रहा था। उसके होंठों पर एक कुटिल मुस्कान बैठी हुई थी।

"अनामिका! हँ! बहुत नाम सुना है तुम्हारा!" एडवर्ड ने जहरबुझी आवाज में थोड़े तंज से कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने एक गहरी साँस ली और आगे के बारे में सोचने लगी। वो फिलहाल अभी एडवर्ड ने नहीं भिड़ना चाहती थी। उसे उस मोती का रहस्य सुलझाना था और चैतन्य को भी सारी बातें बतानी थी। उसके लिए उसका वहॉ से सुरक्षित निकलना बहुत जरूरी था।
फिलहाल तो दरवाजे पर एडवर्ड खड़ा था और वहॉ से बाहर निकलना मुश्किल था। अब बचा एक और दरवाजा। अनामिका ने एक चोर निगाह उस दरवाजे पर डाली और फिर उसने अपनी स्थिति, एडवर्ड की स्थिति और सारे हालातों का गुणा भाग करके हिसाब लगाया। एक अनुमान के बाद वो थोड़ी शांत हो गई कि अब दिमाग में आई योजना को अमलीजामा पहनाना भी जरूरी था।

वो अभी अगला कदम उठाने की सोच ही रही थी कि तभी उसका जलदैत्य एक तेज आवाज के साथ गुफा में मौजूद पानी में गिरा और फिर उस पानी में खो गया। अनामिका ने एक नज़र उस पर डाली और फिर दो कदम पीछे जाकर झटके से पीछे मुड़ी। वो आगे कुछ करती उससे पहले ही अग्निदैत्य उसके

ठीक सामने था। उसका बड़ा सा खतरनाक चेहरा भट्ठी की तरह तप रहा था। अब अनामिका फिर से दो कदम वापस पीछे हटी। वो कुछ सोचती उससे पहले ही एडवर्ड की आवाज गूंजी।

"वो खंज़र मुझे दो!"

अनामिका ने झटके से पीछे मुड़कर एडवर्ड की ओर देखा, जिसकी ऑखों में एक आग सी जल रही थी। अनामिका दोनों तरफ से फँस गई थी। उसने बारी-बारी से दोनों की ओर देखा और फिर हमेशा की तरह अपनी हिम्मत के साथ ऊँची आवाज में चिल्लाकर बोली,

"इतनी आसानी से तो हर्गिज नहीं।" और फिर उसने अपने दोनों हाथों को जमीन में पड़े पानी की ओर बढ़ाया और अपनी पूरी ताकत लगाकर चिल्लाई,

"एक बार और!"

उसके इतना कहते ही वो जलदैत्य एक बार फिर से जल का सीना फाड़कर बाहर आया और फिर उस अग्निदैत्य पर बरस गया। एडवर्ड उस जलदैत्य को लेकर बेफिक्र हो गया था, इसलिए उसकी ओर से सावधान नहीं था। इसका असर ये हुआ कि उसका अग्निदैत्य अगले ही पल धुएँ की शक्ल इख्तियार कर चुका था। इस अचानक हुए हमले से एडवर्ड भौंचक्का रह गया। उसे अनामिका... एक तुच्छ औरत से ये उम्मीद नहीं थी। अनामिका ने उसकी उस भौंचक हालत का फायदा उठाया और फिर अपने हाथों के इशारे से पानी का एक तेज रेला एडवर्ड की ओर फेंका। एडवर्ड इसके लिए भी तैयार नहीं था। वो इस हमले को झेल नहीं पाया
और दूर जाकर गिरा।

अनामिका ने एक बार फिर से बिजली सी तेजी दिखाते हुए उस दरवाजे की ओर दौड़ लगा दी। एडवर्ड कुछ समझ पाता उससे पहले ही अनामिका वो दरवाजा खोल चुकी थी। उसने मुड़कर एडवर्ड पर एक चिढ़ाने वाली नज़र डाली और फिर उस दीवार पर हाथ रखकर जल का आह्वान किया। अगले ही पल उन दीवारों पर पानी रिसने की बजाय तेजी से बहने लगा। एडवर्ड जब तक गुफा के दरवाजे पर आया अनामिका अपनी चाल चल चुकी थी। उसने एडवर्ड की ओर अपना अंगूठा उठाया और फिर उसे झटके से नीचे कर दिया। एडवर्ड अपनी इस मात से तिलमिलाकर रह गया। उसे एक औरत ने मात दे दी थी। अनामिका ने एक जहरीली मुस्कान उस पर डाली और फिर वो दरवाजा बंद कर दिया। एडवर्ड बस हाथ मलता रह गया। उसे अनामिका से ऐसे जवाब की बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। वो अपनी हार पर पूरी ताकत से चिल्लाया, जिससे जंगल का वो हिस्सा बुरी तरह से थरथरा गया।

दूसरी तरफ दरवाजा बंद करने के बाद अनामिका के चेहरे की मुस्कुराहट सिमट गई, जो बस एडवर्ड का दिल जलाने के लिए ही उसने अपने होंठों पर सजाई थी। उसने एक गहरी सॉ?स ली और आगे के बारे में सोचने लगी। अब उन सबको हर कदम बहुत ही सोच-समझकर उठाना था क्योंकि माया और एडवर्ड के गंभीर इल्ज़ामों में वो बुरी तरह से फँस चुके थे और इससे जल्द से जल्द बाहर निकलना बहुत जरूरी था।

दरवाजे के दूसरी ओर खड़ी अनामिका बदले हुए हालातों के बारे में सोच रही थी। सच तो ये था कि हालात उनके लिए बद से बद्तर होते जा रहे थे। वो जो भी सोच रहे थे.... वही नहीं हो रहा था। वो दिव्याची के मौत के सदमे से उबर भी नहीं पाई थी कि... खुद पर लगे उनकी हत्या के इल्जाम ने उसे अंदर तक हिला कर रख दिया था। उसने दरवाजे की ओर देखा। पता नहीं बाहर हालात कैसे थे? वो बाहर जा नहीं सकती थी और यहॉ खड़े रहकर भी वो बस समय बर्बाद कर रही थी। उसे मदद की जरूरत थी। उसने एक बार फिर से अपनी ऑखें बंद की और चैतन्य को याद किया। साथ चलने का वक्त आ चुका था।

****

किसी तरह खुद को छिपाता-बचाता चैतन्य झील की ओर भागा। वहॉ तक पहुँचने में उसे अच्छा-खासा वक्त लग गया। एडवर्ड की बातों से वो समझ चुका था कि परिस्थितियॉ सिर्फ अल्फ़ी के ही नहीं... बल्कि उनके खिलाफ भी हो चुकी हैं। अब वो सब भी संदिग्धों की सूची में थे। उसे तो सबसे ज्यादा डर इस बात का था कि सर विलियम को कुछ ना हो गया है। झील के पानी को देखते हुए उसने गहरी साँस लेकर ताजी हवा फेफड़ों में भरी। अभी वो झील में उतरने वाला ही था कि तभी अनामिका की आवाज उसके मस्तिष्क में गूंजी।

"चैतन्य! कहॉ हो तुम?" अनामिका की परेशानी में लिपटी आवाज आई।

"अनामिका! झील के पास हूँ। क्या हुआ? परेशान लग रही हो। सब ठीक है ना!" चैतन्य का दिल अनामिका की आवाज सुनकर जोर से धड़का था।

"नहीं! मेरा मतलब है कि... मुझे खंज़र मिल गया है। मगर.... पता नहीं कैसे एडवर्ड यहॉ पहुँच गया है। मैंने किसी तरह से उससे जान तो छुड़ा ली है, मगर वो अभी भी गुफा के दरवाजे में खड़ा है। मैं बाहर नहीं निकल पा रही हूँ।" अनामिका की आवाज में अभी भी परेशानी झलक रही थी।

"एडवर्ड! वहॉ! वो वहॉ क्या कर रहा है? तुम ठीक हो? उसने कुछ..." अनामिका की बात सुनकर बुरी तरह से घबराए चैतन्य ने सवालों की झड़ी लगा दी।

"ठीक हूँ मैं! पर समझ नहीं आ रहा है कि यहॉ से बाहर कैसे निकलूं?" अनामिका ने उसे अपनी असल परेशानी बताते हुए कहा।

"मैं... मैं आ रहा हूँ तुम्हारे पास। तुम... एक काम करो! दाऍं तरफ वाले रास्ते पर आगे आओ। मैं...

वहीं आकर मिलता हूँ। सावधान रहना और संपर्क में भी!" चैतन्य ने बहुत ही व्यग्रता से कहा और फिर तेजी से झील के पानी में उतर गया। इस बार उसके पास मेंशन की मिट्टी थी, जो उसे सीधे वहीं ले गई। एक बार फिर वो उसी जगह बाहर निकला, जहाँ पहली बार अल्फ़ी और उसकी झड़प हुई थी (भाग -) वो बिजली की फुर्ती से उस कुएँ की ओर भागा, जिसमें वो गुप्त रास्ता बना हुआ था। जब वो वहाँ पहुँचा तो वहाँ कुछ लोग पहले से ही मौजूद थे और उनके चेहरे की गंभीरता बता रही थी कि वो किसी गंभीर विषय में बात कर रहे थे। उन्हें देखते ही चैतन्य ने अपनी हालत ठीक की और तनकर चलते हुए उनके
पास पहुँचा। वो सब अपनी बातों में इतने मशगूल थे कि चैतन्य के वहाँ पहुँचने का भी उन्हें पता नहीं चला। चैतन्य ने गला खंखार कर अपनी मौजूदगी दर्ज की और उन सबका ध्यान उसकी तरफ गया। चूंकि चैतन्य उनसे ऊपरी ओहदे में था, इसलिए उसे सामने देखकर वो सभी मुस्तैदी से खड़े हो गए।

"यहाँ क्या बातें कर रहे हो तुम लोग! इतनी बड़ी मुसीबत सिर पर आ गई है और तुम सब गप्पबाजी में लगे हुए हैं।" चैतन्य ने उन सबसे कठोर लहज़े में कहा।

"नहीं सर! वो तो चीफ के गायब होने से हम सब बहुत परेशान हैं। वो जैसन कह रहा था कि उसने सर विलियम को कुछ गार्ड्स के साथ अपने स्टडी रूम में जाते देखा था और बस उसी के बाद से वो गायब हैं।" एक गार्ड ने चैतन्य को जानकारी देते हुए कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य बुरी तरह से चौंका।

"कब की बात है ये?" चैतन्य ने पूछा।

"रात की! बसेरे की पार्टी खत्म होने के बाद की।" उसी गार्ड ने कहा।

"कौन से गार्ड्स? कहाँ हैं? बुलाओ उन्हें!" चैतन्य ने उस गार्ड को आदेश देते हुए कहा।

"वही तो परेशानी है सर! चार गार्ड्स थे और उन चारों की लाशें मिली हैं और उसी के बाद चीफ के गायब होने का पता चला और..." कहते-कहते वो गार्ड रूक गया, जबकि इस नए खुलासे ने चैतन्य को और भी चौंकाया।

"और क्या?" चैतन्य ने पैनी नज़रों के साथ पूछा। उसका सवाल सुनकर सभी गार्ड्स एक-दूसरे की ओर देखने लगे।
"बोलोगे!" चैतन्य झुंझलाकर चिल्लाया।

"सर ! वो... कमांडर एडवर्ड ने अल्फ़ी सर को गिरफ्तार कर लिया है... ये कहके कि...उन्होंने ही चीफ को गायब किया है।" एक गार्ड उलझे हुए लहजे में बोला।

"क्या? अल्फ़ी ने किया! किसने कहा?" चैतन्य ने अपनी कुशल अभिनय क्षमता का परिचय देते हुए कहा।

"कमांडर ने। आगे तो वही जानेंगे कि उन्होंने ऐसा क्यों कहा। पर..." कहते हुए वो गार्ड फिर से रूक गया।

"पर क्या?" चैतन्य ने एक बार फिर से अपनी नज़रें पैनी की।

"सर! गलती माफ करें! पर हमें नहीं लगता कि अल्फ़ी सर ने ऐसा कुछ किया है। वो तो बहुत ही भले इंसान हैं। पिछले चार महीनों से वो हम सबके साथ हैं। काम में गलती के अलावा उन्होंने कभी किसी से ऊँची आवाज में बात नहीं की। हमेशा काम में लगे रहते। पता नहीं कौन उस भले इंसान को फँसाना चाहता है?" वो गार्ड बहुत ही अफसोस भरे लहजे में बोला, जबकि अल्फ़ी के पक्ष में बोलता हुआ वो गार्ड चैतन्य को बहुत ही भला लगा।

"तो तुम लोगों को लगता है कि कोई अल्फ़ी को फँसा रहा है।" चैतन्य ने उन लोगों को तौलते हुए सवाल किया।

"हॉ सर! सच कहें तो हम सबको बहुत ही अफसोस हुआ। वो कमांडर एडवर्ड की नज़रें जिस पर टेढ़ी हो जाती हैं, फिर वो कुछ देखने के लिए जिंदा नहीं रहता। बेचारे! लगता है कि चीफ़ का उनके करीब होना एडवर्ड
सर को चुभ गया। च्च्च्च्! पर अब कर ही क्या सकते हैं? चीफ होते तो वो उनको रोकते... पर वो ही गायब हो गए हैं।" पहले गार्ड ने उतने ही अफसोस के साथ कहा।

"तो तुम लोगों को क्या लगता है? किसने किया होगा ये सब?" चैतन्य ने पूछा। मगर उसका सवाल सुनकर सभी गार्ड्स डर से बंगले झांकने लगे।

"अरे बोलो! बताओगे तो... अल्फ़ी की कुछ मदद की जा सके। वरना बेचारा-बेचारा कहते हुए उसकी लाश उठाना।" चैतन्य ने इस बार थोड़ा घुड़ककर कहा।

"ऐसा मत कहिए सर! उनके लिए मैं अपनी जान भी दे सकता हूँ। मेरी मॉ की तबीयत खराब थी और मेरे पास ईलाज के लिए पैसे नहीं थे। अल्फ़ी सर ने अपनी पूरी बचत मेरे हाथ में रख दी और मॉ का ईलाज करवाने के लिए कहा। उन्होंने रकम लौटाने से भी मना कर दिया। बस इतना कहा कि मॉ बहुत कीमती होती है। उनका हमेशा ख्याल रखना और अपनी मॉ से कहना कि मेरे लिए दुआ करें। यही बहुत है। आप सोचिए! ऐसा भला आदमी किसी को तकलीफ़ क्यों पहुँचाएगा?" एक गार्ड ने बहुत ही भावुक होते हुए कहा।

"हॉ सर! इन चार महीनों में हर किसी ने उनका भला दिल देखा है। ना जाने कितनों की खुले दिल से मदद की है उन्होंने। उन्होंने ना तो कभी किसी से द्वेष रखा और ना ही किसी से जलन किया। वो खुद में ही खुश रहते थे। इसलिए तो सभी उनके बारे में ये खबर सुनकर बहुत परेशान हैं।" पहले गार्ड ने कहा।

और पहली बार चैतन्य को महसूस हुआ कि भलाई की क्या जगह होती है। अल्फ़ी से उसकी किस्मत ने सब कुछ छीन लिया पर उसकी भलमनसाहत नहीं छीन सका और आज उसकी यही भलमनसाहत उसके
काम आ सकती थी।

"अच्छा! तो क्या उसे बचाने में तुम मेरी मदद करोगे। उसने मेरी भी बहुत मदद की थी। पर मुझे नहीं पता था कि उसकी नर्मदिली ने बहुतों को राहत पहुँचाई है। अगर तुम साथ दो तो तुम्हारे अल्फ़ी सर को बचा सकते हैं।" चैतन्य ने एक उम्मीद भरी आवाज में कहा।

"क्या सच में? अल्फ़ी सर के लिए हम कुछ भी कर सकते हैं। आप बताइए कि क्या करना है?" एक गार्ड ने उत्साहित होकर कहा। बाकी गार्ड्स ने भी उसकी हॉ में हॉ मिलाई।

"तो सबसे पहले हमें इस मेंशन का कोना-कोना छान मारना है। मुझे लगता है कि इस मेंशन में छिपे हुए दरवाजे हैं, जिससे कोई ग़लत काम किया जा रहा है। अल्फ़ी ने ही ये आशंका जताई थी। हो सकता है कि इसी वजह से वो फँस गया हो। वैसे वो कहाँ है अभी? पता है क्या तुम लोगों को?" चैतन्य ने उन सभी को काम देते हुए सवाल किया।

"पता चल जाएगा सर! हमारे जैसे और भी लोग हैं। हम सब पूरे मेंशन को छान मारते हैं। कहीं कुछ पता चलेगा, तो बताते हैं।" पहला गार्ड तनकर खड़े होते हुए बोला।

"हाँ! जिसने ये किया है... उसका पता चल जाए तो भी काम बन सकता है।" चैतन्य ने एक और काम सुझाया।

"सर! मुझे तो एडवर्ड सर पर ही शक है। उनकी भी तो चीफ से कभी नहीं बनी। वो तो थोड़े खिसके हुए भी लगते हैं हमें। एक बार तो मैंने उनको इस कुएँ के अंदर देखा था। पता नहीं क्या कर रहे थे? पर उसी दिन से उन्होंने इस कुएँ की तरफ जाने से सबको मना कर दिया।" दूसरे गार्ड ने एक और खुलासा करते हुए कहा।
और ये सुनते ही चैतन्य को अनामिका का ख्याल आया। उसका ख्याल आते ही वो बुरी तरह से हड़बड़ाया था। उसने सभी को तेजी से मेंशन में फैलकर जानकारी इकट्ठा करने के लिए कहा। वो सभी गार्ड्स तुरंत ही वहाँ से चलते बने। उनके वहाँ से जाते ही चैतन्य तेजी हवा की तरह उस कुएँ में उतरा। उसे ध्यान आया कि अनामिका ने एक बार भी उसे पुकारा नहीं था। इसलिए भी उसका ध्यान दूसरी जरूरी बातों की ओर चला गया था। मगर अब अनामिका का ख्याल आते ही वो घबरा गया। इस रास्ते के बारे में पहले से पता होने की वजह से उसे आगे जाने में कोई परेशानी नहीं हुई। जल्द ही उसने उस रास्ते में अनामिका को अपनी ओर ही आते देखा।

"अनामिका!" वो जोर से चिल्लाया।

उसकी आवाज सुनकर इधर-उधर देखती अनामिका ने झटके से उसकी ओर देखा। चैतन्य को अपने सामने देखकर उसके चेहरे पर राहत भरी खुशी फैली थी। वो तेजी से उसकी ओर भागी और उससे जाकर जोर से लिपट गई। चैतन्य ने उसे खुद में समेटा.. मगर इस समय उसे अनामिका का ऐसा करना थोड़ा सा अजीब लगा।

"अनामिका! क्या हुआ?" चैतन्य ने उसे खुद से अलग करते हुए पूछा, मगर अगले ही पल उसकी सूजी हुई आँखों को देखकर वो घबरा गया।

"अनामिका! क्या हुआ? रो क्यों रही हो?" उसका चेहरा अपनी हथेलियों में भरकर चैतन्य ने बहुत ही बेचैनी से पूछा। अनामिका ने उसकी हथेलियों को पकड़ा ही था कि दर्द से उसने अपना हाथ झटक लिया।

"क्या हुआ?" उसे इस तरह हाथ झटकते हुए देखकर चैतन्य ने उसकी कलाईयाँ थामी और उसकी झुलसी हुई हथेलियों को आँखें फाड़कर देखने लगा।
"खंज़र लेते समय में हो गया।" अनामिका ने अपने हाथ छुड़ाते हुए कहा।

"पर तुम रो क्यों रही हो? इन झुलसे हुए हाथों की वजह से तो बिल्कुल नहीं। इतनी कमजोर नहीं हो

तुम!" चैतन्य ने एक बार फिर से अनामिका को कंधों से पकड़कर सवाल किया।

उसका सवाल सुनते ही अनामिका फफक-फफक कर रो पड़ी। अब तो चैतन्य की बेचैनी और भी बढ़ गई थी। उसने रोती हुई अनामिका को एक बार फिर से समेटा और उससे कारण पूछा। अनामिका ने सुबकते हुए उसे दिव्याक्षि की दर्दनाक मौत और माया की चालाकियों के बारे में सब बता दिया... कि किस तरह अपनी काली करतूतों का ठीकरा उस माया ने अनामिका के सिर पर फोड़ दिया और अब सब उसकी तलाश में हैं। सब कुछ सुनकर चैतन्य का दिल बुरी तरह से बैठ गया। वो हर तरफ से बस घिरते ही जा रहे थे।

"माया ने ये ठीक नहीं किया। एक दृष्टि हीन और बुजुर्ग औरत को मारकर उसने अपनी कायरता साबित की है। उस कायर को मैं छोड़ूंगी नहीं।" अनामिका उसी तरह बिलखते हुए बोली।

"अनामिका! मेरी तरफ से भी कोई अच्छी खबर नहीं है।" चैतन्य ने बुझी हुई आवाज में कहा।

"क्या मतलब?" अनामिका ने पूछा।

जवाब में चैतन्य ने उसे सब कुछ बता दिया। उसने ये भी बताया कि कुछ गार्ड्स उनकी मदद करने के लिए तैयार हो गए हैं। उन्हें वो मेंशन की छानबीन के काम में लगा आया है, जिससे जानकारी जुटाने में उनका समय भी बच सकता है।
"ये तो अच्छी बात है। हमें जानकारी चाहिए चैतन्य! हर हाल में चाहिए। मैं यहॉ मरना नहीं चाहती।" अनामिका ने बहुत ही नाउम्मीदी भरी आवाज में कहा।

"कैसी बातें कर रही हो? तुम्हारी जैसी बहादुर लड़की के मुँह से ये सब अच्छा नहीं लगता। तुम तो मेरी हिम्मत हो!" चैतन्य ने उस पर अपना गुरूर लुटाते हुए बहुत ही हौसले भरी आवाज में कहा। जवाब में अनामिका ने अपना सिर हिलाया।

"बस हमें जो नई मदद मिली है, उससे कुछ पता चले तो काम बन जाए। दिव्याक्षि भी बहुत मदद कर सकती थी, मगर अब वो भी नहीं रही। तुम कह रही हो कि परिधि भी गायब है। पता नहीं हमारे सामने ही इतनी समस्याएँ क्यों आ रही हैं?" चैतन्य हताशा से बोला।

"चैतन्य! मुझे कुछ मिला है।" कुछ याद आते ही अनामिका ने कहा।

"क्या?" चैतन्य ने पूछा।

अनामिका ने तुरंत ही उस थैले से उस मोती को बाहर निकाला, जो उसे दिव्याक्षि के मुँह से मिला था। चैतन्य ने उसे ग़ौर से देखा और बोला, "इसमें कुछ तो है अनामिका। पता करना पड़ेगा। चलो!"

"कहॉ?" अनामिका ने पूछा।

"चलो तो! बताता हूँ! मेरे ख्याल से मुझे समझ में आ गया है।" कहते हुए चैतन्य उसे वापस कुएँ की ओर ले गया।

कुछ नए मदद भरे हाथ चैतन्य और अनामिका की हिम्मत बनने के लिए

तैयार थे और वो दोनों भी कुछ और रहस्य सुलझाने को तैयार थे। अब जंग में आमना सामना होना जरूरी है चुका था और वो भी जल्द ही होने वाला था।

भाग 111

चैतन्य ने मोती अनामिका को लौटाया और फिर तेजी से उसे लेकर कुएँ की ओर बढ़ा। वो जल्द से जल्द वहाँ से निकल जाना चाहता था। अभी वो दोनों कुएँ से लगी सीढ़ियों के पास पहुँचे ही थे कि तभी चैतन्य को कुछ खटका सा लगा। उसने आगे बढ़ती हुई अनामिका का हाथ पकड़कर उसे रोका।

"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"वो जानता है! जानता है वो कि हम इस कुएँ से बाहर निकलेंगे।" चैतन्य ने कहा।

"कौन?"

"एडवर्ड! वो जानता है इस रास्ते के बारे में। अगर वो रिसती गुफा में नाकाम हो गया तो वो कुएँ वाले दरवाजे पर हमें जरूर पकड़ सकता है। हम वहाँ से बाहर नहीं निकल सकते।" चैतन्य ने समस्या बताते हुए कहा।
"तो फिर! क्या हम फँस गए हैं?" अनामिका ने घबराकर पूछा।

"हाँ! पर मैं कुछ और भी सोच रहा हूँ।" चैतन्य ने कहा।

"क्या?" अनामिका ने पूछा।

"यही कि सर विलियम ने बताया था कि उस खंज़र को अग्नि रक्षक भी निकाल सकता है। पर तुम कह रही हो कि एडवर्ड गुफा के अंदर आया ही नहीं। इसका मतलब है कि वो यहाँ आने के लिए हमेशा कुएँ के रास्ते का ही इस्तेमाल करता है। जिस दिन मैं पहली बार मेंशन में आया था, तब उस रात मैंने कुएँ के अंदर रोशनी देखी थी। मतलब कि उस रात वो वहाँ था।" चैतन्य ने पुरानी घटनाओं को याद करते हुए कहा।

"हॉ तो!" अनामिका नासमझी से बोली।

"बेवकूफ! मैं ये कह रहा हूँ कि जब वो यहॉ आकर खंज़र ले सकता था, तो लिया क्यों नहीं? क्या वो किसी और के खंज़र लाने का इंतजार कर रहा था?" चैतन्य ने सवालों के साथ अपनी बात समझानी चाही।

"मुझे कुछ समझ में नहीं आया।" अनामिका ने उलझकर कहा।

"समझाता हूँ पर यहॉ नहीं। चलो यहॉ से। वो पिशाच यहॉ कभी भी आ सकता है।" कहते हुए चैतन्य उसे खींचता हुआ एक ओर ले गया।

"अनामिका! यहॉ छलद्वार बना सकती हो तुम?" चैतन्य ने पूछा।

"कहॉ के लिए?" अनामिका ने कहा।
"मेंशन तक! मेरे पास वहॉ की मिट्टी है।" कहते हुए चैतन्य ने अपनी जेब से एक छोटी सी डिब्बी निकाली और अनामिका की ओर बढ़ा दी। अनामिका ने उसे लिया और फिर अपने थैले में कुछ तलाशने लगी। जल्द ही उसने थैले से एक धातु का पात्र बरामद किया, जिसमें पानी भरा हुआ था।

"ये सामान दिव्याक्षि के कमरे से उठाए हैं।" चैतन्य के सवाल से पहले अनामिका ने जवाब दिया और फिर जल्द ही उसने वहॉ एक छलद्वार बना लिया।

"अनामिका!"

"हॉ!"

"एक बात आई है दिल में! कहूँ?" चैतन्य ने छलद्वार की ओर देखते हुए कहा।

"चैतन्य! अपनी उटपटांग बातें अभी शुरू मत करना। प्लीज़!" एक अंदाज़े के साथ अनामिका ने उसे घुड़का।

"उटपटांग बात! हे भगवान! तुमसे इश्क़ लड़ाने के अलावा भी कई और बातें आती हैं मेरे दिमाग में। मैं कुछ और कह रहा था।" अनामिका के तंज को समझकर चैतन्य ने तुनकते हुए कहा।

"और वो क्या है?" अनामिका ने पूछा।

"क्या हम इसे समयद्वार बनाकर वापस नहीं जा सकते।" चैतन्य ने एक बेतुकी सी बात कही।
"नहीं! क्योंकि ये मुझे आता नहीं और अभी हमारी हालत सीखने की भी नहीं है। हमें हर हाल में हेममाया के बनाए हुए समयद्वार तक पहुँचना होगा। मगर अब वहॉ जाना भी मुश्किल ही है। इसलिए फिलहाल यहॉ से निकलते हैं। आओ!" कहते हुए अनामिका ने उसका हाथ पकड़ा।

"काश हम उस एडवर्ड की गर्दन पकड़ सकते। कोई बात नहीं। अभी तो यहॉ से ही चलें। चलो डिबिया रानी! अपने ठिकाने ले चलो हमें।" अनामिका के हाथ से उस डिब्बी को लेते हुए चैतन्य ने कहा और

फिर वो उस छलद्वार के अंदर चली गई। चैतन्य भी उसका हाथ थामे अंदर चला गया। जल्द ही दोनों छलद्वार के अंतिम छोर पर खड़े थे।

"रूको! मुझे देखने दो! कोई बाहर हुआ तो परेशानी हो सकती है। मैं कहूं... तभी बाहर आना।" चैतन्य ने अनामिका को रोकते हुए कहा और फिर खुद ही बाहर निकल गया।

बाहर तो वो निकल आया, मगर उसकी ऑखों के सामने जो था, उसे देखकर उसकी ऑखें फटी की फटी रह गईं। ये मेंशन तो नहीं था, कोई और बिल्कुल ही अंजानी सी जगह थी, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। वो हैरान नज़रों से चारों ओर देखता हुआ आगे बढ़ा। एक अंजान मुकाम उसकी ऑखों के सामने खड़ा उसे चिढ़ा रहा था।

भाग 112

"एक्सक्यूज मी!" पीछे से किसी लड़की की आवाज आई। उसने तेजी से पीछे मुड़कर देखा। सामने एक 17-18 साल की ब्रिटिश लड़की उसे ही जॉचती हुई ऑखों से देखती खड़ी थी। चैतन्य ने अकबका कर पहले तो इधर-उधर देखा और फिर जब आसपास कोई दिखाई नहीं दिया तो उसने सवालिया नज़रें उस लड़की पर डाली।

"मैं!" चैतन्य ने खुद की तरफ ही इशारा करते हुए कहा।

"यस! यू!" उस लड़की ने मुस्कुराते हुए कहा।

उस लड़की का जवाब सुनते ही चैतन्य खुद को दुरुस्त करता हुआ उसके पास गया।

"यस! हाऊ कैन आई हेल्प यू मैम?" चैतन्य ने बड़े ही तमीज से कहा। वो फिलहाल किसी लड़की से बत्तमीजी करने की वजह से खुद को कुटवाना नहीं चाहता था, जबकि उसे पता ही नहीं था कि इस समय वो दुनिया के किस कोने में था।
"माई गॉड! यू कैन स्पीक इंग्लिश!" उस लड़की ने घोर आश्चर्य के साथ दोनों हाथ अपने गले के थोड़ा

नीचे रखते हुए कहा और... चैतन्य को समझ आया कि उससे फिर से गलती हो गई है।

"अ... लिटिल! लिटिल!" अपने फैलाए रायते को समेटते हुए चैतन्य ने कहा।

"चलेगा!" कहते हुए उस लड़की ने लपककर उसकी बांह पकड़ ली और उसके ऐसा करते ही चैतन्य की सॉस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। उसके चेहरे के सभी रंग उड़ने की बजाय उसके चेहरे पर ही आपस में गुत्थम-गुत्था हो गए।

"व्हॉट चलेगा? देखिए मैम! मेरी वाइफ ने देख लिया तो उसके विधवा होने के चांस पक्का 200 पर्सेंट बढ़ जाऍंगे। छोड़िए मुझे!" कहते हुए चैतन्य ने सिहरते हुए अपनी बांह उस लड़की के हाथ से छुड़ाई और छलद्वार की ओर एक ख़ौफ भरी नज़र डाली।

"व्हॉट! वाईफ! आर यू मैरिड?" उस लड़की ने बुझी हुई आवाज में कहा।

"यस! आई एम अ मैरिड मैन। अनफॉर्चुनेटली!" चैतन्य ने बेचारों सा चेहरा बनाते हुए कहा।

"पूअर ब्वॉए!" उस लड़की ने चैतन्य के उतरे हुए चेहरे को देखते हुए हमदर्दी से कहा।

"यस मैडम!" चैतन्य ने भी उसकी हमदर्दी समेटते हुए कहा।

"देन लीव हर!" उस लड़की ने एक बार फिर से उसके करीब आते हुए
कहा।

"आऍं!" चैतन्य चिंहुंका।

"छोड़ दो उसे।" उस लड़की ने अपनी बात चैतन्य को समझाई।

"अरे मैडम! उसे छोड़ा तो वो मुझे तोड़ देगी। क्यों मेरी तेरहवीं का खाना खाने की फिराक में हैं आप?" उसकी बात सुनकर चैतन्य तिलमिला कर बोला। उसे अब झुंझलाहट होने लगी थी। कहॉं वो इतनी बड़ी मुसीबत में फँसे हुए थे और ऐसे समय में ये लड़की उसका सिर खा रही थी।

"ऐसा मत कहो। वैसे अल्फ़ी ने कभी बताया नहीं कि तुम शादीशुदा हो।" उस लड़की ने कहा और उसके कहते ही चैतन्य की इधर-उधर घूमती निगाहें झटके से उसी लड़की की ओर घूमी।

"अल्फ़ी! आप हमें जानती हैं?" सवाल पूछते हुए चैतन्य का दिल अजीब से अंदाज में धड़का।

"हॉं! बहन मानते हैं मुझे वो। उन्होंने ही मेरी हिंदी सुधारी।" उस लड़की ने मुस्कुराते हुए कहा।

"ओह! इसका मतलब कि आप मुझे पहले से जानती हैं।" चैतन्य ने इस बार उस लड़की की ओर ग़ौर से देखते हुए कहा।

"हॉं! तीन दिन पहले वॉकर मेंशन में आपको पहली बार देखा था। पर अब क्या फायदा? आप तो

शादीशुदा निकले।" उस लड़की ने एक आह भरते हुए कहा। जवाब में चैतन्य ने उसे एक झेंप भरी मुस्कराहट दी।

"आप फैसला सुनने के लिए आए हैं?" उस लड़की ने पूछा।
"फैसला! कैसा फैसला?" चैतन्य ने सवाल के साथ अपनी ऑखें सिकोड़ी।

"आपको पता नहीं। अल्फ़ी को गिरफ्तार कर लिया है इन्होंने। मैं जानती हूँ कि उन पर लगे आरोप झूठे हैं। लेकिन ये लोग उनकी कोई बात नहीं सुनना चाहते। मुझे उनके लिए डर लग रहा है। हिम्मत नहीं है मेरी फिर भी उन्हें एक नजर देखने के लिए आ गई हूँ। पता नहीं कैसे देखूंगी?" कहते हुए वह लड़की जोरों से सुबकने लगी। उसके चेहरे पर एक दर्द उभर आया था।

"आपका मतलब है कि ये..." कहते हुए चैतन्य ने सामने खड़ी इमारत पर नजर डाली।

"हॉ! कोर्ट है ये! अहेरी सभा!" उसे लड़की ने चैतन्य के अधूरे वाक्य को पूरा किया।

" हे भगवान! यहॉ कैसे आ गए हम? हम तो मेंशन जा रहे थे।" बुरी तरह से हैरान परेशान चैतन्य खुद में बुदबुदाया।

"आपने कुछ कहा नहीं। वैसे अपना बैज संभालकर रखिएगा। वरना ये लोग अंदर जाने नहीं देंगे।" वो लड़की बोली।

"बैज! कैसा बैज?" सवाल चैतन्य के होठों से फिसला।

"ये!" कहते हुए उसने अपनी पोटली से एक छोटी सी डिबिया निकाल कर उसे दिखाई। चैतन्या ने आंखें फाड़कर उस डिबिया को देखा और फिर अपनी नज़रें उस लड़की की ओर उठाई।
"ये बहुत महत्वपूर्ण जगह है। यहॉ सब अंदर नहीं आ सकते। वैसे है तो कम.... फिर भी उम्मीद करती हूं कि हमें अच्छी खबर सुनने को मिले।" कहकर वो लड़की वहॉ से जाने लगी।

"मिस! आपका नाम?" चैतन्य ने बेसाख्ता ही पूछा।

"अमांडा जॉनसन!" उसने पलट कर जवाब दिया।

"अगर अल्फ़ी को सजा हो गई तो।" चैतन्य ने उसके दिल में झांकने की कोशिश करते हुए कहा।

"ऐसा मत कहिए! बड़ी मुश्किल से एक भाई मिला मुझे! उसे खोना नहीं चाहती। आप जानते हैं सजा हुई तो वो मौत ही लेकर आएगी।" कहते हुए एक बार फिर अमांडा की ऑखें भर आई थीं।

"अच्छा! और अगर मैं ये कहूँ कि मैं उसे बचाने आया हूं तो!" चैतन्य ने अपनी बात उसके सामने रखी। अमांडा ने हैरानी से उसे ऊपर से नीचे की ओर देखा और फिर आसपास देखते हुए उसके करीब आ गई।

"तो मुझे भी मददगार समझिए।" अमांडा ने बेहद गंभीर होते हुए कहा और फिर वहॉ से चली गई।

"अहेरी सभा!" चैतन्य ने सामने खड़ी इमारत को देखते हुए कहा और फिर वो छलद्वार की ओर बढ़ा। अनामिका को छल द्वार के बाहर खड़ा देखकर वो जरा सा चौंका।

"हो गई तुम्हारी गप्पबाजी!" अनामिका ने अपने हाथ सामने बांधते हुए खासे चिढ़े हुए अंदाज में कहा।
"गप्पबाजी नहीं कर रहा था। तुम्हें पता है हम लोग मेंशन नहीं..... अहेरी सभा आ गए हैं।" चैतन्य ने उसे हालातों से मिलवाते हुए कहा।

"यहॉ कैसे आ गए?" चैतन्य की बात से अनामिका भी बुरी तरह चौंकी।

"इसकी वजह से।" कहकर चैतन्य ने अपनी जेब से वो डिबिया बाहर निकाली और फिर अनामिका को अमांडा की कही सारी बातें बताई।

"तुम्हें ये कहाँ से मिली?" अनामिका ने पूछा।

"सर विलियम ने एडवर्ड का पीछा करने के लिए उसकी जो चेन दी थी.... उसे जल्दबाजी में इसी डिब्बे में डाल कर दे दिया था। वापस लौटाने का मौका नहीं मिला।" चैतन्य ने जवाब दिया।

"तो अब मेंशन कैसे जाऍंगे? अनामिका ने पूछा।

"मेंशन नहीं! अंदर चलो पर जरा ध्यान से। लगता है कि हमारे बारे में खबर अभी फैली नहीं है। पता चले कि अंदर हो क्या रहा है?" चैतन्य ने अनामिका का हाथ पकड़ते हुए कहा। पहली बार अनामिका को अपनी भारी-भरकम ड्रेस भरी सी लगी। उसने दूसरे हाथ से अपने बाल थोड़े सँवारे, जिस पर चैतन्य ने उसे अजीब सी नज़रों से देखा।

"अंदर जाना है तो हालत तो ठीक करना ही होगा।" अनामिका ने उसकी अजीब नजरों का जवाब देते हुए कहा।

चैतन्य ने अपना सिर अफसोस से हिलाया और फिर उसे साथ लेकर आगे बढ़ गया। इमारत के मुख्य द्वार के सामने कुछ सिपाही खड़े हुए थे, जो आने वाले लोगों के बैज चेक कर रहे थे। वो उनसे कुछ बातें भी कर रहे थे।
"यहॉ तो सुरक्षा चाक-चौबंद है। संभलकर!" अनामिका ने चैतन्य की बांह पर अपने हाथ कसते हुए कहा।

जल्द ही वे दोनों भी उन गार्ड्स के सामने खड़े थे। चैतन्य ने अपनी जेब से वो डिब्बा बाहर निकाल कर उनमें से एक गार्ड की ओर बढ़ाया। उन्होंने चैतन्य और अनामिका को पैनी नजरों से ऊपर से नीचे तक देखा और फिर वो डिब्बा खोला। उसमें भरी मिट्टी को देखकर उनकी ऑखें सिकुड़ी।

'वो गलती से... नीचे गिर गया था।" कहते हुए चैतन्य ने वो डिबिया वापस ले ली और उस मिट्टी को अपनी हथेली में खाली कर लिया। उसके बीच एक छोटा सा बैज था, जिस पर A लिखा हुआ था। उस गार्ड ने उस बैज़ को अपने हाथ में लेकर उलट-पुलट कर देखा और फिर एक हुंकारी के साथ उसने अनामिका की ओर देखा।

"एंड यू?" गार्ड ने अनामिका से पूछा।

"शी इज विथ मी! माई वाइफ!" अनामिका का हाथ पकड़ कर उसका परिचय देते हुए चैतन्य ने उसे गार्ड से कहा।

"ओह! इफ आई एम नॉट रॉंग.... यू आर फ्रॉम द वॉकर मेंशन्स सिक्योरिटी स्क्वैड।" गार्ड ने चैतन्य के कपड़े पर लगे सिक्योरिटी बैज की ओर इशारा करते हुए कहा।

"ओह यस!" चैतन्य ने भी उस बैज़ को छूते हुए कहा।

गार्ड ने मुस्कुराते हुए उन दोनों की ओर देखा और फिर उन्हें आगे जाने का इशारा किया। जल्द ही वे दोनों अंदर की भीड़ में शामिल हो गए। चैतन्य के कपड़े पर लगे बैज ने उसे गार्ड के संदेह में आने नहीं दिया। फिर भी
दोनों पूरी तरह से सावधान थे। आसपास के माहौल का जायजा लेते हुए दोनों उस बड़े से कमरे की ओर चल दिए जहॉं ज्यादातर लोगों का रूख था।

अंदर सभा खचाखच भरी हुई थी। आखिरकार वारदात भी तो इतनी ही बड़ी थी। अनामिका और चैतन्य ने चारों ओर देखा तो सामने थोड़ी ऊंचाई पर पॉंच बड़ी कुर्सियॉं रखी हुई थीं, जो फिलहाल खाली थीं। उसके सामने क्या हो रहा था यह देखने में चैतन्य और अनामिका को परेशानी हो रही थी। चैतन्य ने इधर-उधर नजरें दौड़ाई, तो उसने अमांडा को अपने पास आते देखा। चैतन्य का ध्यान बरबस ही अनामिका की ओर गया था।

"आप मेरे साथ आऍं!" कहते हुए अमांडा ने चैतन्य का हाथ पकड़ा और उसे खींचते हुए अपने साथ ले जाने लगी। चैतन्य की बांहें थामे हुए अनामिका भी उनके साथ बढ़ गई।

अमांडा उन दोनों को सीढ़ियों से चढ़कर ऊपर की ओर ले गई। उन दोनों ने देखा कि वहॉं से सभा साफ-साफ दिखाई दे रही थी। वहां ढेर सारी हलचलें तो थीं, मगर ना तो अल्फी दिखाई दे रहा था और ना ही जज और ना ही एडवर्ड।

"सब कहॉं हैं?" चैतन्य ने अमांडा से पूछा।

"बस आने वाले हैं।" अमांडा ने नीचे नज़र रखे हुए कहा।

वो बातें कर ही रहे थे कि तभी नीचे हलचलें और भी तेज हो गईं। उन तीनों ने सभा के दरवाजे की ओर देखा। गुस्से में तमतमाता हुआ एडवर्ड सभा के अंदर आ रहा था। उसके अंदर आने पर सभी ने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया। चैतन्य और अनामिका ने एक दूसरे की ओर देखा। यकीनन ये गुस्सा खंजर के हाथ से निकल जाने का था, जिसे दूसरों ने कुछ और
समझा था। वो आगे जाकर एक चेयर पर बैठ गया। वो बहुत ही ज्यादा गुस्से में लग रहा था। उसने अपने एक पैर के ऊपर दूसरा पैर चढ़ाया और अपने सीधे हाथ की कोहनी उस पर टिका कर उस हाथ की मुट्ठियॉं बांधकर अपने चेहरे के सामने रखकर सोचने की मुद्रा में बैठा था। जल्द ही माहौल में फैला हुआ शोर धीमा हो गया।

"जज आ रहे हैं।" अमांडा ने उन दोनों को बताया। चैतन्य और अनामिका ने देखा कि काले और लाल लबादे ओढ़े हुए 5 उम्र दराज व्यक्ति जजों की रखी हुई कुर्सियों के पास बने दरवाजे से अंदर आए और

सभी अपनी जगह पर बैठ गए।
जल्द ही सभा की कार्यवाही शुरू की गई।

मुजरिम को बुलाने का आदेश हुआ और सभी की नजरें सभा के अंदर आने वाले दरवाजे की ओर मुड़ गई। कुछ ही पलों के बाद चैतन्य और अनामिका ने उस दरवाजे से कुछ सैनिकों को अंदर आते देखा जिन्होंने अल्फ़ी को जंजीरों में बुरी तरह से जकड़ रखा था और उसे किसी जानवर की तरह खींचते हुए ला रहे थे। जब वे लोग अल्फी को लोगों के बीच से लेकर जाने लगे, तब आसपास खड़े लोगों ने अल्फ़ी को नोंचने खसोटने की कोशिश की। उसे ऐसी हालत में देखकर जहां चैतन्य परेशान हुआ था वही अनामिका बुरी तरह से दहल गई। उसने रेलिंग पर अपनी दोनों हाथों की उंगलियाँ मजबूती से कस लीं और डबडबाई हुई ऑखों से उसे देखने लगी। वो उसे तकलीफ़ में नहीं देख सकती थी। अचानक ही झुलसी हुई हथेलियां पर दर्द की एक लहर सी उभरी जो अनामिका के होठों से सिसकारी बनाकर निकली।

"अनामिका! संभालकर! चोट है तुम्हारे हाथ में।" उसके दिल के हाल से बेखबर चैतन्य ने बेचैनी से उसकी ओर देखा और उसकी हथेलियां थाम ली। अनामिका ने अपना सिर हिलाया और अपनी जख्मी हथेलियां पीछे कर लीं।
थोड़ी ही देर में अल्फी को सभा के बीचो बीच घुटनों के बल बिठा कर रख दिया। एक सैनिक ने अपने भाले की नोक से उसके सिर को झुका कर रखा था। वो बहुत ही बुरी हालत में था। उसकी हालत देखकर अमांडा भी अब रोने लगी थी।

कार्यवाही के शुरू होते ही शातिर एडवर्ड ने सर विलियम के गायब होने और उनके साथ कुछ बहुत बुरा होने का अंदेशा लगाते हुए इसके लिए अल्फी को कसूरवार बताया। अपनी चाल आगे चलते हुए उसने अल्फ़ी और हेम माया के रिश्ते को सबके सामने रख दिया। ये सबके लिए बहुत ही गंभीर मामला है गया। एडवर्ड ने जजों को बताया कि पिछली रात अल्फी और उसके साथियों ने सर्वशक्तिमंडल की संभावित सदस्य माया का अपहरण कर लिया था। उसने साफ-साफ इल्जाम लगाया कि अल्फी और उसकी पत्नी हेममाया धोखे से सर्व शक्ति मंडल और वॉकर मेंशन पर कब्जा जमाने का बुरा इरादा रखते थे। इसके लिए वो किसी की जान लेने से भी पीछे नहीं हटे। उन दोनों ने सर विलियम की सुरक्षा में लगे चार सिपाहियों को भी जान से मार दिया। मगर किसी तरह एडवर्ड को इन सब के बारे में भनक लग गई। उसने किसी तरह माया को तो इनके चंगुल से छुड़ा लिया मगर अपने पिता को नहीं छुड़ा पाया। सर विलियम के कमरे में खून का फैला होना इस बात का सबूत है कि कुछ बुरा घट चुका है।

एडवर्ड के इल्जाम सुनने के बाद सभा में शोर और भी बढ़ गया। वहां मौजूद सभी लोग मृत्युदंड दिए जाने की वकालत करने लगे। जज ने किसी तरह सभी को शांत करवाया। उन पांच जजों में से एक सबसे बड़ी उम्र के जज ने अल्फी की ओर देखा।

"क्या तुम मानते हैं कि तुमने एक डायन से विवाह किया है।" उस जज ने अल्फी से सवाल किया। अल्फ़ी ने अपना जख्मी चेहरा ऊपर की ओर उठाया और हॉ में सिर हिला दिया। उसे शायद इतना मारा गया था कि वो कुछ बोलने की हालत में नहीं था।

"ये बहुत ही गंभीर गलती है। गलती नहीं.... गुनाह है। क्या तुम्हें पता था कि एक पिशाच और डायन का विवाह कभी नहीं हो सकता।" एक दूसरे जज ने सवाल किया।

इस बार भी अल्फी ने हॉ में सिर हिला दिया। अल्फी की हॉ सुनकर सभी जजों ने एक दूसरे की ओर

देखा।

"अल्फ़ी मीना! तुम पर यह अपराध सिद्ध हो चुका है कि अपनी नीच इरादों को पूरा करने के लिए तुमने सर विलियम की जघन्य हत्या की है। इसलिए ये अहेरी सभा तुम्हें मृत्युदंड देती है।" मुख्य जज ने फैसला सुनाते हुए कहा।

जज के फैसला सुनाते ही पूरे वातावरण में एक शोर सा उठा और लोगों के बीच खुशी की लहर दौड़ पड़ी। वहाँ मौजूद सभी का मानना था कि जो पिशाच अपने ही समुदाय के खिलाफ जाकर इस तरह का जघन्य अपराध करे उसे मृत्यु दंड से कम कुछ नहीं दिया जा सकता। अल्फ़ी की मौत को एक नज़ीर की तरह पेश किया जाने वाला था, ताकि कोई भी पिशाच आगे चलकर ऐसी कोई हरकत करने की ज़ुर्रत ना करे।

भाग 113

"अल्फ़ी मीना! तुम पर यह अपराध सिद्ध हो चुका है कि अपनी नीच इरादों को पूरा करने के लिए तुमने सर विलियम की जघन्य हत्या की है। इसलिए ये अहेरी सभा तुम्हें मृत्युदंड देती है।"

सजा के ऐलान के साथ ही एक ओर जहाँ कमरे में हर्षोल्लास भरा शोर उठा, वहीं तीन धड़कनें बस रूकते-रूकते बचीं। अमांडा ने तो अपना मुँह हथेलियों में भींच लिया। उसकी आँखें सदमे से फैल गईं और उन्होंने आंसुओं को बाहर निकलने की इजाजत दे दी। अनामिका भी चारों ओर मचे शोर से अलग सुन्न सी खड़ी रह गई। चैतन्य का दिमाग भी जैसे कुछ समय के लिए छुट्टी पर चला गया था। वो तीनों बस सिर नीचे झुकाकर घुटनों के बल बैठे अल्फ़ी को देखे जा रहे थे। इस सदमे से सबसे पहले अनामिका बाहर निकली। उसने अपने काँपते हुए हाथों से चैतन्य का हाथ पकड़ा और उसकी ओर मुड़ी।

"चैतन्य! उसे.... बचाओ! प्लीज़... कुछ करो! उसे बचाओ!" अनामिका ने अपनी काँपती हुई आवाज में कहा। उसका सारा शरीर इस झंझावत से काँपने लगा था।

"अनु!" चैतन्य ने उसके काँपते हुए शरीर को थामा और उसकी आँखों में देखा। वहाँ डर था। बहुत सारा डर। इतना डर कि वो कुछ और कहने की
हालत में नहीं थी। चैतन्य ने घबराकर उसे थाम लिया।

"मिस अमांडा! ये सब क्या है? आपके यहाँ इस तरह न्याय होता है। एडवर्ड ने जो कहा वो कहा... पर अल्फ़ी को कुछ कहने की इजाजत क्यों नहीं दी गई। उसे अपना पक्ष रखने का मौका क्यों नहीं दिया गया। और.... किस हत्या की सजा? एडवर्ड ने एक बार भी नहीं कहा कि सर विलियम की हत्या हो गई है। उसने बस कुछ बुरा होने की बात कही। ये सब क्या हो रहा है? आप समझाएँगी!" अनामिका के काँपते हुए शरीर को संभाले.... चैतन्य ने बहुत ही तीखे लफ्जों में अमांडा से पूछा।

"मुझे... कुछ नहीं पता। ये कैसे हुआ? पर... ये ग़लत है। ये तो... एक तरफा फैसला है। मैं.... मैं पता करती हूँ।" इतना कहकर अपना आंसुओं से भरा चेहरा लिए वो एक ओर भागी।

चैतन्य ने अनामिका के कॉपते हुए शरीर को अभी भी थाम रखा था। उसने नीचे की ओर देखा। उसे ये बहुत ही अजीब लगा कि वे लोग इस एक तरफा फैसले से जितना आहत हुए थे, वहीं अल्फ़ी ये सब सुनकर भी चुपचाप सिर झुकाए बैठा था। वो कुछ कह क्यों नहीं रहा था? वो इतना कमजोर तो नहीं था कि अपनी खुशियों को रौंदने वालों के सामने इस तरह घुटने टेक दे। तो हुआ क्या था कि वो सिर झुकाकर इतना बड़ा जुल्म बर्दाश्त कर रहा था।

ये सब सोचते हुए उसकी नज़र अल्फ़ी से हटकर अनामिका की तरफ गई। वो उसके सीने पर सिर टिकाए बेआवाज रो रही थी और उसकी नज़रों का मरकज़ (केन्द्र) अल्फ़ी का थका और झुका हुआ वजूद था।

"अनु!" उसने हौले से आवाज लगाई।

अनामिका ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वो उसी तरह अल्फ़ी पर नज़र
टिकाए सुबकती रही। चैतन्य के दिमाग में एक ख्याल आया और उस ख्याल के आते ही उसका दिल जोर से धड़का।

"परेशान मत हो। सब... ठीक.... हो जाएगा.... माया!" उसने अपने अंदर की सारी हिम्मत जोड़कर ये नाम पुकारा। और उसका दिल धक्क से रह गया, जब ये नाम सुनते ही अनामिका का सुबकना एकदम से रूक गया। वो एकटक अल्फ़ी पर नज़रें टिकाए कुछ देर वैसे ही पड़ी रही और फिर कुछ पलों बाद उसने हौले से अपना सिर उठाकर चैतन्य की ओर देखा। अपनी ऑखों में अजीब से जज़्बे लिए वो उसे ही देख रहा था। जो हुआ.... उसमें उलझी हुई वो चैतन्य से अलग हुई और अपनी नज़रें नीची कर ली। चैतन्य के दिल में एक हूक सी उठी, पर उसने खुद को किसी तरह से संभाला।

"हम बचा लेंगे उसे। मेरा वादा है!" चैतन्य ने अनामिका के कंधे पर हाथ रखकर भीगी हुई आवाज में कहा। अनामिका ने कुछ कहा नहीं। वो बस एकटक अल्फ़ी की ओर देख रही थी। नीचे कागजी कार्रवाई की प्रक्रिया चल रही थी। उसी समय अमांडा दौड़ती हुई आई। वो बहुत ही बदहवास सी नज़र आ रही थी।

"क्या हो गया मिस अमांडा? आप घबराई हुई सी लग रही हैं।" चैतन्य ने भी अपनी घबराहट जाहिर करते हुए कहा।

"घबराने वाली बात ही है। हम इस अदालत में अल्फ़ी के लिए कुछ नहीं कर सकते।" अमांडा ने उसी घबराहट के साथ कहा।

"ऐसा क्या हो गया है? अगर कोई आगे नहीं जाएगा, तो मैं जाऊंगा उसके लिए गवाही देने।" चैतन्य ने भड़की हुई आवाज में कहा।

"इन सबका अब कोई फायदा नहीं। मैंने पता किया। अल्फ़ी ने खुद अपना
जुर्म कबूल किया है... सुरक्षा अधिकारियों और दो जजों के सामने। उसने साफ-साफ कहा कि उसने चीफ विलियम अल्फ्रेड वॉकर की हत्या की है।" अमांडा ने अपने रंग उड़े चेहरे के साथ कहा।

"अल्फ़ी ने ऐसा कहा! हो ही नहीं सकता।" चैतन्य ने बेयकीनी से कहा। अल्फ़ी को जानने वाला कोई

भी ये बात नहीं मान सकता था।

"मुझे लगता है कि उसे बहुत ज्यादा टॉर्चर किया गया है। शायद इसीलिए..." अमांडा ने लहुलुहान और पस्त पड़े अल्फ़ी की ओर दया भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

"ऐसा कैसे हो सकता है? ऐसा नहीं हो सकता। हो ही नहीं सकता। वो उनके सामने हार नहीं मान सकता। वो ऐसा नहीं है।" अनामिका इंकार में तेजी से अपना सिर हिलाते हुए बोली।

"तुम्हें कैसे पता? हो सकता है कि जिसने तुम्हें ये बात बताई, उसने भी बस एक अंदाजा लगाया हो।" चैतन्य ने एक उम्मीद से कहा।

"नहीं! खबर पक्की है। मेरे डैड ने ये बात बताई है मुझे। वो एक सुरक्षा अधिकारी हैं और.... जेल और क़ैदियों की जिम्मेदारी संभालते हैं। अल्फ़ी ने जिनके सामने अपना जुर्म कबूल किया..... उनमें से एक मेरे डैड भी थे। उसने ऐसा ही कहा है। शायद उसने हाथर...." अमांडा ने अपनी बात पूरी करनी चाही मगर अनामिका ने उसे टोक दिया।

"नहीं! मैंने कहा ना ऐसा नहीं हो सकता। चैतन्य! तुम कहो ना! वो ऐसा नहीं कर सकता। अगर उसने ऐसा कहा है तो जरूर कोई और ही बात है। मौत का डर अल्फ़ी को अपने प्यार के कातिलों के सामने नहीं झुका सकता।" अनामिका बदहवास सी चैतन्य का कॉलर पकड़कर बोली।
उसकी बदहवासी देखकर चैतन्य का दिल चाक हुए जा रहा था। वो बस उसकी ऑखों को पढ़ने की कोशिश कर रहा था, जहॉ बस दर्द ही दिखाई दे रहा था। चैतन्य ने हाथ उठाकर अपनी गिरेबान पर कसे उसके हाथों को थाम लिया।

"वादा किया है ना! उसे कुछ नहीं होने दूंगा।" चैतन्य ने भी अपने अंदर की आग को दबाकर कहा। शायद पहली बार वो अनामिका और माया के बीच झूलती उस लड़की की कश्मकश को समझ रहा था या फिर... समझने लगा था। अनामिका ने एक गहरी साँस के साथ अपना सिर उसके सीने पर टिका दिया।

"इतिहास में पहली बार ऐसा हो रहा है कि.... पिशाचों ने किसी पिशाच के खिलाफ ही कार्यवाही की हो। इनकी अदालत में कोई मुलजिम (आरोपी)नहीं होता... सब मुजरिम(अपराधी) होते हैं। अल्फ़ी के साथ ये कोई रहम नहीं करने वाले। वो इस सजा को एक सबक के रूप में सबके दिलों में बैठाना चाहते हैं।" अमांडा ने भरे हुए गले से कहा।

"पर क्या उन्हें पता नहीं है कि अल्फ़ी के पिता कौन है? अगर वो पिशाच है, तो क्यों है?" चैतन्य ने अमांडा से सवाल किया।

"अल्फ़ी ने अपने पिता का नाम नहीं बताया। उसने बस ये कहा कि वो एक पिशाच है। एक विशेष परीक्षण से ये साबित भी हो गया। उस एडवर्ड ने ये भी कहा है कि अल्फ़ी के मन में उसके पिता सर विलियम के लिए प्रतिशोध की भावना थी। वो इस इरादे से भी यहॉ आया था।" अमांडा ने कहा।

और ये सुनते ही चैतन्य और अनामिका को ये समझ में आ गया कि इस बात का खुलासा कि अल्फ़ी, सर विलियम की संतान हैं... उसी के खिलाफ जा सकता है। एडवर्ड ये आसानी से साबित कर सकता था कि अपनी मॉ

के साथ हुए धोखे का बदला लेने के लिए अल्फ़ी ने सर विलियम की हत्या की है। चैतन्य और अनामिका को ऐसा लग रहा था कि उन दोनों का ही दम घुट जाएगा। वो सब एडवर्ड और माया के जाल में इस क़दर उलझ गए थे कि उससे निकलने के लिए जितना जोर लगाते... उतना ही फँसते जा रहे थे।

तभी नीचे से एक बार फिर से तेज शोर की आवाज आई। वो तीनों एक बार फिर से नीचे की ओर देखने लगे। शायद कागजी कार्रवाई पूरी हो चुकी थी।

"ये लोग अब क्या करेंगे अल्फ़ी के साथ?" चैतन्य ने पूछा।

"तय करेंगे कि मौत कैसे दी जाए।" अमांडा ने गहरे दु:ख के साथ कहा और ये सुनते ही अनामिका और चैतन्य की नज़रें नीचे की कार्यवाही की ओर चली गई।

"जैसा कि सिद्ध हो चुका है कि अल्फ़ी ने सर विलियम अल्फ्रेड वॉकर से विश्वासघात करते हुए उनकी हत्या की और अपना ये जुर्म उसने खुद कबूल किया है। इसलिए 'खून के बदले खून' की तर्ज पर मुजरिम को सर विलियम अल्फ्रेड वॉकर के बेटे एडवर्ड विलियम वॉकर के हवाले किया जाता है। वो ही ये तय करेंगे कि इसे किस तरह की मौत दी जाए। सजा के बाद इसका कटा हुआ सिर अहेरी भवन के सामने एक दिन के लिए लटकाया जाएगा, ताकि इसका अंजाम देखकर भविष्य में कोई भी ऐसी ज़ुर्रत करने की गलती ना करे।" अपनी बात खत्म कर मुख्य जज ने कुछ कागजों पर दस्तखत किए और फिर अपने पेन की नोक तोड़ दी। उन कागजों की एक प्रति एडवर्ड को दी गई और एक प्रति सुरक्षा अधिकारी को।

इसके बाद अदालत को अगले केस की सुनवाई के लिए आगे बढ़ाया गया।
अल्फ़ी को जकड़ी हुई बेड़ियों को पकड़े हुए चारों गार्ड्स ने एक बार फिर से उसे खींचकर खड़ा किया। उसकी तकलीफ़ को देखकर अनामिका के होंठों से एक सिसकारी सी निकल गई। एडवर्ड उन गार्ड्स के पास आया और फिर उसने उनसे कुछ कहा। उन गार्ड्स ने तनकर खड़े होते हुए उसे सैल्यूट किया और अल्फ़ी को अपने साथ जानवरों की तरह खींचकर ले गए। एक बार फिर से वो लोगों के बीच से गुजरते हुए उनकी लानतों का हकदार बना हुआ था। अनामिका ने अपना चेहरा तेरा जी से दूसरी ओर घुमाया था कि ये सब देखकर बर्दाश्त कर पाना उसके लिए संभव नहीं था। दिव्याक्षि की मौत से जो आग उसके अंदर लगी थी... अल्फ़ी की सजा ने उस पर तेल छिड़क दिया था।

"मिस अमांडा! पता करो कि अल्फ़ी को कहाँ ले जा रहे हैं? हमें वहाँ जाना होगा। इस एडवर्ड के इरादे सही नहीं है। उसे खुद अल्फ़ी को मारने का अधिकार मिल गया है और वो इसका फायदा कैसे उठाएगा... हमें पता है। जल्दी जाइए!" चैतन्य ने अमांडा से और जानकारी हासिल करने की गरज से कहा।

उसकी बात पर सिर हिलाती हुई अमांडा एक बार फिर से वहाँ से चली गई। अनामिका थकी हुई सी शून्य में घूर रही थी। चैतन्य ने अपनी बांह उसके कंधों पर फैलाकर उसे हौसला देते हुए कहा, "सब ठीक हो जाएगा। तुम्हें पता है ना... कि उसे कुछ नहीं होगा। वो भविष्य में हमारे सामने था अनामिका!"

"पर वो ऐसा नहीं है। वो बुरा है और मैं नहीं चाहती कि वो बुरा बने। हमें उसे बुरा बनने से रोकना होगा चैतन्य।" अनामिका ने तड़पकर कहा।

"हॉ! हम जरूर रोकेंगे।" चैतन्य ने भी हामी भरते हुए कहा।

अभी वो दोनों बातें कर ही रहे थे कि तभी उन लोगों ने डाकिनी और माया
को कुछ अन्य डायनों के साथ सभागार के अंदर आते देखा। उन्हें देखकर एडवर्ड का मुँह बुरी तरह से बिगड़ा था, मगर उसने तेजी से अपने चेहरे के भावों को बड़ी ही कुशलता से छिपाया और उनकी तरफ एक मुस्कुराती हुई नज़र डाली।

अब ये सब यहॉ क्यों आईं हैं? फैसला तो हो गया।" अनामिका ने अपने सूजी हुई ऑखों से नीचे की ओर देखते हुए कहा।

"पता नहीं! कहीं ये लोग दिव्याक्षि की मौत और माया के अपहरण का मामला रखने तो नहीं आए हैं।" चैतन्य ने एक अनुमान के साथ कहा।

"फिर तो लगता है कि हम भी मुसीबत में हैं।" अनामिका ने बेचैनी से कहा।

अभी वो दोनों इसी विषय में बातें कर ही रहे थे कि तभी अमांडा भागती हुई वहॉ आई।

"क्या हुआ? कुछ पता चला।" अनामिका ने बेसब्र होकर पूछा।

"हॉ! उसे मेंशन के कैदखाने में लेकर जा रहे हैं। अब वहॉ से बस उसकी मौत की खबर बाहर आएगी।" अमांडा ने खुद को काबू में करते हुए कहा।

"ऐसा कभी नहीं होगा।" चैतन्य ने अपनी मुट्ठियों को भींचकर कहा।

"मैं कुछ मदद कर सकती हूँ।" अमांडा ने मदद का हाथ बढ़ाते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर चैतन्य ने उसे एक पैनी नज़र से देखा और फिर उससे ये पता करने के लिए कहा कि अल्फ़ी को किस जगह क़ैद में रखा जाएगा और उस कैदखाने की कोई भी चीज लाने के लिए कहा। अमांडा ने तेजी
से हॉ में सिर हिलाया और वहॉ से चली गई। अनामिका की समझ में भी चैतन्य की पूरी बात नहीं आई थी कि वो आखिर क्या करने वाला है? वो उसे उलझन से देख रही थी।

"ऐसे मत देखो। हम उसे क़ैद से निकालने जा रहे हैं। पहले इन डायनों की मंशा भी समझ लें, ताकि अब हम जो भी करें... पुख़्ता और मजबूत करें।" चैतन्य ने अनामिका से कहा और एक बार फिर से नीचे की ओर देखने लगा, जहॉ एक और कार्यवाही शुरू हो चुकी थी। एक दिल दहलाने वाला फैसला लेने के बाद ये सभा एक और फैसले का हथौड़ा उन दोनों के दिमाग में मारने को तैयार थी।

चैतन्य पूरी गंभीरता से नीचे की ओर देख रहा था। अमांडा उन्हें ऐसी जगह ले गई थी, जहॉ से वो तो नीचे की सारी कार्यवाही देख सकते थे मगर नीचे से वो किसी की नज़र में नहीं आते। डायनों के आने से माहौल में सुगबुगाहटें तेज हो गई थीं। सर विलियम की कोशिशों से पिशाचों और डायनों के बीच की

दूरियॉ कुछ कम जरूर हुई थी, मगर खत्म नहीं हुई थी। इसका ताजा तरीन उदाहरण अल्फ़ी और हेममाया के विवाह पर की गई टिप्पणी थी और शायद इसीलिए अल्फ़ी का फैसला पहले ही कर दिया गया था। दोनों ही एक दूसरे की मौजूदगी को अभी भी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। मगर मामला ज्यादा ही गंभीर हो चुका था और इसमें पिशाच, डायन और तांत्रिक तीनों ही समुदायों की संलिप्तता सामने आई थी... इसलिए इस समय तीनों ही समुदायों के प्रमुख का उपस्थित होना आवश्यक था।

पिशाच समुदाय के प्रमुख सर विलियम अल्फ्रेड वॉकर गुमशुदा थे, जिनकी हत्या की बात सामने आ चुकी थी। इसलिए इस समय सर विलियम का बेटा एडवर्ड अल्फ्रेड वॉकर अपने समुदाय की अगुवाई कर रहा था। डाकिनी के आने के बाद डायन समुदाय भी अपना प्रतिनिधित्व ले आया था। अब बेसब्री से तांत्रिक समुदाय के प्रमुख तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ जी के आने का सबको इंतजार था।

चैतन्य के अंदर की बेचैनी हर पल के साथ बढ़ती जा रही थी। हर बीतता लम्हा उसे कुछ खोने का अहसास दिला रहा था। वो तो अल्फ़ी को बचाने के लिए तुरंत निकल जाता, मगर यहॉ की कार्यवाही पर नज़र रखना भी उतना ही जरूरी था। इसी बेचैन हालत में जब उसने अपनी नज़रें अनामिका की ओर घुमाई तो उसे ऑखों में शोले लिए नीचे की ओर घूरता पाया। उसकी सॉसे बहुत ही तेजी से चल रही थीं और उसने अपने दॉतो को पूरी ताकत से भींच रखा था। चैतन्य की नज़रों ने अनामिका की नजरों का पीछा किया तो वो नीचे बेफिक्र सी बैठी माया पर जाकर रुकी। चैतन्य अब सब कुछ समझ गया था। उसने अनामिका को अपने पास खींचा और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसे शांत करने लगा। इस समय ज्यादा जज़्बाती होना उन पर भारी पड़ सकता था।

उसी समय नीचे एक बार फिर से शोर उठा। तांत्रिक श्रेष्ठ का आगमन हो चुका था। चैतन्य और अनामिका दोनों ने ही नीचे की ओर देखा। तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ अपने कुछ अनुचरों के साथ अंदर आ रहे थे। वो एक लंबे-चौड़े बलिष्ठ शरीर के स्वामी थे, जिन पर उम्र अपनी छाप छोड़ने में नाकामयाब दिखाई दे रही थी। उनकी चपलता, फुर्ती और चेहरे का तेज उन्हें सबसे अलग कर रहा था। उनके सभा में आते ही लोगों की कानाफूसियॉ पर लगाम लग गया था, जिससे पता चल रहा था कि उनका रूतबा हर समुदाय में ऊँचा था।

डायन और पिशाच समुदाय के बीच चाहे जितना भी तनाव रहा है... तांत्रिक समुदाय का संबंध पिशाच और डायन दोनों ही समुदायों के साथ बहुत ही अच्छा था। तांत्रिक और डायन समुदाय के बीच विवाह संबंध भी थे, जिसका एक उदाहरण हेममाया के माता-पिता ऐना और तांत्रिक माणिक का विवाह था। वहीं पिशाचों ने खुद को इस तरह के संबंधों से अलग ही रखा था। डायनों के साथ तो ऐसा संबंध एक अनहोनी ही थी, जिसका खामियाजा अल्फ़ी ने भुगता था।

तांत्रिक श्रेष्ठ के आने के बाद आगे की कार्यवाही शुरू की गई। एडवर्ड ने अपनी बनाई हुई कहानी सबके सामने सुनानी शुरू की... कि किस तरह अल्फ़ी और उसके साथियों ने इतना बड़ा षड्यंत्र रचा था? एडवर्ड का कहना था कि "सबसे पहले तो अल्फ़ी और हेममाया नाम की डायन ने विवाह जैसा गंभीर अपराध किया। उसके बाद जब उन्हें ना जाने कैसे... सर्वशक्तिमंडल के बारे में पता चला तो उन्होंने एक षड्यंत्र रचा। हेममाया को माया की जगह बदलने का। इस षड्यंत्र के अनुसार अल्फ़ी ने सर विलियम को भरोसे में लेकर यहॉ अपनी स्थिति मजबूत की और फिर खुद को और अपनी उस डायन पत्नी को आगे के लिए तैयार करने लगा। इसमें उनका साथ अनामिका नाम की एक डायन ने भी दिया, जो बसेरे में धोखा देकर घुस गई और वहॉ की हर जानकारी इन दोनों को देने लगी। चूंकि इस बार सर्वशक्तिमंडल के चुने जाने वाले सदस्यों का नाम छिपाने के बाद भी ना जाने कैसे माया का नाम सबके सामने खुल गया, जिससे अल्फ़ी और हेममाया की योजना खटाई में पड़ती दिखाई देने लगी और इस वजह से ये लोग गलतियॉ कर बैठे और हमारी पकड़ में आ गए और इसी हड़बड़ाहट में इन दोनों ने

उस दूसरी डायन अनामिका के साथ मिलकर कल रात माया का अपहरण भी कर लिया। मुझे इस अल्फ़ी पर बहुत पहले से शक था, इसलिए मैंने अपने कुछ गुप्तचर उसके पीछे रखे थे। लेकिन हम नहीं जानते थे कि वो हमारे पिता को भी इस तरह से नुकसान पहुँचाएगा। हमने किसी तरह आज सुबह माया को उस अल्फ़ी के चंगुल से बचाया, जो बस उसकी हत्या ही करने वाला था। डाकिनी उस समय हमारे साथ ही थीं, जब हमने उस अल्फ़ी को गिरफ्तार किया। उस हेममाया को भी सर विलियम के स्टडी, जहाँ उनका खून बिखरा हुआ मिला था... वहीं से रात ही गिरफ्तार कर लिया गया है। शायद अल्फ़ी मृत शरीर को ठिकाने लगाने गया था और ये हमारे चंगुल में फँस गई। अल्फ़ी को तो अपने गुनाहों की कड़ी सजा मिलने वाली है तो अब सभा को तय करना है कि उस हेममाया को क्या सजा दी जाए?"

अपनी लंबी-चौड़ी मनगढ़ंत कहानी सबको सुनाने के बाद एडवर्ड ने अपनी जगह पर कब्जा जमाया। जहाँ एडवर्ड की कहानी सुनकर वहाँ मौजूद सभी लोगों की आँखों में खून उतर आया, वहीं चैतन्य और अनामिका उसकी चालाकी पर सन्न रह गए। कितनी महारत से उसने इन सबसे अपना और माया का दामन साफ बचा लिया था।

"ये एडवर्ड, हेममाया की गिरफ्तारी की बात क्यों कह रहा है? वो तो मर चुकी है।" चैतन्य ने हैरानी के साथ कहा।
"होगा इनका कुछ मतलब और क्या?" अनामिका ने अंदाजा लगाने से इंकार करते हुए कहा।

"पर... उसने मेरा नाम भी नहीं लिया!" चैतन्य के मुँह से हैरानी भरी आवाज निकली।

"उसने तुम्हें हमारे साथ देखा नहीं है.. शायद इसीलिए।" अनामिका ने एक संभावना जताई।

"पर माया ने तो देखा है ना! वो क्यों छिपाएगी?" चैतन्य ने अपनी उलझन बरकरार रखी।

"क्या पता?" अनामिका ने एक बार फिर से सिर हिला कर अनभिज्ञता जताई।

"इनकी खिचड़ी अभी भी पूरी पकी नहीं है। आखिर मंसूबे तो अभी भी पूरे हुए नहीं हैं ना! पर ये मेरा नाम क्यों छिपा रहे हैं? कोई कारण तो जरूर होगा।" चैतन्य ने कहा।

"पर मेरा नाम तो लिया है। मुझे बचकर रहने की जरूरत है।" अनामिका ने कहा।

"तुम्हें अब अकेले रहने की जरूरत नहीं है। तुम अब मेरे साथ ही रहोगी, जब तक हम वापस नहीं लौट जाते।" चैतन्य ने उसका हाथ कसकर पकड़ते हुए कहा।

वो अभी बातें ही कर रहे थे कि तभी नीचे से फिर से एक बार तेज आवाजें आने लगीं। डायन हेममाया को अपने अधिकार में चाहते थे, जिस प्रकार
अल्फ़ी पिशाचों के अधिकार में था। मगर एडवर्ड इसके लिए तैयार नहीं था। उसका कहना था कि वो उसके पिता की हत्या में संलिप्त हैं, इसलिए वो उसकी अपराधी है। इसलिए उसे सजा देने का हक भी बस पिशाचों को ही है।

डाकिनी ने अपना पूरा जोर लगाया कि जैसे भी परिस्थिति रही हो, डायन को सजा देने का हक उनका होना चाहिए, मगर पिशाचों के वर्चस्व के कारण उनकी ये अर्जी रद्द कर दी गई। जब उसने दिव्याक्षि की

बेरहम हत्या का मामला उठाया, तो इसके लिए अनामिका को दोषी ठहराया गया और उसे डायनों को सौंपने का निर्णय किया गया। माया ने भी चालाकी से डाकिनी को इसके लिए मना लिया और उनकी तरफ से मामला साफ हो गया।

इसी बीच तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ ने इन सबमें तांत्रिक समुदाय की संलिप्तता के बारे में पूछा, जिसकी वजह से उन्हें इस सभा में आना पड़ा था। चैतन्य को लगा कि आखिरकार अब उसके नाम और पहचान का खुलासा भी हो ही जाएगा। मगर उसे घोर आश्चर्य हुआ जब एडवर्ड ने उसकी पहचान पर पर्दा बनाए रखा। उसने बस ये बताया कि उनके गुप्तचरों ने अनामिका के साथ तांत्रिक समुदाय के एक युवक को कई बार देखा था और वो दोनों ही अभी लापता हैं।

ये सुनने के बाद तांत्रिक श्रेष्ठ ने उस युवक को भी सभा के नियमों के अनुसार सजा देने की पैरवी कर दी। हालांकि उन्होंने चेतावनी के साथ ये भी कहा कि किसी भी हालत में किसी निर्दोष को दंड नहीं मिलना चाहिए।

तांत्रिक श्रेष्ठ के इतना कहने के बाद सभा ने अनामिका और अनाम युवक को संदिग्धों की सूची में डाल दिया और उनके पकड़ में आते ही उनका फैसला करने की बात कही। अब तो अनामिका और चैतन्य दोनों के लिए ही स्थिति और भी जटिल हो गई थी। उनका अब यहॉ रूकने का कोई मतलब नहीं रह गया था। उन्हें जो जानना था, वो जान चुके थे और इससे ज्यादा जानने का समय नहीं था।

"अनामिका चलो!" चैतन्य ने उसे खींचते हुए कहा।

"कहॉ?" अनामिका ने पूछा।

"यहॉ से चलो। अभी सबका ध्यान सभा की ओर है। हमें निकलने में आसानी होगी। हमें सबसे पहले मेंशन पहुँचना है क्योंकि अल्फ़ी वहीं है और सबसे बड़ी बात ये है कि सर विलियम भी वहीं से गायब हुए हैं। सबसे पहले तो अल्फ़ी को छुड़ाना है। उसने ये सब क्यों किया ये भी तो पता लगाना होगा। समय बहुत कम है चलो!" चैतन्य ने उतावलेपन से कहा और अनामिका के साथ सीढ़ियों की ओर तेजी से बढ़ गया। वो दोनों सावधानी से सीढ़ियों से नीचे उतरे और फिर सभी की गफलत का फायदा उठाकर छलद्वार की ओर भागे। इस समय उन्हें किसी के देखे जाने से ज्यादा छलद्वार तक पहुँचने की चिंता ज्यादा थी... इसलिए उन दोनों ने तांत्रिक श्रेष्ठ के उन दो अनुचरों के बाहर आने पर ध्यान नहीं दिया, जिन्हें फैसले के तुरंत बाद तांत्रिक श्रेष्ठ ने बाहर भेजा था।

बाहर आने के बाद वो दोनों जब छिपने के लिए एक आड़ में में खड़े थे, तब उन दोनों ने उन अनुचरों की बातें सुन लीं।

"तांत्रिक श्रेष्ठ को ना तो इस एडवर्ड पर भरोसा है और नाही उस डाकिनी और उसकी बेटी पर। हमें जल्दी ही उस युवक को खोजना होगा। अब वो ही हमें सब बता सकता है। सच्चाई का बाहर आना बहुत ही जरूरी है।"

उनके मुँह से ये सुनते ही चैतन्य और अनामिका के चेहरे पर एक उम्मीद दिखाई देने लगी। उन्हें यहॉ से एक बड़ी मदद मिल सकती थी, पर तांत्रिक श्रेष्ठ से संपर्क करने का कोई रास्ता उन्हें उस समय समझ में नहीं आ रहा

था।

"शायद उनसे बात करनी चाहिए।" चैतन्य ने कहा और अनामिका को इंतजार करने का कहकर उनकी ओर आगे बढ़ने के लिए बाहर निकला। मगर उसी समय दो सिपाही कुछ कागज लेकर वहॉ आए और उसमें से एक कागज को किसी चिपचिपे चीज की मदद से दीवार पर चिपका दिया। चैतन्य ने देखा कि वो अनामिका का स्केच था और नीचे उसका नाम भी लिखा था। अनुचरों से बात करने का इरादा छोड़कर वो घबराया हुआ अनामिका के पास आया। वो बहुत ही ज्यादा ही मुसीबत में पड़ चुकी थी और उसे यहॉ से सुरक्षित निकालना चैतन्य के लिए सबसे ज्यादा अहम था।

"क्या हुआ? हवाईयॉ क्यों उड़ रही है चेहरे पर? बात हुई उनसे?" अनामिका ने पूछा।

"वो बाद में! चलो यहॉ से। यहॉ से निकलने के बाद सब बताता हूँ।" कहते हुए चैतन्य और अनामिका ने एक ही दौड़ में छलद्वार तक का रास्ता तय कर लिया। अनामिका ने अपनी ड्रेस दोनों हाथों से ऊपर उठा रखी थी, जिससे उसे दौड़ने में आसानी हो। वहॉ पहुँचते ही अनामिका ने वो द्वार खोला और फिर दोनों उसके रास्ते वापस उसी जगह पहुँच गए, जहॉ अनामिका ने वो छलद्वार बनाया था।

"अब!" अनामिका ने पूछा।

"एडवर्ड अहेरी सभा में है। अब हम उस कुऍं से निकल सकते हैं। आओ!" कहते हुए चैतन्य ने उसे अपने पीछे आने का इशारा किया और खुद तेजी से एक ओर बढ़ गया। अनामिका उसके पीछे भागी और फिर पहले चैतन्य और उसके बाद अनामिका उस कुऍं से बाहर निकले। वो दोनों अब अपनी अगली मंजिल में पहुँच चुके थे, जहॉ से अब आगे का रास्ता तय करना
था, जो आसान तो हर्गिज ही नहीं था। माया और अल्फ़ी की चालाकियॉ उन सब पर भारी पड़ चुकी थी। मगर अब उनके चालें चलने की बारी थी क्योंकि अब ये जंग 'करो या मरो' की दहलीज पर आ चुकी थी।

कुऍं से बाहर निकलने के बाद चैतन्य चारों ओर चौकन्नी निगाहें डाले अनामिका को अपने साथ अल्फ़ी के कमरे की ओर ले गया।

"ये अल्फ़ी का कमरा है। तुम यहीं रहो। फिलहाल तो यहॉ कोई नहीं आएगा। मैं आगे सब देखकर आता हूँ।" चैतन्य ने अनामिका से कहा।

"तुम जा कहॉ रहे हो?" अनामिका ने थोड़ी बेसब्री से पूछा।

"सर विलियम के स्टडी रूम! अगर वहाँ ही सब हुआ है... तो सबूत या फिर आगे का रास्ता भी वहीं से मिलेगा। मैं इशारा करूं तो तुम छलद्वार बनाकर वहीं आ जाना।" चैतन्य ने जवाब देते हुए कहा।

"साथ चलते हैं ना!" अनामिका ने थोड़ी बेचैनी से कहा।

"नहीं अनामिका! अब हमारे पास गलती करने के लिए कोई समय नहीं है। हर कदम फूंक-फूंक कर रखना होगा। हमें माया और एडवर्ड की सही मंशा अभी भी पता नहीं है। हम जितना सोच रहे हैं... बात उससे कहीं ज्यादा गहरी है। यूँ ही उन दोनों ने हाथ नहीं मिलाए हैं।" चैतन्य ने उसे कंधों से पकड़ते हुए कहा।
"तो फिर!" अनामिका ने कहा।

"कहा ना! मैं पहले जाकर रास्ता साफ करता हूँ और फिर स्टडी रूम में पहुँचकर तुम्हें आवाज दूंगा। हो सकता है कि सभी जगहें पहरे और निगरानी में हों। अभी मेरा नाम जाहिर नहीं किया है उन्होंने और ये उन्हें भारी पड़ने वाला है। तुम सावधान रहना और अपना ख्याल रखना और हो सके तो उस मोती का राज खोजो, जो दिव्याक्षि तुम्हारे लिए छोड़ गई है। मोती तुम्हारा रत्न है... दिव्याक्षि या माया का नहीं। मुझे पूरा यकीन है कि उस मोती में कुछ तो ऐसा है, जो दिव्याक्षि तुम्हें दिखाना या बताना चाहती थी। हमारे काम आ सकता है वो।" चैतन्य ने उसे समझाइश देते हुए कहा। अनामिका ने चुपचाप सहमति में अपना सिर हिला दिया। चैतन्य ने आगे बढ़कर उसका माथा चूमा और फिर तेजी से बाहर निकल गया।

अनामिका ने आगे आकर वो दरवाजा अंदर से बंद कर लिया। उसने फुर्ती से वो मोती बाहर निकाला और फिर उसे बहुत ही ग़ौर से देखने लगी।

"आखिर है क्या ये? कैसे सुलझाऊँ अब इस पहेली को? दिव्याक्षि ने इसे अपने मुँह में क्यों रखा था और इसके बाहर निकालते ही उनकी जीभ सूख कैसे गई?" अनामिका के मन में एक के बाद एक कई सवाल आने लगे, जिसमें से एक का भी जवाब उसके पास नहीं था और दिव्याक्षि के ख्याल के साथ ही वो एक बार फिर से भावुक होने लगी। उसने उस मोती को अपनी मुट्ठी में कैद किया और फिर खुद को संभालने की कोशिश में वो पास ही रखे एक संदूक से टकरा गई। उसने बड़े ही कोफ्त से उस संदूक की ओर देखा और फिर ना जाने उसे क्या हुआ कि वो उस संदूक पर हाथ फेरती हुई उसके सामने घुटनों के बल बैठ गई। उसने थोड़ी झिझक के साथ हाथ आगे बढ़ाया और उस संदूक को खोल दिया।

उस संदूक में अल्फ़ी के कपड़े और दूसरी जरूरी चीजें रखी हुई थीं। अनामिका ने किसी अंजाने से अहसास के साथ अल्फ़ी के उन कपड़ों पर
हाथ फिराया और फिर उसकी एक सफेद शर्ट उठाकर उसे सहलाने लगी। वो उसे अपने चेहरे के पास लेकर आई तो एक जानी-पहचानी सी खूश्बू उसके नथुनों में भर गई। ये वो महक नहीं थी, जो उसने हर बार अल्फ़ी के करीब महसूस की थी। ये कुछ अलग ही खूश्बू थी, जिसे वो पहचानती थी। मगर क्यों? इस सवाल में उलझकर उसने एक बार फिर बेचैनी से उस संदूक के अंदर देखा। उसने उसके कपड़ों को हटाया तो उसे एक छोटा सा संदूक सारे कपड़ों के नीचे दबा हुआ मिला। उसने कौतूहल से उसे बाहर निकाला और खोलकर देखा। उस संदूक में एक किताब थी। उसने उस किताब को अपने हाथों में लेकर खोला। वो विलियम शेक्सपियर का लिखा उपन्यास 'रोमियो-जूलियट' था। अनामिका ने उस किताब को उलट-पुलट कर देखा और फिर उस संदूक में नज़र डाली। एक जोड़ी पायल, हाथों से बनी एक तस्वीर और दो मुड़े हुए कागज रखे थे। पायल को एक नज़र निहार कर उसने उस तस्वीर को उठाया।

वो काले रंग से बना एक युवक-युवती का स्केच था, जो चित्रकार के द्वारा बहुत ही खूबसूरती से बनाया गया था। दोनों ही एक साथ बहुत ही खूबसूरत और साथ ही बहुत ही खुश दिखाई दे रहे थे। अनामिका युवती को तो नहीं पहचान सकी, मगर युवक को पहचानने में उसने ना कोई देरी की और ना ही गलती। वो अल्फ़ी था। शादी के जोड़े में। यकीनन साथ की वो युवती हेममाया ही थी, जो खुद दुल्हन के जोड़े में थी। अनामिका ने उस तस्वीर को नज़र भर देखा ही था कि उसके दिमाग में कुछ धमाके से हुए जिससे सहम कर अनामिका ने अपनी ऑखें भींच ली। मगर उन बंद पलकों की चादर में उसके ज़हन को झिंझोड़ते हुए कुछ दृश्य एक के बाद एक आते गए। अनामिका ने उनमें अल्फ़ी और हेममाया को देखा। खुश... बहुत खुश.... और फिर दृश्य बदला और वो खुशियॉ अकथनीय पीड़ा में बदल गईं, जिनका अंत उन दोनों के अलग होते दृश्य के साथ खत्म हुआ।

अनामिका ने झटके से अपनी ऑखें खोली। वो गहरी-गहरी साँसें ले रही थी, जैसे कि बहुत लंबा सफर एक ही बार में तय करके आई हो। उसने
एक बार फिर से अपनी बढ़ी हुई धड़कनों को संभाला और नीचे देखा। वो तस्वीर.... और वो मुड़े हुए कागज जमीन पर पड़े थे। उसने झुककर वो तस्वीर और वो कागज उठाए। तस्वीर से नज़र हटाकर उसने एक मुड़े हुए कागज को खोला। वो एक खत था, जो अल्फ़ी ने हेममाया के लिए लिखा था। अनामिका ने उस खत को बेआवाज पढ़ना शुरू किया और जैसे-जैसे वो आगे पढ़ती गई, उसे ऐसा लगा कि वो अपनी खोई हुई जिंदगी के कुछ लम्हों को फिर से जी रही थी। अल्फ़ी ने उस खत में अपना दिल निकालकर रख दिया था। शायद ये उसने परिधि से मुलाकात के समय हेममाया को देने के लिए लिखा होगा। मगर परिधि के इंकार के बाद उसने ये ख़त उसे नहीं दिया।

जो भी हो... हेममाया ना सही... फिलहाल अनामिका उस ख़त को पढ़ रही थी। उस ख़त को पढ़ने के बाद अनामिका के लिए खुद को संभालना बहुत ही मुश्किल हो गया। ऑखों का बांध तोड़कर जब आंसू उसके गालों से बहते हुए उस ख़त पर लिखी इबारत पर गिरे तब अपनी धुंधलाई हुई ऑखों को पोंछने के लिए अनामिका ने अपनी एक हथेली, जिसमें उसने वो मोती पकड़ा हुआ था की मदद ली। वो अपनी हथेली के निचले भाग से आंसुओं को पोछ ही रही थी कि तभी अनामिका को अपनी उस बंद हथेली से सफेद भाप जैसा कुछ निकलता महसूस हुआ। उसने तेजी से वो मुट्ठी खोली और उस मोती को देखने लगी। वो अभी समझने की कोशिश कर ही रही थी कि तभी उसकी ऑखों से आंसू के कुछ क़तरे तेजी से उस मोती के ऊपर और आसपास गिरे। उसकी हथेली में रखा वो मोती उन आंसुओं के संपर्क में आते ही कांपने लगा और कुछ देर उसी तरह कांपने के बाद वो मोती दो टुकड़ों में बँट गया। उस मोती के बीच से एक सफेद धुएँ का तीर तेजी से अनामिका के चेहरे से टकराया और फिर उसमें घुसकर खो गया।

अनामिका को ऐसा लगा कि कोई उसके अंतर्मन में सरगोशियॉ कर रहा है। उसने ध्यान से सुनने की कोशिश की और फिर उसे समझ में आया कि
वो दिव्याक्षि की आवाज थी। उस आवाज को पहचानते ही उसकी ऑखें हैरानी से फैल गईं।

"दिव्याक्षि! क्या ये आप हैं?" अनामिका ने सवाल किया।

उसके सवाल करते ही दिव्याक्षि की आवाज तेज और साफ हुई। उसके बाद अनामिका के अंतर्मन में जो कुछ भी गूंजा... उसने उसके पैरों के नीचे से जमीन खींच ली। उसे अब समझ में आया कि दिव्याक्षि ने उस मोती को माया से छिपाकर अपने मुँह में क्यों रखा था? वो अपनी बात उस मोती में सहेज रही थीं। माया को लगा कि उसने दिव्याक्षि को मारकर अपना रहस्य छिपा लिया, मगर वो नहीं जानती थी कि सच अपनी मंजिल का रास्ता ढूंढ ही लेता है। कभी-कभी उसे पहुँचने में भले ही देर हो जाए... पर वो पहुँचता जरूर है।

"हे भगवान! तो ये बात है। हमने उस माया को बहुत ही हल्के में ले लिया। सच तो ये है कि वो शुरू से ही सबको अपने इशारों पर नचा रही है। मुझे नहीं लगता कि वो एडवर्ड के साथ भी ईमानदार है। चैतन्य को ये सब बताना ही पड़ेगा। बस जल्दी से वो संपर्क करे।" वो अकबकाई हुई सी आधा चेहरा हथेलियों में छिपाकर फुसफुसाई।

वो अपने हाथ में पकड़े उस दूसरे मुड़े हुए कागज को देख ही रही थी कि तभी उसे बाहर किसी की आहट सुनाई दी। हड़बड़ाकर उसने वो दोनों मुड़े हुए कागज और वो तस्वीर अपनी थैली में डाल दिए। वो वहाँ से हटना ही चाह रही थी कि वही छोटी संदूक उसके पैर से टकराई। अनामिका ने उसे नीचे पड़ा देखा तो तुरंत उठाकर उसे बड़े संदूक में डाल दिया और वो संदूक भी बंद कर दिया। उसने दरवाजे की कुंडी खोली और तेजी से भागकर पर्दों के पीछे छिप गई। उसने दरवाजे के निचले हिस्से में बाहर खड़े इंसान की हिलती-डुलती परछाई देखी और फिर किसी की तेज आवाज आई।
"हॉ! आ रहा हूँ। इस कमरे को बंद करने का आदेश है।" और ये कहते हुए ही एक गार्ड अंदर की ओर आया। उसने पूरे कमरे में एक सरसरी सी निगाह दौड़ाई और फिर बाहर निकलकर एक बार फिर उसने दरवाजा बंद कर दिया। अनामिका ने राहत की साँस ली और फिर बाहर निकलकर चैतन्य के संदेश का इंतजार करने लगी।

****

दूसरी ओर चैतन्य, अनामिका को उस कमरे में छोड़कर तेजी से मेंशन के अंदरूनी हिस्से की ओर बढ़ा। उसने चारों ओर अपनी तेज और चौकन्नी निगाहें भी काम पर लगा रखी थीं। एक-दो जगह कुछ गार्ड्स से बचते हुए वो बड़े से हॉल के पास निकल आया। वहाँ उसने कुछ सिपाहियों को एक साथ खड़े हुए देखा। उनमें वो लड़का भी शामिल था, जिसने चैतन्य को मदद का आश्वासन दिया था। चैतन्य की ओर नज़र जाते ही वो इधर-उधर देखता हुआ तेजी से उसके पास आया।

"कोई खबर?" चैतन्य ने पूछा।

"अल्फ़ी सर को तहखाने में बने कैदखाने में ले गए हैं। हमने रास्ता, जगह और स्थिति को अच्छी तरह से दिमाग में बैठा लिया है। अब आगे आप जो भी कहें।" उस युवक (गार्ड) ने कहा।

"बहुत ही बढ़िया! क्या एडवर्ड के भरोसेमंद गार्ड्स तैनात हैं सुरक्षा में?" चैतन्य ने उस गार्ड से पूछा।
"हॉ!"

"हमें उस सुरक्षा में सेंध लगानी होगी, तभी हम अल्फ़ी को बाहर ला सकते हैं।" चैतन्य ने अपनी योजना का एक हिस्सा उस गार्ड के सामने खोलते हुए कहा।

"चिंता मत कीजिए! हमारे आदमी उनकी जगह ले लेंगे।" उस गार्ड ने बहुत ही आत्मविश्वास के साथ कहा।

"बेहतर! और उस स्टडी के तरफ क्या हाल है?" चैतन्य ने अगला सवाल किया।

"उस तरफ के रास्ते पर दो गार्ड्स तैनात हैं। एडवर्ड के वफादार हैं वो।" उस गार्ड ने बताया।

"ओह! और कोई नई खबर तो नहीं फैली है ना! मतलब कि... मेरे बारे में कुछ। वो दरअसल मैं भी अल्फ़ी और सर विलियम के करीब था। कहीं मुझे भी फँसाने का कोई इंतजाम ना कर दिया गया है।" चैतन्य ने सब साफ़ करने की मंशा से पूछा।

"नहीं! आपके बारे में तो कुछ नहीं कहा किसी ने... पर... एडवर्ड सर के वफादार गार्ड्स कुछ विचार विमर्श कर रहे थे एक साथ। उस बारे में उन्होंने सबसे कुछ भी नहीं कहा। खुद तक ही बात रखी हुई है।" गार्ड ने चैतन्य की जिज्ञासा शांत करते हुए कहा।

"ओके! दो तो मैं संभाल ही सकता हूँ। तुम इस तरफ का काम देखो। सब होशियारी से करना।" चैतन्य ने उसका कंधा दबाते हुए कहा और स्टडी की ओर जाने लगा।
"सर! हमने सुना है कि अल्फ़ी सर ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है।" उस गार्ड की बुझी हुई सी आवाज़ आई।

"हॉ! पर मैं भी जानता हूं और तुम सब भी कि ये मुमकिन नहीं है।" चैतन्य ने जैसे उसके अंदर के संदेह को हटाने के उद्देश्य से कहा।

"मैं जानता हूँ सर। मुझे ये भी पता है कि अल्फ़ी सर बहुत तकलीफ़ में रहते थे यहॉ। उन्होंने किसी को बताया नहीं, पर हमको समझ में आ गया था। लेकिन उस समय भी उनकी नम ऑखों में उम्मीद चमक बनकर रहती थी। पर आज जब वो सिपाही उन्हें बेड़ियों में बांध खींचकर ला रहे थे, तो उनकी उन्हीं ऑखों को मौत की तरह ठंडा देखा मैंने। उनके साथ कुछ ग़लत हुआ है। वो ऐसे हर्गिज नहीं हैं।" उस गार्ड ने भावुक होते हुए कांपती हुई आवाज में कहा।

"मुझे पता है। चिंता मत करो हम उसे बचा लेंगे।" चैतन्य ने उसे हौसला देते हुए कहा। चैतन्य की बात सुनकर उस गार्ड के चेहरे पर एक मुस्कान आई।

और हॉ! अल्फ़ी के कमरे की ओर किसी को जाने नहीं देना। हो सके तो उस कमरे में एक तारा लगा दो।" चैतन्य ने उस से कहा।

"जी सर! जैसा आप कहें और.... आप भी कैदखाने की ओर जाने के लिए उन सीढ़ियों के दाईं ओर के गलियारे में आइएगा। आगे हम रहेंगे रास्ता बताने के लिए।" उसने चैतन्य से कहा और फिर वो तेजी से एक ओर बढ़ गया। चैतन्य उसे कुछ देर जाते हुए देखता रहा और फिर स्टडी रूम की ओर जाने के लिए आगे बढ़ गया। वो अभी सीढ़ियों तक पहुँचा ही था कि उसने अमांडा को उसी दाहिने गलियारे की ओर से आते देखा। उसके चेहरे पर हवाईयॉ उड़ रही थीं। चैतन्य उसे देखकर वहीं रूक गया।
शायद खबरों का एक और पुलिंदा उसकी ओर ही आ रहा था। पहले अनामिका और अब उसके सामने रहस्यों की कड़ियॉ एक-एक करके खुलने के इंतजार में थीं।

चैतन्य सीढ़ियों के पास आड़ में खड़ा हो गया। अमांडा के अपने पास पहुँचते तक वो किसी की नज़र में नहीं आना चाहता था। उसे अभी भी अपनी स्थिति का भान नहीं था कि वो कितनी सुरक्षित थी..... या फिर कितनी बिगड़ चुकी थी। जैसे ही अमांडा उसके पास से गुजरी.... उसने बाज की फुर्ती से झपट्टा

मारते हुए उसे अपनी ओर खींचा और इससे पहले कि.... उसके मुँह से कोई आवाज निकलती, चैतन्य ने अपने दूसरे हाथ से उसका मुँह बंद कर दिया। इसके बाद वो उसे खींचकर सीढ़ियों के नीचे ले गया। वो जगह सबकी नज़रों की हद से थोड़ी दूर ही थी। मतलब कि ध्यान से देखे बिना वहाँ दुबके हुए इंसान को देख पाना मुश्किल ही था। अमांडा को अभी तक अंदाजा नहीं था कि उसे किसने इस तरह से जकड़ लिया था। वो उसकी गिरफ्त से छूटने के लिए लगातार छटपटा रही थी।

"श्श्श्श! मैं हूँ! चैतन्य! आवाज नहीं करना।" चैतन्य उसके कान के पास सफाई से फुसफुसाया और ये सुनते ही अमांडा की छटपटाहट रूक गई। चैतन्य ने अभी भी उसके मुँह से हाथ नहीं हटाया था। अमांडा ने उसे हाथ
हटाने का इशारा किया... क्योंकि चैतन्य की मजबूत पकड़ में उसका दम घुटने को ही था।

"ओह! सॉरी!" चैतन्य ने झेंपते हुए अपना हाथ हटाया।

"तुम यहाँ?" अमांडा ने पूछा।

"हाँ! मेरी बात छोड़िए! पर.... आप बहुत परेशान लग रही हैं। कोई खबर!" चैतन्य ने अमांडा के चेहरे की ओर देखते हुए पूछा।

"हाँ! बहुत बड़ी प्रॉब्लम हो गई है।" अमांडा ने चेहरे पर परेशानी की चादर डालते हुए कहा।

"क्या हो गया?" चैतन्य ने भी फिक्रमंदी से पूछा।

"एडवर्ड आज दोपहर में अल्फ़ी को अपने साथ कहीं ले जाने वाला है। मुझे लगता है कि वो उसी समय..." कहते हुए अमांडा का गला और आँखें दोनों ही भर आए थे।

"ये कमीना तो सचमुच बहुत जल्दी में है। अभी कैदखाने के हालात कैसे हैं? मतलब कि कौन-कौन हैं वहाँ?" चैतन्य ने पूछा।

"अल्फ़ी को एक कोठरी में बेड़ियों से जकड़कर रखा हुआ है। एडवर्ड के सारे चमचे वहाँ की हिफाजत कर रहे हैं। वहाँ.... एडवर्ड की मर्जी के बिना कोई परिंदा भी पर नहीं मार सकता। उसे बाहर निकालना बहुत मुश्किल है।" अमांडा ने हताशा भरे लफ्ज़ों के साथ कहा।

"मुश्किल है... नामुमकिन नहीं। कुछ भी हो जाए... मैं उसे बचाकर ही रहूंगा। अच्छा! एक बात बताइए! क्या मेरे बारे में भी किसी तरह की बातें
हो रही हैं?" चैतन्य ने अपना सवाल होंठों पर उतारते हुए कहा।

"नहीं! तुम्हारा जिक्र तो किसी ने भी नहीं किया। क्यों?" उसके सवाल पर अमांडा ने चौंकते हुए कहा।

"हम्म! ये सच में अजीब है.... और अल्फ़ी से कोई मुलाकात हुई?" चैतन्य ने अगला सवाल किया।

"नहीं! उस कोठरी में एडवर्ड के सिवा और कोई नहीं जा सकता है।" अमांडा ने अफसोस जताते हुए कहा।

"उफ्फ! अच्छा! क्या ये पता है कि रात जिस लड़की की बॉडी मिली थी... उसे कहाँ रखा है?" चैतन्य ने पूछा।

"वो! वो तो मुझे नहीं पता। पता करना पड़ेगा।" अमांडा ने अनभिज्ञता जताते हुए कहा।

"तो फिर करो पता। बहुत जरूरी है ये। काश कि तांत्रिक श्रेष्ठ से मुलाकात हो पाती मेरी। वो बहुत मदद कर सकते हैं। शायद जो हो रहा है... उससे वो भी इत्तेफाक नहीं रखते। मुझे लगता है कि वो अल्फ़ी को भी समझ सकते हैं।" चैतन्य ने थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा।

"तांत्रिक श्रेष्ठ! कहो तो.... मैं.... कोशिश कर सकती हूँ।" अमांडा ने अप्रत्याशित मदद का हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"क्या? आप मेरी मुलाकात करवा सकती हैं उनसे! सच कह रही हैं?" चैतन्य ने थोड़ी बेयकीनी से कहा।

"हॉ! मैं जानती हूँ उन्हें। दरअसल... तांत्रिक श्रेष्ठ और विलियम अंकल
की सोच और समझ बहुत मिलती थी, जिस वजह से उनका साथ में उठना-बैठना बहुत था। इसलिए तांत्रिक श्रेष्ठ अल्फ़ी को भी बहुत अच्छी तरह से पहचानते हैं।" अमांडा ने एक नया रास्ता खोलते हुए कहा।

"और आप... आप कैसे जानती हैं?" चैतन्य ने तफ्तीश निगाह के साथ पूछा।

"मैं उनके पोते रामानुज को इंग्लिश पढ़ाती हूँ। दरअसल उस समय हमारी सिक्योरिटी की ड्यूटी अल्फी के जिम्मे में ही थी। यही वो समय था... जब मैं अल्फ़ी के नजदीक हुई। मैं रामानुज को अंग्रेजी पढ़ाती थी और अल्फ़ी ने मेरी हिंदी सुधारी। वो सचमुच बहुत अच्छा है। पता नहीं... एडवर्ड को उससे क्या परेशानी है? क्यों वो उसे इतना परेशान कर रहा है?" अमांडा ने नाक सुड़कते हुए कहा।

"सब्र रखें! सब ठीक हो जाएगा। बस आप तांत्रिक श्रेष्ठ से मेरी मुलाकात करवा दीजिए किसी तरह! बड़ी मेहरबानी होगी!" चैतन्य ने याचना भरे स्वर में कहा।

"मैं कोशिश करती हूँ। पर संदेश कैसे पहुँचाऊंगी तुम तक?" अमांडा ने एक समस्या सामने रखते हुए कहा।

"हम्म! तांत्रिक श्रेष्ठ से कहना! वायु-रक्षक आपसे मिलना चाहता है।" आखिरकार चैतन्य ने अपनी पहचान खोलते हुए कहा।

"वायु-रक्षक! तुम वायु-रक्षक हो!" हैरानी के साथ ही अमांडा के चेहरे पर एक मुस्कान भी उतरी।

"हॉ!" चैतन्य ने कहा।
"फिर तो मैं कोशिश नहीं... ये काम करूंगी ही। तुम मेरे भाई को बचा लोगे ना!" अमांडा ने उत्साहित होते हुए कहा।

"पूरी कोशिश करूंगा।" चैतन्य ने भी मुस्कुराते हुए कहा।

"यकीन है!" अपनी बात कहकर अमांडा जाने के लिए मुड़ी ही थी कि कुछ सोचकर रूक गई। उसने पीछे मुडकर चैतन्य को सवालिया नजरों से देखा। चैतन्य ने भी अपनी नज़रों से सवाल करते हुए उसकी ओर देखा।

"एक बात बताओ! तुमने मुझे... इतनी बड़ी बात... यूं ही कैसे बता दी? मुझसे मिले कुछ घंटे ही तो हुए हैं।" अमांडा ने खुशगवार हैरत के साथ पूछा।

"बताया ना! मैं वायु-रक्षक हूँ। कौन कैसा है... ये उसे छूकर आने वाली हवा मुझे बता देती है। इससे ज्यादा और क्या कहूँ?" चैतन्य ने बहुत ही नर्मी से कहा।

उसकी बात सुनकर अमांडा के चेहरे की मुस्कान गहरी हुई। ऐसे तनाव भरे हालात में एक भरोसेमंद से मुलाकात होना सच में राहत के समान ही था। चाहे वो अमांडा के लिए हो... या फिर चैतन्य के लिए।

"एक और बात! अंकल के स्टडी में उनकी मेज के दाहिने ओर की दराज में एक स्पेशल चाबी है। उस चाबी से तुम इस मेंशन के सारे ताले खोल सकते हो।" अमांडा ने एक और जानकारी देते हुए कहा।

"क्या एडवर्ड को..." चैतन्य ने पूछना चाहा।

"नहीं! पिछले हफ्ते ही वो चाबी अल्फ़ी ने अंकल के कहने पर तांत्रिक श्रेष्ठ को दी थी। उन्होंने ही कुछ किया उस चाबी में और फिर वो चाबी
अल्फ़ी ने अंकल को लाकर दी थी। बाद में मैंने अंकल को वो चाबी उस दराज में डालते देखा था। अंकल ने ही उस समय मुझे उस चाबी के बारे में बताया था।" अमांडा ने कहा।

"और आपको ये सब क्यों बताया? मतलब कि... अपने बेटे को नहीं बताया। आपको बताया।" चैतन्य ने एक बार फिर से अपनी पैनी नज़र उस पर डालते हुए कहा।

"वो तो अंकल ही बेहतर बता सकते हैं। पर... मेरे ख्याल से ये शायद इसलिए हो सकता है कि.... मैं भी उन्हीं की विचारधारा की समर्थक रही हूँ। कई बार मैं और अंकल घंटों किसी एक मुद्दे पर बातें किया करते थे। उनके मन में इच्छा थी... कि एडवर्ड और मेरा विवाह हो जाए... पर उन्हें पता था कि मैं ये कभी नहीं करूंगी।" अमांडा ने अपनी धीमी सी आवाज़ में कहा।

"वो क्यों?" चैतन्य ने तपाक से पूछा।

"सही और ग़लत की पहचान मुझे भी है।" चैतन्य पर हसरत भरी एक नज़र डालते हुए वो बोली और उसकी नज़र पहचानकर चैतन्य थोड़ा असहज हुआ था।

"मैं चलती हूँ। सबसे पहले तांत्रिक श्रेष्ठ तक तुम्हारा संदेश पहुँचा दूं।" अपने जज़्बातों को समेटते हुए अमांडा ने कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने हुंकारी भरी।

"और हाँ! याद रखना कि उस कैदखाने में कोई भी जादुई ताकत काम नहीं करती। तुम्हें जो भी करना है अपने बल पर करना होगा और वो चाबी तुम्हारे काम आएगी। वैसे भी शक्तियों का इस्तेमाल सही

समय और
सही जगह में ही करना चाहिए।" अमांडा ने उसे सबसे ज्यादा जरूरी बात बताते हुए कहा।

"हम्म! थैंक्यू!" चैतन्य ने आभार जताते हुए कहा। अमांडा ने उस पर एक नज़र डाली और फिर तेजी से बाहर की ओर चली गई। चैतन्य ने छिपकर उसे जाते हुए देखा और फिर आसपास नज़र डालते हुए सीढ़ियों से ऊपर की ओर चला गया। ऊपर आकर उसने एक गहरी साँस ली और फिर तनकर खड़ा हो गया। नीचे फँसने के चांस ज्यादा थे, पर यहाँ समझदारी से सब संभाला जा सकता था। अमांडा ने कहा कि उसके बारे में अभी तक कोई भी अफवाह फैली नहीं थी... पर वो इसे हल्के में नहीं ले सकता था। खतरा सिर के ऊपर मुसीबतों से भरे गुब्बारे की तरह लटक रहा था और उसकी लापरवाही उस नुकीली पिन का काम कर सकती थी, जो उसे मुसीबतों से सराबोर कर सकती थी। चारों ओर देखते हुए वो आगे बढ़ा। रास्ते में उसे दो गार्ड्स मिले, जिन्होंने उसे वहाँ कुछ अजीब सी नज़रों से देखा। वो कुछ कह पाते उससे पहले ही चैतन्य ने एडवर्ड की चेन, जो सर विलियम ने उसे दी थी... उन्हें दिखाते हुए कहा कि ये स्टडी में रखना है।

"ओह! दरअसल... कमांडर एडवर्ड ने कहा था कि यहाँ उनके चुने हुए हम कुछ गार्ड्स के अलावा दूसरों को आना मना है।" उनमें से एक गार्ड ने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ कहा।

"वो गार्ड्स के लिए होगा। मैं गार्ड नहीं!" चैतन्य ने भी पूरी रौबदार आवाज में उन्हें अपना सुनहरा सुरक्षा बैज दिखाते हुए कहा।

"नॉट इवन फॉर यू!" पीछे से किसी की आवाज आई। चैतन्य ने मुड़कर देखा। हेनरी और जेकब खड़े थे। उन दोनों को देखकर चैतन्य के माथे पर बल पड़े थे। ये दोनों ही एडवर्ड के मुँहलगे थे और वो इन दोनों को ही सुरक्षा दस्ते का प्रमुख बनाना चाहता था। मगर पहले अल्फ़ी और बाद में चैतन्य की वजह से ये संभव नहीं हो पाया... जिससे एडवर्ड का तो पता
नहीं... इन दोनों का खून अल्फ़ी और चैतन्य को देख-देख कर सूख ही गया था। उन दोनों ने वहाँ मौजूद दूसरे गार्ड्स को वहाँ से जाने के लिए कहा।

"वेल! व्हॉट इज योर प्रॉब्लम विथ मी? आई केम हियर फॉर माई वैरी इंपोर्टेंट ड्यूटी। हट जाओ सामने से! वरना...." चैतन्य उन दोनों के सामने अपनी उंगली घुमाते हुए चेतावनी देने वाले लहजे में कहा।

"वरना... क्या?" हेनरी ने उसकी ऊंगली पकड़ते हुए कहा।

"अदरवाइज़.... ही विल गेट अस फायर्ड फ्रॉम द जॉब!" जेकब ने बनावटी डर दिखाते हुए कहा।

"ओह माई गॉड! आई एम स्केयर्ड!" हेनरी ने भी जेकब का साथ देते हुए कहा।

"यस! इट सिम्स दैट... हिज एयर विल हैव टू बी टाइटेन्ड... सो दैट ही इज अफ्रैड टू इवन टेक अ ब्रेथ इन फ्रंट ऑफ अस।(लगता है इसकी हवा ऐसी टाइट करनी पड़ेगी कि ये हमारे सामने साँस लेने से भी डरे।)

"शट अप!" चैतन्य उनके शब्दबाणों से बुरी तरह तिलमिलाया था।

"व्हाई शुड वी बी साइलेंट? वी वांट टू नो दैट.... आफ्टर आल... हाऊ डिड यू गेट सच अ हाई

पोजिशन? व्हॉट्स सो स्पेशल अबाउट यू? हँ! शो अस.... सम ऑफ योर्स स्पेशियलिटीज। लेट अस आल्सो नो!" चैतन्य के चारों ओर चक्कर लगाते हुए हेनरी ने उसे इधर-उधर छूते हुए कहा। जेकब ने भी पूरी तरह उसका साथ दिया।

"ओह याह! व्हाई नॉट! आई विल डेफिनेटली फुलफिल दिस विश ऑफ
योर्स!" इतना कहते ही चैतन्य ने झपट्टा मारकर हेनरी की कलाई को पकड़ा और फिर एक पल की भी देरी किए बिना उसने उसकी कलाई को पूरी बेदर्दी से कंधे से मोड़ दिया। एक तेज चीख के साथ हेनरी अपने घुटनों पर गिर पड़ा। दर्द की शिद्दत से उसने अपने दूसरे हाथ से उस कंधे को पकड़ लिया था। चैतन्य के इस यकायक हमले के लिए वो दोनों ही तैयार नहीं थे।

चैतन्य की पकड़ इतनी मजबूत और निर्दयी थी कि हेनरी चीखने के अलावा और कुछ नहीं कर सका। मगर ये सब देखकर जेकब तुरंत हरकत में आया और उसने चैतन्य की गर्दन अपनी बांह में पीछे से फँसा ली और पूरी ताकत से उसे पीछे की ओर खींचने लगा। चैतन्य ने अपने भिंचे हुए जबड़े को और ज्यादा भींचा... और हेनरी पर अपनी मजबूत पकड़ बनाए हुए उसने अपने दूसरे हाथ की कोहनी जेकब की पसलियों में पूरी ताकत से घुसा दी। दर्द से जेकब का मुँह और ऑखें फैल गईं। उसके मुँह से चीख निकल पाती... उससे पहले ही चैतन्य ने एक जोरदार पंच उसके चेहरे पर मारा। वो बिलबिला कर तेजी से पीछे हुआ। उसकी नाक फट गई थी। भारी दर्द से उसने अपना चेहरा अपनी हथेलियों में छुपा लिया था। उसके पीछे हटते ही चैतन्य ने फुर्ती से हेनरी की कलाई को और उमेठा... और फिर एक झटके से उसके शरीर को हवा में घुमाते हुए जमीन पर पूरी ताकत से मुँह के बल पटक दिया। हेनरी की एक तेज खराश चीख उस गलियारे में फ़ैल गई। मगर वो चीख उस गलियारे से बाहर जाती उससे पहले ही चैतन्य ने अपनी एक ऊंगली के इशारे से हवा के रूख को बांध लिया। हेनरी की चीख की आवाज उस गलियारे की दहलीज तक आते-आते रुक गई।

खून सने चेहरे के साथ एक ओर गिरा पड़ा जेकब, चैतन्य की हरकतों को ऑखें सिकोड़े समझने की कोशिश कर ही रहा था कि चैतन्य ने उसकी ओर देखा। उसने उस समय भी हेनरी की वो कलाई पकड़ी हुई थी और उसका एक पैर हेनरी की गर्दन पर था। चैतन्य के होंठ टेढ़े हुए और एक
कुटिलता उसकी ऑखों से उन होंठों तक मुस्कुराहट बनकर उतरी। उसने अपनी उस ऊंगली, जिससे उसने चीख की आवाज को बाहर जाने से रोका था... जोर-जोर से गोल-गोल हिलाने लगा। उन सभी को अचानक ही हवा का दबाव उस गलियारे में बढ़ता हुआ महसूस हुआ और फिर तेज हवा के चलने की तरह एक आवाज उनके कानों से टकराई। जमीन पर हाथ टेके हुए बदहवास सा जैकब अपने चारों ओर देखने लगा कि ये आवाज़ आ कहॉ से रही है और कोई जवाब ना मिलने पर एक बार फिर उसने चैतन्य की और देखा। उसी समय चैतन्य ने अपनी गोल-गोल घुमाते हुई उंगली वाला हाथ तेजी से जेकब की ओर इस तरह झटका, जैसे कि उसने जेकब पर कोई चीज फेंकी हो और इससे पहले कि जेकब समझ कर खुद को संभाल पाता उससे पहले ही हवा के एक तेज बवंडर ने उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया। अगले ही पल उसका सारा शरीर उस बवंडर के अंदर हिचकोले खा रहा था। उस पर ज्यादती ये कि हेनरी की कानफाड़ू चीख भी उस बवंडर के अंदर ही हिचकोले खाती हुई जेकब के कान को फाड़ रही थी। कुछ ही देर में इस दोहरे हमले से जेकब हलकान हो गया। अगले ही पल चैतन्य के इशारे पर उस बवंडर ने जेकब को पूरी बेदर्दी से छत की ओर उछाल दिया। उसका सर पूरी ताकत से छत से टकराया और फिर वो उतनी ही तेजी से नीचे की ओर आकर किनारे रखे एक मेज से टकराते हुए जमीन पर गिर पड़ा। उसका सिर फट गया था और उसका पूरा चेहरा उसी के खून से नहा चुका था। ये भी कम था कि वो मेज... जिससे वो टकराया था, वो उसके ऊपर गिर पड़ी और उसके किनारे की नोक सीधे उसकी बाईं ऑख में घुस गई। फच्च्च्च् की आवाज के साथ खून के छींटे चारों ओर बिखर गए। कुछ देर कॉपते रहने के बाद जेकब का शरीर ठंडा पड़ गया। वो मर चुका था।

वहीं दूसरी ओर चैतन्य की गिरफ्त में अभी भी फँसा हुआ हेनरी ऑखें फाड़े जेकब की ऐसी दुर्गति देखता रहा। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि एक अकेले चैतन्य ने उसे बेबस करने के बाद जेकब को इतनी बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया था। उसका सारा शरीर डर से कॉपने लगा। जिस तरह से चैतन्य ने उसके हाथ को अभी तक बेदर्दी से मरोड़कर पकड़ा हुआ था... उसे लगा कि चैतन्य अगले ही पल उसे उखाड़ कर फेंक देगा। मगर.... आश्चर्यजनक रूप से चैतन्य ने उसका हाथ छोड़ दिया और उसकी गर्दन के पिछले हिस्से पर जमे अपने पैर को हटा लिया। उसके शिकंजे से छूटते ही हेनरी तेजी से पीछे की ओर हटा। उसका वो हाथ जिसे चैतन्य ने शुरू से अभी तक मरोड़ कर रखा था... वो सुन्न पड़ गया था। कंधे पर उठ रहे बेतहाशा दर्द के बाद आगे उसे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। अपने दूसरे हाथ से उसे पकड़े हुए वह लगातार पीछे की ओर खुद को घसीट रहा था और चैतन्य अपनी ऑखों में उतनी ही बेरहमी लिए कदम-कदम उस की ओर बढ़ रहा था।

"स...स... सॉरी! फॉरगिव भी प्लीज़! प्लीज़ डॉन्ट किल भी!" मौत के डर से बौखलाया हुआ हेनरी उसके सामने गिड़गिड़ाते हुए बोला।

"हॉ तो... क्या कह रहा था तू? मेरी हवा टाइट करेगा! पता भी है... कि कैसा लगता है.... जब हवा टाइट होती है। बताऊं!" चैतन्य उसके सामने एक घुटना जमीन पर टिका के और दूसरे खड़े घुटने पर अपना हाथ टिकाकर उसके सामने बैठते हुए बोला।

डर से दोहरे हुए जा रहे हेनरी ने तेजी से इनकार में अपना सिर हिलाया, जिस पर चैतन्य अफसोस से अपना सिर हिलाता हुआ खड़ा हो गया। उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए और फिर अपनी हथेलियों को घूर कर देखने लगा। कुछ देर उन्हें घूरने के बाद वो अजीब से तरीके से अपने उन दोनों हाथों को हेनरी के चारों ओर गोल-गोल घूमाने लगा। एक बार के लिए हेनरी को ऐसा लगा कि उसे भी जेकब की तरह ही मौत मिलने वाली है। पर चैतन्य के एक ओर खड़े होने के कुछ देर बाद तक भी जब कुछ नहीं हुआ तो उसने ढेर सारे सवालों के साथ चैतन्य की ओर देखा। चैतन्य मुसकुराया और फिर अपना हाथ इस तरह घुमाने लगा, जैसे कि किसी चीज को घुमाते हुए कस रहा हो। उसके ऐसा करते ही हेनरी को अपने आसपास एक हल्कापन सा महसूस होने लगा। उसे अपने दिल की धड़कनें बढ़ती हुई महसूस हुईं और फिर उसे सॉस लेने में तकलीफ होने लगी। सारा शरीर पसीने से भीग गया। अपने गले पर हाथ रखे हुए वह मुंह फाड़ कर हवा अपने फेफड़ों में भरने की कोशिश करने लगा, मगर उसके लिए पर्याप्त हवा तो वहॉ थी ही नहीं। वो तो हर पल के साथ उसके चारों ओर कम होती जा रही थी। धीरे-धीरे उसकी आंखों के सामने हर चीज धुंधली होकर झिलमिलाने लगी। हवा की कमी से रक्त दबाव बढ़ने के कारण उसकी ऑखों के कोरों से खून झलकने लगा और नाक से खून का फव्वारा सा फूट गया। उसका शरीर ऐंठने लगा और फिर वो धीरे से एक और लुढ़क गया। एक दो बार हिचकी लेने के बाद वो शांत पड़ गया।

वहीं चैतन्य बड़े ही आराम से एक ओर सीने पर हाथ बांधे खड़ा इस दर्दनाक दृश्य को देख रहा था। सब कुछ शांत होते ही वह आगे बढ़कर हेनरी की लाश के पास आया। उसने हवा में हाथ हिलाया और फिर अपने पैरों की ठोकर से उसे सीधा कर दिया। फटी हुई ऑखों और नाक से निकले हुए खून से हेनरी का चेहरा सन चुका था। सॉस लेने की कोशिश में उसका मुँह खुला रह गया था। हवा की कमी से उसके होंठ और नाखून नीले पढ़ चुके थे। वो भी मर चुका था।

"हुँह! चले थे वायुकी हवा टाइट करने। जंग की आगाज़ का तोहफा मुबारक हो.... एडवर्ड!"

चैतन्य ने बहुत ही कड़वाहट से कहा और खड़े होकर अपने कपड़े झाड़ने लगा, जिसमें छिटके खून के छींटे उसकी शोभा बढ़ा रहे थे। फिर वो तेजी से स्टडी रूम की ओर बढ़ गया। आखिरकार सहन करते-करते उसकी
सहनशक्ति जवाब दे ही गई... कि अब जब लड़ना ही है... तो फिर रहम कैसा? जब सामने वाला बेरहम हो चुका है तो अपने नरमदिल को छुट्टी पर भेजने का समय आ चुका था। माया और एडवर्ड के खूनी शुरूआत के बाद अब चैतन्य ने भी दुश्मन के रक्ततिलक से युद्धघोष कर दिया था। यकीनन वायु का ये तोहफा एडवर्ड को बिल्कुल भी पसंद नहीं आने वाला था और इसके परिणाम खून से नहाने वाले थे।

जेकब और हेनरी के शवों को पीछे छोड़कर खून से सना हुआ चैतन्य सीधे स्टडी रूम की ओर बढ़ गया था। परेशान तो वो पहले से ही था.. मगर पिछली रात से जिस तरह तेजी से घटनाएँ बदली थीं... उसने उसे तिलमिला कर रख दिया था, जिसका खामियाजा पीछे जेकब और हेनरी को अपनी जान देकर भुगतना पड़ा था। स्टडी रूम की ओर जाते हुए उसे और कोई नहीं मिला।

स्टडी रूम के सामने पहुँचकर उसने उसके दरवाजे को पैनी नज़रों से देखा। रास्ते में कोई नहीं मिला.. इसका मतलब ये नहीं कि अंदर भी कोई नहीं मिलेगा। वो आगे हर खतरे या हमले के लिए पूरी तरह से तैयार था। अपनी ऑखों में शोले भरकर उसने उस दरवाजे को खोला और फिर हल्का सा धक्का दे दिया। एक धीमी चरमराहट के साथ वो दरवाजा खुल
गया। कमरे में नीम अंधेरा फैला हुआ था। दिन निकल आया था.. मगर उस कमरे की खिड़कियों पर मोटे पर्दे अभी भी गिरे हुए थे। चैतन्य धीमे और सधे हुए कदमों के साथ अंदर गया। कान, ऑखें और हाथ पूरी तरह से मुस्तैद थे। अंदर आकर उसने अपनी नज़रें कमरे में चारों ओर घुमाई। किसी और की मौजूदगी के अहसास से वो कमरा पूरी तरह से खाली था। चैतन्य ने धीरे से दरवाजा बंद कर दिया।

उसने देखा कि लकड़ी के पार्टिशन के दूसरी ओर की आदमकद खिड़की के पर्दे पूरी तरह से बंद नहीं थे, जिससे छनकर रोशनी कमरे में आ रही थी, जिससे वो कमरा अंधेरे-उजाले का खेल... खेल रहा था। चैतन्य उस लकड़ी के पार्टिशन को पार करके उस खिड़की तक गया और पर्दे को एक ओर हटाकर बाहर का जायजा लिया। दूर-दूर तक कोई भी नहीं था। वैसे भी वो हिस्सा सर विलियम के बेहद निजी उपयोग के लिए था.. इसलिए इस तरफ आम आवाजाही नहीं थी। चैतन्य ने धीरे से एक ओर का पर्दा हटा दिया और कमरे में नज़र डाली। कमरा अब उसके लिए पर्याप्त रूप से रोशन था।

वो तेजी से कमरे में आया। नीचे पूरा फर्श खून से सना हुआ था, जो अब सूख चुका था। उस खून को देखकर चैतन्य का दिल दहल गया, ये सोचकर कि ये सर विलियम का खून था... वरना खून की होली तो वो अभी-अभी खेलकर आया था। एक बार फिर से सभी कोनों पर नज़र डालने के बाद उसने पूरा इत्मीनान कर लिया। अपने कमर पर हाथ रखकर वो खड़ा हो गया और अपनी ऑखें बंद कर लीं। अनामिका को बुलाने का समय आ गया था। उसने उससे संपर्क किया और अपने पास आने के लिए कहा। कुछ ही देर में उस कमरे की एक दीवार पर एक दरवाजा खुला और अनामिका उस कमरे में आ

गई। कमरे में आने के बाद वो भी चारों ओर बहुत ही ग़ौर से देखती हुई चैतन्य के पास आ गई।

"चैतन्य! ये तो वही कमरा है... जहाँ उस रात मैंने उस किताब को देखा था।" लकड़ी के पार्टीशन की ओर देखते हुए अनामिका ने कहा।

"अच्छा! कहाँ?" चैतन्य ने उसकी बात सुनने के बाद अपनी कमर से हाथ हटाते हुए अनामिका की नज़रों का पीछा करते हुए कहा।

"वो... वहाँ!" अनामिका ने एक ओर इशारा किया और फिर चैतन्य की ओर पहली बार ध्यान से देखा। खून के छींटों से सनी उसकी सफ़ेद शर्ट को देखकर अनामिका को दहशत हो आई। वो तेजी से उसके पास आई और....

"ये तुम्हारी शर्ट! क्या हुआ? तुम्हें चोट लगी है क्या?" उसे ऊपर से नीचे तक टटोलते हुए अनामिका ने बहुत ही घबराहट के साथ पूछा।

"नहीं!" उसके हाथों को पकड़ते हुए चैतन्य ने कहा।

"तो फिर ये खून?" अनामिका ने उसकी शर्ट की ओर इशारा करते हुए पूछा।

जवाब में चैतन्य ने उसे सब बता दिया। अनामिका एक पल के लिए सकते में आ गई। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि सचमुच चैतन्य ने ऐसा कुछ कर दिया था।

"क्या सच में? तुमने उन दोनों को मार दिया। क्यों?" अनामिका ने सहमी हुई आवाज में पूछा।

"तो क्या आरती उतारता उनकी? मैं तो पहले से ही उन दोनों से भरा पड़ा था। दो दिन पहले रसोई में काम करने वाली एक लड़की को खींच ले गए थे ये दोनों। अल्फ़ी ने ऐतराज उठाया... तो उस एडवर्ड ने उन दोनों को बचा लिया। वो लड़की भी सदमे से उनके खिलाफ कुछ नहीं बोल सकी और वो बच गए। अल्फ़ी ने बताया था कि... एडवर्ड और उसके सभी सहयोगी बहुत ही क्रूर हैं। सर्वश्रेष्ठ होने का भ्रम और अहंकार इनके रगों के खून में साथ-साथ दौड़ता है।" चैतन्य ने बहुत ही कड़वाहट के साथ कहा।

"मगर..." अनामिका ने बोलना चाहा।

"याद रखो अनामिका... ज़ालिम की अंधी पैरवी करने वाला भी उतना ही जालिम होता है। कभी-कभी सत्य और न्याय की रक्षा के लिए संहार जरूरी हो जाता है... वरना इतिहास में ना कोई रामायण होती... और ना ही महाभारत!" चैतन्य उसके करीब आते हुए बोला। अनामिका ने उसकी आँखों में देखा और फिर अपने कदम पीछे खींच लिए।

"मगर... इससे एडवर्ड..." अनामिका ने कहना चाहा।

"भाड़ में जाए वो एडवर्ड! कायर कहीं का! हर जगह बस अपने चमचों को फैला रखा है। बिल्कुल उस माया की तरह!" चैतन्य तिलमिला कर बोला और माया का नाम आते ही अनामिका के दिमाग में एक स्पार्क हुआ।

"चैतन्य!"

"हॉ!"

"वो माया!"

"क्या हुआ?"

"मुझे मोती का राज पता चल गया।" अनामिका ने बेचैनी से उसकी ओर देखते हुए कहा।
"अच्छा! क्या?" चैतन्य ने भी दिलचस्पी दिखाते हुए पूछा।

और फिर... अनामिका ने उसे छाया और माया के बारे में वो सब बता दिया जो दिव्याक्षि उसके लिए संदेश में छोड़ गई थी।

"मकसद! कैसा मकसद?" चैतन्य ने दिमाग पर जोर डालते हुए कहा।

"चैतन्य! वो नर्क का द्वार खोलना चाहती है। तुम्हें याद है... छाया की कहानी सुनाते समय दिव्याक्षि ने बताया था कि उसने भी ऐसी कोशिश की थी। अब वो माया के रूप में अपना वो मकसद पूरा करना चाहती है। मुझे नहीं लगता है कि माया को सर्वशक्तिमंडल में कोई दिलचस्पी है। उसने एडवर्ड को भी इस्तेमाल ही किया है... मुझे ऐसा भी लगता है।" अनामिका ने कहा।

"और एडवर्ड उसे इस्तेमाल कर रहा है। मगर क्यों? एडवर्ड की तरफ का ये क्यों... समझ में ही नहीं आ रहा है।" चैतन्य ने उलझे हुए लहजे में कहा।

"बात बस इतनी ही नहीं है।" अनामिका ने बहुत ही संजीदगी से कहा।

"तो फिर..?" चैतन्य ने पूछा।

"माया उर्फ छाया को नर्क का द्वार खोलने के लिए पंचतत्वों की शक्तियॉ चाहिए।" अनामिका ने कहा, जिस पर चैतन्य ने उसकी बात समझने की गरज से अपनी ऑखें सिकोड़ कर उसे देखा।

"तो क्या..." चैतन्य ने बात अधूरी छोड़ी।
"हॉ! वो शक्तियॉ इकट्ठी कर रही है। उसके पास अपनी अग्नि की शक्ति है। जलशक्ति उसने हेममाया से ले ली और मुझे लगता है कि उसके पास भू-शक्ति भी है।" अनामिका ने कहा।

"यानि पृथ्वी-तत्व की शक्ति! पर वो कहॉ से मिली होगी?" चैतन्य चिंहुंककर बोला।

"शायद परिधि से!" अनामिका ने अपना अनुमान जताया।

"यू मीन टू से.... इसीलिए परिधि ऐसी है। उसके पास कोई शक्ति इसलिए नहीं है क्योंकि.... माया ने गर्भ में ही उसकी शक्ति पर अधिकार कर लिया था।" चैतन्य ने अनामिका के अनुमान की व्याख्या करते

हुए कहा।

"सही समझ रहे हो। अग्नि, जल और भू-शक्ति के बाद बचते हैं... आकाश और वायु शक्ति।" अनामिका बोली।

"तो क्या.... वो इसीलिए मेरे पीछे पड़ी है?" चैतन्य ने अपनी ऑखें फैलाकर कहा।

"शायद!"

"शायद मतलब?" चैतन्य ने पूछा।

"ओह चैतन्य! उससे बचकर रहना। उसे तुम भी चाहिए। नीयत बिगड़ी हुई है उसकी तुम पर। अगर सिर्फ तुम्हारी शक्तियॉ चाहिए होती, तो ना जाने कितनी बार तुम उसके करीब थे। वो आसानी से वो हासिल कर सकती थी।" अनामिका ने बिगड़े हुए चेहरे और लहजे के साथ कहा।

"अ... अम्... ह... समझ गया!" चैतन्य ने भी कहते हुए झटके से एक
सॉस छोड़ी।

"छोड़ो! आगे क्या करना है? बोलो!" अनामिका ने सारी बातों को परे हटाकर कहा।

"मैंने सोचा था कि इस स्टडी से हमें सुराग मिल सकते हैं। उन्हें ढूंढना पड़ेगा। सर विलियम के गायब होने का रहस्य सुलझाना जरूरी है। नीचे अमांडा भी मिली थी। उसने ये भी बताया है कि अल्फ़ी को जहॉ कैद किया गया है.. वहॉ हमारा कोई भी जादू काम नहीं करेगा। हमें अपना बुद्धि बल ही लगाना पड़ेगा।" चैतन्य ने कहा।

"तो फिर हम उसे कैसे छुड़ाऍगे? कुछ सोचा है!" अनामिका ने चिंता से कहा।

"अमांडा ने कहा कि इस कमरे में एक चाबी है, जो किसी भी ताले को खोल सकती है। उस मेज के दाहिनी दराज में है। उसे निकालो! मैं इधर देखता हूँ।" कहते हुए चैतन्य उस कमरे में फैले खून के पास पहुँचा और उसे देखने लगा।

अनामिका ने उस फैले हुए खून को देखा तो उसे बरबस ही दिव्याक्षि का कमरा याद आ गया। उसके मुँह से एक आह निकल गई।

"क्या हुआ?" चैतन्य ने पूछा।

"तुम ठीक कह रहे हो। जब जालिमों और तंगदिलों के खिलाफ जंग में उतरे हैं तो दिल कड़ा करना ही होगा।" अनामिका ने फैले हुए खून को देखते हुए कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने हुंकारी भरी।
अनामिका तेजी से चैतन्य की बताई हुई मेज तक पहुँची और उसकी दाहिनी दराज में चाबी ढूंढने लगी। उसने पूरी दराज उलट-पुलट डाली... पर उसे ऐसी कोई चाबी मिली ही नहीं।

"चैतन्य! यहॉ कोई चाबी नहीं है।" अनामिका ने कहा।

"ठीक से देखो! वहीं होगी। अमांडा ने कहा था।" जमीन का बारीकी से मुआयना करते हुए चैतन्य ने बिना सिर उठाए कहा।

"नहीं है चैतन्य! उस अमांडा ने या तो तुम्हें बेवकूफ बनाया या फिर किसी ने चाबी निकाल ली है।" अनामिका ने गुस्से से अपने हाथ झटकते हुए कहा।

और ये सुनते ही चैतन्य ने उसकी ओर देखा। अनामिका ने नहीं में अपना सिर हिलाया। वो उसकी ओर गया और उस दराज में बेचैनी से उस चाबी को ढूंढने लगा। अनामिका ने उसे मना किया, मगर वो फिर भी उस दराज में मौजूद चीजों को बाहर फेंकने लगा और....

"ये क्या है? इसे चाबी ही कहते हैं ना!" चैतन्य उस दराज की ओर इशारा करते हुए बोला। अनामिका ने एक बार फिर उस दराज में देखा मगर उसे कुछ भी नजर नहीं आया। ऑखों में सवाल लिए उसने अजीब सी नजरों से चैतन्य को देखा, जैसे कि उसका दिमाग सरक गया हो।

"कहॉ?"

"यहॉ!" कहते हुए चैतन्य ने उस दराज से कोई चीज निकाली, जो फिलहाल तो अनामिका को बिल्कुल भी दिखाई नहीं दे रही थी। चैतन्य ने उसके सामने अपनी हथेली फैलाई, तो वो ऑखें मल-मल कर उसकी
खाली पड़ी हथेली को देखने लगी। उसने अपना सीधा हाथ उठाया और फिर चैतन्य की उस हथेली पर फिराया। कुछ भी नहीं था।

"कहॉ?" अनामिका ने हैरानी से पूछा।

"यहॉ! तुम्हें ये दिख नहीं रही?" अनामिका की प्रतिक्रिया पर चैतन्य ने चौंकते हुए पूछा।

"नहीं चैतन्य! मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।" अनामिका ने सिर हिलाते हुए कहा।

"अजीब है!" चैतन्य ने उस चाबी को अपनी ऑखों के सामने लाकर देखते हुए कहा।

"ये तुम्हें दिखाई दे रही है? क्या ये सच में है! पर मुझे क्यों नहीं दिख रही है?"अनामिका ने उसकी उंगलियों में फँसी उस हवा से बनी चीज को देखते हुए कहा।

"पर अमांडा ने तो ये देखी थी।" चैतन्य ने उस चाबी को गौर से देखते हुए कहा और तभी उसे चाबी के एक छोर में बंधा हुआ काला धागा दिखाई दिया। उसने उस धागे को खोल दिया और फिर उस चाबी को अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया। अगले ही पल जब उसने अपनी मुठ्ठी खोली, तो इस बार अनामिका ने भी उसकी हथेली में उस तांबे से बनी चाबी को देखा।

"ओह गॉड! लगता है कि एडवर्ड से छिपाने के लिए ये जुगत लगाई थी। पर... तुमने कैसे देख लिया?" अनामिका ने चैतन्य से पूछा। जवाब में चैतन्य ने अपने कंधे उचका दिए।

"अब!" अनामिका ने चैतन्य की ओर देखा।
"हमें फिर अलग होना पड़ेगा। ज्यादा समय नहीं है। मैं जाता हूँ अल्फ़ी के पास। तुम इस कमरे की अच्छी तरह से जॉच करो। सर विलियम अगर यहॉ से गायब हुए हैं तो... उनकी गुमशुदगी को लेकर कोई ना कोई सुराग जरूर मिलेगा। दरवाजा अंदर से बंद रखना और अगर कोई बाहर आए तो छलद्वार से वापस लौट जाना। मुझे खबर करना... चाहे कोई भी समय हो। हमें अल्फ़ी को सही-सलामत लेकर यहॉ से निकलना है। अमांडा ने कहा है कि वो तांत्रिक श्रेष्ठ से मुलाकात करवा सकती है। वहॉ से हमें मदद मिल सकती है।समझी!" चैतन्य ने उसका चेहरा अपनी हथेलियों में भरकर कहा। जवाब में अनामिका ने अपना सिर हिलाया। चैतन्य उसका हाथ पकड़कर दरवाजे तक गया। उसने धीरे से दरवाजा खोला और फिर झांककर बाहर की ओर देखा। बाहर मौत का सन्नाटा अभी तक छाया हुआ था। चैतन्य ने एक बार फिर अनामिका को सावधानी से काम करने के लिए कहा और फिर उसका माथा चूमकर तेजी से वहॉ से निकल गया। अनामिका ने तुरंत ही दरवाजा अंदर से लॉक कर लिया।

अब उसकी नज़रें उस कमरे में चारों ओर घूम रही थीं। सबसे पहले वो भागकर उस तरफ गई.... जहॉ उसने उस रात वो किताब देखी थी। उसने अच्छी तरह से आसपास सारी जगह छान मारी। किताब गायब थी। अपने निचले होंठ को दॉतों में दबाए वो वापस कमरे की उस जगह पर आ गई जहॉ... ढेर सारा खून बिखरकर सूख गया था। उसने वहॉ भी सब जगह देख ली। कहीं कुछ भी संदिग्ध दिखाई नहीं दिया।

"यहॉ तो कुछ भी नहीं मिल रहा। इतनी देर हो गई। पता नहीं चैतन्य अभी क्या कर रहा होगा? अगर सर विलियम को इस कमरे के दरवाजे से बाहर नहीं ले जाया गया है... तो वो गायब कहॉ हुए हैं? अनामिका लगता तो यही है कि यहॉ भी कोई गुप्त जादुई दरवाजा है। उस रात वो एडवर्ड ही था, जिसे मैंने देखा था। हम्म! अगर कोई दरवाजा है... तो फिर उसे खोजा जाए।" कहते हुए अनामिका ने कमरे में चारों ओर नजर दौड़ाई। उसे याद
आया कि उसने उसे आदम कद खिड़की के पास पानी का एक पात्र देखा था। वो तेजी से उस ओर गई। मिट्टी की एक सुराही थी।

"भगवान! पानी हो इसमें!" कहते हुए अनामिका ने सुराही का ढक्कन हटाकर उसके अंदर झांका और फिर वो एक आह भरकर रह गई। सुराही खाली थी।

"अब!" एक बार फिर उसने पूरे कमरे में नज़र दौड़ाई। कहीं भी पानी का नामोनिशान नहीं था। हताशा से उसने अपना एक हाथ हवा में घुमाया तो वो जाकर उस सुराही को लग गया और वो नीचे गिर गई। अनामिका ने बड़ी ही चिढ़ के साथ सुराही के उन टूटे हुए टुकड़ों की ओर देखा और अगले ही पल उसकी ऑखें चमक उठीं। शायद सुराही के सबसे निचले हिस्से में जरा सा पानी रहा होगा, जिसकी कुछ मात्रा अब उसे सुराही के एक टूटे हुए टुकड़े में दिखाई दे रही थी। अनामिका ने लपक कर उसे उठाया। होठों पर हल्की सी मुस्कान के साथ वो उसे लेकर तेजी से उस सूखे हुए खून की ओर बढ़ी।

वो घुटनों के बल जमीन पर बैठ गई। उसने उन पानी की बूंदों को अपनी तर्जनी उंगली में टिकाया और फिर अपनी ऑखें बंद कर जल शक्ति का आह्वान करने लगी। फिर अपनी ऑखें खोलकर उसने अपनी उस उंगली को नीचे सूखे हुए खून से छुआ दिया। उसकी उंगली पर टिकी पानी की बूंदे उस सूखे हुए खून से मिलीं और फिर हमेशा की तरह जादू हुआ। पानी की वो दो-तीन बूंदे उस सूखे हुए खून में मिलते ही तेजी से फैलने लगी और देखते ही देखते वो सारा खून एक बार फिर से ताजा हो गया।

"रास्ता दिखाओ!" अनामिका ने कहा और उसके इतना कहते ही वो खून एक ओर बहने लगा।

अनामिका ने उसकी हरकतों पर नज़र टिकाए रखी। आगे बढ़कर वो उसी आदमकद खिड़की के पास जाकर रूक गया। अनामिका वहॉ जाकर उस खिड़की को घूर-घूर कर देखने लगी.. पर कुछ समझ में नहीं आया।

"यहॉ कहॉ से? ठीक-ठीक बताओ।" अनामिका ने लगभग आदेश देते हुए कहा और उसका आदेश सुनते ही उस खून से एक तीर का निशान बन गया और वो उस खिड़की के एक ख़ास हिस्से की ओर इशारा करने लगा। अनामिका ने उस ओर देखा और फिर उस हिस्से को हाथ से टटोल-टटोलकर देखने लगी और फिर उसकी ऊंगली एक जगह जाकर रूक गई। वो एक की होल जैसी आकृति थी, मगर वहॉ कोई होल नहीं था। अनामिका ने अपनी उंगलियों से उस जगह को दबा कर भी देखा, मगर कुछ नहीं हुआ।

"शायद... वो चाबी यहॉ काम आए!" अनामिका की सोच आवाज बनकर होंठों से निकली।

अभी वो इतना सोच ही पाई थी कि तभी एक जोर का धमाका हुआ और उस कमरे के दरवाजे की धज्जियॉ उड़ गईं। अनामिका कोई प्रतिक्रिया दे पाती उससे पहले ही दो गार्ड्स तेजी से अंदर आए। अनामिका, चैतन्य को आवाज लगा पाती उससे पहले ही कुछ आकर उसके पैरों में चुभा और फिर उसने एक तेज चीख के साथ नीचे बैठकर अपने उस पैर को पकड़ लिया।

अनामिका को ऐसा लग रहा था, जैसे कि किसी ने उसके उस पैर में आग लगा दी हो। धीरे-धीरे उसका सारा शरीर बुरी तरह से जलने लगा। वो अपने बचाव में कुछ करना चाहती थी, मगर उसका दिमाग उसका साथ ही नहीं दे रहा था। उसकी ऑखें धुंधलाने लगी थी, जिसे वो बार-बार झटकते हुए साफ करने की कोशिश कर रही थी। वो खुद को संभाल पाती इससे पहले ही उन दोनों गार्ड्स ने आगे आकर उसे जकड़ लिया। वो खुद को उनके चंगुल से छुड़ाने के लिए बुरी तरह से छटपटाने लगी, मगर उसकी सारी ताकत जैसे किसी ने निचोड़ ली थी। वो बेबस हो चुकी थी।
उसने अपनी धुंधलाई हुई ऑखों से किसी तरह ऊपर की ओर देखा। सामने एडवर्ड अपनी दहकती ऑखें लिए उसके सामने खड़ा था। उसका पूरा चेहरा गुस्से में तप रहा था। अनामिका ने अपनी ऑखें फाड़कर उसे अच्छी तरह देखने की कोशिश की और उन कुछ पलों में उसने एडवर्ड के चेहरे पर एक कुटिलता उतरते देखी। वो धीमे कदमों से उसके पास आया और फिर उसे ऊपर से नीचे तक गहरी ऑखों से देखा। दोनों गार्ड्स की जकड़ में वो खुद को छुड़ाने के लिए किसी जल बिन मछली की तरह तड़प रही थी। नशीली दवा के असर से उसका पूरा शरीर पसीने से भीग गया था। गोरे चेहरे पर सुर्ख़ी उतर आई थी। एडवर्ड ने आगे बढ़कर उसके भीगे चेहरे पर चिपके हुए बालों को हटाया और फिर उसे बड़ी हसरत से देखने लगा, जिससे उसकी ऑखों में एक ख़ुमारी सी उतरी थी।

"तुम तो सचमुच बहुत खूबसूरत हो! चलो! आज रात का जश्न तुम्हारे साथ ही सही!"

वो थोड़ा पीछे हटा और फिर एक और गहरी नज़र उस पर डालकर उन गार्ड्स को अपने पीछे आने का इशारा किया। बाहर आने पर अपने साथियों की लाश देखकर एक बार फिर से उसके चेहरे पर सख़्ती आ गई। उसने मुड़कर झूलती हुई अनामिका की ओर देखा।

"कोशिश अच्छी थी। पर एडवर्ड का प्रहार तुम दोनों नहीं झेल पाओगे। जरा देखें तो... आखिर दो तोतों

की जान एक मैना में कैसे क़ैद है!"

और फिर एडवर्ड के कहने पर वो गार्ड्स अनामिका को लेकर उसके पीछे
चल दिए। एडवर्ड का ये प्रहार यकीनन बहुत ही बड़ा था। मगर इसकी चोट किसे लगने वाली थी, ये कुछ देर में पता चलने वाला था।

हिदायतों के साथ अनामिका को स्टडी में छोड़कर चैतन्य वहाँ से कैदखाने की ओर बढ़ा। रास्ते में हेनरी और जेकब की लाशों के पास उसके कदम धीमे हुए थे। उसने एक आह के साथ उन दोनों को देखा। क्या से क्या हो गई थी ज़िंदगी। पिछले साल की दीवाली तक उसकी जिंदगी कितनी सामान्य हुआ करती थी। सामान्य सी जिंदगी... सामान्य सी उसकी समस्याएँ.... सामान्य से दोस्त और.....। मुग्धा की याद ने एक बार फिर से दस्तक देने की कोशिश की... मगर उसने इससे पहले ही उसे झटक दिया। वो अब कहीं नहीं है और.... होगी भी नहीं। दरअसल.... वो तो कभी थी ही नहीं। उसने मुड़कर स्टडी की ओर देखा। अनामिका को महसूस कर उसके होठों पर एक मुस्कुराहट आई। फिर अनामिका के साथ उसे याद आया अल्फ़ी... और वो तेजी से वहाँ से निकल गया। सीढ़ियों के पास पहुँचकर वो सावधान हुआ। ऊपर के खतरे वो निपटा चुका था, मगर नीचे खतरे अभी भी छिपे हुए थे।

वो सावधानी से एक-एक कदम बढ़ाते हुए सीढ़ियों से उतरा और फिर तेजी से दाहिनी ओर चला गया। अभी तक तो सब ठीक ही था। उस मददगार गार्ड ने अपना काम कर दिया था।

वो आगे बढ़ा तो उसे सब सही ही लगा। आगे एक गार्ड दिखा तो चैतन्य की चाल धीमी हुई, मगर वो आगे बढ़ता रहा। उसके पास पहुँचने पर उस गार्ड ने उसका अभिवादन किया और उसे एक ओर जाने का इशारा किया। चैतन्य समझ गया कि उसकी मदद हो चुकी है। वो आगे भी दूसरे
गार्ड्स की मदद से आसानी से आगे बढ़ता गया। आखिरकार वो एक जगह पर आकर रूका। उसका मददगार उसके सामने था।

"आइए सर! बस कुछ आगे ही है वो जगह। मैं आपको ले चलता हूँ।" उस गार्ड ने एक ओर हाथ से इशारा करते हुए चैतन्य से कहा और फिर उस ओर चल दिया।

"पर तुम लोगों ने ये सब किया कैसे?" उसके साथ चलते हुए चैतन्य ने आश्चर्य से पूछा।

"क्या सर! अल्फ़ी सर ने सच के लिए लड़ना हमें भी सिखाया है। कमजोर नहीं हैं हम। कहा था ना कि अल्फ़ी सर के लिए हम कुछ भी करेंगे... जो भी हमारे बस में हो।" उस गार्ड ने फख़्र से चैतन्य की ओर देखते हुए कहा।

"और उस एडवर्ड को कैसे समझाओगे? तुम सब परेशानी में नहीं फँस जाओगे?" चैतन्य को पहली बार उनकी चिंता हुई।

"उसकी चिंता आप ना करें सर। बस आप जल्दी से उन्हें छुड़ाकर यहाँ से ले जाइए।" उस गार्ड की

आवाज में याचना का पुट उभर आया था। उसकी बात सुनकर चैतन्य के चेहरे पर एक मुस्कान उभरी।

"तुम्हें देखकर अच्छाई पर मेरा यकीन और मजबूत हो गया है। तुम भी ये यकीन हमेशा मजबूत रखना।" चैतन्य ने उसके कंधे को थपथपाते हुए कहा। उस गार्ड ने बड़े ही गर्व से चैतन्य के हाथ रखे अपने उस कंधे को देखा।

"सर यही तो वो सम्मान है, जिसके काबिल बनाया है अल्फ़ी सर ने हमें। उनके साथ जब हम सब बाहर निकलते थे... तो सबकी नज़रों में जो प्रेम
और सम्मान होता था... वो अल्फ़ी सर के आने से पहले हमने कभी नहीं देखा। हम सब भी इस टुकड़ी में इसलिए शामिल हुए कि आसपास के लोगों और रिश्तेदारों में हमारे नाम की धाक रहे। लोग हमारे सामने डर से सिर झुकाएँ और... लोग झुकाते भी थे सर। पर... अल्फ़ी सर ने हमें बताया कि प्रेम और सम्मान से झुके हुए सिर हमेशा मजबूत कंधों पर टिके होते हैं, जो समय आने पर हमारा मजबूत सहारा बनते हैं... वहीं डर से झुके हुए सिर खोखले शरीर और खोखली आत्मा पर बोझ होते हैं। उन्होंने हमारी जिंदगी को बोझ बनने से बचाया है। उन्हें बचाने के लिए तो हम अपनी जान भी दे सकते हैं।" उस गार्ड ने बहुत ही भावुक होते हुए कहा।

"तुम्हारा नाम क्या है?" पहली बार चैतन्य ने उसके पहचान की गहराई जाननी चाही।

"वैभव!" उसने धीमे से कहा।

"तुम मुझे हमेशा याद रहोगे वैभव। अच्छाई का साथ कभी मत छोड़ना।" चैतन्य ने कहा।

"कभी नहीं सर!" कहकर वो खड़ा हो गया। चैतन्य ने रास्ते में आगे की ओर देखा।

"आगे जाकर बाईं ओर मुड़ जाइएगा सर।" वैभव ने कहा।

"हम्म! जाओ! ख्याल रखना अपना।" चैतन्य ने उसे जाने की इजाजत देते हुए कहा।

"आप भी सर! आगे भी जरूरत पड़े... तो हम सब साथ हैं।" वैभव ने मुस्कुराकर कहा।
"फिलहाल तो यही बहुत बड़ी मदद थी। वरना इतनी आसानी से यहाँ तक आना बहुत मुश्किल था। शुक्रिया!" चैतन्य ने आभार जताते हुए कहा। वैभव ने तनकर उसे सैल्यूट किया और तेजी से वहाँ से निकल गया। चैतन्य ने कुछ देर उसे जाते हुए देखा और फिर उसके बताए रास्ते पर आगे बढ़ गया।

थोड़ा आगे जाने पर वो जगह सिकुड़ने लगी। धीरे-धीरे वहाँ बस एक ही आदमी के चलने लायक जगह बची थी। वो आगे-पीछे चौकन्नी निगाहें रखे आगे बढ़ता रहा। स्टडी रूम से उठाई चाबी उसने संभालकर रखी थी और फिर वो उस संकरी सी जगह से बाहर निकला। सामने दोनों ओर लाइन से छोटी-छोटी कोठरियाँ बनी हुई थीं, जिनके सामने लोहे की मजबूत सलाखें लगी हुई थीं। बीच में एक गलियारा था। चैतन्य ने एक और गहरी साँस भरी और आगे बढ़ा, मगर जैसे ही वो आगे बढ़ा... उसे ऐसे लगा.. जैसे कि कुछ पीछे छूट गया। उसने पीछे मुडकर देखा और फिर उसे अपने अंदर कुछ सिकुड़ता हुआ महसूस हुआ। उसने अपना हाथ ऊपर उठाकर देखा और जो हुआ.. उसे समझने की कोशिश करने लगा।

"लग रहा है कि सच में ताकत का बल्ब फ्यूज़ हो गया। बेटा चैतन्य! संभलकर! अपने बच्चों को टुकड़ों में नहीं... साबुत हालत में अपनी बहदुरी के किस्से सुनाने हैं।" खुद में ही बड़बड़ाते हुए वो सावधानी से

आगे बढ़ा।

वो सावधानी से दोनों ओर की हर कोठरी पर नज़र डालते हुए आगे बढ़ रहा था। चैतन्य ने ये महसूस किया कि यहॉ थोड़ी उमस सी थी जिससे उसको यहॉ थोड़ी बेचैनी महसूस होने लगी थी।

"कहॉ हो अल्फ़ी? लग रहा है कि कुछ देर और नहीं मिले तो ये वायु ही हल्का होकर उठ जाएगा।" चैतन्य बेचैनी से खुद से ही सरगोशियॉ करता आगे बढ़ा और आखिरकार उसकी तलाश सबसे आखिर की कोठरी में पूरी हुई।
वो लोहे की बेड़ियों में बुरी तरह से जकड़ा हुआ सिर झुकाए बैठा हुआ था। शरीर में कोई भी हलचल दिखाई नहीं दे रही थी। उसे ऐसी हालत में देखकर चैतन्य का दिल बैठ गया। अजीब सा रिश्ता था उन दोनों के बीच। वो उससे जितना चिढ़ता था... उसकी उतनी ही फिक्र भी करता था। चैतन्य उसकी तकलीफों और दर्द से अच्छी तरह से परिचित था और उसका हमदर्द भी बनना चाहता था। पर इसकी जो कीमत थी... वो चैतन्य हर्गिज नहीं भरना चाहता था और बस... यही... अनामिका पर आकर सब कुछ बिखर जाता था। पर सच तो ये भी था कि उसके यहॉ होने की एक बड़ी वजह अनामिका भी थी। अल्फ़ी और अनामिका के बारे में सोचकर उसके दिल में हल्का सा दर्द भी हुआ, मगर.. उस दर्द को नज़रअंदाज़ करके वो उसकी ओर बढ़ गया।

चैतन्य ने उस कोठरी की सलाखों को छुआ ही था कि उसे एक तेज झटका सा लगा। उसने सिसकारी भरते हुए अपना हाथ पीछे खींचा। अपनी उंगलियों को सहलाते हुए जब उसने सिर उठाकर अल्फ़ी की ओर देखा, तो ऊपर से नीचे तक दहल गया। अल्फ़ी अपना सिर उठाकर उसे ही देख रहा था। उसका चेहरा किसी भी जज़्बात से खाली और सपाट था, मगर उसकी ऑखें दर्द की शिद्दत से सुर्ख़ लाल हो चुकी थीं और वो उन खून भरी ऑखों से उसे घूर रहा था। चैतन्य जो उसे इस हालत में देखकर बुरी तरह से हिल गया था, उसने अपनी हिली हुई क़ैफियत को संभाला और फिर आगे बढ़ा। इस बार उसने सलाखों को छूने से परहेज़ ही किया। अल्फ़ी उसे एकटक उसी तरह देख रहा था।

"अल्फ़ी! मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो उठो!" चैतन्य ने उसे आवाज लगाई।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी के होंठ हल्के से फड़फड़ाए और फिर शांत हो गए, जैसे कि कुछ बोलते-बोलते रूक गए। वो उसी तरह बैठा हुआ चैतन्य को देखता रहा।
"ऐसे क्या देख रहे हो? समय नहीं है हमारे पास! उठो जल्दी!" चैतन्य ने झुंझला कर कहा।

मगर उसकी बात सुनकर एक बार फिर से अल्फ़ी ने अपना सिर नीचे झुका लिया.. जैसे कि उसे चैतन्य की बातों और चैतन्य के वहॉ होने से कोई फर्क ही ना पड़ा हो और उतना ही उसकी चुप्पी से चैतन्य झल्लाया था।

"अल्फ़ी! सुनाई नहीं दे रहा क्या तुम्हें? मैं तुम्हें यहॉ लेने आया हूँ। एडवर्ड कभी भी आ जाएगा। उठो!" चैतन्य उसी झल्लाहट के साथ बोला।

"तुम जाओ चैतन्य! मेरा फैसला हो गया है। तुम खुद को बचाओ।" अल्फ़ी की अजीब सी भारी आवाज आई।

"क्या? यकीन नहीं आ रहा है कि ये तुम बोल रहे हो। अपनी उन लोगों ने तुम्हारी माया को मार दिया है। तुमसे तुम्हारा सब कुछ छीन लिया है। तुम उनके सामने झुक नहीं सकते.. हार नहीं मान सकते।"

चैतन्य पूरे तैश में चिल्लाया।

"माया के लिए ही तो कर रहा हूँ। उसकी जिंदगी से ज्यादा और कुछ नहीं चाहिए मुझे।" अल्फ़ी की बहुत ही कमजोर सी आवाज आई।

"क्या? माया के लिए!"

उसकी बात सुनकर चैतन्य बुरी तरह से चौंका। उसकी सोच के घोड़े एक बार फिर दौड़े तो एक जगह जाकर रूके। चैतन्य को याद आया कि सुबह अल्फ़ी, दिव्याक्षि के कमरे से हेममाया के शरीर को लेने के लिए निकला था। चैतन्य को लगा कि अल्फ़ी अभी भी इस धोखे में है कि हेममाया का शरीर मिलने पर दिव्याक्षि उसे फिर से जीवित कर देगी। उसने बहुत ही अफसोस से अल्फ़ी की ओर देखा, जो इस समय भी अपने प्यार के लिए किसी भी हद से गुजरने को तैयार था। चैतन्य को लगा कि उसे अल्फ़ी को तुरंत ही सच बता देना चाहिए।

"अल्फ़ी! अगर तुम हेममाया को फिर से जीवित करने की ग़लतफहमी में ये सब कर रहे हो तो बता दूं... कि उन जालिमों ने दिव्याक्षि को बहुत ही बेरहमी से मार दिया है। हेममाया के वापस आने की उम्मीद... अब नहीं के बराबर है।" चैतन्य ने तड़पकर उसे हालातों से रूबरू कराते हुए कहा।

चैतन्य को लगा था कि ये सुनकर अल्फ़ी को धक्का लगेगा और वो कुछ और प्रतिक्रिया देगा। मगर चैतन्य को हैरत का तेज झटका लगा कि ये सुनकर भी अल्फ़ी अपनी जगह पर उसी तरह बैठा रहा।

"कुछ कहो अल्फ़ी! ऐसे चुप मत बैठो।" चैतन्य आगे बढ़कर उतावलेपन से बोला।

"चैतन्य! मेरा एक काम करोगे।" चैतन्य के अनुमान के विपरीत अल्फ़ी ने उसी से सवाल कर लिया।

"काम! कैसा काम?" चैतन्य ने हैरानी से उसे देखते हुए कहा।

"तुम मेरी माया के शरीर को अपने साथ ले जाना और उसका... सम्मान के साथ अंतिम संस्कार कर देना।" चैतन्य को हैरानी के समंदर में डुबोते हुए अल्फ़ी ने कहा।

"क्या? पागल हो गए हो क्या तुम? कैसी बकवास कर रहे हो?" चैतन्य भड़कते हुए बोला।
"मैंने माया को हमेशा खुश रखने का वादा किया था। उसके सम्मान को बनाए रखने का वादा किया था। उसके लिए कुछ भी नहीं कर सका मैं। यदि तुमने... कभी भी... एक पल के लिए भी... मुझे अपना दोस्त माना है... तो प्लीज़! मेरा ये काम कर देना। मरते समय इतना तो सूकून रहेगा कि उसके मृत शरीर के लिए इतना कर सका। इतना तो वो हक रखती थी।" अल्फ़ी ने बहुत ही हौले-हौले अपनी बात कही। चैतन्य ने महसूस किया कि ये सब बोलते हुए अल्फ़ी को बहुत तकलीफ़ हो रही थी।

"अल्फ़ी! अल्फ़ी! अल्फ़ी! तुम पागल हो गए हो। मेरी बात सुनो। मानो मेरी बात! पहले यहाँ से चलते हैं... फिर जो तुम चाहते हो... वो हम करेंगे। प्रॉमिस! इस तरह जालिमों के आगे घुटने मत टेको।" चैतन्य ने उसे मनाने की कोशिश करते हुए कहा।

"मुझे जो कहना था... मैं कह चुका। तुम जाओ।" अल्फ़ी ने सिर हिलाकर उसकी बात काटते हुए कहा।

"नहीं! बिल्कुल नहीं! मैं तुम्हें ये पागलपन नहीं करने दूंगा।" कहते हुए चैतन्य ने उन सलाखों को पकड़ा और उन्हें दाएँ-बाएँ खिसकाने की कोशिश करने लगा। इस समय वो तेज झटकों से भी जूझ रहा था, मगर उसने अपनी कोशिशें नहीं छोड़ीं।

"चैतन्य! छोड़ दो कोशिशें। ये सलाखें एडवर्ड के अलावा और कोई नहीं खोल सकता।" अल्फ़ी ने तेज और सख़्त आवाज में कहा।

आखिरकार चैतन्य ने थककर अपनी कोशिशें बंद कर लीं। अल्फ़ी सही कह रहा था। इतनी कोशिशों के बाद भी वो दरवाजा टस से मस नहीं हुआ।

"तुम जाओ चैतन्य! अब कुछ नहीं हो सकता।" अल्फ़ी ने बहुत ही मायूसी
से कहा।

"मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ। ये चाबी लो और अपनी बेड़ियाँ खोलो। इस दरवाजे को तो मैं खोलकर रहूंगा।" चैतन्य भी जिद पर उतरते हुए बोला और फिर वो चाबी अल्फ़ी के सामने फेंक दी। अल्फ़ी ने उस चाबी को हैरानी से देखा।

"ये तुम्हें कहाँ मिली?" अल्फ़ी ने पूछा।

"कहीं भी मिली है। तुम अपनी बेड़ियाँ खोलो। मैंने अनामिका से वादा किया है कि मैं तुम्हें जरूर बताऊंगा।" चैतन्य ने अल्फ़ी को एक बार फिर से आदेश देते हुए कहा।

और... अनामिका का नाम सुनकर अल्फ़ी के सपाट पड़े चेहरे पर एक दर्द उतर आया। वो अपनी आँखें बंद कर बोला, "उसी के लिए तो कर रहा हूँ। तुम जाओ! उसे और तकलीफ़ मत दो।"

"क्या? अनामिका के लिए! मैं समझा नहीं। क्या बोल रहे हो तुम?" चैतन्य ने उलझे हुए लहजे में कहा।

मगर अल्फ़ी उसके सवालों का कोई जवाब दे पाता उससे पहले ही दरवाजे की ओर से आती आहटों ने उन दोनों को उस ओर देखने पर मजबूर कर दिया। खतरे की आशंका से चैतन्य ने खंज़र पर अपनी ऊंगलियाँ कस लीं। वो हर पल सामने दरवाजे पर नज़र टिकाए खुद को तैयार कर रहा था।

और फिर अचानक ही वो हुआ, जो चैतन्य और अल्फ़ी दोनों ने ही नहीं सोचा था। कोई तेजी से लड़खड़ाते हुए अंदर आया और फिर मुँह के बल नीचे गिर गया। उसे देख और पहचान कर चैतन्य और अल्फ़ी दोनों की ही आँखें सदमे से फ़ैल गईं और दोनों के ही मुँह से एक साथ निकला,
"अनामिका!"

स्टडी से बाहर आते ही अपने साथियों की लाशें देखकर एडवर्ड का पारा और भी गर्म हो जाता है। वो साथ खड़े गार्ड्स को बेसुध सी अनामिका को अपने पीछे लाने के लिए कहता है। उसे अच्छी तरह से पता था कि इस समय चैतन्य कहाँ हो सकता था? हालांकि जो भी हो रहा था... वो उसकी योजना का

हिस्सा नहीं था, पर जिस तरह हो रहा था.. कुछ फेरबदल के साथ उसकी योजना के मुताबिक ही हो रहा था और इसने उसे और भी उत्साहित कर दिया था। वो तेजी से कैदखाने की ओर बढ़ा, मगर आगे बढ़ते-बढ़ते उसके कदम धीमे होते गए। उसने आसपास गार्ड्स की ग़ैरमौजूदगी को साफ तौर पर महसूस किया था। उसके होंठों पर आई कुटिल मुस्कान उसके राहत में होने का सबूत थीं। उसने तुरंत ही अपने पीछे अनामिका को संभालकर आ रहे दोनों गार्ड्स में से एक को कुछ और गार्ड्स को तुरंत बुलाने के लिए कहा। उसके जाते ही उसने दूसरे गार्ड को पहले की तरह अपने पीछे आने का इशारा किया और खुद आगे बढ़ गया। रास्ते के संकरे होते ही एडवर्ड रूक गया। उसने पीछे मुडकर गार्ड को देखा, जिसे अनामिका को संभालने में बहुत दिक्कत आ रही थी। बेसुध होने के बाद भी वो पूरी ताकत से छटपटा रही थी।

"तुम! आगे बढ़ो!" एडवर्ड ने एक ओर होकर उस गार्ड को अनामिका के साथ आगे बढ़ने के लिए कहा, जिस पर वो गार्ड सिर हिलाते हुए आगे बढ़ गया। उस संकरे रास्ते में अनामिका को संभालना उसके लिए और भी दूभर हो गया था, मगर एडवर्ड का आदेश था, इसलिए वो किसी तरह आगे बढ़ता गया। आगे जगह और भी कम होने पर एडवर्ड के कहने पर उस गार्ड ने अनामिका को आगे किया और उसे धकेलता हुआ आगे बढ़ने लगा। आखिरकार एक जगह पर आकर अनामिका उसकी चंगुल से छूट ही गई और फिर वो गिरते-पड़ते आगे भागी। गार्ड ने भय से एडवर्ड की ओर देखा।
"कोई बात नहीं। भागेगी भी तो कहाँ? तुम जाओ और पकड़ो उसे। किसी और के हाथ नहीं आनी चाहिए वो। वो... मुझे चाहिए।" कहते हुए एडवर्ड के चेहरे पर एक वहशीपन उतरा था।

उसका आदेश सुनते ही गार्ड भी तेजी से अनामिका की ओर बढ़ गया। एडवर्ड ने आगे बढ़ने में कोई जल्दबाजी नहीं दिखाई।

अनामिका लड़खड़ाते हुए तेजी से आगे बढ़ी। ऐसी हालत में भी उसने अपने होशोहवास पूरी तरह नहीं खोए थे। वो किसी भी तरह उनके चंगुल से बाहर निकलने की जुगत में थी और इसी कोशिश में वो उस जगह से बाहर निकल आई। मगर बाहर आते ही वो खुद को संभाल नहीं सकी और मुँह के बल गिर पड़ी।

"अनामिका!"

उसके कानों ने ये पुकार साफ-साफ सुनी, मगर वो खुद को उठा नहीं पा रही थी। आखिरकार उसने खुद को जमीन के उस टुकड़े के हवाले कर दिया।

सामने सदमे की हालत में खड़े चैतन्य ने उसे इस हालत में देखा, तो वो तेजी से उसकी ओर भागा, मगर थोड़ी दूर भागने के बाद ही उसे खुद को मजबूरन रोकना पड़ा। अनामिका के पीछे लगा गार्ड तेजी से उसके पास आया और फिर उसे झटके से ऊपर उठाकर उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया। अनामिका एक बार फिर से उसकी गिरफ्त में छटपटाते हुए गले से घुटी-घुटी सी आवाज़ें निकालने लगी।

कोठरी में बंद अल्फ़ी ऑखें फाड़े सामने का मंजर देख रहा था। अनामिका को इस तरह देखकर वो हल्का सा कसमसाया, मगर जब चैतन्य उसकी
ओर भागा, तो उसे अपना दिल बिखरता हुआ महसूस हुआ। नहीं! अब वो कुछ भी नहीं करेगा। अब वो चैतन्य की जिम्मेदारी है, तो फिर उसे ही निभानी है। अपने हिस्से की वो पहले ही निभा चुका है। और ये सोचते ही उसने एक बार फिर से अनामिका पर एक जज़्बाती नज़र डाली। उसके दिल में एक टीस सी उठी थी, जिसे दूर करने के लिए उसने अपनी भरी हुई ऑखें फेर लीं।

वहीं दूसरी ओर अनामिका को ऐसी हालत में देखकर चैतन्य का पारा एक बार फिर से चढ़ा था। वो तेजी से उस ओर बढ़ा ही था कि तभी अंदर आते हुए एडवर्ड पर उसकी नजर पड़ी और वो सकते में आ गया। एडवर्ड के यहाँ होने का मतलब तो यही था कि अनामिका उसके गिरफ्त में थी और ये जानकर उसके दिमाग की नसें फड़की थीं। वहीं इन सबसे खुद को अलग-थलग करके बैठे हुए अल्फ़ी का ध्यान भी एडवर्ड की ओर गया था, जो अनामिका पर अपनी गहरी नज़रें डाले हुए था और उसकी इन नज़रों को अल्फ़ी अच्छी तरह से पहचानता था। एडवर्ड के इरादों को भाँपते हुए अल्फ़ी का सारा शरीर सिहर उठा। वहीं चैतन्य अभी भी इस ख्याल से कोसों दूर था। उसे बस यही चिंता थी कि अनामिका, एडवर्ड के पास थी, जो कि नहीं होना चाहिए था।

मगर एडवर्ड के इरादे उन सभी की सोचों से कहीं ज्यादा गिरे हुए थे। उन दोनों पर एक तेज नज़र डालने के बाद वो अनामिका के पास पहुँचा और थोड़ा झुककर उसके नशे में डूबते-उतरते चेहरे को देखकर मुस्कुराया। ये देखकर तमतमाया हुआ चैतन्य आगे बढ़ा ही था कि तभी कुछ गार्ड्स तेजी से अंदर आए और उन्होंने चैतन्य को दबोच लिया। चैतन्य ने खुद को छुड़ाना चाहा पर उस पर गिरफ्त मजबूत थी। वो बस उसमें फड़फड़ाकर रह गया।

"च्च्च्च्! बेकार की मेहनत! मान लो.... कि तुम फँस चुके हो और अब मेरी क़ैद से आज़ाद होना नामुमकिन है।" ये कहकर वो फिर से अनामिका के
पास आया और इस बार पहली बार चैतन्य ने अनामिका की हालत पर ग़ौर किया। वो सही तरीके से खड़ी नहीं हो पा रही थी।

"अनामिका! क्या हुआ है तुम्हें?" चैतन्य बेचैनी से चिल्लाया।

"कुछ नहीं! बस एक दवा दी है। इतनी भागदौड़ करके बेचारी नाज़ुक सी लड़की थक गई थी। कैसे प्रेमी हो तुम? इस तरह अपनी प्रेमिका.... नहीं, खूबसूरत प्रेमिका को अकेले कौन छोड़ता है। चलो! तुमने नहीं तो.... मैंने ध्यान दे दिया। एक ही बात है।" एडवर्ड, चैतन्य को उकसाते हुए बोला।

"अगर अपनी ख़ैर चाहते हो तो... छोड़ो उसे! अभ्भी!" चैतन्य एक-एक शब्द गुस्से में चबाते हुए बोला।

"कैसी बात कर रहे हो? दवा लेने के बाद आराम की भी जरूरत होती है। नई!" एडवर्ड ने अपने होंठों पर एक अर्थपूर्ण मुस्कान सजाकर कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य की आँखें सिकुड़ी थीं।

"गार्ड्स! इस नाज़ुक मेहमान को हमारे कमरे में पहुँचा दो। वो आज हमारे साथ आराम करेगी।" एडवर्ड भद्दे तरीके से मुस्कुराकर चैतन्य को देखते हुए बोला और उसकी बातों का मतलब समझकर चैतन्य बुरी तरह से फड़फड़ाया था, मगर वो अभी भी खुद को छुड़ाने में नाकाम ही था।

"अनामिका! होश में आओ!" आखिर में वो एक उम्मीद के साथ जोर से चिल्लाया। उसकी बात सुनकर अनामिका हल्के से कसमसाई। उसकी चेतना अभी भी पूरी तरह से लुप्त नहीं हुई थी, मगर उस नशीली दवा ने उसके शरीर को बुरी तरह से शिथिल कर दिया था। उसकी ऐसी लाचार हालत को देखकर चैतन्य तड़पकर रह गया।

"क्या दिया है तुमने उसे?" चैतन्य ने एक बेवकूफी भरा सवाल किया।
"मुझे नहीं पता। ये डिपार्टमेंट तो परिधि का है।" एडवर्ड ने बहुत ही लापरवाही से कहा और ये सुनते ही

चैतन्य के साथ-साथ अल्फ़ी के भी कान खड़े हुए।

"परिधि!" चैतन्य ने परेशान होकर पूछा।

"हॉ! वही तो ये सब बनाकर हम सबको देती है। तुम्हें पता है... उसके हाथों में जादू है। उसकी दवा कभी भी बेअसर नहीं होती। तुम्हीं देख लो। अब इसे काबू में करना आसान था क्या? पर अब मेरी ऊंगलियों में नाचेगी। वैसे तुम्हारी च्वाइस की दाद देनी पड़ेगी। खूबसूरत बहुत है लड़की। हमेशा इसे दूर से ही देखा था... आज पास से देखने का मौका मिल ही गया।" एडवर्ड ने अपनी आवाज में कमीनगी घोलते हुए कहा।

"छूना मत उसे। वरना... चीर के रख दूंगा।" चैतन्य अपनी पूरी ताकत से चिल्लाकर बोला।

"अच्छा! ये भी देख लेते हैं। गार्ड्स! लड़की को मेरे कमरे में पहुँचाओ। अभी! और इसे... इन सलाखों के पीछे।" चैतन्य पर जहर भरी नज़र डालते हुए एडवर्ड ने कहा और फिर अपने कपड़े झटककर अपना कॉलर ठीक करने के बाद वहॉ से चलता बना।

एडवर्ड की बातें सुनकर चैतन्य के साथ-साथ अल्फ़ी के पैरों के नीचे से भी जमीन खिसक गई और जैसे आसमान उनपर टूट कर गिर पड़ा। चैतन्य उन गार्ड्स की पकड़ से छूटने को फड़फड़ाता रहा। वहीं अनामिका को पकड़े हुए वो दोनों गार्ड्स उसे इस तरह तड़पता हुआ देखकर राक्षसों की तरह हंसने लगे। चैतन्य ने सही कहा था। जालिम की पैरवी करने वाले भी उसी की तरह जालिम हो जाते हैं। वहीं अनामिका भी अब उनकी पकड़ से छूटने के लिए और जोर से छटपटाने लगी थी, जो उन दोनों गार्ड्स के लिए
मजाक का जरिया बन गया था।

उधर दूसरी तरफ अनामिका को उनकी गिरफ्त में छटपटाते हुए देखकर अल्फ़ी की रगों में खून उबलने लगा, जो उसकी गुस्से में दहकती ऑखों में उतर आया था। वो अब तक शांत था क्योंकि वो हर सितम सहने की कुव्वत रखता था, मगर अब जो उसकी ऑखों के सामने हो रहा था... वो उसकी हर बर्दाश्त से बाहर था। उसकी ऑखों के सामने अनामिका को इस तरह छूने की हिम्मत करना मौत को दावत देने के समान था और ये उन दोनों गार्ड्स को जल्द ही समझ में आने वाला था।

सबकी हालत का जश्न मनाते वो दोनों गार्ड्स सकते में आ गए जब चैतन्य को मजबूती से पकड़े हुए सभी गार्ड्स ने अपनी गिरफ्त से आजाद कर दिया। उनकी इस हरकत से एडवर्ड के गार्ड्स के साथ चैतन्य भी बुरी तरह से चौंका था। उसने मुड़कर उनकी और देखा।

"हम आपके साथी हैं सर! वैभव को पता था कि आगे मुसीबत फिर से आ सकती है... इसलिए हम पहले से ही तैयार थे। अब आपको जो करना है करिए। हम कुछ भी नहीं देखेंगे।" उन गार्ड्स में से एक गार्ड बोला और फिर वो सभी पीछे हट गए।

"ओह्हो! धोखेबाज! तुम सबको तो अभी देखते हैं।" एडवर्ड का एक गार्ड तमतमा कर बोला।

साथियों का साथ और हौसला मिलने के बाद चैतन्य ने भी उनकी ओर आग उगलती नजरों से देखा, मगर वो कुछ कर पाता, उससे पहले ही पीछे की ओर एक तेज धमाका सा हुआ। सबसे पहले तो सभी ने उस धमाके की आवाज सुनते ही खुद को अपने हाथों के सुरक्षा घेरे में लिया और फिर धीरे से मुड़कर

उस आवाज की दिशा में देखा। बेड़ियों से मुक्त अल्फ़ी सलाखों को भी तोड़ कर... बाहर खड़ा हुआ... उन दोनों को खा
जाने वाली नजरों से घूर रहा था। उनमें से कोई कुछ समझ पाता उससे पहले ही बिजली की तेजी से अल्फ़ी उन दोनों गार्ड्स के पास पहुँच गया और फिर एक ही झटके में अनामिका को उनकी गिरफ्त से आजाद करवा दिया। सब इतनी तेजी से हुआ कि किसी को भी कुछ सोचने या समझने का मौका नहीं मिला। उसने झटके से चैतन्य की ओर देखा और फिर अनामिका को उसकी ओर धकेल दिया। चैतन्य ने आगे बढ़कर लहराती हुई अनामिका को अपनी बाहों में समेट लिया और फिर अल्फ़ी की ओर देखने लगा, जो इस समय साक्षात् ज्वालामुखी बना हुआ था।

एडवर्ड के उन दोनों गार्ड्स ने इस एकाएक हुई कार्यवाही पर हैरान होते हुए अल्फ़ी की ओर देखा। वहॉ मौजूद किसी को भी इस बात का अनुमान नहीं था कि अगले ही पल क्या होने वाला था।

अल्फ़ी ने एक तेज दहाड़ के साथ उन दोनों गार्ड्स की गर्दनें अपनी मुट्ठियों में दबोच लीं और दोनों को ही अपने एक एक हाथ से हवा में उठा दिया। चैतन्य और दूसरे गार्ड्स अल्फ़ी का ये रूप देखकर सहम से गए। उन्होंने सोचा कि शायद अब अल्फी उन्हें जमीन में पटक कर बेदर्दी से मारने वाला था, मगर अल्फी ने जो किया वह उनके वहमोगुमान में भी कहीं नहीं था। अल्फ़ी ने उन दोनों में से एक गार्ड को जमीन पर बेदर्दी से पटका और फिर उसकी गर्दन पर अपने पैर पूरी मजबूती से टिका दिए। सभी दम साधे अल्फी की कार्यवाही को देख रहे थे।

अगले ही पल अल्फी ने अपने हाथों में पड़े हुए गार्ड को दोनों हाथों से दबोच कर अपने पास किया और फिर बड़ी ही बेदर्दी से उसने अपने दॉत उसकी गर्दन में घुसा दिए। एक पेज दिल दहलाने वाली चीख वहॉ की दीवारों से टकराकर गूंज उठी। अल्फ़ी ने भी अपने दॉत गड़ाकर उसे छोड़ा नहीं.... बल्कि वह तो उसका रक्त पान करने लगा था। कुछ ही देर में उसे कार्ड का पूरा शरीर राख की तरह सफेद हो गया। उसकी ऑखों की ज्योति बुझ चुकी थी। उसका शरीर ढीला पड़ते ही अल्फ़ी ने उसकी गर्दन को पकड़ा और इतनी तेज ताकत लगाकर उसे मरोड़ा कि उसकी वो गर्दन धड़ से अलग हो गई। चैतन्य के साथ खड़े सभी गार्ड्स धीरे-धीरे पीछे की ओर हटने लगे थे। वहीं चैतन्य, अनामिका को संभाले अपनी आंखों के सामने वो दिल दहला देने वाला मंजर देख रहा था।

एक गार्ड को खत्म करने के बाद अल्फ़ी ने अपने पैरों के नीचे दबे हुए दूसरे गार्ड को भी बेदर्दी से पकड़ कर खड़ा किया। वो गार्ड अल्फ़ी का ये विकराल रूप देखकर थर्रा उठा था। उसकी ऑखें सदमे से फैल चुकी थीं। उसके चेहरे पर निरीहता और वेदना उतर आई थी। मगर उनकी हरकतों ने अल्फी को अब किसी भी रहम भरी नजर से आजाद कर दिया था। उसने गहरी सॉसे लेते हुए उस गार्ड को देखा और फिर उसकी गर्दन पर भी अपनी पैने दॉत गड़ा दिए। एक बार फिर वह पूरा कमरा दर्दनाक चीखों से कॉप उठा। कुछ ही देर में अल्फ़ी ने उसका भी वही हाल किया जो उसने.... पहले वाले गार्ड का किया था। इस बार अल्फ़ी ने उसकी गर्दन से अपने दॉतो को आजाद करते समय उसकी गर्दन का मांस भी उखाड़ लिया था। जब उस गार्ड का ठंडा पड़ चुका शरीर जमीन में गिरा, तो अल्फ़ी ने उसकी गर्दन भी उसके शरीर से उखाड़ फेंकी। दोनों ही खत्म हो चुके थे और एक पिशाच के काटने से उनके भी पिशाच के रूप में वापस आने की किवदंती का भी अंत हो चुका था.... जो ना जाने कितना सही था।

मगर एक कड़वा सच वो भी था, जो चैतन्य और दूसरे गार्ड्स के सामने खून में नहाया खड़ा था। वो अब धीरे-धीरे शांत होने लगा था और उसकी नजरें चैतन्य की बाहों में सिमटी हुई अनामिका पर थीं। एडवर्ड इस गलतफहमी में आगे बढ़ गया कि अब हर बाजी उसके हाथों में थी। मगर वो नहीं जानता था कि उसकी इन घटिया, नीच और घिरी हुई हरकतों ने एक अनहोनी को जन्म दे दिया था... जो उसका काल बनने वाला था। अनामिका की ओर उठने वाला हर हाथ अब टूट कर गिरने वाला था और उसकी ओर

उठने वाली हर ऑख अंधेरों में डूबने वाली थी। पिशाच आ चुका था।
भाग 120

वो खून में नहाया हुआ उन सबके सामने खड़ा था। चैतन्य उस अनहोनी को अपने सामने देख रहा था, जो बिल्कुल भी नहीं होनी चाहिए थी। अपने सामने पड़े उन दोनों गार्ड्स के क्षत-विक्षत शवों को देखकर चैतन्य दहल सा गया था। ऐसा नहीं था कि वो ये सब देख नहीं सकता था। उसने कुछ देर पहले खुद दो पापियों को इसी तरह से नर्क का रास्ता दिखाया था। पर.... उसने उन्हें सिर्फ जान से मारा था और अल्फ़ी.... वो तो उन दोनों का पूरा खून ही पी गया था। उसे अच्छी तरह से याद था कि दिव्याक्षि ने चेतावनी देते हुए कहा था कि मौजूदा हालातों में अल्फ़ी के मुँह खून नहीं लगना चाहिए, वरना बहुत बुरा होने की संभावना थी (भाग 101)। वो पिशाच कुल का था और कुछ बेहद दुर्लभ परिस्थितियों के कारण वो ऐसा होने के बाद धीरे-धीरे असीमित पैशाचिक शक्तियों का स्वामी बन सकता था। अल्फ़ी के धैर्य को देखकर अनामिका और चैतन्य दोनों को ही नहीं लगा था कि वो कुछ ऐसा कर जाएगा। खुद अल्फ़ी ने भी कभी ऐसा करने के बारे में नहीं सोचा रहा होगा। पर आज अनामिका की सुरक्षा के सवाल के साथ हर चीज उसके हाथों से बाहर निकल चुकी
थी। सच तो यही था कि अल्फ़ी ने अपना ये विकराल रूप इसलिए धारण किया था क्योंकि उसने अनामिका को बहुत बड़ी मुश्किल में फँसा देख लिया था। चूंकि उसे चैतन्य और उसे पकड़े गार्ड्स के बीच की कानाफूसी का पता नहीं था... इसलिए अब उसके पास अनामिका को सुरक्षित करने के लिए ऐसा करने के अलावा और कुछ बाकी नहीं रह गया था और अब समस्या को हल करने के बाद वो गहरी साँसे भरता उनके सामने था। उसकी ऑखों में चढ़ा गुस्सा धीरे-धीरे नीचे उतर रहा था और वो एक बार फिर से सामान्य हो रहा था।

अल्फ़ी एकटक अनामिका की ओर देख रहा था.. जैसे कि जानना चाहता हो कि वो ठीक है या नहीं। पर अनामिका तो अब चैतन्य के पास पहुँचकर पूरी तरह से बेहोश हो चुकी थी। शायद उसने ऐसी हालत में भी चैतन्य को पहचान लिया था। कोई राहत भरा जवाब नहीं मिलने पर उसने बेचैनी से चैतन्य की ओर देखा। चैतन्य ने उसकी ऑखों के सवाल को पढ़कर अपने कंधे पर सिर रखी हुई अनामिका की ओर देखा... और फिर अल्फ़ी की ओर देखकर हॉ में सिर हिलाया। अल्फ़ी एक गहरी साँस लेता हुआ घुटनों के बल गिर पड़ा और अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया।

अल्फ़ी ने अनामिका को जरूर बचा लिया था, पर वो सब अभी भी खतरे से घिरे हुए थे। यहॉ से सुरक्षित बाहर निकलना भी बहुत ही जरूरी था। चैतन्य ने अपने सहयोगी गार्ड्स में से एक को बुलाया और उससे कुछ पूछा। उसके जवाब देने पर चैतन्य ने उसके कानों के पास धीमी आवाज में कुछ कहा। वो सिर हिलाता बाकी के गार्ड्स के साथ तेजी से बाहर की ओर गया। अल्फ़ी भी अब अपने घुटनों पर दोनों हाथ टिकाए जमीन को घूरते हुए बैठा था। चैतन्य ने अनामिका को अपनी बाहों में उठाया और एक ओर ले गया। उसे एक साफ जगह पर लिटाकर वो उसे होश में लाने की कोशिश करने लगा।

"उसे सोने दो। वरना इस तरह अचानक होश में आने के बाद उसे भ्रम होने
लगेंगे। फिर वो और भी उलझने लगेगी।" अल्फ़ी ने उसी तरह जमीन को घूरते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर चैतन्य ने उसकी ओर हैरत से देखा और पूछा, "क्या मतलब?"

"ये दवा दिमाग पर असर करती है। वो सोचने-समझने की क्षमता लगभग खत्म कर देती है और ज़ुल्म ये कि जल्दी से बेहोश भी होने नहीं देती। इसका असर खत्म होने के लिए एक गहरी नींद जरूरी है। ताकि दिमाग को आराम मिल सके।" अल्फ़ी ने तफ्सील से बताया।

"और तुम्हें ये कैसे पता?" चैतन्य ने पूछा।

"क्योंकि सुबह ऐसी ही हालत थी मेरी।" अल्फ़ी ने एक आह के साथ बताया।

और चैतन्य को फॉरेस्ट केबिन से अल्फ़ी की गिरफ्तारी के बाद उसके गुनाह कबूल करने की सारी कहानी समझ आ गई। उसके पास अब तो अल्फ़ी के लिए अफसोस भी खत्म होने को थे।

"तो क्या इसीलिए तुमने इल्ज़ाम अपने सिर ले लिया। मुझे लगा कि शायद हेममाया के शरीर को पाने के लिए तुमने ये सब किया।" चैतन्य ने अनामिका के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"नहीं! अनामिका के लिए किया।" अल्फ़ी ने बग़ैर किसी लाग-लपेट के कहा। उसके जवाब से अनामिका के बालों पर फिरती चैतन्य की ऊंगलियॉ ठहर गईं, मगर उसने नज़रें उस पर से हटाई नहीं। आगे फिर किसी ने कुछ नहीं कहा। बस तीनों की सॉसों की आवाज वहॉ फैली ख़ामोशी में खलल डालती रही।
थोड़ी ही देर में वो गार्ड्स अपने और साथियों को लेकर आ गए। चैतन्य ने बेहोश अनामिका को बाहों में उठा लिया था।उन सभी ने चैतन्य और अल्फ़ी के चारों ओर इस तरह से घेरा बना लिया कि उनके बीच छिपे चैतन्य, अल्फ़ी और अनामिका किसी को दिखाई ना दें। अनामिका की ऐसी हालत के कारण वो अभी किसी से भी उलझने का खतरा मोल नहीं ले सकते थे। उन गार्ड्स की मदद से वो तीनों आसानी से अल्फ़ी के कमरे तक पहुँच गए। उन दोनों ने जल्दी से अपनी-अपनी शर्ट चेंज की क्योंकि दोनों की ही कमीज खून से सनकर खराब हो चुकी थी। काम हो जाने के बाद चैतन्य ने उन सभी गार्ड्स का धन्यवाद किया। उन गार्ड्स ने आगे भी पूरे सहयोग का भरोसा दिया और फिर वहॉ से चले गए।

"यहॉ क्यों आए हैं हम?" अल्फ़ी ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"यहॉ से बाहर निकलने के लिए!" चैतन्य ने कहा।

"यहॉ से!" अल्फ़ी चौंका।

"हॉ! तुम पूछते थे ना कि मैं पहली बार मेंशन के अंदर कैसे आया था? आओ दिखाता हूँ।" अनामिका को बाहों में उठाए हुए ही चैतन्य उस आईने की ओर बढ़ गया, जिससे वो पहली बार मेंशन के अंदर आया था। अल्फ़ी भी चुपचाप उसके पीछे चल दिया। आइने के पास पहुँचकर चैतन्य ने मुड़कर अल्फ़ी की ओर देखा। वो एक दुविधा में फँस गया था। इस रास्ते का इस्तेमाल चैतन्य और अनामिका तो आसानी से कर सकते थे, पर अल्फ़ी... वो इसे कैसे इस्तेमाल कर सकता था? और फिर उसके दिमाग में एक ख्याल आया।

"अल्फ़ी! अनामिका को संभालो जरा!" चैतन्य ने अनामिका की ओर इशारा करते हुए अल्फ़ी से कहा, जिस पर अल्फ़ी ने उसकी बात समझने
की गरज से अपने माथे पर बल डाले थे।

"अरे यार! ये रास्ता मैं और अनामिका ही इस्तेमाल कर सकते हैं क्योंकि अनामिका ने बस मुझे इजाज़त दी है। तुम्हें आगे आने के लिए अनामिका के साथ आना होगा।" उसे जवाब देते हुए चैतन्य ने कहा। उसकी बात समझकर अल्फ़ी ने झिझकते हुए अनामिका की ओर देखा और बस खड़ा रह गया।

"अल्फ़ी! जल्दी करो। यहाँ सब हमारे मददगार नहीं हैं। तुम क्या चाहते हो कि हम सब एक बार फिर से उस विकट स्थिति में फँस जाएँ।" चैतन्य ने आसपास देखते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फी ने इनकार में सिर हिलाया और फिर आगे आकर उसने बेहोश अनामिका को अपनी बाहों में ले लिया। अनामिका का सिर अल्फ़ी के दिल वाली जगह पर टिका था। वो एक बार फिर उसके बेहद करीब थी और ये अहसास ही उसके मुर्दा होते दिल में फिर से धड़कने भर गया। वो इतनी जोर से धड़का कि अचेत अनामिका भी उसे महसूस कर हल्का सा कसमसाई थी। अल्फ़ी ने बिना सिर हिलाए पलकें झुकाकर उस पर एक नज़र डाली। उसका दिल एक बार फिर से बगावत पर आमादा होने लगा और यहीं... उसने तुरंत अपनी निगाहें उस पर से हटा लीं। हालांकि धड़कनें अभी भी बदस्तूर पूरी रफ्तार से दौड़ रही थीं।

"आओ!" चैतन्य ने उसकी ओर मुड़कर कहा।

"और ये!" अल्फ़ी ने अनामिका की ओर इशारा करते हुए पूछा।

"क्यों? क्या हो गया?" चैतन्य ने पलटकर सवाल किया।

"नहीं! वो... मैं..." अल्फ़ी सही लफ्ज़ ढूंढता रह गया।
"इतनी भी भारी नहीं है वो कि कुछ देर उठाकर ना रख सको।" चैतन्य ने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा। वो अल्फ़ी की ऑखों में उसकी उलझन पढ़ चुका था।

"नहीं.. ऐसी बात नहीं है।" अल्फ़ी ने हिचकिचाकर कहा।

"उसके बिना अंदर नहीं आ सकते तुम। वरना तकलीफ़ नहीं देता तुम्हें।" चैतन्य ने कहा और अल्फ़ी का दिल तकलीफ़ शब्द पर चाक हुआ था। कैसा दिन आया था कि कोई और उससे कह रहा था कि वो.... तकलीफ़ नहीं है। वो उसके लिए तकलीफ़ कैसे हो सकती थी। उसके लिए तो वो दुनिया की सारी तकलीफें अपने सिर पर उठा सकता था। पर आज के हालातों में वो अपने जज़्बात जाहिर करने का हक़ खो चुका था। अब उसके हिस्से में बस एक लंबी ख़ामोशी ही बाकी रह गई थी।

चैतन्य के उस आईने के अंदर जाते ही अल्फ़ी भी अनामिका के साथ उसके पीछे हो लिया। छलद्वार की भूल-भुलैया से गुज़रकर वो उसी झील से बाहर निकले। हमेशा की तरह ही वो पूरी तरह से सूखे हुए थे। अल्फ़ी इतने हैरतअंगेज वाकयों से गुजर चुका था कि अब कुछ भी उसे हैरान नहीं कर पा रहा था। चैतन्य के पीछे-पीछे अनामिका को बाहों में उठाए हुए वो झील के किनारे आ गया।

उस जगह को देखकर उसके मुँह से आह निकल गई। यहीं तो वो हमेशा परिधि से मिला करता था। अपने दिल की बातें अपनी माया तक पहुँचाया करता था, जो कि उसे कभी नहीं मिली। मिली होतीं... तो शायद... उसकी हेममाया आज उसके साथ... उसके पास होती। और परिधि का ख्याल आते ही उसके अंदर एक बार फिर से गुस्से का लावा उबलने लगा। वो बाहर आता... इससे पहले ही उसकी

बाहों में मौजूद अनामिका के मुँह से हल्की सी कराह निकली और उसका ध्यान कहीं और जाते-जाते वापस
लौट आया।

अनामिका की आवाज सुनकर चैतन्य तेजी से उसके पास आया और उसने अनामिका को अपनी बाहों में ले लिया। अल्फ़ी को एकदम से लगा कि कोई उसकी साँसे उसके अंदर से निचोड़कर ले गया हो और वो कुछ भी नहीं कर सका। एक क़तरा दर्द बनकर आँख से निकला, जिसे बहने से पहले ही अल्फ़ी ने मिटा दिया और भारी दिल के साथ चैतन्य के पीछे चल दिया।

वो सब जल्दी-जल्दी जंगल के अंदरूनी हिस्से में पहुँच गए। अनामिका की बेहोशी भी अब टूटने लगी थी। चैतन्य ने उसे एक पेड़ की छाँव के नीचे बैठाया। अब वो अस्पष्ट आवाज में कुछ बुदबुदा रही थी।

"अनु!" चैतन्य ने उसे पुकारा।

अगले ही पल अनामिका ने कसमसाकर अपना पहलू बदला और टूटी हुई आवाज में एक नाम उसके होंठों से निकला,

"अल्..... फ़ी!"

और ये सुनते ही दोनों अपनी-अपनी जगह में सदमे से जम गए। दोनों ने ही एक चोर नज़र एक-दूसरे पर डाली और फिर तुरंत ही अपने अंदर के चोर को छिपाया।

"अनामिका! अनु! उठो!" चैतन्य ने अनामिका का गाल थपथपाया और फिर मिचमिचाते हुए अनामिका ने अपनी आँखें खोल दीं। वो एकटक चैतन्य के चेहरे को देख रही थी, जैसे कि हालातों को समझने की कोशिश
कर रही हो और जैसे ही उसे चैतन्य के सचमुच अपने सामने होने का यकीन हुआ, उसने तेजी से आगे बढ़कर उसके सीने में अपना चेहरा छिपा लिया और.... अल्फ़ी ने एक आह के साथ अपना चेहरा फेर लिया।

"सब ठीक है। हम सब सुरक्षित हैं।" चैतन्य ने उसके बालों में अपनी ऊंगलियाँ फिराते हुए कहा। वो अब धीमी आवाज में सुबक रही थी। नाक सुड़कते हुए जब उसने अपना चेहरा थोड़ा ऊपर उठाया तो... चैतन्य के कंधे के ऊपर से उसने दूर खड़े अल्फ़ी को देखा, जो सिर झुकाए खड़ा था। उस पर अपनी नज़र रखे वो धीरे से चैतन्य से अलग हुई। चैतन्य ने उसे दूर होते देखा तो उसकी नज़र का पीछा किया।

"वो ठीक है अब!" चैतन्य ने भी उसकी ओर देखते हुए कहा।

"क्या सच में?" अनामिका ने अल्फ़ी के चेहरे को पढ़ने की कोशिश करते हुए कहा।

"तुम ठीक हो?" चैतन्य ने तुरंत ही बातों का रूख बदला और अनामिका जैसे अपनी हालत पर लौटी। उसने एक हाथ से अपना सिर पकड़ लिया।

"पानी!" अपने होंठों पर ज़बान फेरते हुए वो बोली, तो चैतन्य इधर-उधर देखने लगा।

"मेरी थैली में है जरा सा!" अनामिका ने पेड़ पर सिर टिकाकर कहा। चैतन्य ने तेजी से उसकी थैली से एक छोटा सा धातु का बोतल जैसा पात्र निकाला। अनामिका के हुंकार भरने पर वो उसने उसकी ओर बढ़ा दी।

"अनु!"

"हॉ!"
"वो खंज़र... तुम्हारे पास था ना! अब इस थैली में नहीं है। कहीं उस एडवर्ड को तो नहीं मिल गया।" चैतन्य ने बेचैनी से थैली के समान को खंगालते हुए कहा।

"वो मैंने स्टडी में छिपा दिया है।" अनामिका ने कहा।

"स्टडी में! अगर उस एडवर्ड ने स्टडी में छानबीन की तो उसे मिल नहीं जाएगा!" चैतन्य ने आशंका व्यक्त करते हुए कहा।

"नहीं! उन लोगों ने जब मुझ पर हमला किया... मेरा सबसे पहला ध्यान उस खंज़र पर ही था। इसीलिए तो मैं अपने बचाव में कुछ नहीं कर सकी। तुम्हें याद है वो धागा, जो उस चाबी में बंधा हुआ था। उस धागे की वजह से ही वो चाबी मुझे दिखाई नहीं दे रही थी। वो धागा वहीं पड़ा था। जब मैं उनके हमले की वजह से दर्द से नीचे बैठी तो वो धागा मुझे दिखाई दिया। पता नहीं क्यों.... पर मैंने वो धागा फुर्ती से उस खंज़र में लपेटकर.... उस खंज़र को एक कोने की ओर धकेल दिया और आगे बढ़ते हुए मेरी ऑखों के सामने ही वो खंज़र गायब हो गया।" अनामिका ने चैतन्य को राहत भरी खबर देते हुए कहा।

"मतलब कि... फिलहाल तो वो खंज़र सुरक्षित है।" चैतन्य ने कहा।

"हॉ!" अनामिका ने दो घूंट भरने के बाद वो पात्र वापस लौटाते हुए कहा।

"हो गया?" चैतन्य ने फ़िक्र से पूछा।

"हमें पानी की जरूरत पड़ेगी। अभी मैं खुद से पानी उत्पन्न नहीं कर सकती। अपनी शक्ति का इस्तेमाल करने के लिए मुझे कम से कम पानी
की एक बूंद चाहिए होती है। हम इसे बर्बाद नहीं कर सकते।" अनामिका ने बड़ी मुश्किल से खुद को सिद्ध करते हुए कहा।

"कोई बात नहीं! तुम ये पी लो। मैं झील से पानी ले लाऊंगा।" चैतन्य ने उसकी ओर उस पात्र को बढ़ाते हुए कहा। अनामिका ने उसकी ओर देखा और फिर पूरा पानी पी लिया। पानी पीने के बाद उसे बेहतर महसूस होने लगा।

"अल्फ़ी को क्या हुआ?" चैतन्य को पानी का पात्र वापस लौटते हुए उसने कहा।

"वही... जो नहीं होना चाहिए था।" चैतन्य ने गहरी साँस के साथ अपनी बात कही।

"मतलब!"

"उसके मुँह खून लग गया अनु! दिव्याक्षि ने कहा था कि ऐसा नहीं होना चाहिए। पर उस समय... तुम्हें उस एडवर्ड के गंदे इरादों से बचाने के लिए अल्फ़ी को शायद यही सही लगा होगा। सब इतनी तेजी से हुआ कि हम भी कुछ ना कर सके।" चैतन्य ने बुझी हुई आवाज में कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका ने एक सवालिया नज़र अल्फ़ी की ओर डाली।

"मैं पानी लेकर आता हूँ। सावधान रहना!" अनामिका के गालों पर अपनी ऊंगलियॉ फेरते हुए चैतन्य ने कहा।

अनामिका ने हॉ में सिर हिलाया। चैतन्य पानी का पात्र लेकर अल्फ़ी के पास गया और उससे कुछ कहा। दोनों ने ही अनामिका की ओर नजर डाली और फिर चैतन्य तेजी से झील की ओर निकल गया। अनामिका, चैतन्य की बातों में उलझ गई थी। अल्फ़ी ने उसके लिए इतना बड़ा कदम उठा लिया था। क्यों? कहीं उसने अनामिका के हेममाया होने पर यकीन तो नहीं आ गया और ये सोचकर वो और भी बेचैन हो गई। वो दोनों उसी तरह फासले पर बैठे हुए एक-दूसरे से नज़रें चुराए बैठे रहे।

अभी चैतन्य को गए थोड़ी ही देर हुई थी कि उन दोनों ने जंगल के एक हिस्से से कुछ आवाजें पास आती सुनी। वो दोनो ही चौकन्ने हुए। अल्फ़ी तेजी से दौड़ता हुआ अनामिका के पास आया, जो आवाज की दिशा में देखते हुए खड़ी थी। उसने उसका हाथ पकड़ा और उन आवाजों के विपरीत दिशा की ओर दौड़ लगा दी। एक सुरक्षित दूरी पर आकर वो दोनों एक मोटे पेड़ के पीछे छिप गए और उस ओर देखने लगे।

कुछ ही देर में उन्होंने कुछ कबिलाई लोगों को उस तरफ ही आते देखा, जो दिखने में ही बड़े ही खतरनाक दिख रहे थे।

"ये नई आफत यहॉ कैसे आ गई? ये यहॉ क्या कर रहे हैं?" अल्फ़ी उनकी ओर देखकर फुसफुसाया।

"तुम जानते हो इन्हें?" अनामिका ने पूछा।

"अच्छी तरह तो नहीं... बस इतना ही कि.... ये बहुत ही ज्यादा ख़तरनाक हैं।" अल्फ़ी ने उनकी ओर नज़र रखे हुए कहा।

"पर हैं कौन ये? दिख तो बहुत गुस्से में रहे हैं।" अनामिका ने पूछा।

"ये.... सुरमी कबीले से हैं।"
(किसे-किसे सुनाई दीं..... सिसकियॉ? 😂)

"ये.... सुरमी कबीले से हैं।"

"सुरमी कबीला! अब ये क्या बला है?" अनामिका ने झुंझलाकर पूछा।

"इनके बारे में ज्यादा जानकारी किसी को भी नहीं है क्योंकि ये बाहरी दुनिया से बिल्कुल अलग-थलग जंगलों के अंदर ही रहते हैं। जंगल ही इनकी दुनिया हैं और अपनी दुनिया में किसी की दखल ये बर्दाश्त नही करते। इसलिए इनके बारे में ज्यादा कोई भी नहीं जानता है।" अल्फ़ी ने दूर मौजूद उन लोगों पर नज़र रखे हुए कहा।

"क्या ये ख़तरनाक हैं?" अनामिका ने भी उन लोगों को घूर कर देखते हुए पूछा।

"हम्म!" अल्फ़ी ने उनकी तरफ देखते हुए ही हुंकारी भरी और तभी उसे कुछ खटका सा हुआ। उसने अनामिका की ओर देखा, तो वो उन कबिलाई आगंतुकों को देखने के कौतूहल में आड़ से थोड़ा बाहर निकल गई थी। पहले तो ये देखकर अल्फ़ी की ऑखें फैली और फिर अगले ही पल उसने अनामिका को अपनी ओर खींचा। वो एक ही झटके में उसके करीब हुई थी।
"तुम्हें कोई बात एक बार में समझ नहीं आती ... या फिर मुसीबत सिर में ढोने का शौक है तुम्हें! तुमने सुना नहीं मैंने क्या कहा? वो खतरनाक हैं माया!" और बहुत ही धीमे मगर सख़्त लहज़े में उसे डपटता हुआ अल्फ़ी नाम पर आकर एकदम ही चुप हो गया। अनामिका भी इस नाम पर चौंकी और फिर उससे दूर होते हुए नजरें चुरा गई। अल्फ़ी भी थोड़ा असहज हुआ और फिर उनके बीच ख़ामोशी रह गई।

जब ये ख़ामोशी अनामिका को चुभने लगी, तो उसने ही इस पर वार करते हुए कहा, "ये इन्हीं जंगलों में रहते हैं क्या?"

"नहीं! यहॉ से बहुत दूर।" अपनी झिझक से बाहर आते हुए अल्फ़ी ने जवाब दिया।

" तो फिर ये यहॉ क्या कर रहे हैं?" अनामिका ने अगला सवाल किया।

"मुझे क्या पता?" अल्फ़ी ने कहा।

"मुझे लगा कि शायद... सर्वशक्तिमंडल के चुनाव के लिए आए हैं।" अनामिका ने एक अनुमान लगाकर कहा।

"नहीं। मेहमानों की लिस्ट पूरे चार बार चेक की है मैंने। उसमें इनका नाम नहीं था।" अल्फ़ी ने जवाब दिया।

"तो फिर..."

"पता नहीं! ये अपनी जगह छोड़ते नहीं कभी। इसलिए अगर यहाँ है तो जरूर कोई बड़ी बात ही होगी।" अल्फ़ी ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा।

"मतलब कि.... एक और मुसीबत!" अनामिका ने झुंझलाकर कहा।
"मुसीबत! माई गॉड! हम तो भूल ही गए।" अचानक कुछ याद आने पर अल्फ़ी चौंक कर बोला।

"क्या?"

"चैतन्य! वो झील से वापस आता ही होगा। कहीं इनसे ना टकरा जाए।" अल्फ़ी ने समस्या बताते हुए कहा।

"क्या हुआ? टकरा गया तो कुछ हो जाएगा क्या?" अनामिका ने बात समझने की गरज से पूछा।

"सब कहते हैं कि इनके पास कोई दैवीय शक्ति है, जिसकी वजह से कोई भी इन पर जीत हासिल नहीं कर सकता। कोई जादुई ताकत भी नहीं! इसलिए इनसे टकराना बेवकूफी ही होगी और कुछ नहीं। इसके आगे कोई सवाल भी अब फिजूल ही है।" अल्फ़ी ने उस पर एक नज़र डालते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका के चेहरे पर चिंता सी उभरी थी। अल्फ़ी ने एक बार फिर उस तरफ नज़र डाली जिस तरफ से चैतन्य को वहाँ आना था। वो मन ही मन मना रहा था कि चैतन्य अभी ना ही आए पर... उस तक खबर पहुँचाने का कोई रास्ता भी तो नहीं दिख रहा था। अनामिका की तरफ से कोई सुगबुगाहट न पाकर अल्फ़ी ने उसकी ओर नज़र डाली तो वो... आँखें बंद कर सिर झुकाए खड़ी थी। आल्फ़ी उस पर हैरान नज़रें डाले खड़ा रह गया। कुछ देर में अनामिका ने अपनी आँखें खोली और अल्फ़ी की ओर देखा। अल्फ़ी ने अपनी आँखों से सवाल किया, जिस पर अनामिका ने अपना सिर हिला दिया।

"कुछ सोचा तुमने? चैतन्य को कैसे बताएँ?" अल्फ़ी ने कहा।
"बता दिया मैंने।" अनामिका ने कहा और ये सुनकर अल्फ़ी ने एक बार फिर से उसे चौंककर देखा था।

"वो... हम दोनों मेंटली कनेक्टेड हैं।" अनामिका ने उसकी आँखों के सवाल का जवाब देते हुए कहा।

"ओह! तो... उसने कुछ कहा।" अल्फ़ी ने पूछा।

"हाँ! हमें सावधान रहने के लिए कहा है।" अनामिका ने कहा।

"ओह!" अल्फ़ी के मुँह से बस इतना ही निकला, मगर दिल उन दोनों की इतनी करीबी से तड़पकर रह गया था। उन दोनों ने ही एक बार फिर से चैतन्य का इंतजार करते हुए अपना ध्यान सुरमी कबीले के आगमन पर लगाया, जो कछुए की तरह आगे आ रहे थे।

अभी कुछ देर ही हुई थी कि अनामिका के मस्तिष्क में दस्तक हुई। चैतन्य था, जो घबराया हुआ था।

"क्या हुआ चैतन्य? तुम परेशान लग रहें हों।" अनामिका ने कहा।

और फिर चैतन्य ने उससे कुछ कहा, जिसे सुनकर उसके माथे पर भी शिकन बढ़ी थी।

"और तुम?" अनामिका ने बेचैनी से पूछा। चैतन्य ने कुछ कहा, जिस पर उसने तेजी से सिर हिलाया और फिर संपर्क टूट गया।

"क्या हुआ?" अल्फ़ी ने पूछा।
"तांत्रिक श्रेष्ठ से उसकी बात हो गई है। उन्होंने किसी सुरक्षित जगह में हम दोनों को छिपने के लिए कहा है आबादी से दूर। अगली खबर तक!" अनामिका ने कहा।

"और वो?" अल्फ़ी ने पूछा।

"वो बाद में संपर्क करेगा।" अनामिका ने अपनी चैतन्य के लिए अपनी फ़िक्र छिपाते हुए कहा।

"तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा है तो फिर मानना ही पड़ेगा।" अल्फ़ी ने कहा।

"पर हम इस जंगल में खो गए तो! वैसे भी ये जंगल इतना पेचीदा है।" अनामिका ने आशंका जताई।

"मुझे एक जगह पता है... जहाँ कोई नहीं आएगा। चलो!" अल्फ़ी आत्मविश्वास भरी आवाज में कहा और उसका हाथ थाम लिया। चैतन्य को छोड़कर कहीं और जाने में अनामिका को झिझक हो रही थी। मगर ऐसे समय में वो चैतन्य की बात भी नहीं टाल सकती थी। इसलिए चुपचाप अल्फ़ी का हाथ थामे आगे बढ़ गई।

****
अनामिका की सुरक्षा अल्फ़ी के हाथों में देकर चैतन्य झील की ओर निकल गया। उसे लगा था कि वो यूं जाकर... यूं लौट आएगा। मगर वो नहीं जानता था कि इन दो यूं के बीच का फासला लंबा होने वाला था।

पानी वापस लेकर लौटते समय उसे अनामिका की ओर से सुरमी कबीले के आने और उसे कुछ देर इंतजार करने का संदेश मिला। चैतन्य ने भी हामी भरते हुए उन्हें सावधान रहने के लिए कहा। वो अनामिका के साथ ही संपर्क में था कि तभी उसे अपने मस्तिष्क में किसी और की भी आहट सुनाई दी। उसने अनामिका से संपर्क तोड़ा ही था कि उसका मस्तिष्क एक मजबूत संपर्क से जुड़ गया।

"कौन है?" चैतन्य ने सवाल किया।

"तुम वायु-रक्षक हो?" सामने से एक तफ्तीशी सवाल आया और उस सवाल को सुनते ही चैतन्य की आँखें आश्चर्य से फैल गईं।

"आप कौन?" जवाब देने की बजाय उसने पलट कर सवाल किया।

"मैं तांत्रिक श्रेष्ठ! सिद्धनाथ!" सामने से परिचय भरे शब्द आए।

और ये नाम सुनते ही चैतन्य के हाथ से पानी का पात्र छुटते-छुटते रह गया। तांत्रिक श्रेष्ठ ने खुद उससे संपर्क किया था। इसका मतलब तो यही था कि अमांडा ने अपना काम कर दिया था। मगर इस तरह का संपर्क उसकी समझ में नहीं आया।

"तांत्रिक श्रेष्ठ! जी हॉ! मैं वायु-रक्षक ही हूँ। मुझे आपसे बहुत जरूरी बातें करनी थी। बहुत ही ज्यादा जरूरी!" चैतन्य ने छूटते ही कहा।
"मुझे भी! हम सबको तुम्हारा ही इंतजार था। अमांडा ने आकर बताया तब हमने तुरंत ही तुमसे संपर्क किया। पहले ये बताओ कि अल्फ़ी कहॉ हैं? अमांडा ने बताया कि तुम उसे बचाने गए थे।" सामने से तांत्रिक श्रेष्ठ की चिंता में डूबी हुई आवाज आई।

"वो तो... जंगल में है। दरअसल हम साथ ही थे। मैं पानी लेकर उनके पास जा ही रहा था कि तभी अनामिका ने मुझसे संपर्क करके मुझे रूकने के लिए कहा।" चैतन्य ने कहा।

"कौन अनामिका?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पूछा।

"जी वो.... मेरे साथ है।" चैतन्य ने कहा।

"ओह! क्या वो डायन है?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक अप्रत्याशित सा सवाल किया।

"जी!" चैतन्य ने छोटा सा जवाब दिया।

"क्या वो अकेली है?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पूछा।

"नहीं! अल्फ़ी है साथ में!" चैतन्य ने जवाब दिया।

"शुक्र है! कुछ और जानकारी?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य से पूछा।

"जी! अल्फ़ी ने कहा कि सुरमी नाम का कोई जंगली कबीला आ रहा है, तो मुझे कुछ देर रूकना पड़ेगा।" चैतन्य ने कहा।

"हे भगवान! ये लोग पहुँच भी गए! चारों ओर से बस आफतें ही आ रही हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ की घबराई हुई आवाज आई।
"मतलब?" चैतन्य के मुँह से निकला।

"बस इतना पता है कि वो सुरमी कबीले वाले डायनों की वजह से ही यहॉ आ रहे हैं। उन्होंने अपना जंगल छोड़ा है... इसका मतलब कोई बड़ी बात हुई है। कल रात ही उनका संदेश हमें मिला था। पर वो इतनी जल्दी यहॉ पहुँच जाऍंगे इसका अंदाजा नहीं था मुझे। अपनी दोस्त तक खबर पहुंचाओ कि वो अल्फ़ी के साथ उस जंगल में ही छिपकर रहे। गलती से भी आबादी में आने की कोशिश ना करे। इस एडवर्ड और माया ने कुछ तो बहुत बड़ा कांड किया है। और तुम जंगल के बीच एक जगह है... जिसे हम नर्क का द्वार कहते हैं वहॉ मेरा इंतजार करो। बहुत जरूरी है ये।" सामने से आवाज आई।

"जी! ठीक है।" चैतन्य के इतना कहते ही संपर्क टूट गया। परेशान से चैतन्य ने अनामिका से एक बार फिर संपर्क किया और उसे अल्फ़ी के साथ किसी सुरक्षित जगह में छिपने के लिए कहा और बाद में खुद ही संपर्क करने की बात कही।

अनामिका से संपर्क टूटने के बाद चैतन्य तेजी से नर्क के द्वार की ओर बढ़ गया। उसका दिल आशंकाओं के बोझ से दबा हुआ था। उसे अनामिका के साथ वापस जाना था और हालात थे कि.... हर पल के साथ बिगड़ते जा रहे थे। पर अब तांत्रिक श्रेष्ठ से होने वाली मुलाकात ने उसके हौसलों को थोड़ी और हवा दे दी थी। उसे पूरी उम्मीद थी कि उनसे मुलाकात के बाद चीजें जो उनके हाथ से छूट गई थीं... फिर से सही हो जाएँगी।

जल्द ही वो एक बार फिर से उसी खुले मैदान पर पहुँच गया था। उसे वो दिन याद आया कि जब वो पहली बार यहाँ आया था और एक तेज जो झटके की वजह से बेहोश ही हो गया था। बाद में वही झटका उसने सर विलियम के साथ पहली बार हाथ मिलाते समय महसूस किया था...
हालांकि उसकी शक्ति बहुत ही कम थी।

अब वो बेचैनी से तांत्रिक श्रेष्ठ का इंतजार कर रहा था। कुछ देर बाद उसने देखा कि तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ जी एक ओर से उसी मैदान की तरफ आ रहे थे। चैतन्य को याद आया कि एक बार उस रहस्यमई कुएँ से गुजरकर वो उसी तरफ से यहाँ था। मतलब कि वो रास्ता इस्तेमाल में था। जल्द ही वो दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े थे।

"अद्भुत! कभी-कभी समय-चक्र भी कितनी अजीब तरह से घूमता है। वरना अतीत और भविष्य की मुलाकात इतनी आसान भी नहीं है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य को ऊपर से नीचे की ओर देखते हुए कहा।

"मुझे तो खुद ही समझ में नहीं आ रहा है कि आखिर ये सब हुआ कैसे और सच कहूं तो अभी भी कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि हो क्या रहा है?" चैतन्य ने कहा।

"ठीक है... तो मुझे सारी बातें बताओ कि आखिर हुआ क्या है? कैसे हुआ है? शायद मेरी समझ में कुछ आ जाए।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य से कहा।

"जी!"

इसके बाद चैतन्य ने कम से कम शब्दों में उन्हें सब बता दिया। उनका यहाँ आकर फँसना... अल्फ़ी, परिधि, सर विलियम और दूसरों से मिलना... अल्फ़ी और हेममाया की कहानी, एडवर्ड और माया की साजिशें और सबसे महत्वपूर्ण... छद्म पिशाच साधना, माया की असलियत और उसके खतरनाक मंसूबे। उसने हर बात तांत्रिक श्रेष्ठ को बता दी।

"इसका मतलब है कि वो दोनों मिले हुए हैं। इसलिए हम सब जानकर भी उलझते रहे। अल्फ़ी के लिए बहुत अफसोस है। अगर उसने पहले ही
बताया होता... तो शायद हम मदद भी कर सकते थे।" तांत्रिक श्रेष्ठ की अफसोस में डूबी हुई आवाज आई।

"पर हेममाया एक जल-रक्षक थी और उसे सर्वशक्तिमंडल के लिए भी चुना गया था। तो उसके यहाँ

होने की भनक किसी को भी क्यों नहीं हुई?" चैतन्य ने एक स्वाभाविक सा सवाल किया।

"ये सब एडवर्ड का ही काम हो सकता है। दरअसल... जब भी किसी डायन, पिशाच या किसी और समुदाय के सदस्य को जुर्म करने पर सजा दी जाती है, तो सबसे पहले उसे अभिमंत्रित बेड़ियों से जकड़ा जाता है और तुम बता रहे हो कि उस माया ने भी हेममाया को बेड़ियॉ लगाई थीं। उन बेड़ियों की वजह से ही उसकी शक्तियॉ बंध गईं और किसी को भी उसके यहॉ रहने की भनक नहीं लगी। विलियम और मुझे एडवर्ड और माया की इस सांठ-गांठ का कभी पता नहीं चला। हमारा पूरा ध्यान तो बस एडवर्ड में ही था। पर वो इतना चालाक है कि उसे पकड़ पाना मुश्किल ही है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"तो क्या वो कामयाब हो जाऍगे?" चैतन्य ने बेचैनी से पूछा।

"समस्या यही है कि उन दोनों की महत्वाकांक्षाऍ अलग-अलग हैं। हम ये तो समझ गए कि माया उर्फ छाया इस नर्क के द्वार को खोलकर उस पिशाचिनी की शक्तियॉ पाना चाहती हैं और एडवर्ड पिशाच की शक्तियॉ। अब समस्या ये है कि हम उन दोनों को ही तभी रोक सकते हैं, जब वो अपनी इन कारगुजारियों में लगे हुए हों। अब समस्या ये है कि हम माया के बारे तो जान गए हैं कि उसे कहॉ रोकना है, पर एडवर्ड ये सब कहॉ कर रहा है.... इसकी भनक भी नहीं लग सकी हमें। वो हद से ज्यादा चालाक है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"हॉ तो ठीक है ना! माया को तो हम रोक ही सकते हैं और एडवर्ड पर
नज़र रख सकते हैं, जिससे वो पकड़ा जाए।" चैतन्य ने अपनी राय जाहिर की।

"ये भी एक समस्या है। एडवर्ड कुछ तो ऐसा इस्तेमाल कर रहा है, जो उसे हमसे बचाकर रखे हुए हैं। तुमने भी कहा कि जब तुमने उसका पीछा किया तो... वो हाथ से निकल गया। एक बात ये जान लो चैतन्य... कि उन दोनों का सफल होना जरूरी नहीं है। उनमें से अगर एक भी सफल हो जाता है तो... दूसरे का सफल होना भी तय है और इसलिए हमें एडवर्ड की तरफ से ज्यादा खतरा है। माया को तो हम रोक लेंगे... पर एडवर्ड का बिल कहॉ से ढूंढे? ऊपर से ये कबीले वाले। पता नहीं किस लिए यहॉ आ रहे हैं? अब उनकी वजह से हमारा समय नष्ट होने वाला है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने गहरी साँस छोड़ते हुए कहा।

"पर कुछ तो करना ही पड़ेगा ना! एक तो वो माया हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ी हुई है। उसे पता चल गया है कि मैं वायु-रक्षक हूँ।" चैतन्य ने अपनी समस्या सामने रखी।

"ये तो अच्छी बात है।" कहते हुए तांत्रिक श्रेष्ठ के होंठ मुस्कुराए।

"जी मैं समझा नहीं!" उन की मुस्कुराहट में उलझते हुए चैतन्य ने कहा।

"लगता है कि... एक बार फिर... उसी जाल में फँसेगी ये माया उर्फ छाया... जिसमें बरसों पहले माणिक ने उसे फँसाया था।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे समझाते हुए कहा।

"क्या मतलब?" चैतन्य उनकी बातों से हड़बड़ाया।

"प्रेम जाल और क्या?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक शरारती मुस्कराहट के साथ कहा।
"म... म.. मतलब!" चैतन्य एक बार फिर से उलझा।

"मतलब ये चैतन्य... कि पिछली बार छाया की जो कमजोरी थी... वो इस बार भी है। पिछली बार ये काम माणिक ने किया था और इस बार तुम करोगे।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

और ये सुनते ही चैतन्य बुरी तरह से हड़बड़ाया था, जैसे कि उसे किसी ने गर्म तवे पर बिठा दिया हो। वो उस डायन के आसपास रहना भी गवारा नहीं करता था। फिर उससे प्रेम का नाटक कैसै करता?

"नहीं.. नहीं... मुझसे नहीं होगा। आप उसका सिर काटने को कहें तो मैं कर दूंगा, पर उसके साथ नैन-मटक्का नहीं कर सकता मैं। उससे पहले मेरी ऑखें ना फूट जाएँ! वैसे भी... मैं पहले भी उसे कई बार झिड़क चुका हूँ। अब सामने से जाकर कहूँगा... तो उसे शक नहीं हो जाएगा।" चैतन्य ने अपना पल्ला झाड़ने की कोशिश करते हुए कहा।

"तो कोई और तरीका ढूंढ़ो उसके करीब जाने का। ये याद रखना कि अगर वो सफल हो गए तो.... बहुत कुछ खत्म हो जाएगा। शायद तुम भी और तुम्हारे वापस जाने की उम्मीद भी। हमें कई बार जानबूझ कर जहर अपने गले के नीचे उतारना पड़ता है चैतन्य! समझ लो... इस बार तुम्हारी बारी है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य को बहुत ही नर्मी से समझाते हुए उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा।

चैतन्य ने बेचारगी भरी नज़र उस कंधे पर डाली। उनकी बात सुनकर चैतन्य और भी उलझने लगा। वो अच्छी तरह से जानता था कि तांत्रिक श्रेष्ठ उसे जो करने के लिए कह रहे थे... उसका मतलब जहर गले के नीचे उतारना नहीं.... बल्कि जहरीली नागिन को अपने गले में खुद ही लपेटना था। पर शायद अब उसके सामने कोई विकल्प भी नहीं था। जो समस्याएँ
उनके सामने आ खड़ी हुई थीं उनका शीघ्र समाधान करना भी बहुत जरूरी था। उसने लाचारी और चिढ़ से अपनी ऑखें बंद की और मन ही मन बोला,

"चल बेटा चैतन्य! आखिरकार लग ही गई तेरी इज्जत दॉव पर!"

चैतन्य को ऐसा लग रहा था जैसे कि पूरी दुनिया ही उसका इम्तिहान लेने पर तुली हुई हो। कुछ दिन पहले ही आशुतोष और पार्टी ने मिलकर उसे सृष्टि के पीछे ढकेल दिया था। वो तो उसने समझदारी से उस अजीब सी सिचुएशन को संभाल लिया था और उसी के बाद ही तो अनामिका ने उससे अपने दिल की बात कही थी और वो लम्हा याद आते ही चैतन्य की ऊंगलियॉं उसके होंठों तक पहुँची थी। एक दिलफरेब सी मुस्कुराहट उसके होंठों पर आकर रूकी और फिर अगले ही पल वो मनहूस माया उसके हवासों पर सवार हो गई और वो वापस हकीकत में लौटा। उसने सिर ऊपर उठाकर आसमान की ओर देखा।

"हे भगवान! क्या जरूरत थी इतनी प्यारी शकल देकर भेजने की? ऊपर से जुल्म ये कि... जिसे देखना चाहिए... वही ज़ालिम नज़र भरकर नहीं देखती... बाकी सभी देखती हैं। हाय रे मेरी किस्मत!" वो अकेला बैठा अपनी फूटी किस्मत को रो रहा था।

"क्या हुआ चैतन्य? क्या सोच रहे हो? कोई परेशानी है?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पास आकर उसे फिक्रमंदी से

देखते हुए पूछा।

"परेशानी! नहीं तो! कहाँ हैं परेशानी? बिल्कुल भी नहीं। मैंने परेशान होना ना.... बचपन में ही छोड़ दिया है। ये अलग बात है कि जिंदगी फिर भी झंड हो रखी है।" अपने अंदर के उबाल को दबा कर रखते हुए चैतन्य ने आखिरी लाइन बुदबुदाकर कही।

"देखो कुछ नहीं होगा। माणिक ने भी तो किया था। बस तुम थोड़ा सा हौसला दिखाओ।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य का हौसला बढ़ाते हुए कहा।
"हौसला! आपको पता है! अब तो वो भी छुट्टी पर चला गया है। आप समझ नहीं रहे हैं... वो माया ना... छिपकली है छिपकली। जब भी सामने आती है बस चिपकने की कोशिश करती है और.... आई हेट लिजर्ड! अरे वो सॉस लेना दूभर कर देती है। उसके सामने गला सूख जाता है मेरा। उससे मोहब्बत भरी बातें भला मैं कैसे करूंगा? समझिए जरा।" चैतन्य ख़ौफ भरी आवाज में बोला।

"ये कैसी बातें कर रहे हो तुम? इतनी विकट परिस्थितियों में तुम्हें अपनी ही पड़ी है। हम चारों ओर से मुसीबत में हैं। आज की रात क़यामत की है। अगर हमने उन्हें नहीं रोका तो सब तबाह हो जाएगा।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक बार फिर से सही जगह पर चोट करते हुए कहा, जिस पर दो पलों के लिए चैतन्य के मुँह पर ताला लगा था।

"पर वो... अनामिका.." और वो मुँह बनाते हुए चुप कर गया।

"चैतन्य! जहाँ प्रेम है... वहाँ भरोसा भी है... और अगर भरोसा नहीं... तो प्रेम भी नहीं है। अब तुम्हें सोचना है कि तुम जिसे प्रेम समझते हो.... वो प्रेम ही है... या बस एक आकर्षण। माणिक और ऐना के बीच भी बहुत प्यार था... मगर ऐना कभी भी... माणिक और उसके कर्त्तव्यों के बीच नहीं आई... बल्कि उसका साथ दिया, क्योंकि वो पूरा भरोसा करती थी उस पर और माणिक ने भी उस भरोसे का हमेशा सम्मान किया।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने गंभीर लहज़े में कहा।

"ठीक है! बताइए क्या करना है?" आखिरकार चैतन्य ने भी हथियार डालते हुए कहा। चोट सही जगह पर लगी थी। वो अपने प्रेम को इतना ओछा नहीं बना सकता था कि कोई उसकी प्रतिबद्धता पर सवाल उठाए।

"मुझे लगता है कि तुम्हें उससे सहानुभूति लेने की कोशिश करनी चाहिए।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।
"सहानुभूति! कैसी सहानुभूति?" चैतन्य का दिमाग चकराया।

चैतन्य का सवाल सुनकर तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ ने उसे माया के दिमाग से खेलने के लिए कहा। अभी तक पूरे इलाके में अल्फ़ी और अनामिका के गायब होने की खबरें फैल चुकी थीं। तांत्रिक श्रेष्ठ ने इसी खबर को अपनी चाल का आधार बनाने की योजना बना ली। चैतन्य भी किसी पालतू मिट्ठू की तरह उनकी हाँ में हाँ मिलाता चला गया।

"वैसे... आपसे एक बात पूछूं! आप तो तांत्रिक श्रेष्ठ हैं! तो फिर ये सब आपकी नज़रों से कैसे छिप गया?" चैतन्य ने अपने अंदर की जिज्ञासा बाहर निकाली।

"क्योंकि एडवर्ड हमारे समकक्ष पैशाचिक शक्तियों का चालाकी से इस्तेमाल करना सीख चुका है। वो इतना चालाक है कि हमारी दुनिया में किसी को भी इसकी भनक तक नहीं है। और तो और उसने शुरू

से ही अपने आसपास के कड़े प्रतिद्वंद्वियों के लिए दूसरों के मन में संदेह पैदा कर दिया। इतना कि लोग उसकी कहीं बातों पर पहले विश्वास करेंगे।तुमने देखा नहीं... तुम सबको उसने कैसे फँसा दिया है। अब तुम सब चीख-चीख कर भी लोगों को सच बताना चाहोगे... वो कभी भी विश्वास नहीं करेंगे।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य के सवाल का जवाब देते हुए कहा।

"पर ये तो ग़लत है ना!" चैतन्य बोला।

"चैतन्य! एक बात याद रखना कि झूठ... हमेशा खोखला होता है। मगर जब वो तेज आवाज में बजता है ना... तो फिर रूकता नहीं... बार-बार प्रतिध्वनित होता है। इतना कि लोगों को सच से ज्यादा उस झूठ की सच्चाई पर यकीन हो जाता है। और यही हो रहा है। हमेशा यही होता है। कोई भी तुम तीनों की बात नहीं मानेगा।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अफसोस भरे
शब्दों में कहा।

"तो फिर!" चैतन्य ने पूछा।

"फिलहाल तो हमारा मकसद उन दोनों के मंसूबों को पूरा होने से रोकना है। अगर वो और मजबूत हो गए... तो समस्या बढ़ जाएगी। इसीलिए मैं तुम्हें माया के करीब जाने के लिए कह रहा हूँ। इसलिए तुम भी ये नाटक छोड़ दो।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"जी!" चैतन्य ने भी अपने हथियार डालते हुए कहा।

तांत्रिक श्रेष्ठ और चैतन्य कुछ देर तक माया को लेकर अपनी योजना का प्रारूप बनाते रहे और फिर उसके पुख़्ता होते ही उन्होंने अपना आशीर्वाद देते हुए चैतन्य को रणभूमि में उतरने का हौसला दिया। चैतन्य भी समझ चुका था कि उसे अब क्या करना है। उसके अंदर आत्मविश्वास तो आ गया था, पर माया को याद कर वो अभी भी एक पल को सिहरा जा रहा था।

"मैं अभी सभा की ओर जा रहा हूँ। मैं पिछले एक हफ्ते से यहॉ नहीं था, इसलिए वहॉ समय से पहुँचकर सब समझना जरूरी है। जाकर देखता हूं कि ये सुरमी कबीले वाले यहॉ क्यों आए हैं? हमें विलियम का भी पता करना पड़ेगा। पर तब तक तुम माया की ओर जाल फेंको। याद रखो कि तुम नियतिपात्र के चुने हुए वायु-रक्षक हो। जब माणिक ये कर सकता है, तो तुम भी कर सकते हो।" हौसला बढ़ाने वाली आवाज के साथ तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"जी!" चैतन्य ने अनमने ढंग से कहा।

"तुम यहीं झील के किनारे ही छिपकर रहो। मैं उस माया के कानों में तुम्हारे यहॉ होने की खबर डलवाता हूँ और बस... जब वो यहॉ आए... चल
देना अपना दॉव!" तांत्रिक श्रेष्ठ ने आगे की कार्यवाही के बारे में बताते हुए कहा।

"यहॉ! इस सुनसान-उजाड़ में! भीड़भाड़ वाली जगह बेहतर नहीं होगी... जहॉ लोगों का आना-जाना हो। नई!" चैतन्य ने हड़बड़ाकर कहा। वो उस माया से तन्हाई में मिलने की बात से ही ऊपर से नीचे तक पसीने से नहा गया।

"नहीं! अगर कोई गड़बड़ हो गई तो भीड़भाड़ में कैसे संभालोगे? यहीं सही है। तुम बस इंतजार करो। मैं

भिजवाता हूं उसे। फिर उसे शीशे में कैसे उतारना है... ये सोचकर रखो।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने थोड़ी सख़्ती से कहा।

चैतन्य ने भी चुपचाप सिर हिला दिया। अब वो कैसे बताता कि गड़बड़ होने के चांस माया के साथ नहीं.... उसके साथ थे। ऊपर से अनामिका का डर... जिसने उसे हर हाल में माया से दूर रहने के लिए कहा था। शायद कुछ ग़लत होने से ज्यादा डर इस बात का था कि कहीं अनामिका ना भड़क जाए। वैसे वो खुद भी उसे अपने नजदीक बर्दाश्त नहीं कर सकता था। पर अब क्या ही हो सकता था?

"चलो! ओखली में सिर दे ही दिया है तो... मूसल से क्या डरना। जो होगा देखा जाएगा। बस उस डायन का सामना करने की हिम्मत देना भगवान और हाँ... अब तो मेरे नाखूनों की भी इज्जत तेरे भरोसे है। उस बला से इन्हें भी बचाकर रखना।" चैतन्य ने आसमान की ओर सिर उठाकर मन ही मन मन्नत मांगी।

कुछ गहरी साँसें लेकर फेफड़ों को ताजी हवा से भरने के बाद वो झील की ओर चल दिया। मन मारकर ही सही पर... अब वो सचमुच इस आग में उतरने के लिए तैयार था। खुद को मनाना और तैयार करता हुआ वो उस क़यामत का इंतजार करने लगा, जो उस पर नाज़िल होने वाली थी।
****

चैतन्य के कहने पर अल्फ़ी, अनामिका को लेकर जंगल के अंदरूनी हिस्से की ओर बढ़ गया। वो पूरी सावधानी से चारों ओर नज़रें रखे आगे बढ़ रहा था और अनामिका उसके पीछे खिंची चली जा रही थी। वो बार-बार पीछे की ओर देखती कि कहीं चैतन्य तो नहीं आ रहा है और इसीलिए रास्ते पर उसका बिल्कुल भी ध्यान नहीं रहा। जल्द ही वे दोनों गहरे जंगल में खड़े हुए थे और रूकते ही अनामिका का ध्यान अपने आसपास गया।

"ये कहाँ हैं हम?" अनामिका ने चारों ओर देखते हुए पूछा।

"ऐसी जगह... जहाँ एडवर्ड नहीं आएगा और आया भी तो सबसे आखिरी में आएगा। आओ!" अल्फ़ी ने उसके हाथ पर अपनी उंगलियाँ कसते हुए कहा और फिर वो एक ओर बढ़ गया। अनामिका ने देखा कि अल्फ़ी ने एक बड़े पत्थर के आसपास की जमीन के एक हिस्से में बिखरी हुई पत्तियों को अपने हाथों से साफ किया। इसके बाद उसने आगे बढ़कर उस भारी पत्थर को खिसकाया। इस पूरी प्रक्रिया में वो पसीने से नहा गया था। उसका चेहरा लाल हो गया था और माथे पर बिखरे बाल पसीने से भीग कर चिपक गए थे। उसकी उस बिखरी-बिखरी सी हालत पर अनामिका की निगाहें टिक गई। वो इस समय हद दर्जे तक दिलकश लग रहा था, जिससे उसके अंदर की हेममाया ने अपनी ऑखें मिचमिचाई थी। अपना काम खत्म कर अल्फ़ी ने उसकी ओर देखा तो खुद पर जमी उसकी गहरी
निगाहें देखकर अल्फ़ी का दिल जोरों से धड़का। मगर वो हालातो से बेखबर नहीं था।

"अनामिका! अनामिका!" दूसरी बार तेज आवाज में बोलकर उसने अनामिका को झिंझोड़ा और अनामिका अपनी खोई हुई कैफियत से बाहर आई।

"क्या हुआ? ऐसे क्या देख रही हो?" अल्फ़ी ने उसकी ऑखों में झांक कर देखते हुए पूछा।

"क्या? मैं! कुछ तो नहीं।" अनामिका ने उसकी गहरी ऑखों से घबरा कर अपनी नजर फेरते हुए कहा।

"हम्म! आओ!" अनामिका की बात पर यकीन करते हुए अल्फ़ी ने एक बार फिर उसका हाथ पकड़ा और उसे उस बड़े पत्थर के पास ले गया। अनामिका ने देखा कि पत्थर के हटने से वहॉं एक बड़ा सा गड्ढा नजर आने लगा था। अल्फ़ी ने एक नजर चारों ओर डाली और फिर तेजी से उसे गड्ढे में उतर गया। अनामिका भौंचक सी खाड़ी उसे देखते ही रह गई।

"अनामिका! आओ!" अल्फी ने उसे तेज आवाज में पुकारा।

अनामिका ने देखा वो अपने दोनों हाथ उसकी ओर बढ़ाए उसे बुला रहा था। अनामिका ने आगे बढ़कर अपना हाथ उसे दिया और फिर अल्फ़ी ने उसे भी उस गड्ढे में उतार लिया।

"ये कौन सी जगह है?" अनामिका ने चारों ओर देखते हुए पूछा।
"यहॉं दो रात पहले एडवर्ड को आते देखा था, जिस रात मैं चैतन्य को मुलाकात के बाद मेंशन ले गया था। चैतन्य से मिलने की जल्दी थी इसलिए जंगल के छोटे रास्ते से आ रहा था और ये दिख गया। इसलिए तो कहा कि वो हमें ढूंढता हुआ यहॉं नहीं आएगा। उसकी जगह है ये।" अल्फ़ी ने जवाब दिया।

"पर मैं यहॉं कायरों की तरह छिपकर नहीं बैठ सकती। मुझे चैतन्य के पास जाना है। वो अकेला है... परेशान हो रहा होगा।" अनामिका ने बेचैन होते हुए कहा।

"वो अकेला नहीं है। तांत्रिक श्रेष्ठ साथ हैं उसके और अगर तांत्रिक श्रेष्ठ ने हमें रूकने के लिए कहा है... तो हमें उनकी बात माननी है। वैसे भी चैतन्य तुम्हारी सुरक्षा की जिम्मेदारी मुझ पर छोड़कर गया है माया!" और अल्फ़ी एकदम से चुप हुआ। सख़्त लहज़े में बोलता हुआ वो बेख्याली में उसे माया बोल गया।

"अनामिका हूँ मैं... और मुझे.... किसी की सुरक्षा की जरूरत नहीं है।" अनामिका ने एक-एक शब्द चबाते हुए कहा।

उसकी बेरूखी से आहत अल्फ़ी ने खुद को संभाला और खुद को मजबूत करते हुए तंज भरे अंदाज में कहा, "हॉं! वो तो कुछ समय पहले कैदखाने में देखा मैंने।"

उसका तंज समझ कर अनामिका सिटपिटा कर रह गई। उससे आगे कुछ बोलते नहीं बना।

"देखो अनामिका! कम या ज्यादा... ताकत सभी के पास होती है। पर इसका मतलब ये नहीं कि किसी को किसी की जरूरत ना पड़े। इस समय हम सभी को एक-दूसरे की जरूरत है। इसलिए शांत रहो। हम दोनों का
नाम कस्बे में अपराधी के रूप में फ़ैल गया है। कोई भी बेवकूफी करके हम चैतन्य और तांत्रिक श्रेष्ठ की मदद नहीं करेंगे... उनकी मुसीबत ही बढ़ाएँगे। समझो इस बात को। और हमें हमेशा के लिए यहॉं नहीं रहना है। बस चैतन्य के अगले इशारे या खबर तक... बस!" अल्फ़ी ने अपनी आवाज को नर्म करते हुए बहुत ही आराम से कहा।

"तो क्या हम हाथ में हाथ धरे बैठे रहें कि कब वो इशारा करे... तो हम कुछ करें।" अनामिका ने झुंझलाकर कहा।

"ये तुमसे किसने कहा? मैं इस जगह पर यूंही नहीं आया हूँ।" अल्फ़ी ने रहस्यमई तरीके से कहा।

"तो फिर!" उसकी बात सुनकर अनामिका ने चारों ओर नज़र दौड़ते हुए कहा। वो जमीन के नीचे बनी किसी गुफा की तरह था। जहॉ आगे बढ़ने के लिए कोई रास्ता दिखाई तो नहीं दे रहा था।

"उस दिन एडवर्ड इसके अंदर आया था... पर वो वापस नहीं निकला। मैंने कुछ देर इंतजार किया। पर मुझे चैतन्य से मिलना था और मुझे देर हो रही थी, तो मैं बिना कुछ सोचे-समझे इसमें उतर गया क्योंकि मुझे इस जगह के बारे में फिर सर विलियम को बताना भी था। जब मैं अंदर इस जगह पहुँचा तो मैंने इस जगह को पूरी तरह से खाली पाया। मैंने इन दीवारों को अच्छी तरह से टटोल-टटोलकर देखा.. पर कुछ नहीं मिला। अगले दिन मैंने सर विलियम को इस बारे में बताया भी था.. पर घटनाएँ इतनी तेजी से बदलीं और... " कहते-कहते अल्फ़ी रूक गया।

"और.." अनामिका ने अपनी एक भौंह चढ़ाई।
"और मैं... तुम में उलझ गया।" अल्फ़ी ने बड़ी मुश्किल से अपनी बात खत्म की।

"ओह! तो फिर अब! मुझे तो अब भी यहॉ कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।" अनामिका ने तुरंत ही बात बदलते हुए कहा।

"हॉ दिख तो नहीं रहा है। पर शायद अब दिखे। एडवर्ड वापस नहीं निकला और यहॉ भी नहीं था... तो इसका मतलब तो यही है कि वो आगे गया। पर कहॉ से? जाहिर है कि कोई छिपा हुआ रास्ता है और वो हमें खोलना है।" अल्फ़ी ने उन दीवारों को पैनी नज़रों से घूरकर देखते हुए कहा।

"और हम वो कैसे खोलेंगे?" अनामिका ने पूछा।

"इस से!" अल्फ़ी ने अपनी जेब से हाथ बाहर निकाल कर उसके सामने अपनी मुट्ठी खोली। उसकी खुली मुट्ठी पर नज़र जाते ही अनामिका की ऑखें आश्चर्य से फैल गईं।

"ये तुम्हें कहॉ से मिली?" उसकी हथेली से वो चाबी उठाते हुए अनामिका ने पूछा।

"चैतन्य ने दिया था, ताकि मैं खुद को आजाद कर सकूं।" अल्फ़ी ने अपना हाथ खींचते हुए कहा।

"तो फिर सोच क्या रहे हो? जल्दी करो।" अनामिका ने उत्साहित होते हुए कहा। उसका उतावलापन देखकर अल्फ़ी के होंठ मुस्कुराए। बिल्कुल किसी बच्चे की तरह उत्सुक... कि दरवाजे के पीछे आखिर है क्या?

अल्फ़ी ने वो चाबी उंगलियों में दबाई और उसे दीवार पर टिका दिया।
उसके बाद वो उसे उस दीवार पर घसीटता हुआ आगे बढ़ा। नज़रें दीवार और चाबी के संपर्कस्थल पर ही टिकी हुई थीं। अनामिका भी कौतूहल से उसे ही देख रही थी। आधे से ज्यादा सफर तय करने के बाद

भी जब कुछ नहीं हुआ, तब अल्फ़ी ने एक मायूसी भरी नज़र अनामिका की ओर डाली। मगर अनामिका ने उसे अपनी ऑखों से ही आगे बढ़ने के लिए कहा। उसका इशारा मिलते ही अल्फ़ी एक बार फिर से चाबी के साथ आगे बढ़ा और कुछ दूर जाते ही एक जगह वो चाबी उस दीवार में घुस गई।

अल्फ़ी और अनामिका दोनों की ही ऑखें उत्साह से चमक उठीं। अल्फ़ी ने एक नजर अनामिका की ओर डाली। अनामिका ने एक बार फिर ऑखों के इशारे से उसे आगे बढ़ने के लिए कहा। एक गहरी सॉस छोड़ने के बाद अल्फ़ी ने वो चाबी इस तरह घुमाई जैसे कि... किसी ताले को खोलने के लिए घुमाया जाता है और एक बार फिर जादू हो गया। उनके सामने की वो दीवार धीरे-धीरे झीनी होती हुई गायब हो गई और एक अंधकार से भरा रास्ता उन दोनों के सामने खुल गया। अल्फ़ी कुछ कदम पीछे होता हुआ अनामिका के पास पहुँचा।

"मिल गया।" अनामिका ने चिहुंक कर कहा।

"हॉ! चलें?" अल्फ़ी ने अनामिका पर एक नज़र डालकर पूछा।

"हॉ! देखें तो सही कि कहॉ खुलता है ये रास्ता? कहॉ जाता है एडवर्ड इस रास्ते से?" इतना कहकर अनामिका उस रास्ते में बढ़ गई। अंदर जाते ही उसे पता चला कि उसे अंधेरे रास्ते में चलना इतना आसान नहीं था। पता नहीं रास्ता कैसा था? कहॉ क्या था? कुछ भी तो उसे अंधकार में पता नहीं चल रहा था।

"आउच!" गड्ढे पर पैर पड़ने से वो बस गिरने को ही थी कि तभी अल्फी ने आगे आकर उसे संभाल लिया।
"संभलकर! बहुत गड्ढे हैं यहॉ पर!" अल्फ़ी ने उसे सहारा देकर खड़े करते हुए कहा।

"तुम्हें दिखाई दे रहा है?" अनामिका ने अनुमान से उसकी ओर देखते हुए कहा।

"हॉ! हाथ पकड़कर चलो!" उसने अनामिका का हाथ पकड़ते हुए कहा। उसने अनामिका के एक हाथ को पकड़ा और अपना दूसरा हाथ उसके कंधे पर रखकर उसे अपनी हिफाजत में लिया। अनामिका ने भी कोई ऐतराज नहीं जताया। इस समय वो जता भी नहीं सकती थी। हालांकि इस समय वो अल्फ़ी की बढ़ी हुई धड़कनें साफ-साफ महसूस कर पा रही थी। वो उस उबड़-खाबड़ अंधेरे रास्ते में उसे पूरी हिफ़ाजत से संभाले हुए था। इसी तरह उलझे-उलझे से वो दोनों आखिरकार वो लंबा सा रास्ता पार कर गए, जबकि अंतिम छोर से आती रोशनी साफ-साफ दिखाई देने लगी थी। ऐसा लग रहा था जैसे कि कई सदियॉ गुजर गई हों। बाहर आकर दोनों ने ही राहत महसूस की थी। अल्फ़ी ने धीरे से उसे छोड़ा और फिर बिना उसकी ओर देखे आगे बढ़ गया। अनामिका भी हर झिझक को पीछे छोड़ उसके पीछे गई।

और जब वो दोनों उसके अंतिम छोर पर पहुँचे... तो उन दोनों की ही ऑखें इस खोज पर हैरानी से भर गईं।

"तो... ये है वो जगह... जहॉ सारी मुसीबतें पैदा होती हैं या... की जाती हैं।"चैतन्य झील के किनारे किसी निरीह जानवर की तरह बैठा हुआ था, जिसे अच्छी तरह से पता था कि उसकी बलि दी जाने वाली है। ऐसा नहीं था कि वो कमजोर नीयत का इंसान था, जिसकी वजह से वो डर रहा था। पर... ना

जाने क्यों वो उस माया की मौजूदगी से ही घबराने लगता था। कुछ तो ऐसा था, जो उसे... उस माया के आसपास जाने से भी रोकता था। पर क्या? पता नहीं! और अब... इन सबसे बाहर निकलने के लिए उसे उस कमबख़्त माया से मीठी-मीठी बातें करनी पड़ेगी और ये सोचते ही उसकी ऑखों के सामने एक तस्वीर लहराने लगी... जिसमें वो माया उसके गले में अपनी दोनों बाहें फँसाए उससे लिपटी खड़ी हुई है। वो अगले ही पल बुरी तरह से सिर से पैर तक कॉप उठा।

"नहीं! नहीं! नहीं! सोच चैतन्य! कुछ सोच! जिससे वो तेरे करीब ना आए। तुझसे दस कदम दूर से बातें करे। अबकी बार उस छिपकली ने मुझे छुआ तो मैं खुद अपनी चमड़ी उधेड़ दूंगा।" वो बड़ी ही कुढ़न से बोला।

और फ़िर उसने अपने सोचने की दिशा बदल दी। उसे अब जब हर हाल में उसका सामना करना ही था.. तो फिर आगे की राह आसान करने का उपाय ढूंढना ज्यादा जरूरी था। उसे याद आया कि तांत्रिक श्रेष्ठ ने उससे कहा था कि वो अनामिका और अल्फ़ी के गायब होने की खबर के आधार पर उसकी सहानुभूति हासिल कर सकता है और ये याद आते ही कुछ देर के मानसिक गणित के बाद आखिरकार उसके होंठ मुस्कुराए।

वो झील के किनारे जाकर बैठ गया और अपने पैर झील के पानी में डुबो दिए। अभी तांत्रिक श्रेष्ठ को गए हुए आधा घंटा ही बीता होगा कि हवाओं ने उसे किसी के आगमन का संदेश दिया। संदेश मिलते ही वो संभलकर
बैठ गया। उसने आसपास से गीली मिट्टी हाथों में लगाई और फिर उसे अपने कपड़ों और फिर उन हाथों को अपने कपड़ों, चेहरे और बालों में रगड़ दिया और बालों को यूंही बेतरतीब छोड़ दिया। उसने अपने चेहरे पर दुनिया की सारी लाचारी उधार में खरीदकर चिपका ली। ऑखों में आंसू लाने के लिए एक हाथ पूरी ताकत से पास पड़े पत्थर पर दे मारा। उसके बाद वो फिर से एक कुशल अभिनेता की खाल ओढ़कर बैठ गया और उस आफत का इंतजार करने लगा।

कुछ ही देर में चैतन्य को अपने करीब उसका अहसास हो ही गया और फिर उसने धीरे-धीरे बुदबुदाना शुरू कर दिया। ये इतना अस्पष्ट था कि यकीनन पीछे से दबे पॉव आती माया को सुनाई नहीं दिया होगा। माया की चाल और धीमी हुई थी। शायद वो उसकी बुदबुदाहट समझने की कोशिश कर रही थी। चैतन्य का पूरा ध्यान उसकी हर दबी हुई आहट पर था। एक निश्चित दूरी पर उसे महसूस कर चैतन्य ने अपनी आवाज तेज और स्पष्ट कर दी।

"तुम्हें इसका जवाब देना होगा अनामिका। मैंने तुम पर भरोसा किया और तुम्हारे कहने पर उस अल्फ़ी को छुड़ाने में तुम्हारी मदद की। फिर तुमने क्या किया मेरे साथ? उस अल्फ़ी के लिए तुम मुझे छोड़कर चली गई। मैं तुम्हें कभी माफ नहीं करूंगा और उस अल्फ़ी को भी। तुम दोनों को मैं ऐसी सजा दूंगा जैसी तुमने कभी सोची भी ना होगी। मेरा दिल तोड़कर तुम कभी खुश नहीं रहोगी।" अपनी बात पूरी करते-करते वो धीरे-धीरे सुबकने लगा।

"मैंने तो पहले ही कहा था... वो तुम्हें धोखा देगी।" माया ने तेज आवाज में कहा और अपनी योजना के अनुसार चैतन्य ने बखूबी चौंकने का बेहतरीन नाटक किया। वो अपनी ऑखों में डर भर कर उसकी ओर देखने लगा। फिर उसने तेजी से खड़े होकर उसके आसपास नज़र दौड़ाई। माया ने उसे ऐसे करते देखा.... तो उसने भी पलट कर अपने आसपास देखा
और फिर... उसकी घबराहट का कारण समझ में आते ही उसके चेहरे की मुस्कान चौड़ी हो गई। वो उसी मुस्कुराहट के साथ चैतन्य की ओर पलटी।

"घबराओ मत! कोई नहीं है मेरे साथ और मेरे होते हुए... कोई तुम्हें छू भी नहीं सकता। बस तुम मेरी बात मान जाओ।" माया ने अपना पांसा फेंकते हुए कहा।

"कैसी बात?" चैतन्य ने उसके और अपने बीच की दूरी का पूरा ख्याल रखते हुए कहा।

"देखो मैं समझ सकती हूँ कि मोहब्बत के बदले बेवफाई किसी को भी हिलाकर रख सकती है... आखिर तुमने भी तो मेरे साथ वहीं किया।" माया ने अपने मन की बात बाहर निकालते हुए कहा।

"मैंने तुमसे कभी मोहब्बत ही नहीं की... तो बेवफाई करने का सवाल ही पैदा नहीं होता।" ना चाहते हुए भी चैतन्य की चिढ़ बाहर आने लगी थी।

"पर... मैंने तो कई है ना!" माया ने अपनी आवाज को नशीला बनाते हुए कहा।

"अच्छा! और मुझे ऐसा लगता है कि ऐसी मोहब्बत तुम्हें हर दूसरे-तीसरे दिन हो जाती है। है ना!" इस बार चैतन्य ने अपनी कड़वाहट छिपाने की कोशिश नहीं की।

"कैसी बातें कर रहे हो? मैं तुमसे इतने प्यार से बातें कर रही हूँ और तुम मुझे अभी भी चोट पहुँचा रहे हो। ग़लत बात!" माया उसकी ओर आगे बढ़ते हुए बोली।

उसके अपनी ओर आगे बढ़ने से चैतन्य तुरंत सचेत हुआ और अपना
सीधा हाथ उसकी ओर उठाकर चिढ़ भरी आवाज में बोला, "रूको वहीं! आगे बढ़ना नहीं! तुम्हें क्या लगता है... जिस अनामिका से मैंने इतना प्यार किया... उससे मिले धोखे के बाद मैं ऐसे ही किसी पर यकीन कर लूंगा... ख़ासकर कि... तुमपे। कभी नहीं। कभी भी नहीं।"

"पर तुम्हारे पास मेरे अलावा और कोई रास्ता भी नहीं है।" माया ने अपने होंठों पर कुटिलता भरी मुस्कराहट चिपकाकर कहा।

"क्या मतलब?" माया की बात समझने की कोशिश में चैतन्य की ऑखें सिकुड़ गई थीं।

"मतलब ये माई डियर चैतन्य.... अल्फ़ी के भागने की खबर फैल चुकी है और उसकी मददगार के रूप में अनामिका की भी। पर तुम्हारा नाम... अभी भी कहीं नहीं है। जानते हो क्यों?" माया ने उसे हालातों से रूबरू करवाते हुए कहा।

"क्यों?" एक स्वाभाविक सा सवाल चैतन्य के होठों से निकला।

"मेरी वजह से। अब प्यार है या कुछ और.... पर मेरा दिल... तुम पर आ गया है और इस दिल की वजह से ही तुम अभी तक बचे हुए हो। तो इस दिल को तकलीफ़ पहुँचाने की कोशिश मत करो। तुम्हारे लिए ही अच्छा नहीं होगा।" इस बार माया के लहज़े में सख़्ती और चेतावनी दोनों ही मिले हुए थे।

"तुम मुझे धमकी दे रही हो। पर मैं तुम्हें बता दूं कि अब मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरा दिल इतना चोटिल हो चुका है कि अब वो सिर्फ इसलिए धड़क रहा है क्योंकि उसे बदला चाहिए।" चैतन्य ने अपना अगला पांसा फेंकते हुए कहा।

"बदला!" माया की आवाज में हैरानी थी।

"हॉ बदला! मैंने उस अल्फ़ी और अनामिका पर ऑखें मूंदकर भरोसा किया और उन्होंने मेरे भरोसे का फायदा उठाया। फिर मुझे मुसीबत में फँसाकर वो दोनों भाग गए। मुझे उस धोखे और बेवफाई का बदला चाहिए। चाहे इसके लिए मेरी जान ही क्यों ना चली जाए।" चैतन्य ने बहुत ही भड़की हुई आवाज में कहा।

"ओह! शांत! शांत! शांत माई डियर! तुम अभी भी मुसीबत में नहीं हो। बताया ना! अभी भी तुम्हारा नाम कहीं भी नहीं है और तुम चाहो तो कभी आएगा भी नहीं। और तो और... मैं बदला लेने में भी तुम्हारी मदद कर सकती हूँ।" माया ने अपनी ऑखों और आवाज में प्यार उड़ेलते हुए कहा।

"वो कैसे?" चैतन्य ने पूछा।

"मेरे लिए उन्हें पकड़ना कोई मुश्किल काम नहीं है। उन्हें पकड़वाकर ऐसी मौत दिलवाऊंगी कि मौत भी कॉप उठेगी।" माया ने पूरी कड़वाहट के साथ कहा।

"खबरदार! उन्हें हाथ भी लगाया तो!" चैतन्य ने दॉत पीसते हुए कहा, जिस पर माया ने उसे हैरानी से देखा।

"पर तुम तो बदला लेने की बात कर रहे थे। अब ये..." माया ने उसे तौलती नज़रों से देखते हुए कहा।

"हॉ! बदला चाहिए मुझे। पर ऐसे नहीं। मरने के बाद तो वे दोनों हर दर्द से आजाद हो जाएँगे और मैं ऐसा नहीं चाहता।" चैतन्य ने अपनी बात संभालते हुए कहा।
"तो फिर क्या चाहते हो तुम?" माया ने पूछा।

"उस अल्फ़ी और सबको लगता है कि अनामिका उसकी मरी हुई बीवी का पुनर्जन्म है और उसने... अपनी छल भरी बातों से अनामिका को भी ये यकीन दिला दिया है। मुझे हैरत इस बात की है कि अनामिका उसकी बातों में आ भी गई। मुझे धोखा देकर अगर वो दोनों एक होने की कोशिश कर रहे हैं... तो मैं ऐसा कभी भी नहीं होने दूंगा। मैं उन दोनों को इस तरह अलग कर देना चाहता हूँ कि वो लाख चाहें... मगर कभी भी ना मिल सकें। वो उसी तरह तड़पते हुए जिंदा रहें... बिल्कुल किसी लाश की तरह... और यही मेरा बदला होगा।" चैतन्य अपनी आवाज में भरपूर ज़हर घोलकर बोला। अपनी बात कहते हुए वो गुस्से में कॉपने भी लगा था... जो दरअसल उसके सामने खड़ी माया के लिए था क्योंकि उसी की वजह से ही वो अपनी अनामिका के लिए इतनी जहरीली बातें अपनी ज़बान पर ला रहा था।

"ओह गॉड! इतना गुस्सा! लगता है चोट बहुत ही गहरी है। कोई बात नहीं। तुम्हारी हर चोट का मरहम है मेरे पास। बस तुम्हारे हॉ कहने की देर है।" माया ने भी उससे पूरी सहानुभूति जताते हुए कहा।

"और वो क्या है?" चैतन्य ने पूछा।

"तुम्हारी मोहब्बत.. और क्या?" माया ने एक बार फिर से जाल फेंकते हुए कहा।

"कहा ना! मोहब्बत का नाम नहीं लेना और तुम तो बिल्कुल भी नहीं। कोई समझौता हो सकता है तो

बोलो। अपने मकसद को पाने के लिए मैं कोई भी समझौता करने को तैयार हूँ।" चैतन्य एक बार फिर से बुरी तरह से चिढ़कर बोला।
"तुम तो सचमुच पत्थर दिल हो गए हो। कोई बात नहीं। हम इस पत्थर को भी तराशकर हीरा बना सकते हैं। हमारे करीब आकर तो देखो। और जहाँ तक... तुम्हारे मकसद का सवाल है... उसके लिए मेरे पास एक तरीका है।" माया ने मदहोश लहजे में कहा।

"और वो क्या है?" चैतन्य ने पूछा।

"तुम दोनों को हमेशा के लिए अलग करना चाहते हो ना! तुम ये भी चाहते हो कि दोनों जिंदा रहें और जब तक जिएँ एक-दूसरे को याद करके तड़पते रहें। तो फिर ऐसा हो सकता है।" माया ने चैतन्य का मकसद दोहराते हुए कहा।

"और वो कैसे?" चैतन्य ने पूछा।

"हम उन दोनों को गिरफ्तार करवा देते हैं। फिर अल्फ़ी एक बार फिर से उन जादुई बेड़ियों में हमेशा के लिए कैद हो जाएगा और हम उस अनामिका को वापस उसके वक्त में भेज देंगे और इस तरफ से आने का रास्ता बंद कर देंगे। हो जाएँगे ना दोनों अलग।" माया ने अपनी चाल समझाते हुए कहा।

"अरे वाह! क्या बात है?" अपने अंदर की कुढ़न को बाहर निकलने से रोकते हुए चैतन्य ने कहा।

"पर... इसमें मेरा क्या फायदा? तुम्हारा मकसद तो पूरा हो जाएगा। पर मेरे मकसद का क्या?" माया ने किसी चतुर व्यापारी की तरह कहा।

"कैसा मकसद?" चैतन्य ने एक बार फिर से अपनी ऑखें सिकोड़ी।

"मुझे तुमसे एक संतान चाहिए। तुम एक साल मेरे साथ रहोगे और संतान
के होने के बाद कुछ जरूरी रस्मों के साथ तुम आजाद हो जाओगे। उसके बाद तुम्हारी मर्जी है कि तुम हमेशा मेरे साथ रहो... मेरे बग़ैर रहो... या फिर... अपने समय में लौट जाओ।" माया ने चैतन्य की ऑखों में झांककर देखते हुए साफ-साफ कहा।

और ये सुनते ही चैतन्य सदमे से अपनी जगह जड़ होकर रह गया। उसकी ऑखें और मुँह भी हैरानी जाहिर करते हुए खुले के खुले रह गए।

"हे भगवान! कहाँ मैं इसे खुद से दूर रखने की जुगत लड़ा रहा हूँ और कहाँ ये प्यार-मोहब्बत से भी कोसों दूर आगे बच्चों तक पहुँच गई। अब तो सचमुच मेरी इज्जत तेरे ही हाथों में है। मुझ पर नहीं तो... मेरी अनामिका पर तरस खाना प्रभु!" सहमे हुए चैतन्य ने मन ही मन ना जाने कितनी मन्नतें मांगी ली।

"क्या सोच रहे हो?" माया ने उसे खोए हुए देखा, तो कहा।

"अ...! म.. मैं... मैं सोच रहा था कि.... समझौता किसी और चीज के लिए नहीं हो सकता। मेरा मतलब है कि... मैं अभी शादी-वादी के मूड में नहीं हूँ।" चैतन्य ने खुद को बचाने की एक कोशिश करते हुए कहा। इन सब में उसने ध्यान नहीं दिया कि माया उसके करीब आ चुकी थी।

"तो शादी की बात ही किसने की? संतान पैदा करने के लिए शादी की नहीं.... कुछ और की जरूरत होती है।" माया ने मदहोशी में चूर लहज़े के साथ कहा।

"पागल हो गई हो! मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाला।" चैतन्य ने बुरी तरह से भड़कते हुए कहा। वो अपनी सोच में भी ऐसा नहीं कर सकता था।

"लगता है कि तुम्हें मेरी बात समझ में नहीं आ रही है। ठीक है! मुझे क्या?
उस अल्फ़ी और अनामिका को पकड़ने में ज्यादा मेहनत नहीं लगेगी। अगर तुम यहाँ हो... तो फिर वो दोनों इस जंगल में ही हो सकते हैं। बस एडवर्ड तक इतनी ही खबर पहुँचानी होगी मुझे। उसके बाद वो दोनों हमारे शिकंजे में और फिर दोनों के नाम एक बेरहम मौत। फिर... सब कुछ खत्म! तुम्हारा मकसद भी। मेरा क्या है? मैं किसी और को पकड़ लूंगी। तुम अपना सोचते रहना।" माया आखिरकार धमकी पर उतरते हुए बोली। ये सुनते ही चैतन्य को एक झटका सा लगा। इस ओर तो उसने सोचा ही नहीं था। वो उन दोनों की जान खतरे में नहीं डाल सकता था और माया के साथ रहते हुए वो अनामिका से संपर्क भी नहीं कर सकता था। आखिरकार मन मसोस कर उसने एक फैसला कर लिया।

"अगर तुम्हारी बात... मान लूँ... तो अनामिका का पीछा छोड़ दोगी तुम और उसे वापस भेज दोगी।" कहते हुए चैतन्य हलक तक कड़वा हो गया था।

उसकी बात सुनकर माया ने बहकी हुई नजरों से उसे देखा और फिर उसके पास आकर उसके चेहरे पर अपनी उंगलियां फिराते हुए बोली, "जरूर! अगर तुम मुझसे मोहब्बत करने लगो... तो अनामिका की जिंदगी बक्श दूंगी मैं।"

उसके छूने से चैतन्य को ऐसा लगा जैसे कि उसके पूरे शरीर पर बरसाती कीड़े रेंग रहे हो। उसका जी मिचलाने लगा और फिर उसने बड़ी ही चिढ़ से उसके हाथ को पकड़ा और बोला, "मोहब्बत जिससे करनी थी.. मैंने कर ली। तुम तो बस समझौते की बात करो।"

"उफ्फ! इतनी मोहब्बत... कि तुम्हारी नफ़रत भी उस मोहब्बत में लिपटी हुई है। तुम तो शायद वापस भी ना जाना चाहो कि कहीं उसे तड़पता हुआ ना देख लो। है ना! ठीक है भई! चलो! हमसे मोहब्बत नहीं कर सकते... तो समझौता ही सही। आगे तो हम तुम्हें बेबस कर ही देंगे।" माया ने तंज़ कसते हुए कहा।

उसकी बातें सुनकर चैतन्य का पारा गर्म होने लगा था। बड़ी ही मुश्किल से खुद को संभालते हुए उसने कहा, "तुम बस अपने मकसद की चिंता करो। मुझे बस उन दोनों को अलग करना है और कुछ नहीं। उसके आगे अब तुम जो भी कहो। मेरे लिए भी मेरा मकसद बहुत जरूरी है।"

उसकी बात सुनकर माया ने एक गहरी साँस लेते हुए चैतन्य पर अपनी गहरी निगाहें टिकी। उसकी उन नज़रों से चैतन्य का रोम-रोम सुलग रहा था, मगर इतना आगे बढ़ने के बाद वो पीछे नहीं हट सकता था। माया का मकसद उसके लिए जितना जरूरी था.... चैतन्य के लिए भी उसका मकसद उतना ही मायने रखता था। बस इसीलिए उसने ईश्वर पर भरोसा रखकर माया के सामने हथियार डाल दिए क्योंकि वो चाहती क्या थी... ये उसके इस समझौते से और भी उलझ गया था।

"ये कौन सी जगह है?" अनामिका ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"आओ देखते हैं। पर.... सावधान रहना!" अल्फ़ी ने चेतावनी भरे लहजे में कहा।

"हम्म!" अनामिका ने हुंकारी भरी और अल्फ़ी के साथ आगे बढ़ गई।

एक संकरे अंधकार भरे रास्ते के बाद वो एक खुली-खुली सी जगह थी, जिसके अधिकतर हिस्सों में भी अंधकार छाया हुआ था। छत की ओर कुछ सुराखें बनी हुई थीं, जिससे रोशनी की कुछ लकीरें यहॉ-वहॉ बिखरी हुई थीं। उनकी मद्धम सी रोशनी में छत से लटकती पेड़ों की जड़ें साफ-साफ दिखाई दे रही थीं। सामने मेज की शक्ल में एक बड़ा सा आदमकद पत्थर रखा हुआ था। उसके कुछ आगे दो सीढ़ियॉ दिखाई दे रही थीं, जिसके आगे का मंज़र अंधेरे में डूबा हुआ था। माहौल में एक अजीब सा सर्दपन घुला हुआ था। एक अजीब सी महक वहॉ की फिज़ा में मिली हुई थी, जो बिल्कुल भी अच्छी नहीं लग रही थी। अपनी चौकस निगाहें चारों ओर रखे अल्फ़ी और अनामिका ने आगे कदम बढ़ाए। अनामिका आगे चल रही थी। चलते-चलते अचानक ही एक जगह अनामिका के कदम रखते ही वो तेज झटके से पीछे की ओर उछली थी। वो तो पीछे चल रहे अल्फ़ी ने उसे संभाल लिया, वरना इस तरह गिरने से जोरदार चोट लगना तय था।
"क्या हुआ?" अनामिका को संभाले हुए अल्फ़ी ने बहुत ही फिक्र से पूछा।

"मेरा पैर! ऐसा लगा कि पैर गर्म उबलते पानी पर पड़ गए हों।" अनामिका ने डबडबाई ऑखों के साथ तकलीफ़ को छिपाने की नाकाम कोशिश करते हुए कहा।

"दिखाओ!" अल्फ़ी ने घुटनों के बल बैठकर उसके चोटिल पैर की ओर देखा, जो बुरी तरह से लाल हो गया था। अनामिका ने दर्द से अपना होंठ दॉतों में दबा लिया था।

अल्फ़ी ने हाथ बढ़ाकर उसके उस पैर को छुआ तो अनामिका के मुँह से सिसकारी सी निकल गई। अल्फ़ी ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा। अनामिका ने अपनी ऑखें भींचें चेहरा दूसरी ओर घुमा रखा था और उसे इस तरह देखकर अल्फ़ी का दिल थाम सा गया। उसके ज़हन में माया से जुड़ी एक याद बरबस ऑखों में पानी की शक्ल में उतर आई, जब उसके लिए नहाने का पानी गर्म करते समय एक जलती हुई लकड़ी माया के पैरों में गिर पड़ी थी और उसका पैर इसी तरह बुरी तरह से जल गया था। एक बार फिर से उसकी माया, अनामिका की शक्ल में उसके सामने आ गई थी। अल्फ़ी ने तुरंत ही अपना सिर झुकाया। वो जितना अपने मन को समझाने की कोशिश कर रहा था, नियति उतना ही अनामिका के जरिए उसकी यादों को ताजा कर रही थी। यादों का बोझ जब पलकों पर बढ़ा तो आंसू बगावत कर बाहर निकले और अनामिका के उस पैर पर गिर पड़े।

और फिर एक चमत्कार हुआ। वो ऑसू अनामिका के उस पैर में फैलते हुए उसके ज़ख़्म को समेटने लगे और देखते ही देखते वो पैर पूरी तरह से ठीक हो गया। दर्द के उड़न-छू होते ही अनामिका ने झुककर अपने उस पैर की ओर देखा, जो अब पूरी तरह से ठीक हो चुका था। अल्फ़ी अपनी सुर्ख़ नज़रें अनामिका से छिपाते हुए खड़ा हुआ और दूसरी ओर देखने लगा। अनामिका ने अपने पैरों में ठंडक महसूस की तो एकाएक ही अल्फ़ी की
ओर देखा और.... उसे सब समझ आ गया। वो दोनों ही बार-बार इस तरह की घटनाओं से रूबरू हो रहे थे... जो उन्हें हर बार असहज बना रही थी।

"थैंक्स!" अनामिका ने आभार जताया।

उसका धन्यवाद एक बार फिर से अल्फ़ी के दिल पर चोट की तरह लगा। उसने अपना सिर हिलाया और फिर आगे बढ़ गया। वो उस जगह को अपनी ऑखें सिकोड़ कर ग़ौर से देखने लगा, जहॉ पैर रखने के बाद अनामिका के पैरों का ऐसा हाल हुआ था और जो नज़र आया... उसने उसकी ऑखों को हैरत से फैला दिया। अनामिका एक बार फिर से उसकी ओर आगे बढ़ी ही थी कि अल्फ़ी ने तेजी से उसकी ओर अपना हाथ उठाकर उसे आगे बढ़ने से रोका।

"क्या हुआ?" अनामिका ने भी उस जगह को घूरकर देखते हुए पूछा।

"यहॉ सुरक्षा घेरा बना हुआ है।" अल्फ़ी ने कहा।

"कहॉ? मुझे तो नहीं दिख रहा।" अनामिका ने अपनी ऑखों पर जोर डालकर उस जगह को देखते हुए कहा।

"शायद अग्नि घेरा है... इसलिए मुझे दिखाई दे गया।" अल्फ़ी ने खड़े होते हुए कहा और सामने फैले नीम अंधेरे में देखने लगा।

"तो फिर!" अनामिका ने पूछा।

"फिर क्या? तुम रूको! मैं देखता हूँ!" अल्फ़ी ने जवाब दिया।

"अगर एडवर्ड यहॉ पहुँच गया तो!" अनामिका ने चारों ओर देखते हुए आशंका जताई।
"फिलहाल तो नहीं! उसका ध्यान कहीं और ही होगा... अगर हमारे भागने की उसे खबर मिली होगी तो।" कहते हुए अल्फ़ी ने अनामिका पर ऊपर से नीचे तक एक गहरी नज़र डाली। उसकी बातों का मतलब समझकर अनामिका सिटपिटा कर रह गई। अल्फ़ी ने उस पर से अपनी नज़रें हटा लीं।

अल्फ़ी ने नज़रें झुकाकर उस सुरक्षा रेखा को देखा और फिर एक गहरी सॉस लेकर उसने अपने पैर उसके अंदर रख दिए। उसके सुरक्षा घेरे के अंदर जाते ही माहौल में होती तब्दीली उन दोनों ने ही महसूस की।

"ये अहसास तो बिल्कुल वैसा ही है... जैसा मैंने उस पिशाच के खंजर वाले कमरे में महसूस किया था।" अनामिका ने अपने माथे पर उभरी बूंदों को छूते हुए हैरानी से कहा।

"क्या सच में? फिर तो ये वही है... जो मैंने सोचा है।" अल्फ़ी ने सामने सिमटते हुए अंधेरे को देखते हुए कहा।

कुछ देर पहले जहॉ... उस जगह की आबोहवा सर्द अहसास लिए हुए थी, वहीं अल्फ़ी के अंदर जाते ही माहौल में गर्माहट घुलने लगी थी और फिर धीरे-धीरे उनके चारों ओर लगी मशालों में अग्नि प्रज्वलित होने लगी। एकदम से ही वहॉ का अंधकार रोशनी के हमले से दुम दबाकर भाग गया। अब वो दोनों ही वहॉ की हर चीज साफ-साफ देख सकते थे। और फिर उन्होंने देखा उस आदमकद भयानक बुत को... जो किसी का भी दिल दहला सकता था। वो जगह चारों ओर काले धब्बों से अटी पड़ी थी और उन्हीं चिपचिपे धब्बों से वो गंदी सी बदबू आ रही थी। अनामिका ने अपनी नाक पर हथेली रख दी।

"क्या तुम्हें पता है कि ये किसकी मूर्ति है?" अनामिका उस मूर्ति की ओर देखकर बोली।

मगर अल्फ़ी की ओर से कोई भी जवाब नहीं आया। उसने जवाब की मंशा से उसकी ओर देखा, तो वो अपने बालों को मुट्ठियों में भींचे सिर झुकाए खड़ा था। उसने अपनी ऑखें बुरी तरह से भींच रखी थीं और वो तकलीफ़ में दिखाई दे रहा था। उसे ऐसी हालत में देखकर अनामिका डर गई।

"अल्फ़ी! क्या हुआ?" उसने बेचैनी से सवाल किया, मगर इस बार भी अल्फ़ी ने कोई जवाब नहीं दिया।

"अल्फ़ी! होश में आओ! क्या हुआ तुम्हें?" घबराईं हुई अनामिका तेजी से अल्फ़ी की ओर बढ़ी और इससे पहले कि... वो फिर से उस सुरक्षा रेखा को छूती... अल्फ़ी ने अपना हाथ उसकी ओर उठाया।

"वहीं रूको।" वो पूरी ताकत से चिल्लाया, जिससे अनामिका एक झटके के साथ रूकी थी।

"अल्फ़ी बाहर निकलो तुम! तुरन्त बाहर निकलो... वरना मैं अंदर आ जाऊंगी।" अनामिका ने उसे धमकाते हुए कहा।

उसकी धमकी के असर से अल्फ़ी ने उस पर एक तिरछी नज़र डाली और फिर खुद को संभालते हुए बाहर आ गया। बाहर आते ही वो जमीन पर ढह गया। वो गहरी-गहरी साँसें ले रहा था। अनामिका तेजी से उसके पास जाने लगी, तो... एक बार फिर उसने उसे रोका।

"मेरे पास नहीं आना! प्लीज़!" अल्फ़ी तड़पते हुए बोला।

"बताओगे कि हुआ क्या है?" अनामिका झल्लाते हुए बोली।
"वो... काले धब्बे... खून के हैं।" अल्फ़ी ने बहुत ही मुश्किल से कहा।

और अनामिका को समझ आ गया कि उन खून के धब्बों से उठने वाली महक की वजह से अल्फ़ी के अंदर का पिशाच फिर से जाग गया था। हालांकि वो खुद को काबू में करने की कोशिश कर रहा था, पर शायद उसकी वो कोशिशें काफी नहीं थी। अनामिका अपनी जगह पर जमी हुई उसी की ओर देख रही थी। अल्फ़ी ने उसे इशारे से उसे वहॉ से भागने के लिए कहा, मगर वो अपनी जगह से टस से मस नहीं हुई। अनामिका को वहीं खड़ा देखकर अल्फ़ी की झुंझलाहट बढ़ने लगी। उसका खुद पर से इख्तियार खत्म हो रहा था और वो किसी भी कीमत पर अनामिका को नुक़सान नहीं पहुँचाना चाहता था।

"अनामिका जाओ!" आखिरकार अपनी अंगारों की तरह दहकती ऑखें अनामिका पर डालकर अल्फ़ी पूरी ताकत से चिल्लाया।

"नहीं! कभी नहीं ! मैं तुम्हें ऐसे छोड़कर नहीं जाऊंगी। मेरी वजह से तुम्हारी ऐसी हालत हुई है ना! प्लीज़ अल्फ़ी! संभालो खुद को! मैं जानती हूँ कि तुम कर सकते हैं। तुम्हें कुछ हुआ तो खुद को माफ नहीं कर पाऊंगी मैं। प्लीज़!" अनामिका ऑसुओं से रोते हुए बोली और उसी तरह बिलखते हुए अपने घुटनों पर गिर गई।

अल्फ़ी ने उसे गिरते देखा तो वो और भी सदमे में आ गया। उसे खुद को संभालना ही होगा। अनामिका

को कोई भी नुकसान पहुँचाने से पहले उसे ये करना ही होगा। बर्दाश्त की आखिरी हद पर खड़े अल्फ़ी ने झुककर जमीन में अपनी ऊंगलियॉ कस दीं। वो अपनी ऑखों पर चढ़े खूनी रंग को उतारने की जद्दोजहद में बुरी तरह कॉपने लगा था। उसने अपने दॉत भींच रखे थे और उसे अपना पूरा शरीर झुलसता हुआ महसूस हो रहा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कि वो कुछ ही देर में राख हो जाएगा। सब खत्म हो जाएगा... कि तभी जैसे बारिश की एक ठंडी फुहार उसके पूरे जिस्म को राहत पहुँचा गई। धीरे-धीरे उसके अंदर की आग ठंडी होने लगी और फिर वो पल भी आया... जब वो बिल्कुल सामान्य हो चुका था। राहत मिलते ही उसने अपनी ऑखें खोली और अनामिका को अपनी ऑखों के ठीक सामने पाया। उसने अपने सीने की ओर देखा, जहॉ उसके तेज धड़कते दिल के ऊपर ही अनामिका का हाथ था। वो अनामिका का ठंडा स्पर्श था, जो उसे उन अंगारों से वापस ले आया था।

"फीलिंग बेटर?" अनामिका ने अपनी ऑखों में फिक्र और सवाल दोनों भरकर पूछा। अल्फ़ी ने एक गहरी साँस ली और हॉ में सिर हिलाया। अनामिका ने सहारा देकर उसे आराम से बिठाया।

बेहतर महसूस होते ही अल्फ़ी ने अनामिका की ओर नाराज़गी से देखा और शिकायती लहज़े में बोला, " तुम्हें जाने के लिए कहा था ना! गई क्यों नहीं तुम यहॉ से?"

"इस सवाल का जवाब तुम्हें पता है।" अनामिका ने जमीन को घूरते हुए कहा।

"पागल लड़की! तुम्हें कुछ हो जाता तो! मैं चैतन्य को क्या जवाब देता? ये सब करने से पहले सोचना चाहिए था तुम्हें।" अल्फ़ी ने उसे डपटते हुए कहा।

"और तुम्हें कुछ हो जाता तो मैं खुद को क्या जवाब देती। मेरी हिफ़ाजत के लिए इतना बड़ा कदम उठाने से पहले क्या तुमने कुछ सोचा था? नहीं ना!" अनामिका ने पलटकर सवाल करते हुए जवाब दिया।

"ओह! तो तुम अहसान उतारना चाहती थी!" अल्फ़ी ने तंज़ भरी आवाज में कहा।
"क्या सच में? तुम्हें लगता है कि वो... अहसान था!" अनामिका ने भी पलटकर चोट की, जिस पर अल्फ़ी अपनी नज़रें झुका गया।

"तुम फिर सब उलझा रही हो अनामिका।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से शिकायत की।

"नहीं! मैं ऐसा कुछ नहीं कर रही हूँ। तुम भी जानते हो और मैं भी जानती हूँ कि हम दोनों ने जो किया वो क्या था? फिक्र सिर्फ उसी की नहीं की जाती, जिससे हम प्यार करते हैं... उसकी भी की जाती है.. जिसकी हम इज्जत करते हैं। है ना!" अनामिका ने बात साफ करते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी ने सिर उठाकर उस पर एक भरपूर नज़र डाली और इस बार उसकी नज़रों से घबराकर अनामिका ने नज़रें नहीं फेरी। उसका विश्वास देखकर अल्फ़ी ने एक बार फिर हामी भर दी।

"अब क्या?" अल्फ़ी ने सामने की ओर देखते हुए कहा।

"अभी यहॉ से चलते हैं। हम इस जगह के बारे में कुछ नहीं जानते। अच्छा होगा कि हम इस जगह के बारे में चैतन्य और तांत्रिक श्रेष्ठ को बता दें। मिलकर कोई उपाय निकालना बेहतर होगा। " अनामिका ने समझदारी दिखाते हुए कहा।

"पर अगर ... अगली बार यहाँ आना आसान नहीं हुआ तो। इस जगह एडवर्ड का कोई राज जरूर छिपा हुआ है। यहाँ तक आकर खाली हाथ वापस जाना मुझे सही नहीं लग रहा है।" अल्फ़ी ने बहुत ही मायूसी से कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने उस पर एक पैनी नज़र डाली और फिर खड़ी होकर उस सुरक्षा रेखा के पास चली गई। बात तो अल्फ़ी ने बिल्कुल
ही सही कही थी। वापस जाने के बाद फिर यहाँ वापस आ पाना शायद मुमकिन ना हो। तो फिर वो क्या करें? कैसे उस चीज को ढूंढें या हासिल करें? वो सामने फैली तपिश को महसूस करके सोचने लगी। सोचते-सोचते उसका दिमाग पिशाच के खंज़र वाले कमरे तक पहुँच गया और वहाँ पहुँचते ही एक मुस्कुराहट उसके होंठों पर आई। वो तेजी से अल्फ़ी के पास पहुँची। उसकी ऑखें अभी भी नम थीं। उसने उस नमी की एक बूंद को अपनी ऊंगली में रखा।

"क्या कर रही हो तुम?" अल्फ़ी ने परेशान नज़रों से उसे देखते हुए कहा।

"अब इस पिशाच के आग की गर्मी को एक पिशाच के ऑसुओं की ठंडक शांत करेगी।" अनामिका ने उसके सवाल का जवाब देते हुए कहा।

अल्फ़ी कुछ कहता उससे पहले ही वो तेजी से उस सुरक्षा घेरे के पास पहुँची। उसने अपनी ऑखें बंद की और फिर जल का आह्वान करते हुए नीचे बैठकर अपनी ऑखें खोली। उसने उस नन्हें अश्रुकण को उस सुरक्षा घेरे से छुआया और अगले ही पल उस घेरे के अंदर की तपिश कम होती गई और वो कमरा दहकती रोशनी के बदले नीली रोशनी से भर गया।

अनामिका के होंठ फिर मुस्कुराए और फिर एक पल की भी देरी किए बिना वो तेजी से आगे बढ़ गई। अंदर जाकर उसने फुर्ती से चारों ओर छानबीन शुरू कर दी। उसे पता था कि ये ठंडक ज्यादा देर नहीं रहने वाली थी और उसकी किस्मत इतनी अच्छी थी कि उसे आखिरकार उस मूर्ति के सामने कुछ रखा दिखाई दिया। वो तेजी से उसके पास गई। वो एक किताब थी। वो उसे अच्छी तरह से देखती उससे पहले ही उसे पीछे से अल्फ़ी की तेज आवाज सुनाई दी।

"अनामिका! जल्दी करो। नीली रोशनी कम हो रही है।"
अनामिका ने झपटकर उस किताब को उठाया और फिर अपने कपड़ों को समेटकर पूरी ताकत से दौड़ी। उसने दौड़ते हुए पीछे देखा। नीली रोशनी को निगलते हुए एक बार फिर से आग की पीली रोशनी उसका पीछा कर रही थी। मगर वो भी अपने धुन की पक्की थी। उस पीली रोशनी से तेज दौड़ते हुए उस सुरक्षा घेरे से बाहर निकल आई।

घेरे से बाहर निकल कर वो तेजी से पीछे पलटी। सब कुछ पहले जैसा हो गया था। पर इस बार उनके हाथ कुछ लग गया था। उसने अपने सीने से हटाए उस किताब को अपने हाथों में रखा। तब तक अल्फ़ी भी उसके पास आ गया था। अनामिका के हाथों की किताब को देखते ही दोनों की ऑखेन हैरानी से फैल गईं।

"ये तो सर विलियम की किताब है। उनके पास देखी थी मैंने।" अल्फ़ी ने उस किताब को छूते हुए कहा।

"और मैंने भी उस रात इसे देखा था। आज इसे उस स्टडी में बहुत ढूंढा, पर ये तो यहाँ था। खजाना हाथ लगा है हमारे।" अनामिका ने खुशगवार हैरानी के साथ कहा।

"क्या सच में?" अल्फ़ी ने कहा।

"अब चलो यहॉ से। सुराग हासिल करने का समय आ गया है। यहॉ रहना खतरनाक हो सकता है।" अनामिका ने कहा।

"हॉ! चलो!" कहते हुए अल्फ़ी वापस जाने के रास्ते की ओर मुड़ा।

"वहॉ से नहीं! यहॉ से!" कहते हुए अनामिका ने अपनी ऑखों से कुछ मोती चुन लिए। अल्फ़ी ने हैरानी से उनकी ओर देखा।
"खुशी के ऑसू अनमोल होते हैं ना!" अनामिका ने मुस्कुराते हुए कहा। फिर एक तरफ जाकर दीवार पर उन ऑसुओं को रगड़ दिया और कुछ ही देर में एक बार फिर एक छलद्वार उनके सामने था।

"आओ अल्फ़ी! चलें!" अनामिका ने अल्फ़ी की ओर अपना हाथ बढ़ाया, जिसे अल्फ़ी ने मुस्कुराते हुए थाम लिया। दोनों ही उस छलद्वार से सुरक्षित बाहर निकल गए।

जंगल के एक हिस्से में तेज रोशनी के साथ एक नीला घेरा सा बना और फिर उसमें से अनामिका और अल्फ़ी बाहर निकले। उनके बाहर निकलते ही वो घेरा सिमटने लगा और फिर गायब हो गया।
अनामिका ने अपने कपड़े झटके और अपनी हालत ठीक की। उसने मुड़कर अल्फ़ी की ओर देखा तो वो उस किताब को अपने सीने पर हाथों की कैद में रखे उसे ही एकटक देख रहा था।

"क्या हुआ? ऐसे क्या देख रहे हो?" अनामिका ने अपनी एक भौंह चढ़ाकर उसे देखते हुए पूछा।
"देख नहीं रहा हूँ! सोच रहा हूँ कि तुम्हें.... ये जादुई दरवाजे बनाने कितने पसंद हैं? है ना!" अल्फ़ी ने अपनी भौंह को नचाते हुए कहा।

"नहीं! ऐसी बात नहीं है।" अनामिका ने उसकी बात काटी।

"क्या बात कर रही हो? तीन तो मुझे ही पता हैं। पहला जब हम कल रात जंगल से बसेरे में गए थे.... दूसरा आज मेंशन से चैतन्य हमें झील तक लेकर आया था और तीसरा ये ताज़ा-ताज़ा। तो बस यही जानना था कि और कितने ऐसे जादुई दरवाजे तुमने बना छोड़े हैं और ये भी कि... ये तुम्हारा शौक है... या मजबूरी... या फिर कुछ और?" अल्फ़ी ने शरारत से मुस्कुराते हुए पूछा, जिस पर अनामिका ने उसे सख़्ती से घूरा था। अल्फ़ी ने भी अपनी मुस्कुराहट समेटने की कोशिश नहीं की। अनामिका भी मुँह बनाती एक ओर बढ़ गई।

"अरे! रूको! हम जा कहॉ रहे हैं?" जीभ दॉतों में दबाकर उसके पीछे भागते हुए अल्फ़ी ने कहा।

"चैतन्य के पास!" अनामिका ने बिना उसकी ओर देखते हुए कहा। उसकी बात सुनकर अल्फ़ी अपनी जगह पर रूक गया। उसने एक बार अनामिका की ओर देखा और फिर पलटकर एक ओर देखने लगा।।

"अनामिका! चैतन्य तो नर्क के द्वार की ओर गया था ना!" अल्फ़ी ने तेज आवाज में पूछा।

"हॉ!" अनामिका ने उसकी ओर पलटकर जवाब दिया।

"तो तुम झील की ओर क्यों जा रही हो? नर्क का द्वार तो इस तरफ है।" अल्फ़ी ने एक बार फिर तेज आवाज में कहा।
अल्फ़ी की बात सुनते ही अनामिका के कदम ठिठक कर रुक गए। उसने ऑखों से सवाल करते हुए अल्फ़ी की ओर देखा।

"हॉ इस तरफ! तुम जिस तरफ जा रही हो... उधर झील है।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से अपनी बात दोहराई।

"पर ऐसे कैसे हो सकता है? छलद्वार हमेशा सीधा खुलता है।" अनामिका ने उसकी बात काटते हुए कहा।

"मुझे क्या पता?" अल्फ़ी ने अपने कंधे उचकाते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका के माथे पर बल पड़े थे। चैतन्य ने उसे बताया था कि वो तांत्रिक श्रेष्ठ से मिलने नर्क के द्वार की ओर जा रहा है। अगर वो अभी भी झील की तरफ है तो क्या...?

"हे भगवान! कहीं वो किसी मुसीबत में तो नहीं फँस गया है!" और ये ख्याल आते ही वो बेतहाशा झील की ओर दौड़ी। उसे इस तरह भागते देख अल्फ़ी के होश फाख़्ता हुए थे। वो भी उतनी ही तेजी से उसके पीछे भागा था। किसी तरह गिरते-पड़ते वो झील के करीब पहुँच गई। वो और आगे बढ़ती... उससे पहले ही अल्फ़ी ने उसे पकड़ लिया।

"अल्फ़ी! छोड़ो मुझे! वो जरूर किसी मुसीबत में है। मेरा दिल बैठा जा रहा है। छोड़ो मुझे!" अनामिका उसकी पकड़ में छटपटाते हुए बोली। वो आगे कुछ बोलती... उससे पहले ही अल्फ़ी ने उसका मुँह बंद कर दिया। उसके मुँह से घुटी-घुटी सी आवाज़ें आने लगी।

"श्श्श्श्! चुप रहो! अगर सच में ऐसी कोई बात हुई है... तो इस तरह बेवकूफी करने से बात और बिगड़ जाएगी। पहले पता तो चले कि हुआ क्या है? इस तरह से तो तुम मुश्किल और बढ़ा दोगी। शांत रहो!" अल्फ़ी
ने उसे बहुत ही धीमी आवाज में डपटते हुए कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका ढीली पड़ी थी। मगर एक बुरा ख्याल उसकी ऑखें भिगो गया था।

"ये क्या है अनामिका? एक पल इतनी बहादुर और दूसरे ही पल इतनी कमजोर। कुछ नहीं हुआ होगा उसे। इतना कमजोर नहीं है वो। अब चलो... और आवाज नहीं करना!" अल्फ़ी उसे हिदायत देते हुए सख़्त लहज़े में बोला। अनामिका ने उसकी ओर देखकर अपनी नाक सुड़की और बड़ी ही मासूमियत से अपना सिर हिला दिया। उसे ऐसा करते देख एक आह अल्फ़ी के दिल से निकली और फिर वो हर भ्रम को परे हटाते हुए आगे बढ़ गया। अनामिका भी चुपचाप उसके पीछे चल दी। थोड़ा आगे जाने पर अल्फ़ी ने अनामिका को रूकने का इशारा किया। उसने अनामिका को एक पेड़ के पीछे छिपने के लिए कहा और खुद बेहद सावधानी से झील की ओर झांकने लगा। अगले ही पल सामने का नज़ारा देखकर

उसकी ऑखें और मुँह दोनों ही खुले के खुले रह गए।

"क्या हुआ? चैतन्य है क्या?" अनामिका ने बेचैन होकर पूछा। जवाब में अल्फ़ी ने अपनी उसी हालत में सिर हिलाया।

"वो ठीक है?" अनामिका ने अल्फ़ी का हाथ पकड़ते हुए उतावलेपन से पूछा। इस बार अल्फ़ी ने पहले तो हॉ में सिर हिलाया... और फिर तेजी से ना में सिर हिलाया... और फिर उसका सिर अजीब सी उलझन के साथ इधर-उधर हिलने लगा।

"ये क्या हॉ-नहीं.. हॉ-नहीं कर रहे हो। क्या है सामने, जिसे देखकर तुम्हारे चेहरे पर हवाईयॉ उड़ रही हैं। हटो! मुझे देखने दो!" अनामिका ने बिगड़ते हुए अल्फ़ी को हटाने की कोशिश की।

"अनामिका! मेरी मानो तो... मत देखो तुम!" अल्फ़ी ने अफसोस और
इसरार भरी आवाज में कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने अजीब सी नज़रों से उसे देखा, जैसे कि वो ये समझना चाहती हो कि... वो कहना क्या चाहता है और जब कुछ समझ में नहीं आया, तो उसने गुस्से से उसकी कॉलर पकड़कर उसे पीछे खींचा और फुर्ती से उसकी जगह आ गई। इसके बाद उसकी गुनहगार ऑखों ने जो देखा... वो उसके होश उड़ा ले गया। सामने चैतन्य और माया आमने-सामने थोड़े फासले में खड़े हुए बातें कर रहे थे। उन दोनों को वहॉ देखकर अनामिका के अंदर कुछ सुलगा था।

"चैतन्य ने ये सही नहीं किया... तुमसे झूठ बोलकर। अगर उसे माया से मिलना ही था तो... तुम्हें बता देता। छिपाने की क्या जरूरत थी?" अनामिका के कंधे के ऊपर से झांकते हुए अल्फ़ी ने जाने किस नीयत से कहा, जो अनामिका के अंदर की अगन को और भड़का गया। अनामिका ने एक तेज नज़र उस पर डाली और फिर सामने की ओर देखते लगी।

"लग रहा... आज किसी की मौत आई है।" अनामिका ने लावे की तरह तपते हुए कहा। गुस्से में उसके जबड़े और मुट्ठियॉ भिंच गए थे और उसने बड़ी मुश्किल से खुद को काबू में करके रखा हुआ था। उसके ऐसे तेवर देखकर अल्फ़ी बुरी तरह से सकते में आया था। वो उससे थोड़ी दूरी बनाकर खड़ा हुआ और सहमी हुई नज़रों से चैतन्य की ओर देखते हुए दुआ करने लगा कि माया जल्द से जल्द वहॉ से चली जाए। मगर अगले ही पल उसे अपनी दुआएँ ज़ाया होती नज़र आईं, जब उसने माया को चैतन्य के करीब जाते देखा... और तो और... चैतन्य भी उसकी नजदीकी पर कोई ऐतराज दिखाता नज़र नहीं आया। अल्फ़ी ने ख़ौफ से अनामिका की ओर देखा... जिसकी नज़रें अब और भी पैनी हो चुकी थीं। वो बस अपने बर्दाश्त की आखिरी सीमा पर ही खड़ी थी और उसके खत्म होने के इंतजार में ही थी। और अगला पल वही था... जब माया, चैतन्य के बिल्कुल करीब आकर उसके चेहरे पर अपनी उंगलियाँ फिराने लगी।
अनामिका ने बारी-बारी से अपनी दोनों कलाईयॉ मसलीं और तेजी से उस ओर झपटी। मगर अल्फ़ी उससे ज्यादा तेज निकला और उसने तेजी से अनामिका को कमर से पकड़कर पीछे खींच लिया। अनामिका उसकी पकड़ से निकलने के लिए बुरी तरह से छटपटाने लगी।

"अनामिका! होश में आओ! क्या कर रही हो?" अल्फ़ी ने उसे डपटते हुए कहा।

"छोड़ो मुझे! परेशान करके रख दिया है इस कलमुँही ने। आज इसका पूरा इंतजाम कर ही दिया जाए।

आधा मामला अभी के अभी सुलझ जाएगा।" अनामिका तैश में आते हुए बोली।

"पागल हो गई हो! तुम्हें क्या लगता है? वो ऐसे ही यहॉ बिना सुरक्षा के आई होगी। बहुत चालाक है वो। हो सकता है कि वो सब चैतन्य के सहारे हम दोनों को पकड़ना चाहते हों। अगर ऐसा हो गया तो मुसीबत और बढ़ जाएगी। तुम शांत रहो। पहले चैतन्य से बात कर लें... फिर देखते हैं कि करना क्या है?" अल्फ़ी ने उसे समझाते हुए कहा।

अनामिका ने गहरी साँसे लेते हुए उसकी ओर देखा और फिर खुद को किसी तरह से शांत किया। अल्फ़ी ने झील की ओर देखा तो... माया जा चुकी थी और चैतन्य किसी गहरी सोच में डूबा हुआ था।

"चैतन्य को बुलाओ।" अल्फ़ी ने कहा। उसकी बात सुनते ही अनामिका ने अपनी ऑखें बंद की और एक बार फिर से वो चैतन्य के मस्तिष्क से जुड़ गई।

"चैतन्य! कहॉ हो तुम?"

"मैं! यहॉ झील के किनारे।" चैतन्य ने जवाब दिया।
"वहॉ क्या कर रहे हो?" अनामिका ने पूछा।

"काम था एक जरूरी। तुम कहॉ हो? ठीक हो ना तुम?" चैतन्य ने फ़िक्र दिखाते हुए कहा।

"तुम जंगल की ओर आओ।" अनामिका ने उसके सवाल को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा।

"क्या हो गया?" चैतन्य की फिक्र और बढ़ी।

"तुम आओ तो!" कहकर अनामिका ने संपर्क तोड़ दिया।

अनामिका के ऐसे अजीब से व्यवहार से चैतन्य घबरा गया। उसे उसकी फिक्र हो आई कि कहीं वो किसी मुसीबत में तो नहीं पड़ गई और ये सोचते ही वो तेजी से जंगल की ओर भागा। वो थोड़ा अंदर आया ही था कि किसी ने उसके हाथ को पकड़कर उसे रूकने पर मजबूर कर दिया। चैतन्य ने उस ओर देखा तो अल्फ़ी उसकी कलाई थामे खड़ा हुआ था।

"अल्फ़ी! तुम! यहॉ क्या कर रहे हो?" उसे सामने पाकर चैतन्य ने हैरानी से सवाल किया।

"इसका जवाब तो तुम दो कि तुम यहॉ क्या कर रहे थे... उस माया के साथ?" अल्फ़ी ने साफगोई से सवाल किया।

"माया! मतलब कि... तुमने हम दोनों को देखा?" चैतन्य ने थोड़ी घबराहट के साथ कहा।

"हॉ! सब देखा... और मैंने ही नहीं... हम दोनों ने ही देखा।" कहते हुए
अल्फ़ी ने अपने पीछे की ओर मुड़कर देखा। चैतन्य की नज़रों ने भी उनका पीछा किया और अगले ही पल वो सदमे में आ गया। अनामिका सामने खड़ी थी। उसकी सुर्ख़ लाल रंग ओढ़े ऑखों की नमी दूर से ही दिख रही थी।

"अना... मिका! मैं... मैं समझा सकता हूँ। लेट मी एक्सप्लेन!" चैतन्य ने बड़ी ही मुश्किल से कहा।

मगर वो आगे कुछ कह पाता... उससे पहले ही अनामिका उसके पास आई और फिर उसकी कलाई पकड़ उसे अपने साथ गहरे जंगल में खींचकर ले गई। एक बार फिर से अल्फ़ी तेजी से उनके पीछे गया था।

चैतन्य लगातार उससे बातें करने और समझाने की कोशिश कर रहा था, पर अनामिका ने ऑखें दिखाकर उसका मुँह बंद करवा दिया था। वो बस उसे अपने साथ खींचे लिए जा रही थी और फिर एक जगह जाकर वो रूक गई। उसने चैतन्य की कलाई छोड़ी और उसकी ओर मुड़कर उसे भरी हुई ऑखों से देखने लगी। उसकी उन ऑखों को देखकर चैतन्य का दिल बैठने लगा। अल्फ़ी भी कुछ दूरी पर खड़ा उन दोनों को देख रहा था।

"अनामिका! प्लीज़ मेरी बात सुनो! मैंने कुछ ग़लत नहीं...." और उसकी आगे की बातें उसके हलक में ही ठहर गई, जब अनामिका आगे बढ़कर उससे जा लगी। हमेशा की तरह एक बार फिर उसने चैतन्य को चौंका दिया था। और अल्फ़ी... जो खुद किसी हंगामे की आशंका से सहमा हुआ था... उसे भी हैरत का एक तेज झटका लगा था। चैतन्य ने हिम्मत करके अनामिका के गिर्द अपनी बांहें डाली थीं।

"अनु!"

"उसने फिर तुम्हें परेशान किया। लगता है कि पिछली बार की मार वो भूल गई। अगर अल्फ़ी ने मुझे नहीं रोका होता... तो आज यहीं उसे जान से मार देती मैं। उसकी हिम्मत कैसे हुई तुम्हें छूने की।" अनामिका ज़ज्बातों की शिद्दत के साथ अपने दिल की बात बोलती चली गई और उस शिद्दत को महसूस कर चैतन्य के बेचैन दिल पर राहत की फुहारें पड़ी थीं। उसके होंठ अनायास ही मुस्कुराए और अनामिका के गिर्द उसकी बाहों का घेरा थोड़ा और मजबूत हुआ था।

"तुम... तुम नाराज़ नहीं हो मुझसे?" चैतन्य ने अपने मन की आशंका को दूर करने की मंशा से पूछा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा और उसकी ऑखों में देखते हुए बोली, "तुमसे क्यों नाराज़ होऊंगी मैं?"

"मुझे लगा कि... माया और मुझे साथ देखकर तुम नाराज़ होगी मुझसे!" चैतन्य ने अपने मन का डर जाहिर करते हुए कहा।

"नाराज़ थी! पर तुमसे नहीं... उस माया से। तुम पर तो खुद से ज्यादा भरोसा है मुझे। पर वो माया... अब हद से आगे बढ़ने लगी है। चैतन्य! चलो यहॉ से! किसी भी तरीके से... बस चलो!" अनामिका ने भावुक होकर उससे लिपटते हुए कहा।

चैतन्य ने उसके सिर पर अपना चेहरा टिकाया और उम्मीद भरी आवाज में बोला, "जल्दी ही!"

"वैसे... तुम तो तांत्रिक श्रेष्ठ से मिलने गए थे ना! फिर यहॉ वापस कैसे लौट आए?" अनामिका ने उससे अलग होते हुए सवाल किया।

उसका सवाल सुनकर चैतन्य ने एक नज़र उस पर और फिर अल्फ़ी पर डाली। इसके बाद उसने तांत्रिक

श्रेष्ठ से अपनी मुलाकात और फिर उन
दोनों के बीच हुई एक-एक बात अनामिका और अल्फ़ी को बता दी।

"तो इसीलिए तुम उस माया को बर्दाश्त कर रहे थे?" अल्फ़ी ने पूछा।

"और नहीं तो क्या?" चैतन्य ने कहा।

"ऐसी बात थी तो... तुम अनामिका को पहले ही सब बता देते। कम से कम मेरी हालत तो इतनी नहीं बिगड़ती।" अपनी ने शिक़ायती लहज़े में कहा। उन दोनों की नजदीकियाँ हमेशा ही अल्फ़ी के दिल को चोट पहुँचा जाती थी।

"मैंने भी सोचा था बताने के लिए, पर फिर ये सोचकर नहीं बताया कि कहीं अनामिका गुस्से में बाहर ना आ जाए और फिर कुछ गड़बड़ ना हो जाए... जो बाद में हमें महंगी पड़े। वैसे अच्छा ही हुआ कि मैंने अनामिका को नहीं बताया। कम से कम आज इतना तो पता चला कि मोहब्बत में यकीन कमाया है मैंने।" अनामिका को अपने करीब कर उसे प्यार से देखते हुए चैतन्य ने कहा, जिस पर अनामिका ने भी मुस्कुराकर उसका साथ दिया। अल्फ़ी ने एक-एक नज़र उन दोनों पर डाली और फिर दर्द के एक अहसास के साथ नज़रें फेर गया।

"वैसे तुम दोनों यहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हें छिपकर रहने के लिए कहा था ना!" चैतन्य ने दोनों को नाराज़गी से देखते हुए कहा।

"क्योंकि अब छिपने का समय नहीं रह गया। हमें कुछ पता चला है और कुछ मिला भी है।" अनामिका ने जानकारी देते हुए कहा।

"और वो क्या है?" चैतन्य ने पूछा।

"ये!" कहते हुए अल्फ़ी उसके पास आया और अपने हाथ में पकड़ी हुई
किताब उसे दिखाई। इसके बाद अल्फ़ी और अनामिका ने उस किताब के मिलने की पूरी कहानी उसे बताई। चैतन्य ने उस किताब को अपने हाथों में लिया और फिर उसे ग़ौर से देखने लगा।

"क्या ये वही किताब है, जिसके बारे में तुमने बताया था?" चैतन्य ने अनामिका की ओर देखकर पूछा।

"हाँ!" अनामिका बोली।

"हम्म! तांत्रिक श्रेष्ठ को ये बात बतानी पड़ेगी। रूको जरा!" कहते हुए चैतन्य ने अपनी आँखें बंद की और फिर धीरे-धीरे उसके चेहरे पर तनाव उतरता गया। कुछ देर संपर्क जोड़ने की नाकाम कोशिश के बाद उसने झटके से आँखें खोल दीं।

"क्या हुआ?" अनामिका ने फिक्र से पूछा।

"पता नहीं! तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा था कि मैं कभी भी उनसे संपर्क कर सकता हूँ। पर वो संपर्क जोड़ नहीं रहे हैं।" चैतन्य ने थोड़ी परेशानी से कहा।

"हो सकता है कि बिजी हों। वैसे... तुमसे मिलने के बाद वो गए कहॉ थे?" अनामिका ने पूछा।

"अहेरी सभा गए थे वो। वहीं से तो उन्होंने उस माया को यहॉ भेजा था। वो कह रहे थे कि डायनों की वजह से ही सुरमी कबीला यहॉ गुस्से में आया हुआ है। कोई बहुत बड़ी बात हुई है। इसीलिए तो उन्होंने अनामिका को छिपकर रहने के लिए कहा था।" चैतन्य ने उन दोनों को समस्या से रूबरू करवाते हुए कहा।
"हुआ क्या है? बताया नहीं।" अल्फ़ी ने कौतूहल से पूछा।

"नहीं! उस समय उन्हें भी पता नहीं था।" चैतन्य ने अनभिज्ञता जताई।

"इस माया ने ही कुछ किया होगा। और कौन हो सकता है?" अनामिका ने चिढ़कर कहा।

अभी चैतन्य ने हुंकारी भरी ही थी कि तभी उसने तांत्रिक श्रेष्ठ के संपर्क को महसूस किया। उसने अनामिका और अल्फ़ी को शांत रहने का इशारा किया और फिर संपर्क जोड़ दिया।

"चैतन्य! अल्फ़ी और तुम्हारी दोस्त कहॉ हैं?" सामने से तांत्रिक श्रेष्ठ की घबराई हुई आवाज आई।

"वो दोनों मेरे साथ ही हैं।" चैतन्य ने कहा।

"चैतन्य! बहुत बड़ी समस्या हो गई है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बहुत ही गंभीर लहज़े में कहा।

"समस्या! कैसी समस्या?" चैतन्य के कान खड़े हुए।

"देखो! ये बात अल्फ़ी को अभी बिल्कुल भी पता नहीं चलनी चाहिए। तुम मन में बातें करना।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे हैरान करते हुए कहा।

"ऐसी क्या बात हो गई?" उनकी बात मानते हुए चैतन्य ने मन में पूछा।

"आज से चार रात पहले... सुरम्या देवी.... जो कि सुरमी कबीले की आराध्या और जंगलों की देवी है... उनका मंदिर पूरी तरह से नष्ट हो गया। दो दिनों के बाद कबीले वालों को पता चला कि किसी डायन-शक्ति ने ये
ज़ुर्रत की है। वो सब बहुत गुस्से में हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"माया! और कौन कर सकता है?" चैतन्य ने गहरी साँस छोड़ते हुए कहा।

"है तो वही, पर... एडवर्ड ने सारा इल्ज़ाम हेममाया पर डाल दिया है और अब वो सुरमी कबीले को उसका शरीर सौंपने वाला है, जिसे वो सजा के तौर पर सबके सामने जलाने वाले हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य को समस्या बताते हुए कहा।

"क्या?" चैतन्य बुरी तरह चौंककर बोला।

"अल्फ़ी से कहो... तांत्रिक श्रेष्ठ से मुलाकात करनी है। वो तुम्हें मेरे पास ले आएगा। उसके सामने सामान्य रहने की कोशिश करना। पता नहीं उस बच्चे की किस्मत में कितने दर्द लिखे हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ

ने भरे हुए गले से कहा।

चैतन्य ने संपर्क तोड़ा और अल्फ़ी की ओर बिना देखे कहा, "तांत्रिक श्रेष्ठ ने मिलने के लिए बुलाया है।"

"हम्म! चलो!" कहते हुए अल्फ़ी एक ओर बढ़ गया।

चैतन्य ने नज़र उठाकर अल्फ़ी की पीठ को देखा। उसकी तकलीफ़ों के बारे में सोचकर चैतन्य का दिल भर आया था। आखिर कोई इतना बदनसीब कैसे हो सकता था? उसे तो पता भी नहीं था कि इल्ज़ाम तराशी का एक और खंज़र उसकी पीठ में घोंपा जा चुका था, जिसका दर्द सहन करना शायद अब उसके लिए मुमकिन नहीं था और ये दर्द आने वाली दो सदियों को खुद में समेटने वाला था।
अल्फ़ी के पीछे-पीछे चलते हुए चैतन्य और अनामिका जंगल के एक छोर पर स्थित पहाड़ी की तलहटी में पहुँच गए। पूरे रास्ते चैतन्य ने कुछ भी नहीं कहा। अनामिका ने अल्फ़ी पर टिकी उसकी परेशान नज़रों को देखा.. तो इशारे से सवाल भी किया, जिसे चैतन्य ने सिर हिलाकर टाल दिया। अनामिका ने भी ज्यादा कुरेदना सही नहीं समझा और अल्फ़ी... उसे तो इस समय बस तांत्रिक श्रेष्ठ के आदेश की सबसे पहली परवाह थी। वो भी उन दोनों के लिए रास्ता बनाता हुआ चुपचाप आगे बढ़ता गया और आखिरकार वो सभी अपने गंतव्य तक पहुँच गए।

"हम इस खुली जगह में क्यों आए हैं? तुम्हें नहीं लगता कि हम सब पकड़ में आ जाएँगे।" चैतन्य में चारों ओर आशंका का भरी निगाहें घुमाते हुए कहा।

"नहीं! ये हमारे लिए सबसे सुरक्षित जगह है। किसी ने देख भी लिया हो... तब भी।" अल्फ़ी ने उसकी आशंका को दूर करते हुए कहा।

"तो हम पहले यहाँ क्यों नहीं आए?" अनामिका ने पूछा।

"क्योंकि उस समय तांत्रिक श्रेष्ठ ने हमें आमंत्रित नहीं किया था। ये उनकी जगह है। पूरी तरह से उनकी। कोई भी उनकी इजाजत के बिना अंदर नहीं जा सकता। इसीलिए तो ये सुरक्षित है।" अल्फ़ी ने जवाब देते हुए कहा और आगे बढ़ गया। चैतन्य और अनामिका भी साथ हो लिए।

तलहटी पर पड़े पत्थरों को पार करते हुए वो तीनों थोड़ी ऊँचाई पर बनी एक गुफा तक पहुँच गए। अल्फ़ी बिना रूके उस गुफा के अंदर चला
गया। अंदर वो एक सामान्य सी गुफा थी, जिसमें थोड़ा अंदर जाने पर उन तीनों ने एक पत्थर पर ध्यान लगाए हुए तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ जी को देखा। उनके चेहरे में लाचारी और पीड़ा दिखाई दे रही थी। एक-दूसरे पर एक-एक नज़र डालकर वो तीनों उनके ऑखें खोलने का इंतजार करते हुए चुपचाप खड़े हो गए। कुछ ही देर में तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपनी ऑखें खोली... तो उन तीनों को अपने सामने पाया। उनकी कॉपती नज़रें चैतन्य के रंग उड़े चेहरे पर दो पल को रूकी और फिर खिसककर अनामिका तक पहुँची। उन्होंने उसे परखती नज़रों से देखा और फिर जब उनकी नज़रें अल्फ़ी की ओर घूमी... तो झटके से ही उन्होंने वो नज़रें चैतन्य की ओर घुमा ली। वो अपने अंदर इतनी हिम्मत नहीं जोड़ पा रहे थे कि अल्फ़ी को वो दिल दहलाने वाली खबर दे सकें।

अल्फ़ी ने तांत्रिक श्रेष्ठ और चैतन्य पर अपनी सवालिया नज़रें डाली... मगर जवाब उससे कोसों दूर था। अनामिका भी उसी की तरह सवालों के घेरे में बेचैन खड़ी थी।

"चैतन्य! माया से बात हुई। आखिर चाहती क्या है वो?" असहजता को परे हटाते हुए तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य से पूछा।

"उसे मुझसे एक संतान चाहिए।" चैतन्य ने बहुत ही चिढ़ के साथ कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका ने भी गुस्से से अपने होंठ भींचे थे।

"संतान! अब कौन सा खेल शुरू किया है उस डायन ने? तुमने क्या कहा?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य से पूछा।

"पता नहीं! पर... मैंने सोचकर बताने की बात कही है।" चैतन्य ने कहा।

"उसे शक नहीं हुआ।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पूछा।
"नहीं! वो मुझे हमेशा से ही इस बात के लिए उकसाया करती थी... कि अनामिका और अल्फ़ी मुझे धोखा दे रहे हैं। मैंने उसी की कही बातें उसे ही लौटा दी। मुझे पता था कि उसका प्रस्ताव तुरंत मानने से वो शक कर सकती थी... इसलिए मैंने सोचने का वक्त मांगा।" चैतन्य ने कहा।

"और फिर?" तांत्रिक श्रेष्ठ के सवाल जारी थे।

"उसकी दोस्त आ गईं। कुछ परेशान लग रही थीं वो दोनों। माया ने मुझे अपने जवाब के साथ रात के पहले पहर में वहीं... झील के किनारे मिलने के लिए कहा है।" चैतन्य ने पूरी बात बताई।

"अब ये क्या चल रहा है? हमें पता है कि वो नर्क का द्वार खोलना चाहती है। उसके बीच में ये सब क्या है? क्या-क्या सोच रखा है आखिर इन दोनों ने?" अनामिका भड़कते हुए बोली।

"पता नहीं! पर जो मेरी समझ में आ रहा है.... शायद वो पिशाचिनी की शक्तियॉं हासिल करने के बाद.... बलि देने की इच्छुक हो।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपनी ऑंखें फैलाते हुए एक हृदयविदारक बात कही।

"आपका मतलब है कि वो अपनी ही संतान की बलि..." अल्फ़ी ने सिहरते हुए बात अधूरी छोड़ी।

"तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपना सिर हिलाते हुए उन सभी की ओर देखा और बोले, "ये पिशाच साधना इसीलिए तो इतनी कष्टकर है। कोई कितना भी बुरा हो... या फिर क्रूर ही क्यों ना हो... दो चीजों से जरूर प्यार करता है। एक खुद से और एक अपनी संतान से और पिशाच साधना पूर्ण होने के लिए इन्हीं में से एक या फिर ऐसी ही करीबी रक्तसंबंधी बलि चाहती है। माया के लिए वो खुद या फिर अपनी संतान ही हो सकती है। वो उस काली शक्ति को बाहर निकालना नहीं चाहती... वो खुद पिशाचिनी बनना चाहती है, इसलिए उसने तुमसे ये बेतुकी मांग रखी होगी।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य पर नज़र डालते हुए कहा।

और ये सुनते ही चैतन्य का पारा गर्म होकर सातवें आसमान पर पहुँच गया। गुस्से में उसके नथुने फड़कने लगे। वो मुट्ठियॉं भींचकर एक-एक शब्द को चबाते हुए बोला, " उस माया की इतनी हिम्मत! उसने मेरे बच्चे के बारे में ऐसी घिनौनी सोच अपने दिल और दिमाग में रखी। उसे क्या लगता है कि वो मेरे बच्चे के साथ ऐसा कुछ करना चाहेगी और मैं करने दूंगा... कभी नहीं! कभी भी नहीं। ऑंखें ना नोंच लूं मैं उसकी!"

और..... गुस्से की पूरी रवानगी में अपने होंठों से ये सारे शब्द अदा करने के तुरंत बाद ही उसे अहसास

हुआ कि रौ ही रौ में वो क्या बोल बैठा था। उसने खाली हो चुकी ज़बान और खुले हुए मुँह के साथ पहले तांत्रिक श्रेष्ठ और फिर अल्फ़ी की ओर देखा। अनामिका की ओर देखने की उसकी हिम्मत नहीं थी। वो जानता था कि वो अपने चेहरे की हर नस को तानकर उसे घूर रही होगी। अल्फ़ी ने उस पर एक अफसोस भरी नज़र डाली और फिर चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया।

"अ... मेरा मतलब... उस माया की सोच के बारे में था.... और कुछ नहीं।" चैतन्य ने बात संभालने की कोशिश करते हुए कहा और फिर अनामिका की ओर अपनी कातर नज़रें घुमाई। उसके अंदाजे के अनुसार ही वो उसे दाँत पीसते हुए घूर रही थी। चैतन्य ने एक झेंपी हुई फौरी मुस्कान अनामिका की तरफ भेजी, जिसे उसने अपना सिर झटककर पूरी बेदर्दी से नामंजूर किया था। अपनी इस बेहूदा गलती पर चैतन्य ने मन ही मन खुद को लताड़ा था।

"वो छाया है छाया... ! अपना मकसद पूरा करने के लिए वो कुछ भी कर सकती है। वो जरूर आज उस काली शक्ति को आजाद करेगी। सैकड़ों साल से कैद उस शक्ति की तीव्रता का तुम अनुमान भी नहीं लगा सकते।
उसे बाहर निकालने के बाद माया को पहले उसे नियंत्रित करने की जरूरत पड़ेगी और अंत में एक बलि के साथ वो शक्ति सिद्ध हो जाएगी। उसने बहुत सोच-समझकर ये सब योजना बनाई है।" चैतन्य की हालत से बेखबर तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"तो फिर उसे आज ही रोकना होगा।" अल्फ़ी ने कहा।

"सिर्फ उसे ही नहीं... एडवर्ड को भी। उन दोनों में से कोई भी कामयाब नही होना चाहिए। पर समस्या ये है कि माया के बारे में हमें बहुत कुछ पता चल चुका है। मगर... एडवर्ड की तरफ से अभी भी हमारे हाथ खाली ही हैं। वो सिद्धि के लिए बलि किसकी देने वाला है? उसके परिवार में तो बस वो और विलियम ही थे। जिसकी बलि वो देने वाला है... अगर ये हमें पता चल जाए... तो हम एडवर्ड को रोक सकते हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक और समस्या सामने रखते हुए कहा।

"शायद... वो... अल्फ़ी है।" अनामिका ने अल्फ़ी की ओर नज़र डालते हुए कहा।

और ये सुनकर अल्फ़ी और तांत्रिक श्रेष्ठ दोनों ही चौंके थे क्योंकि ना तो तांत्रिक श्रेष्ठ को अल्फ़ी की पूरी असलियत पता थी और ना ही अल्फी के वहमोगुमान में ये था कि उसकी पहचान उसके अलावा कोई और भी जानता था।

"अल्फ़ी.... सर विलियम का बेटा है और एडवर्ड ये जानता है।" चैतन्य ने दोनों के मन में उठे सवालों का जवाब देते हुए कहा।

"क्या सच में?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अल्फ़ी की ओर देखते हुए बेयकीनी से कहा।
"जी! सर विलियम और मेरी बात हुई थी इस बारे में। शायद एडवर्ड की नज़र बहुत पहले से थी अल्फ़ी पर। अल्फ़ी और हेममाया की सारी तकलीफों की वजह एक ही है और वो है नफ़रत! जो एडवर्ड और माया इन दोनों से करते हैं... वो भी इनके पिताओं की वजह से। और इसीलिए उन दोनों ने तमाम मतभेदों के बाद भी हाथ मिला लिए हैं। ऐसा मेरा मानना है। माया कभी भी सर्वशक्तिमंडल की सदस्य नहीं चुनी गई थी। वो तो हेममाया थी। जरूर अपनी मदद के बदले में एडवर्ड ने माया को सर्वशक्तिमंडल का पद ऑफर किया होगा। एक ही रास्ते पर चलकर उन दोनों के ही मतलब पूरे हो रहे थे, चाहे वो दोनों एक-दूसरे से कितना भी क्यों ना चिढ़ें।" चैतन्य ने बात स्पष्ट करते हुए कहा।

"ओह! और क्या... तुम ये बात जानते थे अल्फ़ी कि विलियम तुम्हारे पिता हैं?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अल्फ़ी को सवालों भरी नज़र से देखते हुए पूछा।

"जी! एक साल पहले ही सब पता चला था मुझे... जब हेममाया और मेरी शादी में इस वजह से अड़चनें आ रही थीं, तब मॉ ने बताया था।" अल्फ़ी ने हामी भरते हुए कहा।

"और विलियम को कब पता चला?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य और अल्फ़ी दोनों की ओर देखते हुए पूछा।

"कल सुबह! मैंने उन्हें बताया था क्योंकि मुझे एडवर्ड की नीयत पर शक हो गया था। जब उन्होंने मुझे पिशाच-साधना और पिशाच के खंजर के बारे में सब बताया। तब मुझे लगा कि अल्फ़ी की जान को ख़तरा है, इसलिए मैंने उन्हें सब बता दिया(भाग- 78)।" चैतन्य ने एक आह भरकर कहा।

"इसलिए उसने ये सब किया! आश्चर्य की बात है कि वो हम सबकी नाक के नीचे ये सब करता रहा और हमें खबर ही नहीं हुई। वो शुरू से ही
बद्दिमाग था.... उस पर उसके मामा पीटर की संगति ने उसे और बिगाड़ दिया। मुझे पूरा यकीन है कि उस पीटर ने ही उसे इस में ढकेला है। समझ नहीं आता कि कहॉ से ढूंढे वो ठिकाना, जहॉ एडवर्ड ये सब करता है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने थोड़ी झल्लाहट के साथ कहा।

उनकी बात सुनकर अल्फ़ी और अनामिका ने एक-दूसरे की ओर देखा और फिर अनामिका के इशारे पर अल्फ़ी उस किताब के साथ तांत्रिक श्रेष्ठ के पास बढ़ गया।

"मुझे लग रहा है कि हमारी किस्मत हमारा साथ देने लगी है।" ये कहकर अल्फ़ी ने वो किताब तांत्रिक श्रेष्ठ की ओर बढ़ाई और फिर उसके मिलने की पूरी कहानी सुना दी। तांत्रिक श्रेष्ठ ने उस किताब को हैरानी से उलट-पुलट कर देखा और फिर दिमाग पर जोर डालकर कुछ याद करने लगे। कुछ देर की कोशिश के बाद उन्हें जो भी याद आया, उसने उन्हें उस किताब को कौतूहल से देखने पर मजबूर कर दिया था।

"ये तो भविष्य कथन है। ये वहॉ क्या कर रहा था? आज से करीब 15 साल पहले ये खो गया था। खोने से पहले ही इसने धीरे-धीरे बदलने वाले हालातों और फिर वायु रक्षक के आने की भविष्यवाणी की थी। आगे हम कुछ और पता कर पाते... उससे पहले ही ये खो गया और अब तुम कह रहे हो कि ये तुम्हें एडवर्ड की खुफिया जगह में मिला। इसका मतलब है कि... एडवर्ड इस किताब की मदद ले रहा था। इसलिए उसे सब पहले से पता होता था।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उस किताब को हैरानी से देखते हुए कहा।

"तो फिर अब ये गड़बड़ कैसे हो गई? मतलब कि उसे मेरे और अनामिका के बारे में पता क्यों नहीं चला? मुझे पूरा यकीन है कि वो हमारे बारे में सही तरीके से नहीं जानता था, इसलिए तो हम इतना सबकुछ जान सके... खोज सके।" चैतन्य ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।
"पर ये किताब तो मैंने चार दिन पहले सर विलियम को दी थी। ये मुझे एक गलियारे में मिली थी। उनसे पूछा तो उन्होंने इसे बिना देखे ही अपने स्टडी में रखने के लिए कहा था।" अल्फ़ी ने एक और खुलासा करते हुए कहा।

"हॉ! मैंने कहा था ना कि ये किताब मैंने मेंशन की पार्टी वाली रात स्टडी में देखी थी। पर आज सुबह

वहॉ नहीं मिली। शायद मेरे देखने के बाद ही एडवर्ड ने वहॉ से उठाई होगी और शायद इसीलिए वो सुबह रिसती गुफा तक पहुँचा होगा, जब मैं वहॉ खंज़र लेने गई थी। उसी समय ये किताब उस खुफिया जगह में छूट गई होगी और अब हमारे पास है।" अनामिका ने कहा।

"इसका तो ये भी मतलब हो सकता है कि उसे कई चीजें पता नहीं होंगी और हम उसका फायदा उठा सकते हैं। ये किताब हमारे बहुत काम आ सकती है। वैसे वो खंज़र अभी है कहॉ?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक राह खोलते हुए अनामिका से पूछा।।

"वो स्टडी में है। मैंने उस पर वो काला धागा बांध दिया है, जिसे आपने उस चाबी में बांधा था। अब वो किसी को दिखाई नहीं दे रहा है।" अनामिका ने कहा।

"ठीक है! उसे तो मैं ले आऊंगा। अच्छी बात है कि वो एडवर्ड की पहुँच से दूर है। अब बस हमें माया और एडवर्ड को मिलने या फिर किसी भी तरीके से संपर्क करने नहीं देना है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने राहत महसूस करते हुए कहा।

"फिक्र ना करें! उस माया को उलझाने के लिए चैतन्य है ना! आखिर उसे अपने बच्चों की इतनी फिक्र जो है। वो उन्हें कुछ थोड़ी ना होने देगा।" अनामिका ने तंज़ का पैना तीर चैतन्य की ओर छोड़ते हुए कहा, जो
जाकर सीधा उसके दिल में घुसा था और शर्मिंदगी के एक अहसास ने उसे अपना चेहरा हथेली में छिपाने पर मजबूर कर दिया। एक मजाकिया मुस्कान ने अल्फ़ी के चेहरे पर अपनी जगह बनाई थी।

"सच तो ये है कि एडवर्ड और माया सहयोगी होकर भी नहीं हैं। वो दोनों ही एक-दूसरे से चिढ़ते हैं और इसका फायदा हमें उठाना होगा। वो भी जल्द से जल्द! हमें टीम बनानी होगी। ताकि दोनों तरफ से हम उन्हें रोक सकें।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बहुत ही गंभीरता से कहा।

"मैं और अल्फ़ी साथ जाएँगे।" अनामिका ने तपाक से कहा। चैतन्य ने एक आह के साथ उसकी ओर देखा। यकीनन वो बहुत नाराज़ थी।

"अनु!" चैतन्य ने कहना चाहा, मगर तांत्रिक श्रेष्ठ की आवाज उसे टोक गई।

"ठीक है! तुम दोनों एडवर्ड की तरफ जाओ। मैं और चैतन्य उस माया के पीछे जाते हैं। तुम लोग जरा रूको। मैं अभी आता हूँ।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अनामिका की बात पर सहमति जताते हुए कहा और अंदर की ओर जाते रास्ते में बढ़ गए।

चैतन्य ने बड़ी ही बेबसी भरी नज़रें अनामिका पर डाली थी। मगर उसने चैतन्य की ओर देखने से परहेज़ ही किया। बेज़ारी उसके चेहरे पर साफ-साफ दिख रही थी। चैतन्य ने एक उम्मीद से अल्फ़ी की ओर देखा.. तो उसने भी कंधे उचकाते हुए सिर अफसोस में हिला दिया। आखिर में बहुत हिम्मत जोड़कर वो अनामिका के पास गया।

"अनु!" चैतन्य ने उसे पुकारते हुए उसके कंधे पर हाथ रखा, जिसे अनामिका ने बेदर्दी से झटक दिया। "क्या यार! अभी कुछ देर पहले जंगल में तुम कह रही थी कि तुम्हें मुझ पर खुद से ज्यादा भरोसा है और अब ये। अरे गुस्से में गलती से ज़बान फिसल गई। हवा करो बात को!" चैतन्य ने भी उसकी नाराज़गी पर ऐतराज उठाते हुए कहा।

चैतन्य की बात सुनकर अनामिका ने तेज धार निगाहों से उसे घूरा और फिर उसकी ओर ऊंगली उठाकर बोली, "तुम जरा वापस चलो घर... फिर मैं तुम्हें बताती हूँ। कुछ ज्यादा ही फिसल रही है तुम्हारी ज़बान। मुझसे तो दूर ही रहो तुम... वरना अगली बार ज़बान फिसलने से पहले तुम इस दुनिया से फिसल जाओगे। अगर अभी हालात इतने बिगड़े नहीं होते... तो तुम्हें जरूर सुधार देती मैं। समझे! मेरे बच्चे! हुंह!"

"अरे यार! तुम समझाओ ना इसे।" चैतन्य ने अल्फ़ी से मदद मांगते हुए कहा, जिस पर अल्फ़ी ने अपने हाथ जोड़ दिए।

"क्या तुम्हें भी इतना ही परेशान करती थी हेममाया?" चैतन्य ने मुँह बनाते हुए अल्फ़ी से बहुत ही धीमी आवाज में पूछा। अल्फ़ी ने उसके सवाल को टालना चाहा... पर तभी उसे कुछ याद आया।

"चैतन्य! एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। हेममाया तो सर्वशक्तिमंडल का पद चाहती ही नहीं थी, तो माया को एडवर्ड से समझौता करने की जरूरत ही क्या थी? और.... उन्होंने हेममाया को सात महीनों तक क़ैद में क्यों रखा? सात महीने बाद उसे...." कहते हुए अल्फ़ी का गला भर आया, जिससे उसके शब्द हलक में अटक गए।

"बस... यही एक चीज तो समझ में नहीं आ रही है कि उन्होंने ऐसा क्यों किया? कुछ तो है जो हमारी पकड़ से बाहर है और अब ऊपर से ये सुरमी कबीले का नया लोचा।" चैतन्य ने चिढ़ से कहा।
"वैसे ये सुरमी कबीले वाले यहाँ क्यों आए हैं? कुछ पता चला क्या?"अल्फ़ी ने अचानक ही सवाल किया।

उसका सवाल सुनकर चैतन्य एक पल के लिए सकते में आया था। मगर उसे लगा कि अल्फ़ी से बात छिपाना सही नहीं होगा। इसलिए अपने दिल को कड़ा करके उसने अल्फ़ी को वो सारी बातें बतानी शुरू की, जो तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे बताई थी। अल्फ़ी ये सुनकर बहुत ही हैरान हुआ था।

"पर ये सारी चीजें इतनी दूर सुरमी कबीले से कैसे जुड़ गई और ये करके माया को क्या मिलेगा?" अल्फ़ी ने नई घटनाओं में उलझते हुए कहा।

"क्या पता यार... कि उस घटना से माया को क्या फायदा होना है, पर इस बात का फायदा एडवर्ड उठाने की कोशिश जरूर कर रहा है।" चैतन्य ने थोड़ा हिचकते हुए कहा।

"कैसा फायदा?" अल्फ़ी ने सवाल के साथ अपनी एक भौंह चढ़ाई।

चैतन्य एक बार फिर से हिम्मत इकट्ठी कर उससे हेममाया से जुड़ी बात बताने को ही था कि बाहर से आई एक तेज आवाज ने उन सभी के कान खड़े कर दिए।

"ये तो एडवर्ड है। ये यहाँ क्या कर रहा है?" चैतन्य ने घबराते हुए कहा।

"मैं देखता हूँ!" अल्फ़ी खड़ा होते हुए बोला।

"पागल हो गए हो क्या? तुम उस धूर्त के पास ऐसे ही नहीं जा सकते। ये ख़तरनाक हो सकता है।"

अनामिका उसके पास जाकर उसे रोकते हुए बोली।
"अब जान से ज्यादा और क्या छीन लेगा वो मेरा? मुझे इसका डर नहीं। पर ये जरूर जानना है कि कितनी नफ़रत भरी है उसके दिल में! अभी आता हूँ मैं। तुम दोनों बाहर नहीं निकलना।" अल्फ़ी उनकी बातों को नज़रअंदाज़ कर उन्हें समझाईश देता हुआ बोला और तेजी से बाहर निकल गया।

"सियापा!" चैतन्य बड़बड़ाया।

"अब कौन सी आग लगाने आया है ये एडवर्ड?" अनामिका भी फिक्रमंदी से बोली।

"कहीं हेममाया का जिक्र ना छेड़ दे। पता चला कि बाहर दोनों की लाशें पड़ी हुई हैं।" चैतन्य गहरी साँस छोड़ते हुए बोला।

चैतन्य की ज़बान से एक चोट अल्फ़ी तक आते-आते रूक गई थी, मगर बाहर जो खड़ा था... उसने पास अल्फ़ी के लिए ना जाने कितनी चोटों का भंडार रखा हुआ था। वो दोनों बस दुआ कर रहे थे कि.... अल्फ़ी का दिल एक बार फिर से चोटों के दर्द से बेहाल ना हो जाए।

अल्फ़ी हर डर को ताला लगाकर गुफा से बाहर निकला तो तलहटी पर एडवर्ड को अपने कई अंगरक्षकों के साथ मौजूद पाया। हमेशा की तरह सुरक्षा के घेरे में महफूज़। एक बार के लिए अल्फ़ी का मन उसे देखकर ठहाके लगाने का किया, जिसे उसने बड़ी मुश्किल से रोका। अल्फ़ी हमेशा से जानता था कि वो एक कायर इंसान हैं, जो अपनी चालाकियों की वजह से सबके गले पर आफत की तरह लटक गया था। उसकी ताकत थी वो कमीनापन, जिसके हथौड़े से वो हमेशा सही समय और सही जगह पर वार करता था और अभी भी वो उसी वार की नीयत से ही आया था। अल्फ़ी सावधानी से नीचे उतरकर उसके सामने तनकर खड़ा हो गया।

"उफ्फ! ये अदा! जानते हो कि.... तांत्रिक श्रेष्ठ के इलाके में हो, इसलिए इस तरह तन रहे हो। मेरी क़ैद में तो भीगी बिल्ली की तरह दुबके हुए थे।" एडवर्ड ने मजाक उड़ाते हुए अंदाज में कहा।

"वो तो तुम्हें भी पता है कि मैं वहाँ खामोश क्यों बैठा था? तुम हमेशा से ही कायर रहे हो। मर्द हो तो सामने से आकर लड़ो। एक लड़की को ढाल बनाने की क्या जरूरत थी? क्यों लेकर आए अनामिका को बीच में?" अल्फ़ी ने भी उसी के अंदाज में जवाब देते हुए कहा।

"मैं नहीं... वो खुद आई बीच में। किसने कहा था उस खंज़र को छेड़ने के लिए? अब सजा तो मिलेगी ना!" एडवर्ड ने मक्कारी से दाँत दिखाते हुए
कहा।

"उसकी तरफ ऑख उठाकर भी नहीं देखना।" अल्फ़ी ने एडवर्ड को धमकाने वाले अंदाज में कहा।

"अरे! तुम तो बेवजह भड़क रहे हो! मैं तो तुम्हारी हेममाया के बारे में बात करने आया था।" एडवर्ड ने बखूबी लफ़्ज़ों में चाशनी का इस्तेमाल करते हुए कहा।

"क्या चाहते हो तुम?" अल्फ़ी ने बहुत ही कड़वाहट के साथ कहा।

"बस अनामिका!" एडवर्ड ने भद्दे तरीके से मुस्कुराते हुए कहा।

"क्या मतलब?" अल्फ़ी उसकी मांग पर चौंकते हुए बोला।

"मुझे अनामिका दो और ले जाओ अपनी हेममाया का शरीर। चाहो तो कोई जुगत लड़ाकर वो जीवपात्र भी दिलवा सकता हूँ, जिसमें तुम्हारी हेममाया की आत्मा कैद है। सोच लो... फिर से मिल जाएगी... तुम्हें तुम्हारी मोहब्बत और मुझे वो... जो मुझे चाहिए। अनामिका!" एडवर्ड उलझे खड़े अल्फ़ी के चारों ओर चक्कर लगाते हुए मक्कारी भरी आवाज में बोला।

"तुमसे कहा ना! अनामिका की ओर ऑख उठाकर भी नहीं देखना।" अल्फ़ी तमतमाकर तेज आवाज में बोला।

"क्यों? उस लड़की के लिए इतना क्यों तड़क रहे हो? ऐसा भी क्या है उसमें कि तुम बेईमानी पर उतर आए? वैसे सच कहूं तो गलती तुम्हारी भी नहीं है। उसकी खूश्बू बिल्कुल हेममाया के जैसी है ना!"
सवालों से शुरू हुई एडवर्ड की बातें खत्म होते-होते तंजीली फुसफुसाहट में बदल गई।
उसकी बात सुनकर अल्फ़ी के माथे पर सिलवटें पड़ीं और उसने एडवर्ड की ओर पैनी नज़रों से घूरकर देखा।

"ऐसे क्या देख रहे हो? पिशाच हो ना! खूश्बू नहीं पहचानते। ऑफकोर्स पहचानते हो... तभी तो उस अनामिका के लिए इतना तड़प रहे हो। सही कहा ना?" एडवर्ड ने वार करना जारी रखा।

"तुम्हारी बकवास खत्म हो गई हो... तो यहॉ से जा सकते हो। अब मैं तुम्हारा कैदी नहीं हूँ कि कुछ भी सुनता रहूं।" अल्फ़ी ने भी उसे चिढ़ाने वाले लहजे में कहा।

उसकी बात सुनकर एडवर्ड बुरी तरह से फड़फड़ाया था। अल्फ़ी किसी भी तरह से उसके काबू में नहीं आ रहा था। आखिरकार उसने अपना आखिरी वार करने का फैसला किया। एडवर्ड जानता था कि ये वार खाली नहीं जाएगा।

"जाता हूँ! वैसे एक और बात बतानी रह गई। वो क्या है ना! सुरमी कबीले में एक हादसा हो गया है। उनका कहना है कि वो सब किसी डायन ने किया है। तो एक जागरूक नागरिक होने के कारण मैंने उनके मुजरिम का नाम उन्हें बता दिया और आज रात के पहले पहर में उस डायन को जला दिया जाएगा।" अल्फ़ी ने बड़े ही अफसोस भरे शब्दों में कहा।

अल्फ़ी ने पहले तो उसकी बातों का मतलब समझने की कोशिश की और फिर इस कोशिश में वो एडवर्ड की ओर ताकता रह गया।

"हेममाया!" एडवर्ड फुसफुसाते हुए बोला।

और ये सुनते ही अल्फ़ी ने टुकुर-टुकुर उसकी ओर फटी हुई ऑखों से
देखा। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि एडवर्ड इतनी नीचता पर उतर आया था कि अब वो किसी के मुर्दा शरीर का इस्तेमाल करने से भी परहेज़ नहीं कर रहा था। उधर एडवर्ड ने अल्फ़ी के चेहरे के बदलते निशानों को बड़ी ही दिलचस्पी से देखा।

"अरे मैं तो भूल ही गया। अब तुम्हें उस शरीर से भी कोई मतलब नहीं रह गया। बेचारी हेममाया।" एडवर्ड ने आखिरी चोट के लिए हथौड़ा उठाते हुए कहा।

उसकी ये बात अल्फ़ी की ऑखें छोटी कर गईं।

"क्या कहते हो तुम सब अच्छे लोग? हॉ! प्यार जिस्म से नहीं... आत्मा से होता है। शायद इसीलिए तुमने उस अनामिका के लिए अपनी पत्नी के शरीर को हालातों के हवाले कर दिया। पर तुम तो उसकी आत्मा से भी प्यार नहीं करते। तुम्हारी हेममाया की आत्मा है ना उस अनामिका में। कैसे प्रेमी हो तुम? सब जानते हुए भी उस अनामिका को क्या नाम है उसका... हॉ चैतन्य... उसकी बाहों में डाल दिया। जब ऐसा ही है तो फिर.... मुझमें भी क्या बुराई है?" एडवर्ड ने अपनी ऑखों और बातों में कमीनगी उतारते हुए कहा।

और ये सुनते ही अल्फ़ी का खून लावे की तरह उबला था। एक तेज गुर्राहट के साथ वो उसकी गर्दन दबोचने के लिए बढ़ा ही था कि पीछे से आई आवाज ने उसे रोक दिया।

"अल्फ़ी!"

अल्फ़ी ने अपने गुस्से में कॉपते हुए शरीर को बहुत ही मुश्किल से रोका। उसका तो बस ये ही मन था कि वो उस नीच एडवर्ड को... यहीं खड़े-खड़े मौत के हवाले कर दे। पर वो अपने पीछे खड़े तांत्रिक श्रेष्ठ की बात नहीं
काट सकता था। अपने गुस्से को काबू में करते हुए वो उनकी ओर मुड़ा।

"अंदर जाओ अल्फ़ी! अभी!" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कठोर स्वर में उसे आदेश दिया था।

अल्फ़ी की ऑखों का गुस्सा लाचारी और बेबसी के पानी में घुल गया और उसकी ऑखों के कोरों में चमकने लगा।उसने अपने सूखे होंठों पर ज़बान फेरी और फिर एडवर्ड पर एक ज़हर भरी नज़र डालकर उसी समय गुफा की ओर चल दिया। एडवर्ड के चेहरे पर भी झुंझलाहट दिखाई दे गई। उसका काम बस होते-होते जो रह गया था। उसने अल्फ़ी से हटाकर अपनी कुढ़न भरी नज़र तांत्रिक श्रेष्ठ पर डाली।

"तुम यहॉ क्या कर रहे हो?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने सख़्त आवाज में पूछा।

"और मेरा कैदी यहॉ क्या कर रहा है?" एडवर्ड ने भी निहायती बत्तमीजी से पूछा।

"क्योंकि वो मैं उसे मुजरिम नहीं मानता और ये तुम अच्छी तरह से जानते हो।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे जवाब देते हुए कहा।

"आप नहीं जानते कि आप क्या कर रहे हैं! इससे पिशाच और तांत्रिक समुदायों के बीच दूरियॉ भी बढ़ेगी और तनाव भी बढ़ेगा। आगे जो भी होगा... उसके जिम्मेदार बस आप और आप ही होंगे।" एडवर्ड धमकी देते हुए बोला और उसकी इस धमकी से तांत्रिक श्रेष्ठ का पारा गर्म हो गया।

"धमकाओ मत! जो कुछ भी हुआ है... या फिर हो रहा है... उसके जिम्मेदार सिर्फ और सिर्फ तुम हो। अब यहॉ से जाओ... वरना बिना इजाजत मेरी संपत्ति में घुसने के लिए तुम्हें मेरा कैदी बनने से कोई नहीं रोक पाएगा।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने भी धमकी भरे लहजे में हर शब्द
चबा-चबाकर अदा की।

उनकी धमकी सुनकर एडवर्ड के नथुने फड़कने लगे और वो उनके थोड़ा और सामने आकर उनकी ऑखों में झांकने लगा। अगले ही पल वो पीछे हुआ और दॉत पीसते हुए बोला, "बोल दीजिएगा अपने चहेते को। कसम खाई है मैंने कि उसकी जिंदगी में कभी कोई खुशी नहीं रहने दूंगा। हेममाया का मृत शरीर तक नसीब नहीं होगा उसे और ना ही... उसे अनामिका हासिल होने दूंगा। मैं वो हर वजह जलाकर राख कर दूंगा... जो उसकी खुशियों की वजह बनेगी। वो हमेशा मेरी नफ़रत की आग में झुलसेगा। ऐसे ही शापित रहेगा और इसके लिए मैं कुछ भी.... करूंगा।"

"तुम पागल हो गए हो एडवर्ड! उस मासूम ने आखिर क्या छीन लिया तुम्हारा, जो उसकी जिंदगी का श्राप बन बैठे तुम?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे सवालिया नजरों से देखते हुए पूछा।

"मेरा हक छीना है उसने! मेरी जगह छीनी है। मेरा चैन, सूकून... आराम सब! अब जब तक वो बरबाद ना हो जाए... मैं नहीं रूकूंगा और आप.... आप भी अभी जितना जी चाहे अपनी मर्जी चलाएँ। बस कुछ समय और... फिर सब मेरी मुट्ठी में होगा।" अपने सीधे हाथ की मुट्ठी को तांत्रिक श्रेष्ठ के सामने लहराते हुए एडवर्ड ने बहुत ही चिढ़ के साथ कहा और फिर वहॉ से अपने अंगरक्षकों की हिफाजत में निकल गया।

तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक गहरी साँस के साथ उसकी ओर देखा और फिर अफसोस में सिर हिलाते हुए गुफा के अंदर चले गए।

****

तांत्रिक श्रेष्ठ के कहने पर मन मारकर अल्फ़ी गुफा के अंदर आ गया। उसने एडवर्ड को अपना जवाब दे तो दिया था, मगर एडवर्ड के शब्द उसके दिल और दिमाग पर हथौड़े की तरह वार कर रहे थे। वो खुद को संभालता हुआ जब अंदर पहुँचा... तो चैतन्य और अनामिका को घबराई हुई हालत में उसका इंतजार करता पाया। दिल और दिमाग पर लगी चोट का ही असर था कि उसकी निगाह तुरंत ही फिसलकर चैतन्य और अनामिका के हाथों की ओर गई, जो उन दोनों ने थाम रखा था।

"पर तुम तो उसकी आत्मा से भी प्यार नहीं करते। तुम्हारी हेममाया की आत्मा है ना उस अनामिका में। कैसे प्रेमी हो तुम? सब जानते हुए भी उस अनामिका को क्या नाम है उसका... हॉ चैतन्य... उसकी बाहों में डाल दिया।"

एडवर्ड के शब्दों ने बिल्कुल सही जगह चोट कर दी थी और उस चोट का असर अल्फ़ी की ऑखों में नज़र आ रहा था। दूसरी ओर इन सबसे बेखबर चैतन्य तेजी से उसकी ओर बढ़ा।

"तुम ठीक हो?"

अल्फ़ी ने हाथ उठाकर उसे अपने करीब आने से रोका और फिर पास ही एक पत्थर पर हाथ टिकाकर खड़ा हो गया। सिर झुकाए खड़ा वो बहुत ही थका हुआ दिख रहा था। चैतन्य और अनामिका ने एक-दूसरे की ओर देखा। अनामिका ने इशारे से चैतन्य को शांत रहने के लिए कहा। वो सभी दुविधा के भँवर में फँसे हुए खड़े ही थे कि तभी तांत्रिक श्रेष्ठ अंदर आए और आते ही अल्फ़ी के पास गए।
"तुम क्या कर रहे थे अल्फ़ी? तुम्हें पता है कि तुम यहॉ सुरक्षित हो। वो तुम्हें उकसा रहा था। तुम उस पर हाथ डालते... और वो उसी समय तुम्हें खींचकर ले जाता। क्या हो गया है तुम्हें?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अल्फ़ी को डॉटते हुए कहा।

"उसकी हिम्मत कैसे हुई... अनामिका के बारे में ऐसी बेहूदा बात कहने की। कोई भी अनामिका की तरफ ऑख भी उठाएगा... तो मैं उसकी ऑख नहीं निकालूंगा... उसकी... जान ले लूंगा। कोई भी!" जूनूनी हालत में चिल्लाते हुए अल्फ़ी ने एक नज़र चैतन्य पर भी डाली।

उसकी वो नज़र तांत्रिक श्रेष्ठ के साथ चैतन्य और अनामिका को भी दहला गई। उसने अजीब सी जूनूनी हालत में चैतन्य पर अपनी सुर्ख़ नज़रें डाली थी। चैतन्य ने मुड़कर अनामिका की ओर देखा, जो सदमे की हालत में अल्फ़ी को ही देख रही थी।

"अल्फ़ी! होश में आओ! लग रहा है कि फिर से अपना तीर छोड़ गया वो एडवर्ड। जानते हो वो क्यों हमसे आगे है? क्यों हमेशा हमें मात दे देता है? क्योंकि उसे पता है कि उसे क्या चाहिए और फिर चाहे कुछ भी हो जाए... वो कभी भी अपने लक्ष्य से भटकता नहीं और हम.... हमेशा उस ओर देखते रहे... जिस ओर वो दिखाना चाहता है। हमारा कोई लक्ष्य ही नहीं और जो युद्ध लक्ष्य विहीन होते हैं.... वो कभी नहीं जीते जाते।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उन सभी को हालिया परिस्थितियों से अवगत कराते हुए कहा।

"मुझे... हेममाया का शरीर चाहिए.... चाहे कुछ भी करना पड़े।" अनामिका पर नज़र रखे हुए ही अल्फ़ी ने कठोर लहज़े में कहा।

"उसे एडवर्ड ने कहॉ रखा है कोई नहीं जानता।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।
"तो आप क्या चाहते हैं? मैं इसी तरह बैठा रहूं... जैसे आप सब बैठे हैं। इतनी बड़ी बात हो गई पर किसी ने मुझे बताना जरूरी नहीं समझा। तो ठीक है! मुझे जो चाहिए... वो मैं खुद जाकर लूंगा। मुझे किसी की मदद नहीं चाहिए।" अल्फ़ी तांत्रिक श्रेष्ठ पर चीखते हुए बोला।

"अल्फ़ी! क्या कर रहे हो?" चैतन्य ने उसके पीछे आकर उसके कंधे पकड़ते हुए अपनी ओर घुमाया और बस यहीं पर अल्फ़ी अपना धैर्य खो गया। उसकी ऑखें पल भर में सुलगी और उसने चैतन्य की गर्दन को दबोचकर हवा में उठा दिया। तांत्रिक श्रेष्ठ और अनामिका उसका ये रूप देखकर सदमे में आए थे। अल्फ़ी ने चैतन्य के छटपटाते हुए शरीर को कुछ देर उसी तरह हवा में रखा और फिर उसे एक ओर उछाल दिया। अनामिका के पैर चैतन्य की ओर बढ़े ही थे कि उसने तुरंत ही उन्हें रोका था। अल्फ़ी ने एक गुस्से भरी तिरछी नज़र उसी पर थी।

"अल्फ़ी!" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे डपटा।

"बस! बहुत हुआ! हेममाया चली गई और आज उसका अल्फ़ी भी गया। अब जब वो वापस आएगी... तभी उसका अल्फ़ी भी वापस आएगा और जो हमारे बीच आएगा... वो भुगतेगा।" गुस्से में भरे हुए अल्फ़ी ने आखिरी लाइन अपनी अंगारा ऑखें चैतन्य पर डालते हुए कही।

"ये सही नहीं है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"तो फिर क्या सही है? अब मुझे भी अपना हक चाहिए। एडवर्ड के रास्ते से मिले... तो वही सही।" अल्फ़ी अपनी मुट्ठियॉ भींचते हुए बोला।

"अल्फ़ी! अल्फ़ी! अल्फ़ी! एडवर्ड के रास्ते पर चलोगे तुम? उसका रास्ता नफ़रत का रास्ता है। नफ़रत उसकी ताकत है... पर तुम्हारी नहीं। वो अपनी घोर नफरत में भी अपने होश नहीं खोता और तुम नफ़रत के बारे
में सोचकर ही आपे से बाहर हो जा रहे हो। शांत रहो! हमें उन दोनों को रोकना भी है और चैतन्य-अनामिका को वापस भी भेजना है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अल्फ़ी को समझाते हुए कहा।

मगर ये सुनते ही अल्फ़ी की ऑखें हैरानी से फैल गईं। उसने चैतन्य और अनामिका की ओर देखा। अनामिका को देखकर उसके अंदर एक तूफान सा उठ रहा था।

"कहीं नहीं जाएगी अनामिका! वो यहीं रहेगी! मेरे साथ!" अल्फ़ी ने हाहाकार तरीके से जैसे ऐलान किया था।

उसकी बात सुनकर ख़ौफ से घिरी अनामिका दौड़कर चैतन्य के पास पहुँची और उसके पीछे छिप सी गई। चैतन्य अपने जबड़े भींचें अल्फ़ी को घूर रहा था। उसे पहले से पता था कि एक न एक दिन अल्फ़ी की ज़बान पर ये बात आएगी ही।

"ये कैसी बातें कर रहे हो? अनामिका यहॉ नहीं रह सकती। ये ना तो उसकी जगह है और ना ही उसका समय। उसे वापस जाना ही होगा और ये बात अच्छे से समझ लो तुम। तुम्हारी माया जा चुकी है और इसे जितना जल्दी स्वीकार कर लो... बेहतर है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने भी उसकी एक-एक बात को काटते हुए कहा।

"और मैं कह रहा हूँ... कि वो कहीं नहीं जाएगी। अगर किसी ने ऐसा करने की कोशिश की तो.... वो परिणाम भुगतने को लिए तैयार भी रहे। मैंने अपनी माया से वादा किया था कि हमें कभी कोई अलग नहीं कर सकता। अगर किसी ने किया... तो मैं हर समय के पार जाकर उसे वापस ले कर आऊंगा। अनामिका मेरी माया है... तो वो मेरी है और अब ये बात... सब कान खोलकर सुन लें और अपने दिमाग में बिठा लें। बाकी जिसको जहॉ जाना है... जा सकता है।" अल्फ़ी, चैतन्य को घूरकर देखते हुए बोला।
"बकवास मत करो।" चैतन्य भी तैश में आगे बढ़ते हुए बोला।

"तुम... मेरी बात सुनो! तुम्हें जहॉ जाना है... शौक से जाओ। अनामिका को यहॉ से वापस ले जाने का ख्याल छोड़ दो और ये ख्याल नहीं छोड़ा... तो जिंदगी छोड़ने के लिए तैयार रहो।" अल्फ़ी साफ-साफ धमकी देते हुए बोला।

चैतन्य ने कुछ बोलना चाहा तो अल्फ़ी ने अपने होंठों पर उंगली रख उसे चुप रहने का इशारा किया। उसे चुप कराने के बाद उसने अनामिका की ओर देखा... जो चैतन्य के पीछे ही थी।

"मैं जा रहा हूँ... हेममाया का शरीर लेने। जब वापस लौटूं... तो तुम मुझे यहीं मिलनी चाहिए। कहीं जाने की कोशिश भी मत करना... वरना इस कबूतर की गर्दन मरोड़ने में समय नहीं लगेगा मुझे।" अल्फ़ी ने सुलगी हुई आवाज में कहा और फिर किसी के जवाब का इंतजार किए बिना ही वो तेजी से बाहर निकल गया। उसके पीछे वो तीनों ही उसका वो रूप देखकर परेशान हो गए थे।

"ओह! वाव! बस इसी की कमी रह गई थी। अब!" चैतन्य ने बहुत ही कड़वाहट से कहा।

"उसकी सहनशक्ति खत्म हो गई है और मुझे नहीं लगता कि इसके लिए हम उस पर कोई इल्ज़ाम लगा सकते हैं। उसे कहीं ना कहीं तो टूटना ही था।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बारी-बारी से चैतन्य और अनामिका की ओर देखते हुए कहा।

"तो! तो फिर क्या करें? उसकी बात मान लें? उसके साथ जो हुआ... उसमें हमारी क्या ग़लती है? और... आपको क्या लगता है... उसके इस
तरह धमकाने पर मैं अनामिका को यहाँ छोड़कर चला जाऊंगा।" चैतन्य ने भी गर्म होते हुए कहा।

"चैतन्य! मेरी बात सुनो! अल्फ़ी, एडवर्ड के पास गया है... वो उसे रोक लेगा। हमें माया को रोकना है। हमें इस समय उस पर ध्यान देना होगा। एक बार तुम दोनों यहाँ से चले गए तो फिर वह क्या ही कर लेगा।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बहुत ही आराम से कहा।

उनकी बात सुनकर अनामिका और चैतन्य ने एक-दूसरे की ओर देखा। वो कैसे बताते कि अल्फ़ी का ये जूनून सदियों बाद भी उनका पीछा नहीं छोड़ने वाला था।

"एक बार तुम दोनों यहाँ से चले गए तो फिर वो क्या ही कर लेगा।"

तांत्रिक श्रेष्ठ की बात सुनकर अनामिका और चैतन्य ने एक-दूसरे की ओर देखा। दोनों की आँखें भविष्य की तस्वीर में जाकर अटक गईं। अल्फ़ी सिर्फ धमका कर नहीं गया था... वो ऐसा ही करने वाला भी था। दोनों ही एक ऐसे सवाल पर जाकर रूक गए, जिसके आगे सारे सवालों का रूख ही बदल जाता। तो क्या अल्फ़ी.... अनामिका के लिए 200 सालों का सफ़र तय करने वाला था? यहाँ अब दोनों ही बहुत बड़ी दुविधा में फँस चुके थे, जो उनके चेहरे पर दिखाई देने लगा था।

"तुम दोनों के चेहरे पर क्यों हवाईयाँ उड़ रही हैं?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उन दोनों के चेहरों को देखते हुए पूछा। चैतन्य और अनामिका दोनों ने ही उनकी ओर देखा, जो आँखों में सवाल लिए उन दोनों को ही देख रहे थे।

"एक सवाल का जवाब देंगे आप? क्या सभी पिशाच लंबा जीवन... मतलब कि 200 साल लंबा जीवन जी सकते हैं?" चैतन्य ने तांत्रिक श्रेष्ठ से पूछा।

"नहीं! बस पिशाच परिवार या समुदाय का होने से कोई ऐसा नहीं कर सकता। पिशाच देव का अभीष्ट

आराधक ही ऐसी योग्यता प्राप्त कर सकता है और ऐसा आज तक नहीं हुआ है क्योंकि पिशाच देव की ये साधना बहुत ही कठिन है। कई लोग कोशिश तो करते हैं, पर सफल नहीं हो पाते... फिर उन्हें एक शापित जीवन जीना पड़ता है। अपने पैशाचिक अस्तित्व को बचाए रखने के लिए वो पूरी तरह से रक्तपान के अधीन हो जाते हैं... और उन्हें कई कठोर नियमों का पालन करना पड़ता हैं, जबकि इस साधना को सचमुच सिद्ध करने वाला पिशाच जरूर बनता है, पर वो अपनी हर इच्छा को काबू में कर सकता है। हॉ... रक्तपान उसकी भी जरूरत होती है.. पर ये वो तय कर सकता है कि उसकी भूख कितनी होनी चाहिए।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने तफ्सील से जवाब देते हुए कहा।

"और जिनकी साधना सफल ना हो... वो?" चैतन्य ने पूछा।

"कहा ना... अभिशप्त होते हैं वो... जिनकी साधना सफल ना हो या फिर खंडित हो जाए। जब तक वो अपनी साधना सही तरीके से पूरी ना कर लें... उन्हें ऐसा ही जीवन बिताना पड़ता है। उन्हें वो वजह पूरी करनी होती है, जिस वजह से उनकी साधना अधूरी रह गई हो और इसके लिए उन्हें ज्यादा समय भी नहीं मिलता। वो हमेशा एक दीर्घकालिक निद्रा में रहते हैं और एक निश्चित समय में ही जागते हैं और वो निश्चित समय पूरा होते ही फिर से निद्रावस्था में चले जाते हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बात स्पष्ट करते हुए कहा।
और ये सुनते ही अनामिका और चैतन्य को वो दस सालों का खूनी अंतराल याद आया, जो आगे वो पिशाच अपने साथ लाने वाला था।

"और.... इन्हें खत्म कैसे किया जा सकता है?" एक बहुप्रतीक्षित और महत्वपूर्ण सवाल चैतन्य के होठों से निकला।

"देखो! तुम्हें किसी ऐसे पिशाच को मारना है तो उस पर उसकी ताकत के चरम स्थिति पर प्रहार करना होगा। तभी तुम उसे पूरी तरह से नष्ट कर सकते हो। उस समय एक शक्तिचूसक उसके दिल में उतारना पड़ता है, जो उसकी सारी शक्ति को खींचकर निकाल लेता है। उसके बाद उसे उसकी विपरीत शक्तियों की मदद से खत्म किया जा सकता है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"विपरीत शक्तियों मतलब?" अनामिका ने पूछा।

"देखो अगर पिशाच अग्नि तत्व वाला है तो इस मामले में ये विपरीत शक्तियॉ जल और वायु हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"इसका मतलब है कि जल और वायु वाले पिशाच की विपरीत शक्ति अग्नि है।" अनामिका ने बात को और अच्छी तरह समझने की गरज से पूछा।

"नहीं! पिशाच जल और वायु तत्व वाले कभी नहीं होते। इन राशियों में पैदा होने वाले शक्ति हीन होते हैं। इसलिए तो पिशाच संतान पैदा करने के लिए दवा का सेवन इस तरह करते हैं कि संतान कम से कम जल राशि में तो ना ही हो।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अनामिका की दुविधा दूर करते हुए कहा।

"इसका मतलब तो यही हुआ कि हम उसे भविष्य में भी रोक सकते हैं।"
चैतन्य ने अनामिका से कहा।

"पर चैतन्य.... उसे अभी नहीं रोका तो उस भविष्य के आने तक ना जाने कितने मासूमों का खून बह

जाएगा।" अनामिका ने आपत्ति जताते हुए कहा।

"तुम लोग किस बारे में बातें कर रहे हो?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने भी एक सवाल किया।

और तांत्रिक श्रेष्ठ के इस सवाल के बाद अनामिका और चैतन्य ने भविष्य में अल्फ़ी के पैशाचिक अस्तित्व और दखल के बारे में बता दिया। सब सुनकर तांत्रिक श्रेष्ठ के माथे पर बल पड़े थे और वो बहुत ही परेशान नज़र आने लगे।

"ये तो बहुत ही ग़लत होने वाला है।" वो परेशान सी हालत में बोले।

"और वो ना जाने कितनों के खून से अपनी प्यास बुझाने वाला है। आप नहीं जानते कि भविष्य में वो इतना ख़ौफनाक और निष्ठुर हो जाएगा कि मासूम बच्चों को भी नहीं छोड़ेगा।" चैतन्य ने पूरे दिल से उसकी शिकायत करते हुए कहा।

"अल्फ़ी ऐसा कर सकता है! यकीन नहीं हो रहा है। पिछले चार महीनों में मैंने उसे एक रहमदिल शख्सियत के रूप में ही जाना है। वो तो दूसरों के दर्द से खुद ही तड़प उठता है... वो कैसे दूसरों को तकलीफ़ पहुँचा सकता है?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बेयकीनी से कहा।

"पर ऐसा ही है। और तो और हमें ये भी पता है कि पिशाचों के बीच कोई बहुत बड़ा हत्याकांड होने वाला है और डायनों के बसेरे को भी पूरी तरह से तबाह कर दिया जाएगा। आपको क्या लगता है? क्या इन सबके पीछे
अल्फ़ी हो सकता है?" अनामिका ने आने वाली विपदाओं के बारे में बताते हुए पूछा।

"पता नहीं! वो फिलहाल तो इतना शक्तिशाली तो नहीं है कि ये सब कर सके। जो भी तुम लोगों ने बताया है अगर वो सही है तो जरूर वो पिशाच साधना करने वाला है, जो शायद सफल नहीं हो पाएगा। मगर अभी वो जिन तेवरों के साथ गया है... अब मैं कुछ नहीं कह सकता।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"तो क्या ऐसा कोई तरीका नहीं है कि उसे पिशाच बनने से रोका जा सके। आप नहीं जानते कि उसका ये कदम पूरी इंसानियत पर भारी पड़ जाएगा।" अनामिका ने कलपते हुए कहा।

"अगर वो भविष्य में उस रूप में है... तो वो बनेगा ही। कैसे बनेगा ये नहीं पता। पर... अगर वो उसकी नियति है...तो नियति बदली नहीं जा सकती क्योंकि उसे बदला... तो बहुत कुछ बदल जाएगा।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने सिर हिलाते हुए कहा।

"ऐसा मत कहिए। हम चाहें तो ये बदल सकते हैं। यदि हम हेममाया का शरीर प्राप्त कर लें और उस जीवपात्र को भी... तो शायद सब कुछ सही हो जाए।" अनामिका ने एक उम्मीद के साथ कहा।

"पर ये भी याद रखो कि ये सारी नियति तुमसे भी जुड़ी हुई है। तुम इसे खुद से अलग नहीं कर सकती। उसे अपना प्यार वापस चाहिए, जो बिना किसी गलती... उससे इस तरह छीन लिया गया। उससे कम वो कुछ भी मंजूर नहीं करेगा। साफ है कि अगर तुम उसे रोकना ही चाहती हो... तो तुम्हें यहाँ उसके पास रूकना होगा... उसके साथ रहना होगा क्योंकि सुरमई कबीले के पंजों से वो जीवपात्र निकालना नामुमकिन है। तुममें उसे

अपना प्यार मिल जाएगा तो वो... पिशाच ही क्यों बनेगा?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"व्हॉट रबिश! अनामिका के यहॉ रूकने की बात छोड़कर कुछ भी बात कीजिए। मैं... अनामिका को.... यहॉ... हर्गिज नहीं छोड़ूंगा।" तांत्रिक श्रेष्ठ की बात सुनकर चैतन्य ने तमकते हुए कहा।

"चैतन्य! अपने ये तेवर अल्फ़ी को दिखाना था ना! उस समय तो अपनी गर्दन सहलाते हुए चुपचाप पड़े रहे।" अनामिका ने शिकायत करते हुए कहा।

"क्योंकि मेरा दिमाग अभी भी सही सलामत है। दिन का आखिरी पहर खत्म होने वाला है और रात का पहला पहर कुछ समय में शुरू हो जाएगा। अगर मैं उस समय अल्फ़ी से उलझता तो उसी में पूरी रात गुजर जाती और आखिर में हम दोनों एक-दूसरे की हड्डियॉ तोड़े एक कोने में बैठे होते। कोई फायदा था क्या उसमें? अभी कम से कम वो एडवर्ड के पास तो गया है। वो उसे रोक लेगा मुझे पूरा यकीन है। अब हमें माया को रोकना है।" चैतन्य ने भुनभुनाते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका को अपनी गलती महसूस हुई। चैतन्य सही कह रहा था। अल्फ़ी के मौजूदा हालत उससे उलझने के बिल्कुल भी नहीं थी। उन्हें तो किसी तरह से सब संभालकर वापस जाना है। चैतन्य के टोकने पर अचानक ही अनामिका का दिमाग तेजी से काम करने लगा और उसे कुछ याद आया।

"चैतन्य! हमें माया को जलाए जाने की बात पता चली थी ना! हमने उसकी तस्वीर भी देखी थी। मतलब कि... जो हुआ था.. उसी के साथ हुआ था। कहीं उसका राज सबके सामने तो नहीं आ गया था? अगर ऐसा ही हुआ है तो हमें ही कुछ ऐसा करना चाहिए कि किसी तरह माया का राज सबके सामने आ जाए। सबसे अच्छा तो यही होगा कि वो खुद ही सब अपने मुँह से बोल दे।" अनामिका ने एक नई उम्मीद जगाते हुए कहा।

"और वो भला ऐसा क्यों करेगी?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पूछा।

"क्योंकि... चैतन्य उससे बुलवाएगा। है ना चैतन्य! वैसे भी तुम्हें उससे मिलना है। अगर किसी तरह वो अपने मुँह से सब सच कह दे और सुरमी कबीले के लोग ये बात सुन लें, तो ऐसा हो सकता है। इससे हेममाया का शरीर भी सुरक्षित हो जाएगा।" अनामिका ने चैतन्य को मुस्कुराकर देखते हुए कहा।

"ये तो सही है। अगर वो खुद ये बोल दे तो माया के तरफ से ये समस्या सुलझ सकती है। रही सुरमी कबीले की बात... तो उसके सरदार को वहॉ लाना मेरी जिम्मेदारी है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने भी उत्साहित होते हुए कहा।

एक ओर जहॉ इस योजना से अनामिका और तांत्रिक श्रेष्ठ के अंदर एक नई ऊर्जा भर गई, वहीं माया के करीब जाने का सोचकर ही चैतन्य की सारी हवा फटे गुब्बारे की तरह निकल गई। मगर वो मना नहीं कर सकता था।

"मगर अल्फ़ी!" उसने कहा।

"अभी अल्फ़ी समस्या नहीं है चैतन्य। माया और एडवर्ड हैं। माया का राज खुलना बहुत जरूरी है। सुरमी कबीले वाले दूसरे पहर में हेममाया को सजा देने वाले हैं। यानि कि उसी समय माया को सजा मिल

सकती है। हमारे पास समय कम है.... पर मुझे यकीन है कि तुम ये कर लोगे चैतन्य। इसके बदले में उसे एक दो पप्पी-झप्पी भी देना पड़े तो दे देना। इजाजत है मेरी ओर से।" अनामिका पूरे उत्साह में बोलती चली गई और जब उसने बात खत्म करके चैतन्य की ओर देखा, तो वो एक भौंह चढ़ाए और जबड़े भींचें
उसे ही देख रहा था।

"पप्पी-झप्पी! अब तो तुम पहुँचो घर! उसके बाद मैं बताता हूँ तुम्हें।" चैतन्य ने बहुत ही तिलमिला कर कहा, जवाब में अनामिका ने फैली हुई ऑखों के साथ अपना चेहरा दूसरी तरफ फेर लिया था। उसी समय उसकी नज़र वहॉ रखें भविष्य कथन पर पड़ी और वो उसके पास चली गई।

"तांत्रिक श्रेष्ठ! क्या ये भविष्य कथन हमारी मदद नहीं कर सकता? मतलब कि... अगर ये कुछ भी ऐसा हिंट दे दे, जिससे पता चल जाए कि अल्फ़ी को कैसे रोका जा सकता है?" अनामिका ने एक और उम्मीद दिखाई।

"तुम उसे रोकना क्यों चाहती हो?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पूछा।

"बस मैं नहीं चाहती... कि इतनी तकलीफ़े उठाने के बाद... वो खुद दूसरों की तकलीफ़ों की वजह बने। वो एक अच्छा लड़का है और मैं नहीं चाहती कि वो... वो बने... जो हम उसे देखकर आए हैं।" अनामिका ने साफगोई से कहा।

"हम नियति नहीं बदल सकते अनामिका। उसे जो करना है.. वो करेगा ही! पर एक काम हो सकता है। तुम उसे पिशाच बनने से पहले ही जान से मार डालो। इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है क्योंकि हम उसके अंदर का दर्द कभी नहीं मिटा सकते। सुरमी कबीले वाले कभी भी किसी भी हालत में वो जीवपात्र किसी को नहीं देंगे। उनकी देवी का मंदिर ध्वस्त हो चुका है और ये कहीं से भी छोटी बात नहीं है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने असमर्थता जताते हुए कहा।

"पर अगर ऐसी बात है तो... अनामिका की मॉ को वो जीवपात्र मिला कहॉ से? यहॉ तक कि इस जीवपात्र के बारे में डॉ. अनंत को भी पता नहीं
चला। सब तो यही सोचते थे कि... उन्होंने... अपनी आत्मा के हिस्से से... अनामिका की टूटती हुई सॉसों को जोड़ा है।" चैतन्य ने सवाल उठाते हुए पूछा।

"अब ये तो वही बता सकती हैं!" तांत्रिक श्रेष्ठ ने फिर से असमर्थता जताई।

"क्या ये भविष्य कथन हमारे सभी सवालों के जवाब नहीं दे सकता?" अनामिका ने पूछा।

"कितना अच्छा होता ना... अगर ऐसा हो सकता। मगर ऐसा नहीं होता। ईश्वर ने ऐसी कोई चीज नहीं बनाई, जो ऐसा कर सके, वरना ये दुनिया ईश्वरों से भर जाएँ... जो अपने तरीके से सब बदल सकें। भविष्य कथन भी हमें उन्हीं आपदाओं के बारे में बताता है, जिनकी वजह से इतिहास एक मोड़ लेता है। हम इन्हें टाल नहीं सकते... पर कुछ बेहतरी के प्रयास किए जा सकते हैं। अल्फ़ी को तुम क़ैद भी कर लोगी... तो भी वो वही बनेगा... जो उसे बनना है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक आह भरते हुए कहा।

"ओह!" अनामिका और चैतन्य दोनों ने ही एक साथ आह भरी थी।

"फिर भी मुझे लगता है कि हमें भविष्य कथन पर भी एक नज़र डाल लेनी चाहिए। शायद तुम्हारे विषय में कोई मदद मिल जाए।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उन दोनों के सवालों के बीच कहा और वो किताब तीनों के बीच में रख दी। उन्होंने उस पर हाथ रखकर किसी मंत्र का उच्चारण किया, जिससे उस किताब में कँपन पैदा होने लगी। तांत्रिक श्रेष्ठ के हाथ रखने के बाद उस किताब की हलचल और भी बढ़ गई। कुछ देर ऑखें बंद करने के बाद तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपनी ऑखें खोली और फिर हाथ खींचने के बाद वो किताब खोल दी। एक बार फिर से वही शैतानी आकृति उनके सामने थी। उस आकृति के ऊपर झुककर वो तीनों उस आकृति के बोलने का इंतजार
करते रहे... पर वो शांत ही रहा।

"ये क्या हो रहा है? उस दिन तो लंबी चौड़ी कविता सुना दी थी इसने आज क्यों ख़ामोश है?" अनामिका ने चिढ़कर कहा।

"इसने पहले भी कुछ बताया था?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"हाँ! मेंशन की पार्टी वाली रात! मैं गलती से उस कमरे में पहुँच गई थी। तब!" अनामिका ने कहा।

"क्या कहा था?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पूछा।

जवाब में चैतन्य ने वो कागज अपनी जेब से निकालकर तांत्रिक श्रेष्ठ की ओर बढ़ा दिया। तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे खोलकर पढ़ा।

"जब प्रेम लौटकर आएगा..
और मात प्रेम से खाएगा,
जग झुलसेगा इस अग्नि में...
और दानव जाल बिछाएगा,
रक्त की बूंदों से रक्तिम...
इतिहास लिखा फिर जाएगा,
खंज़र उतरेगा सीने में...
और ये ज़ख़्म सदा भरमाएगा,
सुलझाकर उलझे धागों को...
ये समयजाल खुल पाएगा,
जो ना बूझे इस उलझन को....
फँस समयजाल में जाएगा।"
तांत्रिक श्रेष्ठ ने उस पहेली को दो बार पढ़ा और फिर उसे अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया। अतीत और भविष्य की इस पहेली में बहुत कुछ छिपा था, जिसे समझना ही इस कालचक्र के रहस्य को सुलझा सकता था। फिलहाल उन्होंने अनामिका और चैतन्य को माया के पास जाने की सलाह दी और खुद सुरमी कबीले के सरदार के पास चले गए। अतीत का संग्राम तीन हिस्सों में बँट गया था और सबको अपनी-अपनी भूमिका निभानी थी।

अपनी-अपनी राह पर निकलने से पहले तांत्रिक श्रेष्ठ ने अनामिका और चैतन्य को अभिमंत्रित धागा दिया, जिससे उन पर किसी भी छल या जादू का हानिकारक प्रभाव ना पड़े। उन्होंने चैतन्य की तर्जनी ऊंगली और अनामिका की कनिष्ठा (छोटी) ऊंगली पर वो धागा बांध दिया। अनामिका ने अपने जलपात्र में पानी भी रख लिया। उन्होंने अनामिका और चैतन्य दोनों को ही जल्दी से जल्दी मिशन माया पर लगने की कहा। उन्होंने चैतन्य को अपने साथ मानसिक संपर्क में भी रहने को कहा, ताकि वो दोनों एक-दूसरे को अपनी स्थिति स्पष्ट करते रहें।

अनामिका और चैतन्य के जाते ही तांत्रिक श्रेष्ठ भी जाने को तैयार ही थे कि तभी भविष्य कथन में कँपन होने लगा। तांत्रिक श्रेष्ठ उसके पास पहुँचे तो किताब खुलने को बेताब नज़र आई। समय नष्ट ना करते हुए उन्होंने उसे खोला और फिर उसने एक बार फिर से कुछ कहा, जिससे उनके माथे पर सिलवटें बढ़ गईं। वो उसे लेकर तेजी से अंदर की ओर गए और फिर कुछ देर बाद बाहर निकलकर तेजी से एक ओर बढ़ गए। दिन की रोशनी सिमटने लगी थी।

****

अनामिका और चैतन्य तेजी से झील की ओर गए। दिन तेजी से अपनी
रोशन चादर समेट रहा था और रात अपनी हाजिरी के लिए बेताब नज़र आ रही थी। रात का पहला पहर शुरू होने से पहले ही वो वहॉ पहुँच जाना चाहते थे, ताकि माया के आने से पहले खुद को पूरी तरह से तैयार कर सकें। जल्द ही वो दोनों अपने गंतव्य तक पहुँच गए... मगर वहॉ पहुँचते ही उन दोनों को तेज झटका लगा... जब उन्होंने माया को पहले से ही वहॉ मौजूद पाया।

"इसे बड़ी जल्दी हो रही है तुमसे मिलने की!" अनामिका ने अपनी नज़र पैनी करते हुए कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने बस हुंकारी ही भरी। अनामिका ने उसकी ओर देखा.. तो वो माया की ओर एकटक देख रहा था। अनामिका की तेज धार नज़र ने उन दोनों के बीच के इस राब्ते को देखा और फिर चैतन्य के पीठ पर एक धौल जमाते हुए कहा,

"ऐसे क्या देख रहे हो?"

"अनामिका! सच में! तुम इसे मुँह लगाने की बात कह रही थी। पता नहीं कहॉ-कहॉ मुँह मारा होगा इस ब्लाह... ब्लाह... ब्लाह... ने। पर अब... कर भी क्या सकते हैं? हाय रे मेरा नसीब !" चैतन्य ने माया की ओर मुँह बिगाड़ कर देखते हुए कहा। अनामिका ने भी पलकें मिचमिचाते हुए माया की ओर देखा और फिर चैतन्य पर एक नज़र डाली, जिसका चेहरा बुरी तरह से बिगड़ा हुआ था। एक अजीब सा अहसास उसे सिर से पैर तक सिहरा कर चला गया।

"अ.... चैतन्य! वो तो मैंने.... उत्साह में कुछ ज्यादा ही बोल दिया। इसे सीरियस लेने की जरूरत नहीं है तुम्हे। सच्ची!" अनामिका ने जैसे चैतन्य से ज्यादा खुद से ये बात कही। माया और चैतन्य के बारे में सोचकर ही उसका दिमाग भन्ना गया था। वहीं उसके चेहरे के गिरते-चढ़ते भावों को
पढ़कर चैतन्य की खुराफात ने अपनी चमचमाती हुई ऑखें खोली।

"क्या बात कर रही हो! मैं तो हंड्रेड परसेंट सीरियस हो गया हूँ। अब आज... अपनी मंजिल पाने के लिए इसको तो क्या... इसकी उन दोनों छिपकलियों को भी मुँह लगा लूंगा मैं। चिंता मत करो! तुम्हीं ने कहा था ना... कि फ़र्ज़ की राह पर बड़ी-बड़ी कुबानियॉ देनी पड़ती है। तो आज चैतन्य हर कुर्बानी देने को तैयार है।" चैतन्य ने अनामिका की रग-रग को अपनी खुराफात से सुलगाते हुए कहा और अनामिका ने उतनी ही सुलगी हुई नज़र उस पर डाली।

"खबरदार! अगर उसे मुँह लगाया तो... आज सच में कुर्बान हो जाओगे तुम मेरे हाथों। कहा ना... एक्साइटमेंट में ज़बान फिसल गई। हो गई गलती!" अनामिका उसका गिरेबान पकड़ते हुए बोली।

"वाह! वाह... वाह! क्या बात है! आपकी ज़बान फिसले तो गलती... और हमारी फिसले तो गुनाह! तुमने ही कहा था ना... कि इजाज़त है मुझे! अभी तुम देखो... इस गुनाहों के देवता का कमाल। एक नहीं तो... दो पप्पियों में ही अपनी मोहब्बत में गिरफ्तार कर लूंगा मोहतरमा को।" चैतन्य ने अपनी गिरेबान को उसकी गिरफ्त से छुड़ाकर उसे और तपाते हुए कहा और उसका जवाब सुने बिना ही माया की ओर चल दिया।

"चैतन्य! सुनो! सुनो ना!" हकदक सी अनामिका उसकी ओर हाथ बढ़ाकर ही रह गई और फिर गुस्से और चिढ़ से उसने अपने हाथ-पैर पटके।

"ये मेरे ही हाथों खर्च होगा एक दिन!" उसने भुनभुनाते हुए कहा।

चैतन्य, अनामिका को चिढ़ाने की मंशा से आगे बढ़ तो गया... पर माया के करीब आते-आते ही उसकी सारी खुराफातें धड़ाम हो गईं। एक बार
के लिए उसे लगा कि वो दौड़कर दूर भाग जाए और फिर किसी को भी ना मिले... पर अब वो पीछे नहीं हट सकता था, इसलिए दिल को मजबूत करके आगे बढ़ गया। फासला कम होते ही माया ने उसकी मौजूदगी को महसूस कर पीछे मुड़कर देखा। उसे अपने सामने पाकर उसके टेढ़े हुए होंठों पर एक कुटिल मुस्कान उतरी।

"आ गए तुम! मुझे लगा कि..."

"क्या लगा? कि मैं भाग गया। हुंह! भागकर अब जाना भी कहॉ हैं? जिससे इतनी मोहब्बत की.. जब वही भाग गई तो.." माया की बात काटते हुए चैतन्य ने भी अपनी बात अधूरी छोड़ी।

"तुम अभी तक... उस अनामिका पर ही अटके हो। वहीं रूके रहोगे तो... मुझ तक कैसे आओगे?" माया ने शिकायत करते हुए कहा।

"तुमने क्या मुझे अपने जैसा समझा है कि... रात गई तो बात गई। अगर मैं तुम्हारी तरह होता तो.. तुम्हारे सामने नहीं होता। सब भूल चुका होता। मगर जब मोहब्बत गहरी होती है.. तो चोट भी उतनी ही

गहरी होती है। अब तो इस दर्द से मुझे तभी आराम मिलेगा... जब मैं उन दोनों को भी तड़पता हुआ देखूंगा और मैं जानता हूँ कि तुम... इसमें मेरी मदद कर सकती हो। बस इसलिए मैं तुम्हारे सामने... तुम्हारे साथ हूँ।" चैतन्य ने बड़ी ही सफाई से अपनी बात कही।

"उफ्फ! बड़े जालिम हो तुम! झूठ ही कह देते कि मुझसे मोहब्बत हो गई है। अच्छा लगता मुझे!" माया ने उस पर मदभरी नज़रें डालते हुए कहा।

"मतलब कि बात करो।" चैतन्य ने बहुत ही रूखे अंदाज में कहा।

"वही तो कर रही हूँ, पर तुम समझ ही नहीं रहे।" माया ने उसके करीब
आते हुए कहा।

और उन दोनों के बीच के सिमटते फासलों को देखकर चैतन्य ने बेसाख्ता ही तांत्रिक श्रेष्ठ को पुकारा, "कहाँ हैं आप? जल्दी करें!"

"बस दस मिनट! उसे तब तक सब उगलने के लिए तैयार करके रखो।" तांत्रिक श्रेष्ठ का जवाब आया।

चैतन्य ने उनकी बात पर हुंकारी भरी। इसी दौरान माया उसके बहुत करीब आ गई थी, जिस पर ध्यान देने से चैतन्य चूक गया और अपने सीने पर उसकी मरमरी उंगलियों की छुअन महसूस कर बुरी तरह से बिदका था।

"क्या है? इतने करीब क्यों आ रही हो? दूर से बात करो।" चैतन्य ने पूरी तरह उखड़ते हुए कहा।

"ऐसी भी क्या बेरूखी? मेरे करीब आने को तरसते हैं सारे नौजवान.... और तुम...! सच कह रही हूँ। अगर तुम दिल से मुझे अपना लो... तो मैं हमेशा के लिए बस तुम्हारी हो जाऊं। तुम्हें नहीं पता... तुम्हारी पहली नज़र पर ही मैं दिल हार बैठी थी। क्या सच में तुम मुझे... उस अनामिका की जगह नहीं दे सकते?" माया ने अपना जाल फेंकते हुए कहा।

उसकी नजदीकी से अंदर ही अंदर बौखलाए हुए चैतन्य ने अपने सीने पर जमे उसके हाथों को बड़ी ही मुश्किल से पकड़ते हुए कहा, "देखो! मैं एक ईमानदार इंसान हूँ और सामने वाले से भी इसी की उम्मीद रखता हूँ। अगर सचमुच तुम ईमानदार रही... तो... हो सकता है कि अगले एक साल में तुम मेरे दिल में उतर जाओ और उस जगह पहुँच जाओ... जो फिलहाल खाली हो चुकी है। मगर उस समय! मैं अभी वो जगह भरने की हालत में नहीं हूँ।"
उसकी बात सुनकर माया ने एक आह भरकर उसे देखा और फिर उसके हाथों को पकड़ते हुए बहके हुए अंदाज में बोली, "वो तो मैं तुम्हें मजबूर कर ही दूंगी। पर... अभी भी इतना सख़्त होने की जरूरत ही क्या है? इस तरह कैसे आगे बढ़ेंगे हम?"

"कहा ना! दूर रहो! फिलहाल मुझे तुमसे मतलब है और तुम्हें मुझसे... और... मतलब के रिश्ते में जितनी ईमानदारी हो... बेहतर है। वरना अपना काम निकालने के लिए तुमसे चिकनी-चुपडी बातें तो मैं भी कर सकता था... मगर सच बताओ... क्या तुम्हें मेरी बातों पर यकीन होता?" चैतन्य ने पलटकर सवाल करते हुए कहा।

"हम्म! नहीं! यकीन तो अभी भी कम ही है। अब तुम ही बताओ कि तुम पर क्यों भरोसा करूं मैं?"

माया ने उसे टुक-टुक निहारते हुए कहा।

"क्योंकि मुझसे ज्यादा... तुम्हें मेरी जरूरत है।" चैतन्य ने अपनी अंगूठी उसे दिखाते हुए कहा।

"ओह! तो ऐसा लगता है तुम्हें!" माया ने थोड़े तंज़ के साथ कहा।

"और नहीं तो क्या? बात तो ये है कि... मैं तुमपे क्यों भरोसा करूं? तुम तो कहीं भी... कभी भी भरोसे के लायक नहीं रही हो। तो मैं अपनी ताकत... अपनी ऊर्जा... तुम्हारे लिए क्यों खर्च करूं? मुझे कहीं से भी नहीं लगता कि... मुझे तुम्हारी इतनी ज्यादा कोई जरूरत हो सकती है।" चैतन्य पथरीली ज़बान के साथ बोला।

"फिर भी तुम यहाँ हो। क्यों? शायद इसलिए... क्योंकि ये तुम्हारी जगह नहीं है... तुम्हारा समय नहीं है। ज्यादा न सही... पर मेरी मदद चाहिए ही तुम्हें।" माया भी अपने दाँव खेलते हुए बोली।
"सही कहा! और... मुझे फिलहाल कोई और मदद दिखाई नहीं दे रही है। तो सोचा... चलो तुम ही सही। तो फिर ये प्यार-मोहब्बत को अभी के लिए उठाकर रख दो और मुझे बताओ कि करना क्या है?" चैतन्य ने पूरी तरह से चिढ़े हुए लहज़े में कहा। तांत्रिक श्रेष्ठ से अगला इशारा मिलते ही वो अपनी भूमिका में वापस लौटा था।

"तुम्हें बड़ी बेताबी है.... मेरे इरादे जानने की!" इस बार माया के लहज़े में शक की महक घुली थी, जिसे चैतन्य ने बाखूबी महसूस किया था।

"क्योंकि मैं खुद को इन झंझटों से जल्द से जल्द बाहर निकालना चाहता हूँ। क्या तुम नहीं चाहती? इसके बग़ैर मैं तुम्हारी ओर आगे नहीं बढ़ सकता। तो अब तुम सोचो कि... तुम्हें मेरी जरूरत है या फिर किसी और का दिल खटखटाना है तुम्हें?" चैतन्य ने पूरे आत्मविश्वास के साथ माया की आँखों में झांककर देखते हुए कहा और एक बार फिर से माया उसकी आँखों में खुद को देखकर मचलने लगी। उसने उसकी गर्दन में अपनी बाहें फंसाई और फिर चैतन्य की सारी साँसें जैसे अपना रास्ता भूल गई।

"कह तो ठीक रहे हो। चलो बताओ.... क्या बताऊं तुम्हें?" माया शोखी के आलम में चूर होकर बोली।

और उसकी इस बेबाक हरकत से चैतन्य के दिमाग में बस एक ही बात आई, "हे भगवान! इतनी ठरक! स्स्स्साला! हमें लगता है कि हमारा ही जमाना खराब है। पता नहीं था कि ये जहरीली बीमारी इन पाप के पुतलों ने बहुत पहले से ही फैलाई हुई है।"

चैतन्य को सुन्न-सपाट देखकर माया ने उसे गहरी नज़रों से निहारा और बोली, "क्या हुआ? कहाँ खो गए?"

और दूर निकलता हुआ चैतन्य तेजी से वापस आया। उसने माया को ग़ौर
से देखा और बात संभालते हुए बोला, "तुम्हारी आँखें खूबसूरत है।"

उसकी बात सुनकर माया के होंठों पर मुस्कराहट आई। वो उससे और भी लिपटते हुए बोली, "देखा! डूब गए ना!"

और डूबने की बात सुनते ही चैतन्य को अनामिका का ख्याल आया। वो और भी ख़ौफ में डूबा कि इस

समय उन दोनों को इस तरह देखकर वो सिर से पैर तक सुलग रही होगी और उसका सोचना कुछ ग़लत भी नहीं था। उनकी नजदीकियॉ बर्दाश्त से बाहर होते ही अनामिका ने खुद को दूसरी ओर मोड़ लिया और उस घड़ी को कोसने लगी कि जब उसने भी इन सबके लिए हामी भरी थी। उसका मन तो इस समय उस माया को इसी समय उस झील के पानी में डूबा देने का कर रहा था। मगर बात अब माया से ज्यादा हेममाया की हो गई थी.. इसलिए वो मन मसोसकर रह गई।

चैतन्य ने एक गहरी साँस भरी, ताकि उसका दिमाग हवा की कमी से काम करना बंद ना कर दे। उसने अपनी गर्दन माया की गिरफ्त से बाहर की और बोला, "ये सब बाद में! पहले ये बताओ कि... तुम और एडवर्ड एक-दूसरे से चिढ़ने के बाद भी एक साथ क्यों हो?"

"साथ! वो भी उस खड़ूस के साथ! तुम जानते हो... वो इस दुनिया का पहला मर्द है... जो हर तरीके से इतना परिपूर्ण है... फिर भी जिसकी ओर माया की नज़रे नहीं भटकी। ख़ैर! तुम भी मत भटको! वो क्या कर रहा है... उससे मुझे कोई मतलब नहीं। मुझे बस मुझसे मतलब है।"

"वही तो.. क्या मतलब?" चैतन्य ने उसे कुरेदा।

"वो तुम आज रात देख-समझ जाओगे। आज सबका ध्यान सर्वशक्तिमंडल की सभा में होगा। उसी का फायदा उठाना है हमें..... क्योंकि आज उस नर्क के द्वार में कोई भी बड़ी सुरक्षा नहीं होगी। जो होगी... उसमें सेंध
मारना कोई बड़ी बात नहीं और फिर मेरे पास वो होगा... जिसका सपना मैं ना जाने कब से देख रही हूँ।" आखिरकार माया ने चैतन्य के शीशे में उतरते हुए कहा।

"वो जगह इतनी खास क्यों है सब के लिए? मतलब कि तुम भी तो ताकतवर हो! बहुत ताकतवर हो! फिर तुम्हें उस नर्क के द्वार को क्यों खोलना है?" चैतन्य ने मुद्दे की ओर बढ़ते हुए पूछा।

"क्योंकि मुझे लगता है कि.... वो मेरा है। उसे इस तरह बेकार पड़ा नहीं रहना चाहिए। वैसे भी जिस पर मेरा दिल आ जाता है.... मैं उसे हासिल करके रहती हूँ।" चैतन्य को अर्थ भरी नजरों से देखते हुए माया ने कहा।

"आखिर इतनी ताकत का करोगी क्या तुम?" चैतन्य का सवाल अब अपनी दिलचस्पी पर उतरा था।

"पॉवर माई डियर.... पॉवर! इससे बढ़कर कुछ भी नहीं है इस दुनिया में। तुम्हारा वो प्यार भी नहीं। एक बार तुम्हारे हाथ में पॉवर आ जाए, तो दुनिया तुम्हारी मुट्ठी में समझो।" माया ने चमक भरी ऑखों के साथ अपनी मुट्ठी बांधते हुए कहा। ये कहते हुए उसका चेहरा एक अलग ही आभा से दमकने लगा था।

"पर... तुम्हें इतना यकीन क्यों है कि तुम जो करना चाहती हो... वो कर ही लोगी। मेरा मतलब है कि... मैंने सुना है... आज से 20-25 साल पहले भी किसी डायन ने ऐसा करने की कोशिश की थी... पर कामयाब नही हो पाई।" चैतन्य ने उसके सूखे हुए जख़्मों को कुरेदते हुए पूछा।

और अपने उस अतीत की याद ज़हन में उतरते ही माया की नस-नस गुस्से में फड़कने लगी। उसकी ऑखें एक अजीब से उन्मांद से चमकने लगी। उसने चैतन्य के बेफिक्र से चेहरे की ओर देखा और फिर उसके
चेहरे को अपनी हथेलियों में दबोचते हुए चेतावनी भरी आवाज में बोली, "मुझे उम्मीद है कि उसके साथ

जो धोखा हुआ... वो तुम नहीं करोगे। शायद तुम्हें पता नहीं कि उस तांत्रिक की उस हिमाकत ने उसका पूरा वंश उजाड़कर रख दिया। उस डायन ने मरने के बाद भी उस तांत्रिक के पूरे परिवार को सूखे पत्तों की तरह बिखेरकर रख दिया। सबको लगा कि वो चली गई। पर वो कभी भी.. कहीं भी नहीं गई थी। वो एक श्राप की तरह उनकी जिंदगी का जहर बन गई।"

"क्या मतलब! किसकी बात कर रही हो?" चैतन्य ने अनजान बनते हुए कहा।

"छाया उर्फ माया! यानि कि.... मैं!" माया ने उसे गहरी नज़रों से देखते हुए कहा।

और फिर चैतन्य के जाल में उलझी हुई माया ने बड़ी ही आसानी से अपना पूरा काला चिट्ठा खोलते हुए अपना एक-एक गुनाह उसके सामने इस तरह परोसा जैसे कि वो उसे ये सब बताकर चेतावनी देना चाह रही हो कि... उससे उलझना किसी को भी कितना भारी पड़ सकता है। उसने अपनी गलती से उस जीवपात्र के छलद्वार/समयद्वार से दूसरी ओर जाने का भी जिक्र कर ही दिया। वो अपने तरीके से उसे अपने जाल में फँसाना चाह रही थी... पर उसे नहीं मालूम था कि मासूम सी सूरत लिए उसके सामने मुस्कुराता खड़ा वो लड़का चालाकी में उसका भी गुरू था। वो वायु था। हवा का रूख पहचानता भी था और उसे अपने हिसाब से मोड़ना भी जानता था। उसकी मुस्कराहट देखकर माया को एक खटका सा लगा।

"क्या हो गया? ऐसे क्यों मुस्कुरा रहे हो?"

"पीछे देखो!" चैतन्य ने उसी मुस्कुराहट के साथ कहा।
उसकी बात सुनकर वो उतनी ही तेजी से पीछे मुड़ी और जो उसकी नज़र में आया वो उसके होश उड़ाने को काफी थी। शाम के बढ़ते धुंधलके में भी उसे साफ-साफ नज़र आए... सुरमी कबीले के वो सारे लोग... जो उसके इकबाल-ए-जुर्म के बाद उसे खौलती नज़रों से देख रहे थे। उनके अलावा डायन समूह की कुछ रसूखदार डायनें भी वहाँ मौजूद थीं। माया को एक पल के लिए भी ये यकीन नहीं हुआ कि एक बार फिर से वो उसी जाल में फँस गई थी, जिसमें उसे बरसों पहले फॉसा गया था। उसने खा जाने वाली नज़रों से चैतन्य को देखा, जिसके बदले में चैतन्य ने उसे अपनी सबसे दिलकश मुस्कुराहट बक्शी।

"इसीलिए कहते हैं..... दुर्घटना से देर भली! अच्छा खासा सामने वाला तुमसे सब्र करने को कह रहा था... पर नहीं! तुम्हें ही बड़ी जल्दी थी। हो गई ना दुर्घटना। अब क्या करोगी? हँ!" चैतन्य उसे चिढ़ाते हुए बोला।

"तुम...!" बौखलाई हुई माया चैतन्य की ओर आगे बढ़ी, मगर चैतन्य ने अपनी ऊंगली उसकी ओर उठाकर उसे अपने पास आने से रोका।

"सबने मुझसे कहा कि मैं पहले की तरह ही चिकनी-चुपडी बातों से तुम्हें क़ब्ज़े में लूं। पर मुझे पता था.. कि काठ की हांडी बार-बार चूल्हे पर नहीं चढ़ती। इसलिए मैंने अपना दिमाग लगाया। तुम्हें पता है... जब से यहाँ आकर फँसा हूँ ना, मेरे अंदर इतना गुस्सा भर चुका है कि वो मुझे ही जलाने लगा था। तो मैंने सोचा कि वही भड़ास बाहर निकाल दूं। मैंने अपनी उस सच्ची भड़ास में झूठ को लपेटकर तुम्हें ऐसे परोसा.... कि तुम तो एक ही बार में सब निगल गई। इसलिए कहते हैं... कहीं भी मुँह नहीं मारना चाहिए और हद से ज्यादा ओवरकॉन्फिडेंट होना भी अच्छी बात नहीं है। अगले जनम में ना... ये सब ध्यान में रखकर पैदा होना। समझ में आया!" चैतन्य ने अपने अंदर की सारी कड़वाहट अपनी जबान में

उतारते हुए कहा।
माया ने उसे दहकती ऑखों से देखा और पूरी ताकत से चिल्लाकर बोली, "तूने ये अच्छा नहीं किया। कहा ना... जो मुझसे उलझेगा... वो कभी खुश नहीं रहेगा। अब तेरी बारी! आज नहीं तो फिर कभी... पर मैं कामयाब जरूर होऊंगी, पर तू तरसेगा... खुश रहने के लिए। बिल्कुल उस हेममाया की तरह! याद है ना.. उसका हश्र! वही तेरा होगा। याद रखना!"

उसकी बात सुनकर चैतन्य एक बार फिर से उसका दिल जलाने वाली मुस्कान के साथ दिलकशी से मुस्कुराया और फिर एक पल में ही ये हुआ। वो या कोई भी और आगे कुछ समझता... सुलगती हुई माया ने झपटकर उसके चेहरे को दबोचा और उसके होंठों को अपने होंठों के गिरफ्त में ले लिया। चैतन्य उसकी इस हरकत से सन्न रह गया। उसे कुछ जलता हुआ अपने अंदर उतरता महसूस हुआ और फिर माया ने उसे झटके से छोड़ा।

"तुझे प्यार देने का सोचा था, पर तुम सब मेरी बद्दुआ के ही काबिल हो। अब इसे सहेजकर रख! सारी जिंदगी... तड़पने के लिए।"

माया के चैतन्य पर झपटते ही आसपास खड़े सभी फुर्ती से हरकत में आए और फिर उसे अपनी मजबूत पकड़ में ले लिया। वो बहुत दूर तक चिल्ला-चिल्लाकर उसे बुरा-भला बोलती रही। चैतन्य ने अपने होंठों पर उंगली रखी और वो वहॉ मौजूद जलन से सहमकर रह गया। वो उसकी बातों में उलझा हुआ ही था कि अनामिका ने आकर उसे खुद में समेटा। वो भी उलझा हुआ सा उसकी बाहों में बिखर गया।

माया की गिरफ्तारी माहौल में गर्माहट भरी हलचलें ले आई थीं। लोगों के लिए फिलहाल सारी खबरें आम नहीं की गई थीं, मगर माया का नाम ही सनसनी फैलाने के लिए काफी था। हर कोई इस विषय में चर्चा कर रहा था... मगर इस चर्चा की जमीन अभी तक किसी को नज़र नहीं आई थी। सुरमी कबीले के लोगों ने माया को अपनी तेज निगरानी में रखा था... क्योंकि... अब सजा की हकदार वो थी। डाकिनी को जब ये खबर मिली.. तो वो बदहवास सी हो गई। उसने माया से मिलने की कई कोशिशें...कई मिन्नतें कीं.... पर सब नामंजूर कर दी गईं। माया ने खुद अपना जुर्म अपनी ज़बान से कबूल किया था और सुरमी कबीले के लिए यही काफी था। वो अपनी पहचान... अपने सम्मान और अपनी सांस्कृतिक धरोहर को लेकर बहुत ही ज्यादा संवेदनशील थे और इनको नुकसान पहुँचाने वाले पर रहम करने के लिए कतई तैयार नहीं थे।

डाकिनी ने खुद को इतना असहाय कभी भी महसूस नहीं किया था। अभी कुछ घंटों पहले वो कितनी खुश थी। उसके सामने दुनिया की सारी नेमतें बिछी हुई थीं, जिन पर चलकर वो एक बार फिर से सब पर हूकूमत करने का ख्वाब देख रही थी। मगर... एक ही झटके में सब खत्म हो गया। तांत्रिक श्रेष्ठ को चैतन्य और अनामिका के मार्फत पता चल चुका था कि डाकिनी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से माया की मदद कर रही थी। इस बार भी
वो उसकी मदद कर सकती थी, इसलिए तांत्रिक श्रेष्ठ ने बड़ी ही चालाकी से उसे इन सबसे दूर रखा और माया की गिरफ्तारी से पहले कोई भी खबर डाकिनी के कानों तक पहुँचने नहीं दी और अब वो अपने गुनाहों का हिसाब लगाए बैठी थी।

उसके हाथों पर पड़ी शक्तिनियंत्रक बेड़ियों ने उसे पूरी तरह से लाचार कर दिया था। पिछली बार उसने खुद को गिरफ्तार नहीं होने दिया था और अपनी आगे की योजना के अनुसार आत्महत्या करके अपनी आत्मा को मुक्त कर दिया था। उसकी आत्मा किसी की पकड़ में नहीं आई थी.... इसलिए वो आज यहाँ तक पहुँची थी। मगर एक बार फिर से वो उसी जाल में फँसकर अपनी मंजिल के रास्ते से भटक चुकी थी। उसे चैतन्य पर इतना गुस्सा आ रहा था कि उसका शरीर बुरी तरह से बेचैनी और कँपकँपाहट का शिकार हो गया था। चैतन्य इतना चालाक निकलेगा... ये उसके वहमोगुमान में भी नहीं था। उसने उसे फँसाने के लिए झूठी और चिकनी-चुपडी बातों का सहारा ना लेकर..... अपने अंदर भरे हुए गुस्से का सहारा लिया... जो इतना सच्चा था कि माया उस सच में लिपटी उसकी चालाकी पकड़ नहीं पाई। पर जो होना था... वो हो चुका था.. और अब वो उस तरफ देख रही थी, जिधर उसका नसीब मुड़ चुका था।

****

"जो मेरी खुशियों के बीच आता है... वो कभी खुश नहीं रहता। तुम भी कभी खुश नहीं रहोगे चैतन्य! कभी नहीं रहोगे। मेरी बद्दुआ का काला साया हमेशा तुम्हारा पीछा करता रहेगा।"
अपने सिर के बालों को मुट्ठियों में भींचकर बैठे हुए चैतन्य के कानों में माया के ये सारे अल्फ़ाज शोर बनकर चुभ रहे थे। वो ना जाने क्यों इन्हें नज़रअंदाज़ कर ही नहीं पा रहा था। वो सच में परेशान था। उसकी सोचों की रवानगी पर खलल पड़ा, जब उसने किसी को अपने पास महसूस किया। उसने उस ओर देखा, अनामिका ऑखों में सवाल लिए उसे ही देख रही थी, मगर उन सवालों का जवाब देने की बजाय चैतन्य एक बार फिर से सामने फैले अंधकार की ओर देखने लगा।

"क्या हुआ चैतन्य? परेशान लग रहे हो! सब तो बिल्कुल वैसे ही हुआ... जैसा हमने सोचा था। फिर तुम्हारे इस बेरंग चेहरे की वजह?" आखिरकार अनामिका के होठों पर सवाल आ ही गया।

"पता नहीं!" चैतन्य ने बात टालनी चाही।

"हे! इधर देखो!" अनामिका ने उसका चेहरा पकड़कर अपनी ओर घुमाया और उसके चेहरे ख़ासतौर पर ऑखों को बहुत ही ग़ौर से देखने लगी। उसकी उस नज़र से चैतन्य असहज हो गया और अनामिका की पकड़ से खुद को आजाद करके वो फिर से दूसरी ओर देखने लगा। इस बीच उसके माथे की शिकन अनामिका ने साफ-साफ देख ली थीं।

"तुम्हें उसके लिए बुरा तो नहीं लग रहा है ना?" अनामिका ने हैरानी भरा एक अजीब सा सवाल किया।

"बुरा! किसके लिए?" चैतन्य को उसके सवाल ने चौंकाया।

"माया के लिए! सच में कुछ कर तो नहीं दिया उसने?" अनामिका ने एक बार फिर उसके चेहरे को जॉचते हुए कहा।
"धत्! कुछ भी! ऐसा कुछ नहीं है।" चैतन्य ने उसकी बात को काटते हुए थोड़ी चिढ़ से कहा।

"तो फिर परेशान क्यों हो?" इस बार अनामिका का सवाल संजीदगी भरा था।

"मुझे उसकी बातों ने परेशान किया हुआ है। तुमने सुनी नहीं क्या?" उसकी बातों का जवाब देते हुए चैतन्य ने पलट कर सवाल किया।

"वो सब! तुम उसके बारे में सोच रहे हो? हे भगवान! चैतन्य! अगर ऐसे लोगों की बद्दुआओं से सब कुछ बदलने और बिखरने लगता.... तो ये दुनिया कब की खत्म हो जाती। अगर तुम्हारा दिल नेक है.... पाक़ है.... मोहब्बत से भरा है... तो ऐसी बद्दुआ हवा की तरह गुजर जाती हैं। ये अलग बात है कि तुम खुद ही इन्हें पकड़ कर रखना चाहो.... फिर तो तुम... उसी का काम आसान कर रहे हो। है ना!" अनामिका उसे नर्म लहजे में समझाते हुए बोली।

"नहीं! पर उसने मुझे हेममाया से जोड़ा ना! बस इसीलिए परेशान हूँ। मैं ऐसा सोच भी नहीं सकता। अनामिका! मैं मरने से नहीं डरता। सच में नहीं डरता! पर तुमसे दूर होने के ख्याल से भी डरता हूँ। शायद इसीलिए!" चैतन्य ने ईमानदारी से अपने दिल का डर अनामिका के सामने रखा था।

"क्यों? तुम्हें लगता है कि... मैं मरने-वरने वाली हूँ, जो ऐसा कह रहे हो।" अनामिका ने हँसते हुए बहुत ही लापरवाही से कहा, जिस पर चैतन्य ने उसे बहुत ही गुस्से से घूरकर देखा था।

"और नहीं तो क्या? तुमसे दूर होने की और कोई वजह तो नज़र नहीं आती मुझे।" उसकी पैनी नज़रों को नज़रअंदाज़ करते हुए अनामिका ने अपने कंधे उचकाकर कहा।
"शटअप!" चैतन्य ने कहा और उसे अपने पास खींचकर अपनी बाहों में भरा। अनामिका भी उसके सीने पर सिर रखकर बेफिक्र सी हो गई, मगर वो बेफिक्री अभी भी चैतन्य से कोसों दूर थी। उसने ऊपर आसमान की ओर देखा। रात का पहला पहर खत्म होने को था। अगले पहर में माया को उसके गुनाहों की सजा मिलने वाली थी। बेहतरी की दुआओं के साथ उसने अनामिका को खुद में और भी भींचा और सूकून की आस में अपनी ऑखें बंद कर लीं। उसके अंदर मौजूद जलन धीरे-धीरे अपना असर बढ़ा रही थी।

****

रात का दूसरा पहर शुरू हो चुका था। लोगों तक खबर पहुँच चुकी थी और वो सभी उस बड़े से मैदान में जमा होने लगे थे। वहॉ का नज़ारा देखकर सभी का दिल दहल उठा था। उस मैदान के बीचों-बीच लकड़ियों का ढेर लगा हुआ था, जिसके बीच में लोहे का मोटा सा खंभा था। उस हिस्से को थोड़ा आगे से गोलाई से घेर दिया गया था। उस घेरे के चारों ओर थोड़ी-थोड़ी दूर कई मशालें जल रही थीं.. जिससे आसपास का इलाका पूरी तरह से रोशन था। उस घेरे से भी दस कदम दूर एक और घेरा बनाया गया था, जहॉ पर खड़े होकर सभी उस ख़ौफनाक मंज़र के गवाह बनने वाले थे। डायनों के समूह से कईयों ने इस सजा को क्रूर बताकर रोकने की कोशिश भी की, मगर सुरमी कबीले वाले कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थे और उनसे कोई भी उलझना नहीं चाहता था।
चैतन्य सीने पर हाथ बांधे सब कुछ चुपचाप देख रहा था। उसके चेहरे पर वही संजीदगी बनी हुई थी।

अनामिका अपना चेहरा छिपाए कुछ दूर पर खड़ी सब देख रही थी। हूजूम धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था। कुछ ही देर में तांत्रिक श्रेष्ठ अपने अनुचरों के साथ वहाँ पहुँच गए। उनके पीछे-पीछे ही सुरमी कबीले वाले भी अपने सरदार के साथ पहुँचे। माया को अभी लाया नहीं गया था। उसकी सजा में अभी वक्त था। तांत्रिक श्रेष्ठ सुरमी कबीले के सरदार से किसी गंभीर चर्चा में व्यस्त दिखाई दे रहे थे। वो सरदार को कुछ समझाते दिखाई पड़ रहे थे, जिस पर सरदार के चेहरे की बढ़ती सख़्ती हर किसी को दिखाई पड़ रही थी। सुरमी सरदार लगातार सिर हिलाकर अपनी असहमति जता रहे थे। घेरे के बाहर खड़ी डायनों को एक उम्मीद नजर आ रही थी कि शायद तांत्रिक श्रेष्ठ सुरमी सरदार को सजा में नरमी के लिए मना लें। कुछ देर की गंभीर बातचीत के बाद तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य को अपने पास बुलाया। अनामिका ने देखा कि फिलहाल ना तो डाकिनी दिखाई दे रही थी और ना ही पिशाच समुदाय से कोई दिखाई दे रहा था। उसे एक पल के लिए अल्फ़ी की याद हो आई जो गुस्से में एडवर्ड की ओर गया था। पता नहीं इस समय वो क्या कर रहा था? कहाँ था और किस हाल में था?

अनामिका की तंद्रा टूटी जब अचानक ही माहौल में सुगबुगाहटें बढ़ गईं। उसने सामने देखा तो एक ओर से पिशाचों का एक समूह तांत्रिक श्रेष्ठ की ओर आ रहा था। उसे चैतन्य की फिक्र हो आई। वो अभी भी उसे कम से कम पिशाचों की ओर से तो सुरक्षित नहीं मान रही थी। एडवर्ड चैतन्य के बारे में सब जानता था, मगर उसका नाम जाहिर नहीं करना अनामिका को एडवर्ड की कोई गहरी चाल ही लग रही थी। उसने तुरंत ही चैतन्य से संपर्क किया और उसे वहाँ से तुरंत हटने के लिए कहा। मगर चैतन्य ने उसके डर को दूर करते हुए उसे शांत रहने के लिए कहा। वो तांत्रिक श्रेष्ठ के हाथ के नीचे सुरक्षित था। उसके कहने पर अनामिका ने हाँ तो कर दी... पर उसका दिल बहुत ही जोरों से धड़क रहा था।

कुछ ही देर में पिशाचों का समूह वहाँ पहुँच गया। उनकी अगुवाई करने वाले शख़्स को अनामिका और चैतन्य दोनों ने ही नहीं पहचाना।

"मि. पीटर अल्बर्ट! आपका स्वागत है!" तांत्रिक श्रेष्ठ ने आगे बढ़कर उस आगंतुक का स्वागत करते हुए कहा और चैतन्य को समझ आ गया कि वो कौन था? वो एडवर्ड का अंकल(मामा) था। सर विलियम ने बताया था कि
एडवर्ड के जीवन को आग में झोंकने वाला शख़्स यही था। इसी ने एडवर्ड के अंदर सारा जहर डाला था। अपनी काली इच्छाओं को पूरा करने के लिए इसी आदमी ने एडवर्ड को चलता-फिरता ज्वालामुखी बना दिया था, जो बस तबाह करने में यकीन रखता था। उसे पहचानने के बाद चैतन्य के चेहरे के भाव बुरी तरह से बिगड़ गए, जिसे उसने बड़ी ही मुश्किल से संभाला था।

"Thanks! But here I'm watching that there's big incidents happening here...big and powerful decision taken...and all these happening without telling a single word to Vampires...! William literally ruined the reputation of vampires.. it's seems they fall from sky to earth..!
(शुक्रिया! मगर मैं देख रहा हूँ कि यहाँ बड़ी-बड़ी घटनाएँ हो रही हैं.. बड़े-बड़े फैसले लिए जा रहे हैं... वो भी पिशाचों को एक शब्द भी बताए बिना! विलियम ने सच में पिशाचों की प्रतिष्ठा को आसमान से जमीन पर ला पटका है।)" पीटर ने कुंठा भरी आवाज में कहा।

"ऐसी कोई बात नहीं है। एडवर्ड के पास सारी खबरें हैं। पर वो है कहाँ?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पीटर के पीछे झांकते हुए कहा।

"He has a lot more work to do besides all this nonsense. (उसके पास इन सब बेकार बातों के अलावा और भी काम हैं।)" पीटर ने चिढ़े हुए अंदाज में कहा।

"तो फिर आप यहॉ क्या कर रहे हैं?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने भी उखड़ते हुए लहजे में पूछा।

"I'm here to just to telling about you all that Alfiii
is again spreading Massacre in mansion.. and with great difficulty I controlled him..but you all are responsible for this situation..this is all your fault which you all did earlier... it was not possible if you all are not escaped him from prison..
you guy's never think once.. that it's necessary to tell me anything..but it's okay I understand my responsibilities..Now do whatever you all are want here...
and I'm going to punish the culprits there..i think everything is clarified now... (ये बताने आए हैं कि एक बार फिर से अल्फ़ी ने मेंशन में कत्लेआम मचाया है। बड़ी मुश्किल से हमने उसे काबू में किया है और इस सबके जिम्मेदार आप सब हैं, जो उसे हमारी कैद से भगाकर ले गए थे। आप लोग हमें कुछ बताना जरूरी नहीं समझते.. पर हम अपनी जिम्मेदारी समझते हैं। आपको यहॉ जो करना है करें और हम वहॉ अपने मुजरिम को सजा देंगे। मुझे लगता है कि अब... सब साफ़ हो गया है।)" पीटर ने बहुत ही कठोर लहज़े में कहा और उन सब पर हिकारत भरी नज़रें डालता हुआ पलटकर वापस चला गया।

ये सुनकर तांत्रिक श्रेष्ठ और चैतन्य के होश ही उड़ गए। अल्फ़ी एक बार फिर से उनकी कैद में था और वो उसे मारने वाले थे। मगर भविष्य में कहीं जाने वाली कहानी तो कुछ और ही थी।

"हे भगवान! कहीं... वहॉ जो हो रहा है... उसी की वजह से तो अल्फ़ी पिशाच नहीं बन गया। मुझे जाना होगा। कुछ करना ही होगा।" चैतन्य बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए बड़बड़ाया।

"मुझे लगता है कि तुम सही कह रहे हो। अनामिका को साथ लेकर जाना और तुम्हारी उंगलियों में जो धागा मैंने बांधा है, उसे खुलने मत देना।"
तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य का समर्थन करते हुए कहा।

"ठीक है। जल्द ही मिलते हैं।" चैतन्य ने कहा।

"चैतन्य! एक बात और! अल्फ़ी को बता देना कि... सुरमी कबीले वाले वो जीवपात्र देने को राजी नहीं हैं और उनकी मर्जी के बिना वो जीवपात्र लेना इस दुनिया में किसी के बस का नहीं है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बुझी हुई आवाज में कहा, जिसे सुनकर चैतन्य और भी परेशान हो गया।

"पर तांत्रिक श्रेष्ठ! इस तरह से तो वो.. अनामिका के और भी पीछे पड़ जाएगा।" चैतन्य ने अपनी चिंता जाहिर करते हुए कहा।

"उसके बारे में मत सोचो। तुम दोनों के लिए एक खबर है। आज.... समयद्वार खुलने वाला है। मगर इसी के साथ एक और समस्या है। भविष्य कथन ने कहा है कि... कोई लौटकर आने वाला है, जो भूत,

वर्तमान और भविष्य को अपनी चपेट में ले लेगा। इससे पार पाने के बाद ही तुम दोनों वापस जा सकते हो। तो... वहॉ की समस्या सुलझाने के बाद नर्क के द्वार के पास मिलना।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य को बुरी खबर में लिपटी हुई अच्छी खबर सुनाते हुए कहा।

"क्या सच में! हम आज वापस जा सकते हैं! ओह गॉड! आप नहीं जानते... मैं कितना खुश हूँ ये जानकर। अनामिका भी होगी। ठीक है तो... चलता हूँ।" अपने जज़्बातों को बमुश्किल संभालते हुए चैतन्य ने कहा और फिर जाने के लिए पलटा ही था कि उसने सामने से खींचकर लाती हुई माया को देखा, जो बहुत ही बुरे तरीके से छटपटा रही थी। जल्द ही वो उसके सामने थी। उसे ऐसी हालत में देखकर चैतन्य एक बार फिर से उसे चिढ़ाने के अंदाज में मुस्कुराया।

"बहुत मजा आ रहा है ना तुझे.. मुझे इस तरह तड़पता देखकर। पर तू
नहीं जानता कि मैंने तेरी किस्मत में इससे भी ज्यादा तड़प लिख दी है। बहुत प्यार है ना तुझे उस अनामिका से। बहुत जल्द... तुझसे दूर जाने वाली है वो। इतनी दूर... कि तू चाहेगा तो भी उसे नहीं ढूंढ पाएगा। बस तड़पेगा उसे याद करके। याद रखना मेरी ये बात!" माया उस पर अपनी पूरी नफ़रत उड़ेलते हुए चिल्लाई।

उसकी ये बात सुनते ही चैतन्य आपे से बाहर हो गया और गुस्से में उसकी ओर झपटा। मगर तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे पीछे से पकड़कर रोक लिया।

"जा! रोक ले उसे दूर जाने से.. अगर रोक सकता है तो!" कहते हुए माया वहशियाना तरीके से मुस्कुराई।

"तू और तेरी बद्दुआ! हमारे प्यार से ताकतवर नहीं है। और हमारी चिंता करना छोड़ दें क्योंकि तेरी चिता सज चुकी है। देख उधर!" उसे चिढ़ाने की गरज से चैतन्य उसके बहुत करीब आकर उसकी ऑखों में झांकते हुए बोला।

और यहीं माया ने उस पर झपट्टा मारकर एक बार फिर से उसकी गर्दन को मजबूती से दबोच लिया। आसपास के लोगों ने चैतन्य को उसकी पकड़ से छुड़ाने की कोशिश की, तो उसने अपने नाखून चैतन्य की गर्दन पर गड़ा दिए। चैतन्य की दिल दहलाने वाली चीख चारों ओर फैल गई। वो सब अभी कोशिश कर ही रहे थे कि तभी वहॉ अनामिका दौड़ती हुई आई और उसने पास खड़े सुरमी सिपाही की तलवार झपटकर छीनते हुए माया के बाऍं हाथ को कोहनी के नीचे से काट दिया। माया की दिलखराश चीख वहॉ गूंज उठी और उसने चैतन्य को छोड़ दिया। उसके खून के छींटें अनामिका को रंग गए थे। वहीं अनामिका की इस हिमाकत से वहॉ मौजूद सभी लोग दंग रह गए। अपने खून बहते गले को सहलाता हुआ चैतन्य भी सदमे में खड़ा था।
"कहा था ना कि उससे दूर रहना! वो मेरा है! लगता है कि मरना भी तुझे टुकड़ों में ही नसीब होगा।" खून से नहाई अनामिका गुस्से की आखिरी हद में खड़े होकर चिल्लाई और इससे पहले कि... उसका अगला वार माया के शरीर का एक और हिस्सा काट के अलग करता, सिपाही ने अनामिका के उठे हुए हाथ को पकड़ लिया। अनामिका का पूरा शरीर गुस्से में कॉप रहा था। चैतन्य ने आगे बढ़कर उसे खुद में समेटा।

तांत्रिक श्रेष्ठ ने आगे बढ़कर सुरमी सिपाहियों को कुछ और गलत होने से पहले माया को आगे लेकर जाने के लिए कहा। वो भी उनकी बात मानकर आगे बढ़ गए। माया अब दर्द से निढाल हो चुकी थी और

उसने किसी भी प्रकार से प्रतिकार बंद कर दिया था। माया को लकड़ियों के ढेर पर खड़ा करके उस लोहे के खंभे से बांध दिया गया। उसे इस तरह देखकर डायनों के बीच चीख-पुकार मच गई। लोगों ने ये सब सुना जरूर था... पर ऑखों से किसी ने भी ये खौफनाक नज़ारा नहीं देखा था। तांत्रिक श्रेष्ठ ने डायनों की ओर नज़र दौड़ाई। डाकिनी अभी भी नदारत थी। जैसी भी थी... उसकी बेटी थी। कैसे देख सकती थी वो ये सब? आखिरकार थोड़े इंतजार के बाद कुछ कबीलाई रीति-रिवाजों के साथ उस लकड़ी के ढेर में आग लगा दी गई।

आग की असहनीय गर्मी को महसूस करने के बाद माया का निढाल पड़ा शरीर थोड़ा सा सचेत हुआ और उसकी सारी ताकत उसके गले में आकर बैठ गई। इसके बाद वो जगह उसकी उन ख़ौफनाक चीखों की गवाह बन
गई, जिसे कोई भी कभी भी याद नहीं रखना चाहेगा। चैतन्य की बाहों में सिमटी हुई अनामिका ने अपनी ऑखों में नफ़रत भरकर दॉत भींचते हुए उसे देखा। उनकी ऑखों में कोई ख़ौफ नहीं था। एक सूकून था! हेममाया को इंसाफ मिलने का सूकून। आखिरकार उन्होंने हेममाया के शरीर को बचा ही लिया था। थोड़ी ही देर बाद वो वहॉ से मेंशन के लिए निकल गए। किसी ने भी ध्यान नहीं दिया कि माया का कटा हुआ हाथ गायब हो चुका था।

एक घंटे के बाद जब वो जगह पूरी तरह से खाली हो गई थी। माया के शरीर से उसकी आत्मा को कैद करके सभी उसकी लाश जानवरों के लिए छोड़ गए थे। चारों ओर मरघट का सन्नाटा छाया हुआ था। तभी वहॉ दो लोगों ने प्रवेश किया। वो रोमा और मार्गरेट थे।

वो दोनों ही बहुत डरे हुए थे, मगर फिर भी आगे बढ़ रहे थे। चारों ओर मनहूस सा सन्नाटा अंधकार के साथ सुर-ताल मिला रहा था। चिंगारियां तो बुझ गई थीं, पर हवा में अभी भी माया की जलती हुई चिता की गरमी मौजूद थी।

वो दोनों धीरे-धीरे आगे बढ़े और फिर माया की जली हुई लाश के पास पहुँचे। उसकी उस ख़ौफनाक लाश को देखकर उन दोनों की ही घिग्घियॉ बंध गई थीं। मार्गरेट और रोमा के हाथ में था... माया का कटा हुआ वही हाथ, जो गायब हो गया था। उन्होंने कपड़े से अपनी नाक और मुँह को ढँका और अपने डर को किसी तरह काबू में करते हुए उस कटे हुए हाथ को उसकी जगह में रख दिया। इसके बाद उन्होंने एक पोटली निकाली और उसमें से कोई पावडर जैसी चीज निकालकर उसे कटे हुए हिस्सों के पास अच्छी तरह से डाल दिया। इतना करते हुए उन दोनों की ही ऑखों से ऑसू निकल आए थे। अपनी सिसकियों को गले की ही कैद में रखकर वो दोनों अपना काम करके तेजी से पीछे भागे और एक जगह खड़े होकर उस शव की ओर देखने लगे।
और फिर उस धुंआ उठते माहौल और गर्म राख की ढेर पर गिरे पड़े उस बेजान.... बुरी तरह से झुलसे हुए शरीर में एक हलचल सी हुई। वो दोनों ये देखकर बुरी तरह से सहम गई और तेजी से चार कदम पीछे गईं। सामने की ओर देखती उनकी ऑखें फैलकर दोगुनी हो गई थीं। अपने गले को थूक से तर करती हुई वो दोनों आसपास फैली हवा की गर्मी से ज्यादा डर से भीग चुकी थीं और आगे होने वाली घटना का इंतजार कर रही थीं क्योंकि उनसे यही कहा गया था।

फिर उन दोनों को बेहद दर्द से भरी एक कराह सुनाई दी, जो धीरे-धीरे बढ़ने लगी। वो दर्द भरी आवाज़

उन दोनों को ही कानों में टूटे हुए शीशे की तरह चुभ रही थी। डर से उन दोनों के चेहरों पर हवाईयाँ उड़ने लगी थीं और ऑखें पूरी तरह से भीग चुकी थीं।

और फिर उनकी भीगी ऑखें दहशत से पूरी तरह से फट गईं, जब एक बार फिर से दर्दनाक चीखों के साथ उनके सामने पड़ा वो जला हुआ शरीर शोलों से घिर गया और फिर ख़ौफ की नई इबारतें लिखते हुए वो एक तेज चिंघाड़ के साथ खड़ी हो गई। आसपास के माहौल में एक नाम पूरी ताकत से गूंजा। "चैतन्य!"

गुफा में सबको धमकी के साथ छोड़कर अल्फ़ी जूनूनी हालत में मेंशन की ओर चल दिया। उसका दिल और दिमाग एक तूफान अपने अंदर छिपाए हुए था, जो बाहर आने और सब कुछ तबाह करने को बेताब था। अल्फ़ी को मेंशन के अंदर जाने के हर एक खुफिया रास्ते का पता था, इसलिए उसे मेंशन के अंदर जाने में कोई भी परेशानी नहीं हुई। वो बड़ी ही आसानी से उसकी ऊँची दीवारों के पार चला गया। उसने सिर उठाकर उस मेंशन की ऊँचाई नापी। दिन का आखिरी पहर खत्म होने को था। शाम धुंधली होने लगी थी। उसके पास अगले तीन घंटे का समय था.. जिसके बाद दूसरे पहर के शुरू होने के साथ ही सुरमी कबीले वाले उसकी हेममाया के बेजान शरीर को सजा देने वाले थे। उसे अब भी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर एडवर्ड करने क्या वाला था? वो आखिर किस तरह से एक मृत शरीर को जीवित साबित कर उसे सजा दिलाने की फिराक में था? सवाल तो और भी थे... मगर अल्फ़ी उन सभी सवालों के भँवर से बाहर निकलकर आगे बढ़ गया था। उसे अब कोई जवाब नहीं चाहिए था। उसे अपनी पत्नी का मृत शरीर चाहिए था, जिसे वो सम्मान से अंतिम विदाई
देना चाहता था। उसे जीवित करने की उसके मन में अब कोई मंशा नहीं थी... जबकि वो जान चुका था कि अनामिका उसकी माया की आत्मा का ही सृजन थी।

वो चौकस निगाहों के साथ मेंशन के अंदर घुस गया। उसे अंदर जाने में कोई भी तकलीफ़ या परेशानी नहीं हुई। बिना किसी रोक-टोक वो मेंशन की दूसरी मंजिल में पहुँच गया। उसे खबर मिली थी कि एडवर्ड दूसरी मंजिल में स्थित एक बड़े से हॉल जैसे कमरे में था, जहॉ वो अक्सर खुद को बंद रखा करता था।

वो एडवर्ड की मॉ का कमरा था, जो उनकी मृत्यु के बाद खाली रह गया था। एडवर्ड की मॉ को अपनी मर्जी के खिलाफ सर विलियम से विवाह करना पड़ा था, क्योंकि उनके समाज में ऊपरी ताम-झाम और चमक-दमक ज्यादा मायने रखती थी और सर विलियम एक उज्जवल भविष्य की पूरी गारंटी रखते थे। सर विलियम ने भी अपने मरणासन्न पिता के दबाव में आकर ये विवाह किया था, जिसे निभाने में वो ईमानदार नहीं रह सके। सर विलियम और उनके बीच के वैचारिक मतभेदों ने उन दोनों को कभी भी करीब होने नहीं दिया, जिसका सबूत दोनों के अलग-अलग कमरे थे।

एडवर्ड की मॉ का भाई पीटर अल्बर्ट भी सर विलियम को पसंद नहीं करता था। वो दूसरे पिशाचों की तरह ही शुद्ध खून और प्रतिष्ठा पर यकीन रखता था... जबकि सर विलियम का नज़रिया इन सबको लेकर लचीला था और अपने इसी नज़रिए की वजह से ही वो कईयों की नज़रों में चुभते थे। मगर तांत्रिक समुदाय से उन्हें पूर्ण समर्थन प्राप्त था और वो काबिल भी बहुत थे, जिसकी वजह से उनका विरोध करना संभव नहीं हो सका। लेकिन अंदर ही अंदर होने वाली सुगबुगाहटों की आवाज सर

विलियम तक हमेशा पहुँचती रही।

इन्हीं उलझे हुए रिश्तों के बीच सर विलियम का दिल मीना में उलझ गया। एक बार मीना ने ही सर विलियम की जान उनके दुश्मनों से बचाई थी, जिन्होंने उन पर हमला किया था। मीना एक अनाथ लड़की थी, जो उस समय जंगल में सूखी लकड़ियों की तलाश में आई थी और उसे सर विलियम घायल अवस्था में मिल गए। वो उन्हें अच्छी तरह से पहचानती थी, इसलिए किसी तरह मीना, सर विलियम को बचाकर उसी फॉरेस्ट केबिन में ले गई थी, जो बाद में कई घटनाओं का गवाह बना था। जब मीना ने सर विलियम की जान बचाई थी, उसके बाद वो उसकी सादगी और नर्मदिली से प्रभावित होकर उसकी ओर खिंचते चले गए। उन्होंने उसे मेंशन में नौकरी दी, ताकि वो उसके पास रह सके। मीना भी उनके मन के अहसासों में भीगती हुई उनके करीब होती चली गई। वो जानती थी कि सर विलियम और उनकी पत्नी के बीच कुछ भी सही नहीं था और वो इस रिश्ते को लेकर गंभीर भी नहीं थी, जिसकी वजह से सर विलियम हमेशा ही मानसिक खालीपन के तनाव से गुजरा करते थे। सर विलियम के जीवन की इस कमी को मीना की फिक्र ने पूरी तरह से भर दिया था। इतना होकर भी उनके बीच का रिश्ता पूरी तरह से मर्यादित था। उन दोनों ने ही कभी भी मर्यादा की उस पतली लकीर को पार करने की कोशिश नहीं की।

और फिर वो दिन भी आया... जब बहुत कुछ बदलकर रह गया। सर विलियम की पत्नी को दोनों के रिश्ते की खबर लग चुकी थी... मगर चूंकि वो सर विलियम की ओर से उदासीन थी.. इसलिए उसे कभी कोई भी फर्क नहीं पड़ा। लेकिन जीवन का एक दूसरा पहलू उसके दिमाग पर हावी होने लगा था और वो था... एक वारिस की चाह! वो जानती थी कि सर विलियम की तरफ से मिले अपने पत्नी के अधिकारों पर उसे कभी भी मान नहीं होने वाला था... पर उसे उस रूतबे और सम्मान की चाहत थी और इसके लिए उसने अपनी संतान पर नज़रें टिकाई। चूंकि पिशाच आसानी से संतान उत्पन्न नहीं कर सकते थे.... और सर विलियम भी इसके लिए फिलहाल राजी नहीं थे। इसलिए उनकी पत्नी ने उन्हें बिना बताए ही दवा का प्रयोग करने की ठान ली। मगर वो नहीं जानती थी कि इससे होने वाला असर सदियों तक रहने वाला था।

सर विलियम को खबर नहीं थी कि उनकी पत्नी ने उन्हें ऐसी कोई दवा दी थी। हर बात से बेखबर एक बार फिर से वो अपनी पत्नी से किसी बहस में उलझ पड़े और गुस्से में वहॉ से चले गए। मीना ने जब उन्हें बहुत ही गुस्से में बाहर जाते देखा, तो उनके पीछे गई। उसे उनकी हालत सही नहीं लग रही थी। वो जानती थी कि वो उसी फॉरेस्ट केबिन की ओर गए होंगे। सर विलियम की फिक्र उसे उनके पीछे उस केबिन तक ले गई और फिर उस दवा के असर से वो हो गया... जो वो दोनों ही नहीं चाहते थे। जब होश आया तो दोनों की ही नज़रें एक-दूसरे का सामना करने से कतरा रही थी। मीना तो वहॉ से लौट आई, मगर सर विलियम ने वो पूरी रात उसी केबिन में गुजार दी। उनकी पत्नी बस इंतजार करती रह गई। अगले एक-दो दिनों में ही उन दोनों की एक-दूसरे से कतराती नज़रों ने विलियम की पत्नी पर सारा राज खोल दिया और फिर उसने सर विलियम के सामने जब उनकी गलती का जिक्र किया, तब उस गलती के अहसास से जमीन में गड़े हुए सर विलियम को अपनी गलती का खामियाजा अपनी पत्नी के गर्भ में अपने बीज के रूप में भरना पड़ा, जिसमें प्रेम अंश मात्र भी नहीं था।

सर विलियम को लगा कि सब सही हो गया है... पर उनकी पत्नी वो जानती थी, जिसकी भनक उन्हें या मीना को दूर-दूर तक नहीं थी। सर विलियम तो मीना से विवाह के बारे में सोचने लगे थे। उनकी पत्नी जानती थी कि उस दवा के असर से मीना का गर्भवती होना तय था और निश्चित तौर पर वो उसके पति की पहली संतान होती। पिशाचों में पहली संतान बहुत मायने रखती थी। अगर मीना की संतान सबके सामने आ जाती तो उसकी अपनी संतान से सारे अधिकार छीन जाते। इसलिए उसने जानबूझ कर ऐसे कठिन हालात पैदा कर दिए, जिसकी वजह से अंततः सर विलियम को ना चाहते हुए

भी अपने दिल पर पत्थर रखकर मीना को उसकी हिफाजत के लिए खुद से दूर करना पड़ा। वो उन दोनों की आखिरी मुलाकात थी। वो अक्सर अपनी टूटी हुई हालत में उस केबिन में जाया करते थे, जहॉ उन्होंने मीना के साथ अपने जीवन के खुशनुमा पल बिताए थे। मीना का पेंडेंट, उसका वो रूमाल जो उसने पहली मुलाकात पर सर विलियम के ज़ख्मों पर बांधा था... ने उन्हें मीना से कभी अलग होने नहीं दिया। एक-दो बार उन्होंने ढके-छिपे मि. हेनरी से मीना की जानकारी लेनी चाही, मगर मीना की मनाही के कारण भी. हेनरी ने उन्हें मीना और अल्फ़ी से जुड़ी कोई भी बात नहीं बताई और उनके जीवन का इतना बड़ा राज
उनसे छिपा ही रह गया।

दूसरी ओर सर विलियम के मन में मीना के प्रति तड़प की वजह से उनकी पत्नी ने मीना को हमेशा अपनी निगरानी में रखा और इस काम उसकी मदद की उसके भाई पीटर ने। वो चाहते तो मीना और अल्फ़ी को उसी समय मार देते... मगर एडवर्ड के जन्म के साथ ही पीटर की ऑखें एक शैतानी चमक से भर गई। उसने ही मीना और अल्फ़ी के जीवित रहने में ही सबकी भलाई होने की बात अपनी बहन के मन में डाली, जिससे वो मीना की ओर से शांत पड़ गई।

पीटर ने समय के साथ अपने मंसूबों में रंग भरना जारी रखा। उसने ही एडवर्ड के अंदर अपने पिता के लिए जहर भर दिया। एडवर्ड की मॉ की मृत्यु के बाद उसके गर्म तेवर एडवर्ड ने अपना लिए... इसलिए मीना को वापस लाने का विचार सर विलियम के ख्यालों में भी कभी नहीं आया और वो अल्फ़ी के लिए अपनी मोहब्बत से महरूम रह गए। पर अल्फ़ी हमेशा से ही पीटर की नज़रों में था। उसने नौजवान होते एडवर्ड को भी अल्फ़ी के बारे में सब बता दिया और यहॉ से शुरू हुआ एडवर्ड के दिल में अल्फ़ी के लिए नफ़रत का पनपना।

पीटर हमेशा एडवर्ड को ये अहसास दिलाता रहा कि मीना की वजह से ही उसकी मॉ और खुद एडवर्ड के अधिकारों में सेंध लग गई थी। अल्फ़ी की मौजूदगी एडवर्ड को हमेशा दोयम होने का अहसास कराती रही और उसके अंदर के जहर को और भी बढ़ाती रही। पीटर ने उसके अंदर के इस जहर का बखूबी इस्तेमाल किया। उसने एडवर्ड को अपनी शक्तियों को बढ़ाने का मशविरा दिया और यहॉ से ही एडवर्ड छद्म पिशाच साधना की ओर मुड़ा। उसने एक लंबी और बोझिल साधना के साथ हालिया समय तक का सफर किया, जो एक आखिरी बलि के इंतजार में थीं और वो सबके अनुसार अल्फ़ी ही था। अपने इस लक्ष्य को पाने के लिए एडवर्ड ने माया से हाथ मिलाया, ताकि हेममाया के जरिए वो अल्फ़ी को यहॉ
फँसाकर रख सके और समय आने पर अपना मतलब पूरा कर सके। मगर चैतन्य और अनामिका के अप्रत्याशित आगमन से उसकी योजना अपने आखिरी दौर में बिगड़ने लगी थी, जिससे वो और पीटर दोनों ही बुरी तरह से झल्ला उठे थे। उन्हें अल्फ़ी चाहिए था... हर हाल में चाहिए था, जिससे एडवर्ड अपनी साधना पूरी कर सके। वो उससे इतनी नफ़रत करता था कि उसने अल्फ़ी के जीवन में ज़हर घोलने का कोई भी मौका नहीं छोड़ा और अब वो उसे मारने से पहले उसे एक और चोट देने की फिराक में था, इसलिए ही उसने हेममाया के मृत शरीर को अपने कब्जे में रखा था। अपनी नफ़रत में अंधे हो चुके एडवर्ड को अल्फ़ी को दर्द में देखकर एक अजीब सा सूकून मिलता था। वो हर्गिज नहीं चाहता था कि अपनी आखिरी सॉस तक भी कोई खुशी अल्फ़ी को हासिल हो और वो ऐसा करने भी वाला था। इसीलिए वो आज तांत्रिक श्रेष्ठ के इलाके में जाकर उसके जख़्मों को कुरेद आया था। वो जानता था कि दिल से घायल अल्फ़ी उसके पास खुद ही आएगा और उसके जाल में फँस जाएगा और वही हो भी रहा था।

गुस्से की आग में धधकते हुए अल्फ़ी ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया कि वो कितनी आसानी से मेंशन के अंदर आने के बाद बिना किसी परेशानी के दूसरी मंजिल के उस कमरे तक पहुँच गया था। उसे तो

यही लग रहा था कि वो बहुत ही सावधान था। उस बंद कमरे के दरवाजे को देखकर अल्फ़ी के होंठ मुस्कुराए और फिर उसने आगे बढ़कर उसी जादुई चाबी से वो दरवाजा खोल दिया। अंदर पहुँचकर उसने देखा कि पूरे कमरे में अंधकार छाया हुआ था। चारों ओर नज़र दौड़ते अल्फ़ी को जब ऐसा लगा कि वो कमरा खाली है.. तो वो झुंझलाकर वहाँ से जाने के लिए पलटा और उसी समय एक सर्द सी आवाज़ उसके कानों से टकराई।

"हैलो ब्रदर!"

और ये सुनते ही अल्फ़ी के माथे पर शिकन पड़े थे। वो उस आवाज की दिशा में घूमा, तो उसने बाहर से आती रोशनी में खिड़की पर खड़े एक
काले साए को देखा और वो समझ गया कि एडवर्ड से उसकी मुलाकात का इंतजार खत्म हो गया था। वो तेजी से उसकी ओर बढ़ा ही था कि तभी उसके पैर जमीन पर पड़ी किसी भारी-भरकम चीज से उलझकर लड़खड़ा गए। वो मुँह के बल नीचे की ओर गिर गया और ताजे खून की महक उसके नथुनों में भर गई। जो हुआ उसे समझने के लिए उसने अपने हाथों से टटोलते हुए आसपास का जायजा लिया और फिर उसके हाथ एक बेजान पड़े शरीर से टकराए। एक भयानक सा ख्याल अल्फ़ी को अंदर तक हिला गया। वो अभी उठने की कोशिश कर ही रहा था कि तभी उस कमरे के चिराग एक-एक करके रोशन हो गए और वो कमरा साफ़ रोशनी से भर गया। घुटनों और हाथों के बल झुके हुए अल्फ़ी ने चारों ओर नज़र दौड़ाई तो उसका दिल दहल उठा। पूरा कमरा उन सभी गार्ड्स की लाश और उनके खून से अटा पड़ा था... जिन्होंने उनकी मदद की थी। वो अभी इस सदमएं से बाहर आ पाता... उससे पहले ही एडवर्ड की अगली आवाज ने उसके होश उड़ा दिए।

"ये क्या कर दिया अल्फ़ी? गुस्से में इतने गार्ड्स की हत्या क्यों की तुमने? तुम्हें मुझसे समस्या थी तो मेरा सामना करना था। अब तो तुम्हारे गुनाह और भी गंभीर हो गए हैं और इसके लिए तुम्हें आज की रात ही मौत की सजा दी जाएगी।"

और अतीत का जहर एक बार फिर उसे एक और मौत देने को तैयार था, मगर वो नहीं जानता था कि समय अपनी करवट बदलने वाला था।

अल्फ़ी ने खड़े होते हुए चारों ओर देखा। मासूमों की लाशों के ढेर पर शान से खड़ा वो निर्दयी पिशाच बिना किसी शक दुनिया की सबसे घिनौनी चीज लग रहा था। अल्फ़ी ने जमीन पर पड़े उन गार्ड्स की ओर देखा, जो अपने ही खून से नहाए हुए बेजान पड़े थे। अल्फ़ी की आँखों के पर्दे के सामने उन सभी के हँसते-मुस्कुराते हुए चेहरे लहरा गए और पल भर में ही उसकी आँखें नम हुई थीं।

"च्च्च्च्! कैसे पिशाच हो तुम.... जिसकी आँखें बात-बात पर भर आती हैं। इस तरह टेसुएँ बहाना हम पिशाचों को सूट नहीं करता है। थोड़ी तो पिशाचों की मर्यादा का ख्याल रखो... या फिर... पिता की

सारी गिरी हुई आदतें तुम्हें ही विरासत में मिल गई हैं।" एडवर्ड ने बहुत ही हिकारत भरे लहजे में कहा। पिता के अपमान भरे जिक्र ने अल्फ़ी का माथा गर्म कर दिया था। उनके साथ अल्फ़ी ने जो भी वक्त गुजारा था... उसमें वो उनके नर्म दिल और भलमनसाहत को पहचान चुका था।

"सही कहा! बरसते तो वही हैं ना... जो भरे हुए होते हैं! तुम्हारे जैसे खाली और खोखले लोग तो बस शोर करना जानते हैं। उनके अंदर कहाँ ऐसा जज़्बा? छोड़ो! वैसे भी... ये बड़ों की बातें हैं। तुम जैसे छोटे लोगों की समझ में नहीं आएगी। वैसे परिवार में सबसे छोटे होने का ही असर है या फिर ऐसी ओछी और छोटी हरकतें करना शौक है तुम्हारा?" तुम्हारा और
छोटा शब्दों पर जोर डालकर अल्फ़ी ने एडवर्ड के अहंकार पर चोट करते हुए कहा, जिस पर एडवर्ड तिलमिलाया था।

"ओह! मुझे नहीं लगा था कि... अब भी ज़बान में ताकत बची होगी तुम्हारे! पर तुम तो... अभी भी बोल रहे हो.. वो भी मेरे खिलाफ! मालूम नहीं क्या तुम्हें.... कि मुझे... ख़िलाफत पसंद नहीं।" चिढ़े हुए एडवर्ड ने सामने पड़े गार्ड की लाश के चेहरे पर अपने पैर रखकर उसे रौंदते हुए बहुत ही तंजिया लहज़े में कहा।

उसकी इस हरकत से अल्फ़ी बुरी तरह से भड़क गया। वो गुस्से में अपने जबड़े भींचें उसकी ओर बढ़ने को हुआ ही था कि एडवर्ड ने अपना हाथ आगे करके उसे टोका।

"आ...! ना.. ना! ऐसी ग़लती मत करना! तुम्हें कुछ हुआ तो... किसी को कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है, मगर.... मुझे कुछ हुआ... तो चाहकर भी दूसरा जनम नहीं ले पाओगे कभी... बिल्कुल.... अपनी... हेममाया की तरह!" एडवर्ड ने अल्फ़ी की दुखती हुई रग को छेड़ते हुए कहा।

हेममाया के जिक्र से अल्फ़ी विचलित जरूर हुआ... मगर उसने एडवर्ड के सामने ये जाहिर नहीं किया। वो उसके सामने कमजोर पड़ने के लिए नहीं आया था। अल्फ़ी को अच्छी तरह से पता था कि वो कभी भी एडवर्ड की तरह चालाक नहीं हो सकता था और ना ही उसकी तरह चालें चल सकता था। वो बस उसका विरोध कर सकता था और यही उसकी ताकत बन सकती थी। विरोध... हर उस चीज का... जो उसे गलत लगे। अब तक एडवर्ड ने जो भी किया... किया। पर अब वो एडवर्ड को कुछ और गलत नहीं करने देगा।

"मुझे हेममाया का शरीर चाहिए.." अल्फ़ी ने मुद्दे पर आते हुए कहा।
"जो तुम्हें कभी नहीं मिलेगा।" एडवर्ड ने उतनी ही तेजी से उसकी बात काटते हुए कहा।

"तुम चाहते क्या हो एडवर्ड? मुझे मारना? तो लो... तुम्हारे सामने ही खड़ा हूँ मैं। बंद करो ये चूहे-बिल्ली का खेल! जो करना चाहते हो कर लो... पर मुझे हेममाया दे दो। वो तो मर चुकी है। हर तकलीफ़ से बाहर जा चुकी है। अब तो उसे बख़्श दो।" अल्फ़ी ने भरे हुए दिल और गले से एक आखिरी बार नर्म लहजे का इस्तेमाल करते हुए कहा।

"नो! नॉट एट ऑल! मैं तुम्हें ऐसी कोई भी वजह नहीं देना चाहता.. जिससे तुम्हें सूकून मिले। तुम अपनी आखिरी सॉस तक तड़पोगे... मौत की भीख मांगोगे.. गिड़गिड़ाओगे.... पर... वो भी नसीब नहीं होगी तुम्हें।" अपने भिंचे हुए जबड़ों के साथ एक-एक शब्द को चबाते हुए एडवर्ड बोला। बोलते हुए उसका सारा चेहरा गुस्से से लाल हो चुका था।

"पर तुम तो मेरी बलि देना चाहते हो ना!" अल्फ़ी ने हैरानी से पूछा।

"अच्छा! तुम्हें ऐसा लगता है! पर अफसोस! तुम ग़लत हो! अभी तो और भी कांटें हैं मेरी झोली में... तुम्हारे दिल में चुभाने के लिए। इतनी आसान मौत थोड़ी ना दूंगा मैं तुम्हें। कहा ना... तुम भीख मांगोगे तो भी मौत नहीं मिलेगी तुम्हें।" एडवर्ड ने जहरबुझी आवाज में कहा।

और ये सुनते ही अल्फ़ी का माथा घूमा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि एडवर्ड चाहता क्या है? लेकिन अब वो उसकी बेहूदी और फिजूल बातों से थक गया था। उसने आखिरी बार बात करके सुलह करने की कोशिश की... मगर अल्फ़ी ये बात समझ चुका था कि एडवर्ड टेढ़ी चीज था और उसके लिए टेढ़ा रास्ता अपनाने का समय भी आ चुका था। अल्फ़ी ने अपने कपड़ों में छिपाया हुआ खंज़र बाहर निकाला और एक ही छलांग में वो एडवर्ड के पीछे खड़ा था। इससे पहले कि एडवर्ड कोई प्रतिक्रिया देता.. अल्फ़ी ने बिजली की तेजी से एडवर्ड की गर्दन को अपनी बांह में फँसाया और फिर उसके घुटनों के पीछे वार करते हुए उसे घुटनों के बल जमीन पर गिरा दिया। एडवर्ड कुछ समझ पाता उससे पहले ही पलक झपकते उसने वो खंज़र एडवर्ड की गर्दन पर टिका हुआ था। उस खंज़र की तेज और ठंडी धार वो बाखूबी महसूस कर रहा था।

"अब बोलो! कहाँ है हेममाया का शरीर? वरना आज तेरी बलि चढ़ाऊंगा मैं।" अल्फ़ी ने गुस्से में थरथराती हुई आवाज में कहा।

पहले तो एडवर्ड अचानक हुए इस घटनाक्रम से भौंचक्का सा हुआ... मगर अगले ही पल एक बार फिर कमीनगी उसकी आँखों में उतरी। एक वहशी मुस्कान उसके होठों पर आई और वो बोला, "तो मारो! फिर भूल ही जाना हेममाया को... एंड एम प्रॉमिस.... कि तुम्हारी हेममाया का शरीर जानवरों का निवाला बने इसका पूरा इंतजाम कर दिया है मैंने।"

उसकी ये बात सुनते ही उसकी गर्दन पर खंज़र को कसते हुए अल्फ़ी ने कुछ कहना ही चाहा था कि तभी.... दरवाजा खुला और पीटर तेजी से कमरे के अंदर आया। वो परेशान था और परेशानी उसके चेहरे से टपक रही थी। अंदर का नज़ारा देखकर उसकी आँखें हैरत से सिकुड़ी और फिर अल्फ़ी-एडवर्ड पर जाकर टिक गई। उसे देखकर अल्फ़ी ने एडवर्ड पर अपनी गिरफ्त और भी कसी थी।

"वॉट्स हैप्पिनिंग... हियर?" दोनों पर नजर डालते हुए पीटर ने बड़े ही आराम से आगे बढ़ते हुए सवाल किया।

"वहीं रूको। वरना अभी इसकी गर्दन उड़ा दूंगा।" पीटर को आगे बढ़ता हुआ देखकर अल्फ़ी पूरी ताकत से चिल्लाया। उसकी धमकी को सुनकर पीटर अपनी मुठियाँ भींचकर गुर्राया।
"डोंट वरी अंकल पीटर! वी आर जस्ट टॉकिंग अबाऊट समथिंग वैरी इंपोर्टेंट।" माहौल ब गड़ता देख एडवर्ड ने बड़े ही इत्मीनान से जवाब दिया और उसकी बेफिक्री से अल्फ़ी और भी तपा था।

"लाइक दिस!" पीटर ने हैरत जताते हुए कहा।

"याह! बाई द वे.... यू हैव केप्ट दैट बॉडी इन द राइट प्लेस? अल्फ़ी केयर्स अबाउट हर अ लॉट! राइट अल्फ़ी?" पीटर के साथ आँखों ही आँखों में बात करते हुए एडवर्ड ने अल्फ़ी को चिढ़ाते हुए कहा, जिसका असर अल्फ़ी पर साफ दिखाई दिया था।

"ओह याह! एक्जैक्टली एज़ यू विश! शी हैज़ बीन सेंट टू हर राइटफुल प्लेस! बट ऐडी... हियर वी हैव एनॉदर बिग प्रॉब्लम!" पीटर ने इस बार संजीदगी से कहा और ये सुनते ही अल्फ़ी की पकड़ एडवर्ड पर कमजोर पड़ी थी और एडवर्ड ने तुरंत ही इसका फायदा उठाया। उसने अल्फ़ी के हाथों को आगे खींचकर एक तेज झटका दिया, जिससे अल्फ़ी उसके ऊपर से उछलकर उसके सामने पीठ के बल गिरा। वो संभल पाता उससे पहले ही एडवर्ड ने तेजी से उसे उठाकर.... उसकी खंज़र वाली कलाई मरोड़कर... उसी की पीठ से लगाई और फिर अपनी दूसरी बांह अल्फ़ी की गर्दन में लपेटी। पहली बार अल्फ़ी को पता चला कि एडवर्ड कमीना होने के साथ-साथ ताकतवर भी था।

"बिग ब्रदर! सिर्फ ताकत होने से कुछ नहीं होता। हमसे जीतने के लिए हमारे जितना कमीनापन कहॉ से लाओगे?" एडवर्ड ने अल्फ़ी का खंज़र उसी की गर्दन पर रखते हुए कहा। अल्फ़ी उसकी पकड़ में छटपटाकर रह गया।

"ऐडी! लीव दिस स्टुपिड! वी लॉस्ट हर!" सामने की उठा-पटक से उकताकर पीटर ने बहुत ही उतावलेपन से कहा और ये सुनते ही एडवर्ड के
चेहरे का रंग भी भक्क से उड़ा था।

"एंड हू टोल्ड यू दिस?" एडवर्ड ने उतनी ही गंभीर आवाज में पूछा।

"दे टोल्ड! इवन... शी डिडन्ट नो अबाउट दिस! व्हेन शी केम टू नो.... आफ्टर दैट... शी आल्सो सेंट अस द न्यूज एंड नाऊ वी नीड टू चेंज अवर प्लान! देयर इज़ नो अदर वे फॉर अस।" पीटर ने अल्फ़ी की ओर इशारा करते हुए बड़ी ही चिढ़ के साथ कहा।

"मुझे पता था! मैं जानता था कि ये औरतें किसी काम की नहीं। अब मैं इनके भरोसे में नहीं रह सकता। वरना इतने सालों की मेहनत और इंतजार बर्बाद हो जाऍंगे। भाड़ में जाऍं सब! हम अपना काम शुरू करते हैं।" एडवर्ड भी गुस्से में ज्वालामुखी बनते हुए बोला।

अल्फ़ी उन दोनों की बातों को समझने की कोशिश कर रहा था, मगर उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। कौन खो गई? किसकी बात कर रहे थे ये दोनों? कहीं परिधि की तो नहीं? अनामिका ने उसे बताया था कि वो गायब है। उसके साथ ये दोनों क्या करने वाले थे? सवालों का एक तेज बवंडर उसे अपने साथ उड़ा ले जाने को तैयार था, जिसकी मंजिल कहीं नहीं दिख रही थी। पर हॉ... वो इतना जरूर समझ गया था कि उन दोनों को अब उसकी जरूरत है। इसलिए उसने उनके सामने खुद को लाचार छोड़ रखने में ही बेहतरी समझी। उसे हर हाल में सजा के समय से पहले हेममाया के शरीर तक पहुँचना था और इसके लिए वो कुछ भी करने और कुछ भी झेलने को तैयार था।

"ओके! कॉल द गार्ड्स!" एडवर्ड ने पीटर से कहा और फिर पीटर तेजी से बाहर चला गया।

"लगता है कि ऊपर वाले को तुझपर रहम आ गया। तैयार हो जा मरने के
लिए। पर मरने से पहले तुझे एक बार फिर से तड़पता हुआ देखना चाहता हूँ। बोल! देखेगा अपनी माया को जलते हुए। अब तो उसे हम भी सुरमी कबीले के गुस्से से नहीं बचा सकते। तुझे जानना था ना... कि तीन दिन पहले मरने के बाद भी सबको क्यों लग रहा है कि वो जिंदा है! वो क्या है ना! परिधि ने ही अपनी दवा से उसके शरीर को इस तरह जिंदा हालत में रखा है। मतलब कि.. उस दवा के कारण किसी को पता ही नहीं चलेगा कि हेममाया तीन दिन पहले ही मर चुकी है। मानता है ना परिधि को। सच तो यही है कि... कुछ नहीं करके भी वो ही हमारे सारे षड्यंत्र की कर्ता-धर्ता है। सब उसी का किया धरा

है। अगर वो नहीं होती... तो हम कभी भी कामयाब नही होते। उसने भी... हमने जो कहा... बिना सवाल किए चुपचाप किया। उसे... शुक्रिया जरूर कहूंगा मैं!" एडवर्ड ने एक और खुलासा करते हुए अल्फ़ी के अंदर परिधि के नाम का जहर भरा था।

"परिधि!" अल्फ़ी मन ही मन में गुर्राया था।

उसी समय कुछ गार्ड्स वहाँ पहुँचे। उन गार्ड्स ने अल्फ़ी के हाथों में शक्तिनियंत्रक बेड़ियाँ पहनाई और उसे अपने क़ब्ज़े में ले लिया।

"अंकल कहाँ हैं?" एडवर्ड ने पूछा।

"सर! बाहर डाकिनी आई हुई हैं। उन्हीं से बात कर रहे हैं।" एक गार्ड ने जवाब देते हुए कहा।

"वो इस समय यहाँ क्या कर रही हैं?" एडवर्ड ने जानकारी लेनी चाही।

"पता नहीं सर! पर वो बहुत परेशान लग रही हैं। रो भी रही हैं।" एक दूसरे गार्ड ने कहा।

"ये औरत भी ना! दूसरा पहर लगने वाला है। बॉडी सुरमी कबीले वालों
को सौंपनी है और ये हमारा वक्त बर्बाद कर रही है। तुम लोग इसे भी वहीं लेकर चलो। ये भी तो देखे कि हमारे खिलाफ जाने की सजा क्या होती है? तब तक इस मुसीबत को हटाऊं यहाँ से।" एडवर्ड ने बड़ी ही चिढ़ और गुस्से से कहा और बाहर की ओर बढ़ा। बस उसी समय दरवाजा झटके से खुला और पीटर लगभग दौड़ते हुए अंदर आया।

"Eddy! It's gone wrong. Maya has confessed all her crimes in front of the Surmai sardar. Now they are going to punish her. They don't want Hemamaya anymore. Dakini has come here to ask for help.(ऐडी! गड़बड़ हो गई है। माया ने अपने सारे गुनाह सुरमी सरदार के सामने कबूल कर लिए हैं। अब वो उसे सजा देने वाले हैं। उन्हें अब हेममाया नहीं चाहिए। डाकिनी मदद मांगने यहाँ आई है।)" पीटर ने एक ही साँस में पूरी बात कह दी।

उसकी बात सुनते ही एडवर्ड के चेहरे का हर रंग उड़ गया और वो बहुत ही घबराया हुआ दिखाई देने लगा।

"एंड हू मेड ऑल दिस मेस?" एडवर्ड गुस्से में थरथराते हुए शरीर के साथ चिल्लाया।

"Chaitanya! He is the one who did it. I already told you not to underestimate him. You have made a big mistake by falling prey to Maya's words. It is thankful that Maya did not take our name. Otherwise everything would have been ruined today. (चैतन्य! उसी ने किया है। मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि उसे हल्के में मत लो। उस माया की बातों में आकर तुमने बहुत बड़ी ग़लती कर दी है। वो तो शुक्र है कि माया ने हमारा नाम नहीं लिया.. वरना आज सब
कुछ बर्बाद हो जाता।)" पीटर ने बहुत ही भन्नाई हुई आवाज में कहा।

"चैतन्य! चैतन्य! चैतन्य! परेशान करके रख दिया है इसने! तुम्हें नहीं छोड़ूंगा!" अपने सभी काम बिगड़ते हुए देखकर एडवर्ड किसी जानवर की तरह चिल्लाया था और उसे इस तरह तिलमिलाता हुआ देखकर अल्फ़ी ने जोरदार ठहाका लगाया था, जो उस कमरे की दीवारों से टकराकर एडवर्ड के कानों तक पहुँचा था। एडवर्ड ने आग निकलती नजरों से उसे घूरा था। अल्फ़ी ने भी उसे देखकर मुस्कुराने में कोई कंजूसी नहीं की बल्कि उसने उसे और भी चिढ़ाने वाले अंदाज में देखा था।

"च्च्च्च्! पूअर ऐडी!" अल्फ़ी ने उसे चिढ़ाते हुए कहा और फिर से हँसने लगा।

उसकी वो बेलगाम हँसी एडवर्ड को सिर से पैर तक सुलगा गई। वो तैजी से उसके पास आया और उसने पूरी ताकत से एक पंच अल्फ़ी के चेहरे पर मारा, जिससे अल्फी का चेहरा एक ओर मुड़ गया। उसके नाक और होठों से खून निकलने लगा। उसी हालत में ही अल्फ़ी ने एक और चिढ़ाने वाली नजर एडवर्ड पर डाली। एडवर्ड गुस्से में एक बार फिर उसकी ओर बढ़ा... मगर तभी पीटर ने उसे आगे बढ़कर रोक दिया।

"What are you doing, Eddy? Everything is messed up. We should focus on our purpose. Let everyone go to hell! You go there! I come there after meeting all of them. Now we don't have both.... time and opportunity.("क्या कर रहे हो ऐडी? सब गड़बड़ हो चुकी है। हमें
अब अपने उद्देश्य पर ध्यान देना चाहिए। सबको भाड़ में जाने दो! तुम वहीं पहुँचो! मैं उन सभी से मिलकर आता वहीं आता हूँ। अब हमारे पास समय और मौका दोनों ही नहीं हैं।)" अपनी बात कहते हुए पीटर बाहर की ओर जाने लगा।

"अंकल! मुझे वो लड़की अनामिका चाहिए। इन दोनों को सबक सिखाने का रास्ता उसी लड़की से होकर जाता है। वो तांत्रिक श्रेष्ठ के आसपास ही होगी। माफ नहीं करूंगा किसी को। मरने से पहले सब भुगतेंगे और शुरुआत होगी हेममाया और उस अनामिका की दुर्गति से।" एडवर्ड गुस्से में कॉपते हुए बोला और उसकी बात सुनकर पहली बार अल्फ़ी बुरी तरह से छटपटाया था।

"एज़ यू विश!" कहते हुए पीटर तेजी से बाहर की ओर निकल गया।

"इसे ठिकाने पर लेकर चलो। मैं अभी आता हूँ।" एडवर्ड ने गार्ड्स को आदेश देते हुए कहा। उसका आदेश सुनते ही सभी गार्ड्स अल्फ़ी को खींचते हुए बाहर ले गए। इतने सालों से इतनी सावधानी से किया गया हर काम अब आखिरी क्षणों में एडवर्ड के हाथों से फिसलता जा रहा था और ये फिसलन उसे मंजूर नहीं थी। उसे हर हाल में जीतना ही था। भन्नाए हुए एडवर्ड ने अपने सफेद पड़ते चेहरे के साथ बाहर देखा। पूरा चॉद आसमान में चमक रहा था, मगर आज क़यामत की रात थी और आज की रात सबसे ज्यादा काली होने वाली थी।

एडवर्ड तेजी से नीचे स्टडी की ओर गया और चारों ओर पागलों की तरह खोजबीन करने लगा। अगले दस मिनट में उसने पूरे रूम को तहस-नहस करके दिया था। उसका उतावलापन दिखा रहा था कि वो जो भी चीज थी... बहुत ही जरूरी थी। अपना काम खराब होता देखकर एडवर्ड उसी बड़ी सी खिड़की के पास गया और फिर उस खिड़की के निचले हिस्से में मौज़ूद दीवार पर पैर मारता जोरों से चिल्लाया।

"आपको लगता है कि ऐसा करके आप मुझे रोक लेंगे। पर ऐसा नहीं है। अब आपको ये अंतहीन क़ैद मुबारक हो डैड! आप मेरे काम नहीं आ सकते... तो किसी और की मदद भी नहीं कर पाएँगे।" चीखते हुए उसने अपने सीधे हाथ की तर्जनी उंगली से जमीन की ओर इशारा किया। लाल रोशनी की एक पतली लकीर सी उस ऊंगली से बाहर निकली और फिर एडवर्ड ने उस पूरी खिड़की को उस लकीर के घेरे में ले लिया। काम खत्म कर वो कुछ कदम पीछे हटा और उस खिड़की की तरफ कुछ देर तक देखता रहा। इसके बाद वो तेजी से बाहर निकल गया और पीछे छोड़ गया एक बिखरा हुआ कमरा जिसके एक कोने में वो खंजर पड़ा हुआ था, जो वहाँ होकर भी किसी को नज़र नहीं आ रहा था।

कमरे से बाहर निकलते ही उसे एक सुरक्षा अधिकारी मिला, जिसने मेहमानों के आने की बात उसे बताई। उसने मेहमानों का ध्यान रखने की बात कही और फिर तेजी से बाहर निकल गया। रात का दूसरा पहर शुरू हो चुका था।

****

पीटर जब एडवर्ड से मिलकर बाहर आया तो उसने डाकिनी को उसी जगह पाया, जहाँ वो उसे छोड़कर गया था। वो अपने दोनों हाथों को मसलते हुए बेचैनी से इधर से उधर टहल रही थी। शायद अभी भी उसे एडवर्ड से कोई उम्मीद थी। उसे वहाँ देखकर पीटर का पूरा चेहरा बिगड़ गया। मगर वो उसके पास गया और उसके वहाँ मौजूद होने का कारण पूछा।

"क्या मतलब कि मैं यहाँ क्या कर रही हूँ? आपको समझ नहीं आ रहा है कि मेरी बेटी फँस चुकी है। उसे मदद चाहिए।" डाकिनी बिफरते हुए बोली।

"It's all her fault only. We can't help her in all this mess. (ये पूरी की पूरी उसकी गलती है। हम इसमें उसकी कोई मदद नहीं कर सकते।)" पीटर ने दोनों माँ-बेटी को लताड़ते हुए कहा।

"क्या मतलब मदद नहीं कर सकते। वो आपके एडवर्ड की बातों में आकर ही इस मुसीबत में फँसी है। जब आपको उसकी जरूरत थी, तब तो आपने उस पर बहुत ध्यान दिया। अब जब उसे आप लोगों की मदद की जरूरत है... आप लोग पल्ला नहीं झाड़ सकते। क्या नहीं किया उसने आप लोगों के लिए। आप लोग उसे इस तरह मरने के लिए अकेला नहीं छोड़ सकते।" डाकिनी चीखते हुए बोली, जिसकी आवाज उस खाली सहन में दूर तक गूंजी थी। उसे इस तरह चिल्लाता देखकर पीटर का माथा भी ठनक गया। आखिर वो एक पिशाच था। एक गौरवान्वित पिशाच! वो एक डायन की तेज और ऊँची आवाज कैसे सुन सकता था?

"Stay within your limits! You will be the 'Dakini' of your community but

for us... You are no more than dust under our feet. And... what kind of help are you talking about? It is your daughter who has spoiled everything. Her and her mischievous habits! Whenever.... wherever she saw a handsome guy...! Huhhh..! It would have been better if you had taught her to live with some manners and etiquette. Today, because of her... our years of hard work are on the verge of being ruined. If our work is not done properly... then like your daughter. You too will suffer. Remember! (अपनी औकात में रहो! होगी तुम डाकिनी अपने समुदाय की। हमारे लिए पैर की धूल से ज्यादा नहीं हो। और किस मदद की बात कर रही हो? तुम्हारी बेटी ने ही तो सब बिगाड़कर रख दिया। उसकी और उसकी मनचली आदतें! जब भी.... जहाँ भी कोई खूबसूरत लड़का देखा... ! हुंह..! अच्छा होता कि उसे थोड़ी तमीज और
तहजीब से रहना सिखाया होता। आज उसकी वजह से हमारी बरसों की मेहनत बर्बाद होने की कगार पर है। अगर हमारा काम सही तरीके से नहीं हुआ... तो तुम्हारी बेटी की तरह तुम भी भुगतोगी। याद रखना!)" पीटर ने भी भड़कते हुए एक-एक शब्द चबाते हुए कहा।

"तुम ये सही नहीं कर रहे हो! चाहूं तो तुम्हारा भी बहुत कुछ बिगाड़ सकती हूँ। ये मत समझना कि मुझे कुछ पता नहीं है। मेरी एक आवाज और बहुतों की शक भरी नज़रों में आ जाओगे तुम। फिर समझाते रहना सबको।" पीटर की और उंगली उठाकर डाकिनी भर्राए हुए गले से चेतावनी देते हुए बोली।

उसकी बात सुनकर पीटर की नज़रें उस पर पैनी हुई थीं। उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए वो बोला, "Are you trying to threaten? (क्या तुम धमकी देने की कोशिश कर रही हो?)"

"कोशिश नहीं... धमकी दे रही हूँ! मेरी बेटी को कुछ हुआ तो तुम्हारा एडवर्ड भी नहीं बचेगा। तुम भी ये याद रखना।" डाकिनी पूरी तरह सुलगते हुए बोली।

उसकी ओर अपनी एक उंगली उठाकर गुस्से में फुंफकारते हुए पीटर आगे बढ़ा ही था कि तभी उसे उस सहन में दूसरी ओर से आती हुई कुछ आहटों ने रोक दिया। दोनों का ही ध्यान उस ओर गया। मेहमानों का एक जत्था उन दोनों की ओर ही हैरानी से देख रहा था। मेहमानों की नज़र खुद पर पाकर पीटर ने तेजी से अपनी उंगली नीचे की और फिर डाकिनी पर एक ज़हर भरी नजर डालता हुआ मेहमानों की ओर एक शानदार औपचारिक मुस्कुराहट के साथ बढ़ गया।

उनके पास जाकर उसने उन सबका अपनी परंपराओं के अनुसार गर्मजोशी से स्वागत किया। चूंकि सभा होने में देर थी... इसलिए सभी पिशाच
मेहमानों को मेंशन में ही समारोह में बुलाया गया था। तांत्रिक और डायन समुदाय भी अपने मेहमानों में व्यस्त थे। मगर हवाओं में माया के नाम के पर्चे बिखर चुके थे और अब परिस्थितियाँ हर गुजरते हुए समय के साथ विकट होती जा रही थीं। तीसरे पहर में होने वाली सभा का अस्तित्व भी खतरे में ही दिखाई दे रहा था। ऐसे समय में पीटर के सामने डाकिनी की उठी हुई ऊंगली उन मेहमानों के माथे पर शिकन और मन में कई सवाल दे गई। पीटर ने उन सभी से सब ठीक होने की बात कहते हुए जिम्मेदार अधिकारियों से मेहमानों को पूरे सम्मान के साथ बॉलरूम की ओर ले जाने के लिए कहा। उनके वहाँ से जाते ही वो धड़धड़ाते हुए वापस आया और डाकिनी की ओर अपनी ऊंगली उठाकर दहकती हुई आँखों के साथ भड़ककर बोला,

"Before things get even worse out of our hands… get out of here… because

after that… no one will be able to save you from me. (चीजें हमारे हाथों से और भी निकले... इससे पहले जाओ यहॉ से... क्योंकि फिर उसके बाद.... तुम्हें मुझसे कोई नहीं बचा सकेगा।)"

उसकी धमकी सुनते ही डाकिनी का चेहरा गुस्से की आग से लाल हो गया। उसकी ऑखें अपमान की नमी को समेटने में नाकाम हो चुकी थी। वो अपने समुदाय की मुखिया थी... सर्वेसर्वा थी। सबके लिए फैसले लेती थी... सबको न्याय देती थी। पर आज जब खुद अपनी बेटी की बात आई तो वो दूसरों के सामने झुकने के लिए मजबूर थी।

सच तो यही है कि जब लोग कामयाब होने के लिए ग़लत रास्ते पर चलते हैं... ग़लत का साथ देते हैं... तब उस समय मिली कामयाबी की चमक उनकी ऑखें चौंधिया देती हैं... तब उस तेज रोशनी में उन्हें नज़र नहीं आता कि आगे चढ़ने के लिए सीढ़ियॉ कब का खत्म हो चुकी हैं..... और फिर जब वो वहॉ से गिरते हैं... तब वापस ऊपर जाने का कोई रास्ता नहीं
होता है। माया के साथ यही हुआ था और शायद... एडवर्ड के साथ भी यही होना था।

पीटर ने अपनी तरफ से डाकिनी को सख़्ती से सब समझा तो दिया था, मगर वो उसकी उस बाग़ी नज़र से परेशान हो गया था, जो वो उस पर डालकर गई थी। एडवर्ड ने उसे अनामिका को लाने के लिए कहा था और वो उसी काम से जा रहा था, मगर डाकिनी की वजह से एक तो उसे देर हो गई... और एक अलग मुसीबत गले पड़ गई थी। इस मुसीबत से बाहर निकलना भी उतना ही जरूरी हो चुका था। उसने कुछ ताकतवर गार्ड्स अपने साथ लिए और फिर डाकिनी के पीछे चल दिया। उसके अनुमान के अनुसार ही डाकिनी उस मैदान की ओर जा रही थी, जहॉ माया को सजा दी जाने वाली थी और ये उसके लिए फायदे की बात थी क्योंकि उसे भी अनामिका की तलाश में वहीं जाना था।

****

मेंशन और उस मैदान के बीच जंगल का एक हिस्सा पड़ता था और इस समय वो रास्ता सुनसान रहने वाला था क्योंकि फिलहाल मेंशन से कोई भी उस मैदान की ओर नहीं जा रहा था.... सिवाय उनके। गुस्से और अपमान में जलती हुई डाकिनी को पीटर के खतरनाक इरादों की जरा भी भनक नहीं थी। वास्तव में इस समय जो कुछ भी हो रहा था.... जो कुछ भी घट रहा था... किसी की भी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। सभी इतने उलझ से गए थे कि सभी की सोचने-समझने की शक्ति खत्म ही हो गई थी। सभी अब बस अपना दिल थामकर आगे होने वाली भयानक घटना का इंतजार कर रहे थे।
चारों ओर मौत का सन्नाटा पसरा हुआ था। दूर से सियारों के रोने की आवाज माहौल को और भी भयानक बना रही थीं। हवाएँ कानों को चीरते हुए सांय-सांय की आवाज के साथ बह रही थीं। ऐसे समय उस सन्नाटे में एक बग्घी के घोड़ों के टापों की आवाजें दूर तक गूंजती हुई आगे बढ़ रही थीं।

जब चाबुक घोड़ों की पीठ पर पड़ता तो एक अजीब सा शोर उस सन्नाटे को चीर जाता। जंगल के उस सुनसान इलाके से जब डाकिनी की बग्घी गुजरी, तब एक जोड़ी ऑखें उस सुनसान रास्ते पर उसी का इंतजार कर रही थी। खुद का इंतजार करते हुए खतरे से अनजान वो बग्घी एक जगह पर आकर रूक

गई... जब उसमें जुते हुए घोड़ों ने एक तेज हिनहिनाहट के साथ अपने पिछले पैरों में खड़े होकर सामने के पैरों को हवा में उठा लिया। इससे बग्घी का संतुलन बिगड़ा और अंदर बैठी डाकिनी भी असंतुलित होकर अपनी सीट से लगभग गिर ही गई थी। वो कुछ समझ पाती उससे पहले ही उसने अपने सिर के ऊपर से किसी बड़ी सी उड़ती हुई चीज को गुजरता महसूस किया। खुद को संभालते हुए उसने कोचवान के तरफ का परदा खोलकर सामने की ओर देखा, तो कोचवान को नदारत पाया। ये देखकर उसकी ऑखें हैरत से फैल गईं।

"ये कहॉ चला गया?" आसपास के खतरे से बेखबर डाकिनी बडबडाते हुए बग्घी से बाहर निकली और कोचवान के सीट की ओर गई। उसने चारों ओर नजर दौड़ा कर देखा कि आखिर कोचवान गया कहॉ... और फिर उसकी नज़रें चारों ओर अंधकार में घूमती चली गईं। बग्घी के लैंप भी बुझ गए थे। चारों ओर घूमकर उसकी नज़रें ठीक सामने की ओर रुक गईं। सामने कोई हाथ में लालटेन लिए खड़ा था... जिसका चेहरा अंधेरे में दिखाई नहीं दे रहा था, मगर ऑखें अंधेरे में
भी लाल शोलों सी दहक रही थीं।
"कौन हो तुम? सामने इस तरह रास्ता रोककर क्यों खड़े हो?" डाकिनी ने भन्नाई हुई आवाज में चिल्लाकर कहा।

और उसके सवाल के जवाब में वो साया उसके थोड़ा और करीब आया। उसके करीब आने से घोड़े एक बार फिर बेकाबू होकर छटपटाने लगे। डाकिनी ने एक सहमी हुई नज़र उन घोड़ों पर डाली और फिर अपना ध्यान सामने की ओर लगाया। वो अभी भी एक फासले में खड़ा था। डाकिनी ने अपनी नज़रें उसके अंधेरे में छिपे चेहरे पर और पैनी की। मगर कुछ ना दिखा, जिससे वो झल्ला उठी। सामने वाले को शायद उस पर रहम आ गया और फिर फिर उसने अपने हाथ में पकड़ी लालटेन को ऊपर उठाते हुए अपने चेहरे के पास रोक दिया। उसके चेहरे पर नजर पड़ते ही डाकिनी के चेहरे के भाव बिगड़ गए।

"तुम! तुम यहॉ मेरा रास्ता रोक कर क्यों खड़े हो पीटर? हटो सामने से! या फिर... अपनी सच्चाई खुलने का डर तुम्हें यहॉ तक ले आया है। चाहो तो माफी मांग लो और सब सही हो जाएगा।" गुस्से से भरी हुई डाकिनी की आवाज खत्म होते-होते तंज भरी हो गई थी।

"This is not your fault. You women have always been less intelligent! (ये तुम्हारी गलती नहीं है। तुम औरतें हमेशा से ही कमअक्ल रही हो!)" पीटर ने उसका मजाक उड़ाते हुए कहा, जिस पर डाकिनी का पारा गर्म हुआ था।

"तुम्हारी इतनी हिम्मत!" कहते हुए डाकिनी उसकी ओर झपटी, जिसे पीटर ने अपना हाथ आगे करके रोका था।
"No! No! Don't do such a stupid thing! Otherwise you will be shocked thinking about your consequences. (ना! ना! ऐसी बेवकूफी ना करना! वरना अपने अंजाम के बारे में सोचकर तुम्हारी रूह कॉप जाएगी।)" पीटर ने चेतावनी भरी लहजे में उसे नजर गड़ा कर देखते हुए कहा।

"जो कहना है साफ-साफ कहो!" आखिरकार डाकिनी ने झुंझला कर कहा।

उसे कोई जवाब मिलता उससे पहले ही कोई भारी भरकम चीज उसके पैरों के पास जाकर गिरी। डाकिनी घबराकर दो कदम पीछे हुई थी। उसने अंधेरे में देखने की कोशिश की मगर कुछ भी दिखाई नहीं दिया। वो कुछ सोचती या करती... उससे पहले ही बग्घी के कोचवान की सीट के पास लगे हुए

लैंप अपने आप जल उठे। डाकिनी की ऑखें हैरत से फैल गईं, जब उसने अपने पैरों से कुछ दूर गिरी उस भारी भरकम चीज को देखा। वो उसका कोचवान था। वो उसके सामने बर्फ़ की तरह सफेद ऑखें और चमड़ी लिए पड़ा था। उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे कि उसके शरीर में खून का एक भी क़तरा न हो। उसकी ऐसी हालत देखकर डाकिनी के हाथ पैर फूलने लगे। सदमे से ऑखें फटने की हद तक बाहर आ गई थीं। तभी उसे अपने पीछे बग्घी के ऊपर किसी के कूदने की आवाज सुनाई दी। उस आवाज को सुनकर उसके कान खड़े हो गए। उसके अंदर हिम्मत नहीं थी कि वो पीछे मुड़कर देखे। पर उसकी भरी हुई ऑखों ने सामने खड़े पीटर को जरूर देखा जिसकी नजर उसके पीछे खड़ी बग्घी पर टिकी हुई थी और वो बड़ी ही बेरहम मुस्कान के साथ सामने वाले को देख रहा था। डाकिनी के माथे से पसीना बहकर उसके पूरे चेहरे को तर कर गया था। वो बाहर से जितनी भीग गई थी, अंदर से उसका जिस्म उतना ही सूख चुका था। बहुत कोशिश करने के बाद भी इतना पानी इकट्ठा ना हुआ, जो उसके हलक़ को गीला कर पाता। वो अपने अंदर के डर से जूझ ही रही थी कि तभी एक सर्द चुभती हुई आवाज उसके कानों से टकराई।
"डाकिनी!"

और ये सुनते ही डाकिनी ने अपने कान जोरों से बंद कर लिए। उसे ऐसा लगा कि अगर अगली बार उसने ये आवाज़ सुनी तो उसके कानों से खून निकल जाएगा। उसी तरह खड़े हुए ही वो धीरे से पीछे मुड़ी और धीरे से अपनी सहमी हुई नज़र बग्घी की छत पर डाली। अगले ही पल अपनी फटी हुई ऑखों से उसने वो नज़ारा देखा। वो साया अंधेरे की चादर में अपनी पहचान छिपाए मौत का रूप बनकर खड़ा था। चॉद ठीक उसके पीछे पेड़ों के बीच से झांक रहा था।

"क... क.. कौन हो तुम?" बड़ी ही मुश्किल से डाकिनी के गले से आवाज बाहर आई।

और उसका ये सवाल सुनते ही वो साया एक लंबी छलांग लगाकर ऊपर आसमान में खो गया। डाकिनी की ऑखें उसकी इस हरकत पर एक सोच के साथ सिकुड़ गई। वो कोई अनुमान लगाती उससे पहले ही उसके ठीक पीछे धप्प की आवाज सुनकर उसकी सिकुड़ी हुई ऑखें हैरत से फैल गईं। बग्घी के लैंप एक बार फिर से बुझ चुके थे। सूखे होंठों पर ज़बान फेरते हुए वो अपने कॉपते हुए शरीर के साथ पीछे मुड़ी और एकदम से वो चेहरा उसकी ऑखों के सामने आ गया। उसकी नज़र के सामने एक जोड़ी सुलगती हुई ऑखें थीं, जिसे डाकिनी ने अपने अंदर उतरता महसूस किया। डर से फैली हुई ऑखें धीरे-धीरे शांत होने लगी और कुछ ही देर में वो सम्मोहित नज़र आने लगी। वो साया उसके चारों ओर घूमते हुए एक बार फिर से उसके सामने आ गया।

"डाकिनी! अब तुम वही करोगी... जो मैं कहूंगा। तुम माया को बचाने नहीं
जाओगी। तुम वापस बसेरे में जाओगी और वहीं रहोगी। तुम उस बसेरे को अपने जादू से इस तरह बांध दोगी, जिससे उसके अंदर जाने वाला फिर बाहर ना निकल सके। उसके बाद मैं तुम्हें जैसा आदेश दूंगा... तुम वैसा ही करोगी। जाओ! बसेरे वापस जाओ!" इतना कहकर वो साया मुस्कुराया था, जिससे उसके किनारे के पैने दॉत चॉद की रोशनी में चमके थे। डाकिनी बिना कोई हरकत किए उसकी ओर देख रही थी। उसी समय उस साए ने एक और लंबी छलांग लगाई और एकदम से डाकिनी की तंद्रा टूटी। उसने हैरानी से चारों ओर देखा। घुप्प अंधकार छाया हुआ था। बिखरे हुए होश के साथ उसने जमीन पर नज़र डाली। वहॉ कुछ भी नहीं था।

"मैं यहॉ क्या कर रही हूँ?" डाकिनी ने बहके हुए लहजे में कहा। तभी उसके मस्तिष्क ने उसे बसेरे वापस लौटने का आदेश दिया। वो तेजी से कोचवान की सीट पर चढ़कर बैठी और उतनी ही तेजी से

घोड़ों को हांकते हुए बसेरे की ओर चली गई। वहीं पेड़ों की ओट में छिपा एडवर्ड अपनी इस सफलता पर मुस्कुराया था।

सम्मोहित सी डाकिनी बसेरे में पहुँची। बसेरे में इक्का-दुक्का लोग ही मौजूद थे। मेहमान डायनें कानाफूसियों और सरगोशियों के साथ अपने-अपने कमरों में थीं। उन्होंने माया की सजा पर ना तो कोई दिलचस्पी दिखाई और ना ही कोई ऐतराज जताया। जिस तरह से माया ने सबके सामने अपना गुनाह कबूला था, कोई भी उसके साथ खड़ा होना नहीं चाहता था। डाकिनी ने वहॉ पहुँचते ही एडवर्ड के कहे अनुसार बसेरे की पूरी इमारत को अपने जादू से बांध दिया। अब जो भी इसके अंदर आता, उसका बाहर निकलना नामुमकिन था। थोड़ी ही देर में जंगलों की ओर से एक तेज रोशनी दिल दहलाने वाली चीखों के साथ दिखाई दी। डाकिनी सपाट चेहरे के साथ अपने कमरे की खिड़की से उस उठती हुई रोशनी और धुऍं को देख रही थी। कुछ देर बाद वो रोशनी धीरे-धीरे कम होती हुई पूरी तरह बुझ गई। करीब 45 मिनट के बाद सभी डायनें उतरी हुई शक्लोसूरत लेकर वापस आईं और बसेरे के अंदर अपने कमरों में चली
गईं। सभी का दिल और दिमाग उस ख़ौफनाक नज़ारे को देखकर बुरी तरह से हिला हुआ था। सभी को आराम की जरूरत थी.. ताकि इस हादसे की गिरफ्त से खुद को बाहर निकाल सकें। करीब आधे घंटे के बाद पूरा बसेरा सन्नाटे की गोद में था। जिन्हें नींद आई वह सो गए और जिन्हें नहीं आई वो चुपचाप अपने कोनों में दुबके रहे। किसी के पास बातें करने के लिए कुछ भी नहीं था।

सबके वापस आने के आधे घंटे बाद डाकिनी अपने कमरे से बाहर निकली और मुख्य दरवाजे के पास आकर खड़ी हो गई। उसने कुछ देर उस दहलीज को घूरकर देखा और फिर धीरे से पास में जलती हुई शमादान उठा ली। उसने उस शमादान को उस जादुई घेरे के ऊपर गिरा दिया। एक ही पल में वो घेरा उस आग की जद में आ गया और देखते-ही-देखते पूरा बसेरा आग की ऊँची-ऊँची लपटों में घिर गया।

डाकिनी उसी तरह बेहलचल वहीं खड़ी रही। कुछ ही देर में पूरे बसेरे में चिल्ल-पों मच गई। सभी डायने अपने कमरों से बाहर निकल कर बदहवास सी बाहर की ओर भागने लगी। कईयों ने अपने-अपने कमरे की खिड़की से बाहर निकलने की भी कोशिश की, पर जादुई घेरे की वजह से वो सब बाहर नहीं निकल पाए। कमरे के दरवाजे से बाहर निकल कर मुख्य दरवाजे पर पहुँची हुई डायनें डाकिनी को वहॉ खड़ा देखकर एक पल को रूकी और फिर तेजी से दौड़कर उन्हें अपने साथ खींच कर बाहर की ओर ले जाने लगी। पर डाकिनी तो जैसे उस जगह पर बुत के जैसे जम चुकी थी। वो टस से मस नहीं हुई और ना ही उसके चेहरे पर कोई भी भाव थे। वो सपाट चेहरा लिए हुए जैसे अब बस मौत का इंतजार कर रही थी। कुछ डायने जो मुख्य दरवाजे के पास बाहर निकालने की मंशा से पहुँची थीं, दहलीज पर कदम रखते ही एक तेज झटके से पीछे की ओर उछलकर बसेरे के अंदर गिरी। उनकी ऐसी हालत देखकर बाकी की डायनें भी सदमे में आ गईं। वो समझ गई थी कि कुछ देर पहले उन्होंने माया को जिस बेहिसाब दर्द से गुजरते देखा था, वही दर्द डाकिनी ने उन सबकी किस्मत में भी लिख दिया था। चारों ओर लगी आग और उससे उठते धुऍं से कई डायनें डर और घुटन से बेहोश हो गईं। चारों ओर मौत का डर चीखों में बदल गया था। उस बसेरे के बाहर से ये सारा मंजर किसी का भी दिल दहला सकता था। पर वहॉ उन डायनों का मददगार कोई भी नहीं था। कुछ डायनें मदद की आस में भागकर डाकिनी के पैरों से लिपट गईं और उससे जिंदगी की गुहार लगाने लगीं। लेकिन वो सारे शब्द डाकिनी के कानों में गिर जरूर रहे थे, पर सुनाई किसी और को दे रहे थे और वो किसी हवसी दरिंदे की तरह उनकी दम तोड़ती चीखों और फरियादों पर खड़ा अट्टहास
कर रहा था। कुछ ही देर बाद जिंदगी और खिलखिलाहटों से भरा वो बसेरा एक भूली-बिसरी किंवदंती बन चुका था... जिसकी बर्बादी की गाथा कोई नहीं जानता था।

"ये बताने आए हैं कि एक बार फिर से अल्फ़ी ने मेंशन में कत्लेआम
मचाया है। बड़ी मुश्किल से हमने उसे काबू में किया है और इस सबके जिम्मेदार आप सब हैं, जो उसे हमारी कैद से भगाकर ले गए थे। आप लोग हमें कुछ बताना जरूरी नहीं समझते.. पर हम अपनी जिम्मेदारी समझते हैं। आपको यहाँ जो करना है करें और हम वहाँ अपने मुजरिम को सजा देंगे। मुझे लगता है कि अब... सब साफ़ हो गया है।"

पीटर के कहे गए ये सारे शब्द चैतन्य और तांत्रिक श्रेष्ठ दोनों के कानों में नश्तर की तरह चुभ रहे थे। चैतन्य तुरंत ही वहाँ से निकलना चाहता था, मगर माया को वहाँ लाए जाने के बाद परिस्थितियाँ इस तरह बदलीं कि उसे और अनामिका को उसका अंजाम देखने के लिए रूकना ही पड़ा। माया की चीखों के मद्धम होते ही वो दोनों अल्फ़ी की मदद के लिए मेंशन की ओर निकल पड़े। झील के किनारे पहुँचकर उन दोनों ने ही उसके शांत पानी को देखा। वो दोनों ही मेंशन में सेंधमारी करने को तैयार थे।

"उम्मीद है कि सब सही होगा और आज हम वापस अपने समय में भी लौट जाएँगे। हर चीज अपनी जगह में ही अच्छी लगती है।" चैतन्य ने एक गहरी साँस लेकर कहा।

"हम्म! बात तो सही है। मुझे भी वापस जाना है... पर फिलहाल अभी तो कहीं और ही जाना है हमें! चलो!" अनामिका ने चैतन्य का हाथ पकड़ते हुए कहा।

"हाँ बाबा! खींचो मत!" चैतन्य ने चिढ़कर हाथ छुड़ाते हुए कहा और पानी की ओर बढ़ा।

"वैसे चैतन्य! तुम्हें क्या लगता है? उस मेंशन में कहाँ होगा अल्फ़ी?" अनामिका ने चैतन्य के पीछे आते हुए सवाल किया।
"पीटर ने कहा था कि वो लोग अब अल्फ़ी को अपने तरीके से पनिश करेंगे। तांत्रिक श्रेष्ठ ने बताया था कि सर्वशक्तिमंडल की आज की सभा के लिए कुछ ख़ास मेहमान मेंशन में रूकने वाले हैं। मुझे लगता है कि सब कुछ उनके बीच ही होगा। एडवर्ड हर हाल में खुद को इन सब पचड़ों से अलग करने और रखने की कोशिश में रहेगा। जिस तरह इन सब में अभी तक मेरा नाम नहीं आया है... उसी तरह से एडवर्ड का दामन भी पूरी तरह से साफ है और वो इसका फायदा जरूर उठाएगा।" चैतन्य ने आगे बढ़ते हुए कहा।

"वो तो समझ में आ गया। पर... मेंशन में वो कहाँ हो सकता है? पता चला हम उसे ढूंढने के चक्कर में भटकते रहे और उस एडवर्ड ने अपना काम कर दिया।" अनामिका ने कहा।

"मुझे पता है। तांत्रिक श्रेष्ठ ने बताया है। चलो!" इस बार चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ा और उसके साथ पानी में उतर गया।

जल्द ही छलद्वार का प्रयोग कर वो दोनों ही मेंशन के अंदर आ गए। दोनों बड़ी ही सावधानी से एक-एक कदम फूंककर रखते हुए आगे बढ़ रहे थे। रास्ते में कई जगह गार्ड्स से बचते हुए वो दोनों आखिरकार हॉल तक पहुँचे।

"सीढ़ियों से बाईं ओर!" चैतन्य ने फुसफुसाकर कहा और फिर दो लंबी छलांग के साथ सामने के मोटे से पिलर के पीछे छिप गया। उसी समय दो गार्ड्स सीढ़ियों से नीचे आते दिखाई दिए। चैतन्य ने अनामिका को रूकने का इशारा किया और फिर आगे के रास्ते पर नज़र डालने लगा। उन गार्ड्स के जाते ही अनामिका भी फुर्ती से चैतन्य के पास पहुँची। चैतन्य ने एक बार फिर से उसे रूकने के लिए कहा और फिर वहाँ कतार से रखे पौधों और सजावटी मूर्तियों के पीछे छिपता हुआ अगले पिलर तक पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि सीढ़ियों के उस हिस्से में... जिधर उन्हें जाना था...
बहुत ज्यादा हलचल थी। उसने अपनी नजरों से हर चीज का अच्छी तरह जायज़ा लिया और फिर पलटकर अनामिका को आने का इशारा किया। आसपास चौकन्नी नज़र रखे हुए अनामिका भी उस तक पहुँच गई।

"अब!" अनामिका ने पूछा।

"उस तरफ देख रही हो? हमें उस तरफ ही जाना है।" चैतन्य ने एक ओर इशारा करते हुए कहा।

"पर उस तरफ तो हलचल दिखाई पड़ रही है।" अनामिका ने उस ओर परेशान नज़र डालते हुए कहा।

"हाँ! तांत्रिक श्रेष्ठ ने बताया कि ये पिशाचों का निजी न्यायालय है। जाहिर सी बात है कि वो अल्फ़ी को यहीं लाएँगे।" चैतन्य ने बहुत ही धीमी आवाज में जवाब दिया।

"तुम्हारा मतलब है कि हमें उस भीड़भाड़ में जाना है! चैतन्य! हम वहाँ फिर से फँस सकते हैं।" अनामिका ने जैसे बात स्पष्ट करनी चाही।

"तो क्या उस एडवर्ड को संदेश भेजूं... कि सर एडवर्ड! इस भीड़भाड़ में अल्फ़ी को छुड़वाने में हमें परेशानी होगी, तो कृपा करके आप अल्फ़ी को किसी ऐसी जगह में रखें... जहाँ से हम उसे आसानी से ले जा सकें।" चैतन्य ने चिढ़ से अनामिका की ओर देखकर कहा। जवाब में अनामिका ने अपने होंठ भींचे और आँखें सिकोड़ते हुए उसे घूरकर देखा था।

"बस! यही गुस्सा ना... मुझपर खर्च करने की बजाय दुश्मनों के लिए बचाकर रखो। काम आएगा!" चैतन्य ने भी उसकी तेज़ नज़र को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर सिर झटकते हुए कहा। अनामिका एक गहरी साँस लेकर रह गई।
"आओ!" चैतन्य ने अनामिका का हाथ पकड़ा और उसे दूसरी ओर ले जाने लगा।

"अरे! इस तरफ कहाँ?" अनामिका ने आँखों में हैरानी भरकर कहा।

"जानता हूँ कि तुम सब मुझे बेवकूफ समझते हो... पर मैं... हूँ नहीं! समझी!" चैतन्य ने चिढ़ी हुई आवाज में कहा और फिर उसे अपने साथ लेकर आगे बढ़ गया। वो रास्ता दूसरी तरफ की हलचल की तुलना में सुनसान और नीम अंधेरे में था। बहुत दूर एक मशाल जलती हुई दिखाई दे रही थी जिसकी वजह से वहाँ उजाले का भ्रम फैला हुआ था।

चैतन्य शायद उस रास्ते से पहले से परिचित था। अंधकार होने के बाद भी वो अनामिका का हाथ थामे तेजी से उस रास्ते पर आगे बढ़ता गया और फिर वो दोनों उस मशाल के पास की एक संकरी सी गली में घुस गए। घुसने से पहले चैतन्य ने पास ही रखी एक मशाल को उस जल रही मशाल से जलाया और

उसे साथ ले गया।

"अल्फ़ी के साथ सुरक्षा इंतजामों के लिए पहले भी यहाँ आया हूँ। तांत्रिक श्रेष्ठ ने बस ये बताया कि ये रास्ता उस कमरे से जुड़ा हुआ है।" चैतन्य ने सवाल से पहले ही जवाब देते हुए कहा।

"ओह! मतलब कि तुम्हारा इस मेंशन में आकर रहना जाया नहीं गया।" अनामिका ने पीछे चलते हुए कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने हुंकारी भरी।

वो दोनों एक जगह पर आकर रूक गए। चैतन्य ने थोड़ा आगे-पीछे जाकर स्थिति का जायजा लिया और फिर वापस उस जगह पर आया। उसने
मशाल अनामिका को थमाई और सामने की दीवार पर एक जगह दबाव बनाते हुए उसे एक ओर खिसकाने लगा। अनामिका अजीब सी नजरों से उसकी एक-एक हरकत को देख रही थी। उसका दिमाग कहीं और भटकता... इससे पहले ही दीवार का वो हिस्सा बहुत ही धीमी आवाज करता हुए एक ओर खिसक गया। ये सब देखकर अनामिका की ऑखें और मुँह दोनों ही खुले के खुले रह गए।

"मुँह बंद करो और आओ!" चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ कर अपने साथ खींचते हुए कहा और उसके साथ उस दरवाजे के अंदर चला गया। उनके अंदर जाते ही चैतन्य ने वो दरवाजा पहले की तरह बंद कर दिया। अंदर पूरी तरह से अंधकार छाया हुआ था, पर अब जो...उनके मशाल की रोशनी से उनकी जरूरत के अनुसार हट गया था। चैतन्य ने मशाल अपने हाथ में ले ली और अनामिका से आगे चलने लगा। मशाल की रोशनी में अनामिका ने देखा कि उस कमरे में बड़े-बड़े लकड़ी के बक्से रखे हुए थे। वो उन सब पर हैरान नज़र रखे हुए चैतन्य के पीछे चली जा रही थी। थोड़ा आगे जाने पर वो थोड़ी खुली सी जगह पर पहुँच गए।

"ये पकड़ो!" चैतन्य ने मशाल अनामिका की ओर बढ़ाते हुए कहा। अनामिका ने वो पकड़ा और चैतन्य की अगली गतिविधि पर नज़र लगाकर खड़ी हो गई। चैतन्य ने सामने पड़े दो-तीन बक्सों को देखा और फिर उसमें से एक बक्से को खोल दिया। उस बक्से के खुलते ही अनामिका की ऑखें उसके अंदर रखे शानदार और धारदार खंज़रों की चमक से चौंधिया गई, जो मशाल की पीली रोशनी में सोने की तरह चमक रहे थे।

"ये पकड़ो और संभालकर रखना। इसकी बहुत ज़रूरत पड़ेगी।" चैतन्य ने उनमें से एक खंज़र उठाकर अनामिका की ओर बढ़ाते हुए कहा।

"क्यों? हमारा जादू..." अनामिका आगे कुछ कह पाती उससे पहले ही चैतन्य ने उसे टोक दिया।
"वहाँ हमारा कोई जादू नहीं चलेगा। इसलिए हाथ-पैर चलाने के लिए तैयार रहो। तुम्हें क्या लगता है पिशाचों ने अपनी इतनी महत्वपूर्ण जगह को किसी भी जादू से सुरक्षित रखने का इंतजाम नहीं किया होगा! वो पिशाचों की बहुत ही गोपनीय जगह है, जहाँ उनके अलावा और कोई नहीं आ सकता है।" चैतन्य ने अनामिका की बात काटते हुए कहा।

"हे भगवान! क्या फायदा... हमारी ताकतों का फिर!" अनामिका ने अपना सिर पीटते हुए कहा।

"अनु! हम इस समय एक जादुई दुनिया का हिस्सा हैं। यहाँ बस हमारे पास ही जादू नहीं है। यहाँ तो हर

अगला मिलने वाला आदमी जादुई है। याद रखो... जब ताकतें एक सी हो.. तो जो पहला मजबूत वार करे... पलड़ा उसी का भारी होता है। तो अपनी जादुई उंगलियों के साथ-साथ अपने मस्तिष्क की ताकत को भी ज्यादा से ज्यादा सक्रिय रखो।" चैतन्य ने एक खंज़र अपने कपड़ों में छुपाकर उस बक्से को बंद करते हुए कहा।

"समझ गई!" अनामिका ने मुस्कुराकर कहा।

"उस जगह सिर्फ पैशाचिक शक्तियॉ ही काम करेंगी और तो और.... शायद अपराधी होने की वजह से अल्फ़ी की ताकतें भी निष्क्रिय हो सकती हैं। तो..." कहते हुए चैतन्य ने अनामिका की ओर देखा।

"यही कि... हमारी स्थिति उनकी तुलना में कमजोर है।" अनामिका ने चिढ़ी हुई आवाज में कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने अगला बक्सा खोलते हुए कहा और उसमें से कुछ गोले निकाल कर अनामिका की ओर बढ़ाए।
"क्या ये..." अनामिका ने ऑखें फाड़कर उन गोलों को देखा।

"धुआंगोला है ये! काम आएगा!" कुछ गोले उसने अपने पास भी रखते हुए कहा और अगले बक्से की ओर बढ़ गया। उसने उसमें से चॉदी के बने नुकीले कांटे निकालकर कुछ अनामिका को दिए और कुछ अपने पास रखे।

"चलो!" कहते हुए वो मशाल पकड़कर एक ओर बढ़ गया। अनामिका सब समझती हुई उसके पीछे चल दी। आगे एक टूटा हुआ आईना रखा हुआ था।

"यही होना चाहिए!" कहते हुए चैतन्य ने उस आईने के एक हिस्से को पूरी ताकत से अपने हाथों से दबाया। थोड़ी मेहनत करने के बाद वो किसी दरवाजे की तरह बाहर की ओर खुल गया। चैतन्य ने गर्दन बाहर कर एक बार फिर हालातों का जायजा लिया। सामने घुप्प अंधकार के साथ सन्नाटा पसरा हुआ था। वो धीरे से बाहर निकला और फिर कुछ दूर आगे तक गया, जब तक कि उसे मशाल की रोशनी में सामने एक मुड़ता हुआ रास्ता दिखाई नहीं दिया। अच्छी तरह इत्मीनान कर लेने के बाद उसने पीछे मुड़कर देखा और हाथ के इशारे से अनामिका को आने के लिए कहा। अनामिका ने दरवाजा बंद किया और फिर धीमे कदमों के साथ उसके पास आ गई। उन दोनों ने ही अपने छिपे हुए खंज़रों पर पकड़ मजबूत कर ली थी। उस मोड़ पर मुड़ते ही उन्हें दूर हल्की सी रोशनी सी नजर आई। उसे देखते ही चैतन्य ने मशाल मोड़ के दूसरी ओर रख दी और सधे हुए कदमों से आगे बढ़ता गया। अनामिका भी चारों ओर नज़र रखे उसके पीछे-पीछे चल रही थी। कुछ दूर आगे जाकर उन्हें आहट सी सुनाई दी और वो दोनों ही एकदम से रूके थे।

"मैं आगे चलता हूँ। तुम पीछे से मुझे कवर करो! और हॉ... कुछ भी हो जाए... इमोशनल फूल मत बनना क्योंकि हमारा दुश्मन बेरहम है। कुछ
भी हो सकता है। हर परिस्थिति के लिए खुद को तैयार रखना। समझी!" चैतन्य ने अनामिका को समझाते हुए कहा।

"हम्म!" अनामिका ने हुंकारी भरी और फिर आगे बढ़कर उसके गाल पर अपने होंठ रख दिए।

चैतन्य ने अपने उस गाल को सहलाया और फिर एक नाराज़गी भरी नज़र उस पर डालते हुए बोला,

"चीटर!"

"चीटर नहीं! ये तो इसलिए कि.... कहीं मर-खप गए... तो कम से कम तुम्हें अफसोस तो नहीं होगा।" अनामिका ने अपनी हँसी को दबाते हुए कहा और फिर उसे आगे बढ़ने का इशारा किया।

"अफसोस! अब तो पूरा पिशाच समुदाय भी आ जाए... मैं नहीं मरने वाला! तुम्हारी सारी चीटिंग्स का हिसाब जो लेना है मुझे।" चैतन्य ने अपनी एक भौंह चढ़ाकर कहा।

"देखते हैं!" अनामिका ने भी जैसे चुनौती देते हुए कहा।

"वेट.... एंड वॉच!" चैतन्य ने अपनी उंगलियों से इशरा करते हुए कहा और फिर आगे बढ़ गया। उसके आगे जाते ही अनामिका ने गंभीरता से उसकी ओर निगरानी रखी और अपनी बारी का इंतजार करने लगी।

चैतन्य धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया। थोड़ा आगे बढ़ते ही अचानक दो गार्ड्स उसके सामने आ गए। उन दोनों के ही हाथों में तलवारें थीं। चैतन्य उन दोनों को देखते ही सचेत हुआ और उनके आक्रमण का इंतजार किया। अगले ही पल उनमें से एक ने चैतन्य पर तलवार से हमला किया। चैतन्य ने झुककर उस हमले से खुद को बचाया और फिर हाथों को जमीन पर टिकाकर अपने एक पैर को घुमाते हुए उस गार्ड के पैरों पर प्रहार किया,
जिससे वो लहराकर मुँह के बल गिर गया। चैतन्य ने अगले ही पल उसकी गर्दन को अपने बाईं बांह में दबोच लिया। ठीक उसी समय उसने फुर्ती से दूसरे गार्ड के प्रहार को अपने सीधे हाथ से रोका और उसकी कलाई को बेरहमी से मरोड़ दिया। वो गार्ड चीख पाता उससे पहले ही चाँदी का एक नुकीला कॉटा उड़ता हुआ आया और उस गार्ड की गर्दन में धँस गया। वो गार्ड कोई आवाज किए बिना नीचे गिर गया। चैतन्य ने उस तरफ देखा तो अनामिका अपनी ऊंगलियों पर फूंक मारती दिखी। चैतन्य ने अपना खंज़र निकाला और अपनी गिरफ्त में मौजूद गार्ड के मुँह को बंद करते हुए उसके सीने में उतार दिया। उसके मृत शरीर को जमीन में फेंकते हुए वो ऊपर उठा और अनामिका की ओर अपना अंगूठा उठाते हुए फिर आगे बढ़ गया।

धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए वो एक जगह पर आकर रूका। उसने अनामिका को इशारे से रूकने के लिए कहा। सामने एक खिड़की थी। उसने उसमें से झांककर देखा और उसके होंठों पर मुस्कान आ गई। वो वही गोपनीय न्यायालय था, जिसके बारे में तांत्रिक श्रेष्ठ ने बताया था। उसने अनामिका को पास बुलाया। अंदर भीड़ में साभ्रांत वेशभूषा में पिशाचों की अच्छी खासी संख्या थी और सभी चेहरे से ही दुष्ट दिखाई दे रहे थे।

"ये सब मिलकर अपनी ताकत बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। फैसला तो बस एक बहाना है... अपनी काली करतूतों को सफेद अमलीजामा पहनाने (सही तरीके से कार्यान्वित करना) का। एडवर्ड इन सबकी मदद से अपनी स्थिति मजबूत करना चाहता है। या फिर शायद... उसने कर ली है।" चैतन्य ने अनामिका से फुसफुसा कर कहा।

"अल्फ़ी!" अनामिका ने बेचैनी से पूरे कमरे में नज़र दौड़ाते हुए कहा।

"अभी नहीं लाए हैं उसे।" चैतन्य ने भी चारों ओर नज़रें दौड़ाते हुए कहा।
अभी वो दोनों बातें कर ही रहे थे कि तभी एक शोर सा उठा। उन दोनों ने देखा कि तीन उम्रदराज

पिशाच अंदर की ओर आ रहे थे। चैतन्य और अनामिका दोनों ने ही उन्हें पहचान लिया। ये वही जज थे.. जिन्होंने अल्फ़ी को मौत की सजा सुनाई थी। उन दोनों ने ही एक गहरी साँस ली क्योंकि अल्फ़ी को लाने का आदेश दिया गया था। अनामिका की ऊंगलियाँ एक बार फिर से उस खिड़की के किनारों पर कस गईं थीं और नज़रें बिना किसी खलल के अंदर आने वाले दरवाजे पर टिकी थीं। कुछ ही पलों के इंतजार के बाद पहले की तरह ही अल्फ़ी को जानवरों की तरह जंजीरों में जकड़कर लाया गया। मगर इस बार एक अंतर दिखाई दे रहा था। बुरी तरह जकड़े होने के बाद भी अल्फ़ी के होठों पर एक चिढ़ाने वाली मुस्कुराहट थी। वो किसी भी तरह के डर से आजाद और बेफिक्र नज़र आ रहा था। उसे इस तरह देखकर अनामिका ने राहत महसूस की।

"ये एडवर्ड और पीटर कहाँ रह गए?" अनामिका के जज़्बातों से बेखबर चैतन्य ने चारों ओर देखते हुए कहा।

उसने इतना बस कहा था कि तभी एडवर्ड और पीटर अंदर आते दिखाई दिए। उनके चेहरे पर भी एक अलग ही तरह की संतुष्टि भरी मुस्कराहट थी। अंदर आते हुए जब एडवर्ड, अल्फ़ी के सामने से गुजरा... तब किसकी मुस्कुराहट ज्यादा कुटिल थी... ये बता पाना मुश्किल ही था।

एडवर्ड और पीटर दोनों ही आगे जाकर बैठ गए। एक बार फिर से अल्फ़ी पर मुकद्दमा शुरू हुआ, जो यकीनन इस बार ज्यादा ही द्वेषपूर्ण था। पिछली बार अन्य समुदायों की उपस्थिति की वजह से सबने अपने व्यवहार में नर्मी का एक खोल चढ़ा रखा था, जिसे इस बार वो सब उतारकर आए थे। एडवर्ड ने अपनी बातों से उनके जहरीले मन में अल्फ़ी के लिए और भी जहर भरते हुए उसके आज दिनभर के क्रियाकलापों और उसकी वजह से उन्हें होने वाली तकलीफों के बारे में बताया और रात मेंशन में गार्ड्स की हत्या का आरोप भी उसी पर बढ़ दिया। एडवर्ड की
बात खत्म होते ही उस कमरे में गहमागहमी बढ़ गई। एक-एक करके सभी अपने विचार सामने रखने लगे, जो यकीनन अल्फ़ी के खिलाफ थे। अल्फ़ी भी पता नहीं अपने मन में क्या छिपाए हुए शांत खड़ा हुआ था। उसकी मनोस्थिति किसी को भी समझ में नहीं आ रही थी।

"तो एडवर्ड! अब आप बताइए कि इसका क्या किया जाए? हमसे ज्यादा... अब ये आपका दोषी है।" एक जज ने एडवर्ड से मुखातिब होते हुए कहा।

"आपका शुक्रिया! मैं भी अब इसे जल्द से जल्द अपने तरीके से सजा देना चाहता हूँ। इसे और इसकी उस गुनहगार पत्नी को भी। इन दोनों को तिल-तिल कर मरते देखना ही मुझे राहत दे सकता है।" एडवर्ड ने अपने दिल की बात सबके सामने रखी और ये सुनकर अल्फ़ी के होठों पर एक उदास सी मुस्कुराहट आई थी।

"सर्वशक्तिमंडल की सभा का इस तरह विखंडित होना अच्छी बात नहीं है। ये तो अशुभ की ओर इशारा कर रहा है।" एक दूसरे जज ने अपनी राय रखते हुए कहा।

"मुझे तो ये सभा का कॉन्सेप्ट ही फिजूल लगता है। पता नहीं उन डायनों और तांत्रिकों को इतनी अहमियत क्यों दी जाती है? मेरी मानिए! खत्म कीजिए इसे!" पीटर ने भी अपने तरीके से एक बात उठाई, जिसे सुनकर वहाँ मौजूद सभी लोगों के बीच फुसफुसाहटें फैल गईं।

"बात तो तुम्हारी सही है, मगर हमारे पास ये करने के लिए कोई पुख़्ता जमीन भी चाहिए। हम उन्हें क्या कहकर अलग करेंगे?" एक रसूखदार ने पूछा।

"उसकी आप चिंता ना करें। डायनों ने फिलहाल अपनी इतनी फजीहत
करा ली है कि उनकी बात कोई सुनेगा भी नहीं और उनकी तरफ से कोई बोलेगा भी नहीं। रही बात तांत्रिक समुदाय की... तो उनके भी एक सदस्य ने हालिया घटी घटनाओं में डायनों की पूरी मदद की है।" एडवर्ड ने उन सबके सामने उनकी समस्या का हल रखते हुए कहा और ये सुनते ही अल्फ़ी, अनामिका और चैतन्य के कान खड़े हुए थे।

"और कौन है वो?" एक साथ कई आवाजें आई।

"वो... वहाँ है!" एडवर्ड ने झटके से उसी खिड़की की ओर ऊंगली उठाकर कहा, जहाँ अनामिका और चैतन्य खड़े थे। हालात को करवट बदलता देखकर अनामिका और चैतन्य ने उसी ओर भागना चाहा, जिधर से वो दोनों आए थे। मगर वो रास्ता अब खाली नहीं था।

"तांत्रिक श्रेष्ठ से मिलने के बाद जब से यहाँ का रूख किया तुम दोनों ने... हमारी नज़रें तुम पर ही थी। बस यहाँ पहुँचने में देर हो गई। लगा नहीं था कि तुम ये वाला रास्ता पकड़ोगे।" सामने मौजूद गार्ड्स में से एक बोला और वो दोनों समझ गए कि... वो एक बार फिर से फँस चुके थे। दोनों के अंदर एक झल्लाहट ने सिर उठाया। वो सब कितनी भी कोशिश कर लें... एडवर्ड हमेशा उनसे चार कदम आगे ही रहता था। वो कुछ सोचते उससे पहले ही पीछे से भी कुछ गार्ड्स ने आकर उन दोनों को घेर लिया।

"चलो!" उसी गार्ड ने अपनी तलवार उनकी ओर उठाकर घुड़कते हुए कहा। चैतन्य ने अनामिका की ओर देखा.. वो भी उसे ही देख रही थी। चैतन्य ने उनकी बात मानते हुए कमरे की ओर कदम बढ़ा दिए। अनामिका भी साथ ही चल रही थी। जैसे ही वो दोनों उस कमरे में पहुँचे... अनामिका को देखकर अल्फ़ी के चेहरे की मुस्कुराहट पल भर में गायब हो गई। वो उसे इन पिशाचों के बीच पाकर बुरी तरह से छटपटाया था। उसकी छटपटाहट पर नज़र पड़ते ही एडवर्ड के चेहरे की मुस्कान चौड़ी हो गई। वो हमेशा से यही तो चाहता था... अल्फ़ी को तड़पते हुए देखना।
"क्या हुआ? उसे यहाँ देखकर तकलीफ़ हुई! है ना!" अल्फ़ी के सामने जाकर अल्फ़ी को और भी सुलगाते हुए कहा। अल्फ़ी उसकी बात सुनकर गुर्राते हुए उसके ऊपर झपटा, मगर उसकी जंजीरों को पकड़े हुए गार्ड्स ने खींचकर उसे एडवर्ड से दूर किया।

"च्च्च्च्! तुम लोगों को अपने ऊपर गुस्सा - तरस कुछ भी नहीं आता क्या? हमें हराना चाहते हो और बार-बार मेरे बिछाए जाल में ही फँस जाते हो।" एडवर्ड ने उन तीनों पर व्यंग्यबाण छोड़ते हुए कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य ने अपने दाँत भींचते हुए चेहरा दूसरी ओर कर लिया।

"जैसा कि आप लोग देख रहे हैं कि ये तीनों ही हमारे लिए कितने बड़े खतरे हैं? इनकी वजह से हमें ना जाने क्या-क्या परेशानियां उठानी पड़ी हैं। अपने पिता तक को खो दिया हमने। पर अब बस! हम और कुछ बर्दाश्त नहीं करेंगे। अब बस सजा सुनाई जाएगी। और सबसे पहले बारी है इसकी!" कहते हुए एडवर्ड ने अपनी ऊंगली एक ओर की। सबने देखा कि उस ऊंगली का इशारा अनामिका की ओर था। उसकी बात सुनकर चैतन्य, अल्फ़ी और अनामिका तीनों ही सकते में आ गए। एडवर्ड के इशारा करने पर गार्ड्स अनामिका को ढकेलकर उस कमरे के बिल्कुल बीचों-बीच ले गए। अल्फ़ी और चैतन्य दोनों की ही नज़रें अनामिका पर थीं और वो मुसीबत में थी।

"तो फिर आज मैं एडवर्ड... आपके सामने... इन डायनों की समस्या को हमारे सामने से पूरी तरह खत्म कर देता हूँ। ये डायनें... ये औरतें... हमारी जादुई दुनिया पर एक धब्बे की तरह हैं और जो हमें हमेशा

परेशान करती रहती हैं। क्या कहते हैं आप सब? खत्म कर दिया जाए इन्हें?" एडवर्ड ने ऊँची आवाज में चिल्लाकर जैसे वहॉ मौजूद पिशाचों से सहमति मांगी, जिस पर सभी ने शोर मचाये हुए अपना समर्थन जाहिर किया।
"तो सबसे पहले इनका ठिकाना खत्म किया जाए! ठिकाना ही नहीं रहेगा... तो ये रहेंगी कहॉ पर?" एडवर्ड ने एक बार फिर से चिल्लाकर कहा, जिस पर सभी ने हूटिंग करते हुए अपना समर्थन दिया।

"तो फिर... ये देखो!" कहते हुए एडवर्ड ने अपनी ऑखें बंद की और जोर से चिल्लाया, "डाकिनी!"

उसके ऐसा बोलते ही कमरे में एकदम से सन्नाटा छा गया। सभी एकटक एडवर्ड की ओर ही देख रहे थे कि वो आखिर क्या करने वाला था। रात का तीसरा पहर लग चुका था और इसी के साथ एडवर्ड की शैतानी शक्तियॉ और भी तीव्र हो गई थीं।

"डाकिनी! तुम मेरी बात सुन रही हो।" एडवर्ड ने कहा। अगले ही पल उसके होंठों पर मुस्कराहट आई, जैसे कि उसे उसका पसंदीदा जवाब मिल गया हो।

"जाओ! मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि... तुम अपने हाथों से... अपने बसेरे को आग लगा दो।" इतना कहकर वो जोर से जानवरों की तरह ठहाके लगाने लगा, जबकि ये सब देखकर वहॉ मौजूद पिशाचों के होश भी फाख़्ता हुए थे। एडवर्ड का ये रूप देखकर सभी अपने-अपने में डर से सिमटने लगे थे। कुछ ही देर में उस कमरे में एडवर्ड की वहशी हँसी गूंजती रही और फिर उसने अपनी ऑखें खोली।

"आखिरकार.... बसेरा खत्म हुआ!" और फिर वो जोर-जोर से अट्टहास करने लगा। वहॉ मौजूद सभी लोगों को उसकी मानसिक हालत पर शक होने लगा था। जो हो रहा था... उसे वहॉ मौजूद कोई भी समझ पाता उससे पहले ही एडवर्ड ने अनामिका को अपने पास बुलाया। उसके पीछे खड़े गार्ड्स ने उसे एडवर्ड के सामने ढकेल दिया, जिससे वो उसके सामने
जाकर गिर पड़ी। एडवर्ड ने झपट्टा मारकर उसके बाल पकड़े और बेरहमी से उन्हें खींचता हुआ अनामिका को खड़ा किया। चैतन्य और अल्फ़ी दोनों ही बुरी तरह से छटपटाने थे।

"पता है! तुझे इस तरह मारने का दिल बिल्कुल भी नहीं था, पर क्या करूं... मजबूरी है। जब सारी डायनें जल चुकी हैं... तो फिर तू क्यों बचे? है ना! वैसे भी इस अदालत ने फैसला मुझ पर छोड़ दिया है और अब... वो भी इससे नहीं मुकर सकते। तो फिर चलें! जलने का मजा लिया जाए!" कहते हुए एडवर्ड ने अपने सीधे हाथ को एक झटका सा दिया, जिससे उसके हाथ से आग का एक गोला निकलकर जमीन से टकराया और फिर वहॉ से आग की लपटें उठने लगी।

ये सब देखकर चैतन्य और अल्फ़ी दोनों ही सदमे में आ गए। अब कुछ किए बिना और कोई रास्ता नहीं था। चैतन्य ने तेजी से अपने कपड़ों से खंज़र निकाला और उसे अपनी बाईं ओर के गार्ड के सीने में घुसा दिया। इस अचानक हमले से सभी भौंचक रह गए। चैतन्य ने पास खड़े दूसरे गार्ड के हमले को अपने बाएँ हाथ से रोका और उसकी ओर बढ़े तीसरे गार्ड के पेट में पूरी ताकत से लात मारी, जिससे वो उछलकर की फुट पीछे हवा में उड़ गया। इसके बाद बिना देरी किए चैतन्य ने बाएँ हाथ में पकड़े गार्ड के हाथ को मोड़कर एक झटका दिया और उसकी तलवार अपने हाथ में ले ली और उसे सामने से आते गार्ड के सीने में फेंककर मारा। वो वहीं ढेर हो गया। अब चैतन्य ने अपनी गिरफ्त में फँसे गार्ड को घुमाकर पीछे से पकड़ा और फिर झुककर नीचे गिरे गार्ड के सीने से अपना खंज़र निकाल कर उस गार्ड की गर्दन रेत दी। दो मिनट में ही चैतन्य ने चार गार्ड्स को सबकी ऑखों के सामने ही मौत के घाट उतार

दिया। अब वो खून से सना हुआ अपना खंज़र पकड़े चारों ओर गुस्से से देख रहा था। दूसरे गार्ड्स उसका ये रूप देखकर उससे पीछे हट रहे थे। चैतन्य ने खंज़र का रूख एडवर्ड की ओर किया और उसे अपनी शोलों भरी आँखों से देखते हुए एक झटके में वो खंज़र उसकी ओर फेंका। एडवर्ड ने तेजी से एक ओर होकर खुद को
बचाया। वो खंज़र पीछे जाकर एक जज को लग गया। उसे ऐसी हालत में देखकर एडवर्ड ने गुस्से से चैतन्य की ओर देखा, जिसने अब दोनों हाथों में तलवारें पकड़ ली थीं। आधा खून से नहाया हुआ वो गुस्से में बुरी तरह से हाँफ रहा था।

उसकी इतनी ज़ुर्रत देखकर एडवर्ड का पारा भी गर्म हुआ था। उसने भी अनामिका की गर्दन को झटके से अपनी बांह में फँसाते हुए उस पर अपना खंज़र टिकाया था। अनामिका की गर्दन में खंज़र देखकर चैतन्य गुस्से में आगे बढ़ा ही था कि तभी एडवर्ड ने उस खंज़र की नोंक अनामिका की गर्दन में थोड़ी सी घुसा दी, जिससे वहाँ से खून निकल आया। चैतन्य अपनी जगह पर रूका था। और तभी... ये हुआ।

अनामिका ने अपनी ओर से लापरवाह हुए एडवर्ड के पैर में जोर से लात मारी और फिर उसके चीखने पर अपनी कोहनी उसकी पसली में घुसाई। एडवर्ड इस अचानक हमले को झेल नहीं पाया और उसकी पकड़ अनामिका पर कमजोर हो गई।उसी समय अनामिका ने इसका फायदा उठाते हुए उसकी बांह से खुद को छुड़ाया और उसी का खंज़र उसी के कंधे में घुसा दिया। एडवर्ड की तेज चीख उस कमरे में फ़ैल गई। मगर किसी ने भी कुछ नहीं किया। सभी को जैसे लकवा मार चुका था। किसी ने भी अनामिका से ये उम्मीद नहीं की होगी।अभी अनामिका आक्रमण की मुद्रा में ही थी कि अगले ही पल एडवर्ड का खंजर आकर उसकी बांह में घुस गया। अनामिका की चीख एडवर्ड के दिल को सूकून दे गई। एडवर्ड ने अपना हमला कर दिया था। अनामिका को घायल होता देखकर चैतन्य उसकी ओर दौड़ने को ही हुआ कि तभी एक ओर से किसी के जोर से चिंघाड़ने की आवाज आई। ये अल्फ़ी था, जो अब हर कैद से आजाद था और घायल अनामिका पर एक नज़र डालने के बाद सभी को कच्चा खा जाने वाली नज़रों से घूर रहा था
उस तेज चिंघाड़ को सुनकर सभी की नज़रें उस ओर उठी थीं और सामने का नज़ारा देखते ही सभी अपनी-अपनी जगह पर जम से गए थे। अल्फ़ी की बेड़ियों को पकड़कर खड़े दो गार्ड्स जमीन पर लहुलुहान पड़े थे। उनके शरीर में कोई भी हलचल नहीं हो रही थी। बाकी बचे दो गार्ड्स अल्फ़ी की गिरफ्त में छटपटा रहे थे। दोनों को गर्दन से दबोचे हुए अल्फ़ी, एडवर्ड को लाल दहकती आँखों से घूर रहा था और उसकी वो नज़र हैरान एडवर्ड के साथ-साथ पीटर के माथे पर भी शिकन बढ़ा गई थी।

अल्फ़ी ने एडवर्ड की ओर देखते हुए ही तेज दहाड़ के साथ एक गार्ड की गर्दन पर अपने दाँत गड़ा दिए। उस गार्ड की दिल दहलाने वाली आवाज उस कमरे की दीवारों से टकराकर गूंज उठी और फिर अगले ही पल उसकी गर्दन का वो हिस्सा अल्फ़ी ने अपने दाँतों से काटकर बाहर निकाल लिया। ये देखकर उस कमरे में मौजूद एक-एक व्यक्ति सदमे की हालत में आ गया था। उस मॉस के टुकड़े को मुँह में रखे हुए ही वो अभी भी एडवर्ड को घूरे जा रहा था। उस गार्ड का शरीर ढीला होते ही उसने उसे जमीन में फेंक दिया और फिर दूसरे गार्ड की गर्दन को अपने हाथों में फँसाकर तेज
झटके से एक ओर मोड़ दिया। गर्दन की हड्डी चटकने की आवाज सबको सुनाई दी और उस गार्ड का शरीर भी अल्फ़ी के हाथ में झूलने लगा। अल्फ़ी की तीखी नज़रें अभी भी एडवर्ड पर से हटी नहीं थीं। वहीं एडवर्ड भी अपने सख़्त चेहरे के साथ उसे ही देख रहा था। अल्फ़ी ने मरे हुए गार्ड को झटके से छोड़ा और फिर एडवर्ड को देखते हुए अपने दाँतों में पकड़े हुए मॉस के टुकड़े को घृणा से थूक दिया। उसका आधा चेहरा खून से सना हुआ था और वो गहरी-गहरी साँसें ले रहा था। उसने अपने हाथों... जो पहले ही बेड़ियों से आजाद हो चुके थे, से अपने गले में पड़ी बेड़ियों को एक झटके से तोड़ा और फिर अपने पूरे शरीर को उन बेड़ियों से आजाद करते हुए एडवर्ड की ओर बढ़ गया।

उसके उस विकराल रूप को देखकर सभी उससे दूर हटने लगे थे। कुछ लोगों ने बाहर भागने की कोशिश की तो अल्फ़ी ने उस ओर अपना एक हाथ उठाकर दरवाजे को बंद कर दिया। अब सब अल्फ़ी की क़ैद में थे। वो सब जो... कुछ देर पहले उन तीनों की बर्बाद हालात का मजा ले रहे थे... अब खुद सहमे हुए से खड़े थे। यकीनन ये एक जादुई दुनिया थी और सभी कुछ ना कुछ ताकतें रखते थे, पर शक्तिनियंत्रक बेड़ियों से खुद को इतनी आसानी से आजाद कर लेने की ताकत के बारे में ना किसी ने सुना और ना कभी देखा। ऊपर से अल्फ़ी का लंबा-भरा-पूरा शरीर, चौड़े कंधे, उभरी हुई मांसपेशियों के साथ फूली हुई बाहें और कसी हुई मजबूत मुट्ठियॉं अपने सामने किसी को भी दहलाने के लिए काफी थीं। लोग तेजी से उसके और एडवर्ड के बीच से हट रहे थे।

अल्फ़ी चलता हुआ अनामिका के पास पहुँचा। उसने अनामिका की ओर देखा, जिसके चेहरे में दर्द का हल्का सा पीला रंग बिखरा हुआ था और उसने अपनी घायल बांह को दूसरे हाथ से पकड़ रखा था। अल्फ़ी ने हाथ बढ़ाकर उसके ज़ख़्म को छुआ और फिर उसके खून से रंगी अपनी ऊंगलियों को अपनी ऑखों के सामने लाकर देखा। उसकी ऑखों के सामने हेममाया का दर्द से भरा चेहरा आ गया और फिर उसके अंदर जो
भी टूटा, उसकी किरचियॉं साथ लिए वो एक लंबी छलांग के साथ एडवर्ड के सामने खड़ा था।

अपने दॉंत भींचे अल्फ़ी, एडवर्ड पर झपटा। एडवर्ड ने भी फुर्ती से उसके प्रहार को रोका और अगले ही पल वो दोनों ही एक-दूसरे से बुरी तरह से उलझे हुए थे। उन दोनों की ही शक्तियॉं अन्य पिशाचों की समझ और कल्पना से परे थी। वो सभी अपनी ऑखें फाड़े मौत को मौत से ही लड़ते देख रहे थे। कभी अल्फ़ी... तो कभी एडवर्ड दूसरे पर हावी नज़र आ रहे थे। वो दोनों लड़ते हुए कभी दीवारों पर चलने लगते... तो कभी छत से लटके दिखाई देते। अनामिका और चैतन्य भी सब कुछ भूलकर हकदक सी हालत में उन दोनों को ही देख रहे थे।

"ये क्या हो रहा है पीटर? इन दोनों के पास ऐसी शक्तियॉं कहॉं से आई? ऐसी शक्ति तो पिशाचदेव की लंबी साधना से ही बड़ी मुश्किल से मिलती हैं। तो क्या ये अफवाह सही है कि एडवर्ड छुप-छुपकर छद्म पिशाच साधना कर रहा है?" बचे हुए दो जजों में से एक ने पीटर से सख़्त लहज़े में पूछा।

छत पर चल रही अल्फ़ी और एडवर्ड की लड़ाई को देखकर बुरी तरह से झल्लाए हुए पीटर ने गुस्से से अपने दॉंत भींचे और फिर वो अपना खंज़र निकाल कर तेजी से घूमा और एक ही झटके में उस जज़ की गर्दन को रेंत दिया। गले से गर्मा-गर्म खून भलभलाकर निकला और वो जज़ वहीं ढेर हो गया। पीटर ने उस जज़ के मृत शरीर पर चिढ़ी हुई सी नज़र डाली और फिर झटके से दूसरे की ओर देखा। वो जज़ सहमकर पीछे हुआ। उसे पता चल चुका था कि पीटर का खंज़र एक ख़ास दवा के घोल में डूबाकर अभिमंत्रित किया हुआ था और उसके वार के बाद कोई भी पिशाच पुनर्जीवित नहीं हो सकता था... चाहे वो कितना भी शक्तिशाली क्यों ना रहा हो! उन दोनों ने हर तरह से हर चीज को अपने पक्ष में कर लिया था।
उसी समय एडवर्ड उनके सामने आकर गिरा। उसका चेहरा अल्फ़ी के नाखूनों से बुरी तरह से नोंच लिया गया था और उसमें से खून बह रहा था। एडवर्ड उठकर खड़ा हुआ और फिर अल्फ़ी को घूर कर देखा, जो अब उसके सामने ही खड़ा गुर्रा रहा था। एडवर्ड के होंठों पर मुस्कान आई और फिर अगले पलों में ही उसका बहता हुआ खून जख़्मों में वापस लौटा और सारे ज़ख़्म सिमटते हुए गायब हो गए। उसने अपने खंज़र को मजबूती से पकड़ा और अल्फ़ी पर छलांग लगा दी। अल्फ़ी पहले से ही तैयार था। उसने एडवर्ड को हवा में ही पकड़ लिया और फिर उसके शरीर को घुमाकर सामने की दीवार पर दे मारा। मगर इन सबमें अल्फ़ी की बांह में एडवर्ड के खंज़र से बहुत ही गहरा कट लग गया। अल्फ़ी ने उस जख़्म को देखा और फिर अपनी उस बांह को तेजी से झटका दिया। वो एडवर्ड की ओर आगे बढ़ा और इसी के साथ उसकी बांह का गहरा कट भी तेजी से भरकर गायब हो गया। उसने आगे बढ़कर गिरे हुए

एडवर्ड को उठाना चाहा, उसी समय एडवर्ड ने अपना खंज़र अल्फ़ी के पेट में घुसा कर घुमा दिया। अल्फ़ी उस खंज़र को पकड़े हुए लड़खड़ाकर पीछे हुआ। ये देखते ही पीटर के होंठों पर मुस्कान खिली। वहीं अल्फ़ी को ऐसी हालत में देखकर अनामिका ने एक तेज चीख के साथ अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया। उसकी चीख सुनकर अल्फ़ी ने उसकी ओर देखा।

"उन्हूं!" चिढ़ते हुए अल्फ़ी ने वो खंज़र खींचकर बाहर निकाला और एक ओर उछाल दिया। उसका वो ज़ख़्म भी उसके वहॉ हाथ फिराते ही गायब हो गया। उसे सही-सलामत पाकर अनामिका ने राहत की साँस ली। उसे सही पाकर अल्फ़ी एक बार फिर से एडवर्ड की ओर बढ़ गया, जो अपने इतने बड़े वार को खाली जाता देखकर बुरी तरह से तिलमिला उठा था। अगले ही पल वो दोनों ही एक बार फिर से गुत्थम-गुत्था हो चुके थे।

जहॉ सभी दम साधे उन दोनों की भिडंत को देख रहे थे, वहीं पीटर का दिमाग कहीं और ही उलझा हुआ था। वो बस अल्फ़ी को ही देखे जा रहा था। उसके भरते हुए जख़्म पीटर को ज़ख़्मी कर रहे थे। उसे अपना
मकसद अपनी ऑखों के सामने धूमिल होता नज़र आने लगा। उसके अंदर गुस्से का एक रेला उमड़ा और उसने पलटकर दूसरे जज़ के सीने में भी अपना खंज़र उतार दिया। मेहमान उसकी इस हरकत से बुरी तरह से बिदके थे। पीटर ने बचे हुए गार्ड्स को चिल्लाकर वहॉ मौजूद सभी लोगों को ख़ास खंज़रों से मौत के घाट उतारने का आदेश दिया। वो नहीं चाहता था कि एडवर्ड का सच साधना पूरी होने से पहले लोगों के सामने आए।

"एडवर्ड चलो!" पीटर ने ऊँची आवाज में चिल्लाकर कहा और तेजी से एक ओर बढ़ गया।

मेहमान कुछ समझ पाते उससे पहले ही गार्ड्स उन पर टूट पड़े। देखते ही देखते वहॉ अफ़रा-तफ़री मच गई। मेहमान जादुई रूप से ताकतवर तो थे... पर आरामतलबी ने उनकी शारीरिक ताकत और फुर्ती पर जंग लगा दिया था और इस दुनिया में फुर्ती से वार करने वाला ही ज्यादा ताकतवर होता था। वो सब तो हमेशा उन्हीं गार्ड्स की तलवारों के साए में महफूज रहते थे। ऊपर से गार्ड्स के हाथों में अभिमंत्रित खंज़रों ने उनकी रही-सही हिम्मत भी तोड़ दी। वो सब भीड़ की तरह दूसरे की मजबूरी पर चीख-चीख कर अपना रौब तो दिखा सकते थे.. पर अकेले वो कुछ भी नहीं थे। सब ऐसा ही तो करते हैं। पर बात अब खुद अपनी जिंदगी बचाने की थी और उसे बचाने के लिए सभी इधर-उधर भागने लगे। मगर वो सब गार्ड्स अपने काम में अच्छी तरह प्रशिक्षित थे।

चैतन्य ने घायल अनामिका की ओर तेजी से बढ़े गार्ड के वार को अपने हाथ में पकड़ी एक तलवार से रोका और फिर दूसरे हाथ की तलवार को उसके दिल में उतार दिया। वो वहीं गिर कर ढेर हो गया।

"इन्हें मारना है तो इनके दिल पर वार करो या फिर सिर काटकर अलग कर दो।" चैतन्य ने अनामिका को समझाकर उसकी ओर एक तलवार बढ़ाते हुए कहा।
"समझ गई!" अनामिका ने भी अपने दर्द को पीछे ढकेलकर तलवार पकड़ते हुए कहा।

सामने से आए दो गार्ड्स के वारों को रोकने के लिए उन दोनों ने ही अपनी-अपनी तलवार अड़ाई थी। चैतन्य ने तो गार्ड को आसानी से ठिकाने लगा दिया.. मगर अनामिका घायल होने की वजह से कमजोर पड़ रही थी। वो उस गार्ड की ताकत को संभाल नहीं पाने के कारण जमीन में गिर गई और उसकी तलवार भी छूट गई। उस गार्ड ने अनामिका पर वार करने के लिए तलवार दोनों हाथों से पकड़कर सिर के ऊपर तक उठाई। वो इसके आगे कुछ कर पाता... चैतन्य की तलवार ने एक सीध में उसकी उठी हुई

दोनों बांहें भी गर्दन के साथ काटकर अलग कर दीं। खून की एक बौछार अनामिका को भिगा गई।

"तुम ठीक हो?" चैतन्य ने फ़िक्र से उसे देखते हुए पूछा और अपना हाथ बढ़ाया।

"हॉ! ठीक हूँ मैं!" कहते हुए अनामिका ने उसके बढ़े हुए हाथ को थामा और खड़ी हो गई। उसी समय अनामिका की ऑखें कुछ देखकर फैलीं और उसने तेजी से चैतन्य को एक ओर ढकेला। उनके हटते ही पीछे से वार कर रहा गार्ड वार खाली जाने पर लड़खड़ा गया। वो जैसे ही सीधा हुआ अनामिका ने अपना खंज़र पूरी ताकत से फेंककर उसके दिल में उतार दिया। वो वहीं गिर गया।

"निशाना तो परफेक्ट है तुम्हारा!" चैतन्य ने तारीफ करते हुए कहा।

"हॉ! फ्रस्ट्रेशन भरे दिनों में तनाव दूर करने के लिए यही काम किया करती थी। आज काम आ रहा है।" अनामिका ने अपना खंज़र बाहर निकालते हुए कहा।
"अच्छा जरिया खोजा टाइमपास के लिए!" चैतन्य ने मुस्कुराकर कहा।

"इट्स ज़रिया.... नॉट जरिया वरूण!" और अनामिका एकदम से चुप पड़ी थी।

"याद आ गई!" चारों ओर चौकन्नी निगाहें रखे हुए चैतन्य ने कहा।

"मुझे घर जाना है!" अनामिका की आवाज भर्रा गई थी।

"बस... कुछ घंटे और...! वापस ले जाऊंगा तुम्हारे वरूण के पास! ठीक है! चिंता मत करो।" चैतन्य ने उसे हौसला देते हुए कहा, जिस पर अनामिका ने भी सिर हिलाकर धीरे से हुंकारी भरी।

"ये अल्फ़ी और एडवर्ड कहॉ चले गए?" एक आड़ में अनामिका को छिपाकर खुद बाहर झांकते हुए चैतन्य ने चारों ओर देखते हुए कहा। अनामिका ने भी अपनी निगाहें जरा सी बाहर निकाली थीं।

उन्होने ऑखें घुमाकर सावधानी से पूरे कमरे में देखा। वो दोनों ही वहॉ नहीं थे। चारों ओर लाशें ही लाशें बिछी हुई थीं। पूरा कमरा खून से होली खेला हुआ प्रतीत हो रहा था। पूरे कमरे में कटी-फटी लाशें पड़ी हुई थीं। कहीं किसी का कटा हुआ पैर था... तो कहीं किसी की कटी हुई खोपड़ी खून उगल रही थी। कहीं किसी का चेहरा तलवार से दो टुकड़ों में कटा हुआ अलग-अलग जगहों में पड़ा था... तो कहीं किसी का सीना लुगदी बना हुआ था। कुल मिलाकर एडवर्ड और पीटर के गार्ड्स ने भी उनकी बेरहम छत्रछाया का परिचय पूरी ईमानदारी से दिया था। सबको मौत के घाट उतारने के बाद वो सारे गार्ड्स सबकी ओर ध्यान से देख रहे थे।

"वो नहीं है यहॉ!" सभी लाशों का मुआयना करते हुए एक गार्ड
चिल्लाया।

"यहीं कहीं होगा! ढूंढो उसे! वो बचना नहीं चाहिए!" दूसरा गार्ड भी ऊंची आवाज में चिल्लाकर बोला। चैतन्य और अनामिका समझ गए कि वो चैतन्य को ही ढूंढ रहे थे।

"तुम रूको यहीं! मैं देखता हूँ इन्हें!" चैतन्य अपनी आस्तीनें चढ़ाते हुए बोला।

"पागल हो गए हो! दस गार्ड्स गिने मैंने। अकेले कैसे उनसे पार पाओगे?" अनामिका उसकी बांह पकड़कर बेचैनी से बोली।

"तुम्हें क्या लग रहा है? महल के किसी कोने में छिपे हैं हम! पॉच मिनट भी नहीं लगेंगे उन्हें हमें ढूंढने में! इससे अच्छा है कि अभी ही सामने चला जाए... जब बाद में जाना ही है। कम से कम तुम तो छिपकर रह सकती हो।" चैतन्य ने बहुत ही धीमी आवाज में कहा।

"और छिपकर क्या करूंगी मैं?" अनामिका ने बहुत ही चिढ़ से कहा। उसे इस तरह छिपकर बैठना बहुत ही तकलीफदेह लग रहा था।

उसका लहज़ा समझकर चैतन्य ने उसकी ओर देखा और फिर अपने कपड़ों से चॉदी के कॉटे निकालकर उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, "निशाने लगाओ! जिसमें तुम माहिर हो। और क्या?"

अनामिका ने उन कॉटों की ओर देखा और फिर चैतन्य पर मुस्कुराती हुई नज़र डालते हुए वो ले लिए। चैतन्य ने पास पड़ी तलवार उठाई और दूसरे हाथ में खंज़र संभालता हुआ बाहर की ओर निकल गया।

"वो रहा!" एक गार्ड उसकी ओर इशारा करते हुए चिल्लाया। एक साथ
सभी उसी की ओर दौड़े। चैतन्य ने तलवार की मूँठ पर पकड़ मजबूत की और सबसे पहले आने वाले गार्ड का इंतजार किया। उसने जैसे ही हमला किया.. चैतन्य ने अपने खंज़र वाले हाथ को उसकी कलाई के पास टिकाते हुए उस के वार को रोका और फिर अगले ही पल तलवार से उसकी गर्दन उड़ा दी। उसकी गर्दन उड़ाते ही वो तेजी से गोल घूमा और फिर सामने आए गार्ड के दिल के ऊपर सीने में खंज़र उतार दिया। उसने खंज़र को थोड़ा उमेठा और फिर उस गार्ड को लात मारकर अपना खंज़र एक ही झटके से बाहर निकाल लिया। एक पल की देरी किए बिना उसका हाथ घूमा और पास आए गार्ड की खोपड़ी हवा की सैर पर निकल गई। चैतन्य अगला वार करता उससे पहले ही दो गार्ड्स एक साथ उसकी ओर बढ़े। वो उसपर हमला करते उससे पहले ही हवा में पीछे की ओर उछल गए। उनके सीने में धंसे कॉटें को देखकर चैतन्य मुस्कुराया। पॉच खत्म हो चुके थे। सामने देखा... चार और थे, जो गुस्से से उसे ही देख रहे थे।

चैतन्य ने एक सीटी बजाई और भौंह नचाकर उन्हें चिढ़ाते हुए बोला, "इधर! बूढ़ी-पिलपिली हड्डियॉ काटकर खुद को तलवार बाज समझ रहे हो। जरा... हमारी तलवार से इश्क लड़ाओ... तो जाने!"

चैतन्य के उकसाने से भड़ककर वो चारों लाशों के समुंदर को पार करते हुए उसके पास पहुँचे और उसे चारों ओर से घेर लिया। चैतन्य ने चारों ओर नज़र दौड़ाई। तलवार पर ऊंगलियॉ कसे हुए वो उन चारों की आहटों पर कान धरे हुए था। वो अपने आप को तैयार कर ही चुका था और उन चारों ने ही एक साथ ही उसके ऊपर हमला किया। चैतन्य ने अपने सिर पर तलवार रखकर उन चारों के हमले को रोका था। वो पूरी ताकत से उन्हें रोकने की कोशिश कर रहा था, पर इस बार पलड़ा उन चारों का भारी था। वो लगातार उस पर दबाव बढ़ा ही रहे थे कि तभी उनमें से एक एक हल्की सी आह के साथ बिल्कुल खड़ा रह गया। सबका ध्यान उसकी ओर गया, तो वो मुँह से खून उगलता नीचे गिर गया। चॉदी का कॉटा पूरा का पूरा उसके सीने में घुस गया था।
अभी वो कुछ समझ पाते कि कोई चीज तेजी से उनकी ओर आई और दो गार्ड्स को अपने साथ दूर ले गई। वो एडवर्ड था... जिसकी हालत बहुत ही बुरी दिखाई पड़ रही थी। वो जिस गार्ड के ऊपर गिरा, उसकी तलवार एडवर्ड के आर-पार निकल गई थी। एडवर्ड ने दूसरे गार्ड की मदद से खुद को आगे खींचकर उस तलवार से आजाद किया और फिर तेजी से पलटकर उस गार्ड की गर्दन अपने दोनों हाथों

से पकड़कर उखाड़ दी। उसके बाद उसने दूसरे गार्ड की गर्दन पर उसी की तलवार छीनकर चला दी। उसकी गर्दन एक ओर लुढ़क गई। हालांकि इतनी देर में उसके सारे ज़ख़्म अपने आप भर गए थे, मगर वो बहुत ही गुस्से में दिखाई दे रहा था।

चैतन्य और बाकी बचे एक गार्ड ने भी उस ओर देखा जिस तरफ से उड़ता हुआ एडवर्ड आया था। वहाँ अल्फ़ी पूरे रौब से खड़ा था। सबसे पहले उसने अपना सिर गोल-गोल घुमाया और फिर गर्दन को दोनों तरफ हल्के से झटके देकर वो आगे बढ़ा। खुद को उसके सामने कमतर पाकर एडवर्ड का रोम-रोम सुलग रहा था। चैतन्य समझ गया था कि अब पीछे हटने का समय है और वो पीछे हट गया। अल्फ़ी दहाड़ लगाता एडवर्ड की ओर दौड़ा ही था कि तभी एक कोने से आवाज आई। उन सभी ने उस ओर देखा तो अनामिका को एक गार्ड ने अपने कब्जे में किया हुआ था।

चैतन्य ने हैरानी से अपने पास देखा तो वो गार्ड अभी भी वहीं था। उसने हिसाब लगाया। बाहर आते ही उसने तीन को काटा और अनामिका ने दो को उड़ाया। पाँच हुए। उसके बाद वो चार गार्ड्स से उलझा था। तीन, दो और चार... मिलाकर हुए नौ! अनामिका ने बताया था कि कुल दस गार्ड्स थे। और फिर अपने ग़लत हिसाब पर उसने अपना माथा पीटा।

"सच कहती थी माँ... कि सही से हिसाब लगाना सीख ले... वरना पछतायेगा! हो गया सियापा!" खुद को लताड़ते हुए वो मन में ही बुदबुदाया।
उस गार्ड ने अनामिका के हाथ पीछे से पकड़कर उसकी गर्दन पर तलवार टिका रखी थी। उसकी मजबूत पकड़ में अनामिका के ज़ख़्म से एक बार फिर से खून रिसने लगा था। चैतन्य ने उसकी ओर कदम बढ़ाया तो उसके पास खड़े गार्ड ने उसके हाथ में हमला कर उसकी तलवार गिराई और उसे अपनी तलवार की नोंक में ले लिया। बाजी एकदम से ही पलटी हुई लग रही थी। मगर दुश्मनों के चेहरे पर मुस्कान आती.. उससे पहले ही अल्फ़ी हवा की तरह अनामिका को कब्जे में किए हुए गार्ड के पीछे खड़ा था। वो गार्ड संभल पाता उससे पहले ही उसके हाथ अल्फ़ी की गिरफ्त में थे। उसके चंगुल से छूटते ही अनामिका एक ओर होकर खड़ी हो गई। दूसरी तरफ इन सबसे चैतन्य के पास खड़े गार्ड का ध्यान भी बँट गया, जो उसकी जान पर भारी पड़ गया, जब चैतन्य ने अपना खंज़र सीधे उसके सीने में उतार दिया।

उधर अनामिका को चोट पहुँचाने की ज़ुर्रत करने की वजह से गुस्से में ज्वालामुखी हुए अल्फ़ी ने उस गार्ड को जमीन में पटका। अल्फ़ी ने उसके एक पैर पर अपना एक पैर जमाकर उसके दूसरे पैर को पकड़ा और फिर एक कानफाड़ू चीख के साथ उस गार्ड के शरीर के दो टुकड़े कर दिए। दो टुकड़ों में बँटते समय उस गार्ड की दिल दहलाने वाली चीख सुनने की हिम्मत ना तो अनामिका में थी और ना ही चैतन्य ने। उस वीभत्स दृश्य को देखकर अनामिका ने अपने कान बंद कर अपना चेहरा नीचे झुका लिया था। वहीं चैतन्य ने भी अपनी नज़रें दूसरी ओर फेर रखी थीं और बस... यहीं एक चूक फिर से हो गई। उस गार्ड के शरीर के टुकड़ों को अलग-अलग दिशा में फेंकने के बाद जब अल्फ़ी ने अनामिका की ओर देखा तो वो सदमे में आ गया। एडवर्ड इस छोटे से मौके का फायदा उठाने से बिल्कुल नहीं चूका और अनामिका को अपने कब्जे में करके अल्फ़ी और चैतन्य दोनों को देखकर कमीनगी से मुस्कुराया।
"गुड बाय कहो अनामिका! अब इनसे कभी नहीं मिलोगी तुम!"

ये कहते ही उसने एक बार फिर से दिल को नोंचने वाली मुस्कुराहट के साथ उन दोनों को देखा और अगले ही पल एक बहुत ही लंबी छलांग लगाकर रोशनदान का शीशा तोड़ते हुए वो अनामिका के साथ वहाँ से निकल गया। चैतन्य और अल्फ़ी इतने बड़े नुकसान के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थे। लेकिन

वो इस समय लाशों के ढेर पर खून से नहाए खड़े सिर उठाकर ऊपर की ओर देख रहे थे। मेंशन के बहुचर्चित हत्याकांड के बाद अगला पड़ाव कौन सा था.... उन्हें नहीं पता था। मगर चैतन्य के कानों में माया की बद्दुआ बार-बार गूंजकर उसका दिल दहलाने लगी थी और ये ख्याल ही उन दोनों के लिए इस हत्याकांड से कहीं ज्यादा ख़ौफनाक था।

अल्फ़ी और चैतन्य दोनों ही ऑखें और मुँह फाड़े उस टूटे हुए रोशनदान को देख रहे थे। ख़ौफ और हैरानी उन दोनों की ही ऑखों में हाथ मिलाकर नाच रहे थे। सब कुछ तो उनके हाथों में आता दिख रहा था... और अब ये क्या हो गया? एक गहरी आह चैतन्य के मुँह से निकली और अपने चेहरे को हथेलियों में छिपाकर वो घुटनों पर बैठ गया। कमर पर हाथ रखकर परेशान खड़े अल्फ़ी ने उसकी ओर एक नज़र देखा और फिर नज़र फेर लिया। उसी समय कुछ आवाजें उसके कान तक पहुँची। एक बार फिर उसने चैतन्य की ओर देखा, जो खुद ही खुद में बड़बड़ा रहा था।

"नहीं! नहीं चैतन्य! रोना नहीं है! गुस्सा भी नहीं करना है! तो क्या करना है? दिमाग लगाना है! कहॉ ले जा सकता है वो सफ़ेद चमगादड़ अनु को? सोच! अच्छे से सोच! वरना सब तेरी आत्मा को तेरे शरीर से निचोड़कर निकाल देंगे। अनु को कुछ हुआ तो सबको क्या जवाब देगा? अरे खुद को क्या जवाब देगा? वो वरूण तुझे कच्चा नहीं खाएगा... सीधा निगल जाएगा और डकार मारने के बाद उसे पानी भी आशुतोष जी ही देंगे।"

"क्या बड़बड़ा रहे हो?" अल्फ़ी ने जबड़े कसते हुए उसे डपटा।

"तुम तो चुप ही करो!" चैतन्य तमतमाकर उठा और अल्फ़ी के सामने उसकी ऑखों में ऑख डालकर खड़ा हो गया। अल्फ़ी भी उसकी हिली हुई हालत को ग़ौर से देख रहा था।
"तुम... तुम्हारा परिवार... तुम्हारा ख़ानदान... सब किया धरा तुम सबका और पेनल्टी भरें हम! इ नाही चलेगा! सीधे-सीधे बोल... कहॉ गया है वो जूनियर बैटमैन? वरना....!" चैतन्य ने भुनभुनाते हुए अल्फ़ी का गिरेबान दबोचा था, जिसे अल्फ़ी ने बहुत ही चिढ़ से अपनी चढ़ी हुई भौंह के साथ देखा था।

"होश में रहोगे तो मिल भी जाएगी... वरना इस हालत में तो फिर सारी जिंदगी ढूंढते ही रहना।" अल्फ़ी ने भी उसका हाथ झटककर अपना गिरेबान छुड़ाते हुए कहा।

अपने खाली हाथों की ओर देखकर चैतन्य की ऑखें बरबस ही भर आईं। उसने अपना लहज़ा नरम करते हुए अल्फ़ी से कहा, "अल्फ़ी! प्लीज़! अगर तुम्हें पता है तो बता दो। समय नहीं है हमारे पास!"

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी ने उसकी ओर देखा और फिर नज़र घुमाकर लाचारी से कहा, "तुम्हें क्या लगता है? मुझे पता होता तो मैं इस समय तुम्हारे सामने खड़ा होता।"

"तो फिर किसे पता होगा?" चैतन्य एक बार फिर से बुरी तरह से उखड़ा था।

"अरे यार! चुप रहोगे तुम! तुम चुप करो तो सोचूं मैं थोड़ा... कि कहॉ ले जा सकता है वो अनामिका को।" अल्फ़ी ने झुंझलाकर अपने दोनों हाथ झटकते हुए कहा।

"उस कमीने को भी अभी हाइड एंड सीक खेलना था। अभी इतने बड़े कस्बे में कहॉ ढूंढे उसे? करता ना

जाकर अपनी वो.... क्या कहते हैं... हॉ... छद्म पिशाच साधना! वैसे भी तीसरा पहर लग चुका है।" चैतन्य ने हर शब्द में अपनी झल्लाहट उतारते हुए कहा।
और ये सुनते ही अल्फ़ी ने झटके से चैतन्य की ओर देखा। उसकी नज़रों को खुद पर देखकर चैतन्य थोड़ा असहज हुआ था। मगर अल्फ़ी ने अपनी वो नज़रें उस पर से नहीं हटाई, बल्कि वो बहुत ही खुश तबीयत के साथ उसके पास आया और उसे जोर से गले से लगा लिया। उसकी ऐसी हरकत से चैतन्य के होश ही गुम हो गए। उसने झटके से अपने आप को उससे अलग किया।

"क्या कर रहे हो? दूर हटो! हे भगवान! कैसी जगह आ गया मैं? जिसे देखो चिपक रहा है।" एक बार फिर से चैतन्य ने अपने दिमाग का खालीपन दिखाते हुए तिलमिला कर कहा।

"शटअप! अब चलना है तो चलो! शायद मैं समझ गया हूँ कि वो कहॉ गया होगा? थैंक्स टू यू!" और वो तेजी से दरवाजे की ओर बढ़ गया। चैतन्य ने एक नज़र उस पर डाली और फिर सिर उठाकर उस टूटे रोशनदान को देखने लगा।

"अब वहॉ से वापस नहीं आएगी वो! चलो!" अल्फ़ी ने एक बार फिर से उसे घुड़का।

"अ... हॉ! हॉ! आया!" उसकी घुड़की सुनकर चैतन्य तेजी से लाशों के ऊपर से छलांग लगता हुआ उसकी ओर भागा।

कुछ ही देर में वो दोनों अल्फ़ी के कमरे के पास वाले छलद्वार के सामने खड़े थे। चैतन्य ने आगे बढ़कर उसे सक्रिय किया और फिर अल्फ़ी को अपने साथ लेकर उसके अंदर चला गया। झील के किनारे आकर चैतन्य ने जंगल की ओर देखा और बोला, "अब?"

"चलो!" अल्फ़ी ने उसे अपने पीछे आने का इशारा किया और तेजी से
एक ओर भागा। उसकी गति बहुत ही असाधारण थी। पर चैतन्य भी वायु की शक्ति पास रखता था। वो भी उतनी ही तेजी से उसके पीछे गया। करीब दो-तीन मिनट के बाद ही वो दोनों जंगल की अनछुई गहराई में खड़े थे। चैतन्य ने जंगल में फैले गहरे अंधकार में नज़र दौड़ाई। पेड़ों से छनकर चॉद की अपर्याप्त रोशनी आ रही थी।

"वो पत्थर दिख रहा है तुम्हें? बस... वहीं है वो जगह!" अल्फ़ी ने नीम अंधेरे में भी दिखाई दे रहे बड़े से पत्थर की ओर इशारा करते हुए कहा। चैतन्य ने किसी भूखे की तरह उस पत्थर को देखा और फिर अगले ही पल उस ओर लपका। मगर अल्फ़ी ने उससे भी तेजी से उसकी कमर से उसे पकड़कर उसे पीछे की ओर फेंका, जिससे चैतन्य ने उसे सवालिया नजरों से देखा।

"रूक जा ओ सौ जनम से बिछड़े प्रेमी! तुम्हारा ये उतावलापन कहीं सब गुड़ गोबर ना कर दे।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से उसे लतियाड़ा था।

"अच्छा! कुछ कसर बची है क्या अभी भी?" चैतन्य ने भी उसका तीर उसे लौटाते हुए कहा।

"मुझे लगता है कि तीसरा पहर खत्म होने में दो घंटे बचे होंगे। बस यही समय है हमारे पास। हमें उसकी साधना भंग करनी है।" अल्फ़ी ने कहा।

"और वो कैसे?" चैतन्य ने पूछा।

"उसे अपनी साधना पूरी करने के लिए मेरी जरूरत है।" अल्फ़ी बोला।

"तो!" चैतन्य ने उसकी बात समझने की कोशिश में पूछा।

"तो उसकी जरूरत पूरी करने जा रहा हूँ। तुम पीछे-पीछे आना!" अल्फ़ी
ने चैतन्य को जवाब देते हुए कहा।

"पागल हो गए हो क्या? तुम तो कह रहे थे कि उसकी साधना भंग करनी है।" चैतन्य ने उसकी बातों में उलझते हुए कहा।

"वो समझ गया है कि ताकत के जोर पर वो मुझे यहाँ नहीं ला सकता और ये भी समझ गया है कि हेममाया के शरीर के बहाने भी वो मुझे डरा भी नहीं सकता, इसलिए वो अनामिका को साथ लेकर आया है क्योंकि..." अपनी बात कहते-कहते अल्फ़ी रूक गया।

"क्योंकि.." चैतन्य ने अल्फ़ी की आगे की बात समझने के लिए उसकी ओर देखा और अगले ही पल बात समझ में आते ही वो एक बार फिर से खिसिया कर रह गया।

"मैं उसे उलझाता हूँ। इस बीच तुम अनामिका को लेकर निकल जाना।" अल्फ़ी ने अपनी योजना दो लाइनों में समझाते हुए कहा।

"और तुम?" चैतन्य ने हड़बड़ाकर पूछा।

"मैं! हुंह! तुम तो यही दुआ करना... कि मैं भी मर ही जाऊँ! तुम्हारे लिए तो यही सही होगा ना!" एक दर्द भरी मुस्कराहट के साथ अल्फ़ी ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

और ये सुनते ही चैतन्य के चेहरे का हर रंग उड़ गया। उसने मुँह खोलना चाहा, मगर फिर बंद कर लिया। अल्फ़ी को सही जवाब देने के लिए उसके पास इस समय कोई शब्द नहीं थे। अल्फ़ी भी उसके जवाब का इंतजार किए बिना आगे बढ़ गया। उसकी ओर देखकर पहली बार चैतन्य को शर्मिंदगी के अहसास ने घेर लिया, पर वो सच में उसके लिए कुछ नहीं कर सकता था।
उस पत्थर के पास पहुँचकर अल्फ़ी ने चारों ओर का जायज़ा लिया और फिर चैतन्य को पास आने का इशारा किया। दोनों ने मिलकर वो पत्थर हटाया और फिर पहले अल्फ़ी और उसके बाद चैतन्य उस गड्ढे में उतरा। दोपहर में जब अल्फ़ी, अनामिका के साथ यहाँ आया था, तब अंदर रोशनी थी, मगर इस समय अंदर घुप्प अंधकार छाया हुआ था। उस अंधेरे में चैतन्य ने अपनी आँखें मिचमिचाई, मगर हासिल कुछ नहीं हुआ।

"यहाँ तो इतना अंधेरा है। हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा... तो आगे कैसे जाएँगे?" चैतन्य ने झुंझलाकर कहा।

"मुझे दिख रहा है। हाथ पकड़ो मेरा!" अल्फ़ी ने चैतन्य की ओर हाथ बढ़ाकर सपाट लहजे में कहा।

"तुम्हें दिख रहा है!" चैतन्य अपना आश्चर्य जताने के लिए आगे कुछ कहता उससे पहले ही उसे याद आ गया कि उसके सामने कौन था और फिर उसने चुप रहना ही बेहतर समझा। उसने अंधेरे में हाथ बढ़ाकर

अल्फ़ी का हाथ ढूंढने की कोशिश की, पर हाथ कुछ लगा नहीं। अल्फ़ी ने एक भौंह चढ़ाकर उसे देखा और फिर खुद ही उसका हाथ पकड़ लिया और फिर उसे बिल्कुल चुप रहने का इशारा करके आगे बढ़ गया। चैतन्य भी उसके पीछे खुद को घसीटते हुए बढ़ गया।

"रूको! दीवार है आगे!" अल्फ़ी ने फुसफुसाकर कहा, जिस पर चैतन्य ने भी अपने पैर रोके थे।

दोपहर की तरह अल्फ़ी ने आगे बढ़कर उस ख़ुफ़िया दरवाजे को खोला और उसे खोलते ही चैतन्य ने कुछ अलग सा महसूस किया, जो उसे अंदर तक राहत पहुँचा गया।
"वो यहीं है! मैं उसे महसूस कर रहा हूँ।" बेसाख़्ता चैतन्य के मुँह से निकला।

"पता है!" अल्फ़ी ने भी उसका समर्थन करते हुए कहा, जिस पर चैतन्य की तरफ एक खामोशी ने कब्ज़ा जमाया था। उसने ये नहीं सोचा था कि अल्फ़ी भी अनु को महसूस कर सकता होगा। उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि किसी ने उसके अधिकारों में सेंध लगा दी हो।

"चलो! आगे रास्ता ज्यादा खराब है। ध्यान से!" अल्फ़ी ने चैतन्य को सावधान करते हुए कहा और उसका हाथ पकड़कर आगे बढ़ गया। बीच-बीच में वो उसे आगाह करता जा रहा था। अल्फ़ी को अचानक ही दोपहर का समय याद आया... जब इसी जगह अनामिका उसके बहुत करीब थी। वो अभी भी उसकी खूश्बू अपने आसपास महसूस कर रहा था। उसके होंठ एक रूखी-सूखी सी मुस्कुराहट से आबाद हुए ही थे कि तभी चैतन्य ने उसके हाथ को झटका दिया।

"क्या हुआ?" अल्फ़ी ने उसके कान के पास सरगोशी की।

"अनु आसपास है! वो मुझसे संपर्क करने की कोशिश कर रही है।" चैतन्य ने उसे बताया।

"क्या? मतलब कि हमारा अंदाजा बिल्कुल सही है। करो संपर्क! उससे पूछो कि कहाँ हैं वो? कौन है उसके आसपास?" अल्फ़ी ने बहुत ही उतावलेपन से पूछा। अनामिका के सुरक्षित होने की आस मजबूत होने से उसका चेहरा खिला था।

"एक मिनट! रूको!" कहते हुए चैतन्य ने अपनी आँखें बंद की और फिर.... "हो गया!"
"पूछो कहाँ हैं वो?" अल्फ़ी ने बेचैनी से पूछा।

"अनु! तुम सुन रही हो मुझे?" चैतन्य ने मन में ही अनामिका को पुकारा।

"चैतन्य! तुम कहाँ हो?" अनामिका की घबराई हुई सी आवाज़ आई।

"अल्फ़ी ने अनुमान लगाया कि तुम कहाँ हो सकती हो? वो हमें जंगल में एक गड्ढे के अंदर लेकर आया है।" चैतन्य ने उन दोनों की स्थिति बताते हुए कहा।

"हाँ! वहीं हूँ!" अनामिका ने कहा।

"वो यहीं है।" चैतन्य ने अल्फ़ी से फुसफुसा कर कहा।

"साथ या आसपास कोई है क्या? पूछो!" अल्फ़ी ने बढ़ती धड़कनों के साथ पूछा।

चैतन्य ने अनामिका से सवाल किया तो उसने बताया कि वो एक अंधेरे कमरे में बंद थी और अंधेरे की वजह से उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि वो किस जगह में थी। इसलिए वो अपने आसपास की कोई जानकारी नहीं दे सकती। ये सुनते ही अल्फ़ी और चैतन्य दोनों ही झल्ला उठे थे। एक तो समय कम था और इस एडवर्ड ने उन सबको छुपमछुपाई में उलझा दिया था। इससे तो उसका काम आसान हो रहा था।

"बहुत चालाक है ये कमीना! इसने सारे पैंतरे घोंटकर पी लिए हैं। वो कामयाब होने के लिए कुछ भी कर सकता है।" चैतन्य ने उखड़ते हुए कहा।

"एक मिनट! अनामिका से पूछो... कुछ तो पता होगा उसे कि कहाँ हो
सकती है वो? वो इतनी बेवकूफ नहीं है! पूछो!" अल्फ़ी ने चैतन्य पर दबाव डालते हुए कहा।

"अनु! कुछ अंदाजा है क्या तुम्हें... कि अंदर आने के बाद किस तरफ ले गया था वो तुम्हें? याद करो अनु! ये बहुत जरूरी है.. वरना हम हमेशा के लिए फँस जाएँगे।" चैतन्य ने उतावला होते हुए पूछा।

"हाँ! हम अंदर आए तो यहाँ बहुत अंधेरा था। पीटर यहाँ पहले से ही था। शायद वो दरवाजा खोल नहीं सकता था। एडवर्ड ने उससे कहा कि अल्फ़ी जल्द ही यहाँ आ जाएगा.. तब तक उन्हें मुझे कहीं और छिपाकर रखना पड़ेगा। इसके बाद जब उन्होंने दरवाजा खोला तो आगे बढ़ते समय मैंने अपने कदम गिने थे। दरवाजे से 14 कदम आगे बाएँ हाथ की दीवार में कोई दरवाजा है, जिसके अंदर वो मुझे लेकर आए थे।" अनामिका ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए कहा।

और ये सुनते ही दोनों की बांछें खिली थीं। चैतन्य को वहीं रूकने का बोलकर अल्फ़ी तेजी से दरवाजे के पास पहुँचा और फिर अनामिका के कदमों का अनुमान लगाते हुए 14 कदम आगे आया। उसने बाईं ओर की दीवार को टटोलकर चेक किया और आखिरकार उसे वो जगह मिल ही गई, जिसकी उसे तलाश थी। वो तेजी से चैतन्य के पास गया, जो दिशाभ्रम की वजह से अंधेरे में एक जगह पर ही खड़ा हुआ था। अल्फ़ी चैतन्य को अपने साथ उस दरवाजे के पास लेकर आया।

"पर इसे खोलोगे कैसे?" चैतन्य ने पूछा।

"जैसे अभी तक सारे ताले खोले हैं। तुम्हें क्या लगता है? शक्तिनियंत्रक बेड़ियों को खोलना इतना आसान है क्या?" अल्फ़ी ने अंधेरे में भी मुस्कुराते हुए कहा।
"क्या मतलब?" चैतन्य ने नासमझी से पूछा।

"वो चाबी याद है... जो सुबह तुमने मुझे क़ैदखाने में दी थी.. जब तुम मुझे जुड़वाने आए थे।" अल्फ़ी ने चैतन्य से सवाल किया।

"हाँ!" चैतन्य ने कहा और एक ही पल में उसे सब समझ में आ गया कि अल्फ़ी ने कुछ देर पहले मेंशन में खुद को आजाद कैसे किया था? क्योंकि उसके पास वो चाबी थी। सारी बात समझाने के बाद अल्फ़ी ने वो दरवाजा खोला। अंदर वैसा ही घना अंधेरा था, इसलिए कुछ हल्की सी आवाजों के अलावा चैतन्य के लिए कुछ भी अलग या नया नहीं था। वो अल्फ़ी का हाथ थामे आगे बढ़ता गया और फिर एक जगह अपने सामने रूक गए अल्फ़ी से टकरा गया। वो कुछ कहता उससे पहले ही उसे उसकी आवाज सुनाई दी।

"अनामिका!"

"अल्फ़ी! ये तुम हो?" अनामिका की तस्दीक करती हुई आवाज आई।

"हॉ!"

"च... चैतन्य कहॉ हैं?" अनामिका ने बेचैनी से पूछा।

अल्फ़ी कुछ कहता... उससे पहले ही चैतन्य ने उसे आवाज दी और अनामिका की आवाज की दिशा में आगे बढ़ गया। अल्फ़ी एक-दूसरे के लिए उनकी बेचैनी देखकर गुंग होकर रह गया। उसके लिए बार-बार प्यार में दिल का टूटना अब असहनीय हो गया था। उस पर ज़ुल्म ये कि वो तो अपनी ऑखों के सामने सब देख भी सकता था। उसमें चैतन्य की बांहों में सिमटी अनामिका को देखने की जरा भी हिम्मत नहीं थी... इसलिए उसने
अपना मुँह फेर लिया और उसे कुछ दिखाई दिया। उस चीज को पहचानने की गरज़ में उसकी ऑखें सिकुड़ कर छोटी हो गईं और दिल ना जाने क्यों अजीब से अहसास से भर गया। अगले ही पल वो तेजी से आगे बढ़ा और उसके पास पहुँचा। वो हेममाया का मृत शरीर था। उसे देखकर अल्फ़ी किसी कटे पेड़ की तरह ढह गया और उससे लिपटकर ज़ार-ज़ार रोने लगा। अनामिका और चैतन्य ने जब उसके रोने की आवाज सुनी तो वो दोनों ही सकते में आ गए। अंधेरे की वजह से उन्हें कुछ भी नहीं दिख रहा था, इसलिए उनकी समझ में कुछ भी नहीं आया।

"अल्फ़ी! क्या हुआ? रो क्यों रहे हो?" चैतन्य ने उससे पूछा।

"मे... मेरी.... माया!" अल्फ़ी के गले से शब्द बमुश्किल निकले।

"वो यहीं है?" चैतन्य ने हैरानी से पूछा।

"हॉ! मेरे सामने!" अल्फ़ी ने इस बार संभली हुई आवाज में कहा और फिर से सुबकने लगा। उसकी आवाज की दिशा में बढ़ते हुए चैतन्य और अनामिका उसके पास पहुँचे। चैतन्य ने अंधेरे में टटोलते हुए अल्फ़ी के कंधे पर हाथ रखा। उसका स्पर्श महसूस कर अल्फ़ी ने अपना कॉपता हुआ हाथ उसके हाथ पर रखा और फूट-फूटकर रोने लगा।

"क्यों? क्यों किया.... उन सबने हमारे साथ ऐसा? क्या... नफ़रत की धार... इतनी पैनी होती है कि... प्यार उसे छूकर इस तरह बिखर जाता है? क्यों लोग... उन्हें छोड़ नहीं देते... जो उनसे कुछ चाहते ही नहीं? क्यों लोग इतने निर्दयी हो जाते हैं... कि दर्द का कोई अहसास उनके अंदर बाकी नहीं रहता। नफ़रत इतनी तो मजबूत नहीं हो सकती ना!" अल्फ़ी अपने अंदर के दर्द को बाहर निकालते हुए बोला।

"तुम्हारे इन सवालों का जवाब किसी के पास नहीं है अल्फ़ी। उनके पास
भी नहीं... जो नफ़रत की आग में खुद भी सारी उम्र जलते हैं और हर उस चीज को भी जला देते हैं... जो उन्हें छूकर भी निकल जाती है। ऐसे लोग कभी नहीं समझते कि नफ़रत किसी भी रूप में अच्छी नहीं होती। ना किसी के लिए... ना उसके अपनों के लिए... ना समाज-देश या दुनिया के लिए। ये हमेशा सब तबाह कर देती है।" चैतन्य भी कहते-कहते भावुक हो गया था।

चैतन्य ने अपनी तरफ से कह तो दिया, पर इससे अल्फ़ी के ऑसुओं की रवानगी में कोई फर्क होता महसूस नहीं किया। चैतन्य की समझ में नहीं आ रहा था कि उसे कैसे शांत कराए? वो अभी इसी उधेड़बुन में था कि तभी उसने अनामिका को अपनी पनाह में सिमटने की कोशिश करते महसूस किया। वो समझ गया कि उसके अंदर की हेममाया एक बार फिर सेअल्फ़ी का दर्द बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी। स्थिति और खराब होती उससे पहले ही चैतन्य ने ही सब संभालने का फैसला किया।

"अल्फ़ी! चलो! हमें अनामिका और हेममाया दोनों ही मिल गए हैं। अच्छी बात है कि हमें उस एडवर्ड से उलझने की जरूरत नहीं पड़ी। उसे पता चले... उससे पहले ही हम यहॉ से निकल जाते हैं। कहीं ऐसा ना हो कि जो आसानी से हाथ आ गया है... वो हाथ से निकल जाए। चलो यहॉ से!" चैतन्य ने कहा।

और उसकी इस बात को सुनकर अल्फ़ी के रोने में कमी आ गई। वो उसकी बात पर हुंकारी भरते हुए उठा और उसने हेममाया के शरीर को अपनी बांहों में उठाकर खुद से लगा लिया।

"मुझे पकड़कर चलो। हमें तुरंत बाहर निकलना है।" अल्फ़ी ने कॉपती मगर मजबूत आवाज में कहा और बाहर का रूख किया। चैतन्य ने उसके कंधे पर एक हाथ रखा और दूसरी बांह से अनामिका को समेट कर अल्फ़ी के साथ चलने लगा। जल्द ही वो सभी बाहर आ गए। अनामिका और
चैतन्य के मानसिक जुड़ाव की जानकारी ना होने के कारण एडवर्ड को भनक भी नहीं लगी कि उसकी नाक के नीचे ये सब हो चुका था। सब कुछ सही हो रहा था। समय द्वार खुलने वाला था और अल्फ़ी को भी अपनी हेममाया मिल चुकी थी। पर नियति अपना अगला दॉव खेलने को तैयार बैठी थी, जो अपने वाले भविष्य की तस्वीर तय करने वाली थी।

उस गड्ढे से बाहर आते ही चैतन्य और अनामिका की जान में जान आई। वो खुश थे कि अब कुछ नहीं बिगड़ेगा, मगर अल्फ़ी के दिमाग में कुछ और ही चल रहा था। उसने आगे बढ़ते चैतन्य का हाथ पकड़ लिया।

"क्या हुआ?" चैतन्य ने उसके इस तरह रोके जाने पर सवाल किया।

"चैतन्य! मेरा एक काम कर दोगे? प्लीज़!" अल्फ़ी ने याचना भरे स्वर में कहा।

"हॉ! कहो ना!" चैतन्य बोला।

"तुम अनामिका और हेममाया को लेकर बसेरे पहुँचो। मैं आता हूँ!" हेममाया के शरीर को चैतन्य को थमाते हुए अल्फ़ी ने कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य और अनामिका दोनों ही चौंके थे।

"तुम कहॉ जा रहे हो?" अनामिका ने आगे बढ़ पूछा।

"एक काम रह गया है। उसका पूरा होना बहुत जरूरी है, वरना हमारी इतनी मेहनत बर्बाद हो जाएगी। तुम चलो! मैं समय से पहले आ जाऊंगा।" अल्फ़ी ने कहा।

"नहीं! अब कोई और काम नहीं! तुम साथ चलोगे। कहीं फिर किसी मुसीबत में फँस गए तो!" चैतन्य ने उसकी बात को काटते हुए नाराज़गी
से कहा।

"नहीं फँसूँगा। वादा कर रहा हूँ! वापस आऊँगा अपनी माया के पास।" कहते हुए उसने एक ही नज़र में हेममाया और अनामिका दोनों को ही भरा।

"पर.." चैतन्य ने हिचकिचाकर कहा।

"बस जाओ! आता हूँ! प्लीज़!" अल्फ़ी इस बार याचना करते हुए कहा।

मन मारकर चैतन्य ने उसकी बात मान ली और ना चाहते हुए भी हेममाया और अनामिका को लेकर वहाँ से बसेरे के लिए निकल गया। अल्फ़ी ने उनके अंधकार में गुम होने का इंतजार किया और फिर उस गड्ढे में उतर गया। बहुत से हिसाब चुकते करना अभी बाकी था।

चैतन्य और अनामिका अभी रास्ते में ही थे कि तभी तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य से संपर्क किया।

"जी तांत्रिक श्रेष्ठ! कहिए!" चैतन्य ने आगे बढ़ते हुए पूछा।

"कहाँ हो तुम?" सामने से तांत्रिक श्रेष्ठ की घबराई हुई आवाज आई।

"हम तो बसेरे की ओर जा रहे हैं। आपने कहा था कि आज तीसरे पहर में समयद्वार खुलेगा। तो बस जा रहे हैं।" चैतन्य ने जवाब देते हुए कहा।

"जल्दी जाओ!" तांत्रिक श्रेष्ठ की वहीं घबराई हुई आवाज आई।

"तांत्रिक श्रेष्ठ आप परेशान लग रहें हैं। क्या हुआ?" चैतन्य ने इस बार बहुत ही चिंता से पूछा।
"चिंता की बात है चैतन्य! तुम दोनों तीसरा पहर खत्म होने से पहले समयद्वार से वापस लौट जाओ। अगर किसी के हाथ लग गए तो क़यामत आ जाएगी।" सामने से उलझी हुई आवाज आई।

"किसके हाथ?" चैतन्य ने माथे पर बल डालकर पूछा।

"चैतन्य! माया वापस आ गई है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने धमाका करते हुए कहा।

"क्या? पर ये कैसे हो सकता है?" चैतन्य बुरी तरह से बिदका था।

"ऐसा हो चुका है। मैं उसे यहाँ रोककर रखता हूँ। तुम लोग निकल जाओ।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"जी!" चैतन्य ने कहा और संपर्क काट दिया।

"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"माया वापस आ गई है।" चैतन्य ने बुरी खबर सुनाई।

"क्या? पर कैसे?" अनामिका चिहुंकी।

"पता नहीं। पर हमें जल्द ही समय द्वार तक पहुँचना होगा।

और वो दोनों ही तेजी से बसेरे की ओर बढ़ गए। पर वहाँ पहुँचते ही जलकर राख हो चुके बसेरे को देखकर दोनों का दिल धक्क करके रह गया। उन्हें याद आया कि उनके सामने ही एडवर्ड ने डाकिनी को आदेश देकर बसेरे में आग लगाई थी। उस समय उन्होंने सोचा नहीं था कि वो ये तबाही अपनी ऑखों से देखेंगे। वो दोनों भरी हुई ऑखों से बर्बाद हो चुके
बसेरे को देख ही रहे थे कि तभी उन्हें पीछे से किसी के भागकर पास आने की आवाज सुनी। वो दोनों तेजी से पास की झाड़ियों में छिप गए। जल्द ही कोई तेजी से वहाँ से गुजरा और बसेरे की ओर चला गया। उन दोनों ने उस ओर देखा और फिर थोड़ा इंतजार करने के बाद वो भी बसेरे की ओर चल दिए क्योंकि उनकी मंजिल वहीं थी।

कुछ देर बाद ही वो उसी खुफिया दरवाजे के सामने खड़े थे, जिसके पीछे हेममाया का बनाया हुआ समयद्वार था। उनके वापस जाने का रास्ता। अब उन्हें बस अल्फ़ी का ही इंतजार करना था... जो जल्द ही उन्हें आता दिखाई दिया। सब सही लग रहा था... पर नियति करवट बदलने की तैयारी करने लगी।

रात के दूसरे पहर में माया की आत्मा को जीवपात्र में क़ैद करने के बाद तांत्रिक श्रेष्ठ वापस अपने निवास में लौट गए। माया की गिरफ्तारी के साथ ही आज रात होने वाली सर्वशक्तिमंडल की सभा स्थगित कर दी गई थी और अब तो आगे के लिए भी इसका भविष्य धूमिल ही दिख रहा था। पिशाच समुदाय पहले ही इसके विरूद्ध था, मगर वो चाहकर भी कुछ नहीं कर सके। आज उनके हाथ दूर की कौड़ी लग गई थी। माया और हेममाया के बाद अनामिका का भी नाम आने पर पिशाचों की खिलाफत और भी मजबूत हो गई थी... उस पर सुरमी कबीले ने भी पिशाचों का समर्थन करते हुए ऐसे महत्वपूर्ण पदों में औरतों की नियुक्ति को अनुचित ठहराया। डायन समुदाय का मुँह तो पहले ही बंद हो चुका था और तांत्रिक समुदाय का जोर भी कमजोर ही लग रहा था। एडवर्ड और पीटर की मनोकामना डगमगाकर ही सही... पूरी हो गई थी। डायनों के हाथ से शक्ति का केंद्र फिसल चुका था, जो आने वाले समय में और भी कई नई महत्वाकांक्षाओं से भरी कहानियों को जन्म देने वाला था।

रात का तीसरा पहर शुरू हो चुका था। तांत्रिक श्रेष्ठ अपने निवास स्थल में भविष्य कथन को खोले ना जाने कबसे बैठे थे और उसकी कही बातों पर गहराई से सोच-विचार कर रहे थे। समयद्वार खुलने की बात तो उनकी समझ में आ गई थी। वो समय द्वार तभी सक्रिय हो सकता था, जब वायु और जल की शक्ति एक साथ हो और चैतन्य-अनामिका का साथ वो संयोग बना रहा था। मगर भविष्य कथन ने किसी के लौटने की भी
बात की थी और वो कौन हो सकता है? क्योंकि चैतन्य-अनामिका के तो वापसी का समय आ गया था और उनके वापस लौटने की कोई गुंजाइश भी नहीं थी... तो फिर कौन लौटने वाला था? सवालों में उलझे हुए ही उन्हें याद आया कि चैतन्य ने शाम के समय गुफा में उन्हें एक कागज दिया था, जिसमें वो लिखा था, जो अनामिका ने भविष्य कथन से सुना था। उन्होंने फुर्ती से वो कागज अपनी जेब से निकाला और खोलकर अपनी ऑखों के सामने फैला लिया।

जब प्रेम लौटकर आएगा..

और मात प्रेम से खाएगा,
जग झुलसेगा इस अग्नि में...
और दानव जाल बिछाएगा,
रक्त की बूंदों से रक्तिम...
इतिहास लिखा फिर जाएगा,
खंज़र उतरेगा सीने में...
और ये ज़ख़्म सदा भरमाएगा,
सुलझाकर उलझे धागों को...
ये समयजाल खुल पाएगा,
जो ना बूझे इस उलझन को....
फँस समयजाल में जाएगा।"

"अगर पहली दो पंक्तियों पर ग़ौर करें तो शायद ये अल्फ़ी-अनामिका-चैतन्य के बारे में है। पर दूसरी दो पंक्तियों का क्या मतलब होगा? कहीं कोई और इनकी स्थिति का फायदा तो नहीं उठाने वाला? पर कैसे?" ये विचार आते ही उन्होंने अगली पंक्तियों पर नज़र डाली... मगर उनकी समझ में ज्यादा कुछ भी नहीं आया। बस इतना ही
कि समय किसी रक्तपात की ओर इशारा कर रहा था। कैसा रक्तपात? जब तांत्रिक श्रेष्ठ को तत्काल कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा तो उन्होंने एक बार फिर से भविष्य कथन की ओर नज़रें उठाई।

वो उस कागज को लेकर उसके पास गए और उस कागज को उस भविष्य कथन पर रख दिया। कागज के रखते ही भविष्य कथन जोर से कॉपा और फिर उसमें से लाल धुआँ निकलने लगा। उसकी गतिविधियाँ देखकर तांत्रिक श्रेष्ठ थोड़ा पीछे हुए और उस लाल धुएँ को ग़ौर से देखने लगे। धीरे-धीरे उस धुएँ में कुछ तस्वीरें बनने लगीं। सबसे पहली तस्वीर किसी जलती हुए इमारत की थी। वो उसे बहुत ही ग़ौर से पहचानने की कोशिश कर रहे थे क्योंकि आग की लपटों के बीच उसकी शिनाख्त छिप सी गई थी। और फिर... उन्हें दिखाई दिया उस इमारत का मुख्य दरवाजा!

"बसेरा!" उनकी भय से फैली आँखों ने जवाब दिया।

"तांत्रिक श्रेष्ठ!" एक अनुचर तेज आवाज में उन्हें पुकारता हुआ अंदर आया। वो बहुत ही बुरी तरह से हाँफ रहा था और उसके चेहरे पर हवाईयाँ उड़ रही थीं।

"क्या हुआ गौरव? इतने घबराए हुए से क्यों हो?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने माथे पर बल डालकर पूछा।

"तांत्रिक श्रेष्ठ! बसेरे में आग लग गई। सब खत्म हो गया है।" उस अनुचर गौरव ने फूली हुई साँसों के साथ कहा।

ये सुनते ही तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक बार फिर से भविष्य कथन की ओर देखा, जो अभी भी लाल धुआँ उगल रहा था मगर.. उसमें दिखाई देने वाला
जलता हुआ बसेरा इस खबर के साथ ही धुआँ हो चुका था। उस लाल पर्दे में एक बार फिर से हलचल

होने लगी थी और फिर धीरे-धीरे एक और तस्वीर साफ हुई। तांत्रिक श्रेष्ठ ने देखा... उस तस्वीर में चारों ओर बस लाशें बिछी हुई थीं। बहुत ही ख़ौफनाक नज़ारा था। थोड़ी कोशिश करने पर कुछ चेहरे तांत्रिक श्रेष्ठ की पहचान में आ गए। वो पिशाचों की लाशें थीं। उन सबको देखकर तांत्रिक श्रेष्ठ के शरीर का सारा खून जैसे सूख गया। चैतन्य-अनामिका और अल्फ़ी वहीं थे। उन्होंने चैतन्य से संपर्क करने की कोशिश की, पर कामयाब नही हुए। अब उन्हें उन सबकी चिंता होने लगी थी। उन्हें खुद पर गुस्सा भी आ रहा था कि ये बातें हाथ से बाहर निकल जाने के बाद उन्हें पता चली। अभी वो इस बात का अफसोस मना ही रहे थे कि तभी भविष्य कथन से उठने वाला धुआँ शोले उगलने लगा। तांत्रिक श्रेष्ठ की नज़रों में कौतूहल का समावेश हुआ और वो उसके और भी नज़दीक गए। उठने वाले शोले कुछ अलग होने की ओर इशारा कर रहे थे।

तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और उन लपटों को छुआ। वहाँ कोई भी तपिश नहीं थी। उन्होंने आँखें बंद कर हवाओं को पुकारा और फिर एक सरगोशी उनके कानों से टकराई। उन्होंने अपनी आँखें झटके से खोल दीं। उनके माथे की शिकनों में और भी इजाफा हुआ था। परेशानी चेहरे से पसीने की शक्ल में टपकने लगी। उन्होंने एक गहरी साँस लेकर उन उठते शोलों की ओर देखा, जो धीरे-धीरे अपना सिर नीचे झुका रही थी और उस झुकी लपटों के अंदर उठते धुएँ में फिर से एक तस्वीर दिखाई दी। वो नर्क का द्वार था। तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपलक नज़रों से उसे देखा और उनके मुँह से निकला,

"माया! तो तुम लौट आई हो! तुमसे फिर से मिलने को बेकरार हूँ। तुम इस बार भी कामयाब नही होगी।"
और फिर वो तेजी से उठे। उन्होंने अपने कमरे से कुछ सामग्रियाँ उठाई और फिर उसे एक थैले में डालकर उतनी ही तेजी से बाहर निकल गए। उनका रूख नर्क के द्वार की ओर था। सब अपने हिस्से की लड़ाई लड़ रहे थे और अब उन्हें अपने हिस्से की लड़नी थी।

****

वो एक घुप्प अंधेरा कमरा था, जहाँ हवा भी जैसे नापतौल कर अंदर आ रही थी। पूरे कमरे में अजीब सी घुटन भरी हुई थी। वो ना जाने कितने घंटों से इस क़ैद में थी। अब तो चीख-चीख कर उसका गला भी बुरी तरह से छिल चुका था। पर पता नहीं वो कौन सी जगह थी... जहाँ उसके अलावा किसी और जिंदगी का नामोनिशान नहीं था।

उसकी आंसू भरी हुई आँखों में सुबह का वो बेरहम कत्ल अभी भी ख़ौफ बनकर बैठा हुआ था। उसके सामने ही तो माया ने दिव्याक्षि को इतनी बेदर्दी से मारा था कि अब वो कुछ भी सोचने-समझने की ताकत लगभग खो ही चुकी थी। दिव्याक्षि को मारने के बाद माया ने उसे एडवर्ड के हवाले कर दिया क्योंकि अब माया को उसकी कोई जरूरत नहीं रह गई थी और वो अच्छी तरह से जानती थी कि एडवर्ड उसका इस्तेमाल कैसे करने वाला था। उसे लग रहा था कि अब उसका अंत आ ही गया। उसने मरने से पहले अपने सारे गुजरे जीवन पर एक नज़र डाली कि कहीं तो वो इस बात का अहसास कर सके कि शायद कभी तो उसका भी एक आजाद वजूद रहा हो, जिस पर नाज़ करते हुए वो अपनी आँखें हमेशा के लिए बंद कर सके। पर उसकी किस्मत इतनी अच्छी नहीं थी कि उसे

मौत भी सूकून से मिल जाती। उसका पूरा जीवन ही उपेक्षित... तिरस्कृत रहा। या फिर... बना दिया गया। वो इतनी ग़ैर-जरूरी तो कभी भी नहीं थी। फिर भी सबने हमेशा उसे अपने जूतों की नोंक के नीचे रखा। किसी ने भी उसे प्यार नहीं किया और प्यार का ख्याल आते ही उसे हेममाया और अनामिका के साथ बिताए अपने पल याद आ गए। वो उनके प्यार की गर्मी महसूस कर एक बार फिर से जैसे जिंदा हो उठी। उसे अनामिका की कही बातें याद आने लगीं... जब उसने उसे डर से खुद को आजाद करने का मशविरा दिया था। हॉ! उसी के कहने पर तो उसने वो किया था। वो जीवन पूरी तरह व्यर्थ नहीं था। एक ही सही... अपने विवेक से उसने एक अच्छा काम किया था। मगर एक बार फिर इस क़ैद में आकर उस काम की अहमियत मिटने वाली थी। वो एडवर्ड वो डायरी भी ले गया, जिसमें दिव्याक्षि ने उसकी स्मृति कैद की थी और अब वो उससे जिसकी ख्वाहिश रखता था... वो उसे हर्गिज नहीं दे सकती थी और ये ख्याल आते ही वो उठकर एक बार फिर से जोर-जोर से चिल्लाने लगी। गले से उठने वाला दर्द भी उसे चुप नहीं कर पाया। लेकिन वो उस जगह जैसे अकेली ही थी, जिसकी आवाज दीवारों से टकराकर उसी के पास लौट आई थी। कुछ ही देर में वो एक बार फिर से बेदम हो गई। अपने गुनाहों की माफी मॉगते हुए उसके होंठ बस एक मौका मांग रहे थे.. कि वो अपना प्रायश्चित कर सके।

कहते हैं कि तुम गुनाहों के दलदल में कितना भी धँसे हुए हो... मगर तुम्हारे द्वारा साफ और पाक दिल से किया कोई भी एक नेक काम उम्मीद का ज़रिया बन जाता है। उसने भी ऐसा एक काम किया था जिसके ऐवज़ में ऊपर वाला उस पर एक रहम भरी नज़र डालने को राजी हो गया था। अंधेरे में डूबती उसकी ऑखें झटके से खुलीं... जब उसके कानों में एक आवाज आई।

"परिधि!"
वो तेजी से उठी और उन सलाखों के पास आ गई, जिसके दूसरी ओर एक लड़की खड़ी उसे ही पुकार रही थी।

"तुम परिधि हो?" उसने पूछा।

"हॉ! प्लीज़ मुझे यहॉ से बाहर निकालो। ये लोग मुझे मार डालेंगे।" वो बदहवास सी बोली।

"श्श्श्श! चुप! आवाज मत करो! मैं तुम्हारे लिए ही यहॉ आई हूँ। चैतन्य ने तांत्रिक श्रेष्ठ को तुम्हारे गायब होने के बारे में बताया था। उसके बाद उन्होंने मुझसे तुम्हारे बारे में पता करने के लिए कहा था। उन्हें शक था कि तुम एडवर्ड की कैद में ही हो सकती हो। आज का पूरा दिन गुजर गया तुम्हारी खोज में... और अब जाकर मिली हो तुम। जल्दी चलो! वो एडवर्ड कभी भी आ सकता है। अभी वो मेंशन में है। उसके आने से पहले ही हमें यहॉ से दूर जाना होगा।" उस लड़की ने ताला खोलने के बाद उन सलाखों को खोलते हुए कहा।

"पर तुम हो कौन?" अपनी फटी हुई आवाज में परिधि ने पूछा।

"अमांडा! मेरा नाम अमांडा है।" उसने अपना परिचय दिया।

और फिर अमांडा उसे ऐहतियात से वहॉ से बाहर की ओर ले जाने लगी। परिधि की हालत बिल्कुल भी सही नहीं थी, पर खुद को जीवित रखने की जुगत में वो भाग रही थी। उसे बस अनामिका से मिलना था। उससे बहुत जरूरी बात करनी थी। चाहे उसके बाद वो मर ही क्यों ना जाती। पर तब तक उसे खुद को जिंदा रखना ही रखना था। वो दोनों उस कैदखाने की सारी रूकावटें पार करते हुए बाहरी हिस्से में

आ गए। बाहर आने के बाद उन्होंने एक दूसरे की ओर मुस्कुराकर देखा। सब कितना आसान था। अभी वो दोनों इसी खुशफहमी में ही थे कि तभी पीछे से आई एक तेज मर्दाना आवाज से उन दोनों के ही पैर ठिठक गए। परिधि तो उसी तरह खड़ी रही, पर अमांडा ने पीछे मुड़कर देखा और जो देखा, तो समझ में आया कि जिंदगी के लिए संघर्ष अभी भी बचा हुआ था।

"लड़ना आता है।" अपना खंज़र बाहर निकालते हुए अमांडा ने परिधि से पूछा। जवाब में परिधि ने तेजी से नहीं में सिर हिलाया।

"ठीक है! बस इनकी पकड़ में मत आना और जैसे ही मौका मिले सीधा बसेरे की ओर भागना। चैतन्य और अनामिका आज वापस लौटने वाले हैं। अगर उनसे मिलना है तो उससे पहले ही मिल सकती हो। समझ आया!" अमांडा ने आगे कहते हुए कहा, जिस पर इस बार डरी-सहमी परिधि ने हॉ में सिर हिलाया।

"गुड!" चारों ओर से आते गार्ड्स पर नज़र रखे हुए अमांडा ने उसे शाबाशी दी।

"हम्म!" परिधि ने रूंधे हुए गले से हुंकारी भरी। आज एक बार फिर से उसे अपनी लाचारी पर शर्म आई। अगर उसे लड़ना आता तो वो भी अमांडा का साथ दे सकती थी, पर सबके लिए बस एक बोझ ही थी, जिसे ना जाने क्यों सब भले लोग खुशी-खुशी उठा रहे थे।

"परिधि! मेरा एक काम कर दोगी!" अमांडा ने याचना भरे स्वर में कहा, जिस पर परिधि ने उसे चौंककर देखा। अमांडा ने अपनी ऊंगली से एक अंगूठी निकालकर उसकी ओर बढ़ाई, जिसे परिधि ने ले लिया और उसे देखने लगी।

"बहुत इच्छा थी जाने से पहले एक बार उन्हें दिल भरकर देखने की। पर शायद मेरी किस्मत में ये सुख नहीं। मेरी ये अंगूठी उन्हें दे देना। शायद
इस बहाने दिल ना सही... उनकी यादों में तो रह सकूं। जीवन में पहली बार किसी से प्रेम किया और अब... ये जीवन बस उन्हीं के नाम रहेगा।" कहते-कहते अमांडा का गला भर आया था।

"चैतन्य!" परिधि ने अनुमान लगाया।

अमांडा ने बिना उसकी ओर देखे अपना सिर हॉ में हिलाया और परिधि को महसूस हुआ कि वो अकेली नहीं हैं। इस दुनिया में सभी को अपने हिस्से का दर्द मिला हुआ है। किसी को कम तो किसी को ज्यादा। उसके चेहरे को पढ़ने के बाद परिधि ने उस अंगूठी को अपनी एक अंगुली में डाला और बोली, "आई प्रॉमिस! ये अंगूठी उन तक जरूर पहुँचेगी। चाहे कुछ भी हो जाए।"

और ये सुनकर अमांडा के चेहरे पर एक दर्द भरी मुस्कान आई। वो दर्द जो एक तरफा होकर भी एक संपूर्ण प्रेम का था, जिसमें कुछ भी पाने की इच्छा नहीं थी... सिवाय प्रियतम के चरणों के। राधा बनने की चाहत तो हर कोई रखती है... पर मीरा की तरह प्रेम करना सबके लिए आसान नहीं होता।

और फिर अगले क्षण ही वो सामने की गार्ड्स से अकेले भिड़ी हुई थी। परिधि ने अपनी ऑखें फाड़कर देखा। वो भी उसी की हमउम्र लड़की थी। पर कितना फर्क था दोनों में। उसे इस तरह बहादुरी से जूझते हुए देखकर परिधि के अंदर भी कुछ जागा था। उसकी वो हिम्मत... जिसके चेहरे पर पड़ी चादर माया ने कभी भी हटने नहीं दी... आज अमांडा को देखकर करवट ले रही थी।

"परिधि भागों!" उसे बुत की तरह खड़ा देखकर अमांडा चिल्लाई और परिधि होश में आई। उसने गार्ड्स से उलझी हुई अमांडा पर एक नज़र डाली और फिर उससे किए वादे को याद कर एक ओर दौड़ लगा दी।
कुछ दूर आगे जाने पर उसने एक बार मुड़कर पीछे देखा। दो गार्ड्स उसके पीछे आ रहे थे और परिधि ने सोच लिया था कि वो.. कुछ भी करेगी.. पर चैतन्य तक जरूर पहुँचेगी।

आगे जाकर एक जगह पर आखिरकार उन गार्ड्स ने उसे घेर ही लिया। परिधि ने चारों ओर देखा। तब तक एक गार्ड ने उसकी ओर अपनी तलवार चलाई। परिधि तेजी से एक ओर हटी। मगर वो तलवार उसके हाथ को छूते हुए निकल गई। परिधि ने अपना वो हाथ दूसरे हाथ से पकड़ लिया। वो उससे बचने का सोच ही रही थी कि तभी दूसरे गार्ड ने उसे पीछे से आकर पकड़ लिया, जिसके बारे में वो भूल गई थी। वो उसकी गिरफ्त में लगातार छटपटाने लगी। तभी उसने सामने से पहले वाले गार्ड को आते देखा। परिधि ने सोचा कि अभी नहीं तो कभी नहीं। और ऐसा सोचते ही उसने अपनी जिंदगी भर की ताकत इकट्ठी की और फिर अपने पैर ऊपर उठाकर उसे पकड़े हुए गार्ड के पैरों में मारा। किस्मत से उसका प्रहार उस गार्ड के घुटनों में हुआ, जिससे वो दर्द से बिलबिला उठा और परिधि पर उसकी पकड़ कमजोर हो गई। पकड़ कमजोर होते ही परिधि ने खुद को छुड़ाया और फिर पास पड़ा मोटा डंडा उठाकर उसके तलवार पकड़े हाथ पर मारा, जिससे तलवार उस गार्ड के हाथ से छूट गई। परिधि ने वो तलवार उठाई और दूर उछाल दी, जो अंधेरे में पता नहीं कहॉ जाकर गिरी। उसकी इस हिमाकत से दोनों गार्ड्स बुरी तरह से भड़क गए और उसे पकड़ने को आगे बढ़े। परिधि ने भागने की कोशिश की तो उन्होंने उसके पैरों पर प्रहार कर उसे नीचे गिरा दिया। उसके बाद उसके प्रहार से तिलमिलाए गार्ड ने उसे पैरों से पकड़कर उसे खुरदरी और पथरीली जमीन में घसीट दिया। दोनों ही गार्ड्स उसकी हालत पर जोर-जोर से हँस रहे थे। कुछ दूर घसीटने के बाद ही परिधि का पूरा शरीर छिलकर लहुलुहान हो गया और उसके कपड़े भी कई जगह से फट गए। एक बार फिर से परिधि अपनी हिम्मत खोने लगी थी। तभी उसकी नज़र अपनी ऊंगली में पहनी अमांडा की अंगूठी पर पड़ी और उसे देखते ही उसे अपना वादा याद आया। वो वादा याद आते ही उसके अंदर एक बार फिर से एक चिंगारी सी उठी। उसने अपने एक हाथ में बड़ा सा पत्थर और दूसरे हाथ में ढेर सारी मिट्टी भर ली। जब घसीटकर बेहाल करने के बाद उस गार्ड ने उसे उठाने के लिए सीधा किया और उसके ऊपर झुका, उसी समय परिधि ने अपने हाथ में पकड़ा पत्थर उसके चेहरे पर दे मारा। इस अचानक हुए हमले से वो एक बार फिर से बिलबिला उठा और अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया। दूसरा गार्ड.. जो परिधि की हालत देखकर लापरवाह हो गया था और तेज कदमों से आगे बढ़ गया था, उस गार्ड की आवाज सुनकर तलवार उठाए वहॉ दौड़ते हुए आया। परिधि ने इंतजार किया और मौका देखते ही अंधेरे में पूरी तरह से खुली हुई उसकी ऑखों में अपनी मुट्ठी में भरी मिट्टी फेंक मारी। इस अचानक हमले से वो भी हड़बड़ा गया और तलवार उसके हाथ से छूट गई। परिधि ने दौड़कर वो तलवार उठाई और ऑखें बंद करके पहले एक गार्ड और फिर दूसरे गार्ड पर चला दी। उन दोनों को परिधि से इस तरह के हमले कई कोई आशंका नहीं थी, जिससे वो सावधान नहीं हो पाए और अगले ही पल दोनों की लाश जमीन पर पड़ी थी। कुछ पल तो परिधि ने खुद ही ये यकीन करने में लगा दिए कि उसने इतना बहादुरी का काम कर दिया था और फिर जब यकीन हुआ तो वो तेजी से पलटकर एक ओर भागी और बस भागती चली गई। जीवन में पहली बार इतनी घायल होने के बाद भी वो खुद को कमजोर नहीं, बल्कि ताकतवर महसूस कर रही थी।

उसी तरह बदहवास दौड़ते हुए वो किसी तरह बसेरे के पास पहुँची और वहॉ का मंज़र देखकर उसका दिल धक्क करके रह गया। उसकी ऑखों के सामने उसका घर... उसका बसेरा जलकर बर्बाद हो चुका था। उसके दिल में पहले तो सबका ख्याल आया और फिर ना जाने क्या सोचकर उसने बसेरे की ओर दौड़ लगा दी। उसे समय रहते समय द्वार तक पहुँचना था। उसे हर हाल में अपना वादा निभाना था। वो

उस जले हुए बसेरे के पिछले दरवाजे से अंदर की ओर गई। बसेरे का ये हिस्सा मुख्य इमारत से अलग होने की वजह से आग से अनछुआ रह गया था। जल्द ही वो उस खुफिया दरवाजे के सामने थी, जिसके पीछे वो समय द्वार था। वो वहीं
खड़ी थी कि तभी उसे कुछ आहटें सुनाई दीं। पहले तो वो चुपचाप वहीं खड़ी रही, मगर फिर किसी खतरे के बारे में सोचकर झुरमुटों के अंदर चली गई। अंदर जाते ही वो दर्द से बेहाल होकर नीचे गिर पड़ी। पहली बार इतना शारीरिक ताकत लगाने के बाद वो थककर चूर हो चुकी थी और आधी बेहोशी की हालत में वो ये नहीं देख पाई कि जिनकी आहट सुनकर वो जा छिपी थी... वो चैतन्य और अनामिका ही थे, जिनका वो इंतजार कर रही थी और उसकी ये चूक उसकी रिहाई को और भी लंबी कैद में बदलकर उसे अधूरा बनाने वाली थी।

माया के वापस लौट आने की खबर तांत्रिक श्रेष्ठ के होश उड़ा ले गई थी। आखिर ये कैसे हो सकता था? उन्होंने खुद उसकी आत्मा को शरीर छोड़ने से पहले ही जीवपात्र में क़ैद किया था। फिर ये अनहोनी कैसे हो गई? अब इसका पता तो नर्क का द्वार के पास जाकर ही लगना था। तांत्रिक श्रेष्ठ को आश्चर्य हो रहा था कि छाया उर्फ माया उस काली शक्ति को प्राप्त करने के लिए कितनी लालायित थी, कि उसने मौत को हराने का भी सारा इंतजाम पहले से करके रखा था। वो अपनी महत्त्वाकांक्षा में इस हद तक पहुँच चुकी थी कि अब वो एक नासूर बन चुकी थी और उसे रोकना अब बहुत ही जरूरी हो गया था। तांत्रिक श्रेष्ठ जब उस नर्क के द्वार के पास पहुँचे, वहाँ मरघट जैसा सन्नाटा छाया हुआ था। उन्हें आश्चर्य हुआ कि इस समय यहाँ कोई भी पहरेदार मौजूद नहीं था, जबकि ये एक बहुत ही संवेदनशील जगह थी, जिसकी सुरक्षा में कभी भी कोई लापरवाही नहीं बरती गई थी। दिन के चारों पहर में ये जगह सुनसान ही रहती थी, क्योंकि उस समय काली शक्तियों का प्रभाव यहाँ नहीं होता था। मगर रात के चारों पहर उस जगह पर पर्याप्त सुरक्षा रहती थी। ये कहानी आम थी कि 800 साल पहले उस पिशाचिनी को रात के तीसरे पहर में ही इस द्वार के पीछे क़ैद किया गया था। इसलिए उसी समय उसकी शक्तियाँ सबसे ज्यादा सक्रिय भी होती थीं। ऐसे समय में बाहर से भी कोई शक्तिशाली मदद उसे उस दरवाजे से बाहर निकाल सकती थी। ना जाने कितनों ने ये कोशिशें की, जिसमें से आखिरी कोशिश छाया की थी, जिसे तांत्रिक माणिक ने नाकाम कर दिया था। उस समय छाया को आत्महत्या कर अपनी आत्मा को मुक्त करना पड़ा, ताकि वो किसी और की पकड़ या क़ैद में ना आ सके और फिर उसकी आत्मा ने डाकिनी के गर्भ से माया के रूप में जन्म लिया और अब वो एक बार फिर से उसकी महत्वाकांक्षा ने अपना सिर उठाया था।

फिलहाल तो यहाँ कोई भी सुरक्षा दिखाई नहीं दे रही थी। तांत्रिक श्रेष्ठ ने अनुमान लगाया कि शायद ये भी एडवर्ड और माया की ही चाल रही हो। और क्या ही हो सकता था और अब उनकी बारी थी। वो तो अनामिका और अल्फ़ी वो भविष्य कथन उनके पास ले आए थे, इसलिए उन्हें कम से कम ये एक बात पहले ही पता चल गई।

तांत्रिक श्रेष्ठ ने चारों ओर देखा और फिर तेजी से उस घेरे से पार हो गए, जो उस द्वार की सुरक्षा के लिए बना हुआ था। जैसे ही वो उस लकीर से पार हुए... उनके चारों ओर एक सफेद धुआँ सा बिखर गया। मगर वो किसी भी चीज से बेअसर तेजी से उस जगह के बीचों बीच गए और अपने थैले से लाल धागे का एक छोटा सा गोला निकाल कर वहाँ रख दिया। फिर उन्होंने अपनी थैली से चार छोटी शीशीयाँ निकाली और एक-एक
करके उस धागे के गोले के ऊपर उन शीशियों से लाल तरल पदार्थ डाल दिया। इसके बाद उन्होंने अपने दाएँ हाथ की तर्जनी उंगली पर पहले एक द्रव्य डाला और फिर खंज़र निकाल कर उस ऊंगली के अग्र भाग में एक चीरा लगा दिया। खून की धार तेजी से वहाँ से निकली, जिसे तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसी धागे के

गोले के ऊपर गिरा दिया। उनका खून उस गोले पर गिरते ही वो गोला तेज रोशनी से जगमगा उठा और फिर धीरे-धीरे शांत हो गया। तांत्रिक श्रेष्ठ के होंठों पर एक राहत भर मुस्कान आई। उन्होंने उठकर चारों ओर देखा। अभी भी सब कुछ शांत था। उन्होंने अपना काम कर लिया था। अब सामने वाले की कार्यवाही का ही इंतजार था। उन्होंने आसमान की ओर देखकर कुछ अनुमान लगाया और फिर वो उठकर तेजी से एक ओर चले गए और छिपकर इंतजार करने लगे। उनकी गणना के अनुसार वो कभी भी आ सकती थी और सचमुच एक ओर से हवा कुछ हलचलों की आवाजें उन तक ले आईं।

तांत्रिक श्रेष्ठ ने देखा। वो रोमा और मार्गरेट थीं... जो दो बड़ी-बड़ी थैलियाँ उठाकर तेजी से उसी तरफ आ रही थीं। तांत्रिक श्रेष्ठ के लिए अच्छी बात थी कि वो जहाँ छिपे हुए थे वहाँ से सब साफ़ दिखाई और सुनाई दे रहा था। उस सुरक्षा दायरे के बाहर आते ही वो दोनों रूक गईं और फिर उन थैलों को नीचे रख दिया। उनकी हाँफती हुई हालत से पता चल रहा था कि वो दोनों नाज़ुक लड़कियाँ इतनी मेहनत के बाद बुरी तरह से थक गई थीं। तांत्रिक श्रेष्ठ ने आसपास अपनी हैरान सी नज़रें दौड़ाई। आखिर ये दोनों यहाँ क्या कर रही थीं। सबसे बड़ा सवाल ये था कि ये दोनों बच कैसे गईं थीं? बसेरे में आग लगने और सब तबाह होने की खबर जंगल की आग की तरह फ़ैल चुकी थी। सबको पता चल चुका था कि सारी डायनें उस आग में जलकर मर गई थीं... तो ये दोनों सही-सलामत यहाँ क्या कर रही थीं? और अगले ही पल उनके दिमाग में घंटी बजती। कहीं माया के कहने पर इन दोनों ने तो कुछ ऐसा नहीं किया, जिससे वो एक बार फिर से वापस आ गई थी। माया के पीछे रोमा और मार्गरेट के दुम हिलाते हुए घूमने के किस्से पूरे इलाके में आम थे। ये दोनों उस माया से इतना ज्यादा प्रभावित या फिर भयभीत थे कि उसके एक इशारे पर ना जाने क्या-क्या कर सकते थे। यकीनन इन दोनों का इस समय सही-सलामत इस जगह पर होना माया के साथ इनकी संलिप्तता को ही दर्शा रहा था। फिलहाल तो वो दोनों अपने रंग उड़े चेहरे के साथ वहाँ बुत की तरह खड़ी थीं। वो दोनों चोरी से बस एक-दूसरे की ओर देखने के अलावा और कोई हरकत नहीं कर रहे थे। उनका चेहरा हर होने वाली आहट पर राख की तरह सफेद हो जाता और उन दोनों की ही आँखें भय से गीली हो जातीं। तांत्रिक श्रेष्ठ उनकी हालत पर हर लम्हे और भी उलझते जा रहे थे और जल्द ही उनको अपना जवाब भी मिल गया, जब उन्होंने उसे देखा।
वो जैसे अंधेरे को खुद में लपेटे हुए रात का मुकाबला करने को पूरी तरह से तैयार थी। उसके शरीर का कोई भी हिस्सा दिखाई नहीं दे रहा था, मगर कपड़ों के खुले हिस्सों से उठता धुआँ बहुत कुछ कह रहा था। वो माया थी... जो सच में मौत को हराकर वापस लौट आई थी। पर कैसे?

माया के वहाँ आते ही रोमा और मार्गरेट का पूरा शरीर भय से थर-थर काँपने लगा था। उनके गले से घुटी-घुटी सी आवाज़ें आने लगी थीं, जिन्हें दबाने की वो भरपूर कोशिशें कर रही थीं... पर नाकामयाब थीं। तांत्रिक श्रेष्ठ को समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर वो दोनों उससे डर क्यों रही थीं और अगले कुछ पलों में जो जवाब उनके सामने आया वो अच्छे से अच्छे जिगर वालों को भी हिलाकर रख देता।

उसने अपने चेहरे से हुडीनुमा पर्दा हटाया तो एक पल के लिए आसपास का वातावरण भी थर्रा गया था। उसका पूरा चेहरा बुरी तरह से झुलसा हुआ था और वहाँ कुछ जगह मॉस के लोथड़े फटकर लटक रहे थे। उन फटे हुए जगहों से खून बह रहा था। खूबसूरत आँखें किसी कॉच की गोटी की तरह बाहर की ओर उबल रही थीं, जैसे कि अब गिरी... तब गिरी। चेहरे पर होंठ जैसी कोई चीज कम से कम साफ तौर पर तो नहीं दिख रही थी। सिर के सारे खूबसूरत लाल अंगारों से बाल जलकर राख हो चुके थे। एक पंक्ति में कहें तो खूबसूरती ने अपना चोला उतार फेंका था और जो सामने थी उसे बस ख़ौफ कहा जा सकता था। ऐसे में रोमा और मार्गरेट का इस तरह डरना पूरी तरह से लाजिमी था। पर वो दोनों इस समय यहाँ
क्या कर रहे थे? उनका यहाँ क्या काम था? सिर्फ सामान उठाने के लिए तो माया ने उन्हें यहाँ नहीं लाया होगा। तो फिर क्यों? और इसके जवाब का भी इंतजार ही किया जा सकता था।

तांत्रिक श्रेष्ठ सॉस रोके उसकी अगली कार्यवाही का इंतजार कर रहे थे। माहौल हर पल भारी होता जा रहा था। यहॉ आने से बहुत पहले ही उन्होंने अपने अनुचरों और अपने पोते रामानुज को मेंशन भेज दिया था ताकि वो चुपके से उस खंज़र को ला सकें। उन्होंने रामानुज को अभिमंत्रित जल दिया था जिसके छिड़काव से वो खंज़र उसे दिखाई देने लगता। आज यहॉ और भी बहुत कुछ हो सकता था... इसलिए अब वो अपनी वसीयत भी पीछे छोड़ आए थे। अब उनके लिए जीवन का आखिरी ध्येय इस द्वार की हिफाजत ही रह गया था, जिसे उन्हें किसी भी कीमत पर करना था। मदद के लिए किसी को बुलाने और सब समझाने का समय नहीं था.. इसलिए वो अकेले ही यहॉ आ गए थे।

रोमा और मार्गरेट अपने सिहरन भरे शरीर के साथ अपनी जगह में खड़े थे। उन दोनों की ही टांगें बुरी तरह से कॉप रही थीं। माया अपना खुला हुआ ख़ौफनाक चेहरा लेकर उन दोनों के बीच में जाकर खड़ी हो गई। उसे अपने इतने करीब पाकर वो दोनों अब घुटी-घुटी सी आवाज़ में रोने लगे थे।

"श्श्श्श!" माया ने अपनी जली हुई ऊंगली अपने जले हुए चेहरे के सामने रखकर कहा। उसका इशारा समझकर उन दोनों ने ही अपनी हलक़ के दरवाजे पूरी तरह से बंद कर दिए। हालांकि इस कोशिश में उन दोनों को ही अपना दम घुटता हुआ महसूस हुआ।

"रो क्यों रहे हो? आज के बाद... तुम दोनों भी डायनों के इतिहास का सुनहरा अध्याय बन जाओगे। तुमने मेरी बात मानकर मेरे कटे हुए सुरक्षित अंग को मेरे जले हुए शरीर से जोड़ा और मेरा दिया हुआ अभिमंत्रित
पंचतत्व चूर्ण उस पर डालकर मेरे शरीर को फिर से सक्रिय किया। तुम जानते हो! मैंने जानबूझ कर उस चैतन्य पर हमला किया था। मुझे पता था कि कोई ना कोई मुझ पर वार जरूर करेगा और देखो... गुस्से में उबलती हुई अनामिका ने वो कर दिया। उन बेवकूफों को पता ही नहीं था कि मैंने अपने उस हाथ की ऊंगलियों पर पंचतत्व और हथेली पर अपनी आत्मा का एक अंश संजोकर रखा था। आत्मा को शरीर मिला और लो... मैं फिर से आ गई और इसके लिए तुम दोनों की जितनी तारीफ की जाए... कम ही है। पर फिर भी एक शिकायत तो तुम दोनों से मुझे अब भी है। पूछो क्या?" मौत की तरह सर्द बर्फ जैसी आवाज में कहते-कहते माया रूक गई।

"वो... क्या... माया?" बमुश्किल रोमा ने पूछा।

"तुम्हें हेममाया के शरीर को झील के पास नहीं डालना था। उसी के बाद तो सारी मुश्किलें शुरू हुई। डेढ़ साल से बनाई हमारी सारी योजना तुम दोनों की उस गलती की वजह से बर्बाद ही हो गई। हेममाया की मौत की खबर बाहर नहीं आती तो फिर कुछ होता ही नहीं। वो बेवकूफ अल्फ़ी उसके इंतजार में बैठा रहता।" माया ने बहुत ही आराम से कहा।

"हम... उस अनामिका से डर गए थे। वो.. तुम्हें.. तुम्हारे कमरे से.. उठाकर ले गई थी। उसके कहने पर ही परिधि ने भी धोखा किया। हमें लगा... कि हम फँस जाऍंगे।" अपनी पूरी हिम्मत जुटाकर किसी तरह मार्गरेट ने उनकी बात रखी।

"अनामिका! सारी मुसीबत की जड़ वही लड़की है। एक बार मैं शक्तियॉ हासिल कर लूँ... फिर वो चैतन्य और वो अनामिका... दोनों की गर्दन मेरे हाथ में होगी। उन दोनों ने ही तो सब खराब किया। अगर वो यहॉ नहीं आते तो मेरी और एडवर्ड की योजना आसानी से कामयाब हो जाती। उस अनामिका की वजह से परिधि ने धोखा किया और एडवर्ड की योजना

मिट्टी में मिल गई। खैर वो जाए भाड़ में। पर उस चैतन्य की वजह से मेरा जो ये हाल हुआ, वो मैं माफ नहीं करूंगी। वो सब बिगाड़ने के लिए ही यहाँ आए हैं। अब मैं उनका जो बिगाड़ूंगी... उनकी आत्मा भी देखकर सिहर जाएगी। वो कभी भी यहाँ से नहीं जा सकेंगे। यहीं मेरी क़ैद में रहेंगे।" माया ऊँची आवाज में बोलते हुए भयानक अट्टहास करने लगी। ये सुनते ही तांत्रिक श्रेष्ठ को आने वाले खतरे का अहसास हो गया और उन्होंने चैतन्य से मानसिक संपर्क कर माया के लौटने की खबर देकर उन दोनों को जल्दी से जल्दी समयद्वार से वापस लौट जाने के लिए कहा।

"माया! क्या... हम दोनों... जा सकते हैं?" रोमा ने काँपती हुई आवाज में कहा।

"हाँ! क्यों नहीं! तुम्हें तो जाना ही है। बस एक मदद और! आज तक हर जगह... हर समय तुम दोनों ने मेरी मदद की है। आज आखिरी मदद और कर दो। फिर तो जाना ही है तुम्हें।" माया ने इस बार चाशनी गिरती हुई आवाज के साथ कहा।

"बोलो माया!" जिंदगी की उम्मीद के साथ मार्गरेट और रोमा ने एक साथ कहा। उनकी बात सुनकर माया अपने विकृत चेहरे के साथ मुस्कुराई, जो दिखी तो नहीं, पर बाकियों ने महसूस जरूर किया।

"इस नर्क के दरवाजे को खोलने के लिए मुझे पंचतत्वों की शक्तियाँ चाहिए। मेरे पास परिधि की भू-शक्ति, हेममाया की जल-शक्ति और चैतन्य की वायु-शक्ति तो है... वही जो मैंने गिरफ्तार होने से पहले उसके मुँह से खींची थी। अब बस मुझे नभ-शक्ति और अग्नि-शक्ति के लिए दो लोग चाहिए। ला दो मुझे और मुक्त हो जाओ।" माया ने जमीन पर रखे थैले को टटोलते हुए कहा।

"अभी कहाँ मिलेंगे वो? कोई और रास्ता भी होगा माया। ऐसे दो लोगों को
ढूंढने का समय ही कहाँ हैं? तीसरा पहर खत्म होने में बस एक घंटा ही रह गया है!" माया का इत्मीनान देखकर रोमा ने इस बार आराम से कहा।

"अरे! अरे! ढूंढना नहीं है। मुझे पता है।" अपने हाथों में कुछ पकड़कर खड़े होते हुए माया बोली।

"अच्छा! ये तो अच्छी बात है। बताओ... कौन है वो?" मार्गरेट ने खिली हुई आवाज में कहा।

"हैं दो लोग! बचपन से ही हमेशा उन दोनों को बहला-फुसलाकर अपने आसपास रखा। बेचारे समझते रहे कि मैं उनकी हितैषी हूँ, पर वो तो हमेशा से ही मेरे शिकार थे और दोनों बेचारों को ये कभी भी पता ही नहीं चला।" माया ने बहुत ही अफसोस भरी आवाज में कहा और उसकी बात सुनकर मार्गरेट और रोमा दोनों की आत्मा भी सिहर उठी थी।

"तुम.. तुम... किनकी बात कर रही हो?" एक बार फिर से रोमा की आवाज काँपी थी।

और फिर ये अचानक ही हुआ। किसी को भी रिएक्ट करने का मौका ही नहीं मिला। यहाँ तक कि तांत्रिक श्रेष्ठ भी बस देखते ही रह गए क्योंकि जो हुआ... उसकी आशंका किसी को भी नहीं थी। माया एक झटके से मुड़ी और फिर उसके दोनों हाथों से एक-एक खंज़र छूटकर रोमा और मार्गरेट के सीने में धँस गया। वो दोनों ही आँखें फैलाकर माया को देखने के अलावा और कुछ नहीं कर सके।

"वो दोनों! तुम नहीं जानते! मार्गरेट यानि अग्नि-तत्व और रोमा यानि कि नभ-तत्व! मुझे तो बस क़तरा-क़तरा भर तत्व-शक्ति ही चाहिए थी। ओ मुझे तुम दोनों भी दे सकते हो। अब तुम्हारे तो किसी काम के

थे नहीं... चलो.. मेरे ही सही!" आगे बढ़कर उनके जबड़े दबोचते हुए माया बोली।
इस समय वो दुनिया की सबसे मतलबी शय लग रही थी, जिसने अपने मतलब के लिए उन्हें भी नहीं छोड़ा.. जिन्होंने हमेशा उनका साथ दिया। माया ने झटककर उन्हें जमीन पर गिरा दिया और अपने कपड़ों से एक शीशी निकाली। उसके अंदर कुछ रोशनी के टुकड़े जूगनू की तरह उड़ते हुए नज़र आ रहे थे। माया सबसे पहले मार्गरेट के पास गई और फिर उसके होंठो के ऊपर अपने होंठ रखकर उसके अंदर से एक रोशनी सी खींची और उसे उसी शीशी के अंदर फूंक मारकर डाल दिया। मार्गरेट का शरीर एक ओर लुढ़क गया। इसके बाद वो निढाल पड़ी रोमा के पास गई।

"बस! बस! अभी मरना नहीं! मेरा काम हो जाए! उसके बाद!" उसे संभाल कर उठाते हुए माया ने उसके साथ भी वही किया.. जो उसने मार्गरेट के साथ किया था। अपना काम खत्म कर वो खड़ी हुई और उन दोनों के मृत शरीर को लातें मारते हुए आगे बढ़ गई। तांत्रिक श्रेष्ठ एक आह भरकर रह गए क्योंकि उन्होंने तो माया के लिए जाल बिछा रखा था। उनके वहमोगुमान में भी नहीं था कि माया अंतिम क्षणों में दो जिंदगियों से खेल जाएगी। अब अगर वो उन दोनों को बचाते.. तो माया के लिए बिछाया जाल टूट जाता। आखिर में तांत्रिक श्रेष्ठ ने ये मानकर अपने मन को मना लिया कि उन दोनों के गुनाह भी कम नहीं थे और गुनाहों की सजा तो मिलनी ही चाहिए। हेममाया को मिली हर तकलीफ़ में इन दोनों का भी हिस्सा रहा था। उसकी आह से आखिर दोनों बच ही कैसे सकते थे? हर किसी को अपने गुनाहों की सजा भुगतनी ही होती है और उन दोनों ने भी माया के धोखे के रूप में वो सजा भुगती।

माया की क्रूरता से तपे हुए तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपनी नज़रें अब उस माया पर टिका दीं, जो अब उस सुरक्षादायरे के बाहर खड़ी होकर अपनी अगली गतिविधि के लिए तैयार दिख रही थी। तांत्रिक श्रेष्ठ भी अपनी ओर से मुस्तैद हुए थे।

"चैतन्य-अनामिका! बस पॉच मिनट और फिर तुम दोनों मेरी गिरफ्त में
होगे। मैं तुम दोनों को कभी भी वापस नहीं जाने दूंगी और तुम दोनों का अंजाम ये सारा जमाना देखेगा... याद रखेगा।" माया दहाड़ते हुए बोली और फिर उसने अपने दोनों हाथ ऊपर हवा में उठा लिए। वो जोर-जोर से कोई मंत्र पढ़ रही थी, जिससे आसपास के हालात धीरे-धीरे बदलने लगे। हवाओं की गति तेज होने लगी और उनमें एक चुभने वाला तेज अहसास भर गया।

बस उसी समय तांत्रिक श्रेष्ठ ने भी अपनी ऑखें बंद की और वो भी मंत्रोच्चार करने लगे, जिससे माया पूरी तरह से अनभिज्ञ थी।

माया ने मंत्रोच्चार करते हुए आपने हाथ की तत्वों वाली शीशी को खोला और उसे सुरक्षारेखा में उड़ेल दिया। उसमें से रोशनी निकलकर उस सुरक्षारेखा में गोलाई से फैल गई और उस जगह रोशनी से खिंचा एक घेरा नज़र आने लगा। उसे देखकर माया के होंठ मुस्कुराए और अगले पल उसके जले हुए शरीर की हालत थोड़ी बेहतर दिखने लगी। वहीं तांत्रिक श्रेष्ठ के मंत्रोच्चार से उनका रखा हुआ धागे का गोला तेज रोशनी से चमकने लगा, जिस पर माया का ध्यान बिल्कुल भी नहीं गया।

अपनी धुन में मगन माया ने अपने हाथ एक बार फिर से झटके से ऊपर उठाए, जिससे उस सुरक्षा रेखा से रोशनी की लहर सी गोलाई में चारों ओर से ऊपर उठी और उस घेरे के बीच में जाकर मिल गईं... बिल्कुल किसी पानी के फव्वारे की तरह। इसी समय तांत्रिक श्रेष्ठ के मंत्रोच्चार भी और तीव्र हो गए। वो पूरी तरह से तैयार थे।

माया ने अपना अगला इशारा किया और फिर वो रोशनी जो चारों ओर से उठकर उस घेरे के ठीक बीचोबीच मिल रही थीं.. वहीं से एक सीधी लकीर की शक्ल में सीधे जमीन में उस दायरे के बीच में अत्यंत तीव्रता से गिरी। उसके जमीन के उस हिस्से में गिरते ही माया के होंठों की मुस्कान गहरी हुई। वो अगले ही किसी पल बस एक तेज धमाके के इंतजार में थी और उस धमाके के साथ ही वो मनहूस दरवाजा खुल जाता और उसे वो हासिल हो जाता, जिसे पाने के लिए उसने इतने सारे छल-प्रपंच किए। यहाँ तक कि मौत को बार-बार मात देकर वापस लौट आई थी। वो बस उससे कुछ ही क्षणों की दूरी में था। मगर हर बढ़ते लम्हे के साथ उसकी मुस्कान
सिमटती गई, जब उसने ऐसा कुछ भी होता नहीं देखा। और फिर उसके देखते ही देखते एक रंगीन रोशनी बीचों-बीच तेजी से उठी और फिर उस सफेद रोशनी में घुल गई। अब रोशनी के बहाव की दिशा बदल गई और माया के सारे किए-धरे पर पानी फिरता नज़र आया।

"नहीं! नहीं! नहीं! ऐसा नहीं हो सकता! ऐसा कैसे हो सकता है? किसने किया ये? किसकी ज़ुर्रत हो गई?" वो आसमान तक पहुँच सकने वाली आवाज में चिल्लाई।

"मेरी ज़ुर्रत है!" एक आवाज उसके कानों से टकराई और उसने तेजी से उस ओर मुड़कर देखा। सामने तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ खड़े थे। उन्हें सामने देखकर वो किसी परकटे परिंदे की तरह फड़फड़ा उठी।

"तू! तू यहाँ कैसे आया? अपनी आत्मा को कैद करवाकर तुझे तो मैंने धोखा दे दिया था! मेरा धोखा इतना कमजोर नहीं हो सकता है।" वो पूरी ताकत से चिल्लाकर बोली।

"चिल्लाती रह! पर सच यही है कि एक बार फिर से तू नाकाम हो चुकी है। देख मैंने ही तुझे दो बार हराया। मान जा कि ये तेरे बस का नहीं। बुराई कभी भी अच्छाई से नहीं जीत सकती। हार मान ले और बुराई का रास्ता छोड़ दे। अभी भी वक्त है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे समझाते हुए कहा।

मगर अपनी नाकामी से बौखलाई हुई माया अभी भी अपनी हार मानने को तैयार नहीं थी। वो बदहवास सी बड़बड़ाए जा रही थी।

"नहीं! ऐसा नहीं हो सकता! माया नहीं हार सकती! कभी भी नहीं!"

"माया! ये जिद छोड़ दो! अपनी इस जिद के लिए तुमने मासूम अल्फ़ी और हेममाया की जिंदगी बर्बाद कर दी। हेममाया का पद छीनने के लिए
तुमने उससे उसकी जिंदगी छीन ली। वो जल-रक्षक थी! बुराई से इस दुनिया की रक्षा करना उसका कर्तव्य था। तुमने उसे मार दिया... फिर भी वो वापस लौटी। उसने कहा था ना कि वो तुम्हें रोकने के लिए वापस आएगी और वो वापस आई। अनामिका बनकर! वो अनामिका ही थी.. जिसने अल्फ़ी को संभाला। वो अनामिका ही थी... जिसने पिशाच का खंज़र एडवर्ड से छीना। वो अनामिका ही थी, जिसने उस भविष्य कथन को हासिल किया और उसकी पहली भविष्यवाणी सुनी। उसी की वजह से ही मुझे तुम्हारे इरादे पता चले और मैं तुम्हें रोक सका। अगर अनामिका और चैतन्य यहाँ नहीं आते.. तो तुम और एडवर्ड कितनी आसानी से अपना मकसद पा लेते। पर आज तुम दोनों ही नाकाम हो। हेममाया ने अपना वादा निभाया। तुमने उसकी शक्तियाँ छीन लीं... तो वो भविष्य से शक्तियाँ लेकर तुम्हें रोकने आई और आज उसने तुम्हें रोक भी लिया। एक बात हमेशा याद रखना कि बुराई कभी भी अच्छाई से नहीं जीत सकती। कभी भी नहीं। तुम हेममाया से हार चुकी हो। स्वीकार कर लो अपनी हार!" तांत्रिक श्रेष्ठ लगातार उसे समझाते हुए बोले।

माया के चेहरे पर बेज़ारी ने कब्जा जमाया और वो बहुत ही थकी हुई नज़र आने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे कि उसने सचमुच हार स्वीकार कर ली थी। वो एक ठंडी आह के साथ घुटनों में गिरी और फिर अपना चेहरा हथेलियों में छिपाकर सुबकने लगी। तांत्रिक श्रेष्ठ ने भी उसे नहीं रोका। वो चाहते थे कि माया अपने अंदर का सारा गुबार बाहर निकाल दे। कुछ देर रोकर खुद को हल्का करने के बाद उसने अपनी सूजी हुई ऑखों से तांत्रिक श्रेष्ठ की ओर देखा।

"अनामिका अभी कहॉ हैं?" माया ने थके हुए लहजे में पूछा।

"उनका काम खत्म हुआ। अब वो जा रहे हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"मुझे उससे एक बार मिलना था। माफी मांगनी थी। पर वो चले गए तो ये
फॉस दिल में ही रह जाएगी और सारी उम्र चुभेगी। काश.. मैं उनसे मिल पाती!" माया ने खड़े होते हुए बुझी हुई आवाज में कहा।

"क्या सच में?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने खुशगवार हैरानी के साथ पूछा।

"हॉ! आप सही कह रहे हैं। मैं भी अब तक गई हूँ। अब मैं भी आराम चाहती हूँ!" माया ने अपने लफ़्ज़ों पर वजन डालते हुए कहा।

"ठीक है! मैं चैतन्य को खबर कर देता हूँ कि वे लोग थोड़ी देर रूक जाऍ। तुमसे मिलकर जाऍ!" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उत्साह से भरी आवाज में कहा।

"आपका अहसान कभी नहीं भूलूंगी।" माया ने अपने हाथ जोड़ते हुए कहा।

तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपनी ऑखें बंद की और फिर चैतन्य से संपर्क कर उसे सब ठीक होने और उन दोनों को थोड़ी देर और रूकने के लिए कहा। संपर्क तोड़ने के बाद वो माया की ओर मुड़कर बोले, "चलो! मैं ले चलता हूँ!"

उनकी बात सुनकर माया मुस्कुराई और बोली, "ये सारा सामान उठा लूं?"

"उठा लो।"

सामान उठाते समय माया की नज़र सामने सिमटती हुई रोशनी पर पड़ी, जो अब बस खात्मे की ओर थी। माया का ध्यान भटका और उसके हाथ से कुछ गिरकर उस रोशनी में चला गया। माया ने उसे उठाने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि तभी तांत्रिक श्रेष्ठ ने तेजी से उसका हाथ पीछे खींचा।

"क्या कर रही हो? उस रोशनी में जो भी गिरेगा... वो वापस नहीं आएगा।
ये रोशनी सब निगल लेगी।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"सच में!" माया ने हैरानी से उस रोशनी की ओर देखते हुए कहा।

"हॉ! अब चलो!" कहते हुए तांत्रिक श्रेष्ठ उसका सामान उठाने के लिए नीचे झुके। बस इसी समय माया के होंठों की शैतानी मुस्कान वापस आई।

आपके जाने का वक्त हो गया!" माया बोली।

और तांत्रिक श्रेष्ठ उसकी इस बात का मतलब समझ पाते उससे पहले ही माया ने अपनी पूरी ताकत से उन्हें उस रोशनी की ओर धक्का दे दिया।इस अचानक हुए हमले से तांत्रिक श्रेष्ठ खुद को बचा पाते उससे पहले ही उस रोशनी ने उन्हें अपनी गिरफ्त में ले लिया। इसके बाद जो भी हुआ वो दर्दनाक था। तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ हमेशा के लिए उस नर्क के द्वार के पीछे जा चुके थे।

"माया कभी नहीं हार सकती! वो जीत कर रहेगी। इस बार ना सही... अगली बार। अब जरा उन दोनों से भी तो निपट लूं... जो बेचारे अब अपनी मौत के इंतजार में बैठे हुए हैं।" माया ने अपने पुराने तेवरों के साथ कहा और फिर बिजली की गति से समय द्वार की ओर चल दी। समय आगे बढ़ रहा था।

****

समय द्वार वाले खुफिया दरवाजे के पास सभी अपनी-अपनी जगह लिए
बैठे थे। बुरी तरह डरी-सहमी परिधि, चैतन्य और अनामिका की मौजूदगी से अनजान झुरमुटों में छिपी हुई बैठी थी। वो बुरी तरह थकने की वजह से नीम बेहोशी की हालत में थी, जिससे वो खुद को बार-बार बाहर निकाल रही थी।

वहीं उसकी मौजूदगी से बेखबर चैतन्य और अनामिका, अल्फ़ी का इंतजार कर रहे थे, जिसे वो हेममाया का शरीर सौंपकर लौट जाने वाले थे। जल्द ही खून से नहाए हुए अल्फ़ी को उन्होंने आते देखा। दूर से भी वो बहुत ही थका हुआ दिखाई दे रहा था। उसे देखकर चैतन्य और अनामिका दोनों ही दर्द से भर गए। वो चाहकर भी उसके लिए कुछ नहीं कर सकते थे।

"बिचारा! तरस आता है उस पर!" अनामिका ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"सही कहा! हम जब यहॉ गलती से आ गए थे, तब इसी अल्फ़ी के बारे में ना जाने कितनी गलतफहमियॉ साथ लेकर आए थे और अब जा रहे हैं... तो उन गलतफहमियों का सारा कोहरा छँट चुका है। अतीत के जिस हिस्से को हम जानने की कोशिश कर रहे थे... आज उसी को जीकर वापस जा रहे हैं। सब कुछ तो वैसा ही है, जो पता चला था। बसेरे का जलना, मेंशन में पिशाचों का हत्याकांड, माया की मौत.. सब कुछ।" एक आह भरकर चैतन्य ने अपनी बात खत्म की।

"नहीं चैतन्य! सब कुछ वैसा नहीं है।" अनामिका ने सामने देखते हुए कहा।

"क्या मतलब?" चैतन्य ने उसकी ओर देखकर कहा।

"मतलब कि... अल्फ़ी को देखो! वो तुम्हें कहीं से भी वो खूंखार पिशाच लगता है, जिससे हम मिले थे। अगर अभी सब सही है... तो बाद में ऐसा क्या हुआ कि वो इतना वहशी बन गया? किसलिए?"

अनामिका ने चिंता भरी आवाज में कहा।
"अनु! कहीं... तुम्हारी वजह से तो नहीं। वो तुम्हें लेकर बहुत पजेसिव है। कहीं ऐसा तो नहीं कि... तुम्हारी वजह से वो पिशाच बन गया हो क्योंकि पूर्ण पिशाच बनकर ही वो 200 सालों तक जिंदा रह सकता है... तुम्हारे पास आ सकता है, और... हो सकता है कि... पिशाच बनने के कारण ही वो इतना वहशी बन गया हो।" चैतन्य ने संभावना जताई।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने उसकी ओर देखा। अनामिका की ऑखों में अल्फ़ी के लिए एक बार फिर से फिक्र उतर आई थी।

"नहीं चैतन्य! उसके साथ पहले ही बहुत बुरा हो चुका है और नहीं होना चाहिए। वो इतनी तकलीफ़े डिजर्व नहीं करता।" अनामिका ने भरे हुए गले से कहा।

"तो फिर समझाओ उसे! तुम्हारी बात सुनता है वो। शायद मान जाए और भविष्य में जो भी ग़लत होने वाला है वो रूक जाए। शायद यही कालचक्र का रहस्य हो.. जो सुलझाना था।" चैतन्य ने एक उम्मीद के साथ कहा।

"हम्म!" अनामिका ने हुंकारी भरी।

तभी थका हुआ अल्फ़ी उन दोनों के सामने आ खड़ा हुआ।

"कहॉ चले गए थे तुम?" अनामिका ने थोड़ी नाराज़गी के साथ कहा।

अल्फ़ी ने उसका लहज़ा पहचान कर एक तड़प के साथ उसकी ओर देखा और अगले ही पल उसने अपनी नज़रें उस पल से हटा लीं। वो चैतन्य की ओर देखते हुए बोला, "एडवर्ड को उसके किए गुनाहों की सजा देकर आ रहा हूँ। मेरी बलि चढ़ाना चाहता था वो... उसी की चढ़ाई दी मैंने। सब खत्म हुआ!" उसके मुँह से सब सुनकर चैतन्य और अनामिका का मुँह खुला का खुला रह गया। सही कहा अल्फ़ी ने। खून से नहाया हुआ रक्तिम इतिहास लिखा जा चुका था। उसी समय चैतन्य को अपने मस्तिष्क में दस्तक सुनाई दी। तांत्रिक श्रेष्ठ थे। उन्होंने चैतन्य और अनामिका से कुछ देर और रूकने के लिए कहा था।

"तांत्रिक श्रेष्ठ थे। उन्होंने कुछ देर रूकने के लिए कहा है।" चैतन्य ने दोनों को बताते हुए कहा, जिस पर दोनों ने ही हुंकारी भरी थी।

"यहॉ कोई दरवाजा है या फिर यहीं वो समय द्वार है.. जो... माया ने बनाया था?" अल्फ़ी ने दीवार की ओर देखते हुए पूछा। माया का नाम लेते ही उसकी आवाज भारी हो गई थी।

"यहॉ एक दरवाजा है। उसके पीछे एक कमरा है, जिसमें हेममाया ने वो समयद्वार बनाया था।" अनामिका ने कहा।

"क्या... तुम इसे खोल सकती हो? मैं देखना चाहता हूँ।" अल्फ़ी ने भर्राए हुए गले से कहा।

अनामिका ने एक लाचारी और आंसू भरी नज़र उस पर डाली और बोली, "हॉ! जरूर!"

और आगे आकर अनामिका ने अपने आंसू से वो दरवाजा खोल दिया। अल्फ़ी ने हेममाया के शरीर को अपनी बाहों में उठाया और अंदर चला गया। अनामिका और चैतन्य दोनों ही बाहर खड़े रहे।

"उससे बात करो अनु!" चैतन्य ने अनामिका से कहा। जवाब में अनामिका ने अपना सिर हिलाया और अल्फ़ी के पीछे अंदर चली गई।
एक गहरी साँस लेकर चैतन्य भी अंदर चला गया। हेममाया के शरीर को अपनी बाहों में उठाए हुए अल्फ़ी उस कमरे को देख रहा था, जहाँ उसकी हेममाया ने तड़प-तड़पकर पूरे सात महीने बिताए थे। उसे वो सारा कमरा अपनी माया के आंसुओं से भीगा हुआ लग रहा था।

हेममाया को गोद में उठाए हुए वो कमरे के उस हिस्से में आया जहाँ जमीन में लोहे की बेड़ियाँ पड़ी हुई थीं। वो वही बेड़ियाँ थीं.. जिसमें जकड़कर इतने महीनों तक हेममाया को असहनीय यातनाएँ दी गई थीं। वो तीनों यही सोचकर दहल गए कि मरने से पहले भी वो ना जाने कितनी मौतें मरी होगी! कभी ना खत्म होने वाले अल्फ़ी के इंतजार में ना जाने कितने रतजगे किए होंगे? उसकी याद में ना जाने कितने आँसू बहाए होंगे। वो हेममाया.. जो अल्फ़ी से दूर होने के ख्याल से ही सहमकर अधमरी हो जाया करती थी... उसने अल्फ़ी से दूर उसके बग़ैर इतने महीने ना जाने कैसे बिताए होंगे? ना जाने कितने सवाल उन सबके दिमाग को मथ रहे थे, जिनके जवाब वो अपने साथ ले गई थी। हेममाया का दर्द महसूस कर अल्फ़ी भी रोने लगा और उसके पैर बुरी तरह काँपने लगे थे। हेममाया को गिराने के डर से उसने उसे हिफ़ाजत से एक जगह रख दिया और वहीं बैठ गया। वो अभी भी ऐसी लग रही थी.. जैसे कि बस सो रही हो और अगले ही पल अंगड़ाई लेते हुए उठ खड़ी होगी। अल्फ़ी एकटक उसे ही निहार रहा था।

"अब! कहाँ जाओगे अल्फ़ी?" अनामिका ने लरजती हुई आवाज में कहा।

"अपने घर! और कहाँ? अब माया वहीं आराम करेगी। माँ सही कहती थी कि हमें इस जगह से दूर रहना चाहिए था। इस मनहूस जगह ने हम दोनों से सब कुछ छीन लिया। वो हर एक उम्मीद भी.. जिसके सहारे मैं यहाँ आया था। अब तो जिंदगी जीने के लिए भी कोई मकसद नहीं बचा। पता नहीं किस गुनाह की सजा मिली मुझे। इतना बुरा तो कभी भी नहीं था मैं!" अल्फ़ी ने दर्द में डूबे हुए लफ़्ज़ों के साथ तड़पकर कहा।
और एक बार फिर से उसका दर्द महसूस कर अनामिका के अंदर की हेममाया तड़पी थी। वो उसके पास गई और उसका चेहरा अपनी हथेलियों में भरकर बोली, "नहीं अल्फ़ी! तुम बुरे नहीं हो। तुम बहुत अच्छे हो और ऊपर वाला अच्छे लोगों के लिए कुछ ना कुछ अच्छा सोचकर रखता है। देखना.. वो तुम्हें भी जीने का कोई मकसद जरूर देगा। बस.. मुझसे एक वादा करो कि कभी कोई ग़लत रास्ता नहीं अपनाओगे तुम! अपने अंदर की अच्छाई को कभी भी मरने नहीं दोगे। बस... यही एक वादा! अपने साथ तुम्हारी यही अच्छाई लेकर जाना चाहती हूँ मैं। दोगे ना!"

अल्फ़ी ने अपने करीब खड़ी अनामिका में एक बार फिर से अपनी माया को पाया। उसके स्पर्श में उसे वहीं कोमलता महसूस हुई, जो उसकी माया के स्पर्श में थी। वो एक बार फिर से भावुक हो उठा। उसने अपने चेहरे पर रखे अनामिका की हथेलियों पर अपनी हथेलियाँ रखी और फिर आँखें बंद कर हाँ में सिर हिला दिया।

अल्फ़ी ने अपनी आँखें खोली तो अनामिका की आँखों को अपनी ओर ही पाया। उसकी आँखों में पता नहीं ऐसा क्या था कि अनामिका खुद को रोक ना सकी और आगे बढ़कर उसे अपनी बाहों में भर लिया। अल्फ़ी एक पल को चौंका और फिर उसने भी उसे खुद में समेटा लिया। एक रिश्ता जो किसी भी शब्द से बयाँ नहीं किया जा सकता था। जिसके कोई मायने नहीं होकर भी बहुत कुछ थे... जिसमें

कोई हद ना होकर भी सब हदों में महफूज था। एक रिश्ता जो दिल के दर्द से जुड़ा था और जिसका वजूद आंसुओं की बूंदों से गुंथा हुआ था। किसी भी व्याख्या से परे... एक अहसास था। चैतन्य भी उन दोनों को इस तरह देखकर भावुक हो गया था। आज वहाँ ना तो कोई चिढ़ थी और ना ही कोई जलन।

अनामिका और चैतन्य जो वापस जाने के नाम पर दिन-रात तड़प रहे थे.. जब जाने का समय आया तो दोनों ने ही नहीं सोचा था कि ये विदाई इतनी
कचोटने वाली होगी। वो सभी इन्हीं लम्हों में डूबे हुए थे, जब चैतन्य ने अपने पीछे एक नीली रोशनी सी देखी। वो तेजी से पीछे पलटा। नियति समयद्वार खोल रही थी।

चैतन्य को याद आया कि चार रातों पहले इसी तरह अनामिका के कमरे
का आइना नीली रोशनी से भर गया था और फिर उस पर उन दोनों के हाथ रखने पर वो दोनों समय के इस पार आ गिरे थे। उसने एक गहरी साँस ली और अनामिका की ओर देखा, जो अभी भी अल्फ़ी को थामे हुए थी।

"अनामिका! समयद्वार खुल रहा है। मुझे लगता है कि हमें इसे सक्रिय कर देना चाहिए... वरना ये गायब हो जाएगा। तांत्रिक श्रेष्ठ के आते ही हम निकल जाएँगे।" चैतन्य ने बहुत ही आराम से कहा।

अनामिका ने चैतन्य की बात सुनी तो उसने अल्फ़ी से अलग होना चाहा, पर एक बार फिर अल्फ़ी उसे छोड़ने को तैयार नहीं था। चैतन्य और अनामिका उसकी हालत समझ रहे थे, इसलिए इन अंतिम घड़ियों में उससे सख़्ती नहीं करना चाहते थे। लेकिन इस बीच दीवार पर उभरा समयद्वार लहराने लगा था। उन्हें उसके गायब होने से पहले ही जल्द ही उसे सक्रिय करने की जरूरत थी। चैतन्य को अब फिर से घबराहट होने लगी।

"अनु! जल्दी करो! दरवाजा गायब हो जाएगा!" चैतन्य ने उसे घबराई हुई आवाज में पुकारा।

चैतन्य की घबराई हुई आवाज सुनकर अनामिका ने उसकी ओर देखा और फिर अल्फ़ी पर एक नज़र डालकर खुद को जबरन छुड़ाती हुई उठ खड़ी हुई और जाने के लिए मुड़ी। अगले ही पल वो झटके से रूक गई। अपनी कलाई पर अल्फ़ी की ऊंगलियों का स्पर्श उसे सहमा गया। उसने मुड़कर देखा। हेममाया के शरीर को अपनी एक बांह के घेरे में लिए बैठे अल्फ़ी की ऊंगलियों की पकड़ उसकी कलाई पर और भी मजबूत हुई थी। अनामिका की आँखें उसके दर्द से भीग गईं।

"जाने दो अल्फ़ी!" अनामिका ने लरजती हुई आवाज में कहा, जिस पर अल्फ़ी ने इंकार में अपना सिर हिलाया।
"समझने की कोशिश करो अल्फ़ी! ये अनामिका नहीं... हेममाया की जगह है। चाहे वो सामने रहे या फिर यादों में रहे। तुम जहाँ भी जाओगे... बस हेममाया ही होगी। अनामिका यहाँ कहीं नहीं है... हो भी नहीं सकती। वैसे भी हमारे बीच सदियों का जो फासला है... ऐसे ही तय नहीं हो सकता। ये हेममाया के साथ बेईमानी होगी। प्लीज़!" अनामिका ने अपने दिल के हर जज़्बात को बाहर निकालते हुए भर्राए हुए गले से कहा।

और ये सुनते ही अल्फ़ी ने झटके से अनामिका की कलाई छोड़ी दी और एक बार फिर से हेममाया को खुद में समेटा। वो कभी भी हेममाया से बेईमानी नहीं कर सकता था। अनामिका, चैतन्य के पास गई और फिर बिना देर किए उन दोनों ने अपना हाथ रखकर उस समयद्वार को सक्रिय किया। द्वार के सक्रिय होते ही चैतन्य ने परेशानी से दरवाजे की ओर देखा। उसने ऑखें बंदकर ध्यान लगाया और फिर झटके से ऑखें खोली।

"ये तांत्रिक श्रेष्ठ कहॉ रह गए। उन्होंने तो कहा था कि सब ठीक हो गया है! कहीं देर ना हो जाए!" चैतन्य ने घबराई हुई आवाज में कहा।

"आ जाऍंगे! परेशान मत हो। बस इसके पार ही तो जाना है।" अनामिका ने चैतन्य को शांत करते हुए कहा।

मगर उनकी बात सुनकर अल्फ़ी हेममाया को लेकर खड़ा हो गया। चैतन्य और अनामिका दोनों ने उसकी ओर देखा।

"मैं चलता हूँ। इस जगह में दर्द के अलावा और कुछ नहीं है।" अल्फ़ी ने नज़रें झुकाए कहा और फिर एक चोर निगाह अनामिका पर डालकर वो तेजी से बाहर की ओर बढ़ गया।

"अल्फ़ी! अपना वादा याद रखना!" अनामिका ने अल्फ़ी को पीछे से
आवाज़ देते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी रूका और फिर ऊँची आवाज में बोला, "हमेशा!" और फिर वो तेजी से बाहर चला गया।

बाहर आकर वो उस जगह से थोड़ा आगे आया और फिर मुड़कर उस जगह को देखने लगा.. जहॉ उसने एक बार फिर से अपना प्यार खो दिया था।

"तुमसे किया हर वादा निभाएगा अल्फ़ी! अपनी आखिरी सॉस तक! अलविदा अनामिका!"और फिर हेममाया को अपनी बाहों में उठाए वो मुड़कर एक ओर बढ़ गया।

उसी समय झुरमुटों के बीच नीम बेहोशी में पड़ी परिधि को भी होश आया था। अंधेरे में तो उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, पर उसने अल्फ़ी की आवाज और उसकी बात साफ-साफ सुनी थी। "अनामिका और चैतन्य आ गए! हे भगवान! अभी फिर चूक जाती मैं।" खुद को लताड़ते हुए परिधि उन झुरमुटों से किसी तरह निकली। अभी वो खुद को आगे जाने के लिए तैयार कर ही रही थी कि तभी उसने किसी को तेजी से उस खुफिया दरवाजे के अंदर जाते देखा, जहॉ अंदर से नीली रोशनी बाहर आ रही थी। हालांकि वो बहुत ही घायल थी फिर भी किसी अनिष्ट की आशंका से तेज़ी से उस ओर बढ़ी। जब वो उस दरवाजे से अंदर पहुँची, तो उसने माया को अनामिका और चैतन्य से उलझे देखा। उसके विकृत शरीर और चेहरे को देखकर अनामिका, चैतन्य से जा लगी थी।

"तुम दोनों को क्या लगा? मुझे हराकर आराम से निकल जाओगे! तुम्हारा वो तांत्रिक श्रेष्ठ भी नहीं रोक

पाया मुझे.. तो तुम क्या हो? मारा गया बेचारा मेरे हाथों और अब... तुम दोनों की बारी है।"

ऊँची आवाज में दहाड़ते हुए वो उन दोनों पर झपटी, मगर किसी चमत्कार की तरह घायल परिधि ने उसे पीछे से जकड़ लिया। माया के साथ-साथ अनामिका और चैतन्य भी परिधि की हिम्मत को देखकर दंग रह गए। जो लड़की अपने हक के लिए एक फैसला नहीं ले पाती थी... आज वो अनामिका और चैतन्य के लिए माया से जूझ रही थी।

"परिधि! छोड़ो उसे हम संभाल लेंगे!" घबराई हुई अनामिका ने आगे बढ़कर कहा।

मगर परिधि इस समय किसी और ही धुन में थी। शायद वो अपने जन्म से लेकर अभी तक का सारा बदला एक बार में ही माया से ले लेना चाहती थी। आखिर माया उसकी भी तो दोषी थी। परिधि के किए गए हर गुनाह माया के ही जिम्मे थे और वो इनसे बच नहीं सकती थी।

"अनामिका दीदी! तीसरा पहर खत्म होने वाला है। ये दरवाजा हमेशा
के लिए बंद हो जाए.. इससे पहले निकल जाइए आप दोनों। ये हमारी दुनिया है.. हमें संभालनी है। यकीन मानिए आज वो परिधि मर चुकी है जो दब कर रहती थी। आपके सामने जो परिधि खड़ी है वो अब सच और अपने हक के लिए कुछ भी कर सकती है। जाइए आप लोग!" परिधि ने चिल्लाकर कहा।

अनामिका उसे इस हाल में माया के साथ छोड़ने के बिल्कुल भी हक में नहीं थी, मगर चैतन्य ने भी परिधि का समर्थन करते हुए कहा, "अनु! वो सही कह रही है। उसके अंदर की आग को ठंडा मत करो। पहली बार उसके अंदर कुछ जिंदा हुआ है। उसे अपना संघर्ष खुद करने दो। हमेशा भावुक होना सही नहीं होता! चलो यहाँ से!"

वो उसे खींचकर समयद्वार की ओर ले गया, मगर अनामिका की उलझी हालत देखकर परिधि का ध्यान बँट गया और माया उसकी पकड़ से छूट गई। माया छूटते ही अनामिका की ओर भागी। चैतन्य और अनामिका समयद्वार के अंदर प्रवेश कर चुके थे, पर अनामिका की ड्रेस का एक हिस्सा बाहर ही रह गया था, जिसे माया ने झपटकर पकड़ लिया। परिधि ने ये देखा तो वो तेजी से उस ओर भागी और माया को एक बार फिर से पकड़कर अनामिका की ड्रेस को उसके हाथ से छुड़ाने लगी। मगर इस बार माया की पकड़ बहुत मजबूत थी। लेकिन इन सब छीना-झपटी में एक गड़बड़ हो गई। माया, अनामिका और चैतन्य को समय द्वार से बाहर निकालना चाहती थी, मगर समय द्वार के अंदर भी अनामिका और चैतन्य अपना जोर लगा रहे थे। उसी समय जब परिधि ने माया को पीछे से पकड़ा तो वो हड़बड़ा गई और अनहोनी घट गई। माया का जोर कम होते ही वो दोनों भी उस समय द्वार के अंदर गिर पड़े और इसी के साथ वो द्वार बंद हो गया।

कुछ ग़लत होने का अहसास होते ही अल्फ़ी भी तेजी से वापस लौटा था, मगर वो जब वहाँ पहुँचा, उसने माया और परिधि को भी समयद्वार के
अंदर जाते और फिर उस द्वार को बंद होते देखा। वो ख़ौफ से बोला,

"माया.. अनामिका के साथ! नहीं! ऐसा नहीं होना था।"

मगर ऐसा हो चुका था। चैतन्य और अनामिका की अतीत से विदाई हो चुकी थी, मगर ये विदाई अल्फ़ी

को फिर से बेचैनियॉ दे गई थीं। लड़ाई अब भी खत्म नहीं हुई थी। बस उसने अतीत से भविष्य का रूख कर लिया था और अल्फ़ी को ये नहीं पता था कि वो सब समय धारा में बहकर किस समय में गए थे? और अब तांत्रिक श्रेष्ठ के बाद उसके इस सवाल का जवाब किसी के पास नहीं था।

कमरे के दरवाजे पर सन्न खड़ा हुआ अल्फ़ी उस दीवार को टकटकी लगाए हुए देख रहा था, जहॉ मौजूद समयद्वार बंद हो चुका था। कुछ देर में जब उसका सकता टूटा तो उसने लुटी-पिटी दयनीय हालत में अपने आगे पीछे और चारों ओर देखा। शायद वो यकीन करना चाह रहा था कि जो उसकी ऑखों ने देखा, वो सच था और ये यकीन आते ही उसकी ऑखें एकदम से भीग गईं। वो धीरे-धीरे चलता हुआ उस दीवार के सामने गया और उसे एकटक घूरता रहा। कुछ देर उसे घूरने के बाद उसने उस दीवार की ओर अपना हाथ बढ़ाया, मगर वो उसे छूता... उससे पहले ही उसने अपने आप को रोक लिया। "नहीं! उसने सही कहा! हमारी दुनिया अलग है। उसका जाना ही ठीक है।"

और अपने दिल पर पत्थर रखता वो तेजी से पलटकर कुछ कदम आगे बढ़ा ही था कि माया का ख्याल आते ही वो एक बार फिर से रूक गया। उसके दिमाग के तार जोर से बजे थे। एक बात.. जो वो अनामिका के ग़म में भूल ही गया था।

"माया! माया जिंदा है! पर कैसे? वो तो मर चुकी थी! सबने तो यही कहा था! मगर वो तो जिंदा है और... उन दोनों के पीछे गई है। माई गॉड! अनामिका!"

इस ख्याल के आते ही वो एक बार फिर से तेज़ी से दीवार के उस हिस्से की ओर गया और थोड़ी घबराहट के साथ अपना हाथ आगे बढ़ाया। वो उसे छूने से बस कुछ इंचेस ही दूर था कि अचानक... एक बार फिर उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया।

"नहीं! मुझे चिंता करने की जरूरत नहीं है। वो बहुत बहादुर है। मुझे यकीन है कि वो अपना ख्याल रख सकती है। और फिर... चैतन्य भी तो साथ है उसके। वो उसके साथ कुछ ग़लत होने नहीं देगा। हमारी कहानी बस यहीं तक थी। अब हमें अपने-अपने रास्ते जाना होगा। वो रास्ते... जो कहीं नहीं टकराते। हमेशा खुश रहना! अल्फ़ी अपना वादा हमेशा निभाएगा। वो कभी कुछ ग़लत नहीं करेगा। पक्का प्रॉमिस!"

और फिर अपने ऑखों की नमी को ऊंगलियों से रगड़ता हुआ वो तेजी से बाहर निकल गया। शायद उसने हाथ आगे बढ़ाया होता तो... कहानी का रूख कुछ और हो सकता था। मगर अब वो अपने खींचे हुए कदम फिर से आगे नहीं बढ़ाने वाला था। वो दर्द की इंतेहा से थक चुका था। अब उसे बस आराम चाहिए था, चाहे जैसे भी मिले।

तीसरा पहर खत्म हो चुका था। रात अभी भी उतनी ही गहरी थी। शायद हर रात से ज्यादा ही गहरी। पूरे इलाके में ख़ौफ ने अपने पैर पसार लिए थे। ना जाने कितने सवाल लोगों के दिल और दिमाग में गहरे पैठ गए थे कि ऐसे समय में जबकि इस इलाके में बड़े-बड़े धुरंधर मौजूद थे, तब उनकी मौजूदगी में इस तरह की भयानक घटनाऍ हो जाना सबकी सोच और समझ से परे था। जो भी था, मगर ये रात इतिहास का वो काला अध्याय था, जिसे अतीत की किताब से मिटा दिया जाने वाला था। बस जानकारी के लिए दो पंक्तियॉ ही भविष्य को दी जाने वाली थीं कि मेंशन में एक हत्याकांड हुआ और

बसेरे में आग लग गई। इसके अलावा सब भुला दिया जाने वाला था, जिसे हर्गिज भी नहीं भुलाया जाना था क्योंकि इस समय बसेरे में लगी आग की तपिश पचास साल बाद एक और आग लगाने वाली थी, जो कईयों की जिंदगी बदलने वाली थी।

उसी रात के अंधेरे में अल्फ़ी अपनी हेममाया के साथ घोड़े पर बैठा कल्परूप से बाहर जा रहा था। आज से चार महीने पहले वो इसीलिए तो यहाँ आया था और आज वो वापस जा भी रहा था। पर इस तरह वापस जाएगा, उसने कभी ग़लती से भी अपने ख्याल में ना लाया था। कस्बे की आखिरी सीमा से बाहर निकलकर उसने एक बार मुड़कर उस रास्ते को देखा। एक बड़े से बोर्ड में कल्परूप लिखा हुआ था। चार महीने पहले इस नाम को पढ़कर जब वो अंदर गया था, तो ढेर सारी उम्मीदों के साथ गया था और आज जब वापस जा रहा है... तो हेममाया के रूप में उन सभी उम्मीदों की लाश लेकर लौट रहा था। उसे नहीं पता था कि वो आगे क्या करेगा? कैसे करेगा? पर जीना तो था! दूसरों की नफ़रत और लालच की लड़ाई में उसके दोनों हाथ खाली रह गए थे। उसने एक आह भरी और फिर अपने रास्ते में आगे बढ़ गया। पीछे छूटता अंधेरा बस जाहिरी तौर पर जा रहा था। सामने तो पूरी जिंदगी ही अब अंधेरे से भरी थी।
रात का चौथा पहर खत्म हो गया और दिन का पहला पहर खत्म होने से पहले वो अपने घर के दरवाजे पर था। लता जब घोड़े की हिनहिनाहट सुनकर बाहर आई, तो उन दोनों की ही हालत देखकर सदमे में आ गई। खून से सने कपड़ों में अल्फ़ी को देखकर वो सहमी और हेममाया का मृत शरीर देखकर गश खाकर गिर पड़ी। अल्फ़ी के लिए कुछ भी आसान नहीं था। वो खुद बुरी तरह से टूट चुका था, मगर अब उसे लता के लिए जीना ही था। उसके लिए हर जहर को पीना था। उसके लिए उसकी माया की आखिरी धरोहर थी लता। उसकी माँ! और वो जीने वाला भी था, बशर्ते फिर कोई उसकी शांत पड़ चुकी जिंदगी के पानी में कंकर ना मारता।

****

चैतन्य और अनामिका जब समयद्वार के अंदर गए, तब माया ने अनामिका की ड्रेस का छोर पकड़ लिया और फिर उसके हाथ से वो छोर छुड़ाने के चक्कर में माया और माया से लिपटी हुई परिधि भी उस समयद्वार के अंदर गिर पड़ीं। उनके अंदर गिरते ही वो समयद्वार भी बंद हो गया। उन दोनों को समयद्वार के अंदर देखकर चैतन्य और अनामिका की ऑखें फटी की फटी रह गईं।

"हे भगवान! ये आफत यहाँ भी आ गई।" चैतन्य ने माया को देखकर तुनकते हुए कहा।
"अब क्या करें?" अनामिका ने कहा।

"भागो!" अनामिका का हाथ पकड़कर चैतन्य जोर से चिल्लाया और फिर दोनों ने ही एक ओर दौड़ लगा दी।

उन्हें भागता देखकर माया भी तेजी से उठी और उनके पीछे भागी ही थी कि तभी एक बार फिर से

परिधि ने पीछे से आकर उसे पकड़ लिया और फिर जोर से चिल्लाकर बोली, "अनामिका दीदी! आगे जाईए! सीढ़ियॉ हैं वहॉ! उसी से ऊपर जाना है। पिछली बार मैं गई थी। और हॉ... सीढ़ियॉ बिना रूके चढ़नी हैं।"

भागते हुए चैतन्य और अनामिका ने मुड़कर पीछे की ओर देखा और फिर मन ही मन में परिधि को धन्यवाद देते हुए आगे बढ़ गए। पीछे माया, परिधि से अभी भी उलझी हुई थी। उसने अपनी जादुई ताकत का इस्तेमाल करना चाहा, तो हैरान रह गई। समयद्वार के अंदर उसकी ताकतें बेअसर थीं।

"तो! अब हम दोनों ही बराबर हैं। है ना!" परिधि ने मुस्कुराते हुए कहा। माया ने एक चिढ़ भरी नज़र उस पर डाली और फिर उसे चकमा देते हुए चैतन्य-अनामिका के पीछे भागी। मगर इस बार परिधि होशियार थी। उसने लपककर माया का पैर पकड़ लिया और फिर वो दोनों ही गुत्थम गुत्था हो चुके थे।

दूसरी ओर चैतन्य और अनामिका दौड़ते-भागते एक जगह पहुँचे, जो उन्हें जानी पहचानी सी लगी।

"अनु! हम इस जगह पहले भी आए हैं क्या?" चैतन्य ने पूछा।

उसका सवाल सुनकर अनामिका ने ग़ौर से चारों ओर देखा और फिर कुछ
याद आते ही बोल पड़ी, "चैतन्य! ये वही जगह है, जहॉ हम समयद्वार से गिरे थे।"

"अच्छा!" चैतन्य ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"हॉ! परिधि ने कहा था कि यहॉ सीढ़ियॉ हैं। शायद आगे जाने के लिए हमें सीढ़ियॉ चढ़नी होंगी।" अनामिका ने कहा।

"तो चलो ना!" चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ कर खींचते हुए कहा। वो दोनों आगे गए.. मगर कोई सीढ़ी दिखाई नहीं दी।

"यहॉ तो कुछ भी नहीं है।" चैतन्य ने हताश लहजे में कहा। अनामिका ने कुछ नहीं कहा। वो बस चारों ओर अंधकार में देखती रही।

"क्या हुआ?" चैतन्य ने पूछा।

"एक मिनट रूको!" अनामिका ने कहा और फिर अपने थैले में से जलपात्र निकाला। उसने अपनी हथेली में पानी रखा और फिर ऑखें बंदकर कुछ बुदबुदाने लगी। फिर ऑख खोलते ही उसने उस पानी को सामने की ओर छींट दिया। पानी जमीन पर गिरते ही नीली आभा से दमकने लगी और फिर वो आगे बढ़ी। उसी तरह आगे बढ़कर वो ऊपर की ओर चढ़ने लगी और फिर देखते ही देखते उन जलबूंदों ने नीली दमकती सीढ़ियॉ आसमान तक खींच दीं।

उन सीढ़ियों को देखकर चैतन्य और अनामिका के चेहरे की दमक भी बढ़ गई। अनामिका उसी दमकते हुए चेहरे की ओर आगे बढ़ी कि तभी चैतन्य ने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़कर उसे रोका था।

"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"भाग कहॉ रही हो? पहले ये तो बताओ कि चढ़ना कैसे हैं?" चैतन्य ने कहा।

"कैसे चढ़ना है से क्या मतलब? जैसे सीढ़ियॉ चढ़ते हैं.. वैसे ही!" अनामिका ने उसकी कमबुद्धि पर अफसोस से सिर हिलाते हुए कहा।

"पहले ऊपर देख मेरी मॉ! आसमान तक जा रही हैं ये सीढ़ियॉ! तो आसमान तक चढ़ेंगे क्या? अरे! कोई तो हिसाब होगा ना... ऊपर चढ़ने का। पता चला कि 200 की जगह 2000 साल आगे चले गए। मैं इस बार कहीं और नहीं जाने वाला।" चैतन्य ने भी झुंझलाकर कहा।

चैतन्य की बात समझकर अनामिका की ऑखें फैलकर गोल हो गईं और उसने उन सीढ़ियों की ओर देखा और बोली, "बात तो सही कही तुमने। मुझे लगता है कि एक सीढ़ी यानि कि एक दिन होगा।"

"पागल हो गई हो। एक दिन... एक सीढ़ी के हिसाब से ऊपर चढ़ेंगे, तो 200 साल की सीढ़ियॉ चढ़ने के बाद बूढ़े-कॉपते शरीर के साथ बाहर निकलेंगे नहीं.. गिरेंगे। वैसे भी परिधि ने बताया था कि बिना रूके सीढ़ियॉ चढ़नी हैं।" चैतन्य तिलमिला कर बोला।

"तो फिर!" अनामिका की उलझी हुई सी आवाज़ आई। वो अभी भी उन सीढ़ियों को घूर रही थी।

"अनामिका! तुम जल-रक्षक हो! समयद्वार बना सकती हो। तो क्या... तुम इन सीढ़ियों को हमारी सूहूलियत के अनुसार एडजेस्ट नहीं कर सकती।" चैतन्य ने एक उम्मीद के साथ अनामिका की ओर देखते हुए कहा।
"शायद! कोशिश करते हैं।" अनामिका ने भी उतनी ही उम्मीद से जवाब दिया।

"तो फिर पहले ये बताओ कि आज तारिख कौन सी है? यानि कि दो सौ साल बाद आज कौन सी तारिख होगी?" चैतन्य ने अनामिका से पूछा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने आज की तारीख याद की और तारीख याद आते ही उसकी ऑखें एक बार फिर से हैरत से फैली थीं।

'चैतन्य! आज वही तारीख है... जिस दिन परिधि.. मुझे और वरूण को मिली थी।" अनामिका ने याद करते हुए कहा।(भाग -2)

"तो इसका मतलब है कि हम 200 साल के हिसाब से चढ़े तो उस दिन बाहर निकलेंगे, जब परिधि भविष्य में पहुँची थी।" चैतन्य ने कहा।

"पर हम ऐसा नहीं कर सकते। हम तो उस समय ऑलरेडी हैं, तभी तो परिधि से मिले थे। हमें उस दिन समयद्वार से बाहर निकलना है, जब हम इसके अंदर आए थे। यानि कि आज से आठ दिन बाद।" अनामिका ने हिसाब लगाते हुए कहा।

"और वो कैसे होगा?" चैतन्य ने पूछा।

अभी अनामिका अपने चेहरे पर हाथ रखे हिसाब लगा ही रही थी कि तभी दूर किसी के दौड़ने की आवाज आई।

"अनामिका जल्दी करो! माया आ रही है। मेरी मानो तो दस साल की एक सीढ़ी बनाओ तो... बीस सीढ़ियों में 200 साल हो जाएँगे।" चैतन्य ने कीमती सलाह देते हुए कहा।
"और वो आठ दिन!" अनामिका ने कहा।

"आठ दिन के लिए आठ कदम सीधा चलेंगे। ठीक है ना!" चैतन्य ने फौरी हल बताते हुए कहा।

"बेहतर!" कहते हुए अनामिका ने अपने हाथ में पानी लिया और फिर अपने मन में बीस सीढ़ियॉ और आठ कदम दोहराकर पानी उन सीढ़ियों पर छिड़क दिया। पानी पड़ते ही उन सीढ़ियों का रूप तितर-बितर होने लगा और कुछ पलों में ही बदली हुई हालत में नई सीढ़ियॉ उनके सामने थीं, जो कुछ ऊपर जाकर खत्म हो जा रही थीं।

"जल्दी चलो! सीढ़ियॉ गिनती रहना।" चैतन्य ने अनामिका का हाथ पकड़कर सीढ़ियों की ओर भागते हुए कहा। उसने पीछे मुडकर देखा तो माया उनसे बीस कदमों की दूरी पर ही रही होगी। परिधि फिलहाल दिखाई नहीं दे रही थी। वो दोनों बिजली की तेजी से सीढ़ियॉ चढ़ते गए। गिनने का काम अनामिका ने किया। बीस सीढ़ियॉ खत्म होते ही वो आखिरी सीढ़ी पर खड़े थे। नीचे देखा तो माया भी सीढ़ियॉ चढ़ना शुरू कर चुकी थी।

"अब आठ कदम! जल्दी!" चैतन्य ने अनामिका से कहा।

"चलो!" कहते हुए अनामिका एक-एक कदम गिनती हुई आगे बढ़ी और फिर आठ कदम के बाद रूक गई। उन दोनों ने सामने देखा और फिर दोनों ने ही अपना हाथ आगे बढ़ाया। चैतन्य ने अनामिका के हाथ पर अपना हाथ रख दिया और फिर उनके हाथों के नीचे से तेजी से एक नीली रोशनी निकलकर फैल गई। ये बिल्कुल वैसी ही दिखाई दे रही थी, जैसे कि अनामिका के कमरे के आईने में दिख रही थी। दोनों के चेहरे पर राहत भरी मुस्कान आई।

"घर!" अनामिका ने कहा और अगले ही पल दोनों ने ही एक साथ वो नीली रोशनी का दरवाजा पार कर लिया।

दूसरी ओर आते ही अनामिका और चैतन्य ने ऑखें फाड़कर चारों ओर देखा। हॉ! ये अनामिका का ही कमरा था... जहॉ चार दिन पहले वो दोनों मौजूद थे और एक गलती की वजह से उस कमरे के आईने के अंदर गिर गए थे। उस कमरे को देखकर उन दोनों की ही ऑखें भर आईं। आखिरकार उन दोनों ने ही ये कर दिखाया था। अनामिका ने हथेलियों में अपना चेहरा छिपाया और जोर से सुबकने लगी। अपने घुटनों पर हाथ रखकर झुके हुए चैतन्य ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा और फिर
वो तेजी से उसके पास गया। उसने अनामिका के कंधे पर हाथ रखा तो अनामिका रोते हुए उससे लिपट गई। चैतन्य ने उसे बिल्कुल भी नहीं रोका। वो जानता था कि वो... अकेली वापस नहीं आई है। एक दर्द अपने दामन में बांधकर लाई है... जिसे उसे जिंदगी भर सहेजकर भी रखना था।

कुछ देर रोने के बाद जब उसकी हिचकियॉ बँधने लगीं.. तब चैतन्य ने उसके सिर को सहलाते हुए कहा, "चुप हो जाओ अनु! वापस आ गए हैं हम! सब ठीक हो गया है।"

"उसकी बात सुनकर अनामिका ने अपना सिर उठाकर भरी हुई ऑखों से उसकी ओर देखा और बोली, "क्या सच में?"

जवाब में चैतन्य ने तेजी से अपना सिर हॉ में हिलाया और फिर से उसे अपनी बांहों में समेटकर उसे दिलासा देने लगा। उन दोनों के लिए ही ये एक ऐसा अनुभव था, जिसे वो ना तो याद रखना चाहते थे और ना ही चाहकर भी वो भूल सकते थे। दोनों की ही ऑखों में आंसू भरे हुए थे... मगर इनके कौन से क़तरे खुशी के थे और कौन से ग़म के... वो दोनों भी नहीं पहचान सकते थे।

वो दोनों राहत की साँस लेते खड़े ही थे कि उस आईने से आती नीली लहरों ने उन दोनों को ही चौंकाया। आईने के अंदर समय की वो लहरें अभी भी हिलोरें मार रही थीं। इसका मतलब तो यही था कि... समयद्वार अभी भी खुला हुआ था। मगर क्यों?

"चैतन्य! ये द्वार बंद क्यों नहीं हुआ है?" अनामिका ने उस आईने को घूरकर देखते हुए कहा।

"पता नहीं!" अनामिका को खुद से अलग कर चैतन्य ने उस आईने की ओर बढ़ते हुए कहा। अनामिका ने आगे बढ़कर उसकी बांह पकड़ ली थी।
उस आईने के पास पहुँचकर चैतन्य उसे ऊपर से नीचे तक घूरकर देखा रहा था। जब कुछ भी समझ में नहीं आया, तो अनामिका पर एक नज़र डालने के बाद उसने एक बार फिर से अपना हाथ उस आईने की ओर बढ़ाया।

"चैतन्य! ध्यान से!" अनामिका ने लगभग उसे टोका था।

"देखने दो अनामिका! इसे हम इस तरह खुला नहीं छोड़ सकते।" चैतन्य ने उसे समझाते हुए कहा।

"हॉ! ठीक है! पर थोड़ा ध्यान से!" अनामिका ने उस आईने पर चिंता भरी नज़र डालते हुए कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने एक हुंकारी भरी और फिर उस आईने को अपनी उंगलियों से छुआ। उसकी ऊंगलियॉ इस तरह अंदर चली गईं, जैसे कि उसने पानी में हाथ डाला हो। कलाई तक हाथ अंदर डालने के बाद वो रूक गया।

"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"पता नहीं! कुछ समझ में नहीं आ रहा है।" चैतन्य ने अपने माथे पर बल डालते हुए कहा।

अभी वो दोनों ही इसे समझ पाते कि तभी चैतन्य को एक झटका सा लगा और वो अंदर की तरफ खिंचने लगा। ये देखते ही अनामिका और चैतन्य दोनों ही बुरी तरह से हड़बड़ाए थे।

"चैतन्य! हाथ बाहर निकालो!" अनामिका ने चैतन्य के हाथ को पकड़कर पूरी ताकत से बाहर खींचते हुए कहा।
"अनामिका! किसी ने हाथ पकड़ लिया है मेरा!" चैतन्य भी पूरी ताकत लगाते हुए बोला।

ये सुनते ही अनामिका के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगीं और अगला ख्याल उन दोनों को ही माया का आया था। ये वही हो सकती थी। वो उनके पीछे ही थी। उन्हें लगा था कि उन दोनों के बाहर आते ही द्वार बंद हो जाएगा, मगर आंशिक रूप से वो अभी भी खुला हुआ था। माया खुद से तो बाहर नहीं आ सकती थी, इसलिए उसने चैतन्य का सहारा लिया था। उसने चैतन्य का हाथ इतनी मजबूती से पकड़ा था कि चैतन्य के लिए भी उसे छुड़ाना मुश्किल हो गया था। ऊपर से डर ये कि कहीं वो वापस उस समयद्वार में ना गिर जाए क्योंकि माया बाहर नहीं आना चाहती थी, बल्कि वो चैतन्य को अंदर की ओर खींच रही थी।

"चैतन्य!" अनामिका ने कहा।

"क्या?" छुड़ाने के लिए जोर लगाते हुए चैतन्य ने कहा।

"उसे बाहर खींचों!" अनामिका ने अजीब सी बात कही।

"क्या? पागल हो गई हो क्या? जीना दूभर कर देगी वो... अगर बाहर निकल आई तो!" चैतन्य ने चिहुंक कर कहा।

"अरे खींचों तो! बस इतनी ही ताकत है क्या तुममें?" अनामिका ने जैसे उसे ललकारा था।

उसकी बात सुनकर चैतन्य को भी तैश आ गया और फिर उसने पूरी ताकत से माया को अपनी ओर खींचा। आखिरकार चैतन्य का जोर माया पर भारी पड़ा और माया का आधा शरीर एक झटके से आईने से बाहर
निकल आया। चैतन्य और माया दोनों ही इस स्थिति में उलझे हुए ही थे कि तभी अनामिका ने पास रखा आदमकद लैंपशेड उठाया और पूरी ताकत से माया के चेहरे पर मार दिया। इस अचानक हुए हमले से माया तिलमिला गई और हड़बड़ाहट में उसके हाथ से चैतन्य की कलाई छूट गई। अनामिका ने बिना देर किए दूसरा वार किया और फिर माया उस समयद्वार के अंदर गिर गई।

"अब क्या?" चैतन्य ने अपनी कलाई मसलते हुए कहा।

"अब ये!" कहते हुए अनामिका ने लैंपशेड से अगला वार उस आईने में किया। आईना एक तेज आवाज के साथ दरका था। बिना देर किए अनामिका ने अगला वार किया और फिर वो आईना टुकड़ों-टुकड़ों में बिखरकर जमीन में फ़ैल गया। अनामिका ने उस आईने के फ्रेम में कॉच का एक भी टुकड़ा नहीं रहने दिया। चैतन्य खड़ा-खड़ा बस उसे देखता रह गया।

"अगर वो बंद नहीं हो रहा है, तो फिर दरवाजे का नामोनिशान ही मिटा दो। ना रहेगा दरवाजा और ना ही कोई आएगा-जाएगा।" अनामिका ने लैंपशेड एक ओर फेंककर अपने हाथ झाड़ते हुए कहा।

चैतन्य उसकी बात पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करता, उससे पहले ही दरवाजे पर हुई तेज दस्तकों ने उन दोनों का ध्यान उस तरफ किया।

"अनामिका!"

दरवाजे के बाहर से वरूण की घबराई हुई सी आवाज़ आई और उस आवाज को सुनकर अनामिका के साथ-साथ चैतन्य का चेहरा भी खिल
उठा। आखिरकार अल्फ़ी की तरह वो दोनों भी अपने ठिकाने लौट आए थे।

आशुतोष, वरूण, अंकित, मुकुल और सृष्टि उस डायरी के पन्नों में छिपी कहानी जानने के बाद बहुत ही उलझन में पड़ चुके थे। उस डायरी से उन्हें अल्फ़ी और हेममाया के रिश्ते के बारे में पता चल चुका था। साथ ही माया और एडवर्ड की साजिशों का भी और इन सबमें परिधि की सक्रिय भूमिका भी। अब उन्हें ये पता चल चुका था कि आखिर अल्फ़ी क्यों परिधि के पीछे पड़ा हुआ था। उन सभी को लग रहा था कि वो सभी अतीत की उस कड़ी को ढूंढ लिए थे, जो आज की सारी परेशानियों और मुसीबतों की जड़ थी। मगर उन्हें ये नहीं पता था कि अतीत इससे भी ज्यादा कुछ और ही था।

परिधि की उन यादों में माया और एडवर्ड की साजिशों की शुरुआत से लेकर हेममाया की मौत तक की ही कहानी थी, जिसे अनामिका और चैतन्य के कहने पर ही दिव्याक्षि ने उस डायरी में सहेजा था। इसलिए सबको मिली जानकारी अभी भी अधूरी ही थी। वो अभी भी इस सच्चाई से कोसों दूर थे कि अनामिका और चैतन्य भी उस कहानी का एक बहुत ही जरूरी हिस्सा थे।

"तो ये है कहानी अल्फ़ी और परिधि की!" अंकित ने कहा।

"सचमुच ये बहुत ही दुखद है। अब हम तो अल्फ़ी को भी दोष नहीं दे सकते हैं। बहुत बुरा हुआ उसके साथ।" मुकुल ने कहा।

"हॉं.. ठीक है! मानते हैं कि उसके साथ बुरा हुआ! मगर इसका मतलब ये
तो नहीं कि वो दूसरे मासूमों की जान से खेलता रहे। ये तो सरासर ग़लत बात है।" मुकुल ने ऐतराज उठाते हुए कहा।

"ये भी सही वात है मगर... मैं कुछ और भी सोच रहा हूँ।" आशुतोष ने बहुत ही गंभीर लहज़े में कहा।

"वो क्या?" सृष्टि ने पूछा।

"जैसा कि इस डायरी में जिक्र है कि... हेममाया ने ही उस समय... समयद्वार बनाया था और शायद उसी की मदद से परिधि यहॉं तक आ पहुँची। मगर सवाल यही है कि जिस समयद्वार को हेममाया खुद ही इस्तेमाल नहीं कर सकी, उसे परिधि ने कैसे इस्तेमाल किया होगा? उसे तो कोई जादू नहीं आता। फिर कैसे?" आशुतोष ने सवाल उठाते हुए कहा।

"शायद हेममाया ने ही इजाजत दी हो। हमें पता है कि डायनें अपने बनाए हुए ऐसे द्वारों को इस्तेमाल करने की इजाज़त दे सकती हैं।" मुकुल ने कहा।

"हॉ... दे सकती हैं.. पर अपने बहुत ही ज्यादा करीबी को। जब हेममाया को पता था कि उसे धोखा देने वालों में परिधि भी थी.. और उस पर भरोसा करके ही वो उस जानलेवा मुसीबत में फँस गई थी... तो भला वो उसे क्यों इजाजत देगी?" आशुतोष ने अपनी बात समझाते हुए कहा।

आशुतोष की बात सुनकर सभी चुप पड़ी गए। बात तो सही थी कि हेममाया ऐसा करेगी क्यों?

"तुम सबको एक और बात खटक नहीं रही है?" आशुतोष ने अगला सवाल किया।
"क्या?" सभी की एकसार आवाज आई।

"उन लोगों ने हेममाया को सात महीनों तक क़ैद करके क्यों रखा? उसे मारा भी तो उस सभा के आयोजन के करीब। ये उन सबके लिए फँसने वाली बात भी हो सकती थी। फिर क्यों? वो उसे उसी समय मार सकते थे, जब उसे कैद किया। अल्फ़ी को क्या ही पता चलता कि वो जिंदा है या मर गई।" आशुतोष ने अपना सवाल पूरा किया।

"अब ये तो पता नहीं। वही इसका जवाब दे सकते हैं।" वरुण ने एक गहरी साँस छोड़ते हुए अपना पल्ला झाड़ा।

"हॉ! होगा उनका कुछ। पर हमें ये तो पता चल गया ना कि वो खूंखार हत्यारा अल्फ़ी... परिधि की जान के पीछे क्यों पड़ा है? आपका क्या सोचना है इस बारे में?" अंकित ने कहा।

"देखो! सच कहूं तो इन सबमें परिधि की भूमिका अभी भी सही तरीके से तय नहीं की जा सकती... कि वो कितनी बड़ी गुनहगार है? इसलिए कुछ कह नहीं सकते।" आशुतोष ने कहा।

"पर एक बात ये समझ में नहीं आ रही है कि अल्फ़ी मासूमों की जान क्यों ले रहा है? उसने मेरे भैया और उनके परिवार के साथ ऐसा क्यों किया?" अंकित ने तड़पकर कहा। वो कहीं से भी अल्फ़ी की हैवानियत को क्लीन चिट देने के पक्ष में नहीं था।

"अंकित सही कह रहा है। माना कि उस अल्फ़ी के साथ ग़लत हुआ... तो उसे उसका बदला उन लोगों से लेना चाहिए था, जो उसकी हेममाया की मौत के जिम्मेदार थे। मगर वो तो पता नहीं कौन से चक्करों में अभी तक लगा हुआ है।" सृष्टि ने अंकित का समर्थन करते हुए कहा।
"क्या मतलब? कैसा चक्कर?" आशुतोष ने पूछा।

"मैंने उस पिशाच को आज अंकल के साथ देखा और यही खबर मैं आप सबको बताना चाहती थी।" सृष्टि ने कहा। (भाग - 47)

"क्या? अंकल उस पिशाच को जानते हैं?" मुकुल ने बुरी तरह से चौंकते हुए कहा।

"यही बात तो मुझे भी परेशान कर रही है। मेरे या फिर मि. विक्टर के सामने उन्होंने कभी भी ये जाहिर नहीं किया कि वो उस पिशाच को जानते हैं। यहॉ तक कि उन्होंने तो अल्फ़ी नाम से भी किनारा करने की कोशिश की। उनकी बातों से तो यही लगा था कि वो किसी अल्फ़ी को नहीं जानते और अब ये.." सृष्टि ने अपनी बात खत्म की।

"कुछ तो बहुत ही ग़लत चल रहा है और वो समझ में ही नहीं आ रहा है। एक कमजोर सी लड़की को मारने के लिए इतनी गोपनीयता समझ से परे है।" आशुतोष ने कहा।

"वही तो! अल्फ़ी और परिधि का तनाव समझ में आता है। मगर इस तनाव की वजह से पूरे पिशाच समुदाय के श्रापित होने की बात समझ में नहीं आ रही है। आखिर पिशाच समुदाय ने ऐसा क्या कर दिया?" मुकुल ने बहुत ही बेचैनी से कहा।

"क्या पता? इसका जवाब तो अब वो पिशाच ही दे सकता है। देखते हैं कि सतवऋक्ष कौन सी जानकारी देता है? उम्मीद है कि हमारे काम की जानकारी मिले।" आशुतोष ने अपने हाथ खड़े करते हुए कहा।

"अब तो बस यही उम्मीद है।" वरूण ने कहा।
वो सब अपने विचार-विमर्श में लगे हुए ही थे कि तभी ऊपर से आई कुछ तेज आवाजों से उनका ध्यान उस ओर गया।

"ये कैसी आवाजें हैं? कौन है ऊपर?" आशुतोष ने कहा।

"ऊपर तो चैतन्य और अनामिका हैं।" वरूण ने चश्मे के पीछे अपनी ऑखें फैलाते हुए कहा।

"हे भगवान! हमें तो ख्याल ही नहीं रहा कि वो दोनों यहॉ नहीं हैं।" आशुतोष ने उनकी गैरमौजूदगी को जानने के बाद कहा।

"आपने ही मुझे रोका... ये कहकर कि वो दोनों समझदार हैं.. कुछ देर में आ जाऍंगे और देखिए... आपके समझदार... वो दोनों चार घंटों से अनामिका के कमरे में हैं।" बात खत्म करते-करते वरूण का लहज़ा बहुत ही कड़वा हो गया था।

"ये तो सचमुच ग़लत बात है। चैतन्य से बात करता हूँ मैं।" आशुतोष ने अपनी गलती स्वीकार करते हुए कहा।

अभी वो ये बातें कर ही रहे थे कि तभी उन सभी ने ऊपर से कुछ और जबर्दस्त आवाज सुनी। वो आवाज सुनकर सभी घबराकर खड़े हो गए। अभी वो समझने की कोशिश कर ही रहे थे कि तभी एक और तेज आवाज आई। इसके बाद तो सभी बेलगाम दौड़ते हुए ऊपर की ओर भागे.. सिवाय आशुतोष के। वो अनामिका और चैतन्य के बारे में सोचकर उलझ गया था। उसे सचमुच उन दोनों ख़ासतौर पर अनामिका से ऐसी लापरवाही की उम्मीद नहीं थी।
****

वो सभी दौड़ते हुए अनामिका के कमरे के सामने पहुँचे। दरवाजा बंद था और अंदर से छीना-छपटी की अस्पष्ट आवाजें आ रही थीं और फिर किसी लड़की की तेज चीख सुनाई दी। किसी ग़लत की आशंका से वरूण का दिल दहलकर रह गया। वो आगे बढ़ा और फिर दरवाजे से कान लगाया। पहले आईने के चटकने और फिर उसके टूटकर बिखरने की आवाज आई। अब तो वरूण बहुत ही डर गया और

अनामिका का नाम लेकर दरवाजा पीटने लगा।

"अनामिका! दरवाजा खोलो!"

बाहर दरवाजे पर उसकी दस्तकों की संख्या बढ़ती जा रही थी और घबराहट भी। फिर तेजी से किसी के आकर दरवाजा खोलने की आवाज आई और फिर सामने बदहवास सी अनामिका खड़ी थी। सृष्टि, मुकुल और अंकित भी वरूण के साथ ही थे। वरूण ने अनामिका को देखा तो तेजी से आगे बढ़कर उसे कंधों से पकड़ा। वो उसकी बिखरी-बिखरी सी हालत को देखकर और भी घबराया था।

"अनामिका! तुम्हारे कमरे से कैसी आवाजें आ रही थीं.. जैसे कोई छीना-झपटी कर रहा हो। तुम ठीक हो?" वरुण ने बहुत ही घबराई हुई आवाज में उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए पूछा।

अनामिका ने खाली-खाली ऑखों से उसे देखा और फिर अपनी ऑखों को
नम करती हुई उससे लिपट गई और रोने लगी। उसे इस तरह रोता देखकर सभी सकते में आ गए। उसकी हालत भी सही नहीं लग रही थी। सबकी नज़रें एक साथ चैतन्य की ओर सवालों के साथ उठी, जो खुद भी फटेहाल हालत में सामने खड़ा अनामिका को ही देख रहा था। सबको अपनी ओर इस तरह ताकते देखकर चैतन्य की ऑखें सिकुड़ी थीं।

"क्या? सब मुझे ऐसे क्यों देख रहे हो?" चैतन्य ने उलझी हुई आवाज में कहा।

"अनामिका! इसने कुछ गलत किया तुम्हारे साथ?" वरुण ने रोती हुई अनामिका के सिर पर हाथ फेरते हुए बहुत ही रूखे अंदाज में कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका का सुबकना एकदम से रूका था। उसने सिर उठाकर वरूण के चेहरे की ओर देखा, जहॉ वो बेहद सख़्त नज़रों के साथ चैतन्य को घूर रहा था। उसकी बात का मतलब समझते ही अनामिका बुरी तरह से हड़बड़ाई। जाहिर सी बात थी कि उजड़ी हुई हालत में उसका रोना वरूण को कुछ और ही समझा गया था। वो कुछ बोलती उससे पहले ही चैतन्य की बौखलाई हुई सी आवाज़ आई।

"ग़लत! व्हॉट डू यू मीन बाई ग़लत?"

"ग़लत मतलब ग़लत! वही ग़लत.... जो अनामिका की हालत देखकर समझ आ रहा है।" अनामिका को एक ओर हटाकर आगे बढ़ते हुए वरूण ने तपती हुई आवाज में कहा।

वरूण गर्म तेवरों के साथ चैतन्य की ओर बढ़ा ही था कि अनामिका ने लपककर उसका हाथ पकड़ा और उसे रोकने की कोशिश करते हुए बोली, "वरूण! पागल हो गए हो क्या? बात सुनो मेरी!"

"तुम रूको जरा! पहले इससे निपट लूं। मैं पहले से ही जानता था कि...
अच्छा लड़का नहीं है ये।" वरूण ने खुद को छुड़ाते हुए कहा।

"ओए दिमाग के गरीब! ऑखों के साथ अपनी समझ को भी चश्मा लगा। उसकी बिगड़ी हालत दिख रही है। मेरी लुटी-पिटी हालत नहीं दिख रही तुझे!" चैतन्य ने भी तैश में आते हुए कहा। अपने किरदार पर ऐसे इल्ज़ाम बर्दाश्त करने का उसका कोई इरादा नहीं था... वो भी अनामिका को लेकर।

दोनों के बीच की खींचतान और लंबी होती, उसी समय पीछे से आशुतोष की आवाज आई, "क्या हो रहा है यहाँ?"

उन सबने पलटकर पीछे देखा तो आशुतोष सबके बीच से निकलते हुए आगे आए और फिर अनामिका की ओर हैरानी से देखते हुए उसके पास आए।

"आशुतोष जी! देखिए! क्या किया इस चैतन्य ने अनामिका के साथ?" वरूण ने भड़की हुई आवाज में कहा। उसकी बात सुनकर आशुतोष ने ऑखें फैलाकर चैतन्य की ओर देखा और उसे देखते ही उनकी ऑखें सवालों के साथ सिकुड़ गईं। उन्होंने एक और सवालिया नज़र अनामिका पर डाली।

"आशुतोष जी..!" चैतन्य ने कहना चाहा.. मगर आशुतोष ने उसकी ओर एक हाथ उठाकर उसे टोक दिया।

"तुम दोनों इतनी देर से कहाँ थे... और... ये आईना किसने तोड़ा?" आशुतोष की ऑखों और आवाज में चिंता उतर आई थी।

"हे भगवान! शुक्र है! आशुतोष जी... आप आ गए।" चैतन्य शुक्र मनाता हुआ आशुतोष की ओर बढ़ा और उनके पास पहुँचकर उनसे लिपट गया।
शायद उनके अपनेपन को महसूस कर वो अपनी सलामती का यकीन करना चाहता था। अनामिका ने भी एक राहत भरी सॉस ली।

"तुम दोनों की ही हालत सही नहीं लग रही है। क्या हुआ तुम दोनों को? और... तुम दोनों ने ये किस तरह के कपड़े पहने हुए हैं?" आशुतोष ने चैतन्य को खुद से अलग करके उन दोनों को ही ग़ौर से देखते हुए सवालों की लाइन लगाते हुए कहा।

आशुतोष के सवालों का जवाब देने के लिए अनामिका ने अपना मुँह खोला ही था कि चैतन्य ने उसे टोकते हुए कहा, "बताऍगे आशुतोष जी! सब बताऍगे। पर ऐसे नहीं! लंबी कहानी है। पर क्या... कुछ खाने-पीने के लिए मिलेगा? बहुत भूख लग रही है। कल रात की पार्टी (अतीत में बसेरे की पार्टी) के बाद कुछ भी नहीं खाया है।"

"कल रात के बाद कुछ नहीं खाया! और आज रात जो पनीर पसंदा और चिली गार्लिक मशरूम, बटर नान के साथ अपने पेट में ठूंसे थे... उसका क्या?" इस बार अंकित ने हैरानी से उसे देखते हुए पूछा।

"वो तो तुम सबके साथ आज रात खाया था। उन सबके साथ तो कल रात ही खाना नसीब हुआ... उसके बाद से नहीं। प्लीज़! कुछ भी चलेगा!" चैतन्य ने भूख से कुलबुलाते हुए कहा।

"पर..." सृष्टि ने कहना चाहा।

"हॉ! मुझे भी बहुत भूख लग रही है। मैंने भी कल रात बहुत ही थोड़ा-सा खाया था। मुझे भी कुछ चाहिए खाने के लिए।" चैतन्य के याद दिलाने पर अनामिका को भी जैसे उसकी भूख याद आ गई।

"सच में!" वरूण ने अनामिका को घूरकर देखते हुए कहा।

"अरे हटो तुम! चलो चैतन्य! किचन में मैंने रात का बचा हुआ खाना रखा है।" अनामिका ने वरूण को एक ओर धकेलते हुए कहा और फिर चैतन्य का हाथ पकड़कर उसे खींचते हुए अपने साथ ले गई। वहॉ मौजूद सभी लोग उन दोनों को अपनी हैरान ऑखों से देखते रह गए।

"ये अनामिका को क्या हुआ? उस चैतन्य की बहकी हुई बातों में खुद भी बहे जा रही है।" वरूण ने एकटक सामने की ओर देखते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर सभी ने अभिज्ञता के साथ अपने-अपने कंधे उचका दिए। वो सब तेजी से किचन की ओर गए तो देखा कि अनामिका फ्रिज से खाना बाहर निकाल रही थी जिसे भूख से कुलबुलाते हुए चैतन्य ने बिना गर्म किए ही खाना शुरू कर दिया था। जिस पर अनामिका ने उसे डपटा और पहले हाथ धोने के लिए कहा।

"शुक्र है अनामिका ये तमीज तो अभी तक नहीं भूली है कि खाना खाने से पहले हाथ धोए जाते हैं।" वरूण ने एक गहरी साँस छोड़ते हुए कहा।

उन सभी ने एक हुंकारी भरी। अनामिका ने खाना माइक्रोवेव में गर्म किया और फिर दोनों ही खाने पर टूट पड़े। दरवाजे के पीछे से झांकते हुए सभी की ऑखें अब सच में हैरानी से फटने की हद में थी।

"ये दोनों तो सच में ऐसे खा रहे हैं.. जैसे दो दिनों के भूखे हैं।" अंकित ने पलकों को लगातार झपकाते हुए कहा।

"ये कुछ अजीब सा बिहेव नहीं कर रहे हैं क्या?" सृष्टि ने सवाल किया।

"हम्म!" एक बार फिर से सभी ने हुंकारी भरी और इस बार ये आवाज़ खाना खाते हुए चैतन्य और अनामिका ने भी सुन ली, जिससे उनका ध्यान
उन सबकी ओर चला गया। उन दोनों ने ही अपने भरे हुए मुँह के साथ उन सभी की ओर देखा, जिससे वो सभी झेंपी हुई सूरतों के साथ उन दोनों के पास आ गए।

"आप लोगों को भी खाना है?" अपना निवाला निगलकर चैतन्य ने उन सभी की ओर देखते हुए पूछा।

"नहीं! नहीं! तुम लोग खाओ। रात को खाने के बाद हमें सुबह ही भूख लगती है।" मुकुल ने हाथ सामने कर इंकार करते हुए कहा। उसका जवाब सुनकर चैतन्य ने अपने हाथ की प्लेट के साथ अपना चेहरा दूसरी ओर कर लिया। जहॉ सभी उन दोनों की इस उटपटांग हरकत से अकबक रह गए थे... वहीं आशुतोष के चेहरे के भाव गंभीरता लिए हुए थे। वो तो बस उन दोनों के खाने से उठने का इंतजार कर रहे थे। दस मिनट में दोनों ने ही प्लेट से अपने हाथ खींचे। अनामिका ने प्लेट हटाए और फिर सबकी ओर देखा। वो सभी उन दोनों के बोलने के इंतजार में ही खडे हुए थे।

"हो गया हो तो.... बाहर चलें!" आशुतोष ने कहा।

"जी!" चैतन्य ने मुँह पर हाथ रखते हुए कहा और फिर सभी एक-एक करके किचन से बाहर निकल गए।

सबसे पीछे रह गए वरूण ने बहुत ही चिढ़ भरी नज़रों के साथ चैतन्य और अनामिका को जाते देखा और

फिर खुद से बोला, "एक ही शाम में लड़की को बरबाद कर दिया। मि. चैतन्य! तुम्हें तो अनामिका से दूर करके रहूंगा मैं! वो तुमसे कहीं बेहतर डिजर्व करती है और वो मैं दुनिया के किसी भी कोने से उसके लिए ढूंढकर लाऊंगा।"

"वरूण!" अंकित ने उसे आवाज दी।
"आया!" ख्यालों से वापस आकर वरूण बाहर की ओर भागा।

****

सभी हॉल में बैठे हुए थे... तभी घड़ी ने सुबह के चार बजाए। चैतन्य और अनामिका दोनों का ही ध्यान उस ओर गया। खाना खाने के बाद वो दोनों ही और भी ज्यादा थकान महसूस करने लगे थे। पिछले करीब तीस घंटों में उनकी जिंदगी उथल-पुथल होकर रह गई थी। वो दोनों ही इस समय कुछ नहीं करना चाहते थेबस सोना चाहते थे... पर सामने सवालों का पुलिंदा लेकर बैठे हुए सभी लोग उन्हें ही एकटक देख रहे थे।

"जी कहिए!" चैतन्य ने शुरूआत की।

"तुम दोनों को याद है.. कि हम सब कितनी बड़ी समस्या में फँसे हुए हैं! या फिर... भूल गए हो।" आशुतोष ने थोड़े सख़्त लहज़े में कहा।

"जी!" चैतन्य ने सिर झुकाए हुए कहा।

"क्या जी? सबसे पहले तो तुम दोनों ये बताओ कि सृष्टि ने तुम्हें भी मैसेज किया था ना! इतनी गंभीर समस्या से भरे हालातों में तुम दोनों रात भर क्यों गायब थे? मुझे तुम दोनों से इस तरह की लापरवाही की उम्मीद बिल्कुल भी नहीं थी। वरूण ने ऐतराज जताया था, पर उस समय भी मैंने तुम दोनों पर भरोसा किया था कि आपसी बातचीत के बाद तुम दोनों आ जाओगे। पर दिख रहा है कि अपनी प्रेम कहानी से ज्यादा जरूरी तुम्हारे लिए कुछ और नहीं है।" आशुतोष ने बहुत ही बिगड़े हुए लहजे में कहा।
"ऐसी बात नहीं है आशुतोष जी!" अनामिका ने ऐतराज जताया।

"तो फिर कैसी बात है? हम इस समस्या से कैसे बाहर निकलें.. इस जवाब को पाने के लिए परेशान हैं और साथ मिलकर इसे ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं और तुम दोनों...! तुम्हें पता है... तुम दोनों की ग़ैरमौजूदगी में हमें क्या पता चला?" आशुतोष ने एक बार फिर से उन दोनों को धिक्कारने वाले लहजे में कहा।

"क्या?" चैतन्य ने सिकुड़ी हुई ऑखों के साथ कौतूहल जताया।

"यही कि वो अल्फ़ी.. परिधि के पीछे क्यों पड़ा हुआ है?" वरूण ने जानकारी आगे बढ़ाते हुए कहा।

"अच्छा! कैसे?" अनामिका ने भी आश्चर्य जताते हुए कहा।

"परिधि की डायरी से। वही डायरी... जिसे हम काफी समय से समझने की कोशिश कर रहे थे। आज अचानक ही कई सारे जवाबों के साथ खुल गई।" कहते हुए आशुतोष ने कम से कम शब्दों में उन्हें वो सारी जानकारी दे दी, जो उन्हें उस डायरी से मिली थी।

"बस इतना ही!" हेममाया की मौत तक की ही जानकारी मिलने पर अनामिका ने कहा।

"क्या मतलब कि.. इतना ही! आखिर अल्फ़ी और परिधि के तनाव के बारे में हमें पता चला ना.. कि वो क्यों उसे मारना चाहता है?" अनामिका की हल्की प्रतिक्रिया से वरूण उखड़ा था।

उनकी बातें सुनकर अनामिका और चैतन्य ने एक-दूसरे की ओर देखा।
उन्हें समझ आ गया कि डायरी में पूरी कहानी नहीं, बल्कि उतनी ही कहानी क़ैद थी, जो परिधि ने उन दोनों को अतीत में सुनाई थी और अनामिका के कहने पर ही दिव्याक्षि ने उसे इस डायरी में कैद किया था।

"फिर तो आप लोगों को हम पर बिल्कुल भी गुस्सा नहीं करना चाहिए। अच्छा हुआ कि हम दोनों आप लोगों के साथ नहीं थे, वरना हम भी इस अधूरी कहानी में उलझ जाते।" अनामिका ने उन सभी की ओर देखते हुए कहा।

"अधूरी कहानी! क्या मतलब?" सभी की ऑखें इस सवाल के साथ सिकुड़ी थीं।

"यही कि... इस कहानी का एक और हिस्सा है, जिसके बिना ये कहानी अधूरी है और उस कहानी के किरदारों का नाम है... चैतन्य और अनामिका!" चैतन्य ने उन सब पर बम जैसा रहस्योद्घाटन करते हुए कहा।

"क्या?"

"हॉ आशुतोष जी! इतनी देर से मैं और चैतन्य मेरे कमरे में नहीं थे। हमें नहीं पता कि ये कैसे हुआ? पर करीब साढ़े चार घंटे पहले मेरे कमरे के आईने में एक समयद्वार खुला था, जिससे होकर मैं और चैतन्य उस 200 साल पुराने अतीत में पहुँच गए थे और अब हम जानते हैं कि वहॉ क्या हुआ था?" अनामिका ने कॉपती हुईं आवाज में कहा।

"ये क्या कह रही हो?" वरूण ने बेयकीनी से कहा।

"सच कह रही है। हमने ये जो कपड़े पहने हैं ना.. वहीं के हैं। आप लोगों को लग रहा है कि हम चार घंटे से गायब थे... पर हम चार घंटे नहीं....
पूरे चार दिन उस अतीत में बिताकर आए हैं। ये जो हमारी बिखरी हुई सी जख्मी हालत दिखाई दे रही है... वहीं हुई है।" चैतन्य ने उन सभी को और भी हैरान करते हुए कहा।

"हे भगवान! ये कैसे हो सकता है?" अंकित ने उलझी हुई आवाज में कहा।

"पर ऐसा ही हुआ है। आशुतोष जी! आप हमेशा कहते थे ना... कि वायु-रक्षक के रूप में चैतन्य का

चुनाव आपकी समझ में नहीं आता। वो इसलिए अभी वायु-रक्षक है क्योंकि वो हमेशा से ही यही था।" अनामिका ने कहा।

अनामिका और चैतन्य की बात सुनकर सभी के दिमाग सुन्न होने लगे थे। उन्हें अभी भी कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

"ठीक है! समझ गए कि चैतन्य हमेशा से ही वायु-रक्षक था, पर ये समझ में नहीं आया कि तुम्हारे कमरे में वो समयद्वार क्यों खुला?" मुकुल ने पूछा।

"क्योंकि हेममाया ऐसा चाहती थी।" चैतन्य ने जवाब दिया।

"कौन हेममाया? अल्फ़ी की पत्नी! जिसने वो समयद्वार बनाया था। पर वो क्यों और कैसे चाह सकती थी ऐसा?" अगला सवाल सृष्टि के होंठों से निकला।

"क्योंकि.... मैं ही हेममाया हूँ!" अनामिका ने धमाका करते हुए कहा, जिसे सुनकर वहाँ मौजूद सभी किसी बुत की तरह जम कर रह गए। उन सभी के दिलो-दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था। "हेममाया ने अपने हत्यारों से मरने से पहले कहा था कि उनके नापाक मंसूबों को नाकाम करने के लिए वो वापस आएगी और इसीलिए वो समयद्वार समय आने पर मुझे यानि कि... हेममाया को वापस उसी समय में ले गया। जब तक हम वहाँ थे... हमें समझ में नहीं आया कि हम वहाँ क्यों थे। पर वापस लौटते-लौटते समझ आ गया कि हम वहाँ एडवर्ड और माया को रोकने गए थे और वो करके भी आए। अफसोस बस इतना है कि हम अल्फ़ी के लिए कुछ नहीं कर सके।" अल्फ़ी का जिक्र आते-आते अनामिका भावुक हो गईं।

"तुम्हारा मतलब है कि भूत और वर्तमान तुम्हारी वजह से ही जुड़े हुए हैं।" आशुतोष ने बातों को समझते हुए कहा।

"हाँ!" अनामिका ने कहा।

"और कुछ!" आशुतोष ने अनामिका के जवाब को और भी कुरेदा।

"यही कि.... अल्फ़ी... अनामिका से प्यार करता है।" चैतन्य ने बड़ी ही मुश्किल से कहा।

"हे भगवान!" वरूण अपना सिर पकड़कर सोफे पर गिरा था।

"प्यार करता है से क्या मतलब? फिर उसने उस रात अनामिका पर हमला क्यों किया था?" अंकित ने चिढ़ी हुई आवाज में कहा।

"वो हमें नहीं पता। पर उसने अनामिका से वादा किया था कि वो कभी कोई ग़लत काम नहीं करेगा।" चैतन्य ने कहा।

"पर वो तो कर रहा है? खुलेआम कर रहा है।" अंकित अपनी तकलीफ़ याद करता हुआ बोला। "इसका जवाब तो वही दे सकता है। पर मुझे अभी भी यकीन है कि वो अपना वादा नहीं तोड़ सकता।" अनामिका ने जज़्बाती होते हुए कहा।

"एक पिशाच के वादे पर इतना भरोसा!" वरुण ने तुनककर कहा। अल्फ़ी के लिए अनामिका का जज़्बाती होना उसे रास नहीं आया था।

"तुम ऐसा इसलिए कह रहे हो क्योंकि तुमने वो नहीं देखा... जो हमने देखा है। उसने अनामिका के लिए जो भी किया है... वो तुम और मैं करने का सोच भी नहीं सकते। सच तो यही है कि उसी की वजह से हम दोनों अभी आप लोगों के सामने खड़े हैं। वो कभी भी ग़लत नहीं था। उसे हमेशा ही ग़लत समझा गया और मुझे यकीन है कि अभी भी उसके साथ कुछ ग़लत ही हो रहा है। हमें उससे बात करने की जरूरत है।" चैतन्य ने अल्फ़ी का पक्ष मजबूती से रखते हुए कहा।

"अच्छा! तो कौन करेगा उस खूनी दरिंदे से बात!" अंकित गुस्से में थरथराते हुए बोला। अल्फ़ी के हक़ में कहीं गई हर एक बात उसे और भी झुलसा रही थी। जिसकी वजह से उसका परिवार तितर-बितर हो गया... वो उसे हर्गिज माफ नहीं कर सकता था।

"अनामिका! अनामिका बात करेगी। वो अपने कमजोर से कमजोर पलों में भी उसे पहचानता है... उसे सुनता है... समझता है।" चैतन्य ने जवाब दिया।

"और अगर अनामिका को कोई खतरा हुआ तो!" वरुण ने ऐतराज़ लहजे के साथ कहा।

"तो फिर हम सब हैं ना!" चैतन्य ने भी मजबूत लहजे में कहा।
चैतन्य की बात का कोई जवाब देता उससे पहले ही एक सर्द सी आवाज़ उन सभी के कानों से टकराई,

"क्या बात है?"

और ये सुनते ही सभी के कान खड़े हुए थे। आवाज के स्रोत की तलाश में वो चारों ओर देखने लगे। उसी समय कोई बड़ी सी चीज उनके ऊपर से उड़ती हुई गुजरी और फिर उन सभी ने देखा। वो भद्दा सा पिशाच छत पर बड़े आराम से लटका हुआ उन्हीं को देख रहा था।

"अल्फ़ी!" अनामिका के होंठ फड़फड़ाए।

"अनामिका! उससे बात करो!" चैतन्य ने अनामिका को आगे बढ़ने का इशारा करते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका धीमे कदमों से उस पिशाच की ओर बढ़ी। वो अपनी जगह पर स्थिर लटका हुआ उसे ही देख रहा था। सभी की सॉसें इस मंज़र को देखकर अटकी हुई सी थीं। पुराने अल्फ़ी को याद कर अनामिका की हिम्मत बंधी हुई थी और उसी हिम्मत के भरोसे वो उसके बहुत नजदीक चली गई। दूसरी ओर चैतन्य कोई खतरा होने पर पहले से ही तैयार था। चारों ओर पिन-ड्रॉप सन्नाटा छाया हुआ था। सबको अपने साथ-साथ दूसरों के सॉसों की आवाज भी सुनाई दे रही थी। अनामिका जैसे ही उस पिशाच के इतने करीब पहुँची कि उससे आराम से बात कर सकें, उसी समय वो पिशाच अपने पैने दॉतों को निकालते हुए बहुत ही वहशी तरीके से मुस्कुराया और बोला,

"हैलो अनामिका!"

उसकी आवाज सुनते ही अनामिका के चेहरे का रंग उड़ा था। वो तेजी से पीछे हटने की कोशिश में गिर गई। किसी को कुछ समझ में आता... उससे पहले ही अनामिका जोर से चिल्लाई,

"ये अल्फ़ी नहीं है।"

"ये... ये अल्फ़ी नहीं है!"

लगातार पीछे की ओर घसीटते हुए अनामिका जोर से चिल्लाई और ये सुनते ही सभी के होश फाख़्ता हुए थे। चैतन्य की ही समझ में जब कुछ नहीं आया... तो दूसरे क्या ख़ाक समझते। सबकी समझ में बस यही आया कि अनामिका खतरे में थी। वो सभी आक्रमण की मुद्रा में आए ही थे कि तभी उसने अनामिका की ओर अपने हाथ बढ़ाए। उसकी पूरी हथेली आग के शोलों से धधकने लगी।
"खबरदार! किसी ने भी हमला किया... तो मुझसे पहले अनामिका निपटेगी।"

और उसके हाथ से कुछ चिंगारियाँ छूटकर अनामिका के ऊपर गिर पड़ीं। अनामिका ने तेजी से उन्हें खुद से झटककर दूर किया और फिर घिसटते हुए उससे दूर हुई थी। आशुतोष ने सबको शांत रहने के लिए कहा। उनके मुकाबले अनामिका उस पिशाच के ज्यादा नज़दीक थी, इसलिए खतरा उसे ही ज्यादा था। इससे चैतन्य बुरी तरह से कुढ़कर रह गया, जबकि चैतन्य की सलाह की वजह से अनामिका के फँसने के कारण वरूण की चिढ़ चैतन्य के लिए और भी बढ़ी थी।

"आह्हा! देखो तो जरा! मेरे चंगुल से भागते-भागते एक बार फिर से मेरी ही गिरफ्त में हो। अब बस तुम्हीं बची हो। एक तुम्हारा नाम ले-लेकर कोई दो सौ सालों से खुश रह रहा था और तुम जानती हो कि मैं उसे कभी भी खुश नहीं देख सकता। आज तुम्हारे साथ उसकी आखिरी खुशी भी खत्म!" और अपनी बात खत्म कर वो वहशियाना तरीके से खुलकर हँसा था।

"एडवर्ड!" अनामिका और चैतन्य दोनों के मुँह से निकला।

"तुम... जिंदा हो! अल्फ़ी ने तो..." अनामिका ने कहना चाहा।

"वो हमेशा से ही बेचारा है सबके लिए और... वो है भी! मुझपर वार करने के बाद उसे रूकना चाहिए था। पर कहा ना... बेचारा! आज भी उसकी आखिरी खुशी उसके नसीब से नोंच लूँगा मैं।" और वो एकदम से अनामिका के सामने आ पहुँचा। उसका वो ख़ौफनाक चेहरा अनामिका की आँखों के सामने था, जिससे वो एक बार के लिए सहम कर रह गई।

वो अपने भद्दे से चेहरे पर उतनी ही भद्दी मुस्कुराहट के साथ अपनी गहरी ऑखों से उसे देख रहा था। अनामिका की ऑखें उसकी ऑखों में जैसे गोते खाकर डूबने-उतरने लगी। उसे ऐसा लगने लगा कि अंजाने में ही या तो वो उसके अंदर उतर रहा था या वो उसमें खो रही थी।

वहीं सब्र का आखिरी क़तरा खोने के बाद आखिरकार चैतन्य ने अपना प्रहार कर ही दिया। मगर उसकी सुरक्षा अपनी सुध-बुध पूरी तरह से खोती अनामिका तक पहुँचती.. उससे पहले ही कोई विशाल सी चीज उड़कर आई और उस भद्दे से पिशाच को अपने साथ समेटकर अनामिका से दूर ले गई। सुरक्षित होते ही अनामिका का शरीर जमीन पर ढह गया। चैतन्य और वरूण दोनों ही उसकी ओर भागे, जबकि बाकी सभी की हैरतजदा नज़रें उस हॉल की ऊँची छत की ओर थी, जहॉ एक अजीब सी जंग चालू थी।

"हे भगवान! एक और पिशाच! अब क्या.... दो-दो पिशाचों से भिड़ना पड़ेगा।" सृष्टि के मुँह से निकला, वहीं अंकित और मुकुल मुँह बाये उस अद्भुत नजारे को देख रहे थे।

"ये तो सचमुच बहुत ही अजीब है।" आशुतोष भी मुँह फाड़े ऊपर की ओर देखते हुए बोले।

"वो अजीब नहीं... वो अल्फ़ी है।" उन सबके पीछे से आवाज़ आई। सबने पीछे मुड़कर देखा तो... डॉ. अनंत बेहोश परिधि को अपनी बाहों में उठाए खड़े थे और बहुत ही थके हुए से लग रहे थे। उन्हें इस तरह देखकर मुकुल भागकर उनके पास गया और अचेत पड़ी परिधि को उनके हाथों से ले लिया। वहीं चैतन्य भी अनामिका को वहॉ से उठाकर उनके बीच ले आया था। अभी वो सबकी सुरक्षा सुनिश्चित कर ही रहे थे कि एक पिशाच पूरी ताकत और तेजी से हॉल के बीचों-बीच फर्श पर गिरा। फर्श का वो हिस्सा उधड़ गया और आसपास रखी चीजें हवा में उछलकर दूर जा गिरीं। सबकी नज़रें उसी ओर चली गईं। दूसरा पिशाच जिसे डॉ. अनंत ने अल्फ़ी बताया था... उतनी ही तेजी से एडवर्ड के सीने में उतरा और दहाड़ते हुए बोला, "कहा था... उससे दूर रहना!"

और फिर अगले ही पल वो दोनों फिर से गुत्थम-गुत्था हो गए थे और फिर दोनों ही उसी तरह उलझे हुए हॉल की बड़ी सी खिड़की को तोड़ते हुए बाहर निकल गए। पूरे हॉल से जैसे एक तूफान होकर गुजर गया। हर एक चीज टूट-फूट कर बिखर गई और कुछ देर पहले का व्यवस्थित और सुसज्जित हॉल किसी उजड़े हुए घर का नमूना बन गया।

"अनामिका को ये बिल्कुल पसंद नहीं आएगा।" वरूण ने कमर पर हाथ रखकर चारों ओर देखते हुए भयमिश्रित आवाज में कहा।

और उसकी बात सुनकर सभी ने उसे घूरकर देखा। वरूण ने सबकी नज़रों को नज़रअंदाज़ कर अनामिका और परिधि का मुआयना किया। दोनों ही सदमे की वजह से बेहोश हो गई थीं। चैतन्य किचन से पानी ले आया। किसी तरह अनामिका तो होश में आ गई, मगर परिधि ने ऑखें खोलने से इंकार कर दिया। अनामिका ने भी ऑखें जरूर खोली थीं... मगर वो एक अजीब सी हालत में बस सामने एकटक देख रही थी।

"इन दोनों को आराम की जरूरत है।" डॉ. अनंत ने कहा।

"मगर हम इन दोनों को ही अकेले नहीं छोड़ सकते।" वरूण ने चिंता से कहा।

"इन्हें गीता के कमरे में लेकर चलो! वो जगह सुरक्षित है।" डॉ. अनंत ने कहा और उठकर गीता के कमरे

की ओर चल दिए।
उनकी बात सुनकर मुकुल ने एक बार फिर से परिधि को उठाया और डॉ. अनंत के पीछे चल दिया। चैतन्य ने अनामिका को उठाना चाहा तो वरूण ने हाथ आगे बढ़ाकर उसे ऐसा करने से रोक दिया।

"पहले अपना ख्याल रखो! मैं नहीं चाहता कि एक बार फिर से अनामिका तुम्हारी वजह से मुसीबत में फँस जाए।" वरूण ने जहरबुझी आवाज में बहुत ही नागवारी से कहा। चिढ़ उसके चेहरे पर कसावट ले आई थी। चैतन्य कुछ कहता उससे पहले ही आशुतोष ने उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे रोका। चैतन्य मन मसोसकर रह गया। वरूण ने अनामिका को उठाया और गीता के कमरे की ओर बढ़ गया। आशुतोष ने चैतन्य के कंधे पर हाथ रखा और उसे अपने साथ ले गए।

गीता के कमरे में पहुँचकर उन्होंने देखा कि गीता अपने बिस्तर पर बहुत ही गहरी नींद में सोई हुई थी। सबको ये बहुत ही अजीब लगा कि घर में इतना कुछ हो गया, लेकिन वो अभी भी शांति से सो रही थी।

"वो जादुई काढ़े के असर में है। कुछ भी हो जाए... वो नहीं उठेगी।" डॉ. अनंत ने उन सबके सवालों को भांपते हुए जवाब दिया। उनके जवाब से संतुष्ट होकर सभी एक-एक जगह तलाश कर बैठ गए।

"वैसे परिधि की ऐसी हालत कैसे हो गई? अनामिका ने बताया था कि आप परिधि को कहीं लेकर गए थे।" चैतन्य ने खुद को आराम देने की कोशिश करते हुए डॉ. अनंत से पूछा।

"मैं उसे अल्फ़ी के पास ले गया था।" डॉ. अनंत ने खुलासा करते हुए कहा। उनके इस खुलासे से सभी बुरी तरह से चौंके थे।

"आप उस अल्फ़ी को कैसे जानते हैं? आपने पहले तो कभी इस तरह से उसका जिक्र नहीं किया, जब हम उसके बारे में जानने की कोशिशें कर रहे
थे।" आशुतोष ने सिकुड़ी हुई हैरान ऑखों के साथ कहा।

"क्योंकि मुझे खुद आज रात ही पता चला। सतवृक्ष रोपण के बाद आप सभी के जाने के बाद जब मैं यहॉ गीता के पास आया, तो उस दूसरे पिशाच ने गीता पर हमला किया था(भाग - 45)। मुझे तो एकबारगी लगा कि मैंने अपनी बेटी को खो ही दिया, पर उसी समय अल्फ़ी वहॉ आ गया। उसने ही उस समय उस पिशाच के चंगुल से गीता को आजाद कराया।

कुछ घंटे पहले -

गुस्से से भरे डॉ. अनंत ने अपनी सारी ताकत इकट्ठी कर उस पिशाच पर हमला कर दिया, जिससे वो पीछे उछलकर आइने से टकराया, जिससे वो आईना चकनाचूर हो गया। उसे डॉ. अनंत से इसकी उम्मीद नहीं थी। अपने ऊपर हुए हमले से तिलमिलाया हुआ वो पिशाच डॉ. अनंत पर झपटा ही था कि उसी समय डॉ. अनंत के सामने कोई उनकी ढाल बनकर खड़ा हो गया। डॉ. अनंत ने देखा कि ये भी एक पिशाच ही था। ये देखकर तो डॉ. अनंत के पैरों के नीचे से जैसे जमीन ही खिसक गई। एक पिशाच तो उन सबसे संभल नहीं रहा था, फिर ये दूसरा पिशाच कहॉ से आ गया?

"मेरे रास्ते में आना कब छोड़ोगे तुम?" पहले वाले पिशाच ने गुर्राते हुए कहा।

"जब तक तुम मेरे नाम को ओढ़कर ग़लत काम करना बंद नहीं कर देते... एडवर्ड!" दूसरे पिशाच ने भी उतनी ही तैश भरी आवाज में कहा।
और ये सुनते ही डॉ. अनंत को एक और झटका लगा। उस पहले वाले पिशाच ने तो अपना नाम उन्हें अल्फ़ी बताया था, तो ये दूसरा पिशाच उसे एडवर्ड क्यों कह रहा है? और अगर वो एडवर्ड है तो अल्फ़ी कौन है?

"हम्म! वो तो कभी नहीं होगा... मेरे नॉट सो प्यारे भाई अल्फ़ी!" एडवर्ड नाम के उस पिशाच के मुँह से आखिरकार दूसरे की पहचान निकल ही गई।

"गीता को क्यों परेशान कर रहे हो?" अल्फ़ी ने कसे हुए जबड़ों के साथ कहा।

"क्योंकि मुझे ऐसा करने में मजा आता है... और कुछ!" एडवर्ड ने बेशर्मी से कहा।

"तुम डॉ. अनंत को ब्लैकमेल करना चाहते हो... ताकि तुम्हें परिधि मिल जाए। है ना! आखिर क्यों चाहिए तुम्हें वो?" अल्फ़ी ने ख़ासी चिढ़ से कहा।

"ताकि वो तुम्हारे हाथ ना लगे!" एडवर्ड एक बार फिर से दाँत चमकाते हुए मुस्कुराया।

"तुम उसे मुझसे नहीं बचा सकते। उसने जो किया... वो मैं कभी माफ नहीं करूंगा।" अल्फ़ी गुस्से में लाल होते हुए बोला।

"देखा डॉ.! इसे तुम्हारी परिधि से समस्या है। मुझे नहीं! मैं तो बस उसे इस अल्फ़ी से बचाना चाहता हूँ। अब तुम ही फैसला करो कि कौन सही है?" एडवर्ड ने बहुत ही मीठी आवाज में कहा।

जहाँ अल्फ़ी उसकी बात सुनकर गुस्से में फुंफकारने लगा था.. वहीं डॉ.
अनंत और भी उलझ गए थे। एडवर्ड, परिधि को अल्फ़ी से बचा रहा था, जबकि अल्फ़ी ने खुद ही परिधि को मारने की बात उनके सामने कहीं, मगर... दूसरी ओर एडवर्ड, गीता के लिए खतरा था और अल्फ़ी उसे बचा रहा था। उनके लिए तो आगे कुआँ और पीछे खाई वाली बात हो गई थी।

"पर उस बच्ची ने आखिर किया क्या है?" उलझे हुए से डॉ. अनंत ने चिल्लाते हुए सवाल किया।

"मेरी माया को मुझसे अलग किया उसने। उसकी वजह से मेरी माया को तिल-तिल कर मरना पड़ा। मैं अपनी माया के क़ातिल को कभी भी माफ नहीं करूंगा।" कहते हुए अल्फ़ी, एडवर्ड पर टूट पड़ा। दोनों ही एक दूसरे पर बारी-बारी से हावी नज़र आ रहे थे, मगर अचानक ही अल्फ़ी ने एडवर्ड के माथे पर हाथ रखा। फिर जब उसने अपने हाथ को बाहर की ओर खींचा तो अपने साथ उस शरीर से आग को खींचकर बाहर ले आया और अपनी मुट्ठी में क़ैद कर लिया। एडवर्ड का शरीर तेज दर्द के साथ अकड़ने लगा और वो तेजी से बदलने लगा। डॉ. अनंत ऑखें फाड़े सब देख रहे थे और फिर देखते ही देखते एक बार फिर से उनके सामने गीता खड़ी थी। अपने रूप में वापस आते ही वो ढह गई। अपनी बेटी को सामने सही-सलामत पाकर डॉ. अनंत तेजी से उसकी ओर भागे और उसे संभाला। वो उसे अपनी बाहों में भरकर रोने लगे।

"वो ठीक है।" कहते हुए अल्फ़ी ने अपने हाथ में क़ैद आग को खिड़की से बाहर उछाल दिया।

"इस कमरे से बाहर रहो।" और ये कहते हुए खिड़की बंद कर दी।

"तुम कौन हो?" डॉ. अनंत ने पूछा।

"अल्फ़ी!" उसने जवाब दिया।
"चाहते क्या हो?" डॉ. अनंत ने अगला सवाल किया।

"परिधि!" अल्फ़ी बोला।

"क्या उसकी जान लिए बिना तुम्हारा काम नहीं होगा?" डॉ. अनंत की आवाज में याचना थी।

"अगर वो मेरी बेचैनी दूर कर दे... तो शायद हॉ!" अफ़ीम ने कहा।

"और वो कैसे?" डॉ. अनंत ने पूछा।

"उसकी गुम हुई यादों में मेरी कोई कीमती चीज क़ैद है! क्या? मुझे भी नहीं पता! बस वो मुझे ये बता दे। फिर मैं तय करूंगा कि वो सजा की हकदार है या नहीं।" अल्फ़ी ने कॉपती हुई आवाज में कहा।

"इसका तुम्हें कैसे पता चला?" डॉ. अनंत ने पूछा।

"इसी एडवर्ड ने बताया था। उसने मुझसे कहा था कि उस कीमती चीज के हवाले से परिधि ने ही मेरी हेममाया को अपनी आत्मा उस माया को देने पर मजबूर किया था। मेरी हेममाया तो वापस नहीं आ सकती, पर मुझे वो चाहिए। अगर मेरी हेममाया ने उसके लिए अपनी जान देने से भी परहेज़ नहीं किया तो जरूर वो बहुत कीमती होगा।" अल्फ़ी ने खुद को मजबूत बनाते हुए कहा।

"और मैं तुम्हारी मदद क्यों करू" डॉ. अनंत ने सबसे जरूरी सवाल पूछा।

"क्योंकि कुछ देर पहले तुम्हारी बेटी की जान बचाई थी मैंने। अहसान है मेरा!" अल्फ़ी ने थोड़ी खुश्की से कहा।
"अहसान उतारने के लिए उस बच्ची की जान से कोई सौदा नहीं करूंगा मैं।" डॉ. अनंत ने मजबूत लहजे में कहा।

"तो ठीक है। मैं वादा करता हूँ कि कम से कम इस समय तुम्हारी उस लाडली की जान को कोई नुक़सान नहीं पहुँचाऊंगा।" अल्फ़ी ने समझौते का हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"और तुम्हारे वादे पर क्यों यकीन करूं मैं?" डॉ.अनंत ने कहा।

"अल्फ़ी को अपना वादा निभाना आता है। दो सौ साल पहले किसी से वादा किया था कि कभी ग़लत नहीं करूंगा... और आज भी उस वादे को निभा रहा हूं। इसीलिए आपके सामने समझौता करने को

तैयार खड़ा हूं, वरना उस परिधि को नुक़सान पहुँचाना मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं थी। मुझे मेरा जवाब चाहिए। परिधि की सजा उसी के बाद तय करूंगा मैं क्योंकि सजा तो उसे मिलनी ही है।" अल्फ़ी ने बहुत ही साफगोई से कहा।

डॉ. अनंत ने बहुत ही ग़ौर से उसकी ऑखों में देखा, जहॉ उन्हें ईमानदारी साफ-साफ दिख रही थी।

"ठीक है। एक बार इसलिए यकीन कर लेता हूँ क्योंकि तुमने मेरी बेटी की जान बचाई है। पर याद रखना कि अगर तुमने कुछ भी ग़लत किया.. अपना वादा तोड़ा तो मैं अपना आखिरी हथियार इस्तेमाल करने से नहीं चूकूंगा और तुम जानते हो कि उसके प्रहार से तुम कभी भी नहीं बच सकते।" डॉ. अनंत ने उसका बढ़ा हुआ हाथ पकड़ते हुए कहा।

"चिंता मत करिए। आज आपको भी परिधि की पूरी पहचान मिल जाएगी। उसके बाद फैसला आपके हाथ में होगा।" अल्फ़ी ने कहा।
वर्तमान में -

"और आप उस पर यकीन कर परिधि को अपने साथ ले गए!" सृष्टि ने आश्चर्य से कहा।

"हॉ... और वहॉ जाकर जो पता चला वो दिल को झकझोरने वाला था। अल्फ़ी का दर्द कितना गहरा है... इसकी कल्पना मात्र से मैं अभी तक सिहर रहा हूँ। पता नहीं उसने ये लंबा जीवन इस दर्द के साथ कैसे काटा क्योंकि इसी दर्द के साथ पिछले दस साल मेरे लिए पूरी तरह से असहनीय थे।" तृषा को याद करते हुए डॉ. अनंत ने तड़पकर कहा।

उनकी बात पर सभी ने अपना सिर दु:ख से झुका लिया क्योंकि अल्फ़ी और हेममाया की कहानी से वहॉ मौजूद हर शख़्स अच्छी तरह से परिचित हो चुका था।

"तो क्या परिधि ने बताया कि वो क्या चीज़ थी, जिसकी तलाश अल्फ़ी को है।" अंकित ने उत्सुकता से पूछा।

"हॉ! वो बस बताने ही वाली थी कि तभी ना जाने कौन सा अहसास अल्फ़ी को यहॉ खींच लाया? और जब हम यहॉ पहुँचे तो अनामिका को खतरे में पाया। उसके बाद तुम सभी को पता है।" डॉ. अनंत ने एक आह के साथ अपनी बात खत्म की।

"भला ऐसी क्या चीज हो सकती है?" सृष्टि ने अनुमान लगाने की नाकाम
कोशिश करते हुए कहा।

"पता नहीं। पर मुझे बहुत हैरानी हुई कि जब अपने जवाब के इतने करीब आने के बाद भी अल्फ़ी सब छोड़कर यहॉ आ गया।" डॉ. अनंत ने कहा।

"उसने अनामिका पर खतरा महसूस कर लिया होगा।" चैतन्य ने कहा।

"अनामिका पर! वो उसे बचाने के लिए वापस आया!" डॉ. अनंत ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ! क्योंकि अल्फ़ी की हेममाया की आत्मा अनामिका के अंदर ही है। इसलिए वो उसकी बहुत फिक्र करता है।" चैतन्य ने कहा।

"हेममाया की आत्मा! अनामिका के अंदर! ऐसा कैसे हो सकता है?" डॉ. अनंत बुरी तरह से चौंके थे।

"मेघा ने आपसे झूठ कहा था। उसने अनामिका की जान बचाने के लिए अपनी आत्मा को अनामिका से नहीं जोड़ा था... हेममाया की आत्मा से जोड़ा था।" चैतन्य ने जवाब देते हुए कहा।

"पर... मेघा को हेममाया की आत्मा कहाँ से मिली?" डॉ. अनंत ने सवाल किया।

चैतन्य ने अनभिज्ञता जताते हुए अपने कंधे उचकाए। उसी समय दरवाजे की ओर से एक आवाज जवाब लेकर आई।

"उन्हें मैंने दिया था।"
सबने आवाज की दिशा में देखा। ये अल्फ़ी था। चैतन्य ने आँखें फाड़कर उसे देखा। उसे ये यकीन करना मुश्किल हो रहा था कि अनामिका की जान बचाने के लिए मेघा को हेममाया की आत्मा खुद अल्फ़ी ने दी थी। अनामिका के लिए उसके प्रेम की पराकाष्ठा चैतन्य की हैरानी हर पल बढ़ा रही थी और अब उसे भयभीत भी कर रही थी।

"चैतन्य! मेरा एक काम कर दोगे? प्लीज़!" अल्फ़ी ने याचना भरे स्वर में कहा।

"हाँ! कहो ना!" चैतन्य बोला।

"तुम अनामिका और हेममाया को लेकर बसेरे पहुँचो। मैं आता हूँ!" हेममाया के शरीर को चैतन्य को थमाते हुए अल्फ़ी ने कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य और अनामिका दोनों ही चौंके थे।

"तुम कहाँ जा रहे हो?" अनामिका ने आगे बढ़ पूछा।

"एक काम रह गया है। उसका पूरा होना बहुत जरूरी है, वरना हमारी इतनी मेहनत बर्बाद हो जाएगी। तुम चलो! मैं समय से पहले आ जाऊंगा।" अल्फ़ी ने कहा।

"नहीं! अब कोई और काम नहीं! तुम साथ चलोगे। कहीं फिर किसी मुसीबत में फँस गए तो!" चैतन्य ने उसकी बात को काटते हुए नाराज़गी से कहा।

"नहीं फँसूँगा। वादा कर रहा हूँ! वापस आऊँगा अपनी माया के पास।" कहते हुए उसने एक ही नज़र में हेममाया और अनामिका दोनों को ही
भरा।

"पर.." चैतन्य ने हिचकिचाकर कहा।

"बस जाओ! आता हूँ! प्लीज़!" अल्फ़ी इस बार याचना करते हुए कहा।

चैतन्य ने उसकी बात मान ली और ना चाहते हुए भी हेममाया और अनामिका को लेकर वहाँ से बसेरे के लिए निकल गया। अल्फ़ी ने उनके अंधकार में गुम होने का इंतजार किया और फिर उस गड्ढे में उतर गया। बहुत से हिसाब चुकते करना अभी बाकी था।

गड्ढे में उतरते ही फिर वही घना अंधेरा उसका इंतजार कर रहा था, जिसके मायने अल्फ़ी की जिंदगी में अब कुछ और हो चुके थे। एक गहरी साँस लेकर वो जाने-पहचाने रास्ते पर बढ़ गया। हर बढ़ते कदम के साथ वो अपनी धड़कनों को भी बेकाबू होता महसूस कर रहा था। उसके अंदर एक गुस्सा था... जो ना जाने कब से धधक रहा था। हेममाया के शरीर को पाने के बाद अब लावा बन चुका वो गुस्सा बाहर निकलने को बेताब था।

अंधेरे भरे रास्ते को पार कर वो उसे रास्ते के अंतिम टिमटिमाते छोर पर पहुँचा, जो यकीनन आगे के कमरे में जल रही मशालों की वजह से थी। अपने गुस्से को काबू करते हुए वो सावधानी से आगे बढ़ा। कमरे के अंदर नज़र जाते ही उसकी आँखें सिकुड़ गईं। उस पर हुए हर सितम का गुनहगार सामने दोनों पैर बांधे बैठा हुआ था। अल्फ़ी ने नज़र घुमाई तो पीटर को परेशानी की हालत में तेजी से चहलकदमी करते हुए देखा।

"आप शांति से बैठेंगे!" एडवर्ड ने उकताकर पीटर से कहा।

"Quiet! Is it really time to be quiet? You saw him?
He's not like us. He's definitely a Pishachdev's child. He's incomparable. The powers you've acquired after so many years of rigorous practice. ..They are naturally within him. If he realizes it, do you understand what will happen? After so much practice, you can just become a pseudo-vampire... but only one sacrifice and he himself can become a vampire" (शांत! क्या सच में ये शांत रहने का समय है। तुमने उसे देखा ना! वो हमारी तरह नहीं है। निश्चित रूप से वो पिशाचदेव की संतान है। वो अतुलनीय है। इतने सालों की कठोर साधना के बाद जो शक्तियाँ तुमने प्राप्त की हैं.. वो उसके अंदर कुदरती तौर पर हैं। अगर उसे इसका आभास हो गया तो समझ रहे हो क्या होगा? इतनी साधना के बाद तुम बस छद्म पिशाच बन सकते हो... पर बस एक बलि और वो स्वयं पिशाच बन सकता है।), पीटर ने बदहवास होते हुए कहा।

"और कौन बताएगा उसे? वैसे भी आज वो मेरा शिकार है। आज उसकी बलि देकर मैं अपनी साधना पूर्ण करूंगा और अल्फ़ी नाम का ख़तरा भी हमारे रास्ते से खत्म हो जाएगा। उसे इतनी आसान मौत देने के बारे में नहीं सोचा था, पर... अब परिस्थितियाँ हमारे हक में ज्यादा नहीं रही। इसलिए आप शांत रहें।" आँखें बंद कर बैठे हुए एडवर्ड ने बहुत ही इत्मीनान से कहा।

"And you think he will silently bow his head in front of you to sacrifice himself."(और तुम्हें लगता है कि वो अपनी बलि देने के लिए तुम्हारे सामने चुपचाप अपना सिर झुका देगा।), पीटर ने तमतमाकर कहा। वो एडवर्ड को इतना शांत देखकर और भी भड़का था।

"जब तक हेममाया का शरीर और वो अनामिका हमारे कब्जे में है.. उसे
हमारी हर बात माननी ही होगी। उसके अंदर एक गिल्ट है कि वो हेममाया को बचा नहीं सका। इसलिए अनामिका को बचाने के लिए वो कुछ भी करेगा।" एडवर्ड अभी भी बहुत ही आराम से कहा।

"And if he gets them both… then!"(और अगर उसे वो दोनों मिल गए... तो!), पीटर में संशयपूर्वक कहा।

"उन दोनों को जहॉ मैंने कैद किया है, वो जगह जादुई सुरक्षा में है। ना तो वो अनामिका अपना कोई जादू चला सकती है और ना ही उसकी आवाज बाहर आ सकती है। जब किसी को पता ही नहीं चलेगा कि वो दोनों कहॉ हैं तो उन्हें छुड़ाएँगे कैसे? इसलिए परेशान मत होइए! वो कभी भी आ सकता है।" एडवर्ड ने पीटर को समझाते हुए कहा।

"And why do you think that...he will come here only?"(और तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि... वो यहॉ ही आएगा!), पीटर ने एक और सवाल उठाया।

"क्योंकि मुझे पता है। वो पहले भी यहॉ आ चुका है। भविष्य कथन यहॉ पर नहीं है।" एडवर्ड ने एक और इशारा करते हुए थोड़े अफसोस से कहा।

"He came in here and took the Bhavishyakathan! Such a big thing has happened and you have no problem at all. That much self-confidence is no good, Edward!"(वो यहॉ अंदर आकर भविष्य कथन ले गया! इतनी बड़ी बात हो गई और तुम्हें कोई परेशानी ही नहीं है। इतना आत्मविश्वास भी ठीक नहीं होता एडवर्ड!), एडवर्ड के इत्मीनान पर पीटर फिर से भड़का था।

"अंकल पीटर! आप मेरा ध्यान भटका रहे हैं। मैं अल्फ़ी की आहटों पर
ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रहा हूँ। आप जानते हैं कि हमने जो पहले तय किया था... वो इतना मुश्किल नहीं होने वाला था। पर उस अनामिका और चैतन्य ने सब कुछ बिगाड़ दिया है। ना चाहते हुए भी अब हमें हर हाल में अल्फ़ी चाहिए ही चाहिए और मैं नहीं चाहता कि जब वो यहॉ पहुँचे तो मैं उसकी आहट से बेखबर रहूँ।" पीटर के बार-बार टोकने की वजह से उकताए हुए एडवर्ड ने दॉत पीसते हुए कहा।

"But Edward...that Alfie..." इस बार पीटर ने सहमी हुई आवाज में कहा।

"जब उसे अपनी शक्तियों के बारे में मालूम ही नहीं है तो वो उनका इस्तेमाल करेगा कैसे? वैसे भी यहॉ हम दो हैं। उसके लिए भी इतना आसान नहीं होने वाला है। अब आप बात यहीं खत्म करें। एक बात हमेशा याद रखें कि एक प्रेमी से ज्यादा बेवकूफ और डरपोक कोई नहीं होता। प्रेम एक दीमक की तरह होता है, जो बुद्धि को चट कर जाता है। फिर सामने वाला कुछ भी सोचता-समझता नहीं है। अल्फ़ी की इसी कमज़ोरी का ही तो हमने हमेशा फायदा उठाया और अब भी उठाएँगे।" एडवर्ड ने बहुत ही गंभीर लहज़े में कहते हुए अपनी बात खत्म की और एक बार फिर ऑखें बंद करके बैठ गया। पीटर भी अपने अंदर ढेर सारी कश्मकश भरे चुपचाप एक और बैठ गया।

इधर उन दोनों की बातें सुनने के बाद अल्फ़ी को मेंशन में अपना हर कारनामा याद आता गया। किस

तरह उसने अपने हाथ के इशारे से दरवाजे को बंद कर दिया था और किस तरह उसने एडवर्ड के साथ हाथापाई की थी। उसे अपना दीवारों और छत पर आराम से चलना और दौड़ना याद आ गया। अपने जख्म का भरना याद आ गया। उसका हाथ अपने आप ही पेट के उसे हिस्से पर चला गया जहाँ पर खंजर आ घुसा था। अचानक ही उसके होठों पर एक मुस्कान आ गई। अब उसे पता था कि उसे क्या करना था? कैसे करना था? वो बहुत ही दबे पॉव थोड़ा सा
पीछे गया और फिर उसने एक पत्थर उठाकर पीछे की ओर दीवार पर दे मारा, जिससे एक आवाज उस संकरे से रास्ते में गूंज उठी। अल्फ़ी को पता था कि एडवर्ड और पीटर दोनों का ध्यान अब इस रास्ते पर ही होगा। वो दो पलों के लिए रुका और फिर उसने तेजी से उसे कमरे की ओर दौड़ लगा दी। उस कमरे में थोड़ा अंदर की ओर जाकर उसने लड़खड़ाते हुए खुद को रोका। उसने ऐसा दिखाने की कोशिश की.. कि वो तुरंत ही बिना रुके बहुत दूर से दौड़ता हुआ वहाँ पहुँचा था.. ताकि सामने मौजूद उन दोनों के मन में उसकी मौजूदगी को लेकर कोई शंका न रहे।

"एडवर्ड! कहाँ हैं हेममाया और अनामिका?" अल्फ़ी चीखते हुए बोला।

"कहा था ना!" एडवर्ड ने अल्फी की बात को नजर अंदाज कर पीटर की ओर टेढ़ी मुस्कान के साथ देखते हुए कहा। मगर पीटर अभी भी अल्फ़ी को संदेह से देख रहा था।

"मैंने कुछ पूछा!" अल्फ़ी एक बार फिर चिल्लाया।

"श्श्श्श! चिल्लाओ मत! फिलहाल तो ठीक हैं और अगर तुम चाहोगे तो ठीक ही रहेंगे।" एडवर्ड ने अपना जाल फेंकते हुए कहा।

"क्या चाहते हो तुम?" अल्फी ने मुद्दे पर आते हुए पूछा।

"वही.... जो पहले भी चाहता था। तुम्हारी मौत! इससे कम में कोई बात नहीं होने वाली है।" एडवर्ड ने भी साफ-साफ अपनी बात कह दी। उसने पीटर की ओर इशारा किया, तो पीटर तुरंत ही अल्फ़ी की तलाशी लेने लगा। हालांकि अल्फ़ी की वजह से उसके अंदर बैठ गए डर ने उस पर से अपनी नज़रें नहीं हटाने नहीं दीं। अल्फ़ी ने भी चुपचाप अपने दोनों हाथ ऊपर कर दिए।
"पर मैं.... तुम्हारी बातों पर यकीन क्यों और कैसे करूं... कि.. मेरे मरने के बाद तुम उन दोनों को आजाद कर दोगे।" दोनों हाथ ऊपर उठाए अल्फ़ी ने भी अपनी चाल चलते हुए कहा।

"अब... तुम्हारी इस समस्या का समाधान मेरे पास नहीं है।" एडवर्ड ने अपने कंधे उचका कर लापरवाही से कहा और पीटर की ओर देखा, जो तलाशी का अपना काम खत्म कर चुका था। उसने अपना अंगूठा उठाकर सब सही होने का इशारा किया।

"पर मेरे पास कोई गारंटी तो होनी चाहिए ना... कि मेरी मौत उनकी जिंदगी का सबब बनेगी।" हाथ नीचे कर अल्फ़ी ने भी अड़ते हुए कहा।

"मेरे ख्याल से.... उनकी हालत देख लो तो.... तुम्हें फैसला करने में ज्यादा आसानी होगी। इससे ज्यादा मैं और कुछ नहीं कर सकता।" एडवर्ड ने उसे सुझाव देते हुए कहा।

और उसका सुझाव सुनते ही अल्फ़ी के कान खड़े हुए थे। अगर एडवर्ड ऐसा कुछ करता तो उसे पता चल जाता कि अनामिका और हेममाया दोनों ही उसके चंगुल से छूट चुके थे। मगर वो हड़बड़ाता तो..

सामने वाले को शक हो सकता था। वैसे भी पीटर की नजरें अल्फी को कुछ ज्यादा सही नहीं लग रही थीं और ना ही अपने हक़ में।

"नहीं! मैं उनको... किसी भी तरह की बुरी हालत में नहीं देखना चाहता।" अल्फ़ी ने भरे हुए गले से कहा।

"तो फिर!" एडवर्ड ने पूछा।

"अभी इस समय मेरे पास तुम पर यकीन करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। मैंने तो पहले भी यकीन किया था, पर वो चैतन्य उसी
ने सब बिगाड़ा। वही मुझे उस कैद से छुड़ा कर ले गया था।" अल्फ़ी ने अपना पक्ष रखते हुए कहा।

"Oh yes! Where is that stupid one? Looks like he doesn't care about his girlfriend at all."(अरे हॉ! कहॉ हैं वो नमूना? लगता है उसे अपनी प्रेमिका की बिल्कुल भी चिंता नहीं है।), पीटर ने अल्फी पर गहरी निगाह डालकर तंज करते हुए पूछा। चैतन्य का जिक्र आते ही पीटर सचेत हुआ था।

"मुझे नहीं पता! मैं और अनामिका दोपहर में इस जगह आए थे। इसलिए मैंने अंदाजा लगाया कि आप लोग यहॉ हो सकते हैं। मैं अनामिका को लेकर इतना घबरा गया था कि... उसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया और भागकर यहॉ चला आया।" अल्फ़ी ने जवाब देते हुए कहा।

"अब आ ही गए हो तो प्रेमी का फर्ज भी पूरा करो। अंकल! आप सब तरफ चौकन्नी नज़र जमाए रखें। कोई भी गड़बड़ नज़र आए... सोचने या रहम करने की कोई जरूरत ही नहीं है और जब हमारा काम सही तरीके से हो जाए तो उस अनामिका को हेममाया के शरीर के साथ आजाद कर दें।" एडवर्ड आदेश देता हुआ बोला और एक बार फिर से अपनी जगह पर बैठ गया। उसने एक बार फिर से अपनी ऑखें बंद कर लीं और गहरे ध्यान में चला गया।

उस जगह को उसने दोपहर में भी देखा था। सामने एक विशाल मूर्ति थी, जो यकीनन पिशाच देव की थी। नीचे एक छोटा सा हवन कुण्ड जैसा बना हुआ था... जो फिलहाल शांत था। उसके सामने एडवर्ड ध्यान में बैठा हुआ था। एडवर्ड के सामने एक खंज़र रखा हुआ था। पास ही पत्थर की लंबी
सी एक मेज थी। पीटर दरवाजे और अल्फ़ी पर अपनी तेज नज़र पूरी सावधानी से रखे हुए था।

एडवर्ड के ध्यान में जाने के थोड़ी देर बाद उस पूरे कमरे का तापमान धीरे-धीरे गिरने लगा। मशालों की रोशनी भी धीमी होती गईं। एक समय ऐसा आया जब हवाऍं शूल की तरह जिस्म में चुभने लगी थीं। मगर इससे उन तीनों की ही स्थिति में कोई फर्क नहीं आया, जैसे कि वे तीनों ही सभी अहसासों के दायरे को तोड़ चुके हों।

और फिर एक भक्क की आवाज के साथ सूना पड़ा हवनकुंड अग्नि से आबाद हो गया। अल्फ़ी बहुत ही ध्यान से उसकी हर एक कार्यवाही को देख रहा था... समझ रहा था क्योंकि अभी वार करने का सही समय नहीं आया था।

कुंड से उठती आग की लपटों की रोशनी में सब कुछ सुनहरा-सुनहरा सा लग रहा था और तभी... अल्फ़ी को याद आई... हेममाया से अपनी पहली मुलाकात। कुछ इसी तरह आग की रोशनी में दमकते हुए उसके चेहरे को अपने दिल में उतारा था उसने... और वो आज भी वहीं थी। एक पल के लिए अल्फ़ी को लगा कि उन आग की लपटों के पीछे हेममाया का खूबसूरत चेहरा उसे देखकर मुस्कुरा रहा हो। बेखुदी में अल्फ़ी के हाथ उस ओर उठे और अगले ही पर आंसुओं की चादर में हेममाया का चेहरा झिलमिलाने लगा। अल्फ़ी ने हड़बड़ाकर अपनी दोनों ऑखों को अपनी हथेलियों से रगड़ा और फिर सामने देखा। उसके मन की राहत जा चुकी थी। वो एक बार फिर से तड़प उठा था और उसका चेहरा एक बार फिर से हेममाया की तकलीफों के बारे में सोचकर तपने लगा था। उस पर उसकी ऑखों के अंदर की आग के ऊपर चढ़ा दर्द का पानी और भी हैरतअंगेज मंज़र पैदा कर रहा था। मगर आज इस समय वो अपने होश खोने नहीं आया था। इसलिए खुद पर नियंत्रण करके वो उसी तरह खड़ा रहा। पर चेहरे के दर्द को छुपाने की कोई भी कोशिश उसने नहीं की।
कुछ ही देर में कुंड से उठती आग ने वातावरण की सारी ठंडक निगल ली और अब सबको अपना जिस्म गर्मी में झुलसता हुआ महसूस होने लगा। बढ़ती हुई बेचैनी के बीच माथे पर उभरी बूंदें जब बहकर गालों पर बहने लगीं और शरीर के कपड़े जिस्म में चिपककर एकसार होने लगे, तब एडवर्ड ने अपनी ऑखें खोली। उसकी वो ऑखें सुर्ख़ लाल शोलों सी दहक रही थीं और उसका चेहरा कठोर होकर पत्थर को भी मात देने में तुला था। वो अपनी जगह पर खड़ा हुआ और मूर्ति की ओर अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर जोर-जोर से पिशाचदेव का आह्वान करने लगा। हर बढ़ते पल के साथ उसके होंठों पर कुटिल मुस्कान बढ़ती जा रही थी।

"हे पिशाचदेव! आज मैं.... तेरा आराधक! अपनी साधना पूर्ण करने के लिए अंतिम समर्पण तुझे अर्पित करता हूँ। अपने खून की बलि तेरे चरणों में चढ़ाता हूँ! हे पिशाचदेव! अपने चरणों में जगह देकर मुझे अपनी कृपा से अनुगृहित करें... मुझे अपनी शरण में लें।"

फिर वो रूका और उन सबने देखा। सामने की विशालकाय मूर्ति की ऑखें लाल होकर दहकने लगी थीं और उसके होंठ खुल गए, जिससे उसके पैने दॉत और भी साफ-साफ दिखाई देने लगे थे। निश्चित रूप से पिशाचदेव ने अपने आगमन की सूचना दे दी थी। ये देखकर एडवर्ड की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वो अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर जोर-जोर से अट्टहास करने लगा। अल्फ़ी ने पीटर की ओर देखा तो वो भी सालों की मेहनत सफल होने की खुशी से दमक रहा था और इस समय उसका भी ध्यान अल्फ़ी से हट गया था। अल्फ़ी ने समझ लिया कि बस अब मौका नज़दीक ही है। उसने भी अपनी ऑखें बंद की और अपनी पुकार पिशाचदेव के पहुँचाने लगा, जिससे कि वो भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर सके।

उधर अल्फ़ी की ओर से लापरवाह एडवर्ड अग्निकुंड की ओर बढ़ा और
फिर उसके सामने रखा खंज़र उठा लिया। उसने पीटर की ओर देखा। वो भी उसी की ओर देख रहा था।
एडवर्ड ने इशारे से अल्फ़ी को उस पत्थर के मेज के पास लाने के लिए कहा। समय आ चुका था। वो दोनों ही बहुत ज्यादा आवेशित नज़र आ रहे थे। उनकी बरसों की साधना पूर्ण होने ही वाली थी। एडवर्ड का इशारा मिलते ही पीटर तेजी से अल्फ़ी के पास पहुँचा और उसे खींचते हुए उस पथरीले मेज के पास ले गया। उसने अल्फ़ी को धक्का देकर उस मेज पर गिरा दिया और फिर उसे सही तरीके से लिटा दिया। अल्फ़ी ने एक बार भी कोई ऐतराज नहीं जताया। उसने उन्हें उनके मन का करने दिया। पीटर ने उसके हाथ सामने सीने पर क्रॉस करके बांध दिए। फिर उसने उसके हाथ भी बांध दिए। अग्निकुंड के पास जाकर उसने राख उठाई और फिर वो राख अल्फ़ी के सिर पर मल दी। अब वो बलि के लिए पूरी तरह से तैयार था।

अल्फ़ी चुपचाप ऑखें बंद किए लेटा हुआ था। उसके जबड़े कसे हुए थे, जिसे एडवर्ड ने मौत का डर

समझने की गलती कर दी। उसे अभी भी यकीन नहीं हो रहा था कि सब कुछ इतनी आसानी से होने जा रहा था। कामयाब होने की खुशी उसके चेहरे की रौनक को और भी बढ़ा रही थी। पीटर भी एक अलग ही खुशी में डूबा हुआ था।

अल्फ़ी के सीने में खंज़र उतारने के लिए एडवर्ड ने अपने दोनों हाथों से पकड़कर उसे अपने सिर के ऊपर उठा लिया। अगले ही पल वो अपना वार करता उससे ही पहले ये हुआ...। उसके दोनों हाथ उसी तरह हवा में जकड़कर रह गए। बौखलाए हुए एडवर्ड ने अपने दोनों हाथों को तेजी से झटका देने की कोशिश की, मगर कुछ भी नहीं हुआ। वो अपनी इस हालत पर बुरी तरह से हड़बड़ाया।

"What happened Edward? Why aren't you killing him?"(क्या हुआ एडवर्ड? तुम उसे मार क्यों नहीं रहे?), पीटर जोर से चिल्लाया।
"पता नहीं अंकल! मेरे हाथ बुरी तरह से जाम हो गए हैं। मैं इन्हें हिला नहीं पा रहा हूँ।" एडवर्ड घबराई हुई आवाज में बोला।

"ऐसा कैसे हो सकता है?" उसकी हालत जानकर पीटर भी उसकी तरह हड़बड़ाया। अभी दोनों ही कुछ सोचते की तभी एडवर्ड का हाथ नीचे की ओर आने लगा और फिर एडवर्ड के सीने के सामने रूक गया। वो कुछ समझ पाता उससे पहले ही उसी के उन हाथों ने पकड़े हुए खंज़र का रूख अल्फ़ी की ओर से मोड़कर खुद एडवर्ड के ही सीने की ओर कर दिया। अब तो एडवर्ड और पीटर दोनों ही पूरी तरह से हड़बड़ा गए।

"What are you doing?(ये क्या कर रहे हो?), पीटर बौखलाकर बोला।

"ये मैं नहीं कर रहा हूँ अंकल! प्लीज़! कुछ कीजिए.. वरना ये खंज़र मेरे ही सीने में उतर जाएगा।" उस अनचाही पकड़ से खुद को छुड़ाने की कोशिश करता हुआ अल्फ़ी बोला और उसकी ये बात सुनकर पीटर की ऑखें दहशत से फैल गईं। उसने अल्फ़ी की ओर नज़रें झुकाई। वो ऑखें बंद किए लेटा हुआ था और मंद-मंद मुस्कुरा रहा था। पीटर सब संभालने की गरज से अल्फ़ी की ओर लपका। मगर अगले ही पल उसका शरीर हवा की सैर करता हुआ छत से जा लगा। वो अपनी गर्दन पर कसी हुई ऊंगलियों का दबाव महसूस कर सकता था।

अल्फ़ी की मुस्कान और भी गहरी हुई और उसने झटके से अपनी ऑखें खोल दीं। उसने एक नज़र पीटर पर डालने के बाद असहाय खड़े एडवर्ड की ओर देखा। गुस्से में दॉत भींचे वो उसे ही लाल ऑखों से घूर रहा था।

अल्फ़ी ने एक ही झटके से अपनी कलाईयॉ रस्सियों की क़ैद से आज़ाद कराईं। उन कलाईयों को मसलते हुए वो उठा और फिर एडवर्ड के सामने
बैठ गया।

"क्या कहते हो एडवर्ड... बलि तुम्हारी चढ़ा दी जाए।" अल्फ़ी ने बहुत ही कड़वाहट के साथ उससे कहा।

उसकी बात सुनकर एडवर्ड बुरी तरह से छटपटाया था। उसने खुद को छुड़ाने की बहुत कोशिश की मगर नहीं कर सका। अल्फ़ी ने पीटर की ओर नज़र उठाकर देखा और चिढ़ाने वाली आवाज में बोला, "कहिए मामा जी! दे दें एडवर्ड की बलि... उसी के हाथों!"

"इससे तेरा कोई फायदा नहीं होने वाला। बल्कि आत्मबलि एडवर्ड की साधना को पूर्ण कर ही देगी। तू चाहे भी तो ऐसा नहीं कर सकता।" पीटर जोर से चिल्लाकर बोला और अगले ही पल उसे अहसास हुआ कि उसके मुँह से क्या निकल गया है। एडवर्ड ने दुख और गूस्सए से अपनी ऑखें बंद कर लीं।

"ओह! थैंक्यू मामाजी! अच्छा हुआ आपने बता दिया। अब तो ये शुभ काम मैं ही करूंगा।" कहते हुए अल्फ़ी ने एडवर्ड के हाथों से वो खंज़र छीन लिया।

एक ही पल में बाजी पूरी तरह से पलट चुकी थी। एडवर्ड बुरी तरह से अल्फ़ी के जाल में फँस चुका था और उससे बाहर निकलने के लिए लगातार छटपटा रहा था। उसे इस तरह से तड़पता हुआ देखकर अल्फ़ी की ऑखों में एक दर्द उतर आया। गुस्से में उसके नथुने फड़कने लगे और सॉसे भारी हो गईं।

"मेरी माया भी ऐसे ही तड़पी होगी ना! हो सकता है कि गिड़गिड़ाई भी हो। पर तुम नफ़रत और लालच में अंधे हो चुके लोगों को उसका दर्द महसूस ही नहीं हुआ। मार डाला उसे। पर देखो... उसकी आह तुम्हें खा
गई। इसे कहते हैं सौ सुनार की और एक लोहार की। जब तुम्हारा दिल किसी के दर्द को महसूस ही नहीं कर सकता तो इसकी किसी को जरूरत भी नहीं।" अपने अंदर की सारी कड़वाहट बाहर निकालते हुए अल्फ़ी ने वो खंज़र एडवर्ड के दिल के ऊपर रख दिया। एडवर्ड की छटपटाहट और भी बढ़ गई थी और चेहरे पर एक ख़ौफ उतर आया था। अल्फ़ी की ऑखों में भी एक तड़प उतरी और उसने वो खंज़र पूरी ताकत से एडवर्ड के सीने में उतार दिया। एडवर्ड की दिल दहलाने वाली चीखें दीवारों से टकरा-टकराकर दम तोड़ गईं। कुछ ही देर में वो फर्श पर पड़ा झटके खा रहा था। अल्फ़ी ने एक हिकारत भरी नज़र उस पर डाली।

"तुम जैसों का ऐसा ही अंजाम होना चाहिए। तू मेरी बलि चढ़ाना चाहता था। देख! मैंने ही तेरा खून पिशाचदेव को अर्पित कर दिया। तेरी आखिरी सॉस का भी गवाह बनना चाहता था, पर समय नहीं है मेरे पास। अनामिका जा रही है। उसे विदा करना है मुझे। तू अपना अंजाम खुद भुगतने के लिए आजाद हैं।" कहते हुए अल्फ़ी उठा और फिर हाथ उठाकर उसने एक झटका दिया, जिससे पीटर लहराता हुआ नीचे फर्श पर आ गिरा।

"बक्श दिया तुझे। तुम सबकी तरह बेगैरत नहीं हूँ। अपने पापों की इस गठरी को जमीन के किसी हिस्से में दबाने का मौका देता हूँ।" कहते हुए अल्फ़ी तेजी से दरवाजे की ओर भागा कि समय तेजी से भाग रहा था। बाहर निकलने से पहले उसने मुड़कर देखा। पीटर बदहवास सी हालत में एडवर्ड पर झुका हुआ उसे झिंझोड़ रहा था। उन दोनों को एक नज़र देखकर अल्फ़ी तेजी से बाहर निकल गया। अब वो बसेरे की ओर जा रहा था।

वर्तमान में -
"अगर सच में तुमने एडवर्ड को मार दिया था... तो वो वापस कैसे आया और तुम पिशाच कैसे बन गए? तुमने अनामिका से वादा किया था कि तुम कोई ग़लत काम नहीं करोगे। फिर ये सब!" चैतन्य ने अपने नाराज़ लहजे में बेयकीनी मिलाते हुए कहा।

"मैंने कोई वादा नहीं तोड़ा। ये मेरी मजबूरी थी। अनामिका की जान बचाने और परिधि को सजा देने के

लिए पिशाच बना मैं!" अल्फ़ी जूनूनी हालत में चिल्लाकर बोला।

"पर परिधि को सजा क्यों?" आशुतोष ने पूछा।

"क्योंकि उसने मेरी माया को अमानत चुराई है।"

और ये सुनते ही सभी आवाक् होकर रह गए।

"और ये तुम्हें कैसे पता चला?" अंकित ने पूछा।

"मैं एक बार फिर से कल्परूप गया था। वहॉ पता चला।" अल्फ़ी ने सामने बैठी अनामिका के चेहरे पर नज़र रखे हुए कहा, जो उसे ही देख रही थी। पास ही परिधि भी अचेत लेटी हुई थी।

"तुम वहॉ फिर से क्यों गए थे?" चैतन्य ने सवाल किया।
"लता मॉ चाहती थीं।" अफ़ीम ने जवाब दिया।

"और वो क्यों? चैतन्य ने पूछा।

"तुम सबके जाने के बाद मैं हेममाया के शरीर को लेकर वापस अपने कस्बे आ गया। हेममाया का अंतिम संस्कार करने के बाद मेरी तन्हा पड़ी जिंदगी में बस लता मॉ के कदमों की आहट ही शेष बची थी। एक ही दर्द से गुजरते हम दोनों ही बस एक-दूसरे का चेहरा देखकर जी रहे थे। जीने की चाहत तो दोनों में ही नहीं बची थी, पर हम जानते थे कि गलत कदम उठाना हेममाया की आत्मा को दुखी करता। लता मॉ के लिए मैंने खुद को किसी तरह संभाला, पर लता मॉ नहीं संभाल पाई। वो एक बार बीमार पड़ी तो फिर कभी ठीक नहीं हुई। उन्हें देखकर मुझे हमेशा लगता था कि वो मुझसे कुछ कहना चाहती है... पर मेरे पूछने पर हमेशा टाल जातीं। लेकिन एक दिन आखिरकार उन्होंने मुझसे अपने दिल की बात कह ही दी।"

200 साल पहले -

अल्फ़ी को अपने कस्बे वापस लौटे दो महीने हो गए थे। हेममाया के ग़म में डूबी लता की हालत दिन पर दिन बिगड़ती हुई आखिरकार अपने आखिरी पड़ाव पर आ चुकी थी।

वो एक बहुत ही बोझिल दिन था, जब अल्फ़ी आखिरी सॉसे लेती लता
के पास सिर झुकाए बैठा था। उसके सिर और चेहरे के बाल देखभाल के अभाव में बेतरतीब से बढ़ गए

थे। गोरा.. रोशन चेहरा मुरझाए हुए पत्ते की तरह पीला पड़ चुका था और जिंदगी होने के निशान भी उस पर सही तरीके से दिखाई नहीं देते थे। लता उसकी ऐसी हालत देखकर और भी तड़पकर रह जाती।

"अल्फ़ी!" अपनी कॉपती हुई आवाज में उन्होंने उसे पुकारा।

"मुझे माफ़ कर दो मॉ। जिंदगी भर सुरक्षा और खुशियों के वादे के साथ आपकी बेटी का हाथ थामा था। पर कुछ नहीं कर सका मैं। आप सभी का गुनहगार हूँ मैं। मुझे माफ़ कर दीजियेगा।" कहते हुए वो फफक-फफक कर रो पड़ा!

"अल्फ़ी! एक बात कहनी थी तुमसे।" मृत्युशैया पर लेटी लता ने हॉफते हुए कहा।

"कहिए ना मॉ!" भावुक हो आगे बढ़कर उनका हाथ थामते हुए अल्फ़ी ने कहा।

"एक बार... और... कल्परूप जाओगे तुम!" लता ने बमुश्किल कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी बुरी तरह से चौंका। वो उस जगह फिर नहीं जाना चाहता था, जिसका नाम उसकी जिंदगी में सिर्फ और सिर्फ दर्द था। मगर वो लता की बात को भी नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था।

"उस जगह! क्यों?" भावनाओं के भँवर में डूबता-उतरता अल्फ़ी बस इतना ही पूछ पाया।
"मुझे... लगता है कि... तुम... कुछ बहुत जरूरी... वहॉ छोड़.. आए हो।" लता टूटती हुई सॉसों के बीच बोली।

"कुछ! नहीं मॉ.... मैं अपना सब कुछ वहीं छोड़ आया हूँ!" अल्फ़ी का गला ना चाहते हुए भी रूंध गया था।

"नहीं अल्फ़ी! तुम... नहीं जानते। तुम्हारे.... जीने की वजह... होगी वहॉ। जाकर... उसे ढूंढो!" लता ने बहुत ही मुश्किल से कहा। उसकी सॉसे उखड़ने लगी और उन्होंने अल्फ़ी की ऊंगलियों पर अपनी उंगलियाँ कस दी थीं।

"मॉ आप शांत रहिये! आपकी तबीयत ठीक नहीं है।" अल्फ़ी ने उसकी उधड़ती सॉसों से घबराकर कहा।

"नहीं! तुम्हें... तकलीफ़.. ना हो... इसलिए... पहले नहीं कहा। पर... तुम... जाओ! माया... तुम...." और अपनी अंतिम बात खत्म किए बिना ही वो शांत हो गईं। हमेशा के लिए! अल्फ़ी अपनी ऊंगलियों पर उनकी ढीली पड़ी पकड़ से घबरा उठा।

"मॉ!" उसने कॉपती हुई आवाज में उन्हें पुकारता। मगर वो पुकार के सब दरवाजे बंद कर चुकी थीं। आज अपना परिवार पूरी तरह से खो दिया उसने। उसने उनके हाथ को बहुत ही आराम से बिस्तर पर रख दिया। बस... एक ही साल में उसकी हँसती-खिलखिलाती हुई दुनिया छिन्न-भिन्न हो गई थी और अब कुछ भी समेटने के लिए बाकी नहीं रह गया था। इस बार तो उसकी ऑखें भी नहीं भीगीं। उसने

बहुत कोशिश भी की... पर कुछ नहीं हुआ।

लता के अंतिम संस्कार के बाद वो अपने घर में ही क़ैद होकर रह गया। उसके पास जीने के लिए कोई बहाना भी तो नहीं बचा। बेमकसद सी
जिंदगी एक बोझ बनकर रह गई थी.. जिस में रह-रहकर आने वाली माया की यादें और भी इज़ाफा करती थीं।

"नहीं अल्फ़ी! तुम बुरे नहीं हो। तुम बहुत अच्छे हो और ऊपर वाला अच्छे लोगों के लिए कुछ ना कुछ अच्छा सोचकर रखता है। देखना.. वो तुम्हें भी जीने का कोई मकसद जरूर देगा। बस.. मुझसे एक वादा करो कि कभी कोई ग़लत रास्ता नहीं अपनाओगे तुम! अपने अंदर की अच्छाई को कभी भी मरने नहीं दोगे। बस... यही एक वादा! अपने साथ तुम्हारी यही अच्छाई लेकर जाना चाहती हूँ मैं। दोगे ना!"

अक्सर अनामिका की कही हुई ये बातें उसका दिल कचोचती रहती थीं। अपनी बेमकसद सी जिंदगी में ये बस उसे अपने ऊपर किसी ताने की तरह महसूस होती थीं। लता की आखिरी इच्छा थी कि वो एक बार फिर से कल्परूप जाए। कुछ खोजने! पर क्या? उसकी समझ में ये कभी भी नहीं आया और जब उसकी ये उलझन उसे हद से ज्यादा परेशान करने लगीं.. तो मन मारकर वो कल्परूप की ओर बेचैनियों से राहत की तलाश में निकल ही गया।

आज पूरे तीन महीनों के बाद वो एक बार फिर से उस जगह पर खड़ा था, जहाँ उसने हेममाया और अनामिका दोनों को ही खो दिया था। वही रात का समय और वही उसकी तन्हा जिंदगी जैसा मनहूस सन्नाटा! वो बस खड़ा हुआ उस दरवाजे को टुकुर-टुकुर देख रहा था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर उसे ढूंढना क्या है? और इसी सवाल के साथ वो ना जाने कब तक उसी तरह खड़ा रहा। उसे होश आया एक आहट से। किसी को अपने पास महसूस कर वो तेजी से पीछे पलटा और सामने जो दिखा... उसने उसके होश उड़ा दिए। सामने एडवर्ड खड़ा था।
"तुम! तुम जिंदा हो!" उसके होंठों से सवाल फिसला।

"तो तुमने क्या सोचा? एडवर्ड ऐसे ही हार मान जाएगा।" एडवर्ड ने बहुत ही सर्द आवाज में जवाब दिया।

"पर... तुम्हारे सीने पर खंज़र उतारा था मैंने।" अल्फ़ी ने बेयकीनी से कहा।

"और मरहम भी तुम ही देकर गए थे।" एडवर्ड ने कहा।

"कैसा मरहम?" अल्फ़ी ने हैरानी से पूछा।

"अंकल पीटर! बेचारे कितना चाहते थे कि मेरी साधना पूरी हो, तो उनकी ये इच्छा पूरी करने के लिए उन्हीं का खून पी लिया मैंने। बेचारे बहुत छटपटाए! गिड़गिड़ाए भी। पर... मैं तो मैं हूँ। उनका दिल निकालकर खा लिया मैंने और देखो जरा! कितना सेहतमंद तुम्हारे सामने खड़ा हूँ। अफसोस कि लोहार का वो एक वार भी खाली चला गया। वैसे... तुम्हारी हालत सही नहीं लग रही है।" एडवर्ड ने उसकी हैरानी दूर करते हुए कहा।

"तुम्हें मेरी चिंता करने की जरूरत नहीं है।" अल्फ़ी तिड़ककर बोला।

"पर करनी तो पड़ेगी। आखिर मेरे बड़े भाई हो। वैसे कुछ ढूंढ रहे हो क्या?" एडवर्ड ने मीठे लहजे में कहा।

"तुमसे मतलब! कहा ना! अपनी चिंता करो।" अल्फ़ी बुरी तरह भड़कते हुए चिल्लाया।

"अरे भड़क क्यों रहे हो? मैं तो बस ये बताना चाहता हूँ कि जो तुम ढूंढ रहे हो... वो यहाँ नहीं है।" अल्फ़ी ने बहुत ही रहस्यमई तरीके से कहा।
"क्या मतलब? क्या नहीं है?" एडवर्ड की बात ने अल्फ़ी को बुरी तरह से चौंकाया था।

"वो तो नहीं बता सकता। बस ये जान लो कि तुम्हारी माया की एक बहुत ही कीमती अमानत... जो उसने तुम्हारे लिए सहेजकर रखी थी.. उसे उस परिधि ने चुरा लिया। उसी चीज की वजह से ही तो तुम्हारी माया को मजबूरन अपनी जान देनी पड़ी। अब वो कहाँ है... इस सवाल का जवाब तो बस परिधि के पास है और वो अनामिका के साथ भविष्य में ना जाने कहाँ चली गई? अफसोस कि... तुम्हें अपनी माया की वो अमानत भी हासिल नहीं हो सकेगी और ये सोच-सोचकर तुम अपनी आखिरी साँस तक तिल-तिल कर मरना।" एडवर्ड ने खुलासा करते हुए कहा।

"मुझे बहकाओ मत! ऐसा कुछ भी नहीं है।" अल्फ़ी ने उसकी बात काटी थी।

"तो मत मानो! मेरा क्या जाता है? वैसे भी तुम्हारे लिए यही मानना अच्छा है क्योंकि तुम चाहकर भी अपनी हेममाया की अमानत पा नहीं सकते। उसे पाने के लिए तुम्हें सदियों लंबा जीवन चाहिए होगा क्योंकि अनामिका आई कहाँ से थी.. ये किसी को भी नहीं पता। पर... मैं उनके पीछे जा सकता हूँ क्योंकि मैंने पिशाच की साधना की है। तो मैं तुमसे वादा करता हूँ कि जब भी... जहाँ भी वो अनामिका मुझे मिलेगी, उसे बड़ी बेदर्दी से मारूंगा और रही बात अमानत की... तो अमानत में ख़यानत करना मुझे बहुत पसन्द है। इन सबसे हेममाया की आत्मा जरूर दुखी होगी" एडवर्ड अपने दाँत दिखाता हुआ बहुत ही कमीनगी से बोला और फिर एक ऊँची छलांग लगाता हुआ आसमान में खो गया। अल्फ़ी मुँह फाड़े बस उसे देखता रह गया।

"हेममाया की अमानत! लता माँ ने भी ऐसा ही कुछ कहा था। पर उन्हें
कैसे पता चला?" अल्फ़ी बुरी तरह से बेचैन होते हुए बोला। अभी वो ये सोच ही रहा था कि तभी उसे एडवर्ड की धमकी याद आ गई और वो याद आते ही अल्फ़ी बुरी तरह से फड़फड़ाया था।

"परिधि! तुमने ये ठीक नहीं किया। तुम्हारी वजह से मेरी माया इन सबमें फँसी और तुम्हारी वजह से ही उसे अपनी जान देनी पड़ी। मैं तुम्हें कभी माफ नहीं करूंगा। तुम्हें अपनी हर गलती की सजा मिलेगी और तुम्हें तुम्हारी वो सजा मैं दूंगा। तुम भविष्य के किसी सभी कोने में जाकर छिपी हो.. मैं तुम्हें ढूंढ निकालूंगा और अपनी अमानत मैं तुमसे वापस लेकर रहूंगा। बस इंतजार करना!"

वर्तमान में -

"तो तुम्हारा कहना है कि उस एडवर्ड ने अपने ही मामा को खा लिया, ताकि जिंदा रह सके।" मुकुल ने सदमे भरी आवाज में कहा।

"हॉ! पर उस समय उसकी साधना खंडित होने की वजह से वो शापित हो चुका है। उसे लंबा जीवन तो मिला है... पर किस्तों में। वो दस सालों तक सोता है और फिर दस दिनों के लिए अपनी साधना की पूर्ति के लिए जागता है। जब तक उसकी साधना पूरी नहीं होती वो ऐसे ही शापित रहेगा।" अल्फ़ी ने एक आह भरते हुए बताया।

"तो क्या वो पिछले 200 सालों में भी सफल नहीं हो सका है? ऐसी
कौन सी वजह हो सकती है कि वो अपनी साधना पूरी नहीं कर सका?" आशुतोष ने सवाल किया।

"उसे अपनी साधना पूरी करने के लिए अपना ही वंश.. अपना ही खून चाहिए। वो मेरे साथ ऐसा कुछ करता... उससे पहले ही वो अपनी गहरी नींद में चला गया और जब तक वो वापस लौटा... मैं अपनी साधना पूरी कर पूर्ण पिशाच बन चुका था। वो उसी बलि की तलाश में अब तक भटक रहा है।" अल्फ़ी ने कहा।

"पर वो परिधि और अनामिका के पीछे क्यों पड़ा है? और... उसे ये कैसे पता चला कि अनामिका और परिधि उसे कब मिलेंगी? कहॉ मिलेंगी?" चैतन्य ने एक के बाद एक सवाल दागते हुए कहा।

"हम दोनों का ही अनुमान था कि तुम दोनों चाहे समयद्वार से किसी भी समय से आए हो, कल्प रूप के आसपास ही रहे होंगे। इसलिए हम दोनों ने ही हमेशा अपनी नज़रें इस पूरे इलाके में जमाए रखीं।" अल्फ़ी बोला।

"और तुम्हें ऐसा क्यों लगा?" चैतन्य ने पूछा।

"क्योंकि तुम दोनों समय यात्रा के समय इसी जगह रहो, इसका इंतजाम मैंने ही किया था।" अल्फ़ी ने रहस्य खोलते हुए कहा।

"क्या? पर कैसे?" एक साथ कई आवाजें आई।

"ये मैं नहीं बता सकता।" अल्फ़ी ने साफ इंकार करते हुए कहा, जिससे चैतन्य कुढ़कर रह गया।

"पर उसे परिधि क्यों चाहिए? वो परिधि की बलि तो दे नहीं सकता। तो फिर...?" अंकित ने सवाल किया।
" वो परिधि को मुझसे दूर रखना चाहता है। दरअसल परिधि ही वो रहस्य जानती है जिसने समय के जाल में हम सबको उलझा रखा है और आज ये जवाब मुझे चाहिए। उसने मेरी माया की कौन सी कीमती चीज चुराई? मुझे वो चाहिए। मैं तो कुछ दिन पहले भी इस सवाल का जवाब लेने परिधि के कमरे में गया था, पर चैतन्य के आ जाने से मुझे वहॉ से निकलना पड़ा और मेरा ये सवाल... सवाल ही रह गया।" (भाग- 14)", अल्फ़ी ने तड़पकर कहा।

और ये सुनते ही सभी की नज़रें बिस्तर पर अचेत लेटी परिधि की ओरगई।

"पर इसे तो होश ही नहीं आ रहा है और आया भी तो... ये तो सब कुछ भूल चुकी है। ये तुम्हें क्या बताएगी?" वरुण ने परिधि की ओर देखकर कहा।

"बताएगी! अब ये सबकुछ बताएगी।" अल्फ़ी ने पूरे विश्वास के साथ कहा और फिर अपना एक हाथ बढ़कर उसे एक झटका दिया और बेसुध पड़ी परिधि एक गहरी साँस लेते हुए उठ बैठी। वो इतनी जोर से सँसे ले रही थी, जैसे की मीलों दूर भागकर आई हो। होश में आते ही जब सामने उसकी नज़र गई, तो अल्फ़ी का चेहरा ठीक अपनी आँखों के सामने पाया। उसकी आँखों में बेहिसाब, गुस्सा, दर्द और लाचारी भरी हुई थी।

"अल्फ़ी!" परिधि ने वापस आई यादों के साथ कहा।

"मेरी माया की अमानत!" अल्फ़ी ने जैसे तकादा किया था।

"मेरे पास नहीं है।" परिधि ने बेबसी से कहा।

"झूठ!" अल्फ़ी ने दाँत पीसते हुए कहा।
"सच! मुझसे.... खो गई... वो!" परिधि ने काँपती हुई आवाज में कहा।

"खो गई! क्या खो गई?" अल्फ़ी ने सवाल के साथ अपनी आँखें सिकोड़ी।

और ये सुनते ही परिधि के चेहरे का सारा रंग उड़ गया और डर का काला रंग उसके चेहरे को स्याह करने लगा। पसीना उसके माथे पर झिलमिलाने लगा और उसने अपने सूखते गले को बड़ी मुश्किल से तर किया। उसके लफ्ज़ हलक़ में कहीं अटक से गए। फिर भी उसने बहुत हिम्मत करके कहा,

"तुम्हारी..... बेटी!"

कमरे में मौत सा सन्नाटा फैल गया।

कमरे में फैला सन्नाटा सभी को चुभ रहा था, मगर कोई भी इस सन्नाटे को तोड़ना नहीं चाहता था। सभी की नज़रें अल्फ़ी पर ही थीं, जिस पर अभी-अभी एक और बम फूटा था। परिधि अपनी सूखते होंठों पर बार-बार ज़बान फेरते हुए सामने बैठे हुए अल्फ़ी को देख रही थी, जो इतनी बड़ी बात सुनने के बाद भी चुपचाप बैठा उसे अपनी नजरों से जाँच रहा था। इतना बड़ा खुलासा होने के बाद सभी को अल्फ़ी से इस तरह की प्रतिक्रिया की तो हर्गिज उम्मीद नहीं थी। उन्हें लगा था कि अल्फ़ी इस खबर को

सुनने के बाद या तो बहुत खुश होगा.. या फिर... बहुत नाराज़। पर वो तो दोनों ही नहीं था। वो बस परिधि को एकटक घूरे जा रहा था।

"अ.. अल्फ़ी!" परिधि ने ही इस मौन को तोड़ने की पहल की।

"तुम्हें तो सचमुच आराम की जरूरत है। लग रहा है... दिमाग हिल गया है तुम्हारा।" अल्फ़ी ने परिधि को देखते हुए अफसोस से कहा और उसके सामने से हट गया। उसकी बात सुनकर सभी को हैरत का तेज झटका लगा था।

"अल्फ़ी! लग रहा है कि तुमने सुना नहीं... कि परिधि ने क्या कहा!" अपनी ऑखों में हैरानी भरे भाव लिए अनामिका ने अल्फ़ी को जोर देकर कहा।
"सुना मैंने! अच्छी तरह से सुना! इसीलिए कह रहा हूँ कि इसका दिमाग हिल गया है... क्योंकि ऐसा हो ही नहीं सकता।" अल्फ़ी ने तुरंत ही अनामिका की बात काटी।

अब तो उस कमरे में मौजूद सभी लोगों की हैरानी और भी बढ़ गई। खुशियों के लिए तरसते उस शख्स को इस खबर से ना तो खुशी हुई और ना ही हैरानी। बल्कि वो तो इस खबर को ही नकार रहा था।

"और क्यों नहीं हो सकता भला?" वरूण ने अपना चश्मा नाक पर ठीक करते हुए पूछा।

"तुम और माया पति-पत्नी थे। साथ में खुश थे। तो फिर क्यों नहीं हो सकता ये?" अंकित ने पूछा।

"क्योंकि मैं एक पिशाच हूँ और पिशाच तुम सबकी तरह सामान्य रूप से संतान पैदा नहीं कर सकते।" अल्फ़ी ने वरूण के सवाल का जवाब देते हुए कहा।

"संतान पैदा नहीं कर सकते... तो तुम और एडवर्ड कैसे पैदा हुए?" इस बार सवाल आशुतोष ने किया।

"वो सही कह रहा है। पिशाच संतान के लिए एक विशेष दवा का सेवन करते हैं। अल्फ़ी और एडवर्ड इसी तरह पैदा हुए थे।" जवाब चैतन्य ने दिया।

"और जब मैंने ऐसी कोई दवा खाई ही नहीं, तो फिर मेरी बेटी होने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता।" अल्फ़ी ने परिधि पर सख़्त नज़र डालते हुए उतने ही सख़्त लहज़े में कहा।
अल्फ़ी की बात सुनकर अब सभी की नज़रें परिधि की ओर घूमी... जहॉ उसकी ऑखों में एक दर्द हिलोरें मार रहा था। उसी दर्द के साथ उसने अल्फ़ी की ओर देखा, जो इतनी बड़ी बात से इंकार कर रहा था।

"मैं... पूरी तरह से होश में हूँ!" परिधि ने अपनी आवाज को मजबूत बनाते हुए कहा।

परिधि की बात सुनते ही सभी नज़रें एक साथ अल्फ़ी की ओर उठी, जिसके जबड़े अब परिधि की ढिठाई पर कस गए थे।

"तुम्हारी बातों से तो बिल्कुल नहीं लग रहा है। चलो! मान लें... हालांकि ऐसा हो ही नहीं सकता.. फिर भी.. अगर वो प्रेग्नेंट थीं, तो उन चार पत्रों में उसने इसका जिक्र क्यों नहीं किया, जो उसने मुझे लिखे थे।" अल्फ़ी ने एक पुख़्ता सवाल उठाया।

अल्फ़ी के सवाल के साथ ही सभी की निगाहें भी परिधि तक पहुँची।

"क्योंकि माया ने उसे मना किया था। उसने उससे कहा कि अगर ग़लती से भी वो पत्र एडवर्ड या उसके सहायकों के हाथ लग गए तो उसकी संतान पर खतरा हो सकता है। पहले से डरी हुई हेममाया ने उसकी बात मान ली क्योंकि वो एडवर्ड से मिल चुकी थी। यही वजह है कि उसने अपनी सलामती के अलावा कभी कुछ और ख़त में नहीं लिखा।" परिधि ने जवाब दिया।

परिधि के चुप होते ही सबने अल्फ़ी की ओर देखा, जिसके चेहरे की कसावट में कोई भी ढील नहीं आई थी, जिससे पता चल रहा था कि उसे अब भी परिधि की बातों पर यकीन नहीं आया था।

"सच बात तो यही है कि उस बच्ची की वजह से ही हेममाया को सात
महीने तक जीवित रखा गया था। माया तो उसे पहले ही दिन मार देती। पर एडवर्ड को वो बच्चा चाहिए था। इसलिए पूरे सात महीने तक मैंने ही उसकी देखभाल की थी।" परिधि ने अल्फ़ी की ओर झिझक भरी कुछ झुकी कुछ उठी पलकों के साथ कहा।

और,... एडवर्ड के जिक्र के साथ ही अल्फ़ी के पूरे शरीर में एक सिहरन सी दौड़ गई। कुछ ग़लत होने का अहसास उसे अंदर तक झिंझोड़ गया था। वो तेजी से परिधि की ओर लपका और उसे कंधों से पकड़कर उसकी ऑखों में झांकते हुए बोला, "एडवर्ड! एडवर्ड ने तो मेरी माया के साथ कुछ..."

अल्फ़ी की बात पूरी होने से पहले ही परिधि ने अपना सिर हिलाते हुए उसे टोककर कहा, "नहीं! नहीं! वो तुम्हारी ही औलाद थी। जब हेममाया यहॉ आई थी... दो महीने के गर्भ से थी। वो बहुत ज्यादा कमजोर थी और पिछले कुछ समय से तुम सबकी जिंदगी में जो भी परेशानियॉ आई... उसकी वजह से भी उसे भी इसका अंदाजा या अहसास नहीं हुआ था। अपने अंदर होने वाले बदलावों को वो अपनी कमजोरी और बुरे हालात से जोड़े हुए थी। अपनी उसी संतान की सुरक्षा के लिए ही हेममाया ने शुरू से आखिरी तक माया की हर नाजायज मांग मानी थी। मेरे इन्हीं हाथों में जन्म लिया था तुम्हारी बेटी ने।" परिधि ने भावुक होकर अपने हाथों की देखते हुए अपनी बात खत्म की।

परिधि की बात सुनकर अल्फ़ी ने उसकी ऑखों में झांककर देखा। वहॉ कोई बनावट या बेईमानी नहीं थी। मतलब कि वो सच कह रही थी। और... पहली बार अल्फ़ी के पैर लड़खड़ाए। वो परिधि के कंधों को छोड़कर उन्हीं लड़खड़ाते हुए कदमों से दूर हुआ था। उसकी ऐसी हालत देखकर चैतन्य तेजी से उसके पास आया और उसे संभाला। वो अब गहरी-गहरी साँसें लेने लगा था। दरअसल उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि जो भी हुआ.. आखिर हुआ कैसे?
"तुम ठीक हो?" चैतन्य ने उसे देखते हुए फिक्रमंदी से पूछा।

"नहीं! मैं ठीक नहीं हूँ। क्या मैं हो सकता हूँ?" अल्फ़ी ने चैतन्य पर एक चिढ़ भरी नज़र डालते हुए कहा।

चैतन्य ने एक परेशान नज़र उस पर डाली और फिर सबकी ओर नज़रें घुमाई। सबकी ऑखों में ही अफसोस भरा हुआ था। उनके सामने खड़ा वो शख़्स पिछले 200 सालों से अपने दिल पर लगे जख़्मों के मरहम की तलाश में था, जो पूरी तो नहीं हुई... ऊपर से एक और चोट उन जख़्मों को कुरेदने के लिए आ गया और बिना किसी शक ये चोट हर एक चोट से गहरी थी, जिसका भरना नामुमकिन ही था।

"अल्फ़ी संभालो खुद को!" चैतन्य ने हौसला देते हुए कहा, जिसकी ऑखों में दुख का पानी उतर आया था।

"मुझे पता है कि माया बच्चे चाहती थी। पर कैसे? आखिर कैसे हुआ ये?" अल्फ़ी ने सामने पड़ी कुर्सी की पुश्त पर अपनी उंगलियाँ कसते हुए कहा।

"ये मैं नहीं जानती। बस इतना जानती हूँ कि वो बहुत ज्यादा खुश थी। वो जल्द से जल्द तुमसे मिलना चाहती थी। तुम्हें ये खुशखबरी देना चाहती थी। हम दोनों को ही लगने लगा था कि अब तुम दोनों की किस्मत में खुशियॉ लौट आई हैं... जब तक कि..." कहते-कहते परिधि रूक गई।

"जब तक कि.. " अनामिका ने ऑखें सिकोड़ कर पूछा।

हेममाया को माया की कैद में एक महीना हुआ था। इस बीच वो दिव्याक्षि की दी हुई किताब से बहुत कुछ सीख गई थी। वो सच में बहुत तेज और हुनरमंद थी। बस... उसी समय रोमा और मार्गरेट के मुँह से ये फिसल गया
कि अब वो कभी भी वहॉ से बाहर नहीं निकल सकेगी। हालांकि उन्होंने बात संभालने की कोशिश की, पर हेममाया के अंदर एक डर ने घर कर लिया था। उसने जब मुझसे पूछा, तो मैंने भी अनभिज्ञता जताई क्योंकि मैं सचमुच कुछ भी नहीं जानती थी। मेरा काम बस हेममाया को कल्परूप तक लाना ही था। मगर उसके गर्भवती होने की वजह से ही माया ने एडवर्ड के कहने पर मुझे उसकी देखभाल में लगाया था और मैं इन सबका हिस्सा बन गई। मैं जानती थी कि माया और एडवर्ड के इरादे सही नहीं थे, इसलिए मैंने ही हेममाया को छलद्वार बनाने की सलाह दी थी और उसने वो बनाया भी। हम दोनों को ही लगता था कि इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं था। मगर वो उस छलद्वार का इस्तेमाल कर पाती, उससे पहले ही वो किताब माया के हाथ लग गई और फिर उसने हेममाया के पैरों में शक्तिनियंत्रक बेड़ियॉ डाल दीं और वो हमेशा के लिए कैद होकर रह गई।" परिधि कहती गई।

"छलद्वार! पर वहॉ तो समयद्वार था।" अनामिका ने चिहुंक कर कहा।

"अब ये दोनों क्या बला हैं?" वरूण ने परिधि और अनामिका की ओर बारी-बारी से देखते हुए कहा।

"ये समझो कि छलद्वार एक जगह से दूसरे जगह जाने का दरवाजा है। जैसे तुम हम सबको बसेरे से लेकर आए थे... जब उस पिशाच ने अंकल पर हमला कर दिया था। याद है (भाग - 27)।" अनामिका ने सबको समझाते हुए कहा।

"हॉ! याद है!" जवाब अंकित ने दिया।

"उसी तरह समय द्वार वो दरवाजा है जिससे हम एक समय से दूसरे समय में जा सकते हैं। मतलब कि टाइम ट्रैवल!" अनामिका ने आगे समझाते हुए कहा।
"तो क्या तुम दोनों भी समयद्वार से 200 साल पीछे चले गए थे और समय द्वार का इस्तेमाल करके ही वापस आए।" वरूण ने चैतन्य और अनामिका दोनों की ओर इशारा करते हुए कहा।

"तो वो द्वार तुम्हारे कमरे में क्यों खुला?" इस बार सवाल चुपचाप बैठी हुई सृष्टि ने किया।

"क्योंकि हेममाया ने माया से कहा था कि उन्हें रोकने के लिए वो वापस आएगी। वो द्वार हेममाया ने बनाया था, जो कि मैं हूँ! इसलिए वो द्वार मेरे पास खुला, ताकि मैं वहाँ जा सकूं।" अनामिका ने अपनी ही धुन में कहा और फिर अचानक अल्फ़ी का ध्यान आते ही वो चुप पड़ी गई।

"अगर ऐसी बात है तो... वो द्वार पहले क्यों नहीं खुला? तुम तो हमेशा से ही वही हो।" अंकित ने एक सही सवाल किया।

'क्योंकि समय द्वार को खोलने के लिए जल-रक्षक के साथ वायु-रक्षक की भी जरूरत होती है और तुम सब जानते हो कि चैतन्य को अभी-अभी ही नियतिपात्र ने वायु-रक्षक चुना है। उससे पहले कोई वायु-रक्षक नहीं था। उस समय हम साथ थे.. और ऐसी परिस्थितियाँ बन गईं कि वो समय द्वार खुल गया।" अनामिका ने सबके मन में उठे इस सवाल का जवाब देते हुए कहा।

"मुझे एक बात समझ में आ गई कि... एक जल-रक्षक जब अकेले द्वार बनाती है, तो वो छलद्वार होता है, जबकि जल-रक्षक और वायु-रक्षक मिलकर उसी छलद्वार को समयद्वार में बदल सकते हैं। एम आई राइट?" अंकित ने सारे विवरणों को समेटते हुए कहा।

"मुझे भी यही लग रहा है।" अनामिका ने कहा।
"अगर ऐसी बात है तो अतीत में हम दोनों ने ही कई बार छलद्वार का प्रयोग एक साथ किया था। उस समय उसने समय द्वार की तरह ही बर्ताव क्यों नहीं किया?" चैतन्य ने इस थ्योरी पर आपत्ति उठाई।

"हो सकता है कि जल रक्षक और वायु रक्षक ये डिसाइड कर सकते हैं कि वो छलद्वार की तरह काम करे या फिर समय द्वार की तरह। मतलब कि वो दोनों उस द्वार को जैसा आदेश देंगे वो वैसा ही व्यवहार करेगा।" आशुतोष ने अपना दिमाग लगाते हुए कहा।

"हम्म! शायद आप सही कह रहे हैं। अतीत में जब हमने उन द्वारों का इस्तेमाल किया तब हमें छलद्वारों की ही जरूरत थी जबकि वापस आने के लिए हमें समयद्वार की जरूरत थी। हमें वो सारे द्वार जिस रूप में इस्तेमाल करने थे वो उन्हीं रूपों में हमारे सामने आए।" चैतन्य ने आशुतोष की थ्योरी पर हामी भरते हुए कहा। बाकी सब ने भी इस पर अपनी हामी की मुहर लगाई।

"पर एक सवाल तो अभी भी कायम है। परिधि ने कहा कि तुम दोनों के सक्रिय करने से पहले ही समय द्वार खुल चुका था। हेममाया जल रक्षक थी। वो अकेले छल द्वार तो बना सकती थी, पर वायु-रक्षक के बिना वो समय द्वार नहीं बना सकती थी। तो फिर तुम्हारे पहुँचने से पहले वो समय द्वार सक्रिय कैसे हुआ?" अल्फ़ी ने चिर परिचित सवाल एक बार फिर से उठाया।

"सबसे पहले तो परिधि तुम ये बताओ कि तुम्हें कैसे पता चला कि वो समय द्वार था। वह छलद्वार भी तो हो सकता है ना!" वरुण ने एक और सवाल उठाया।

"क्योंकि वो द्वार एक बार नहीं दो बार खुला था। पहली बार तब... जब
रोमा और मार्गरेट की गलती की वजह से हेममाया की आत्मा वाला जीवपात्र उसके अंदर चला गया था। मैं उसे पकड़ने के लिए उस द्वार के अंदर भी गई थी। लेकिन जब मैंने वहाँ कुछ बहुत ही खतरनाक कबीले वालों को देखा, तो मैं उनके डर से वापस आ गई थी। दूसरी बार वो दरवाजा तब खुला था, जब मैं हेममाया की बेटी को बचाने की तरकीब सोचते हुए अनजाने में उस द्वार से टकरा गई और ना जाने कैसे वो द्वार खुल गया। उस समय मुझे उस बच्ची को बचाने का और कोई तरीका समझ नहीं आया,

इसलिए मैं उस द्वार के अंदर चली गई। मगर इस बार उस द्वार के अंदर जाने पर मुझे ऊपर की ओर जाती हुई सीढ़ियाँ दिखाई दीं, जो कि पिछली बार नहीं थीं। मैं बिना कुछ सोचे समझे उन सीढ़ियों में चढ़ गई और फिर थक कर जब रुकी तो सामने एक दरवाजा खुला। उस दरवाजे को खोलकर जब मैं आगे बढ़ी तो मैंने अपने आपको ठीक उसी जगह पाया जहाँ मैं पिछली बार गई थी। मगर इस बार वह जगह कुछ अलग सी लग रही थी। वहाँ की हवा... वहाँ का माहौल... हर चीज अलग सी थी। पहले तो उस अंतर को मैं समझ नहीं पाई, मगर बाद में मुझे समझ आया कि वो जगह थी तो वही, पर मेरे समय से आगे की क्योंकि पिछली बार मैंने जंगल को जितना घना पाया था वो जंगल अब उतना घना दिखाई नहीं दे रहा था। और मैं समझ गई कि मैं समय की सीढ़ियां चढ़कर आगे के समय में आ चुकी हूँ। मेरे लिए वापस जाना जरूरी था। इसलिए उसे बच्ची को वहीं छोड़कर मैं दरवाजे से वापस आ गई। मुझे लगा था कि कुछ समय के लिए वह बच्ची वहाँ सुरक्षित रहेगी। अल्फी से मिलते ही मैं उसे उस बच्ची के बारे में बता दूंगी और फिर उसके साथ उसी जगह पर जाकर उसे वापस ले आऊंगी। पर मैंने जो सोचा था वैसा कुछ भी नहीं हुआ। ऊपर से मैं ये भी भूल गई कि मैं कितनी सीढ़ियाँ ऊपर चढ़कर गई थी। इसलिए मैं कह रही हूँ कि मुझे याद नहीं कि वो बच्ची कहाँ है? मैंने उसे खो दिया।" अपनी बात खत्म कर परिधि हथेलियों से अपना चेहरा छुपा फफक-फफक कर रोने लगी।

"तुम समयद्वार का इस्तेमाल कैसे कर रही थी?" अनामिका ने सवाल
किया।

"हेममाया ने अपनी अंगूठी दी थी मुझे इस सहमति के साथ कि जब तक वो अंगूठी मेरे पास रहेगी, मैं उस द्वार का प्रयोग उसी की तरह कर सकती हूँ।" परिधि ने अपने सीधे हाथ में पड़ी अंगूठी दिखाते हुए कहा, जिसे अल्फ़ी ने नम ऑखों से पहचान लिया था।

"एक मिनट परिधि! तुमने ये भी कहा कि उस द्वार ने पहले छलद्वार की तरह व्यवहार किया था और बाद में समयद्वार की तरह।" अनामिका ने कहा।

"हाँ!" सुबकती हुई परिधि ने कहा।

"और क्या... दूसरी बार तुम्हारे हाथ में हेममाया की बेटी थी?" अनामिका ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए सवाल किया।

"हाँ!" परिधि ने अपनी नाक सुड़कते हुए कहा।

"हेममाया की बेटी का जन्म किस तारीख को हुआ था?" अनामिका का सवाल बहुत ही संजीदगी लिए हुए था।

"उसकी मौत से कुछ दिन पहले ही। 16 जून हाँ... 16 जून!" परिधि ने अच्छी तरह याद कर अपना चेहरा हथेलियों से रगड़ते हुए कहा।

और ये सुनकर अनामिका, आशुतोष की ओर पलटी।

"आशुतोष जी!"

"16 जून यानि कि... मिथुन राशि। वायु-तत्व!" आशुतोष ने हिसाब

लगाते हुए कहा।

और इसी के साथ वो रहस्य भी खुल गया जो इतने दिनों से सभी को परेशान कर रहा था। हेममाया के बनाए द्वार को जिस वायु-शक्ति ने सक्रिय किया था... वो कोई और नहीं अल्फी और हेममाया की बेटी थी, जो अब समय की धारा में खो चुकी थी।

अल्फ़ी के पैर अब इतना कॉपने लगे थे कि उसके लिए खड़ा रहना मुश्किल हो गया था। चैतन्य ने उसकी हालत देखकर उसे कुर्सी पर बैठाया। एक बार फिर से कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया था। अल्फ़ी ने सिर झुकाकर अपने बाल मुट्ठियों में भींच लिए। वो अतीत के पन्नों में वो पन्ना ढूंढने लगा, जहॉ ऐसी किसी गुंजाइश का जिक्र रहा हो और एक पन्ने पर जाकर उसकी याद ठहर गई।

200 साल पहले -
हेममाया के कल्परूप जाने से दो महीने पहले-

"अल्फ़ी!" जरूरी कागज़ों पर झुके हुए अल्फ़ी को हेममाया ने पुकारा था।

"हॉ! क्या हुआ?" अल्फ़ी ने उन कागजों पर झुके हुए ही कहा।

"ओह्हो अल्फ़ी! कल छुट्टी है। कल ये काम कर लेना! पहले मेरी बात सुनो।" हेममाया ने नाराज होते हुए उसके सामने रखे हुए कागजों को एक
ओर हटा दिया।

"अरे! क्या कर रही हो? जरूरी कागज हैं ये!" अल्फ़ी ने उन कागजों को सही करते हुए झुंझलाकर कहा।

"मेरी बात भी जरूरी है।" हेममाया ने नाक चढ़ाकर कहा।

"हॉ तो कहो ना! सुन रहा हूँ मैं!" अल्फ़ी ने एक नज़र उस पर डालते हुए कहा।

"वो दरअसल... एक बात थी मेरे दिल में! बोलो तो कहूं!" हेममाया बोली।

अल्फ़ी ने एक तिरछी नज़र उस पर डाली और बोला , "वो तो मैं मना करूंगा, तब भी तुम बोलोगी ही ना!"

उसकी बात सुनकर हेममाया ने मुँह बनाया और फिर बोलने लगी, "दरअसल कुछ दिन पहले.. मैं और मॉ बाजार गए थे। वहॉ परचून की दुकान पर कुसुम की मॉ मिली थी।"

"कौन कुसुम?" अल्फ़ी ने अपने बिखरे कागजों में ही उलझे हुए कहा।

"हरि काका की बेटी! जिसकी पिछले महीने शादी हुई थी।" हेममाया ने उसे याद दिलाते हुए कहा।

"अच्छा वो! तो क्या हुआ?" अल्फ़ी ने बहुत ही उकताई हुई आवाज में कहा। वो अपना जरूरी काम छोड़कर औरतों से जुड़ी बातें सुनने के मूड में बिल्कुल भी नहीं था।

"वो.. दरअसल ... कुसुम ना.. वो ना.... मॉ बनने वाली है।" हेममाया ने
बहुत ही मुश्किल से कहा, जिस पर अल्फ़ी की ऑखें उसकी ओर उठी।

"हॉ तो!" अल्फ़ी ने सपाट लहजे में पूछा।

और उसकी बात सुनकर हेममाया बुरी तरह से चिढ़ी थी।

"क्या मतलब... हॉ तो!" उसी चिढ़े हुए अंदाज में हेममाया ने कहा।

"अरे बाबा! वो प्रेग्नेंट है.. तो मैं क्या करूं? जो करेगा उसका पति करेगा और अब... तुम अपने पति को उसका काम करने दो।" अल्फ़ी ने थोड़ा झल्लाते हुए कहा।

"वही तो प्रॉब्लम है। उसे जो करना चाहिए... वो करता ही नहीं।" हेममाया ने भी झुंझलाते हुए कहा।

उसकी बातें सुनकर अब तो अल्फ़ी को काम कर पाना मुश्किल ही लगने लगा। उसने अपने काम को एक ओर करके हेममाया को अपने सामने बैठाया और उसके दोनों हाथ पकड़कर बोला, "क्या हुआ? क्या प्रॉब्लम है? साफ-साफ बोलो!"

"प्रॉब्लम ये है कि वो खबर सुनने के बाद तुमने मॉ का बुझा हुआ चेहरा नहीं देखा... पर मैंने देखा था। अल्फ़ी! हमारी शादी को तीन महीने हो गए हैं।" हेममाया ने बुझी हुई सी आवाज़ में कहा।

"ओह! तो ये बात है। माई गॉड माया! प्लीज़! दूसरों के लिए अपनी जरूरतें और खुशियॉ तय मत किया करो। वो जब हमारे नसीब में होंगी.. हमें मिल जाऍगी। फिलहाल... अभी जो मिला है... उसी में खुश रहो। ठीक है!" अल्फ़ी ने एक बार फिर माया को समझाया।
"तो क्या तुम ऐसा नहीं चाहते?" हेममाया ने उसकी ऑखों में झांकते हुए पूछा।

"चाहता हूँ! क्यों नहीं चाहूंगा?" अल्फ़ी ने भी उसकी चाहत पर मुहर लगाते हुए कहा।

"सच!" हेममाया खुशी से उछली।

"मुच!" अल्फ़ी ने भी अपना प्यार जताया।

"मैं अभी आई।" कहते हुए वो कमरे से भागी।

"पगली! लग रहा है मॉ की बातें भूल गई।" अल्फ़ी ने सिर हिलाते हुए मुस्कुरा कर कहा। वो एक बार फिर अपने काम की ओर मुड़ने ही लगा था कि तभी... ऑखों के सामने दूध का गिलास पाकर उसने अपना सिर उठाकर मुस्कुराती हुई हेममाया को देखा।

"पियो इसे!" हेममाया ने कहा, जिसपर अल्फ़ी ने ऑखों से सवाल किया। हेममाया ने भी अपनी ऑखों के इशारे से उसे फिर से दूध पीने के लिए कहा। अल्फ़ी को दूध बिल्कुल पसंद नहीं था, पर हेममाया से बहस से बचने के लिए उसने चुपचाप मन मारकर वो पी लिया। उससे गिलास लेकर एक तरफ रखने के बाद वो उसकी गोद में जाकर बैठ गई।

"अरे! अब ये क्या है?" अल्फ़ी ने चौंककर कहा।

"तुम्हें समझा रही हूँ कि कुछ पाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है।" हेममाया ने उसे बहकी निगाहों से देखते हुए कहा।

"ओह! लगता है कि आज मेरा काम करना मुश्किल ही है।" अल्फ़ी ने
अपना सिर हिलाते हुए शरारत से कहा।

"मुश्किल क्यों है? बस काम समय और जगह देखकर करना चाहिए।" हेममाया ने भी उसके गले में अपनी बांहें डालते हुए कहा।

"सॉरी मि. हेनरी! आपको वेट करना पड़ेगा। घर में तो... घर के बॉस की चलेगी। और आप... बताइए जरा कैसी सेवा करें हम आपकी?" अल्फ़ी ने हेममाया को अपनी बाहों में उठाया और बेड की तरफ बढ़ते हुए बोला। उसकी बात सुनकर हेममाया खुलकर खिलखिलाई थी।

अल्फ़ी ने हेममाया का दिल रख लिया, लेकिन उसके सोने के बाद वो फिर उठा और अपने अधूरे काम को पूरा करने के बाद ही वो सोने के लिए गया। अगले दिन उसके उठने में देर होने पर माया उसे उठाने गई। फिर दोनों की छीना-झपटी में पानी का गिलास गिर गया और फिर उसके बाद वो रहस्य खुला जिसने मीना का चैन और सुकून खत्म कर दिया था(भाग - 91)। उन सब की जिंदगी का यही आखिरी सुकून भरा दिन था। उसके बाद उन तीनों ने कभी भी अपने जीवन में चैन की सॉस नहीं ली। करीब डेढ़ महीने के बाद अपने अंदर के डर से लड़ते हुए मीना ने दम तोड़ दिया और उसके 15 दिनों बाद सुकून की तलाश में हेममाया कल्परूप की ओर चल दी थी। इसके बाद वो फिर कभी वापस नहीं लौटी।अल्फ़ी उस दिन से वापस वर्तमान में लौटा तो... उसे ये एहसास हुआ कि उसने क्या खो दिया था।

वर्तमान में
"हॉ! वो दूध! माया ने मुझे पीने के लिए दूध का गिलास दिया था। इसका मतलब कि उसने दूध में वो दवा मिलाई थी। पर ये हुआ कैसे?" अल्फी खुद में बडबडाते हुए बोला।

"क्या कैसे हुआ?" अनामिका ने सवाल किया।

"वो दवा कोई आम दवा नहीं है जो कहीं भी... किसी भी.. वैद्य के यहॉ मिल जाए। वो बहुत ही खास

दवा है और सवाल ये उठता है कि माया को वो दवा कहॉ से मिली? किसने दी?" अल्फ़ी ने सवाल उठाया।

अब ये एक नया सवाल उन सबके सामने मुँह बाये खड़ा हो गया था, जिसका जवाब भी एक तूफान ही लाने वाला था। अल्फ़ी तो पहले हेममाया... और बाद में अकेले ही... अपनी जिंदगी में खुशियों की तलाश में निकला था मगर उसकी सारी खुशियॉ बुरी नजरों के साए में आकर अधूरी ही रह गई थीं।

"वो दवा कोई आम दवा नहीं है जो कहीं भी... किसी भी.. वैद्य के यहॉ मिल जाए। वो बहुत ही खास दवा है और सवाल ये उठता है कि माया को वो दवा कहॉ से मिली? किसने दी?"

अपने ही सवालों में उलझा हुआ अल्फ़ी बहुत ही थका हुआ दिखाई दे रहा था। उसकी किस्मत उसके साथ जितना क्रूर खेल पिछले 200 सालों से खेल रही थी, अब वो उससे थक चुका था। इसलिए इतनी बड़ी बात सुनकर भी वो बस एक आह भरकर ही रह गया।

"हो सकता है कि... तुम्हारी मॉ ने ही दिया हो।" वरूण ने सबसे करीबी जवाब देते हुए कहा।

"नहीं! अगर उन्होंने दिया होता, तो मुझे ज़रूर बताती।" अल्फ़ी ने तुरंत ही उसकी बात काटी।

"तो फिर तुम्हारी लता मॉ ने दिया होगा। शायद उन्हें पहले से पता होगा हेममाया की प्रेगनेंसी के बारे में। आखिर उन्होंने ही तुम्हें कल्परूप वापस भेजा था। उनकी बातों से तो यही लगा।" अंकित ने आगे बढ़कर कहा।
"नहीं! पहली बात ये कि... उनके पास भला वो दवा कहॉ से आएगी? और दूसरी बात ये... अगर उन्हें माया के गर्भवती होने का पता होता... तो क्या वो उसे अकेले कल्परूप जाने देती? वहॉ उसे तीन महीने की फँसे रहने देती? वो पहले ही दिन मुझे ना बताती! नहीं! मुझे पूरा यकीन है कि... उन्हें भी इसकी खबर नहीं थी।" अल्फ़ी ने लता का पक्ष रखते हुए कहा।

"तो फिर कौन हो सकता है? कहीं किसी ने... हेममाया को तो नहीं दी थी?" चैतन्य ने एक और अनुमान लगाया।

और ये सुनते ही सभी की ऑखों में एक कौतूहल सा नज़र आने लगा। उन सभी ने अल्फ़ी की ओर देखा, जो खुद भी किसी सोच में गुम दिखाई दे रहा था। शायद वो एक बार फिर से अतीत की गहराइयों में कुछ खोजने उतरा था और सोच से सिकुड़ी हुई उसकी ऑखें कुछ याद आते ही फैलकर गोल हो गईं। उसने परिधि पर एक नज़र डाली और फिर बिजली की तेजी से उसकी ओर लपका था। कोई कुछ समझ पाता... उससे पहले ही उसने परिधि के नाज़ुक से शरीर को अपने मजबूत हाथों से उठाया और उसके चेहरे को अपने चेहरे के सामने लाकर गुस्से से देखने लगा। उसका सुलगता चेहरा देखकर परिधि की सॉसे धुआं होने लगीं।

"माया ने मेरी मॉ तक अपने काले जादू से भरा कोई काला धागा पहुँचाया था, जिसकी वजह से वो इतना डरकर रहने लगी थीं कि उनकी जान तक चली गई और ये उसी समय की बात है। तुम्हीं ने ये बात बताई थी ना हम सबको.... दिव्याक्षि के कमरे में!" अल्फ़ी ने खुद को काबू में करते हुए परिधि से

कहा।

"अ... ह... हॉ! हॉ!" परिधि सहमकर बोली।

"कहीं ऐसा तो नहीं कि वो दवा भी उसी समय पहुँचाई गई हो? वो दवा
तुमने ही बनाई थी ना!" अल्फ़ी ने एक-एक शब्द को चबाते हुए कहा।

और ये सुनते ही परिधि के डरे हुए चेहरे से और भी हवाईयॉ उड़ने लगीं उसने अपनी डरी हुई ऑखें और भी फैलाई और तेजी से सिर हिलाकर अपनी सफाई देते हुए बोली, "नहीं! नहीं! नहीं! मैं इसके बारे में कुछ भी नहीं जानती। हम सबको तो हेममाया के कल्परूप आने के बाद ही उसके गर्भवती होने का पता चला था। माया तो ये सुनकर घबराई भी थी। इसलिए वो हेममाया को उसी समय मार देना चाहती थी। मैंने माया को इसके लिए मना भी किया था, पर वो अपनी जिद पर अड़ी हुई थी। पर बाद में उसने ऐसा करने का इरादा छोड़ दिया। बाद में मुझे पता चला कि... उसने एडवर्ड के कहने पर ऐसा किया था। उसे हेममाया का बच्चा चाहिए था।"

परिधि का जवाब सुनने के बाद अल्फ़ी की ऑखें एकदम से सुलगी थीं। उन ऑखों में जैसे गर्म लावा उबल रहा था और उसकी तपिश परिधि खुद पर महसूस कर भी रही थी।

"अपने भोलेपन की आड़ में तुमने बहुत कुछ बर्बाद कर दिया है परिधि। कोई इतना मजबूर... लाचार कैसे हो सकता है? तुम्हारी आत्मा तुम्हें धिक्कारती नहीं है। सब करने के बाद अपना मासूम सा चेहरा सबके सामने रख देती हो। सच तो यही है कि अगर तुम मदद नहीं करती तो वो कुछ नहीं कर सकते थे... कम से कम इतना बुरा तो नहीं। और इतना ग़लत करने के बाद तुम अब मुझसे ये कह रही हो कि तुमने मेरी बेटी खो दी। मेरी माया ने उसकी हिफाजत के लिए अपनी जान दे दी और तुमने उसे खो दिया। ऐसा कैसे कर सकती हो तुम?" अल्फ़ी उसे बुरी तरह से झिंझोड़ते हुए बोला, जो गुस्से की शिद्दत से खुद ही कॉपने लगा था।

अल्फ़ी की ऐसी हालत देखकर सभी उसकी ओर दौड़े मगर किसी की कोशिश से कोई हल नहीं निकला।
"अनामिका!" चैतन्य ने उसे पुकारा।

चैतन्य की आवाज सुनकर अनामिका की समझ जैसे वापस लौटी। वो तेजी से दौड़कर अल्फ़ी के पास आई। उसके पास आते ही सभी ने अल्फ़ी को छोड़ दिया। अनामिका ने आगे बढ़कर परिधि की बांह में कसे अल्फ़ी के हाथ पर अपना हाथ रखा और अल्फ़ी ने एकदम से ही उसके हाथ की ओर देखा। फिर उसकी नज़रें मुड़ी और अनामिका की याचना भरी ऑखें उसके सामने थीं। अनामिका ने इंकार में अपना सिर हिलाया, जिससे अल्फ़ी की पकड़ परिधि पर से कमजोर हुई और अगले ही पल उसने उसे छोड़ दिया, जिससे परिधि वापस बिस्तर पर गिर पड़ी। अल्फ़ी अपने कठोर चेहरे पर भी उभरते हुए दर्द को छिपाते हुए कमरे से बाहर की ओर भागा। अनामिका भी सब पर एक-एक नज़र डालकर उसके पीछे लपकी थी। अनामिका को उसके पीछे जाते देखकर वरूण भी उनके पीछे भागने को हुआ, जिस पर चैतन्य ने फुर्ती से उसकी कलाई पकड़कर उसे रोका।

"नहीं! अभी नहीं!" चैतन्य ने कहा।

"पागल हो गए हो! उसने अनामिका के साथ कुछ बुरा किया तो.. !" वरूण तमककर बोला।

"अनामिका को नुक़सान पहुँचाने से पहले वो खुद को नुक़सान पहुँचा लेगा। उन्हें जाने दो! उसे बस अनामिका ही संभाल सकती है।" चैतन्य ने अपनी यकीन भरी आवाज में कहा। वहाँ मौजूद सभी ने आश्चर्य से चैतन्य की ओर देखा, जिसके चेहरे पर एक अनचाहा दर्द उभर आया था। आशुतोष जो बहुत कुछ समझ चुका था, उसने आगे बढ़कर चैतन्य के कंधे पर हौसला भरा हाथ रखा। चैतन्य ने उनकी ओर देखा और उनके हाथ पर अपना हाथ रख दिया।
उधर परिधि... बिस्तर पर औंधी पड़ी जोर-जोर से सुबक रही थी। सभी उलझे हुए हालातों में एक-दूसरे की ओर देख रहे थे। सवाल अभी भी कई थे और उनके जवाब दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहे थे। चैतन्य आराम से चलता हुआ परिधि के पास पहुँचा और फिर उसके पास बैठ उसके सिर पर हाथ फेरने लगा। परिधि ने अपना सिर उठाकर उसकी ओर देखा और वहाँ अपने लिए थोड़ी हमदर्दी पाकर वो और भी फफक-फफक कर रो पड़ी।

"तुम्हारे रोने से कुछ भी सही नहीं हो जाएगा परिधि। अल्फ़ी के दर्द का तुम अंदाजा भी लगा सकती हो क्या? माया और एडवर्ड के फितूर और तुम्हारी बुजदिली ने उसे किस कदर बिखेरकर रख दिया है... हम सब से छिपा हुआ नहीं है ये। सच बोलूं तो वो तुम्हारी जान भी ले ले.. तो भी हम में से कोई भी उसे दोष नहीं देगा।" चैतन्य ने लरजती हुई आवाज में कहा।

"मुझे पता है और अगर वो मुझे मार भी दे... तो भी मेरे गुनाह कम नहीं होंगे। पर सच मानो! हालांकि मुझे देर हो गई... पर मैं पहले वाली परिधि नहीं हूँ। अगर होती तो.. अल्फ़ी को उसकी बेटी के बारे में बिल्कुल भी नहीं बताती। मैं बताती नहीं तो... आप सबको पता कैसे चलता? पर मैं अपने सारे गुनाह कबूल कर लेना चाहती हूँ। चाहे उसकी सजा कितनी भी ख़ौफनाक क्यों ना हो? अगर उस दिन उस माया को रोकने के लिए मैं आप सबके पीछे नहीं आती... तो सच मानिए... ये राज अल्फ़ी पर 200 साल पहले ही खुल गया होता। पर इस समयद्वार ने ही सब गड़बड़ कर दी।" परिधि ने अपने गुनाहों पर पछताते हुए कहा।

"हॉ! याद आया! तुम भी हमारे साथ समय द्वार के अंदर आई थी। मेरे ध्यान से ही उतर गई ये बात। हमने तो वो द्वार तोड़ दिया था... जिससे माया बाहर नहीं निकल पाई। तो तुम कैसे बाहर आई? क्या तुम वापस लौट गई थी और किसी और समयद्वार से बाहर आई?" चैतन्य ने सवालों की झड़ी लगाते हुए कहा।
"नहीं! मैं वापस नहीं लौटी थी। मैं माया को रोकना चाहती थी और आप दोनों से भी कुछ जरूरी बात करनी थी। इसलिए मैं पीछे ही आई थी। सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद जब मैं आखिरी सीढ़ी की ओर बढ़ ही रही थी, तब मैंने दूर माया को एक नीली रोशनी के सामने खींचतान करते देखा और फिर वो तेजी से उस रोशनी के अंदर खिंच गई।" परिधि ने याद करते हुए कहा।

चैतन्य को याद आया कि किस तरह माया ने समयद्वार से उसे अंदर खींचने की कोशिश की थी और फिर अनामिका ने चालाकी से उससे पीछा छुड़ाते हुए वो दरवाजा ही तोड़ दिया था।

"इसका मतलब कि तूम हमारे पीछे ही थी। पर तुम फिर बाहर कैसे आई? वो भी आठ दिन पहले!" चैतन्य ने परिधि के वर्तमान में आने वाले दिन का अनुमान लगाते हुए कहा।

"मुझे नहीं पता। जब मैंने माया को उस नीली रोशनी में अंदर खिंचते हुए देखा तो मैं झटके से सबसे ऊपरी सीढ़ी पर रूक गई और मेरे रूकते ही मेरे सामने भी उसी तरह की नीली रोशनी फैल गई। मैंने हैरानी से उस नीली रोशनी को छुआ तो मेरा हाथ उसके अंदर चला गया। मुझे समझ आ गया कि ये

दरवाजा था। मैंने उस रोशनी के अंदर अपना चेहरा घुसाया तो मैंने दूसरी ओर घोर अंधकार के बीच एक खंडहर देखा। मैं तुरंत ही उससे बाहर निकली। अभी मैं इस बारे में सोच ही रही थी कि तभी मैंने सामने उस रोशनी को बिखरते देखा। मैं कुछ समझ पाती इससे पहले ही वो किसी कॉच की तरह दरकने लगा। मुझे उस समय बस यही समझ आया कि शायद वो दरवाजा टूटकर खत्म हो रहा है, इसलिए मैं उन टूटे हुए कॉच के बीच से किसी तरह जगह बनाती हुई दूसरी ओर निकल आई। सामने दिखाई दे रहे खंडहर की ओर मैं बढ़ी ही थी कि तभी मेरे पीछे जोर से धमाका हुआ और मैं हवा में जोर से उछली। बस उसके बाद मुझे कुछ
याद नहीं रहा। अभी थोड़ी देर पहले डॉ अनंत जब मुझे अल्फ़ी के पास ले गए, तब ही मुझे पुरानी सारी बातें याद आईं।" परिधि ने अपने भविष्य में आने की सारी कहानी बताते हुए कहा।

"कुछ समझ में नहीं आया!" अंकित ने उलझी हुई आवाज में कहा।

"क्या?" वरुण ने पूछा।

"यही कि परिधि आठ दिन पहले कैसे आई?" अंकित ने अपना सवाल स्पष्ट करते हुए कहा।

"पर मुझे समझ में आ गया।" चैतन्य ने कहा, जिससे सभी की नज़रें उसकी ओर मुड़ी थीं।

"अनामिका ने 20 सीढ़ियॉ बनाई थीं। हर दस साल के लिए एक सीढ़ी और 20वीं सीढ़ी ठीक 200 साल बाद खत्म हो रही थीं। ये वही दिन था, जिस दिन अनामिका और वरूण को परिधि मिली थी। उन सीढ़ियों के बाद 200 साल से आठ दिन आगे आने के लिए आठ कदम के बाद एक दरवाजा बना था और उस दरवाजे से ही हम दोनों आज के दिन में वापस आए। क्योंकि माया हमारे पीछे लगी थी, इसलिए उसे बाहर आने से रोकने के लिए अनामिका ने बाहर निकलने का वो दरवाजा तोड़ दिया। यहॉ तक बात समझ में आई।" चैतन्य ने सबकी ओर देखते हुए कहा, जिस पर सभी ने अपना सिर हॉ में हिलाया।

"इस समय द्वार की यही खासियत है कि लगातार चढ़ते हुए जहॉ आप रूके... आपके सामने आगे जाने का रास्ता बंद हो जाएगा और बाहर निकलने के लिए दरवाजा सामने आ जाएगा। अब परिधि की बात करें तो उसने बताया कि वो आखिरी सीढ़ी पर आकर रूक गई यानि कि ठीक 200 साल और फिर उसके सामने वो दरवाजा आ गया। अब अनामिका
ने बाहर निकलने का रास्ता जब तोड़ा, तब शायद वो बाहरी दरवाजा भी टूट गया होगा, जिसके सामने परिधि खड़ी थी। चूंकि परिधि को इस ओर आना था, तो वो उस टूटते हुए दरवाजे से इस तरफ आई और फिर पूरी तरह नष्ट होने से पहले उस दरवाजे में धमाका हुआ होगा, जिससे परिधि की याददाश्त पर असर हुआ होगा। उसके बाद की कहानी सबको पता है।" चैतन्य ने सबको समयद्वार की अवधारणा स्पष्ट करते हुए कहा और उस कमरे में मौजूद सभी लोगों को परिधि के आठ दिन पहले पहुँचने की कहानी समझ में आ गई।

"पर एक सवाल और है।" मुकुल ने कहा।

"अब क्या है?" चैतन्य ने पूछा।

"यही कि तुम दोनों यहॉ बाहर निकले और.... परिधि उस खंडहर में। ऐसा क्यों? मतलब कि परिधि आठ दिन पहले इसी कमरे से बाहर क्यों नहीं निकली?" मुकुल ने अपने सवाल को स्पष्ट करते हुए

कहा।

उसका सवाल सुनकर एकबारगी चैतन्य भी सोच में डूब गया। सबकी नज़रें जवाब की तलाश में उसकी ओर उठी हुई थीं। कुछ देर के गहरे विचार के बाद चैतन्य ने कहा, "शायद इसलिए... क्योंकि अनामिका ने समयद्वार से बाहर निकलते समय 'घर' कहा था, जो हमारे लिए यहॉ था और परिधि के लिए वो खंडहर।"

और इस बार उन सभी को काफी कुछ समझ में आ गया था।

"बाप रे! ये समयद्वार है कि भूल-भुलैया! समझ से परे!" अंकित ने हैरानी जताते हुए कहा।

"इसलिए तो कहा जाता है कि समय से नहीं खेलना चाहिए!" आशुतोष ने
अंकित की बात का समर्थन करते हुए कहा।

"और मुझसे यहीं पर ही तो.... सारी गड़बड़ हुई। अनामिका दी ने जब मेरे जमीर को लताड़ा... तब मैंने उनसे कहा था कि मैं अब कुछ और गलत नहीं होने दूंगी(भाग - 82)। इसलिए हेममाया के शरीर और उस बच्ची को बचाने के लिए मैं तुरंत गई थी। उस बच्ची को पकड़े हुए मैं आगे के बारे में सोच ही रही थी कि तभी दरवाजे के पास किसी की आहट सुनकर मैं घबरा गई और दीवार से टिक गई और उसी समय वो समयद्वार खुला था, जब वो बच्ची मेरे हाथ में थी। मुझे कुछ और समझ में नहीं आया तो उस बच्ची को लेकर में समयद्वार में घुस गई। उसके बाद बच्ची को उस जंगल में रखने के बाद जब मैंने हड़बड़ी में कुछ सीढियॉ नीचे उतरने के बाद ऊपर देखा तो वो दरवाजा गायब हो गया था और उस समय मुझे याद आया कि मैं सीढ़ियों की गिनती भूल गई थी। ऊपर जाने के बाद भी मुझे वो दरवाजा फिर नहीं दिखा। इतनी बड़ी ग़लती होने के बाद जब मैं वापस लौटी तो हेममाया का शरीर भी गायब था। मैंने सब तरफ देखा, वो वहॉ कहीं नहीं था। मैं उसी बदहवासी की हालत में बाहर निकली तो अल्फ़ी ने मुझे पकड़ लिया(भाग -98)। उसके बाद तो मुझे और कुछ बताने का मौका ही नहीं मिला और वो माया मुझे वहॉ से उठाकर एडवर्ड के पास ले गई, जहॉ से अमांडा ने मुझे बाहर निकाला था। उसके बाद मैं किसी तरह समयद्वार तक पहुँची और फिर आप दोनों को बचाने के चक्कर में माया के साथ समयद्वार में गिर गई। मुझे सच में याद नहीं है कि मैंने उस बच्ची को किस सीढ़ी पर छोड़ा था।" परिधि ने पूरी कहानी बताते हुए कहा और फिर दुख और पाश्चाताय से सिर झुकाकर रोने लगी।

उसकी बात सुनकर सभी को एक बार फिर से उसके लिए अफसोस हो ने लगा। वास्तव में किसी को भी समझ में नहीं आ रहा था कि उसके लिए अपने दिल में कौन सी भावना रखें। जब अतीत की काली कहानी पर नज़र डालते, तो परिधि के गुनाह भी उतने ही काले दिखाई देते... और जब वो मुँह खोलती तब... ऑसुओं की धार सब कालिख धोकर ले जाती।
"आप सब एक और बात पर ध्यान नहीं दे रहे हैं।" सभी को भावनाओं के समुंदर से बाहर निकालते हुए सृष्टि ने कहा।

"और वो क्या?" वरूण ने पूछा।

"परिधि उस बच्ची को जहॉ भी छोड़कर आई थी, वहॉ उस पर कोई खतरा तो नहीं आ गया होगा। मतलब कि वो जंगल था। उसके रोने की आवाज सुनकर कोई जंगली जानवर..." आगे की बात सृष्टि ने एक भययुक्त सवाल के साथ अधूरी छोड़ दी थी।

"हे भगवान! कहीं ऐसा तो नहीं कि वो अब हो ही ना!" मुकुल ने सृष्टि की बात आगे बढ़ाई।

"नहीं! नहीं! ऐसा मत कहो! मैंने उसके गले में उसकी मॉ की सुरक्षा डाली थी। उसकी मॉ का पेंडेंट, जिससे वो दोनों ही जुड़ी हुई थीं।" परिधि ने हड़बड़ाकर कहा।

"कैसा पेंडेंट?" वरूण का सवाल आया।

"उस पेंडेंट में नीले रंग का एक नग जड़ा हुआ था, जो कभी-कभी अंधकार में बहुत ही तीव्रता से चमकता था। वास्तव में वो पहली चीज थी, जो हेममाया ने अपने जादुई ताकत से बनाई थी। उसका रंग पहले सफेद था, जो हेममाया की शक्तियों के समावेश के साथ ही नीले रंग में बदल गया था। जब बच्ची को मैंने छोड़ा, तो वो पेंडेंट उसके गले में डाल दिया था।" परिधि ने जैसे खुद को आश्वस्त करते हुए कहा।

"पर अगर ऐसा नहीं हुआ हो और रोने की वजह से किसी जंगली जानवर ने उसे नुकसान पहुँचा दिया हो तो!" वरूण ने अगली समस्या सामने
रखी।

"ऐसा नहीं हो सकता... क्योंकि कोई भी उसे रोते हुए नहीं सुन सकता था।" परिधि ने बताते हुए कहा।

"और वो क्यों?" चैतन्य ने पूछा।

"क्योंकि... वो बेआवाज थी।"

"बेआवाज थी! क्या मतलब कि... बेआवाज थी!" आशुतोष ने चौंककर पूछा।

"शायद उसका मतलब है कि... बच्ची बोल नहीं सकती थी।" वरूण ने बात साफ करते हुए कहा।

"ओए अकल के क़ातिल! ये कैसे पता चल सकता है कि चार दिन की बच्ची बोल सकती है या नहीं? इतने छोटे बच्चे तो बस रो सकते हैं।" आशुतोष ने वरूण को लताड़ते हुए कहा।

"और उसके... रोने से ही तो माया को परेशानी थी।" परिधि ने धीमी आवाज में कहा।

"परेशानी थी! क्या मतलब कि परेशानी थी?" सृष्टि ने अपने माथे पर बल डालते हुए पूछा।

"बच्ची थी... तो रोएगी ही। पर माया को उसका रोना बहुत खलता था। इसलिए..." कहते हुए परिधि चुप पड़ गई।

उसके हवाइयॉं उड़ते चेहरे को देखकर सभी की त्यौरियॉं चढ़ी थीं। परिधि की अधूरी बात ने उन सबको अंदर से कहीं परेशान किया था और ना
चाहते हुए भी दिमाग में एक बार फिर कुछ गलत होने का ख्याल आ गया था।

"प्लीज़ परिधि! ये मत कहना कि... तुम सबने उस मासूम बच्ची के साथ कुछ ग़लत किया था।" मुकुल ने उसकी ओर देखकर तड़पती हुई आवाज में कहा।

"मैंने... मैंने कुछ नहीं किया। इस बार सच में मैंने कुछ नहीं किया था।" परिधि ने घबराते हुए अपनी सफाई दी।

"इस बार तुमने कुछ नहीं किया... मतलब कि माया ने कुछ किया। क्या किया? क्यों किया?" अंकित ने अपनी ऑंखों में ख़ौफ भरकर पूछा।

परिधि ने उन सबकी ओर देखा, जो अपनी ऑंखों में अफसोस की चादर लपेटे हुए गुस्से को भरकर उसी की तरफ देख रहे थे। उन सबकी नज़रों की चुभन परिधि खुद पर महसूस कर रही थी। आत्मग्लानि की आग वैसे भी उसे अंदर से हर पल जला रही थी और अब बाहरी हमलों ने उसे पस्त कर दिया। उसकी नम ऑंखें भागते-भागते अतीत के एक दरवाजे के पीछे चली गईं।

200 साल पहले -

उस मौत जैसे मनहूस कैदखाने में जैसे जिंदगी एक बार फिर से लौटकर आ गई थी। उसे इस दुनिया में आए अभी एक दिन भी नहीं गुजरा था।
उसका गोरा रंग उसकी मॉं की तरह गुलाबी रंगत लिए हुए था। काली ज़हीन ऑंखें अभी से ही बड़ी-बड़ी दिखाई दे रही थीं। गुलाबी होंठ भी कुछ कहने को आतुर दिखाई दे रहे थे। वो अपनी मॉं की गोद में लेटी हुई उसे एकटक देख रही थी, जैसे उसे पहचानने की कोशिश कर रही हो। उसे खुद को ताकते हुए देखकर हेममाया के थके हुए होंठों पर भी एक मुस्कान आई और उसने उसका माथा चूम लिया। सात महीने इस घुटनभरी क़ैद में गुजारने के बाद उसे लगने लगा था कि वो अपनी संतान को देखने के लिए भी जिंदा नहीं बचेगी, पर किसी चमत्कार की तरह वो जीवित थी। मगर इतने कमजोर शरीर में प्रसूति के बाद लगातार होने वाले रक्तस्राव ने उसे और भी कमजोर कर दिया था। वो इतनी कमजोर हो चुकी थी कि अब सॉंसे लेना भी उसे तकलीफ़देह लगने लगा था। ऊपर से तकलीफ़ ये कि... उसकी नवजात बच्ची के लिए पर्याप्त दूध भी नहीं हो रहा था, जिससे वो भूख की वजह से रह-रहकर रो रही थी। हेममाया उसे चुप कराने की हर कोशिश कर रही थी, मगर खाली पेट की आग किसी को चैन लेने नहीं देती। बच्ची को अपने सीने से लगाए वो अपनी लाचारी पर ऑंसू बहाने के अलावा और कुछ नहीं कर सकती थी।

"सात महीने हो गए अल्फ़ी! और... कितना इंतजार करोगे? आ जाओ प्लीज़! अब तो... तुम्हें एक नज़र देख पाने की... उम्मीद भी खत्म होती जा रही है। प्लीज़! आ जाओ! तुम्हारी अमानत तुम्हें सौंप दूं... फिर चैन से सो जाऊंगी। वरना तो.... मरकर भी चैन नहीं मिलेगा मुझे।" रोती हुई बच्ची को अपने सीने से लगाकर उसे थपकियॉ देते हुए हेममाया ने बहुत ही मुश्किल से कहा।

अभी वो बच्ची को संभालने की नाकाम कोशिश करते हुए रोने ही लगी थी कि दरवाजे पर हुई आहट ने उसे चौंकाया। उसने बच्ची को अपनी बाहों में और भी जोर से भींचा। वो ख़ौफभरी ऑखों से दरवाजे की ओर देख ही रही थी कि तभी उसने परिधि को अंदर आते देखा। उसे देखकर हेममाया ने एक राहत भरी सॉस अपने फेफड़ों में भरी।
"परिधि! थैंक गॉड! तुम आ गई। प्लीज़! कुछ करो! मैरी बच्ची भूखी है।" हेममाया ने लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"श्श्श्श! शांत हो जाओ! लाओ! इसे मुझे दो और तुम पहले ये खाओ!" परिधि ने दरवाजे की ओर बार-बार देखते हुए बच्ची को हेममाया से लिया और फिर अपने कंधे पर पड़े थैले से एक डिब्बा और एक पुड़िया निकालकर उसकी ओर बढ़ाया।

"ये क्या है?" हेममाया ने पूछा।

"इस डिब्बे में खाना है और ये तुम्हारी दवा है। दवा को संभालकर रखना। मैं बार-बार नहीं ला पाऊंगी। खाना खाओ अब।" परिधि ने बच्ची को अपनी बाहों में झुलाकर चुप कराते हुए कहा।

"मेरे लिए नहीं... मेरी बच्ची के लिए कुछ ले आती।" हेममाया ने उस डिब्बे को बुझी हुई और खिन्न ऑखों से देखते हुए कहा।

"इसके लिए भी लाई हूँ। तुम जल्दी से ये खाना खाओ और दवा लो। ताकत आएगी तो बच्ची के लिए दूध भी बनेगा। मैं इसे दूध पिला देती हूँ और ये कुछ फल हैं... इसे छिपाकर रखो। भूख लगे तो खा लेना। भूखे मत रहना।" कहते हुए परिधि ने अपने थैले से फलों की पोटली निकालकर हेममाया की ओर बढ़ाई, जिसे उसने अपने पास रख लिया। इसके बाद उसने थैले से एक बहुत छोटी सी चॉदी की केतली निकाली, जिसका ढ़क्कन मजबूती से बंद था।

"ये!" हेममाया ने पूछा।

"मैं जब छोटी थी। मेरी मॉ मुझे इससे दूध पिलाया करती थीं।" परिधि ने बच्ची को मुस्कुराकर देखते हुए कहा और फिर उस केतली की पतली सी नली बच्ची के मुँह में लगा दी।रोकर बेहाल हुई बच्ची मुँह में दूध की बूंदें जाते ही चुप हो गई। उसके चुप होते ही हेममाया के दिल ने भी राहत महसूस की और उसने अपने खाने के लिए निवाला तोड़ा। पूरे दो दिनों के बाद उसे कुछ खाने के लिए मिला था। निवाला मुँह तक लाते ही उसके हाथ रूक गए। एकाएक अल्फ़ी याद आया। मन में यही ख्याल आया कि अगर इस समय वो अपने घर में होती.. तो अल्फ़ी उन दोनों के कितने नखरे उठा रहा होता। और फिर खुशी से अल्फ़ी के दमकते चेहरे के बारे में सोचकर उसके दिल में हूक सी उठी.. कि अल्फ़ी जिंदगी की इतनी

बड़ी खुशी से अभी तक बेखबर था। दिल के दर्द को आंसुओं के साथ बाहर निकालते हुए उसने निवाला मुँह में डाल लिया। अभी वो निवाला चबा ही
रही थी कि तभी तालियों की तेज आवाज ने उन दोनों को ही चौंकाया। सामने माया अपनी दोनों चमचियों के साथ खड़ी थी। उसे देखते ही हेममाया ने फुर्ती से फलों की पोटली को अपने कपड़ों से छिपाया।

"देखो तो जरा! क्या हो रहा है यहाँ?" माया ने मजाक उड़ाने वाले अंदाज में कहा।

"चैरिटी! मे बी!" रोमा ने मार्गरेट की ओर देखकर एक आँख दबाते हुए कहा।

"माया.." परिधि ने कुछ कहने की कोशिश की।

"श्श्श्श्! तुमसे तो बाद में बात करती हूँ छोटी बहन। मना किया था ना.. तुम्हें यहाँ आने के लिए!" माया ने परिधि को झिड़कते हुए कहा।

"माया! तुम्हें पता है कि हेममाया बच्ची को दूध नहीं पिला सकती। उसे इस लायक छोड़ा ही कहाँ तुमने। बस मेरी दवाईयों के सहारे उसे जिंदा रखा है।" परिधि ने तड़पकर शिकायत की थी।

"बस! इसीलिए तुमको यहाँ आने से मना करती हूँ मैं। सब ठीक रहता है... पर इससे मिलते ही बहकने लगती हो। इनको यहाँ खिला-पिला कर पालने के लिए नहीं रखा है मैंने।तुम क्या चाहती हो कि... खा-पीकर ये ताकतवर हो जाए और एक दिन मेरा ही गला पकड़ ले। साँसे लेते रहने के लिए जितना जरूरी है.... मिल रहा है। उससे ज्यादा देने की कोई जरूरत नहीं।" अपनी बात चिल्लाकर खत्म करते हुए माया ने परिधि के हाथ से चाँदी की केतली छीनकर फेंक दी। मुँह से आहार छिनते ही बच्ची एक बार फिर से रोने लगी। परिधि उसकी इस हरकत से सुलगकर रह गई। उसकी आँखें गुस्से से जलने लगी थीं। मगर वो कुछ कह नहीं पाई।
वहीं बच्ची के मुँह से निवाला छिनते देखकर हेममाया बुरी तरह से चिल्लाई, जिससे सभी का ध्यान उसकी ओर चला गया।

"आखिर चाहती क्या हो तुम? तुम्हें मुझसे प्रॉब्लम है ना! तो मार क्यों नहीं देती मुझे? पर मेरी बच्ची को तो बख्श दो। उसने किसी का क्या बिगाड़ा है?" हेममाया कलपती हुई बोली।

"हाँ! हाँ! क्यों नहीं? तुम्हें मारने के बाद इसे इसके घर भेज देंगे। चिंता मत करो!" माया ने बच्ची को परिधि की गोद से जबरन लेते हुए कहा।

"सच कह रही हो? तुम... इसे मेरे अल्फ़ी तक पहुँचा दोगी?" हेममाया ने बेयकीनी से पूछा।

"अरे! अल्फ़ी ही क्यों? और भी तो रिश्तेदार हैं इसके यहाँ। पापा नहीं तो चाचा की गोद में खेलेगी। क्यों बच्चे?" हेममाया से कहते-कहते माया बच्ची के ऊपर झुककर बोली।

और ये सुनते ही हेममाया की आँखें दहशत से फैल गई। वो आगे कुछ बोलती उससे पहले ही बच्ची एक बार फिर से बेतहाशा रोने लगी।

"उंहूं!" उसका रोना सुनकर माया ने अपना मुँह बिगाड़ा था।

"माया! उसे भूख लग रही है। उसे दूध की जरूरत है। दो उसे मुझे!" परिधि ने आगे बढ़ते हुए कहा।

"श्श्श्श! इसे दूध की नहीं किसी और चीज की जरूरत है।" माया अपनी कुटिल मुस्कान परिधि और हेममाया की ओर छोड़ते हुए बोली।

"क्या मतलब?" परिधि ने अपनी ऑखें सिकोड़ कर पूछा।
"देखो! बच्चों को तो हर थोड़ी देर में भूख लगती है। तो क्या इसके लिए दिन भर यहाँ चक्कर लगाती रहोगी? मेरे पास इसकी भूख का ज्यादा अच्छा इलाज है। अगर ये सो जाए तो!" माया ने उन दोनों को अजीब सी नजरों से देखते हुए पूछा।

"सो जाए मतलब?" परिधि ने सवाल पूछते हुए हेममाया पर भी एक नजर डाली जो खुद भी माया को सवालिया नजरों से देख रही थी।

"अरे! सो जाए मतलब कि... सो जाए! अब कोई सोता रहेगा.. तो उसे भूख ही नहीं लगेगी। सही कहा ना!" माया ने बहुत ही धूर्तता से कहा और उन दोनों की ओर देखने लगी। ये सुनकर परिधि की ऑखें और भी सिकुड़ी, जबकि किसी अनहोनी की आशंका से हेममाया की ऑखें अपनी आखिरी हद तक फटी थीं। उसने उठकर माया की ओर जाना चाहा, पर पैरों में बंधी बेड़ियों ने उसे ये इजाजत नहीं दी। उसने पूरा जोर लगाकर अपने पैरों को आजाद कराना चाहा, पर नाकाम रही। अपने पैरों से बहते खून को देखकर अब वो भी बेतहाशा रोने लगी।

"रोमा!" माया ने अपनी एक चमची को आवाज़ लगाई, जिसे सुनकर वो तेजी से उसके सामने आई। माया ने अपनी एक हथेली उसके सामने फैला दी। रोमा ने अपने कपड़ों से एक छोटी सी डिब्बी निकाल कर उसके हाथ में रख दी, जिसे देखकर परिधि बुरी तरह कॉप उठी।

"उंहूं! खोलो इसे!" माया ने रोमा को डांट पिलाई। रोमा ने अपनी गलती मानते हुए वो डिब्बी फुर्ती से उठाई और फिर उसे खोलकर माया के सामने ले गई। उस डिब्बी में कोई हरे रंग की पेस्ट जैसी चीज रखी हुई थी। माया ने अपनी उंगली डालकर मटर के दाने जितना पेस्ट निकाल लिया। अपनी फटी हुई ऑखों से देखती परिधि माया की अगली कार्यवाही के बारे में सोचकर सदमे में आ गई थी। वो माया को रोकने के लिए आगे बढ़ी, तो
माया के इशारा करने पर मार्गरेट ने आगे बढ़कर उसे जकड़ लिया।

"नहीं माया! ये ना करो! मासूम बच्ची है वो! मर जाएगी वो!" परिधि छटपटाते हुए बोली। उसकी बात सुनकर हेममाया सदमे से जड़ होकर रह गई। अब तो उसके सारे शब्द कहीं खो चुके थे। वो बस अपनी ऑखों के सामने सब होते देख रही थी। उसके दिल ने बरबस ही दुआ मांगी... कि ये अनहोनी देखने से पहले ही उसकी ऑखें हमेशा के लिए बंद हो जाएँ।

"कोई नहीं मरता इससे! कभी सुना है तुमने। बेहोशी की दवा है। खाकर कम से कम 24 घंटे के लिए बेहोश हो जाएगी। फिर तो कोई प्रॉब्लम नहीं होगी। ना भूख लगेगी... ना वो रोएगी।" माया ने बड़ी ही लापरवाही से कहा।

"माया! हमें नहीं चाहिए कुछ! ये खाना भी ले जाओ और वो दूध भी। मैं अपनी बच्ची को संभाल लूंगी। रो रही है... रोने दो उसे! मैं भी उसके लिए फिर कुछ नहीं मांगूंगी। सच कह रही हूँ। ये मत करो उसके

साथ। प्लीज़!" हेममाया गिड़गिड़ाते हुए बोली। उसके होंठों से निकला एक-एक शब्द कॉप रहा था।

"उसके रोने से ही तो मुझे प्रॉब्लम है। इस मनहूस की आवाज इस जादुई दरवाजे के बाहर भी दूर-दूर तक जा रही है। कुछ लोगों के कानों में भी इसका रोना आ गया। बड़ी मुश्किल से मैंने सब संभाला है। तुम दोनों के चाहने या बोलने से मैं मुसीबत अपने सिर पर रखने वाली नहीं हूँ। समझे!" माया ने उन्हें लगभग दुत्कारते हुए बोली और फिर अपनी ऊंगली रोती हुई बच्ची की ओर बढ़ाई।

"माया वो जहर है! ज़हर! इसकी थोड़ी सी मात्रा में ही बड़े-बड़े लोग बेहोश हो जाते हैं। इतनी दवा बच्ची के शरीर को अंदर से जला देगी। थोड़ा तो रहम करो मासूम पर! इतनी निर्दयी ना बनो।" परिधि अबकी बार रोते
हुए बोली।

"मेरी बला से! उफ्फ! किसी तरह ये हफ्ता गुजरे तो मेरी जान छूटे। फिर इस मनहूस को उस एडवर्ड को दे कर अपने हाथ झाड़ लेना है।" माया ने अपने कंधे उचकाते हुए कहा और फिर वो ऊंगली बच्ची के मुँह में डाल दी। भूखी बच्ची आहार के धोखे में उसकी वो ऊंगली पूरी तरह से चूस गई और अगले ही पल उसका नाजुक सा शरीर माया के हाथों में झूल गया।

"चलो! आफत टली!" कहते हुए माया ने आगे बढ़कर बच्ची को हेममाया की गोद में लगभग फेंक दिया।

बदहवास सी हेममाया ने पहले तो उसके बेहलचल शरीर को ग़ौर से देखा और फिर उसके सीने पर अपना कान रखकर उसकी धड़कन सुनने की कोशिश करने लगी। बेहोशी की दवा के असर से उसकी धड़कनें भी बेतरतीब सी हो चुकी थीं। उसकी धड़कनों का अहसास होते ही हेममाया ने उसे उठाया और फिर अपने सीने से इस तरह चिपका लिया.. गोया वो अपनी धड़कनें भी उस बच्ची के सीने में उतार देना चाहती हो।

"चलो! अब तुम्हें भी राहत मिलेगी। तो कुछ दिन और आराम से रह लो। और परिधि तुम! देख रही हूँ कि तुम्हारे भी पर निकलने लगे हैं। याद रखना अगर तुम्हारी जुबान खुली तो इन दोनों मॉ-बेटी की जुबान बंद होने में देर नहीं लगेगी।" माया ने स्तब्ध बैठी हेममाया की ओर देखते हुए परिधि से कहा।

"और तुम दोनों! तुम्हारी जिम्मेदारी है कि... जब तक मैं ना चाहूं ये परिधि यहॉ नहीं आनी चाहिए और कल इसी समय फिर से ये दवा इसके मुँह में डाल देना। इसके रोने की आवाज फिर सुनाई ना दे मुझे।" माया ने अपनी दोनों चमचियों को हिदायत देते हुए कहा और फिर इत्मीनान से बाहर जाने लगी कि तभी हेममाया की आवाज ने उसके पैर रोक दिए।
"बहुत इतरा रही हो ना! हमारी बेबसी पर! लेकिन याद रखना! मासूमों की आहें कभी बेकार नहीं जाती। मेरी बद्दुआ है तुझे! जिस ताकत को पाने के लिए तुम दोनों ने हमारा हँसता-खेलता परिवार बर्बाद कर दिया... वो तुम दोनों को कभी हासिल नहीं होंगी। मैं भले मर ही क्यों ना जाऊं... पर मेरी आहें किसी को खींचकर जरूर लाएँगी, जो तुम दोनों के हर मंसूबे को मिट्टी में मिलाकर रख देगा। इंतजार करना। तुम्हारा हश्र दुनिया याद रखेगी। तुझे ना मौत आएगी और ना तू कभी जी पाएगी। तेरी आत्मा को भी कभी शांति नहीं मिलेगी। एक मॉ का श्राप है ये!"

माया ने मुड़कर उसकी ओर देखा और फिर एक मक्कारी भरी मुस्कान के साथ वो बाहर निकल गई।

रोमा और मार्गरेट भी परिधि को खींचते हुए बाहर ले गए।

वर्तमान में -

जोर-जोर से हिचकियॉलेती हुई परिधि अपनी बात खत्म करते-करते बेहाल हो चुकी थी। कमरे में फिर से सन्नाटा पसरा चुका था। सभी ने इस बात के लिए ऊपर वाले का शुक्र अदा किया कि ये सब सुनने के लिए अल्फ़ी यहॉ नहीं था।

चैतन्य ने अपनी ऑखें पोंछी और बोला, "बहुत देर हो गई। मैं देखता हूँ कि ये दोनों कहॉ हैं?
और फिर वो तेजी से बाहर की ओर निकल गया।

****

गुस्से में उबलता हुआ अल्फ़ी ना जाने घर के किस कोने में जाकर छिप गया था। अनामिका ने घर का कोना-कोना छान मारा। उसे ढूंढने में बहुत देर हो गई थी, मगर वो नहीं मिला।

"कहॉ चला गया होगा ये?" अनामिका ने जैसे खुद से ही सवाल किया और फिर कुछ सोच कर बालकनी की ओर चली गई। वही एक जगह थी, जहॉ वो नहीं गई थी और वो वहीं था। सामने रात का अंधेरा सुबह की लालिमा के साथ घुलने लगा था। वो रेलिंग पर अपने दोनों हाथ टिकाए एकटक रात और सुबह के इस मिलन को देख रहा था। अनामिका धीमे कदमों से चलती हुई उसके पास गई और वो भी उसके पास रेलिंग को पकड़ कर सामने की ओर देखते हुए खड़ी हो गई।

"क्या देख रहे हो?" अनामिका ने पूछा।

"हेममाया को बहुत पसंद था ये नजारा! इसे देखने के लिए वो मुँह अंधेरे उठ जाया करती थी। मुझे कभी समझ में नहीं आया कि उसे इसमें क्या अच्छा लगता था?" अल्फ़ी ने सामने धुंधलाते हुए अंधकार की ओर देखते हुए कहा।

"उम्मीद! सामने एक उम्मीद नजर आ रही है। ये उम्मीद कि... रात कितनी
भी गहरी और काली हो... सुबह रोशनी लेकर जरूर आती है।" अनामिका ने सामने फैले दृश्य के मायने अल्फ़ी को समझाते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी एक फीकी और बुझी सी हँसी हँसा और फिर दर्द को अपने चेहरे पर रख कर बोला, "पर मेरे जैसे लोगों की किस्मत में सुबह की उम्मीद नहीं होती। क्योंकि... हमारे हिस्से की हर सुबह खो जाती है और रह जाता है खुशियों तक की आत्मा को चूस लेने वाला अंधेरा। मैं जानता

हूँ.... मेरे हिस्से की सुबह कभी नहीं आएगी।"

"इतनी नाउम्मीदी वाली बातें मत करो अल्फ़ी! सबके हिस्से में एक सुबह होती है। तुम्हारे हिस्से में भी होगी।" अनामिका ने उसे हौसला देते हुए कहा।

"पहले मुझे भी यही लगता था। पर कुछ देर पहले जो अंदर सुनकर आया.... उसके बाद ये झूठी उम्मीद छोड़ दी मैंने।" अल्फ़ी ने अपने हथियार डालते हुए कहा।

"हम उसे ढूंढ लेंगे अल्फ़ी!" अनामिका ने अल्फ़ी के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

"पर अब मैं ऐसा नहीं चाहता।" अल्फ़ी ने रूंधे हुए गले से कहा।

"ऐसा क्यों बोल रहे हो?" अनामिका ने हैरत भरी आवाज में कहा।

"मैं नहीं चाहता कि मेरी मनहूस जिंदगी का साया भी उस पर पड़े। वैसे भी जो मुझे छोड़कर चला गया... वो फिर कभी वापस नहीं लौटा।" अल्फ़ी ने अपने दर्द को ज़बान देते हुए कहा।

"प्लीज़! ऐसा मत कहो!" अनामिका ने भी उसके दर्द का अहसास करते
हुए भरी हुई आवाज में कहा।

"क्यों? क्या तुम वापस लौटोगी मेरे पास? बोलो?" अल्फ़ी ने अनामिका की ओर पलटते हुए जज़्बाती लहजे में कहा। उसकी ऑखों में मौजूद सवाल अनामिका का दिल भेद रहे थे और वो उसकी तकलीफ़ से खुद को बचाने की नाकाम कोशिश में लगी थी। अल्फी के इसी सवाल का तो जवाब नहीं था उसके पास। उसे खामोश देखकर अल्फी के होठों पर एक तंज भरी मुस्कराहट आई और एक बार फिर... वो उसी तरह सामने की ओर देखने लगा।

उन दोनों को ढूंढते वहॉ पहुँचा हुआ चैतन्य उन दोनों की बातें सुनकर ठिठक गया था और फिर अल्फ़ी के सवाल और अनामिका की ख़ामोशी उससे कई बातें कह गई। उसने भी सामने की ओर देखा। सूरज निकल रहा था। सुबह हो रही थी।

(कोई रोएगा नहीं! सुबह होने वाली है।)

अनामिका, अल्फ़ी को उसी बालकनी में छोड़कर चैतन्य के साथ वापस आ गई। अनामिका को जब बच्ची के ऊपर हुई ज्यादती के बारे में पता चला, तो वो अल्फ़ी के दर्द को और भी महसूस करने लगी। पिछली रात सभी के लिए क़यामत की तरह गुजरी थी, जहॉ सबके अपने-अपने दर्द थे और इन सबके बीच अल्फ़ी के दर्द का अंदाजा लगाना किसी के लिए भी नामुमकिन था।

सृष्टि और मुकुल दोनों ही अलग-अलग अपने घर की ओर निकल गए। अंकित भी दोपहर में आने की बात करके घर की ओर निकल गया। बहुत कुछ था जो आज रात तक पाना बहुत जरूरी था। सभी कड़ियॉ बिखरी
हुई थीं, जिन्हें जोड़ने से ही कई जवाब मिलने थे।

फिलहाल चैतन्य और अनामिका की हालत ज्यादा सही नहीं लग रही थी और परिधि भी मानसिक और शारीरिक दोनों रूप से थक चुकी थी। डॉ. अनंत और वरूण ने चैतन्य और अनामिका दोनों का अच्छी तरह से परीक्षण किया, ताकि उन्हें आराम करने से पहले सही दवा दी जा सके।

"आऊ!" अनामिका जोर से चीखी, जब वरूण ने परीक्षण करते समय उसकी एक बांह को पकड़ा।

"क्या हुआ?" वरूण घबराकर अनामिका के चेहरे की ओर देखते हुए बोला, जहाँ दर्द माथे की शिकन के साथ मौजूद था। वरूण के साथ-साथ बाकी सब भी उसकी चीख से घबराए थे।

"उसकी बांह में चोट लगी है। खंज़र लग गया था।" जवाब चैतन्य ने दिया जो डॉक्टर आनंद से अपने हाथों के चोटों की ड्रेसिंग करवा रहा था।

"क्या? खंज़र!" वरुण ने ऑखें फैला कर कहा और फिर तेजी से अनामिका की उस बांह की आस्तीन ऊपर चढ़ानी चाही।

"वरूण! ध्यान से!" अनामिका दर्द से तिलमिलाई।

"तुम भी ना! ये तो खून के साथ सूखकर चिपक गया है।" वरूण ने जख्म की ओर ध्यान से देखते हुए कहा।

"उस कमबख़्त एडवर्ड ने किया ये!" अनामिका ने पुरानी बात याद करते हुए कहा। एडवर्ड का नाम लेते हुए जैसे उसका मुँह कसैला हो गया था।

"तुमने भी तो उसके सीने में खंज़र उतार दिया था। कमीना! फिर भी...
मरा नहीं। जाने कैसे मरेगा?" चैतन्य ने भी कई पुरानी यादों के साथ कड़वाहट से कहा।

"तो तुम दोनों बचे कैसे?" इस बार उत्सुकता भरा सवाल आशुतोष ने किया था, जो गर्म पानी का प्याला लेकर आए थे। आशुतोष का सवाल सुनकर अनामिका और चैतन्य दोनों की ही नज़रें एक दूसरे की ओर उठी थीं।

"क्या हो गया?" दोनों को इस तरह एक दूसरे को ताकते देखकर वरूण ने पूछा।

"अल्फ़ी ने जान बचाई थी।" अनामिका ने कहा और फिर अपने ज़ख़्म को छूकर देखने लगी। वो अभी इस विषय में और कुछ नहीं कहना चाहती थी, मगर ना चाहते हुए भी ध्यान उसकी ओर चला ही गया था और इसी धुन में वो अपनी चोट के साथ लापरवाह हो गई।

"आह!" एक बार फिर से वो सिसकी।

"अनामिका! अपना हाथ हटाओ। मुझे करने दो। पहले ही बता देना था इसके बारे में। बेवकूफ लड़की! ना जाने ध्यान कहाँ रहता है तुम्हारा?" चोट को गर्म पानी से धोने के बाद स्प्रिट से साफ करते हुए वरूण ने उसे डपटकर कहा।

"हाँ भई! वो तो घर आने की खुशी में फुगड़ी खेल रही थी। इसलिए भूल गई तुम्हें बताना! बात करते

हो!" चैतन्य ने कुढ़े हुए अंदाज में कहा।

वरुण ने भी उतनी ही कुढ़न के साथ उसकी ओर देखा और फिर अनामिका की ओर मुड़कर दाँत पीसते हुए बोला, "अनु! सच कह रहा हूँ.... मुझे ये लड़का बिल्कुल नहीं पसंद। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। इससे दूर ही रहो तुम!"

"अ... ब... ह... हम्म!" अनामिका की ज़बान लड़खड़ाई थी।

वरूण ने उसका उलझा हुए लहजा सुनकर उसकी ओर देखा, जो अपने निचले होंठ को दाँतों में दबाए हुए अपनी चोट की ओर देख रही थी, जिस पर वरूण अब बैंडेज लपेट रहा था।

"क्या हुआ?" वरूण ने पूछा, जिस पर अनामिका ने तेजी से इंकार में सिर हिलाया। उसकी अजीब हरकतें देखकर वरूण ने उस पर एक टेढ़ी नज़र डाली और फिर ऑखों की पुतलियों को घुमाकर चैतन्य की ओर देखा, जिसे डॉ. अनंत इंजेक्शन लगा रहे थे। उसने अपने चश्मे के पीछे से सब कुछ जाँचा-परखा और फिर उसने भी अनामिका को टिटनेस का एक इंजेक्शन लगा दिया। अनामिका, गीता के कमरे में ही परिधि और उसके साथ आराम करने के लिए चली गई। सुबह जब गीता की नींद खुली, तो उसे बहुत ही ज्यादा कमजोरी महसूस हो रही थी। इसलिए डॉ. अनंत ने उसे भी पूरी तरह से बेड-रेस्ट पर भेज दिया।

दो रातों और एक पूरे दिन की उठा-पटक के बाद थकी-हारी अनामिका कुछ देर सोने के लिए लेटी तो नींद उसकी ऑखों से रूठी हुई थी। रह-रहकर अल्फ़ी उसके दिमाग में कौंध रहा था। उसकी वो बुझी हुई ऑखें वो भुला नहीं पा रही थी, जो किसी भी तरह की उम्मीद से खाली हो चुकी थीं। वो भुला नहीं पा रही थी उन ऑखों को भी.. जिन्हें अपने बेहद करीब उसने चमकते हुए देखा था। उसकी मुस्कराहट... उसका फिक्र करना... उसका गुस्सा... उसकी दीवानगी... उसका जूनून... सब उसके ख्याल में एक-एक करके आने लगे और फिर उसका चैन से सोना मुहाल हो गया। जब घुटन हद से ज्यादा बढ़ गई, तो वो कमरे से बाहर निकल आई और खुली हवा के लिए बालकनी की ओर बढ़ गई।
बालकनी के पास पहुँचते ही वो ठिठक कर रूकी क्योंकि... वहाँ कोई पहले से ही मौजूद था। उसने एक गहरी साँस ली और उसकी ओर बढ़ गई।

"तुम्हें भी नींद नहीं आ रही है?" अनामिका सवाल करते हुए उसके पास आकर खड़ी हो गई।

"हम्म! अब तो जब तक... सब ठीक नहीं हो जाता... नींद आने से रही। घर लौट आए... यही बहुत राहत की बात है।" अपनी बात कहकर चैतन्य ने कॉफी का कप होंठों से लगाया।

अनामिका ने उसकी ओर देखा, जो सामने की ओर ना जाने क्या देख रहा था? क्या सोच रहा था? वो भी उसे एकटक देखे गई।

"क्या हो गया? क्या देख रही हो?" चैतन्य ने सामने की ओर देखते हुए ही पूछा।

"कुछ नहीं!" कहते हुए अनामिका ने हाथ बढ़ाकर उसके हाथ से कप ले लिया।

"अरे!" चैतन्य ने अनामिका की इस हरकत पर चौंककर उसे देखा और फिर उसे उसी कप से कॉफी का सिप लेते देखकर सिर हिलाता एक बार फिर से सामने की ओर देखने लगा।

"एक बात पूछूं?" अनामिका ने आम से लहजे में सवाल किया।

"पूछो!" चैतन्य ने भी उसी लहजे में कहा।

"अगर.... तुम्हारी कोई चीज... तुमसे दूर चली जाए... तो तुम क्या करोगे?" अनामिका ने बहुत नपे-तुले शब्दों में अपना सवाल किया।

उसका सवाल सुनकर चैतन्य के होंठ मुस्कुराए और फिर एक गहरी साँस लेकर उसने अनामिका की ओर देखा और बोला, "तो मैं उसे जाने दूंगा।"

"क्या सच में! और अगर... इसी कप की तरह... तुमसे कोई छीन ले। तो?" अनामिका ने हैरानी से चैतन्य की ओर देखते हुए पूछा।

"फिर फैसला उसके ऊपर है कि वो दूर जाना चाहे या मेरे पास रहना चाहे।" चैतन्य ने इस बार भी बहुत ही सहजता से जवाब दिया।

अनामिका ने ग़ौर से उसके चेहरे को देखा, जहाँ कोई भी बनावट नहीं थी। वो हमेशा की तरह ही ईमानदार नज़र आ रहा था।

"तुम हमेशा मेरे साथ खड़े रहोगे ना!" अनामिका ने उसकी आँखों में झांकते हुए पूछा।

"ये भी कोई पूछने या बोलने की बात है। मैं तुम्हारा था... तुम्हारा हूँ और तुम्हारा ही रहूंगा। हर मोड़ पर... हर फैसले के साथ.... तुम मुझे अपने साथ पाओगी। इट्स माई प्रॉमिस!" चैतन्य ने अपनी आँखों पर चमक भरकर उसके चेहरे पर उड़ती लट को कानों के पीछे करते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका के होंठ मुस्कुराए और चैतन्य के उस हाथ को उसने कसकर पकड़ लिया।

"इस समय वरूण को यहाँ होना चाहिए था।" अनामिका ने हँसते हुए कहा।

"क्यों? उसने फिर जहर उगला क्या? देखा था मैंने! अपना मुँह बिगाड़कर तुमसे कुछ कह रहा था।" चैतन्य ने भी हँसते हुए कहा।

"हाँ भई! हम तो हैं ही जहरीले। आपके मुँह से तो हमेशा फूल झरते हैं। कामदेव के उत्तराधिकारी जो ठहरे आप!" पीछे से एक तानों से सजी हुई आवाज आई।

और उस आवाज को सुनकर जहाँ अनामिका ने अपना सिर खीझ से नीचे झुका लिया... वहीं चैतन्य के होंठ भी शरारत से मुस्कुराए।

"इसे किसी पल चैन नहीं। अब तुम्हीं झेलो इसे! मैं तो चला नीचे आशुतोष जी और डॉ. अनंत के पास।" अनामिका के हाथ से खाली कप लेते हुए चैतन्य ने कहा और फिर मुड़कर वरूण के कंधे से अपना कंधा रगड़ते हुए वहाँ से निकल लिया।

"अरे! मैं आया तो ये गया! ये क्या बात हुई?" वरूण ने खीझते हुए कहा।

"मैं भूल गया था कि मेरे फूल सूख रहे हैं। अच्छा हुआ कि... तुमने याद दिला दिया।" चैतन्य ने बिना पलटे आगे बढ़ते हुए कहा।

"हुंह! देखा तुमने!" वरूण तिलमिलाया।

"वरूण!" अनामिका ने उसे टोका।

"हे अनामिका! एक बात याद रखना! दूसरों को खुश करने के लिए कभी अपने दिल से झूठ मत बोलना!" जाते हुए चैतन्य ने अचानक ही पलटकर कहा।

अनामिका ने एक पल उसकी बात पर ग़ौर करते हुए उसकी ओर देखा और फिर सहमति में अपना सिर हिला दिया। चैतन्य ने एक मुस्कुराहट के
साथ उसे देखा और फिर वहाँ से चला गया। वरूण भौंचक सा खड़ा उन दोनों को बारी-बारी से देखता रहा।

"ये... अभी क्या कह कर गया?" वरूण ने चैतन्य के जाने वाली दिशा में ऊंगली दिखाते हुए कहा।

"वरूण! मैंने उसे हाँ कह दिया है।" अनामिका ने बिना कोई समय गवाएँ कहा।

"हाँ! किस बात के लिए हाँ!" वरूण ने ज़बान के साथ अपनी आँखों से भी सवाल किया।

"नहीं! दरअसल... मैंने हाँ नहीं कहा। मैंने कल रात खुद चैतन्य से अपने दिल की बात कह दी और अब तुम भी इस चिकचिक को खत्म कर दो।" अनामिका ने उसकी ओर देखकर कहा और वो भी नीचे की ओर चली गई। वरूण उसकी बातों को सोचता खड़ा रह गया।

"हे भगवान! ये लड़का तो सच में आँखों से काजल चुराने में माहिर हैं। और देखो तो जरा... प्रपोजल एक्सेप्ट होते ही डेट पे भी कहाँ ले कर गया? 200 साल पीछे अतीत में! वाह! क्या ही रोमांचक प्रेम कहानी है।" वरूण खुद का खुद में बड़बड़ाकर बोला और फिर वो भी नीचे की ओर चला गया।

****

अनामिका जब अल्फ़ी को छोड़कर वापस गई, तो उगते हुए सूरज को एक नज़र देखकर अल्फ़ी भी वहाँ से निकल गया। जल्द ही वो फिर से अपने उसी अस्त-व्यस्त कमरे में था, जहाँ वो हेममाया की यादों के साथ अपना समय बिताया करता था। पूरा कमरा जैसे सदियों से किसी की मेहरबानी की आस में था... बस एक कोने को छोड़कर, जहाँ एक आराम कुर्सी रखी हुई थी। अल्फ़ी ने उसे बड़ी ही हसरत और प्यार से देखा और वो उसके पास गया और उस कुर्सी की पुश्त पर हाथ फिराने लगा। फिर उसने उस कुर्सी को आगे-पीछे करना शुरु किया... जैसे कि कोई उस पर बैठा हो।

"माया!" उसने पुकारा और फिर कुछ पलों की ख़ामोशी छाई रही।

"नाराज़ हो!" अल्फ़ी ने ही ख़ामोशी तोड़ी और फिर कुर्सी की पुश्त पर इस तरह से झुक गया , जैसे कि उस कुर्सी पर कोई बैठा हो और वो उसकी बात सुनने की कोशिश में झुका हो।

"अच्छा!" कहते हुए वो खड़ा हुआ और चारों ओर देखने लगा।

"बात तो सही है। पर तुम्हीं ने तो मुझे बिगाड़ा है। कोई काम नहीं करने दिया मुझे। अब तुम नहीं कर रही... तो देखो हमारे कमरे की हालत।" अल्फ़ी ने अपनी कमर पर हाथ रखकर चारों ओर फैले कबाड़, हर ओर जमी धूल की मोटी परत और जहाँ-तहाँ लगे मकड़ी के जालों को देखते हुए कहा।

और फिर उसने पलटकर कुर्सी की ओर देखा, जैसे कि कुछ सुनकर चौंका हो और फिर बोला, "क्या सच में? तुम वापस आओगी मेरे पास! तुम बिल्कुल भी चिंता मत करो। मैं हमारे इस कमरे को बिल्कुल वैसा ही बना दूंगा, जैसे तुम रखा करती थी। तुम्हें कोई शिकायत नहीं होगी। मैं एक बार फिर से सब पहले जैसा चाहता हूँ माया। तुम्हारा इंतज़ार करते-करते मैं
बहुत थक गया हूँ। अब बस तुम्हारी गोद में सिर रखकर सोना चाहता हूँ। बस तुम लौट आओ!"

कहते हुए अल्फ़ी सिसकने लगा और फिर कुर्सी के सामने जाकर जमीन पर बैठ गया। उसने सिर उठाकर इस तरह देखा, जैसे उस पर कोई बैठा हुआ हो। उसने अपना सिर झुकाया और उसे उस कुर्सी पर रख दिया... गोया किसी की गोद में सिर रखा हो।

"मैं जानता हूँ कि हमारे साथ बहुत बुरा हुआ माया। हम ये डिजर्व नहीं करते थे। पर इतने सालों में... मैं ये भी जान गया हूँ कि ये दुनिया हम जैसे भोले-भाले लोगों के लिए नहीं है। इस दुनिया में जीने के लिए चालाक और ताकतवर होना बहुत ही जरूरी है और यकीन मानो... मैंने ये सब सीख लिया है। बस अब... तुम वापस आ जाओ। तुम आ जाओगी... तो हम दोनों मिलकर अपनी बेटी को भी खोज लेंगे। हमारा परिवार एक बार फिर से पूरा हो जाएगा। हम फिर से खिलखिलाएँगे... सपने सजाएँगे। उन्हें पूरा भी करेंगे। फिर... कोई तूफान हमारा आशियाना नहीं उजाड़ेगा। ये मेरा वादा है तुमसे!" अल्फ़ी अपना दिल खोलकर बोला।

उसकी बात खत्म होने के बाद कुछ देर और ख़ामोशी छाई रही और वो सिर उठाकर ऊपर की ओर इस तरह देखता रहा जैसे कि किसी की बात सुन रहा हो और उसकी बात सुनते ही उसके माथे पर बल पड़े थे।

"नहीं! नहीं माया! तुम्हें पता है ना! मैंने बस तुम्हारे इंतज़ार में ही ये लंबी सदियाँ गुजारी हैं। तुम जानती हो कि मुझे बस तुम्हारे वापस आने का इंतजार था। भविष्य के अतीत से जुड़ने का इंतजार था। तुम अच्छी तरह से जानती हो कि मैंने आज तक उस एडवर्ड की गर्दन क्यों नहीं तोड़ी। क्यों आज तक हमारा इंसाफ अधूरा है? वो दरिंदा... इतनी आसान मौत का हकदार नहीं है। उसकी सजा तो मैंने बहुत पहले ही तय कर रखी है और उसे वो सजा देने का वक्त अब आ गया है।" अल्फ़ी जूनूनी हालत में चिल्लाते हुए बोला।

उसने उठकर पास रखे एक संदूक को खोला और उसके अंदर देखने लगा। उसके अंदर रखी चीज को देखकर उसके जबड़े और भी कसकर भिंचे थे।

"सितमगर को ये याद रखना चाहिए कि सितम उतना ही करे, जितना खुद सह सके.... क्योंकि जब

सामने वाला जवाब देगा..... तो तुम्हारे सितम के हिसाब से ही देगा।" अल्फ़ी ने पलकें उठाकर सर्द ऑखो से देखते हुए उतने ही सर्द लहज़े में कहा।

वो एक बार फिर से गुस्से की आग में जल रहा था। एक बार फिर से उसका दर्द टीसें मारने लगा था। मगर वो ये भी जानता था कि इन जख़्मों पर अब मरहम लगने का समय आ चुका था। समय का पहिया उसी तरह घूम रहा था, जैसा नियति ने तय किया था। दर्द का एक लंबा सफर तय करने के बाद अब अल्फ़ी उम्मीद से भरी दिशा की ओर देख रहा था, जहॉ उन सभी की मुक्ति तय थी... सदियों से चले आ रहे श्राप से मुक्त होने की।

डॉ. अनंत और आशुतोष स्टडी में बैठे हुए बदलते हुए हालातों के बारे में बातें कर रहे थे। उनके सामने किताबों का एक ढेर रखा हुआ था, जिन्हें आशुतोष बड़ी ही दिलचस्पी से पढ़ रहा था। उसके दिमाग में कई बातें ऐसी थीं, जिन पर आकर आशुतोष उलझ सा गया था और वो उन सभी उलझनों को सुलझा लेना चाहता था। अभी उनकी चर्चा बस शुरू ही होने वाली थी कि तभी दरवाजे पर हुई दस्तक से दोनों का ध्यान उनकी ओर चला गया। डॉ. अनंत की अनुमति से दरवाजा खुला और चैतन्य अंदर आया।
"चैतन्य! आओ! अच्छा हुआ कि तुम आ गए। बाकी सब कहॉ हैं?" डॉ. अनंत ने चैतन्य को उत्साहित आवाज में कहा।

"अ.... परिधि और गीता तो आपकी निगरानी में हैं और अनामिका और वरूण फिलहाल तो ऊपर ही हैं।" चैतन्य ने नपे-तुले शब्दों में कहा।

"उन्हें बुलाओ। एक जरूरी चर्चा करनी है।" डॉ. अनंत ने कहा।

"जी!" कहते हुए चैतन्य ने अपना फोन निकाला और अनामिका को कॉल लगाते हुए वो पलटा ही था कि पीछे से आती हुई अनामिका उससे आ टकराई। दोनों ने ही खुद को संभाला ही था कि अनामिका के पीछे से नाराज़गी भरी आवाज आई।

"थोड़ा देखभाल कर काम किया करो।" अनामिका के पीछे खड़ा वरूण उसे नाक चढ़ाकर देख रहा था।

"सॉरी!" चैतन्य ने भी मखमल में लिपटे पत्थर की तरह उसकी ओर शब्द उछाला।

"ओह गॉड! नॉट अगेन!" अनामिका हल्की झल्लाहट के साथ उनके बीच से हटकर आशुतोष और डॉ. अनंत के पास चली गई। वरूण भी अपनी नाक पर चश्मा ठीक करते हुए चैतन्य की बगल से गुजर गया। चैतन्य ने मुँह बिगाड़ते हुए दरवाजा बंद किया।

"आप कुछ कह रहे थे।" अनामिका ने कहा।

"हॉ! तुम सब जानते हो कि आज रात सतवृक्ष हमारे की सवालों के जवाब हमें देने वाला है। हालांकि अल्फ़ी से जुड़े सवाल अब सुलझ चुके हैं, पर
उस एडवर्ड के बारे में हमें अभी भी ज्यादा जानकारी नहीं है। मुझे उम्मीद है कि हमारी सहायता करने लायक जवाब हमें मिल जाएँ। मगर इससे पहले... यदि तुम सबके मन में कोई सवाल है तो तुम उसे पूछ सकते हो और अपनी राय सबसे साझा कर सकते हो। इस मिशन पर आगे बढ़ने के लिए सभी का एकराय होना बहुत जरूरी है। आशुतोष जी और मैं यही बातें कर रहे थे।" डॉ. अनंत ने सबकी ओर देखते हुए कहा।

उनकी बात सुनकर सभी ने एक-दूसरे की ओर देखा और फिर डॉ. अनंत की ओर देखने लगे। सवाल तो कई मन में कुलबुला रहे थे और उनका जवाब भी उनके लिए जरूरी था।

"इतनी सारी किताबें!" सबसे पहले अनामिका ने ही कहा।

"हॉ! आशुतोष जी के मन में भी कई सवाल थे.. तो हम उनके जवाब ढूंढ रहे थे।" डॉ. अनंत ने उन किताबों की ओर देखते हुए कहा।

"मैं एक सवाल पूछूं!" वरूण ने अपना हाथ उठाकर कहा, जिससे सभी का ध्यान उसकी ओर गया।

"पूछो!" डॉ. अनंत ने कहा।

"ये समयद्वार मेरी समझ में आया नहीं। मतलब कि हेममाया ने तो छलद्वार बनाया था ना! फिर... उसकी बेटी के छूने भर से वो समयद्वार में बदल गया... और आप सबको ये नहीं लगता कि... उस समयद्वार ने भी बहुत अजीब तरीके से काम किया था।" वरूण ने अपना सवाल सामने रखा।

"क्योंकि वो समयद्वार किसी योजना के अनुसार नहीं बनाया गया था। हेममाया ने तो उस कैद से बाहर निकलने के लिए छलद्वार बनाया था। उसका इरादा समयद्वार बनाने का नहीं था। वो तो बस... बन गया। शायद
नियति ने ही भविष्य और अतीत के बीच एक पुल बना दिया था। और शायद इसलिए... उसने इस तरह अजीब सा व्यवहार किया होगा।" डॉ. अनंत ने एक अनुमान के साथ कहा।

"इसका मतलब तो यही है कि अल्फ़ी और हेममाया की बेटी भी उतनी ही ताकतवर रही होगी। तभी तो उसके छूने भर से ही छलद्वार समयद्वार में बदल गया।" आशुतोष ने पूछा।

"नहीं! ऐसा जरूरी नहीं है। छलद्वार को समयद्वार में बदलने के लिए वायु-रक्षक की नहीं.... बस वायु-तत्व की जरूरत होती है। अगर वो तत्व किसी वायु-रक्षक का हो, तो समयद्वार और भी मजबूत होता

है। पर इसके लिए छलद्वार बनाने वाले जल-रक्षक का उस वायु तत्व या रक्षक से बहुत ही गहरा भावनात्मक संबंध होना चाहिए। जैसे कि वो दो अलग शक्तियाँ ना होकर एक ही हों।" डॉ. अनंत ने समझाते हुए कहा।

ये सुनते ही चैतन्य के होंठों पर एक कुटिल मुस्कान आई और उसने एक चिढ़ाने वाली नज़र वरूण पर डाली, जहाँ वो उतनी ही चिढ़ के साथ चैतन्य को ही देख रहा था। वरूण से नज़र टकराते ही चैतन्य ने शरारत से अपनी भौंहें नचाई, जिससे वो और भी कुढ़कर रह गया। अनुभवी आशुतोष की नज़र भी एक-एक करके दोनों की ओर गई और फिर अपने माथे को मसलते हुए उनके अंदर से एक ही आवाज आई, "इनका ये कोल्ड वॉर! जाने कब खत्म होगा?"

"तो क्या ये जरूरी नहीं है कि वो भी ताकतवर हो। पर अल्फ़ी और हेममाया दोनों ही ताकतवर थे... फिर तो उनकी संतान को भी ताकतवर होना चाहिए था।" चैतन्य ने हैरानी जताते हुए कहा।

"क्यों? ऐसा होना जरूरी क्यों है? हो सकता है कि वो ताकतवर हो... या फिर उतनी ताकतवर ना हो। मुझे समझ में ये नहीं आता कि आखिरकार
बच्चों की योग्यता को माता-पिता की योग्यताओं से क्यों तौला जाता है? आप सबको ऐसा नहीं लगता कि इस तरह से हम सब बच्चों की वास्तविक योग्यता पर अतिरिक्त दबाव डालते हैं और फिर बच्चे कमतरी के अहसास से डिप्रेस्ड होने लगते हैं। परिधि के साथ भी तो यही हुआ था। ठीक है कि उसकी शक्तियाँ छीन ली गई थीं, पर उसे वो भी तो नहीं रहने दिया गया.. जो वो थी। तुम सबने देखा है कि उसका आयुष ज्ञान कितना समृद्ध है। मगर किसी ने उसकी इस प्रतिभा के साथ कभी भी न्याय नहीं किया... क्योंकि उसकी दुनिया में जादुई ताकत ही मायने रखती थीं। उसे खुद भी ये अहसास नहीं है कि जादू तो उसके हाथों में है। और ये सब उसकी नहीं... उसके चारों ओर फैले हुए संकुचित विचारों की गलती थी।" डॉ. अनंत ने तैश में आते हुए कहा, जिसे सुनकर सभी सकपका गए थे।

"आप सही कह रहे हैं। पर लोग इतनी सी बात नहीं समझते और ये दुनिया भी समझने नहीं देती है।" आशुतोष ने बहुत ही संभली हुई आवाज में कहा।

"यानि... आपका कहना ये है कि बिना किसी प्लानिंग के बने होने के कारण ही वो छलद्वार या फिर समयद्वार... जो भी था... ऐसा अजीब सा था... कि कहीं भी खुल रहा था।" अनामिका ने समझदारी दिखाते हुए बातों का रूख पलटते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर डॉ. अनंत ने उसकी ओर देखा और फिर हॉ में सिर हिलाया और एक किताब उन सबकी ओर बढ़ा दी। सबने उस किताब के कवर पेज पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखे शब्दों को पढ़ा।

"जादुई द्वार और उनके रहस्य!"
"तो फिर... एक और सवाल का जवाब दीजिए कि ये तो समझ आ गया कि परिधि आज से आठ दिन पहले उस खंडहर में क्यों मिली? पर ये समझ में नहीं आया कि अनामिका ने तो आठ दिनों के बाद उस समयद्वार के दरवाजे को तोड़ा... तो फिर परिधि के लिए बना दरवाजा क्यों टूटा?" चैतन्य ने अपने दिमाग को मथते हुए सवाल को बाहर निकाला।

"क्योंकि किसी भी समयद्वार का एक ही प्रवेश द्वार और एक ही निकास द्वार होता है... बहुत सारे नहीं। वो समयद्वार... समय यात्रा करने वाले यात्री को उसके मनवांछित जगह पर छोड़ता है... उसी एक

निकासी द्वार से।" डॉ. अनंत ने कहा।

"आपका मतलब है कि अनामिका और मैं जिस निकास द्वार से निकले... वही परिधि के लिए भी खुला था... मगर उसके लिए आठ दिन पहले और जब अनामिका ने उस इकलौते निकास द्वार को तोड़ा... तो परिधि के सामने बना दरवाजा भी टूट गया।" चैतन्य ने डॉ. अनंत की बात को समझते हुए कहा।

"सही समझे! चूंकि तुम दोनों ने उस समयद्वार से सबसे लंबी यात्रा की थी.. इसलिए अनामिका के द्वारा तोड़ा गया द्वार सबसे आखिरी था, जिससे बाकी पुराने सारे निकास द्वार जुड़े हुए थे। अनामिका के तोड़ते ही वो निकास द्वार टूट गया और उसी के साथ पुराने सारे निकास द्वार भी।" डॉ. अनंत ने अपनी तर्जनी उंगली को झटका देते हुए कहा।

"इसका मतलब है कि अब उस समयद्वार में प्रवेश तो किया जा सकता है, पर बाहर नहीं निकला जा सकता। एम आई राइट?" अनामिका ने कहा।

"सही कहा! पर तुम चाहो तो उस टूटे हुए दरवाजे को फिर से बना सकती हो।" डॉ. अनंत ने अनामिका से कहा।
"वो कैसे?" अनामिका ने हैरत से पूछा।

"क्योंकि चाहे किसी भी तरीके से... पर उस समय द्वार को हेममाया ने ही बनाया था और यदि तुम्हारे अंदर उसकी आत्मा है... तो तुम उसे फिर से बना सकती हो। तुम्हें ये अधिकार प्राप्त है। पर हाँ... इसके लिए भी तुम्हें चैतन्य की मदद की जरूरत पड़ेगी। इतना समझ लो कि तुम दोनों की शक्तियाँ अब एक-दूसरे से जुड़ चुकी हैं।" डॉ. अनंत ने अनामिका और चैतन्य दोनों की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर एक बार फिर से चैतन्य ने बड़े ही गुरूर से वरूण की ओर देखा और वरूण अपने दाँत पीसता रह गया। इस बार अनामिका की तरह आशुतोष ने भी उन दोनों की प्रतिक्रियाओं को नज़रअंदाज़ किया।

"पर आप तो हमेशा कहते थे कि आपको चैतन्य का वायु-रक्षक के रूप में चयन कभी भी समझ में नहीं आया।" वरूण ने चैतन्य की खुशियों पर पानी फेरने की कोशिश करते हुए कहा।

"हाँ कहा था। पर मुझे इसका कारण अब समझ में आया... क्योंकि वायु-रक्षक के रूप में चैतन्य की शक्तियाँ अतीत से ही जागृत थीं और वो वायु-रक्षक के रूप में अतीत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। इसलिए उसे वायु-रक्षक बनना ही था।" डॉ. अनंत ने कहा।

"आपका कहना ये है कि... इस चैतन्य ने भविष्य में दही खरीदकर अतीत में रायता फैलाया... बस इसीलिए इसे मीठी लस्सी... मेरा मतलब है कि इतनी बड़ी जिम्मेदारी मिल गई। गजब!" चैतन्य की ओर ऊंगली दिखाते हुए वरूण ने चिढ़ भरी आवाज में कहा।

"जैसा तुम समझो! अब जो हूँ... वो हूँ।" चैतन्य ने भी तपाक से जवाब दिया। एक बार फिर से वरूण चिढ़कर रह गया। वहीं आशुतोष की नज़र अनामिका के फीके पड़े चेहरे पर पड़ी।
"क्या हुआ अनामिका? कोई परेशानी?" आशुतोष ने चिंता से पूछा।

"जी हाँ आशुतोष जी! अगर वो दरवाजा टूट गया है... तो फिर हम अल्फ़ी की बेटी को कभी भी नहीं ढूंढ पाएँगे।" अनामिका ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा।

"वो परेशानी अलग है अनामिका! फिलहाल हमारे सामने जो समस्या मौजूद हैं... हमें उस पर ध्यान देने की जरूरत है। आज सतवृक्ष हमारे सामने कुछ नए राज़ खोल सकता है। आशा करो कि वो सब जानकारियाँ हमारे काम की हों।" डॉ. अनंत ने अनामिका की चिंता को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा।

"जी!" मन मसोसकर अनामिका ने सहमति जताई।

"और ये सतवृक्ष आखिर है क्या? इसके बारे में भी कुछ बताइए।" आशुतोष ने अपना अगला सवाल सामने रखा।

"सतवृक्ष हमारी दुनिया की एक किंवदंती है। एक अलौकिक शक्ति। सत्य की शक्ति! पूरी दुनिया में वो बस एक ही पेड़ है। कहा जाता है कि उस वृक्ष के नीचे खड़ा शख़्स कभी झूठ नहीं बोल सकता है। बहुत समय पहले न्याय करने के लिए उसी वृक्ष का सहारा लिया जाता था। मगर धीरे-धीरे उसका प्रयोग इतना बढ़ गया कि सतवृक्ष ने साफतौर पर अपनी नाराज़गी दिखानी शुरू कर दी। फिर भी हमारी दुनिया वालों ने उसका बेवजह इस्तेमाल करना जारी रखा। इसलिए एक बहुत ही बड़े तांत्रिक ने अपनी शक्तियों के प्रयोग से उस वृक्ष को संचयनिधि घाटी की किसी कंदरा में भेज दिया और उसके बाद किसी ने भी उसे नहीं देखा।" डॉ. अनंत ने सतवृक्ष की जानकारी देते हुए कहा।
"तो आपका मतलब है कि कल रात हमने जिस सतवृक्ष का रोपण किया था... वो सच में नहीं है।" अनामिका ने संदेह के साथ पूछा।

"सही समझा! वो उस वृक्ष के रस सतांश से बना एक छद्म वृक्ष है.... बिल्कुल छद्म पिशाच की तरह। दोनों ही भ्रम की एक स्थिति हैं। इसलिए तो उससे जवाब मिलने को लेकर मैं पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हूँ। बस उम्मीद रखता हूँ... जो बेशक नाउम्मीदी से कहीं ज्यादा है।" डॉ. अनंत ने आशावादी दृष्टिकोण के साथ कहा।

"ओह! और ये संचयनिधि घाटी क्या है?" चैतन्य ने कौतूहल के साथ पूछा।

"संचयनिधि घाटी! संचय का क्या मतलब होता है? समेटना! और निधि मतलब? खजाना! तो संचय निधि मतलब खजाने को समेटने वाली घाटी। कहते हैं कि हमारी दुनिया में जो भी शक्ति या फिर कोई बहुत ही महत्वपूर्ण चीज खो जाती है... वो खोने के बाद संचयनिधि में चली जाती है या फिर संग्रहित हो जाती है।" डॉ. अनंत ने जवाब देते हुए कहा।

"तो फिर वो खोई कैसे? सबको तो पता है कि जो भी खोया है... वहाँ मिल सकता है।" वरूण ने नासमझी से पूछा।

"क्योंकि संचयनिधि घाटी में गई किसी भी चीज को वापस लाना नामुमकिन की तरह मुश्किल है। आज तक कोई भी उस घाटी से वापस नहीं लौटा। वो घाटी इतने जादुई रहस्यों से भरी है... कि उन रहस्यों को सुलझा पाना बिल्कुल भी आसान नहीं है। इसीलिए तो सतवृक्ष भी हमेशा के लिए हम सबसे दूर चला गया।" डॉ. अनंत ने मायूसी भरी आवाज में कहा।

"पर ऐसी व्यवस्था का क्या मतलब?" वरूण ने पूछा।
"तो तुम्हें क्या लगता है? ऐसी लावारिस शक्तियों या चीजों का सामान्य लोगों के बीच रहना सामान्य बात होती। जिस तांत्रिक ने सतवृक्ष को संचयनिधि घाटी भेजा था.. उन्होंने ही ऐसी व्यवस्था की थी

कि... ऐसी शक्तियॉ... जो आगे जाकर खतरा बन जाए... वो किसी को मिलने से पहले ही संचयनिधि घाटी में चली जाऍं।" डॉ. अनंत ने बताया।

"तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र!" आशुतोष ने एक आह के साथ कहा।

"सही समझा!" डॉ. अनंत ने सहमति के साथ कहा।

"इसका मतलब है कि... हमें भी बस उम्मीद में ही रहना चाहिए कि छद्म सतवृक्ष से हमें कोई महत्वपूर्ण जानकारी मिल जाए।" अनामिका ने कहा।

"हॉ और इस छद्म सतवृक्ष से सही जानकारी निकालने का यही सबसे ज्यादा सही तरीका है। हमारी उम्मीद की रोशनी जितनी ज्यादा रोशन होगी उस रोशनी में सतवृक्ष की प्रतिक्रिया और उससे मिले जवाब भी उतने ही ज्यादा साफ होंगे। इसलिए अपनी उम्मीद को कहीं से भी कमजोर होने मत देना।" डॉ. अनंत ने सबके अंदर जोश भरते हुए कहा कहा, जिस पर सभी ने उतने ही जोश से हॉ में सिर हिलाया।

"सवाल और भी उठ सकते हैं जिनका जवाब देने का मैं हर संभव प्रयास करूंगा। बस तुम सबये जान लो कि तुम्हारी हिम्मत और हौसला ही तुम्हारे आगे की राह को रोशन करेंगे।" डॉ अनंत ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा। सभी ने उस बढ़े हुए हाथ को देखा और फिर मुस्कुराते हुए एक-एक कर सभी ने उनके हाथ के ऊपर अपने हाथ रख दिए। हर दुविधा के दूर होने के साथ ही उनका संगठन और भी मजबूत हो रहा था। डॉ. अनंत ने पास ही उस जगह पर देखा, जहॉ उन्होंने पिछली रात छद्म सतवृक्ष का रोपण किया था। उनके उम्मीदों से भरे चेहरों की रोशनी उस
प्रस्फुटित होते वृक्ष को भी आलोकित कर रही थी। आज की रात कई नए रहस्यों के खुलने की रात थी, जिसकी रोशनी उन सभी को उनकी मंजिल की ओर ले जाने वाली थी।

(पता है कि पार्ट छोटा है। आज के लिए एडजस्ट कर लें। अगला भाग कल आएगा।)

शाम होने लगी थी और घर के अंदर सरगर्मियॉ बढ़ गई थीं । आज नौंवी रात थी और वो अपने साथ बहुत से खुलासे लेकर आने वाली थी। सबसे पहले मुकुल वहॉ आया। उसके आने के कुछ देर बाद अंकित भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवा चुका था। बस सृष्टि ही थी... जिसका कोई पता नहीं था। मुकुल से पूछने पर उसने अनभिज्ञता जताई।

"कहीं साहनी को शक तो नहीं हो गया।" डॉ. अनंत ने चिंता जताते हुए कहा।

"पता नहीं! पर वो आज थोड़े उखड़े हुए से लग रहे थे।" मुकुल ने कहा।

"कल रात उस पिशाच ने जरूर तुम दोनों को देखा होगा। हमें इसका ख्याल रखना चाहिए था कि साहनी उस एडवर्ड का मददगार है। अब मुझे सृष्टि के लिए सच में चिंता हो रही है।" डॉ. अनंत ने और भी

घबराते हुए कहा।
"नहीं! उस पिशाच ने हम दोनों को नहीं देखा था। उसके वहाँ आते ही सृष्टि ने हम दोनों को छिपा लिया था।" मुकुल ने डॉ. अनंत को शांत करते हुए कहा।

"पर कल रात वो कुछ बताने के लिए आई थी। उसी ने तो मैसेज करके हम सबको स्टडी में बुलाया था (भाग - 48) उसके बाद... उस डायरी में रोशनी होने के कारण हम सभी का ध्यान उस मैसेज से हट गया और फिर उसके बाद जो कुछ भी हुआ... उसकी वजह से वो बात अनसुनी ही रह गई।" वरूण ने रात आए सृष्टि को मैसेज को याद करते हुए कहा।

"उसने तुमसे कुछ नहीं कहा।" डॉ. अनंत ने मुकुल से पूछा।

"नहीं! रात इतना सब कुछ हो गया कि दिमाग में कुछ और आया ही नहीं।" अपनी ऑखों के पर्दे पर सहमी और सुबकती हुई परिधि की तस्वीर उतारते हुए मुकुल ने धीमी आवाज में कहा।

"अब पता कैसे चलेगा? कहीं वो सच में मुसीबत में फँस गई तो....! वो अकेली है। अकेली क्या ही कर पाएगी?" आशुतोष ने भी अपनी चिंता जताई।

"फिर हम क्या करें? हमारा यहाँ का काम भी तो बहुत ही जरूरी है।" अंकित ने समस्या बढ़ते देखकर कहा।

"मैं कुछ कहूं!" चैतन्य ने अपना हाथ उठाकर कहा, जिससे सभी का ध्यान उसकी ओर गया।

"कहो!" डॉ. अनंत ने इजाजत देते हुए कहा।
"मुझे लगता है कि वो हमें उलझाना चाहते हैं... ताकि हम कामयाब ना हो सकें। इसलिए हमें उस पर ध्यान देना चाहिए... जो हमारे सामने है, ना कि उस पर... जिसके बारे में हम निश्चित ही नहीं हैं। मुझे लगता है कि हमें अपना काम जारी रखते हुए सृष्टि का इंतजार करना चाहिए। ताकि हम सही निर्णय पर पहुँच सकें।" चैतन्य ने अपनी राय रखते हुए कहा।

"और तुम्हारी बात मानने से सृष्टि पर मुसीबत बढ़ गई तो... फिर क्या होगा?" चैतन्य की बात काटते हुए वरूण ने बहुत ही गुस्से में कहा।

"और जाकर क्या करोगे? तुम्हें पता भी है कि उस पिशाच की शक्तियॉ क्या है? वो खुद को कामयाब करने के लिए किस हद तक जा सकता है? पिछली बार जब हम उससे भिड़े थे.. तब हमेशा ही उसके पास प्लान 'बी' यहाँ तक कि प्लान 'सी' भी तैयार रहता था। तुम्हें क्या लगता है... कि इस बार ऐसा नहीं होगा! वो पिछले 200 सालों से भटक रहा है। ना जाने और क्या-क्या जोड़ लिया होगा उसने अपने फितूर भरे दिमाग में? समस्या को सुलझाना हो तो उसकी जड़ पर वार करो और इसके लिए जड़ की गहराई का भी पता होना चाहिए। बस डालियों को काटने से कुछ नहीं होने वाला है।" चैतन्य बिगड़ते हुए बोला।

"कहना क्या चाहते हो? साफ-साफ कहो!" वरूण भी तइड़कतए हुए बोला।

"वरूण! चैतन्य सही कह रहा है। तुम सब नहीं... पर हम दोनों अतीत से बहुत कुछ सीखकर आए हैं। तुम लोग जितना समझ रहे हो... ये एडवर्ड उससे कहीं ज्यादा कमीना और चालाक है। हम अतीत में

इतने समय तक उससे उलझे रहे... पर वो हमेशा ही हमसे एक-दो कदम आगे ही रहता था। मैंने, चैतन्य ने और अल्फ़ी ने भी... ना जाने क्या-क्या नहीं किया। यहाँ तक कि अल्फ़ी ने तो उसे जान से भी मार ही डाला था... पर वो आज भी हमारे सामने तनकर खड़ा हुआ है। क्यों? क्योंकि हम भी उसकी जड़ों पर वार करने की बजाय उसकी डालियाँ छांटते रहे। हमें इस बार वो गलती नहीं करनी है। हमें उस एडवर्ड की जड़ों की गहराई जाननी ही होगी... ताकि उसे पूरी तरह से उखाड़ फेंकें। वरना हम बस हवा में हाथ चलाते ही रह जाएँगे।" अनामिका ने चैतन्य का समर्थन करते हुए कहा।

"पर.." वरूण ने कहना चाहा।

"चैतन्य और अनामिका सही कह रहे हैं। वो बहुत चालाक है। उसने हमारे हर संभव वार का तोड़ पहले से ही सोच रखा होगा। जहाँ तक सृष्टि की बात है... अगर वो इतनी मुसीबत में हुई कि उसे मदद की जरूरत पड़े... तो तुम सबकी अंगूठियाँ इशारा कर देंगी। इसलिए उस इशारे के आने तक शांत रहो। वैसे भी जब इस जंग में कूदे हैं... तो चोट तो लगेगी ही... और खुद को हर तरह की चोट के लिए तैयार रखो।" डॉ. अनंत ने भी चैतन्य और अनामिका का समर्थन करते हुए कहा, जिसे सुनकर वरूण का मुँह छोटा सा हो गया था।

"तो क्या हम अपना काम शुरू करें।" आशुतोष ने आगे बढ़कर कहा।

"किसी भी तरह की देर होने से पहले।" कहते हुए डॉ. अनंत तेजी से स्टडी की ओर बढ़ गए। बाकी सब भी उनके पीछे चल दिए।

आज स्टडी की सारी लाइट्स बंद थीं, मगर फिर भी कमरा एक अलौकिक रोशनी से भरा हुआ था, जो उस सतवृक्ष के पौधे से प्रस्फुटित हो रही थी, जिसका उन्होंने 24 घंटे पहले रोपण किया था। इन चौबीस घंटों में वो पौधा उन सबके चेहरों तक बढ़ गया था। उस पर कहीं-कहीं पर मदार की तरह सुनहरे फूल लगे हुए थे और ये रोशनी उन्हीं फूलों से आ रही थी। कमरे में एक ओर एक गोल घेरा बना हुआ था, जिसके अंदर परिधि और गीता दुबके बैठे थे। जाहिर सी बात थी कि डॉ. अनंत ने उन दोनों की सुरक्षा पहले ही सुनिश्चित कर ली थी। अब वो दोनों ही सुरक्षित थीं और
अपनी डबडबाई हुई आँखों से उन सबको देख रही थीं।

"ये सुरक्षित तो रहेंगी ना!" वरूण ने गीता की ओर देखते हुए कहा। अपनी बहन को इस तरह देखकर उसके माथे के शिकन बढ़ गए थे। वहीं मुकुल की ख़ामोश निगाहें शांत बैठी हुई परिधि पर ठहर गई थीं। उसकी उन निगाहों में एक चोर बैठा हुआ था, जिसकी वजह से उसने तेजी से अपनी वो निगाहें फेर लीं। मगर उसके निगाहें फेरने से पहले ही परिधि ने उसकी निगाहों को खुद पर महसूस कर लिया था और उसने जैसे ही मुकुल की ओर देखा.. वो उससे मुँह फेरे खड़ा था। एक चुभन सी उसके दिल में उठी थी। उन दोनों के बीच कुछ नहीं होकर भी बहुत कुछ था, जिसे ना तो वो दोनों स्वीकार सकते थे और ना ही नकार सकते थे। कुछ अनकहा सा उनके बीच रह गया था... जो शायद अब अनकहा ही रहने वाला था क्योंकि अपनी सच्चाई से रूबरू होते ही परिधि में उसकी आँखों में देखने की हिम्मत नहीं थी। उधर मुकुल भी अपने अंदर करवटें लेते हुए अहसासों को थपकियाँ देने लगा था.. कि जिन अहसासों को वो बहुत पहले ही अपने दिल की जमीन पर दफ्न कर चुका था.. वहाँ से निकलती कोंपलें उसे ही चिढ़ा रही थीं। उसने अपनी पलकों को तेजी से झपकाते हुए खुद को इस गिरफ्त से आजाद करने की कोशिश की। दूसरी ओर उन दोनों की ही हालत से बेखबर सभी अपने-अपने कामों में लगे हुए थे।

"तो सबसे पहले क्या करना है?" आशुतोष ने पूछा।

"24 घंटे पहले हम सवालों के बोझ से दबे हुए थे। पर अब हम सब अल्फ़ी की कहानी जानते हैं और उस कहानी के साथ ही हमारे बहुत से जवाब हमें मिल चुके हैं। अब आगे की लड़ाई के लिए हमें ये जानना जरूरी है कि... आखिर उस एडवर्ड ने अंकित के भाई के परिवार के साथ ऐसा क्यों किया था? और दूसरा सवाल कि... मुकुल के पिता मरने से पहले मुझे क्या बताना चाहते थे? इन दोनों सवालों के जवाब मिलने बहुत ही जरूरी हैं।" डॉ. अनंत ने उन सबसे कहा।
"और जवाब पाने के लिए क्या करना होगा।?" अंकित ने बेचैनी से पूछा।

"एक मिनट!" कहते हुए डॉ. अनंत अपनी मेज के पास गए और वहाँ पड़ा नोटपैड और एक पेन उठाकर ले आए। उन्होंने वो दोनों अंकित की ओर बढ़ाया।

"इसमें अपने सवाल लिखो और उस कागज को पकड़ो।" उन्होंने कहा।

अंकित ने देरी किए बिना वो नोटपैड लिया और अपना सवाल लिखने लगा। सवाल लिखते ही उसने कागज फाड़कर अपने पास रखा और वो नोटपैड डॉ. अनंत की ओर बढ़ा दिया। डॉ. अनंत ने भी कुछ लिखा और फिर नोटपैड से वो कागज फाड़कर अपने पास रख लिया।

"अंकित! अपने भाई की कोई चीज लाए हो... जैसा मैंने कहा था।" डॉ. अनंता ने पूछा। जवाब में अंकित ने जेब से अपने भाई की एक अंगूठी निकाली। डॉ. अनंत के इशारा करने पर मुकुल ने भी अपनी जेब से एक पेन निकाला और उनकी ओर बढ़ा दिया। डॉ. अनंत ने उस पेन को उस कागज पर रखा और फिर पेन के चारों ओर वो कागज लपेट लिया। अंकित ने भी बिल्कुल ऐसा ही किया और फिर उनकी ओर देखने लगा।

"अंकित! अब इस कागज को किसी एक फूल के बीच रख दो और तुरंत पीछे हट जाना।" डॉ. अनंत ने हिदायत देते हुए कहा।

उनकी बात सुनकर अंकित उस छद्म सतवृक्ष के पास गया। उसके पास जाकर वो उससे निकलने वाली रोशनी की तपिश साफ-साफ महसूस कर रहा था। उसने सबसे नजदीक के फूल पर निगाह डाली और फिर अपने हाथ में पकड़े हुए कागज को उस फूल के ऊपर रख दिया। उस कागज को फूल पर रखते ही सिर्फ उसी फूल में जोरों से कंपन होने लगी और फिर
वो फूल तेजी से झटके खाने लगा। अंकित तेजी से कुछ कदम पीछे हुआ। फिर देखते ही देखते वो खिला हुआ फूल सिकुड़ कर बंद होने लगा। दो पल बाद ही वो फूल फिर से कली बन चुका था, जिसके अंदर अंकित के भाई की अंगूठी अंकित के सवाल के साथ बंद हो चुकी थी। कुछ देर सब कुछ बिल्कुल ही शांत रहा। इस ख़ामोशी के बीच सभी ने एक-दूसरे की ओर देखा, जहाँ एक बेचैनी सभी के चेहरे पर नुमाया हो रही थी।

करीब एक मिनट की बेचैनी के बाद एक बार फिर से उस कली में कंपन होने लगी और फिर वो कली एक बार फिर से फूल बनकर खिल गई। सबने देखा कि अंकित का रखा हुआ मुड़ा-तुड़ा कागज वहाँ दिखाई दे रहा था।

"अंकित! उस कागज को लेकर आओ!" डॉ. अनंत ने अंकित से कहा।

उनका आदेश मिलते ही अंकित उस फूल के पास गया और उस मुड़े-तुड़े कागज को काँपती हुई

ऊंगलियों की मदद से उठा लिया। उसने अपने हाथ पर रखे उस कागज को कुछ देर घूरकर देखा और फिर वापस लौटकर उन सभी के पास आ गया।

"इसे खोलो!" डॉ. अनंत ने अगला आदेश दिया।

उनकी आवाज सुनकर अंकित ने कागज पर से नज़र उठाकर उनकी ओर सवालिया नज़रों से देखा। उसके साथ-साथ सभी की नजरें डॉ. अनंत की ओर उठी थीं।

"ऐसे क्या देख रहे हो? इसे खोलो! इसके अंदर तुम्हारे सवाल का जवाब है.... जिसका इंतजार हम सब भी कर रहे हैं।" सभी को अपनी ओर ताकते हुए देखकर डॉक्टर अनंत ने अंकित से कहा।
और ये सुनते ही अंकित ने कॉपते हुए हाथों से उस कागज को खोलना शुरू किया। उसे पूरी तरह खोलने से पहले अंकित ने अपने भाई की अंगूठी को उसके अंदर तलाशा... जो कि वहॉ दिखाई नहीं दे रही थी। अंगूठी को खोने के एहसास से वो एक बार फिर से बेचैन दिखाई देने लगा।

"हर जवाब की एक कीमत होती है अंकित। तुम कागज खोलो। मेरे ख्याल से अंगूठी से ज्यादा वो जवाब तुम्हारे लिए कीमती होगा।" डॉ. अनंत ने अंकित की बेचैनी को पढ़ते हुए कहा।

उनकी बात सुनकर अंकित ने एक गहरी सॉस ली। शायद वो अंगूठी उसने बड़ी ही जतन और प्यार से अपने भाई की याद के रूप में संभाल कर रखी थी। एक अफसोस... गुस्से का रूप लेकर उसके चेहरे पर उतर आया था। लंबी-लंबी सॉसे भरते हुए उसने उस कागज को खोला और फिर उसने उस कागज में जो देखा... उससे उसकी बेचैन ऑखें हैरानी की आखिरी हद तक फैलकर फट ही गई थीं। उसके होंठ कुछ कहने के लिए हिले पर... अल्फ़ाजों की दगाबाजी उन्हें जुंबिशें के अलावा और कुछ नहीं दे सकी। वो उस कागज पर नज़र डालें गुंग सा खड़ा रह गया। उसकी ऐसी हालत देखकर चैतन्य तेजी से आगे बढ़ा और उसके कंधे को झिंझोड़ा। अंकित ने किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं दी। बल्कि उसके हाथ और भी जोर से कॉपने लगे। चैतन्य ने उसके कॉपते हुए हाथों को देखा और उस कागज को अंकित के हाथ से छूटकर गिरने से पहले ही पकड़ लिया। हर किसी को हैरानी हो रही थी कि आखिर उस कागज में लिखा क्या था? चैतन्य ने एक सरसरी निगाह उस कागज पर डाली और अगले ही पल उसके जबड़े गुस्से की शिद्दत दिखाते हुए बुरी तरह से कस गए।

"क्या हुआ चैतन्य? क्या लिखा है उसमें?" डॉ. अनंत ने उतावलेपन से पूछा। बाकी सभी की नज़रें भी चैतन्य के पकड़े हुए कागज पर गड़ गई थीं... गोया उसने कागज नहीं कोई जिंदा बम पकड़ रखा हो।
"कुछ लिखा नहीं है। एक तस्वीर बनी है।" चैतन्य ने एक नज़र फिर उस कागज पर डालते हुए कहा।

"किसकी तस्वीर है?" अनामिका ने आगे बढ़कर पूछा।

"और किसकी? एक ही तो गुनहगार है। हम सभी का!" कहते हुए चैतन्य का रोम रोम सुलग रहा था।

"एडवर्ड!" डॉ. अनंत अनुमान लगाया, जिस पर चैतन्य ने सहमति में अपना सिर हिलाया और फिर उस कागज को उन सबके सामने खोल दिया। सभी अपनी ऑखें सिकोड़ कर कागज पर बने उस खूबसूरत नौजवान की तस्वीर को देख रहे थे। उन सभी ने एडवर्ड को हमेशा पिशाच के रूप में ही देखा था, इसलिए वो इस रूप में उसे पहचान नहीं सकते थे। ये एडवर्ड की ही तस्वीर थी और इसकी पहचान अनामिका और चैतन्य ही कर सकते थे.... क्योंकि एक वही दोनों ही थे जिन्होंने अतीत में एडवर्ड को आमने-सामने से देखा था।

"ये एडवर्ड है। बंदा तो बड़ा खूबसूरत है। कोई सोच सकता है क्या... कि इतनी खूबसूरती के नीचे इतनी बदसूरत्ती छिपी हुई हो सकती है।" वरुण ने बहुत ही कड़वे लहजे में उसकी तारीफ की थी।

"शुक्र मनाओ कि... अनामिका और चैतन्य अतीत में उसे देखकर आए हैं। वरना ये तस्वीर भी हमारे लिए फिर से एक पहेली ही बन जाती कि ये आखिर है कौन?" आशुतोष ने अपना सिर हिलाते हुए कहा।

"एक बात तो समझ में आई कि अंकित के भाई ने इसकी पूरी कुंडली निकालने की कोशिश की होगी। इसलिए इस एडवर्ड ने उनको जान से मारा। पर एक बात समझ में नहीं आ रही है कि इसने अंकित की भाभी
और भतीजी को क्यों गायब किया?" मुकुल ने उस तस्वीर को अपने हाथों में लेते हुए कहा।

"इस सवाल का जवाब मेरे पास है।" अंकित की ओर से आई इस आवाज से सभी ने उसकी ओर देखा। वो अपनी ऑखों में नमी के समंदर को समेटने की कोशिश करता हुआ खड़ा था।

"कैसा जवाब?" डॉ. अनंत ने पूछा।

"यही कि... यदि यही एडवर्ड है तो.... मैं इसकी एक और पहचान जानता हूँ। एक और पहचान.... जो हमारे सारे सवालों का जवाब है।" अंकित ने कॉपती हुई आवाज में कहा।

"एक और पहचान! इसका क्या मतलब है?" आशुतोष ने हैरानी जताते हुए पूछा।

"आप सबको शायद याद होगा कि जब मैंने अपनी कहानी आप सबको सुनाई थी तब उसमें एक और नाम का जिक्र आया था। ये वही हैं।" गहरी गहरी सॉसे लेता हुआ अंकित अब खुद भी थरथराने लगा था।

"कौन सा नाम?" याद करने की नाकाम कोशिश करते हुए चैतन्य ने पूछा। दूसरों के चेहरे में भी यही नाकामी दिखाई दे रही थी।

"वही जिसके भरोसे में मैं अपने भाई को खुद मौत के हाथों में सौंप आया था। आदित्य भैया!" चौंकाने वाले खुलासे के साथ अंकित अपना भीगा हुआ चेहरा हथेलियों में छुपा कर घुटनों के बल गिर गया और बुरी तरह सिसकने लगा। चैतन्य और वरुण तेजी से उसके पास गए और उसे कंधे से पकड़ कर संभालने लगे।
"आदित्य भैया! मतलब कि तुम्हारे पड़ोसी! जो तुम्हारे घर जाने के बाद तुम्हारे भैया के साथ अस्पताल में थे और अगले दिन अस्पताल की खिड़की के बाहर घायल अवस्था में मिले थे। वही आदित्य!" अनामिका ने अंकित कि उस खून भरी कहानी के उस हिस्से को पकड़ते हुए कहा।

हथेलियों में अपना चेहरा छिपाए हुए ही अंकित ने हॉ में अपना सिर हिलाया। अंकित की स्वीकारोक्ति के बाद सभी मुँह फाड़े एक दूसरे का चेहरा देखने लगे।

"मैंने पहले ही कहा था वह कमीना बहुत चालाक है। वो इतनी चालाकी से अपना हर खेल खेलता है कि कोई उसे पकड़ ही नहीं पाता। हमें अगर उससे अपनी लड़ाई लड़नी है और जीतनी है, तो हमें हर कदम

पर सावधान रहने की जरूरत है।" चैतन्य ने गुस्से में दॉत पीसते हुए कहा।

अंकित और फिर उसके बाद चैतन्य की बात सुनकर सबके चेहरे की गंभीरता और भी बढ़ गई थी। चैतन्य और अनामिका को इस बात का एहसास बहुत पहले ही हो चुका था और अब बाकियों को भी इस बात पर यकीन आ गया कि उनका दुश्मन बहुत ही चालाक था और हद दर्जे तक गिरा हुआ भी। पिछले 10 साल से अंकित अपने अंदर घुमड़ते इस सवाल का जवाब ढूंढ रहा था कि उसके भाई-भाभी की मौत क्यों और कैसे हुई और जो जवाब आज उन सभी के सामने आया.... उसने उन सभी के होश उड़ाकर रख दिए। आखिरकार आज अंकित और उसके परिवार के इन सबमे शामिल होने की वजह भी सामने आ गई। आज एक बार फिर से अंकित उसी दर्द से गुजरा था, जिसके जख़्मों को उसने कभी सूखने नहीं दिया था। पर इस बार दर्द पिछले बार के दर्द से भी ज्यादा गहरा था। क्योंकि इस बार उसके उन खुले जख्मों पर विश्वासघात का खंजर गहरे तक जाकर घुस गया था और विश्वासघात का ये गहरा जख़्म उसे सारी जिंदगी टीसने वाला था।
चैतन्य और वरूण ने बिलखते हुए अंकित को किसी तरह संभाला। आशुतोष ने पानी का गिलास लाकर उसे दिया, जिससे सबके कहने पर बड़ी ही मुश्किल से उसने अपने हलक़ से नीचे उतारा। अभी दिल और दिमाग को दुरुस्त रखना बहुत जरूरी था और इस बात का अहसास अंकित को अच्छी तरह से था... इसलिए अपने इस दर्द से उबरने में उसने ज्यादा वक्त नहीं लगाया। सभी अंकित की हालत से परेशान और दु:खी हो गए थे। मगर कोई ऐसा भी था जिसका दिमाग ये सब सुनने के बाद किसी और ही दिशा में चला गया था। करीब 15 मिनट बाद अंकित काफी हद तक खुद को संभाल चुका था।

"तुम ठीक हो?" आशुतोष ने उसकी हालत को जॉचते हुए पूछा। जवाब में अंकित ने नाक सुड़कते हुए हॉ में अपना सिर हिलाया।

"इस एडवर्ड ने तो सच में हर हद पार कर दी। इतनी हैवानियत आखिर कहॉ से लेकर आया वो?" चैतन्य ने अंकित के कंधे पर हाथ रखे हुए बहुत ही खिन्नता से कहा।

"नफ़रत है ही ऐसी चीज! किसी से कुछ भी करवा सकती है।" एक सर्द आवाज उन सभी के कानों से टकराई। सभी ने चौंककर चारों ओर देखा... मगर कोई भी नज़र नहीं आया।
"ये तो अल्फ़ी की आवाज थी। पर आई कहॉ से?" अनामिका ने घूमकर चारों ओर देखते हुए कहा।

"मुझे ढूंढ रही हो!" अल्फ़ी की नर्म सी आवाज़ आई और इस बार सभी ने सिर उठाकर ऊँचाई पर बने बड़े से गोलाकार रोशनदान की ओर देखा। वो वहॉ एक पैर नीचे की ओर लटकाए बैठा हुआ था। बातें करते हुए भी उसकी नज़र अपने हाथों की ओर थी, जिससे उसने किसी चमकीली सी चीज को पकड़ रखा था और वो उसे बहुत ही ध्यान से देख रहा था।

"तुम यहॉ कैसे आए?" डॉ. अनंत ने उसे इस तरह बैठा देखकर पूछा।

"मुझे कौन रोक सकता है भला?" इस बार अल्फ़ी ने डॉ. अनंत की ओर देखते हुए कहा।

डॉ. अनंत कुछ बोलने को ही थे कि अनामिका ने आगे बढ़कर उन्हें रोक दिया। डॉ. अनंत के उसकी ओर देखने पर उसने धीरे से नहीं का इशारा किया। अनामिका की इस हरकत पर अल्फ़ी की नज़र भी ठहरी थी। वो उसे ही देख रहा था, जब अनामिका ने एक चोर निगाह उस पर डाली और फिर तुरंत ही हटा भी ली। अल्फ़ी के होंठों के किनारे एक हल्की सी मुस्कुराहट के साथ फड़के कि वो उसकी परवाह करती है। अनामिका के हटते ही उसने भी अपना ध्यान फिर से अपने हाथों में पकड़ी हुई चीज पर

लगाया... मगर कान उन सभी की ओर खुले रखे।

"क्या इसके सामने बात करना सही होगा?" आशुतोष ने संशयपूर्वक कहा।

"हॉ! हम कर सकते हैं। हमारा और उसका दुश्मन एक ही है। शायद वो मदद ही करे हमारी।" अनामिका ने भरोसे भरी आवाज के साथ कहा।
"तुम्हें उस पर बहुत भरोसा है।" आशुतोष ने जैसे अनामिका के दिल को नापने की कोशिश में कहा। जवाब में अनामिका ने एक नज़र उन पर डालकर हटा ली। आशुतोष की नज़र हटकर चैतन्य की ओर गई, जो अनामिका को ही देख रहा था। आशुतोष की नज़रें खुद पर महसूस कर चैतन्य ने उनकी ओर देखा और फिर एकदम से ही अपनी नज़रें घुमा लीं। नज़रों की ये भागदौड़ आशुतोष को और भी उलझा गई थी। एक गहरी साँस के साथ उन्होंने एक बार फिर से अंकित की ओर देखा, जो अब सामान्य नज़र आ रहा था।

"ये आदित्य था कौन?" आशुतोष ने एकाएक ही सवाल किया।

"हमारे पड़ोस में पेईंग गेस्ट रहता था। मेडिकल का स्टूडेंट था।"अंकित ने अचानक पूछे गए सवाल पर संभलकर जवाब दिया।

"और... कबसे जानते थे उसे?" आशुतोष ने अगला सवाल किया।

"इस सवाल का मतलब?" वरूण ने ऑखों में सवाल भरकर पूछा।

"मतलब ये कि... घायल भाई या बेटे के पास किसी को अकेला छोड़ना... इतना भरोसा करना हफ्ते-दस दिन में तो संभव नहीं है। इतना भरोसा कमाने में बहुत समय लगता है।" आशुतोष ने कहा।

"जी हॉ! हम उसे... करीब 15-16 महीनों से जानते थे। मैंने ही उसे सबसे पहले उसके सामान के साथ देखा था... जब वो वहॉ रहने आया था। वो अकेला रहता था और वो सबसे बहुत ही सभ्य तरीके से पेश आता था। फिर धीरे-धीरे उसका हमारे घर आना-जाना शुरू हो गया और उसने सबके दिलों में घर कर लिया था। फिर..." इसके बाद अंकित ने बात अधूरी छोड़ दी।
"तो फिर वो एडवर्ड कैसे हो सकता है?" आशुतोष ने अंकित की सबसे पहली बात काटते हुए कहा।

"क्यों नहीं हो सकता?" मुकुल ने पूछा।

"शायद तुम लोग भूल गए हो कि छद्म पिशाच साधना खंडित होने की वजह से एडवर्ड शापित हो गया था। वो दस सालों तक सोता था और फिर बस दस दिनों के लिए जागता। तो फिर अंकित और उसकी फैमिली के साथ 15-16 महीने गुज़ारने वाली बात का कोई औचित्य ही नहीं है।" आशुतोष ने जैसे उन सभी को याद दिलाते हुए कहा और जिसे सुनकर सभी का दिमाग घूम गया। इतनी बड़ी बात तो... वो सभी भूल गए थे।

"पर मैं सच कह रहा हूँ। ये बिल्कुल वही है, जो हमारे साथ रहा करता था।" अंकित ने भी अपनी बात पर अड़ते हुए कहा।

"पर ये कैसे हो सकता है? इट्स नॉट पॉसिबल!" आशुतोष ने भी जोर डालते हुए कहा।

"क्यों नहीं हो सकता? बल्कि ऐसा ही हुआ है।" एक बार फिर से अल्फ़ी ने उन सब को टोकते हुए कहा।

"और वो भला कैसे?" चैतन्य ने पूछा।

चैतन्य का सवाल सुनकर अल्फ़ी एक बार खुलकर हँसा और फिर उसी रोशनदान पर अपने दोनों पैर लटका कर बैठ गया। अपने दोनों हाथों को टिकाकर वह नीचे सबके चेहरों को एक-एक करके देखने लगा, जो जवाब की आस में उसकी और कौतूहल से देख रहे थे। अल्फ़ी ने एक गहरी साँस भरी और फिर बोलना शुरू किया।
"तुम सबको लगता क्या है कि.... शापित होना आखिर है क्या? एक ऐसी जिंदगी जिसमें ना कोई खुशी होती है ना कोई उम्मीद होती है फिर भी आपको वो जीनी पड़ती है। एडवर्ड भी कुछ इसी तरह शापित है। तुम सब जानना चाहते हो कि उसके सोने और जागने का रहस्य क्या है? आखिर क्यों वो इस तरह होकर भी इतने समय तक अंकित और उसके परिवार के साथ रह सका। क्योंकि वो 10 साल उसका शरीर नहीं सोता था... उसकी शक्तियाँ सोती थीं। उसे कितनी नफरत थी ना.... आम इंसानों से... अपने से नीचे दर्जे के जादुई लोगों से। और इस श्राप ने क्या किया! उसे भी आम बना दिया। वो 10 साल जब उसकी पैशाचिक शक्तियाँ गहरी नींद सो जाती थीं... वो बिल्कुल आम सा इंसान बन जाता था और इससे बड़ा श्राप उसके लिए और क्या ही हो सकता था! हर 10 साल के बाद उसे 10 दिन का समय मिलता था ताकि वो अपनी गलती सुधार सके और पिछले 200 सालों से उसने यही किया।" अल्फ़ी ने एडवर्ड का रहस्य खोलते हुए कहा।

"तुम्हारा मतलब है कि पिछले 200 सालों से वो आम इंसानों की तरह जी रहा है और इसीलिए वो अंकित और उसके परिवार के साथ इतना समय बिता पाया।" आशुतोष ने हैरानी से फटी अपनी आँखों के साथ कहा।

"याह! यू गॉट द पॉइंट! बल्कि उसने तो अपना एक अलग ही समूह बना रखा है, जो उसकी शक्तियों की गैर मौजूदगी में उसका हर कार्य करते थे... करते हैं। बुराई की भी एक गजब बात होती है कि.... उसे साथी बड़े ईमानदार मिलते हैं। शायद हर 10 साल बाद उसकी पैशाचिक शक्तियों के जागने के डर से। जो भी हो। एडवर्ड तो एडवर्ड है। अपनी इस कमजोरी को भी अपनी ताकत बना लिया उसने। सदियों से वो इंसानों के बीच रहता है... उन्हें देखता है.... परखता है और फिर 10 सालों के बाद उन्हीं का शिकार करता है।" अल्फ़ी ने आगे की बात बताई।
"इसका मतलब गायब हुए मासूम बच्चों के पीछे तुम्हारा हाथ नहीं है।" अनामिका ने अपनी आंखों में चमक भरकर उसे देखते हुए कहा।

अनामिका की बात सुनकर अल्फ़ी ने उसकी ओर देखा और वो एक बार फिर जोर से ठहाका लगाकर हँसा। उसकी हँसी इतनी ठंडी थी कि... वहाँ मौजूद सभी लोगों को सिहरन महसूस होने लगी। खुलकर हँसने के बाद अल्फ़ी एकदम से चुप हुआ और अनामिका की आँखों में झांककर बोला, "नहीं! कभी भी नहीं! तुमसे वादा किया था ना... कि कभी कुछ ग़लत नहीं करूंगा और अल्फ़ी अपने वादे नहीं तोड़ता।"

अल्फ़ी की बात सुनकर कुछ पलों की गहरी खामोशी उस कमरे में छा गई। सभी की नज़रें उन दोनों पर ही टिकी हुई थीं, जो एकटक एक-दूसरे की ओर देख रहे थे। आशुतोष के गला खंखारने की आवाज ने अनामिका का ध्यान तोड़ा और अल्फ़ी ने भी अपनी जज़्बातों से भरती हुई आँखें घुमा लीं। उलझे हुए

आशुतोष ने चैतन्य की तरफ देखा.. जो सिर झुकाए दीवार से टिककर खड़ा था। उन तीनों के बीच क्या चल रहा था... ये आशुतोष की समझ से बाहर था।

"तो उसने ये सब किया क्यों? अंकित की भाभी और उनकी बच्ची को क्यों गायब किया? मतलब कि उन्हें मारना ही था... तो अंकित के भाई के साथ ही मार देता।" इस बार बहुत देर से खामोश बैठे डॉ. अनंत ने ख़ामोशी को तोड़ा। जवाब में अल्फ़ी ने अपने कंधे उचका दिए।

"मुझे पता नहीं। पिछले 25 सालों से मैंने उस पर नज़र नहीं रखी। इसलिए इस बीच उसने क्या किया... मुझे नहीं पता।" अल्फ़ी ने हाथ झाड़ते हुए कहा।

"क्यों? क्यों नहीं रखी?" अनामिका ने पूछा।
"क्योंकि तुम आने वाली थी और मेरे लिए ये ज्यादा मायने रखता था।" एक बार फिर से अल्फ़ी ने अनामिका के सामने अपना दिल खोलकर कहा और अनामिका उतनी ही बुरी तरह से झेंपी थी।

"सच कहूँ तो आज से पचास साल पहले कुछ ऐसा हुआ कि मेरा सारा ध्यान एडवर्ड से हट गया था। इसलिए इन पचास सालों में उसने क्या-क्या किया? मुझे इसकी ज्यादा जानकारी नहीं है।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से अपने हाथ खड़े कर दिए।

"मतलब कि फिर से ये सवाल... सवाल ही रह गया।" दीवार से टिके हुए चैतन्य ने अपनी मुट्ठियों को खोलते-बंद करते हुए देखकर कहा।

"इसका जवाब मेरे पास है।" एक और आवाज कमरे में गूंजी और धाड़ से दरवाजा खुलने की आवाज के साथ सभी ने उस ओर देखा। सृष्टि दरवाजे पर खड़ी थी। उसकी हालत सही नहीं लग रही थी। माथे से बहता खून झड़प और हाथापाई की गवाही दे रहा था। उसने अपने बाएँ हाथ को दाहिने हाथ से पकड़ रखा था। वो लड़खड़ाते हुए अंदर आई और दरवाजा बंद किया।

"सृष्टि!" उसकी खराब हालत पर चैतन्य परेशान सा उसकी ओर दौड़ा। वरूण और मुकुल भी उसके पीछे गए। रोशनदान पर पैर लटकाए बैठा अल्फ़ी भौंहें चढ़ाए हुए उन सभी को देख रहा था। चैतन्य ने सृष्टि को संभाला और उसे कोने में रखे सोफे के पास ले गया। वरूण तुरंत ही उसकी चोटों को साफ करने लगा।

"इतनी चोट कहाँ से आ गई तुम्हें? हमें लग ही रहा था कि तुम मुसीबत में हो।" आशुतोष ने उसे चिंता से देखते हुए कहा। डॉ. अनंत भी उसके साथ खड़े सृष्टि को ही देख रहे थे।
"मैं प्रोफेसर साहनी के पीछे गई थी। पकड़ी गई।" सृष्टि ने सिसकारी भरते हुए कहा, जब वरूण ने उसके बाएँ हाथ की कलाई पकड़ी।

"तुम्हें तो बहुत चोट लग गई है। तुमने हमें खबर क्यों नहीं की?" उसकी सिसकारी सुनकर डॉ. अनंत ने घबराते हुए कहा।

"आप लोगों को बुलाती तो आप लोग भी फँस जाते। इसलिए किसी तरह खुद को निकालकर यहाँ तक आई हूँ। लड़ाई अब खुले मैदान में आ चुकी है।" सृष्टि ने अपनी आँखें भींचकर कहा। साफ दिखाई दे रहा था कि वो बहुत ही तकलीफ़ में थी।

"हड्डी खिसक गई है।" वरुण ने उसकी सूजी हुई कलाई को देखते हुए कहा और फिर तेजी से बाहर जाने लगा।

"मैं मदद करूं!" मदद भरी एक आवाज सुनाई दी और सभी ने उस तरफ देखा। सुरक्षात्मक घेरे के अंदर मौजूद परिधि उन सभी की ओर देख रही थी।

"जरूरत नहीं है।" वरूण ने थोड़े रूखे लहजे में कहा।

"पर मैं इसे तुरंत फिक्स कर सकती हूँ। आपको इसमें समय लगेगा और वो आप सबके पास नहीं है।" परिधि ने वरूण को टोका।

"पर..." वरूण ने कहना चाहा... जिसे चैतन्य की आवाज ने टोक दिया।

"वो सही कह रही है।" चैतन्य ने परिधि की ओर देखते हुए कहा।

"थैंक्यू! मैं कहीं नहीं जाऊंगी। बस आप मुझे कुछ पत्ते लाकर दे दीजिए।
मैं यहीं बैठकर दवा बना देती हूँ।" परिधि ने उनके लिए आसानी करते हुए कहा।

"तुम सृष्टि को देखना चाहोगी।" चैतन्य ने पूछा, जिस पर परिधि ने हॉ में सिर हिलाया। उसकी हॉ सुनकर चैतन्य उसके पास आया और उसे उस घेरे से निकालकर सृष्टि के पास ले गया। सबके बीच झिझकती हुई परिधि ने सृष्टि के ज़ख्मों पर नज़र डाली और फिर कुछ औषधीय पत्तियों के नाम और मात्रा बताई। चैतन्य और वरूण तेजी से घर के पीछे बने ग्रीन हाउस की ओर भागे। इस बीच परिधि ने पास रखे इमामदस्ते को, जिस पर डॉ. अनंत दवाईयॉ कूटते थे... में पानी की कुछ बूंदें डाली। उसके बाद उसने अनामिका से किचन से कुछ सामान मंगवाया। जल्द ही चैतन्य, वरूण और अनामिका सारी चीजें ले आए। सभी चुपचाप खड़े परिधि के तेज-तेज चलते हाथों की ओर देख रहे थे। वो बड़ी ही सफाई से सभी सामग्रियों को नाप-जोख कर उस इमामदस्ते में डाल रही थी। एक नियत प्रक्रिया से गुजरते हुए उस इमामदस्ते में एक हरे रंग का पेस्ट तैयार हो चुका था।

"बन गया!" वरूण ने पूछा।

"अभी नहीं!" कहते हुए परिधि, सृष्टि के पास गई और फिर उसके ज़ख़्म से उसके खून के कुछ सूख रहे क़तरे उठाए और उस पेस्ट में मिला अच्छी तरह से मिला दिया।

"ये क्या था?" मुकुल फुसफुसाया।

"आई थिंक... कस्टमाइज्ड मेडिसिन!" वरूण ने भौंहें उठाकर उसकी ओर देखकर कहा।

"ओह!" मुकुल चिहुंका।
दवा के तैयार होते ही परिधि, सृष्टि के पास गई और उसके सभी ज़ख्मों पर उस पेस्ट को लगा दिया। कलाई में उस पेस्ट को लगाने के बाद उसने वहॉ एक पट्टी बॉध दी। उस पेस्ट के लगते ही सृष्टि को अपने जख्मों में एक अजीब सी सनसनाहट महसूस होने लगी और फिर उसे अपनी कलाई की हड्डी में कुछ हरकत सी महसूस हुई, जो बिना किसी शक तकलीफदेह थी। तकलीफ की वजह से सृष्टि ने साथ बैठी अनामिका को दबोच लिया था।

"थोड़ी तकलीफ़ होगी... पर कुछ ही देर में सब ठीक हो जाएगा। शुक्र है कि हड्डी टूटी नहीं है। वरना परेशानी होती।" परिधि ने सृष्टि को हिम्मत देते हुए कहा। इसके बाद वो उठी और एक गिलास पानी में उसे पेस्ट की बहुत थोड़ी सी मात्रा, हल्दी और शहद को मिलाकर सृष्टि की ओर बढ़ाया।

"इसे एक बार में पी जाओ! दर्द कम होगा।" परिधि ने कहा।

दर्द से लाल हो चुके चेहरे के साथ सृष्टि ने उस गिलास की ओर देखा और फिर परिधि पर एक नजर डालकर उस गिलास की दवा अपने हलक के नीचे उतार दी। उसे दवा के पीते ही एक बार फिर उसके सारे शरीर में एक झनझनाहट सी हुई और फिर अगले ही पल उसके शरीर का सारा दर्द धीरे-धीरे उड़न छू हो गया। परिधि के इलाज शुरू करने के 15 मिनट बाद ही सृष्टि पूरी तरह से ठीक हो चुकी थी। उसने अपनी कलाई पर बंधी पट्टी को खोला और अपनी उस कलाई को गोल-गोल घुमाने लगी। उसकी चोट पूरी तरह से ठीक हो चुकी थी।

"माई गॉड परिधि! तुम्हारे हाथ में सचमुच जादू है।" सृष्टि ने अपने सारे जख्मों को छूते हुए कहा। सृष्टि की हैरानी देखकर बाकी सभी की प्रशंसा भरी नज़रें भी परिधि की ओर उठीं और पहली बार परिधि को अपने इस हुनर पर गर्व हुआ था। डॉ. अनंत ने आगे बढ़कर परिधि के सिर पर प्यार से हाथ फेरा।
"बेवकूफ थे वो लोग... जो तुम्हारे हाथ के जादू को समझ नहीं पाए। तुम यकीनन एक बेहतरीन जादूगरनी हो।" डॉ. अनंत में परिधि को मुस्कुरा कर देखते हुए प्यार से कहा। उनका प्यार देखकर एक बार फिर परिधि की ऑखें भर आई थीं। अपनी उन्हीं भीगी हुई चोर नज़रों से परिधि ने मुकुल की ओर देखा, जो अभी भी उससे कुछ ज्यादा प्रभावित नज़र नहीं आ रहा था। उसकी बेरूखी से परिधि का दिल बैठ गया। वो चुपचाप मुड़ी और एक बार फिर सुरक्षात्मक घेरे के अंदर जाकर गीता के साथ बैठ गई।

"अब ठीक हो!" चैतन्य ने सृष्टि के कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा, जिस पर सृष्टि ने हॉ में सिर हिलाया।

"तो फिर बताओ कि हुआ क्या है? तुम कल भी हमें कुछ बताने वाली थी.... जो कल रात हुई सारी उठा पटक की वजह से बतानी रह गई।" आशुतोष में देर ना करके मुद्दे पर आते हुए कहा।

"मैंने उस पिशाच को कल प्रोफेसर साहनी के घर में देखा था और यही बात मैं आप लोगों को बताना चाहती थी। पर उस समय हमें अल्फ़ी के बारे में कुछ पता नहीं था...तो मैंने उसे अल्फ़ी ही समझा था। वो दोनों अपनी किसी योजना के बारे में बातें कर रहे थे।" सृष्टि ने पिछली रात की बातें याद करते हुए कहा।

"कौन सी योजना?" आशुतोष ने पूछा।

"उसके बारे में तो कल उन्होंने खुलकर कोई बात नहीं की। पर आज यहॉ के लिए निकलते समय मैंने एक बार फिर प्रोफ़ेसर साहनी को उस तरफ जाते हुए देखा... जहॉ कल वो उस पिशाच से मिले थे।" सृष्टि ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

"फिर!" मुकुल ने उत्सुकता से पूछा।
"कल रात जो कुछ भी हुआ... उससे वो पिशाच बहुत ज्यादा बौखला गया है और इसी बौखलाहट में वो अपने सारे राज खोलता चला गया, जिसे अच्छी किस्मत से मैंने सुन लिया।" सृष्टि ने माहौल की गर्माहट बढ़ाते हुए कहा।

"उसने अंकित के भाई के बारे में कुछ कहा।" वरूण ने सृष्टि की ओर झुकते हुए कहा।

"और भी बहुत कुछ।" सृष्टि बोली।

"और वो क्या" अनामिका ने पूछा।

"अंकित ने बताया था कि उसकी भाभी कुछ गलत तंत्र-मंत्र और सिद्धियों में उलझ गई थी। उन्हें बहकाने का काम उसी आदित्य उर्फ एडवर्ड ने किया था। और तो और...." कहते कहते सृष्टि एक झिझक के साथ रुक गई।

"और क्या?" अंकित ने अपनी बढ़ी हुई धड़कनों के साथ पूछा।

"अंकित! वो बच्ची.... उस एडवर्ड की थी।" सृष्टि ने एक और बड़ा धमाका करते हुए कहा और यह सुनते ही अंकित लड़खड़ाकर जमीन पर गिर पड़ा। अंकित के पास खड़े मुकुल ने एक बार फिर उसे संभालने की कोशिश की।

"संतान की चाहत में भाभी इतना गिर जाएगी मैंने नहीं सोचा था।" अंकित ने कॉपती हुई आवाज में कहा।

"अंकित! उस एडवर्ड ने तुम्हारी भाभी के साथ भी धोखा ही किया था।
तुम्हारी भाभी को इस बारे में कुछ भी नहीं पता था। तुम्हारे भैया जब बच्चों के गायब होने की जांच कर रहे थे उसी समय तुम्हारी भाभी की डिलीवरी डेट भी आ गई थी। वो अपने काम में इतने ज्यादा मशरूफ थे कि उन्हें इस समय एक मदद की जरूरत थी। आदित्य ने तब तक तुम्हारे पूरे परिवार को अपने भरोसे में ले लिया था। जब वो मदद लेने के लिए आदित्य उर्फ एडवर्ड के पास गए थे, उसी दिन तुम्हारे भैया के हाथ में वो सारे सबूत आए थे, जिससे उन्हें एडवर्ड उर्फ आदित्य की सच्चाई पता चल गई। इसके बाद तो वो बहुत डर गए थे क्योंकि एडवर्ड भी जान चुका था कि तुम्हारे भैया को उसकी सच्चाई पता चल चुकी है। उसी शाम तुम्हारी भाभी को डिलीवरी के लिए एडमिट किया गया और फिर दो दिन बाद जब उनकी अस्पताल से छुट्टी हुई तो तुम्हारे भैया तुम्हारी भाभी और बच्ची को उस एडवर्ड से बचाने के लिए ही कहीं और ले जा रहे थे। मगर पहले से तैयार एडवर्ड ने रास्ते में ही उन पर हमला कर दिया। उस समय वो अपनी पैशाचिक शक्ति के साथ था। तुम्हारे भैया के लिए उसका सामना करना कहीं से भी आसान नहीं था। उन्हें मौत के दरवाजे में छोड़कर एडवर्ड तुम्हारी भाभी और बच्ची को लेकर चला गया चला गया। उसे लगा था कि तुम्हारे भैया वहीं दम तोड़ देंगे। मगर किस्मत से उन्हें मदद मिल गई और वह अस्पताल पहुँच गए। एडवर्ड जानता था कि अगर हमारे भैया की जबान खुली तो उसका सच सबके सामने आ जाएगा। इसलिए उसे रात उसने तुम्हारे भैया को मारने की कोशिश की, मगर तुम्हारे चिल्लाने की वजह से ही वो कामयाब नहीं हो सका। इसके बाद वो आदित्य के रूप में वहॉ आया और फिर उसने तुम्हारे भैया को बहुत ही दर्दनाक मौत दी। वो उस समय इन सब झमेलों में फंसना नहीं चाहता था, इसलिए उसने खिड़की के नीचे गिरकर अपने घायल होने का नाटक किया।" सृष्टि ने सारी कहानी सबके सामने खोलते हुए कहा।

"ओह गॉड! पर वो खुद को छिपा क्यों रहा था? और अंकित की भाभी और बच्ची को वो कहॉ ले गया?" अनामिका ने पूछा।
"क्योंकि वो उसकी पिशाच साधना की नौंवी रात थी। उसने... दसवें दिन.... उस बच्ची की... बलि दे

दी।" सृष्टि ने बड़ी ही मुश्किल से कॉपती हुई आवाज में कहा।

"बलि... दे दी! मतलब?" चैतन्य ने सदमे भरी आवाज में पूछा।

"उसे अपनी पिशाच साधना पूरी करने के लिए खुद का ही खून चाहिए था। शापित होने से पहले वो अपनी वंश बेल से किसी की भी बलि दे सकता था, मगर... शापित होने के बाद उसे अपना ही खून चाहिए था और... इसी वजह से वो हर साल एक लड़की या औरत को अपने साथ ले जाता था। मगर अल्फ़ी की वजह से वो कभी कामयाब नही हो सका। मगर इन आखिरी बीस सालों में अल्फ़ी का ध्यान उसकी ओर से हट गया था। उसके लिए भी आखिरी दो मौके ही बचे थे। इसलिए दस साल पहले उसने अंकित की भाभी का इस्तेमाल किया। वो जानता था कि इन 10 दिनों में अल्फ़ी का ध्यान उसकी ओर ही होगा। पिछली बार वो वरूण की मॉ को सबको धोखे में रखने के लिए ही साथ ले गया था, जबकि उसने अपना दांव बहुत पहले ही खेल दिया था। अल्फ़ी या किसी को भी इसका शक नहीं था कि शुद्ध रक्त का पैरवीकार एडवर्ड अपना मकसद पूरा करने के लिए एक साधारण इंसानी औरत को हथियार बनाएगा। उसने उसे बच्ची की बलि चढ़ा कर पिछली बार ही अपनी साधना पूर्ण कर ली है और अब वो सिर्फ और सिर्फ बदला लेने के लिए वापस आया है।" सृष्टि ने एक आह के साथ अपनी बात खत्म की।

लगातार हो रहे दिमागी धमाकों के कारण अब सभी का दिमाग भन्नाने लगा था। वो सब हर बार एडवर्ड को नीचता की जिस गहराई में पाते थे, अगली बार वो खुद को उससे भी ज्यादा गहराई में खुद ही धकेल देता था। वो नफ़रत का एक ऐसा नासूर बन चुका था, जिसके लिए अपनी ही संतान का दर्द कोई मायने नहीं रख पाया। सच तो ये था कि दूसरों की जिंदगी से खेलते खेलते वो अपनी खुद की जिंदगी को नरक बना चुका
था। वो अधम(नीच) नफरत में पूरी तरह अंधा होकर नीचता की उस गहराई में पहुँच चुका था, जहॉ नीचता भी अपना अर्थ खो देती है।

"इसके अलावा और कुछ कहा उसने! इस बार क्या करने वाला है वो?" अनामिका ने सृष्टि से पूछा।

"उसने आज प्रोफेसर साहनी के सामने अपनी एक नई मांग रखी है और ये भी कहा है कि इस मांग के पूरी होने के बाद वो प्रोफेसर साहनी को आजाद कर देगा।" सृष्टि ने बताया।

"और मांगा क्या है उसने?" चैतन्य ने पूछा।

"इस बार.... उस पिशाच को... अनामिका चाहिए।" सृष्टि ने अपनी कातर निगाहें अनामिका की ओर घुमाते हुए कहा और ये सुनते ही सभी के चेहरों का रंग एक साथ उड़ गया। वहीं ये सुनकर ऊपर चुपचाप बैठे हुए अल्फ़ी की ऑखें सिकुड़ी थीं।

"तो क्यों ना उसकी ये मांग पूरी की जाए!"

"उसने आज प्रोफेसर साहनी के सामने अपनी एक नई मांग रखी है और ये भी कहा है कि इस मांग के पूरी होने के बाद वो प्रोफेसर साहनी को आजाद कर देगा।" सृष्टि ने बताया।

"और मांगा क्या है उसने?" चैतन्य ने पूछा।

"इस बार.... उस पिशाच को... अनामिका चाहिए।" सृष्टि ने अपनी कातर निगाहें अनामिका की ओर घुमाते हुए कहा और ये सुनते ही सभी के चेहरों का रंग एक साथ उड़ गया। वहीं ये सुनकर ऊपर चुपचाप बैठे हुए अल्फ़ी की ऑखें सिकुड़ी थीं।

"तो क्यों ना उसकी ये मांग पूरी की जाए!"

और एडवर्ड की इस नई बेतुकी मांग पर भौंचक खड़े सभी लोगों का ध्यान इन शब्दों की ओर गया। सभी ने आवाज की दिशा में देखा। अनामिका अपने दोनों हाथ सामने बांधे खड़ी उन सभी को पूरी गंभीरता से देख रही थी।
"पागल हो गई हो! क्या अंट-शंट बोल रही हो?" एडवर्ड की हिम्मत पर बिफरा हुआ चैतन्य, अनामिका पर भड़ककर बोला, जबकि ऊपर पैर लटकाए बैठा हुआ अल्फ़ी अनामिका के चेहरे को जॉच रहा था।

"ठीक कह रही हूँ! उसे फँसाने के लिए कहीं तो चारा डालना होगा। तुम्हें क्या लगता है? तुम सब उसे ललकारोगे और वो हथियारबंद होकर तुम सबके सामने लड़ने के लिए आ जाएगा।" अनामिका ने चैतन्य की तिलमिलाहट को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा।

"और तुम्हें लगता है कि हम सब तुम्हारी ये बचकानी सी बात मान लेंगे।" कमर पर हाथ रखे चैतन्य सभी के चेहरों को देखते हुए बोला, जहॉ सभी उससे सहमत नज़र आ रहे थे।

"वो तो माननी ही पड़ेगी। शायद भूल गए हो... आई एम द लीडर!" अनामिका ने ऊंगली अपनी ओर करते हुए चैतन्य को याद दिलाने वाले अंदाज में कहा।

"ओह! और तुम्हें लगता है कि मिशन कंप्लीट करने के लिए बस एक लीडर की जरूरत होती है। टीम मेंबर तो फोटो क्लिक करवाने के लिए होते हैं! हैं ना!" चैतन्य उसके चेहरे पर झुकते हुए तैश में बोला।

चैतन्य के बिगड़ते तेवर देखकर अनामिका के चेहरे के हाव-भाव भी बिगड़े ही थे कि तभी आशुतोष लपककर उनके पास आया और चैतन्य को अपने पास खींचकर उसके कान में फुसफुसाया, "क्या कर रहे हो? औरत जात से पंगे नहीं लेते भाई। तब तो और भी नहीं... जब वो तुमसे ज्यादा स्मार्ट और

समझदार हो।"

आशुतोष की बात सुनकर चैतन्य ने नाक चढ़ाए उनकी ओर होंठ भींचकर
देखा और भड़की हुई आवाज में कहा, "वाह! आपको उसे टोकना चाहिए तो उल्टा मुझे ही समझा रहे हैं। नहीं... कहना क्या चाहते हैं आप? गिफ्ट रैप करके उस एडवर्ड के हाथों में देकर आएँ अनामिका को। उस कमीने को जानते नहीं हैं अभी आप लोग। हम लोगों ने झेला है उसे। पता नहीं ऐसा क्यों लगता है कि.... वो सबके दिमाग पढ़ सकता है। हमेशा चार कदम आगे की सोचता है!"

"हॉ तो बैठे रहें ऐसे ही। कहीं ना कहीं से तो आगे बढ़ना ही पड़ेगा ना!" अनामिका भी उतनी ही भड़की हुई आवाज में बोली।

"तुम तो चुप ही रहो। तुम्हें तो कुछ याद होगा नहीं, जब उसने तुम्हें पकड़ लिया था। नशे में जो झूम रही थी तुम। पर मैंने देखा था... अल्फ़ी ने देखा था। उस समय तुम्हें बचाने के लिए... बस तुम्हारे लिए ही ये... ये अल्फ़ी पूरी तरह से पिशाच बन गया। और दूसरी बार... दूसरी बार तो सीधा खंज़र घुसा दिया था उसने तुम्हारी बांह में। तुम उसकी ओर से इतनी लापरवाह कैसे हो सकती हो।" चैतन्य पूरी ताकत से चिल्लाते हुए बोला। अनामिका के एडवर्ड के पास जाने की बात सुनकर ही वो पूरी तरह से उखड़ गया था।

और फिर सारे कमरे में सन्नाटा छा गया। अल्फ़ी के पिशाच बनने वाली बात सुनकर सभी की नज़रें ऊपर बैठे अल्फ़ी की ओर उठ गई और वो... 200 साल पुरानी उस बात को याद कर एक बार फिर से लाल होने लगा था।

"ओए चमगादड़! कम से कम तुम तो बोलो! उस समय तो बड़े ज्वालामुखी बने हुए थे... आज क्या हुआ?" चैतन्य ऊपर बैठे अल्फ़ी की ओर देखकर उसे उकसाते हुए चिल्लाया, जिस पर अल्फ़ी ने अपनी सुलगती हुई ऑखें उसकी ओर डालीं। पर उसने कुछ कहा नहीं। उसकी भी ऐसी ढीली प्रतिक्रिया देखकर चैतन्य ने हैरानी से अपने हाथ उठाकर
झटके।

"ठीक है! करो जो करना है। लेकिन मैं पहले ही बता दे रहा... अगर उसने अनामिका को ऊंगली भी लगाई तो उसके बाद कोई मुझे दोष नहीं देगा।" चैतन्य अंगारे उगलता हुआ बोला। पिछली बार अनामिका को लेकर बोले गए एडवर्ड के शब्द उसे लगातार सुलगा रहे थे।(भाग - 119)

"ऐ भाई! शांत रहेगा तू! भड़क काहे रहा है इतना! उसे ऐसे ही भेज देंगे क्या? अरे! प्लानिंग नाम की कोई चीज होती है कि नहीं इस दुनिया में। अनामिका सही कह रही है। वो अल्फ़ी को हराने की जिद में अंधा हो चुका है और अब हमें उसकी इसी कमज़ोरी पर वार करना होगा।" वरूण ने चैतन्य की तिलमिलाहट पर आपत्ति जताते हुए अनामिका का समर्थन किया। चैतन्य ने कुढ़कर उसकी ओर देखा और फिर बाकियों की ओर नज़र दौड़ाई, जहॉ उसने खुद को अकेला पाया। आखिरकार हथियार डालते हुए वो पीछे हट गया और सबसे अलग एक कोने में जाकर खड़ा हो गया। अनामिका ने उसे थोड़ी फिक्र से देखा, जिस पर आशुतोष उसे सांत्वना देते हुए चैतन्य की ओर बढ़ गया।

सीने पर हाथ बांधे खड़े चैतन्य ने जब आशुतोष को अपने पास आते देखा तो उसने अपने हाथ खोले और खुद को सहज करने की कोशिश करने लगा। हालांकि वो अभी भी आशुतोष से नज़रें चुरा रहा था।

"हॉ तो भई! बात क्या है? क्यों इतना भड़क रहे हो?" आशुतोष ने चैतन्य की ओर देखते हुए पूछा।

"मुझे जो कहना था... वो मैं कह चुका।" चैतन्य ने उखड़ते हुए लहजे में कहा।

"ठीक है! जो कहना था कह चुके! अब जो नहीं कह पाए.... वो मुझे
बताओ।" आशुतोष ने भी उसे कुरेदने की कोशिश की।

"क्या सुनना चाहते हैं आप? कि मैं इतना ओवर रिएक्ट क्यों कर रहा हूँ? अनामिका पर उस एडवर्ड की गंदी निगाहें आपने नहीं... मैंने देखी हैं। अभी भी वो याद करके मेरा खून खौल रहा है।" चैतन्य दॉत पीसते हुए बोला।

"तुम ज्यादा सोच रहे हो चैतन्य!" आशुतोष ने उसे टोकते हुए कहा।

"नहीं! मैं सही सोच रहा हूँ। वो एडवर्ड, अल्फ़ी के लिए अपनी नफरत में इतना अंधा हो चुका है कि.... बस उसे तकलीफ पहुँचाने के लिए वो... अनामिका को तकलीफ देना चाहता है। एडवर्ड अच्छी तरह जानता है कि अनामिका के अंदर हेममाया का अंश है, जिसकी वजह से अल्फ़ी, अनामिका को लेकर बहुत ज्यादा जज्बाती है। एडवर्ड को ये भी अच्छी तरह पता है कि वो अल्फ़ी को बस अनामिका के जरिए ही तोड़ सकता है। बस इसलिए मुझे अनामिका के लिए फिक्र हो रही है।" चैतन्य ने अपनी बात रखते हुए कहा।

"अच्छा! बस इतना ही है.. या फिर कुछ और भी है?" आशुतोष ने चैतन्य की ऑखों में झांकते हुए पूछा।

"और... और क्या हो सकता है?" चैतन्य ने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ कहा।

"वही.... जो कुछ दिन पहले हुआ था। बस उस समय वरूण था... और अभी... अल्फ़ी है। है ना!" आशुतोष ने उसकी दुखती रग को पकड़ते हुए कहा, जवाब में चैतन्य ने अपना चेहरा दूसरी ओर फेर लिया।

"अनामिका ने कुछ कहा तुमसे?" आशुतोष ने पूछा।
"हम्म! दोपहर में कुछ अस्पष्ट से इशारे किए थे। अलग होने के... दूर जाने के!" चैतन्य ने बड़ी ही मुश्किल से कहा।

"और तुमने क्या कहा?" आशुतोष ने फिर से पूछा।

आशुतोष का सवाल सुनकर चैतन्य ने एक गहरी साँस भरी और बोला, "यही कि... मैं उसके हर फैसले में उसके साथ रहूँगा।"

"तो फिर साथ रहो ना! उसकी बात क्यों काट रहे हो तुम? वो एक समझदार लड़की है चैतन्य। उससे प्यार करते हो तो उसकी और उसके फैसलों की इज्जत भी करो। कहीं ऐसा ना हो... कि तुम्हारी इन हरकतों की वजह से वो तुम्हारे लिए उदासीन हो जाए। जब तुम यहॉ अचानक आ गए थे...तब उसने मुझसे कहा था कि वो अभी ऐसे फैसले लेने के लिए तैयार नहीं है। इन सब उलझनों से निकलने के बाद ही वो कुछ सोच सकती है। पर पता नहीं क्या हुआ कि उसने तुम्हारा हाथ थाम लिया। प्लीज़! उसे

अब और मत उलझाओ! वो सही-गलत में से सही चुन सकती है।" आशुतोष ने चैतन्य को गहराई से समझाते हुए कहा।

"पर बात सही-गलत की है ही नहीं। सही और ज्यादा सही की है।" चैतन्य ने एक आह भरकर कहा।

"और तुम्हें ऐसा लगने लगा है कि वो ज्यादा... तुम नहीं अल्फ़ी है।" आशुतोष ने एक बार फिर से उसका दिल कुरेदा।

"आप जानते नहीं हैं आशुतोष जी! अनामिका के अंदर की हेममाया... अल्फ़ी की छोटी से छोटी तकलीफ़ में भी जज़्बाती होने लगती है। उन जज़्बात भरी नज़रों से जब वो उसकी ओर देखती है... तो वो मुझे... खुद से ही बहुत दूर नज़र आती है।" चैतन्य ने भारी होते गले से कहा।
"बस... इसीलिए... इसीलिए अनामिका अभी इन सबसे दूर रहना चाहती थी। ऐसे नाज़ुक समय में तुम खुद भी भटक रहे हो और उसे भी भटका रहे हो। जब हर फैसले में साथ रहने का वादा किया है... तो वो वादा निभाओ। कम से कम ये... उस अल्फ़ी से सीखो। प्यार में इंतजार करना.... और प्यार का इंतजार करना! अनामिका का दो महीने इंतजार करने में ही तुम्हारी ये हालत हो गई। जरा सोचो! अल्फ़ी ने तो दो सौ साल इंतजार किया है। कुछ हक़ तो उसके भी बनते हैं। हैं ना!" आशुतोष ने एक बार फिर से चैतन्य को समझाते हुए कहा और इस बार चैतन्य ने अपनी ऑखों में अजीब से भाव भरकर आशुतोष की ओर देखा।

"अब ऐसे क्या देख रहे हो? अगर बात समझ में आई, तो उसे अभी के लिए उठाकर रख दो। चलो! अभी बहुत ज्यादा जरूरी काम हैं हमारे पास... तुम्हारे प्रेम-विलाप के अलावा।" आशुतोष ने चैतन्य के सिर पर चपत लगाते हुए कहा, जिस पर चैतन्य ने आह के साथ अपना सिर सहलाया।

"आशुतोष जी! जल्दी आइए!" अनामिका की उत्साह भरी आवाज आई।

"चलो! मैदान में उतरने से पहले बहुत सी प्लानिंग और तैयारियॉ करनी है। देखो जरा! उन्होंने सतवृक्ष से अगला जवाब भी पा लिया है शायद। अभी ये ज्यादा जरूरी है।" आशुतोष ने उन सभी की ओर इशारा करते हुए कहा, जो सतवृक्ष के पास खड़े एक कागज़ को घूर-घूर कर देख रहे थे।

आशुतोष के आगे बढ़ते ही चैतन्य ने एक बार फिर से एक गहरी साँस भरी और उनकी ओर चल दिया।

"दिमाग ठीक हुआ जनाब का? क्या कह रहा था आपसे?" आशुतोष के पहुँचते ही अनामिका ने सवाल दागे।
"कुछ नहीं! यही बता रहा था कि... उससे ज्यादा प्यार तुम्हें कोई और नहीं दे सकता।" आशुतोष ने भी लापरवाही से जवाब दिया।

"हॉ! वो तो देखा मैंने! यहॉ सबका दिमाग खराब हो गया है।" अनामिका ने कहा। उसकी आवाज में चिढ़ घुली हुई थी। उसी समय चैतन्य भी उन दोनों के पास आकर खड़ा हो गया, जिसे अनामिका ने नज़रअंदाज़ कर दिया।

"तो! कुछ और पता चला क्या?" आशुतोष ने बात बदलते हुए कहा।

"इधर आओ आशुतोष! ये देखो!" थोड़ी ही दूर खड़े डॉ. अनंत ने उसे आवाज दी। उन्होंने अपने हाथों में

एक कागज पकड़ रखा था। आशुतोष तेजी से उनके पास गया और फिर उस कागज पर नज़र डाली। उस पर नज़र पड़ते ही आशुतोष का मुँह खुला का खुला रह गया।

"हे भगवान! किस सवाल के जवाब में ये तस्वीर आई है?" आशुतोष ने पूछा।

"मुकुल को जो कागज मिले थे और जिन्हें हम पढ़ नहीं पाए।" डॉ. अनंत ने कहा।

"और इस तस्वीर का मतलब?" आशुतोष ने पूछा।

"बस इसी से ही उस पिशाच को नियंत्रित किया जा सकता है।" जवाब मुकुल ने दिया।

"पिशाच का खंज़र!" तस्वीर पर नज़र जाते ही चैतन्य के मुँह से निकला।
"पर ये खंज़र तो गायब हो गया है ना! आपने ही बताया था।" आशुतोष की चिंता भरी आवाज आई।

"हॉ! एक और बड़ी समस्या! एक तो समय नहीं है हमारे पास। अब इसे कहॉ ढूंढेंगे।" डॉ. अनंत ने सिर अफसोस से हिलाते हुए कहा।

"क्या इसके बिना काम नहीं हो सकता।" अपने दर्द से उबर चुके अंकित ने पूछा।

"नहीं! पिशाच को खत्म करना है तो इसकी जरूरत पड़ेगी ही! इसके बिना उस छद्म पिशाच से नहीं भिड़ सकते हम! नीचे साफ-साफ लिखा है।" मुकुल ने इंकार में सिर हिलाते हुए कहा, जिसे सुनकर सभी के माथे पर बल पड़े थे।

"हे... अनामिका! सॉरी! मैं तो भूल ही गया था। तुम्हारे लिए मेरे पास कुछ है।" बहुत देर से शांत बैठे हुए अल्फ़ी की आवाज आई। सभी ने सिर उठाकर उसकी ओर सवालिया नज़रों से देखा।

"ऐ सुनो! अभी गिफ्ट लेने देने का समय नहीं है। काम की बात करो।" चिढ़े हुए वरूण ने अल्फ़ी को लताड़ते हुए कहा।

"शट अप! तुमसे नहीं... अनामिका से बात कर रहा था मैं। और तुम... अनामिका! तुम इसे सर विलियम की स्टडी में छोड़ आई थी। याद है!" कहते हुए अल्फ़ी ने कोई चीज बिजली की तेजी से अनामिका की तरफ फेंकी,जो उससे थोड़ी दूर रखी गद्देदार कुर्सी में जाकर लगी और उसे देखकर सबकी ऑखें हैरानी से फटी की फटी रह गईं।

"ये तुम्हें कहॉ से मिला?" चैतन्य उस कुर्सी के पास खड़ा होकर बोला और फिर जैसे ही उसने उस चीज को उठाने का प्रयास किया, अल्फ़ी पलक
झपकते ही उसके हाथ को पकड़े उसके सामने खड़ा था। अल्फ़ी को वहॉ देखकर सभी की ऑखें हैरत से फट गईं। सभी ने एकदम से ऊपर की ओर देखा, जहॉ एक सेकेंड पहले वो बैठा हुआ था। जगह ख़ाली थी।

"कहा ना! ये अनामिका के लिए है।" अल्फ़ी ने चैतन्य का हाथ झटकते हुए कहा। चैतन्य ने भी त्यौंरियॉ चढ़ाकर उसे देखा। एक बार फिर से उनके बीच की बढ़ती गर्मी को देखकर अनामिका तेजी से वहॉ गई और उसे उठा लिया।

"पर सवाल तो सही है। ये तुम्हें मिला कहॉ? ये तो हमारे धरोहर संग्रह में था और वहीं से गायब हो गया था। तुम्हारे पास कैसे आया?" डॉ. अनंत ने उत्सुकता दिखाते हुए कहा।

"आप लोग आम खाइए ना! आम का पेड़ पहचानने की क्या जरूरत है? आप लोगों को ये चाहिए था और आपको ये मिल गया।" अल्फ़ी थोड़े चिढ़ से बोला।

उसकी बात सुनकर सभी ने अपनी ज़बान बंद कर लीं। अनामिका ने अपनी हथेलियों में चमकती उस चीज को हैरानी भरी नज़रों से देखा। उसी ने तो अपनी जान दॉव पर लगाकर इसे हासिल किया था (भाग 109)। उसके हाथों में पिशाच का खंज़र चमक रहा था, जिसे सभी खोया हुआ मान रहे थे। अब वो उनके पास था। जीत के और भी नज़दीक होने के अहसास से अनामिका ने उसकी मूंठ पर अपनी ऊंगलियॉ कस दीं।

"अरे वाह! चलो! ये समस्या भी खत्म हुई। अब वो एडवर्ड हमारे हाथों से बचेगा नहीं।" वरूण उत्साहित होते हुए बोला। उसकी बात सुनकर सभी के होंठों पर एक मुस्कान उतरी थी।

"इतना भी आसान नहीं है ये। फिलहाल अब तो नहीं।" अल्फ़ी ने उन
सभी के उत्साह पर पानी उड़ेलते हुए कहा।

"क्यों?" अनामिका ने पूछा।

"तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र!" अल्फ़ी बोला।

"क्या मतलब?" एक साथ कई आवाजें आई।

"खंज़र के गुमने के बाद उन्हें इसे लेकर डर हो गया था कि कहीं ये किसी ग़लत हाथों में ना पड़ जाए। वो अपने काम में इतने ज्यादा माहिर थे... कि खंज़र के सामने ना होने पर भी उन्होंने इस खंज़र की शक्ति को बांध दिया, जिससे कोई भी इस खंज़र का ग़लत इस्तेमाल ना कर सके।" अल्फ़ी ने सबकी ओर देखते हुए कहा।

"बांधने से तुम्हारा क्या मतलब है?" आशुतोष ने पूछा।

"यही कि... अगर आप लोगों को इस खंज़र से एडवर्ड पर वार करना है तो सबसे पहले आप लोगों को सर विलियम का शरीर खोजना होगा। एडवर्ड का पिता होने के नाते उनके शरीर का कोई भी हिस्सा... चाहे वो उनका खून हो... उनके नाखून हो... उनके बाल हों.. कुछ भी हो... उसे उस खंज़र की नोंक से छुआना पड़ेगा। इसके बाद ही ये खंज़र एडवर्ड पर काम करेगा। और सबसे बड़े दु:ख की बात ये है कि पिछले दो सौ सालों से सर विलियम का कोई सुराग नहीं मिला। पिशाच समुदाय दो सौ सालों से उन्हें ढूंढता रहा। मगर वो नहीं मिले। जैसे कि हवा हो गए हों।" अल्फ़ी ने बहुत ही अफसोस के साथ कहा।

"पर शायद... मुझे पता है कि वो कहॉ हैं?"
"पर शायद... मुझे पता है कि वो कहॉ हैं?"

एक बार फिर से सभी का ध्यान और नज़रें उस आवाज की ओर मुड़ी, जो एक बार फिर से अनामिका थी। उसकी बात सुनकर हैरान तो सभी थे, पर इस बार सबसे ज्यादा हैरान अल्फ़ी था।

"तुम्हें पता है! तुम कैसे जानती हो?" हैरान अल्फ़ी ने अनामिका से पूछा।

"एक मिनट! क्या उस दिन तुमने सर विलियम का पता खोज लिया था? उनके स्टडी में!" अनामिका के जवाब देने से पहले ही चैतन्य बोल पड़ा।
"हॉ! अगर वो आज तक नहीं मिले हैं... तो वो उनके स्टडी में ही हैं!" अनामिका ने पुरानी बात याद करते हुए कहा। (भाग -117)

"क्या बकवास है! पूरे पिशाच समुदाय ने अपनी ताकत लगा ली उन्हें ढूंढने में और तुम कह रही हो कि वो अभी भी अपने स्टडी में ही हैं।" अल्फ़ी चिढ़ के साथ बोला।

"हॉ! उस एडवर्ड की बदकिस्मती कि मुझे सर विलियम के गायब होने का रहस्य उसी समय पता चल गया था और मुझे पूरा यकीन है कि ये काम उसी ने किया था।" अनामिका वजनदार शब्दों के साथ बोली।

"पर उसके लिए तो कल्परूप गॉव जाना पड़ेगा, वॉकर मेंशन!।" चैतन्य ने समस्या उठाते हुए कहा, जिस पर अल्फ़ी जोर से मुस्कुराया था।

"तुम क्यों मुस्कुरा रहे हो?" चैतन्य ने पूछा।

"क्योंकि... यही कल्परूप गॉव है।" जवाब डॉ. अनंत कुमार ने दिया।

"क्या? यही से मतलब?" सारे के सारे भौंचक रह गए लोगों में से आशुतोष ने पूछा।

"हमारे शहर श्रीपुर का ही पुराना नाम कल्परूप है। तुम सब डायनों के बसेरे से आ चुके हो। फिर ये आश्चर्य क्यों?" डॉ. अनंत ने उन सभी की हैरानी पर हैरानी जताई।

"हे भगवान! इसलिए वो समयद्वार यहॉ खुला.. क्योंकि हम हमेशा से कल्परूप में ही थे। पर... इसका नाम क्यों बदला?" अनामिका ने आश्चर्य जताते हुए एक और सवाल किया।
"कल्परूप! ये नाम अपने साथ इतनी बदनाम यादें समेट चुका था कि तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र ने ही इस जगह को नक्शे से पूरी तरह मिटाने का फैसला कर लिया था। बाहरी दुनिया में तो नाम बदलने की जानकारी नहीं दी गई। पर इस जगह के नाम को बदलने के बाद तांत्रिक श्रेष्ठ ने इसकी सीमाओं को अपनी ताकत से सील कर दिया। मतलब कि उनकी उस रेखा से बाहर जाते ही लोग कल्परूप का नाम ही भूल जाते। उन्हें बस नया नाम ही याद रहता। इस तरह धीरे-धीरे कल्परूप गॉव एक किंवदंती बनकर रह गया, जो फिर कभी किसी को नहीं मिला।" डॉ. अनंत ने सबको बताया।

"तो आप कैसे जानते हैं?" हर पल हैरान होते अंकित ने पूछा।

"हम रखवाले हैं। हमें तो पता होगा ही। वरना अपने इतिहास की धरोहर कैसे संभालेंगे हम?" डॉ. अनंत ने जवाब दिया।

"तो क्या बाद में हमें भी..." चैतन्य ने कुछ कहना चाहा, जिसे उकताए हुए अल्फ़ी की आवाज ने टोक दिया।

"काम की बात पता चल गई ना! मुद्दे पर आओ!" अल्फ़ी चिढ़कर बोला। ना जाने क्यों वो पुरानी बातों को ज्यादा कुरेदे जाने पर खफा होता दिख रहा था।

"वो सही कह रहा है? नाम की कहानी बाद में जान लेंगे। फिलहाल हमारे लिए ये राहत की बात है कि हम कल्परूप में ही हैं। मुझे लगता है कि हमें सबसे पहले मेंशन में ही जाना चाहिए। एडवर्ड को खत्म करने के लिए सर विलियम के शरीर का मिलना बहुत जरूरी है। वैसे मेंशन में कोई रहता है या फिर... वो भी उजड़ गया।" अनामिका ने योजना का पहला बिंदु रखते हुए सवाल किया।

"वॉकर हॉस्पिटल के ट्रस्टी विक्टर अल्फ्रेड वॉकर वहीं रहते हैं।" डॉ.
अनंत ने जवाब दिया।

"ओह! मतलब कि सावधान रहना पड़ेगा।" वरूण ने कहा।

"अब तो हर कदम पर!" आशुतोष बोला।

"पर मेंशन में घुसेंगे कैसे? वहाँ तो अभी भी बहुत सख़्त पहरा रहता है।" अंकित ने अपने कुछ पुराने अनुभवों को याद करते हुए कहा, जो उसे अपनी पुलिस की नौकरी में मिले थे। अंकित की बात सुनकर वहाँ मौजूद सभी के चेहरे पर चिंता उतर गई थी, सिवाए तीन के।

चैतन्य ने मुस्कुराते हुए अनामिका की ओर देखा और बहुत ही इत्मीनान से बोला, "तुम्हें सारे छलद्वार याद है ना अनु!"

जवाब में अनामिका भी उसी तरह मुस्कुराई और बोली, "क्यों नहीं। शायद इसी को कहते हैं... पास्ट में किए गए इन्वेस्टमेंट का फायदा फ्यूचर में मिलना।"

"क्या मतलब?" अपने दर्द से उबर चुकी सृष्टि ने भी आखिरकार अपनी ज़बान खोली।

"जब हम पास्ट में थे... तब सबकी नज़रों से बचकर एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए अनामिका ने कई छलद्वार बनाए थे। उस समय ये नहीं सोचा था कि इस लड़ाई को अंजाम तक पहुँचाने के लिए भविष्य में वो सारे दरवाजे काम आएँगे।" चैतन्य ने पुरानी बातें याद करते हुए कहा।

"हाँ! बस दो दरवाजे और हम सीधे स्टडी रूम में होंगे।" अनामिका ने हिसाब लगाते हुए कहा।
"और तुम दोनों को लगता है कि 200 सालों के बाद भी मेंशन में सभी चीजें वैसी की वैसी हैं। इतने सालों में बहुत कुछ बदल चुका है। अब ना तो गलियारे का वो आईना अपनी जगह पर है और ना ही मेरे कमरे कमरे का आईना।" अल्फ़ी ने उन सबके मंसूबों पर पानी डालते हुए कहा।

"ये कभी कुछ अच्छा नहीं बोल सकता क्या?" वरूण, आशुतोष के कान में फुसफुसाया, जिस पर

आशुतोष ने उसे अपनी ऑखों से ही घुड़का।

"तो वो आईने कहॉ हैं?" अनामिका ने घबराकर पूछा।

"हम्म! अगर मैं ये कहूं कि उनमें से एक आईना यहीं है तो!" अल्फ़ी एक बार फिर से सबको चौंकाते हुए बोला। उसकी बात सुनकर सभी की ऑखें नासमझी से सिकुड़ी थीं।

"मैंने अपने कमरे वाला आईना तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र को दिया था। उन्होंने भविष्य की अमानत समझकर उसे धरोहर संग्रह में रखा है। तो जाओ... ढूंढो उसे! ताकि आगे जा सको।" अल्फ़ी ने बड़ी ही लापरवाही से कहा।

और ये सुनते ही सभी हरकत में आए। डॉ. अनंत और वरूण तेजी से एक ओर गए। डॉ. अनंत ने एक बार फिर से वरूण की सहायता से अपने संग्रह का दरवाजा खोला और फिर सभी को अपने पास बुलाया। एक-एक करके सभी उनकी ओर बढ़ गए। मगर ना जाने क्यों चैतन्य अपनी जगह पर ही कुछ सोचता खड़ा रह गया।

अनामिका ने एक उखड़ी नज़र उस पर डाली कि थोड़ी देर पहले की बहस अभी भी उसके दिमाग में घूम रही थी। मगर उसे देखते ही उसे चैतन्य की अपने लिए फिक्र याद आ गई और उसका गुस्से धुऍं की तरह उड़ गया। एक मुस्कुराहट के साथ वो आगे बढ़ी ही थी कि... अनामिका के आगे बढ़ते कदम रूके। उसने एक नज़र सामने की ओर डाली। सब आगे
निकल गए थे। निचले होंठ को दॉतों से दबाकर वो पीछे मुड़ी। चैतन्य दीवार से टिका हुआ सीने पर हाथ बांधे जमीन को घूर रहा था। एक नज़र पीछे सब की ओर डालने के बाद वो उसकी ओर बढ़ी। वो उसके पास पहुँची तो वो खुद में ही गुम था। अनामिका के होंठ शरारत से फड़फड़ाए और उसने थोड़ा उछलकर अपने होंठ उसके गाल पर रख दिए।

"इश्श्श्श्!" इस अचानक हमले से चैतन्य बुरी हड़बड़ा गया। उसने उस गाल पर अपना हाथ रखकर सामने देखा और उस पर अपनी शरारती मुस्कान डालती हुई अनामिका वहॉ से भाग खड़ी हुई।

"चीटर कहीं की!" चैतन्य और भी चिढ़ गया। वो अपने उस गाल को पोंछने ही वाला था, कि तभी अनामिका के होंठ के स्पर्श को महसूस कर वो रूक गया। उसके होंठ भी अनामिका के ख्याल से मुस्कुराए। उसने अपने उस गाल पर हाथ फिराकर उस हाथ को चूम लिया और फिर वो भी सबकी ओर बढ़ गया। अल्फ़ी ही बस ऐसा था, जिसने उस ओर कदम नहीं बढ़ाए थे। वो अपनी जगह पर ही था।

जल्द ही वो सभी उस अजूबे के अंदर थे, जिसे सब संग्रह कहते थे। उन सभी ने अपनी ऑखें फाड़कर चारों ओर देखा, जहॉ कोई भी आखिरी छोर नज़र नहीं आ रहा था। बल्कि ये तो एक नई दुनिया की तरह ही था, जहॉ ना जाने क्या-क्या रखा हुआ था?

"समय कम है और जगह बड़ी है। सबको मिलकर ढूंढना पड़ेगा। अनामिका! कैसा था वो आईना?" डॉ. अनंत ने हड़बड़ी दिखाते हुए कहा।

और डॉ. अनंत के मुँह से ये सुनते ही अनामिका ने सबको उस आईने को विवरण दिया। मगर समझ में किसी को भी नहीं आया। सबके उलझे चेहरे देखकर चैतन्य ने आसपास नज़र घुमाकर पास पड़ी एक खाली किताब उठा ली।

"ये इस्तेमाल कर सकता हूँ मैं?" उसने डॉ. अनंत से पूछा।

उनके सहमति में सिर हिलाने के बाद उसने अपनी जेब से पेंसिल निकाली, जो हमेशा ही उसके साथ रहती थी और फिर उसने उस किताब के एक खाली पन्ने को पैनी नज़र से देखा। उसने उसमें अपनी पेंसिल की नोक रखी और फिर ऑखें बंद कर लीं। उसके बाद जो हुआ किसी की समझ में नहीं आया कि कैसे हुआ? उन सभी के पॉच से छः बार पलकें झपकाने तक ही में चैतन्य ने उस पन्ने पर आईने की तस्वीर उकेर दी। उसकी महारत देखकर एक वरूण को छोड़कर सभी की ऑखों में प्रशंसा के भाव आए थे। अनामिका ने उस तस्वीर को देखा और फिर मुस्कुरा कर सभी से कहा कि उन्हें इसी आईने को ढूंढना है। जल्द ही उस भूसे के ढेर जैसे संग्रहालय से सुई जैसे उस आईने को वरूण ने अपनी शक्तियों की मदद से ढूंढ निकाला और फिर बड़े ही घमंड से अपनी नाक में चश्मा ठीक करते हुए चैतन्य की ओर देखा। जैसे कि कह रहा हो कि बस तुम्हारी शक्तियॉ ही बेजोड़ नहीं हैं। वो तो शुक्र रही कि उन दोनों के नज़रों को इस खींचातानी को किसी और ने नहीं देखा।

"तो चलें!" अनामिका ने सबकी ओर मुड़ते हुए कहा।

"यहीं से?" सृष्टि ने कहा।

"हॉ!"

"तुम सब चलो! मैं यहीं रूकता हूँ। परिधि और गीता के पास भी किसी का रहना जरूरी है।" डॉ. अनंत ने उन सबको आगे बढ़ने के लिए कहा।

"अल्फ़ी है तो सही! वो हमारे साथ नहीं जा रहा है।" अंकित ने डॉ. अनंत की बात सुनकर कहा।
"तुम्हें क्या लगता है? उस मेंशन में जाने के लिए उसे इस जादुई दरवाजे की जरूरत पड़ेगी!" आशुतोष ने हँसते हुए कहा।

"सच कहा!" अनामिका ने भी मुस्कुराने में उनका साथ देते हुए कहा और फिर आईने की ओर बढ़ गई। उसने पीछे मुडकर आशुतोष की ओर हाथ बढ़ाया। आशुतोष ने उसका वो हाथ थाम लिया और पीछे देखा। वरूण खड़ा था। आशुतोष ने अपना दूसरा हाथ उसकी ओर बढ़ाया, जिसे वरूण ने थाम लिया। इसी तरह सभी ने एक चेन सी बना ली, जिसमें सबसे आखिर में चैतन्य था। फिर अनामिका ने आगे बढ़कर उस आईने को छुआ और अपनी ऑखें बंद कर उस स्टडी के बारे में सोचा। उसके ज़हन में स्टडी की तस्वीर आते ही वो आईना पानी की तरह लहराने लगा। अनामिका ने ऑखें खोलकर सबसे पहले उसमें अपना हाथ डाला और फिर आगे बढ़कर उसमें घुस गई। उसके पीछे-पीछे सभी उस आईने के अंदर चले गए। उनके अंदर जाते ही डॉ. अनंत संग्रहालय से बाहर आए और फिर गीता और परिधि पर एक नज़र डालकर उनके पास की कुर्सी में बैठ गए। सबके अनुमान के अनुसार अल्फ़ी वहॉ मौजूद नहीं था।

जल्द ही वो सभी अनामिका का हाथ थामें एक शानदार कमरे की दीवार से बाहर निकले। अनामिका और चैतन्य ने ऑखें फाड़-फाड़कर उस कमरे को देखा। उनके लिए तो वो इस कमरे में एक दिन पहले ही आए थे... पर वास्तव में उस कमरे ने दो सौ सालों के बाद उन दोनों का स्वागत किया था। आश्चर्यजनक रूप से ये कमरा आज भी बिल्कुल वैसा ही था, जैसा उन्होंने दो सौ साल पहले देखा था। बस समय के साथ बैठने के फर्नीचर, पर्दे और रोशनी के जरिए बदल गए थे। बाकी कमरे का रंग और रखरखाव आज भी बिल्कुल वैसा ही था। अनामिका और चैतन्य के ज़हन में इस कमरे से जुड़ी सारे

यादें दस्तक देने लगीं। उन दोनों को तो एक बार फिर से अतीत में होने का भ्र होने लगता, मगर दूसरों की मौजूदगी ने उनके भ्रम को पनपने का समय नहीं दिया। वो अभी कमरे में आगे बढ़ते.. उसी समय एक आवाज उन सभी को सुनाई दी।

"वेलकम अगेन!"

भाग 152

"वेलकम अगेन!"

और इस आवाज को सुनकर सभी अपनी-अपनी जगह से उछल से गए। आवाज एक अंधेरे कोने से आ रही थी, जहॉ बहुत ही ग़ौर से देखने पर ही किसी के होने का पता चल रहा था और इसीलिए छलद्वार से बाहर निकलने से पहले पूरे कमरे में अनामिका के मुआयने में कमी रह गई।

"क्या लगता है? हम फँस गए हैं?" वरूण, मुकुल के कानों में फुसफुसाया।

"नहीं! वो गुड लक के लिए... हमें दही-शक्कर खिलाने आया है।" मुकुल भी उसी के अंदाज में फुसफुसाया। जवाब में वरूण ने उसकी ओर अपनी तिरछी तीखी नज़र डाली।

सभी सामने कोने में सिमटे उस अंधकार को घूरकर देख रहे थे, जैसे कि उनकी ऑखों की रोशनी से ही वहॉ उजाला हो जाएगा।

"क्या बात है! चैतन्य-अनामिका! यही नाम है ना तुम्हारा!" एक बार फिर से उसी अंधेरे कोने से आवाज आई।
"कौन हो तुम?" अनामिका ने कहते हुए अपने कदम आगे बढ़ाए, जिस पर चैतन्य ने झट से उसकी कलाई पकड़कर उसे रोका। अनामिका के उसकी ओर देखने पर उसने सिर हिलाकर आगे बढ़ने से मना किया।

"ये तो मुझे पूछना चाहिए। मेरे ही घर में चोरों की तरह घुस आए हो और मुझसे ही पूछ रहे हो.... कि मैं कौन हूँ!" अपनी बात खत्म करते-करते वो शख़्स अंधेरे की चादर फेंककर उजाले में आ गया।

"विक्टर अल्फ़्रेड वॉकर!" मुकुल के होंठों से निकला और ये नाम सुनकर सभी के कान खड़े हुए। सामने खड़ा शख़्स बहुत ही कमजोर नज़र आ रहा था।

"हॉ! मैं!" उसने मुस्कुराकर कहा, जिससे उसके पिचके हुए गालों की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ा।

"ऐसा क्यों लग रहा है कि हमारा ही इंतजार कर रहे थे आप! नई!" आशुतोष ने उसे संदेह से देखते हुए कहा।

"बिल्कुल! सही समझा आपने!" विक्टर ने भी ढीली-ढाली आवाज में जवाब दिया।

"ओह! लगता है कि हमारे लिए पहले से ही जाल बिछा रखा है। मैंने कहा था कि इस एडवर्ड को सब पहले से ही पता चल जाता है।" चैतन्य ने चौकन्नी निगाहें चारों ओर डालते हुए चिढ़ी हुई आवाज में कहा।

"क्या कहा? जाल!" कहकर विक्टर ने एक जोर का ठहाका लगाया, जो उसके लिए ही तकलीफ़देह हो गया, जब कुछ देर की हँसी में ही वो हॉफने लगा।
"आप ठीक तो है। आपकी सेहत कुछ सही नहीं लग रही है।" मुकुल ने विक्टर के सामने आकर कहा।

जवाब में विक्टर एक खीझी हुई हँसी के साथ बोला, "मेरी हालत देखकर तुम्हें क्या लगता है? कैसा हो सकता हूँ मैं?"

विक्टर के सवाल ने मुकुल को सोच में डाल दिया। उसने कुछ दिन पहले ही प्रोफेसर साहनी के स्टडी में उसे देखा था।(भाग -20)। मगर इस समय उसे देखकर मुकुल की ऑखें यकीन नहीं कर पा रही थीं। मुकुल ने जब उसे प्रोफेसर साहनी के स्टडी में देखा था, तब वो भरे-पूरे शरीर का बहुत ही खूबसूरत नौजवान था और अभी वो किसी तपेदिक के मरीज की तरह पीला और सूखा हुआ लग रहा था। उसके हाथ-पैर भी कुछ कॉपते हुए से दिखाई दे रहे थे। कुछ दिनों में ही किसी का इतना बदल जाना समझ के परे था।

हालांकि विक्टर ने अपनी तरफ से ऐसी कोई भी कोशिश नहीं की थी, जिससे उन्हें उस पर संदेह होता। मगर सृष्टि को उस पर संदेह था। वो उसके और प्रोफेसर साहनी के बीच के सहयोगी संबंधों के बारे में अच्छी तरह से जानती थी।

"मुझे मदद..... चाहिए!" विक्टर ने हांफती हुई आवाज में कहा और फिर वो एकदम से ही जमीन पर ढह गया। पहले कुछ देर तो सभी सॉसे रोके उसे देखते रहे... जैसे कि उसकी अचानक होने वाली अगली कार्यवाही का इंतजार कर रहे हों। पर ज्यादा समय गुजरने के बाद भी जब उसके शरीर में कोई हलचल नहीं हुई, तो आशुतोष और वरूण उसकी ओर बढ़े। चैतन्य ने अनामिका के हाथ को और भी कसकर पकड़ते हुए अपने और भी नजदीक किया था। वो सब जानते थे कि एडवर्ड, अनामिका पर घात लगाए बैठा है और चैतन्य ऐसा हर्गिज नहीं चाहता था।
जैसे-जैसे समय आगे बढ़ रहा था... ना जाने क्यों उसके दिल में एक अंजाना सा डर बैठता जा रहा था। वो ऐसे किसी कारण को अनामिका के पास फटकने भी नहीं देना चाहता था, जो उन दोनों को एक-दूसरे से दूर ले जाए। मगर वो ये भी जानता था कि ये मुमकिन नहीं है। अनामिका को इस लड़ाई की अगुवाई करनी थी और वो इस काबिल भी थी। वो उसकी काबिलियत के फौलाद पर अपनी हद से

ज्यादा परवाह की जंग नहीं चढ़ाना चाहता था और वो इसी दोराहे पर बेचैनियों का शिकार हो गया था। एक राह पर सभी उसकी ओर ऊंगली उठाए खड़े थे और दूसरी राह पर वो खुद अपने लिए ढेर सारे सवाल लिए खड़ा था और फिर आखिरकार उसने खुद को हवाओं के साथ छोड़ने का फैसला करते हुए अनामिका का हाथ छोड़ दिया। उसे ऐसा लगा... जैसे कि वो अंदर से खाली होता जा रहा हो। उसने अपने हाथों को देखा और कुछ कदम पीछे हो गया कि उसे पीछे ही रहना था। अनामिका ने उसका दूर जाना महसूस किया, तो पलटकर उसकी ओर देखा, जहाँ चैतन्य ने अपनी मुस्कुराहट के साथ उसे आगे बढ़ने का इशारा किया।

"क्या ये ठीक है?" अनामिका ने विक्टर की ओर देखते हुए आशुतोष और वरूण से पूछा।

"नहीं! ये देखो!" आशुतोष ने उन सभी को पास आने का इशारा करते हुए कहा। वो सभी तेजी से उनके पास पहुँचे और ध्यान से विक्टर की ओर देखने लगे।

"इस तरफ देखो!" वरूण ने विक्टर के गले के निचले हिस्से की ओर इशारा करते हुए कहा। उन सभी ने ध्यान से देखा। वहाँ कुछ फासले पर दो गहरे गड्ढे बने हुए थे। उन गड्ढों के आसपास की त्वचा सूजी हुई थी, मगर खून का कोई नामोनिशान नहीं था।

"क्या है ये?" अंकित ने पूछा।
"ये तो वैंपायर बाइट्स हैं।" सृष्टि उन निशानों को ध्यान से देखते हुए बोली।

"वैंपायर बाइट्स! ये क्या बला है?" अंकित ने पूछा।

"पिशाच के दाँतों के निशान।" मुकुल ने जवाब दिया।

"तो क्या... इसका मतलब है कि..." अंकित ने अपनी आँखें फैलाते हुए बात अधूरी छोड़ी।

"हाँ! किसी ने इसका खून पिया है।" सृष्टि ने कहा।

"पर एक पिशाच का खून कौन पिएगा?" वरूण ने सिर खुजलाते हुए कहा।

"शायद... दूसरा पिशाच!" पीछे खड़े चैतन्य ने जवाब दिया।

और ये सुनते ही सभी ने उसकी ओर अजीब सी नज़रों से देखा, जैसे कि इससे ज्यादा अजीब बात उन सब ने पहले कभी ना सुनी हो।

"कुछ भी! कोई पिशाच... कैसे किसी पिशाच का खून पी सकता है?" वरूण ने चैतन्य की बात को हवा में उड़ाते हुए कहा।

"जैसे दिख रहा है।" चैतन्य ने कहा।

"बकवास! कुछ और ही बात है।" वरूण एक बार फिर से उससे उलझा।

"हाँ तो ठीक है ना! बैठकर एक लंबी सी चर्चा करते हैं कि आखिर इस

मिस्टर विक्टर का ये हाल कैसे हुआ? तब तक... जब तक की कोई मुसीबत हमारे सिर पर आकर बैठ ना जाए। चलेगा!" चैतन्य उसकी ओर गर्म तेवरों के साथ बढ़ा। हर बार अपनी बात काटा जाना उससे सहन नहीं हुआ था। सबने एक बार फिर से उनके बीच के खींचातान को महसूस कर लिया था।

"मुझे लग रहा है कि चैतन्य सही कह रहा है।" सृष्टि गर्म होते माहौल में चैतन्य और वरूण के बीच आते हुए बोली।

"तुम्हें भी ऐसा लग रहा है।" आशुतोष ने पूछा।

"जी हॉ! मेरे ख्याल से मुकुल ने भी दो-तीन दिन पहले मिस्टर विक्टर को देखा होगा। उस दिन तो ये बहुत अच्छी हालत में थे। इतनी जल्दी एक खाते-पीते और भरे-पूरे इंसान का सूखे पेड़ की तरह ढह जाना अजीब बात नहीं लग रही है। प्रोफेसर साहनी ने ये भी कहा था कि परिधि के हाथ से निकल जाने पर मिस्टर विक्टर बहुत ज्यादा नाराज थे। वो उसे पाने के लिए बहुत ही ज्यादा उतावले थे। इनका कहना था कि उस परिधि को हासिल करके ही पिशाच समुदाय अपने श्राप से मुक्त हो सकता है। हालांकि अब ये श्राप कैसा है... ये तो मुझे भी नहीं पता है।" सृष्टि ने जानकारी देते हुए कहा।

"सृष्टि सही कह रही है।" मुकुल ने भी उसका समर्थन करते हुए कहा।

"कसम से ना! यहॉ इतना रायता फैला हुआ है... कि समेटे नहीं सिमट रहा है।" अंकित की उकताई हुई आवाज आई।

"तो फिर समेटते हैं।" अनामिका ने खड़े होते हुए कहा।

"प्लान क्या है?" आशुतोष ने पूछा।
"मुकुल! सबसे पहले तुम और सृष्टि बाहर जाओ और दरवाजे के बाहर नज़र रखो। तुम दोनों पिशाच हो इसलिए तुम पर उन्हें जल्दी शक नहीं होगा। वरूण और अंकित! तुम दोनों इन मि. विक्टर को संभालो! शायद आगे ये हमारे काम आऍं। चैतन्य और आशुतोष जी! हम तीनों उस काम को करते हैं, जिसके लिए यहॉ आए हैं।" अनामिका ने उन सभी को योजना समझाते हुए कहा।

"मतलब कि मि. विलियम को ढूंढना!" चैतन्य ने कहा।

"मि. विलियम को नहीं... उनके शरीर को ढूंढना है। उस दिन हम दोनों ने देखा था कि यहॉ कितना खून फैला हुआ था। उतना खून बहने के बाद कोई जीवित नहीं रह सकता। उस समय हमने उन्हें ढूंढ निकाला होता, तो शायद वो जीवित बच गए होते। पर हालात ऐसे बद से बद्तर होते गए कि ये बात ही हमारे ध्यान से निकल गई।" अनामिका ने उस बड़ी खिड़की की ओर बढ़ते हुए कहा और फिर वो वहॉ पहुँचकर रूक गई।

"इस खिड़की के पास क्यों रूक गई? अगर कोई छिपा दरवाजा होगा, तो किसी दीवार में होना चाहिए।" हैरानी से उस खिड़की की ओर देखते हुए चैतन्य ने अपनी नज़रें दूसरी ओर घुमाई।

"लेकिन दरवाजा यहीं पर है। मैंने उसी दिन खोज लिया था, पर एडवर्ड के आने से सब काम अधूरा रह गया।" अनामिका ने जवाब देते हुए कहा।

"तो कहाँ हैं वो दरवाजा?" आशुतोष ने पूछा।

"मुझे बस इतना ही याद है कि.... यहीं कहीं है। मतलब कि दिखाई नहीं देता। हमें टटोलते हुए ढूंढना पड़ेगा। की होल की तरह है।" अनामिका ने उन दोनों को बताते हुए कहा।
और फिर अनामिका के बताए हुए एक खास हिस्से में वो तीनों ही उस जगह की तलाश करने लगे। कुछ देर की मेहनत के बाद आशुतोष को वो की होल मिल गया। अनामिका ने उसे छूकर देखा, तो वहीं था।

"हाँ! यही है!" अनामिका ने उत्साहित होते हुए कहा।

"तो फिर जल्दी करो! इससे पहले कि कोई आ जाए।" आशुतोष ने जल्दबाजी दिखाते हुए कहा।

"अनामिका! एक मिनट! वो चाबी कहाँ हैं?" चैतन्य ने अनामिका को झटका देते हुए पूछा।

"वो चाबी! वो तुम्हारे पास नहीं है?" अनामिका ने पलटकर सवाल किया।

"नहीं! वो मेरे पास नहीं है। वो तो उस दिन... तुम्हारी और हेममाया की तलाश करते समय अल्फ़ी के पास थी। फिर वो उसी के पास रह गई... शायद!" चैतन्य ने पुरानी घटना को याद करते हुए कहा।

"हे भगवान! तुम दोनों भी ना! इतना खतरा उठाकर हम यहाँ आ गए हैं। हमें वो जगह भी मिल गई। लेकिन चाबी ही गायब! अब क्या करें? कहाँ ढूंढे उसे अल्फ़ी को?" आशुतोष उन दोनों पर भड़कते हुए बोला।

"ये कोई भूलने वाली बात तो नहीं है। फिर अल्फ़ी ने जब तुम्हें वो खंज़र दिया... तो वो चाबी क्यों नहीं दी। जबकि वो जान रहा था कि ऐसी किसी खोज में निकलने पर हमें उसकी जरूरत पड़ेगी ही।" चैतन्य ने भुनभुनाते हुए कहा।

"भूल गया होगा!" अनामिका ने अल्फ़ी की गलती पर रोगन चढ़ाते हुए
कहा।

"कोई भूला नहीं है वो! बल्कि बहुत स्याणा हो गया है। मुझे बहुत देर से लग रहा है... कि वो हमसे कुछ... नहीं! बहुत कुछ छिपा रहा है।" चैतन्य ने भन्नाई हुई आवाज में कहा।

"वो क्या छिपाएगा? उसके बारे में तो हम सबकुछ जानते हैं। उसके पास छिपाने के लिए और है ही क्या?" अनामिका ने बेयकीनी से कहा।

"इसके बारे में ना... घर में जाकर बात करते हैं। फिलहाल अभी क्या करें? ये सोचो!" आशुतोष ने उन दोनों को ही चपत लगाते हुए कहा।

"मुझे नहीं पता! अपनी लीडर से पूछिए!" चैतन्य ने बहुत ही चिढ़ के साथ कहा।

और यहाँ अनामिका लाजवाब हो चुकी थी। ये तो ऐसा था... जैसे कि पानी की तलाश में महीनों प्यासे भटकने के बाद समंदर के किनारे आ खड़े होना। कि मालूम है कि क्या करना है... पर कर नहीं सकते।

ना जाने क्या सोचकर आशुतोष ने अपनी भू-शक्ति का स्मरण किया, मगर हुआ कुछ नहीं। वो सब अभी इसी उधेड़बुन में ही थे कि तभी उन सभी को बाहर से कुछ तेज आवाजें सुनाई दीं।

"ये क्या हुआ?" वरूण की आवाज आई।

और फिर चैतन्य, अनामिका और आशुतोष तीनों ही तेजी से वरूण और अंकित के पास आ गए। वो दोनों अभी भी विक्टर के बेहोश शरीर को संभाले हुए थे। आशुतोष, अनामिका और चैतन्य ने वरूण, अंकित और विक्टर को अपने पीछे किया और तीनों सी आक्रमण की मुद्रा में खड़े हो गए।
"हमें जाकर देखना चाहिए! सृष्टि और मुकुल बाहर ही हैं।" चैतन्य ने आगे बढते हुए कहा।

"मैं भी आती हूँ!" अनामिका ने भी तेजी से उसकी ओर कदम बढ़ाए।

आशुतोष या कोई और आगे कुछ कहते उससे पहले ही दरवाजे के बाहर एक तेज धमाका हुआ और उस दरवाजे के परखच्चे उड़ गए। चैतन्य ने तेजी से पीछे आकर अनामिका को अपने पीछे छिपाया था। वो तो सुरक्षित बच गई, मगर चैतन्य को पीठ की तरफ बहुत चोटें आई गई थी। अभी वो खुद को संभाल ही रहा था कि तभी कुछ गार्ड्स तेजी से उस कमरे में दाखिल हुए। उन गार्ड्स को देखते ही सभी अपनी जगह पर तनकर खड़े हो गए। और फिर उन्हें अगला झटका लगा, जब उन्होंने दरवाजे पर एक अधेड़ उम्र के आदमी को खड़ा देखा। आशुतोष, चैतन्य और अनामिका के लिए ये चेहरा पूरी तरह से अनभिज्ञ था। मगर वरूण की यादों में कहीं किसी परिचय ने दस्तक दी।

"प्रोफेसर साहनी!" वरूण के मुँह से निकला और ये सुनते ही सभी ने हैरान-परेशान नज़रों से बारी-बारी से उन दोनों की ओर देखा।

"बिल्कुल सही पहचाना बरखुरदार! मेहमानों का स्वागत करने के लिए किसी को तो आना ही था। चाहे मेहमान कैसे भी हों?" प्रोफेसर साहनी ने मखमल में पत्थर लपेट कर मारने वाले अंदाज में कहा।

"मुकुल और सृष्टि कहॉ हैं?" चैतन्य ने एक और आशंका के साथ सवाल किया।

"वहीं... जहॉ उन गद्दारों को होना चाहिए। अब तुम सभी की बारी।" प्रोफेसर साहनी ने मक्कारी भरी मुस्कराहट के साथ कहा।
"ऐसा कभी नहीं होगा।" कहते हुए चैतन्य ने उन सबकी ओर अपना वार किया। मगर वो सभी बुरी तरह से हैरान रह गए, जब उसकी ताकत ने काम नहीं किया। वो हैरान-परेशान सा अपने हाथों को देखता रह गया।

"तुम्हें क्या लगता है? 200 सालों तक ये कमरा यूंही लावारिस पड़ा हुआ है। हमें पता था कि तुम दोनों वापस इस कमरे में लौटकर जरूर आओगे, इसलिए बहुत पहले ही इस कमरे के अंदर ऐसी ताकतों के प्रयोग पर पाबंदी लगा दी गई है। बस तुम्हारे आने का रास्ता ही छोड़ दिया गया, ताकि तुम आ सको।" प्रोफेसर साहनी ने कुटिलता से मुस्कुराते हुए कहा।

प्रोफेसर साहनी की बात सुनकर कमरे में सन्नाटा छा गया। सृष्टि और मुकुल का दुश्मन के हाथ लग जाना उनके लिए आघात की तरह था। दुश्मन को लग रहा था कि वो जीत गया, मगर चैतन्य के दिमाग ने अभी एक और चाल बचाकर रखी थी। अपने दॉतों को पीसते हुए वो पीछे गया और फिर विक्टर को अपने शिकंजे में लेकर बोला, "हमारे साथी हमारे हवाले करो.. वरना तुम्हारा साथी भी खतरे में आ

जाएगा।"

और चैतन्य की ये योजना काम करती दिखाई दी थी। विक्टर को चैतन्य के चंगुल में देखकर प्रोफेसर साहनी के जबड़े कसे थे। मगर ना जाने क्यों उसने ज्यादा बेचैनी जाहिर नहीं की।

"हमें इससे कोई मतलब नहीं है। कम से कम इसके बदले में तो हम उन दोनों गद्दारों को नहीं छोड़ेंगे। तुम्हें जो करना है कर लो।"प्रोफेसर साहनी ने कहा, मगर उसके लफ़्ज़ों में छिपी हिचकिचाहट चैतन्य से ना छिप सकी।

"तुम्हें मतलब नहीं होगा। मगर तुम्हारे उस छद्म-पिशाच को तो है। अगर वो ही इसका खून पी रहा है और आज आखिरी दिन से पहले तक ये जिंदा है, तो उस एडवर्ड को कल भी इसके खून की जरूरत पड़ेगी। तो
अगर ये चाहिए... तो हमारे साथी हमारे हवाले करो।" चैतन्य ने भड़कते हुए चिल्लाकर कहा।

"वो दोनों तो नहीं मिलने वाले। वैसे भी वो दोनों अब यहॉ नहीं हैं। तो इस सौदे का कोई मतलब भी नहीं है।" प्रोफेसर साहनी ने गुर्राते हुए कहा।

चैतन्य ने आगे कुछ कहना चाहा उससे पहले ही कान को फाड़ने वाली तेज और कर्कश आवाज ने उन सभी को खिड़की की ओर देखने को मजबूर कर दिया। अपनी फैली हुई ऑखों से उन्होंने बाहर सैकड़ों चमगादड़ों को उड़ते हुए देखा, जो बाहर जलते लैंपशेडों की लाइट में बहुत ही भयानक लग रहे थे। अपनी परेशानी के बीच उन्होंने ध्यान नहीं दिया कि प्रोफेसर साहनी और उनके गार्ड्स भी उतनी ही हैरानी के साथ खड़े खिड़की को निहार रहे थे।

"अनामिका! द्वार खोलो! बाहर निकलो यहॉ से।" चैतन्य चिल्लाया।

"पर वो दोनों!" अनामिका ने कहना चाहा।

"वो ठीक कह रहा है अनामिका। हम यहॉ से सुरक्षित निकल जाएँ तो उन्हें बचाने का जुगाड़ लगा सकते हैं। चलो यहॉ से। इस नई मुसीबत से उलझना ठीक नहीं होगा।" अनामिका को छलद्वार की ओर ढकेलते हुए आशुतोष ने कहा।

अनामिका ने भी नाज़ुक मौके को पहचान कर उनकी बात मानी और तेजी से छलद्वार के पास जाकर उसे सक्रिय कर दिया। उसके बाद एक-एक करके सभी वहॉ से बाहर निकलते गए।

स्टडी रूम में पहुँचते ही वरूण और अंकित, विक्टर को डॉ. अनंत के पास ले गए। वो और परिधि तेजी से उसके ईलाज में लग गए।
वहीं स्टडी में वापस आने के बाद चैतन्य के गुस्से का बांध टूट गया। वो इतनी जोर से मुट्ठियां बांधकर चिल्लाया कि वहॉ सबको हवाओं की रफ्तार बिगड़ती हुई महसूस हुई। अनामिका ने उसके पास जाकर उसके कंधे पर हाथ रखा, जो अब सिर झुकाए गहरी-गहरी साँसें ले रहा था।

"हम बेवकूफ जिस काम से गए थे... वो तो हुआ नहीं , अपने साथी भी खो आए हम!" चैतन्य भड़की हुई आवाज में चिल्लाया।

"हम उन्हें वापस ले आएँगे।" आशुतोष ने भी उम्मीद भरी आवाज में कहा।

"हॉ बस यही तो करना रह गया है। हम मंजिल तक पहुँचकर भी खाली हाथ लौट आए हैं और इसका मतलब आपको पता है।" चैतन्य एक बार फिर चिल्लाया।

"मुझे पता है!" एक आवाज आई।

और सभी ने उस ओर देखा। अल्फ़ी एक बार फिर से रोशनदान पर पैर हिलाते हुए आराम से बैठा हुआ था। उसे इस तरह बेफिक्री से बैठा हुआ देखकर चैतन्य का पारा और भी गरम हुआ था। एक वही तो था, जिसकी वजह से ऐसा हुआ। यदि उसने चाबी उन्हें दे दी होती, तो कम से कम उनका एक काम तो पूरा हो ही गया होता। मगर वो हारे हुए से खाली हाथ खड़े थे और उनकी इस नाकामयाबी की वजह चैतन्य साफतौर पर अल्फ़ी को ही मान रहा था। कोई और हो भी कैसे सकता था।अल्फ़ी एक ओर इत्मीनान से खड़ा उन सभी की कार्यवाही देख रहा था, जो अब मेंशन में घुसने की जुगत लड़ा रहे थे। सबसे अलग-थलग वो अपनी ही धुन में था। ना जाने क्या सोचता हुआ? बहुत कुछ था जो उसके अंदर चल रहा था, मगर उसने सब कुछ दिल की गहराईयों में दबाकर रखा था। समय के खेल में उलझा हुआ वो बस समय के सही होने का इंतजार कर रहा था, जो सही होने का नाम नहीं ले रहा था।

वो सब मेंशन जाकर सर विलियम को ढूंढने वाले थे। इसका मतलब ये था कि कुछ ऐसा भी था, जिसकी उन्हें जरूरत पड़ने वाली थी। अल्फ़ी ने अपनी जेब में हाथ डाला और उस चीज को बाहर निकाला। वही चाबी, जिसने अतीत में ना जाने कितनी बार उनकी मदद की थी, उसके हाथ में चमक रही थी। एक लंबी और गहरी सॉस लेकर उसने अनामिका की ओर देखा। मगर वो वहॉ नहीं थी। उसने आगे बढ़ते सभी लोगों की ओर देखा। वो वहॉ भी नहीं थी। उसकी तलाश में उसने अपनी नज़रें घुमाई और उसे अनामिका खुद में गुम खड़े चैतन्य की ओर जाती हुई दिखाई दी। वो उनकी ओर देख ही रहा था कि तभी अनामिका ने वो हरकत कर दी। अल्फ़ी का दिल धक्क करके रह गया, जब उसने होंठों पर खिली हुई मुस्कान के साथ अनामिका को भागते देखा और फिर चैतन्य की प्रतिक्रिया उसे और भी सुलगा गई।
एक ज्वालामुखी था उसके अंदर, जो सदियों से सोया हुआ था। मगर बीते कुछ समय से वो अब धधकने लगा था, जिसकी तपिश उसे हर पल जला रही थी और ये देखने के बाद तो जैसे उस ज्वालामुखी ने अब अपना मुँह ही खोल दिया था, जो बहुत कुछ जलाने को आतुर था। फिलहाल तो उसका दिल जल रहा था और दिलजला जो कर गुजरे वो कम ही है। भिंचे हुए जबड़े के साथ उसने वो चाबी वापस अपनी जेब में रख ली। उसके सोचने की दिशा बदल चुकी थी और अब वो उसी बदली हुई दिशा में चलने वाला था। सबके वहॉ से जाने तक वो इंतजार करता रहा और फिर कदम पीछे रखते हुए उछलकर उसी रोशनदान को खोलता बाहर चला गया।

वो जानता था कि दुश्मन को पहले से ही पता है कि वो वहॉ जरूर जाएँगे। इसलिए वो पहले से ही घात लगाकर बैठे होंगे और उसे बस दूर से उन पर नज़र रखना था। वो अब उन पर नज़र रखने के अलावा और कुछ भी नहीं करने वाला था... तब तक तो नहीं... जब तक वो चैतन्य, अनामिका के साथ था। एक जूनून था जो अल्फ़ी के दिल से उठकर उसके सिर पर सवार हो चुका था। कमरे में मौजूद ना होते हुए भी उसकी पैनी नज़र उस कमरे में ही थी, जब सभी वहॉ पहुँचे। उसकी ऑखों के सामने ही अनामिका, चैतन्य और आशुतोष ने वो की होल ढूंढा और उसकी ऑखों के सामने ही प्रोफेसर साहनी ने उन्हें घेर लिया। अब अल्फ़ी थोड़ी हरकत में आया क्योंकि प्रोफेसर साहनी की अगली कार्रवाई अनामिका को नुक़सान पहुँचा सकती थी और ऐसा वो होने नहीं दे सकता था। तो वो अपनी जगह से उठा और फिर आसमान की ओर एक लंबी छलांग लगाकर ओझल हो गया।

जब वो वापस आया... तो उसके साथ चमगादड़ों की पूरी फौज थी। फिलहाल उसका इरादा कमरे में घट रही घटनाओं को अपने हिसाब से मोड़ना था और ऐसा ही हुआ। बिगड़े हुए हालातों में अनामिका और साथियों को वहाँ से निकलना पड़ा और अब उसकी बारी थी।
वो बड़ी आसानी से उस मेंशन के गलियारों से होता हुआ उस स्टडी रूम तक पहुँच गया। उस स्टडी रूम तक पहुँचने के लिए उसे बस कुछ 15-20 गार्ड्स की गर्दनें तोड़नी पड़ी। खून से सनी कमीज पहने हुए वो स्टडी के बाहर खड़ा था। दरवाजा खुला ही था, ज्यादातर गार्ड्स भाग चुके थे और जो बचे थे, उनके और प्रोफेसर साहनी के ऊपर उन चमगादड़ों के झुण्ड ने हमला कर दिया था। रोशनी के ज्यादातर जरिए नष्ट हो चुके थे, जिससे वो कमरा अब नीम अंधेरे में डूबा हुआ था। दरवाजे के पास अंधेरा था, जिससे बाहर विपरीत दिशा से आती रोशनी में अल्फ़ी का वजूद तो स्पष्ट था, पर पहचान अभी भी गुम थी। कुछ पलों तक कमरे का नज़ारा देखने के बाद अल्फ़ी ने जोर से एक ताली बजाई और वो सारे चमगादड़ एकदम से शांत हो गए। प्रोफेसर साहनी और उन गार्ड्स की समझ में नहीं आया कि अचानक ये क्या हुआ? और तभी... उनकी नज़र दरवाजे की ओर गई, जहाँ अल्फ़ी मौत का रूप बनकर खड़ा था।

उन सभी ने अपने जख़्मों को सहलाते हुए उसकी ओर देखा, जो अब अंदर आ चुका था। अंदर आते ही अल्फ़ी ने अपने होंठों से कुछ अजीब सी आवाजें निकाली और फिर वो चमगादड़ किसी पालतू जानवर की तरह ख़ामोशी से उसके अगल-बगल से होते हुए बाहर निकल गए। अभी वो कमरे से बाहर निकले ही थे कि तभी अल्फ़ी ने एक चुटकी बजाई और वो सभी चमगादड़ दरवाजे के बाहर ही ठहर गए, जैसे कि... उस दरवाजे की पहरेदारी पर तैनात हों।

अपनी सुरक्षा चाक-चौबंद करने के बाद अल्फ़ी ने अपना पूरा ध्यान कमरे में मौजूद लोगों पर लगाया। प्रोफेसर साहनी को मिलाकर कुछ जमा सात लोग थे। अल्फ़ी उन सबकी ओर देखने के बाद अपनी ऊंगलियों पर कुछ गिनने लगा। उसकी इस हरकत से वहाँ मौजूद सभी लोग झुंझलाए थे।

"कौन हो तुम? यहाँ क्या कर रहे हो?" चोटिल प्रोफेसर साहनी ने झल्लाए हुए लहजे में कहा।
"गिन रहा हूँ कि तुम सबको मारने में मुझे कितना समय लगेगा?" कहते हुए अल्फ़ी थोड़ा आगे आया तो.. खून से सने उसके चेहरे और कपड़ों को देखकर वो सभी एक बार के लिए सहम गए।

"बकवास बंद करो! तुम अंदर कैसे आ गए?" भयभीत प्रोफेसर साहनी ने हल्की सी सिहरन के साथ कहा।

"अल्फ़ी को रोकने की ताकत किसी में नहीं है।" अल्फ़ी अपने दाँत चबाते हुए बोला।

और ये नाम सुनते ही प्रोफेसर साहनी की आँखें सिकुड़ी थीं। आखिरकार विक्टर के मुँह से निकले इस नाम से उसकी मुलाकात हो ही गई। एक नाम जो पहेली बनकर उनके दिमाग से ना जाने कब से खेल रहा था। आज ही कुछ देर पहले इस नाम की कुछ शिनाख्त उसके सामने खुली थी, जब उन्होंने सृष्टि को अपनी जासूसी करते हुए पकड़ा था। अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए सृष्टि वहाँ से निकल गई, जिससे प्रोफेसर साहनी के अंदर एक डर बैठ गया। मगर उस समय उसके साथ पिशाच के रूप में मौजूद एडवर्ड ने तुरंत ही एक नई योजना बना ली थी, जिसमें कि वो हमेशा से माहिर था। उसने अपनी उस योजना को क्रियान्वित करने का जिम्मा प्रोफेसर साहनी को भी दिया।

"ओह! तो तुम हो अल्फ़ी! पर तुम हमें क्यों मारना चाहते हो? तुम और हम तो पिशाच हैं। तो हम एक

ही हुए।" प्रोफेसर साहनी ने अपने लफ़्ज़ों में पूरी तरह से चाशनी लपेटी थी।

और ये सुनते ही अल्फ़ी बुरी तरह से बिदका था। वो तिलमिलाते हुए बोला, "नहीं हूँ मैं तुम्हारे जैसा! ना ही बनना चाहता हूँ।"
"पर तुम अपनी माया तो वापस चाहते हो ना!" प्रोफेसर साहनी ने अपना पत्ता फेंकते हुए कहा और ये सुनते ही अल्फ़ी की ऑखें सिकुड़ी थीं।

"क्या मतलब?" अल्फ़ी बुरी तरह से चौंकते हुए बोला।

"यही कि... अगर तुम हमारे साथ हो जाओ तो तुम्हें तुम्हारी माया वापस मिल सकती है, तुम्हारी... हेममाया। क्योंकि उसकी वापसी का राज पिशाच श्रेष्ठ को मालूम है।" प्रोफेसर साहनी ने एक और पत्ता फेंका।

उसकी बात सुनता हुआ अल्फ़ी ये सुनकर आपे से बाहर होने को ही था कि तभी उसके बिगड़ते मिजाज को पहचान कर प्रोफेसर साहनी ने कहा, " तुम्हें लग रहा है कि हम तुमसे मजाक कर रहे हैं। पर ऐसा नहीं है। ये पिशाच श्रेष्ठ का तुम्हारे लिए संदेश है। तुम्हारी माया की आत्मा का रहस्य उन्हें किसी और ने नहीं.. बल्कि माया ने ही बताया था। तुमने "वंश बेल" प्रक्रिया के बारे में सुना ही होगा और पिशाच श्रेष्ठ को पता है कि इसके लिए हेममाया को वापस लाने के लिए जो चाहिए... वो कहॉ मिलेगा? वो जीवपात्र... जो सुरमी कबीले के पास था और जिसे तुमने ना जाने कितने तिकड़मों के बाद उनसे हासिल किया था। बस वो ही एकमात्र जरिया नहीं था तुम्हारी माया को वापस लाने का। कुछ और भी है... जो तुम्हें तुम्हारा प्यार वापस दिला सकता है। बस उसके लिए तुम्हें उनकी बात माननी होगी।"

"और तुम्हें लगता है कि मैं उस धोखेबाज की बात पर यकीन कर लूंगा। तुम्हें मैं इतना बेवकूफ लगता हूँ!" अल्फ़ी ने प्रोफेसर साहनी की बात काटते हुए कहा।

"देखो! मुझे बस तुम्हें उनका संदेश देना था। अभी तो इसमें कुछ और भी है। शायद वो सुनने के बाद तुम बेहतर फैसला कर सको।" प्रोफेसर साहनी ने इस बार बहुत ही आत्मविश्वास के साथ कहा।
"और वो क्या है?" अल्फ़ी ने पूछा।

"तुम्हारी बेटी! और तुम अगर हमसे हाथ मिला लो... तो तुम्हें वो भी मिल सकती है। सोच लो! तुम्हारा पूरा हँसता-खेलता परिवार तुम्हें फिर से मिल सकता है।" प्रोफेसर साहनी ने अपना आखिरी दांव खेला।

"ओह! अच्छा! और इसके बदले में क्या चाहिए उसको?" अल्फ़ी ने बेटी के जिक्र पर थोड़ी नर्मी से पूछा।

"अनामिका! अनामिका चाहिए उसे।" इस बार प्रोफेसर साहनी ने बिना डरे कहा।

मगर अनामिका का जिक्र आते ही अल्फ़ी की रगों का खून एक बार फिर से उबाल मारने लगा और वो खतरनाक इरादों के साथ प्रोफेसर साहनी की ओर बढ़ा।

"हॉ! वही अनामिका.. जो तुमसे नहीं.... उस चैतन्य से प्यार करती है।" प्रोफेसर साहनी ने बिना कोई देरी किए कहा और इस बार आगे बढ़ता हुआ अल्फ़ी एकदम से रूका। ये सुनकर उसे सचमुच बहुत चोट लगी थी। उसे एक-एक करके अनामिका और चैतन्य की नजदीकियॉ याद आ गईं और वो बुरी

तरह से सुलगने लगा।

उसके अंतर्मन की लड़ाई को महसूस करके प्रोफेसर ने तुरंत ही मौका लपका और जाल फेंकते हुए बोला, "सोच लो! एक बूंद बचाने के चक्कर में कहीं दरिया से ही महरूम ना रह जाओ। अब फैसला तो तुम्हें ही करना है। तुम्हें अनामिका चाहिए या फिर अपनी हेममाया!"

और यहाँ अल्फ़ी को अपना दिल खुद के ही हाथों से फिसलता हुआ
महसूस हुआ। मगर वो एडवर्ड पर भरोसा कैसे कर सकता था? अपने दिल को संभालते हुए उसने बड़ी ही मुश्किल से कहा, "और ऐसा क्या है तुम्हारे पास कि मुझे तुम पर यकीन करना चाहिए?"

"ये देखो! शायद... तुम्हारे दिल को यकीन हो जाए। मुझे पूरा यकीन है कि तुम पहचान जाओगे... तुम्हारा दिल पहचान जाएगा।" प्रोफेसर साहनी ने उसकी तरफ कुछ बढ़ाते हुए कहा।

अल्फ़ी ने उसके बढ़े हुए हाथों की ओर देखा और फिर वो उसके हाथों से ले लिया। वो एक तस्वीर थी। एक लड़की की तस्वीर! उसे देखते ही अल्फ़ी का दिल जोर से धड़का था क्योंकि उस तस्वीर में कुछ ऐसा भी था, जिसे वो अच्छी तरह से पहचान गया था।

"यही तुम्हारी बेटी है और मुझे दु:ख है कि अब ये भी जीवित नहीं है। जब तक इसके बारे में पता चला, देर हो चुकी थी।" प्रोफेसर साहनी ने इस बार बहुत ही धीमी आवाज में कहा और ये सुनते ही अल्फ़ी का दिल टुकड़ों में बिखर गया।

"मुझे दु:ख से कहना पड़ रहा है कि.... हम सबकी श्रापित जिंदगी की छाया से ये भी नहीं बच सकी। पर उसकी आत्मा अब भी मुक्त नहीं हुई है। श्राप से बंधी हुई है वो। तुम एक कदम आगे आओ और वो श्राप खत्म हो जाएगा और तुम, तुम्हारा परिवार और हम सब आजाद हो जाएँगे। सब सही हो जाएगा।" प्रोफेसर साहनी ने उसके दिल को सहलाते हुए कहा।

अल्फ़ी ने उसकी कही हर बात सुनी, पर नज़र हाथ में पकड़ी उस तस्वीर पर टिकाए रखी। उस लड़की ने वही सफेद रंग का स्टॉल ओढ़ रखा था, जिसे उसने अपनी माया को शादी के बाद तोहफे में दिया था। उसके गले में पड़ा पेंडेंट भी उसे जाना पहचाना लग रहा था। हालांकि उसका रंग सफेद नहीं ... बल्कि नीला था। मगर इस रंग के बदलने के बारे में भी
परिधि ने उसे बताया था।

"कामिनी! तुम्हारी बेटी का नाम!" प्रोफेसर साहनी ने कहा और फिर उसकी ओर देखने लगा कि अब उसके सारे लफ्ज़ खत्म हो चुके थे। अल्फ़ी खाली और भूखी आँखों से उस तस्वीर को घूरे जा रहा था। अचानक एक अपनेपन का अहसास दर्द के साथ उसकी आँखों में उतरा और उसने उस तस्वीर को सहलाया। उसे छूते ही उसके दिल में एक सूकून सा उतरा। उसकी आँखें भीग गईं, जिसका पानी खुशी और ग़म दोनों ही समेटे हुए था।

"इतना मत सोचो! पिछले 200 सालों से तुम दोनों भाई एक अघोषित और अनंत युद्ध में लगे हुए हो। अब पिशाच श्रेष्ठ भी थक चुके हैं। वो इस युद्ध से आगे बढ़ना चाहते हैं क्योंकि... उन्होंने अपनी साधना पहले ही पूरी कर ली है। अनामिका के साथ वो इस समय के जाल को तोड़ देना चाहते हैं। तुम्हारी हेममाया को लाने के लिए अनामिका को जाना ही होगा। अब फैसला तुम्हारे हाथों में है। तुम जैसा कहो।" अल्फ़ी के ऊपर फैसला डालते हुए प्रोफेसर साहनी ने अपनी बात समेटी।

कुछ देर भावनाओं के भँवर में डूबते-उतरने के बाद अल्फ़ी ने एक गहरी साँस ली और फिर अपने कॉपते हुए होंठो से बोला, "मुझे... मेरा प्यार वापस चाहिए। हर हाल में चाहिए!"

"तो फिर... मैं समझूं कि तुम हमारे साथ हो!" प्रोफेसर साहनी ने होंठों पर मुस्कान सजाते हुए कहा।

"अगर खुशी ऐसे ही मिलनी है... तो मुझे मंजूर है। पर... काम के होने के बाद हमारे रास्ते अलग होंगे। कभी नहीं मिलेंगे।" अल्फ़ी नहीं उसकी ओर देखते हुए कहा।
"बिल्कुल! जैसा तुम चाहो!" प्रोफेसर साहनी ने उसका प्रस्ताव से स्वीकारते हुए कहा।

"करना क्या है?" अल्फ़ी ने पूछा।

"तुम्हें पता है कि वंश बेल प्रक्रिया में किसी को वापस लाने के लिए वंश की तीन पीढ़ियों के शरीर के हिस्से चाहिए होते हैं। हेममाया के लिए हम तुम्हारे वंश बेल की सहायता लेंगे क्योंकि हेममाया के वंश का खात्मा उसी के साथ हो गया था। तुम दोनों एक-दूसरे से जुड़े हो... तो तुम्हारी वंश बेल भी उसके लिए काम कर सकती है।" प्रोफेसर साहनी ने कहा।

"तो!"

"हमें सर विलियम का शरीर चाहिए इस काम के लिए। पर वो तभी मिलेगा... जब तुम हमें वो चाबी दोगे।" प्रोफेसर साहनी ने उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा।

अल्फ़ी ने कुछ देर उसकी ऑखों में देखा और फिर वो चाबी अपनी जेब से निकाली। उस चाबी को देखते ही प्रोफेसर साहनी की ऑखों में चमक आ गई। वो फुर्ती से उस चाबी पर झपटा... मगर उतनी ही फुर्ती से अल्फ़ी ने अपनी वो मुट्ठी बंद कर अपनी ओर खींच ली। उसकी इस हरकत पर प्रोफेसर साहनी ने उसे घूर कर देखा।

"तुम्हें सर विलियम का शरीर चाहिए। ये चाबी तो नहीं! तो मैं दरवाजा खोल देता हूँ। तुम्हारे गार्ड्स से कहो कि वो अंदर जाकर ले आऍं।" अल्फ़ी ने अपनी तेज नज़र प्रोफेसर साहनी पर डालते हुए कहा।

"ठीक है! जैसा तुम कहो।" प्रोफेसर साहनी ने भी सहमत होते हुए कहा।
अल्फ़ी ने उस चाबी की ओर देखा और फिर एक गहरी साँस लेकर उस ओर बढ़ गया, जहॉ वो की होल था। उसने उस चाबी को उस होटल में डालकर झटका देते हुए घुमा दिया। और इसी के साथ उस दीवार में तेज हलचल सी होने लगी। अल्फ़ी ने वो चाबी निकाली और फिर तेजी से पीछे हुआ। वो सभी ऑखें फाड़े हुए उस दीवार की ओर देख रहे थे, जिस पर वो आदमकद खिड़की बनी हुई थी। और देखते-ही-देखते वो खिड़की एक ओर खिसकने लगी। उन लोगों को हैरत का एक तेज झटका लगा जब उन्होंने देखा कि वो खिड़की अपने बाहरी नज़ारों के साथ ही एक ओर हट गई और उस खिड़की के पीछे एक दरवाजा नज़र आने लगा था। उस दरवाजे को देखते ही उत्साहित प्रोफेसर साहनी ने अपने गार्ड्स को अंदर जाने का इशारा किया। जल्द ही वो सब अंदर गए और दो मिनट के अंदर ही सर विलियम के कंकाल के हिस्सों को लेकर आ गए। शायद बाहर निकालने की आस में उन्होंने दरवाजे के पास ही दम तोड़ दिया था।

जैसा भी था... अब सर विलियम की हड्डियॉ प्रोफेसर साहनी के पास थे। जब अल्फ़ी की नज़र उन

हड्डियों पर पड़ी, तो उसने उसके पास जाकर उन हड्डियों पर अपनी ऊंगलियॉ फिराते हुए एक बार फिर से उन्हें महसूस किया। उसने अपना सिर उन पर झुकाकर रखा और फिर कुछ देर बाद तेजी से खड़े होते हुए बोला, "अब आगे!"

"अब हमें अनामिका चाहिए।" प्रोफेसर साहनी ने कहा।

"उसे मैं लेकर आता हूँ!" चैतन्य के साथ मुस्कुराते खड़ी अनामिका को याद करते हुए अल्फ़ी ने कड़वाहट के साथ कहा और फिर तेजी से उस कमरे से निकल गया।

उसके जाते ही प्रोफेसर साहनी के होंठ मुस्कुराए और फिर उसने कहा, "मिशन A कंप्लीट!"
****

उधर मेंशन से विक्टर को साथ लेकर वापस घर पहुँचने के बाद सभी बुरी तरह से झुंझलाए हुए थे। परिधि और डॉ. अनंत, विक्टर का मुआयना करने लगे, जिसके बाद उन्होंने वरूण को ग्रीन हाउस से दवाएँ लाने के लिए भेज दिया और अंकित की मदद से विक्टर को बाहर हॉल में ले गए। इन सबके बीच नाकामी का तीर सीने पर लिए चैतन्य हर पल और भी भड़कता जा रहा था।

"हम बेवकूफ जिस काम से गए थे... वो तो हुआ नहीं, ऊपर से अपने साथी भी खो आए हम!" चैतन्य भड़की हुई आवाज में चिल्लाया।

"हम उन्हें वापस ले आएँगे।" आशुतोष ने भी उम्मीद भरी आवाज में कहा।

"हॉ बस यही तो करना रह गया है। हम मंजिल तक पहुँचकर भी खाली हाथ लौट आए हैं और इसका मतलब आपको पता है।" चैतन्य एक बार फिर चिल्लाया।

"पर... मुझे पता है!" एक आवाज आई।

और इसी के साथ सभी ने ऊपर की ओर देखा। अल्फ़ी पहले की तरह ही उसी रोशनदान में इत्मीनान से पैर लटकाए बैठा हुआ था। उसे इस तरह आराम से देखकर चैतन्य का पारा आसमान तक चढ़ गया था।
"तुम!" चैतन्य ने आग उगलती आवाज में कहा।

"हॉ मैं!" अल्फ़ी ने उतने ही आराम से जवाब दिया।

"शरम नहीं आती! इतने आराम से पैर हिलाते बैठे हुए हो। तुम्हारी वजह.... तुम्हारी वजह से ही ये सब हुआ! अगर तुमने हमें वो चाबी दे दी होती तो कम से कम हालत इतने खराब तो नहीं होते। पर नहीं.... गलत तुम नहीं... हम हैं... जिन्होंने तुम पर भरोसा किया। मैं जानता था कि तुम समय के साथ-साथ शातिर हो चुके हो। तुम्हें अब बस खुद से ही मतलब है। स्वार्थी हो गए हो तुम!" चैतन्य पूरी ताकत से चिल्लाते हुए बोला।

"श्श्श्श्!" अल्फ़ी की आवाज सरगोशी की तरह हवा में फ़ैल गई, जिसने उन तीनों के होंठों पर ताला जड़ दिया।

"स्वार्थी! हम्म! सही कहा! 200 साल इंतजार करने के बाद तो कोई भी स्वार्थी हो सकता है। है ना! आखिर इतने इंतजार के बाद मुझे कुछ मिलना तो चाहिए ना! वो कहते हैं ना कि सब्र और इंतजार का फल मीठा होता है। मुझे भी मेरा प्यार वापस चाहिए और वो मैं लेकर रहूंगा। या तो सहमति से या फिर... जबरदस्ती!" अल्फ़ी ने भी अपने इरादे स्पष्ट करते हुए कहा और ये सुनते ही तीनों सकते में आ गए।

"चलो अनामिका! घर जाने का समय हो गया। बहुत इंतजार करवाया तुमने। पर कोई नहीं! तुम जानती हो कि मैं अपने प्यार के लिए कुछ भी कर सकता हूँ। तो इन सबको टाटा-बाय बाय कहो और चुपचाप मेरे साथ चलो।" अल्फ़ी ने अनामिका पर अपनी जूनूनी ऑखें डालते हुए कहा।

"अल्फ़ी! तुम पागल हो गए हो! वो तुम्हारे साथ कहीं नहीं जाएगी। होश में आओ!" आशुतोष ने भी अपना गुस्सा जाहिर करते हुए कहा।
"जाना तो पड़ेगा। देखता हूँ कि कौन रोकता है मुझे?" अल्फ़ी ने चारों तरफ अपनी नज़रें घुमाकर सबको देखते हुए कहा, जो उलझन में खड़े उसे भी उलझता हुआ देख रहे थे।

"और तुम्हें लगता है कि तुम ऐसा कर लोगे।" चैतन्य ने अनामिका के सामने आकर दॉत पीसते हुए कहा।

उसे इस तरह भड़का हुआ देखकर अल्फ़ी ने जोरों का ठहाका लगाया। अपनी हँसी को बड़ी मुश्किल से काबू करते हुए वो बोला, "देखो तो जरा! आखिर बोल कौन रहा है? जो खुद से तो कुछ कर नहीं सकता। जिसकी शक्तियॉ खुद दूसरों की मदद की मोहताज हैं।"

अल्फ़ी का ये तंज़.... और कमरे में पूरी तरह से ख़ामोशी पसर गई। चैतन्य के लिए ये सब बर्दाश्त करना हद से बाहर होता जा रहा था। गुस्से में उसके नथुने फड़कने लगे थे।

"क्यों? सच बात बुरी लगी। लगे तो लगे! मेरी बला से! समझ में नहीं आता कि... कैसे रक्षक हो तुम सब! कभी कुछ सही करोगे भी... या फिर अपनी हर नाकामी दूसरों के सिर पर डालते रहोगे। पहले ना... काबिल बनो... फिर दावा करो। अनामिका हर हाल में.... बेहतर डिजर्व करती है और वो... मैं हूँ। तुम नहीं! वो मेरी परवाह करती है और उसने ये हमेशा साबित भी किया है। और परवाह ही मोहब्बत होती है।" अल्फ़ी, चैतन्य पर चिल्लाते हुए बोला।

वहीं अल्फ़ी के मुँह से ये सब सुनकर अनामिका जैसे आसमान से गिरी थी। ये सच था कि वो उसकी परवाह करती थी... बहुत परवाह करती थी, पर उस परवाह को प्यार का नाम देना उसे भड़का गया।

"अल्फ़ी! चिल्लाओ मत! हम पर कीचड़ उछालने से तुम भी साफ-सुथरे
साबित नहीं हो सकते, जबकि तुम खुद उस कीचड़ में गले तक धंसे हुए हो। चैतन्य सही कह रहा है। उसकी नहीं... तुम्हारी वजह से ही हमारे साथी दुश्मनों के हाथ चढ़ गए हैं और... आज हमारे हाथ खाली हैं.... तो उसकी वजह भी सिर्फ तुम... और तुम ही हो। तुम्हें पता था कि हमें उस चाबी की जरूरत पड़ेगी तो तुमने हमें वो चाबी क्यों नहीं दी और अब चैतन्य के ऊपर चढ़ रहे हो। मैं मानती हूँ कि हमें अभी अपनी शक्तियों का सही तरीके से इस्तेमाल करना नहीं आता, पर जब भी जरूरत पड़ी है.. हमने... चैतन्य ने हमेशा खुद को साबित किया है। पर तुम! तुम तो सब जानते हो... सब जानते थे। फिर क्यों ऐसे हालात बने हुए हैं? दुश्मन तो तुम्हारा भी है वो... या फिर तुम खुद हमारे भरोसे बैठे हुए

हो। जवाब दो!" पहली बार अनामिका गुस्से और तैश के साथ अल्फ़ी के ऊपर चिल्लाई थी।

अनामिका की बातें और बिगड़ा हुआ लहज़ा सुनकर अल्फ़ी के अंदर गुस्से का एक ज्वार सा उठा और उसने आगे बढ़कर अनामिका के दोनों बाजुओं को मजबूती से पकड़कर झिंझोड़ते हुए तेज आवाज में कहा, "क्योंकि मैंने ठेका नहीं ले रखा है सबका!"

अल्फ़ी की प्रतिक्रिया से अनामिका सहम सी गई। ये पहली बार था, जब अल्फ़ी उसके साथ इतना कठोर हुआ था। अल्फ़ी ने अपना चेहरा अनामिका के चेहरे के बिल्कुल पास किया और उसकी ऑखों में इस तरह झांकने लगा, जैसे कि उनके रास्ते ही वो उसके अंदर उतर जाएगा। ये सब देखकर अनामिका के साथ वहॉ मौजूद सभी लोग सहम गए। अल्फ़ी की पकड़ इतनी मजबूत थी कि अनामिका को तकलीफ़ होने लगी थी। उसके चेहरे पर उभरते दर्द को देखकर अल्फ़ी का गुस्सा झाग की तरह एकदम से बैठ गया और अनामिका पर उसकी पकड़ ढीली पड़ गई। वहीं अल्फ़ी की इस हरकत से चैतन्य बुरी तरह से सुलग उठा। वो दनदनाते हुए उनके पास पहुँचा और अनामिका के बाजू में कसे अल्फ़ी के एक हाथ को पूरी ताकत से अलग कर झटकते हुए उसकी ओर ऊंगली उठाकर बोला, "आइंदा...
ऐसा मत करना! वरना..."

और ये सुनते ही अल्फ़ी ने उसे अपनी दहकती हुई अंगारा ऑखों से देखा। वो तेजी से पीछे हटा और फिर उन सभी पर एक नज़र डाली। वो एक ओर गया और वो चाबी मेज पर रख दी।

"तो ठीक है! लो! हिम्मत है तो ले लो!" अल्फ़ी ने उन्हें चुनौती देते हुए कहा।

अल्फ़ी ने एक कुटिल मुस्कान के साथ उन तीनों की ओर देखा। चैतन्य अपनी मुट्ठियॉ भींचे आगे बढ़ा ही था कि अनामिका ने उसे रोक दिया। उसी समय वरूण और अंकित भी दरवाजा खोलकर अंदर की ओर आए और माजरा समझने की कोशिश करने लगे।

"क्या हुआ? इतनी भी हिम्मत नहीं है क्या?" अल्फ़ी ने एक बार फिर से उन्हें ललकारा।

बस उसका इतना ही कहना था कि चैतन्य को पीछे धकेलते हुए अनामिका बिजली की तेजी से आगे आई और उस चाबी को उठा लिया। और अचानक ही ये हुआ। चाबी को उठाकर अनामिका संभली ही थी.. कि अल्फ़ी ने झपट्टा मारकर उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया।

"ये गलती नहीं करनी थी।" अनामिका को अपनी गिरफ्त में और भी कसते हुए अल्फ़ी ने कहा।

सभी एक साथ उनकी ओर बढ़े ही थे कि तभी अल्फ़ी चेतावनी देते हुए बोला, "ना! ना! कोई आगे नहीं आएगा। चैतन्य! अनामिका को वहीं ले जा रहा हूं, जहॉ तुम्हें अपना प्यार सौंपा था। खोज सकते हो तो खोज लेना। चलो! अलविदा कहो अनामिका! आज आखिरी बार देख रही हो
तुम इन्हें।"

और फिर सबकी धड़कनें बढ़ाते हुए अल्फ़ी उसे ले उड़ा। जो भी हुआ.. सब मुँह खोले देखते रह गए। चैतन्य ने अपनी फटी हुई ऑखों से उस जगह को देखा, जहॉ कुछ देर पहले अल्फ़ी और अनामिका खड़े थे। जमीन पर पड़ी चाबी चमचमा रही थी।

भाग 154

कमरे का माहौल बहुत ही गंभीर और भारी हो चुका था। अपने हाथों में पकड़ी हुई उस चाबी को घूरते हुए चैतन्य ना जाने किस सोच में डूबा बैठा हुआ था। उन सबने जो भी सोचा कुछ भी सही नहीं हो रहा। अभी तो सृष्टि और मुकुल का सदमा भी कम नहीं हुआ था... कि ये पहाड़ जैसी मुसीबत सिर पर आ गिरी थी। अल्फ़ी जाते-जाते जो कह गया था... उसका मतलब समझना चैतन्य के अलावा और किसी के बस का नहीं था और वही... बिल्कुल चुपचाप बैठा हुआ था।

"अरे बकोगे कुछ! कहाँ लेकर गया वो अनामिका को? किस जगह की बात कर रहा था वो?" गुस्से से भरा हुआ वरूण उसके सिर पर सवार होता हुआ बोला।

अपने होंठ भींचे चैतन्य ने पलकें उठाकर उसकी ओर इस तरह देखा, जैसे कि उसे दूर उड़ाकर पटक देगा।

"चैतन्य! सोच क्या रहे हो तुम? अनामिका की तलाश में हम इतने बड़े शहर में भटक तो नहीं सकते ना! उसने आखिर कहा क्या तुमसे?" इस बार आशुतोष ने भी झुंझलाते हुए कहा।

चैतन्य की नज़रें आशुतोष की ओर मुड़ी और फिर वो उठकर मेज के पास गया। डॉ. अनंत वहीं एक कुर्सी पर चिंता भरी ऑखों के साथ बैठे हुए थे। चैतन्य ने उन पर भी एक नज़र डाली और फिर एक कोरा कागज अपने
सामने खींचकर वो वहीं कुर्सी पर बैठ गया। सबको उसकी हरकतें समझ में ही नहीं आ रही थी। किसी के भी सवालों का जवाब देने की बजाय वो उस कागज पर पेंसिल घिसने लगा।

"ये दिमाग से सरक तो नहीं गया है ना!" अंकित, वरूण के कानों में फुसफुसाया, जिस पर वरूण ने उसे अपने चश्मे के पीछे से घूरा।

"अगर इसकी वजह से अनु को कुछ हुआ, तो ये कहॉ-कहॉ से सरकेगा.. इसे भी पता नहीं चलेगा। बस अनु की वजह से ही.... इसे बर्दाश्त कर रहा हूँ।" वरूण गुस्से में दॉत पीसते हुए बोला।

आशुतोष ने उन दोनों की तेज फुसफुसाहट सुन ली और फिर वो तेजी से चैतन्य के पास गया। उसने देखा कि चैतन्य किसी जगह की तस्वीर बना रहा था, जो उनकी समझ में नहीं आ रहा था।

"चैतन्य! ये क्या बना रहे हो? कौन सी जगह है ये?" आशुतोष ने उस तस्वीर पर अपनी नज़रें गड़ाकर पूछा। मगर चैतन्य फिर भी कुछ नहीं बोला। वो उसी तरह अपनी पेंसिल चलाता रहा। उसकी ये अजीब सी चुप्पी अब सभी को चुभने लगी थी। आशुतोष ने उकताकर डॉ. अनंत की ओर देखा, जो बड़ी ही गंभीरता से चैतन्य को उसका काम करते हुए देख रहे थे। उन्होंने भी इशारे से आशुतोष को शांत रहने के लिए कहा। आशुतोष ने एक गहरी साँस छोड़ी और चैतन्य के बोलने का इंतजार करने लगे। करीब

पॉच मिनट तक चैतन्य पूरी तल्लीनता से वो तस्वीर बनाता रहा।

तस्वीर के बनने के बाद उसने अपना सिर उठाकर सभी की ओर देखा, जो अपनी ऑखों में गुस्सा, कौतूहल और सवाल लिए उसे ही देख रहे थे। उसने कमरे में चारों ओर गहरी नज़र से देखा और फिर डॉ. अनंत की ओर मुड़ा।
"मुझे लगता है कि आपको गीता के साथ उसके कमरे में रहना चाहिए। आप दोनों वहॉ ज्यादा सुरक्षित रहेंगे।" चैतन्य ने डॉ. अनंत से कहा।

"चैतन्य तुम...." वरूण ने कुछ कहना चाहा, जिसे डॉ अनंत की आवाज ने टोक दिया।

"हम्म! शायद तुम सही हो। वैसे भी मैं कुछ और ज्यादा मदद नहीं कर सकता। कम से कम खुद को सुरक्षित ही रख लूं।" कहते हुए डॉ. अनंत कुर्सी से उठकर चैतन्य के पास आए और उसके कंधे पर हाथ रख दिया। चैतन्य ने उनकी मुस्कुराती हुई ऑखों में देखा।

"मुझे तुम पर पूरा यकीन है चैतन्य! मुझे पता है कि तुम कभी निराश नहीं करोगे।" डॉ. अनंत ने भरोसे से भरी हुई आवाज में कहा।

उनकी बात सुनकर चैतन्य ने भी उन पर आभार भरी नज़रें डाली। ये पहली बार था.. जब किसी ने उस पर विश्वास दिखाया था। उसकी ऑखें जज़्बातों से नम हो गई।

"आप बिल्कुल भी चिंता ना करें। मैं आपकी बेटी को सही-सलामत आपके पास लेकर आऊंगा। मेरा वादा है आपसे।" चैतन्य ने उनके हाथों को मजबूती से पकड़ते हुए उतने ही मजबूत लहज़े में कहा। उसकी बात सुनकर डॉ. अनंत के थके हुए चेहरे की मुस्कान और भी चौड़ी हुई।

"मैं जानता हूँ। मेरी अनामिका की पसंद कमजोर हो ही नहीं सकती।" डॉ. अनंत ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए मुस्कुरा कर कहा और फिर आशुतोष और बाकी सभी पर नज़र डालते हुए वो गीता के पास पहुँचे और फिर उसे अपनी हिफाजत में लेते हुए उस कमरे से बाहर निकल गए।
"विक्टर कैसा हैं?" चैतन्य ने परिधि से पूछा। जवाब में परिधि ने पलटकर पास ही कुर्सी पर बेसुध पड़े विक्टर की ओर देखा।

"बेहोश है।" परिधि नहीं कहा।

चैतन्य ने परिधि को अपने पास बुलाया और फिर उसके कान में फुसफुसाकर कुछ कहा। उसकी बात सुनकर परिधि ने उसकी ओर बहुत ही ध्यान से देखा। चैतन्य ने ऑखों ही ऑखों में अपनी बात दोहराई, जिस पर परिधि ने सहमति में अपना सिर हिलाया।

"वरूण! इधर आओ!" चैतन्य ने कहा, जिस पर हैरान-परेशान सा वरूण उसकी ओर आ गया। चैतन्य के इशारा करने पर वो उसके बहुत ही करीब आया। चैतन्य ने उससे भी कुछ कहा, जिस पर उसने बारी-बारी से चैतन्य और परिधि की ओर देखा। वो चैतन्य से लाख कुढ़े, मगर उसके पिता ने थोड़ी देर पहले चैतन्य के लिए जो कुछ भी कहा.. वो उन शब्दों का अपमान नहीं कर सकता था। वो सहमति में अपना सिर हिलाते हुए एक ओर चला गया। आशुतोष और अंकित फिलहाल उन तीनों की ओर देखते हुए अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। जल्द ही वरूण वापस लौटा और परिधि के पास गया। इस बार परिधि ने उससे कुछ कहा, जिस पर एक बार फिर से सिर हिलाता वो बाहर की ओर गया।

वरूण के वापस लौटने तक चैतन्य ऑखें बंद किए चुपचाप बैठा रहा। दूर खड़ा आशुतोष उसके चेहरे को पढ़ने की कोशिश कर रहा था, पर नाकाम ही रहा। ये पहली बार था कि इतने तनाव भरे माहौल में भी चैतन्य बिल्कुल शांत था। आखिरकार आशुतोष ने भी हालातों के मुताबिक चलने का फैसला कर लिया कि कुछ और किया ही नहीं जा सकता था। उनके तीन साथी उनसे अलग हो चुके थे और अब उनको उन्हें भी बचाना था। यकीनन उनका काम पहले से भी ज्यादा बढ़ गया था।
उसी समय चैतन्य ने आशुतोष और अंकित को अपने पास बुलाया और उन्हें विक्टर के पास बैठकर कुछ भी बातें करने के लिए फुसफुसाकर कहा। कुछ भी ऐसी बातें, जो मौजूदा हालातों से मेल नहीं खाती हों। आशुतोष और अंकित ने हैरानी से एक-दूसरे की ओर देखा और फिर चैतन्य पर यकीन रखते हुए अपने कंधे उचकाते विक्टर के पास जाकर बैठ गए और एक-दूसरे से बेमतलब की बातें करने लगे।

उधर परिधि ने अपने हाथ में तीन छोटी-छोटी शीशियॉ पकड़ी हुई थीं, जिनमें कुछ पावडर जैसा भरा हुआ था। उसने उन शीशियों से थोड़ी-थोड़ी मात्रा में वो पावडर एक छोटे से बाउल में डाले और उन्हें बिना आवाज किए मिलाने लगी। वहीं चैतन्य एक बार फिर से उस तस्वीर को ध्यान से देखने लगा, जिसे उसने बनाया था।

कुछ ही देर बीते होंगे कि तभी वरूण ने कमरे में प्रवेश किया। वो सीधे परिधि के पास आया और उसे कुछ दिया और फिर एक ओर चला गया। इस बीच आशुतोष और अंकित की बेमतलब और बोझिल बातें बदस्तूर जारी थीं। वो कुछ पत्ते थे, जिनके निचले हिस्से में लाल-लाल धारियॉ बनी हुई थीं।

"यही है जम्बूक! इसी से बेहोशी की दवा बनती है।" चैतन्य ने बहुत ही धीमी आवाज में पूछा।

"हम्म! और भी बहुत कुछ बनता है।" परिधि भी उसी के अंदाज में फुसफुसाई और फिर इमामदस्ता अपने सामने खींचकर उन पत्तियों को उसमें डालकर कूटने लगी। इस पूरे दौरान उसने हाथ में दस्ताने पहन रखे थे। अच्छी तरह कूटने के बाद उन पत्तों से उनका रस निकल आया था, जिसे परिधि ने एक मलमल के कपड़े की मदद से अलग किया और उन पावडरों के मिश्रण में डाल दिया। उस रस के पावडर के मिश्रण में गिरते ही उसमें सनसनाहट सी उत्पन्न होने लगी। परिधि और चैतन्य दोनों ही तेजी से पीछे हुए थे। उसी समय वरूण वहॉ आ पहुँचा, जिसके हाथ में कुछ सुईयॉ और एक सीरिंज थी। परिधि के इशारा करने पर आशुतोष और अंकित एक-एक करके वहॉ आए। वरूण ने उनकी ऊंगलियों में सुई चुभाई और उससे न क्लीं खून की कुछ बूंदें उस मिश्रण में मिला दीं। इसके बाद वो दोनों फिर से अपनी जगह पर बैठकर बातें करने लगे। इसके बाद यही प्रक्रिया वरूण और चैतन्य ने भी दोहराई। सभी का खून उसमें मिलते ही उस हरे रंग के मिक्श्रण का रंग बदलने लगा और फिर भट्ट की आवाज के साथ बदल कर बैंगनी हो गया।

"हो गया!" उस नए बने मिश्रण को अच्छी तरह जॉचते हुए परिधि ने धीमी आवाज में कहा। ये सुनते ही चैतन्य ने वरूण को इशारा किया और फिर उसने वो दवा एक सीरिंज में भरकर... विक्टर के पास जाकर... उस इंजेक्शन के सहारे वो दवा उसकी नसों में उतार दी। इंजेक्शन देने को दो मिनिट बाद परिधि ने काम के खत्म होने का इशारा किया।अब चैतन्य ने खुलकर सॉस ली और फिर आशुतोष और अंकित को अपने पास बुलाया।

"क्या हो रहा है? कुछ बताओगे!" आशुतोष ने फुसफुसाकर कहा।

"अब आप लोग सामान्य तरीके से बोल सकते हैं।" चैतन्य ने भी सामान्य लहज़ा पकड़ते हुए कहा।

"कुछ नहीं। एडवर्ड, गीता और विक्टर के जरिए हमारी जासूसी कर रहा था। मेरे कहने पर परिधि ने भ्रम पैदा करने वाली दवा बनाई है। अब हम यहॉ नहीं भी हों, तो भी विक्टर को हम यहीं दिखाई देंगे। इससे हम कुछ समय के लिए एडवर्ड को आराम से धोखा दे सकते हैं।" चैतन्य ने आशुतोष और अंकित को समझाते हुए कहा। उसकी बात सुनकर अंकित और आशुतोष दोनों ही हैरान हुए थे।

"पर तुम्हें इनके बारे में कैसे पता चला?" आशुतोष ने पूछा।
"वो बाद में बताऊंगा। पहले एक और बहुत ही जरूरी काम करना है।" चैतन्य ने उनका सवाल टालते हुए कहा।

"और वो क्या?" अंकित ने पूछा।

"अनामिका का पता ढूंढना है।" चैतन्य ने एक बार फिर से उस तस्वीर में झुकते हुए कहा।

"अच्छा! और वो कैसे?" अनामिका का नाम सुनते ही वरूण ने उत्साहित होकर पूछा।

"इस तस्वीर की मदद से!" चैतन्य ने उस तस्वीर की ओर ऊंगली दिखाते हुए कहा।

"ये तो तुमने अभी बनाई है ना!" अंकित ने उस तस्वीर को ध्यान से देखते हुए कहा।

"हॉ!" चैतन्य ने छोटा सा उत्तर दिया।

"पर ये है कौन सी जगह?" वरूण ने चश्मे के पीछे से उस तस्वीर को घूरते हुए पूछा।

"अभी पता चल जाएगा। आशुतोष जी! आप यहॉ आइए।" चैतन्य ने अपने साथ वाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा। आशुतोष भी उसकी बात मानते हुए उसके पास जाकर बैठ गया। सभी कौतूहल से उसी की ओर देख रहे थे।

"आशुतोष जी! ये आज से 200 साल पुराने समस्तीपुर यानि कि...
कल्परूप की तस्वीर है। 200 साल पहले ऐसा दिखता था ये शहर। ये समझिए कि ये एक नक्शा है।" चैतन्य ने उस तस्वीर को देखते हुए कहा।

"तो!" वरूण ने पूछा।

"तो ये कि... इस पुराने कल्परूप को आज के समस्तीपुर में बदलना है।" चैतन्य ने कहा।

"और वो कैसे?" आशुतोष ने पूछा।

"आपकी शक्तियों की मदद से। आप भू-रक्षक हैं ना! चलिए दिखाइए अपना कमाल।" चैतन्य ने आशुतोष को मुस्कुराती हुई नज़रों से देखते हुए कहा।

अब आशुतोष की समझ में आ गया था कि चैतन्य आखिर कश्र क्या रहा था! 200 साल बीतते-बीतते

ये जगह बहुत बदल गई थी। चैतन्य, अनामिका का पता अतीत की इस तस्वीर में लगा चुका था, मगर अनामिका को अतीत में नहीं बल्कि हालिया समय में ढूंढना था।

चैतन्य की बात समझकर आशुतोष ने वो तस्वीर अपनी ओर खींची। इसके बाद उसने अपनी ऑखें बंद की और अपने सीधे हाथ की तर्जनी ऊंगली को अपनी दोनों भौंहों के बीच रख दिया। इसके बाद वो कुछ बुदबुदाने लगा, जो बाकियों के लिए अस्पष्ट था।

बुदबुदाहट खत्म होते ही आशुतोष ने वो ऊंगली उस तस्वीर के बीचों बीच रख दी और बोला, "बदलो!"

उसके कहने के साथ ही उस तस्वीर का सारा काला रंग सिमट कर उस ऊंगली के पास आने लगा और देखते ही देखते वो रंग उस छोटी सी
ऊंगली के नोंक के नीचे चले गए। वो कागज एक बार फिर से कोरा हो गया था।

इतना काम खत्म होते ही आशुतोष ने अपनी ऑखें बंद करते हुए एक हुंकारी भरी। हुंकारी भरते ही एक बार फिर से उस ऊंगली के नीचे से वो काला रंग बाहर निकलकर उस कागज में फ़ैल गया। एक बार फिर से उस कागज में एक तस्वीर थी, मगर ये तस्वीर पिछली तस्वीर से बहुत अलग लग रही थी। काम खत्म होते ही आशुतोष ने अपनी ऑखें खोली और उस तस्वीर को अपने चेहरे की मांसपेशियॉ सिकोड़ते हुए देखा।

"अब!" अंकित ने चैतन्य से पूछा।

इस पर चैतन्य ने वो तस्वीर एक बार फिर से अपने सामने खींची। उसने उस तस्वीर को बहुत ही ग़ौर से देखा और फिर एक जगह ऊंगली रखते हुए वरूण और अंकित की ओर देखते हुए बोला, "ये कौन सी जगह है?"

"ये तो शायद..." वरूण ने कहना चाहा।

"मैं जानता हूँ कि ये कौन सी जगह है?" पूरा जवाब अंकित ने दिया।

"हम्म! तो फिर तैयार हो जाओ! वरूण! मेरे ख्याल से संग्रहालय में चॉदी की कीलें हो सकती हैं। तुम और अंकित अपने पास रखो। आशुतोष जी अपने खंज़र की धार चेक कर लीजिए। युद्ध के लिए निकलना है। कर्मयुद्ध!" चैतन्य ने ऑखों में शोले भरकर तस्वीर को देखते हुए कहा।

उसकी बात सुनते ही सभी हरकत में आए और चैतन्य के कहे अनुसार तैयारी पूरी करने लगे। चैतन्य अभी भी उस तस्वीर को घूरकर देख रहा था, जैसे कि अनामिका उसी के अंदर हो और वो अपना हाथ आगे बढ़ाकर
उसे अपने पास खींच लाएगा। अनामिका का ख्याल आते ही उसकी ऑखें भीगी और उसके कानों में उसी की आवाज गूंजने लगी।

"पता नहीं अनामिका! पर इतना जानता हूँ कि हमें कोई अलग नहीं कर सकता। हाँ... अगर कभी.... किसी ने तुम्हें मुझसे दूर किया... तो भी मैं किसी भी समय के पार जाकर तुम्हें वापस... अपने पास ले

आऊंगा। चाहे आसमान हो... चाहे पाताल हो। ये मेरा वादा है तुमसे।"

(भाग - 77)

आज चैतन्य को अपने उसी वादे की कसौटी पर खरा उतरना था। अपनी अनामिका को वापस लाना था और वो जानता था कि इस बार उनकी तरफ से कोई भी गड़बड़ नहीं होगी क्योंकि इस बार उनकी तैयारी पूरी गंभीरता लिए हुए थी। इतना शांत वो पहले कभी भी नहीं हुआ था। चैतन्य ने एक गहरी साँस भरी और उस तस्वीर की ओर देखते हुए बोला,

"आ रहा हूँ अनु! इंतजार करना!"

क्रमशः -
भाग 155

चैतन्य ने परिधि से वो दवा ली और सबके साथ बाहर निकल गया। उन्होंने परिधि को विक्टर के पास छोड़ दिया था, ताकि वो विक्टर पर नज़र रख
सके और उनकी सूहूलियत के हिसाब से उसका ख्याल रखे। अपने बिखरे इतिहास से आगे बढ़कर अब वो भी अपने वजूद की मौजूदगी महसूस करना चाहती थी। आईने में खुद से नज़र मिलाना चाहती थी। उसके अंदर जो हिम्मत और खुद पर यकीन का जज़्बा दम तोड़ रहा था, उसे इन सभी के साथ ने फिर से जिंदा कर दिया था और अब वो फिर से सॉसे लेती हुई लाश नहीं बनना चाहती थी।

उसने बेसुध पड़े विक्टर की ओर देखा। उसी ने चैतन्य को बताया था कि विक्टर का शरीर ही शिथिल पड़ा हुआ था, पर उसका दिमाग पूरी तरह से स्वस्थ था और ये कहीं से भी सही संकेत नहीं था। उन लोगों को गीता से जुड़ा बुरा अनुभव अभी भी याद था कि किस तरह एडवर्ड ने गीता के मस्तिष्क पर कब्जा करके सालों से सब पर नज़र रखी हुई थी और यही डर अब विक्टर से भी जुड़ गया था। हालांकि परिधि ने बताया कि विक्टर किसी पर हमला कर सकने की हालत में नहीं था और शायद इसीलिए उसे प्रोफेसर साहनी और एडवर्ड की ओर से ज्यादा तवज्जो नहीं मिली। उसकी आखिरी घड़ी में भी एडवर्ड उसे निचोड़ लेने की नीयत में था। फिलहाल तो वो परिधि की दवा के भ्रम जाल में फँस चुका था, जिस वजह से एडवर्ड को सबके वहाँ से चले जाने की खबर नहीं हो सकी थी। गीता को भी डॉ. अनंत ने अपनी सुरक्षा में ले लिया था। पिछली मुठभेड़ में अल्फ़ी ने उसके शरीर को तो एडवर्ड के चंगुल से आजाद करवा दिया था, पर मस्तिष्क पर उसका असर अभी भी था। एडवर्ड की तुच्छ मानसिकता से सबको मुक्त करना अब बहुत ही जरूरी हो गया था।

बेसुध पड़े विक्टर को ऐसे ही अकेले ताकते-ताकते उसे उकताहट होने लगी थी। एक आह भरकर वो अपनी जगह से उठी और फिर दिल बहलाने के लिए वहाँ रेक्स में लगी किताबों पर हाथ फिराने लगी। आगे बढ़ते-बढ़ते उसकी ऊंगलियाँ एक किताब पर जाकर रूक गईं। उसने उस किताब के आसपास देखा। वो किताब बाकी दूसरी किताबों से अलग लग रही थी। कौतूहलवश उसने उस किताब को खींचकर बाहर निकाला। दरअसल वो
कोई किताब ना होकर एक डायरी थी, जिसके कवर पर एक पौधे की तस्वीर उभरी हुई थी।

उसने एक नज़र विक्टर पर डाली और फिर उस डायरी को खोल दिया। एक-दो पन्ने पलटते ही उसकी कौतूहल से भरी आँखें हैरानी के समंदर में गोते लगाने लगी। उसने तेजी से आगे के पन्ने पलटे और फिर उसे पढ़ने लगी। एक-दो पन्ने पढ़ने के बाद उसने तेजी से सारे पन्ने पलटे और फिर आखिरी पन्ने के सबसे नीचे की ओर देखा। उसी हैरानी के साथ उसने वो
किताब बंद की और उसे वापस रख दिया।

"ये कैसे हो सकता है? अंकल से बात करनी पड़ेगी। बस ये सब सही-सलामत लौट आएँ... उसके बाद।" परिधि उलझी हुई आवाज में बुदबुदाई और फिर वापस विक्टर के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई। उसने एक बार फिर से मुड़कर उस किताब की ओर देखा और फिर वापस विक्टर की ओर मुड़ गई। उसका उकताया हुआ दिमाग अब एक नई पहेली में उलझ गया, जिसका जवाब मिलने में अभी समय था। वो इंतजार का मन बनाकर बैठी ही थी कि सामने से आई आवाज ने उसे चौंका दिया।

"कर दी ना गलती! नहीं करनी चाहिए थी!"

और ये सुनकर पहली बार परिधि घबराने की बजाय खुलकर मुस्कुराई थी।

****

चैतन्य और साथी पूरी रफ्तार से अंकित की बताई हुई जगह पर जा रहे थे। चैतन्य अभी भी पूरी तरह से खामोश था और फिलहाल उसकी मनोदशा को समझते हुए बाकियों ने भी अपने सवालों को चुप करवा रखा था। पूरी रफ्तार से आगे बढ़ती हुई उनकी गाड़ी जल्द ही उस शहर के एकलौते झील के किनारे पहुँच गई। वहॉ पहुँचते ही चैतन्य तेजी से
गाड़ी से उतरा। चारों ओर नज़र घुमाने के बाद वो अनुमान लगाता हुआ झील के किनारे-किनारे एक ओर बढ़ता गया। चारों ओर लगी लाइट्स के कारण उस जगह का एक हिस्सा रात के इस समय अभी भी रोशन था। बाकी सब भी उसके पीछे लगभग भाग रहे थे और फिर... एक जगह पर पहुँचकर वो रूक गया।

झील के किनारे की एक जानी-पहचानी सी जगह, जहॉ उसने अतीत में अनामिका के साथ एक अच्छा-खासा समय बिताया था। पर समय के साथ इस जगह की सूरत हद से ज्यादा बदल गई थी। हर तरफ सीमेंट और कांक्रीट की मौजूदगी ने उसकी वो प्राकृतिक सुंदरता खत्म कर दी थी, जिसने उस तनाव भरे माहौल में भी चैतन्य और अनामिका को हमेशा सूकून पहुँचाया था और ये देखकर चैतन्य का चिढ़ा हुआ मन और भी चिढ़ा था। मगर पुरानी एक याद अभी भी वहॉ मौजूद थी। वही बड़ा सा पत्थर, जिस पर बैठकर उन्होंने ना जाने कितने प्लान्स बनाए थे। इसी पर बैठकर एक बार चैतन्य ने अनामिका के हाथों से बना खाना भी खाया था।

उन सारे लम्हों को ज़हन में रखे हुए वो उस पत्थर तक गया और उसे बहुत ही नर्मी से छुआ। सभी चुपचाप उसे ही देख रहे थे। कुछ पल पुरानी यादों पर लुटाने के बाद उसने एक ओर देखा और एक बार फिर से वो चिड़चिड़ा उठा। जंगल का वो हरा-भरा हिस्सा जिससे उनका अतीत जुड़ा था... मानव विकास की भेंट चढ़ चुका था। सामने हवा के साथ झूमते पेड़ों के जंगल की बजाय ईंट, सीमेंट और पत्थरों का बना जंगल (ऊँची-पक्की ईमारतें) मुँह चिढ़ा रहा था। एक दिन पहले ही चैतन्य इन्हीं रास्तों से हरे-भरे पेड़ों के साए में होकर गुजरा था और आज बड़े-बड़े बंगलों के बीच बने सुनसान, बंजर और चौड़े रास्ते उसे एक बहुत ही लंबे समय के गुजर जाने का अहसास दिला रहे थे। उसने एक गहरी साँस ली और फिर लौटकर वापस सबके पास आ गया।

"आशुतोष जी! क्या आप एक काम कर सकते हैं?" चैतन्य ने धीमी
आवाज में कहा।

"बोलो!" आशुतोष ने कहा।

"मुझे पता है कि अनामिका कहॉ हो सकती है? पर वो जगह मैंने जब देखी थी, तब ये जगह हरे-भरे घने जंगल से ढकी थी। अब ऐसे हालत में उस जगह को ढूंढना समय बर्बाद करने से ज्यादा और कुछ नहीं करेगा।" चैतन्य ने सामने देखकर समस्या रखते हुए कहा।

"समझ गया! पर मुझे करना क्या है?" आशुतोष ने भी उसकी बात सुनकर उन इमारतों की ओर देखते हुए कहा।

"क्या आप कुछ ऐसा कर सकते हैं कि मुझे इन मकानों की जगह वही जंगल दिखाई दे, ताकि मैं सही रास्ते पर बढ़ सकूं।" चैतन्य ने सामने बनी इमारतों की ओर इशारा करते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर आशुतोष ने एक गहरी सॉस ली और फिर सामने बने घरों की ओर देखते हुए उसने कहा, "तुम्हारे लिए कुछ भी!"

इसके बाद आशुतोष ने नीचे से मिट्टी उठाई। वो अपनी ऑखें बंद कर कुछ बुदबुदाया और फिर उस मिट्टी से भरी मुट्ठी को उसने चैतन्य के माथे से कुछ देर छुआकर रखा। इसके बाद थोड़ी मिट्टी चैतन्य के माथे पर लगाकर उसने आगे बढ़कर सबसे पहले पड़ने वाले पौधे पर वो मिट्टी डाल दी। अगले ही पल एक चमत्कार सा हुआ, जब चैतन्य की ऑखों के सामने से मकानों का झुंड गायब हो गया और एक बार फिर से उसकी ऑखों के सामने वही जाना-पहचाना जंगल लहराने लगा। जबकि बाकियों के लिए अभी भी सामने वही सारे मकान मौजूद थे।

"गुड! पर अब एक समस्या और है।" चैतन्य ने सामने की ओर देखते हुए कहा।

"क्या?" आशुतोष ने पूछा।

"यही कि मैं तो अब पुराने रास्तों पर ही चलूँगा, मगर वास्तव में तो यहॉ के रास्ते बदल चुके हैं। तो दोनों रास्तों को मैच करना होगा। पुराने रास्ते पर चलते हुए जब मैं नए रास्तों पर गलत चलूं, तो मुझे बता देना।" चैतन्य ने पीछे मुड़कर अंकित की ओर देखते हुए कहा।
"बिल्कुल! इसमें कोई भी परेशानी नहीं होगी।" अंकित ने आत्मविश्वास के साथ कहा।

"इस तरफ!" चैतन्य ने अपनी ऊंगली से एक ओर इशारा किया और बढ़ गया। बाकी सब भी यंत्रचालित से उसके पीछे-पीछे चल दिए।

दिल में ढेर सारी हलचलों के साथ वो आगे बढ़ रहा था। आगे बढ़ने की ये प्रक्रिया बहुत ही बोझिल और दिमाग खराब करने वाली थी। चैतन्य तो सीधा अपने रास्ते पर ही बढ़ रहा था, पर मौजूदा समय में वो रास्ता सीधा नहीं था। पुराने तय किए रास्तों में अब कई अड़चनें खूबसूरत मकानों की शक्ल में मौजूद थीं। ऐसे समय में अंकित ने रास्ता बनाने में उसकी काफी मदद की। वरूण को भी इस तरफ के रास्तों की ज्यादा जानकारी नहीं थी, इसलिए वो भी चुपचाप उनके पीछे चल रहा था। आखिरकार चैतन्य एक जगह पर जाकर रूक गया।

"सामने है वो जगह!" चैतन्य ने सामने की ओर ऊंगली उठाकर कहा।

"यहॉ! इस मकान में!" अंकित ने हैरानी से कहा।

"मकान!" चैतन्य ने अंकित की ओर देखा, जिस पर उसने हॉ में सिर हिला दिया।

"आशुतोष जी! अब इसकी जरूरत नहीं है।" चैतन्य ने आशुतोष की ओर देखते हुए कहा।

"ठीक है।" कहते हुए आशुतोष ने उसके माथे पर लगी मिट्टी को पोंछ दिया, जिससे धीरे-धीरे चैतन्य की ऑखों के सामने से वो जंगल गायब हो गया और सामने बना मकान उसे नज़र आने लगा।

"ये किसका मकान है?" चैतन्य ने सामने बने मकान को एक छोर से दूसरे छोर तक नापते हुए पूछा।

'प्रोफेसर साहनी!" जवाब वरूण ने दिया।

सबने उसकी ओर जवाब को तस्दीक करने के इरादे से देखा।

"इसकी तस्वीर है पापा के एलबम में। मॉ की शादी से पहले की तस्वीर। इसी मकान के सामने खड़े हुए। उस समय पापा ने बस यही बताया था कि ये प्रोफेसर साहनी का घर है, जहॉ वो सब किसी गेट-टुगेदर के लिए गए
थे।" वरूण ने अपने जवाब को और भी विस्तार देते हुए कहा।

"कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यहॉ प्रोफेसर साहनी रहते हैं। एडवर्ड के पास अपनी इतनी संवेदनशील जगह को छिपाने का इससे बेहतर और कौन सा तरीका हो सकता था।" चैतन्य ने भी वरूण के जवाब का समर्थन करते हुए कहा।

"तो फिर आगे?" वरूण ने पूछा।

"आगे बढ़ना है। पर पूरी सावधानी से। अब और गलतियॉ हमारे हक़ में नहीं होंगी।" चैतन्य ने कहा।

उसकी बात सुनकर सभी ने हुंकारी भरते हुए सामने खड़ी उस इमारत की ओर देखा, जो फिलहाल बहुत ही शांत दिखाई दे रही थी। मगर उन सबके लिए वो एक मकान नहीं था... एक समरभूमि थी, जिसकी ओर उनके कदम उठ चुके थे।

****

वो एक छोटी सी कोठरी थी, जिसके अंदर उसका शरीर निढाल पड़ा था। घड़ी के बढ़ते कॉटों और समय के बीच उसके शरीर में हल्की सी हरकत हुई। ऊंगलियों की जुंबिश के बीच आधे खुले होंठों के

बीच से गर्म हवा
जमीन की मिट्टी उड़ाती निकली और फिर चेहरे पर एक तकलीफ़ माथे के शिकनों के साथ उभर आई।

उसने धीरे से अपनी ऑखें खोली और उन खुलती-बंद होती ऑखों के बीच धुंधला सा मंजर उस पर हावी हो गया। एक कराह के साथ उसने ऑखें बंद कर लीं। फिर पूरे ताकत के साथ उसने खुद को किसी तरह उठाया और फिर घिसटते हुए दीवार की ओर बढ़ गया। पीठ दीवार पर टिकाकर उसने कुछ गहरी सॉसें भरी, जिससे उसका दिमाग कुछ सचेत हुआ। उसने लंबी-लंबी सॉसे लेते हुए अपने चारों ओर देखा। जगह पूरी तरह से अंजान थी। अपनी हालत पर एक नज़र डालते हुए उसने पिछली बात याद करने की कोशिश की।

और उसे याद आया कि अनामिका ने उसे और सृष्टि को कमरे से बाहर नज़र रखने के लिए भेजा था। अनामिका की बात सुनते ही वो दोनों तेजी से कमरे से बाहर निकले थे। गलियारा पूरी तरह से खाली था। कुछ दूर तक आगे जाने के बाद सृष्टि ने कहा भी था कि उसे कुछ अजीब सा लग रहा है। उसके पूछने पर सृष्टि ने कहा कि जब विक्टर हमारा इंतजार करते हुए अंदर मौजूद था, तो बाहर इतना सन्नाटा क्यों है? उसकी बात सुनकर मुकुल का माथा भी ठनका और फिर खतरे का अंदेशा होते ही उन दोनों ने तुरंत ही वापस लौटने की सोची.... कि सबको इसकी खबर कर सकें। मगर जैसे ही वो पलटे कोई तीखी सी चीज उसके गले में आकर धँस गई। एक तेज जलन उस जगह से होते हुए उसके सारे शरीर में पलक झपकते ही फ़ैल गई। जलती हुई ऑखें जब नमी से झिलमिलाने लगी, तो उसने पलटकर सृष्टि की ओर देखा। उसकी हालत भी उससे जुदा ना थी। उसके देखते ही देखते सृष्टि घुटनों के बल गिर पड़ी और अगले ही पल उसका शरीर जमीन पर लुढ़क गया। इसके बाद वो खुद ही अपने लड़खड़ाते कदमों पर खड़ा ना रह सका और फिर गुम होते होश के साथ नीचे गिर गया। उसके बाद अब उसने खुद को इस तरह कैद में पाया। अपने होश संभालते हुए उसने चारों ओर देखा, मगर वो जगह उसके पहचान में नहीं आई। वो अभी इसी उलझन में ही था कि तभी उसे सृष्टि का ख्याल आया। उसने ध्यान दिया कि सृष्टि उसके साथ नहीं थी। वो उस कमरे में बिल्कुल ही अकेला था और ये ध्यान आते ही वो बौखलाकर उस कमरे के दरवाजे की ओर भागा। उसकी अग्नि-रक्षक अंगूठी उसकी ऊंगली में नहीं थी। पहले तो उसने दरवाजे को खोलने की कोशिश में उसे जोर-जोर से हिलाया और जब कोई फायदा नहीं हुआ तो वो जोर-जोर से चिल्लाने लगा।

"सृष्टि! सृष्टि! कहॉ हो तुम? जवाब दो!" एक उम्मीद के साथ उसने सृष्टि को पुकारा। मगर कोई जवाब नहीं आया। इससे वो और भी डर गया। उसने दरवाजे को तोड़ने की कोशिश की। मगर वो दरवाजा बहुत मजबूत था। इसमें भी नाकाम होने पर वो एक बार फिर से चिल्लाने लगा और इस बार उसे जवाब मिला, जब सृष्टि ने थकी हुई आवाज में उसे पुकारा।

"मु.... कुल!"

मुकुल ने ध्यान दिया कि वो आवाज़ एक दीवार के पीछे से आई थी, जिसमें थोड़ी ऊँचाई पर एक रोशनदान जैसा बना हुआ था। मुकुल तेजी से वहॉ पहुँचा और उस रोशनदान पर नज़र डाली।

"सृष्टि! ये तुम हो?" मुकुल ने आवाज की पहचान करने के मकसद से पूछा।

"हॉ!" सृष्टि की आवाज आई।

"सृष्टि! तुम ठीक हो?" उसकी थकी हुई आवाज सुनकर वो और भी बेचैन हुआ था।

"हॉ! ठीक ही हूँ।" सृष्टि की थकी हुई आवाज फिर से आई।
"पक्का ना!" मुकुल ने पूछा।

"हॉ बस.... सिर बहुत भारी हो रहा है।" सृष्टि ने कहा।

"सृष्टि! क्या तुम्हें पता है कि ये कौन सी जगह है? मुकुल ने पूछा।

"नहीं!" सृष्टि का छोटा सा जवाब आया।

"तुम्हारी अंगूठी है ऊंगली में?" मुकुल ने अगला महत्वपूर्ण सवाल किया। कुछ पल मुकुल की बेचैनी बढ़ाने वाली ख़ामोशी छाई रही और फिर जवाब आया।

"नहीं!"

"शिष्ट! अब क्या करें?" कहते हुए मुकुल की परेशान नज़र अपनी खाली हो चुकी ऊंगली पर गई।

"हम फँस गए हैं। बिना अंगूठी के हम क्या ही करेंगे?" सृष्टि की बुझी हुई सी आवाज़ आई।

उसकी बात सुनकर मुकुल भी हताशा का शिकार हो गया। वो खाली-खाली ऑखों से अपनी उस खाली ऊंगली को देखने लगा। तभी परेशानी की उस हालत में एक और चीज उसकी नज़र में आ गई। उसके अंगूठे में एक काला धागा बांधा हुआ था। सुबह अल्फ़ी की कहानी के दर्द में डूबे हुए उनके घायल मन को सहलाते हुए चैतन्य ने वो काला धागा उसके अंगूठे, सृष्टि की मध्यमा (middle finger) और आशुतोष की अनामिका (ring finger) पर बांधी थी। खुद चैतन्य की तर्जनी और अनामिका की कनिष्ठा में ऐसा ही धागा बांधा हुआ था। उसके पूछने पर
अनामिका ने बताया था कि जब तांत्रिक श्रेष्ठ सिद्धनाथ ने उन दोनों की ऊंगली में ये काला धागा बांधा था, तब बताया था कि हमारी हर ऊंगली अलग-अलग तत्वों का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें अंगूठा अग्नि, तर्जनी वायु, मध्यमा आकाश, अनामिका पृथ्वी व कनिष्ठा अंगुली जल तत्व से जुड़े होते हैं और ये काला धागा उन तत्वों की रक्षा करता है। हताशा में डूबा मुकुल का मन ये याद आते ही उत्साह से उछल गया। एक गहरी उम्मीद ने उसके दिल में पैठ बनाई और वो ऑखों में चमक भरकर एक बार फिर से सृष्टि की ओर गया।

"सृष्टि! तुम्हारी ऊंगली में वो धागा है, जो चैतन्य ने बांधा था?" मुकुल ने उम्मीद भरी आवाज में पूछा।

"हॉ!" उम्मीद के मुताबिक जवाब आया, जिससे मुकुल का चेहरा थोड़ा सा खिला।

"सृष्टि! मेरी बात सुनो! हम इस तरह हिम्मत हारकर नहीं बैठ सकते। जब हमें नहीं मालूम कि हम कहॉ हैं, तो दूसरे साथियों को कैसे पता चलेगा? हमें अपनी मदद खुद ही करनी पड़ेगी। तुम सुन रही हो?" मुकुल ने अपनी आवाज सृष्टि तक पहुँचाई।

"पर हम... कर ही क्या सकते हैं? हमारी अंगूठियॉ हमारे पास नहीं है।" सृष्टि ने एक बार फिर से बुझी हुई आवाज में कहा।

"मत भूलो सृष्टि... कि हमें हमारी शक्तियों की वजह से रक्षक चुना गया है, ना कि उन अंगूठियों की वजह से। उन अंगूठियों का हवाला देकर अपनी शक्तियों को कम मत करो। अपने अंदर इतना विश्वास रखो कि तुम खुद इतनी शक्तिशाली हो... कि किसी भी मुश्किल से जूझ सकती हो। हमारी शक्तियाँ उन अंगूठियों में नहीं... बल्कि हमारे अंदर है। हमारी आत्मशक्ति.... जिसे हमसे कोई भी नहीं छीन सकता।" मुकुल ने जोश
बढ़ाने वाली आवाज में कहा।

उसकी बात खत्म होने के बाद कुछ देर ख़ामोशी छाई रही और फिर सृष्टि की आवाज आई, " तुम सही कह रहे हो। हम रक्षक हमारी वजह से हैं और हम कुछ भी कर सकते हैं। चैतन्य ने ये भी कहा था कि जब तक ये धागा हमारी ऊंगली में है, हमारी शक्तियों को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। तो फिर हम फिक्र क्यों करें?"

"तो फिर निकलें यहॉ से!" अपने थके हुए शरीर में जोश भरते हुए मुकुल ने कहा।

"क्यों नहीं! अभी आराम का समय नहीं है। तो चलते हैं।" पहली बार सृष्टि की आवाज भी पहले की तरह मजबूत सुनाई दी।

और सृष्टि की ओर से ग्रीन सिग्नल मिलते ही मुकुल ने अपनी शक्तियों का आह्वान करना शुरू किया। यकीनन ये पहले की तरह आसान तो नहीं, पर नामुमकिन भी नहीं था। अपने मिशन को पूरा करने के लिए वो अब अपनी पूरी ताकत झोंकने को तैयार थे। उनके साथियों को उनकी जरूरत थी और उन्हें भी ये साबित करना था कि उन्हें हल्के में लेकर दुश्मन ने बहुत बड़ी ग़लती कर दी थी।

कुछ देर के मानसिक उठा-पटक के बाद उसका मस्तिष्क कुछ स्थिर हुआ और इसी के साथ उसने अपने अंदर गर्मी को बढ़ता हुआ महसूस किया। वो अभी भी ऑखें बंद किए हुए अपने काम में लगा हुआ था और फिर उसने अपनी ऑखें खोल दीं। वो अपना सीधा हाथ उठाकर अपने चेहरे के सामने लाया। उसका पूरा शरीर किसी तपे हुए लोहे की तरह दहक रहा था। उसके होंठों पर मुस्कान आई और फिर उसने सामने अड़चन की तरह खड़े उस दरवाजे को देखा। उसकी ऑखों के शोले दहकने लगे। उसने अपने तपते हुए सीधे हाथ को ऊपर उठाया और फिर उसकी
ऊंगलियों के इशारे से हवा में आग का एक गोला बन गया।

मुकुल ने उसे संभाला और फिर पूरी ताकत से उस दरवाजे की ओर फेंक दिया। गोले के टकराते ही उस लोहे के दरवाजे को आग को आग की शक्ति ने घेर लिया। जल्द ही उसने उस दरवाजे को कमजोर होता महसूस किया। मुकुल अपने पैरों में खड़ा हुआ और फिर एक तेज दौड़ के साथ वो उस दरवाजे की धज्जियॉ उड़ाता हुआ बाहर निकल गया। उसका शरीर अब शोले उगलने लगा था।

अपने उसी स्वरूप के साथ जब वो बाहर आकर खड़ा हुआ तो उसने अपने सामने पहरेदारों को पानी के पाइपों के साथ खड़े देखा। दुश्मन ने भी उन्हें रोकने का हर उपाय कर रखा था। वो अग्नि था और सामने दुश्मन पानी का हथियार लेकर खड़ा था। मुकुल जानता था कि अब उसे परेशानी हो सकती है.. क्योंकि उसके पास उसकी अंगूठी नहीं थी... मगर वो कमजोर नहीं पड़ सकता था। अभी तो लड़ाई शुरू हुई थी और उन्हें अपनी मंजिल पानी ही पानी थी। तो लड़ना तो बनता ही था। उनकी आत्मशक्ति की ताकत इतनी कमजोर नहीं थी कि ऐसे ही घुटने टेक देती। सामने खड़े पहरेदार भी उसका मुकाबला करने को पूरी तरह से तैयार थे। शोलों से घिरे मुकुल ने अपनी पोजिशन ली और लड़ने की मुद्रा में खड़ा हो गया

और अपनी मुट्ठियाँ भींचे ली।
और एक साथ ही मुकुल की ओर से अग्नि और पहरेदारों की ओर से पानी का प्रहार किया गया। कुछ देर की भिड़ंत के बाद दोनों ही शक्तियाँ कुछ पल को थमी। पहरेदारों की संख्या ज्यादा थी इसलिए वो पहले सक्रिय हुए और फिर उन्होंने वार कर दिया। इससे पहले कि मुकुल संभल पाता, पानी का तेज रेला उस तक पहुँच गया। वो भी उस पानी के सामने बिना डरे तनकर खड़ा हो गया। पानी उसके सुलगते शरीर को छूने ही वाली थी कि तभी एक तेज रोशनी का गोला उसके सामने आकर फूटा और उसकी आँखें चौंधियाँ गईं। उसने अपनी बांह से अपना चेहरा छिपा लिया।

दूसरी तरफ सामने खड़े पहरेदार सकते में आ गए, जब उन्होंने उस प्रकाश पुंज के बीच बने काले छिद्र में पानी की धार के साथ खुद को भी पूरी तीव्रता से खिंचता महसूस किया। वो संभलकर खुद को बचाने का सोचते... उससे पहले ही वो कालछिद्र उन्हें पूरा का पूरा निगल चुका था। सबको निगलने के बाद वो प्रकाश पुंज एक धमाके के साथ सिमटकर एक छोटे से गोले में बदल गया। मुकुल ने उस पर अपनी आँखें गड़ाई ही थी कि वो गोला झटके से एक ओर गया। मुकुल की आँखें भी उतनी ही तेजी से घूमी और फिर उस गोले की मंजिल पर नज़र पड़ते ही वो मुस्कुराया। सृष्टि अपनी आत्मशक्ति की ताकत के साथ खड़ी मुस्कुरा रही थी।

"कर दी ना गलती! नहीं करनी चाहिए थी!"

और ये सुनकर पहली बार परिधि घबराने की बजाय खुलकर मुस्कुराई थी। उसने पीछे मुडकर देखा। विक्टर अपनी जगह पर लेटा-लेटा उसे देखकर बड़ी मुश्किल से मुस्कुरा रहा था। जवाब में परिधि ने भी उतनी ही खुलकर अपने दाँतों की नुमाइश की।

"अपने आखिरी समय में हो तुम! तुम्हें पता है ना... कि तुम नहीं बच सकते। फिर भी... जिसने तुम्हें ये नारकीय जिंदगी दी... उसी के तलवे चाट रहे हो।" परिधि ने उलाहना भरी आवाज में कहा।
"और ये मुझसे कौन बोल रही है? जिसकी खुद की जिंदगी लोगों का पालतू बनकर जीने में बीती है।" विक्टर ने उसका उपहास करते हुए कहा।

"इसलिए तो... अब खुद को इससे आज़ाद करना चाहती हूँ। अपने लिए लड़ना चाहती हूँ।" परिधि ने बहुत ही इत्मीनान से कहा।

"पर वो बहुत ही ताकतवर है। 200 सालों से भी ज्यादा समय से नफ़रत की आग को अपने अंदर जलाकर रखने के बाद अब वो..... इस दुनिया की सबसे सख़्त और ताकतवर चीज़ बन चुका है। याद रखो कि नफ़रत से कठोर इस दुनिया में कुछ और नहीं।" विक्टर ने जबड़े कसकर अपने शब्दों को ताकतवर बनाने की कोशिश करते हुए कहा।

"और जो कठोर होता है... उसे टूटना ही पड़ता है। कठोर पत्थर पर भी पानी की बूंदें लगातार गिरे... तो उसमें सुराख कर देती हैं। बस करने वाले के अंदर कुछ भी कर सकने का वो जज़्बा और नीयत होनी चाहिए।" परिधि ने अपनी चमकीली आँखों के साथ जैसे विक्टर से ज्यादा खुद को समझाते हुए कहा।

"और वो जज़्बा अब तुम्हारे पास है।" विक्टर ने अपनी बुझी हुई आवाज में कहा।

"बेशक! कभी-कभी खुद को हासिल करने में एक लंबा समय गुजर जाता है। मैंने भी 200 सालों का सफर करने के बाद ही ये पाया है। जो जिंदगी मैंने गुजारी है... उसके लिए तो मौत भी बहुत कम सजा है। मगर ... जब समय और नियति ने मेरे गुनाहों को दरकिनार कर प्रायश्चित करने का एक मौका दिया है, तो मैं हर्गिज वो नहीं गंवाऊंगी।" परिधि ने नम होती आँखों और लरजती आवाज के साथ कहा।
"तब तो खुशनसीब हो... क्योंकि कुछ मेरे जैसे बदनसीब भी होते हैं, जिन्हें बस ढकेल दिया जाता है। एक ऐसी राह में चलने के लिए... जो शायद वो कभी भी अपने लिए ना चुने और... फिर वो अपने ही गुनाहों के घड़े को खुद ही भरते हुए देखते हैं। मेरे भी गुनाहों का घड़ा भर चुका है और जब वो फूटेगा...." बड़ी मुश्किल से हॉफ-हॉफकर कहता हुआ विक्टर बात पूरी करने से पहले ही रूक गया.. कि शरीर में अब इससे आगे कुछ कह पाने की ताकत ही नही बची थी।

परिधि ने एक दु:ख भरी नज़र उस पर डाली। वो सच में बहुत ही दयनीय नज़र आ रहा था। एक गहरी साँस छोड़ते हुए वो उससे एक निश्चित दूरी बनाकर खड़ी हो गई।

"चाहो तो... तुम भी इस आत्मग्लानि से बाहर निकल सकते हो। सच्चाई और अच्छाई का साथ देकर।" परिधि ने उसकी ओर सावधानी से हाथ बढ़ाते हुए कहा।

विक्टर ने बहुत ही हैरानी से उसे और उसके बढ़े हुए हाथ को देखा। उसके प्रस्ताव ने उसे सच में हैरान किया था।

"क्या सोच रहे हो? मैं सच्चे दिल से तुम्हारी तरफ ये हाथ बढ़ा रही हूँ। अपनी आजादी के बारे में सोचने का हक तो अभी भी तुम्हारे पास ही है। आगे तुम्हारी मर्जी!" परिधि ने उसे यकीन दिलाने वाले अंदाज में कहा।

"पर शायद तुम्हें पता नहीं कि मेरे आने के बाद यहाँ जो कुछ भी हुआ है या हो रहा है... तुम मुझसे जो कुछ भी कह रही हो.. वो सब देख और सुन रहा है। मेरा शरीर पूरी तरह से उसके चंगुल में है। मैं चाह कर भी उसे ऐसा करने से रोक नहीं सकता। तो मुझसे इस तरह की उम्मीद रखना तुम्हारे लिए बेकार ही होगा।" विक्टर ने अपनी मजबूरी उसके सामने रखते हुए कहा।
"पता है मुझे कि वो तुम्हारे जरिए हमारी योजनाओं में सेंध लगाना चाहता है। पर तुम्हें ये नहीं मालूम कि... तुम मेरी दवा के असर में हो, जो शायद कुछ देर में खत्म हो जाए... क्योंकि इतनी जल्दबाजी में ज्यादा असरदार दवा बनाना मुश्किल ही था। पर... अगर तुम चाहो तो ये असर लंबा चल सकता है। कम से कम इतना लंबा... कि हमारे साथी उस दुष्ट तक पहुँच जाएँ और उसे खबर ना हो।" परिधि ने उसके और भी पास आते हुए कहा।

"और इसके लिए क्या करना होगा मुझे?" विक्टर ने उसकी बातों में दिलचस्पी लेते हुए कहा।

"बस! ये दवा.. जो मैंने तुम्हें बेहोशी में दी थी... इसे पूरे होशो-हवास में लेना है। इससे तुम्हारा दिमाग इस दवा के साथ बेहतर तरीके से तालमेल कर सकता है।" परिधि ने उसे एक दवा की डिब्बी दिखाते

हुए कहा।

विक्टर ने उस डिब्बी को ग़ौर से देखा और बोला, "इससे क्या होगा?"

"फिलहाल इस दीवाने तुम्हारी ऑखों और कानों में भ्रम की एक चादर चढ़ा दी है जिससे एडवर्ड को वही दिखाई और सुनाई दे रहा है... जो मैं चाहती हूँ। मगर कहा ना... कि ये दवा तुम्हारे आधे सोए हुए मस्तिष्क ने ग्रहण की है, इसलिए इसका असर जल्द ही खत्म हो जाएगा। इसलिए.. यदि तुम अपनी मर्जी से ये दवा लेते हो... तो जो तुम सोचोगे वही एडवर्ड को दिखाई देगा.... वही उसे सुनाई देगा। इस तरह से तुम उसे आसानी से भ्रम में रख सकते हो।" परिधि ने उसे पूरी तरह से समझाते हुए कहा।

"और तुम मुझ पर इतना भरोसा क्यों कर रही हो? अगर मैंने धोखा दिया तो!" विक्टर ने परिधि के मन को टटोलत हुए पूछा।
"क्योंकि मैं तुम्हारे मस्तिष्क को किसी कैद से छूटने की कोशिश करते हुए और छटपटाते हुए महसूस किया था। ये बिल्कुल वैसा ही था... जैसा कि मेरा मस्तिष्क महसूस करता था। तुम्हें खुद की तरह पाया... इसलिए तुम्हारी ओर ये हाथ बढ़ा रही हूँ।" परिधि ने अपनी तरफ से बात साफ करते हुए कहा।

और ये सुनकर विक्टर कुछ पलों के लिए गुंग होकर रह गया। शायद वो अभी भी अपने दिमाग में चल रही लड़ाई में उलझा हुआ था।

"आजादी का हक सबको है विक्टर। मुझे भी.. तुम्हें भी! आगे तुम्हारी मर्जी है... क्योंकि समय कम है। तुम्हें फैसला करना है कि तुम उस दरिंदे का खिलौना बने हुए ही मर जाना चाहते हो... या फिर अपनी जिंदगी के आगे की राह खुद चुनना चाहते हो।" परिधि ने उसकी ओर उम्मीद भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

और आखिरकार विक्टर के ज़ख़्मी दिल और दिमाग पर परिधि के इन शब्दों ने मरहम का काम किया। उसने अपने चेहरे को सख़्त करते हुए परिधि की ओर देखा और बोला, "मैंने चुन लिया! वो दवा दो!"

उसकी बात सुनकर परिधि के होंठों पर तसल्ली भरी मुस्कान आई और उसने वो दवा विक्टर की ओर बढ़ा दी।

"वैसे मेरे पास और भी बहुत कुछ ऐसा है.... जिसमें तुम्हारी दिलचस्पी हो सकती है।" विक्टर ने कॉपते हुए हाथों से वो डिब्बी लेते हुए कहा।

"और वो क्या हैं?" परिधि ने कौतूहल भरी ऑखों के साथ उसके सामने बैठते हुए कहा।

"अतीत का एक हिस्सा! जिससे सब अंजान हैं... पर मैं जानता हूँ और
तुम्हें भी जानना चाहिए।" विक्टर ने अपना चेसरा उसकी ओर बढ़ाकर फुसफुसाते हुए कहा।

"ओह! तो चलो! सबके आने तक समय इसी तरह काटा जाए।" परिधि ने भी मुस्कुराते हुए उसी तरह फुसफुसाकर कहा, जिस पर विक्टर भी मुस्कुराया था।

अतीत के कुछ और पन्ने आज खुलने वाले थे, जिससे एक और कहानी जन्म लेने वाली थी।

****

चैतन्य सामने खड़े उस दो मंजिला मकान को इस तरह घूर रहा था, जैसे कि अपनी ऑखों से ही उसे स्कैन कर रहा हो। आशुतोष, अंकित और वरूण फिलहाल उसके अगले इशारे के इंतजार में थे, क्योंकि इस कहानी की जड़ें जिस अतीत से जुड़ी थीं, उसे बस चैतन्य और अनामिका ही पहचानते थे। अनामिका की ग़ैरहाजिरी में अब चैतन्य को ही आगे सब कुछ संभालना था और अनामिका के अपहरण के बाद वो जिस क़दर संजीदा हुआ था... उसने उसकी विश्वसनीयता को और भी बढ़ा दिया था।

"अगर ये प्रोफेसर साहनी का घर है... एडवर्ड की जगह है फिर इसका मतलब तो यही है कि... अल्फ़ी भी उनके साथ मिल गया है। मगर उसने
ऐसा किया क्यों? वो अनामिका को एडवर्ड के पास क्यों लेकर आया है?" अंकित ने आश्चर्य जताते हुए कहा।

"अरे कहते हैं ना... पिशाच-पिशाच मौसेरे भाई! फिर ये दोनों तो भाई हैं। सौतेले ही सही!" वरूण ने कहा।

"अच्छा! ऐसा भी कोई मुहावरा होता है क्या? मैंने तो नहीं पढ़ा।" अंकित ने सिर खुजलाते हुए कहा।

"हमारे साथ रहोगे... तो ऐसे ही और भी मुहावरे सीख जाओगे.... क्योंकि बूंद-बूंद से ही वाटर प्यूरीफायर भरता है।" वरूण ने सामने की ओर देखते हुए कहा, जिस पर अंकित ने उसे चिढ़ के साथ घूर कर देखा।

"क्या कोई... कभी इस मकान के अंदर गया है?" वरूण की बचकानी बातों को नज़रअंदाज़ कर चैतन्य ने उस मकान को घूरते हुए ही पूछा। जाहिर सी बात थी कि ये सवाल वरूण और अंकित के लिए ही था।

"मैं गया तो हूँ... मगर बचपन में। बहुत धुंधली सी यादें हैं। पापा ने हमेशा इस पूरे इलाके से दूर ही रखा मुझे और गीता को। कह नहीं सकता कि अंदर अब भी सबकुछ वैसा ही हो।" वरूण ने एक अड़चन के साथ हॉ कहा।

"मैं भी बस हॉल तक ही गया हूँ। उससे आगे मुझे भी जानकारी नहीं है।" अंकित ने भी अफसोस भरी आवाज में कहा।

"हम्म! तो फिर कुछ और सोचते हैं।" चैतन्य ने माथे पर बल डालते हुए कहा।

"और वो क्या?" आशुतोष ने पूछा।
"आशुतोष जी! आपने पहले भी उस डायनों के बसेरे तक जाने का रास्ता ढूंढना था (भाग - 25)। आज भी बस वही करना है।" चैतन्य ने कहा।

"हम्म! समझ गया! पर यहाँ थोड़ी परेशानी हो सकती है। जब हम डायनों के बसेरे की तलाश में गए थे, तब वहाँ अड़चनें पैदा करने वाला कोई भी नहीं था। पर यहाँ होंगें। उस एडवर्ड ने चप्पे-चप्पे पर अपना जाल बिछा कर रखा होगा। हम आगे बढ़े... तो उसे पता चल जाएगा और वो सावधान हो जाएगा। ख़ासतौर पर तब तो और... जबकि अल्फ़ी ने उससे हाथ मिला लिया हो।" आशुतोष ने आगे आने वाली समस्या के बारे में बताते हुए कहा।

"भला कोई इतना बेवकूफ कैसे हो सकता है? जिस दरिंदे ने उसकी जिंदगी और परिवार को तबाह कर दिया... उसी पर भरोसा कैसे कर सकता है वो?" अंकित ने गुस्सा और अफसोस की मिली-जुली प्रतिक्रिया के साथ कहा।

"200 साल किसी का इंतजार करके देखो... इसका जवाब मिल जाएगा तुम्हें।" आश्चर्यजनक रूप से चैतन्य, अल्फ़ी का पक्ष लेते हुए बोला।

"मुझे लगता है कि इस समय हमें इस सवाल के जवाब की जरूरत नहीं है। अच्छा है कि हमें ये पता है कि... अब हमें उस अल्फ़ी से भी सचेत रहने की जरूरत है।" आशुतोष ने उन सबको गलत रास्ते में जाने से रोकते हुए कहा।

"हाँ! इससे अच्छी बात और क्या ही हो सकती है। हमारे तीन साथी उनके पास हैं और हमारा एक दुश्मन और बढ़ गया है। ब्रावो!" वरूण ने झुंझलाई हुई आवाज में कहा।
"चुप! तो फिर क्या करें?" चैतन्य ने वरूण को चुप कराते हुए आशुतोष से सवाल किया।

"चैतन्य! मुझे और शक्ति चाहिए, जिससे हम बिल्कुल सही रास्ता ढूंढे... वो भी एडवर्ड को पता चले बिना।" आशुतोष ने उन तीनों की ओर देखते हुए कहा।

"कोई समस्या नहीं है। वरूण! तुम्हारी शक्ति इस काम आ सकती है। तुम रखवाले हो। तुम्हारी शक्ति आशुतोष जी की शक्ति के साथ मर्ज होगी... तो वो जो रास्ता ढूंढेंगे... सीधा अनामिका के पास जाएगी। वो तुम्हारी सबसे करीबी दोस्त हैं ना! मतलब कि एक रखवाले की धरोहर!" चैतन्य ने वरूण की ओर देखकर कहा।

"हम्म! बात तो सही कही तुमने।" वरूण अपना चश्मा ठीक करते हुए बोला।

"पर एडवर्ड से छिपाएँगे कैसे?" अंकित ने पूछा।

"उसके लिए ये है ना! भ्रम पैदा करने की दवा!" चैतन्य ने परिधि की बनाई हुई दवा अपने कार्गो पैंट की जेब से निकालते हुए कहा।

"भई वाह! तब शुरू करें!" आशुतोष ने उत्साहित होते हुए कहा।

"हाँ... और हमले और बचाव दोनों के लिए भी तैयार रहो। क्या पता... मंजिल तक पहुँचने का रास्ता

खून की नदी पार करके मिले।" चैतन्य ने उन सभी को आगाह करते हुए अपनी सीधी हथेलियों ली उनके सामने रखी, जिस पर सभी ने अपनी-अपनी हथेली रख दी।
****

मुकुल और सृष्टि कैद खाने से बाहर निकले... तो कुछ दूर तक तो बस अनुमान से आगे बढ़ते रहे। उनकी दिशा ज्ञान की शक्ति बाकी तीनों के मुकाबले कमजोर थी। फिर भी दो होने की वजह से उनके अंदर उत्साह ज्यादा था।

"ये कौन सी जगह है?" मुकुल एक बार फिर से बड़बड़ाया।

"कहा ना पता नहीं!" सृष्टि भी बुदबुदाई।

"पता नहीं... बाकी सब कैसे होंगे?" आगे बढ़ता हुआ मुकुल चिंता भरी आवाज में बोला।

"दुआ करो कि वो सभी आजाद हों!" सावधानी से आगे बढ़ती हुई सृष्टि ने पीछे पलटकर मुकुल को देखते हुए कहा।

और बस यहीं... नज़र हटी, दुर्घटना घटी!.. वाली बात चरितार्थ हो गई, जब सृष्टि सामने मोड़ पर ही दो गार्ड्स से टकराते हुए बची। वो उनसे टकराती.. उससे पहले ही मुकुल ने उसे अपनी ओर खींच लिया। मगर तब तक मुसीबत सामने ऑखें फाड़े खड़ी हो चुकी थी।

"ये दोनों तो आज़ाद हो गए। जल्दी बज़र बजाओ!" उनमें से एक चिल्लाया। मुकुल और सृष्टि कुछ समझते उससे पहले ही दूसरा गार्ड एक ओर भागा, जबकि पहले गार्ड ने अपनी बंदूक निकाल ली थी। मुकुल ने
उसे बड़े ही अफसोस के साथ देखा और उसके बंदूक चलाने से पहले ही अपनी तर्जनी ऊंगली से अग्नि की एक महीन और तेज धार उस बंदेक पर डाल दी। पलक झपकते ही वो बंदूक लावे की तरह गर्म हो गया, जिससे उस गार्ड का हाथ बुरी तरह से झुलस गया। उसने तुरंत ही अपनी बंदूक नीचे गिरा दी और दूसरे हाथ से अपने जले हुए हाथ को संभाल लिया। उसका गला दर्द की हिचकियों से रूंध गया था। मुकुल ने अपने होंठ टेढ़े किए और सृष्टि को पुकारते हुए बोला,

"रेडी सृष्टि?"

और फिर उसने एक बार फिर से अपने अग्नि वार से सामने वाले को पूरी तरह से भून दिया। उसकी लाश नीचे गिरती उससे पहले ही वो उस तक पहुँचा और उसकी जली हुई लाश उठाकर सृष्टि की ओर फेंक दी, जो एक बार फिर सृष्टि के बनाए कालछिद्र की अथाह गहराईयों में गुम हो गया।

उससे निपटते ही वो दूसरे गार्ड की ओर दौड़ा। सृष्टि भी उसके पीछे भागी। वो जब तक उसके पास पहुँचे... वो एक बटन के पास खड़ा उसकी ओर हाथ बढ़ा रहा था। मुकुल ने फुर्ती से उसकी ओर अग्निफंदा फेंका, जिसने उस गार्ड के पास पहुँचकर उसकी गर्दन दबोच ली। बेचारे की आवाज उसके

भुने हुए हलक़ में अटक गई। लेकिन इस छीना-झपटी में एक गड़बड़ हो गई। दरअसल उस गार्ड का हाथ और शरीर उस बटन के बहुत ही पास जा चुके थे, जिसकी वजह से उसका पैर उस बटन से छू गया और अगले ही पल... एक तेज सिर पर हथौड़े की तरह बरसने वाली आवाज चारों ओर गूंजने लगी। अभी मुकुल ने उस गार्ड की लाश को नीचे पटका ही था कि तभी सामने से ढेर सारे गार्ड्स हथियारों के साथ उनकी ओर भागते हुए आए। मुकुल संभलकर कुछ करता उससे पहले ही उनके पास आ चुके वो सारे गार्ड्स सृष्टि के बनाए कालछिद्र में एक झटके में ही खिंचकर समा गए।
"वाव! इट्स अमेजिंग!" मुकुल ने उसकी तारीफ करते हुए कहा।

"हॉ! फिलहाल तो! बाकी आगे देखते हैं।" सृष्टि ने भी चौकन्नी निगाहों से सामने की ओर देखते हुए कहा और फिर गार्ड्स के आने वाली दिशा में दौड़ लगा दी। समय ज्यादा नहीं था और उस बज़र के बजने की वजह से दुश्मन की फौज सचेत हो चुकी थी। फालह तो आगे बढ़ते हुए रास्ते में उन्हें कोई और नज़र नहीं आया, जिसकी वजह से उनकी हैरानी और भी बढ़ी थी। मगर फिर भी वो दोनों आगे बढ़ते गए और आखिरकार एक दरवाजे के सामने रूके। उस दरवाजे के पीछे से बहुत ही अजीब-अजीब सी आवाजें आ रही थीं।

"ये आवाजें!" मुकुल ने उस दरवाजे पर कान लगाकर सुनते हुए कहा।

"जो भी है। बाहर तो निकलना ही है।" कहते हुए सृष्टि ने झटके से वो दरवाजा खोला और फिर दोनों ही बाहर निकल आए। बाहर का माहौल बड़ा ही भागम-भाग वाला लग रहा था, जहॉ ढेर सारे गार्ड्स एक ओर भाग रहे थे। सृष्टि और मुकुल ने भी उस तरफ अपनी गर्दन घुमाई ही थी कि तभी खच्च की आवाज के साथ कुछ बहुत ही तेजी से उनकी ओर आया, जिसे मुकुल ने लपक लिया। खून से सन चुके सृष्टि और मुकुल ने ऑखें फाड़कर देखा। वो एक गार्ड का साबुत कटा हुआ सिर था, जिसकी कटी हुई गरदन से खून का फव्वारा निकल रहा था। उन दोनों ने सामने देखा। खून टपकती तलवार पकड़े चैतन्य काल का रूप बना सामने खड़ा था। यकीनन युद्धघोष हो चुका था और बिछड़े साथियों से हाथ मिलाने का समय भी आ गया था।
चैतन्य सावधानी से उस मकान के मुख्य दरवाजे की ओर बढ़ा। बाकी भी उसके पीछे ही थे। उन्होंने उसके बड़े से दरवाजे के आसपास नज़र दौड़ाई। पहरे पर तैनात दो मुस्टंडे जैसे गार्ड्स के अलावा और कोई नज़र नहीं आ रहा था।

"पहले इनसे निपटना पड़ेगा।" आशुतोष ने उन दोनों के डील-डौल को नापते हुए कहा।

"हम्म! अंकित! वो चांदी के कांटे हैं ना तुम्हारे पास?" चैतन्य ने सवाल किया।

"हॉ!" कहते हुए अंकित ने अपनी जैकेट के अंदर-बाहर के सभी पॉकेट्स को थपथपाया।
"निशाना ठीक है ना तुम्हारा?" चैतन्य ने अंकित की ओर देखकर पूछा।

"हॉ! पुलिस की ट्रेनिंग के समय बेस्ट निशानेबाज का खिताब मिला था। ऑख में पट्टी बांध कर भी सही जगह निशाना लगा सकता हूं... आवाज सुनकर।" अंकित ने अपनी ही पीठ थपथपाते हुए कहा।

"तो एक कांटा गार्ड्स के ठीक दिल के ऊपर और दूसरा उनके हलक़ के अंदर। समझ में आया!" चैतन्य ने उसे समझाते हुए कहा।

"यस कैप्टन!" अंकित ने चैतन्य को सैल्यूट करते हुए बहुत ही धीमी आवाज में कहा, जिस पर चैतन्य

पहली बार हल्का सा मुस्कुराया था।

फिलहाल तो चैतन्य को इतनी इज्जत मिलती देखकर वरूण तिलमिला उठा था। उसने अपना गला साफ किया और फुसफुसा कर बोला, "मैं भी ट्राई करूं! अनामिका के लिए बहुत आम गिराए हैं मैंने भी।"

चैतन्य ने पलटकर उसके चश्मे को ऑखें सिकोड़ कर देखा और फिर बहुत ही नर्मी से बोला, "तुम... रहने ही दो! वरना आम नाराज़ हो जाएँगे।"

और ये सुनते ही अंकित ने जहॉ अपना गला साफ किया, वहीं वरूण ने गुस्से में अपने होंठ भींचे थे।

"सब समझता हूँ इसके इरादे। लेकिन मैं भी वरूण हूँ वरूण! देखता हूँ कब तक मुझे इग्नोर करेगा तुम्हारा ये मि. कैप्टन?" वरूण, अंकित के कानों में जहर उड़ेलते हुए बोला।

"अंकित! आओ!" अंकित के कुछ कहने से पहले ही आशुतोष ने उसे आवाज लगाई दी और वो उनकी ओर बढ़ गया। अंकित ने जैसा कहा था
वैसा ही किया। उसके निशाने अचूक थे। उसने पलक झपकने की देर में दो कांटे फेंके जो पास वाले गार्ड के दिल और हलक़ में जाकर धंस गए और वो एक आवाज निकाले बिना जमीन पर गिर गया। उसके जमीन पर गिरते ही दूसरा गार्ड तेजी से भागता हुआ आया, मगर वो नीचे गिरे गार्ड को ठीक से देख पाता उससे पहले ही अंकित ने अपना काम कर दिया था। वो दूसरा गार्ड भी बिना आवाज किए उस पहले गार्ड के ऊपर ही गिर पड़ा।

"आओ जल्दी!" चैतन्य ने सबको आगे आने का इशारा किया और फिर उस गेट की दीवार से सटकर खड़ा हो गया। उसने धीरे से सिर निकालकर अंदर की ओर झांका और हालातों का जायजा लिया। अंदर पूरी तरह से ख़ामोशी छाई हुई थी।

"आओ!" चैतन्य ने फिर से इशारा किया और फिर लोहे के उस विशाल गेट के सामने खड़ा हो गया। दरवाजा अंदर से बंद था।

"ये तो बंद है।" अंकित ने निराश स्वर में कहा।

"कोई बात नहीं! अभी खोल देते हैं।" कहते हुए चैतन्य ने अपने जेब से वो चाबी निकाली और फिर उसे अपनी हथेली के सहारे उस दरवाजे पर टिका दिया। इसके बाद चैतन्य ने अपनी हथेली को एक झटका दिया और वो दरवाजा खुल गया। चैतन्य पीछे पलटकर मुस्कुराया और फिर उस दरवाजे को धकेलता हुआ उसके अंदर चला गया। अभी वो अंदर आया ही था कि तभी दरवाजे से लगे गार्ड केबिन से एक गार्ड दौड़ता हुआ आया। चैतन्य ने एक पल की देरी किए बिना ही उसकी गर्दन दबोची और फिर अपने तेज खंज़र ने उस गार्ड की गर्दन काटकर उसके कंधे पर झूला दी।

उसने उसकी लाश को नीचे फेंका ही था कि सब एक-एक करके अंदर आ गए। देखा तो चैतन्य खून के छींटों से लाल हुए अपने चेहरे को पोंछ रहा
था। सबको अपनी ओर ताकता हुआ पाकर वो जल्दी से उनके पास पहुँचा और अपनी जेब से दवा की शीशी निकालकर बोला, "कोई और आए... उससे पहले ही अपना काम खत्म करते हैं।"

और ये कहते ही चैतन्य ने उस दवा की एक बूंद जमीन पर गिरा दी।

"वरूण! आशुतोष जी! अब आप दोनों की बारी!" कहकर चैतन्य थोड़ा सा पीछे हट गया। उसका इशारा मिलते ही आशुतोष और वरूण आगे आए। आशुतोष ने अपना खंज़र निकाला और उसी दवा की बूंद के ऊपर ही खंज़र को गाड़ दिया। उन्होंने खंज़र की मूठ को एक हाथ से पकड़ा। उसके बाद वरूण ने अपने दोनों हाथों से आशुतोष के हाथ को पकड़ लिया। अगले ही पल खंज़र की नोंक से हरे रंग की चिंगारी सी निकली और वो करीब एक फीट चौड़ी लाइन बनाती हुई सामने तनकर खड़े मकान की ओर बढ़ गई। इसी के साथ ही उस खंज़र की नोंक से लाल रंग की चिंगारी भी निकली और वो तेजी से उस हरी लाइन को दोनों ओर से कवर करते हुए आगे बढ़कर उसके साथ हो ली। देखते ही देखते दोनों लाइनें उस मकान के बंद दरवाजे के अंदर चली गई।

"काम तो हो गया... ऐसा लग रहा है।" वरूण ने उस चमकीली लकीर को देखते हुए कहा।

"हॉ! पर हमें भी इस लकीर से बचकर चलना पड़ेगा क्योंकि इसके संपर्क में आकर हम भी भ्रम का शिकार हो सकते हैं।" आशुतोष ने उस जादुई लकीर की स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा।

"ओह! फिर भी.... ये तो बहुत ही आसान था।" अंकित ने उस लकीर पर ऑखें जमाए हुए कहा।

"एक बात याद रखना कि यहॉ जो दिखता है... वो हर्गिज नहीं होता।"
चैतन्य ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"क्या मतलब?" एक साथ तीनों की आवाज आई।

"मतलब ये... कि इस युद्ध में उतरने से पहले इसके नियम आप सब अच्छी तरह से जान लें। सबसे पहले तो... आप सब जिससे भिड़ने जा रहे हैं.. उससे किसी भी प्रकार की गलती या नर्मी की उम्मीद मत रखना। वो हमेशा प्लान बी... और यहॉ तक कि प्लान सी भी बना कर रखता है। अगर कोई काम आसानी से हो रहा है तो समझ जाना कि इसमें भी उसकी कोई चाल हो सकती है। उसने पहले भी ऐसा ही किया है। उसे पता है कि हम अनामिका को बचाने के लिए आऍगे ही आऍगे। किसी भी हालत में आऍगे और वो ये भी सुनिश्चित करेगा कि हम उस तक किसी भी तरह से पहुँच जाऍ! तो आगे हमें जितनी आसानी मिले हमें उतना ही सतर्क और एकजुट होना है। वो दरिंदा इतना स्वार्थी है कि अपने मतलब के लिए वो अपने सारे सहयोगियों को मौत के घाट उतार सकता है, जैसे कि उसने अपने मामा और अपनी खुद की संतान के साथ किया।" चैतन्य ने आसान से आसान शब्दों में उन्हें अपन बात समझाई।

"तो आगे करना क्या है हमें?" आशुतोष ने पूछा।

"सबसे पहले उन तीनों तक पहुँचना है। ये भी याद रखना कि वो हमेशा अपने आसपास की जगह को शक्तिनियंत्रक की सहायता से अपने मुताबिक बनाकर रखता है, ताकि दूसरों पर आसानी से नियंत्रण पा सके। तो ये भी हो सकता है कि उसके आसपास हमारी शक्तियॉ बिल्कुल भी काम ना करें।" चैतन्य ने उन तीनों को चेतावनी देते हुए कहा।

"तो फिर हम क्या करेंगे?" वरूण ने थोड़ी घबराहट के साथ कहा।

"तो सबसे ज्यादा अपनी बुद्धि और बाजुओं की शक्ति पर भरोसा रखना।
अपनी ऑखें खुली रखना। वो मत देखना... जो वो हमें दिखाना चाहता है। फिलहाल तो जहॉ तक नज़र गई है... हमारी शक्तियॉ काम करेंगी। अपनी ऊंगलियों में बंधे रक्षासूत्र को खुलने मत देना... और.. मन से कमजोर तो बिल्कुल भी मत पड़ना। इस पिशाच की चालाकी यही है कि ये सबके मन पर वार करता है। समझ में आई बात!" चैतन्य ने अपनी बात खत्म करते हुए सबकी ओर देखा, जिस पर तीनों ने ही हुंकारी भरी।

"अंकित! तुम्हारे पास अपनी सुरक्षा का क्या इंतजाम है?" चैतन्य ने पूछा।

"चांदी के कॉटें और एक स्पेशल शॉटगन भी।" अंकित ने कहा।

"शॉटगन!" आशुतोष ने कहा।

जवाब में वरूण ने अपने जैकेट की भीतरी मुट्ठी जितनी छोटी सी जेब से एक पूरे हाथ के लंबाई जितनी बंदूक निकाल कर अंकित के हवाले की और जिसे देखकर चैतन्य की ऑखें फटने की हद तक फैली थीं।

"वओहहहह! बहुत ही शानदार!" आशुतोष ने तारीफ भरी नज़रों से उस हथियार को देखते हुए कहा।

"है तो सही! एक ही नज़र में भा गई ये मुझे और इसमें किसी आम शॉटगन की तरह बार-बार शॉटशेल भरने की जरूरत भी नहीं है। ये देखिए! इसका सारा जादू यहॉ है। ये आखिरी में जो कॉच का पात्र लगा हुआ है... इसमें जादुई चॉदी का पावडर है, जो शॉट लगाने पर चॉदी के छर्रे के रूप में बाहर निकलती है और सामने वाले का काम तमाम।" अंकित ने उस शॉटगन को सहलाते हुए कहा।

"मतलब कि हो सकता है कि अंदर हम सबमें सबसे ज्यादा सुरक्षित तुम ही हो।" आशुतोष ने भावी संभावना को जाहिर करते हुए कहा।

"हेय! एक नज़र इधर भी! मेरी शक्ति को भी नियंत्रित नहीं किया जा सकता, सिवाए किसी दूसरे रखवाले के। इसीलिए तो वो पिशाच पापा के सामने मजबूर था। वरना वो परिधि या अनामिका को खुद ही पहले उठाकर नहीं ले जा सकता था क्या? वो तो पापा की उम्र हो गई... बस इसलिए वो पिशाच इतना पंख फड़फड़ा रहा था। इसलिए मेरी बजाय अपनी चिंता करो तुम। और मैं ये भी बता दूँ कि मेरे इस भानुमती के पिटारे में और भी बहुत कुछ है... जिसके बारे में तुम... कभी सोच भी नहीं सकते।" अपना बायां हाथ अपनी उसी जेब के ऊपर और दाहिने हाथ की तर्जनी चैतन्य की नाक पर रखते हुए वरूण ख़ासे गुरूर से बोला, जिस पर चैतन्य ने अपनी एक भौंह उठाकर उसे देखा।

"ठीक है रखवाले! पर जरा अपनी इस दूसरी ऑख का भी ख्याल रखना! कहीं ऐसा ना हो कि कुछ भी करने से पहले देखने की शक्ति ही गँवा दो
तुम!" चैतन्य ने भी दॉत पीसते हुए उसके चश्मे की ओर इशारा करते हुए कहा।

"हे भगवान! तुम दोनों कभी सुधरोगे या नहीं। हद होती है ग़ैरजिम्मेदारी की! ये सब करने का समय है ये? यहॉ दुश्मन गर्दन पर तलवार रख चुका है और तुम दोनों को अपने-अपने अहंकार की पड़ी है। और चैतन्य... तुम! इस तरह से तुम अगुआई करोगे? प्लीज़! मैं तुम दोनों के हाथ जोड़ता हूँ। एक बार सब

ठीक हो जाए... तो करवा देंगे तुम दोनों के बीच रेसलिंग! कोई नहीं रोकेगा तुम दोनों को उस समय।" आशुतोष ने गुस्से से भरी मनुहार करते हुए कहा।

आशुतोष की बात सुनकर दोनों ने ही शर्मिंदगी से अपनी नज़रें झुकाई थीं।

"ये तो ख़ैर मानो चैतन्य... कि अनामिका ने तुम्हारा हाथ थामा है, लेकिन तुम्हारी हरकतें ऐसी ही रहीं... तो तुमसे मुँह फेरने में भी देर नहीं लगाएगी वो। इतना तो जान चुका हूँ उसे मैं। तो अभी जो करना है... वो करो। या फिर तुम दोनों यहीं रूको! मैं और अंकित चले जाएँगे।" आशुतोष ने अपनी भड़ास पूरी तरह से निकालते हुए कहा।

आशुतोष की बात सुनकर दोनों ही शर्म से गड़ ही गए थे। उन्हें अहसास हुआ कि वो दोनों एक बार फिर से बेवकूफी पर उतर आए थे। चैतन्य और वरूण ने एक-दूसरे को चोर नज़रों से देखा और फिर आशुतोष की ओर देखकर दोनों ही बोले, "सॉरी!"

"शुड बी! अब चलें!" आशुतोष ने चिढ़ और अफसोस के साथ सिर हिलाते हुए कहा।

आशुतोष के कहने पर चैतन्य ने अंकित को आगे किया और खुद भी उसके साथ हो लिया.. क्योंकि अंकित कम से कम हॉल तक पहुँचने का
रास्ता जानता था। अंकित ने अपनी शॉटगन संभाली और आगे बढ़ने लगा। वहीं बाकी तीनों ने भी अपने खंज़रों पर हाथ कस लिए और चारों ओर नज़र रखकर आगे बढ़ने लगे। वो दो मंजिला मकान तो पूरी तरह से रोशन था.. मगर उसका बाहरी हिस्सा पूरी तरह से अंधेरे में घिरा हुआ था।

"रूको! कोई है! दरअसल कोई एक नहीं... बहुत से हैं।" वरूण ने सबको सचेत करते हुए कहा। उसके रखवाले के रूप में चौकन्ने कानों ने दूर से ही कुछ धीमी आवाजों को सुन लिया था।

"किधर से?" आशुतोष ने पूछा।

"चारों ओर से!" वरूण ने कहा।

"दिख तो कोई नहीं रहा।" अंकित ने शॉटगन के साथ पोजीशन लेते हुए कहा।

"एक मिनट!" कहते हुए वरूण ने धीरे से ऊपर आसमान की ओर देखा।

"ऊपर क्या देख रहे हो?" आशुतोष ने भी ऊपर की ओर देखकर पूछा।

"वो ऊपर हैं।" वरूण ने कहा।

"कौन हैं?" चैतन्य ने भी पूछा।

"पंख! पंखों की फड़फड़ाहट!" वरूण चश्मे के पीछे ऑखें फैलाते हुए बोला और फिर उसने अपनी जेब के अंदर हाथ डाला। अंदर से एक फरसे की तरह दिखने वाला हथियार निकला, जिसे उसने आशुतोष की ओर बढ़ा दिया। आशुतोष ने थोड़ी हैरानी के साथ उसे पकड़ लिया कि शायद.... एक खंज़र लड़ने के लिए काफी नहीं था। वरुण ने एक बार फिर

जेब में हाथ डाला और इस बार एक चाबुक और एक तलवार उसके हाथ लगे।

"मुझे तलवार चाहिए। मैं वो चला सकता हूँ!" चैतन्य ने तुरंत ही कहा, जिस पर वरूण ने बिना कोई बहस किए वो तलवार उसकी ओर बढ़ा दी और खुद हाथ में चाबुक और एक हाथ में खंजर लिए बचाव की मुद्रा में खड़ा हो गया।

और फिर उन सभी को सुनाई दी क्रीं-क्रीं करती हुई वो ढेर सारी आवाजें। उन आवाजों को सुनते ही आशुतोष और चैतन्य दोनों के ही कान खड़े हुए थे। कुछ ऐसी ही आवाज़ें उन्होंने हरिपुर के महल की ओर जाते समय सात जादुई दरवाजे पार करते समय सुनी थी। (राज : भाग 33 -जादुई दरवाजे का रहस्य)

"चमगादड़!" दोनों के ही मुँह से निकला।

उनका इतना कहना ही था कि तभी अंकित ने अपनी शॉटगन ऊपर की ओर उठाई और एक शॉट लगा दिया। फायर होते के साथ ही एक चमगादड़ तेजी से उनके सामने गिरा।

"अब!" वरूण बोला।

"अब वो हमला करेंगे और क्या? तो... रेडी फॉर अटैक!" चैतन्य ने पूरे जोश के साथ कहा।

"ऑल्वेज!" वरूण ने अपने कानों को काम में लगाते हुए कहा और फिर उसने सीधे हाथ में पकड़ी चाबुक को ऊपर हवा में लहरा कर नीचे खींचा, जिसके साथ दो चमगादड़ फँसकर नीचे आ गए। वरूण का खंज़र पकड़ा
हुआ बायां हाथ चला और वो चमगादड़ टुकड़ों में जमीन पर पड़े थे। वरूण के होंठ मुस्कुराए।

इसी के साथ सैंकड़ों की संख्या में चमगादड़ों ने उन पर हमला कर दिया और उनके हमले के साथ ही चैतन्य आशुतोष और वरुण के दोनों हाथ बिजली की तेजी से चलने लगे। वहीं अंकित की गन भी सही निशाने लगाते हुए आग उगल रही थी। बहुत ही जल्द वो इलाका चमगादड़ों की लाशों से भर गया। लेकिन उन चारों ने ये भी महसूस किया कि उनकी संख्या में कोई कमी नहीं हो रही है। इसलिए उन सब ने किसी तरह मकान की ओर भागना शुरू किया। इसी दौरान चमगादड़ों पर फायर करते समय अंकित के पैर आपस में फँस गए और वो जमीन पर मुँह के बल गिरा। मगर चोट की परवाह किए बिना वह तेजी से पलटा और लेटे हुए ही आसमान की ओर लगातार फायर करने लगा। भागते हुए आगे निकल गए आशुतोष, चैतन्य और वरूण ने रूक कर पीछे की ओर देखा तो उन तीनों के ही होश उड़ गए थे। अंकित को इस तरह जूझता देखकर वह तीनों ही वापस लौटने को हुए... मगर अंकित ने चिल्लाकर उन्हें रोक दिया।

"आगे जाइए आप लोग! पीछे आने के बजाय आगे जाना ज्यादा जरूरी है। मैं देखता हूँ इन सारे नमूनों को।" कहते हुए अंकित ने लगातार फायर किए।

और ये सब देखकर चैतन्य ने जोर से अपनी ऑखें और मुट्ठियॉ भींची थीं। उसका चेहरा हद दर्जे तक सख़्त हो गया था और माथे पर पसीने की बूंदें खून के धब्बों के साथ मिलकर बहने लगीं।

"चैतन्य! क्या कर रहे हो? वो सही कह रहा है। चलो! आगे आओ।" आशुतोष ने उसे खींचते हुए कहा।

चैतन्य ने अपनी ऑखें खोली और वही सख़्त चेहरा लिए आगे बढ़ गया।
जल्द ही वो सब उस मकान के मुख्य दरवाजे के सामने खड़े थे, जो कि स्वाभाविक रूप से बंद था।

"हटिए!" चैतन्य ने उन दोनों को परे हटाते हुए अपनी जेब से जादुई चाबी निकाली। वो उस चाबी को कीहोल के अंदर डालने ही वाला था कि तभी बाहर चमगादड़ों का शोर और भी ज्यादा बढ़ गया और साथ ही बढ़ गई अंकित के गन से निकलने वाली फायरों की आवाज।

"नहीं! हम उसे मरने के लिए नहीं छोड़ सकते। आप लोग दरवाजा खोलिए। मैं उसे लेकर आता हूँ।" कहते हुए वरूण अपनी चाबुक और खंज़र संभालते हुए बाहर की ओर भागा। आशुतोष ने भी चैतन्य को दरवाजा खोलने के लिए कहा।

वरूण पूरी ताकत से दौड़ते हुए अंकित की ओर गया.. मगर उसने अपने तेज भागते पैरों को जैसे झटके से ब्रेक लगाकर रोका और वो कुछ दूर तक घिसटता चला गया। जब वो पूरी तरह से रूका तो सामने का नज़ारा देखकर हैरान रह गया। मुँह खोले खड़ा अंकित अपनी गन संभाले ऊपर आसमान की ओर देख रहा था, जहाँ अब वो सारे चमगादड़ आपस में ही भिड़े हुए थे। हैरानी तो वरुण को भी हुई मगर जब उसने ये ग़ौर किया कि फिलहाल अंकित खतरे में नहीं था तो वो तेजी से दौड़कर उसके पास गया और उसके हाथ को पकड़ अपने साथ खींच कर अंदर की ओर ले गया। अंकित पूरी तरह से खून से नहा चुका था। वो दोनों जब दौड़ते हुए दरवाजे तक पहुँचे तो वो दरवाजा खुला हुआ था और चैतन्य, आशुतोष के साथ अंदर जा चुका था।

"चलो जल्दी! कहीं ये बंद ना हो जाए!" वरूण ने चिल्ला कर कहा और उसके बाद वे दोनों बिना रूके दौड़ते हुए अंदर घुस गए। चैतन्य और आशुतोष दोनों ही थोड़ी दूर आगे सामने की ओर देखते हुए चुपचाप खड़े थे। वो दोनों भी तेजी से दौड़कर उनके पास पहुँचे। सामने देखा तो दिल धक्क करके रह गया।

"कितने होंगे?" वरुण, आशुतोष के कान में फुसफुसाया।

"उतने ही... जितने की हमारे हथियारों को जरूरत है।" एक बार फिर अपनी तलवार और खंजर पर मुट्ठियॉं कसते हुए चैतन्य ने जोश भरी आवाज में कहा और फिर उनका इंतजार किए बिना आगे बढ़ गया। बात भले 200 साल पहले की हो, मगर उसके लिए तो एक दिन पहले की ही बात थी, जब इसी तरह तलवार से कितनों के सिर काटे थे उसने। उतना आत्मविश्वास तो उसके अंदर अभी भी भरा हुआ था, जो निश्चित रूप से सामने वालों पर भारी पड़ने वाला था।

चैतन्य के आगे बढ़ते ही सबसे सामने खड़े कुछ गार्ड्स उसकी ओर भागे। चैतन्य सबसे पहले आए गार्ड का हमला झुक कर रोकते हुए तेजी से गोल घूमा और दो को अपनी तलवार से कमर के पास से पूरा काट दिया। वार करने के तुरंत बाद वो तेजी से उठा और सबसे पास पहुँचे गार्ड के पेट पर एक तेज लात मारते हुए उसके साथ आए गार्ड के सीने में अपना खंज़र उतार दिया। अगले ही पल झटके से खंजर खींचते हुए वो फिर से एक बार गोल घूमा और एक साथ तीन के सिर हवा में उड़ा दिए। तलवार वाले हाथ को सीधा करते हुए उसने अपने खंज़र वाले हाथ को झटका देकर दौड़कर पास आते हुए गार्ड के सीने में अपना खंज़र फेंक मारा। इसी के साथ चार गार्ड्स ने उस पर एक साथ हमला किया, जिसे उसने अपनी तलवार से रोक रखा था। दवाब बढ़ने के साथ ही वो नीचे से अपनी तलवार निकाल

कर उनके बीच से लुढ़क कर बाहर आ गया। वो चारों के चारों तलवार के साथ जमीन पर गिर पड़े और इससे पहले कि वो संभल पाते, चैतन्य ने चारों ओर अपनी तलवार गोलाई से घुमाकर एक साथ उन चारों के सिर हवा में उड़ाते हुए उनकी आत्मा को उनके शरीर से मुक्त किया। बस उसी समय पास के एक दरवाजे से मुकुल और सृष्टि बाहर निकले और उन चारों में से एक के कटे हुए सिर को मुकुल ने कैच कर
लिया।
गहरी सॉसे भरता हुआ चैतन्य तलवार की नोक जमीन में टिकाकर सीधा खड़ा हो गया और उन सब गार्ड्स की ओर चिढ़ाने वाली मुस्कुराहट डालते हुए बोला, "कितने हुए? ग्यारह ना! चलो कर दिया शगुन! खुश!"

खून से नहाए हुए चैतन्य की बात सुनने के बाद उस पूरे कमरे में मौत जैसा सन्नाटा छा गया था। इतना कि सबकी बढ़ी हुई धड़कनों का शोर साफ-साफ सुनाई दे रहा था। वहॉ मौजूद किसी ने भी चैतन्य से इस तरह के शक्ति-प्रदर्शन की उम्मीद नहीं की थी। मगर वो सारे ये नहीं जानते थे कि... चैतन्य इस खेल में बहुत पहले ही माहिर हो चुका था। चैतन्य ने पीछे मुड़कर अपने साथियों की ओर देखा जो उसे जबड़े लटका कर देख रहे थे।

"ओए! देख क्या रहे हो? फिल्म चल रही है क्या? आओ! आगे जाना है हमें!" चैतन्य ने अपने साथियों को झिड़कते हुए कहा, जो एक पल को भूल ही गए थे कि वो सब वहॉ क्यों आए हुए थे?

और चैतन्य की बात सुनकर उसके साथियों के साथ-साथ सामने भौंचक्के खड़े गार्ड्स भी होश में आए। चैतन्य के भारी भरकम कारनामे को देखने के बाद उसके साथियों के बारे में सोचकर भारी संख्या में होने के बाद भी वो सारे गार्ड्स सिहर उठे। जब एक अकेले चैतन्य ने 11 को इतनी आसानी से मौत के घाट उतार दिया और वो 11 उसे छू भी नहीं सके... तो उसके बाकी साथियों की ताकत का अंदाजा लगाना उन गार्ड्स के लिए मुश्किल ही था। लेकिन उनके लिए भी आगे बढ़ना जरूरी था। एक और नरसंहार अच्छाई और बुराई की भेंट चढ़ने वाला था।

भाग 158

"ओए! देख क्या रहे हो? फिल्म चल रही है क्या? आओ! आगे जाना है हमें!"

चैतन्य की घुड़कती हुई आवाज उस सन्नाटे में फैली, जो उसके साथियों के साथ दुश्मनों को भी खबरदार कर गई। सबका ध्यान चैतन्य पर ही जाकर टिक गया, जो अपनी तलवार को कंधे पर रखे हुए

चारों ओर बहुत ही चौकन्नी निगाहों से देख रहा था।

"खुद को बस इतना ही दरिंदा बनाना है, अगर इन सबकी दरिंदगी का शिकार नहीं बनना चाहते हो तो।" चैतन्य ने एक बार फिर अपने साथियों की ओर देखकर कहा और फिर अपनी तलवार घुमाते हुए सामने खड़े दुश्मनों की ओर बढ़ गया।

होश में वापस आते ही आशुतोष, अंकित और वरूण तीनों ने ही अपना-अपना मोर्चा संभाला। अंकित की गन उनके भेजे उड़ाने में मशगूल
थी, तो वरूण के चाबुक और खंज़र की जुगलबंदी दुश्मनों की आत्मा उनके शरीर से खींच निकालने में और भी माहिर होती जा रही थी। उधर आशुतोष भी अपने फरसे के साथ श्री परशुराम की छवि अपनाने की कोशिश में थे। आश्चर्यजनक रूप से वो सभी इस काम में माहिर दिखाई दे रहे थे। वहीं एक तरफ मुकुल और सृष्टि अभी भी मुँह बाए खड़े सामने हो रही घटना को अपलक देख रहे थे।

"हम भी चलें?" मुकुल ने सामने देखते हुए कहा।

"ये भी पूछने या कहने वाली बात है।" सृष्टि ने कहा और वो भी उस भीड़ की ओर दौड़ पड़ी। मुकुल ने भी अपने हाथ में पकड़े उस कटे हुए सिर को एक ओर उछालकर अपनी ऊंगलियों की चिंगारी में फूंक मारी और उसने वहीं खड़े हुए ही सबसे पास मौजूद गार्ड को अपनी अग्निकिरण से पल में ही भून दिया। उसके साथ खड़े गार्ड्स ने जब अपने साथी की ऐसी हालत देखी तो वो सब उसकी ओर ख़ौफ से देखने लगे। मुकुल ने भी उनकी तरफ शरारत भरी टेढ़ी मुस्कान डाली और फिर अगले ही पल उसके हरकत करते दोनों हाथों के बीच कुछ चिंगारियाँ सी फूटीं। फिर उसने अपने दोनों हाथों को उनकी ओर इस तरह झटका दिया, जैसे कि कुछ फेंका हो। वो सब उसकी मंशा समझ पाते उससे पहले ही आग का एक तेज भभका उन्हें अपनी चपेट में ले चुका था। उन्हें ख़ाक करने के बाद वो भी तेजी से आगे की ओर बढ़ गया।

अब एक तरफ सभी अपनी अलौकिक शक्तियों के दम पर दस-दस पर भारी पड़ रहे थे.. वहीं दूसरी तरफ अंकित अपने शक्तिशाली आत्मबल के दम पर सामने वालों की नाक में दम किए हुए था। मगर तभी एक अनहोनी हुई और उसकी गन का जादुई चाँदी का पावडर खत्म हो गया। बाहर चमगादड़ों की फ़ौज पर अंधाधुंध फायरिंग करने का नतीजा था, जिसकी ओर किसी का ध्यान नहीं गया था। अब तो वो फँस चुका था। उसके पास चाँदी के कॉटे तो थे... मगर वो उससे एक साथ सब पर वार
नहीं कर सकता था। फिर भी वो चारों ओर अपनी चौकन्नी निगाहों से देख रहा था।

"मरा भी तो कुछ को तो साथ लेकर ही जाऊँगा।" ये कहते हुए अंकित ने अपनी आँखें बंद कईं और फिर अंदर की जेब से चाँदी के कॉटे निकालकर उसने तीव्रता से एक ओर फेंका। निशानेबाजी में उसकी महारत ने दम दिखाया और उन सभी कॉटों ने अपना निशाना खोज ही लिया। एक साथ चार गार्ड्स अपने सीनों पर हाथ रखे गिर पड़े। अब उसने तेजी से दूसरी ओर देखा, मगर तब तक देर हो चुकी थी। एक साथ कई गार्ड्स उसके सिर पर ही पहुँच चुके थे। अंकित भी बेख़ौफ होकर उनके सामने खड़ा हो गया। उनके बीच की दूरी खत्म होने को ही थी कि तभी उनके बीच रोशनी का एक पटाखा सा फूटा और अंकित की आँखें चौंधियाँ गईं। उसने अपनी आँखें अपनी बाजू से ढँक ली और जब उसने आँखें खोली तो सामने उस रोशनी को सिमटते हुए पाया। उसने चारों ओर देखा। उसकी ओर बढ़े सारे गार्ड्स गायब हो चुके थे। उस रोशनी के सिमटते ही उसने एक ओर खड़ी सृष्टि की ओर देखा जो अभी भी आक्रमण की मुद्रा में खड़ी थी।

"ओए! ये पकड़! लोड कर अपनी गन!" कुछ दूर खड़े वरूण ने उसकी ओर चॉदी के पावडर से भरा कॉच का एक पात्र उछाला, जिसे अंकित ने तुरंत ही कैच कर लिया। उसे पावडर देकर वरूण एक बार फिर से सामने वालों के साथ उलझ गया।

"थैंक्यू!" कहते हुए अंकित ने वरूण और सृष्टि दोनों की ओर हाथ उठाया और अपनी गन रिलोड कर ली। जल्द ही उन सबने मिलकर सभी का सफाया कर दिया। अपने-अपने जख्मों पर हाथ रखे वो सब साथ आ गए।

"मुकुल! सृष्टि! तुम दोनों को फिर से साथ देखकर हिम्मत और भी बढ़ गई।" आशुतोष ने गर्मजोशी से उनसे हाथ मिलाते हुए कहा।
"मुझे पता था कि तुम दोनों बिल्कुल सही-सलामत होंगे। पर यहॉ होंगें। इसकी उम्मीद तो बिल्कुल भी नहीं थी।" वरूण ने भी उत्साहित होते हुए कहा।

"ज्यादा खुश मत हो! मुझे कुछ सही नहीं लग रहा है।" चैतन्य ने उन सभी की खुशी में सेंध मारते हुए कहा।

"क्या मतलब?" आशुतोष ने पूछा।

"मतलब ये कि... समय कितना हो गया है?" जवाब देने की बजाय चैतन्य ने पलटकर सवाल किया।

उसका सवाल सुनकर सभी ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और फिर वरूण ने अपनी स्मार्ट वॉच पर नज़र डालते हुए जवाब दिया, "1:30 हुए हैं।"

"मुझे पता था! मैं जानता था कि कहीं कुछ तो गड़बड़ है।" चैतन्य ने अपनी हथेली पर मुक्का मारते हुए खीझ भरी आवाज में कहा।

"क्या? हुआ क्या?" मुकुल ने पूछा।

"तुम सबको अजीब नहीं लगा कि इतने सारे गार्ड्स भी हमें रोक नहीं पाए। दरअसल वो हमें मारना चाहते ही नहीं थे। वो बस हमारा समय बर्बाद कर रहे थे ताकि हम 3 बजे तक उस तक ना पहुँच पाएँ।" चैतन्य ने अपनी ऑखें शून्य में रखकर बेचैनी भरे चेहरे के साथ कहा।

"3 बजे मतलब!" सृष्टि ने पूछा।

"मतलब कि वो कुछ करने वाला है। कुछ बुरा। पहले भी हर ग़लत काम
इसी समय में किए हैं उन्होंने। वो कुछ करे... उससे पहले ही हमें अल्फ़ी और अनामिका को ढूंढना होगा। वो कुछ तो ऐसा करने की फिराक में है... जो अधूरा रह गया है।" चैतन्य ने अपनी फैली हुई ऑखों में डर को भरकर कहा।

"अधूरा रह गया है से तुम्हारा क्या मतलब है?" आशुतोष ने चिंतित चेहरे के साथ कहा।

"आशुतोष जी! आप लोग खुद ही सोचिए! अगर दस साल पहले ही उसने अपनी साधना पूरी कर ली थी... तो वो अभी भी इतना बेचैन क्यों है? क्यों वो परिधि और अनामिका के पीछे पड़ा है? कुछ तो

ऐसा है... जो हम अभी भी नहीं पकड़ पाए हैं। वो कुछ और ही खेल खेल रहा है। कुछ पहले से भी ज्यादा बड़ा और शायद खतरनाक भी। उसने बहुत सोच समझकर अल्फ़ी और अनामिका को अपने चंगुल में लिया है।" चैतन्य परेशान लहजे में बोला।

"कहीं वो उन दोनों को ही तो नहीं मारना चाहता। आखिर उस एडवर्ड को उन दोनों से ही तो प्रॉब्लम है। उसे अल्फ़ी की दुखती रग बहुत ही अच्छे से पता है। उसने वही नस दबाई और अल्फ़ी ने इतनी बड़ी हिमाकत कर दी।" अंकित सारी बातों का विश्लेषण करते हुए बोला। उसकी बात सुनकर लगभग सभी ने अपनी सहमति जताई। मगर चैतन्य किसी और ही सोच में डूबा हुआ था।

"चलो जल्दी! वरना कहीं देर ना हो जाए।" अपनी उस सोच से बाहर निकलते हुए चैतन्य ने कहा।

"पर वो तो तुम ही कर सकते हो। तुम जानते हो कि वो अल्फ़ी उसे कहाँ ले गया है?" आशुतोष ने चैतन्य की बात सुनकर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा।
"वो उसे अपनी साधना करने वाली जगह ले गया है। इससे पहले कि वो कुछ कर गुजरे... उससे पहले ही हमें उन तक पहुँचना होगा। " चैतन्य ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"तो चलो ना! देर किस बात की है?" सृष्टि ने कहा।

"मैं नहीं... अब तुम लेकर चलो! समय के साथ उस जगह की पहचान बदल चुकी है। मैं ये जानता हूँ कि वो कहाँ हैं.. पर वो जगह कहाँ हैं ये अब बस तुम ही जानती हो। तुमने उस पिशाच को देखा है ना! जहाँ देखा था... वहीं लेकर चलो।" चैतन्य ने सृष्टि से मुखातिब होते हुए कहा।

"मतलब कि.... तुम्हें लगता है कि मुझे पता है कि वो जगह कहाँ पर है?" सृष्टि ने उलझन भरी आवाज के साथ कहा।

"तुम सही समझ रही हो। चलो जल्दी!" चैतन्य ने भी उसकी बात का समर्थन करते हुए कहा।

और चैतन्य की बात सुनते ही सृष्टि ने उन सभी को साथ आने के लिए कहा और खुद ही आगे बढ़ गई। बाकी सब भी तत्परता से उसके पीछे चल दिए। हमेशा की तरह वो अपने जाने-पहचाने रास्ते पर आगे बढ़ गई। बाकी सब भी उसी के पीछे-पीछे चारों ओर चौकन्नी निगाहों के साथ चल रहे थे। नीचे वो हरी रेखा चमक रही थी, जिससे सभी ने दूरी बनाकर रखी थी। और फिर चलते-चलते सृष्टि एक काली दीवार के सामने रूक गई। उसके साथ-साथ ही सभी अपनी जगह पर रूके थे। यहाँ तक कि वो जादुई रेखा भी उस दीवार से थोड़ा पहले तक आकर रूक गई।

"आगे तो रास्ता बंद है।" अंकित ने उस काली दीवार को देखते हुए कहा।
"रास्ता इसी के आगे है। रूको ! मैं खौलती हूँ!" कहते हुए सृष्टि ने उस दीवार के एक हिस्से में अपनी सीधी हथेली रखी और ऑखें बंद कर कुछ कहा। और उन लोगों ने उस दीवार के काले रंग को अपनी जगह पर हलचल करते हुए देखा। ऐसा लग रहा था कि वो रंग सिमटना चाह रहा था, पर सृष्टि के माथे पर बढ़ते शिकनों के बाद भी सिमट नहीं सका। ऐसा लग रहा था जैसे कि उस दीवार पर कोई जंग चल रही हो और आखिरकार सृष्टि के कॉपते-थरथराते शरीर को चैतन्य ने उस दीवार से अलग किया। उसका पूरा शरीर तपने लगा था और पसीने से भीग चुका था। गहरी-गहरी साँसों के बीच उसने अपनी ऑखें खोली और सूखे गले को गीला करते हुए चैतन्य की ओर देखा, जो फिक्र भरी नज़रों से उसे देख रहा था।

"तुम ठीक हो!" चैतन्य ने पूछा, जिस पर सृष्टि ने तेजी से हॉ में सिर हिलाया।

"मगर रास्ता तो खुला ही नहीं।" वरूण ने उस दीवार को देखते हुए झुंझलाई हुई आवाज में कहा।

"सॉरी! कल ही तो इसे खोलकर प्रोफेसर साहनी का पीछा किया था मैंने। लगता है कि उन्होंने मुझे प्रतिबंधित कर दिया है। कल तक तो मैं इसे आसानी से खोल रही थी।"(भाग 14 - अप्रूवल)

"तो अब!" अंकित ने कहा।

"हटो यार!" कहते हुए चैतन्य उस दीवार के पास गया और एक गहरी साँस लेकर अपनी सीधी हथेली उस दीवार पर टिका दी। कुछ सेकंड्स उसी तरह रखने के बाद उसने अपनी हथेली को दाहिनी ओर झटका देकर हल्का सा घुमाया और अचानक ही उस दीवार में हलचल सी होने लगी। चैतन्य अपनी हथेली समेटते हुए तेजी से पीछे हटा। सभी ने अपनी खुली
हुई ऑखों को और भी खोलकर देखा... कि किस तरह वो दरवाजा एक ओर हट गया।

""ये तुमने कैसे किया?" सृष्टि ने उस खुले दरवाजे और चैतन्य को बारी-बारी से अपनी हैरान ऑखों से देखते हुए पूछा।

"मैं कुछ भी खोल सकता हूँ।" चैतन्य ने अपनी मुट्ठी में दबी चाबी सबको दिखाते हुए कहा और आगे बढ़ गया।

"रूको चैतन्य! रूको!" सृष्टि चिल्लाते हुए उसकी ओर भागी, जो अब सामने जली मशाल को देखकर रूक गया था।

"इसे क्या हुआ?" वरूण ने मुकुल से पूछा, जो उन सभी की तरह ही हैरान था।

"मुझे क्या पता? दरअसल... मुझे सच में कुछ पता ही नहीं है।" मुकुल ने उस दरवाजे पर गहरी नज़र डालकर आगे बढ़ते हुए कहा। उसके आगे बढ़ते ही बाकी सब भी पीछे-पीछे चल दिए।

सृष्टि हॉफती हुई चैतन्य के पास पहुँची, जो उसी की तरफ देख रहा था।

"रूको! आगे भूल-भुलैया है। ये मशालें बस उसी को सही रास्ता दिखाती हैं, जिन्हें इस तरफ आने का अधिकार प्राप्त है और थोड़ी देर पहले ही तुम देख चुके हो कि अब मुझे भी ये अधिकार नहीं है। आगे मुश्किल हो सकती है क्योंकि आगे का रास्ता मुझे तो क्या.... किसी को भी नहीं मालूम है।" सृष्टि ने सामने खड़ी समस्या से सबका परिचय करवाते हुए कहा।

"सियापा!" चैतन्य ने अपने माथे पर हाथ मारते हुए कहा।
"पर मुझे ये समस्या दिखाई नहीं दे रही है।" आशुतोष की आवाज आई, जिस पर सभी ने उनकी ओर देखा, जिन्होंने नीचे जमीन की ओर अपनी ऊंगली उठा रखी थी। सबने देखा कि उन्होंने जो जादुई रेखा अनामिका की खोज के लिए बनाई थी... दरवाजे के खुलते ही अब वो धीरे-धीरे सही रास्ता खोजते हुए आगे बढ़ रही थी। ये देखते ही सभी के होंठों की मुस्कान चौड़ी हुई।

"चलो! आगे बढ़ते हैं! पर सावधानी से!" चैतन्य ने कहा और फिर वो सभी उस हरी चमकीली रेखा का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ने लगे। उन सभी ने देखा कि अक्सर गलत दिशा की मशालें जलकर उन्हें रास्ते से भटकाने का पूरा प्रयास कर रही थी। मगर उन्होंने अपनी जादुई रेखा पर पूरी तरह से भरोसा किया। उस अंधेरी भूल-भुलैया में वो उसकी चमक एक उम्मीद की तरह ही रोशन थी।

आगे बढ़ते हुए एक जगह पर आकर सृष्टि रूक गई और उसने पीछे मुडकर उन सभी को रूकने का इशारा किया। इसके बाद वो अकेली ही कुछ दूर आगे तक गई और फिर कुछ जॉच-पड़ताल के बाद उसने पीछे मुडकर उन सभी को बिना आवाज किए आगे बढ़ने का इशारा किया। उसका इशारा मिलते ही वो सब उसके पास आ गए। बाईं ओर आगे जाकर एक बड़ा सा सुनहरा दरवाजा नज़र आ रहा था।

"ये कौन सा कमरा है?" हैरत में पड़े हुए मुकुल ने सृष्टि से पूछा।

"प्रोफेसर साहनी की स्टडी! मगर ये उस स्टडी का छिपा हुआ हिस्सा है... इसलिए तुमने आज तक इसे नहीं देखा था।" सृष्टि ने मुकुल के सवाल का जवाब देते हुए कहा और फिर उस दरवाजे के पास पहुँचकर उसने एक बार फिर से सिर उठाकर उस पूरे दरवाजे को देखा और फिर पीछे मुड़कर चैतन्य की ओर देखा।
"आओ! खोलो! मैं अब इसे नहीं खोल सकती।" सृष्टि ने चैतन्य को आगे आने का इशारा करते हुए कहा।

चैतन्य आगे आया और अपनी चाबी उस दरवाजे की कीहोल में डाल दी। चाबी को घुमाते ही खट्ट की आवाज के साथ वो दरवाजा खुल गया। सृष्टि ने आगे बढ़कर बिना आवाज किए वो दरवाजा हल्का सा खोला और फिर उसके अंदर सिर घुसाकर देखा। अंदर अच्छी तरह देखने के बाद उसने सिर बाहर निकाला और पीछे मुड़ी।

"प्रोफेसर साहनी अंदर हैं। अकेले हैं!" सृष्टि ने अंदर की जानकारी देते हुए कहा।

"पर इस कमरे में क्यों?" आशुतोष ने पूछा।

"हमें जहॉ जाना है... वहॉ जाने का रास्ता इसी कमरे से है।" सृष्टि ने कहा।

"तो फिर चलते हैं अंदर। पहले मुकुल और सृष्टि अंदर जाएँगे। वो इन्हें देखकर जरूर हैरान होंगे। उन्हें थोड़ा उलझाकर रखना... ताकि हम अचानक उस पर हमला कर सके.... या फिर हमें ये पता चल जाए कि कहीं कोई गार्ड तो अंदर सुरक्षा में नहीं छिपा बैठा है। इससे हमारे लिए आगे की कार्यवाही आसान हो जाएगी।" चैतन्य ने अपनी योजना सबको समझाते हुए कहा।

सभी की हॉ के साथ ही सृष्टि और मुकुल के अलावा सभी दरवाजे की आड़ में छिप गए। सृष्टि ने आगे बढ़कर उस दरवाजे को धक्का दिया, जिससे वो दरवाजा खुल गया। उन दोनों के चेहरे पर एक मुस्कान उभरी और वो दोनों ही धड़धड़ाते हुए अंदर चले गए। प्रोफेसर साहनी उस कमरे की छत को छूती हुई खिड़की के पास खड़े थे। उस खिड़की के दोनों ओर लगे मोटे और सुनहरे पर्दों में से एक गिरा हुआ था और दूसरा खुला हुआ
था। प्रोफेसर साहनी उस खुले पर्दे के पीछे बंद काँच के पलड़ों से बाहर की ओर देख रहे थे। सृष्टि के तेज आवाज में दरवाजा खोलने से उन्होंने तेजी से पलट कर पीछे की ओर देखा। सामने मुकुल और सृष्टि को साथ खड़ा देखकर उनके चेहरे पर हवाइयॉ उड़ने लगी थीं।

"तुम दोनों! तुम दोनों बाहर कैसे आए?" प्रोफेसर साहनी ने अपनी आवाज की लर्जिश को दबाते हुए कहा।

"क्यों? तुम्हें लगा था कि हम उसी कैद में ही सड़कर दम तोड़ देंगे।" सृष्टि ने बहुत ही कड़वाहट के साथ कहा। उसे अपने सामने खड़े उस शख़्स पर इस कदर गुस्सा आ रहा था कि वो उसी समय उसकी गर्दन मरोड़ देना चाहती थी। मगर मुकुल ने उसे मजबूती से पकड़ रखा था।

"तो तुम्हें क्या लगता है? उस कैद के बाहर यहाँ तक पहुँच कर तुम बच गए। हश्र तो तुम्हारा यहाँ भी बहुत बुरा होगा। तुम्हें क्या लगता है मैंने अपनी सुरक्षा का इंतजाम न किया होगा!" कहते हुए प्रोफेसर साहनी ने दो बार ताली बजाई और उनके ताली बजाते ही उस कमरे में बाईं ओर मौजूद किताबों की अलमारी का एक हिस्सा किसी दरवाजे की तरह खुला और उसके पीछे से करीब 8-10 हथियार बंद सुरक्षा कर्मी दौड़ते हुए बाहर निकले। उन्होंने उन दोनों को ही निशाने पर लेते हुए उन्हें चारों ओर से घेर लिया। सृष्टि और मुकुल को अपने गार्ड्स से घिरा हुआ देखकर प्रोफेसर साहनी की हिम्मत वापस लौटी।

"वेल! वेल! वेल! ये तो पता नहीं कि तुम दोनों आखिर उस कैद से बाहर निकले कैसे? क्योंकि तुम्हारी अंगूठियाँ तो मेरे पास है। पर हाँ.... यहाँ से जिंदा बाहर नहीं जाओगे इसकी गारंटी तुम्हें जरूर देता हूँ। पता नहीं पिशाच श्रेष्ठ को तुम लोगों से ऐसा क्या जरूरी काम है कि उन्होंने तुम्हारी जान बचा कर रखी.... वरना मैं तो उसी समय तुम दोनों को मौत के घाट उतार देने वाला था।" प्रोफेसर साहनी अपने जर्जर हो चुके शरीर को गुस्से
में थरथराते हुए चिल्लाए।

और ये खुलासा होते ही सृष्टि और मुकुल के साथ दरवाजे के बाहर खड़े उनके साथियों के भी कान खड़े हुए थे। प्रोफेसर साहनी की बात सुनकर तो ये पता चल ही गया था कि चैतन्य का अंदाजा बिल्कुल सही था। एडवर्ड इस बार कुछ बड़ा करने की फिराक में था।

"और उसने ऐसा क्यों किया?" मुकुल ने अपने अंदर उमड़ते हुए सवाल को बाहर निकालते हुए पूछा।

"हुंह! पता होता तो उसी की गर्दन मरोड़ नहीं देता मैं। सबने परेशान करके रख दिया है मुझे।" प्रोफेसर साहनी की झल्लाती हुई आवाज आई, जिसे सुनकर उन्हें पता चल गया कि प्रोफेसर साहनी को भी एडवर्ड की योजना के बारे में कुछ पता नहीं था।

"वैसे तुम्हें उसके बारे में जानने की जरूरत भी क्या है? तुम दोनों आखिर मरने वाले जो हो। तैयार हो जाओ!" सृष्टि और मुकुल को धमकी भरी आवाज में कहते हुए प्रोफेसर साहनी ने उन सुरक्षा कर्मियों की ओर इशारा किया, जिसके बाद उन सभी ने अपनी-अपनी गंस उन दोनों की ओर उठा ली थीं। प्रोफेसर साहनी ने उन दोनों पर एक कुटिल मुस्कान डाली।

"कभी-कभी याद कर लिया करूंगा। आखिरकार मेरे ही भाई-बहन के बच्चे हो तुम दोनों। पर मुझे ताकत से ज्यादा और कुछ भी प्यारा नहीं है।" प्रोफेसर साहनी ने बहुत ही कड़वाहट और सख़्ती के साथ कहा और फिर उनकी ओर पीठ करके खड़े हो गए।

"फायर!"
प्रोफेसर साहनी की तेज आवाज उस कमरे में गूंज उठी और उसी के साथ एक-एक करके कई फायर हुए। उन आवाजों को सुनकर प्रोफेसर साहनी को खुश होना चाहिए था, मगर उन फायरिंग की आवाजों के बीच कुछ दर्द भरी चीखों ने उनके कान खड़े कर दिए। अपने माथे पर शिकन डाले हुए वो धीरे से पीछे मुड़े तो सामने का नज़ारा देखकर उनके होश उड़ गए। उनकी उम्मीद के उलट मुकुल और सृष्टि दोनों ही सही-सलामत अपनी जगह पर खड़े हुए थे और उनके उच्च प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मी जमीन की धूल चाट रहे थे। प्रोफेसर साहनी की डरी हुई ऑखों ने मुकुल की उंगलियों में धीरे-धीरे निकलती हुई चिंगारियां को देख लिया था और इसी के साथ उन्होंने तेजी से अपनी जेब के अंदर हाथ डालकर दो अंगूठियॉ बाहर निकाली।

"ये कैसे हो सकता है? ये तो मेरे पास हैं।" प्रोफेसर साहनी ने उन अंगूठियां को अपनी कॉपती हुई पलकों से निहारते हुए कहा।

"और आपको लगा कि... मुकुल और सृष्टि जो भी हैं, इन अंगूठियों की वजह से हैं। जी नहीं! बल्कि ये अंगूठियॉ उनके पास इसलिए हैं क्योंकि वो इनके काबिल हैं।" दरवाजे को पूरी तरह खोलकर अंदर आते हुए आशुतोष ने कहा। उसके पीछे-पीछे अपनी शॉटगन संभाले हुए अंकित और अपने-अपने खंज़रों के साथ वरुण और चैतन्य आ रहे थे। अपने दूसरे हथियार उन्होंने दूसरे हाथ में पकड़ रखे थे। मुकुल और सृष्टि को सही-सलामत देखकर प्रोफेसर साहनी को जितनी हैरानी हुई थी.... बाकी सभी को देखकर वही हैरानी अब डर में बदल गई। उन सभी के आगे बढ़ने के साथ ही प्रोफेसर साहनी कदम-कदम पीछे हटने लगे। अभी वो कुछ पीछे ही हटे थे कि तभी उनके हाथ को एक तेज झटका लगा,
जिससे उनके हाथ की अंगूठियॉ उछलकर एक ओर गिर गईं। उन्होंने अपने हाथ की ओर देखा, तो उनके हाथ में लिपटी बेल उनके माथे पर पसीना ले आई। प्रोफेसर साहनी ने उस कोने की ओर देखा जहॉ पहले से एक गमला मौजूद था, जिस पर एक सजावटी पौधा लगा हुआ था। उसी पौधे की एक पतली सी शाख बेल की शक्ल में आगे बढ़कर प्रोफेसर साहनी के उस हाथ पर लिपट गई थी। प्रोफेसर साहनी ने घबराकर अपने हाथ को झटकते हुए उस बेल से आजाद करवाना चाहा.... मगर वो जितना भी अपने हाथ को झटकते वो बेल उतना ही उनके उस हाथ को कसती जा रही थी। कुछ ही देर में उस बेल ने प्रोफेसर साहनी के उस हाथ को कंधे तक बुरी तरह से कस लिया था। उसकी कसावट इतनी ज्यादा थी कि उस कमरे में प्रोफेसर साहनी की दर्द भारी चीखें गूंजने लगी।

"क्या कहते हो? हाथ रहने दें या एक हाथ उखाड़कर मारें इसे।" आशुतोष ने अपने दॉत पीसते हुए कहा।

"पहले इससे दरवाजा खुलवा लें, फिर इसका अंजाम तय करेंगे।" सृष्टि ने सलाह देते हुए कहा।

"हम्म! बात तो सही है।" कहते हुए आशुतोष ने उस बेल को इशारा किया जिससे वो बेल प्रोफेसर साहनी को उस टेबल की ओर खींचने लगी। अपने आप को इस तरह खिंचता हुआ देखकर प्रोफेसर साहनी के हाथ पैर फूलने लगे। उन्हें पता था कि अब उनका इस पकड़ से छूट पाना बहुत मुश्किल है और इसलिए उन्होंने एक ऐसा कदम उठाया, जिसके बारे में कमरे में मौजूद किसी ने भी सोचा नहीं था। प्रोफेसर साहनी जैसे ही उस टेबल के पास पहुँचे उन्होंने उस टेबल पर रखे हुए खंज़र... जो शायद सृष्टि और मुकुल में से किसी का था... को उठाया और अपने बेल से लिपटे हुए सीधे हाथ को कंधे के पास से उस खंजर के एक तेज वार से ही काट कर अलग कर दिया। सभी भौंचक से खड़े रह गए। अपने

कंधे से फव्वारे की तरह बहते खून को दूसरे हाथ से पकड़ कर रोकने की कोशिश करते हुए प्रोफेसर साहनी दौड़ते हुए उस विशाल खिड़की के पास पहुँचे। उस कमरे में मौजूद कोई भी कुछ कर पाता उससे पहले ही खिड़की के कॉच को तोड़ते हुए वो बाहर की ओर कूद गए। सभी बौखलाई हुई हालत में उस खिड़की की ओर दौड़े और नीचे झांक कर देखा। प्रोफेसर साहनी अपना कटा हुआ कंधा पकड़कर भागते हुए सामने अंधेरों में खो गए।

"शिट!" मुकुल बहुत ही जोर से झुंझलाया था। उसी हालत में मुकुल ने अंगूठियॉ और खंज़र उठाए और सृष्टि को भी उसकी अमानतें सौंप दीं।

"क्या बात है। उस एडवर्ड का इतना डर... कि अपना हाथ काटकर अलग कर दिया।" उस कटे हुए हाथ पर एक नज़र डालकर खिड़की से बाहर झांकते हुए चैतन्य ने कहा।

"अब दरवाजा कैसे खोलेंगे?" सृष्टि ने अपने माथे पर हाथ रखकर भारी चिंता से कहा।

"बेवकूफ! मैं हूँ ना! चलो दरवाजा दिखाओ।" सृष्टि के सिर पर हल्की सी चपत लगाते हुए चैतन्य ने उससे कहा और फिर अपनी जेब से वही जादुई चाबी निकाल ली, जिसे सृष्टि बिल्कुल ही भूल गई थी।

"ओह! सॉरी! आओ!" माफी मांगते हुए सृष्टि उन सब को कमरे में पड़े उस बड़े से टेबल के पास ले गई।

"उसने यहॉ पर तीन बार हाथ मारा था।" सृष्टि ने पुरानी बात याद करते हुए चैतन्य को बताया।(भाग - 47)

चैतन्य आगे बढ़ा और उस चाबी को सृष्टि की बताई हुई जगह पर रख दिया और फिर उस पर तीन बार हाथ मारा। सबने देखा कि चैतन्य के
तीसरी बार हाथ मारते ही वो मेज थरथराने लगी। चैतन्य ने तुरंत ही अपनी चाबी उठाई। अगले कुछ ही पलों में वो मेज बीच से बँटकर दाईं और बाईं सरकने लगा और उसी के साथ उसके नीचे की जमीन भी उसी तरह खिसकने लगी और वहॉ एक गड्ढा बन गया। वो सब वहॉ पहुँचे और उस गड्ढे के अंदर देखा। उन्होंने अंदर की ओर उतरती हुई सीढ़ियाँ को देखा। वो सभी तेजी से उन सीढ़ियों से नीचे उतरे। सबसे आखिरी में आशुतोष के उतरने के साथ ही वह दरवाजा अपने आप बंद हो गया। कुछ सीढ़ियॉ नीचे उतरते ही सामने थोड़ी सी खुली जगह थी, जो चारों ओर से बंद दिखाई दे रही थी। सामने रास्ता बंद देखकर सभी ने किसी दरवाजे या रास्ते की तलाश में परेशानी से चारों ओर नजरे घुमाई थीं। वहीं सृष्टि भी अकबकाई सी उस जगह को देख रही थी।

" यहॉ एक रास्ता था। पता नहीं कहॉ चला गया?" सृष्टि दीवार के एक हिस्से पर हाथ मारते हुए बेचैनी से बोली।

"मुझे पता है!" चैतन्य ने अपने सामने की दीवार को घूर कर देखते हुए कहा। उसे वो जगह याद आ गई थी, जिसके ऊपर समय और कुछ लोगों की बदनीयती ने नए-नए लिहाफ ओढ़ा दिए थे। ये जंगल का वही गड्ढा था, जिसके अंदर से उन्होंने हेममाया के मृत शरीर और अनामिका को एडवर्ड के चंगुल से छुड़ाया था। इसी जगह पर अनामिका ने वो भविष्यकथन हासिल किया था और यही वो जगह थी... जहॉ अल्फ़ी ने एडवर्ड को लगभग खत्म ही कर दिया था। उस जगह को देखते ही चैतन्य की ऑखों के सामने जिंदगी के लिए जूझते उनके सारे प्रयास याद आ गए। भले ही उस बात को 200 साल बीत गए

थे, मगर चैतन्य के लिए तो वो एक दिन पुरानी बात थी। उस रात मिले ज़ख़्म अभी भी उसके शरीर पर सूखे नहीं थे।

वो तेजी से आगे बढ़ा और सृष्टि को एक ओर हटाकर अपनी चाबी दीवार के एक हिस्से में रख दी और उसे इधर-उधर खिसकाने लगा। कुछ देर
के बाद आखिरकार वो चाबी एक जगह अंदर घुस गई। चैतन्य ने चाबी घुमाकर उस दरवाजे को खोला और उसके खुलते ही एक बार फिर से वही रक्तरंजित अतीत भी उसके सामने खुल चुका था।

उनके सामने एक अंधकार में डूबा हुआ गलियारा दिखाई दे रहा था। चैतन्य तेजी से उस अंधेरे गलियारे में उतर गया। सामने पहले की तरह ही गहरा अंधकार छाया हुआ था। मगर इस बार वो तैयार था। उसने जेब से एक पॉकेट टॉर्च निकाली और सामने रोशनी फेंकी। सब कुछ पहले की तरह ही था। उसने मुड़कर सभी को बिल्कुल चुपचाप साथ आने का इशारा किया। सभी एक-एक करके उस अंधेरे में उतर गए और चैतन्य के टॉर्च की रोशनी के सहारे धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। आखिर कार रोशनी की एक झलक उनकी ऑखों में उतरते ही उन सबने राहत महसूस की। चैतन्य ने अपनी टॉर्च बंद की। आगे बढ़ते हुए आखिरकार वो एक गोलाकार आकृति के एक कमरे में पहुँचे, जिसके ऊपरी हिस्से में एक ओर एक बड़ी सी खुली खिड़की थी। चैतन्य के लिए ये जगह थोड़ी सी बदली थी, पर फिर भी उसे पहचानना इतना भी मुश्किल नहीं था। उसने एक आड़ में खड़े होकर अंदर की ओर नज़र डाली और एक ओर उसे वो दोनों ही नज़र आ गए। आखिरकार वो सब अपने गंतव्य पहुँच चुके थे।

सामने अल्फ़ी को अनामिका को जकड़े हुए देखकर चैतन्य के अंदर बहुत कुछ सुलगा था। अल्फ़ी ने अनामिका के दोनों हाथों को उसकी पीठ की तरफ से मजबूती से पकड़ा हुआ था और वो उसकी पकड़ से छूटने के लिए बुरी तरह से छटपटा रही थी।

"तुम ऐसा नहीं कर सकते अल्फ़ी!" अनामिका उसकी पकड़ में फड़फड़ाती हुई बोली।

"हम्म! क्यों नहीं कर सकता? मुझे तो लगता है कि ये मुझे करना ही चाहिए।" अल्फ़ी ने भी उसके दोनों हाथों को मजबूती से पकड़े हुए
लापरवाही से कहा।

"तुम ये ग़लत कर रहे हो अल्फ़ी! जिसने तुम्हारा सब कुछ छीन लिया... तुम उसी के साथ मिल गए हो! वो फिर तुम्हें धोखा देगा। होश में आओ!" अनामिका ने तड़पकर उसके अंदर के अल्फ़ी को पुकारा था।

"मैं बस ये जानता हूँ कि मुझे मेरा प्यार वापस चाहिए और चैतन्य को छोड़कर अनामिका कभी भी मेरे पास नहीं आएंगी। इसलिए अब मुझे... अनामिका नहीं... मेरी हेममाया चाहिए। अगर स्वार्थी बनकर ही मुझे मेरा प्यार मिलेगा, तो यही सही।" अल्फ़ी ने भी बर्फ जैसी सर्द आवाज से अनामिका पर हमला करते हुए कहा।

"प्लीज़ अल्फ़ी! उसकी बातों में मत आओ। हम बात करेंगे ना! हम आराम से बैठकर बातें करेंगे। इस मसले का हल निकाल लेंगे हम। पर ऐसा मत करो प्लीज़!" अनामिका उसके सामने कलपते हुए बोली।

"बात! कोई बात नहीं करनी है मुझे। अब बात सौदे पर आ चुकी है।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से उतनी ही रूखी आवाज में कहा।

"सौदा! कैसा सौदा?" अनामिका ने अपने भीगे चेहरे को उसकी ओर उठाकर सवालिया नजरों के साथ पूछा।

"अब मैं तुम्हारे साथ बस एक ही सौदा कर सकता हूँ। या तो तुम खुद... अपनी खुशी से मेरे पास आ जाओ। या फिर... तुम्हें एडवर्ड को सौंपकर मैं हेममाया को हासिल कर लूंगा। ना तो इससे कुछ ज्यादा... और ना ही इससे कुछ कम। अच्छी तरह से सोच लो.... क्योंकि तुम्हारी हाँ बहुतों की जान बचा सकती है।" अल्फ़ी किसी चतुर व्यापारी की तरह मोल-भाव करते हुए बोला।और ये सुनते ही अनामिका चुप पड़ गई। वो बहुत कुछ बोलना चाहती थी... पर उसकी हलक़ से कोई भी शब्द बाहर नहीं निकला। पर उसके गले में बंध चुकी हिचकियाँ छिपकर खड़े वरूण का खून जरूर खौला गई थी। वो किसी बेकाबू घोड़े की तरह अनामिका की ओर भागा ही था कि तभी चैतन्य ने अपना हाथ अड़ाकर उसे रोक दिया, जिसका चेहरा भी गुस्से में तपकर लोहा बन चुका था। मगर वो अभी भी अपने पूरे होश में था और इसकी इस समय बहुत ही ज्यादा जरूरत थी। वो सब छिपकर अल्फ़ी और अनामिका की बातें सुन ही रहे थे कि तभी एक और आवाज उस कमरे में गूंजी,

"कितना सही फैसला?"

सबके सामने से अनामिका को उड़ाकर अल्फ़ी वहीं ले आया था, जहाँ हर चीज की शुरुआत हुई थी। उसी जगह जहाँ पिशाचदेव की साधना करते हुए एडवर्ड ने अपनी नफरत को और भी पैना किया था। इतना पैना कि उसकी तेज धार से लगे ज़ख़्म आज दो सौ सालों के बाद भी भर नहीं पाए थे।

अल्फ़ी जब अनामिका को लेकर वहाँ पहुँचा तो एडवर्ड जैसे उन्हीं के इंतजार में था। अल्फ़ी ने जब उसकी ओर देखा तो उसकी पकड़ अनामिका पर और भी मजबूत हुई थी और उसने उसे अपने और भी करीब किया था। अनामिका बस छटपटाकर रह गई।

"वेलकम! वेलकम ब्रदर! आखिर खून ही.... खून के काम आता है।" एडवर्ड ने शहद लिपटी आवाज के साथ अल्फ़ी का स्वागत करते हुए कहा।

"खून..! हा! काम की बात करो! तुमसे किसी भी नाते-रिश्ते की दरकार नहीं है मुझे।" अल्फ़ी ने उसकी आवभगत को झटकते हुए कहा।

"अच्छा! तो ये बात है। तुम्हें हमारा सौदा यहाँ तक ले आया है। वैसे मुझे पता था कि.... तुम्हें मेरा प्रस्ताव जरूर पसंद आएगा!" एडवर्ड ने अल्फ़ी के तने हुए चेहरे को देखकर अपनी आवाज में कमीनगी उड़ेली।

"हाँ! सौदा तो किया है, पर.... पूरा यकीन अभी भी नहीं है मुझे तुम पर। पहले तुम अपनी प्रतिबद्धता साबित करो।" अल्फ़ी ने एडवर्ड को तौलती
हुई नज़रों से देखते हुए कहा।

"क्या कहा? प्रतिबद्धता! और ये तुम इस लड़की को यहाँ लाने के बाद पूछ रहे हो।" एडवर्ड ने अपनी भौंहों को सिकोड़ते हुए थोड़े व्यंग्य के साथ पूछा।

"अनामिका को यहाँ लाना मेरी मर्जी थी और अगर... इसे यहाँ से ले जाना चाहूँ तो... किसी का बाप भी मुझे नहीं रोक सकता। समझे!" अल्फ़ी ने एडवर्ड की आँखों में घूरकर दाँत पीसते हुए कहा।

"ओह! ऐसा क्या? तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हें खुद पर कुछ ज्यादा ही यकीन है। इतना ओवर कॉन्फिडेंस भी सही नहीं है। तुम्हें तुम्हारी हेममाया से मतलब होना चाहिए और मैं तुम्हें वो रास्ता बता सकता हूँ... जो तुम्हें तुम्हारी हेममाया दिला सकती है।" एडवर्ड ने अपना पत्ता फेंकते हुए कहा।

"वही तो जानना है मुझे कि ऐसा कौन सा रास्ता पता है तुम्हें... जो मुझे हेममाया लौटा सकता है और... अनामिका चाहिए क्यों तुम्हें?" अल्फ़ी ने एडवर्ड से बात निकलवाने की गरज से पूछा। वहीं उसकी पकड़ में अनामिका ने भी एडवर्ड की ओर कौतूहल से देखा था।

"तुम्हें साहनी ने बताया नहीं क्या? मैं 'वंश-बेल' प्रक्रिया द्वारा हेममाया को वापस ला सकता हूँ। इसके लिए मुझे उसकी आत्मा का अंश चाहिए और वो अनामिका में है। तुम मुझे अनामिका दे दो... मैं उसकी मदद से तुम्हें हेममाया लौटा दूँगा।" एडवर्ड ने अपनी व्यापार कुशलता का परिचय देते हुए कहा।

"हेममाया का अंश मतलब!" अल्फ़ी ने ऑखों से भी सवाल किया। वहीं अनामिका के साथ-साथ ओट में छिपकर खड़े उसके साथियों की भी ऑखें सिकुड़ी थीं।
"तुम्हें क्या लगता है? वो पूरी तरह से हेममाया है! नहीं! जब इसकी माँ ने हेममाया की आत्मा को इससे जोड़ा था, तो ये मरी नहीं थी... जीवित थी। मगर उस समय इसकी हालत उस नाज़ुक बेल की तरह थी... जिसे उठने, खड़े होने के लिए एक मजबूत सहारे की जरूरत थी और इसे वो सहारा दिया हेममाया की आत्मा के अंश ने।" एडवर्ड ने धमाका करते हुए कहा।

"तुम्हारा मतलब है कि... अनामिका की माँ ने हेममाया की आत्मा के एक अंश का ही इस्तेमाल किया था। तो फिर उसकी आत्मा के बाकी हिस्से कहाँ हैं?" अल्फ़ी उत्तेजित होते हुए बोला।

"मुझे क्या पता? जो मुझे पता था... तुम्हें बता दिया। हमें हेममाया को पूरी तरह वापस लाने के लिए उसकी आत्मा का छोटा सा अंश चाहिए और वो हमें अनामिका से मिल जाएगा।" एडवर्ड ने अपने हाथ झटकते हुए कहा।

"तुम्हारा मतलब है कि अनामिका के शरीर में दो आत्माएँ है! ऐसा कैसे हो सकता है? एक शरीर में दो आत्माएँ कभी नहीं हो सकती।" अल्फ़ी ने एडवर्ड की बात को काटते हुए कहा।

"और ये बात सच भी है। दरअसल... अनामिका की अपनी खुद की जो आत्मा है... वो इतनी कमजोर है कि.. उसका होना नहीं होना एक बराबर है।" एडवर्ड ने एक बार फिर से अपनी बातों पर यकीन का वज़न डालते हुए कहा।

और ये सुनते ही अल्फ़ी के साथ-साथ अनामिका की ऑखें भी एक सोच के साथ फैली थीं। एक सोच... जिसने उन दोनों के मस्तिष्क को झिंझोड़ कर रख दिया था।

"तुम्हारा कहना है कि अनामिका की आत्मा हेममाया की जिस आत्मा
के सहारे जीवित है, तुम उसे बाहर निकालना चाहते हो। पर... तुम ऐसा करोगे तो फिर...
अनामिका..." एक डरावने ख़्याल के साथ अल्फ़ी ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।

"हॉ! सही समझ रहे हो तुम। अनामिका या तो खत्म हो जाएगी... या फिर उसकी हालत मौत से कम तो हर्गिज नहीं होगी। पर तुम्हें अनामिका से क्या मतलब है! तुम तो हेममाया से प्यार करते हो ना! वो तुम्हें मिल जाएगी। फिर तुम अपनी राह और मैं अपनी राह। हर किसी के बारे में सोचने की जरूरत ही क्या है? कभी-कभी बस अपने बारे में... अपनी खुशियों के बारे में सोचना ज्यादा बेहतर होता है। नई!" एडवर्ड ने अपनी आवाज में चाशनी घोलते हुए कहा।

इस रूह को कँपाने वाले खुलासे के खुलते ही एक पल के लिए अल्फ़ी की ज़बान पर जैसे ताला पड़ गया। उसका दिमाग कुछ पल के लिए सुन्न सा पड़ गया, जिसकी सोचने-समझने की ताकत जैसे खत्म हो गई थी। उसने अपनी ऑखों में बेबसी के भाव भरकर अपने चंगुल में छटपटाती अनामिका को देखा, जो खुद अपना सिर उसकी ओर उठाकर उसे उतनी ही बेबसी से देख रही थी। अपने जीवन की बुनियाद के बारे में जानने के बाद वो आंसुओं के बोझ से कॉपती हुई अपनी पलकों को अल्फ़ी के चेहरे की ओर उठाकर जैसे उसके चेहरे से उसके दिल को पढ़ना चाह रही थी।

"सोच क्या रहे हो अल्फ़ी? क्या अब भी सोचने के लिए कुछ बचा है।" एडवर्ड ने अल्फ़ी को उकसाते हुए कहा।

"अगर ऐसा ही है तो मुझे तुम्हारी जरूरत ही क्या है? मैं खुद ही ये काम कर सकता हूँ।" अल्फ़ी ने एडवर्ड की ओर उलाहना भरी नज़रें डालते हुए कहा।
"पर उसके लिए तुम्हारे पास तीन पीढ़ियों के शरीर के हिस्से या खून होना चाहिए।" एडवर्ड ने टेढ़ी मुस्कान के साथ कहा।

"मेरे और पिताजी के अलावा..... मुझे लगता है कि तीसरा हिस्सा दादाजी की कब्र से मिल ही जाएगा।" अल्फ़ी ने भी अपनी योजना एडवर्ड से साझा की।

"और तुम्हें लगता है कि उनकी कब्र अभी भी भरी हुई है! वो मेरे पास है और अब... तुम्हें हर हाल में मेरा साथ देना ही होगा।" एडवर्ड ने अपनी कुटिल मुस्कान के साथ अल्फ़ी पर वार करते हुए कहा।

उसकी चालाकी भरी बातें सुनकर अल्फ़ी एक पल को ठिठका था। उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे कि वो किसी गहरी सोच में डूबा था।

"और सोचना चाहते हो! ठीक है! सोच लो! पर याद रखना कि समय ज्यादा नहीं है। हो सके तो अपनी सोच में उन दिनों को शामिल कर लेना, जब तुम और हेममाया एक साथ थे। तुम्हें फैसला लेने में आसानी होगी। तब तक मैं तैयारियॉ करके आता हूँ।" एडवर्ड तीर निशाने पर छोड़ते हुए अपनी धूर्त मुस्कुराहट के साथ वहॉ से चला गया।

"माया!" अल्फ़ी ने भीगी हुई आवाज में कहा और जिसे सुनकर अनामिका सकते में आ गई। अल्फ़ी ने अभी भी उसे पीछे की ओर से जकड़ रखा था और अब वो उसकी पकड़ से छूटने के लिए छटपटा रही

थी। बस यही वो समय था... जब चैतन्य और साथी वहाँ पहुँचे और छिपकर उन्हें देखने लगे।

"तुम ऐसा नहीं कर सकते अल्फ़ी!" अनामिका उसकी पकड़ में
फड़फड़ाती हुई बोली।

"हम्म! क्यों नहीं कर सकता? मुझे तो लगता है कि ये मुझे करना ही चाहिए।" अल्फ़ी ने भी उसके दोनों हाथों को मजबूती से पकड़े हुए लापरवाही से कहा।

"तुम ये ग़लत कर रहे हो अल्फ़ी! जिसने तुम्हारा सब कुछ छीन लिया... तुम उसी के साथ मिल गए हो! वो फिर तुम्हें धोखा देगा। होश में आओ!" अनामिका ने तड़पकर उसके अंदर के अल्फ़ी को पुकारा था।

"मैं बस ये जानता हूँ कि मुझे मेरा प्यार वापस चाहिए और चैतन्य को छोड़कर अनामिका कभी भी मेरे पास नहीं आएगी। इसलिए अब मुझे... अनामिका नहीं... मेरी हेममाया चाहिए। अगर स्वार्थी बनकर ही मुझे मेरा प्यार मिलेगा, तो यही सही।" अल्फ़ी ने भी बर्फ जैसी सर्द आवाज से अनामिका पर हमला करते हुए कहा।

"प्लीज़ अल्फ़ी! उसकी बातों में मत आओ। हम बात करेंगे ना! हम आराम से बैठकर बातें करेंगे। इस मसले का हल निकाल लेंगे हम। पर ऐसा मत करो प्लीज़!" अनामिका उसके सामने कलपते हुए बोली।

"बात! कोई बात नहीं करनी है मुझे। अब बात सौदे पर आ चुकी है।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से उतनी ही रूखी आवाज में कहा।

"सौदा! कैसा सौदा?" अनामिका ने अपने भीगे चेहरे को उसकी ओर उठाकर सवालिया नजरों के साथ पूछा।

"अब मैं तुम्हारे साथ बस एक ही सौदा कर सकता हूँ। या तो तुम खुद... अपनी खुशी से मेरे पास आ जाओ। या फिर... तुम्हें एडवर्ड को सौंपकर मैं हेममाया को हासिल कर लूंगा। ना तो इससे कुछ ज्यादा... और ना ही
इससे कुछ कम। अच्छी तरह से सोच लो.... क्योंकि तुम्हारी हाँ बहुतों की जान बचा सकती है।" अल्फ़ी किसी चतुर व्यापारी की तरह मोल-भाव करते हुए बोला।

चैतन्य और साथी छिपकर अल्फ़ी और अनामिका की बातें सुन ही रहे थे कि तभी एक और आवाज उस कमरे में गूंजी,

"कितना सही फैसला?"

और इसी के साथ ही सभी की नज़रें उस आवाज की ओर मुड़ी थी। सबको पता था कि ये किसकी थी..... और ये वही था। एक बार फिर से चैतन्य उसे अपने सामने वैसा का वैसा देख रहा था। एक बार फिर से वो अपनी मनहूसियत फैलाने वाली शख्सियत के साथ होंठों पर कुटिल मुस्कुराहट सजाए खड़ा था। उसे देखते ही चैतन्य का रोम-रोम सुलगने लगा था। भले ही वो दिन अतीत का हिस्सा रहे हों... पर

उसके और अनामिका के बीते चार दिन इसी वहशी दरिंदे की लालच और नफ़रत के भेंट चढ़ गए थे। आज सब जिस उलझन भरी मुसीबत में फँसे हुए थे, वो सब इसी कमीने की मेहरबानी थी। और इतना सब करने के बाद भी वो कितनी ढीढता से तनकर खड़ा हुआ था।

"मुझे पता था कि तुम बिल्कुल सही फैसला लोगे। आखिरकार तुमने अपनी और हेममाया के सुंदर और सुनहरे भविष्य को चुना है। आखिर वो दिन आ ही गया। जब हम सब इस समय के श्राप से मुक्त हो जाएँगे। तुम्हें तुम्हारी हेममाया मिल जाएगी और अनामिका के साथ वो समय-चक्र भी टूट जाएगा।" एडवर्ड ने अपनी बात कहकर जोर से ठहाका लगाया।
अभी वो अपनी कामयाबी की आमद का जश्न मना ही रहा था कि तभी अनामिका, अल्फ़ी के चंगुल से छूट निकली और तेज आवाज में चिल्लाते हुए एडवर्ड पर झपट पड़ी। एडवर्ड इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं था। उस हमले से वो जमीन पर पीठ के बल गिर पड़ा। अनामिका फुर्ती से उसके सीने में सवार हो गई और पास ही पड़ा एक पत्थर उठाकर उसके सिर पर पूरी ताकत से मार दिया। अगले ही पल एडवर्ड का सिर खून उगलने लगा। उसी समय अल्फ़ी तेजी से अनामिका के पास आया और उसे खींचकर एडवर्ड से अलग किया। उसने अनामिका के हाथ से वो पत्थर भी छीन लिया, जिससे उसने एडवर्ड पर वार किया था। अनामिका एक बार फिर से अल्फ़ी की पकड़ से छूटने के लिए फड़फड़ा रही थी। आशुतोष, अंकित, मुकुल, सृष्टि और वरूण ये सब देखकर मदद के लिए आगे बढ़ने को हुए ही थे कि चैतन्य ने एक बार फिर से अपना हाथ अड़ाकर उन्हें रोका।

"चैतन्य! क्या कर रहे हो? अनामिका को जरूरत है हमारी!" इस बार आशुतोष बिफरते हुए बोले।

"फिलहाल अभी नहीं!" चैतन्य ने सामने की ओर देखते हुए कहा।

"तुम्हें क्या हो गया है चैतन्य? तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा है! अनामिका की जान खतरे में है। तुम किस बात का इंतजार कर रहे हो? पागल हो गए हो?" वरूण चैतन्य का गिरेबान पकड़ते हुए तड़पकर बोला।

"पागल नहीं... चैतन्य जिंदगी में पहली बार इतना गंभीर हुआ है और इतना यकीन करो... कि अनामिका को कुछ होने से पहले चैतन्य अपनी जान दे देगा। क्या भरोसा नहीं है मुझपे?" चैतन्य ने वरूण के हाथ को झटकते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर उन सभी के हवाईयाँ उड़ते चेहरे पर चुप्पी छा
गई। ये एक बात थी, जिस पर कोई भी संदेह नहीं कर सकता था। उन सभी के उलझे हुए चेहरों पर नज़र डालकर चैतन्य एक बार फिर से अल्फ़ी-अनामिका और एडवर्ड की ओर मुड़ गया। अपने आपको संभालते हुए एडवर्ड खड़ा हुआ, तो उसके हाथ खुद बा खुद अपने फटे हुए माथे की ओर चला गया। हालांकि अगले ही पल उसका घाव भरने लगा और अगले कुछ ही पलों में उसका माथा पहले की तरह हो गया। मगर एडवर्ड, अनामिका की इस हिमाकत से बुरी तरह से तिलमिला उठा था।

"अल्फ़ी! तुमने सोच लिया है ना! अब इस लड़की को मेरे हवाले करो। यही जड़ है सारी मुसीबतों की। आज इसके खात्मे के साथ ही हमारी समस्याएँ खत्म!" एडवर्ड पागलों की तरह चिल्लाते हुए बोला।

और एडवर्ड की ये बात सुनकर अनामिका पर अल्फ़ी की पकड़ ढीली पड़ी थी, जिससे अनामिका ने एक बार फिर से सिर उठाकर उसकी ओर देखा। उसका चेहरा बहुत ही सख़्त दिख रहा था।

"अल्फ़ी नहीं!" अनामिका ने उसे पुकारा।

उसकी आवाज सुनकर अल्फ़ी ने खोई हुई नज़रों से उसकी ओर देखा और उसके कंधे पर झुककर बोला, "शुरूआत तो तुम्हीं ने की। तुम्हें वो पिशाच का खंज़र उसकी जगह से नहीं हटाना चाहिए था। तुम्हें पता है! वही शुरुआत है और वही अंत। पर अब उस खंज़र को वापस रखने ना तो तुम जा सकती हो और ना ही तुम्हारा कोई हमदर्द। मैं वहाँ जाऊंगा, तो तुम्हें याद करूंगा। तुम हमेशा याद आओगी। पता है... तुम और हेममाया उस जगह के कितने करीब थी पिछली बार।"

और ये सुनते ही अनामिका ने जज़्बाती होते हुए अपनी ऑखें बंद कर लीं।
अल्फ़ी कुछ देर उसे पकड़े उसी तरह खड़ा रहा और फिर उसे छोड़ दिया। अनामिका ने मुड़कर उसकी ओर देखा। वो उसे देखते हुए कुछ कदम पीछे हुआ और फिर तेजी से पलटकर बाहर जाने वाले रास्ते की ओर बढ़ गया। चैतन्य ने तेजी से सभी को पीछे हटने का इशारा किया। अल्फ़ी तेज कदमों से उनके पास से निकल गया। चैतन्य की नज़रें उसी पर थीं।

"चलो!" वरूण ने चैतन्य का कंधा हिलाते हुए कहा।

"हाँ!" कहते हुए चैतन्य, उस ओर बढ़ा, जिस तरफ अल्फ़ी गया था।

आशुतोष ने आगे बढ़कर चैतन्य का हाथ पकड़ा और बोला, "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"इस समस्या का हल लेने।" चैतन्य ने कहा।

"चैतन्य! पहले अनामिका को बचा लें हम! फिर इस अल्फ़ी को भी देख लेंगे।" अंकित ने कहा।

"और मैं कह रहा हूँ कि इस समस्या का हल इस एडवर्ड के पास नहीं.... अल्फ़ी के पीछे जाने से मिलेगा।" चैतन्य भी उनकी ओर ऊंगली उठाकर बोला।

"अल्फ़ी के पास! पर क्यों?" सृष्टि ने आश्चर्य से पूछा।

"पता चल जाएगा। चलो!" चैतन्य ने एक होश उड़ाने वाली बात कही।

"चलें! कहाँ चलें?" मुकुल ने हैरानी के साथ उसे देखते हुए पूछा।

"जहाँ मैं ले चलूँ! तुरंत चलो!" चैतन्य ने भी सीमित शब्दों में जवाब दिया।
"चैतन्य! अनामिका मुसीबत में है और तुम उसे छोड़कर जाने की बात कर रहे हो!" सृष्टि ने भी चैतन्य की ओर बेयकीनी भरी नज़र से देखते हुए कहा।

"और अगर हम यहाँ से नहीं गए... तो वो कभी भी मुसीबत से बाहर नहीं निकल पाएगी। वो अपनी हिफाजत खुद कर सकती है। इसलिए चलो!" चैतन्य ने बहुत ही धीमी आवाज में उन सबसे कहा, जिससे वो सब और भी ज्यादा उलझन के शिकार हो गए।

"चैतन्य! तुम पागल हो गए हो। मैं अनामिका को छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा। आशुतोष जी! आप समझाइए इस पागल को!" वरूण बुरी तरह से भड़कते हुए बोला, जो सामने जमीन पर गिरी पड़ी अनामिका को देखकर और भी तड़प उठा था। वो तो शुक्र ये रही कि उसने आवाज धीमी ही रखी थी।

आशुतोष ने एक आह भरकर चैतन्य की ओर देखा। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो किसकी बात मानें। सामने जो दिखा रहा था... उस हिसाब से तो वरूण ही सही था। मगर वो ये भी नहीं मान सकता था कि चैतन्य, अनामिका को मुसीबत में छोड़कर जा सकता था। उसकी जान को खतरे में डालने वाला कोई फैसला ले सकता है। बड़ी ही उलझन के साथ उन्होंने एक बार फिर से चैतन्य की ओर देखा।

"आशुतोष जी! आपको मुझ पर यकीन नहीं है! क्या आपको लगता है कि मैं अनामिका के साथ कुछ ग़लत होने दूंगा। प्लीज़! मेरा यकीन करें। चलें मेरे साथ। ये बहुत जरूरी है। मैं आप लोगों को सब समझा दूंगा।" चैतन्य लगभग याचना करते हुए बोला।

"लेकिन चैतन्य! वरूण सही कह रहा है। हम अनामिका को ऐसे अकेला
छोड़कर नहीं जा सकते।" आशुतोष ने उलझनों के भँवर में गोते खाते हुए कहा।

"तो ठीक है। वरूण और अंकित को यहाँ छोड़ देते हैं। ठीक है!" चैतन्य ने वरूण और अंकित की ओर देखते हुए कहा, जिस पर वरूण ने तुरंत ही हुंकारी भरी।

"ठीक है! चलो! कहाँ चलना है?" आशुतोष ने हथियार डालते हुए कहा। चैतन्य ने उनका हाथ पकड़कर आभार व्यक्त किया और मुकुल-सृष्टि को भी साथ चलने को कहा। वो जाने के लिए आगे बढ़े ही थे कि तभी चैतन्य रूका और लौटकर वरूण के पास आया। वरूण बेचैनी से अनामिका की ओर देख रहा था।

"वो ठीक है। याद रखना कि उसे कैप्टन चुना गया... क्योंकि वो हम सबमें बेस्ट है और उतनी ही बहादुर भी। इसलिए जब तक वो मदद के लिए ना पुकारे या फिर उसे जरूरत ना पड़े... बीच में मत जाना।" चैतन्य ने वरूण के कंधे पर हाथ रखते हुए बहुत ही संजीदगी से कहा।

वरूण ने पहले तो एक नासमझी भरी नज़र उस पर डाली और फिर कुछ सोचकर हाँ में सिर हिला दिया। चैतन्य ने इशारे से अंकित को वरूण का ध्यान रखने के लिए कहा, जिस पर उसने भी सहमति जताई।

उनकी ओर से आश्वस्त होते ही चैतन्य बाकियों के साथ तेजी से बाहर जाने वाले रास्ते पर बढ़ गया। एक बार फिर से उसने अपनी टॉर्च जला ली थी। एक अंदाजे के साथ वो एक जगह रूका और अपनी चाबी निकालकर उसे दीवार के एक हिस्से में रगड़ने लगा। जल्दी ही उसकी चाबी एक अदृश्य छेद में जाकर घुस गई और फिर वहाँ एक दरवाजा दिखाई देने लगा। चैतन्य तेजी से उसके अंदर गया। बाकी के लोग भी तेजी से उसके पीछे-पीछे गए। अंदर भी बाहर के जैसा ही अंधकार छाया हुआ
था। मगर टॉर्च की वजह से उन्हें ज्यादा परेशानी नहीं हो रही थी।

"चैतन्य! ये कौन सी जगह है?" आशुतोष ने चारों ओर देखते हुए पूछा।

"ये वही जगह है, जहाँ आखिरी दिन मैंने और अल्फ़ी ने अनामिका और हेममाया के मृत शरीर को

एडवर्ड की कैद से आजाद करवाया था।" चैतन्य ने पुरानी घटना याद करते हुए कहा। (भाग 136 - नियति की करवट)

"हम तो अल्फ़ी का पीछा कर रहे थे ना! यहाँ क्यों आए हैं?" मुकुल ने सवाल किया।

"आगे सारे सवालों का जवाब मिलेगा। बस चलो!" चैतन्य ने सवाल टालते हुए कहा।

चैतन्य के इस तरह बात काटने से वो सभी अब उकताने लगे थे क्योंकि किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर चैतन्य कर क्या रहा था? क्यों कर रहा था? पर ना जाने क्यों... वो उसकी बात टाल भी नहीं पा रहे थे। इसलिए अपना मुँह बंद कर वो सभी चैतन्य के पीछे-पीछे चल दिए। कुछ दूर चलने के बाद एक बार फिर से उनके सामने एक दीवार थी, जहाँ आगे बढ़ने का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था।

"आगे तो कुछ भी नहीं है। हम फँस गए हैं।" मुकुल ने झल्लाते हुए कहा।

"अभी नहीं!" सामने दीवार पर सावधानी से रोशनी मारते हुए चैतन्य ने कहा और फिर सामने ही दीवार की ओर बढ़ गया। दीवार के पास पहुँचकर उसने झुककर कुछ उठाया। बाकी तीनों भी तेजी से उसके पास पहुँचे और देखा कि चैतन्य एक पत्थर पकड़े हुए था।
"ये कैसा पत्थर है?" सृष्टि ने पूछा।

"हे भगवान! इसमें खून लगा है क्या?" मुकुल की आवाज आई।

"हाँ!" चैतन्य ने कहा।

"एक मिनट चैतन्य! क्या ये वही पत्थर है, जिससे अनामिका ने उस एडवर्ड पर हमला किया था?" आशुतोष ने उस पत्थर को घूरकर देखते हुए पूछा।

"जी हाँ!" चैतन्य बोला।

"पर ये तो अल्फ़ी के पास था। यहाँ क्या कर रहा है?" सृष्टि ने एक और सवाल किया।

चैतन्य ने देखा कि मुकुल और सृष्टि अभी भी बहुत सी उलझनों में थे, मगर आशुतोष का चेहरा अब शांत दिखाई दे रहा था।

"ये उसी ने यहाँ छोड़ा है ना!" आशुतोष ने चैतन्य से कहा।

चैतन्य ने सिर हिलाया और फिर अपनी चाबी दीवार के उस हिस्से में लगाई, जहाँ वो पत्थर पड़ा हुआ था। वहाँ से दीवार में रगड़ते हुए वो उस चाबी को ऊपर की ओर लाने लगा और फिर एक जगह वो चाबी फँस गई। चैतन्य ने चाबी घुमाई और एक बार फिर से सामने एक दरवाजा खुल चुका था। चैतन्य बिना देर किए एक बार फिर से अंदर चला गया। बाकी के सब भी उसके साथ आगे बढ़े। कुछ देर तक चलने के बाद एक मोड़ पर उन्होंने लाल रंग की रोशनी देखी। उस रोशनी को देखते ही चैतन्य की चाल और भी तेज हो गई। जल्द ही वो सब उस अंधेरे गलियारे से बाहर निकले। वहाँ से बाहर निकलते ही चैतन्य दाहिनी ओर मुड़ा और अब लगभग दौड़ने

लगा था। बाकियों ने भी उसी रफ्तार के साथ उसे पकड़ा। जल्द ही वो सभी उस ज्वालामुखी की तरह दहकते कमरे के सामने खड़े थे। चैतन्य ने सामने उस पात्र की ओर देखा, जिससे लावा बह रहा था। उसी पात्र के ऊपर ही तो उसने उस खंज़र को पहली बार देखा था।(भाग 75 - रहस्यमई खंज़र)

मगर इस बार वो खंज़र अपनी जगह पर नहीं था। अनामिका ने ही तो उसे वहँ से हटाया था (भाग 108 - जीत) और शायद अब उस खंज़र की घर वापसी का समय आ चुका था। फिलहाल वहॉ खंज़र तो नहीं था, पर वहॉ किसी और की मौजूदगी उन्हें दिख गई थी। उन सबसे थोड़ा आगे ही वो लावे की नदी में खड़ा हुआ था। आहट सुनकर वो पीछे पलटा। चैतन्य साथियों के साथ सामने खड़ा था। एक-दूसरे पर नज़र पड़ते ही उन दोनों के चेहरे की संजीदगी और भी बढ़ गई। वो पलटकर तेजी से उनकी ओर आया और उस जानलेवा गर्मी से बाहर निकला।

"तो तुम आ ही गए!" अल्फ़ी ने चैतन्य से कहा।

"यही तो तुम चाहते थे ना!" चैतन्य ने भी जवाब दिया।

अल्फ़ी ने हॉ में अपना सिर हिलाया और फिर तेजी से आगे बढ़कर चैतन्य के गले लग गया। उन दोनों की ये हरकत जहॉ सृष्टि और मुकुल को हैरान कर गई.. वहीं आशुतोष के चेहरे पर एक राहत भरी मुस्कान आई थी।

"मदद के लिए शुक्रिया अल्फ़ी!"
�अभिशप्त: भाग 160 - नफ़रत की आग

"तो तुम आ ही गए!" अल्फ़ी ने चैतन्य से कहा।

"यही तो तुम चाहते थे ना!" चैतन्य ने भी जवाब दिया।

अल्फ़ी ने हॉ में अपना सिर हिलाया और फिर तेजी से आगे बढ़कर चैतन्य के गले लग गया। उन दोनों की ये हरकत जहॉ सृष्टि और मुकुल को हैरान कर गई.. वहीं आशुतोष के चेहरे पर एक राहत भरी मुस्कान आई थी।

"मदद के लिए शुक्रिया अल्फ़ी!"

"मेरा नहीं! मुझ पर यकीन रखने के लिए तुम्हारा शुक्रिया!" अल्फ़ी ने भी चैतन्य से अलग होकर उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।
"एक मिनट! क्या कोई समझाएगा... कि आखिर हो क्या रहा है?" मुकुल ने झुंझलाते हुए कहा, जिसकी समझ में अभी भी कुछ नहीं आ रहा था। साहनी की क़ैद से निकलने के बाद जब सृष्टि और मुकुल सबसे मिले... तब वरूण और अंकित ने उन दोनों को अल्फ़ी द्वारा अनामिका के अपहरण की जानकारी दी थी। उन्होंने बताया था कि किस तरह अल्फ़ी की धोखेबाजी ने पलक झपकते ही सब कुछ उल्टा-पुल्टा करके रख दिया था और अब चैतन्य और अल्फ़ी को इस तरह गले मिलते देख उन दोनों का दिमाग हिलना लाजिमी था।

"हॉ भई! इस सवाल का जवाब तो हमें भी चाहिए। हम सब तो हमेशा ही साथ थे, फिर ये खिचड़ी पकी कब और कैसे?" इस बार आशुतोष ने अपनी जिज्ञासा जाहिर की, जिसे सुनकर अल्फ़ी और चैतन्य दोनों के ही लब मुस्कुराए थे।

कुछ घंटे पहले -

(भाग 153 - समझौता)
(ये चैतन्य की पुरानी याद का हिस्सा है, जो कहानी के किरदारों के लिए नहीं... पाठकों की जिज्ञासा शांत करने के लिए है।)

मेंशन से खाली हाथ वापस लौटने के बाद चैतन्य, अनामिका और बाकी सभी बहुत ही ज्यादा गुस्से में थे। झुंझलाहट हर पल और भी बढ़ती जा रही थी। हमेशा की तरह उनकी योजना बुरी तरह से फ्लॉप हो चुकी थी और नाकामी का ये जहर हर बढ़ते समय के साथ उनके अंदर कड़वाहट
बढ़ा रहा था। ऐसे समय में इत्मीनान से बैठा हुआ अल्फ़ी उन्हें अपने ज़ख्मों पर मिर्च की तरह लगा। सबके तानों को अपने सिर के ऊपर से गुजार देने वाला अल्फ़ी का दिल अनामिका की तीखी बातों से आहत हो गया और फिर अगले ही पल अल्फ़ी ने अनामिका को दबोच लिया।

"क्योंकि मैंने ठेका नहीं ले रखा है सबका!"

फिर अनामिका को पकड़कर उसे अपने नजदीक करते हुए अल्फ़ी ने उसकी ऑखों में झांका... और बस यही वो पल था... जब अनामिका ने उसकी गहरी ऑखों की नमी को पढ़ लिया। आखिर जल रक्षक थी वो। पानी की हर हलचल को महसूस कर सकती थी... उसे पढ़ सकती थी और बिना किसी शक... अल्फ़ी की ऑखें पूरी तरह से निर्दोष और मासूम नज़र आ रही थीं। मगर उन ऑखों में कुछ और भी था, जो ज्यादा साफ नहीं था... मगर अनामिका ने उसमें छिपी संजीदगी को पहचान लिया था और फिर उसके चेहरे की कसावट ढीली पड़ने लगी। कुछ ही पल में उन दोनों के बीच का मौसम बदलने लगा और ये बदलाव अल्फ़ी को खटक गया। उसने अपनी ऑखों से एक और इशारा कर अनामिका को

सावधान किया और फिर उसकी बांह ना चाहकर भी कसकर पकड़ ली, जिससे अनामिका के चेहरे पर दर्द उभर आया। उसी समय उनके बीच के राब्ते से बेखबर गुस्से में तमतमाया हुआ चैतन्य उनके पास आया और अनामिका को अल्फ़ी की पकड़ से आजाद करते हुए अल्फ़ी को चेतावनी देते हुए बोला,

"आइंदा... ऐसा मत करना! वरना..."

और इसके बाद अपनी योजना के अनुसार अल्फ़ी ने सब पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए वो चाबी मेज पर रख दी।
"तो ठीक है! लो! हिम्मत है तो ले लो!" एक चुनौती के साथ अल्फ़ी ने उनकी ओर देखा और उसी बीच अनामिका को आगे आने का इशारा किया, जिसे अनामिका के अलावा और कोई नहीं समझ सका.... क्योंकि बाकी सभी अल्फ़ी को किसी और नज़रिए से देख रहे थे और अक्सर हमारे देखने का नज़रिया चीजों के मायने बदल देता है। फिलहाल अनामिका तक उसका संदेश पहुँच चुका था... इसलिए उसने चैतन्य को आगे बढ़ने से रोक दिया। उसी समय वरूण और अंकित के कमरे में अंदर आने से सभी का ध्यान उनकी ओर चला गया और इन्हीं कुछ लम्हों का फायदा उठाते हुए अनामिका ने चैतन्य से मानसिक संपर्क स्थापित कर लिया। मस्तिष्क में दस्तक होते ही चैतन्य भी सतर्क हुआ।

"चैतन्य! अल्फ़ी हमारे साथ ही है। वो जो कर रहा है... करने दो। अभी मैं अल्फ़ी के साथ जा रही हूँ। अल्फ़ी का हिंट मिलते ही तुम भी सबको साथ लेकर आओ।"

अनामिका का ये मैसेज मिलते ही चैतन्य सुन्न पड़ गया था। दरअसल उसे अल्फ़ी के ऊपर अनामिका का यकीन समझ में नहीं आ रहा था। कम से कम इस समय तो बिल्कुल भी नहीं। उसने अनामिका को टोकना चाहा... तो अनामिका ने उसे शांत रहने के लिए कहा।

"क्या हुआ? इतनी भी हिम्मत नहीं है क्या?" अल्फ़ी की आवाज आई। शायद इस बार उसका इशारा जल्दी करने की ओर था।

और उसका इशारा समझते ही चैतन्य को पीछे धकेलते हुए अनामिका ने आगे आकर उस चाबी को उठा लिया और अगले ही पल अल्फ़ी ने झपट्टा मारकर उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया।

"ये गलती नहीं करनी थी।" अल्फ़ी ने मुस्कुराते हुए कहा।
अल्फ़ी की इस हरकत से सबके साथ-साथ चैतन्य का दिल भी जोरों से धड़का। उसे अभी भी अल्फ़ी पर बिल्कुल यकीन नहीं था। उसे अल्फ़ी से कोई परेशानी नहीं थी.. पर अल्फ़ी के अंदर का जिद्दी प्रेमी उसे हमेशा ही डराता था। उस पर जब अल्फ़ी के करीब अनामिका के अंदर की हेममाया साँसें लेने लगती तो चैतन्य को अपनी दुनिया उजड़ती हुई महसूस होती। उसका दिल ढेरों बुरे ख्यालों से भर जाता। अभी भी वो उनमें से एक का शिकार हो आगे बढ़ने को हुआ ही था कि अल्फ़ी की चेतावनी ने उसे टोक दिया।

"ना! ना! कोई आगे नहीं आएगा। चैतन्य! अनामिका को वहीं ले जा रहा हूं, जहाँ तुम्हें अपना प्यार सौंपा था। खोज सकते हो तो खोज लेना। चलो! अलविदा कहो अनामिका! आज आखिरी बार देख रही हो तुम इन्हें।"

और फिर सबको हैरान-परेशान करते हुए अल्फ़ी उसे ले उड़ा। कुछ पलों तक तो चैतन्य की समझ में कुछ भी नहीं आया और फिर उसने जमीन पर गिरी पड़ी उस चाबी की ओर देखा, जो यकीनन इस

समय बहुत ही महत्वपूर्ण चीज थी। वो उसे यहीं छोड़ गया था। क्यों? और इस सवाल के जवाब में चैतन्य एक बार फिर से उसके आखिरी संदेश की ओर गया।

"कहॉ ले जा सकता है और उसने ये चाबी यहॉ क्यों छोड़ी? क्या कहा उसने? जहॉ उसने मुझे अपना प्यार सौंपा था। समयद्वार! पर वो अनामिका को वहॉ क्यों ले जाएगा? नहीं! नहीं! वहॉ नहीं.... तो फिर कहॉ?" ढेर सारे सवालों के साथ वो सही जगह की उलझन में ही था कि उसे कुछ याद आया। अगर एडवर्ड कुछ ग़लत करने का सोच रहा था, इसका मतलब है कि वो वहीं होगा, जहॉ वो अपनी साधना किया करता था। मगर बदलते समय के साथ इस जगह की सूरत भी बदल गई थी, इसलिए उस जगह को ढूंढना बिल्कुल भी आसान नहीं होने वाला था। वो इन सभी सवालों में उलझा हुआ ही था कि तभी उसने अपने मस्तिष्क में
अनामिका की आहट सुनी। अनामिका से संपर्क जोड़ने पर उसने अल्फ़ी पर पूरी तरह से यकीन करने की बात कही और साथ ही साथ विक्टर और गीता की तरफ से सतर्क रहने के लिए भी कहा। उसने ये भी कहा कि आगे की योजना हमें इसी तरह बनानी पड़ेगी, ताकि किसी और को पता ना चल सके और जो भी सामने दिखाई दे उस पर तुरंत ही यकीन भी नहीं करना है। इतनी बातों के बाद उनका संपर्क टूट गया। वो अल्फ़ी के हिंट, अपने अनुमान और अनामिका की बातों की ओर ध्यान लगाकर ही बैठा था कि तभी बौखलाए हुए वरूण ने उसे टोक दिया। सोच में खलल पड़ने से वो बुरी तरह से चिढ़ा था, मगर आशुतोष के सवाल करने पर उसका ध्यान उनकी ओर गया और फिर कुछ ही देर में आशुतोष की मदद से एक तस्वीर के सहारे उसने वो जगह ढूंढ निकाली। इसके बाद बेहोश विक्टर को परिधि की नज़रों में रखकर वो अनामिका की ओर निकल गए और रास्ते की सारी बाधाओं को पार करने के बाद यहॉ तक आ पहुँचे, जिसमें अल्फ़ी की छोड़ी हुई चाबी की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। थोड़ी देर पहले भी अनामिका के कहने पर ही चैतन्य, सभी रक्षकों के साथ अल्फ़ी के पीछे आया था।

पुरानी घटनाओं पर एक सरसरी निगाह डालते हुए चैतन्य खुद में ही मुस्कुयाया और बोला, "बस बन गई योजना! अभी इतना समय नहीं है कि ये सब डिटेल में डिस्कस किया जाए। बाद में आराम से बताऍंगे।"

"फिर भी! कुछ तो....।" सृष्टि में ऐतराज के साथ कहा।

"नहीं! हमारे मुँह से निकली बातें हमसे पहले उस एडवर्ड तक पहुँच जाती हैं, इसलिए इस बार हमने चुपचाप उन्हीं हालातों में काम करना सही समझा, जैसे हालात बनाने की कोशिश उस एडवर्ड ने की थी। हम ये चाहते थे कि उसे ऐसा लगे कि वो जैसा चाहता है... सब वैसा ही हो रहा है।" अल्फ़ी ने सृष्टि को जवाब देते हुए कहा।

"पर... मैंने कुछ नोट किया है। वो उतना भी ताकतवर नहीं है, जितना हम उसे समझते थे। उसने बस एक माहौल बनाया हुआ है कि वो सबसे ताकतवर है। पर ऐसा है नहीं।" चैतन्य ने अपना नज़रिया रखते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी मुस्कुराया। उसने एक-एक करके सबकी ओर देखते हुए कहा, "जीत हासिल करने के लिए ताकतवर नहीं.... बल्कि चालाक होना जरूरी है और वो चलाकी एडवर्ड में कूट-कूट कर भरी है। उसने हमेशा ही हम सबकी भावनाओं को अपनी चालबाजी का मोहरा बनाया और आज भी वो वही कर रहा है। आज जब उस साहनी ने फिर माया से जुड़े मेरे अहसासों को कुरेदा, मैंने

तभी सोच लिया था कि इस बार उसी की भाषा में जवाब देना है। इसलिए मैंने हमेशा की तरह बहकने का नाटक किया और आगे तुम सब जानते हो।"

"वैसे! योजना क्या है?" आशुतोष ने अल्फ़ी से पूछा।

"पिशाच का खंज़र! वो वापस लौटाना है।" अल्फ़ी ने कहा।

"वापस लौटाना है मतलब!" मुकुल ने पूछा।

"मतलब ये कि 200 साल पहले एक काम अधूरा रह गया था, उसे पूरा करना है।" अल्फ़ी ने कहा।

"कौन सा अधूरा काम?" सवाल सृष्टि ने किया।

"200 साल पहले हमें एडवर्ड की छद्म पिशाच साधना को ही बस नहीं रोकना था, बल्कि उसने जो भी शक्तियॉं उस साधना को करते हुए किस्तों में हासिल की थी, वो सब उससे वापस लेकर.... फिर उस खंज़र को वापस
उसकी जगह में रखना था। मगर उस समय उस एडवर्ड ने हर चीज इस क़दर उलझा दी कि हम बस उसमें उलझकर रह गए। उस समय चैतन्य... अनामिका... और मैं हम तीनों ही अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करने में उस एडवर्ड की तरह कुशल नहीं थे, इसलिए शक्ति हाथ में होकर भी हम असहाय ही रह गए। मगर उस समय के हालातों और बाद में गुजारे 200 सालों में मैंने ये अच्छी तरह से जान लिया कि जब तक हम मानसिक रूप से मजबूत नहीं हैं... हमारी ताकत हमारे किसी काम की नहीं है क्योंकि मन से ज्यादा ताकतवर और कुछ नहीं होता। इसलिए अगर उससे जीतना है तो ये मन में सोचकर रखो.. कि तुम उससे जीत सकते हो।" अल्फ़ी ने सबमें जोश भरते हुए कहा।

"वो तो समझ में आ गया... पर उसकी ताकतें वापस कैसे लेनी है?" मुकुल ने फिर से सवाल किया।

"वो अनामिका का काम है। वो कर लेगी। हमें कुछ और करना है। वास्तव में तुम सब रक्षकों को। इसीलिए अनामिका के कहने पर चैतन्य तुम सबको साथ लेकर आया है।" अल्फ़ी ने जवाब देते हुए कहा।

"अनामिका ने कहा! कब कहा?" सृष्टि ने पूछा।

"हॉं! तो तुम्हें क्या लगा? डॉ. अनंत ने उसे कैप्टन चुना... तो वो अपना काम कर रही है। ये जान लो कि अभी तक मैंने जो भी किया... उसी के कहने पर किया। मैंने तो बस उसके इंस्ट्रक्शन्स फॉलो किए।" चैतन्य ने जानकारी देते हुए कहा।

"वो कैसे?" मुकुल ने पूछा।

"वो बाद में आराम से। ठीक है! अभी कुछ और करना है।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से उन्हें टोका।
"और वो क्या?" सबने एक साथ पूछा।

अल्फ़ी ने उन सबकी ओर देखा और उन्हें योजना समझाने लगा.. जिसे जल्द ही वो सभी क्रियान्वित करने में जुट गए।

****

अल्फ़ी के जाने के बाद अनामिका जमीन पर ढह गई। वो हर हाल में खुद को कमजोर दिखाना चाहती थी। उसने अपनी रक्षक-अंगूठी भी निकाल रखी थी, जो एडवर्ड के अनुमान से अब अल्फ़ी के पास थी और अब अल्फ़ी के जाने के बाद उसने अपने पत्ते खोलने का फैसला कर ही लिया। वो एक बार फिर से अनामिका के दिल और दिमाग पर हमला करने को तैयार था, ताकि उसे कमजोर करके वो हासिल कर लें, जो वो हमेशा से चाहता था। उसने विक्टर के सहारे चैतन्य और उसके साथियों के बारे में जानना चाहा, तो परिधि के भ्रम पैदा करने वाली दवा के असर से उसे वो सब वहीं परेशान हालत में दिखाई दिए। डॉ. अनंत भी गीता के साथ कमरे में बेचैन से दिखाई दे रहे थे। चैतन्य का बिछाया जाल उनके काम आने वाला था।

"उफ्फ! तुम तो फँस गई! अनामिका उर्फ... हेममाया!" एडवर्ड ने मजाक उड़ाने वाले लहज़े में अनामिका से कहा, जिस पर अनामिका ने सिर
उठाकर उसकी ओर देखा। उसकी ऑखें गुलाबी हो चुकी थीं, जिसकी वजह तो कुछ और थी... मगर एडवर्ड कुछ और समझ रहा था... और यही तो वो चाहते थे। फिलहाल अनामिका कुछ बोलने की बजाय उसे एकटक देख रही थी।

"क्या हुआ? डर लग रहा है! तो फिर... डरो! डरना ही चाहिए।" एक बार फिर से एडवर्ड ने माख़ौल उड़ाती आवाज में कहा।

"तुम्हें क्या लगता है? मैं तुमसे डरती हूँ! बिल्कुल भी नहीं। तुम मुझे मजबूर कर सकते हो.. मगर मेरे साथियों को नहीं। वो मुझे ढूंढ निकालेंगे और फिर तेरा अंत होगा।" अनामिका बनावटी घबराहट के साथ कहा।

"बेवकूफ लड़की! तुम्हारे सभी साथी तो अपनी ही परेशानियों में फँसे हुए हैं, जिससे उनका बाहर निकलना तो फिलहाल मुश्किल ही लग रहा है और रहा अल्फ़ी... वो बेचारा! दुखियारा! एक बार फिर से मेरे जाल में फँसकर खुद ही तुम्हें मेरे पास छोड़ गया है और तो और... अब उसे तुम्हारे मरने से भी कोई तकलीफ़ नहीं है। अफसोस!" एडवर्ड के हमले लगातार जारी थे।

"तुमने फिर उसे धोखा दिया है ना! तुम हेममाया को वापस नहीं लाने वाले हो।" अनामिका ने बहुत ही धीमी आवाज में कहा।

"नो! नॉट एट ऑल! मैं उसे क्यों वापस लाऊंगा... जो अपने साथ उस अल्फ़ी की खुशियॉ लेकर आएगी। हालांकि हो सकता है ऐसा। पर मुझे नफ़रत है उसकी खुशियों से। मेरा रोम-रोम सुलगने लगता है.. जब भी मैं उस अल्फ़ी को मुस्कुराते हुए देखता हूँ। मैं उसे कभी भी खुश रहने नहीं दूंगा। मेरी

जिंदगी का मकसद ही उससे नफ़रत करना और उसकी हर खुशी को निगल जाना है। बहुत सूकून मिलता है मुझे... जब वो तड़पता है।" एडवर्ड ने अपने अंदर का जहर उगलते हुए कहा।
"उसने आखिर क्या बिगाड़ा तुम्हारा? कि तुम उसकी हर खुशी को खा गए। वो तो तुम सबसे दूर एक आम जिंदगी जी रहा था और... कभी भी तुम्हारी दुनिया में नहीं आना चाहता था। फिर क्यों किया उसके साथ ऐसा? क्यों इतनी नफ़रत करते हो तुम उससे?" अनामिका ने अपने दिल में दबे सवालों को आजाद करते हुए ग़मज़दा आवाज में पूछा।

"क्योंकि वो मेरा हक़ खा गया... इसलिए मैं उसकी सारी खुशियाँ खा गया।" एडवर्ड पूरी ताकत से चीखते हुए बोला।

"तुम्हारा हक़! कैसा हक़? अगर तुम बड़े बेटे होने के हक़ की बात कर रहे हो... तो वो उसने तुमसे कभी नहीं छीना। आखिर सोसायटी तो तुम्हें सर विलियम की इकलौती संतान मानती थी! तो फिर कौन सा हक़ छीन लिया उसने तुम्हारा?" अनामिका ने एक बार फिर अल्फ़ी की ओर से दलील रखते हुए कहा।

"मानने और होने में फर्क होता है। था तो वही बड़ा बेटा ना! और हमारी दुनिया में बड़े या इकलौता बेटा होने के फायदों से तुम अभी भी वाकिफ नहीं। ऊपर से वो मेरे हक़ की ख़ास ताकतें भी छीनकर ले गया।" एडवर्ड अपने दाँत पीसते हुए बोला।

"ख़ास ताकत!" अनामिका चौंकी।

"हाँ! वो बहुत ही ख़ास दिन था, जब करीब दस हजार साल के बाद आसमान में सितारे एक खास स्थिति में आने वाले थे। ऐसे समय में किसी पिशाच का बीज जिस भी गर्भ में पड़ता... वो अतुलनीय ताकतें लेकर जन्म लेता। मेरी माँ ने उस दिन मेरे पिता को दवा दी, क्योंकि वो मुझे उन शक्तियों के साथ पैदा होते देखना चाहती थी, मगर उस मीना ने सब खराब कर दिया और वो अल्फ़ी पैदा हो गया। हालांकि मेरी माँ ने एक और कोशिश की, जिससे मैं पैदा हुआ, मगर तब तक सितारे अपनी जगह बदल चुके थे। तुम समझ सकती हो क्या... कि उन दोनों माँ-बेटे ने क्या किया था? उस अल्फ़ी के होने के कारण मुझे शक्तियाँ एकत्र करने में कितनी परेशानियाँ उठानी पड़ी और अपनी हर तकलीफ़ के साथ मेरी नफ़रत उससे बढ़ती गई। मैं हमारे समाज में अपनी जगह बनाने और तलाशने की कोशिशें कर रहा था और वो आराम से अपनी ज़िंदगी बसर कर रहा था। मुझसे ये कभी बर्दाश्त नहीं हुआ।" एडवर्ड पुरानी कड़वाहटें बाहर निकालते हुए बोला।

"पर... अल्फ़ी तो बिल्कुल नॉर्मल इंसानों की तरह रहता था। मतलब कि तुमसे मिलने से पहले तो उसके अंदर ऐसी कोई ताकत नहीं दिखी थी।" अनामिका ने अल्फ़ी की कहानी याद करते हुए कहा।

"क्योंकि जब उसकी माँ गर्भ से थी, तब मेरे अंकल पीटर ने बड़ी ही चालाकी से.... उसकी गर्भावस्था की दवाओं में एक ख़ास दवा मिला दी थी, जिसकी वजह से उसकी शक्तियाँ हमेशा दबी रहीं। हम चाहते थे कि जब अल्फ़ी की औलाद की बलि चढ़ाकर मैं अपनी साधना पूरी कर लूँ, तब मेरी शक्तियों के सामने वो बेबस रहे और फिर उसे मारकर मैं सूकून हासिल कर लेता। मगर तुम दोनों की वजह से सब गड़बड़ हो गई। उस अल्फ़ी की शक्तियाँ जागृत हो गईं और तुम्हारी वजह से वो परिधि... उसकी बेटी को मुझसे दूर ले गई। मेरी साधना भंग हो गई और मैं शापित हो गया। क्या कुछ और भी जानने की इच्छा है?" एडवर्ड ने अपनी अधूरे रह गए हर कार्यों का जिक्र करते हुए कहा।

"एक मिनट! मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि... हेममाया के गर्भवती होने की बात तुम्हें पहले से ही पता

थी। मगर कैसे? ये बात तो हेममाया भी नहीं जानती थी। फिर तुम्हें! एक मिनट ! कहीं..." अनामिका ने हैरानी जताते हुए अपनी बात अधूरी छोड़ी।

"बिल्कुल सही समझा तुमने! वो मैं ही था! बेचारी! मैंने ही वो रास्ते बनाए
थे, जिनपर चलकर परेशान मीना अपनी समस्याएँ लेकर मुझ तक पहुँची और उसका पीछा करते हुए हेममाया पहुँची और फिर मैंने मीना तक माया का जादुई काला धागा पहुँचाया, जिसकी वजह से वो मरते दम तक डरती रही और हेममाया को वो दवा दी। मैं जानता था कि हेममाया मॉ बनना चाहती थी और ये भी जानता था कि दवा मिलते ही वो उसका इस्तेमाल करेगी, इसलिए मैंने बहुत सोच समझकर उसे दवा देने के लिए वो समय चुना, जिससे वो उस समय बच्चे को जन्म दे, जब मुझे उसकी जरूरत थी। इसीलिए तो हेममाया ने उस समय उस बच्ची को जन्म दिया था। और तुम्हें एक राज की बताऊं! उसकी बेटी की मौत की वजह भी मैं ही हूँ।" अपनी बात खत्म कर एडवर्ड, अनामिका की प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगा, जो ये सब सुनकर सुन्न सी पड़ चुकी थी।

अनामिका को यकीन ही नहीं हो रहा था कि कोई ताकत की लालच और नफरत में इतना अंधा हो सकता है कि उसकी समझ सही और ग़लत में फर्क करना पूरी तरह से भूल जाए। बड़ी मुश्किल से उसने अपने उड़ते हुए होश को पकड़ा और फिर इस बात पर यकीन किया कि उसके सामने मौजूद उस शख़्स से ज्यादा नीच और गिरा हुआ और कोई दूसरा नहीं हो सकता था।

"इतनी नफ़रत! आखिर जी कैसे लेते हो तुम इतना जहर अपने अंदर रखकर? क्या तुम्हारे अंदर प्यार की एक बूंद भी नहीं है?" अनामिका अपने सामने मौजूद उस शख़्स को कुलजहान की सारी कड़वाहट के साथ देखते हुए बोली।

"हुंह! प्यार! मैं हमेशा से जानता था कि... प्यार जैसी कोई चीज नहीं होती, जो किसी की ताकत बन सके। प्यार बस कमजोर बनाता है, जैसे उस अल्फ़ी को बनाया। हेममाया को बनाया, मेरे पिता को बनाया और तुम... तुम सब भी तो उसी के शिकार निकले। तभी तो आज इस हालत में हो। और मुझे देखो! मेरी नफ़रत ने ही मुझे आज यहॉ तक पहुँचाया है।
नफरत से ज्यादा कठोर और मजबूत और कुछ भी नहीं हो सकता और मैं आज भी उस अल्फ़ी से आखिरी हद तक नफ़रत करता हूँ।" एडवर्ड उलाहना भरी आवाज में बोला।

"और तुम्हें लगता है कि तुम अपनी उस नफ़रत के सहारे जीत जाओगे! पर तुम धोखे में ही जी रहे हो। तुम्हें लगता है कि तुमने अल्फ़ी की सारी खुशियों को आग लगा दी, मगर तुम खुद भी उस आग में आज तक झुलस रहे हो। नफ़रत की आग किसी को नहीं बख्शती। वो सामने वाले को ही नहीं... नफ़रत को अपने अंदर पालने वाले को भी फूंक देती है और इस बात का पता तुम्हें जल्द ही चल जाएगा... जब तुम खुद भुगतोगे।" अनामिका पूरे तैश में चिल्लाते हुए बोली।

"अच्छा! और कौन समझाएगा मुझे ये? तुम! जो खुद थोड़ी देर में हेममाया की तरह मेरी नफ़रत की वेदीपर बलि चढ़ने वाली है। तुझे पता है! कितना तड़प-तड़पकर मरी थी वो हेममाया और अब... तू भी वैसे ही मरेगी।" एडवर्ड अपना खंज़र अनामिका की ओर उठाते हुए बोला।

एडवर्ड के काले कारनामे सुनने के बाद अनामिका गुस्से में उबलने लगी थी। वो जानती थी कि वो कमीना था... पर इतना कमीना था... वो नहीं जानती थी।

"काश तुम ये पहले जान पाते.... कि किसी मासूम और सच्ची औरत के सब्र से खेलना नहीं चाहिए और

ना ही ऐसी औरत को कभी रूलाना चाहिए.... क्योंकि उसकी आह के साथ निकली आंसू की एक बूंद भी पूरी दुनिया को बर्बाद कर सकती है.. तो तेरी औकात ही क्या है?" अनामिका गुस्से में लाल होकर अपनी मुट्ठियॉं भींचते हुए बोली।

"औरत! औरत पैरों की धूल से ज्यादा और कुछ भी नहीं। मुझे नफ़रत है औरतों से। तुम जैसी औरतें जब अपनी औकात से बाहर आती हैं, तब
हम जैसे मर्दों का फर्ज होता है कि तुम्हें तुम्हारी औकात याद दिलाएँ। उस माया के साथ भी तो यही किया था मैंने। उससे अपने मतलब के लिए हाथ क्या मिलाया, खुद को मेरे बराबर समझने लगी थी। उसका तो वो हश्र हुआ कि अतीत के पन्नों में वो कहॉं जाकर खोई.. किसी को पता ही नहीं चला और अब तेरे साथ भी वही होगा।" एडवर्ड ने अपनी नफरत की आग से एक और धमाका करते हुए कहा।

"माया! माया मर चुकी है! ऐसा कैसे हो सकता है?" अनामिका की ऑंखें इस खुलासे से आखिरी हद तक फटी थीं।

�अभिशप्त: भाग 161- शैतानी इरादे

"माया! माया मर चुकी है! ऐसा कैसे हो सकता है?"

"क्यों नहीं हो सकता?" एडवर्ड ने एक काले धागे को लपेटते हुए कहा।

"अगर तुम ये सोच रहे हो कि... सुरमी कबीले के जलाने के बाद वो मर गई थी तो मैं बता दूँ कि वो जिंदा थी और वो तो कल ही हमारे पीछे भी आई थी... पर समयद्वार से बाहर निकल नहीं सकी।" अनामिका ने पिछले रात की उनकी वापसी को याद करते हुए कहा।

"तो तुम्हें क्या लगता है? वो हमेशा वहीं बैठी रहेगी। समयद्वार के उस पार। नहीं! वो वापस लौटी थी। पर 200 साल पहले नहीं... कहीं और। पर बेचारी मुझसे पीछा नहीं छुड़ा सकी। उसकी वजह से मेरा जो नुकसान हुआ था... आखिर उसकी भरपाई तो उसे करनी ही थी।" एडवर्ड ने अपने हाथों को बुरी तरह से मसलते हुए बहुत ही कड़वाहट के साथ कहा।

"नुकसान! उसने तुम्हारा क्या नुकसान कर दिया? उस बच्ची को तो परिधि कहीं छोड़ आई थी। फिर माया..." अनामिका ने एडवर्ड की बात
को समझने की कोशिश करते हुए कहा।

"मैं उस बच्ची की बात नहीं कर रहा हूँ।" एडवर्ड ने बहुत ही रूखे तरीके से कहा।

"तो फिर..!" अनामिका ने उसी नासमझी से पूछा।

अनामिका के सवाल पर कॉच के पात्र को साफ करते एडवर्ड के हाथ रूके और फिर उसकी यादें एक बार फिर से 200 साल पीछे चली गईं, जब उसने उसे पहली बार नजदीक से देखा था और फिर उसके होश उड़ गए थे।

200 साल पहले

अल्फ़ी और हेममाया की शादी के तीन महीने बाद -

"माफ कीजिएगा! क्या आपका नाम मीना हैं?"

बाजार में खरीदारी करती मीना अपना नाम सुनकर झटके से आवाज की दिशा में मुड़ी और पुकारने वाले को पहचानने की कोशिश करने लगी। वो एक आम सा दिखने वाला नौजवान था, जिसका रंग सांवला था। उसके बाल एक कपड़े से बंधे हुए थे और वो कुछ बंजारों की तरह कपड़े पहने हुए था। काफी कोशिश के बाद भी मीना उसे पहचान नहीं पाई।

"माफ करना बेटा! मैंने पहचाना नहीं तुम्हें!" मीना शर्मिंदगी के साथ बोली।

"अरे! आपको माफी मॉगने की जरूरत नहीं है। आपने मुझे बहुत ही छोटी उम्र में देखा था। दरअसल मेरी मॉ कल्परूप के वॉकर मेंशन में काम करती थीं।" वो युवक बेहिचक बोलता गया।

वहीं कल्परूप का नाम सुनते ही मीना के चेहरे का रंग उड़ गया। उसने बड़ी ही मुश्किल से अपने चेहरे पर उभरते हुए भावों को रोका और नज़रें चुराते हुए बोली, "कल्परूप! माफ करना! मैं... ऐसी किसी जगह के बारे में नहीं जानती। तुमसे कोई गलती हो गई है। मैं तो हमेशा से ही यहीं रहती हूँ। वैसे... मुझे देर हो रही है! मैं चलती हूँ।"

किसी तरह उस नौजवान को टरकाते हुए वो वहॉ से बच निकलने की कोशिश में ही थी... कि तभी एक बार फिर से उस युवक की आवाज आई, "मुझसे कोई गलती नहीं हुई है। मैंने हमेशा मेंशन में आपको एक तस्वीर में देखा है और आपकी कहानी भी मैं जानता हूँ। आपको मालती याद होगी। मैं.. उन्हीं का बेटा हूँ।"

और ये सुनते ही मीना के आगे बढ़ते कदम रूक गए। अपने अतीत से मुलाकात उसे रास तो नहीं आ

रही थी, मगर मालती के नाम ने उसे रूकने पर मजबूर कर दिया था। पूरी दुनिया में बस एक मालती ही थी, जिसे उसके यहॉ होने की जानकारी थी। वो एक बंजारन थी और अक्सर मेंशन में औषधियों और मसालों को बेचने आया करती थी, जिससे उसकी मित्रता मीना से हो गई थी।

मीना ने पीछे मुड़कर उस युवक की ओर जॉचती हुई नज़रों से देखा और
फिर पास आकर उसकी गर्दन की ओर देखने लगी। वहॉ मौजूद एक काले मस्से को देखकर मीना के हाव-भाव बदले और फिर उसने पहचान भरी नज़र से उस युवक को देखते हुए कहा, "तुम मिलिंद हो? मालती के बेटे! यकीन ही नहीं आ रहा है। गोद में थे.. जब तुम्हें देखा था। अब देखो जरा! मुझसे भी लंबे हो गए हो। भला कैसे पहचानती मैं?" मीना ने बड़ी ही ममता से उसके सिर से गालों तक अपनी ऊंगलियॉ फिराई।

"जी! मॉ हमेशा आपके बारे में बातें किया करती थीं। उन्होंने ये भी बताया था कि आपको मुझसे बहुत ही स्नेह था। शायद उसी स्नेह के धागे ने मुझे आपकी ओर खींच लिया। मॉ के जाने के बाद आज पहली बार किसी ने सिर पर इतने अपनेपन से हाथ फेरा। मॉ की याद आ गई।" अपनी बात खत्म करते-करते मिलिंद नाम का वो युवक बहुत ही भावुक हो गया था।

मालती की मृत्यु का समाचार सुनकर मीना को धक्का लगा। अपने चेहरे पर तड़प भरे भाव लेकर उसने उस युवक की ओर देखा और बोली, "मालती नहीं रही! बहुत अफसोस हुआ ये जानकर।"

"अब क्या ही कर सकते हैं? भगवान की यही मर्जी थी।" मिलिंद ने भी बहुत ही अफसोस के साथ कहा। दर्द से उसका चेहरा सिकुड़ कर छोटा सा हो गया था। एक पुराने रिश्ते से जुड़ा हुआ दर्द मीना को भी भावुक कर गया।

"बात तो सही है। पर हुआ क्या था उसे? बीमार थी क्या?" मीना ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"पता नहीं क्या हो गया था? हमेशा डरी-सहमी सी रहती थीं। घर और हम सबको लेकर उन्हें वहम होने लगे थे। लोगों का कहना था कि उन्हें नज़र लग गई है। जब कुछ सही नहीं हुआ तो.... मैं तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ जी के पास से सुरक्षाकवच धागा ले आया, ताकि किसी भी तरह की बुरी
नज़र या बला से मॉ और हमारी हिफ़ाजत होती रहे। पर वो उनके काम आ पाता, तब तक देर हो गई थी।" मिलिंद ने गहरी सॉस लेकर कहा।

और ये सुनते ही मीना की ऑखें चमक उठी। उसने पहले तो अपने आस-पास देखा और फिर मिलिंद के करीब जाकर बोली, " क्या ऐसा कोई धागा भी होता है?"

"जी हॉ! तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ जी की योग्यता पर कोई शक नहीं कर सकता। सुरक्षा धागे बनाने में उनका कोई सानी नहीं है।" मिलिंद ने बहुत ही यकीन के साथ वजनदार शब्दों में कहा, जिसे मानने से मीना ने परहेज नहीं किया क्योंकि वो तांत्रिक श्रेष्ठ के बारे में अच्छी तरह से जानती थी। बल्कि इस धागे की चर्चा से वो थोड़ा और खुली।

"तो क्या... ऐसा ही धागा... तुम मेरे लिए भी बनवा सकते हो? बड़ी मेहरबानी होगी तुम्हारी।" तांत्रिक श्रेष्ठ के जिक्र से मीना ने याचना भरे स्वर में कहा।

"अरे! ऐसा मत कहिए। लगता है कि आप भी किसी परेशानी में हैं और अगर ऐसा है तो... आप मुझसे

वही धागा ले सकती हैं। वो अभी भी मेरे पास है।" वो बहुत ही आत्मीयता के साथ बोला।

"क्या सच में? तुम मुझे वो दे सकते हो?" मीना ने उसके शब्दों को उसके चेहरे से तौलते हुए पूछा।

"जी क्यों नहीं! मॉ के लिए बनवाया था। उनके काम तो नहीं आ सका। आपके ही सही! आप भी तो मेरी मॉ जैसी ही हैं।" उसने बहुत ही अपनेपन से कहा।

"ओह! तुम कितने अच्छे हो बेटे?" मीना ने उस पर प्यार उड़ेलते हुए
कहा।

"पर वो धागा अभी मैंने सराय में रखा हुआ है। अभी मुझे कुछ काम है और कुछ घंटों के बाद मुझे यहॉ से जाना भी है तो.... आप एक काम कीजिए! मेरे साथ सराय तक चलिए! मैं वो धागा आपको अभी दे देता हूँ।" मिलिंद बहुत ही एहतराम के साथ बोला। वहीं सराय का नाम सुनते ही एक बार फिर से मीना सहम गई।

"सराय! नहीं! वहॉ नहीं!" मीना का लहज़ा लड़खड़ाया था।

"क्यों? क्या हो गया? देखिए! मुझे दूसरे कस्बे की ओर भी जाना है। मैं आपको कहॉ ढूंढता फिरूंगा? फिर मुझे दोपहर के भोजन का भी प्रबंध करना है। ये भोजन छूट गया तो फिर कल दोपहर में ही मिलेगा।" उसने अपनी समस्या बताई।

"तो तुम मेरे घर चलो ना! हमारे साथ ही खाना खा लो! वैसे भी खाने का समय हो ही रहा है। बेटा तो है घर में है नहीं... बहू से ही मिल लो। उसे भी तुमसे मिलकर अच्छा लगेगा।" मीना ने उसकी समस्या से ही हल निकालते हुए कहा।

"पर.. मैं... इस तरह से.. आपके घर.." वो बोलते हुए लड़खड़ाया।

"अरे मेरा घर है और तुम मेरे बेटे जैसे हो। इतना सोचने की जरूरत नहीं है।" मीना ने उसकी झिझक हटाते हुए कहा।

"अ... ठीक है! आप इतना कह रही हैं तो... चलता हूँ! पर अभी मुझे कहीं और भी जाना है... बहुत ही जरूरी काम से। मैं वो खत्म करके सीधा आपके घर आता हूँ। आप अपना पता बता दीजिए।" मिलिंद, मीना का आमंत्रण स्वीकार करते हुए बोला।
"पता! देखो इस रास्ते में थोड़ा आगे जाकर एक बड़ा सा बरगद का पेड़ आएगा। वहॉ से दाईं ओर का रास्ता ले लेना। फिर उस रास्ते में एक परचून की दुकान पड़ेगी। वहॉ किसी से भी पूछ लेना कि अल्फ़ी का घर कौन सा है? कोई भी बता देगा।" मीना ने उसे तफ्सील से अपना पता बताते हुए कहा।

"जी ठीक है! मैं अपना काम खत्म करके आता हूँ।" उसने मीना को अभिवादन करते हुए कहा।

"ठीक है बेटा! मैं तुम्हारा इंतज़ार करूंगी। वैसे मैं पूछना भूल गई। तुम काम क्या करते हो?" मीना ने बहुत ही प्यार से पूछा।

"जी वही... जो मॉ किया करती थी। पिशाचों के लिए दवा बनाता हूँ।" मिलिंद मुस्कुराते हुए बोला।

मीना ने मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा और फिर अपने रास्ते में बढ़ गई। उसके दूर जाते ही उस युवक की मुस्कुराहट सिमटी और फिर उसके चेहरे पर एक कड़वाहट भरी सख़्ती ने कब्ज़ा जमाया।

"बेवकूफ!" उसके मुँह से निकला और फिर वो सराय की ओर जाने वाले रास्ते की बजाय दूसरे रास्ते पर बढ़ गया।

मीना घर पहुँची तो हेममाया दरवाजे के पास बैठी चावल चुन रही थी। मीना तेजी से उसके पास पहुँची।

"माया! खाना तैयार है बेटा?" मीना ने उससे पूछा।

हेममाया ने उसे हैरानी से देखा और पूछा, "आपको भूख लगी है?"
"मुझे नहीं! एक मेहमान आने वाला है! इसलिए पूछ रही हूँ।" मीना ने उससे कहा।

"मेहमान! कौन मेहमान?" हेममाया ने उसकी ओर देखते हुए जिज्ञासा से पूछा।

"एक पुरानी पहचान वाला मिल गया। उसकी मॉ और मैं साथ ही काम किया करते थे। रास्ते में इत्तफाकन मुलाकात हो गई और मैंने भी उसे खाने पर घर बुला लिया।" मीना ने उसे अपनी मुलाकात के बारे में बताते हुए कहा।

"ओह! बस तैयार ही है। चावल ही बनाने बचे हैं।" हेममाया ने कहा।

"चलो! मैं भी चलती हूँ रसोई में। वो कभी भी आ सकता है, फिर उसे काम से दूसरे कस्बे की ओर जाना है।" मीना ने कहा और घर के अंदर चली गई। हेममाया उसका उत्साह देखकर हैरत में पड़ी थी। चुने हुए चावल की थाल साथ लेकर वो भी रसोई में आ गई, जहॉ मीना पक चुके खाने को चखकर देख रही थी।

"वैसे पुरानी पहचान का मतलब!" हेममाया ने अजीब सा सवाल किया, जिस पर मीना ने पलट कर उसकी ओर देखा।

"बताया तो! बहुत पहले उसकी मॉ और मैं साथ काम किया करते थे।" मीना ने एक बार फिर से वही जवाब देते हुए कहा।

"साथ काम करने से आपका मतलब कल्परूप से है। वॉकर मेंशन! है ना!" हेममाया ने उसके चेहरे को ग़ौर से देखते हुए कहा।
हेममाया के मुँह से कल्परूप का नाम सुनते ही मीना के तेजी से चलते हुए हाथ रुक गए। उसने एक झेंपती हुई नजर हेममाया की ओर डाली और फिर अगले बर्तन को खोलते हुए हॉ में सिर हिला दिया।

"अरे वाह! फिर तो खातिर करना बनता है। आपके ससुराल से जो आया है।" हेममाया ने चुहल करते हुए मीना को छेड़ा।

"माया!" मीना ने उसे घुड़का।

"वैसे... क्या काम करता है?" हेममाया ने सवाल किया।

"दवाईयॉ बनाता है... पिशाचों के लिए। उसकी मॉ भी वही काम किया करती थी।" मीना ने कहा और ये सुनते ही हेममाया के हाथ भी रूके थे। उसने काम में मग्न मीना की ओर एक नज़र डाली।

"दवा मतलब!" उसने कौतूहल से पूछा।

"क्यों? दवा का कोई और भी मतलब होता है क्या? दवा मतलब दवा! हर तरह की दवा!" मीना ने कहा और चूल्हे की आग सही करने लगी।

पिशाचों की दवा के नाम से हेममाया की ऑखों में एक चमक सी उभरी, जिसे उसने मीना बखूबी छिपाया था। मन की एक इच्छा ने एक बार फिर से सिर उठाया। जल्द ही उन दोनों ने मेहमान की खातिरदारी के लिए सारा इंतजाम कर लिया। हेममाया रसोईघर में ही थी, जब बाहरी दरवाजे पर दस्तक हुई। मीना ने दरवाजा खोला तो वो बाहर ही खड़ा था।

"अरे बेटा! आओ! आओ ना! परेशानी तो नहीं हुई घर ढूंढने में?" मीना ने उसका स्वागत करते हुए सवाल किया।
"जी नहीं! आपके बेटे का नाम काफी मशहूर है।" मिलिंद ने तारीफ भरे शब्दों के साथ कहा और फिर अंदर आ गया। अंदर आने के बाद उसने चारों ओर नजरें घुमा-घुमा कर घर का मुआयना किया।

"घर सुंदर है आपका!" मीना की ओर तारीफ भरी नजरें डालते हुए वो बोला।

"धन्यवाद बेटा! आओ बैठो! माया! पानी लाना बेटा!" मिलिंद को बैठने के लिए कह कर उसने माया को आवाज दी और फिर उससे बातें करने लगी।

तभी हेममाया पानी का गिलास लेकर उसके पास पहुँची। मीना से बातें करते हुए ही मिलिंद ने सिर उठाकर हेममाया की ओर देखा और फिर वहीं उसके चेहरे पर ही रूक गया। उसे खुद को इस तरह एकटक ताकते देख हेममाया के माथे पर बल पड़े।

"ये माया है। मेरी बहू!" मीना ने परिचय कराते हुए कहा।

"ओह!" कहते हुए उसने पानी का गिलास उठाया। माया आगे जाकर मीना के साथ बैठ गई। पानी पीते हुए मिलिंद ने गिलास के ऊपर से ही हेममाया की ओर एक चोर निगाह डाली, जो मीना से कुछ कह रही थी। पानी का गिलास पूरा खत्म करने के बाद भी उसे अपना गला सूखता हुआ महसूस हो रहा था। उसने अपनी नज़रों को भटकने से बड़ी मुश्किल से रोका और सिर झुकाकर बैठ गया।

"मिलिंद बेटा!"

"जी!" मीना की आवाज सुनकर मिलिंद ने झटके से सिर ऊपर की ओर उठाया।
"वो दरअसल... आज मेरे बेटे को खाने पर आने में देर हो जाएगी। अगर तुम इंतजार करना चाहो तो... या फिर खाना लगा दें?" मीना ने उससे पूछा।

"दरअसल... आपने इतने प्यार से बुलाया तो मैं मना नहीं कर सका। पर आधे घंटे में मुझे निकलना है।"

मिलिंद ने मीना की ओर देखते हुए कहा।

"ओह! फिर तो तुम्हें देर हो जाएगी। माया बेटा! जाओ! खाना निकालो!" मीना ने हेममाया की ओर देखकर कहा।

उसकी बात सुनते ही हेममाया तुरंत ही उठकर रसोई की ओर चली गई। मिलिंद की नजरों ने आखिर तक उसका पीछा किया और मिलिंद की ये हरकत मीना की नजरों में भी आ गई।

"क्या हुआ बेटा? क्या देख रहे हो?" मीना ने बारी-बारी से मिलिंद और रसोई घर की ओर नज़र डालते हुए कहा।

"जी! कुछ नहीं!" वो बुरी तरह से हड़बड़ाया था, जिस पर मीना ने अपनी नज़रें उस पर और भी पैनी की। मीना की तफ्तीशी नज़र खुद पर जमे हुए देखकर मिलिंद के हाथ पैर फूलने लगे।

"जी दरअसल... मुझे आपको वो धागा देना था। आप उसके बारे में किसी को भी बता नहीं सकती... वरना उसका असर कमजोर हो सकता है। बस इसीलिए!" मिलिंद ने तेजी से अपनी थैली की ओर झुकते हुए कहा और जल्द ही उसने उसमें से दो काले धागे बरामद किए।

"इसमें से एक धागा आपको अपने बाएं हाथ में बांधना है और एक धागा अपने घर के ऑगन में ऐसी किसी जगह गाड़ना है, जो सबकी पहुँच से दूर
हो। आप ये जल्द कर दीजिए।" कहते हुए उसने वो धागे मीना की ओर बढ़ा दिए।

मीना ने वो धागे उससे लिए और वो उन्हें देख ही रही थी कि तभी हेममाया वहॉ आ गई। मीना ने तुरंत ही वो धागे उससे छिपाए। हेमामाया उनके लिए खाना निकाल रही थी।

"मिलिंद बेटा! आप शुरू कीजिए! मैं आती हूँ!" मीना ने इशारा करते हुए मिलिंद से कहा और फिर बाहर चली गई।

मिलिंद ने अपने हाथ धोए और फिर कुर्सी पर जाकर बैठ गया। हेममाया वहीं थी और उसकी थाली निकाल रही थी। मिलिंद ने एक चोर नज़र फिर से उसकी ओर उठाई और फिर उतनी ही तेजी से झुका ली। वो चाह रहा था कि हेममाया वहॉ से चली जाए.. मगर उसे झटका लगा, जब हेममाया उसके पास वाली कुर्सी पर बैठ गई। मिलिंद ने बहुत ही झिझकते हुए उसकी ओर देखा, जो उसे ही देख रही थी।

"लीजिए! शुरू करें!" हेममाया ने मुस्कुराते हुए कहा और उसे अपने इतने पास देखकर मिलिंद को अपनी धड़कनें बढ़ती हुई महसूस हुई। वो तेजी से अपनी प्लेट पर झुक गया।

"आपसे एक... बात पूछूं?" हेममाया ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

'जी! पूछिए!" मिलिंद ने उसकी ओर एक नज़र उठा कर देखा और फिर तुरंत ही नजरें झुका ली।

"मॉ ने आपके काम के बारे में बताया। क्या सचमुच ऐसी कोई दवा होती है, जिससे पिशाच संतान पैदा कर सकते हैं?" हेममाया उसे कौतूहल से देखते हुए पूछा।
"जी!"

"क्या आप बनाते हैं?" हेममाया ने पूछा।

"जी!"

"तो क्या... वो दवा आसानी से मिल सकती है?" हेममाया ने अगला सवाल किया।

"जी नहीं! वो दवा ग्राहक के बोलने पर बनाई जाती है। उस दवा को बनाकर नहीं रख सकते ना! उस दवा को बनाने के बाद तीन दिन के अंदर खाना होता है। उसके बाद वो दवा असर नहीं करती।" मिलिंद ने सिर झुकाए हुए ही कहा।

"ओह! इसका मतलब है कि मुश्किल ही है।" हेममाया ने बुझी हुई आवाज में कहा।

"क्यों? आपको वो दवा चाहिए क्या? पर क्यों?" मिलिंद ने उसे हैरानी से देखते हुए कहा।

"अरे नहीं! वो तो बस... मॉ ने उसका जिक्र किया था, तो मन में इच्छा थी कि वो दवा कैसी होती होगी, जो किसी जरूरतमंद दंपति को संतान सुख दे सकती है। मतलब कि आम जीवन में ऐसा नहीं होता है ना! कई लोग तो सारी जिंदगी संतान के लिए तरसते रह जाते हैं।" हेममाया ने बात संभालते हुए कहा।

"अगर देखना चाहो तो मेरे पास एक है।" मिलिंद ने उसकी ओर झुक कर फुसफुसाते हुए कहा।
"क्या सच में!" हेममाया लगभग उछलते हुए बोली।

"हॉ! रूकिए! दिखाता हूँ!" कहते हुए वो उठकर पास ही रखी अपनी थैली के पास गया और उसके अंदर से एक पुड़िया निकाल कर ले आया।

"ये देखिए! ये हैं वो जादुई दवा!" उसने वो पुड़िया हेममाया की ओर बढ़ाई।

हेममाया ने झिझकते हुए वो पुड़िया ली और उसे खोलकर देखा। अंदर सफेद रंग का एक पावडर था। हेममाया ने उसे बड़ी ही हसरत से देखा। वो सामने बैठे मिलिंद से कहना चाहती थी कि वो दवा उसे दे दे। लेकिन फिर मिलिंद के अगले सवाल का जवाब उसके पास नहीं था कि उसे पिशाचों वाली वो दवा क्यों चाहिए थी? मन मारकर अपने निचले होंठ को काटते हुए उसने वो दवा उसे वापस लौटाई।

मिलिंद ने उस पुड़िया की ओर देखा और फिर बोला, "इसे वापस मत कीजिए! फेंक दीजिए।"

और उसकी ये बात सुनकर हेममाया को हैरत का तेज झटका लगा। उसने हैरानी से उस पुड़िया की ओर देखा और फिर पलकें उठाकर मिलिंद की ओर देखते हुए बोली, "फेंक दूं! क्यों?"

"क्योंकि ये दवा जिसके लिए बनाई थी.. उन्होंने लेने से मना कर दिया। इसे बनाए हुए दो दिन हो चुके हैं और आज रात के बाद ये दवा किसी काम की भी नहीं है, तो इसे वापस रखने का कोई औचित्य ही नहीं है। इसलिए आप इसे फेंक दें।" पहली बार मिलिंद ने पूरी तरह से उसकी ओर देखते हुए कहा और फिर सिर झुकाकर खाना खाने लगा।
मुँहमांगी मुराद पूरी होने की खुशी हेममाया के चेहरे पर रौनक बनकर फैल गई। उसकी ऑखों में एक

चमक भर आई, जिसकी रोशनी में उसे अपनी खुशियाँ सामने खड़ी दिखाई दे रही थीं। उसने उस पुड़िया को अपनी मुट्ठी में भींचा और बोली, "जी! ठीक है!"

"क्या ठीक है?" दरवाजे की ओर से आई आवाज ने दोनों को ही चौंकाया था। मीना उन्हीं की तरफ आ रही थी।

"कुछ नहीं माँ! बस ऐसे ही! आपकी थाली लगा दूँ!" हेममाया ने बात बदलते हुए कहा।

मीना के हाँ कहने पर हेममाया तुरंत रसोईघर की ओर चली गई। उसने वो पुड़िया वहाँ हिफ़ाजत से रखी और फिर मीना के लिए थाली लगाकर ले आई। वो मिलिंद को और खाने के लिए आग्रह करने लगी। किसी तरह अपने अंदर की खुशी को संभाले हुए वो सामान्य दिखने की पूरी कोशिश कर रही थी। दूसरी ओर ना चाहते हुए भी मिलिंद का मन हेममाया की ओर ही भटक रहा था, इसलिए खाना खाने के तुरंत बाद ही मिलिंद ने खाने के लिए आभार व्यक्त करते हुए उन दोनों से जाने की इजाजत मांगी। दोनों ही महिलाओं की आँखें उसके प्रति आभार से भरी हुई थीं।

"हो सके तो फिर आना बेटा! तुम नहीं जानते कि तुम्हारे आने से हमें कितना अच्छा लगा।" मीना ने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा।

"जी जरूर! मैं कोशिश करूंगा!" उसने भी मीना की बात रखते हुए कहा और फिर हेममाया की ओर देखा।

"आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।" कहते हुए हेममाया ने अपना सीधा हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। मिलिंद ने उसके बढ़े हुए हाथ की ओर देखा
और फिर अपने अंदर उठते तूफान को संभालते हुए उसके उस हाथ को थाम लिया। उसे थामते ही मिलिंद को जहाँ अपने पूरे शरीर में सिहरन सी महसूस हुई, मगर उसकी आँखें बुरी तरह से जलने लगीं। उसने तुरंत ही उसका हाथ छोड़ा और फिर मुड़कर वहाँ से तेजी से निकल गया। उसने मुड़कर देखने की जहमत नहीं उठाई।

तेज कदमों से आगे जाकर वो एक सुनसान सी जगह में रूका। उसने खुद को संभालने की कोशिश छोड़ दी और कपड़े में बंधे अपने बालों को आजाद किया, जो पसीने से बुरी तरह से भीग गए थे। उसे बहुत ज्यादा बेचैनी महसूस हो रही थी इसलिए उसने तुरंत ही अपनी कमीज़ के ऊपरी दो बटन खोले और फिर वो गहरी-गहरी साँसें लेने लगा। खुद को संभालने की कोशिश में कुछ समय गुजारने के बाद उसके चेहरे की नसें एक बार फिर से तनने लगी। उसने अपनी मुट्ठियाँ भींची और वो पूरी ताकत से चिल्लाया। उसकी आँखों के सामने अभी भी हेममाया का चेहरा लहरा रहा था।

"नहीं अल्फ़ी! नहीं! हर बार बेहतरीन तुम्हारे ही हिस्से में क्यों? तुम इतना डिजर्व नहीं करते और अगर नहीं करते... तो मैं तुम्हारे पास रहने भी नहीं दूंगा। मैं तुमसे सब छीन लूंगा। तुम्हारी खुशियाँ, तुम्हारी ताकतें और.... तुम्हारी हेममाया भी! आज से तुम्हारी खुशियों के दिन खत्म! मेरीनफ़रत की आग में जलने के लिए तैयार हो जाओ।" वो अजीब सी जूनूनी हालत में चिल्लाकर बोला।

और फिर उसने अपने थैले से पानी का मशक निकाला। अपना चेहरा और हाथ के खुले हुए हिस्से धोकर साफ करने के बाद उसने अपने सिर पर पानी डाला और फिर दोनों हाथों की ऊंगलियों से अपने गीले बालों को समेट लिया। उसने अपनी गर्दन पर चिपके नकली मस्से को खींचकर अलग कर दिया

और अब एक बार फिर से वो मिलिंद से एडवर्ड बन चुका था, जिस पर अब एक अजीब सी खुमारी तारी हो चुकी थी।
वर्तमान में -

"तुम पागल हो गए हो। तुम्हारी नफ़रत ने तुम्हें कुछ भी सोचने-समझने लायक नहीं छोड़ा। अगर अल्फ़ी को पता चला कि तुमने उसकी हेममाया पर अपनी ऑखें डाली, तो अपनी ऊंगलियों से ही तुम्हारी ऑखें नोच लेगा।" उसकी बातें सुनने के बाद अनामिका गुस्से से बुरी तरह कॉपते हुए बोली।

और अनामिका की ये धमकी सुनकर अपने खंज़र की धार नापता हुआ एडवर्ड किसी वहशी की तरह गर्दन उठाकर जोर-जोर से हँसने लगा। कुछ देर बाद अपनी हँसी पर लगाम लगाते हुए वो रूका। उसने एक आह भरी और फिर बोलना शुरू किया।

"हेममाया! इश्श्श! कितनी खूबसूरत थी वो! पहली बार किसी लड़की को देखने के बाद एडवर्ड की ऑखों ने कुछ और देखने से इंकार कर दिया था। पर... पर... पर! ये मत समझना कि एडवर्ड एक लड़की की खूबसूरती के पीछे बावला हो गया था। कुछ तो था उसमें! कुछ ऐसा... जो एडवर्ड ने उससे पहले किसी भी लड़की में महसूस नहीं किया था। उसके अंदर एक अजीब सा तेज था, जो मुझे मेरे जैसा लगा। पहली बार लगा कि हॉ ये वही हैं, जो एडवर्ड के साथ खड़े होने का हक़ रखती है।"

"तो क्या तुम ये कहना चाहते हो कि तुम्हें हेममाया से प्यार..." अनामिका ने कहना चाहा, जिसे पूरा होने से पहले ही एडवर्ड ने टोक दिया।
"शश्श्श्! एडवर्ड प्यार में यकीन नहीं रखता। वो बस ताकत और रूतबे को तरजीह देता है और इस रूतबे की उम्र तभी लंबी होती है, जब आपके साथ चलने वाला... आपका वंश बढ़ाने वाला भी उतना ही रौबदार हो। और ये सारी खूबियॉ पहली बार मुझे हेममाया में दिखी थी। पर फिर वही अल्फ़ी! वो तो जैसे मेरे हक़ की हर चीज छीनने की कसम खाकर पैदा हुआ था। इसलिए मैंने उसी समय फैसला कर लिया था कि मैं हेममाया को हासिल करके रहूंगा।"

"पर तुम्हें तो डायनों से नफ़रत थी।" अनामिका ने उसकी बात काटते हुए कहा।

"तो तुम्हें क्या लगता है? मैं उसे डायन के रूप में स्वीकार करता। उसी की बेटी की बलि चढ़ाकर पहले मैं अपनी साधना पूरी करता... और मुझे वो शक्ति भी मिल जाती, जिससे मैं किसी को भी पिशाच में बदल सकता था। हेममाया को भी पिशाच में बदलकर मैं अल्फ़ी को अंदर से तोड़ देता। तुम सोचो! अपनी हेममाया को मेरी बाहों में देखकर वो एक ही जिंदगी में कितनी बार मरता और मैं... उसे उसी तरह तड़पते देखना चाहता था। मगर उस बेवकूफ माया की वजह से सब गड़बड़ हो गई। लाख समझाने के बाद भी उसने हेममाया को जान से मारा दिया और मेरी सारी योजना मिट्टी में मिल गई। फिर भी... हेममाया के मृत शरीर को हासिल कर मैंने अपनी बिगड़ चुकी योजना को सुधारना चाहा, तो एक बार फिर तुम सब की वजह से हेममाया का शरीर मेरे हाथ से निकल गया। और तो और मेरी साधना भी खंडित हो गई। मेरे की सालों की मेहनत तुम सब ने ख़ाक में मिला दीं। लेकिन फिर भी मैंने हार नहीं मानी। पिछले 200 सालों से मेरी साधना पूरी करने के लिए मेरे अनुयायी हर दस साल के बाद मुझे एक लड़की या औरत सौंपते थे, जिससे मैं अपनी संतान उत्पन्न कर उसकी बलि देकर अपनी साधना पूरी कर लूं। मगर अल्फ़ी तो जैसे मुझसे जोंक

की तरह चिपका हुआ था। उसने हर उस लड़की को मेरी क़ैद से आज़ाद करवा दिया और मैं देखता ही रह गया। मगर जब भविष्यकथन ने तुम्हारे आने की भविष्यवाणी की, तब उसका ध्यान मुझ पर से भटका और फिर मैंने उसका फायदा उठाते हुए अंकित की भाभी से अपनी संतान उत्पन्न की और उसकी बलि देकर अपनी साधना पूरी कर ली।" अपना सारा कच्चा-चिट्ठा अनामिका के सामने खोलते हुए एडवर्ड ने कहा।

"तुम्हारा कहना है कि तुम्हारी साधना पूरी हो गई। फिर अब क्यों परेशान हो तुम? तुम्हें जो चाहिए था, वो तुम्हें मिल तो गया।" अनामिका ने उसकी कहानी में उलझते हुए कहा।

"तुम्हें ऐसा लगता है। बिल्कुल भी नहीं। मुझे उस समय भी अल्फ़ी से ज्यादा ताकत और उसकी हेममाया चाहिए थी और आज भी वहीं चाहिए।" एडवर्ड अनामिका को धूर्तता से देखते हुए बोला।

"हेममाया चाहिए! तो क्या... तुम सचमुच उसे वापस लाने वाले हो?" अनामिका उसके शैतानी इरादों को समझते हुए बोली।

"हम्म! मैंने झूठ नहीं कहा था! हेममाया वापस आएगी। तुझे मारने के बाद मैं हेममाया की आत्मा के अंश की मदद से उसे वापस लाऊंगा। पर वो अल्फ़ी के लिए नहीं... मेरे लिए वापस आएगी। मेरी हेममाया बनकर आएगी, जो डायन नहीं पिशाच होगी और फिर अल्फ़ी को मारकर मैं उसकी शक्तियॉं भी हासिल कर लूंगा और बन जाऊंगा सर्वशक्तिमान!" और फिर एडवर्ड अपने शैतानी इरादे जाहिर करता हुआ एक बार फिर से अट्टहास करने लगा, जिससे उस कमरे की दीवारें भी कॉंप उठी थीं।

"हम्म! मैंने झूठ नहीं कहा था! हेममाया वापस आएगी। तुझे मारने के बाद मैं हेममाया की आत्मा के अंश की मदद से उसे वापस लाऊंगा। पर वो अल्फ़ी के लिए नहीं... मेरे लिए वापस आएगी। मेरी हेममाया बनकर आएगी, जो डायन नहीं पिशाच होगी और फिर अल्फ़ी को मारकर मैं उसकी शक्तियॉं भी हासिल कर लूंगा और बन जाऊँशगा सर्वशक्तिमान!" और फिर एडवर्ड अपने शैतानी इरादे जाहिर करता हुआ एक बार फिर से अट्टहास करने लगा, जिससे उस कमरे की दीवारें भी कॉंप उठी थीं।
उसकी बातें सुनकर अनामिका अंदर तक हिल गई थी।

"मैं ये सोच रही हूँ कि नीचता की कोई शक्ल होती तो वो बिल्कुल तुम्हारे जैसे ही दिखती।" अनामिका जहर बुझी आवाज में बोली।

"ओह! तारीफ के लिए शुक्रिया!" एडवर्ड ने बहुत ही मक्कारी से कहा।
अनामिका ने बहुत ही कड़वाहट के साथ उसकी ओर अपनी नज़रें उठाई और उसी समय उसके मस्तिष्क में चैतन्य की आवाज उभरी,

"हम पहुँच गए!"

और ये सुनते ही अनामिका समझ गई कि वो सब अल्फ़ी का पीछा करते हुए खंज़र के ठिकाने पर पहुँच चुके हैं। उसने भी अपनी ओर से मन ही मन हुंकारी भरी और योजना आगे बढ़ाने के लिए कहा। अब वो

खुद भी आगे बढ़ने को तैयार थी क्योंकि एडवर्ड भले ही पहले से कम शक्तिशाली था... मगर रक्षकों की अगली कार्यवाही की ओर उसका ध्यान आसानी से जा सकता था, इसलिए अनामिका को अभी भी उसका ध्यान भटकाकर रखने की जरूरत थी। उसने घड़ी की ओर देखा। रात के 2 बजने वाले थे। यानि कि एडवर्ड भी अब सक्रिय होने वाला था। तभी उसकी नज़र अपने बाएँ हाथ की छोटी ऊंगली की ओर गया, जिसमें उसने सफ़ेद मोती की अंगूठी पहने रखी थी। उसने उस मोती में रोशनी की एक झलक देखी और फिर वो सामान्य हो गया। तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ जी का काला धागा भी उसके साथ शान से मौजूद था। अनामिका की मुस्कान होंठों की दहलीज पर आते-आते रूक गई। उसने बाहर की ओर जाने वाले रास्ते की ओर एक सरसरी सी निगाह दौड़ाई। वरूण की मौजूदगी उसने महसूस कर ली थी। उसने एक गहरी सॉस लेते हुए सामने मौजूद उस पिशाच पर अपनी नज़रें गड़ाए दीं। युद्ध बस शुरू होने को ही था।

****

अल्फ़ी का पीछा करते हुए जब चैतन्य और साथी उस खंज़र वाले दहकते कमरे तक पहुँचे, तब चैतन्य ने तुरंत ही अनामिका को उनके वहॉ पहुँचने की सूचना दे दी। इसके बाद वो सभी अल्फ़ी से मिले और फिर अल्फ़ी ने उन सबको बताया कि उन्हें करना क्या है? अब वो उसी योजना को अमलीजामा पहनाने की जुगत में लग गए थे।

"काम शुरू करने से पहले ये जान लीजिए कि एडवर्ड पहले की तरह ताकतवर नहीं रह गया है। उसकी शक्तियों को किसी ने बांध रखा है और वो.... और भी ताकतवर बनने के लिए उस बंधन को तोड़ना चाहता है। वो अब पहले की तरह अपनी शक्तियों के बल पर किसी पर नज़र नहीं रख सकता। इसलिए उसने हम सब पर नज़र रखने के लिए विक्टर और गीता के जैसे जरिए खोजे, जिनकी मदद से वो अपने आगे की रणनीति बनाता था। हमने उसकी इस ताकत पर तो वार कर दिया है। पर अभी एक और मुश्किल हमारे सामने मौजूद है और वो है... एडवर्ड की सेना!"

"सेना! उस चमगादड़ के पास सेना भी है!" चैतन्य ने हैरानी से कहा, जिस पर अल्फ़ी, मुकुल और सृष्टि ने उसे टेढ़ी नज़रों से देखा था।

"200 सालों से बस यही तो कर रहा था वो। उसे हर हाल में मदद चाहिए, तभी वो अपना मकसद पूरा कर सकता है और... बाकी बातें बाद में।" अल्फ़ी ने बात समेटते हुए कहा।

"तो काम शुरू करें!" आशुतोष ने सभी की ओर देखते हुए कहा।

"यहॉ हमारी शक्तियॉ तो काम करेंगी ना!" सृष्टि ने पूछा।

"ये जगह एडवर्ड की नहीं है। यहॉ उसकी मर्जी नहीं चलेगी।" अल्फ़ी ने आश्वासन भरी आवाज में कहा।
"ये तो बढ़िया है!" मुकुल ने मुट्ठियॉ बांधते हुए जोश से कहा।

खंज़र वाले कमरे में महौल हर बढ़ते लम्हे के साथ और भी गर्म होता जा रहा था। वो सब अपनी योजना के अनुसार दो हिस्सों में बँट गए थे, जिसमें एक में आशुतोष को पॉचों तत्वों की मदद से एक शिकंजा बनाना था, जिसमें वो सब उस एडवर्ड को क़ैद करने वाले थे। ये काम आसान नहीं होने वाला था, इसलिए मुश्किलों को दूर करने की जिम्मेदारी अल्फ़ी, चैतन्य, सृष्टि और मुकुल की थी। सृष्टि, आशुतोष

के पास उनकी सुरक्षा में तैनात थी, तो बाकी तीनों ने आक्रमण करने और रोकने का जिम्मा उठाया।

"चारों ओर नज़र रखना! खतरा कहीं से भी आ सकता है।" अल्फ़ी ने सबको सावधान करते हुए कहा और फिर वो कमरे के अंदर बहते लावे के पास चला गया। उसने चारों ओर देखा और फिर घुटनों के बल नीचे बैठ गया। सभी का ध्यान उसी की ओर था। उसने नीचे उबलते हुए लावे को देखा और फिर अपना सीधा हाथ कोहनी तक उसके अंदर डाल दिया। उसे ऐसा करते देख वहाँ मौजूद सभी की सिसकारी सी निकल गई। फिर भी वो सब दम साधे उसे ही देख रहे थे कि आखिर वो क्या करने वाला था। करीब एक मिनट के बाद उसने अपने उस हाथ को ऊपर की ओर खींचा। उसके हाथ में चिपका हुआ गर्म-गर्म लावा हाथ से फिसलकर नीचे उतरता जा रहा था और फिर उन सभी ने देखा उसकी कसी हुई ऊंगलियों को, जो अपने साथ कुछ खींच कर बाहर ला रही थी। वो पिघले हुए लावे से बनी हुई तलवार थी, जिसकी नोंक से लावा बूंद-बूंद टपक रहा था। धीरे-धीरे जब उसकी आकृति स्पष्ट हुई, तो सबने देखा कि वो एक शानदार दो धारी तलवार थी, जो उसके शानदार क्रॉस गार्ड के साए में शान से चमक रही थी।
अल्फ़ी ने उसे अपने सिर के ऊपर उठाया और फिर जब उसे हवा में घुमाया तो वो लाल रेखाओं के रूप में अपनी धार की निशानियाँ छोड़ गया, जो अगले ही पल हवा में घुल गई। अच्छी तरह से तसल्ली करने के बाद वो उस तलवार को लेकर पीछे मुड़ा और उनके पास आ गया। वो सभी फटी हुई आँखों से एकटक उस तलवार को ही देख रहे थे।

"क्या देख रहे हो?" अल्फ़ी ने उन सभी को इस तरह घूरते देखा, तो बोला।

"ये क्या है?" मुकुल ने उस तलवार को उसी तरह घूरकर देखते हुए पूछा।

"तलवार है! और तुम सब भी अपने-अपने लिए हथियार का जुगाड़ कर लो। दुश्मन से खाली हाथों से लड़ना बेवकूफी ही मानी जाएगी।" अल्फ़ी ने उनको जवाब देते हुए उनकी नासमझी पर अपना सिर हिलाया।

उसकी बात सुनकर चैतन्य ने भी अपना सीधा हाथ ऊपर हवा में उठाया। उसने धीरे से अपनी मुट्ठी बंद की और फिर वो अपने उस हाथ को हवा में ही जोर से गोल-गोल हिलाने लगा, जिससे कुछ ही पलों में उसके उस हाथ के पास हवा का एक बवंडर सा बन गया। चैतन्य ने उस बवंडर की ओर देखा और फिर मुस्कुराते हुए उसने अपने उस हाथ को झटके से नीचे खींचा। उस बवंडर के बीच से सफेद रंग के क्रिस्टल से बनी चमचमाती हुई तलवार बाहर निकल आई।
चैतन्य ने उस तलवार की धार को अपनी आँखों के सामने रखकर परखा और फिर उसकी मूठ पर ऊंगलियाँ कसते हुए उससे सामने रखे एक पत्थर पर वार किया। उस तलवार के वार से वो पत्थर बीच से चटक गया और अगले ही पल हवा में घुल गया। उसकी शक्ति का प्रदर्शन करने के बाद चैतन्य ने सबकी ओर देखते हुए अपनी एक भौंह चढ़ाई।

अब सबकी नज़र मुकुल की ओर गई, जिसने पहले तो सबकी कौतूहल भरी आँखों को देखा और फिर अपने कंधे उचकाने के बाद उसने अपने सीधे हाथ को आगे की ओर झटका दिया। उसके हाथ से एक अग्नि किरण निकली, जिसे उसने झटके से खींचकर अपने ही हाथ में लपेट लिया, जहाँ से तेज लपटें उठ रही थीं। इसके बाद उसने अपने उस हाथ को लगातार झटका देकर उस आग की लपटों को बुझाया तो उसके उस हाथ में एक शॉटगन दिखाई देने लगी।

उसने अपने दूसरे हाथ को ऊपर उठाकर गोल-गोल घुमाया, तो दो-तीन पलों में ही वहाँ आग का छोटा सा गोला बन गया। मुकुल ने उसे बॉल की तरह ऊपर हवा में उछाला और अगले ही पल अपनी शॉटगन से उस पर वार किया। उस गन से अग्निकिरण निकली और फिर जाकर उस आग के गोले से जा टकराई। अगले ही पल वो आग का गोला हवा में बिखर कर गायब हो गया। काम खत्म कर मुकुल ने बड़े ही अंदाज से शॉटगन की धुंआ उगलती नली पर फूंक मारा और मुस्कुराते हुए बोला,

"वेव शॉटगन!"

बाकियों ने भी मुस्कुराकर उसका साथ दिया। अब सृष्टि की बारी थी,
जिसके जवाब में वो बस मुस्कुरा गई।

"उसकी चिंता मत कीजिए। वो अकेली ही सब कुछ निगल सकती है। वो भी डकार मारे बिना।" मुकुल ने मुस्कुराते हुए कहा, जिस पर सृष्टि ने अपने होंठ भींचकर अपनी नाराज़गी जताई। ये देखकर बाकी तीनों भी मुस्कुराए।

"तो तैयार हो तुम सब! मैं अपना काम शुरू करूं?" आशुतोष ने उन सबसे पूछा।

"पर सामान!" मुकुल ने पूछा।

जवाब में आशुतोष मुस्कुराया और फिर अपने जैकेट की अंदरूनी जेब से उसने एक लाल रंग की पोटली निकाली और उसे हवा में उठाकर उन सभी को दिखाते हुए बोला, "मेरा इंतजाम हमेशा मेरे पास रहता है। तुम सबको क्या लगा? शैतान से भिड़ने खाली हाथ आऊंगा!"

सभी ने कौतूहल से उस पोटली को देखा, जो दिखने में ज्यादा बड़ी नहीं थी। आशुतोष उस पोटली के साथ उस लावा और आग से भरे कमरे के सामने ही बैठ गया।

आशुतोष ने अपनी पोटली से रूई के कुछ छोटे-छोटे फाहे निकाले। उसने सभी को अपने पास बुलाया और फिर चैतन्य की तर्जनी, सृष्टि की मध्यमा, अपनी अनामिका उंगली और मुकुल के अंगूठे से खून की बूंदें निकालकर उन रूई के फाहों में ले ली।

"अनामिका ने ये दिया था, जब मैंने उसे पूरी बात बताई थी।" कहते हुए अल्फ़ी ने एक रूमाल आशुतोष की ओर बढ़ाया, जिसके एक कोने में खून की बूंदें सूख गई थीं।
"अनामिका की होशियारी पर कभी संदेह नहीं किया जा सकता।" आशुतोष ने अनामिका की प्रशंसा करते हुए वो रूमाल ले लिया।

अब उसे सुरक्षा देने की बारी सृष्टि की थी। उसने अपनी मध्यमा उंगली में पहनी हुए अंगूठी के नग को घुमाकर हथेली की ओर किया और फिर उसे हल्के से दबा दिया। अब उसने आशुतोष से एक निश्चित दूरी पर जमीन पर अपना हाथ रखा और फिर उसे जमीन पर घसीटते हुए आशुतोष के चारों ओर एक गोला बनाया। गोला बनाते हुए पहले वाली जगह पर आते ही सृष्टि ने अपने उस हाथ को झटका देकर ऊपर की ओर उछाला और उसे गोलाई से घुमाते हुए उस गोले के दूसरी ओर के छोर की ओर इशारा

किया। एक खट्ट की आवाज आई और फिर आशुतोष एक अर्धगोलीय आकृति के अंदर महफूज हो चुका था।

सुरक्षा घेरे में आने के बाद आशुतोष ने एक बार फिर से वो पोटली खोली और फिर उसमें हाथ डालकर उसने एक पुड़िया बाहर निकाली। उसे खोला तो उसमें सफेद रंग का पावडर रखा हुआ था। आशुतोष ने उस पावडर को अपनी मुट्ठी में भरा और फिर ऑखें बंद कर कुछ बुदबुदाते हुए उस मुट्ठी को अपने माथे से छुआया। इसके बाद उसने अपनी ऑखें खोली और फिर उस पावडर से जमीन पर एक गोले के अंदर पंचकोणीय आकृति बनाई। आकृति के बनते ही उस सफेद रंग के पावडर से धुआं उठने लगा और फिर धीरे-धीरे उसका रंग बदलने लगा। कुछ ही देर में वो आकृति लाल रंग की नज़र आने लगी।

अब आशुतोष ने एक बार फिर से अपनी पोटली खोली और उसमें से कुछ छोटी-छोटी अभिमंत्रित कीलें निकालीं।

आशुतोष अपनी गतिविधियों में पूरी तरह से तल्लीन हो चुके थे और तभी बाकियों ने उस जगह में अजीब सी सरसराहट को महसूस किया। ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई चीज घिसट-घिसक कर आगे बढ़ रही हो। खतरे का अंदाजा होते ही वो सभी अपनी-अपनी पोजीशन में आ गए। अपने-अपने हथियारों पर उनके हाथ कस चुके थे।

दूसरी ओर आशुतोष ने उन कीलों में से एक कील उठाई और फिर उसे
उस पंचकोणीय आकृति के एक नुकीले छोर पर रखकर हल्का सा दबाया। वो कील बिना किसी परेशानी के जमीन के अंदर इस तरह चली गई, गोया सख़्त जमीन ना होकर मोम हो। आगे भी उन्होंने इसी तरह और कीलें उस आकृति के अलग-अलग हिस्सों में गाड़नी शुरू कर दी।

उधर अपने-अपने हथियारों के साथ तैयार खड़े वो सभी आफतों के आने का इंतजार कर ही रहे थे कि तभी बाहर की ओर से एक काला चमगादड़ तेजी से उनकी और उड़ते हुए आया। अल्फ़ी और चैतन्य की तलवार अपना कमाल दिखाने को तैयार ही थी कि तभी मुकुल की शॉटगन ने आग उगली और वो चमगादड़ स्वाहा हो गया। सबके होंठ प्रशंसा में मुस्कुराए। अगले ही पल उनकी मुस्कान सिमटी, जब उन्होंने ढेर सारे पंखों की आवाज के साथ कुछ चिचिआहट की आवाज भी सुनी। वो इस अलग से आवाज के बारे में सोच ही रहे थे कि तभी सृष्टि के पास की दीवार से एक पत्थर का टुकड़ा नीचे की ओर गिरा। वो उस पर एक नज़र ही डाल पाए थे कि तभी उस पत्थर के चार पैर निकले... सामने की ओर का हिस्सा आगे निकल थूथन बन गया और पीछे की ओर एक पतली सी पूंछ निकल आई। उसे देखते ही सृष्टि चिल्ला उठी...

"चूहा!"

और फिर वो चिल्लाते हुए अपने ही सुरक्षा घेरे के अंदर घुस गई। वो चूहा उसके पीछे दौड़कर आया

और फिर उस सुरक्षा घेरे की दीवार की अंदर की ओर घुसा और देखते-ही-देखते उस दीवार ने उस चूहे को निगल लिया।

"मैंने पहले ही कहा था कि वो कुछ भी निगल सकती है।" मुकुल ने भौंह
चढ़ाकर अल्फ़ी और चैतन्य की ओर देखते हुए कहा, जिस पर वो दोनों ही मुस्कुराए थे।

दूसरी तरफ उस आकृति में सभी कीलें गाड़ने के बाद आशुतोष ने एक बार फिर से उस पोटली में हाथ डालकर काले धागे का रोल निकाला और फिर उस धागे को एक कील से दूसरी कील में लपेटने लगे।

वहीं बाहर की तरफ चैतन्य, अल्फ़ी और मुकुल सिर के ऊपर उड़ रहे रक्तपिपासु चमगादड़ों और पैरों के नीचे दौड़ रहे मांसभक्षी चूहों से उलझे हुए थे। सृष्टि ने अपने सुरक्षा घेरे के अंदर रहना ही पसंद किया। उन लोगों के ध्यान दिया कि उन चमगादड़ों और चूहों की संख्या बहुत ही ज्यादा थी। एक-एक करके उन्हें मारकर उनसे पार पाना मुश्किल ही था।

"ऐसे काम नहीं चलेगा। कुछ और ही करना होगा।" चैतन्य ने अपनी कार्गो पैंट के अंदर घुसते चूहे को पैर झटककर दूर फेंकते हुए चिढ़े हुए अंदाज में कहा। उनके दो तरफा हमले के साथ उनका सिर दुखाने वाला शोर उन सबको और भी परेशान कर रहा था।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी थोड़ा आगे बढ़ा और फिर अपनी तलवार पूरी ताकत से जमीन में गाड़ दी। अल्फ़ी की तलवार से लावा उतरकर जमीन में सामने की ओर फैलने लगा, जिससे जमीन पर उत्पात मचा रहे चूहे उसकी पहुँच में आकर ख़ाक होने लगे।

उधर सुरक्षा घेरे के अंदर आशुतोष ने कीलों पर काला धागा बांधने के बाद अब सबके खून वाले रूई के फाहे और अनामिका के खून वाला रूमाल एक-एक हिस्से में रख दिए। इसके बाद आशुतोष ने अपनी ऑखें बंद की और फिर वो उन पंचतत्व शक्तियों का आह्वान करने लगे। जल्द ही वो सभी हिस्से अपने-अपने तत्वों से भर चुके थे।

लड़ाई के मोर्चे में अल्फ़ी के जमीन का मैदान फतह करने के बाद चैतन्य ने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा। अब उसकी बारी थी। उसने अपनी तलवार ऊपर उठाई और उसे तेजी से गोल-गोल घुमाने लगा। जल्द ही एक बड़ा सा हवा का बवंडर उसकी तलवार के चारों ओर नाचने लगा और फिर वो हवा में उड़ते चमगादड़ों को चुंबक की तरह अपने पास खींचने लगा। देखते ही देखते चमगादड़ों की वो फौज़ पूरी की पूरी उसके अंदर समा गई और जैसे ही चैतन्य ने अपनी तलवार को नीचे की ओर खींचा। उन अनगिनत चमगादड़ों की कटी-फटी लाशें चारों ओर खून बिखेरते हुए बिखर गईं। आसमान भी जीत लिया गया था।

जीत हासिल करने के बाद अल्फ़ी और चैतन्य ने आशुतोष की ओर देखा तो वो अभी भी ऑखें बंद किए साधना में रत थे। वहीं सृष्टि जमीन पर अपने दोनों हाथ टिकाए अपनी ऑखें भींचकर घुटनों के बल बैठी हुई थी। उसके चेहरे पर बेतहाशा दर्द दिखाई दे रहा था। शायद कोई बाहरी शक्ति उस सुरक्षा

घेरे को तोड़ने का प्रयास कर रही थी और उसे बचाने की कोशिश में सृष्टि ने अपनी पूरी ताकत लगा दी थी। इतनी ताकत.... कि इस कोशिश में उसके नाक और कानों से खून बहने लगा था। उसकी ऐसी हालत देख चैतन्य और मुकुल घबराकर उसकी ओर बढ़े ही थे कि तभी अल्फ़ी ने हाथ अड़ाकर उन्हें रोक दिया।

"ऐसा बिल्कुल भी मत करना, वरना वो सुरक्षा घेरा टूट जाएगा और सृष्टि की इतनी कोशिश और मेहनत बर्बाद हो जाएगी। आशुतोष जी को अभी भी उस घेरे की जरूरत है।"

अल्फ़ी की बात सुनकर चैतन्य और मुकुल रूक गए और चिंता भरी नज़रों से सृष्टि को देखने लगे। सबका ध्यान सृष्टि की ओर ही था कि तभी मुकुल को कुछ अजीब सी आवाजें सुनाई दीं और वो उन आवाजों की ओर मुड़ गया।

वहीं सृष्टि के सुरक्षा घेरे के अंदर बने उस पंचकोणीय आकृति के बीचों-बीच खाली जगह में एक हलचल सी होने लगी। चारों ओर रखे हुए पंचतत्वों से उनका सत निकलकर उस बीच वाले खाली जगह पर जाने लगा। कुछ ही देर में वो सारे संत एक साथ मिल गए और फिर वहाँ उस बीच के हिस्से में सफेद धुएँ का गुबार भर गया जो धीरे-धीरे ऊपर आने लगा। आशुतोष ने भी अपनी आँखें खोल ली थीं और उस गुबार को ही देख रहा था। वो गुबार ऊपर एक जगह पर जाकर रूक गया। आशुतोष ने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाए और अपनी दोनों हथेलियों को जोड़कर उस गुबार के नीचे रख दिया। कुछ ही देर में वो गुबार छँटने लगा और उसके अंदर से एक काँच के गोले जैसी आकृति बाहर आई, जिसे आशुतोष ने सावधानी से अपने हाथों में पकड़ लिया था। उसके अंदर बहुत से रंग आपस में घुल-मिल रहे थे। उसे देखते ही आशुतोष के होंठों पर मुस्कान आई। मतलब साफ था कि उन्हें जिसकी जरूरत थी, वो उन्हें मिल चुका था। एडवर्ड के लिए शिकंजा तैयार था।

काम खत्म होने का संकेत मिलते ही सृष्टि भी जमीन पर निढाल होकर गिर पड़ी। उसकी हालत ठीक नहीं लग रही थी। अल्फ़ी और चैतन्य उसकी ओर बढ़े ही थे कि तभी उन सबने कुछ अजीब सी आवाजें सुनी।

"ये कैसी आवाजें हैं?" चैतन्य ने कहा।
"ऐसा लग रहा है कि जैसे पानी के बुलबुले फूट रहे हैं।" अल्फ़ी ने उन आवाजों पर कान लगाकर कहा।

"पर ये आवाज़ें आ कहाँ से रही हैं?" चैतन्य ने एक और सवाल किया।

तभी पीछे खंज़र वाले कमरे की ओर से मुकुल की आवाज़ आई, "हे गाईज़! जरा इधर देखो!"

और फिर सभी की नज़रें पूरे शरीर के साथ उस कमरे की ओर घूमी थीं। अभी तक जो लावा जमीन पर बह रहा था... वही लावा एकदम से थमकर अपनी जगह पर रूक गया था।

"अब क्या?" चैतन्य ने कहा।

और उसके ऐसा कहते ही वो रूका हुआ लावा एक जगह से ऊपर उठने लगा। उस पिघली हुई आग की ऐसी हरकत से वो तीनों ही और भी सतर्क हुए। उन तीनों ने ऊपर चढ़ते उस लावे की ऊँचाई को नापा, जिससे सभी की गर्दन ऊपर उठने को मजबूर हो गई। करीब आठ से नौ फीट ऊपर उठने के बाद वो लावा रूक गया। ये हैरतअंगेज नज़ारा देखकर उनकी ऑखें फटी की फटी रह गईं। अगले ही पल उनके दिल और दिमाग को एक और झटका लगा, जब उस लावे के दोनों ओर से हाथ जैसी आकृतियॉ बाहर आने लगीं और फिर ये होने के बाद उस लावे के बीच से खुली दो ऑखों को देखकर उनके मुँह खुले के खुले रह गए।

"सियापा!" चैतन्य बोला।

"सियापा नहीं भाई... सियापा का पापा!" मुकुल बड़बड़ाया।

"अग्निदानव!"
अभिशप्त: भाग 163 - युद्ध

"अग्निदानव!"

और इस शब्द के साथ ही अल्फ़ी ने उन दोनों को एक ओर खींचा। आशुतोष भी सृष्टि को संभालते हुए एक ओट में हुए थे।

"ये यहॉ क्या कर रहा है?" मुकुल ने हैरानी से कहा।

"ऑब्यसली! इस जगह की निगरानी।" अल्फ़ी सामने की ओर देखते हुए बोला।

"पर ये अग्निदानव है कौन?" चैतन्य ने अपनी अकड़ी हुई गर्दन को सहलाते हुए कहा।

"वास्तव में खंज़र की चोरी से पिशाचदेव का गुस्सा इस रूप में बाहर
आया है। वो खंज़र उनकी अमानत है जो 200 सालों से गायब थी। उसे उसी समय अपना काम खत्म करके वापस उसकी जगह रखना था, जो हुआ नहीं। समय के साथ ये नाराज़गी बढ़ गई और अब अंदर

जाने वाले को हर किसी को इसका सामना करना होगा। हमारे लिए कोई भी राह इतनी आसान नहीं है।" अल्फ़ी ने उसी तरह सामने देखते हुए कहा।

"वाह! अब तो कोई सवाल ही नहीं बचा। तो क्या अब इससे भी लड़ना पड़ेगा?" चैतन्य ने उस दानव को नीचे से ऊपर की ओर देखकर कुढ़ते हुए कहा।

"पागल हो गए हो! हर जगह आफत मोल लेना सही नहीं होता है। उस खंज़र के बिना इसके सामने भी गए तो हमारा शरीर फूंक डालेगा ये। जरूर इसे घुसपैठ की भनक लग गई है, इसलिए इतना भड़क रहा है।" अल्फ़ी ने उसे देखते हुए कहा।

"तो फिर? मुकुल ने पूछा।

"खंज़र तो अनामिका के पास है। पता नहीं उसका काम हुआ या नहीं। चैतन्य! जरा पता करो!" अल्फ़ी ने चैतन्य की ओर एक नज़र डालते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर चैतन्य ने अनामिका से संपर्क करने की कोशिश की। मगर आश्चर्यजनक रूप से उसने कोई जवाब नहीं दिया, जिससे चैतन्य परेशान हुआ था।

"वो जवाब नहीं दे रही है।" चैतन्य ने घबराई हुई आवाज में कहा।

"वरूण और अंकित भी तो वहॉं है।" अल्फ़ी ने कहा।
"हॉं! हैं तो सही!" चैतन्य ने कहा और उसकी ओर उतनी ही परेशानी से देखता रहा।

"क्या हुआ होगा?" ये सुनकर अल्फ़ी भी परेशान हुआ था।

एक विशालकाय खतरा सामने चुनौती देता हुआ तनकर खड़ा था और उसका सामना करने के लिए इस समय उन्हें उतने ही जोश की जरूरत थी, मगर अनामिका की चिंता ने उन दोनों को ही परेशान कर दिया था, जो उनके चेहरे से साफ झलक रहा था।

"क्या करें?" चैतन्य ने सामने देखते हुए परेशान लहजे में कहा।

"मेरे ख्याल से हम वापस चलते हैं। अभी के लिए यहॉं का काम खत्म हो चुका है।" अल्फ़ी ने उन दोनों से कहा।

"हम्म! चलो!" कहते हुए चैतन्य सावधानी से आशुतोष की ओर बढ़ा। मुकुल और अल्फ़ी भी उसके पीछे-पीछे गए। जल्द ही वो सभी एक साथ थे।

"आशुतोष जी! अनामिका रिस्पांस नहीं दे रही है। हमें वापस जाना होगा।" चैतन्य ने उनके पास पहुँचते ही कहा।

"मगर मैं और सृष्टि नहीं जा सकते। इस शिकंजे को मैंने अपनी मानसिक शक्ति से जोड़ रखा है और ये सृष्टि की सुरक्षा में है। हमारे हटने से ये कमजोर पड़ सकता है।" आशुतोष ने कहा।

"तो फिर... क्या करें? अनामिका के पास जाना भी जरूरी है।" अल्फ़ी ने चिंता जताते हुए कहा। अनामिका का जिक्र उसके माथे पर और भी शिकन ले आया था।
"सृष्टि की सुरक्षा मजबूत है, लेकिन अभी वो इतनी ताकतवर लग नहीं रही है और जब तक वो खंजर हासिल नहीं हो जाता इस शिकंजे की सुरक्षा बहुत जरूरी है। सुरक्षा नहीं होने पर ये बेवकूफ दानव इसको नुकसान पहुँचा सकता है।" आशुतोष ने समस्या बताते हुए कहा।

"इतनी कमजोर नहीं हूँ मैं। अभी भी अपना काम करने की ताकत और हौसला दोनों ही है मुझमें। लग रहा है कि तुम सब भी मुझे एक योद्धा से ज्यादा नाजुक सी लड़की ही समझ रहे हो।" सृष्टि ने भड़कते हुए कहा। उसकी चिड़चिड़ाहट देखकर उन सभी को अपने शब्दों पर अफसोस हुआ था।

"हमारा मतलब ये नहीं है। हमें लगा कि शायद तुम..." मुकुल ने बात संभालने की कोशिश की।

"और मैं कह रही हूँ कि ज्यादा सोचने की जरूरत ही नहीं है। मैं सुरक्षा का जिम्मा लेती हूँ और अपनी आखिरी साँस तक अपना फ़र्ज़ निभाऊंगी।" सृष्टि ने अपने इरादे स्पष्ट करते हुए कहा।

और उसके इस फैसले के आगे सभी नतमस्तक हुए थे। आखिर वो भी एक रक्षक थी और उसने अपनी योग्यता हर तरह से साबित की थी। बस लड़की होने की वजह से उसकी योग्यता पर शक करना कहीं से भी मुमकिन नहीं था। पर सामने परेशानी भी छोटी नहीं थी, जिसकी वजह से वो सब बीच में फँस गए थे।

"वो सब तो ठीक है। पर इस दानव से पार पाने का कोई तरीका भी सुझाई नहीं दे रहा है। मैंने सुना है कि ये दानव सामने वाले की ताकत चुराने में बहुत माहिर होते हैं। ख़ासतौर पर अपने जैसी शक्ति। अल्फ़ी और मैं इसके पास नहीं जा सकते। अगर जाएँगे तो ये हमारी शक्तियों को खींचकर और भी ताकतवर हो जाएगा। अगर गुस्से में और भड़का तो लावा कमरे से बाहर यहाँ तक आ सकता है और यही खतरा है। इस दानव से बस अनामिका पार पा सकती है क्योंकि ये दानव उसकी शक्तियों को हजम नहीं कर सकता। शायद इसीलिए अनामिका उस खंज़र को निकालने में कामयाब हुई थी। हम ऐसा नहीं कर सकते। आग को बस पानी ही बुझा सकता है।" मुकुल ने सामने खड़ी समस्या की व्याख्या करते हुए कहा।

"तो फिर क्या करें? अगर इसे अनामिका रोक सकती है तो उसे यहाँ लाना पड़ेगा और वो कोई भी जवाब नहीं दे रही है।" अल्फ़ी ने बहुत ही चिड़चिड़ेपन के साथ कहा।

"शायद मुझे पता है कि क्या करना है?" सबकी उम्मीद के विपरीत चैतन्य ने एक सकारात्मक जवाब दिया।

"क्या?" अल्फ़ी ने पूछा।

"आशुतोष जी! आप शिकंजे का ध्यान रखें। सृष्टि! तुम आशुतोष जी का ध्यान रखो। मैं और मुकुल इसे देखते हैं।" चैतन्य ने उस दानव की ओर देखते हुए मजबूत लहजे में कहा।

"ऐसा क्या करोगे?" अल्फ़ी ने पूछा।

"सोच लिया है कि क्या करना है। तुम जाओ अनामिका के पास! मुझे लगता तो नहीं.. फिर भी उसे

मदद लगे तो तुम देख लेना। जाओ! जल्दी जाओ! वो अभी भी रिस्पांस नहीं दे रही है।" चैतन्य ने अल्फ़ी को ढकेलते हुए फिक्रमंद लहजे में कहा। अल्फ़ी ने पीछे हटते हुए उन सभी की ओर देखा। सभी ने उसे जाने के लिए कहा। अल्फ़ी ने उन सभी पर एक-एक नज़र डाली। फिर उस दानव की ओर देखता हुआ तेजी से पीछे मुड़ा और दौड़ता हुआ बाहर निकल गया।
"तो क्या है प्लान? " मुकुल ने पूछा।

"दानवों के बारे में क्या जानते हो?" चैतन्य ने पूछा।

"वही जो बताया। ताकतवर होते हैं पर उतने ही बुद्धू भी। अपने जैसी ताकत को खींचने की ताकत। इसीलिए मैं और अल्फ़ी उसके सामने नहीं जा सकते। जीतने के चांसेज कम हैं हमारे।" मुकुल ने कहा।

"और ये मरेगा कैसे?" चैतन्य ने पूछा।

"इसके दिल पर प्रहार करना होगा। अब सोचो कितना मुश्किल है ये? ये पहले से ही बहुत शक्तिशाली था। अब गुस्से में इसकी ताकत और भी बढ़ रही है। अगर इसकी तपिश कम होती तो मैं ये काम कर सकता था।"मुकुल ने कहा।

"कितनी कम?" चैतन्य ने पूछा।

"मेरी अग्निशक्ति के आसपास!" मुकुल ने उसे हैरानी से देखते हुए कहा।

"हम्म! ठीक है। समझ गया!" चैतन्य चेहरे पर इत्मीनान लाते हुए बोला। वो अब काफी हद तक इत्मीनान में लग रहा था। जैसे कि फिर कोई जादुई चाबी मिल गई हो। उसके आत्मविश्वास से भरे चेहरे को देखते हुए मुकुल और सृष्टि जितने असमंजस में थे... आशुतोष उतने ही आश्वस्त नज़र आ रहे थे।

"सृष्टि! तुम अपने काम में लग जाओ। मुकुल! मैं इस आग के गोले को ठंडा करता हूँ। इसके बाद तुम्हें इस पर प्रहार करना है। पर ये याद रखना कि मौका दो या तीन ही मिलेगा। तीसरी कोशिश के बाद संभव नहीं है।"
चैतन्य ने अपनी योजना समझाते हुए कहा।

"पर पानी की शक्ति के बिना ये कैसे हो सकता है?" सृष्टि ने पूछा।

"क्यों? फूंक मारकर आग बुझाती हो या नहीं।" चैतन्य ने बहुत ही लापरवाही भरे लहजे में कहा।

"पर तुम्हें नहीं लगता कि इस आग को बुझाने के लिए तुम्हें कुछ ज्यादा ही बड़ी फूंक मारनी पड़ेगी। कर लोगे?" सृष्टि ने एक बार फिर अपनी बेयकीनी जाहिर करते हुए कहा।

"लगता है तुमने स्कूल में ध्यान से पढ़ाई नहीं की। कोई बात नहीं जिंदगी सीखने की बहुत से मौके देती है। आज एक सबक और! तुम देखोगी कि.... पानी के बिना भी आग बुझाई जा सकती है।" चैतन्य ने लगभग उसे चिढ़ाते हुए कहा।

उसके तंज भरे लहजे को सुनकर सृष्टि ने अपना मुँह टेढ़ा किया था, वहीं आशुतोष और मुकुल उसकी इस बात पर मुस्कुराए बिना नहीं रह सके। चुहल करता हुआ आत्मविश्वास से भरा चैतन्य वापस आ

गया था और ये जीत मिलने का सबसे पहला और मजबूत इशारा था। ऐसी हालत में सामने वाले का चैतन्य से पार पाना मुश्किल ही होता था।

"तो फिर जल्दी करते हैं।" चैतन्य ने अपनी तलवार खींचते हुए कहा और किसी का इंतजार किए बिना ही आगे बढ़ गया। उसे आगे बढ़ते देख मुकुल भी उसके पीछे बढ़ गया। सोचने का वक्त गुजर चुका था।

"अब इसका इंतजाम करते हैं।" चैतन्य ने लावे की गर्मी से टपकते अपने पसीने को समेटकर झटकते हुए कहा।
"और वो कैसे करेंगे?" तेजी से आगे बढ़ते हुए मुकुल ने पूछा।

"हवा में कार्बन डाइऑक्साइड का लेवल बढ़ाकर।" चैतन्य ने आगे बढ़ते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर मुकुल अपनी जगह रूका और चैतन्य की ओर देखने लगा। अब उसे चैतन्य की योजना समझ में आ गई थी। चैतन्य ने पीछे पलटकर एक नज़र मुकुल की ओर डाली, जो रूका हुआ उसी की ओर देख रहा था।

"क्या हुआ?" चैतन्य ने उसे देखते हुए पूछा।

"क्या तुम ये कर सकते हो?" मुकुल ने हैरानी से पूछा।

"मैं कौन हूँ? वायु-रक्षक! बहुत जरूरी होने पर ये भी कर सकता हूँ। तुम अग्नि की ताकत रखते हो, तो उसके पास... बहुत पास जा सकते हो। उसके पास जाओगे तभी तो उस पर प्रहार करोगे। आग को जलने के लिए ऑक्सीजन की जरूरत होती है। मुझे बस ये करना है कि यहॉ की हवा में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को बढ़ाना है, जिससे कि ऑक्सीजन कम होने से इस दानव की तपना कम हो जाए और फिर तुम उस पर आसानी से प्रहार कर सको। वैसे इससे तुम्हें भी प्रॉब्लम हो सकती है। इसीलिए तीन प्रहार में ही काम सही करने की कोशिश करना। याद रखना कि.... हम इससे चूक नहीं सकते। सो... बी केयरफुल!" चैतन्य ने अपनी योजना मुकुल के सामने खोलते हुए कहा।

"इसका मतलब है कि कांटे को कांटे से निकालना है। एक काम करो... तुम पीछे रहो। मैं आगे जाता हूँ। सामने होने पर वो तुम पर भी प्रहार कर सकता है।" मुकुल ने चैतन्य के सीने पर हाथ रखकर उसे पीछे करते हुए कहा।
चैतन्य ने उसके हाथ पर एक नज़र डाली और फिर उसकी ओर देखकर बोला, "बिल्कुल सही! पर तुम भी सही मौके पर ही सामने जाना। पहले मुझे अपना काम शुरू करने दो।"

"तो करो शुरू..... क्योंकि ये अब और भी झुंझलाने लगा है।" मुकुल ने उस दानव की ओर देखकर कहा जो अब और भी उग्र होने के बाद लावे के बहाव के साथ आगे बढ़ने लगा था। चैतन्य ने अपनी वायु-रक्षक वाली अंगूठी निकालकर मुकुल की ओर बढ़ा दी। मुकुल ने थोड़ी हैरानी से उसे देखा।

"अग्नि और वायु कभी-कभी सहयोगी भी हो सकते हैं। ये हवा के बदलते रूप से सामंजस्य बैठाने में तुम्हारी मदद करेगा। तुम्हें इसकी जरूरत पड़ेगी, जिससे तुम्हें सॉस लेने में कोई परेशानी ना हो। आखिर हम सबका ही शरीर इन पॉचों तत्वों से बना होता है।" चैतन्य ने उसकी तर्जनी में अपनी अंगूठी डालते हुए कहा, जिस पर मुकुल ने भी सहयोगात्मक रूप से सिर हिलाया।

इसके बाद चैतन्य ने पीछे मुड़कर आशुतोष और सृष्टि की ओर देखा। सृष्टि और आशुतोष पहले से ही सृष्टि के सुरक्षा घेरे के अंदर जा चुके थे, जहाँ आशुतोष ने एक बार फिर से अपनी आँखें बंद कर ली थीं। फिर वो उस दानव की नज़रों से बचकर एक कोने में बैठ गया। उसने अपनी तलवार एक ओर रखी और अपना खंज़र निकाल लिया। उसने अपने दोनों हाथ जोड़े और उस खंज़र को उन हथेलियों के बीच इस तरह रखा कि उसकी नोक ऊपर की ओर थी। मुकुल पास ही खड़ा बारी-बारी से चैतन्य और उस दानव की ओर देख रहा था, जो हर बढ़ते समय के साथ आगे बढ़ता जा रहा था। आगे बढ़ने के साथ-साथ उसकी बढ़ती हुई दहाड़ वहाँ की दीवारों को कँपकँपा रही थी।
कुछ ही देर बाद चैतन्य की हथेलियों के बीच दबा हुआ खंज़र धीरे-धीरे कंपित होने लगा और उसी के साथ उस खंज़र की नोंक के पास की हवा कुछ अलग ही तरीके से ऊपर उठने लगी। हालांकि वो दिखाई नहीं दे रही थी, मगर वहाँ मौजूद हवा की हलचल को साफ-साफ महसूस किया जा सकता था। कुछ ही देर में मुकुल ने हवा में बढ़ते दबाव को महसूस किया और ये बदलाव उसके लिए समस्या नहीं था। वो अपनी साँसें रोकर खुद को बदलती हुई परिस्थितियों के हिसाब से ढालने लगा, जिसमें चैतन्य की अंगूठी उसकी मदद करने वाली थी।

दूसरी तरफ बुरी तरह चिंघाड़ता हुआ अग्नि दानव चारों ओर अपनी लपटें फेंक रहा था। वो उन सबकी तलाश में अपने सामने आने वाली हर चीज को भस्म कर रहा था। धीरे-धीरे हवा में कार्बन-डाई-ऑक्साइड का स्तर बढ़ने लगा। चैतन्य को ऐसी किसी ऐहतियात की जरूरत नहीं थी। अब बचा मुकुल.. जिसे सबसे ज्यादा परिस्थितियों से तालमेल बिठाना था, ताकि उस दानव के सामने खड़ा रहकर वो उस पर सही तरीके से वार कर सके। उसने मन ही मन खुद को मजबूत किया और फिर दौड़ता हुआ उस दानव के सामने खड़ा हो गया। उसने अपनी गन पीछे की ओर छिपा रखी थी। फिलहाल गुस्से में भरा हुआ वो दानव उसको अपने सामने तनकर खड़ा हुआ देखकर और भी तिलमिलाया था।

"हमारा लक्ष्य... इसका दिल!" मुकुल मन ही मन बुदबुदाया।

उधर शिकार सामने देखकर वो दानव तेजी से उसकी ओर बढ़ा और उसकी यही तेजी उसकी गलती साबित हुई। मुकुल की ओर तेजी आगे बढ़ने पर ऑक्सीजन की खपत तेज हो गई। उसने तेजी से मुकुल पर अपने शोले उगलते हुए हाथ से वार किया, जिससे मुकुल बड़ी ही फुर्ती से बच निकला। मुकुल को सही-सलामत देखकर वो दानव और भी
बौखलाया। उसे इसकी जानकारी नहीं थी कि मुकुल भी अग्नि धारक था और यही रक्षकों के लिए लाभकारी सिद्ध होने वाला था। वो दानव मुकुल पर जितना भी वार करने की कोशिश करता, मुकुल उससे बच निकलता। इससे उस दानव के लिए ऑक्सीजन की खपत और भी बढ़ती गई, जिससे वो जल्द ही शिथिल नज़र आने लगा। उधर चैतन्य की वजह से हवा में कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ती जा रही थी, जिससे उस दानव के शरीर से निकलती हुई लपटें धीमी पड़ने लगी।

"मुकुल मैं इससे ज्यादा और नहीं कर सकता.. वरना तुम्हारे लिए परेशानी हो सकती है। अब तुम्हें किसी भी तरह से उस पर वार करना ही होगा।" चैतन्य चिल्लाया।

"जैसा कहो!" कहते हुए मुकुल ने अपनी गन उसकी तरफ करके फायर कर दिया। उसकी गन से निकली आग उस दानव से जाकर टकराई और फिर उसमें ही खो गई। मुकुल निशाना चूक गया था।

किसी विशाल वृक्ष की तरह हवा में डोलते उस दानव पर सही जगह पर वार करना आसान नहीं था। उधर उस दानव ने हैरानी से अपने शरीर के उस हिस्से को देखा, जिसने मुकुल का भेजा तोहफा कबूल कर लिया था।

"उप्स!" मुकुल के होंठों से निकला।

"उसके नजदीक जाने का कोई तरीका सोचो! तभी तुम सही वार कर पाओगे।" चैतन्य चिल्लाया।

"अच्छा! तो ये देखो! तुम्हें दिखाता हूँ कि दानव सच में बेवकूफ होते हैं।" मुकुल ने अपनी गन पीछे रखते हुए कहा और उसके सामने खड़ा हो गया। उस दानव ने उसे देखा तो लहराते हुए आगे आया और मुकुल को अपनी मुट्ठी में भींच लिया। मुकुल को इस तरह देखकर चैतन्य ने एक सिसकारी सी भरी। मगर दानव के इस काम से मुकुल मन ही मन मुस्कुराया। गुस्से में
भरा वो दानव मुकुल को अपनी ओर ऊपर उठाने लगा। इस दौरान मुकुल का सारा ध्यान उसके दिल वाले हिस्से में था। जैसे ही मुकुल उस हिस्से के पास आया.. उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए और उन्हें ज़ोर से झटका, जिससे उसके दोनों हाथ शोले उगलने लगे। मुकुल को इस तरह आग पैदा करते देख वो दानव बेवकूफों की तरह उसे देखने लगा। वो अभी उलझी हुई हालत में ही था कि तभी मुकुल का पूरा शरीर भड़क उठा और फिर उस दानव को हैरान करते हुए वो उसी की आग में घुल मिल गया। अब तो वो दानव हड़बड़ाते हुए पीछे हटा और अपने दोनों हाथों को झटकने लगा, मगर मुकुल उससे पहले ही अपनी जगह बदल चुका था। वो तेजी से उसके दिल की ओर बढ़ रहा था और वो दानव उसे अपने शरीर के हिस्सों में तलाशते हुए बुरी तरह से डोलने लगा। मगर मुकुल भी अपनी धुन का पक्का था। वो उसके शरीर से जोंक की तरह चिपक चुका था और अंत में उसके दिल के ऊपर जा बैठा। उसने अपना खंज़र निकाला और फिर सेकेंड की भी देरी किए बिना पूरी ताकत से उसके दिल में उतार दिया।

सही जगह पर वार होते ही उस दानव का शरीर एक बार फिर से भड़क उठा। वो कहते हैं ना कि दिया बुझने से पहले एक बार जोर से जलता है। शायद यहाँ भी वही हो रहा था। वो दानव एक बार फिर से शोलों के बीच बुरी तरह से झूलता हुआ उधर से उधर भाग रहा था। मुकुल ने बिल्कुल सही जगह प्रहार कर दिया था, मगर इससे एक समस्या और हो गई। भड़की हुई हालत में वो हर सामने पड़ने वाली चीज को भस्म करता जा रहा था और ये कहीं से भी सही नहीं था क्योंकि वो इस तरह से आशुतोष और सृष्टि की ओर बढ़ चुका था। हालांकि सृष्टि ने अपना सुरक्षा घेरा बना रखा था, मगर वो सब शिकंजे की सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं कर सकते थे।

"सृष्टि! कालछिद्र खोलो!" मुकुल तेज आवाज में चिल्लाया और उस दानव के शरीर से अलग होता हुआ बाहर की ओर कूद गया। सब सही ही लग रहा था.. कि तभी उस दानव ने मुकुल का पैर पकड़ लिया और उसे
अपनी ओर खींचने लगा। मुकुल ने खुद को बचाने के लिए पास ही दीवार में उभरे एक पत्थर का मजबूती से पकड़ लिया।

"सृष्टि! जल्दी करो।" वो एक बार फिर से चिल्लाया और उसकी बात मानते हुए सृष्टि सुरक्षा घेरे से बाहर आई और उसने एक झटके में अपने सामने कालछिद्र खोल दिया। अगले ही पल वो कालछिद्र उस जलते-बुझते दानव को अपने अंदर खींचने लगा। छिद्र की ओर खिंचते हुए भी उसने मुकुल का पैर पकड़ रखा था, पर इस बार मकसद खुद को बचाना था। उसकी पकड़ मुकुल के पैरों पर और भी कस गई थी। मुकुल ने खुद को बचाने के लिए उस पत्थर को मजबूती से पकड़ रखा था, मगर कालछिद्र और उस दानव दोनों की ही ताकत के सामने वो कमजोर पड़ने लगा। उसने ये बिल्कुल भी नहीं सोचा था कि

वो ऐसी विकट परिस्थिति में फँस जाएगा। चैतन्य भी तेजी से उसकी ओर आया, मगर मुकुल का शरीर उसकी पहुँच से बहुत ही ऊपर था।

"मुकुल! पकड़े रहना! मैं आ रहा हूँ!" चैतन्य ने हौसला बढ़ाने वाली आवाज में कहा और फिर उसने अपने दोनो हाथों को आगे लाकर ऊपर उठाने का इशारा किया। अगले ही पल हवा का छोटा सा भँवर उसे अपने अंदर लेकर ऊपर उठा। वो मुकुल का हाथ पकड़ने को ही था कि तभी एक ही झटके में मुकुल का हाथ छूटा और वो उस दानव के साथ उस कालछिद्र के अंदर चला गया। अगले ही पल कालछिद्र भी बंद होकर गायब हो गया।

एक ही पल में जैसे सब कुछ बदल गया। सृष्टि ठगी हुई सी अपने हाथों को देख रही थी, वहीं चैतन्य ऑख और मुँह फाड़े उस जगह को घूर रहा था, जहॉ वो कालछिद्र उनके साथी को भी निगल गया था। कुछ पल तो चैतन्य की समझ में कुछ नहीं आया और फिर जब दिमाग का हिलना बंद हुआ तो वो तुरंत नीचे उतरकर सृष्टि की ओर भागा।

"सृष्टि! वापस निकालो उसे। तुरंत!" चैतन्य बौखलाई हुई हालत में उसके
कंधे पकड़कर झिंझोड़ते हुए बोला।

और उसकी बात सुनकर सृष्टि ने उतनी ही तेजी से अपना सिर हिलाया और अपने होंठों पर ज़बान फेरते हुए अपने हाथों की ओर देखा। अभी वो आगे कुछ करती उससे पहले ही बाहर की ओर से आने वाली आहटों की ओर उनका ध्यान चला गया। वो दोनों एक बार फिर से चौकन्ने हुए। आक्रमण की मुद्रा में खड़े चैतन्य और सृष्टि को झटका लगा, जब उन्होंने वरूण और अंकित को अंदर आते देखा। वो दोनों भी बुरी तरह से घायल दिखाई दे रहे थे। चैतन्य और सृष्टि उनकी ओर बढ़े ही थे कि तभी उनके पीछे थकी हुई हालत में आती हुई अनामिका दिखाई दी। उसकी हालत देखकर चैतन्य और सृष्टि दोनों की ही ऑखें आखिरी हद तक फटी गईं। वो सिर से पैर तक खून में नहाई हुई थी। उसे इस तरह देखकर चैतन्य बिजली की तेजी से उसकी ओर गया।

"अनु!" उसने अनामिका को पुकारा। मगर अनामिका उसे नज़रअंदाज़ करती आगे बढ़ गई। चैतन्य ने हैरानी से उसकी ओर देखा और फिर बाहर से आती आवाज को सुनकर पलटकर उस ओर देखा। अल्फ़ी आ रहा था। उसका चेहरा नफ़रत की इंतेहा से तप रहा था। वो अपने हाथ में कुछ खींचकर ला रहा था। जब वो चैतन्य के पास पहुँचा तो चैतन्य ने देखा कि वो एडवर्ड था, जिसके क्षत-विक्षत शरीर को अल्फ़ी बेदर्दी से घसीटते हुए ला रहा था। आश्चर्यजनक रूप से उसकी सॉसें अभी भी चल रही थीं। अनामिका एक जगह पर जाकर घुटनों के बल गिर पड़ी। एडवर्ड के शरीर को वहीं फेंकता हुआ अल्फ़ी तेजी से अनामिका की ओर गया और उसके पास बैठकर उसे संभालने लगा। अनामिका उसकी ओर देखकर रोने लगी। अल्फ़ी ने उसे संभालने की कोशिश की तो वो उससे लगकर और भी ज्यादा फूट-फूट कर रोने लगी। दूर खड़े चैतन्य की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। सब समझने की गरज से वो तेजी से वरूण और अंकित की ओर गया, जो खुद भी सदमे में नज़र आ रहे थे। एक युद्ध खत्म होने को था और एक शुरू होने वाला था। कहानी रंग बदल रही थी।(Note- ये पूरा दृश्य उसी समय की घटना है, जब दूसरी ओर चैतन्य, अल्फ़ी और साथी शिकंजा बनाने की प्रक्रिया में लगे थे। कन्फ्यूज ना होएं !)

चैतन्य और साथियों के खंज़र वाले कमरे में पहुँचने की खबर के बाद अनामिका ने अब अपना मोर्चा संभाला। समय बीत रहा था और इस एक घंटे में ही सब सही करना था। अल्फ़ी ने उसे बताया था कि एडवर्ड जितना अपने आप को दिखाता था, वो वास्तव में उतना ताकतवर था नहीं। इसीलिए उसका

और भी ताकतवर बनने का लोभ सबकी जिंदगियों को उथल-पुथल कर गया था। हर बढ़ते लम्हे उस नीच प्राणी से अनामिका की नफ़रत बढ़ती जा रही थी।

"तुम्हें लगता है कि तुम हेममाया को अपने ढंग से रंग लोगे और हेममाया को तुम्हारे साथ देखकर अल्फ़ी तड़प जाएगा, तो वो तुम्हारी भूल है। जो उसकी हेममाया होगी ही नहीं.. उसके लिए तड़प कैसी? तुम जैसे लोग रिश्तों को शरीर में बांधते होंगे... पर जो प्रेम करते हैं वो आत्मा से आत्मा
को पहचान लेते हैं और ये तुम नहीं समझ सकते, जिसकी आत्मा ना जाने कबका मर चुकी है।" अनामिका, एडवर्ड पर तंज कसते हुए बोली।

"प्रेम! प्रेम! प्रेम! कितना राग अलापते हो तुम सब इसका? आखिर मिलता क्या है तुम सबको इससे? मैंने तो आज तक नहीं देखा किसी को खुशी मिलते। ना तो अल्फ़ी को... ना तो हेममाया को और ना ही उन दोनों के माता-पिता को। बेचारे सब घुट-घुट कर जिए और घुट-घुट कर मरे। क्या फायदा ऐसे प्रेम का... जो पल भर की खुशी भी ना दे सके।" एडवर्ड पलटकर चिल्लाते हुए बोला।

"कहा ना! तुम नहीं समझोगे!" अनामिका ने उसकी बात को हवा में उड़ाते हुए कहा।

"इतना कुछ कहा... इतना कुछ बताया... पर घमंड गया नहीं तुम्हारा! कोई बात नहीं... मैंने तो सोचा था कि मेरी ताकत और चालाकी का बखान तुम्हें मेरे कदमों में ला देगा... पर ढीठ हो बहुत। पर ये बता दूं कि तुमसे पहले भी ऐसे ही एक ढीठ से मिला था। वो भी बहुत प्रेम! प्रेम करता था। जब मरा तो कोई नहीं था साथ। जब वो नहीं टिका... तो तुम क्या ही कर सकती हो मामूली सी लड़की।" एडवर्ड पुरानी यादों में जाते हुए बोला।

"ढीठ! मेरे जैसा! किसकी बात कर रहे हो?" अनामिका ने समझने की नाकाम कोशिश करते हुए पूछा।

उसके चेहरे पर सवालों के उलझे जालों को देखकर एडवर्ड मुस्कुराया और फिर उसके नजदीक आकर उसके कान के पास फुसफुसाया, "वही! महान... तांत्रिक श्रेष्ठ... देवेन्द्र!"

और ये सुनते ही अनामिका अपने आवाक् चेहरे के साथ उसकी ओर मुड़ी, जैसे कि उसके शब्दों की सच्चाई परख रही हो।
"सही सुना तुमने! एक कहानी वो भी है। पर अफसोस... सुनने के लिए तुम्हारे पास समय नहीं है क्योंकि तुम्हें जाना होगा अनामिका। हेममाया को वापस लाना है, तो उसे सामने आना होगा। तो फिर तैयार हो जाने के लिए।" कहकर एडवर्ड ने अपना खंज़र निकालकर धोखे से बिजली की फुर्ती से अनामिका पर हमला किया।

मगर अनामिका पहले से ही सावधान थी और उसकी पकड़ अपने कपड़ों में छिपे खंज़र पर पहले से ही मजबूत थी। जैसे ही एडवर्ड ने उसके ऊपर खंज़र चलाया वो तेजी से पीछे पलटी और अपने खंज़र को अड़ाकर एडवर्ड के प्रहार को रोका। एडवर्ड ने अपनी पूरी ताकत लगाकर अनामिका के खंज़र को रास्ते से हटाना चाहा। उसी समय अनामिका ने अपने बाएँ पैर को एडवर्ड के दाहिने घुटने के पीछे फँसाते हुए उसे पूरी ताकत से झटका देते हुए जमीन पर पटक दिया। एडवर्ड इस अचानक हमले के लिए तैयार नहीं था। वो पीठ के बल गिरने से दर्द से बिलबिला उठा। अनामिका उसके सीने में अपना एक घुटना टिकाकर बैठ गई और उसकी गर्दन में खंज़र टिकाकर बोली, "क्या कहते हो? उड़ा दूं गर्दन?"

और ये सुनते ही डर की बजाय एडवर्ड के चेहरे पर एक धूर्त मुस्कान उभरी, जिसे देखकर अनामिका के

माथे पर बल पड़े। अनामिका को उलझाकर अगले ही पल उसने एक अजीब सी सीटी जैसी आवाज निकाली। उस आवाज को सुनकर अनामिका का ध्यान दूसरी ओर चला गया, जिससे एडवर्ड को उसके चंगुल से बाहर निकलने का मौका मिल गया। उसने तेजी से अनामिका के कमर पर अपने हाथ जमाए और उतनी ही तेजी से करवट बदलता उसे अपने नीचे दबोच लिया। एक पल के लिए अनामिका हड़बड़ा गई... क्योंकि उसका खंज़र उसके हाथ से छिटक गया था। उसने पूरे गुस्से से दाँत पीसते हुए एडवर्ड की ओर देखा, जो उसकी ओर देखकर कमीनगी के साथ मुस्कुरा रहा था, जैसे बाजी पलटने की खुशी मना रहा था। मगर मासूमों का शिकार करते-करते वो भूल गया
था कि अनामिका मासूम नहीं..... बल्कि उसकी सोच से कहीं ज्यादा तेज-तर्रार थी।

वहीं दूसरी ओर सारी घटना पर नज़र रखे हुए वरूण और अंकित ये देखकर हरकत में आए। अंकित ने अपनी गन का पॉइंट एडवर्ड की ओर किया... तो वरूण ने भी तीरों से भरा एक आधुनिक कमान अपने हाथों में ले लिया। वो दोनों वार करने ही वाले थे कि तभी अनामिका ने उन्हें चौंकाते हुए अपना अगला वार कर दिया। उसने अपना घुटना उठाकर एडवर्ड के पैरों के बीच तेज प्रहार किया, जिससे एडवर्ड बुरी तरह से तड़पते हुए उससे दूर हुआ था। अनामिका तेजी से खड़ी हुई और लपककर अपना खंज़र उठाया। अनामिका को सुरक्षित देखते ही अंकित और वरूण की ट्रिगर पर कसती ऊंगलियाँ ढीली हुई थी, पर उन्होंने अपने हथियारों का पॉइंट बदला नहीं था। वो अभी भी हमले के लिए पूरी तरह से तैयार थे।

अनामिका अपने जबड़े कसते हुए एडवर्ड के तड़फड़ाते शरीर के पास पहुँची और उसे बहुत ही नफ़रत से देखने लगी।

"बस इतनी ही ताकत है!" अनामिका ने मजाक उड़ाते अंदाज में कहा और उसका ये लहज़ा एडवर्ड को अंदर तक चीर गया। वो एक लड़की से नहीं हार सकता था। उसने तेजी से अपना सीधा हाथ अनामिका की ओर फेंका, जिससे आग का एक गोला तेजी से अनामिका की ओर आया, जिसे अनामिका ने फुर्ती से एक ओर होकर जाने दिया।

"देख क्या रहे हैं हम लोग? अभी मार देते हैं उसे।" अंकित एडवर्ड के हमलों से तिलमिला कर बोला।

"नहीं! चैतन्य ने कहा था कि हमें अनामिका के इशारे तक रूकना है। इन सबसे तो वो खुद ही निपट सकती है। कुछ तो पकाया है इन दोनों ने! अब
हम कोई बेवकूफी करके इतनी मेहनत बर्बाद नहीं कर सकते।" वरूण ने अंकित को टोकते हुए कहा।

"ओके! मैं तो बस जल्दी सब खत्म करने की सोच रहा था।" अंकित ने अपना नज़रिया रखते हुए कहा, जिसके जवाब में वरूण मुस्कुराया था।

उधर एडवर्ड के अग्निप्रहार से बचने के बाद अनामिका ने उस पर पलटवार करने के लिए बिना देरी किए अपनी जल शक्ति का आह्वान किया और पास ही पड़ा पानी का पात्र हलचल करने लगा। अनामिका ने उस पानी की ओर इशारा करके अपने पास बुलाया, जिससे वो पानी एक रस्सी की शक्ल में उसकी ओर तेजी से आया और फिर अनामिका ने झटके से उसे एडवर्ड की ओर मोड़ दिया। अगले ही पल एडवर्ड उन जलरज्जुओं (पानी से बनी रस्सी) में बुरी तरह से उलझ गया और उनसे छूटने के लिए छटपटाने लगा।

उसके दोनों हाथ भी उनकी मजबूत गिरफ्त में क़ैद थे, इसलिए वो चाहकर भी कुछ नहीं कर पा रहा था। उनकी गिरफ्त से छूटने के लिए वो जितना छटपटाता.... वो जल रज्जु उसे उतनी ही तेजी से झटके देने लगते, जिससे वो शिथिल होने लगा। मुस्कुराहट अनामिका के होंठों पर उतरी। वहीं बुरी तरह छटपटाता हुआ एडवर्ड कुछ लम्हे को शांत पड़ा था। अनामिका के साथ-साथ वरूण और अंकित भी पूरी तरह चौकन्ने थे। मगर वो भी एडवर्ड था, जो अपनी हर अगली चाल से सामने वाले को हर ऐहतियात के बाद भी बुरी तरह से चौंकाता था। उसके शांत पड़ने पर वो सब उसकी अगली कार्यवाही के इंतजार में ही थे कि तभी उसने एक के बाद एक यानि दो बार वही अजीब सी सीटी की आवाज निकाली।

उसकी इस हरकत से अनामिका इधर-उधर देखते हुए दो-तीन कदम पीछे हुई। उसने अपनी नज़रें चारों ओर घुमाई। कहीं कुछ भी नहीं था, मगर हवा में सरसराहट की आवाजें धीरे-धीरे साफ होती जा रही थीं। उन तीनों को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर हमला होने कहॉ से वाला था? और इन्हीं सब में अनामिका का ध्यान एडवर्ड से हट गया, जिससे उन जलरज्जुओं को तोड़ते हुए वो आजाद हो चुका था। उसके नीचे गिरने से हुई आवाज पर अनामिका ने उसकी ओर देखा। अपने हाथों को झटकते हुए वो चेहरे में सख्ती लिए खड़ा हुआ और फिर उन बढ़ती आवाजों के बीच चिल्लाकर बोला,

"इसे लेकर आओ!"
और उसके इतना कहते ही कोई चीज अनामिका के ऊपर कूदी। अनामिका इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थी क्योंकि उसने चारों ओर अच्छी तरह से देखा था। वहॉ कुछ भी नहीं था.. कोई भी नहीं था। वो जो भी था.. उसने अनामिका को पीछे से पकड़ लिया था। उसके बाजू अनामिका की गर्दन पर लिपटे हुए थे और पलकें झुकाकर देखने पर अनामिका को कुछ अजीब सा अहसास हुआ, जैसे कि वो कोई जीती-जागती चीज ना हो। उसके बाजू बहुत ही ठंडे थे। अनामिका उसके चंगुल से छूटने की कोशिश कर ही रही थी कि तभी एक फायर की आवाज आई और अपनी गर्दन पर ढीली पड़ती पकड़ के साथ अनामिका ने अपने सिर के पीछे राख सी उड़ती देखी। अब वो आजाद थी। उसने तेजी से फायर की दिशा में देखा। अंकित अपनी धुआं निकलती गन के साथ अभी भी शूटिंग पोजिशन में निशाना लगाए खड़ा हुआ था। साथ ही वरूण भी अपने तीर-कमान संभाले उसे निशाने पर लिए हुए था।

अनामिका के होंठ उनकी मददगार मौजूदगी पर मुस्कुराए और फिर उसने सामने खड़े एडवर्ड की ओर देखा, जो अपनी एक भौंह चढ़ाए उन दोनों को देख रहा था। अंकित की ऑखों के सामने आदित्य के रूप में एडवर्ड की यादें आईं और इसी के साथ उसके भाई के लहूलुहान शरीर की याद भी उसके दिमाग की नसों को तानती चली गई। उसने अपने दॉतों को पूरी ताकत से भींचा और फिर एडवर्ड पर फायर कर दिया। सेकेंड के सौंवे हिस्से में ही वो गोली एडवर्ड के सामने थी, मगर वो उसे कुछ नुकसान पहुँचा पाती, उससे पहले ही एक अजीब सा प्राणी एडवर्ड के सामने आ गया और उस गोली से उसके शरीर के परखच्चे उड़ गए। ये नज़ारा देखकर अनामिका की ऑखें हैरत से फटी थीं। उसने तेजी से चारों ओर नज़रें घुमाई। कहीं कुछ भी नहीं था, तो ये प्राणी आ कहॉ से रहे थे? अंकित और वरूण ने भी हैरान ऑखों से देखते हुए अपने हथियार नीचे किए और ऊपर छत की ओर देखने लगे। वहॉ ऐसा कोई रास्ता नज़र नहीं
आ रहा था, जहॉ से कोई भी अंदर आ सकता था।

"सब साफ़ करके लड़की को मेरे पास लाओ!" एडवर्ड चारों ओर देखते हुए पूरे तैश में चिल्लाया। एक बार फिर से बाजी पलटने का डर उस पर हावी होने लगा था।

उन दोनों को वहाँ देखकर उसे समझ आ गया था कि उसके साथ धोखा किया जा चुका था। आज की रात का पिछले 200 सालों से इंतजार किया था उसने और आज वो अपनी योजना को किसी भी तरह से नुकसान पहुँचाने के मूड में नहीं था। अपनी बात कहकर वो एक ओर बढ़ गया। अनामिका ने तेजी से उसकी ओर कदम बढ़ाए तो उसके सामने एक बार फिर से वही अजीब सा प्राणी आ टपका। अनामिका ने उसे अपनी बड़ी-बड़ी ऑखों को और भी फैलाकर देखा। वो धूल-मिट्टी-राख और ऐसी ही चीजों का मिला-जुला उत्पाद लग रहा था। उसकी ऑखें अंगारे की तरह दहक रही थी।

अनामिका ने बिना सिर घुमाए बस नज़र घुमाकर अंकित और वरूण की
ओर देखा तो वैसे ही दो और प्राणी उनके सामने भी खड़े हुए थे। अंकित और वरूण ने अपने हथियार एक बार फिर तान लिए। अनामिका ने भी अपना खंजर गर्दन तक आक्रामक मुद्रा में उठा लिया। वो दोनों ही सामने वाले की प्रतिक्रिया का इंतजार कर रहे थे।

उसी समय एडवर्ड आगे बढ़ता हुआ एक दीवार के सामने रुका और फिर उसने अपने हाथों के इशारे से उस दीवार को ऊपर की ओर उठाया। उसे दीवार के पीछे पिशाच देव की एक विशालकाय गगनचुंबी मूर्ति रखी हुई थी। उनके सामने पत्थर की एक मेज रखी हुई थी, जो कई सालों से खून पी पीकर काली पड़ चुकी थी और उसके भी सामने एडवर्ड की साधना के सारे सामान पड़े हुए थे। एडवर्ड ने पिशाचदेव की मूर्ति के सामने जाकर अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए और फिर अजीब सी भाषा में कुछ जोर-जोर से पढ़ने लगा।

मंत्र खत्म होते ही उसके शरीर में जोरों से कंपन होने लगी और फिर उसके शरीर से एक और शरीर बाहर निकला, जो हू ब हू उसी के जैसा था। वो उससे एक निश्चित दूरी बनाकर खड़ा हो गया। इसके बाद एक-एक करके वैसे ही और तीन शरीर बाहर निकले और अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो गए। अब एडवर्ड अपने बाकी चार प्रतिरूपों के साथ खड़े होकर जोर-जोर से कुछ दोहराने लगा। साधना शुरू हो चुकी थी।

वहीं दूसरी तरफ समय के गुजरने का अहसास होते ही अनामिका ने अपने सामने खड़े उस शैतान पर हमला कर दिया। उनके हमले का इंतजार करके वो अपना समय ही खराब कर रहे थे। अनामिका को हमला करते देखा वरुण और अंकित ने भी सामने खड़े शैतानों पर हमला कर दिया। अंकित और वरुण ने तो दूर से ही उन दोनों को उड़ा दिया। मगर अनामिका को अपने सामने खड़े शैतान से अपने खंजर से ही लड़ना पड़ रहा था और ये यकीनन बहुत ही मुश्किल काम था। लेकिन अपने धुन की
पक्की अनामिका ने कुछ कलाबाजियां दिखाते हुए उस शैतान को छकाया और फिर उसके पीछे जाकर उसके दिल वाले हिस्से में अपना खंजर पूरा का पूरा घुसा दिया। वो शैतान कान फाड़ू अंदाज में चिल्लाया और फिर एक विस्फोट के साथ उसका सारा शरीर उड़ गया। वो तीनों अपनी सफलता पर मुस्कुराए ही थे कि अचानक उनके चारों ओर से तेज-तेज सरसराहट की आवाजें आने लगीं और इस बार वो ज्यादा स्पष्ट और तेज थीं। उन तीनों की नज़रे इस बार जब घूमी तो उनका दिमाग भी पूरी तरह से घूम गया।

उस कमरे की दीवारों में हलचलें होने लगी थीं। ऐसा लग रहा था जैसे कि उन दीवारों के पीछे ऐसा कुछ है जो उसे फाड़ कर बाहर आने की कोशिश कर रहा हो। उन तीनों ने चारों ओर देखा तो उसे कमरे की सारी दीवारें उन्ही हलचलों से भरी हुई थीं और देखते-ही-देखते दीवारों पर उस तरह के अनगिनत शैतानों की आकृतियॉ दिखाई पड़ने लगीं।

वो तीनों समझ गए थे कि इस बार सामने से आक्रमण बहुत बड़ा होने वाला था, जिससे पार पाने के बाद ही वो एडवर्ड तक पहुँचकर उसे रोक सकते थे। मगर उन्हें ये करना ही था। वरुण और अंकित के हथियार तो बड़े हमलों को झेलने में कारगर थे, पर अनामिका का खंजर इसके लिए पर्याप्त नहीं था।
"अनामिका! तुम्हें कुछ और चाहिए।" वरुण चिल्लाकर बोला।

"अभी लो!" अनामिका भी पूरे तैश में बोली और फिर उसने अपने खंज़र का रुख पास ही पड़े पानी के पात्र की ओर किया। उसके खंजर के इशारे से उस पात्र का पानी ऊपर हवा में उठने लगा और फिर एक ही झटके में वो पानी अनामिका के सिर के ऊपर आकर बादलों की तरह छा गया। अनामिका ने अपने खंजर को दोनों हाथों से पकड़ कर अपने सिर के ऊपर इस तरह उठा रखा था, जैसे कि वो पानी उसी के इशारे पर रुका हुआ हो। एक हल्की सी मुस्कान अनामिका के होठों में हरकत लाई और फिर वो पूरा पानी एक तेज बौछार बनकर अनामिका के ऊपर गिर पड़ा। अंकित और वरूण दोनों ने ही देखा कि पानी की उस बौछार से नहाकर जब वो खंजर बाहर निकला, तो वो एक तलवार बन चुका था।
"भाई वरूण! आज सच में तुम्हारे लिए बहुत अच्छा फील हो रहा है।" ऑखें फाड़े सामने की ओर देखते हुए अंकित बोला।

"वो क्यों?" वरूण ने भी सामने देखते हुए पूछा।

"क्योंकि तुम बच गए ना! इस आफत को तो... वही बावला वायु-रक्षक ही संभाल सकता है।" अपनी बात खत्म कर अंकित ने अपने सूखते गले को गीला किया और फिर धीरे से अपनी मुंडी वरूण की ओर घुमाई, जो उसकी ये बात सुनने के बाद उसे खा जाने वाली नज़रों से घूर रहा था।

"काम कर अपना!" वरूण ने उसे बुरी तरह घुड़का।

अनामिका ने अपनी तलवार हाथों में कसकर पकड़ी और अब वो शिकार के इंतजार में थी। अंकित और वरुण ने भी अपनी पोजीशन संभाल ली थी।

और फिर उन दीवारों से शैतानों का जैसे एक रेला सा फूट पड़ा। वरुण और अंकित ने आपस में अपनी पीठ जोड़ी और फिर उसी हालत में धीरे-धीरे गोल घूमते हुए बिना रुके उनकी और दौड़कर आते हुए शैतानों पर वार करने लगे। कुछ ही देर में हवाओं में उन शैतानों के चिथड़े उड़ रहे थे। इस बीच कुछ शैतान उनके वारों से बचते हुए उनके पास आ गए। वरूण ने अपनी कमान फेंकी और एक बार फिर अपना चाबुक बाहर की ओर निकाल लिया। अब तो मंज़र ये था कि अंकित अपने फायर से दूर से आते सारे शैतानों की खोपड़ियॉ उड़ा रहा था और वरूण पास पहुँच चुके शैतानों के शरीर को अपने चाबुक के प्रहार से धुआं बनाकर उड़ा रहा था। चारों ओर चिल्ल-पों मच चुकी थी। हालांकि तादात में वो शैतान बहुत ज्यादा थे, मगर वरूण और अंकित का दोहरा वार उन पर पूरी तरह से भारी पड़ रहा था।

उन दोनों को पता था कि आज अगर चूके, तो सब कुछ खो देंगे।

दूसरी ओर दीवार से निकलते उन शैतानों का इंतजार करती अनामिका अपने रौद्र रूप में आ चुकी थी। उसकी रक्षक तलवार उन शैतानों का काल बन चुकी थी। वो संख्या में भले ही ज्यादा थे, पर अनामिका की जल शक्ति हर पल उन पर हावी थी। अपने आसपास के शैतानों को निपटने के बाद अनामिका ने देखा कि उन दीवारों से उन शैतानों का निकलना बदस्तूर जारी था। उनकी इस हरकत से अनामिका को चिढ़ सी हुई। उसने हवा में उठाकर अपनी तलवार चलाई तो उसे तलवार की धार पानी की एक लहर अपने साथ ले आई। उसने बहुत तेजी से उसे तलवार को गोल-गोल घूमना शुरू कर दिया, जिससे वहॉ पानी का एक तूफान सा आ गया, जो जाकर उसके पास की सभी दीवारों से जा टकराया। उस तूफान के टकराते ही एडवर्ड की जादुई ताकत से तपती वो दीवारें ठंडी पड़ गईं और वो सारे शैतान उस पानी में घुलकर ढह गए। अनामिका के लिए मैदान खाली हो चुका था। उसने वरूण और अंकित की ओर देखा तो वो अभी भी ढेर सारे शैतानों से उलझे हुए थे। अनामिका उनकी मदद करने के लिए आगे बढ़ी ही थी कि वरुण जोर से चिल्लाया।

"अनु! अंदर जाओ! उसे रोको! इन्हें हम संभाल लेंगे। जल्दी जाओ! समय कम है।"

उसकी बात सुनकर अनामिका ठिठक कर रुकी थी। वरुण सही कह रहा था उनके पास समय कम था। एडवर्ड को हर हाल में रोकना ही था। वो
अभी उस ओर उन दोनों को देख ही रही थी, कि तभी उसने बाहरी दरवाजे की ओर से अल्फी को अंदर आते देखा। उसे देखते ही अनामिका की हिम्मत सौ गुनी बढ़ गई।

"अल्फी! इन सब को संभालो। मैं एडवर्ड को देखती हूँ।" अनामिका जोर से चिल्लाकर अल्फी से बोली।

अल्फ़ी ने एक नजर अनामिका पर डाली और फिर वरुण और अंकित की हालत पर गौर करता हुआ मदद के लिए उनकी ओर बढ़ गया। उसने अपने सामने आए दो शैतानों को उनकी गर्दन से पकड़ा और फिर उनके सिर टकराते हुए एक ही झटके में उनकी गर्दन उखाड़ दी। उनके शरीर को जमीन में फेंक कर वो आगे बढ़ा और फिर कमर में लटकी अपनी तलवार खींच ली। उसने अपनी तलवार हवा में लहराई और फिर एक तेज चिंघाड़ के साथ उन शैतानों के बीच घुस गया। अगले ही पल उन सभी शैतानों के शरीर कट-कटकर हवा में उड़ने लगे। वो शैतान वरुण और अंकित से ही पार नहीं पा रहे थे, ऊपर से अल्फ़ी का हमला उनके लिए सब खत्म कर गया। कुछ ही देर में वह तीनों ही धूल और धुएं के गुबार से लिथड़े पड़े थे। इस लड़ाई में जहॉ उन्होंने दुश्मनों के शरीर की चटनियां बनकर बिखेर दीं, वहीं उन दोनों को भी बहुत चोटें लग चुकी थीं। अल्फ़ी के आने से यकीनन उन्हें राहत महसूस हुई थी। अल्फ़ी अकेला ही उन सभी पर भारी दिखाई पड़ रहा था। चारों ओर हाहाकार मचाने के बाद अल्फ़ी ने एक तेज आवाज के साथ अपनी तलवार जमीन में गाड़ दी, जिससे जमीन में आग की एक लहर सी फैली और फिर एक तेज विस्फोट के साथ सब शांत हो गया। हवा में उड़ते धूल, धुऍं और कटे-फटे शरीरों के बीच वो काल का दूसरा रूप लग रहा था। एक ओर गहरी सॉसें लेते खड़े वरूण और अंकित उसे ही एकटक देख रहे थे।
"एक बात बोलूं भाई!" अंकित हॉफते हुए बोला।

"क्या?" गहरी सॉसें लेते हुए वरुण ने उसकी ओर देखा।

"तुम्हारी आफत को ये भी संभाल सकता है। वैरी टफ कॉम्पिटिशन!" अंकित ने वरूण के कंधे पर अपनी कोहनी रखते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर वरूण का चेहरा बुरी तरह बिगड़ा और उसने झटके से अंकित की कोहनी अपने कंधे से गिराई। नाराज़गी उसके चेहरे पर साफ दिखाई दे रही थी। जल्द ही उन लोगों ने मैदान फतह कर लिया था। अल्फ़ी ने बेचैनी से उस ओर देखा, जिस तरफ अनामिका गई थी और फिर उसने उस और तेज दौड़ लगा दी। वरुण और अंकित फिलहाल वहीं बैठ गए थे क्योंकि शैतानों की लाशों की ढेर के बीच कहीं पर कुछ हलचलें अभी भी दिखाई पड़ रही थीं।

◆अभिशप्त: भाग 165 - अलविदा

(Note- ये पूरा दृश्य उसी समय की घटना है, जब दूसरी ओर चैतन्य और साथी अग्निदानव से जूझ रहे थे। कन्फ्यूज ना होएं !)

अनामिका उन शैतानों से पीछा छुड़ाकर जब एडवर्ड के पास पहुँची, तब वो अपनी साधना में लीन था। उसके साथ वहाँ चार और लोग मौजूद थे, जो उसी का प्रतिरूप थे। अनामिका को उसकी ये चाल समझ में नहीं आ रही थी और उसे ये भी समझ में नहीं आ रहा था कि वो उसे कैसे रोके?

अनामिका दबे पॉव उसकी ओर बढ़ रही थी और तभी पहली बार उसने एक बात नोटिस की। एडवर्ड की इंद्रियॉं... ख़ासतौर पर छठी इंद्री सुप्त थी। उसे बहुत समय से लग रहा था... कि एडवर्ड में कुछ तो बहुत अजीब
है। पर क्या? वही समझ में नहीं आ रहा था। वो एक वैम्पायर था, जिसके सेंसेज बहुत ही तीव्र होते हैं। पर एडवर्ड में ऐसा नहीं था। तो क्या यही वो वजह थी, जिसके कारण वो अब पहले की तरह शक्तिशाली नहीं था। पर अगर ऐसा है.. तो आखिर ये हुआ कैसे?

मन में ढेरों सवाल लिए वो उसकी ओर बढ़ी। हाथों में खंज़र कसा हुआ था। धीरे-धीरे बढ़ती हुई वो उनके पास पहुँची, तो उसने देखा कि वहाँ मौजूद पॉचों में जहाँ एक पूरी तरह से स्थूल(solid) दिखाई दे रहा था, वहीं बाकी के चार किसी रंगीन धुएँ से बनी आकृति के समान लग रहे थे।

"ये क्या अजूबा है?" अनामिका ने आश्चर्य से उन सबको देखते हुए मन ही मन कहा।

पूरी तरह से चौकस अनामिका अपने एक-एक कदम फूंक-फूंक कर आगे रख रही थी। वो किसी जल्दबाजी की वजह से सब कुछ बर्बाद नहीं करना चाहती थी। सबसे पहले तो उसके मन में यही जिज्ञासा थी कि... वो कर क्या रहा था? उसने कुछ देर धैर्य रखने का फैसला किया, ताकि सामने हो रही चीजों को समझ सके.. ताकि उस पर प्रहार भी उसी के मुताबिक किया जाए।

साधना में लीन एडवर्ड जोर-जोर से कोई मंत्र पढ़ रहा था। उसके साथ बैठे उसके प्रतिरूप एकटक नीचे एक पॉइंट की ओर देख रहे थे। अनामिका ने उस पॉइंट की ओर देखा तो उसकी आँखें हैरत से फैल गईं। वहाँ खून से सनी हड्डियाँ रखी हुई थीं। वो आखिर उनसे कर क्या रहा था? और फिर उसके जवाब मिलने का समय भी आया, जब उसने एडवर्ड के शरीर से एक सुनहरे-लाल बिंदु को निकलकर उन हड्डियों में जाते देखा। वो इसे समझने की कोशिश कर ही रही थी कि तभी उसके बाईं ओर के प्रतिरूप से उसी तरह सफ़ेद रंग का बिंदु निकलकर उन हड्डियों की ओर बढ़ गया। इसके बाद उसके बाईं ओर के प्रतिरूप से नीला बिंदु, फिर उसके बाईं ओर
के प्रतिरूप से हरे रंग का बिंदु निकलकर उन हड्डियों में समा गया और अनामिका के दिमाग ने क्लिक किया... कि आखिर हो क्या रहा है? वो अपनी आत्मा के पंचतत्वों की मदद से हेममाया के शरीर को फिर से बना रहा था। वो सच में हेममाया को वापस ला रहा था! पर अपने लिए!

उसने एक नज़र बाहर की ओर डाली, जहाँ अल्फ़ी उन शैतानों से भिड़ा हुआ था। उसे पता ही नहीं था कि एडवर्ड उस पर कौन सा सितम ढाने की सोच रहा था। नहीं! वो ऐसा होने नहीं दे सकती थी। कभी भी नहीं। सदियों से मरहम का इंतजार कर रहे अल्फ़ी के लिए एक और चोट के बारे में वो सोच भी नहीं सकती थी और यही सोचकर वो एडवर्ड की ओर दौड़ी। मगर वो उस तक पहुँच पाती उससे पहले ही एक तेज झटके ने उसे दूर उछाल दिया। चोट बहुत ही जबरदस्त थी, इसलिए अनामिका कुछ देर के लिए दर्द से जमीन पर ही पड़ी रह गई। दर्द की हद पार करने के बाद जब उसने एडवर्ड की ओर देखा तो आखिरी बिंदु भी उन हड्डियों से घुल-मिल चुका था।

वो तेजी से उठी और एकटक उसी ओर देखने लगी। पंचतत्वों के मिलने के बाद हड्डियों के उस ढेर में हलचल होने लगी और फिर शरीर को सिहरन देने वाली खड़-खड़ की आवाज के साथ वो हड्डियाँ धीरे-धीरे ऊपर की ओर जाने लगीं।

और इसी के साथ अनामिका ने उन हड्डियों के बीच से एक कंकाल को निकलते देखा। सबसे पहले उसके पैर नज़र आए और फिर उन हड्डियों के ऊपर चढ़ने के साथ ही उस कंकाल के दूसरे हिस्से भी दिखाई देने लगे। साथ ही थोड़ा नीचे से उस कंकाल पर मांस, खून, धमनियों और चमड़े की परतें चढ़ने लगी। अनामिका सॉस रोके उस सारी प्रक्रिया को देख रही थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह उसे कैसे रोके क्योंकि एडवर्ड ने अपने चारों ओर पिशाच सुरक्षा कवच लगा रखा था, जिसे कोई और नहीं तोड़ सकता था। बेबसी से अनामिका अपनी ऑखों के सामने वो सब होते
देखती रही और कुछ ही देर में उनकी ऑखों के सामने वो ऑखें बंद किए निर्वस्त्र खड़ी थी। अनामिका एक आह भर कर रह गई। एडवर्ड अपनी चाल में कामयाब होता जा रहा था। उसने हेममाया का शरीर बना लिया था और अब वो अपनी नजर उसकी ओर डालने वाला था।

अपना एक काम खत्म कर एडवर्ड ने सामने खड़े उस शरीर को अपनी भरपूर नज़रों से देखा और फिर अनामिका की ओर अपनी नज़र घुमाई, जो बेबसी भरी गहरी साँसें लेती हुई इधर-उधर देख रही थी।

"देखा! यही है हेममाया! खूबसूरत है ना! चलो! अब तुम्हारे जाने का समय आ गया है।" एडवर्ड निहायती मक्कारी भरी आवाज में बोला।

"एडवर्ड! तुम ये सही नहीं कर रहे हो? तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।" अनामिका पूरी ताकत से चिल्लाई।

जवाब में एडवर्ड ने उसे चिढ़ाने वाले अंदाज में अपने दाँत दिखाए। वो अभी कुछ और कहता उससे पहले ही बदहवास हालत में अल्फ़ी वहाँ आ पहुँचा। वो हालात समझने की कोशिश में अनामिका और एडवर्ड की ओर देख ही रहा था... कि तभी उसकी नज़र सामने खड़ी हेममाया के शरीर पर पड़ी। उसे अपने सामने देखकर अल्फ़ी की आँखें हैरत से फटी की फटी रह गईं। पूरे 200 सालों के बाद उसने अपनी माया को इस तरह सामने देखा। अपनी गहरी साँसों के बीच वो बस भटकने को ही था कि तभी उसे उसके निर्वस्त्र होने का भान हुआ। उसने तेजी से अपना सिर दूसरी ओर घुमाया और उसे दिखाई दी उलझन में लिपटी हुई अनामिका, जो उसे बड़े ही दयनीय नजरों से देख रही थी। अनामिका को देखते ही अल्फ़ी भ्रम की स्थिति से बाहर निकला।

"आओ! आओ! अल्फ़ी! देखो! तुम्हारी हेममाया! मैंने वादा किया था ना! अब तुम्हारी बारी! इस लड़की को मारकर तुम्हारी हेममाया की आत्मा
का अंश इसके शरीर से निकालना है। जिसे मैं हेममाया के इस शरीर में डालूंगा और फिर तुम्हारी हेममाया फिर से तुम्हें मिल जाएगी। हमेशा के लिए। मैंने तुम दोनों को दूर करने का गुनाह किया था और अब मैं ही तुम दोनों को मिलाकर प्रायश्चित करूंगा। चलो! आगे बढ़ो और फिर से हासिल कर लो अपना प्यार।" एडवर्ड ने बहुत ही प्रभावशाली शब्दों के साथ अल्फ़ी की भावनाओं को उकसाते हुए कहा।

एडवर्ड की दिलफरेब झांसा देने वाली बातों को सुनकर अनामिका ने ख़ौफ से अल्फ़ी की ओर देखा। वो हेममाया के नाम से उसके चेहरे पर उतरते जज्बातों के तूफान को देखकर डर गई थी, जो सब कुछ तबाह कर सकता था। दूसरी ओर अल्फ़ी कुछ देर नीचे सिर झुकाकर अपने जज़्बातों को समेटता रहा और इस कोशिश में उसकी आँखों के किनारे बुरी तरह भीग गए थे। खुद को संभालने के बाद उसने सिर उठाकर अनामिका की ओर देखा, जो उसे बड़ी ही उम्मीद से देख रही थी। दो पल अनामिका को एकटक देखने के बाद उसने अपनी नज़रें एडवर्ड की ओर उठाई।

"मैं.... अनामिका को तकलीफ़ नहीं दे सकता।" अल्फ़ी ने काँपती हुई आवाज में कहा।

और ये सुनते ही जहाँ अनामिका के होठों पर यकीन भरी मुस्कान लौटी, वहीं अपना दाँव खाली जाते देख एडवर्ड के होश उड़े थे। उसे बिल्कुल भी नहीं लगा था कि अपने सामने हेममाया को खड़ा देखने के बाद भी अल्फ़ी इस तरह अपने पैर पीछे खींचेगा। अल्फ़ी का ये जवाब एडवर्ड को अंदर तक सुलगा गया। उसे अपने सारे प्लान्स चौपट होते नजर आने लगे। मगर वो भी एडवर्ड था। आखिरी दम तक कोशिश करने वाला!

"ये क्या कह रहे हो अल्फ़ी? पागल तो नहीं हो गए हो? तुम अगर इस लड़की को नहीं मारोगे तो...

तुम्हारी हेममाया कभी वापस नहीं आएगी।" एडवर्ड ने अपने अंदर के तूफान को बड़ी मुश्किल से काबू में करते हुए
सामान्य सी आवाज में कहा।

"ये मुझे नहीं पता। पर इतना जानता हूँ कि.... अनामिका को नुक़सान नहीं पहुँचा सकता मैं।" अल्फ़ी ने इस बार मजबूत लहजे में कहा।

"तुम सच में पागल हो गए हो। तुम इस लड़की की परवाह कर रहे हो जो तुमसे प्यार भी नहीं करती। किसी और से करती है। इसे छोड़ दिया तो ये तुम्हारे पास नहीं आएगी, उसके पास जाएगी। बेवकूफ मत बनो! पुकारो उसके अंदर सोई हुई हेममाया को। वो सामने आएगी, तभी तो उसकी आत्मा के अंश को हम बाहर निकाल पाएँगे। चलो! बुलाओ उसे!" अल्फ़ी की ओर आते हुए एडवर्ड बड़ी मुश्किल से अपने अंदर के गुस्से को संभालते हुए बोला।

"नहीं! कभी नहीं!" अल्फ़ी पूरी ताकत से चिल्लाया।

और अल्फ़ी के तरफ से सारी उम्मीदें ख़ाक होने के बाद एडवर्ड ने अनामिका की ओर देखा। वो उसे दुनिया भर की नफरत अपनी ऑखों में भर कर देख रही थी। मगर उसे एकटक देखता एडवर्ड अचानक ही मुस्कुराया।

"क्या बात है माया! बड़ी-बड़ी डींगे हांका करती थी तुम! मेरी अल्फ़ी ये... मेरा अल्फ़ी वो! वो मेरी खातिर कुछ भी कर सकता है। देखो! क्या किया उसने तुम्हारे साथ?" एडवर्ड अनामिका के अंदर छिपी हेममाया को उकसाते हुए बोला।

उसकी इस हरकत से जहॉ अनामिका चौंकी थी, वहीं अल्फ़ी भी हैरानी से दो-चार हुआ था।
"कहना क्या चाहते हो?" अल्फ़ी उसकी बातों पर तिलमिला उठा।

"तुमसे नहीं... माया से कहा। है ना माया! सच कहा ना मैंने! देखो तो जरा! तुम्हारा अल्फ़ी बेवफा हो गया। उसने बेईमानी कर ही दी ना!" एडवर्ड, अल्फ़ी की ओर तंज का तीर छोड़ते हुए बोला।

"बकवास मत करो!" अनामिका अपने दॉत पीसते हुए बोली।

"कैसी बकवास? सही तो कहा मैंने! तुम्हें लगता है कि अल्फ़ी 200 सालों से तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था। नहीं! वो 200 साल पहले ही तुम्हें धोखा दे चुका है। वो तब से ही बस अनामिका की राह देख रहा था। अगर वो तुमसे प्यार करता होता... तो तुम्हें अपनी जिंदगी में वापस लाना चाहता ना! पर वो अभी भी तुम्हारी बजाय अनामिका को ही चुन रहा है। फिर तुम्हारे पास ऐसी कौन सी दलील बचती है, जो साबित करें कि अल्फ़ी तुम्हारे प्रति ईमानदार है। बोलो!" अल्फ़ी को नज़रअंदाज़ करते हुए वो अनामिका के नज़दीक जाते हुए बोला। एडवर्ड ने ये ऐसी बात बोल दी थी कि अनामिका के अंदर की हेममाया ने अचानक ही अपनी ऑखें मसली।

"अनामिका! उसकी बात मत सुनो! वो बहका रहा है।" अल्फ़ी चिल्लाया, जिस पर अनामिका ने उसकी ओर देखा।

"देखा! देखा! अभी भी अनामिका! तुम ही बोलो! कुछ बचा क्या मेरी बात झुठलाने के लिए तुम्हारे पास!" एडवर्ड ने उसके अंदर की हेममाया को और भी उकसाया।

"तो तुम चुप नहीं करोगे?" कहते हुए अल्फ़ी भड़की हुई हालत में एडवर्ड पर झपटा। अगले ही पल वो दोनों ही गुत्थम-गुत्था हो चुके थे। अनामिका बस अपनी फैली हुई ऑखों से उन दोनों को एक दूसरे को नोचता हुआ देख रहे थे। इस छीना-झपटी में एडवर्ड, अल्फ़ी के चंगुल से छूटकर
अनामिका के पास गिरा, जिस पर अनामिका ने उसे अजीब सी नज़रों से देखा। उसी समय अल्फ़ी ने फिर से उसे दबोच लिया। मगर इस बार एडवर्ड उसकी पकड़ में ही हेममाया को पुकारते हुए चिल्लाया।

"तुम हार गई माया! तुम्हारा प्यार हार गया! अल्फ़ी किसी और का हो गया! उसका प्यार किसी और का हो गया।उसे अब तुम्हारी या तुम्हारी बेटी की मौत का कोई ग़म नहीं रहा क्योंकि उसे दिल लगाने के लिए एक और महबूबा मिल गई। अब तुम्हारा नाम अल्फ़ी के साथ कोई नहीं लेगा। कोई भी नहीं। अब सब... अल्फ़ी और अनामिका के प्यार के किस्से सुनाया करेंगे। तुम हार गई माया! तुम हार गई।" एडवर्ड उस पर व्यंग्य बाण छोड़ता हुआ बड़ी ही कुटिलता से मुस्कुराया।

और इस बार उसका छोड़ा हुआ तीर ठीक निशाने पर लगा। अनामिका के अंदर की माया उस पर हावी होने लगी, जिससे उसका चेहरा दर्द की शिद्दत से लाल हो गया और उसकी ऑखें उस दर्द के अहसास से भर गई।

"माया नहीं! तुम जानती हो इस शैतान के बारे में। ये तुम्हें उकसा रहा है। ये तुम्हारा फायदा उठाना चाहता है। नहीं माया! एक बार फिर से इसके जाल में नहीं फँस सकती तुम! प्लीज़! क्या तुम्हें अपने अल्फ़ी से ज्यादा इस बेईमान की बातों पर भरोसा है।" एडवर्ड को एक ओर फेंककर अल्फ़ी अनामिका की ओर आता हुआ बोला और उसने उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में भर लिया। अनामिका के अंदर मौजूद माया ने उसे बड़ी ही हसरत से देखा और फिर उसके चेहरे पर अपनी ऊंगलियॉ फिराने लगी।

"अल्फ़ी!"
"माया! तुम जानती हो कि अल्फ़ी बस तुमसे प्यार करता है। तुम्हें वापस पाना चाहता हूं मैं। पर... किसी मासूम की जान की कीमत पर नहीं। क्या तुम समझ रही हो कि मैं क्या कहना चाहता हूँ?" अल्फ़ी ने उसके चेहरे को नर्मी से पकड़कर कहा।

अनामिका उर्फ माया ने बहुत ही जज़्बाती नज़रों से उसकी ओर देखा और फिर आंसू भरी ऑखों के साथ हॉ में सिर हिलाया। उसकी हॉ से अल्फ़ी के चेहरे पर एक राहत भरी मुस्कान आई। अभी वो दोनों भावनाओं के समुंदर में उतरे ही थे कि तभी एडवर्ड में पीछे से अल्फ़ी पर वार कर दिया। मगर उस ओर नज़र जाते ही अनामिका ने एडवर्ड के वार से अल्फी को बचाने के लिए उसे एक ओर किया, मगर फिर भी एडवर्ड का खंज़र अल्फ़ी की बाईं बांह चीरता हुआ निकल गया। अल्फ़ी ने तुरंत ही अपनी बांह के जख्म को दूसरे हाथ से पकड़ा और उस शैतान की ओर आग उगलती ऑखों से देखा। जबकि उसकी बांह से बहते खून को देखकर अनामिका के अंदर की माया पूरी तरह से सहम गई। उसने अल्फ़ी के तपते हुए चेहरे पर दर्द की रेखाऍं देखी तो एकदम से ही उन दोनों के सामने खड़े उस शैतान एडवर्ड के लिए उसके अंदर एक ज्वालामुखी फूटा और उसे देखकर वो गहरी गहरी सॉसे लेने लगी।

"तो तुम दोनों नहीं मानोगे। अल्फ़ी! कितना भी बचा ले इसे। आज मुझे मेरे मकसद में कामयाब होने से

कोई नहीं रोक सकता।" ये कहते हुए एडवर्ड ने एक नुकीली पिन अनामिका की ओर फेंकी, जो एक रस्सी से जुड़ी हुई थी। उस रस्सी का दूसरा सिरा एडवर्ड के हाथ में मौजूद कॉच के एक गोल पात्र से जुड़ा हुआ था। वो पिन अनामिका के शरीर में घुसते ही उसके अंदर मौजूद हेममाया की आत्मा को उस पात्र में खींचने लगा, जिससे अनामिका बहुत ही दर्दनाक आवाज में चिल्ला उठी। अल्फ़ी ने उस पिन को अनामिका के शरीर से निकालने की बहुत कोशिश पर निकाल नहीं सका।
"कितनी भी कोशिश कर लो। ये नहीं निकलेगा। आज मैं तेरी माया को अपना बना लूंगा और तू हमेशा के लिए दर्द की आग में झुलसता रहेगा।" कहते हुए एडवर्ड ने एक जोरदार अट्टहास किया, जिससे चारों ओर एक अजीब सा ठंडा अहसास फैल गया।

अल्फ़ी ने जब देखा कि वो पिन अनामिका के शरीर से बाहर नहीं निकल रहा है तो उसने एडवर्ड पर एक जहर भरी नजर डाली और चिल्ला कर बोला, "शैतान! तू कभी कामयाब नहीं हो सकता।"

और ऐसा कहकर अल्फ़ी ने अपनी तलवार उस तंत्र विद्या से बनी हुई हेममाया के शरीर की ओर फेंक दी। एडवर्ड को इसका गुमान नहीं था कि अल्फ़ी ऐसी हरकत भी कर सकता है। जब तक वो अल्फ़ी के वार को रोकने का जतन करता, अल्फ़ी की तलवार हवा में उड़कर उस पिशाच सुरक्षा कवच को भेदती हुई हेममाया के शरीर में जा घुसी और अगले ही पल एक तेज विस्फोट के साथ एडवर्ड का सारा तामझाम हेममाया के शरीर के साथ उड़ गया। अनामिका के शरीर से हेममाया की आत्मा के अंश को खींचते हुए एडवर्ड की ऑखें अपनी योजना की बर्बादी पर हैरत की आखिरी हद तक फैल गई थी। अपनी योजना को नाकाम होता देखकर वो बुरी तरह से तिलमिला उठा। आज उसे किसी भी कीमत पर हार मंजूर नहीं थी। मगर अल्फ़ी ने एक बार फिर उसकी बाजी पलट दी थी। गुस्से की आखिरी हद पर खड़ा हुआ वो जोर से चिंघाड़ता हुआ चिल्लाया।

"अल्फ़ी! इसकी कीमत चुकानी होगी तुम्हें!" यह कहकर उसने अपना खंजर फेंककर अल्फी के सीने में उतार दिया। अल्फ़ी की तेज चीख वहॉ की दीवारों से टकरा गई और वो अपने सीने पर धंसे खंज़र पर हाथ रखे घुटनों पर गिर गया। एक तेज चीख के साथ उसने वो खंज़र अपने सीने से बाहर निकाला। खंजर के बाहर निकलते ही... जैसे वहॉ खून का सैलाब निकल आया था। अल्फ़ी की ऐसी हालत देखकर अनामिका उर्फ माया की
चीख निकल गई। उसने अपने हाथ से छुटती हुई आत्मा को पूरी हिम्मत लगाकर फिर से पकड़ा और फिर एक तेज झटका देते हुए कॉच के उस गोल पात्र को एडवर्ड के हाथों से खींच कर नीचे गिरा दिया। अल्फ़ी की ओर ध्यान होने के कारण एडवर्ड उस गोले को संभाल नहीं सका और वो नीचे गिरकर टूट गया। एक ही पल में एडवर्ड के लिए जैसे सब खत्म हो गया।

"मैं तुम दोनों को जिंदा नहीं छोड़ूंगा।" कहते हुए लावे जैसा खौलता हुआ एडवर्ड एक बार फिर से अल्फ़ी की ओर भागा। उसकी तलवार पास ही गिरी पड़ी थी। उसने लपक कर वो तलवार उठाई और फिर पूरी ताकत से अल्फ़ी पर वार करने के लिए अपने सिर के ऊपर उठा ली। वो उस पर वार कर पाता, उससे पहले ही एक तलवार पीछे से उसके सीने में आ घुसी। उसने झुककर उस तलवार की ओर देखा। वो अनामिका की तलवार थी। इस हमले से एडवर्ड बुरी तरह से हिल गया। वहीं जमीन पर घुटनों के बल बैठे हुए जख्मी अल्फ़ी ने एक तंज भरी मुस्कराहट उसकी ओर डाली। उसकी उस मुस्कुराहट से चिढ़कर एडवर्ड ने उस तलवार को अपने हाथ से निकलना चाहा। मगर वह एक जल रक्षक की तलवार थी, जो उसके काबू में नहीं आ सकती थी। खुद को लाचार पाकर एडवर्ड बुरी तरह से हांफने लगा। उसी समय अनामिका उर्फ माया अपने जख्मी शरीर के साथ खुद को खींचते हुए उसके पास आई और अपनी तलवार के मूठ पर पकड़ बनाकर एक ही झटके में उसके शरीर से बाहर निकाल दिया। एडवर्ड की तेज चीख वहॉ की हवाओं में फैल गई। वो संभल पाता उससे पहले ही अनामिका ने उस पर अगला वार कर दिया और उसकी बाईं हथेली काटकर अलग कर दी। दर्द में तड़पते हुए एडवर्ड ने अपना बायां

हाथ उठाकर देखा ही था, कि तभी अनामिका ने अगला वार करके उसकी दाहिनी हथेली भी अलग कर दी। दहाड़े मारता हुआ एडवर्ड जमीन पर गिर पड़ा। पूरा का पूरा कमरा एडवर्ड के खून और चीखों से भर गया। अनामिका ने अपनी तलवार की नोक जमीन पर टिकाई और फिर हॉफते हुए एडवर्ड के तड़पते हुए शरीर को देखने लगी। दर्द से कराहते हुए
एडवर्ड ने जब अनामिका की ओर देखा, तो वो उसके चेहरे पर अपने लिए मौजूद नफरत को देखकर सहन गया।

"तूने मेरा घर उजाड़ा! मेरी बच्ची को मारा! अपने लालच और नफरत में आकर हमारी हँसती खेलती दुनिया बर्बाद कर दी। तुझे क्या लगा था? अपनी इन गुनाहों का हिसाब तुझे देना नहीं होगा? आज हमारे एक-एक जख्म का हिसाब देगा तू!" कहते हुए अनामिका ने पूरी ताकत से दहाड़ लगाते हुए एक बार फिर अपनी तलवार उसके पेट में उतार दी और उसके बाद भी वह रुकी नहीं। उसके अंदर जैसे कोई जुनून सवार हो गया था। उसने अपनी तलवार से एडवर्ड के पूरे पेट को चीरकर अंतड़ियॉ बाहर निकाल दीं। वो दर्द की इंतेहा से चिल्ला रहा था और अनामिका उतनी ही बेदर्दी से उसके शरीर को को अपनी तलवार से भेदती जा रही थी। आज उसके अंदर की माया अपने हर दर्द का हिसाब लेने पर उतारू थी। वरुण और अंकित भी उसी समय दौड़ कर अंदर आए और उसका वो ख़ौफनाक रूप देखकर सहम गए। कोई भी सहम जाता। अपनी ताकत के नशे में एडवर्ड ने जिस औरत को हमेशा नीचा समझा आज वही औरत उसकी मौत और उसकी बर्बादी की वजह बनने वाली थी। नियति अपना हिसाब ले रही थी। हर किसी से लेती है।

अपने जख़्मों को झटककर ठीक करता हुआ अल्फ़ी तेजी से दौड़कर अनामिका के पास आया और उसे पीछे से पकड़ लिया।

"रूक जाओ माया! रूक जाओ! ये इस तरह नहीं मर सकता। इसके लिए शिकंजा तैयार है। इसे वहीं लेकर चलते हैं।" अल्फ़ी ने उसे अपनी बाहों में कसकर काबू में करते हुए कहा। अपने अंदर के दर्द को आंसुओं की शक्ल में बाहर निकालती हुई अनामिका उसकी पकड़ से छूटने के लिए उसकी बाहों में छटपटा रही थी। वो अभी भी एडवर्ड को छोड़ने के इरादे में नहीं थी। मगर अल्फ़ी ने भी उसे नहीं छोड़ा। 200 सालों से अंदर भरा मवाद बाहर आ रहा था। वो दोनों रो रहे थे। आखिर में थककर अनामिका ने अपनी तलवार छोड़ दी। इसी के साथ अल्फ़ी की पकड़ भी ढीली पड़ी। बिलखती हुई अनामिका धीरे से पीछे मुड़ी और अल्फ़ी से लिपट गई। अल्फ़ी ने भी उसे उसके दर्द के साथ समेट लिया।

****

कुछ देर बाद वो सभी उस खंज़र वाले कमरे की ओर चल दिए। वरूण और अंकित वहॉ पहले पहुँचे। उनके पीछे अनामिका और सबसे पीछे एडवर्ड के क्षत-विक्षत शरीर को खींचकर लाता हुआ अल्फ़ी पहुँचा। एडवर्ड के शरीर को आशुतोष के पास फेंककर अल्फ़ी, अनामिका के पास गया, जहॉ अनामिका उससे लिपटकर बुरी तरह रोने लगी। उन दोनों को इस तरह देखकर चैतन्य बुरी तरह से बेचैन हो गया। वो वरूण और अंकित के पास पहुँचा और उनसे सारा हाल पूछा। उन्होंने उसे सब बताया, जो भी उन्होंने अपनी ऑखों से देखा और कानों से सुना। सब सुनने के बाद चैतन्य एक बार फिर से परेशान हो गया। मगर अभी काम बाकी था और उसे खत्म करना बहुत ही जरूरी था। वो तेजी से अनामिका और अल्फ़ी

के पास गया और उनसे आगे की कार्यवाही की बात की। उसकी बात सुनकर अल्फ़ी अपने दर्द से बाहर निकलकर मौजूदा हालात में वापस लौटा।

"चलो माया! काम पूरा करो! उस नीच की आत्मा उसके शरीर से अलग करो।" उसने सुबकती हुई अनामिका के कंधे पर हाथ रखकर कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने अपनी रो-रोकर सूजी हुई लाल ऑखें ऊपर उठाईं और उसकी ओर देखा। काम खत्म करने की बात पर वो उठी
और अल्फ़ी का सहारा लेकर एडवर्ड के शरीर के पास पहुँची। उस पर एक थूकती हुई नज़र डालकर उसने पिशाच का खंज़र निकाला। उस खंज़र पर नज़र पड़ते ही मरणासन्न पड़े एडवर्ड के शरीर में फिर से हलचल हुई। गहरी सॉसें लेते हुए अल्फ़ी ने अपनी जेब से एक हड्डी का टुकड़ा निकाला और अनामिका की ओर बढ़ा दिया। वो सर विलियम के हड्डी का टुकड़ा था, जिसे अल्फ़ी ने तब उठाया था, जब वो प्रोफेसर साहनी को उनका कंकाल सौंप रहा था। अनामिका ने वो हड्डी ली और फिर उसे वरूण के दिए रूमाल में बांधकर उस खंज़र में लपेट दिया।

अब वो एडवर्ड के शरीर के सामने घुटनों के बल बैठ गई और फिर उसने आशुतोष की ओर नज़र डाली । आशुतोष ने वही पत्थर जिस पर एडवर्ड का खून लगा हुआ था, उसके ऊपर उस शिकंजे को रखा था। अनामिका ने एक गहरी साँस ली और फिर अपने दोनों हाथों में उस खंज़र को पकड़ कर पूरी ताकत से उस एडवर्ड के दिल में उतार दिया। एडवर्ड का शरीर आखिरी बार बुरी तरह से तड़पा और फिर शांत हो गया। उसके शांत होते ही एक लाल रोशनी उसके उस जख्म से निकली और फिर धीरे-धीरे हवा में आगे बढ़ती हुई उसके खून लगे पत्थर से टकरा गई। उस पत्थर से टकराते ही वो तेजी से उसके ऊपर रखे शिकंजे में घुस गई। एडवर्ड नाम के उस शैतान का अंत हो चुका था और उसी औरत के हाथों, जिसे वो अपने पैरों की धूल समझता था। काम खत्म हुआ और अनामिका एक ओर निढाल होकर गिर पड़ी। चैतन्य उसे संभालने के लिए आगे बढ़ा ही था कि तभी अल्फ़ी ने उसे संभाल लिया। चैतन्य रूक गया।

"अनामिका! अब इस खंज़र का काम खत्म हुआ। इसे तुमने निकाला था। अब तुम ही इसे वापस करके आओ।" अल्फ़ी ने बहुत ही नर्मी से कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा और फिर अपना सिर हिलाते हुए उस आखिरी काम को पूरा करने के लिए उठ खड़ी हुई। अल्फ़ी ने ही उसे दहलीज तक सहारा दिया। वहॉ से वो अकेली आगे
गई और फिर उस खंज़र को वापस उसकी जगह में रख दिया। 200 सालों पहले अधूरा छोड़ा अपना काम उसने पूरा कर दिया। अब वो बहुत थक गई थी। उसने उसी थकावट के साथ पीछे मुड़कर देखा, तो सामने अल्फ़ी नज़र आया। उसे देखते ही उसके शरीर में बिजली सी दौड़ गई। वो किसी तरह भागते हुए उसके पास पहुँची और उससे लिपटकर बच्चों की तरह रोने लगी।

"मैंने तुम्हारा कितना इंतजार किया अल्फ़ी! तुम क्यों नहीं आए? उन सात महीनों में ऐसा कोई लम्हा नहीं गुजरा.. जब मैंने तुम्हें याद ना किया हो... तुम्हें ना पुकारा हो! पर मेरे प्यार में ही शायद वो शिद्दत नहीं थी.. कि तुम तक मेरी आवाज़ पहुँच पाती। मेरी ग़लती थी! मेरी ही गलती थी! मुझे... तुम्हारी बात.... माननी चाहिए थी। मुझे... माफ़ कर दो अल्फ़ी! मेरी जिद... और बेवकूफी ने... सब बर्बाद कर दिया। मैं... मैं उसे भी नहीं बचा सकी! हमारी बच्ची अल्फ़ी! उसे भी हमसे छीन लिया... इन जालिमों ने।" कहकर बिलखती हुई अनामिका उससे जा लगी। अल्फ़ी ने भी उसे तड़पकर अपनी बाहों में थाम

लिया था। जो दर्द 200 सालों से समय की हर मार सहकर दिल में पत्थर की तरह जम चुका था, आज आंसुओं के हर क़तरे के साथ पिघलकर बाहर निकल रहा था। वो रो रही थी और इस बार अल्फ़ी ने उसे बिल्कुल नहीं रोका।

"एक-एक बूंद... दूध के लिए... तड़पाया.... हमारी बच्ची को अल्फ़ी! उस मासूम को भी नहीं बख्शा इन बेरहमों ने! और... और मैं कुछ भी नहीं कर सकी। क्यों किया? ऐसा क्यों किया? किसी को... तड़पाकर.... कैसा सूकून मिलता है ऐसे लोगों को?" हिचकियों में बंधी आवाज के साथ अनामिका उसमें और भी सिमटते हुए बोली। उसे संभाले खड़े अल्फ़ी के लिए अब खुद को संभालना भी मुश्किल होता जा रहा था।

"मैंने... तुम्हारी बात नहीं मानी! तुम मुझसे नफ़रत... तो नहीं करते ना
अल्फ़ी!" अल्फ़ी से थोड़ा अलग होकर अनामिका ने उसकी ऑखों में झांकते हुए कहा, जिस पर अल्फ़ी ने तड़पकर उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में भरा।

"नहीं! कभी नहीं! तुम जानती हो तुम्हारा अल्फ़ी ऐसा कभी नहीं कर सकता।" अल्फ़ी ने भीगी हुई सी आवाज़ में कहा और उसे एक बार फिर से अपनी बाहों में समेट लिया।

"मुझे माफ़ कर दो अल्फ़ी... मेरी हर उस गलती के लिए... जिसने तुम्हें तकलीफ़ पहुँचाई। मैं आज भी तुमसे बहुत प्यार करती हूँ।" अल्फ़ी के कंधे पर अपना चेहरा छिपाते हुए वो बहुत ही दर्द के साथ बोली।

"जानता हूँ!" अल्फ़ी भी दर्द की उतनी ही शिद्दत के साथ बोला।

बिखरी हुई सी अनामिका को समेटे खड़ा हुआ अल्फ़ी आज अपने दर्द से आजाद हो जाना चाहता था, पर क्या इतना आसान होता है ये? अल्फ़ी ने भी उस मुश्किल को महसूस किया, जब सुबकती हुई अनामिका हौले-हौले शांत होने लगी। उसके बालों को सहलाते हुए अल्फ़ी के हाथ रूक गए.. जब उसने अनामिका को खुद से अलग होते देखा। वो आंसुओं से धुले अपने चेहरे के साथ अपनी खाली-खाली ऑखों से उसके कंधे के ऊपर से कुछ देख रही थी। हैरान से अल्फ़ी ने उसकी नज़रों का पीछा किया, तो उसका दिल धक्क करके रह गया। सामने चैतन्य खड़ा था, जिसे अनामिका एकटक देख रही थी और जो खुद रंग उड़े चेहरे के साथ सदमे का शिकार नज़र आ रहा था। माहौल में एक अजीब सी ख़ामोशी फैल गई, जो सभी के दिल में चुभ रही थी और... एक आवाज आई...

"चैतन्य!"
आवाज को सुनकर अल्फ़ी ने पलटकर देखा। ये अनामिका थी, जो अब शिथिल सी नज़र आने लगी थी। अल्फ़ी की ऑखें हैरत से फैली और अगले ही पल अनामिका के ढहते शरीर को उसने तेजी से थाम लिया।

"माया!" अल्फ़ी ने घबराते हुए उसके गाल को थपथपाया.. पर वो बेहोश हो चुकी थी। अल्फ़ी ने उसे अपनी बाहों में उठाया और चैतन्य की ओर देखा, जो अभी भी दर्द भरे चेहरे के साथ उन दोनों को ही देख रहा था।

"अनु!" चैतन्य ने अपना हाथ आगे बढाया, जिससे एक पल को अल्फ़ी सहम सा गया। वो उसे अपनी बाहों में समेटे सामने खड़े चैतन्य की ओर एकटक देख रहा था। इस समय उसकी हालत उस बच्चे की

तरह हो रही थी, जो अपनी मनपसंद चीज छिन जाने के डर से घबरा जाता है। सामने खड़े चैतन्य की हालत भी कुछ अलग नहीं थी। अपने निचले होंठ को दाँतों में दबाए वो उसकी ओर बहुत ही धीरे से बढ़ा और उसे आगे बढ़ते देख अल्फ़ी ने भी अपने पैर उतने ही पीछे किए थे। चैतन्य रूक गया।

"अनु!" उसने एक बार फिर से कहा... और इस बार अल्फ़ी ने भरी हुई ऑखों से अपने सीने में टिके हुए अनामिका के चेहरे की ओर देखा।

"अनामिका!" अल्फ़ी के मुँह से निकला और फिर उसने चैतन्य की ओर देखा। इस बार चैतन्य आगे बढ़कर उनके पास आया और अल्फ़ी को इस तरह देखा, जैसे कि उसे ये याद दिला रहा हो कि वो उसकी अनामिका है। अल्फ़ी की ऑखें दर्द की इंतेहा से बंद हो गई और उसने अपना सिर झुका दिया। चैतन्य आगे बढ़ा और अनामिका को उससे ले लिया। अल्फ़ी ने अपनी ऑखें खोली और नसीब की तरह खाली हो चुकी अपनी बाहों की ओर देखा। वो वहीं... उसी तरह खड़ा रह गया.... जब चैतन्य, अनामिका को अपने साथ लेकर चला गया। बिना किसी शक उसका दिल एक बार फिर से तड़का था, मगर वो इतना खाली हो चुका था.. कि कहीं कोई
आवाज नहीं हुई। थके हुए कदमों से वो भी अपने रास्ते में बढ़ गया।

****

रात का अंधेरा अभी गहरा ही था, जब अनामिका ने कराहते हुए अपनी ऑखें भींची। उसके पास बैठा चैतन्य तेजी से उसके नजदीक गया। कमरे में मौजूद बाकी सब भी अनामिका की ओर आए। वरूण भी उसके सिरहाने बैठा उसे फिक्र भरी नज़रों से देख रहा था।

"अनु!" चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ते हुए उसे पुकारा।

अनामिका के होंठों हिले और उसने कराहते हुए कहा, "अल्....फ़ी!"

चैतन्य की पकड़ उसके हाथ पर ढीली पड़ी और उसने उलझी हुई नज़रों से अनामिका की ओर देखा, जो अल्फ़ी का नाम लेने के बाद और भी बेचैन दिख रही थी। चैतन्य ने वरूण की ओर देखा तो.. वो भी उतनी ही उलझन में था।

"अनु!" इस बार वरूण ने उसका कंधा हिलाकर कहा तो वो एक ही झटके में उठकर बैठ गई। फटी हुई ऑखों के साथ वो मुँह खोले गहरी साँसें ले रही थी। उसे ऐसी हालत में देखकर सभी परेशान से हुए। डॉ. अनंत उसके पास आए और उन्होंने उसके सिर पर हाथ रखा। अनामिका ने अपनी ऑखें घुमाकर उनकी ओर देखा और फिर उन्हें सामने देखकर
उसकी ऑखें सिकुड़ी। वही नज़र उसने पूरे कमरे में दौड़ाई। वो एक-एक के चेहरे को इस तरह देख रही थी जैसे कि खुद को उस कमरे में होने का यकीन दिला रही हो।

"अनु!" चैतन्य एक बार फिर से उसके पास आया। अनामिका ने उसे देखा और फिर वो सामान्य नज़र आने लगी।

"ठीक हो!" डॉ. अनंत ने बड़े ही प्यार से उससे पूछा, जिस पर अनामिका ने बस अपना सिर हिला दिया और ये देखकर सभी की जान में जान वापस लौटी।

"क्या हुआ? परेशान लग रही हो! जीतकर वापस लौटी हो! ऐसे में तो खुश होना बनता है। नई!" डॉ. अनंत ने उसका मन बहलाने की कोशिश करते हुए कहा।

"जी! खुश हूँ! पर... थक गई हूँ।" अनामिका ने बहुत ही थकी हुई आवाज में कहा।

"हॉ तो... ठीक है ना! आराम करो! आराम की तो सभी को जरूरत है। बाद में फुर्सत से बातें करेंगे।" डॉ. अनंत ने सबकी ओर देखते हुए कहा, जिस पर सभी ने राहत भरी मुस्कराहट के साथ सिर हिलाया।

अनामिका अभी भी बेहद उलझी हुई सी दिखाई दे रही थी। एक-एक कर सभी उस कमरे से बाहर निकलते गए। वरूण ने भी उसके सिर पर हाथ रखा और उसे एक मुस्कुराहट देता हुआ बाहर की ओर बढ़ गया। चैतन्य भी उसके पीछे बढ़ा ही था कि अनामिका ने उसका हाथ पकड़ कर उसे रोक लिया। वरूण ने उन दोनों की ओर देखा और फिर एक गहरी साँस छोड़ता बाहर निकल गया।
"क्या हुआ?" चैतन्य ने उसकी सवालों भरी ऑखों को देखकर पूछा।

"वही तो! क्या हुआ था?" अनामिका ने अस्पष्ट सा सवाल किया।

"क्या मतलब? मैं समझा नहीं!" चैतन्य उसके सवाल में और भी उलझते हुए बोला।

"एक जूनून सा सवार हुआ था मुझपर और फिर मुझे ठीक से कुछ याद नहीं है। वही जानना चाहती हूँ... जो मुझे याद नहीं है।" अनामिका उसकी ओर देखकर बोली।

"क्या हुआ अनु? कोई परेशानी है?" चैतन्य उसकी हालत पर और भी फिक्रमंद हुआ था।

"पता नहीं! बस ऐसा लग रहा है कि... कोई बोझ था दिल पर.. जो दूर तो हुआ है... पर पूरी तरह से नहीं। कुछ ऐसा है... जो अभी भी रह गया है। तुम बताओगे... क्या हुआ था?" अनामिका ने याचना भरी ऑखों से उसे देखते हुए रूंधे गले से कहा।

उसकी ऐसी हालत देखकर चैतन्य उसके पास ही बेड पर बैठ गया और उसे कंधे से समेटकर खुद से लगा लिया। अनामिका की हालत सही नहीं लग रही थी और चैतन्य ने अपनी ऑखों से जो भी देखा था.. उसने उसे भी परेशान कर दिया था। उसके दिल का एक हिस्सा कह रहा था कि अगर अनामिका को कुछ याद नहीं है.. तो वो भी उसे कुछ ना बताए। वो खुद ही सब भूल जाए। पर... वो अनामिका से झूठ भी नहीं बोल सकता था। वो जानता था कि वो ऐसा कोई काम नहीं कर सकता, जिससे अनामिका के सामने उसकी नज़रें शर्मिंदगी से झुक जाए। ऐसा हुआ तो यकीनन उसका प्यार हार जाएगा... प्यार पर उसका यकीन हार जाएगा और वो ये तो हर्गिज ही नहीं होने दे सकता था।
अनामिका के बालों में अपनी ऊंगलियॉ घुमाते और बहुत सारे ख्यालों को अपने दिल और दिमाग में समेटे वो हर एक बात उसे बताता चला गया... जो उसने देखी... सुनी। अनामिका भी उसके मुँह से निकला एक-एक लफ्ज़ कानों से दिल में उतारती चली गई। इस पूरे दौरान उसने एक शब्द भी नहीं

कहा। पूरी बात कहने के बाद चैतन्य चुप हुआ... तो काफी देर तक ख़ामोशी वैसी ही बनी रही। ना चैतन्य ने कुछ कहा और ना ही अनामिका ने। आखिरकार जब चैतन्य से ख़ामोशी बर्दाश्त नहीं हुई तो उसने ही मुँह खोला।

"अनु!"

"--हँ---!"

"क्या हुआ? कुछ बोलो ना! क्या सोच रही हो?" चैतन्य ने जैसे उसके दिल को कुरेदना चाहा।

"वो सामने थी चैतन्य! बिल्कुल सामने! अल्फ़ी को कुछ नहीं करना था। बस एडवर्ड की बात मान लेता... हेममाया वापस आ जाती। उसके 200 सालों का इंतजार खत्म हो जाता। उसका प्यार वापस मिल जाता। पर... उसने मेरी जिंदगी चुनी! क्यो?" अनामिका ने बहुत ही जज़्बाती लहजे में कहा।

"क्योंकि वो जानता है कि जो आती... उसकी हेममाया नहीं होती। हम-तुम या कोई भी उसके प्यार की गहराई नहीं समझ सकता अनु! वो समय और समझ की हर सीमा से परे हैं।" चैतन्य ने उसके हाथ को पकड़ते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने एक बार फिर से ख़ामोशी इख्तेयार कर
ली। चैतन्य उसके बोलने का इंतजार करता रहा, पर उसने कुछ नहीं कहा। बस उसके सीने पर सिर टिकाए उसी तरह बैठी रही।

"फिर क्या सोचने लगी?" चैतन्य ने ही सवाल किया।

"यही कि... तुमने मुझे सब सच क्यों बताया?" अनामिका ने उसके दिल में झांकने की कोशिश की।

"क्योंकि मैं तुमसे झूठ नहीं बोल सकता। मैं जानता हूँ कि तुम्हारा दिल अल्फ़ी और मेरे बीच झूल रहा है। पर तुम्हें फैसला लेना ही होगा अनु। मुझे यकीन है कि तुम जो भी फैसला लोगी.. सही होगा।" उसकी ऊंगलियों से खेलते चैतन्य ने अपने दिल की बात कह दी।

"और अगर जज़्बातों में आकर तुम्हारा दिल दुखा दिया मैंने... तब!" अनामिका ने सिर उठाकर उसकी ऑखों में झांकते हुए कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य के होंठों पर बेबसी भरी मुस्कान आ गई।

"एक ही सवाल कितनी बार करोगी? मैंने पहले भी कहा था... तुम्हारे हर फैसले में मुझे साथ खड़ा पाओगी। तुमसे अलग नहीं हूँ मैं। मायने रखती है तुम्हारी खुशी!" चैतन्य ने अपना लहज़ा मजबूत रखते हुए कहा।

"और मैं?" अनामिका ने पूछा।

"ऑफकोर्स तुम भी! मैं प्यार करता हूँ तुमसे और... प्यार एक-दूसरे को समझने का नाम होता है। चाहे हालात कैसे भी हों... मैं हमेशा तुम्हारा ही रहूंगा... तुम्हारे साथ रहूंगा और ये कोई समझौता नहीं। बस... अपने दिल से झूठ मत बोलना।" चैतन्य ने उसकी ऑखों में देखते हुए कहा।

अनामिका ने उसकी दोनों ऑखों में बारी-बारी से देखा और फिर एक बार
उसके सीने में सिर टिका लिया। चैतन्य ने भी कुछ कहा नहीं। वो उसी तरह बेड पर अधलेटी हालत में उसे समेटे बैठा रहा। इसके बाद उस कमरे में दोनों की धड़कनों के शोर के अलावा और कोई आवाज नहीं आई। उसी तरह बैठे-बैठे चैतन्य को पता ही नहीं चला कि कब उसकी ऑख लग गई। उसी तरह बैठे-बैठे जब उसकी गर्दन ढलकी, तब ऑखे मलते हुए वो उठा और फिर उसने अनामिका की ओर देखा। वो वहॉ नहीं थी। समय देखा तो सुबह के 4:30 हो रहे थे।

"ये इस समय कहॉ चली गई?" उसकी चिंता करते हुए वो बिस्तर से उतरकर वॉशरूम की ओर गया और दरवाजा खटखटाया।

"अनु! तुम अंदर हो?"

कोई जवाब नहीं आया। उसने थोड़ी झिझक के साथ वॉशरूम खोलकर देखा। वो वहॉ भी नहीं थी। अब उसे थोड़ा सा डर लगा। वो भी तेजी से बाहर निकला। नीचे हॉल में एक किताब पढ़ते आशुतोष के अलावा और कोई नहीं था। उन्हें हर हाल में सुबह चार बजे उठने की आदत थी। वो तेजी से नीचे आया और चारों ओर नज़रें दौड़ाते हुए किचन की ओर गया। वो वहॉ भी नहीं थी।

'क्या हुआ? कुछ ढूंढ रहे हो?" उसे बेचैनी से चारों ओर देखता पाकर आशुतोष ने पूछा।

"हॉ! वो... अनामिका!" चैतन्य बोला।

"क्या बात है भई! आज तो सब एक-दूसरे को ढूंढ रहे हैं।" आशुतोष ने चुहल भरी आवाज में कहा।

"क्या मतलब?" चैतन्य ने पूछा।
"थोड़ी देर पहले अनामिका भी अल्फ़ी को ढूंढती बाहर गई।" आशुतोष ने बड़े ही आराम से कहा।

"अ... अल्फ़ी को!" चैतन्य ने बढ़ी हुई धड़कनों के साथ कहा।

"हॉ! मेरे पूछने पर उसने बताया तो मैंने ही उसे फव्वारे की तरफ जाने के लिए कहा। थोड़ी देर पहले बाहर वॉक करते समय उसे वहीं पेड़ों के बीच देखा था। कुछ सोचता बैठा हुआ था वो।" आशुतोष ने बताया।

"कितनी देर हुई?" चैतन्य ने बेचैनी से पूछा।

"यही कोई 15 मिनट हुए होंगे।" आशुतोष ने हिसाब लगाकर कहा।

और ये सुनते ही चैतन्य लंबे-लंबे डग भरता हुआ उस ओर भागा। उसका दिल बुरी तरह से धड़क रहा था... ये सोचकर कि अनामिका इस समय उसके पास क्यों गई थी? आसमान में सूरज अपनी लाली बिखेरने लगा था और रात का अंधेरा अपनी ऑखें मिचमिचा रहा था। सुबह हो रही थी। किसी तरह खुद को समझाते हुए वो वहॉ पहुँचा, तो थोड़ी मशक्कत के बाद वो दोनों ही उसे ऊँचे पेड़ों के बीच बातें करते मिल गए। चैतन्य एक पेड़ के पीछे खड़ा होकर उनकी ओर देखने लगा। उनकी बातें तो उसे सुनाई नहीं दीं.. पर वो दोनों ही एक-दूसरे के साथ काफी सहज दिखाई दे रहे थे। उन दोनों को साथ देखकर चैतन्य ने अपनी ऊंगलियॉ क्रॉस कर लीं।

तभी अनामिका ने अल्फ़ी से कुछ कहा। उसकी बात सुनकर पहले तो अल्फ़ी ने उसे कुछ देर तक देखा और फिर धीरे से उसके नजदीक आया। वो अनामिका के चेहरे को अपनी हथेलियों में भरकर उसे देखने लगा। अनामिका ने भी कोई प्रतिरोध नहीं किया। वो भी उसे चुपचाप देखती
रही। अनामिका की बातें याद कर हर बढ़ते लम्हे के साथ चैतन्य का दिल बैठा जा रहा था और फिर... उसका दिल एक तेज आवाज के साथ तड़का... जब उसकी फटी हुई ऑखों ने अल्फ़ी को अनामिका के होंठों पर झुकते देखा।

चैतन्य ने तुरंत ही अपनी नज़र फेरते हुए उस पेड़ पर अपनी पीठ टिकाई और गहरी सॉसें लेने लगा। कुछ देर बाद अपने सूखते गले को गीला करते हुए एक उम्मीद के साथ उसने फिर उस तरफ देखा... और उसका दिल आखिरकार चकनाचूर होकर बिखर गया, जब उसने अनामिका को भी अल्फ़ी में खोए हुए देखा। वो एक आह भरकर रह गया। आखिरकार उसकी बात मानते हुए अनामिका ने अपना फैसला कर ही लिया था और अब... उसकी बारी थी।

पिछले कुछ दिनों से अनामिका के उलझे रहने से... उसके सवालों से... शायद उसे इस बात का अंदाजा हो चुका था.. कि अनामिका का फैसला क्या होने वाला था। फिर भी उसने अपने अंदर की उम्मीद को मरने नहीं दिया था। और अब उस उम्मीद के जाने के बाद उसने अपने दिल के दर्द को बड़ी मुश्किल से बाहर आने से रोकना चाहा, मगर फिर भी ऑखें भीग ही गईं। दर्द की शिद्दत से उसने अपनी ऑखें बंद कर लीं। वो जानता था कि उसके लिए ये कभी भी आसान नहीं होगा... पर वो उसकी खुशी के लिए कुछ भी कर सकता था। उसने हर फैसले में साथ रहने का वादा किया था, इसलिए.... उसे ये वादा निभाना ही था। वो जान चुका था कि अब उसे अलविदा कहना ही होगा और वो.... ये कहने वाला था। अपने दिल के टुकड़ों को समेटकर बिना किसी शिकायत के वो उससे दूर... बहुत दूर जाने वाला था। हमेशा के लिए! ये जरूरी तो नहीं.... कि हर सफर को मंजिल मिले। शायद... उसकी कहानी का भी यही अंत था... जो अपने साथ ही सब कुछ अधूरा छोड़ गया था।
"अलविदा अनु! अलविदा!"

कुछ घंटे पहले -

अपना काम खत्म कर वापस लौटने के बाद उलझी हुई अनामिका को संभालते हुए चैतन्य उसी के पास सो गया था। मगर अनामिका जाग रही थी। जब उसे यकीन हो गया कि चैतन्य सो चुका था, तो वो उसके पहलू से बाहर निकली और फिर सावधानी से उसकी गर्दन के नीचे एक तकिया रख दिया। वो पास के ही एक ड्राअर के पास गई और फिर उसे खोलकर उसमें से एक थैली निकाली। उसने उस थैली में हाथ डाला। तीन मुड़े हुए कागज थे। ये वही कागज थे... जो अनामिका को अल्फ़ी के कमरे में उस समय मिले थे, जब वो मेंशन में सिपाहियों से छिपी हुई थी।(भाग 115 - रहस्यों की कड़ियॉ)। उसने पहला कागज खोला। हेममाया के लिए अल्फ़ी का लिखा हुआ खत था, जिसे उसने मेंशन में भी

पढ़ा था। वो एक बार फिर से उन अल्फ़ाजों की गहराई में उतरी थी।

प्यारी माया,
समझ में नहीं आ रहा है कि सबसे पहले क्या कहूँ! समय कम है और बातें बहुत हैं। पर सबसे पहली और अहम बात यही है कि तुम कहाँ खो गई हो? क्यों मेरी आवाज़ पहले की तरह तुम्हें तड़पाती नहीं है? क्यों मेरे प्यार से बढ़कर तुम्हारे लिए कुछ और भी हो गया है? तुम तो मेरे लिए सब छोड़ने का वादा करके आई थी। वापस लौटने का वादा करके आई थी। क्या तुम्हें मेरी याद नहीं आती? क्या तुम्हें हमारे साथ बिताए लम्हें कभी याद नहीं आते। पर मैं तो आज तक उन्हीं लम्हों में अटका हुआ हूँ। क़ैद हूँ तुम्हारी मोहब्बत की उसी क़ैद में... तुम्हारा इंतज़ार करता हुआ। इसी उम्मीद में कि तुम आओगी और एक बार फिर से मुझे अपने साथ हमारी जिंदगी के सफर में आगे ले जाओगी। हम एक बार फिर से सपने देखेंगे। उन्हें पूरा करेंगे। प्लीज़! आ जाओ माया! तुम्हारे बिना मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। माँ को खोने के बाद तुम्हारे सिवा और कौन है मेरा? समझो मेरी तकलीफ़ को! रात में चाँद की ठंडी रोशनी भी मुझे हर पल सुलगाती है और दिन में आसमान का सूरज मुझे क़तरा-क़तरा पिघलाता है। इससे पहले की सब खत्म हो जाए.... मैं खत्म हो जाऊँ... प्लीज़! लौट आओ! या फिर आकर अपने मुँह से ही कह दो कि तुम मेरे पास वापस नहीं आना चाहती। तुम्हारी कसम! मैं बिना कोई सवाल किए वापस लौट जाऊँगा। पर तुम आओ तो सही! कहो तो सही! अपनी खुशी जाहिर करो मुझसे। इस तरह रोज किस्तों में मरना बहुत तकलीफ़ देता है। तुम आकर एक बार में ही सब खत्म कर दो। या तो मुझे इस दर्द से रिहाई दे दो... या फिर इस कांटों भरी जिंदगी से। जो भी करो... जल्दी करो! तुम्हें हमारे प्यार की कसम! साथ बिताए हर लम्हों की कसम! हमारे हर एक-एक सपने की कसम! आ जाओ!

हमेशा तुम्हारे इंतज़ार में!
तुम्हारा अल्फ़ी

अपनी आँखों को बंद करते हुए उसने अल्फ़ी के उस दर्द को एक बार फिर से महसूस किया। ये पिछली बार की तरह ही तकलीफ़ से भरा हुआ था। एक आह के साथ उसने अपनी आँखें खोली और फिर उस कागज को एक ओर रखकर दूसरा मुड़ा हुआ कागज उठाया। उसे खोला तो वो माया का अल्फ़ी को लिखा हुआ ख़त था। उसने पूरे खंत पर एक नज़र फिराई और फिर पढ़ना शुरू किया।

प्यारे अल्फ़ी,

तुम्हारे बिना भी मैं यहाँ बिल्कुल ठीक हूँ। कैसे हूँ? पता नहीं! पर हूँ! शायद इस उम्मीद में कि जल्द ही तुमसे मिलूंगी। एक बार फिर से तुम्हारी गर्म बाहों में नश्तर की तरह चुभती हुई अपनी सारी सर्द तकलीफ़ों को पिघलते देखूंगी। कितनी बातें हैं तुम्हें बताने के लिए। पर वो मैं तुम्हारे हाथों को पकड़कर तुम्हारी मोहब्बत से भरी हुई आँखों में देखते हुए कहना चाहती हूँ। तुम्हें बताना चाहती हूं कि तुम्हारे बिना

मेरा एक-एक पल कैसे सदियों की तरह गुजरता है... जो काटे नहीं कटते हैं। लेकिन फिर भी मैं इस आग में चल रही हूँ क्योंकि आग की इस नदी के आगे जो है... बहुत खूबसूरत है। शायद अभी भी मोहब्बत के इम्तिहान खत्म नहीं हुए हैं। अभी भी खुद को साबित करना बचा हुआ है और ये बचा हुआ बहुत ही अज़ीयतनाक(नारकीय) है। इसे तुम नहीं समझोगे तो और कौन समझेगा?
ये तीन महीने मैंने हर पल बस तुम्हें ही सोचा... तुम्हें ही याद किया। बस तुम्हें ही महसूस किया। अपने अंदर मौजूद तुम्हारे अक्स को हर पल जिया... हर पल जी रही हूँ... ये सोचकर कि कभी-कभी साधारण से दिखने वाले सपने भी दुनिया में सबसे सुंदर होते हैं, जो हमने देखे। हमारे सपने पूरे होंगे ना अल्फ़ी? मुझे पता है तुम्हारे होते हुए इस सवाल का कोई औचित्य ही नहीं है। बस मेरा इंतजार करना तुम! हम मिलकर एक बार फिर से उन सपनों को जिऍंगे।

और मेरी वापसी को लेकर ज्यादा मत सोचना... ज्यादा चिंता मत करना। माया ने कभी तुम्हारे अलावा ना तो किसी को देखा और ना ही कभी सोचा। मेरी हर खुशी तुमसे शुरू होकर तुम्हीं में खत्म हो जाती है। तुम्हें भूलना मेरे लिए साँसे लेना भूलने के समान है। इसलिए कभी भी ये ख्याल दिल में ना लाना कि माया तुमसे दूर जा सकती है। माया किसी और की तरफ आँखें उठाकर भी कभी तुमसे बेईमानी नहीं करेगी। किसी और का तसव्वुर करने से पहले माया मरना पसंद करेगी और मरकर भी वो तुम्हें ही चाहेगी। हमेशा! अनंतकाल तक! बस मुझपर अपना भरोसा और मोहब्बत बनाए रखना।

बस तुम्हारी

माया

अनामिका ने उस खत को पढ़ने के बाद फिर से मोड़ा और फिर तीसरे कागज को उठाया। ये हेममाया और अल्फ़ी की तस्वीर थी। शादी के जोड़े
में वो दोनों नई उम्मीदों की तरह दमक रहे थे। पर कौन जानता था कि इन उम्मीदों की उम्र भी बस कुछ ही दिनों की थी। उसके बाद सब तबाह होने वाला था।

सब देखने-पढ़ने के बाद भावुक हो चुकी अनामिका ने बड़ी मुश्किल से अपने जज्बातों को संभाला। उसके अंदर की माया एक बार फिर उस पर हावी होने लगी थी। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि आखिर वो करे तो क्या करे? कैसे खुद को इस दुविधा से आजाद करे? उसका दिल अल्फ़ी को पुकार रहा था... मगर उसके जज़्बात उसे उसकी ओर बढ़ने से रोक रहे थे। ऐसी ही हालत में भीगे हुए चेहरे के साथ उसने चैतन्य की ओर देखा। अनामिका उसके पास जाकर उसके सामने बैठ गई। वो सबसे बेखबर सो रहा था। मगर चेहरे पर थकान साफ-साफ दिखाई दे रही थी और अनामिका अच्छी तरह से जानती थी कि ये थकान सिर्फ जिस्मानी नहीं थी। चैतन्य भी उसी की तरह उतना ही बेचैन था। एक-एक करके चैतन्य के साथ बिताए गए सारे लम्हे अनामिका के दिमाग में कौंध गए और उन लम्हों को जीते हुए वो एक बार फिर से मुस्कुराई थी। वो चैतन्य में ही उलझी हुई थी कि तभी माया के ख़त की कुछ लाइनें उसकी ऑखों के सामने चौंधिया गईं।

"माया किसी और की तरफ ऑखें उठाकर भी कभी तुमसे बेईमानी नहीं करेगी। किसी और का तसव्वुर करने से पहले माया मरना पसंद करेगी और मरकर भी वो तुम्हें ही चाहेगी। हमेशा! अनंतकाल तक!"

ये याद आते ही अनामिका तेजी से उठी और फिर उन तीनों कागजों को उसी थैली में डालकर तेजी से बाहर की और चल दी। दरवाजा बंद करने से पहले उसने नज़र भर कर चैतन्य को देखा और फिर चली गई। पास ही रखी घड़ी में सुबह के 4:15 हो रहे थे। नीचे आई तो आशुतोष को
किसी किताब में उलझे हुए देखा। अनामिका के पैरों की आहट सुनी तो आशुतोष ने सिर घुमाकर उसकी ओर देखा।

"अरे! तुम उठ क्यों गई? आराम करती!" आशुतोष ने उसे अपनी और आते देखकर कहा।

"करूँगी आशुतोष जी! बस एक जरूरी काम निपट जाए, तो आराम ही करना है। वैसे आप क्या कर रहे हैं?" आशुतोष को जवाब देते हुए अनामिका ने पलट कर सवाल किया।

"अरे यार! वो मुकुल कालछिद्र में जाकर फँस गया है। उसे ही निकालने का तरीका ढूंढ रहा हूँ। अल्फ़ी ने बताया कि ठीक है वो! पर हवा का दबाव वहॉ बहुत है, इसलिए उसे कैसे नियंत्रित करना है, ये पता करने की कोशिश कर रहा हूँ।" आशुतोष ने थोड़ी झल्लाहट के साथ कहा।

"अल्फ़ी ने बताया!" अनामिका ने कहा।

"हॉ अभी बाहर मिला था।" आशुतोष ने कहा।

"अभी कहॉ है वो?" अनामिका ने पूछा।

"फव्वारे की तरफ जो पेड़ों वाला हिस्सा है।" आशुतोष ने उसे पता बताते हुए कहा।

"थैंक्यू!" कहते हुए वो तेजी से बाहर की ओर भागी। आशुतोष की हैरान नजरों ने आखिरी तक उसका पीछा किया।

वो तेजी से अंधकार में रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रही थी। उसकी धड़कने इतनी ज्यादा बढ़ी हुई थीं.... कि ऐसा लग रहा था धौंकनी की तरह
चलता उसका दिल अभी शरीर चीरकर बाहर आ जाएगा। वो अपनी हर एक धड़कन को अपने कानों के पास बजता सुन रही थी। चारों और तलाश करती उसकी नज़रें आखिरकार एक जगह जाकर रुकीं, जहॉ वो आसमान की ओर देखता हुआ चुपचाप बैठा था। उसे देखते ही अनामिका की चाल धीमी पड़ गई। उसके अंदर फिर एक एहसास करवटें लेने लगा था। मगर नहीं! अब और नहीं! अनामिका ने अच्छी तरह सोच लिया कि फैसला लेने का अगर कोई मौका है तो वो बस अभी है। उसने बुरी तरह धड़कते अपने दिल के ऊपर हाथ रखा और उस दिल के अंदर मौजूद माया के एहसास को खुद भी महसूस किया। उसने अपनी ऑखें बंद की और बस किसी को देखना चाहा और अगले ही पल वो उसे दिखा। उसने अपनी ऑखें खोली और फिर खुद को मजबूत करती हुई उसकी ओर बढ़ गई।

"माया!" अल्फ़ी ने पुकारा और फिर पलट कर उसकी ओर देखा।

अल्फ़ी की ऑखों पर नज़र पढ़ते ही अनामिका एक पल के लिए सुन्न पड़ गई। उसे अपने सारे इकट्ठे किए गए अल्फ़ाज रेत की तरह हाथ से फिसलते हुए लगे।

"मुझे पता था कि तुम आओगी!" अल्फ़ी ने अपनी ऑखों में उम्मीद की रोशनी भरकर कहा, जिससे उस नीम अंधकार में भी उसकी ऑखें जूगनू की तरह चमक रही थी।

उसे देखकर डगमगाते हुए मन के साथ खड़ी अनामिका ने एक बार फिर से खुद को संभाला। उसने मुट्ठियॉं भींच कर अपने अंदर की माया को बाहर निकलने से रोका क्योंकि अगर आज वो अनामिका पर हावी हो जाती, तो शायद फैसला भी उसी का होता और आज हर हाल में फैसला माया को नहीं अनामिका को करना था। आखिरकार खुद को मजबूत करती हुई वो आगे बढ़ी और अल्फ़ी के पास जाकर बैठ गई। अल्फ़ी ने उस पर एक गहरी मुस्कुराती हुई नज़र डाली, जिसे आसमान को निहारती हुई अनामिका ने पूरी तरह नजरअंदाज किया। उसकी बेरुखी को महसूस कर अल्फ़ी के होठों की मुस्कान सिमटी थी। खुद को संभालते हुए उसने भी आसमान की ओर नज़रें घुमाई।

"क्या देख रही हो?" क्षितिज पर नज़रें गड़ाए अनामिका से अल्फ़ी ने पूछा।

"भोर का तारा! देखो!" अनामिका ने अंधकार से घिरे क्षितिज की ओर अपनी तर्जनी उंगली उठाते हुए कहा। अल्फी ने भी उसकी उठी ऊंगली की ओर अपनी नज़रें घुमाई और दूर क्षितिज के पास चमकते उस तारे को मुस्कुरा कर देखा।

"हॉं देखा है कई बार! माया दिखाया करती थी।" अल्फ़ी ने एक आह भरकर उस तारे को देखते हुए कहा।

"जानते हो इसे देखना हर किसी की किस्मत में नहीं होता। इसे देखना है तो अपनी नींद और आरामदायक बिस्तर को तिलांजलि देकर इसकी राह तकनी होती है। उसके बाद भी ये उसे ही दिखाई देता है जिसके अंदर सब्र होता है।" अनामिका ने उस तारे पर नज़रें रखे हुए ही कहा।

"जानता हूँ! माया ने बताया था। साथ ही उसने ये भी बताया था कि... भोर का तारा उम्मीद की निशानी होता है, जो ये बताता है कि अंधेरा जल्द ही छँटने वाला है।" अल्फ़ी ने उस तारे को परिभाषित करते हुए कहा।

"और तुम्हें क्या लगता है?" अनामिका ने उससे पूछा।

"पता नहीं! 200 सालों से अंधेरे में रह-रहकर अब और कुछ भी समझ में नहीं आता। बस इतना ही जानता हूँ कि.... मेरे हिस्से का भोर का सितारा भी चमकेगा। मेरे हिस्से की सुबह भी आएगी। अगर.... तुम चाहो तो!"
अपनी बात खत्म करते-करते अल्फ़ी की उम्मीद भरी निगाहें अनामिका की ओर मुड़ी थीं।

उसकी बात सुनते ही अनामिका ने एक गहरी सॉस ली और फिर खड़ी हो गई। अल्फ़ी की नज़रें उसी पर थीं। अपने दिल को मजबूत बनाते हुए अनामिका ने अपनी थैली से वो तीन कागज निकाले और उन्हें अल्फी की ओर बढ़ा दिया। अल्फ़ी ने सवालों से भरी एक नज़र अनामिका पर और एक नज़र उन कागजों पर डाली।

"तुम्हारी अमानत! गलती से मेरे पास रह गई थी।" अनामिका ने अपनी आवाज को कॉपने से बचाते हुए कहा। अल्फ़ी ने हाथ बढ़ाकर उन्हें लिया और फिर उन्हें एकटक देखने लगा

"अल्फ़ी मैं माया नहीं हूँ।" ना चाहते हुए भी अनामिका की आवाज कॉप गई थी और अल्फ़ी ने दर्द की शिद्दत से अपनी ऑखें बंद की थी।

"मैं कभी माया हो ही नहीं सकती। माया कभी भी तुम्हारे अलावा किसी और से अपनी मोहब्बत नहीं बॉट सकती और मैं.... चैतन्य के अलावा किसी और को नहीं सोच सकती। जब मैं उसके साथ होती हूँ... मैं दुनिया भूल जाती हूँ और जब तुम्हारे साथ होती हूँ... तब भी उसे ही सोचती हूँ। क्या इससे साबित नहीं होता कि... मैं माया नहीं... अनामिका हूँ।" अनामिका ने उसकी ओर देखते हुए मजबूत लहजे में कहा।

"माया... वो... तुम!" भावुक अल्फ़ी की जबान से बड़ी मुश्किल से कुछ शब्द निकले।

"नहीं अल्फ़ी! मैं मानती हूँ कि अनामिका की जान बचाने के लिए माया का अंश तुमने ही मॉ को दिया था। पर ये भी उतना ही सच है कि अनामिका कभी मरी नहीं थी। मेरा दिल मेरा शरीर यहॉ तक कि मेरी पहचान भी अनामिका ही है.... माया नहीं। माया की आत्मा के अंश ने बस मुझे जीने का सहारा दिया था, नया जीवन नहीं। मैं हमेशा से अनामिका ही हूँ। हॉ जब अनामिका मरणासन्न थी, तब माया की आत्मा उस पर हावी थी, मगर समय के साथ जो बड़ी हुई.... वो माया नहीं थी.... अनामिका थी। अनामिका हमेशा ही अनामिका बनकर ही पली-बढ़ी। उसके एहसास उसके खुद के थे, जब तक कि तुम सामने नहीं आए। तुम्हें देखने के बाद... तुम्हारे दर्द को महसूस करने के बाद... मेरे अंदर की माया बाहर आने लगी। मगर वो शाश्वत नहीं है अल्फ़ी। वो बस तभी है जब तुम हो। लेकिन वो भी तब... जब तुम दर्द में होते हो। मेरे अंदर की माया तुम्हारी तकलीफ बर्दाश्त नहीं कर पाती। तुम्हारे बिना तड़प से भरा एक लंबा समय गुजरा था उसने। प्यार से ज्यादा तुम्हारे दर्द से जुड़ गई वो। तुम्हारा और मेरा बस इतना ही रिश्ता है। मैं तुम्हारी हर तकलीफ समझ सकती हूँ अल्फ़ी.... तुम्हारा हर दर्द महसूस कर सकती हूँ। पर मैं तुमसे प्यार नहीं करती। मैं चैतन्य से प्यार करती हूँ! मेरी बात समझ रहे हो तुम।" आंसुओं के सैलाब को आजाद करते हुए अनामिका ने रूंधे हुए गले से कहा।

सामने क्षितिज की ओर देखते हुए अल्फ़ी ने तेजी से हॉ में सिर हिलाया, पर अनामिका की ओर नहीं देखा।

"अल्फ़ी मेरी तरफ देखो।" अनामिका ने उससे याचना करते हुए कहा, जिस पर अल्फ़ी ने इनकार में सिर हिलाया था।

"प्लीज़ अल्फ़ी! मेरी तकलीफ़ समझो। आजाद कर दो मुझे! माया को विदा कर दो अल्फ़ी। वो मेरे अंदर खुश नहीं रहती। वो बस तड़पती है। उसे भी इस अज़ाब(यातना) से आजाद कर दो। अपने प्यार को प्यार ही रहने दो, उसे श्राप मत बनाओ, जो ना जाने कितनी जिंदगियॉ बर्बाद कर डालेगा। मैं बहुत प्यार करती हूँ चैतन्य से। प्लीज़!" दर्द की आखिरी सरहद में खड़े होकर सुबकते हुए अनामिका ने अल्फ़ी के सामने सिर झुकाकर कहा।
और इस बार अल्फ़ी टूटा था। अपनी ऑखों के दरिया को आजाद करते हुए वो जोर-जोर से सुबकने लगा।

"अल्फ़ी! प्लीज़! बहुत मुश्किल से अपने अंदर का सच तुम्हारे सामने कहा है मैंने। रो कर मुझे कमजोर

मत करो। मैं कभी तुम्हारे लिए ईमानदार नहीं रह सकती अल्फ़ी। समझो इस बात को। क्या तुम इस बात को कभी अपनाओगे कि तुम्हारे साथ होकर भी मैं कभी तुम्हारे साथ नहीं रहूंगी। मुझे टुकड़ों में मत बांटो अल्फ़ी। इससे दर्द के अलावा किसी को कुछ और हासिल नहीं होगा।" अनामिका ने टूटे हुए लहजे में कहा और उसकी ओर देखने लगी।

"आजाद किया!" अल्फी एकदम से बोला।

"क्या?" अनामिका ने बेयकीनी से उसे देखते हुए कहा।

"कहा ना! आजाद किया! जाओ! मैं भूल गया था कि... जिनकी दुनिया एक बार अंधकार में डूब जाए, उसके लिए कोई भोर का सितारा उम्मीद बनकर नहीं निकलता। उसके हिस्से में कोई नई सुबह नहीं होती।" अल्फ़ी ने बढ़ी हुई धड़कनों के साथ कॉपती हुई आवाज में कहा।

"अल्फ़ी तुम!" अनामिका ने कुछ कहना चाहा।

"कहा ना जाओ! दर्द है या जो भी है... मेरी माया से जुड़ा है तो मेरा है। चाहे वो वरदान हो... चाहे श्राप और वो मैं किसी और को नहीं दूंगा। तुम्हें आजादी करता हूँ... मुझसे जुड़े माया के हर दर्द से। मेरे हिस्से में अगर नहीं है... तो मैं किसी और के हिस्से की उम्मीदें उससे नहीं छीनूंगा। जाओ! तुम आजाद हो अपने हिस्से की नई सुबह का स्वागत करने के लिए।" अल्फ़ी ने बड़ी ही मुश्किल से अपनी जज़्बातों को संभालते हुए कहा।
"अल्फ़ी!"

"जाओ अनामिका! अगर फैसला बदल लिया मैंने, तो एक कदम भी चैतन्य की ओर नहीं उठा पाओगी। जाओ!" अल्फ़ी ने अपने सब्र को बड़ी ही मुश्किल से पकड़ते हुए कहा।

"तुम.... माया को अलविदा कहना चाहोगे?" अनामिका ने एक बार फिर से खुद को नियंत्रित करते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फी ने उसकी ओर देखा। वो अपने चेहरे पर अजीब से भाव लिए उसे ही देख रही थी। कुछ सोचते हुए वो धीरे से उसके पास आया और उसका चेहरा हथेलियों में भर लिया। अनामिका ने अपने दिल की धड़कनों को काबू में रखने के लिए अपनी मुट्ठियॉ भींच लीं। ये वो आखिरी इम्तिहान था, जो उसे अनामिका बना सकता था और ये उसे देना ही था। उसके चेहरे को कुछ देर देखता हुआ अल्फ़ी धीरे से उसके होठों पर झुक गया। माया के एहसास के साथ उसने अपनी ऑखें बंद कर लीं। मगर अनामिका ने अपनी ऑखें बंद नहीं की। वो उसके साथ माया बनकर खोना नहीं चाहती थी। वो अनामिका ही बने रहना चाहती थी। कुछ देर बाद अनामिका के होठों से अलग होते हुए अल्फी ने उसकी ऑखों में देखा, वहॉ उसके लिए कुछ भी नहीं था।

अल्फ़ी ने घोर हताशा के साथ अपना सिर नीचे की ओर झुकाया और बोला, "अल... विदा! मा.. या!"

और फिर अपनी भरी हुई ऑखों के साथ अनामिका के चेहरे को छोड़ते हुए वो तेजी से एक और चला गया। उसकी बिखरी हुई ज़हनी हालात के
बारे में सोचकर अनामिका ने उसकी ओर कदम उठाया ही था कि तभी उसके दिल ने उसे ऐसा करने से

रोक दिया।

"नहीं अल्फ़ी! मैं नहीं! पर दुआ करुंगी कि तुम्हारे दर्द के लिए मरहम जल्दी ही मिल जाए। गुडबाय!"

अल्फ़ी की ओर देखकर अपने कदम पीछे लेते हुए अनामिका ने भरे हुए गले से कहा और फिर तेजी से मुड़कर वापस घर की ओर चल दी। अपने चैतन्य के पास! हमेशा के लिए। एक नई सुबह का स्वागत करने के लिए।

****

वो चुपचाप सिर झुकाए उलझे और बदलते हुए हालातों के बारे में सोच ही रहा था कि तभी उसने अचानक ही उसके गाल पर अपने होंठों की नर्मी बिखेर दी। उसने चौंककर उस ओर देखा। शरारती मुस्कराहट के साथ अनामिका खड़ी थी। उसने खुशगवार हैरानी से उसकी ओर देखा।

"तुम्हारी स्वीट डिश!" अनामिका एक दिलफरेब मुस्कुराहट के साथ बोली और तेजी से वापस लौट गई।

अपने गाल पर हथेली रखे हुए वो चिल्लाया, "हे! ये भी चीटिंग है।"
"अब जो है... यही है।" अनामिका ने बिना उसकी ओर देखे कहा और झील के पानी में उतरकर गुम हो गई।

उसने अनमने ढंग से अपने गाल को छुआ और फिर मुस्कुरा कर बोला, "चीटर कहीं की!" (भाग 62 - दर्द)

अचानक ही लड़खड़ाने पर वो अपने ख्यालों से बाहर आया। वो गिरने को हुआ, मगर होश में आते हुए उसने किसी तरह खुद को संभाल लिया। उसने सामने देखा। सब कुछ बहुत ही धुंधला नज़र आ रहा था। एक गहरी साँस लेकर उसने अपनी दोनों हथेलियों से आँखों में भरे आंसुओं को रगड़कर साफ किया। सूरज नए दिन की गवाही देता रात के पर्दे से बाहर झांकने लगा था। उसने नज़रें घुमाकर देखा। अंधेरा छँट रहा था। पर उसके लिए तो उस अंधेरे ने आज सिमटकर उसकी तकदीर में घर बना लिया था, जिसका बेघर होना अब नामुमकिन था। उसने सिर झुकाकर अपनी बिखरती सॉसों को संभाला और फिर एक गहरी साँस लेकर आगे बढ़ गया। उसे अपना एक-एक पैर एक-एक टन वजनी लग रहा था। अपने बेजान से शरीर को घसीटता हुआ वो किस तरह घर तक पहुँचा.... उसे पता नहीं चला, पर वो पहुँच गया। अपने ही ग़म में डूबा हुआ वो ऊपर जाने के लिए सीढ़ियों के पास पहुँचा ही था कि तभी... उसे पीछे से आशुतोष ने पुकारा।

"चैतन्य!"

और अपना नाम सुनते ही ऊपरी सीढ़ी पर पैर रखते चैतन्य के कदम रुके थे। मगर वह पीछे नहीं पलटा। वो अपनी बिखरी हुई हालत आशुतोष को नहीं दिखाना चाहता था।, मगर जवाब देने के लिए उसकी ज़बान ने भी साथ नहीं दिया। आशुतोष के पास आने तक उसने किसी तरह खुद को संयमित करने की कोशिश की।

"जवाब क्यों नहीं दे रहे हो? अनामिका कहाँ है?" उसकी हालत से बेखबर आशुतोष ने सवाल किया।

"वो मेरे साथ... नहीं है।" चैतन्य ने अपनी आवाज को संभालते हुए कहा।

"क्यों? मिली नहीं क्या वो?" आशुतोष ने पूछा।

"नहीं! मेरी अनु.... नहीं मिली।" उसने कहा और फिर तेजी से ऊपर चला गया।

"इसे क्या हो गया?" आशुतोष ने हैरान नज़रों से उसकी ओर देखते हुए कहा और फिर कंधे उचकाते हुए अपने काम में लग गया।

चैतन्य लुटी-पिटी हालत में कमरे पहुँचा और फिर लड़खड़ाते हुए कदमों से चलकर बिस्तर पर जाकर बैठ गया। दोनों हाथ बिस्तर के किनारों पर जमाए वो एकटक नीचे जमीन को घूर रहा था। उसकी आँखों के सामने हर वो लम्हा आकर गुजर गया, जो उसने अनामिका के साथ बिताए थे। उनमें उसे कहीं भी.... कोई भी... बनावटीपन नहीं दिखाई दिया। ना तो अपने अहसासों में... और ना ही अनामिका के जज़्बातों में। तो फिर कहाँ कमी रह गई... कि आज वो इस तरह खाली हाथ लिए तन्हा बैठा हुआ था। उसके लिए अपने जज़्बातों को रोकना मुश्किल हो गया। अपने आधे चेहरे को हथेलियों में दबोचे उसने अपने आंसुओं को रिहाई दे दी और सुर्ख़ हो चुकी आँखों पर कॉपती पलकों ने पर्दा कर दिया। उसे नहीं पता था कि वो आगे क्या करने वाला था? कैसे करने वाला था? पर इतना तो तय था कि अब उसे अकेले ही सफर करना था। अनामिका के बाद वो कभी भी किसी और को अपने साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की इजाजत या हक़ नहीं देने वाला था। चैतन्य सारी जिंदगी बस अनामिका का ही रहने
वाला था... उसके कभी भी वापस लौट आने की उम्मीद के बिना। शायद उसे इसी तरह अपना प्यार निभाना था और वो निभाने वाला था। हर कीमत पर!

पैर जमी पर टिकाए हुए ही वो बिस्तर पर पीठ के बल लेट गया और छत पर मौजूद पंखे को हताशा से एकटक घूरता रहा। आखिरकार खुद से मजबूत बनने का अहद करता वो उठा और खिड़की की ओर बढ़ गया कि अब उस बंद कमरे में उसे घुटन होने लगी थी। पर्दे हटाकर जब उसने खिड़की के पट खोले... तो सामने नज़र जाते ही अंदर समेटी हुई सारी हिम्मत धुआं हो गई। अनामिका घर की तरफ आ रही थी। दमकता हुआ उसका चेहरा सुबह की लाली को भी मात दे रहा था। सब कुछ हासिल हो जाने की खुशी उसके होंठों पर बिखरी हुई थी। उसे देखकर चैतन्य की आँखें एक बार फिर से दर्द से भीग गईं। वो तेजी से पलटकर अंदर आ गया और बैठकर बदले हुए हालातों के बारे में सोचने लगा।

नहीं! अब वो यहाँ हर्गिज नहीं रूकेगा। वो जल्द से जल्द यहाँ से चला जाएगा और फिर कभी वापस नहीं लौटेगा। अनामिका के सामने वो खुद को बिखरने से नहीं रोक सकता था और वो जानता था कि

अगर वो उसके सामने बिखरा तो.. अनामिका की खुशियॉ फीकी रह जाऍगी। वो उसके हक की कोई खुशी उससे नहीं छीनेगा। वो चला जाएगा। और यही सोचता हुआ वो अलमारी की ओर बढ़ गया। उसने ऊपर से अपना बैग निकाला और अलमारी से अपने कपड़े समेटने लगा। अभी उसने उन्हें उठाया ही था कि तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। कमरे का दरवाजा खुला और एक आवाज आई।

"चैतन्य!"
चैतन्य के हाथ अपनी जगह पर रूक गए। एक पल को लगा कि उसके दिल ने धड़कना छोड़ दिया हो और अगले ही पल उसे अपनी धड़कनें अपने हलक़ में महसूस होने लगी। अपने होंठों को भींचकर उसने खुद को किसी तरह संभाला और हल्का सा गर्दन घुमाकर देखा। अनामिका दरवाजे पर खड़ी थी। शायद उसके दर्द पर अपनी मुहर लगाने आई थी। बिना कोई प्रतिक्रिया दिए वो एक बार फिर से अपने काम में लग गया।

****

अल्फ़ी से मिलने के बाद जब हल्की-फुल्की सी अनामिका घर पहुँची, तो अंदर घुसते ही आशुतोष की आवाज ने उसे टोका और वो रूककर पीछे की ओर मुड़ी।

"अरे अनामिका! कहॉ थी तुम?" आशुतोष ने उसके पास आते हुए कहा।

"जी! वहीं फव्वारे के पास! आपने ही तो बताया था.... कि अल्फ़ी उस तरफ है।" अनामिका ने उसे याद दिलाते हुए कहा।

"अच्छा! चैतन्य ने तो कहा कि तुम दोनों वहॉ नहीं थे।" आशुतोष की आवाज में हैरानी मौजूद थी।

"चैतन्य!" उसके जिक्र से अनामिका के माथे पर बल पड़े थे।
"हॉ! तुम्हारे बाहर जाने के कुछ देर बाद ही वो तुम्हें ढूंढता हुआ नीचे उतरा था। मैंने ही उसे फव्वारे की ओर जाने के लिए कहा था और वो गया भी था। पर अभी कुछ देर पहले ही वापस आया तो बोला कि तुम दोनों वहॉ मिले नहीं। थोड़ा परेशान लग रहा था।" आशुतोष ने उसे जानकारी देते हुए कहा, जिस पर अनामिका के माथे की शिकन ढीली पड़ी।

"कहॉ है वो?" अनामिका ने पूछा।

"ऊपर गया है। कमरे में होगा।" आशुतोष ने जवाब दिया।

"अच्छा!" कहते हुए उसने ऊपर की ओर एक नज़र डाली और फिर वो भी ऊपर की ओर बढ़ गई।

"अब इसे क्या हुआ?" आशुतोष ने एक बार फिर से हैरानी जताई।

"चैतन्य उस तरफ गया था। पर हम दोनों तो थे वहॉ... फिर उसने झूठ क्यों कहा?" इस सवाल का जवाब तलाशते हुए अनामिका को याद आया कि थोड़ी देर पहले ही वहीं पर अल्फ़ी ने उसे किस किया था और आगे बढ़ते उसके कदम झटके से रूके थे।

"उसने देख तो नहीं लिया वो सब! हे भगवान! अब उस बेवकूफ को सब एक्सप्लेन करना पड़ेगा।" घबराकर बड़बड़ाती हुई अनामिका तेजी से उसके कमरे की ओर बढ़ी। कमरे के सामने पहुँचकर सबसे पहले उसने उस दरवाजे को घूरा और एक बार वो सब सोचा... जो वो उससे कहने वाली थी। इसके बाद उसने एक गहरी सॉस ली और फिर दरवाजे पर दस्तक दी। इसके बाद वो दरवाजा खोलते हुए अंदर की ओर गई और कमरे में नज़र घुमाने के बाद उसे अलमारी के पास पाया।
"चैतन्य!" उसने पुकारा।

चैतन्य ने गर्दन हल्का सा घुमाकर उसे देखा और फिर अलमारी में घुस गया।

"क्या कर रहे हो? बिजी हो क्या? मुझे कुछ जरूरी बातें करनी थी तुमसे।" अनामिका ने कमरे के अंदर आते हुए कहा।

"कहो!" चैतन्य ने अपने दिल और लहजे दोनों को मजबूत करते हुए कहा। हाथ बदस्तूर अपना काम करते रहे।

"अ... दरअसल बात ये है कि..." कहते-कहते अनामिका रूकी थी। वो सामने थी और चैतन्य अभी भी कहीं और उलझा हुआ था। ऐसा तो पहले कभी भी नहीं हुआ। यानि कि वो नाराज़ था। और ये ख्याल आते ही अनामिका को अपना गला सूखता हुआ महसूस हुआ, जहॉ सारे अल्फ़ाज़ फँस कर रह गए थे।

"कुछ कह रही थी तुम!" चैतन्य ने उसकी ओर देखे बिना अपने कपड़े बैग में रखते हुए कहा। वो काफी हद तक खुद को इस तूफान को झेलने के लिए तैयार कर चुका था।

"तुम कहीं जा रहे हो?" अनामिका ने उसके बैग और फिर अलमारी की ओर दुबारा मुड़ चुके चैतन्य की ओर हैरानी से देखते हुए कहा।

"हॉ! काम खत्म... तो वापस जा रहा हूँ।" चैतन्य ने सपाट से लहजे में कहा।

"मुझे लगा था कि तुम कुछ दिन और रूकोगे।" अनामिका ने कहा।
ये सुनते ही कपड़े उठाते हुए चैतन्य के हाथ उन कपड़ों पर कस गए। गुस्से की एक लहर उसके होंठों को भींच गई। मगर उसने खुद पर काबू ही रखा।

"रूकने की कोई और वजह रह नहीं गई है मेरे पास।" चैतन्य ने कहा और फिर पहली बार पूरी तरह से उसकी ओर मुड़कर देखा।

अनामिका ने उसकी सुर्ख़, थकी हुई बेजान सी ऑखों को देखा, तो एक बार फिर से उसका दिल हलक़

में आकर अटक गया। वो एकटक उसे ही देख रही थी। चैतन्य ने अपनी दर्द से बोझिल ऑखें उस पर से हटाईं और फिर से अपने काम पर लग गया। अनामिका हिम्मत करके उसकी ओर बढ़ी।

"चैतन्य! देखो मैं एक्सप्लेन कर सकती हूँ। मेरी बात सुनो!" अनामिका ने तेजी से उसकी ओर बढ़ते हुए कहा।

"जरूरत नहीं है।" चैतन्य ने भी दो टूक कहा।

उसकी ये बात सुनकर अनामिका के चेहरे की नसें तन गईं और वो तेजी से उसके पास जाकर उसे झटके से अपनी ओर मोड़ते हुए बोली, "क्या मतलब है कि जरूरत नहीं है?"

चैतन्य ने उसके तने हुए चेहरे को दो पल को देखा और फिर अपनी बांह पर कसे उसके हाथ को नर्मी से हटाते हुए बोला, तुम्हें एक फैसला लेना था.. तुमने ले लिया। बात खत्म!"

अनामिका ने अपनी ऑखों में हैरानी और माथे पर बल डालते हुए उसकी ओर देखा। वो उसके आगे आती हुई बोली, "और इस बात का मतलब
क्या है?"

"यही कि मैंने तुम्हारे हर फैसले में तुम्हारे साथ रहने का वादा किया था। अब सवाल करके अपने लफ़्ज़ों को शर्मिन्दा नहीं कर सकता।" चैतन्य ने भारी दिल से ईमानदार जवाब देते हुए कहा।

"तो फिर ये चेहरा क्यों सुता रखा है?" अनामिका ने उसके चेहरे की ओर अपनी हथेली उठाते हुए कहा।

"क्योंकि इंसान हूँ मैं! तकलीफ़ होती है मुझे! पर तुम चिंता मत करो। ठीक हो जाऊँगा मैं। तुम खुश रहो... बस इतना ही काफी है मेरे लिए।" तेज लहज़े में कहते हुए चैतन्य की आवाज आखिर तक आते-आते नर्म पड़ गई। उसने अपने हाथ में पकड़े हुए सामान को बैग में फेंका और थका हुआ सा बिस्तर पर लगभग गिरते हुए बैठ गया। उसकी खस्ता हालत देखकर अनामिका भी उसके पास आकर बैठ गई।

"अच्छा! तुम्हें देखकर तो ऐसा नहीं लग रहा है। वादे निभाने इतने आसान नहीं होते चैतन्य! पहले अपनी हालत खुद देखो! फिर बोलो!" अनामिका ने जैसे उसे आईना दिखाते हुए कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य ने उसकी ओर कुछ देर तक ग़ौर से देखा, जैसे उसके शब्दों को तौल रहा हो। फिर वो उठा और उसके सामने अपने घुटनों पर बैठकर उसके दोनों हाथों को पकड़ लिया। अनामिका की नज़रें उसी पर थीं।

"तुम्हें क्या लगता है? वो चमगादड़ ही अपना वादा निभा सकता है। मैं भी निभा सकता हूँ। मैं वादा करता हूँ कि... कभी तुम्हें याद करके नहीं रोऊँगा। कभी भी ऑसू नहीं बहाऊँगा। पक्का वाला प्रॉमिस! बस आज... आज के लिए... रोने की इजाजत दे दो। प्लीज़!" चैतन्य ने अपनी सैलाब समेटी हुई सुर्ख ऑखों से उसकी ओर देखते हुए कहा और फिर उसकी गोद में अपना चेहरा छिपाकर फफक-फफक कर रो पड़ा। अनामिका ने
भी उसे रोने दिया। वो भी चाहती थी कि चैतन्य अपने अंदर का दर्द बाहर निकाल दे। वो बस नर्मी से उसके बालों में उंगलियॉ फेरती रही। कुछ देर बाद चैतन्य ने अपनी नाक सुड़कते हुए उसकी गोद से अपना सिर ऊपर उठाया।

"ठीक हो?" अनामिका ने झुककर उसके चेहरे को देखते हुए पूछा।

"हूं! ठीक तो होना ही है।" चैतन्य ने गहरी साँस लेकर हथेलियों से अपने चेहरे को पोंछते हुए कहा।

"क्या हालत कर ली है? कम से कम मुझे बोलने तो दिया होता!" अनामिका ने नाराज़गी जताते हुए कहा।

"तुम्हारे बोलने के बाद भी रोता ही। तो पहले ही रो लिया। एक ही बात है।" चैतन्य ने सिर झटकते हुए उसकी ओर देखकर कहा।

"जरूरी तो नहीं! पर तुम्हें पता कैसे चला मेरा फैसला?" अनामिका ने हथेली पर अपना चेहरा रखकर कोहनी को अपने घुटनों के पास टिकाते हुए अपने दोनों भौंह चढ़ाकर पूछा।

उसके सवाल पर चैतन्य ने ख़ासी चिढ़ के साथ उसकी ओर देखा और उतनी ही कुढ़न के साथ बड़ी ही मुश्किल से बोला, "कुरेद रही हो मुझे! देखा था... तुम दोनों को!"

"अच्छा! और क्या कहा था मैंने?" अनामिका ने पूछा।

"वो नहीं सुना। बस देखा था!" चैतन्य ने सिर झटक कर दूसरी ओर देखते हुए बोला। बार-बार उसी जिक्र से वो झुंझलाने लगा था।
"वही तो! क्या देखा?" अनामिका ने ये कहकर अपने दोनों होंठ भींच लिए।

"परेशान मत करो अनु! देखा था.... तुम दोनों को.... एक-दूसरे के बेहद करीब! तुमने मुझे कभी इजाजत नहीं दी अपने करीब आने की... उसे दी। इसका और क्या मतलब हो सकता है?" चैतन्य ने बहुत ही भारी दिल के साथ जवाब दिया।

"ओह! ये बात है। बट... आई हैव वन डाउट! तुम्हें शिकायत इस बात की है कि वो मेरे करीब आया... या फिर इस बात की... कि तुम कभी मेरे क़रीब नहीं आए। हँ! टेल मी!" अनामिका ने एक अजीब सा सवाल किया, जिस पर चैतन्य ने भी उसे अजीब सी नज़रों से देखा।

"शटअप अनु! बात मत घुमाओ!" चैतन्य ने नाराज़गी जताई।

उसकी बात सुनकर अनामिका अपनी कमर सीधी करती बैठ गई और फिर अपनी ओर ताकते हुए चैतन्य का कॉलर पकड़कर बोली, "तो ठीक है! सीधी बात करते हैं। और सीधी सी बात ये है मि. चैतन्य... कि मैं तुमसे प्यार करती हूँ और तुम्हारे साथ जिंदगी बिताना चाहती हूँ। सुना! और मेरा फैसला हमेशा से यही था।"

और उसके मुँह से ये सुनते ही चैतन्य सुन्न सा रह गया। उसने अपनी ऑखें सिकोड़ कर अनामिका की ओर ऐसे देखा, जैसे कि ये तय कर रहा हो कि उसने जो कुछ भी अभी सुना... वो सच था या कोई भरम था। उसने हैरान चेहरे और ऑखों के साथ कुछ कहने की कोशिश की, पर हवा के अलावा उसके मुँह से कुछ भी नहीं निकला। उधर अनामिका जो उसके कुछ बोलने का इंतजार कर रही थी.. उसकी इस ठंडी सी प्रतिक्रिया पर झल्लाई थी।

"हे भगवान! इसका कभी कुछ नहीं हो सकता!" कहकर उसने चैतन्य को
उसके कॉलर से पकड़े हुए अपने पास खींचा और उसके होंठों को अपनी होंठों की गिरफ्त में ले लिया। अनामिका की इस हरकत पर चैतन्य की सिकुड़ी हुई ऑखें फटने की हद तक फैली थीं। पहले दो पल तो वो उसी तरह रहा और फिर धीरे से अपनी ऑखें बंद करते हुए उसने भी अनामिका को अपनी बाहों में समेट लिया। राहत के कुछ क़तरे उसकी ऑखों से गालों पर लुढ़के थे।

कुछ देर अपने जज़्बात चैतन्य पर लुटाने के बाद अनामिका धीरे से चैतन्य से दूर हुई। चैतन्य ने अपनी ऑखें खोली और नजरों से ही उससे सवाल किया।

"तुमने कहा था ना! दिल की बात सुनने के लिए... एक फैसला लेने के लिए। मेरे अंदर दुविधा कभी भी तुम्हें चुनने को लेकर नहीं थी चैतन्य... बल्कि इस बात की थी कि... किसी और के लिए भी अपने अंदर जज्बात रखकर मैं हमारे रिश्ते में कितनी ईमानदारी रख सकूंगी। बस अपनी वही दुविधा दूर करने के लिए अल्फ़ी के पास गई थी, और आज... मैंने माया को खुद से आजाद कर दिया। अलविदा कह दिया उसे। अब जो तुम्हारे सामने है... बस तुम्हारी अनामिका है। बस तुम्हारी! अब तुम्हारे अलावा ना तो कोई और इस दिल में है और ना ही किसी और का ख्याल साथ है। अब जो भी हो... बस तुम हो। बस तुम!" अनामिका ने उसके सकते में आए चेहरे को अपनी हथेलियों में भरकर बहुत ही प्यार से कहा।

और अनामिका के इस इकरार के बाद एक बार फिर से चैतन्य की ऑखों में पानी उतरा... बस उसकी तासीर बदल चुकी थी। कुछ देर पहले अनामिका से अलग होने की तकलीफ़ में जो आंसू उसके दिल को झुलसाते हुए लावे की तरह बाहर निकले थे, वहीं इस समय बहने वाले आंसू उसके जलते हुए दिल पर किसी ठंडी फुहार की तरह पड़े थे।

"ये लो! तुम तो फिर से रोने लगे! अब क्या हो गया?" अनामिका ने मुँह
बनाकर उससे दूर होते हुए कहा।

"शटअप!" कहते हुए चैतन्य ने उसे अपने पास खींचा और एक बार फिर खुद में भींच लिया, वहीं अनामिका ने भी बिना कोई ऐतराज किए खुद को उसकी पनाहों में छिपा लिया।

"और कोई जवाब चाहिए!" उसकी बाहों में सिमटे हुए ही अनामिका ने पूछा।

"उंहूं!" चैतन्य ने इनकार के साथ हुंकारी भरी।

"पर मुझे चाहिए!" अनामिका की आवाज आई। उसके सिर पर अपना चेहरा टिकाए हुए चैतन्य ने झटके से अपनी ऑखें खोली और नज़रें झुका कर नीचे की ओर देखा तो वो अपनी नाराजगी भरी नज़रों से उसे ही देख रही थी। उसे इस तरह खुद को देखता पाकर चैतन्य के दिल में खटका सा हुआ।

"क्या?" चैतन्य ने मुँह से बेसाख्ता निकला।

और ये सुनते ही अनामिका ने उससे दूर होते हुए उसके सीने को अपने दोनों हाथों से धकेला, जिससे चैतन्य तेजी से लड़खड़ाते हुए पीछे हुआ था।

"अरे!" वो बोला।

"अरे क्या? अब तुम जवाब दो कि... ये सब क्या है?" अनामिका ने उसके आधे पैक हुए बैग की ओर इशारा करते हुए कहा।

उस बैग की ओर नज़र जाते ही चैतन्य बुरी तरह से झेंप गया, पर अपनी
उस झेंप को छिपाते हुए बड़ी ही कुशलता से बोला, "हॉ तो... मुझे लगा कि तुम मुझे छोड़.."

"इसलिए तुम पहले ही छोड़कर जा रहे थे। बिना कुछ पूछे... बिना कुछ बोले। है ना!" अनामिका भड़कते हुए बोली।

"तो तुम्हें क्या लगता है? वो सब देखने के बाद मैं कुछ और सोच सकता था!" चैतन्य ने भी ऐतराज जताया।

"तो बात करनी थी ना चैतन्य! सवाल करने थे मुझसे कि मैंने ऐसा क्यों किया ? मॉ-यश जी की कहानी और हर्षित-देवेन्द्र की कहानी जानने के बाद भी तुम ये नहीं समझे कि रिश्तो में बात करना कितना जरूरी होता है। जिन रिश्तों में संवाद नहीं होते वहॉ अक्सर गलतफहमियॉ घर कर लेती हैं और जो जंग की तरह उस रिश्ते की नींव को खा जाती हैं। प्लीज़! आगे से कभी ऐसा मत करना।" अनामिका ने अपनी ऑखें पुरनम करते हुए कहा।

"नहीं! कभी नहीं!" चैतन्य ने उसकी ऑखें पोंछते हुए कहा।

"अगर किया तो टांगें तोड़ दूंगी तुम्हारी। याद रखना! ये क्या बात-बात पर जाने की बात करते हो। कुछ दिन पहले आशुतोष जी के नाम पर छोड़कर जा रहे थे.... आज अल्फ़ी के नाम पर छोड़कर जा रहे थे। मतलब कि कल को हमारा झगड़ा हुआ और दो दिन बात नहीं की तुमसे.... और ऐसे समय में मुझे किसी और से हँस कर बातें करते देखा, तो तुम उसमें भी बैग उठा कर चुपचाप चल दोगे।" अनामिका की शिकायतें बदस्तूर जारी थीं।

"ये क्या बात हुई? दो दिन बात नहीं करोगी! ऐसा थोड़ी ना होता है!" चैतन्य ने उसकी बात हवा में उड़ाते हुए कहा।

"हॉ नहीं होता। पर तुम्हारी हरकतें ऐसी ही रहीं.. तो ये भी हो सकता है।"
अनामिका ने उसे चेतावनी देते हुए कहा, जिससे चैतन्य झुंझलाया था।

"चुप कर मेरी मॉ!" कहते हुए चैतन्य ने उसे अपने पास खींचा और उसके होंठों पर झुकते हुए उसे चुप करा गया। अभी वो दोनों ही जज़्बों की गहराई में उतरते... उससे पहले ही झटके से दरवाजा खुला और...

"चैतन्य! तुम्हें आशुतोऽऽऽऽष..."

आवाज सुनते ही दोनों का ही ध्यान दरवाजे की ओर गया, जहॉ वरूण अपने चश्मे के पीछे से उन दोनों को ऑखें फाड़े देख रहा था। उसे देखते ही अनामिका ने खुद को चैतन्य से दूर करना चाहा, मगर इस समय वरुण के वहॉ आने से चिढ़े हुए चैतन्य ने अपने हाथ अनामिका की कमर पर और भी कसे थे।

"नॉक नहीं कर सकते?" चैतन्य ने जबड़े कसते हुए कहा।

"तुम लॉक नहीं कर सकते थे!" वरूण ने भी बिगड़े हुए मुँह के साथ पलटवार करते हुए कहा।

उसके बिगड़े हुए लहजे को सुनकर अनामिका हड़बड़ाकर चैतन्य की बाहों से छूटने के लिए कसमसाई, जिससे उसने अनामिका के रंग उड़े चेहरे की ओर देखा। उसने अपनी पकड़ ढीली करते हुए उसे छोड़ा और फिर वरूण की ओर बढ़ते हुए बोला, "बात तो सही की तुमने!"

उसने वरूण की बांह पकड़ी और उसे खींचकर दरवाजे के बाहर ले जाकर छोड़ते हुए कहा, "अब कर लेता हूँ।"
और उसने वरूण के चेहरे पर वो दरवाजा बंद कर दिया। चैतन्य की इस हरकत पर वरूण का मुँह खुला का खुला रह गया। उसने अपने दोनों हाथ सिर के ऊपर तक उठाकर झटकते हुए बेहद चिढ़ी हुई आवाज में कहा, "छिछोरा कहीं का!"

उधर चैतन्य की इस हरकत से अनामिका एकदम से ही सकते में आ गई। उसने तेजी से दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा, "ये क्या कर रहे हो?"

"वही जो उसने कहा।" चैतन्य ने भी लापरवाही से अंदर की ओर आते हुए कहा।

"चलो हटो!" अनामिका ने उसे हटाकर दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा।

"हे! तुम कहॉ जा रही हो?" चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।

"सुना नहीं! आशुतोष जी बुला रहे हैं।" अनामिका ने हाथ छुड़ाते हुए कहा।

"अनु ये ग़लत है! तुम्हारा जब जो मन होता है... करती हो। अब मेरी बारी आई तो... फिर से हमेशा की तरह.." भुनभुनाते हुए उसने बात अधूरी छोड़ दी और उसके पीछे लपका, मगर तब तक अनामिका दरवाजे के सामने थी।

"च्च्च्च! बेचारा चैतन्य! बैटर लक नेक्स्ट टाइम!" अनामिका ने पीछे मुड़कर मजाक उड़ाते अंदाज में चैतन्य से कहा और जैसे ही दरवाजा खोला.... वरूण अभी तक गुस्से में अपने दॉत पीसते हुए वहीं खड़ा था। वो वहीं खड़ी रह गई। दरवाजा खुलने की आवाज के साथ ही उसने सामने की ओर देखा। वरूण को देखते ही अनामिका के होंठों की मुस्कुराहट सिमट गई और वो खुद बुरी तरह से सिटपिटा गई थी।
"तुम पकड़ में तो आओ.. फिर मैं तुम्हें बता...." उसके पीछे-पीछे आए चैतन्य की आवाज भी वरूण को देखकर अटकी थी।

वरूण ने दोनों पर ही अपनी जहर बुझी नज़रें डाली और फिर पैर पटकता हुआ वहॉ से चला गया।

"सत्यानाश! तुम भी ना चैतन्य!" अनामिका पीछे मुड़कर उसे झिड़कते हुए बोली और फिर वो भी वहॉ से चलती बनी।

"अब मैंने क्या किया? हद है यार! करते ये लोग हैं और बिना कुछ किए मैं गरीब फँस जाता हूँ। पकड़ मे आओ अब तुम... फिर बताता हूँ तुम्हें! चीटर कहीं की!" चैतन्य ने तिलमिला कर कहा और वो भी उनके पीछे-पीछे चल दिया। जिंदगी एक बार फिर से नई सुबह की रोशनी में एक नई शुरुआत करने को तैयार थी।

- शुभागमन

सुबह हो चुकी थी। उम्मीदों का सूरज अपनी खिली हुई रोशनी के साथ दुनिया को रोशन करने के लिए आसमान में चमकने लगा था। दुविधाओं का अंधेरा छँट चुका था और अब इस रोशनी के साथ आगे सफर करना था। एडवर्ड के जाते ही उसका तिलस्म टूटा, जिसने विक्टर और गीता को एक लंबी अनचाही क़ैद से रिहाई दे दी। विक्टर की हालत फिर भी गंभीर बनी हुई थी, जिसे उसके कहने पर उसके कमरे में पहुँचवा दिया गया। गीता भी वापस लौट आई थी, मगर वो अभी भी बिल्कुल चुप थी। बाकियों ने भी उसे ज्यादा परेशान करना जरूरी नहीं समझा। पर हॉ... वो अब ठीक थी।

आशुतोष बहुत ही गंभीर मुखमुद्रा लिए किसी विचार में लीन थे। परिधि, गीता, अंकित और सृष्टि भी आशुतोष के साथ ही थे। एक लंबे तनाव और थकान भरे संघर्ष के बाद बची हुई रात सभी ने यहीं साथ ही गुजारी थी।
"आशुतोष जी! कोई तो रास्ता होगा उसे वापस लाने का। आप ही ने कहा कि वो ठीक है।" परिधि ने बहुत ही बेचैनी से कहा।

"हॉ परिधि! वो ठीक है, पर उसे वापस कैसे लाएँ यही तो समझ में नहीं आ रहा है। कालछिद्र ब्लैकहोल के मिनी वर्ज़न की तरह ही काम करता है। अब ये समझ में नहीं आ रहा है कि उसको रिवर्स कैसे करें?" आशुतोष ने चिंता भरे स्वर में कहा।

"सृष्टि! तुम कुछ करो ना! वो कालछिद्र तुम्हारी बात जरूर मानेगा।" परिधि में तड़पकर कहा।

"हॉ ठीक है! पर तुम इतना रेस्टलेस क्यों हो रही हो? वो मेरा भाई है! मुझे भी उसकी चिंता है।" सृष्टि ने उसकी बेचैनी पर ग़ौर करते हुए कहा।

"क्योंकि मुझे जाना है और जाने से पहले मैं उससे एक बार बात करना चाहती हूँ।" परिधि ने अपनी

हथेलियों को मसलते हुए सिर झुकाकर बहुत ही हौले से कहा।

"हॉ तो वो आ जाएगा ना! जब आ जाएगा, तो बात कर लेना।" सृष्टि ने भी बहुत ही इत्मीनान भरा जवाब दिया।

"तुम समझी नहीं! मुझे.... आज ही जाना है।" परिधि ने एक आह के साथ कहा।

"एक मिनट परिधि! तुम्हें जाना है! आज जाना है! कहॉ जाना है?" आशुतोष ने परिधि की बात पर ग़ौर करते हुए पूछा।

"वापस आशुतोष जी! आज समय-चक्र का दसवां दिन है। आज वो समयद्वार फिर से खुलेगा और मुझे..... जाना है।" परिधि ने जवाब देते हुए
कहा।

"वापस जाना है! पर क्यों?" आशुतोष ने पूछा।

"यहॉ सबके हिस्से में अपनी-अपनी लड़ाईयॉ है आशुतोष जी... और मैं अपनी रणभूमि पीछे छोड़ आई हूँ। आप लोगों ने अपनी लड़ाई जीत ली। मुझे भी तो अपनी जंग फतह करनी है। इसलिए बस जाना चाहती हूँ। समझ लीजिए कि अपने ही वजूद को ढूंढना चाहती हूँ।" परिधि ने तफ्सील से जवाब देते हुए कहा।

"और तुम्हें ये कैसे पता चला? कल तक तो तुम्हें कुछ भी पता नहीं था।" पास बैठ अंकित ने आगे झुककर उसकी ओर देखते हुए कहा।

"बस चल गया पता! बस इसीलिए जाने से पहले उससे मिलना चाहती हूँ!" परिधि ने एक गहरी सॉस छोड़ते हुए कहा।

परिधि की बात सुनकर वहॉ एक ख़ामोशी पसर गई। परिधि सही कह रही थी। ये उसका समय नहीं था। नियति के कदमों के निशान पर चलते हुए वो यहॉ आ पहुँची थी और अब उसके वापस जाने का समय आ गया था।

उसी समय सीढ़ियों के ऊपर तेज आवाजें सुनकर उन सभी ने उस ओर देखा। वरूण तेजी से नीचे आ रहा था और वो बहुत ही उखड़ा हुआ लग रहा था। उसके कुछ पीछे अनामिका भी हड़बड़ाती हुई नीचे आई और उसके पीछे आता हुआ चैतन्य बहुत ही इत्मीनान में लग रहा था। तीनों के वहॉ पहुँचते ही सभी ने मुस्कुराकर उनका स्वागत किया। वरूण उसी उखड़ी हुई हालत में अंकित के पास जाकर बैठ गया।

"गुड मॉर्निंग फ्रेंड्स!" चैतन्य ने चहकते हुए सभी का अभिवादन किया और अंकित के उठाए हुए हाथ में हाई-फाई करता उसके दूसरी ओर बैठ
गया।

"क्या बात है चैतन्य?" आशुतोष ने चैतन्य की ओर ग़ौर से देखते हुए कहा।

"जी आशुतोष जी!" चैतन्य खुशमिजाज अंदाज में उनकी ओर देखते हुए बोला।

"बड़े खुश नज़र आ रहे हो। नहीं वो.... कुछ देर पहले तो तुम्हारा मुँह सूखे हुए छुहारे की तरह दिखाई दे रहा था और अब देखो... कश्मीर का लाल-लाल सेव लग रहे हो। लग रहा है कि अनामिका की दवा काम कर गईं।" कहते हुए आशुतोष ने जोर से ठहाका लगाया। ये सुनकर चैतन्य की चौड़ी सी मुस्कान पल में सिमटी और सृष्टि के पास बैठती हुई अनामिका भी बुरी तरह से झेंप गई। सभी ने होंठ भींचकर अपनी हँसी रोकी थी, जबकि ये सुनकर झल्लाए हुए वरूण ने अपने जबड़े और भी भींचे थे।

"क्या आशुतोष जी! आप भी जख़्मों पर नमक रगड़ रहे हैं।" चैतन्य ने भी सिर झटकते हुए अनामिका की ओर नज़र डाली, जो ये सुनकर और भी तपी थी। जबकि चैतन्य ने अनामिका के बाद वरूण पर नाराज़गी भरी नज़र डाली थी।

"अंकल कहॉ हैं?" अनामिका ने चारों ओर देखते हुए पूछा।

"पता नहीं! जाते वक्त बस इतना कहा कि किसी बहुत जरूरी काम से बाहर जा रहे हैं। बहुत खुश लग रहे थे।" आशुतोष ने बताया।

"क्या? मुझसे तो कुछ कहा नहीं! कहॉ गए होंगे?" वरूण ने चिंता जताई।

"आ जाऍंगे। शायद मिशन कामयाब होने की खुशी में हमें ट्रीट-वीट देने
का इरादा हो उनका!" चैतन्य ने उत्साहित होते हुए कहा।

"शटअप!" वरूण बमका।

"शायद आप लोग कुछ जरूरी बातें करने वाले थे।" हल्के-फुल्के माहौल में असहज होते हुए परिधि बोली, जिससे सभी का ध्यान उसकी ओर गया। हँसते-मुस्कुराते हुए माहौल में परिधि के गंभीर चेहरे ने एक बार फिर से संजीदगी घोल दी।

"क्या हो गया? फिर कोई बात हो गई क्या?" चैतन्य में सबके चेहरों को देखते हुए पूछा।

जवाब में आशुतोष में उन तीनों को मुकुल वाली समस्या और परिधि से वापस जाने वाली बात बता दी।

"तुम वापस जाना चाहती हो! पर क्यों? तुम जानती हो वहॉ अब कुछ नहीं बचा है। क्या करोगी वहॉ जाकर?" अनामिका ने हैरानी जताते हुए सवाल किया।

"कुछ अब भी बाकी है अतीत में दी! उस बाकी के लिए ही जाना चाहती हूँ।" परिधि में जवाब दिया।

"पर..." अनामिका ने कहना चाहा।

"नहीं अनामिका! वो सही कह रही है।" अनामिका की बात काटते हुए आशुतोष ने उसे टोका, जिस पर अनामिका ने बुझी हुई ऑखों से परिधि की ओर देखा। एक लंबा समय उसके साथ बिताने के बाद उसे परिधि से लगाव सा हो गया था, मगर आशुतोष का कहना भी सही था। जिस तरह वो और चैतन्य अतीत में नहीं रूक सकते थे, उसी प्रकार परिधि को भी

वापस जाना ही था।

"पर फिलहाल अभी समस्या मुकुल को वापस लेकर आने की है।" सृष्टि ने सबको याद दिलाते हुए कहा।

"वो ठीक है!" चैतन्य ने हैरानी भरी खुशी जताते हुए कहा।

"हाँ! पर उसे बाहर कैसे निकालें... यही समझ में नहीं आ रहा है।" सृष्टि ने कहा।

"समस्या क्या है?" सवाल अनामिका ने किया।

"हवा का दबाव बहुत ज्यादा है। अगर हममें से कोई कालछिद्र के पास उसकी मदद के लिए जाए तो वो भी उसके अंदर चला जाएगा और मुकुल बिना किसी मदद के बाहर नहीं आ सकता। सृष्टि उस वायुदाब को कम तो कर सकती है, लेकिन पूरी तरह बंद नहीं कर सकती। यही समस्या है।" आशुतोष ने जवाब दिया।

"हम्म! मतलब कि उसे खींच कर बाहर निकालना है। ओके! ये मैं कर सकता हूँ। पर मुकुल को कैसे पता चलेगा कि हम उसकी मदद करना चाहते हैं। अंदर से कुछ और भी तो बाहर आ सकता है!" चैतन्य ने एक और समस्या सामने रखी।

"अल्फ़ी ने बताया कि उसने खुद को कालछिद्र के मुख्यद्वार के पास ही सुरक्षित रखा है। उसके अंदर जाते ही वो छिद्र बंद हो गया, तो उसे सर्वाइव करने में परेशानी नहीं हुई। अल्फ़ी उसे खबर कर दी है कि हम उसकी मदद करने वाले हैं, तो वो आसपास ही है और अकेला है। हमारी मदद के इंतजार में!" आशुतोष ने कहा।
"अल्फ़ी ने! अल्फ़ी को कैसे पता चला?" सृष्टि ने पूछा।

"वो नहीं पता! पर इतना जानता हूँ कि वो हमारा सबसे बड़ा मददगार रहा है। इसलिए मुझे उस पर पूरा यकीन है।" आशुतोष ने जवाब दिया।

"सही कह रहे हैं आप! बेचारा! अपने खाली रह गए हाथों से ही उसने किसकी मदद नहीं की है! ही इज़ अ वैरी वंडरफुल पर्सन!" वरूण ने अल्फ़ी की तारीफ करते हुए कहा।

चैतन्य ये सुनकर अनामिका की ओर मुड़ा। अनामिका ने भी शर्मिंदगी से उसकी ओर देखा। उन दोनों को ही ऐसा लग रहा था कि जैसे उनके ऊपर किसी ने पहाड़ रख दिया हो। मगर एक-दूसरे से नजरें फेरते हुए उन दोनों ने खुद को संभाला।

"तो काम शुरू करें?" चैतन्य ने संभली हुई आवाज में कहा।

"हाँ! करना क्या है?" सृष्टि भी हरकत में आते हुए बोली।

"कुछ नहीं तुम्हें कालछिद्र खोलना है और उसके हवा के दबाव को जितना कम कर सकती हो.... करना है। मैं उसके सामने अपनी शक्तियों की मदद से उससे ज्यादा शक्तिशाली वैक्यूम पॉवर उत्पन्न करूंगा, जिसकी मदद से मुकुल बाहर आ जाएगा।" चैतन्य ने सृष्टि को अपनी योजना समझाते हुए

कहा।

"ओके! समझ गई।" सृष्टि ने पोजिशन लेते हुए कहा।

इसके बाद चैतन्य के कहने पर सभी ने हॉल का सारा फर्नीचर और सामान विपरीत दिशा में ले जाकर रखा और बाकी सभी लोग भी वहीं इकट्ठा हो गए।
"चलो सृष्टि! खोलो!" कहते हुए चैतन्य सृष्टि के ठीक पीछे जाकर खड़ा हो गया और उसके अगल-बगल से अपने दोनों हाथ आगे कर दिए। सृष्टि की पीठ उसके मजबूत सीने से टकराई तो एक पल के लिए वो असहज हो गई। अपने सूखते हुए होठों पर ज़बान फेरते हुए उसने अपने दोनों हाथ उठाए, मगर ध्यान बार-बार पीछे चैतन्य की ओर जा रहा था। उसे परेशान देखकर चैतन्य ने हैरानी से उसकी ओर देखा।

"क्या हुआ? कोई परेशानी!" सृष्टि के मनोभावों से बेखबर चैतन्य ने उससे पूछा।

"नहीं! कुछ नहीं! बस डर लग रहा है!" सृष्टि ने धीमे लहजे में कहा।

"कोई नहीं! मैं हूँ ना साथ! चलो करो!" चैतन्य ने उसका हौसला बढ़ाते हुए कहा।

सृष्टि ने सिर उठाकर पीछे खड़े चैतन्य की ओर देखा और फिर सीधे खड़े होकर तेजी से हॉ में सिर हिलाया। उसने एक गहरी सॉस ली और फिर पोजीशन लेते हुए अपने हाथ ऊपर उठाए। चैतन्य भी अपनी पोजीशन में आया था।

"वैसे तो चैतन्य मुझे बिल्कुल नहीं पसंद.... लेकिन एक बात है। ये दोनों साथ में बहुत अच्छे लगते हैं। नई!" वरुण नीचे झुकता अनामिका के कान के पास आकर फुसफुसाया, जिस पर अनामिका ने उसे आग उगलती नजरों से घूरा।

"पर लड़की किस्मत वाली है। मौत को छूकर वापस आ गई। काश कि... सब की किस्मत ऐसी ही होती।" वरुण ने अनामिका को देखकर तंज का तीर छोड़ते हुए कहा।
"शटअप वरूण! वरना पिट जाओगे तुम मुझसे। बता दे रही हूँ।" वरुण की तरफ उंगली उठाकर अनामिका ने उसे चेतावनी देते हुए कहा, जिस पर वरुण ने चिढ़ से मुँह टेढ़ा किया था।

दूसरी तरफ सृष्टि ने उस काल छिद्र को खोला और फिर उसने चैतन्य की मदद से किसी तरह उसके मुँह के पास स्थित हवा के दबाव को कम किया।

"वैरी गुड! बस ऐसे ही रहना!" चैतन्य अपने हाथ पीछे करते हुए बोला। सृष्टि ने काल छिद्र पर अपना कंट्रोल बनाए हुए हॉ में सिर हिलाया। इसके बाद चैतन्य तेजी से आगे बढ़कर उसे काल छिद्र के सामने की ओर गया। वहां उसने हवा के खिंचाव को साफ-साफ महसूस किया, जब उसका शरीर एक झटके में ही कुछ कदम आगे की ओर बढ़ गया। चैतन्य ने अपने शरीर को वापस खींचा और फिर अपने हाथों को आगे की ओर किया। इसके बाद अपनी दोनों हथेलियों को समानांतर गोल घुमाते हुए उसने उनके बीच एक हवा का दबाव निर्मित किया। इसके बाद चैतन्य ने अपनी पूरी ताकत के साथ अपने और उस काल छिद्र के मुँह के बीच एक वैक्यूम प्रेशर निर्मित कर दिया। क्योंकि वो और सृष्टि काल छिद्र की ताकत को पहले ही कम कर चुके थे, इसलिए चैतन्य के पूरी ताकत लगाने से उसके बनाए गए वैक्यूम प्रेशर ने काम किया और फिर उस कालछिद्र के अंदर से हवा बाहर की ओर आने लगी। सकारात्मक नतीजे दिखाई देते ही सबके अंदर उत्साह भर गया और वो सब प्रार्थना करने लगे। जल्द ही उन सभी ने

उस कालछिद्र के मुँह से दो हाथों को बाहर निकलते देखा और फिर देखते ही देखते एक ही झटके में मुकुल बाहर आकर गिर पड़ा।

"सृष्टि बंद करो!" चैतन्य जोर से चिल्लाया और यह सुनते ही सृष्टि ने एक ही झटके में उसे कालछिद्र को बंद कर दिया। काम खत्म होते ही चैतन्य अपने घुटनों पर गिर पड़ा। साफ दिख रहा था कि उसे इस काम में बहुत
ही ज्यादा मेहनत करनी पड़ी थी। घुटनों पर बैठा हुआ वो सिर झुकाए हुए गहरी-गहरी साँसे ले रहा था। सृष्टि और मुकुल की हालत भी उसी के जैसी थी।

"अरे मुबारक हो! मुबारक हो! हो गई डिलीवरी! लड़का हुआ है।" वरुण दोनों हाथ हवा में उठाकर उत्साह से उछलते हुए बोला, जिस पर बाकी सब ने भी खुलकर हँसते हुए उसका साथ दिया। वरुण तेजी से सृष्टि की तरफ, परिधि... मुकुल की तरफ और अनामिका... चैतन्य की ओर भागी। आशुतोष अपनी जगह पर खड़ा मुस्कुरा रहा था। एक और जंग जीत ली गई थी। मुकुल सही सलामत वापस लौट आया था।

कुछ ही देर में हॉल एक बार फिर से पहले की तरह ही कर दिया गया। मुकुल के वापस आते ही एक बार फिर से सब हल्का-फुल्का हो गया था। अब तो सब बस अनंत जी का इंतजार कर रहे थे। अनामिका और सृष्टि ने सबके लिए चाय बनाई, तो चैतन्य, आशुतोष और वरूण ने नाश्ते के लिए सैंडविच बनाए। अंकित ने फलों का जूस तैयार कर दिया। सोफे पर चुपचाप पड़े हुए मुकुल ने चारों ओर देखा तो उसे परिधि कहीं भी दिखाई नहीं दी। सृष्टि ने उसे बताया था कि वो कितनी बेसब्री से उसका इंतजार कर रही थी। उसके जाने की बात भी जब मुकुल को पता चली, तो वो थोड़ा सा उदास हो गया। परिधि को खोजता हुआ वो बाहर की ओर गया तो वो उसे सीढ़ियों के पास मिली।

"यहाँ क्या कर रही हो?" मुकुल उसके पास बैठते हुए बोला।

"कुछ नहीं!" परिधि ने सिर झुकाकर कहा।

"सृष्टि ने बताया कि तुम वापस जा रही हो।" मुकुल ने उसे कुरेदा।

"हाँ! ये मेरी जगह नहीं है।" परिधि बोली।
"हम्म!" मुकुल ने हुंकारी भरी।

"तुम ठीक हो।" परिधि ने उसकी ओर देखकर पूछा।

"हाँ! अब बेहतर हूँ!" मुकुल ने कहा।

"तुमने बहुत बहादुरी दिखाई। तुम्हारे पिता को तुम पर नाज होता।" परिधि ने तारीफ भरे लहजे में कहा। वहीं अपने पिता के जिक्र से मुकुल एक बार फिर भावुक हो गया। परिधि ने एक बार फिर से उसके चेहरे पर गम की परछाईयाँ देखी तो उसने लपककर उसका हाथ पकड़ लिया।

"मुकुल! जो होना था। वो नियति थी। उसके बारे में सोच-सोच कर तुम उसे बदल नहीं सकते। खुद को आजाद कर दो इस धिक्कार से... कि तुम उनकी मदद नहीं कर पाए। तुम बहुत अच्छे बेटे हो और ये तुमने साबित भी किया है। अपने अच्छे कामों से तुम हमेशा अपने दिल में उन्हें जिंदगी देते रहोगे, जहाँ

वो कभी भी नहीं मर सकते।" परिधि ने उसके हाथों को कसकर पकड़ते हुए कहा।

मुकुल ने अपनी भरी हुई आँखों से उसकी ओर देखा। कुछ पल में ही वो लड़की उसे दुनिया की सबसे समझदार लड़की लगने लगी। मुकुल ने उसकी ऊंगलियों को अपनी मुट्ठियों में कहा और बोला, "जाना जरूरी है क्या? मत जाओ!"

उसकी बात सुनकर परिधि मुस्कुराई और बोली, "जरूरी है! तभी तो जा रही हूँ। वैसे भी तुमसे दो सौ साल बड़ी हूँ मैं।"

उसकी बात सुनकर पहले तो मुकुल के होंठ मुस्कुराए और फिर अगले ही पल उसने आगे बढ़कर परिधि को अपनी बाहों में भर लिया।
"मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगा।" मुकुल भावुक होते हुए बोला।

"मैं भी!" परिधि ने उसकी पीठ को सहलाते हुए अपनी कॉपती आवाज में कहा। नाक सुड़कते हुए मुकुल उससे अलग हुआ। वो कुछ कहना चाहता था, मगर किसी के दौड़ने की आवाज ने उन दोनों को ही चौंकाया। घर की ओर देखने पर उन्हें गीता बदहवास सी बाहर दौड़कर आती दिखाई दी। वो दोनों अभी उसे देखकर हैरान ही हुए थे कि तभी बाकी लोग भी गीता के पीछे बाहर निकले।

"गीता रूको! कहॉ जा रही हो?" वरूण पीछे से चिल्लाता हुआ आया। मगर सबको अनसुना करते हुए गीता सामने पोर्च में जाकर खड़ी हो गई और बाहर जाने वाले रास्ते की ओर देखने लगी।

"क्या देख रही हो गीता?" वरूण ने एक बार फिर से उससे सवाल किया, मगर वो एकटक सामने की ओर देखती रही। उसकी ऑखें आंसुओं से भर गई थीं, मगर अभी भी अपने हद में ही थीं। कोई भी उसकी इस हरकत को समझ नहीं पा रहा था और तभी उन सभी को सामने से डॉ अनंत की कार आती दिखाई दी। उस कार को देखते ही गीता और भी भावुक हो गईं और गहरी-गहरी साँसें लेने लगी।

"गीता! क्या हुआ तुम्हें?" वरूण उसे संभालते हुए बोला। जवाब में उसके सीने से चिपकी हुई गीता उस कार की ओर ऊंगली दिखाकर सुबकने लगी थी। जल्द ही कार उन सबके सामने आकर रूकी। ड्राइविंग सीट से डॉ. अनंत उतरे। वो भी बहुत ही भावुक दिखाई दे रहे थे। अंदर पिछली सीट पर कोई औरत बैठी हुई थी, जिसका चेहरा किसी को दिखाई नहीं दे रहा था। डॉ. अनंत ने पिछली सीट का दरवाजा खोला और वो औरत बाहर निकल आई। उसे देखते ही वरूण और अनामिका की ऑखें हैरत से लगभग फट ही गई। वहीं गीता उसे देखते ही उसकी ओर भागकर उस
औरत से लिपट गई।

"ये कौन हैं?" चैतन्य ने भौंचक खड़ी अनामिका से पूछा।

अनामिका ने अपनी बढ़ी हुई धड़कनों के बीच कहा, "तृषा आंटी! वरूण और गीता की मम्मी!"

"जिन्हें वो एडवर्ड दस साल पहले ले गया था?" चैतन्य ने सवाल किया, जिस पर अनामिका ने हॉ में सिर हिलाया। अब तो हर कोई भारी अचंभे में खड़ा रह गया। पिछले दस साल से जिनकी मौत पर परिवार वालों को अभी तक सब्र नहीं आया था, वो बिल्कुल सही-सलामत उनके सामने खड़ी थीं।

डॅ. अनंत आगे बढ़कर वरूण के पास आए और उसके कंधे पर हाथ रखकर जज़्बाती लहजे में बोले,

"अल्फ़ी ने पिछले दस सालों से अपनी हिफाजत में रखा था। सुबह उसने मुझे खबर दी, तो मैं तृषा को लेने चला गया। पता नहीं उसका अहसान कैसे उतारेंगे हम?"

और ये सुनते ही वरूण भी अपनी मॉ की ओर भागा और उनसे लिपट गया। एक परिवार जो दुनिया की नज़रों में दस साल पहले बिखर गया था, आज एक बार फिर से खुशियों के गुलदस्ते में बंध गया था। काली शक्तियों के जाते ही खुशियों का शुभागमन हो चुका था।

कहानी जारी रहेगी अगले भाग में -

तृषा के आते ही घर में जैसे रौनकें लौट आईं थीं। वो पूरी तरह से स्वस्थ थी। उसने बताया कि जब पिशाच उसे अपने साथ ले गया था, तब अल्फ़ी ने उसे बचाया और सबसे छिपाकर रखा। वो हमेशा ऐसा ही करता था। हर दस साल में वो उस लड़की या औरत को मौत के चंगुल से बचाकर अपने पास महफूज रखता था। उनमें से ज्यादातर लड़कियॉ परिवार द्वारा ठुकराई हुई थीं, इसलिए कोई भी घर वापस नहीं जाना चाहती थीं।

अल्फ़ी ने बकायदा एक ट्रस्ट बनाकर उन सभी के जीवन-यापन की व्यवस्था कर दी थी, जहॉ वो अपने लिए दो वक्त की रोटी कमा लेती थीं और तन ढकने के लिए कपड़ों का बंदोबस्त कर लेती थीं। दुनिया के लिए वो एक चैरिटी ट्रस्ट था, जिसका ट्रस्टी विदेश में रहता था और यहॉ का सारा इंतजाम वहॉ की औरतें ही देखती थीं। पिछले दस साल से तृषा भी इन सबका एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी। कह सकते हैं कि बसेरे का एक नया संस्करण था, जहॉ औरतें सच में महफूज थीं। तृषा को भी अल्फ़ी ने सबकी जानकारी के बाहर वहीं छिपाकर रखा था और एडवर्ड की मौत के साथ ही तृषा की घर वापसी सुनिश्चित कर दी।

उधर पूरे दस सालों के बाद सबने गीता को पहली बार इतना भावुक और बाद में इतना खुश देखा था। वो हँस रही थी... खिलखिला रही थी। आज पहली बार सबने महसूस किया कि अपने अंदर कितना कुछ छिपाकर जी रही थी वो। उसकी वजह से मॉ के चले जाने के अपराध से ग्रस्त उसका मन आज खुद को उस कैद से रिहा कर चुका था। अब वो भी खुद को सबकी तरह एक सामान्य व्यक्तित्व मान रही थी, जो अपने हर जज़्बात जाहिर कर सकता था।

थोड़ी ही देर बाद सभी खाने के टेबल पर नाश्ते के लिए बैठे थे। डॉ. अनंत
ने एक बार फिर से उस भरे हुए टेबल को देखा, जो तृषा के वापस लौटने से फिर से आबाद नज़र आ रहा था। डॉ. अनंत ने एक बार फिर से अल्फ़ी के लिए दिल से दुआऍ मांगी। वही तो था, जिसने किसी के कहे बिना ही उनकी हर कदम पर मदद की। उनका दिल अल्फ़ी के लिए इज्जत से लबालब भर गया था।

वहीं उस टेबल पर दो लोग ऐसे भी थे, जो अल्फ़ी के बारे में सोचकर और भी दुखी हुए थे। पर वो दोनों भी जानते थे कि इसमें वो कुछ नहीं कर सकते थे। नाश्ते की प्लेट में झुके हुए चैतन्य ने अनामिका की ओर देखा, तो उसका ध्यान भी चैतन्य की ओर ही था।

"तुम परिधि हो ना!" तृषा ने परिधि की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर सभी ने हैरानी से तृषा की

ओर देखा।

"जी!" परिधि ने जवाब दिया ।

"और तुम चैतन्य! है ना!" तृषा ने एक बार फिर से सभी को चौंकाया।

"जी!" हैरत में डूबे हुए चैतन्य ने जवाब देने के बाद सभी के चेहरों पर नज़र दौड़ाई।

"तुमने इन दोनों को कैसे पहचाना? तुमने तो इन्हें पहली बार ही देखा है।" डॉ. अनंत ने पूछा।

"जहाँ दस साल बिताए वहाँ इन दोनों को तस्वीरें देखी थी मैंने।" तृषा ने एक और हैरत से भरा जवाब दिया।

"हमारी तस्वीर!" परिधि और चैतन्य दोनों ही इस खुलासे से ख़ासा चौंके थे।
"हाँ! उस ट्रस्ट की पहली चेयरपर्सन मिस अमांडा जॉनसन के सामान में तुम दोनों की तस्वीरें देखी थीं। उन्होंने ही बनाई थीं और उसमें तुम दोनों का नाम लिखा हुआ था। अल्फ़ी ने सब कुछ बताया था तुम दोनों के बारे में। तुम्हारी समय यात्रा के बारे में। कुछ दिन पहले ही। मैं सच में बहुत उत्साहित थी तुम दोनों से मिलने के लिए। पर वो तुम दोनों का नाम लेते समय ज्यादा खुश दिखाई नहीं देता था।" तृषा ने जानकारी साझा करते हुए कहा। तृषा की बातें सुनकर चैतन्य और परिधि ने एक-दूसरे की ओर देखा। एक ओर अमांडा के दिल के जज़्बातों से बाखबर परिधि की पलकें उसके ख्याल से लड़खड़ाई थी... वहीं दूसरी ओर चैतन्य को अमांडा के पास अपनी तस्वीर होने का औचित्य समझ में नहीं आ रहा था।

"पर मेरी तस्वीर?" चैतन्य ने पूछा।

"हम्म! साथ की एक बुजुर्ग ने बताया था कि मिस अमांडा के अनुसार उन्होंने अपनी जिंदगी में बस दो ही ईमानदार पुरुष देखे थे। एक अल्फ़ी और दूसरे तुम! शायद उन्हें तुम दोनों की तरह और कोई नहीं मिला नहीं, इसलिए वो सारी उम्र अविवाहित ही रही। अल्फ़ी तो हमेशा ही उनके साथ था, पर तुम वापस आ गए। तो उस तस्वीर में अपनी उसी याद को रखा था... उन्होंने!" तृषा ने बताया।

"ओह!" चैतन्य ने कहा और इसी के साथ उसकी नज़रों में उस नाज़ुक सी नरमदिल लड़की का चेहरा कौंध गया और पहली मुलाकात भी।(भाग- 112) अमांडा की.... की हुई मदद की वजह से ही वो सब आपकी लड़ाई जीतने में कामयाब हो सके थे। उसी ने ही उसे उस जादुई चाबी के बारे में बताया था, जिसकी वजह से उन्होंने रास्ते के हर बंद ताले खोले। तांत्रिक सिद्धनाथ जी से मुलाकात भी उसी की वजह से मुमकिन हो पाई थी। उसके होंठों पर एक मुस्कुराहट उतरी।
"पर अमांडा वहाँ क्यों रहती थी?" सवाल परिधि ने किया, जिस पर तृषा ने उसकी ओर देखा।

"क्योंकि वो पहली लड़की थी, जिसे अल्फ़ी ने एडवर्ड से बचाया था। मेरी और दूसरी लड़कियों की तरह! " तृषा ने खुलासा करते हुए कहा।

"क्या? पर क्यों? आपको किसने बताया?" चैतन्य ने लगभग उछलते हुए पूछा।

"वो तो पता नहीं। पर उनके बारे में जो भी मोटी-मोटी बातें थीं वहाँ सबको पता थीं। बस इतना पता है

कि किसी तरह की सजा मिली थी उनको, जिससे अल्फ़ी ने उन्हें बचाया था। ख़ैर... जो भी हो। उन्हें जानने वाले कहते हैं कि वो एक बहुत ही सूकून और इत्मीनान से भरी हुई शख्सियत थीं, जिनकी छाया में अपनों की ही सताई हुई लड़कियाँ सारे दर्द भूल जाती थीं।" तृषा ने उपलब्ध जानकारी साझा करते हुए कहा।

इसके बाद सभी ने चुपचाप नाश्ता किया। रात की लड़ाई के बाद सुबह भी जज़्बाती रूप से थकान भरी हो गई थी। सभी को अब भी आराम की सख़्त जरूरत थी। इसलिए सभी अपने-अपने कमरों में चले गए।

वहीं सबसे अलग परिधि बालकनी में अकेली खड़ी अपने ही ख्यालों में गुम थी। अपनी भूली हुई यादों के वापस आने के बाद भी वो अमांडा को पूरी तरह से भूली हुई थी। आज तृषा के जिक्र से वो अतीत के उन पन्नों में वापस लौटी।(भाग-137) किस तरह अमांडा ने परिधि को एडवर्ड की क़ैद से आज़ाद कराया था। वो परिधि की बुजदिली का वो आखिरी क्षण था जब उसने पहली बार लड़ने की हिम्मत दिखाई थी। वो अमांडा ही थी, जिसकी वजह से वो आज जिंदा थी। उसे याद आया कि जब वो अपनी जान बचाने के लिए वहाँ से भागी, अमांडा अकेली हथियारबंद गार्ड्स से
जूझ रही थी। उसके बाद क्या हुआ होगा ये सोचने या जानने का मौका ही नहीं मिला।

"हे भगवान! कहीं अमांडा को वो सजा हमारी मदद करने की वजह से तो नहीं मिली थी। हाँ! जरूर वही बात रही होगी। वरना वो एडवर्ड उस मासूम लड़की को ऐसी सजा क्यों देगा? शुक्र है कि... अल्फ़ी उसकी मदद के लिए पहुँच गया। बेचारी को अपना प्यार भी तो नसीब नहीं हुआ।"

और ख्यालों के यहाँ तक पहुँचते ही उसे वो अंगूठी याद आ गई, जो अमांडा ने उसे चैतन्य को देने के लिए दी थी। उसने अपनी ऊंगली पर नज़र डाली, जो कि खाली थी।

"वो अंगूठी! वो कहाँ हैं? वो मेरी ऊंगली में ही तो थी... अब कहाँ हैं वो?"अचानक ही अमानत में ख़यानत का ख्याल उसे अंदर तक हिला गया।

"हो सकता है कि मेरे जख्मों का इलाज करने से पहले उसे निकाल कर रख दिया हो। मेरे कपड़े! वो अनामिका दी के पास थे! शायद उसी में हो!" और इसी ख्याल के साथ ही वो अनामिका के पास भागी थी क्योंकि वो और वरूण ही उनके बारे में जान सकते थे।

****

जब सभी अपने-अपने कमरों में थोड़े आराम की चाह में घुसे हुए थे, उस समय चैतन्य बाहर बगीचे में चहलकदमी कर रहा था। तृषा के अमांडा
का जिक्र करने के बाद वो भी परिधि की तरह ही बेचैन हो गया था। उसे रह-रहकर वो 18-19 साल की जिंदादिल लड़की याद आ रही थी, जिसने बिना किसी लालच या भय के उनकी मदद की थी।

"चैतन्य!"

एक आवाज पर वो पीछे की ओर मुड़ा था। अनामिका थी।

"यहॉ क्या कर रहे हो? जाकर आराम कर लो!" अनामिका ने उससे कहा।

"कुछ नहीं! बस ये अल्फ़ी, अमांडा और परिधि ने उलझाकर रख दिया है, तो उन्हीं के बारे में सोच रहा हूँ।" चैतन्य ने एक आह भरकर कहा।

"क्यों? क्या हो गया?" अनामिका ने पूछा।

"कुछ नहीं! बस... समझ में नहीं आता कि इनसे प्यार करें... या फिर इन पर तरस खाऍं। ऊपर वाला भी ऐसे लोगों की किस्मत किस स्याही से लिख देता है कि लिखी इबारतें मिटाए नहीं मिटती। सच कहूँ.... अगर कोई आम इंसान इनकी कहानी जान ले तो उसका प्यार से यकीन ही उठ जाए। एडवर्ड ने भी सही कहा था! आखिर इन सबको मिला क्या?" चैतन्य हताशा भरी आवाज में बोला।

"कैसी बातें कर रहे हो? अगर उन्हें कुछ नहीं मिला... तो उनके लिए आज इतनी फिक्र क्यों कर रहे हो तुम? उस प्यार की वजह से ही ना... जो उनके अंदर था... है!" अनामिका ने उसकी बात परे हटाते हुए कहा।

"पर क्या फायदा ऐसे प्यार का? आज 200 सालों के बाद भी अल्फ़ी खाली हाथ ही तो है। उसे क्या हासिल हुआ? उसका प्यार उसके लिए एक
श्राप बनकर रह गया, जिसकी आग में वो आज भी जल रहा है और पता नहीं कब तक जलेगा? किसी अभिशप्त की तरह!" चैतन्य ने अफसोस भरी आवाज में कहा।

"फिर गलती कर रहे हो चैतन्य! सबसे पहले तो प्रेम अपने हर रूप में नि:स्वार्थ होता है। जब हम किसी से प्यार करते हैं, तो बस उसका बनना चाहते हैं। प्रेम की जो पराकाष्ठा होती है, वो प्रेम के कई पायदान चढ़ने के बाद ही मिलती है। कई उस पराकाष्ठा को प्राप्त कर लेते हैं और कई नहीं कर पाते। अगर हासिल ना कर पाओ... तो भी तुम्हारा प्रेम... प्रेम ही रहता है। जो आपके हृदय को निश्चल और पवित्र बनाता है। प्रेम सूकून होता है... उम्मीद होता है। वो कभी भी श्राप नहीं हो सकता... तो फिर प्रेम करने वाला अभिशप्त कैसे हुआ?" अनामिका ने कहा।

"तो फिर अल्फ़ी के बारे में क्या कहोगी?" चैतन्य ने पूछा।

"चैतन्य! अल्फ़ी प्रेम की उस पराकाष्ठा पर है, जहॉ आपका प्रेम आपके हर कदम पर आपको आजमाता है और यही आजमाईश बेचैनी बन जाती है। जो इस बेचैनी को जीत ले... वो प्रेम की उस गहराई में उतर जाता है, जहॉ प्रेम स्थूल ना होकर आत्मिक बन जाता है और जिस दिन अल्फ़ी ने ये समझ लिया... उसे सूकून मिल जाएगा।" अनामिका ने किसी दार्शनिक की तरह कहा।

"तो क्या उसकी माया उसकी जिंदगी में लौट नहीं सकती?" चैतन्य ने सवाल किया।

"कहीं एक बार फिर से... तुम्हारा मतलब मुझसे तो नहीं!" अनामिका ने उसकी ओर संदेह भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

"बिल्कुल भी नहीं! देखो तुम्हारे अंदर माया की आत्मा का बस एक छोटा
सा अंश है। तो फिर उसके बाकी के हिस्से भी कहीं ना कहीं होंगे। तो बात यही है कि वो कहॉ हैं? अगर वो मिल जाएँ तो शायद माया लौट सकती है।" चैतन्य ने एक नई उम्मीद का हाथ पकड़ते हुए कहा।

"तो फिर उस आत्मा के लिए एक शरीर की भी तो जरूरत होगी और मुझे नहीं लगता कि अल्फ़ी मेरे बाद और किसी की ओर नज़र भी उठाएगा। उसने तो मुझे भी शायद इसीलिए स्वीकारा है क्योंकि.... उसकी माया के अहसासों के जीवित रहने के लिए ये जरूरी था।" अनामिका ने चैतन्य की बात काटते हुए कहा।

"तो क्या वो हमेशा ऐसे ही अनंतकाल तक... इसी तरह सुलगता रहेगा... तड़पता रहेगा।" चैतन्य ने फिक्र भरी आवाज में कहा।

"चैतन्य! अगर तुम्हें उसकी फिक्र है, तो उसके लिए दुआ करो कि उसे सुकून मिल जाए। इसके अलावा तुम उसके लिए कुछ और नहीं कर सकते। वो एक पिशाच है। छद्म पिशाच नहीं.... एक शुद्ध पिशाच। जिसका जीवन अनंत काल तक चलता रहेगा। तो अगर तुम उसके जीवन में प्यार चाहते हो तो उसकी संगिनी को भी उसी की तरह अनंत काल की आयु प्राप्त करके आना होगा और हममें से कोई भी ऐसा नहीं कर सकता। वो जीवन-मृत्यु से परे है। इसलिए मैं चाहती हूँ कि अल्फ़ी आत्मिक प्रेम में ही सूकून ढूंढ ले।" अनामिका ने चैतन्य को समझाते हुए कहा।

"हम्म! कह तो सही रही हो तुम।" चैतन्य ने उसकी बातों से सहमत होते हुए कहा।

"और रही बात अमांडा और परिधि की.. तो उनके अंदर के प्रेम ने ही उन्हें उनके जीवन को जीने का एक नया मौका दिया। एडवर्ड इतना शातिर था... मगर अमांडा और परिधि को नुक़सान नहीं पहुँचा पाया। उसकी नफ़रत.... यहीं तो प्रेम से हार गई। दो सौ सालों के बाद भी वह अपने
बुरे इरादों में कामयाब नहीं हो सका क्योंकि अल्फ़ी के प्रेम की फुहारें उस एडवर्ड के नफरत की आग से कहीं ज्यादा असरदार थीं। अभिशप्त अल्फ़ी नहीं... एडवर्ड और उसके जैसी सोच वाले लोग होते हैं... जो खुद भी इस नफ़रत की आग में जलते हैं और दूसरों को भी जलाते हैं। समझे!" अनामिका ने उसके बालों को बिगाड़ते हुए बहुत ही प्यार से कहा।

"अरे यार!" चैतन्य ने चिढ़कर उसका हाथ पकड़ा था। अभी वो आगे कुछ और बोलता उससे पहले ही परिधि, अनामिका को आवाजें देती हुई तेजी से वहॉ पहुँची। दोनों का ही ध्यान उस ओर हुआ था।

"अनु दी!" उसने बहुत ही बेसब्री से अनामिका को पुकारा।

"क्या हुआ परिधि? परेशान लग रही हो!" अनामिका ने अपने माथे पर बल डालते हुए फिक्र से पूछा।

"हॉ दी! परेशानी की ही बात है। मेरे कपड़े आपके पास हैं क्या?" परिधि ने उतनी ही बेचैनी से पूछा।

"कौन से कपड़े?" अनामिका ने पूछा।

"वहीं कपड़े, जिन्हें पहने हुए मैं आपको और वरूण भैया को मिली थी।" परिधि ने उसे समझाते हुए कहा।

"वो कपड़े! होंगे अलमारी में कहीं! क्यों? तुम्हें वो फटे हुए कपड़े क्यों चाहिए?" अनामिका ने याददाश्त पर जोर डालते हुए पूछा।

"बस चाहिए दीदी! आप आइए ना! मुझे ढूंढ कर दीजिए।" परिधि ने अनामिका का हाथ पकड़ते हुए कहा।
"क्या हुआ परिधि? अभी उसकी इतनी क्या ही जरूरत है?" अनामिका ने कहा।

"दीदी! आज रात मुझे वापस चले जाना है। पर एक काम... एक जिम्मेदारी जो मैं समय की नदी के उस पार से साथ लेकर आई थी, जाने से पहले उसे पूरा करना है। प्लीज़ चलिए ना!" परिधि ने उसे ताकत से खींचते हुए कहा।

"वो इतना कह रही है, तो जाओ अनामिका! खोज दो!" चैतन्य ने परिधि का समर्थन करते हुए कहा।

"हॉ ठीक है चलो! पर मुझे ठीक से याद नहीं है कि वो है कहॉ? ढूंढने में समय लगेगा।" अनामिका ने कहा।

"कोई बात नहीं! चलो मैं भी मदद कर देता हूँ। हाथ बढ़ेंगे तो काम भी जल्दी ही होगा।" चैतन्य भी अपने हाथ झाड़ता हुआ खड़े हुआ।

जल्द ही तीनों अनामिका के कमरे में उसकी अलमारी को उधेड़ रहे थे। मगर वो चिथड़े ना जाने कहॉ जाकर छिप गए थे। थोड़ी ही देर में सारे कपड़े अलमारी के बाहर जमीन पर पड़े हुए थे। पूरी अलमारी खाली हो गई, मगर वो कपड़े नहीं मिले। उन कपड़ों के गायब होने से परिधि रूंआसी होकर सुबकने लगी। उन कपड़ों को लेकर उसकी बेसब्री ने उन दोनों को ही हैरान किया था।

"तुम्हें सच में याद नहीं है कि वो कहॉ हैं?" चैतन्य ने परिधि की हालत देखकर थोड़ी चिंता से पूछा।

"मैंने आखिरी बार उसे कब देखा था? अरे हॉ... उन्हें तो मैंने फेंक दिया।" अनामिका ने अपने सिर पर हाथ रखकर बहुत ही अफसोसनाक तरीके से
कहा।

"क्या?" एक साथ दो आवाजें आईं।

"हॉ, मैं उसके साथ रखी डायरी निकाल रही थी, तो वो कपड़े उस डायरी के साथ उलझ गए। मैंने खींचकर दोनों को अलग किया और कपड़े जमीन में फेंक दिए। बाद में उन्हें उठाकर फेंक दिया। उन्हें रखने का भी क्या मतलब था!" अनामिका ने जैसे अपनी सफाई देते हुए कहा।

ये सुनते ही परिधि का पूरा चेहरा स्याह पड़ गया और धम्म से नीचे गिरकर घोर हताशा से उसने अपने चेहरे को छिपा लिया और जोर-जोर से सुबकने लगी।

"अरे यार! बस कपड़े ही तो थे। वो भी फटे हुए! पता होता कि तुम उनके लिए इतना परेशान हो जाओगी तो मैं कभी ऐसा ना करती।" अनामिका ने बहुत ही शर्मिंदगी के साथ कहा।

चैतन्य ने भी परिधि को ढांढस बंधाने की कोशिश करते हुए उसे शांत कराना चाहा। मगर जब उसके

रोने की रवानगी कम नहीं हुई, तो उसने खीझकर पूछा, "ऐसा क्या है उस कपड़े में... कि इतना परेशान हो रही हो?"

"उन कपड़ों के साथ... एक बहुत ही.... कीमती चीज थी। एक अमानत... जो मुझे... किसी तक पहुँचानी थी।" परिधि उसी रफ्तार में रोते हुए बोली।

"क्या?" अनामिका ने पूछा।

"एक सोने की अंगूठी थी, जिसमें एक लाल नग जड़ा हुआ था।" परिधि ने सिर उठाकर अनामिका की ओर देखते हुए कहा और ये सुनते ही
अनामिका का लटका हुआ चेहरा एक बार फिर से चढ़ा था। परिधि की बात सुनकर अनामिका तेजी से अपनी ड्रेसिंग टेबल के पास गई और फिर उसके सबसे नीचे वाले ड्राअर को खोलकर उसके अंदर से कुछ निकला और फिर उसे लेकर तेजी से परिधि के पास आई।

"क्या... यही है?" अनामिका ने अपनी मुट्ठी फैलाते हुए कहा। उसकी बात सुनकर रोती हुई परिधि एकदम से चुप हुई और अनामिका की हथेली की ओर देखा, जहाँ सोने की अंगूठी में जड़ा वो लाल नग पूरी ताकत से चमक रहा था। उसे देखते ही परिधि का रोना पूरी तरह से रूक गय

"ये... ये... हाँ यही तो है।" परिधि ने लपककर उसे उठाते हुए कहा।

"हम्म! शुकर है! उन कपड़ों को नीचे फेंका था, तो ये छिटककर कपड़ों से अलग हो गई थी। उस समय मुझे पता नहीं था कि ये इन कपड़ो से बाहर आई थी। मुझे लगा कि गीता की होगी, तो मैंने उठाकर ड्राअर में रख दी थी। बाद में मैं इसे भूल गई। याद करने का समय ही नहीं मिला।" अनामिका ने राहत की साँस लेते हुए कहा।

"पर ये है किसकी? जिसके लिए तुम इतना परेशान हो रही थी।" चैतन्य ने पूछा।

"ये अमांडा जॉनसन की अंगूठी है और उसने आपके लिए दी है।" कहते हुए परिधि ने वो अंगूठी चैतन्य की ओर बढ़ा दी।

"मेरे लिए! मेरे लिए क्यों?" चैतन्य ने हैरानी से उस अंगूठी को देखते हुए पूछा।

चैतन्य के इस सवाल से वो गुंग होकर रह गई। उसके पास इस सवाल का जवाब तो था, पर वो सही शब्द नहीं थे, जिनकी मदद से वो चैतन्य को ये
सब समझा सकती थी। उसने एक लाचारी भरी नज़र अनामिका की ओर घुमाई और नज़रों की भाषा पढ़ने में माहिर अनामिका ने सब समझ लिया। वो आगे आई और उस नाज़ुक सी अंगूठी को परिधि के हाथ से ले लिया। उसे लेकर वो चैतन्य के पास आई और फिर चैतन्य के गले में पड़ी अपनी चेन खोलने लगी, जो उसे उसने अतीत में आपसी संपर्क के लिए दी थी।

"क्या कर रही हो?" चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।

"श्श्श्श!" अनामिका ने उसके होंठों पर अपनी ऊंगली रखकर उसे चुप कराया और फिर उस अंगूठी को उस चेन में डालकर फिर से चैतन्य के गले में पहना दिया। चैतन्य ने सिर झुकाकर अपनी गर्दन के बस

थोड़ा सा नीचे पड़ी हुई उस अंगूठी को देखा, जो अनामिका की चेन का साथ पकड़े हुए थी। उसे अभी भी कुछ समझ में नहीं आया था और उसी नासमझी के साथ उसने सिर उठाकर अनामिका की ओर सवाल करती नज़रों से देखा।

"तुम्हें कहा था ना! जब प्रेम आत्मिक हो जाए तो सूकून बन जाता है। तुम्हारे लिए उसका प्रेम भी ऐसा ही था। किसी भी व्याख्या से परे। इसे हमेशा अपने पास रखना। इसका स्पर्श तुम्हें भी हमेशा सूकून पहुँचाएगा।" अनामिका ने चैतन्य की ऑखों में देखते हुए कहा और अपना जवाब मिलते ही चैतन्य ने एक बार फिर से उस अंगूठी की ओर देखा। अमांडा से मुलाकात का एक हिस्सा उसके कानों में बिखर गया।

"हॉ! तीन दिन पहले वॉकर मेंशन में। पर अब क्या फायदा? आप तो शादीशुदा निकले।"
चैतन्य को उसके उन शब्दों की गहराई अब पता चली, जिस पर उसे घोर आश्चर्य ही हो रहा था और इसे सचमुच शब्दों में उतारा नहीं जा सकता था। उसने उस अंगूठी पर अपनी ऊंगलियॉ फिराई और बोला,

"आत्मिक प्रेम!"

�अभिशप्त: अंतिम भाग - अतीत के रहस्य और भविष्य की चुनौती

सब कुछ सही होने के बाद खुशी हर किसी के चेहरे पर खिल रही थी। पर साथ ही परिधि के वापस जाने की खबर भी सबको उदास कर गई थी। एक लड़की जो अपनी खोई हुई याददाश्त में कितना कुछ छिपाकर ले आई थी और उसके आने के बाद कितना कुछ घट निकला था। दस दिन पहले स्थापित सारी धारणाएँ हर दिन बीतने के साथ ही ध्वस्त होती चली गईं। एक कहानी जो अतीत, वर्तमान और भविष्य को नफ़रत और प्रेम
के धागों में लपेटे हुए थी... उसका अंत सुखद परिणिति के रूप में सामने आया था।

प्रोफेसर साहनी के पूरी तरह से गायब होने की खबर मिलने के बाद तृषा ने पूरे अधिकार और प्यार से सृष्टि और मुकुल के सिर पर हाथ रखा और उन्हें अपने ऑचल में समेट लिया। कई आजमाइशों के बाद अंततः उनका परिवार एक हो गया था। सब बहुत खुश थे और अब आगे बढ़ने की तैयारी में थे।

****

"तुम्हारी नियति यहॉ नहीं हैं परिधि! कहीं और है! तुम जानती हो कि कहॉ? तुम यहॉ दूसरों की कामयाबी पर तालियॉ पीटने के लिए नहीं बनी हो। तुम तो इन सबका आधार हो। क्या तुम्हें कभी अजीब नहीं लगा कि एडवर्ड तुम्हें क्यों हासिल करना चाहता था? तुम्हारे पास तो कोई जादुई ताकत भी नहीं है। जानती हो क्यों? क्योंकि तुम समय-चक्र का वो रहस्य हो, जिसने आज का भविष्य बनाया है। इसीलिए तो वो एडवर्ड तुम्हें यहीं क़ैद करके मारने की कोशिश में था। वो नहीं चाहता था कि तुम वहॉ जाओ, जिस वजह से उसकी शक्तियॉ छिन गईं और वो नर्क का द्वार हमेशा के लिए बंद हो गया। वो अतीत का वो हिस्सा बदलना चाहता था, पर भूल गया था कि नियति अपने फैसले कभी नहीं बदलती। तुम्हारा सफर यहॉ नहीं... वहॉ खत्म होगा, जहॉ तुम्हारे वजूद के मायने होंगे। तुम जाओ! अगर सब सही हुआ तो मैं समझ जाऊंगा कि मेरे प्राश्चित को ईश्वर का अनुग्रह मिल गया है। शायद इसी कार्य को करने के लिए सॉसें अभी तक अटकी हुई थीं। अब मृत्यु का ना तो कोई भय है और ना ही शोक
होगा।"

"परिधि!"

अपना नाम सुनकर परिधि ख्यालों के दायरे से बाहर निकली, जहॉ वो विक्टर की कही हुई बातों में अभी भी उलझी हुई थी। सृष्टि थी, जो उसे बुलाने के लिए आई थी।

"हॉ! आई!" परिधि ने अपने ख्याल समेटे और उसके साथ हो ली। सब हॉल में बैठे हुए उसी का इंतजार कर रहे थे।

"आओ परिधि! यहॉ बैठो!" तृषा ने उसे अपने पास बुलाते हुए कहा। परिधि की पूरी कहानी जानने के बाद वो उसके लिए बहुत ही भावुक हो गईं थीं। परिधि उन्हें एक निश्चल मुस्कान देते हुए उनके पास बैठ

गई।

"परिधि! बेटा! हम चाहते हैं कि आप एक बार फिर से सब सोच लो। अतीत में कुछ भी बाकी नहीं रह गया है, तो तुम वहॉ क्या करने जाओगी? हम सब चाहते हैं कि तुम यहीं रूक जाओ। अतीत और भविष्य के बीच का सेतु हम ढूंढ लेंगे। चिंता मत करो!" डॉ. अनंत ने बहुत ही प्यार से परिधि से कहा।

"हॉ परिधि! रूक जाओ ना! प्लीज़!" अनामिका ने उसके पास बैठकर उसका एक हाथ पकड़कर कहा। पास ही बैठा मुकुल ख़ामोशी से बैठा परिधि को एक उम्मीद के साथ देख रहा था।

परिधि ने उन सभी की ओर बहुत ही जज़्बाती नज़रों से देखा और फिर
उतने ही जज़्बाती लहजे में बोली, "आप लोगों का प्यार देखकर मेरा दिल भर आया है। बेवकूफ ही होगा वो... जो इतना प्यार छोड़कर जाएगा। पर... हम जो चाहते हैं.. हमेशा वो नहीं होता है। आप लोगों का एक सफ़र ख़त्म हुआ है और शायद आगे भी ऐसे सफर पर जाना होगा आपको। मगर मेरे सफर की मंजिल भविष्य में नहीं अतीत में है और मुझे वहॉ जाना ही है। अगर मैं वहॉ नहीं गई... तो एडवर्ड कामयाब हो जाएगा। पूरा भविष्य बदल जाएगा और ये नहीं होना चाहिए। प्लीज़! मुझे कमजोर मत कीजिए!"

और उसकी बात सुनकर सभी सकते में आए थे। एक ही रात में परिधि पूरी तरह से बदली हुई लग रही थी। भावुक तो वो अभी भी उतनी ही थी, पर उसके लहजे में पहले की तरह कोई लड़खड़ाहट नहीं थी। वो हर सूरत में मजबूत दिखाई दे रही थी।

"नहीं परिधि! कोई तुम्हें कमजोर नहीं करेगा। हर किसी को अपनी मंजिल चुनने का हक है। अगर तुमने चुनी है... तो मैं इसका स्वागत करती हूँ। इन बीते दस सालों में मैंने ये बात सीखी है कि... हमारी दुनिया भावनाओं में बहने वालों के लिए नहीं है। यहॉ आपको हर कदम पर खुद को और भी ज्यादा मजबूत करना होता है। अगर तुम ये चाहती हो... तो ऐसा ही होगा।" सबको चौंकाते हुए तृषा ने परिधि के सिर पर हाथ रखकर कहा, जिस पर परिधि अपनी ऑखों को नम करती हुई उनसे लिपट गई।

कुछ दूर बैठे मुकुल की ऑखों में जगी उम्मीद की लौ धीमी होते-होते बुझ गई। वो उन्हीं बुझी हुई ऑखों से उसे देख रहा था। वो पहेली सी लड़की किस तरह से उसके दिल में इतनी गहरी उतर गई, उसे पता ही नहीं चला। शायद उसके भूले हुए अतीत के दर्द ने मुकुल के दिल में जो नर्म सा कोना तलाशा था, सुबह उसके पिता और उसके रिश्ते को लेकर कही गई परिधि की बातों ने उसे स्थायित्व दे दिया था। उसकी ऑखें नम हो गईं, जिन्हें छिपाने के लिए वो वहॉ से बहाने से हट गया। परिधि ने उसे जाते हुए देखा, पर फिलहाल उसकी ओर जाने से परहेज़ ही किया।

परिधि के जाने पर मुहर लग चुकी थी। बहुत पूछने पर भी उसने कुछ भी बताने से इंकार ही किया। सबने भी उसे ज्यादा कुरेदने की कोशिश नहीं की। शाम हो चुकी थी और आज रात ही उसकी वापसी थी।

****

"चैतन्य! परिधि का जाना तो तय हो गया। पर मैं उस समयद्वार को कैसे खोलूंगी? उसका रास्ता तो हमने तोड़ दिया था और उसके टुकड़ों को फेंक भी दिया। अगर मैं कोई नया समयद्वार बनाऊं, तो कहीं ऐसा ना हो कि वो भी हेममाया के पहले समयद्वार की तरह अजीब सा व्यवहार करें और परिधि कहीं की कहीं पहुँच जाए।" सेव काटती हुई अनामिका ने बात खत्म करते-करते अपने हाथ रोके थे। वो दोनों किचन में रात के खाने के लिए फ्रुट कस्टर्ड बनाने की तैयारी कर रहे थे... जो परिधि की पसंदीदा थी।

"तुम्हें भी ना हर चीज फेंकने की बड़ी ही जल्दी होती रहती है। अभी एक टुकड़ा भी पास होता तो तुम वो समयद्वार कितनी आसानी से खोल सकती थी।" अंगूर के दानों को अलग करके एक बाउल में रखता हुआ चैतन्य बोला।

"अरे! तो मुझे थोड़ी ना पता था कि उन टुकड़ों की फिर से जरूरत आन पड़ेगी। अब ये एक नई मुसीबत आ गई। मुझे डर लग रहा है।" अनामिका ने अंगूरों वाला बाऊल चैतन्य से लेते हुए फिक्रमंदी से कहा। उसके चेहरे के बिखरते रंगों को देखकर चैतन्य ने उसके पास आकर उसे पीछे से अपनी बाहों में भरा और उसके कान के पास बोला, "परेशान मत हो! ठीक हो जाएगा सब!"

"सच में! तुम्हें लगता है कि... मैं ये कर लूंगी।" अनामिका ने उसकी ओर सिर उठाकर उसे उम्मीद भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

"ऑफकोर्स! म्हारी छोरी किसी से कम है क्या!" चैतन्य ने ठिठोली करते हुए कहा, जिस पर वो खुलकर मुस्कुराई थी।

"थैंक्यू! हौसला बनकर हमेशा साथ खड़े होने के लिए।" अनामिका ने उसे प्यार से देखते हुए कहा।

"वैसे थैंक्यू किसी और तरीके से बोलोगी, तो भी चलेगा।" चैतन्य ने उसे शोखी भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

"चलो हटो! अभी कोई आ गया तो... थैंक्यू के बदले सॉरी बोलने की नौबत आ जाएगी।" अनामिका ने अपने चिर-परिचित अंदाज में उसकी पसलियों में अपनी कोहनी घुसाते हुए कहा।

"आह! क्या करती हो यार? लगता है! और देख लेना कोई नहीं आएगा... आएगा तो बस तुम्हारा वो वरूण। पता नहीं कैसे... पर जब भी मैं तुम्हारे करीब होता हूँ... उस कमबख़्त को पता चल जाता है।" चैतन्य ने शिकायती लहजे में कहा।

"कुछ भी!" अनामिका ने सिर झटकते हुए कहा।

"अभी खुद देख लेना।" कहते हुए चैतन्य उसके पास आया और उसके
गालों में खेलती उसकी लटों को कानों के पीछे किया।

"ठीक है! ठीक है! बाहर डायनिंग टेबल पर केले रखे हैं। लेकर आओ जरा!" अनामिका ने उसकी बातों को परे करते हुए कहा और फलों की टोकरी से आखिरी सेव उठा लिया।

"जो हुकुम मेरे आका!" चैतन्य ने अपना आधा शरीर उसके सामने झुकाकर अंदाज से कहा और वहाँ से

जाने के लिए पलटा... कि तभी वरूण वहाँ दनदनाता हुआ आया। उसे वहाँ देखकर चैतन्य के होंठ शरारत से टेढ़े हुए।

"कहा था ना!" वो अनामिका के कान में फुसफुसाया और फिर अपने लोअर की दोनों जेब में हाथ डाले सीटी बजाता वो वरूण के बगल से बाहर निकल गया।

वरूण ने उसे मुँह बिगाड़कर बड़ी ही चिढ़ से देखा और फिर अंदर आकर फलों की टोकरी में देखने लगा।

"कुछ चाहिए तुम्हें?" अनामिका ने सवाल पूछते हुए उस सेव को खाने के लिए मुँह से लगाया।

"मुझे सेव चाहिए!" वरूण ने फलों की टोकरी में रखे फलों को ऊपर नीचे करते हुए कहा।

"ओह! तो ये ले लो! और सेव नहीं है।" सेव को अपने होंठों के पास से वापस वरूण की ओर बढ़ाते हुए अनामिका ने कहा। वरूण ने वो सेव लेने के लिए हाथ आगे बढ़ाया और फिर अगले ही पल हाथ वापस खींच लिया।
"सॉरी! तुम्हारा जूठा खा सकता हूँ, उस छिछोरे का नहीं। आइंदा से मुझे ऐसे ऑफर मुँह धोकर दिया करना। समझी!" वरूण भड़की हुई आवाज में बोला।

वरूण की बात सुनकर अनामिका पहले तो सोच में पड़ गई और फिर जैसे ही वो उसकी बातों का मतलब समझी, उसके दोनों गाल कान तक लाल हो गए। वो उससे कुछ कह पाती, उससे पहले ही किसी ने उसके हाथ से वो सेव ले लिया। वरूण और अनामिका ने उस तरफ देखा, तो चैतन्य उस सेव पर अपने दाँतों से मेहरबानी कर चुका था।

"ये तो बड़ी अच्छी बात है।" चैतन्य ने वरूण को सुलगाने वाले लहज़े में कहा।

"हुंह!" वरूण मुँह टेढ़ा करता हुआ बाहर चला गया।

"तुम ना! सच में वो समय द्वार खोलो! वो जैसे ही खुलेगा... परिधि से पहले मैं इसे उसमें फेंक दूंगा। तुम खोजो अपने कमरे में। उस समयद्वार के कॉच का कोई टुकड़ा कहीं मिल जाए शायद, जैसे आज सुबह अमांडा की अंगूठी मिली थी।" सेव चबाता हुआ चैतन्य अपनी ही रौ मैं बोलता जा रहा था।

और ये सुनते ही चॉपिंग बोर्ड पर चलते अनामिका के हाथ झटके से रूके थे। कुछ सोचते हुए उसकी ऑखें चारों ओर नाची और फिर उनमें एक चमक उतर आई। वो तेजी से चैतन्य की ओर पलटी और उसके दोनों कंधे पकड़ लिए, जिससे एक पल के लिए वो चौंका।

"यू आर सच अ डार्लिंग! तुम हमेशा मेरी हर मुसीबत का हल लेकर आते हो। मैं अभी आती हूँ, तब तक ये सारे फल काट देना। काम ठीक से हुआ तो इस बार थैंक्यू भी तुम्हारे अंदाज में ही मिलेगा।" अनामिका चहककर
उछलते हुए बोली और तेजी से किचन से बाहर निकल गई।

"अभी लो!" अनामिका की बात सुनकर खुशी और हैरत दोनों ही से ऑखें फैलाते हुए चैतन्य बोला और अनामिका के रखे हुए चाकू को उठा लिया।

****

परिधि के रूकने से इंकार के कुछ देर बाद मुकुल पीछे ग्रीन हाउस में खड़ा था। उसने उस ग्रीन हाऊस में चारों ओर नज़रें घुमाई। ये वही जगह थी... जहाँ कुछ ही दिन पहले वो परिधि से मिला था। उसे एक-एक करके वो सारे लम्हे याद आ रहे थे, जो उन दोनों ने यहाँ एक साथ बिताए थे। उसका परिधि से चिढ़ना, परिधि का उसे लगातार इरिटेट करना। वो लड़का जो लड़कियों को लेकर पत्थर जैसे विचार अपने मन में रखता था, परिधि से मिलने के बाद वही पत्थर पिघलने लगे थे। उसने एक गहरी साँस ली और वहाँ से जाने के लिए मुड़ा, तो परिधि को सामने पाया।

"यहाँ क्या कर रहे हो?" परिधि ने पूछा।

मुकुल ने कुछ कहा नहीं। बस उसे एकटक देखता रहा और फिर पास ही रखे एक बेंच पर झुककर नीचे की ओर देखता हुआ बैठ गया। परिधि भी उसके पास जाकर बैठ गई।

"तुमसे कुछ कहना था। इसीलिए तुम्हें ढूंढती हुई यहाँ आई थी।" परिधि ने भी झुककर उसके चेहरे की ओर देखते हुए कहा।
"मुझसे! क्या?" मुकुल ने उसी तरह नीचे की ओर घूरते हुए कहा।

"देखो मुकुल! मैं जानती हूँ कि तुम्हारा दर्द बहुत बड़ा है और मैं ये भी जानती हूँ कि... तुम इस दर्द से क्यों बाहर नहीं निकल पा रहे हो?" परिधि ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा।

परिधि की बात सुनकर मुकुल के माथे पर शिकन उभरे और उसने उसी चेहरे के साथ परिधि की ओर देखा।

"मुझे अनंत अंकल ने बताया कि उस रात क्या हुआ था? पर मुकुल... सच में! इसमें किसी की गलती नहीं थी। तुम पहली बार अपने दोस्तों के साथ बाहर गए थे। तुम्हारे पापा का बार-बार फोन आया तो उन लड़कियों ने ये सोचकर छिपा दिया होगा कि कहीं वो तुम्हें वापस घर ना बुला लें। किसी के दिमाग में पहला विचार ये नहीं आता कि दूसरी ओर कुछ ग़लत हुआ होगा। अब तुम इसी बात की ग्लानि में खुद को भी सजा दे रहे हो और दूसरों को भी।" परिधि बहुत ही संजीदगी से बोली।

उसकी बात सुनकर एक बार फिर से मुकुल की ऑखों में दर्द उतर आया, जिसे छिपाने के लिए वो एक बार फिर से नीचे की ओर देखने लगा।

"मुकुल! नफ़रत करना आसान नहीं होता और सही भी नहीं। सदियाँ गुजर जाती हैं इस नफ़रत के बोझ को सहते-उठाते और पीढ़ियाँ बर्बाद हो जाती हैं। हम सभी के अंदर एक एडवर्ड छिपा हुआ होता है, बाहर निकलने के लिए हर मौके को तलाशता। मगर हमारे अंदर हमेशा एक अल्फ़ी भी छिपा हुआ होता। अब हमें ये तय करना है कि हमें नफ़रत चुनकर एडवर्ड बनना है या प्रेम का हाथ थामकर अल्फ़ी को जीना है। मैं जानती हूँ कि तुम कभी भी... एडवर्ड को नहीं चुनोगे, तो वापस लौट जाओ उसकी

दहलीज से। माफ कर दो खुद को... अपने दोस्तों को। तुम्हारे पिता भी तुमसे प्रेम करते थे... और तुम्हें इस आग में सुलगते देख
उन्हें बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता होगा। निकाल फेंको इस नफ़रत नाम के अंकुर को अपने अंदर से... इससे पहले कि ये तुम्हारे अंदर अपनी जड़ें जमा लें। मुझे भी अच्छा नहीं लगेगा। याद रखना! क्रोध और घृणा संहार कर सकते हैं, पर सृजन सिर्फ प्रेम कर सकता है।" अपनी बात खत्म कर परिधि ने मुकुल की ओर देखा।

उसकी बात सुनने के बाद मुकुल कुछ देर उसी तरह चुपचाप सुनता रहा और फिर परिधि की ओर देखकर उसने एक ईमानदार मुस्कुराहट के साथ हॉ में सिर हिलाया। ऑखें अभी भी नम थीं।

"और हॉ... सामान्य होने के बाद प्रेम का अपने जीवन में स्वागत करना। शादी करना! बच्चों के नाम सोचना! उनके भविष्य की फिक्र में रातों को जागना! अपनी संगिनी का हाथ पकड़कर बुढ़ापे की योजनाऍ बनना! क्योंकि कभी-कभी साधारण सी दिखने वाली चीजें भी बहुत चुनौतीपूर्ण होती हैं।" परिधि ने उसे बहुत ही प्यार से देखते हुए कहा।

"अगर मेरी बेटी हुई तो उसका नाम परिधि रखूं?" मुकुल ने सवाल किया।

"क्यों नहीं? अपने प्रेम को बेटी में खोजना एक अच्छा विचार है।" परिधि ने हँसते हुए कहा।

"मैं तुम्हें कभी भी नहीं भूलूंगा और ना ही तुम्हारी कही किसी भी बात को।" मुकुल ने उसकी ऊंगलियों को अपनी हथेलियों में कसते हुए कहा और फिर आगे बढ़कर उसके माथे को चूम लिया। परिधि ने भी मुस्कुराकर उसके प्रेम को स्वीकार किया।

****

रात हो चुकी थी और दूसरा पहर भी खत्म होने वाला था। सभी स्टडी रूम में एक आदमकद आईने के पास मौजूद थे। अनामिका, डॉ. अनंत और आशुतोष एक किताब पर बहुत देर से झुके हुए थे। वहीं तृषा, गीता और सृष्टि, परिधि के साथ बैठी हुई थीं। एक ओर वरूण, मुकुल, चैतन्य और अंकित भी बैठे हुए थे। सभी परिधि को विदा करने के लिए मौजूद थे। अंकित शाम के समय में विक्टर की मौत की खबर देने आया तो उसे परिधि के जाने का पता चला और वो भी रात वहीं रूक गया।

"ठीक है अनामिका! मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई भी परेशानी होनी चाहिए।" डॉ. अनंत ने अपना सिर ऊपर उठाते हुए कहा।

"हॉ! मुझे भी नहीं लगता! तुम्हें बस उसे खोलना ही है। कोई नया नहीं बनाना है।" आशुतोष ने कहा।

"हम्म! ठीक है! तो फिर ये करते हैं।" अनामिका ने भी आत्मविश्वास भरी आवाज में कहा।

"और वो कहॉ हैं?" आशुतोष ने पूछा।

"ये रहा! इसकी मुझे बिल्कुल भी याद नहीं थी। सुबह अमांडा की अंगूठी निकालते समय इस पर नज़र पड़ी थी, पर ध्यान इसकी ओर नहीं गया। रात चैतन्य ने जब अमांडा की अंगूठी और कॉच के टुकड़े के

बारे में कहा, तब मेरा ध्यान इस ओर गया। ये भी परिधि के उन कपड़ों से उसी दिन ही गिरी थी, जिसे मैंने जल्दबाजी में अमांडा की अंगूठी के साथ ही रख दिया था। शायद समयद्वार का रास्ता जब नष्ट हुआ होगा, तब ये टुकड़ा परिधि के कपड़ों में फंस गया होगा।" अनामिका ने कहा और उस नीले कॉच के टुकड़े को बीच टेबल में रख दिया। आशुतोष और डॉ. अनंत ने उसे अपनी ऑखें फैलाकर देखा। आखिर ऐसी चीज रोज देखने के लिए कहॉ ही मिलती है।

"चलो अनामिका! इसे सक्रिय करो!" डॉ. अनंत ने उस कॉच के टुकड़े की ओर इशारा करते हुए कहा।

अनामिका ने अपना सिर हिलाया और फिर चैतन्य को आवाज देकर पास बुलाया। उसने अपने सीधे हाथ की छोटी ऊंगली और चैतन्य ने अपने सीधे हाथ की तर्जनी ऊंगली उस कॉच पर रख दी और अपनी ऑखें बंद कर लीं। अनामिका ने अपने बाएँ हाथ से अपने गले पर पड़े पेंडेंट को भी पकड़ रखा था। थोड़ी ही देर में अनामिका की उस ऊंगली का रंग पूरी तरह से नीला और चैतन्य की ऊंगली का रंग सफेद हो गया। इसके बाद उनकी ऊंगलियों के नीचे रखे उस कॉच की सतह धीरे-धीरे पानी की सतह की तरह हिलने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे कि उनकी ऊंगलियों से पानी उस कॉच के टुकड़े पर उतरकर उसकी सतह पर हलचल पैदा कर रहा हो। कुछ देर के बाद अनामिका की उस ऊंगली का सारा नीला रंग और चैतन्य की ऊंगली का सफेद रंग उस कॉच के टुकड़े में उतरकर समा गया। दोनों ने अपनी ऑखें खोली और उसे देखा।

"क्या ये हो गया?" अनामिका ने उस कॉच के टुकड़े को देखते हुए कहा, जो अब बिल्कुल उस समयद्वार के कॉच की तरह हिलोरें मारता दिख रहा था, जिससे उन्होंने 200 साल की दूरी मिनटों में पूरी की थी।

"लग तो रहा है।" डॉ. अनंत ने कहा।

"चलो! अब इससे रास्ता खोलो!" आशुतोष ने कहा।

"जी!" अनामिका ने कहा और उस कॉच के टुकड़े को उठाकर वो उस
आईने की ओर बढ़ गई। चैतन्य भी उसके साथ गया। अनामिका ने पलटकर चैतन्य की ओर देखा, जिस पर उसने उसे आगे बढ़ने का इशारा किया। अनामिका ने एक गहरी सॉस भरकर अपने फेफड़ों में भरी और दिल के अंदर से सारे बुरे ख्यालों को बाहर निकाला। उसने सामने आईने को देखा और फिर उस कॉच के टुकड़े को उस आईने के ऊपर रखकर उस पर अपनी हथेली टिका दी। इसके बाद चैतन्य आगे बढ़ा और उसने भी अनामिका की हथेली के ऊपर अपनी हथेली रख दी। चैतन्य के हथेली रखते ही अनामिका की हथेली के नीचे से एक नीली और सफेद रोशनी की लहरें निकलीं और धीरे से उस पूरे आईने में फ़ैल गईं। कुछ ही देर में नीली और सफेद रोशनी की वो लहरें जो उस कॉच के टुकड़े के अंदर हिलोरें मार रही थीं, अब उनका विस्तार उस पूरे आईने में हो चुका था। चैतन्य और अनामिका दोनों ने ही एक-एक कर अपनी हथेली हटाई। अनामिका की हथेली के नीचे दबा हुआ कॉच अब वहॉ मौजूद नहीं था। वो दोनों ही तेजी से पीछे हटे थे। समयद्वार खुल चुका था।

उस समयद्वार पर नज़र पड़ते ही परिधि अपनी जगह से उठी और उसके सामने खड़ी हो गई। उसने उस आईने पर हाथ रखा तो कुछ भी नहीं हुआ। ये देखकर परिधि की ऑखों में परेशानी माथे के बलों के साथ उभरी। उसने पीछे पलटकर अनामिका की ओर देखा।

"तुम्हारे पास तो अंगूठी थी ना हेममाया की!" अनामिका बोली।

"वो तो मैंने अल्फ़ी को दे दी थी। मुझे लगा था कि वो उसकी अमानत है।" परिधि ने बुझी हुई आवाज में कहा।

"एक मिनट! एक और अंगूठी! अगर डॉक्टर ने अमांडा वाली अंगूठी परिधि के हाथ से निकाल दी थी, तो दूसरी वाली क्यों नहीं निकाली?" चैतन्य ने पूछा।
"क्योंकि उसकी उस ऊंगली में कोई चोट नहीं थी और वो ऊंगली से निकल भी नहीं रही थी। बेवकूफ!" जवाब उसे त्यौंरियॉ चढ़ाकर देखते हुए वरूण ने दिया।

"चुप रहो तुम दोनों! तो.... तुम परिधि की मदद कर दो अनामिका!" सृष्टि ने मशविरा देते हुए कहा।

"उसके लिए मुझे भी उसके साथ जाना होगा।" अनामिका ने आह भरते हुए कहा।

"इसका मतलब है कि परिधि इस समयद्वार का इस्तेमाल नहीं कर सकती!" मुकुल ने पूछा।

"उसे अकेले जाना है तो उसके पास हेममाया की कोई चीज होनी ही चाहिए। ये एक तरह से अनुमति पाने की तरह है।" अनामिका ने कहा।

"अल्फ़ी वो अंगूठी कभी नहीं देगा।" वरूण ने और भी निराशा से कहा।

"हम्म!" कहते हुए अनामिका किसी सोच में डूब गई। इसी हालत में उसने सामने हिलोरें मारते उस आईने में देखा। उसका धुंधला सा अक्स नज़र आ रहा था। पहले तो उसने खुद को ग़ौर से देखा और फिर एकदम से उसकी ऑखें चमक उठीं।

"वो जाएगी... क्योंकि वो जा सकती है।" तेजी से पीछे पलटकर अनामिका ने कहा।

"पर कैसे?" आशुतोष ने पूछा।

ये सुनते ही अनामिका ने अपने गले में पड़ी हुई चेन खोली और उसे
सबको दिखाते हुए बोली, "इसकी मदद से। ये हेममाया का था, जो उसे उसकी मॉ ऐना कभी भी उसे दे ना सकी। आखिरी मुलाकात में उन्होंने ये मुझे दी थी।"

सभी ने उस चेन और उसमें लटकते हुए पेंडेंट की ओर देखा। सभी के लिए वो बस एक पेंडेंट था, मगर उसे देखकर डॉ. अनंत की ऑखों में एक पहचान उभरी।

"ऐसा लगता है कि... इसे कहीं देखा है। पर कहॉ... ये याद नहीं आ रहा है।" डॉ. अनंत ने उसे पेंडेंट को घूरते हुए कहा।

"अच्छा! हो सकता है कि आपने ऐसा ही कुछ देखा हो। फिलहाल तो ये परिधि के वापस जाने की चाबी है।" अनामिका ने उस पेंडेंट को अपनी ऑखों के सामने रखते हुए कहा और फिर आगे बढ़कर वो पेंडेंट परिधि को पहना दिया। परिधि ने सिर झुका कर उस पेंडेंट को देखा। जाने का समय हो चुका था। जाने से पहले वो एक-एक करके सभी के पास गई। सभी की ऑखें भर आई थीं। आखिरकार सबसे आखिर में वरूण का स्नेह पाने के बाद वो उस समयद्वार की ओर मुड़ी। वो आगे कदम बढ़ाने का सोच ही रही थी कि तभी उसे कुछ याद आया और वो वरूण के पास वापस आई।

"कुछ सवाल... जो आप सबको हमेशा से परेशान कर रहे हैं। उनका जवाब आयुष-सार में मिल सकता है। शायद आप समझ जाएँ। पेज नं 45!" परिधि ने मुस्कुराते हुए कहा और फिर पलटकर समयद्वार की ओर चली गई।

एक नया सफर उसका इंतजार कर रहा था, जिसे एक बिल्कुल ही नई परिधि पूरा करने वाली थी। आत्मविश्वास से भरी हुई। उसने पलटकर एक बार फिर से सबको देखा और फिर एक गहरी साँस लेकर उस समय द्वार
में प्रवेश कर गई। सबने उसे जंगली रास्ते में कुछ दूर आगे तक जाते देखा और फिर समयद्वार की सतह जोरों से झिलमिलाने लगी। थोड़ी देर बाद जब वो हलचलें शांत हुई तो सब कुछ गायब हो चुका था। परिधि जा चुकी थी। सबकी जिंदगी में सीख की एक और कहानी जोड़कर कि मन की ताकत से ज्यादा ताकतवर और कुछ नहीं होता और दूसरों की काबिलियत से खुद की तुलना करने की बजाय अपने हुनर को पहचानने और उसे तराशने की कोशिश करनी चाहिए। आप खुद में ही सर्वश्रेष्ठ हैं। मिशन पूरा हो चुका था।

एक-एक करके सभी उस कमरे से बाहर निकलने लगे कि अब नर्म बिस्तर पर सोने से ज्यादा और कुछ भी जरूरी नहीं रह गया था। डॉ. अनंत और तृषा को उस स्टडी में छोड़कर अनामिका और चैतन्य सबसे आखिरी में बाहर निकले।

"अनु!" अनामिका के पीछे सीढ़ियॉ चढ़ते हुए चैतन्य ने उसे पुकारा।

"हॉ!" अनामिका ने पीछे मुड़कर उसे देखते हुए कहा।

"तुम कुछ भूल नहीं रही?" चैतन्य ने उसे कुछ याद दिलाने की कोशिश करते हुए कहा।

"क्या?" सवाल करते हुए उसकी ऑखें सिकुड़ी।

"वही जो तुमने किचन में मुझसे कहा था कि अगर सब कुछ सही तरीके से हो गया... तो तुम मुझे थैंक्यू बोलोगी।" चैतन्य ने उसकी याददाश्त को दुरूस्त करने की कोशिश करते हुए थोड़ी शरारत से कहा।

और ये सुनते ही अनामिका की ऑखें फैली और वो तेजी से पलटकर ऊपर भागते हुए बोली, "फिर कभी!"
उसकी बेईमानी से हक्का-बक्का रह गया चैतन्य भी उतनी ही तेजी से उसके पीछे भागा था। आखिरकार अनामिका के कमरे से कुछ दूरी पर चैतन्य ने उसे पकड़ ही लिया।

"चीटर! आज तुम्हारी चालाकी नहीं चलेगी।" उसे दीवार से लगाकर दोनों तरफ अपने हाथ जमाते हुए चैतन्य ने कहा।

अनामिका ने लाचारी से अपने दोनों ओर मौजूद उसकी मजबूत क़ैद को देखा। वो समझ गई थी कि आज वो फँस चुकी थी। वहीं उसके चेहरे के उड़ते हुए रंग चैतन्य को बड़े भले से लग रहे थे। आखिरकार अनामिका ने हथियार डालते हुए हार मान ली और वो उसकी ओर आगे बढ़ी। नजदीकी बढ़ने पर उसे महसूस करने की हसरत में चैतन्य की ऑखें फितरती तौर पर बंद हो गईं। अनामिका ने उसकी बंद ऑखों को देखा तो उसकी शरारत की नस फिर से फड़की। उसने अपने होंठ उसके होंठ पर

रखे और अगले ही पल उससे दूर हो गई। और चैतन्य जो किसी और ख्वाहिश के पूरे होने के इंतजार में था, उसने झटके से ऑखें खोली।

"थैंक्यू!" अनामिका ने कहा और उसे झटके से हटाते हुए अपने कमरे की ओर भाग गई। जब तक चैतन्य उस तक पहुँचता.. उसने दरवाजा बंद कर दिया था।

"अनु! दरवाजा खोलो!" चैतन्य बुरी तरह से झल्लाकर बोला।

"गुड नाईट चैतन्य!" अंदर से अनामिका की खनकती हुई आवाज़ आई।

"देख लूंगा तुम्हें! चीटर कहीं की!" चैतन्य ने दरवाजे पर एक लात मारते हुए कहा और उसी झुंझलाई हुई हालत में अपने कमरे की ओर मुड़ा तो सामने कुछ ही दूरी पर वरूण को अपने सीने पर दोनों हाथ बांधे उसे घूरता
हुआ पाया।

"और एक ये है... जिसे कभी चैन नहीं!" चैतन्य बड़बड़ाता हुआ उसके बगल से अपने कमरे की ओर निकल गया। वरूण ने दरवाजा बंद होने तक उसे घूरकर देखा। उसके बाद अनामिका के कमरे की ओर एक नज़र डालकर सिर हिलाता अपने कमरे में चला गया।

****

समयद्वार के दूसरी ओर -

परिधि आगे बढ़कर नीचे जाती उन सीढ़ियों के पास पहुँची, जो उसे अतीत में पहुँचाने वाली थी। उसने नीचे देखा। सीढ़ियों पर अंधकार का कब्जा था। उसने गिनती गिननी शुरू की और एक-एक करके सीढ़ियॉ उतरती गई। अपने समय में वापस जाने के लिए उसे बीस सीढ़ियॉ नीचे उतरनी थी, पर वो 14वीं सीढ़ी पर ही रूक गई। यानि कि 140 साल पहले और चित्रलेखा की मौत के दस साल बाद। उसने हाथ आगे बढ़ाकर अंधेरे में कुछ टटोला और एक दरवाजे की नॉब उसके हाथ आई। उसने धीरे से वो नॉब घुमाई और उस दरवाजे को खोला। सामने घना जंगल फैला हुआ था। परिधि अंदर गई और सीधा आगे बढ़ गई। कुछ दूर आगे बढ़ते ही उसे किसी नदी के बहने की आवाज सुनाई दी। वो और तेजी से आगे बढ़ी।

जल्द ही वो एक जंगली नदी के किनारे से थोड़ी ही दूर खड़ी थी। उसने सामने देखा। कोई खड़ा था, जो ऊपर आसमान में चमकते पूरे चॉद को
देख रहा था।

"यहीं.... इसी जगह... हर पूरे चॉद की रात उससे मिलने आता था वो। मेरा हर्षित!"

"तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र!" परिधि ने उसकी बात सुनकर कहा।

नाम सुनते ही सामने खड़े व्यक्ति ने मुड़कर उसकी ओर देखा। उसके चेहरे से निकलते तेज को देखकर परिधि की ऑखें चौंधिया गईं।

"परिधि!" वो उसे देखकर मुस्कुराया।

तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र और परिधि एक-दूसरे के सामने खड़े थे। एक नया सफर शुरू होने वाला था।

(#तांत्रिक श्रेष्ठ और प्रहरियों का उदय)

****

अगली सुबह बहुत ही खिली-खिली और खुशगवार सी थी। नाश्ते की
टेबल पर सभी बहुत ही आश्वस्त और प्रसन्न दिखाई दे रहे थे, सिवाए एक के। वो अपनी त्यौरियॉ चढ़ाए हुए सामने वरूण के साथ बैठी हुई अनामिका को घूरकर देख रहा था और अनामिका उसकी हर नज़र को नज़रअंदाज़ कर रही थी, जिससे वो और भी झुंझला रहा था।

"बरखुरदार! नाश्ता करो! ठंडा हो रहा है। उसे घूरकर तुम्हारा पेट नहीं भरने वाला।" आशुतोष ने उसे चेताते हुए कहा।

जवाब में चैतन्य ने अपनी नाराज सी नजरें आशुतोष की ओर घुमाई जो उसकी जगह गरम-गरम नाश्ते को देखने और खाने में ज्यादा दिलचस्पी दिखा रहा था। मन मारकर चैतन्य ने भी भांप उठते पोहे में अपनी चम्मच डाल दी। उन्हें नाश्ता करते हुए कुछ ही समय बीता था कि तभी डॉ. अनंत अपनी स्टडी से बाहर निकले और लगभग दौड़ते हुए उन तक पहुँचे।

"अनामिका! मैंने कहा था ना कि उस पेंडेंट को मैंने कहीं तो देखा है। ये देखो! प्रहरियों का इतिहास! इस पेज को देखो! है ना वही!" डॉ. अनंत ने उत्साहित स्वर में कहा।

उनकी बात सुनकर अनामिका ने हैरानी के साथ उस किताब को अपने सामने खींचा और उस पन्ने को गौर से देखने लगी। ये बिल्कुल वैसा ही पेंडेंट था।

"लग तो वैसा ही रहा है।" अनामिका ने सिर उठाकर डॉ. अनंत की ओर देखते हुए कहा।

"लग नहीं रहा... ये वही है। तुम सबके जाने के बाद कल पूरी रात मैंने न जाने कितनी पुस्तकों के पन्ने पलट डाले। आखिरकार ये पुस्तक मेरे हाथ आई और मैंने इस तस्वीर को देखा। इस तस्वीर को मैंने पहले भी देखा था, मगर ये पेंडेंट हमारे संग्रहालय में नहीं थी। कल इस तस्वीर को फिर से
देखने के बाद न जाने मेरे मन में क्या आया कि मैं एक बार फिर संग्रहालय में चला गया और देखो मुझे क्या मिला?" कहते हुए डॉ. अनंत ने एक चेन उनके सामने लटका दी, जिसके सबसे निचले सिरे में वही सफेद मोती वाला पेंडेंट लटक रहा था, जो ऐना ने अनामिका को दिया था। अनामिका ने हाथ आगे बढ़कर वह पेंडेंट ले लिया और उसे उलट-पुलट कर देखने लगी।

"अरे वाह! किसी की दी हुई चीज कभी इतनी जल्दी वापस आते मैंने नहीं देखी।" अनामिका के साथ बैठे वरुण ने चुहल भरी आवाज में कहा, जबकि अनामिका अभी भी उस पेंडेंट को घूर रही थी।

"तो क्या इसका मतलब है कि..." आशुतोष ने कहना चाहा, जिसे अनामिका की आवाज ने टोक दिया।

"परिधि कभी भी अपने समय में वापस नहीं लौटी थी। वो 140 या 150 साल पीछे वापस लौटी। तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र के पास। पर क्यों?" अनामिका ने कहा।

"क्या पता? मगर... परसों रात एडवर्ड को हराकर जब हम वापस आए.. वो उसी समय से वापस लौटने की बात कर रही थी। पूछने पर उसने कुछ बताया नहीं। बस इतना कहा कि एक सफ़र है, जो उसे पूरा करना है। उस समय दिल और दिमाग इतने थके हुए थे कि मैं उसकी बात पर ज्यादा गौर नहीं किया।" वरूण ने सबको बताया।

"मगर हमारे जाने से पहले तो ऐसा कुछ नहीं था। इसका मतलब कि हमारे जाने और आने के बीच ही कुछ हुआ है।" आशुतोष ने कहा।

"विक्टर! वो विक्टर के साथ थी। कहीं ऐसा तो नहीं कि विक्टर और परिधि के बीच कुछ बातें हुई हो। हमारे वापस लौटने पर परिधि ने ही
विक्टर के साथ नरम व्यवहार करने की बात कही थी क्योंकि वो मौत की दहलीज पर खड़ा था।" चैतन्य ने पिछली सारी बातें याद करते हुए कहा।

"एक मिनट! मुझे एक बात और याद आ रही है। उसने कल जाने से पहले मुझे यह कहा था कि वो सवाल जिनके जवाब के लिए हम परेशान रहे हैं... उसके जवाब हमें आयुष-सार से मिल सकते हैं।" वरुण ने परिधि की आखिरी कही हुई बात याद करते हुए कहा।

"आयुष-सार! ये क्या है?" चैतन्य ने सवाल किया।

"प्रहरियों का इतिहास और आयुष-सार वो सबसे पुरानी चीजें हैं जो तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र ने इस संग्रहालय को दी थीं। हम रखवालों का आयुष विज्ञान पूरी तरह से उसी किताब पर ही टिका हुआ है। क्या नहीं है उसमें! तांत्रिक श्रेष्ठ के किसी शुभचिंतक ने उन्हें दी थी।" डॉ. अनंत ने जवाब देते हुए कहा।

"क्या... हम एक बार देख सकते हैं?" चैतन्य ने इच्छा जताते हुए कहा।

"हॉ क्यों नहीं! अभी लाता हूँ। बाहर ही है वो।" कहते हुए डॉ. अनंत तेजी से स्टडी की ओर गए और जल्द ही उस किताब को लेकर वापस लौटे।

"ये देखो! हाथ से लिखी हुई है।" कहते हुए डॉ. अनंत ने एक काले रंग की कवर वाली किताब चैतन्य की ओर बढ़ाई। चैतन्य ने उस किताब को लिया और फिर उसे खोलकर देखा। एक-एक करके वो कई पन्ने पलटता गया। हालांकि उसमें जो कुछ लिखा था वो उसकी समझ में नहीं आ रहा था। मगर कुछ ऐसा था जिसे वो पहचान चुका था। कुछ पन्ने पलटने के बाद उसने उस किताब का सबसे आखरी पेज देखा। पेज खाली था। मगर उस पेज के सबसे निचले हिस्से में कुछ लिखा था, जिसे देखकर चैतन्य के होठों पर एक मुस्कुराहट आ गई।
"ये... परिधि की हैंडराइटिंग है। ये उसी ने लिखी है। ये लिखना उसे मैंने ही सिखाया था।" कहते हुए चैतन्य ने वो आखिरी खाली पेज उन सब की ओर आगे बढ़ाया, जिसके सबसे निचले हिस्से पर एक खास अंदाज में 'P' लिखा हुआ था। और ये वो सबूत था, जिसने ये साबित कर दिया कि परिधि तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र के पास लौटी थी।

"जरा दिखाओ मुझे। वो आखिर किन जवाबों की बात कर रही थी?" वरूण ने उस किताब की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा, जिस पर आशुतोष ने वो किताब उसकी ओर बढ़ा दिया। वरूण ने वो किताब उठाई और पेज नं 45 खोलकर देखा। वो पेज पढ़ते हुए उसके माथे पर शिकन हर शब्द के साथ बढ़ने लगे। वो पूरा पेज पढ़ने के बाद उसने सिर उठाकर सबकी ओर देखा और फिर उसे लेकर चला गया।

"इसे क्या हुआ?" चैतन्य ने उसकी पीठ को घूरते हुए कहा।

"उसने जवाबों के बारे में कहना! शायद उन्हें ढूंढने के लिए वो किताब ले गया हो। वो किताब अगर परिधि ने लिखी है और उसने जवाबों के लिए उसे पढ़ने के लिए कहा है, तो पढ़ने दो उसे।" अनामिका ने उसे टोकते हुए कहा।

जवाब में चैतन्य ने एक बार फिर से उस पर एक नाराज़गी भरी नज़र डाली, जिस पर अनामिका ने दबी हुई शरारती मुस्कान के बीच अंगूर का दाना मुँह में रखा।

"सफ़र तो अंजाना सा ही है। ये समझ लो... बहुत पुराना समय चक्र का एक रहस्य है... हमारी नियति पत्रक में लिखा हुआ, जिसे सुलझाना है।
इस किताब ने यह बताया है कि एक लड़की किसी और समय से इस समय में आएगी और इस वजह से सबके भूत, वर्तमान और भविष्य प्रभावित हो जाएँगे। कहा ये भी जाता है कि उस लड़की के माध्यम से बहुत कुछ ऐसा बदला जा सकता है, जो पहले ही घट चुका है या घटने वाला है। ये समझ लो कि वो लड़की एक चाबी है, समय से खेलने वाली।" (भाग -17)

कभी अनंत कुमार की कही एक बार सबके ज़हन में फिर से उतरी थी। परिधि एक बार फिर उनके लिए अतीत का एक हिस्सा बन चुकी थी।

****

रात के खाने का समय हो रहा था और वरूण अभी भी अपने कमरे में ही था। वो हॉस्पिटल में भी सारे दिन खाली समय में उसी किताब मे खोया रहा।

"अनु! देखो बेटा! ये वरूण कहॉ रह गया? बुलाकर लाओ उसे।" तृषा ने सब्जी का बाऊल टेबल पर रखते हुए कहा।

"जी आंटी!" कहते हुए अनामिका मुड़ी ही थी कि उसे वरुण तेजी से
सीढ़ियॉ उतरते हुए दिखाई दिया।

"आंटी! वो आ गया!" अनामिका ने कहा।

सब ये सोच रहे थे कि वो खाना खाने के लिए आया है, मगर उसका चेहरा ढेरों उलझनों का शिकार दिखाई दे रहा था। वो डॉ. अनंत के पास वाली कुर्सी पर बैठा और अपने पिता की ओर देखा।

"ये पिशाच का खंज़र तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र के पास कैसे पहुँचा?" उसने अपने सवाल से सभी को चौंकाया था।

"वो चित्रलेखा के पास था। जब वो फ्लोरिना के रूप में होती थी, तो उसी से ही सारे गलत काम करती थी। आखिरी में तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसी खंज़र में पिशाचिनी की शक्तियों को क़ैद किया था।" जवाब आशुतोष ने दिया जिसने चित्रलेखा की कहानी पढ़ी थी।

"और वो चित्रलेखा उर्फ फ्लोरिना के पास कैसे पहुँचा? अनामिका! तुमने तो कहा था कि वो खंज़र तुम सर विलियम की स्टडी में छुपा कर आई थी। तो वो खंज़र उस कमरे से बाहर कैसे निकला।" वरुण ने अगला सवाल किया।

"मुझे लगता है कि वो खंज़र उस स्टडी से तांत्रिक श्रेष्ठ सिद्धनाथ जी के पोते रामानुज ने निकाला होगा। उन्होंने आखिरी समय में उसे ही कुछ अनुचरों के साथ सर विलियम की स्टडी में भेजा था।" चैतन्य ने जवाब देते हुए कहा।

"रामानुज! क्या उम्र रही होगी रामानुज कि उस समय?" रामानुज नाम पर चौंकते हुए आशुतोष ने सवाल किया।
"यही कोई 12-15 साल के बीच। क्यों? क्या हुआ?" चैतन्य ने जवाब देते हुए पलट कर सवाल किया।

"क्या ये नाम तुम सबको सुना-सुना सा नहीं लग रहा। रामानुज! हार्लीन और रामानुज! चित्रलेखा उर्फ

फ्लोरिना के पिता रामानुज! तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र के गुरु रामानुज! और कोई पहचान चाहिए।" आशुतोष ने रामानुज नाम की व्याख्या करते हुए कहा।

"आपका मतलब है कि पिशाच के जिस खंज़र को अनामिका सर विलियम के स्टडी में छोड़ आई थी, वो तांत्रिक श्रेष्ठ सिद्धनाथ के पोते रामानुज के पास था, जो भविष्य में हार्लीन के संपर्क में आया और जिस वजह से फ्लोरिना उर्फ चित्रलेखा पैदा हुई। शायद हार्लीन ने ही वो खंज़र तांत्रिक श्रेष्ठ रामानुज के पास से चुराया होगा, जिसे बाद में चित्रलेखा तक पहुँचाया गया, जिससे वो फ्लोरिना बनकर उस नर्क के द्वार को खोल सके और वो इसमें लगभग कामयाब हो ही गई थी, मगर चित्रलेखा और हर्षित के प्रेम ने उन सबकी योजना को नाकामयाब कर दिया।" वरूण ने उस पिशाच के खंज़र की पूरी यात्रा को डिकोड करते हुए कहा।

"लोग तो हमेशा यही समझते रहे कि वो खंज़र चित्रलेखा के महल में ही है। मगर वहाँ तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र का खंज़र था, जिसमें पिशाचिनी नहीं... बल्कि चित्रलेखा की शक्तियाँ कैद थीं। तो वो खंज़र गायब कहाँ हुआ? और तो और.... एक सवाल ये भी है कि वो खंज़र अल्फ़ी के पास कहाँ से आया? क्योंकि तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र की सुरक्षा को तोड़ना किसी के बस की बात नहीं थी। अल्फी की भी नहीं।" आशुतोष ने खंज़र से जुड़ा अगला सवाल सामने रखते हुए कहा।

"अल्फ़ी ने मुझे बताया था कि वो खंज़र उसे चित्रा ने दिया था।" सवाल का जवाब अनामिका ने दिया।
"चित्रा मतलब! मंजरी की बेटी और वही... जिसने अनामिका की माँ मेघा को अपनी शक्तियाँ दी थी!" चैतन्य ने पूछा।

"हाँ वहीं!" अनामिका ने कहा।

"एक सवाल पूछूं क्या? ये सवाल बहुत समय से मेरे दिमाग में था, पर पूछने का मौका नहीं मिला।" चैतन्य ने कहा।

"हाँ पूछो!" डॉ. अनंत ने कहा।

"चित्रा, मंजरी और राजा वीरभद्र सिंह की बेटी थी। है ना!" चैतन्य ने कहा।

"हाँ!"

"तो मेरी उलझन यही है कि.... जब मंजरी और राजा वीरभद्र सिंह दोनों ही सामान्य इंसान थे, तो उनकी बेटी चित्रा डायन कैसे बन गई और करीब 50 साल पहले उन्होंने मेरी नानी के साथ वो सब क्यों किया था जिसकी वजह से मेरी माँ और मेरे मामा का जन्म हुआ?" चैतन्य ने आखिरकार अपने दिल का सवाल बाहर निकाला और ये सवाल सुनकर सभी को जैसे एक झटका सा लगा। यह एक ऐसी बात थी जिसकी और किसी ने भी ध्यान नहीं दिया था। एक सामान्य माता-पिता की बेटी डायन कैसे हो सकती थी?

"पर वो तो जन्म से ही डायन थी।" डॉ अनंत ने चैतन्य से कहा।

"वही तो! ऐसा कैसे मुमकिन है? वो बाद में डायन बनी होती... तो ये बात समझ में भी आती। मगर वो जन्म से ही डायन कैसे थी?" चैतन्य ने सवाल को और भी कुरेदते हुए कहा।

"ऐसा तो तभी हो सकता है, जब मंजरी की कोख में चित्रा के साथ किसी और शक्तिशाली डायन का भ्रूण भी रहा हो। बिल्कुल माया और परिधि की तरह। फर्क बस इतना है कि... माया ने परिधि की शक्तियॉं चुरा लीं और इस मामले में किसी और ने मंजरी की कोख में ही रहकर चित्रा को भी अपनी शक्तियॉं दे दीं। क्या कहते हैं आप सब? ऐसा हो सकता है क्या?" चैतन्य ने एक उम्मीद के साथ डॉ. अनंत की ओर देखा।

"हो तो सकता है। पर वो अपनी कोख में किसी और का भ्रूण क्यों पालेगी? और उन्होंने कभी इस बारे में कहा भी नहीं।" डॉ. अनंत ने सोचते हुए कहा।

"शायद उस बच्ची को दुनिया से छिपाया गया हो। चित्रा के पास शक्तियॉं होने की मुझे और कोई वजह तो समझ में नहीं आ रही है।" चैतन्य ने अपने वजनदार शब्दों के साथ कहा।

"पर ऐसा संभव ही नहीं है।" डॉ. अनंत ने एक बार फिर चैतन्य की बात काटने की कोशिश की।

"नहीं! नहीं! डॉक्टर साहब! चैतन्य की बातों में कुछ दम तो है। अतीत के उस हिस्से में कुछ छुपाया तो गया है। तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र ने चित्रलेखा पर जो किताब लिखी है उसके आखिरी दो पन्ने गायब हैं जहॉं मंजरी तांत्रिक श्रेष्ठ को कुछ बताने वाली थीं (चित्रलेखा -भाग 62)" आशुतोष ने चैतन्य की बात का समर्थन करते हुए कहा।

"पन्ने! कौन से पन्ने?" वरुण ने कौतूहल दिखाते हुए पूछा।

"चित्रलेखा की कहानी जिसके आखरी पन्नों में देवेंद्र, मंजरी से मिलने के लिए गए थे। प्रहरी समूह के गठन से पहले। उस समय मंजरी ने उन्हें कुछ
बताया था, जिसे उन्होंने आखिरी दो पन्नों में लिखा भी था। पर बाद में वो पन्ने फाड़ दिए गए और अब वो दो पन्ने रहस्य बनकर रह गए हैं। चैतन्य की बातों से अब मुझे भी यही लग रहा है कि उन पन्नों में चित्रा के डायन बनने का रहस्य था, जिसे छुपाने की कोशिश की गई है।" आशुतोष ने वरूण की ओर देखते हुए कहा।

"फिर तो आप लोगों को ये देखना चाहिए। ये मुझे आयुष-सार किताब के पिछले कवर के अंदर मिली।" कहते हुए वरुण ने टेबल पर कुछ रखा। सभी ने देखा कि वह किसी जले हुए कागज का बहुत छोटा सा टुकड़ा था।

"ये कागज किसी ने जलाने की कोशिश की है और दिलचस्प बात ये है कि ये इकलौता नहीं है। इसके नीचे एक और पन्ना चिपका हुआ है। पीछे के पन्ने में तो कुछ नहीं दिख रहा है। पर ऊपरी पन्ने में कुछ लिखा हुआ है।" वरुण ने कहा।

वरुण की ये बात सुनते ही सभी अपनी-अपनी जगह से उठे और उसके पास जाकर उस पन्ने को झांक कर देखने लगे। उन सभी ने साफ-साफ 'ले' लिखा हुआ पढ़ा।

"क्या ये वही फाड़े हुए दो पन्ने हैं?" चैतन्य ने पूछा।

आशुतोष ने उन पन्नों को उठाकर पास से निरीक्षण किया और बोला, "पन्ने तो उसी किताब की तरह ही हैं। मुझे लगता है कि वही हैं।"

"पर ये 'ले' क्या हो सकता है?" अनामिका ने उसे पढ़ते हुए कहा।

"क्या पता?" आशुतोष ने असमर्थता जताई।

"सतवृक्ष से पूछें क्या?" चैतन्य ने नजर उठाकर सबके चेहरों को देखते
हुए कहा, जिस पर उन सभी ने चैतन्य की ओर देखा। और फिर जैसे कोई भूचाल आया हो। सब के सब स्टडी की ओर भागे। एक बार फिर सतवृक्ष उनके सामने था। वरुण ने उस अधजले पन्ने के टुकड़े को सतवृक्ष के हवाले किया और फिर सभी इंतजार करने लगे। कुछ देर उन सब की बेचैनियों का इम्तिहान लेने के बाद वो पन्ना वापस उड़ता हुआ बाहर आया, जिसे वरुण ने थाम लिया। सभी की नजरे वरुण पर टिकी थी, जो अब उस पर लिखी हुई इबारतें पढ़ रहा था।

"चित्रलेखा और हर्षित की बेटी लेखा!"

और इस जवाब ने वहॉ मौजूद उन सभी लोगों के होश उड़ाकर रख दिए थे। चित्रलेखा और हर्षित की बेटी! यह कैसे हो सकता था। पर सतवृक्ष ने अपने पूरे इतिहास में कभी भी कोई गलत जवाब नहीं दिया, तो इस जवाब पर संदेह करना भी फिजूल ही था।

"हे भगवान! एक और डायन!" चैतन्य अपना सिर पकड़ कर बैठते हुए बोला।

"मैं तो ये सोच रहा हूँ कि वो लेखा कितनी शक्तिशाली रही होगी कि उसके संपर्क में रहकर ही चित्रा जैसी साधारण लड़की इतनी शक्तिशाली डायन बन गई।" आशुतोष ने भी अपनी फैली हुई ऑखों के साथ हैरानी जताई।

"पर वो गई कहॉ? इतनी शक्तिशाली होने के बाद भी इतिहास में उसका कहीं भी जिक्र नहीं मिलता।" डॉ. अनंत ने सब कुछ याद करते हुए कहा।

"मुझे लगता है कि अगर उसके नाम को तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र ने छिपाया है, तो उसे छिपे ही रहना चाहिए। कभी-कभी मिट्टी उधेड़ने से कुछ ऐसा बाहर
निकल आता है जो रुचिकर नहीं होता। तो इसे छोड़ दो, जब तक कि इसकी जरूरत ना आन पड़े।" डॉ. अनंत ने बात को समेटते हुए कहा।

बाकी सभी ने भी उनकी बात का समर्थन किया और एक बार फिर वो सभी हंसी-खुशी खाने की टेबल पर बैठे थे। खंज़र का रहस्य लगभग सुलझ चुका था और उन दो पन्नों का भी, जो चित्रलेखा की कहानी से फाड़ा गया था। अतीत के बहुत से रहस्य सुलझ चुके थे, जिससे वो सब अब राहत महसूस कर रहे थे। मगर अतीत का एक पन्ना अभी भी उनकी ऑखों से दूर था, जो कि भविष्य में उनके सामने आने वाला था। फिलहाल अभी उसके खुलने में देर थी।

(#प्रतिबद्ध)

****

वो पानी से भरे उस हौज में चुपचाप लेटा हुआ आसमान के चॉद को देख रहा था। उस हौज का पानी बहुत ही जोर से उबल रहा था, जिससे निकलने वाली भाप चारों ओर धुंध की तरह फैली हुई थी। इसके इतर... वो किसी आम से प्रेमी की तरह चॉद में उसी का चेहरा खोज रहा था।

"तुम तो इतनी नाराज हो गई हो कि अब मुझे चॉद में भी नजर नहीं आती। ऐसा मत करो! अब ये अनंतकाल का जीवन तुम्हारी यादों के साथ ही काटना है मुझे। अपने अल्फ़ी से इतना मत रूठो माया! देखो तुम्हारे प्यार में मैं क्या कर गुजरा? लोग अपने प्यार की खातिर मर जाते हैं...
तुम्हारे रोमियो की तरह। पर मैं तुम्हारे प्यार में.... जी कर दिखा दिया। तुम्हारे इंतजार में... एक एक पल सदियों की तरह काटते हुए मैं दो सदियॉ बिता आया। हॉ ये अलग बात है कि जिस दुनिया में तुम्हारे रोमियो की मौत मोहब्बत की मिसाल बन गई, उस दुनिया में मेरा समर्पण किसी को पता भी नहीं चलेगा कि कैसे कोई किसी को इतनी शिद्दत से चाह सकता है। पर फिर भी मैं हमेशा तुम्हें ऐसे ही प्यार करता रहूंगा और...."

अभी उसकी बातें खत्म भी नहीं हुई थीं, कि तभी बाहरी दरवाजे की ओर से आई आवाजों ने उसके कान खड़े कर किए। ये उसके लिए माया और उसका वक्त था और इन आवाजों से पड़ने वाले खलल ने उसे बहुत ही ज्यादा नाराज किया था।

"ये मेरे घर में कौन घुस आया है?" वो तमतमाते हुए उस हौज से बाहर निकला। गुस्से की वजह से उसका शरीर भी सुलगने लगा था, जिससे उसके शरीर पर पड़ी पानी की नमी और भी तेजी से भाप बनकर उड़ रही थी। इस समय वो ख़ौफ का दूसरा नाम दिखाई दे रहा था, जिस पर नज़र पड़ते ही अच्छे से अच्छा जिगर वाला भी अगले ही पल में दम तोड़ देता।

उसने अपने दोनों पैने कानों को काम में लगाया और उन आवाजों को ध्यान से सुनने की कोशिश करने लगा। अगले ही पल उसके होठों पर एक वहशियाना मुस्कान उभरी।

"शिकार! शिकार आए हैं।"

और फिर वो तेजी से उन आवाजों की ओर बढ़ गया। कुछ ही देर में वो जगह दर्दनाक चीखों से भर गई। करीब 15 मिनट बाद वो वापस लौटा। पूरी तरह खून में सना हुआ। वो उसी तरह चलते हुए आया और फिर से
उस हौज में घुस गया। एक बार फिर भाप का बादल चारों ओर बिखरने लगा।

"हॉ तो मैं कहॉ था? याद आया! मैं कह रहा था कि मैं हमेशा तुम्हें ऐसे ही प्यार करता रहूंगा और...."

और एक बार फिर से वो अपनी माया से बातें करने में मशगूल हो गया, जैसे कि कुछ देर पहले कुछ भी ना हुआ हो। अल्फ़ी अगले छ: महीने तक फिर किसी को भी नज़र नहीं आया।

****

फोन की वाइब्रेशन से लैपटॉप पर चलती अनामिका की उंगलियां झटके से रुकी थीं। उसने फोन की स्क्रीन पर नजर डाली। चैतन्य का नाम चमक रहा था।

"ये अभी क्यों फोन कर रहा है?" खुद से ही सवाल करते हुए अनामिका ने फोन स्पीकर पर डाला और फिर लैपटॉप की ओर मुड़ गई।

"हाय अनु!"
"हम्म!"

"क्या कर रही हो?"

"काम!"

"अरे यार! तुम्हारी जिंदगी में काम के अलावा और किसी की भी जगह है।" चैतन्य की नाराजगी भरी आवाज आई।

"चैतन्य! क्या काम है बोलो!" अनामिका ने थोड़े चिढ़ से कहा।

"क्या यार! कैसी अनरोमैंटिक प्रेमिका मिली है मुझे। बाहर देखो कितना रोमैंटिक मौसम हो रहा है और तुम इतने रूड तरीके से बात कर रही हो।" चैतन्य की नाराजगी और बढ़ी थी।

"अच्छा! तो फिर क्या करूं?" इस बार अनामिका ने फोन की तरफ ध्यान देते हुए कहा।

"कुछ भी ऐसा... जो मुझे अच्छा लगे!" चैतन्य ने बहकी हुई आवाज में कहा।

"और वो क्या?" अनामिका ने भी उसे और उकसाया था।

"उंहूं! बड़ी ज़ालिम हो तुम! समझती सब हो.. पर...." चैतन्य अपनी रौ में बोलता हुआ अनामिका के

टोकने पर रूक गया।

"वरूण का कॉल आ रहा है!" अनामिका ने फोन उठाते हुए कहा।
"फिट्टे मुँह! किसका नाम ले लिया?" चैतन्य की बिगड़ी हुई सी आवाज आई।

"नाम नहीं लिया... सच में उसकी कॉल आई थी।" अनामिका ने कहा।

"अनु! खबरदार... जो तुमने मेरी कॉल कट की! दो दरवाजे दूर तो है वो। कॉल क्यों कर रहा है?" चैतन्य ने थोड़े तैश में कहा।

"अरे यार! तुम दोनों के चक्कर में मैं पिस कर रह जाती हूँ। तुम भी तो यहीं हो। तुम क्यों कॉल कर रहे हो?" अनामिका ने भी बिगड़कर कहा।

"तो आ जाऊँ!" चैतन्य की उतावली सी आवाज आई।

"खबरदार! और फोन भी रखो तुम! सिर दर्द कर दिया मेरा।" चिढ़ते हुए अनामिका ने कॉल कट कर दिया। उसने पास ही फोन फेंका और अपना सिर पकड़कर बैठ गई। काम के बोझ के बाद इन दोनों की बेसुरी तुकबंदी ने उसका सिरदर्द सच में बढ़ा दिया। एक कप चाय की तलब उसे रसोई घर की ओर ले गई। जब वो रसोई के दरवाजे तक पहुँची तो अंदर से आती आवाजों ने उसके कदम वहीं रोक दिए।

"रात के समय रसोई में कौन है?" खुद से सवाल करती हुई वो धीरे से रसोई के अंदर गई तो वरुण को उलझा हुआ सा पाया। वो सब कॅबर्ड खोल-खोलकर कुछ खोज रहा था।

"वरूण! यहाँ क्या कर रहे हो?" अनामिका ने उसकी हरकतों पर नजर रखे हुए कहा।

"चाय बना रहा हूँ।" वरूण ने बहुत ही रूखे स्वर में कहा।
"मुझसे कहते!" अनामिका ने आगे बढ़ते हुए कहा।

"किया था तुम्हें फोन... पर भूल गया था कि.... अब इसके लिए भी किसी और की इजाजत लेनी होगी।" वरुण ने तंज का तीर मारते हुए कहा।

"ओह! इसलिए फोन किया था तुमने! सॉरी वो मैं..." अनामिका शर्मिंदा सी उसकी ओर बढ़ते हुए बोली।

"तुम बिजी थी... किसी बहुत ही ज्यादा जरूरी कॉल में। है ना!" इस बार वरूण ने अपनी नाराज नजरें उसकी और घुमा कर कहा।

"ऐसा नहीं है वरूण! चलो हटो! मैं बनाती हूँ!" अनामिका ने उसके हाथ से चायपत्ती का डिब्बा लेते हुए कहा।

"नहीं है जरूरत... जब आगे खुद ही करना है तो अभी क्यों नहीं।" वरुण ने डिब्बा वापस लेते हुए कहा। लहजे में नाराजगी बरकरार थी।

"चुप! एकदम चुप! बातें करवा लो इनसे बड़ी-बड़ी.. पर एक छोटी सी बात इनके दिमाग में घुसती नहीं है। चलो हटो!" इस बार अनामिका ने उसके हाथ से डिब्बा छीनते हुए गुस्से से कहा और उसका बिगड़ा मिजाज देखकर वरूण ने ही अपने पैर पीछे खींचे कि उसकी नाराज़गी का खतरा उठाने की हिम्मत उसमें नहीं थी।

अनामिका ने दोनों के लिए चाय चढ़ाई। वरुण किचन स्लैब से टिककर खड़ा हुए सीने में हाथ बांधे उसे ही बड़े ग़ौर से देख रहा था... जैसे कि उसे पढ़ने की कोशिश कर रहा हो।

"कुछ कहना है तो बोल भी दो!" अनामिका ने बिना उसकी ओर देखे हुए कहा जिससे वो सिटपिटा कर रह गया।
"नहीं! वो बस एक सवाल है दिल में.... " वरुण ने थोड़ी झिझक के साथ कहा।

"क्या?"

"तुम... सच में सीरियस हो चैतन्य को लेकर!" आखिरकार वरूण के दिल की हूक बाहर निकली।

और उसकी बात सुनकर चाय को चम्मच से हिलाते अनामिका के हाथ रुके थे। उसने एक तीखी नजर वरुण पर डाली जिससे वरुण ने खुद को सावधान किया।

"नहीं! मेरा मतलब है कि ये.... कोई छोटी सी बात तो नहीं है ना! पूरी ज़िंदगी का सवाल है। तो... मुझे लगता है कि ऐसे फैसले अच्छे से सोच-समझकर लेने चाहिए। अभी तुम्हें उससे मिले कुछ महीने ही तो हुए हैं। तुम चाहो तो सोचने के लिए थोड़ा और समय ले सकती हो। शायद यही कुछ-एक 10 साल... 15 साल या फिर 20 साल। इतना हड़बड़ाने की क्या जरूरत है?" वरुण ने संजीदगी की चादर ओढ़ते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने एक गहरी सॉस ली और फिर उसकी ओर देखते हुए बोली, "वो तुम्हें बिल्कुल भी नहीं पसंद?"

"ना! और मैं... अपनी इतनी कीमती चीज उसे नहीं देना चाहता। मेरा दिल नहीं मानता इसके लिए।" अनामिका की ओर इशारा करते हुए वरुण ने बहुत ही साफगोई से कहा।

"और वो क्यों?" अनामिका ने पूछा।
उसके सवाल पर वरूण ने एक गहरी निगाह उस पर डाली। उसने जवाब देने के लिए अपना मुँह खोला ही था कि दरवाजे पर हुई आहट ने दोनों का ध्यान उधर ही किया था।

"वो... कमरे में पानी नहीं है।" कहते हुए चैतन्य रसोई के अंदर आया।

"मैं देती हूँ!" अनामिका बोली।

"नहीं! मैं ले लूंगा। यू गाइज़ कैरी ऑन!" कहते हुए चैतन्य अंदर की ओर बढ़ा। जैसे ही वो अनामिका के पास पहुँचा... वरूण ने दोनों के बीच अपना एक हाथ रख दिया और अनामिका को उससे थोड़ा दूर किया। चैतन्य ने अपनी चढ़ी हुई एक भौंह के साथ वरुण की ये हरकत देखी। अनामिका ने भी उसकी इस हरकत पर अपना सिर अफसोस से हिलाया। एक नजर वरुण पर डालकर चैतन्य फ्रिज की ओर

बढ़ गया। उसने पानी की एक बोतल निकाली और फिर वापस आते समय अनामिका के जरा पीछे रूक गया। वरुण ने उसे ऑखें सिकोड़ कर देखा। चैतन्य के होंठ एक शरारती मुस्कान के साथ टेढ़े हुए और अगले ही पल उसने अपना हाथ बढ़ाकर अनामिका को समेटा और उसके कान के पास झुककर साफ आवाज में बोला,

"गुड नाइट बेबी! हैव अ स्वीट एंड रोमैंटिक ड्रीम ऑफ माइन!"

और फिर आगे बढ़कर अनामिका के गाल पर एक जबरदस्त किस करने के बाद वो एक चिढ़ाती हुई नज़र वरूण पर डालता हुआ किचन से बाहर चला गया। वरुण और अनामिका दोनों ही उसकी इस हरकत पर जड़ होकर रह गए। अनामिका की नज़र दरवाजे की ओर गई जब चैतन्य ने उसे झांककर देखा और शरारती इशारों में कहा,
"जाओ! संभालो अपने वरूण को!"

अनामिका की आवाज उसके हलक में अटक गई थी। वही वरुण गुस्से में पूरी तरह से लाल हो चुका था।

"तुमने पूछा ना क्यों? बस इसीलिए! देखी उसकी हरकत! पता नहीं ये छिछोरा तुम्हें क्यों पसंद है? मेरा बस चले... मैं उसे उस नर्क के द्वार के पीछे फेंक आऊँ। समस्या ही खत्म!" वरुण हाथ पैर पटक कर पूरी ताकत से चिल्लाते हुए बोला और अनामिका समझ गई कि इस शीतयुद्ध का कभी कोई परिणाम नहीं निकल सकता था।

"तुम्हें तो मैं देख लूंगा चैतन्य! उड़ो... जितना उड़ सकते हो!" चश्मे को अपनी नाक में चढ़ाते हुए वरूण अपने मन में बड़बड़ाया। शीतयुद्ध अपने चरम पर था।

****

शाम के समय चैतन्य, अनामिका को कहीं साथ बाहर जाने के लिए बुलाने गया, तो उसे पहले से ही तैयार होते हुए देखा।

"अरे! तुम्हें कैसे पता चला कि मैं तुम्हें बाहर ले जाना चाहता हूँ!" चैतन्य ने उसे प्यार से निहारते हुए कहा।

"अच्छा! मुझे नहीं पता था!" अपने बालों में ब्रश घुमाते हुए अनामिका ने
कहा।

"तो फिर इतना तैयार क्यों हो रही हो?" चैतन्य ने अपनी नज़रें तीखी करते हुए पूछा।

"वरूण के साथ जा रही हूँ। दोस्तों की पार्टी है। हम दोनों हर साल जाते हैं।" अनामिका ने अपने होठों को लिपस्टिक से रंगते हुए कहा।

"कौन से दोस्त? तुम दोनों ने तो कहा था तुम दोनों का कोई दोस्त नहीं है!" चैतन्य ने तफ्तीसी लहजे में कहा।

"वो तो बहुत करीबी दोस्त के बारे में कहा था। बहुत खास! वरना इस दुनिया में सबके पास बहुत सारे दोस्त होते हैं। तुम्हारे भी होंगे। वैसे ही ये सब भी हैं।" अनामिका ने सहजता से जवाब दिया।

"लड़के भी होंगे वहाँ?" चैतन्य ने एक भौंह चढ़ाते हुए पूछा।

"ऑफकोर्स!" अनामिका ने हाथ में ब्रेसलेट चढ़ाते हुए कहा।

"अचानक ये पार्टी! मतलब कि तुम दोनों ने ही दिन भर कुछ कहा नहीं इस बारे में।" चैतन्य ने अनामिका की तैयारियों को देखते हुए कहा।

"वरूण ने भी अभी आधे घंटे पहले ही बताया। उसका मन नहीं था, पर दोस्तों के जोर देने पर उसने हाँ कर दी।" अनामिका ने अपना दुपट्टा सही करते हुए कहा।

"तो तुम क्यों जा रही हो? उसके दोस्तों की पार्टी है! उसे जाने दो।" चैतन्य ने एतराज उठाते हुए कहा।
"चैतन्य! तुम जानते हो उसे। वो कभी भी अकेला नहीं जाता। हमेशा मैं साथ जाती हूँ उसके और तुम ना... ये चिक-चिक बंद करो। हम लोग जल्दी आ जाएँगे। बस शामिल होने की फॉर्मेलिटी पूरी करनी है।" अनामिका ने आखिरी बार खुद को आईने में निहारते हुए कहा।

"ठीक है जाओ! रह लूंगा मैं अकेला! तुम इंज्वॉय करो अपने वरूण के साथ।" चैतन्य ने ताना मारते हुए कहा।

"चैतन्य! ब्लैकमेल मत करो! घर में बहुत सारे लोग हैं उनके साथ जाकर बैठो। हम लोग आ जाएँगे एक-दो घंटे में!" अनामिका ने उसे झिड़कते हुए कहा और बाहर की ओर बढ़ गई।

"ठीक है! तो जब तुम वापस आओगी मैं तब ही तुम्हारे साथ खाना खाऊंगा।" चैतन्य ने पीछे से आवाज़ दी।

अनामिका ने पीछे मुड़कर उसे देखा और फिर अफसोस के साथ सिर हिलाते हुए दरवाजा खोला तो थ्री पीस सूट में सजा-धजा वरूण सामने खड़ा था। अनामिका को देखने के बाद उसने एक तेज मुस्कुराती हुई नज़र चैतन्य पर डाली।

"अच्छी लग रही हो!" अपनी बांह अनामिका की ओर बढ़ाते हुए वरुण ने कहा।

"थैंक्यू! तुम भी बहुत अच्छे लग रहे हो। चलें!" अनामिका ने अपनी बांह उसकी बांह के घेरे के दरमियान डालते हुए कहा। वरुण ने एक चुभती हुई नज़र चैतन्य पर डाली और फिर अनामिका को साथ लेकर चला गया।

"कुछ तो पक रहा है इसके दिमाग में!" चैतन्य बुदबुदाया और फिर तेजी से नीचे की ओर भागा। जब तक वो नीचे आया वरुण और अनामिका
बाहर निकल चुके थे।

"बैठे हुए रक़ीब हैं दिलबर के आस-पास
काँटों का है हुजूम गुल-ए-तर के आस-पास"

(गुल-ए-तर - खूबसूत चेहरे वाला माशूक़)

चैतन्य ने चिढ़कर पीछे देखा। आशुतोष एक किताब पर नज़रें गढ़ाए बैठा हुआ था। उसने एक गहरी साँस ली और उसके पास जाकर बैठ गया।

"वाह! वाह! क्या लिखा है जिगर मुरादाबादी जी ने। है ना!" आशुतोष ने चैतन्य की ओर पलकें उठाकर कहा, जवाब में चैतन्य ने एक जबरन खिंचीं हुई मुस्कुराहट उन्हें परोसी।

"और सुनोगे! पंडित दया शंकर नसीम लखनवी साहब क्या फरमाते हैं?" आशुतोष ने शायराना अंदाज में पूछा।

"सुनाइए!" चैतन्य ने उकताई हुई आवाज में कहा।

"दोज़ख़ ओ जन्नत हैं अब मेरी नज़र के सामने
घर रक़ीबों ने बनाया उस के घर के सामने"

"वाह! वाह!" कहते हुए आशुतोष ने चैतन्य को शरारत से देखा, जिस पर चैतन्य की त्योरियाँ चढ़ी थीं। "आप चिढ़ा रहे हैं मुझे?" चैतन्य ने बहुत ही चिढ़ से कहा।

"अब तुम चिढ़ना चाहते हो तो... चिढ़ जाओ! मैं क्यों मना करूंगा?" आशुतोष ने बहुत ही लापरवाही से कहा।

"आशुतोष जी! मैं पक्का बोल रहा हूँ... इस चश्मिश के दिमाग में कुछ ना कुछ खिचड़ी जरूर पक रही है।" चैतन्य ने वरूण की शिकायत करते हुए कहा।

"हाँ! क्यों नहीं! आग से आँच तुम जो दे रहे हो। माना कि अनामिका ने तुम्हें अपने हमसफर के रूप में चुना है। पर तुम दोनों के 2 महीने के रिश्ते के लिए वह अपना और वरुण का बरसों पुराना रिश्ता खराब नहीं करेगी। करना भी नहीं चाहिए। नए रिश्ते बनने से पुराने रिश्ते खत्म नहीं हो जाते और इस बात को तुम अच्छी तरह समझ लो। समझदारी दिखाओ।" आशुतोष ने अपने लहजे में जरा सी सख़्ती लाते हुए

उसे समझाया।

"ठीक है! ठीक है! जिसे देखो मुझे ही समझाता है। जरा आप उस चश्मिश को भी समझाइए। मतलब कि.... कहीं तो छोड़े मुझे और अनामिका को अकेला! जब देखो... जोंक की तरह चिपका रहता है।" चैतन्य ने बिगड़े हुए लहजे में एक बार फिर वरुण की शिकायत की थी।

"अरे यार! सच कहते हैं लोग। एक लड़की के प्रेमी और उसके सबसे अच्छे दोस्त के बीच कभी दोस्ती नहीं हो सकती। तुम दोनों भले और तुम दोनों की खींचातानी भली! हम तो बैरागी ही सही हैं भई! ऊपर वाला बचाए हमें इस फितना से।" आशुतोष ने अपने दोनों कान पकड़ते हुए कहा और एक बार फिर किताब में घुस गया। चैतन्य ने मुँह बनाकर उसे देखा।
"इधर आ रक़ीब मेरे मैं तुझे गले लगा लूँ,
मिरा इश्क़ बे-मज़ा था तिरी दुश्मनी से पहले!"

"वाह! वाह! कैफ़ भोपाली साहब क्या शेर लिखा है।" आशुतोष दाद देता हुआ बोला और चैतन्य भी उतनी ही चिढ़ के साथ ऊपर अपने कमरे में चला गया। गीता खाने के लिए बुलाने आई, मगर उसने मना कर दिया। उसका ध्यान बस उसकी घड़ी के कॉटों पर था। एक घंटा गुजरा... फिर दो घंटा भी गुजर गया। चैतन्य ने खिड़की पर जाकर कुछ देर बाहर देखा। कोई हलचल नहीं हुई। जब आधा घंटा ऊपर हो गया तो आखिरकार चैतन्य ने अनामिका को कॉल लगाई। उसने भी तीसरी बार में कॉल उठाया।

"कहॉ हो तुम? घर क्यों नहीं पहुँची अभी तक? ढाई घंटे हो गए!" चैतन्य ने नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए कहा।

"ओफ्फोह चैतन्य! पार्टी में ही हैं अभी हम! एक बहुत पुराने परिचित मिल गाए हैं तो देर हो गई है। अभी समय लगेगा। तुम खाना खा लो।" अनामिका ने भी अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की।

"ओके! बाय! रहो तुम अपने मजे में!" और फिर चैतन्य ने कॉल काट दी।

वो पूरे कमरे में भुनभुनाते हुए चहलकदमी कर रहा था। ना जाने क्यों.. पर उसे हवाओं में कुछ ग़लत की महक आ रही थी, जो उसे बिल्कुल भी अच्छी नहीं लग रही थी। वो उसी तरह जलता-कुढ़ता जमीन को अपने पैरों के नीचे रौंद रहा था कि तभी आशुतोष ने कमरे में कदम रखा। पहले तो उसने ग़ौर से चैतन्य को देखा और वाशरूम की ओर बढ़ गया। कुछ देर बाद वो बाहर आया और बिस्तर पर बैठ हाथ जोड़कर बोला,
"हे भगवान! मुझे आराम की नींद और भरपेट स्वादिष्ट खाने जैसी नेमतें देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! काश कि... आपका ये वरदान सभी को मिल जाए।"

और फिर एक जोरदार अंगड़ाई लेता हुआ बिस्तर पर पसर गया। चैतन्य ने कुछ देर उसे घूर कर देखा और फिर एक बार खिड़की की ओर चला गया। बाहर सन्नाटा पसरा हुआ था। उसने कुर्सी खींची और वहीं खिड़की के पास बैठ गया। उसे भी आज जैसे जिद चढ़ गई थी। गहरी-गहरी सॉसे लेता हुआ वो उन दोनों के बारे में ही सोच रहा था। करीब एक घंटे बाद गाड़ी के हॉर्न की आवाज सुनकर वो तेजी से खिड़की के पास आया और नीचे देखा। वहॉ एक सफेद रंग की डिजायर खड़ी थी।

"ये किसकी गाड़ी है?" चैतन्य ने उस गाड़ी को देखकर खुद से पूछा। अभी वो इसी उधेड़बुन में था कि तभी उसने पिछली सीट का दरवाजा खुलते देखा और फिर वरूण वहॉ से निकलकर तेजी से घर की ओर भागा। चैतन्य की ऑखें हैरानी से फटी थीं क्योंकि अनामिका उसे दिखाई नहीं दी। वो तेजी से बाहर की ओर भागा और सीढ़ियों पर वरूण से टकरा गया। उसे देखते ही वरूण ने अपने हाव-भाव बदले और फिर सीटी बजाते हुए बड़े ही इत्मीनान से चैतन्य के बगल से गुजर गया।

"अनु कहॉ हैं?" चैतन्य ने पलटकर उससे सवाल किया।

"वो क्या है ना! एक बार आशुतोष जी ने कहा था कि ये दुनिया बेहतर विकल्पों से भरी हुई है। तो वो ऐसे ही एक बेहतर के साथ बाहर है। उसे भी पता चलना चाहिए कि उसने कितनी जल्दबाजी की है। है ना!" वरूण ने उसे चिढ़ाने वाले अंदाज में कहा और फिर पलटकर अपने कमरे की ओर चल दिया। उधर चैतन्य उसकी बात का मतलब समझकर तेजी से बाहर की ओर भागा। दरवाजे पर पहुँचकर उसने देखा कि अनामिका किसी लड़के, जो उम्र में कुछ बड़ा दिखाई दे रहा था... उससे हँस-हँसकर बातें कर रही थी और फिर वो लड़का अनामिका से हाथ मिलाते हुए उसके गले से लगा और उसके बाद हाथ हिलाते हुए गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी के ओझल होने तक अनामिका ने इंतजार किया और फिर घर की ओर आ गई। दरवाजे के पास उसे लावे की तरह उबलता हुआ चैतन्य मिला। उसने कुछ भी नहीं कहा और सीढ़ियों की ओर बढ़ गई।

"मैंने खाना नहीं खाया है।" चैतन्य की आवाज आई।

ये सुनकर अनामिका पीछे पलटी और फिर कुछ पल नाराज से खड़े चैतन्य की ओर देखा। फिर वो ऊपर जाने की बजाय वहॉ से किचन की ओर बढ़ गई। थोड़ी ही देर में वो चैतन्य के लिए खाना निकालती उसके सामने खड़ी थी। चैतन्य बहुत ही ग़ौर से उसे ही देख रहा था। खाने की थाली उसके सामने रखकर वो चैतन्य के पीछे गई और उसके गले में बांहें डालते उसके कान के पास झुककर बोली, "चलो! गुस्सा छोड़ो और खाना खा लो!"

उसकी बात सुनकर चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ा और उसे अपने बगल वाली कुर्सी पर बैठा दिया। उसने निवाला तोड़ा और अनामिका की ओर बढ़ा दिया। अनामिका ने हैरत से उसकी ओर देखा।

"मुझे यकीन है कि तुमने भी खाना नहीं खाया होगा।" चैतन्य ने कहा।

"नहीं! वो मन नहीं कर रहा था तो बस जूस पी लिया। भूख नहीं है मुझे!"अनामिका ने अपनी स्थिति संभालते हुए कहा।
"मुझे सब पता है। लो खाओ!" चैतन्य ने निवाले की ओर इशारा करते हुए कहा। अनामिका ने पहले तो उसे ग़ौर से देखा और फिर चुपचाप निवाला खा लिया।

"चैतन्य!"

" हूं!"

"जब इतना समझते हो मुझे तो ये सब हरकतें छोड़ क्यों नहीं देते। ये सब करके खुद परेशान ही होते हो।" अनामिका ने शिकायत करते हुए कहा।

"और तुम्हारे उस वरूण को खुला मैदान दे दूँ मुझ पर वार करने के लिए।" चैतन्य ने भी उसकी बात काटी।

"चैतन्य!" अनामिका ने नाराज़गी जताई।

"खाना खाओ!" कहते हुए चैतन्य ने उसके मुँह में अगला निवाला डाला। कुछ ही देर में वो दोनों ही बातें करते हुए खाना खा रहे थे। सीढ़ियों के ऊपर खड़े हुए वरूण के होंठ उन दोनों को देखकर मुस्कराए और फिर वो इत्मीनान से अपने कमरे की ओर बढ़ गया।

अगले दिन शाम के समय आशुतोष और चैतन्य को वापस जाना था। इसलिए घर में थोड़ी गहमागहमी सी थी। वरूण को उस दिन थोड़ी देर से हॉस्पिटल जाना था, इसलिए वो अपना लैपटॉप खोलकर बाहर सुबह की नर्म धूप के मजे ले रहा था। वो अपने सीनियर से किसी केस के बारे में डिस्कस कर रहा था। उसी समय अनामिका उसके लिए कॉफी लेकर आई।

"अनामिका! सौरभ जी लाइन पर हैं। तुम कुछ देर उनके साथ बात करो।
मैं एक जरूरी फाइल लेकर आता हूँ।" कहते हुए वरूण ने अनामिका को जबरन लैपटॉप के सामने बैठाया और खुद अंदर की ओर चला गया। उसी समय चैतन्य भी बाहर की ओर आया और अनामिका को लैपटॉप के सामने बातें करते देखकर उसकी ओर चला आया। उसने झांककर देखा तो उसने स्क्रीन पर मौजूद उस शख़्स को पहचान लिया। वो वहीं आदमी था, जो रात के समय में अनामिका के साथ था। चैतन्य के वहॉ जाने पर अनामिका जो पहले से ही असहज थी और भी असहज हो गई। उसे डर था कि चैतन्य फिर से कोई उल्टी-सीधी हरकत ना कर दे। मगर अनामिका और स्क्रीन पर एक-एक नज़र डालकर वो वहॉ से चला गया। अनामिका ने राहत की सॉस ली। थोड़ी ही देर में वरूण आया तो अनामिका वहॉ से हट गई। अंदर गई तो चैतन्य कुछ सोचता बैठा हुआ था।

"क्या सोच रहे हो?" अनामिका ने उसे खोए देखा तो पूछा।

"हमारे बारे में!" चैतन्य ने छोटा सा जवाब दिया।

"और वो क्या?" अनामिका ने अगला सवाल किया।

"अभी नहीं! अभी सही समय नहीं है। जब वो समय आएगा, तो बताऊंगा। तब तक इंतजार करो।" चैतन्य ने अपनी बात समेटते हुए कहा। अनामिका उसका चेहरा देखती रह गई।

आशुतोष और चैतन्य शाम के समय अपने नियत समय पर अपने शहर वापस लौट गए। कुछ दिनों के बाद अनामिका भी अपनी पढ़ाई का अंतिम वर्ष पूरा करने के लिए शहर लौटी। करीब पॉच महीने वहॉ रहने के बाद वरूण उसे वापस अपने साथ ले गया, ये कहकर कि अनामिका अपने फाइनल एग्जाम वहीं से देगी। इसके बाद चैतन्य और अनामिका के मिलने का कोई जरिया ना बना। वरूण ने अनामिका को अकेले शहर भेजने से बिल्कुल मना कर दिया। अनामिका ने भी ऐतराज नहीं उठाया। हालांकि चैतन्य एक बार फिर से तुनका था क्योंकि वो जानता था कि वरूण ने ऐसा क्यों किया? मगर अनामिका के समझाने पर वो समझ गया। इसके बाद जीवन उसी नोंक-झोंक के साथ आगे बढ़ता रहा। इतनी दूर होकर भी चैतन्य और वरूण के बीच खींचतान बनी रही और जिस पर अनामिका अपना सिर धुनती रही और अगला एक महीना एग्जाम में गुजर गया।

आखिरकार इन छ: महीनों की किचकिच के बाद चैतन्य की मॉ ने चैतन्य के कहने पर डॉ. अनंत और तृषा से बात की और आपसी रजामंदी से उन दोनों की सगाई की पक्की कर दी। इस खबर से जहॉ अनामिका की खुशी का कोई भी ठिकाना नहीं था, वहीं वरूण एक बार फिर से बुरी तरह से भुनभुनाया था। सब तय करने के बाद अगले हफ्ते की तारीख तय कर दी गई।

"तुमने खुद कहा मॉ से सगाई के लिए! शर्म नहीं आई तुम्हें!" अनामिका ने चैतन्य को लताड़ते हुए उतने ही आश्चर्य से कहा।

"जिसने की शरम... उसके फ़ूटे करम! कम से कम सगाई के बाद तो वो वरूण दूसरे लड़कों को तुम्हारे पास लाना छोड़ेगा। बस इसीलिए!" चैतन्य ने कहा।

"हद करते हो चैतन्य! ये भी कोई बात हुई।" अनामिका ने उसे झिड़का।

"हॉ हुई! एक बार सगाई हो जाए फिर आराम से शादी की प्लानिंग करेंगे। ठीक है।" चैतन्य ने कहा।

"और वो कब होगी?" अनामिका ने पूछा।

"तुम कहो तो सगाई के बदले शादी कर लेते हैं।" चैतन्य की उतावली सी आवाज आई।
"अरे! ऐसे कैसे? अपनी पसंद से शादी कर रही हूँ। अपने सारे अरमान निकालूंगी और हॉ शादी का जोड़ा तुम्हारी पसंद का पहनूंगी। बस... उसका रंग लाल होना चाहिए।" अनामिका ने सपनीली आवाज में कहा।

"अरे वाह! तुमने तो पहले से ही सब सोच रखा है। वैरी गुड!" चैतन्य ने भी खिली हुई आवाज में कहा।

"चैतन्य! एक बात पूछूं!"

"हॉ... पूछो।"

"सब सही तो होगा ना! इतनी खुशियों की आदत नहीं रही ना कभी। डरती हूँ कि कहीं ये सपना टूट ना जाए!" अनामिका ने अपने दिल का खदशा जाहिर करते हुए कहा।

"पागल हो गई हो! क्यों होगा बुरा? अच्छा सोचो... तो अच्छा होगा। समझी!" चैतन्य ने उसे डपटते हुए कहा।

"पता नहीं चैतन्य.. पर कुछ दिनों से मुझे कुछ अजीब सा महसूस होता है। ऐसा लगता है कि मैं किसी भँवर में डूब रही हूँ। तुम मेरी ओर हाथ बढ़ाते हो, मगर मैं पकड़ नहीं पाती और फिर तुम मेरी ऑखों से ओझल हो जाते हो। तुम मुझसे कभी दूर तो नहीं जाओगे ना! कभी-कभी मुझे बहुत डर लगता है।" अनामिका ख़ौफ भरी आवाज में बोली।

"शटअप अनामिका! मुझे लगता है कि तुम्हें नींद आ रही है। चलो सो जाओ।" उसकी बातें सुनकर चैतन्य का लहज़ा सख़्त हुआ था।
"चैतन्य!"

"सो जाओ! गुड नाईट! मैं कल कॉल करूंगा। ठीक है!" चैतन्य अपनी आवाज को नर्म करते हुए बोला।

"हॉ!"

"अनु! I love you." चैतन्य बोला।

"हम्म!"

"हम्म क्या? जवाब दो!" चैतन्य तिड़ककर बोला।

"अब जब सामने आओगे, तब मिलेगा जवाब!" अनामिका ने उसे टालते हुए कहा।

"अच्छा! तब तो सूद भी लगेगा। याद रखना!" चैतन्य ने हिसाब करते हुए कहा। जवाब में वो खुलकर हँसी थी। उसकी इसी हँसी को दिल में बसाए हुए चैतन्य ने कॉल कट की और सोने चला गया। रात बस गुजरी ही थी कि तभी उसकी मॉ ने उसे आकर उठाया।

"चैतन्य! उठो!"

"क्या है मॉ? सोने दो! नींद आ रही है।" कहते हुए चैतन्य ने करवट बदली।

"चैतन्य! वरूण आया है।" उसकी मॉ ने कहा।
और ये सुनते ही चैतन्य की ऑखें झटके से पूरी की पूरी खुल गईं। उसने पलटकर अपनी मॉ की ओर देखा, जो परेशान नज़र आ रही थीं।

"क्या हुआ मॉ? सब खैरियत!" चैतन्य चादर फेंककर उठता हुआ बोला।

"पता नहीं! पर वो बहुत परेशान दिख रहा है।" चैतन्य की मॉ बोली। ये सुनकर चैतन्य भागता हुआ बाहर निकला। वरूण बहुत ही बेचैनी से बैठक में चहलकदमी कल रहा था।

"वरूण! क्या हुआ? परेशान लग रहे हो!" चैतन्य ने वरूण से सवाल किया।

जवाब में वरूण ने कुछ कहने की बजाय एक कागज उसकी ओर बढ़ा दिया।

"ये क्या है?" चैतन्य ने उस कागज को देखते हुए पूछा।

"तुम्हारे लिए संदेश!" वरूण ने कॉपती हुई आवाज में कहा।

उसकी हिली हुई हालत देखकर चैतन्य ने तेजी से आगे बढ़कर उस कागज को लिया और उसे खोलकर देखा। वो एक खत था। चैतन्य ने बिना आवाज उस खत को पढ़ा।

चैतन्य,

एक उम्मीद के साथ मैंने **200** साल तड़पते हुए गुजार दिए। उम्मीद कि इस समय की आग में तपने के बाद मेरा प्यार कुंदन की तरह चमकेगा।
मगर छ: महीने पहले **200** सालों से सहेजी हुईं मेरी सारी उम्मीदों ने लगभग दम तोड़ दिया। पिछले छः महीने बिना किसी उम्मीद के काटना उन **200** सालों से कहीं ज्यादा कष्टकारी था और.... इन छ: महीनों में मेरी बर्दाश्त जवाब दे ही गई। **200** सालों के इंतजार के बाद मुझे भी मेरा प्यार पाने का हक है और मैं वो साथ ले जा रहा हूँ। छोटा सा अंश ही सही, पर मेरी माया का है, तो मेरा है। अनामिका चाहती थी कि मैं माया को अलविदा कह दूँ, पर मैं ऐसा नहीं कर पाया। तुम्हारे लिए मुझे अफसोस है, पर ले जा रहा हूँ अनामिका को। **200** सालों के अंधकार के बाद मुझे भी अपना भोर का तारा चाहिए। अनामिका की चिंता मत करना। मैं उसे बहुत प्यार से रखूंगा और मुझे यकीन है कि एक दिन वो भी मुझसे प्यार करने लगेगी। मुश्किल है... पर उसे अलविदा कहकर भूल जाना! तुम्हारे लिए बस इतना ही.... **Poor boy Chaitanya! Better luck next time.**

अल्फ़ी!

ये पढ़ते ही चैतन्य के हाथ-पैर ठंडे पड़ने लगे। वो ख़त उसके हाथ से छूटकर दूर उड़ गया। तेजी से चढ़ती-उतरती साँसों के बीच उसने कुछ सोचा और फिर वरुण की ओर देखकर दाँत भींचते हुए बहुत ही गुस्से में बोला, "वरूण! अगर ये तुम्हारा मजाक है तो.... ये बहुत ही गंदा मजाक है।"

"चैतन्य! होश में आओ। ये मजाक नहीं है। सुबह थोड़ी देर पहले ही अनामिका के कमरे से तेज आवाजें सुनने के बाद हम सब जब वहाँ पहुँचे, तो पूरा कमरा अस्त व्यस्त था। झड़प के निशान साफ थे। अनामिका को ढूँढा... तो वो कहीं नहीं मिली। उसकी ड्रेसिंग पर ये खत रखा मिला और इस खत के साथ ये भी था।" कहते हुए उसने अनामिका की जल-रक्षक की अंगूठी चैतन्य की ओर बढ़ा दी। चैतन्य ने उस अंगूठी को लिया और ठगा हुआ सा खड़ा रह गया। उसकी अनु चली गई थी। ऐसा कैसे हो सकता था? खुशियों के दहलीज पर खड़ा हुआ ही वो.... सब हार चुका था। उसने क्या खो दिया था, ये अहसास होते ही वो निढाल सा घुटनों पर गिर पड़ा। छ: महीने गायब रहने के बाद अल्फ़ी फिर से लौट आया था। वरूण ने आगे बढ़कर उसे संभाला, तो वो उससे लिपट कर रोने लगा। वरूण ने भी उसके दर्द में खुद को शामिल करते हुए उसे समेट लिया। चैतन्य की माँ एक ओर हकदक सी खड़ी अपने बेटे को बिखरता देख रही थी।

वरूण वापस अपने घर लौट गया। अनामिका को ढूंढने की हर कोशिश की गई, पर वो तो जैसे हवा में घुल गई थी। चैतन्य ने उसे मानसिक संपर्क करने की भी कोशिश की मगर सफल नहीं हो सका। इसी तरह एक हफ्ता बीत गया।

अनामिका की अंगूठी हाथ मैं लिए वो भरी हुई आँखों से उसे देख रहा था। अगर सब सही होता तो आज के ही दिन उसकी और अनामिका की सगाई हो रही होती। उसे याद आ रहा था कि उनकी आखिरी बातचीत में अनामिका ने अपने मन का डर जाहिर किया था। वो डर इतनी जल्दी सच हो जाएगा... ये तो चैतन्य ने सपने में भी नहीं सोचा था। एक आह के साथ उसने अपने बाल मुट्ठियों में

भींचें और फिर अपनी जलती हुई ऑखें बंद कर दर्द को संभालने की कोशिश करने लगा।

"चैतन्य! ये पार्सल आया है तुम्हारे लिए!" चैतन्य की मॉ कमरे में आते हुए बोली। बेटे का दर्द उनसे भी नहीं देखा जा रहा था, मगर वो चाह कर भी कुछ नहीं कर सकती थीं। वो उसके पास आई और उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए वो पार्सल उसके हाथ में दे दिया।
"हिम्मत रखो बेटा! सब ठीक हो जाएगा!"

उनकी बात सुनकर चैतन्य ने अपनी गुलाबी ऑखें उनकी और उठाकर देखा और फिर हॉ में सिर हिला दिया। उनके जाने के बाद उसने वो पार्सल खोला। अंदर एक मुड़ा हुआ कागज और एक छोटा सा गोल आईना था। चैतन्य ने हैरानी से उस आईने को उलट पलट कर देखा और फिर उसे एक और रखते हुए वो कागज खोला। अल्फ़ी की चिट्ठी थी। नीचे उसका नाम पढ़ते ही चैतन्य एक सॉस में ही सारी चिट्ठी पढ़ गया।

चैतन्य,

ये प्रेम भी बड़ा ही अजीब होता है। है ना! हमेशा आजमाने को आतुर और तैयार! 200 सालों से इस आजमाईश से गुजरा हूँ मैं। मुझसे बेहतर और कौन जानेगा? सोचा! तुम्हें भी ये मौका क्यों ना मिले? मैंने 200 साल अपने प्यार का इंतजार किया... मैं तुम्हें दो साल दे रहा हूँ। खोज सकते हो अपनी अनामिका को..... तो खोज लो। मैं भी अपनी माया की ही तलाश में हूँ। जिसे पहले मिली.... मोहब्बत उसकी! फिर दूसरा उसके रास्ते में कभी नहीं आएगा। अगर तुम्हें मंजूर है तो तुम्हारा समय आज से शुरू होता है।

और हॉ! ये आइना इसलिए भेजा है कि तुम चाहो तो दिन में किसी भी समय 5 मिनट के लिए रोज अनामिका को इस आईने में देख सकते हो। पर.... बस देख सकते हो और कुछ नहीं। तुम्हारे अंदर के दर्द को मैं समझ सकता हूँ, इसलिए तुम्हारे लिए बस इतना ही कर सकता हूँ। अब हमारे प्रेम की प्रतिबद्धता ही हमें हमारा प्रेम दिलाएगी। बस दो साल! इम्तेहान
तुम्हारा ही नहीं... मेरा भी है। मुझे कहना तो नहीं चाहिए, पर बेस्ट ऑफ लक! जल्द ही मुलाकात होगी।

---अल्फ़ी!

खत पढ़कर चैतन्य ने उसे बेरहमी से अपनी मुट्ठियों में भींचा। वो अपने अंदर उबलते गुस्से को शांत करने की कोशिश कर रहा था क्योंकि अब समय गुस्से का नहीं धैर्य से सोचने और समझने का था। अल्फ़ी ने अनामिका का अपहरण कर अपनी प्रतिष्ठा पर जो चोट पहुँचाई थी, इस खत से उस चोट पर उसकी अच्छाई ने एक मरहम लगा दी थी।

"तो मुझे आजमाना चाहते हो! ठीक है! अनामिका। बहुत जल्द वापस लेकर आऊंगा तुम्हें। बस मुझ पर यकीन और अपना हौसला बनाए रखना।"

उसे अनामिका की अल्फ़ी और आत्मिक प्रेम को लेकर कही गई बातें भी याद आईं और वो एक फैसले के साथ इस चुनौती को स्वीकार कर गया।

"challange accepted."
सदियों से चले आ रहे "नफ़रत के श्राप" और प्रेम के लिए तड़पते "अभिशप्त" की कहानी खत्म हो चुकी थी और प्रेम की एक नई कहानी सामने आने को तैयार थी।

जिन पाठकों को आगे नहीं बढ़ना है वो ये समझ लें कि अल्फ़ी चला गया और चैतन्य-अनामिका की शादी हो गई।

और वो पाठक जो इस दुनिया के रोमांच से जुड़े रहना चाहते हैं उनके लिए आगे भी बहुत कुछ है।

***** समाप्त *****